प्रकाशक

पं० पृथ्वीनाथ भार्गव,

भार्गव बुक डीपो, चौक बनारस।

[प्रथम संस्करण ५०००]

मुद्रक

भार्गव भूषण प्रेस,

गायघाट बनारस।

भार्गव

आदर्श हिन्दी शब्द कोश

द्वितीय खण्ड

प

प-हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला के व्यञ्जन वर्ण का इक्कीसवा अक्षर, इसका उच्चारण ओंठ से होता है, इसके उच्चारण में दोनों ओंठ मिलते हैं अतएव यह स्पर्श वर्ण कहलाता है।

प-(स० पु०) पवन, हवा, पत्र, पत्ता, पातन, अन्त, शब्द के अन्त में लगने से इसका अर्थ 'पालन करने वाला' होता है।

पंख-(हि० पु०) पक्ष, पर, डैना, पंख जमना-नाश होने के चिह्न दिखाई पड़ना, शामत आना, पंख लगाना-वेगयुक्त होना।

पँखड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पखड़ी।

पंखा-(हि०पु०) वह पदार्थ जिसको हिला कर वायु का झोंका एक ओर ले जाते हैं, व्यजन, त्रिजना, वेना, पंखा कुली-पंखा खींचने के लिये नियुक्त नौकर या कुली।

[पं]खाज-(हि०पु०) देखो पखाउज।

[पं]खापोश-(हि० पु०) पंखे के ऊपर का गिलाफ।

[पं]खी-(हि०पु०) पक्षी, चिड़िया, पखड़ी, फतिंगा, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा (स्त्री०) छोटा पंखा, पहिये के ऊपर कीचड़ रोकने की धातु या लकड़ी की पट्टी।

पखुड़ा-(हि०पु०) कन्धे और बाँह का जोड़, पखुरा।

पंखुरा-(हिं०पु०) देखो पखुड़ा।

पंखुरी-(हि०स्त्री०) फूल का दल, पखड़ी।

पखेरू-(हिं०पु०) देखो पखेरू, पक्षी।

पंग-(हिं० वि०) पंगु, लगड़ा, स्तब्ध, बेकाम, एक प्रकार का वृक्ष, एक प्रकार का विलायती नमक।

पगत, पंगति-(हिं०स्त्री०) पक्ति, पाती, भोजन के समय भोजन करने वालो की पंक्ति, सभा, समाज, भोज, जुलाहों के करगह का दो सरकडों का बना हुआ एक औजार।

पंगला, पंगा-(हिं०वि०) पगु, लगड़ा, बेकाम।

पगायत-(हि०पुं०)चारपाई का पायताना।

पंगी-(हि०स्त्री०) धान के खेत में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा, वह मिट्टी जो नदी के घट जाने पर किनारे पर जम जाती है।

पंच-(हि०पुं०) पाच की सख्या या अंक, पाच या अधिक मनुष्यो का समुदाय, समाज, सर्व सामान्य जनता, पाच या अधिक मनुष्यो का समुदाय जो किसी झगडे को तय करने के लिये बैठाया जाता है, न्याय सभा, दलाल, फौजदारी के सेशन जज की अदालत में जज की सहायता के लिये नियुक्त जन, पंच की भीख-सामान्य लोक की कृपा, पच की दुहाई-न्याय के निमित्त सब लोगो से प्रार्थना, पंच परमेश्वर-एक मत होकर पच का निर्णय ईश्वर का वाक्य माना जाता है, पंच मानना-विवाद के निबटारे के लिये पच नियुक्त करना।

पंचकुर-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बँटाई जिसमें जमीदार को फसल का पाँचवा भाग दिया जाता है।

पंचकोस-(हि० पु०) पाच कोस की लवाई चौड़ाई के बीच में बसी हुई भूमि, काशी।

पंचकोसी-(हिं०स्त्री०)काशी की परिक्रमा।

पंचतपा-(हिं० पु०) अपने चारो ओर आग जलाकर तथा धूप में बैठकर तप करने वाला, पचाग्नि तापने वाला।

पंचतोलिया-(हि०पु०) एक प्रकार का महीन कपड़ा।

पंचनाथ-(हिं०पुं०) बदरीनाथ, द्वारका नाथ, जगन्नाथ, रगनाथ और श्रीनाथ।

पंचनामा-(फा०पु०) वह कागज़ जिसपर वादी प्रतिवादी हस्ताक्षर करके पच नियुक्त करते हैं।

पंचपात-(हिं० पु०) पंचोली नामक पौधा।

पंचपीरिया-(हिं०पु०) मुसलमानो के

पाचो पीरों का पूजन करने वाला।
पचभर्तारी-(हि० स्त्री०) द्रौपदी।
पचमेल-(हिं०वि०)जिसमें पाच की चीजें मिली हो, साधारण, मिला जुला ढेर।
पंचरगा-(हि० वि०) पाच रग का, रग बिरगा।
पचलड़ा-(हि०वि०) पाच लड़ी का।
पंचलड़ी-(हि० स्त्री०) गले में पहिरने की पाच लड़ों की माला।
पंचलरी-(हिं० स्त्री०) देखो पचलड़ी।
पंचहजारी-(फा० पु०) पाच हजार सैनिकों का अफसर, बडे बडे लोगो को दी जानेवाली एक मुसलमानी पदवी।
पंचानवे-(हिं०वि०) नब्बे और पाच की सख्या का (पु०) नब्बे और पाच की सख्या ९५।
पचायत-(हि०स्त्री०) निर्धारित मनुष्यों का वह समाज जो किसी मामले को तय करने के लिये नियुक्त किया जाता है, बहुत से लोगों का एक साथ बकवाद करना, पचों का वादाविवाद।
पंचायती-(हि० वि०) पचायत का किया हुआ, पचायत सबधी, साझे का, कई एक लोगो का मिला जुला, सर्व साधारण का।
पचालिस-(हि०वि०) देखो पैंतालीस।
पचोली-(हि०स्त्री०) एक पौधा जिसके डठलो और पत्तों में से एक प्रकार का सुगन्धित तेल निकलता है (पु०) वश परपरा से चली आनेवाली एक उपाधि।
पंछा-(हिं० पुं०) छाला, फफोला, चेचक के दाने के भीतर भरा हुआ पानी, एक प्रकार का स्राव जो मनुष्य की शरीर से अथवा पौधों में से निकलता है।
पंछाला-(हि०पु०) फफोले में का पानी।
पंछी-(हि० पु०) पक्षी, चिड़िया।
पजड़ी-(हि०स्त्री०) चौसर के एक दाँव का नाम।
पंजना-(हि०क्रि०) बरतन में टाँका लगा कर झलना।
पजरी-(हि० स्त्री०) अरथी, टिकठी।
पजा-(फा०पु०) पाच का समूह, हाथ या पैर की पाचो अगुलियों का समूह, जुए का एक दॉव, पाच बूटियों का ताश का पत्ता, पुट्ठे के ऊपर की मास, अगुलियों सहित हथेली का सपुट, जूते का अगला भाग जिसमें अगुलिया रहती हैं, पजे झाडकर पीछे पड़ना-जीजान से लग जाना; पजे में-अधिकार मे, मुट्ठी में, छक्का पजा-दॉव पेंच।
पजातोड़ बैठक-(हि० स्त्री०) कुश्ती की एक पेंच।
पंजाब-(फा० पु०) भारतवर्ष का वह पश्चिमोत्तर प्रदेश जिसमें सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम ये पाच नदिया बहती हैं।
पजाबी-(हि०वि०)पजाब देश का, पजाब में रहने वाला, पजाब निवासी।
पजारा-(हि० पु०) रूई धुनने वाला, धुनिया।
पजीरी-(हि०स्त्री०)एक प्रकार की मिठाई जो आटे को घी मे भूनकर उसमें धनिया, सोंठ, जीरा आदि मिलाकर बनाई जाती है, इसका व्यवहार विशेषतः नैवेद्य में होता है, एक प्रकार का पौधा जिसको इन्दुपर्णा भी कहते हैं।
पजेरा-(हि०पु०) बरतन झलने का काम करने वाला।
पडल-(हि० वि०) पीले रग का, (पु०) शरीर, पिण्ड।
पडव, पंडवा-(हि०पु०) देखो पाण्डव।
पॅड़वा-(हि०पु०) भैंस का बच्चा।
पडा-(हि० पु०) किसी तीर्थ का मन्दिर का पुजारी, घाटिया, ब्राह्मण रसोइयादार, (स०स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि, विवेक, शास्त्रज्ञान।
पडित-हि०पु०) देखो पण्डित।
पडिताई-(हिं०स्त्री०) पाण्डित्य, विद्वत्ता।
पंडिताऊ-(हिं०वि०)पडितो के ढग का।
पडितानी-(हि० स्त्री०) पडित की स्त्री, ब्राह्मणी।
पडुक-(हिं० पु०) जगल झाड़ियो तथा उजाड़ स्थानो में रहने वाला कबूतर की जाति का एक पक्षी।
पडोह-(हि०पु०) परनाला, नाबदान।
पथ-(हि०पु०)मार्ग, रास्ता, व्यवहार का क्रम, रीति, चाल, व्यवस्था, सम्प्रदाय, धर्ममार्ग, मत, रोगी को लघन या उपवास के बाद देने का हलका भोजन, पथ गहना-रास्ता चलना, पथ दिखाना-रास्ता बतलाना, पथ निहारना-प्रतीक्षा या इन्तजारी करना, पंथ पर पांव धरना-आचरण ग्रहण करना, पथ पर लगना-सुमार्ग पर चलना, किसीके पथ पर लगना-पीछा करना, तग करना, पथ सेना-आसरा देखना, प्रतीक्षा करना।
पथान-(हिं०पु०) पथ, मार्ग, रास्ता।
पथकी-(हि०पु०)पथिक, बटोही, मुसाफिर।
पथिक-(हि०पु०) देखो पथिक।
पथी-(हिं० पु०) पथ पर चलने वाला, पथिक, बटोही, किसी सम्प्रदाय का अनुयायी।
पद-(फा०[illegible]) शिक्षा, उपदेश, सीख।
पदरह-(हिं० वि०) दस और पाँच की सख्या का, (पु०) दस और पाँच की सख्या १५।
पदरहवाँ-(हि०वि०) जो पदरह के स्थान पर हो।
पधलाना-(हिं०क्रि०)फुसलाना, बहलाना।
पप-(हि०पु०) वह नल या यन्त्र जिसके द्वारा पानी ऊपर चढाया जाता है अथवा दूर पहुँचाया जाता है, पिचकारी, एक प्रकार का हलका अगरेजी जूता।
पवा-(फा० पु०) एक प्रकार का पीला रग जो ऊन रगने के काम में आता है।
पॅवर-(हि०स्त्री०) देखो पॅवरी, सामान, सामग्री।
पॅवरना-(हि०क्रि०) पानी में तैरना, थाह लेना, पता लगाना।
पॅवरि-(हि०स्त्री०)प्रवेश द्वार या गृह, ड्योढ़ी।
पॅवरिया-(हि०पु०) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, दरवान, शुभ अवसर पर दरवाजे पर बैठकर मगल गीत गाने वाला भिक्षुक।

पँवरी-(हि०स्त्री०) देखो पँवरि, खड़ाऊँ, पाँवरी।
पँवाड़ा-(हि० पुं०) कल्पित आख्यान, मनगढ़ी कहानी, लम्बा दास्तान जिसको सुनते सुनते जी ऊब जावे, वृथा के विस्तार सहित कही हुई बात, एक प्रकार की गीत।
पँवार-(हि०पु०)राजपूतों की एक जाति, परमार।
पँवारना-(हि० क्रि०) हटाना, फेंकना, दूर करना।
पँवारी-(हि०स्त्री०) लोहे में छेद करने का लोहारों का एक औजार।
पंसरहट्टा-(हि०पु०) वह हाट या बाजार जहाँ पसारियों की दूकानें हों।
पंसारी-(हि०पु०) वह बनिया जो मसाले तथा दवा के लिये जड़ी बूटी बेंचता हो।
पंसासार-(हि०पु०) पासे का खेल।
पसुरी-(हि०स्त्री०) देखो पँसुली।
पसली-(हि० स्त्री०) देखो पसली।
पंसेरी-(हि० स्त्री०) पाँच सेर की तौल या बाँट।
पइता-(हि०पु०) एक प्रकार का छंद जिसको पाइता भी कहते हैं।
पइसना-(हि०क्रि०)देखो पैठना, घुसना।
पइसार-(हि०पुं०) प्रवेश, पैठ, घुसान।
पउँरि, पउरी-(हि०स्त्री०) देखो पौरी।
पकड़-(हि०स्त्री०) पकड़ने या धरने की क्रिया, पकड़ने का ढग, भिड़त, लड़ाई एक एक बार आकर भिड़ना, दोष या भूल ढूढ कर निकालने की क्रिया।
पकड़ धकड़-(हि०स्त्री०)देखो धर पकड़।
पकड़ना-(हि० क्रि०) थामना, धरना, पता लगाना, रोक रखना, ठहराना, दौड़ने चलने आदि में बढे हुए के बराबर हो जाना, रोकना, टोकना, गिरफ्तार करना, वश में लाना, लगकर फैलना, अपने स्वभाव या रुचि के अन्तर्गत करना, धारण करना, घेरना, ग्रसना, सचार करना।
पकड़वाना-(हि०क्रि०) पकड़ने में दूसरे को प्रवृत्त करना, ग्रहण कराना।
पकड़ाना-(हि०क्रि०) किसी के हाथ में देना या रखना, पकड़ने का काम करना, ग्रहण कराना, थामना।
पकना-(हि०क्रि०) सिद्ध होना, सीझना, रिंधना, चुरना, कच्चा न रहना, फोडे आदि का पीव से भर जाना, कीमत ठहराना, सौदा पटना, आँच खाकर गलना या तैयार होना, बाल पकना-बालो का सफेद होना, कलेजा पकना-जी जलना।
पकरना-(हि०क्रि०) देखो पकड़ना।
पकला-(हि०पु०) फोड़ा, फुन्सी।
पकवान-(हि० पु०) घी या तेल में पका कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ।
पकवाना-(हि० क्रि०) पकाने का काम दूसरे से कराना, आँच पर तयार कराना
पकाई-(हि० स्त्री०) पकाने की क्रिया या मजदूरी।
पकाना-(हि० क्रि०) फल आदि को पुष्ट और तैयार करना, गरमी से अथवा आँच से गलाना, रींधना, सिझाना, मात्रा पूरी करना, सौदा पूरा करना, फोडे फुसी आदि को ऐसी अवस्था में पहुचाना कि उसमें पीव आ जावे।
पकार-(स०पु०) 'प' अक्षर, 'प' स्वरूप वर्ण
पकारादि-(स० वि०) जिसके आदि में 'प' अक्षर हो।
पकारान्त-(स० वि०) जिसके अन्त में 'प' अक्षर हो।
पकाव-(स० पु०) पकने का भाव, पीव।
पकावन-(हि० पु०) देखो पकवान।
पकौड़ा-(हि० पुं०) घी या तेल में पकी हुई बेसन या पीठी की बरी, फुलौरी।
पकौड़ी-(हि० स्त्री०) छोटे आकार का पकौड़ा।
पक्कटी-(स०स्त्री०) पाकर का वृक्ष।
पक्करस-(हि०पु०) मदिरा, शराब।
पक्का-(हि०वि०) अन्न या फल जो पुष्ट होकर खाने योग्य हो गया हो, कच्चा न हो, पक्का हुआ, साफ, दुरुस्त, तैयार, अनुभव प्राप्त, निपुण, होशियार, आंच पर गला या पकाया हुआ, निपुण व्यक्ति से बनाया हुआ, स्थिर, दृढ, निश्चित, न टलने वाला, जो अभ्यास से मज गया हो, दृढ, मजबूत, प्रमाणों से पुष्ट, प्रामाणिक, ठीक किया हुआ, जँचा हुआ, जो आँच पर कड़ा हो गया हो, जिसमें पूर्णता आगई हो, जो अपनी पूरी बाढ या प्रौढता पर पहुँच गया हो, पक्का खाना-केवल घी में पका हुआ भोजन, पक्का पानी-औटाया हुआ जल, पक्का कागज-वह पत्र जिस पर लिखा हुआ विषय प्रामाणिक सिद्ध हो।
पक्काइत-(हि०स्त्री०)निश्चय, दृढता, मजबूती।
पक्खर-(हि०वि०) पक्का, पोख्ता।
पक्तव्य-(सं० वि०) पाक योग्य।
पक्त्र-(स०नपु०) गार्हपत्य अग्नि।
पक्व-(स०वि०) पका हुआ, सुदृढ, पुष्ट, पक्का।
पक्वकेश-(स०पुं०)पका बाल, सफेद बाल।
पक्वता-(स०स्त्री०) पक्वावस्था, पकापन।
पक्वमान-(स०वि०) पकाया हुआ।
पक्व रस-(स०पु०) मद्य, मदिरा, शराब।
पक्व वारि-(स०नपु०) उबाला हुआ जल।
पक्वान्न-(स० नपु०) पका हुआ अन्न, खाने की वस्तु जो घी, पानी आदि के साथ आग पर पकाई गई हो।
पक्वाशय-(स० पु०) पेट के भीतर का नाभि के नीचे का भाग जो वस्तुतः अन्न का ही एक अंश है, थूक के साथ मिलकर खाया हुआ भोजन अन्न की नली द्वारा यहाँ पहुँचता है और इसमें पित्त तथा क्लोम रस मिलकर पाचन का कार्य आरभ होता है।
पक्ष-(स०पु०) पदरह दिन का काल, पाख, पक्षियों का डैना, पर, तीर में लगा हुआ पर, समूह, किसी स्थान या पदार्थ के दोनों किनारे, किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अगों में से एक, पहलू, किसी विषय

पर दो या परस्पर भिन्न मतों में से एक, अनुकूल मत या प्रवृत्ति,पक्षी, चिड़िया, हाथ में पहिरने का कड़ा, राजा का हाथी, घर, चूल्हे का छेद, सहायक, साथी, निमित्त, सबंध, लगाव, विवाद करने वालों में से किसीके अनुकूल स्थिति, वह वस्तु जिसमें साध्य की गतिज्ञा की जाती है, फौज, सेना, बल, साथ रहने वालो का समूह,पक्ष गिरना-युक्तियों द्वारा मत का सिद्ध न होना, पक्ष करना-पक्षपात करना ।

पक्षक-(स०पु०) पक्षद्वार, सहाय ।

पक्षगम-(सं०पु०) पक्षी,चिड़िया, पर्वत ।

पक्षग्रहण-(स० नपु०) किसी की सहायता लेना ।

पक्षग्राह-(स० वि०) पक्ष लेने वाला ।

पक्षघात-(स०पु०) वह वात रोग जिसमें शरीर के एक ओर के अंग सुन्न हो जाते हैं, लकवा ।

पक्षघ्न-(स०वि०) पक्षनाशक ।

पक्षचर-पक्षज-(स०पुं०) चन्द्रमा ।

पक्षति-(स०नपु०)पक्षमूल,डैने की जड़ ।

पक्षत्व-(स०नपु०) पक्षधर्मता, पक्षता ।

पक्षद्वार-(स०नपु०)खिड़की का दरवाज़ा।

पक्षधर-(स०पु०) चन्द्रमा,शिव,महादेव, पक्षी ।

पक्षपात-(सं० पु०) अनुचित और उचित का विचार न करते हुए किसीके अनुकूल प्रवृत्ति, तरफ़दारी ।

पक्षपातिता-(स०स्त्री०) सहायता,मदद ।

पक्षपाती-(स० वि०) उचित अनुचित विचार न करके किसीके अनुकूल प्रवृत्त होना, तरफ़दारी ।

पक्षपोषक-(स०वि०)पक्षसमर्थक, तरफदार

पक्षमूल-(स०नपु०) प्रतिपदा तिथि ।

पक्षपालि-(सं०पु०) खिड़की ।

पक्षरचना-(स० स्त्री०) किसी का पक्ष साधन के लिये रचा हुआ आयोजन ।

पक्षरूप-(स०पु०) शिव, महादेव ।

पक्षवध-(स०पुं०) देखो पक्षाघात ।

पक्षवान्-(हिं०वि०) पक्षवाला, पर वाला (पुं०) पर्वत, पहाड़ ।

पक्षवाहन-(स०पु०) पक्षी, चिड़िया ।

पक्षाघात-(सं० पु०) एक प्रकार का वायुरोग जिसमें शरीर का आधा भाग निश्चेष्ट और क्रियाहीन हो जाता है, फालिज, लकवा ।

पक्षान्त-(स०पु०) अमावास्या, पूर्णिमा ।

पक्षान्तर-(स० नपु०) दूसरा पक्ष, मतान्तर ।

पक्षाभास-(स०पु०) मिथ्या-अनुयोग ।

पक्षालु-(स० पु०) पक्षी, चिड़िया ।

पक्षावसर-(स०पु०) पूर्णिमा,अमावास्या।

पक्षिणी-(सं० स्त्री०) चिड़िया, मादा पक्षी, पूर्णिमा ।

पक्षिपति-(स०पु०) पक्षिराज, सम्पाति ।

पक्षिप्रवर,पक्षिराज-(स०पु०) गरुड़ ।

पक्षिशाला-(स०स्त्री०) चिड़ियों के रखने का घर ।

पक्षिसिंह-(स०पु०) पक्षिराज, गरुड़ ।

पक्षी-(स०पुं०) खग, विहगम, शकुन्त, अण्डज, चिड़िया (हि० वि०) पक्षपाती, तरफदार ।

पक्षीन्द्र-(सं० पु०) गरुड़, जटायु ।

पक्षीश्वर-(सं० पु०) गरुड़ ।

पक्ष्म-(हिं० पु०) आँख की बरौनी ।

पखंड-(हिं० पु०) देखो पाखड ।

पखडी-(हि०वि०) देखो पाखण्डी ।

पख-(हिं० स्त्री०) व्यर्थ की बढाकर कही हुई बात, तुर्रा, बाधक नियम, अडगा, झझट, बखेड़ा, त्रुटि, दोष, हानि, नुकसान ।

पखड़ी-(हि० स्त्री०) पुष्प दल, फूलों का रगीन पटल जो इसको पहिले बद किये रहता है और खिलने पर फैल जाता है।

पखनारी-(हि० स्त्री०) चिड़ियों के पर का नलीके आकार का पिछला भाग ।

पखपान-(हि० पुं०) पैर में पहिरने का एक गहना ।

पखराना-(हि० क्रि०) पखारने या धोने का काम करना ।

पखरी-(हि०स्त्री०) देखो पाखर, पखडी।

पखरैत-(हि० पु०) बैल, घोड़ा या हाथी जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो।

पखरौटा-(हि० पु०) चादी सोने के वर्क में लपेटा हुआ पान का बीड़ा ।

पखवाड़ा, पखवारा-(हिं०पु०)अर्धमास, पद्रह दिन का समय ।

पखाउज-(हि०पु०) देखो पखावज ।

पखाटा-(हि० पु०) धनुष का कोना ।

पखान-(हिं०पुं०) देखो पाषाण,पत्थर।

पखाना-(हि० पु०) उपाख्यान, कथा कहावल, मसल, कहनूत , देखो पायखाना ।

पखारना-(हिं० क्रि०) पानी से धोकर मैल आदि साफ करना ।

पखाल-(हि०स्त्री०) कुवें से पानी भरने की चमडे की बडी मसक, धौंकनी , पखाल,पेटिया-बड़े पेट वाला मनुष्य।

पखावज-(हिं० स्त्री०) मृदग से छोटा एक प्रकार का बाजा ।

पखावजी-(हिं० पु०) पखावज बजाने वाला ।

पखिया-(हि०पु०) झगड़ा करने वाला, बखेड़िया ।

पखुरी-(हि०स्त्री०) देखो पखड़ी ।

पखुवा-(हि०पु०) बाँह के जड़ का बगली हिस्सा ।

पखेरु-(हिं० पु०) पक्षी, चिड़िया ।

पखेव-(हि०पु०) बचा जनने के बाद दिन तक गाय या भैंस को खिलाने का मसाला ।

पखौआ-(हि० पु०) पख, पर ।

पखौटा-(हि०पु०) डैना, पर, मछली का पर, सुफना ।

पखौरा-(हिं०पु०) कधे पर की हड्डी ।

पग-(हि० पु०) पैर, पाव, चलने में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पैर रखने की क्रिया, डग, फाल, चलती समय दोनो पैर के बीच का स्थान ।

पगडडी-(हि०स्त्री०) मैदान या जगल का वह पतला रास्ता जो मनुष्यों के चलने से बन गया हो ।

पगड़ी-(हिं० स्त्री०) सिर पर लपेट कर बाँधने का कपड़ा, साफा, चीरा, उष्णीश, मुरेठा, पगड़ी अटकना-बराबरी करना,

पगड़ी उछालना-किसी का अपमान करना, पगड़ी उतारना-अपमान करना, ठगना, पगड़ी बँधना-सम्मान या प्रतिष्ठा प्राप्त करना, उत्तराधिकारी बनना, पगड़ी बदलना-भाईचारा दिखलाना।

पगतरी-(हिं०स्त्री०) उपानह, जूता।

पगदासी-(हिं० स्त्री०) जूता, खड़ाऊँ।

पगना-(हि०स्त्री०) रस के साथ पक कर मिलना, शरबत या शीरे के साथ इस प्रकार पकना कि चाशनी भीतर प्रवेश कर जावे और चारो तरफ लिपट जावे, मग्न होना, प्रेम में डूबना, अच्छी तरह से सन जाना।

पगनियाँ-(हिं०स्त्री०) जूती।

पगपान-(सं० पु०) पैर में पहिरने का एक गहना।

पगरना-(हि०पु०) नक्काशी करने वालों का एक औज़ार।

पगरा-(हिं० पुं०) डग, कदम, पग, यात्रा आरम करने का काल, तड़का, सवेरा, सोने का एक आभूषण।

पगरी-(हिं०स्त्री०) देखो पगड़ी।

पगला-(हिं०पु०) देखो पागल।

पगहा-(हिं०पुं०) पशु बाँधने की रस्सी, गिराँव।

पगा-(हि० पु०) पटका, दुपट्टा।

पगाना-(हिं० क्रि०) चाशनी में किसी वस्तु को पागने का काम दूसरे से कराना, अनुरक्त करना, मग्न करना।

पगार-(हिं०पु०) पैर में लगी हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा, वह नदी या नाला जो पैदल चलकर पार किया जा सके, पैर से कुचलने योग्य वस्तु, वेतन, तनखाह।

पगाह-(फा० स्त्री०) यात्रा करने का समय, प्रभात, सवेरा।

पगियाना-(हि०क्रि०) देखो पगाना।

पगिया-(हि० स्त्री०) देखो पगड़ी।

पगुरना-(हि० क्रि०) पागुर करना, जुगाली करना, हज़म कर जाना, डकार जाना।

पग्गा-(हिं०पु०) पीतल या तांबा गलाने की घरिया।

पघा-(हिं०पु०) चौपायों को बाँधने की रस्सी, पगहा।

पघाल-(हिं०पु०) एक प्रकार का कड़ा लोहा।

पघिलना-(हिं०क्रि०) देखो पिघलना।

पघैया-(हिं० पु०) गाँव गाँव घूमघूम कर माल बेचनेवाला व्यापारी।

पङ्क-(सं०पु०) कीचड़, कींच, लेप, पाप।

पङ्कक्रीड़-(सं०पु०) शूकर, सुअर (वि०) कीचड़ में खेलने वाला।

पङ्कग्राह-(सं०पुं०) मगर।

पङ्कज-(सं०नपु०) पद्म, कमल (वि०) कीचड़ में उत्पन्न होने वाला।

पङ्कजन्मन्-(सं०पु०) पद्मयोनि, ब्रह्मा।

पङ्कजवाटिका-(सं०स्त्री०) तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

पङ्कजात-(सं०पु०) पद्म, कमल।

पङ्कजावली-(सं०स्त्री०) पद्म समूह, एक प्रकार का छन्द।

पङ्कजित्-(सं०पु०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

पङ्कण-(सं० पुं०) चाण्डाल का घर।

पङ्कपर्पटी-(सं०स्त्री०) गोपीचन्दन।

पङ्कप्रभा-(सं०स्त्री०) एक नरक का नाम।

पङ्कमण्डूक-(सं० पु०) छोटी सीप, सुतुही

पङ्करुह-(सं०नपु०) पद्म, कमल।

पङ्कवास-(सं० पु०) कर्कट, केकड़ा।

पङ्कशुक्ति-(सं०स्त्री०) शम्बूक, सुतुही, घोंघा।

पङ्कार-(सं०पु०) सैवाल, सेवार, सिंघाड़ा।

पङ्किल-(सं० वि०) पङ्कयुक्त, कीचड़ से भरा हुआ।

पङ्केज-(सं०नपु०) पद्म, कमल।

पङ्केरुह-(सं०नपु०) पद्म, कमल (पुं०) सारस पक्षी।

पङ्केशय-(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक।

पङ्क्ति-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पांती, कतार, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पाच पाच अक्षर होते हैं, दस की सख्या, गौरव, पृथ्वी, भोज में एक साथ बैठकर खाने वालों की श्रेणी, कुलीन ब्राह्मणों की श्रेणी।

पङ्क्तिचर-(सं०पु०) कुरर पक्षी।

पङ्क्तिच्युत-(सं०वि०) जाति बहिष्कृत, बिरादरी से निकाला हुआ।

पङ्क्तिरथ-(सं०पुं०) राजा दशरथ।

पङ्क्तिवाह्य-(सं० वि०) जातिच्युत, बिरादरी से निकाला हुआ।

पङ्क्तिपाल-(सं०पु०) टिड्डी।

पङ्गु-(सं०पु०) शनि ग्रह, परिव्राजक, एक प्रकार का वातरोग (वि०) खञ्ज, लगड़ा।

पङ्गुगति-(सं०स्त्री०) वर्णिक छन्द का वह दोष जब किसी स्थान में गुरु के स्थान मे लघु अथवा लघु के स्थान मे गुरु का प्रयोग होता है।

पङ्गुग्राह-(सं०पुं०) मगर, मकर राशि।

पङ्गुता-(सं०स्त्री०) पङ्गुत्व, लगड़ापन।

पङ्गुल-(सं०पु०) रेंड़ी का पेड़, सफेद रग का घोड़ा (वि०) पङ्गु, लगड़ा।

पचक-(हिं०पु०) कट नामक गुल्म।

पचकना-(हिं०क्रि०) देखो पिचकना।

पचकल्यान-(हिं०पुं०) देखो पञ्चकल्यान।

पचखना-(हिं०वि०) जिसमें पाच खण्ड या मञ्जिल हों।

पचखा-(हिं० पुं०) देखो पचक।

पचगुना-(हिं०वि०) पाच गुना, पाच बार अधिक।

पचग्रह-(हिं० पु०) मगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि ग्रहों का समूह।

पचड़ा-(हिं०पुं०) प्रपच, बखेड़ा, झझट, लावनी या ख्याल के ढग की एक प्रकार की गीत जिसमें पाच पांच चरणों के टुकडे रहते हैं।

पचत-(सं०पु०) सूर्य, अग्नि, इन्द्र (वि०) परिपक्व, पका हुआ।

पचतूरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाजा।

पचतोलिया-(हिं०पु०) पाच तोले की बाँट।

पचन-(सं०नपु०) पकाने की क्रिया या भाव, पकने की क्रिया, अग्नि, (वि०) पकाने वाला।

पचना-(हि० क्रि०) भोजन किये हुए पदार्थ का रसादि में परिणत होकर शरीर में लगने योग्य होना, हज़म

होना, शरीर का सूखना या क्षय होना, समाप्त होना, नष्ट होना, पराया माल अपने हाथ कर लेना, अनुचित उपाय से प्राप्त किये हुए धन आदि का काम में आना, हरान होना, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ मे अच्छी तरह मिल जाना, खपना, पचभरना–किसी काम के करने मे बड़ी मेहनत करना।

पचनागार–(स० पु०) रसोईघर, बावरची खाना।

पचनाग्नि–(स०पु०) जठराग्नि।

पचनिका–(स०स्त्री०) कड़ाही।

पचमेल–(हिं०वि०) देखो पचमेल।

पचनीय–(स०वि०) पचने (हज़म होने) योग्य।

पचन्ती–(स०स्त्री०) पकाने वाली, खाना बनाने वाली।

पचपच–(सं०पु०) शिव, महादेव।

पचपचा–(हि०वि०) वह अधपका भोजन जिसका पानी अच्छी तरह से सूखा या जला न हो।

पचपचाना–(हिं०क्रि०) आवश्यकता से अधिक गीला होना, कीचड़ होना।

पचपन–(हि० वि०) पचास और पाच की सख्या का (पु०) पचास और पाच की सख्या ५५।

पचपनवा–(हि० वि०) जो गिनती में चौवन के बाद हो।

पचपल्लव–(हि०पु०) देखो पचपल्लव।

पचमान–(स०वि०) पाक करने वाला, पकाने वाला।

पचमेल–(हि०वि०) कई एक तरह या मेल का।

पचरग–(हि०पु०) चौक पूरने की सामग्री–अबीर, बुका, मेहदी की बुकनी, हल्दी और सुरवाली के बीज।

पचरगा–(हि० वि०) जिसमें अलग अलग पाच रग हों, पाच रगो से रगा हुआ, अनेक रग का, नव ग्रह आदि के पूजन के लिये पूरा जाने वाला चौक।

पचरा–(हि०पु०) देखो पचड़ा।

पचलड़ी–(हि०स्त्री०) पाच लड़ियो की माला या हार।

पचलोना–(हिं०पु०) वह जिसमें पाच तरह के नमक मिलाये गये हों।

पचवाई–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की अन्नो से बनी हुई मदिरा।

पचहत्तर–(हि०वि०) सत्तर और पाच की सख्या का (पु०) सत्तर और पाच की सख्या ७५।

पचहत्तरवां–(हिं० वि०) जिसका क्रम चौहत्तर के बाद हो।

पचहरा–(हि०वि०) पाच बार लपेटा या मोड़ा हुआ, पाच तह या परत का।

पचानक–(हि०पु०) एक प्रकार का पक्षी।

पचाना–(हि०क्रि०) आँच की सहायता से गलाना, पकाना, खाई हुई वस्तु को जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत करके शरीर में लगने योग्य बनाना, हज़म करना, जीर्ण करना, नष्ट करना, क्षय करना, पराये माल को अपना कर लेना, समाप्त करना, अधिक परिश्रम करके शरीर को सुखाना, एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने में पूर्ण रूप से मिला लेना।

पचार–(हिं० पु०) कुए में बाधने की लकड़ी या बास।

पचारना–(हि० क्रि०) ललकारना।

पचाव–(हिं० पु०) पचने की क्रिया या भाव।

पचास–(हि०वि०) चालीस और दस की सख्या का (पु०) चालीस और दस की सख्या ५०।

पचासवा–(हि०वि०) गिनती में पचास की जगह पर पड़ने वाला।

पचासा–(हि० पु०) एक ही प्रकार की पचास चीजों का समूह।

पचासी–(हि० वि०) अस्सी और पांच की सख्या का (पु०) अस्सी और पाच की सख्या ८५।

पचासीवां–(हिं० वि०) जो क्रम से पचासी के स्थान पर हो।

पचित–(स० वि०) जड़ा हुआ, बैठाया हुआ।

पचीस–(हिं०वि०) बीस और पाच की सख्या का, (पु०) बीस और पाच की सख्या २५।

पचीसवा–(हि० वि०) जो गणना में पचीस के स्थान पर हो।

पचीसी–(हि०स्त्री०) चौसर की बिसात पर खेला जाने वाला एक खेल, जो सात कौड़ियों से खेला जाता है, एक ही प्रकार की पचीस वस्तुओं का समूह, किसी की आयु के पहिले पचीस वर्ष, एक विशेष गणना जिसका सैंकड़ा पचीस गाहियो या १२५ का माना जाता है।

पचूका–(हि०पु०) पिचकारी।

पचेलिम–(स० पु०) सूर्य, अग्नि (वि०) जो आप से आप पका हो।

पचोतर–(हि०वि०) किसी सख्या से पाच अधिक।

पचोतरसो–(हिं० पु०) एक सौ पाच की सख्या।

पचौर–(हि०पु०) गाँव का मुखिया या सरदार, पच।

पचौली–(हि० पु०) देखो पचौरी।

पचौवर–(हि०वि०) पाच तह या परत किया हुआ, पाच परत का।

पचड़, पच्चर–(हिं०स्त्री०) लकड़ी या बांस की पट्टी, पैवन्द, साल या जोड़ के छेद में ठोंकने की गावदुम लकड़ी की गुल्ली।

पच्ची–(हि० स्त्री०) किसी वस्तु के तल को खोदकर दूसरी वस्तु इस प्रकार उसमें बैठाई जावे कि देखने में अथवा हाथ फेरने पर उभड़ी हुई न जान पड़े और किसी प्रकार की झरी भी न रह जाय, किसी धातु के बने पदार्थ पर किसी अन्य वस्तु के पत्तर का जड़ाव, पच्ची होजाना–एकदम मिलकर एक हो जाना।

पच्चीकारी–(हि० स्त्री०) पच्ची करने की क्रिया या भाव।

पच्छ–(हि० पु०) देखो पक्ष।

पच्छघात–(हि० पु०) देखो पक्षघात।

पच्छम,पच्छिम–(हिं० पु०) देखो पश्चिम, पिछला, पीछे का।
पच्छी–(हिं०स्त्री०) पक्षी, चिड़िया।
पच्य–(सं०वि०) पकाने योग्य।
पच्यमान–(सं० वि०) जो पकाया जा रहा हो।
पछड़ना–(हिं० क्रि०) लड़ने में पटका जाना, देखो पिछड़ना।
पछताना–(हिं० क्रि०) किसी किये हुए अनुचित कार्य के सबंध में पीछे से दुःखी होना, पश्चात्ताप करना, पछतावा करना।
पछतानि–(हिं०स्त्री०) देखो पछतावा।
पछताव–(हिं०पु०) अनुताप, पश्चात्ताप।
पछतावना–(हिं० क्रि०) देखो पछताना।
पछतावा–(हिं० पु०) पश्चात्ताप, अपने किये हुए काम को बुरा समझने का रंज।
पछना–(हिं०क्रि०) पाछा जाना, (पु०) पाछने का यन्त्र।
पछलना–(हिं० पु०) देखो पिछलना।
पछवत–(हिं०स्त्री०) वह अन्न जो फस्ल के अन्त में बोया जावे।
पछवाँ–(हिं०वि०) पश्चिम दिशा सबंधी, पश्चिमी (स्त्री०) अंगिया का पीठ की ओर का भाग।
पछाँह–(हिं० पु०) पश्चिम की ओर का प्रदेश।
पछाँहिया–(हिं०वि०) पश्चिम देश का, पछाह का।
पछाड़–(हिं० स्त्री०) मूर्छित हो कर गिरना, शोक आदि के कारण अचेत होकर गिरना।
पछाड़ना–(हिं०क्रि०) लड़ाई या कुश्ती में पटकना या गिराना, कपडे को धोने के लिये पटकना, पछाड़ खाना–अचानक मूर्छित होकर गिर पड़ना।
पछाड़ी–(हिं० स्त्री०) देखो पिछाड़ी।
पछाया–(हिं० पु०) किसी वस्तु का पिछला भाग।
पछारना–(हिं० क्रि०) कपडे को पटक कर धोना।
पछावरि–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का सिखरन, एक प्रकार का पकवान।
पछाँहीं–(हिं० वि०) पश्चिम प्रदेश का पछाह का।
पछिआना–(हिं०क्रि०) पीछे पीछे चलना, पीछा करना।
पछिताना–(हिं० क्रि०) देखो पछताना।
पछिताव–(हिं० पु०) देखो पछतावा।
पछिनाव–(हिं० पु०) चौपायों का एक रोग।
पछियाना–(हिं०क्रि०) देखो पछिआना।
पछियाव–(हिं०पु०) पश्चिमी वायु।
पछिलना–(हिं०क्रि०) देखो पिछड़ना।
पछिला–(हिं०वि०) देखो पिछला।
पछिवाँ–(हिं०वि०) पच्छिम की (स्त्री०) पश्चिम की हवा।
पछुवाँ–(हिं०वि०) देखो पछिवाँ।
पछुवा–(हिं० पु०) पैर में पहिरने का एक गहना।
पछीत–(हिं०स्त्री०) घर का पिछवाड़ा।
पछेड़ा–(हिं० पु०) देखो पीछा।
पछेलना–(हिं०क्रि०) आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ना।
पछेला–(हिं० पु०) स्त्रियों के हाथ में पहिरने का एक गहना, मठिया (वि०) पिछला।
पछेली–(हिं०स्त्री०)हाथ का एक आभूषण।
पछोड़ना–(हिं० क्रि०) सूप आदि में रख कर तथा फटक कर अन्न आदि को साफ करना, फटकना।
पछोरना–(हिं०क्रि०) देखो पछोड़ना।
पछौरा–(हिं०पु०) देखो पिछौरा।
पछ्यावर–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का शरबत।
पजर–(हिं०पु०)चूने या टपकने की क्रिया।
पजरना–(हिं०क्रि०) जलना।
पजारना–(हिं०क्रि०) जलाना।
पजहर–(फा०पु०) एक प्रकार का पत्थर जिसपर नक्काशी की जाती है।
पजावा–(फा० पु०) ईंटें पकाने का भट्ठा, आवाँ।
पजोखा–(हिं०पु०) किसी की मृत्यु पर उसके सबंधियों का शोक प्रकाश, मातमपुरसी।
पजोड़ा–(हिं०पु०) दुष्ट, पाजी।
पज्ज–(सं०पु०) शूद्रजाति, शूद्र।
पज्झटिका–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्रायें होती हैं।
पञ्च–(सं०पु०) देखो पच, पाच, पाच सख्या युक्त, जिसमें पाच अदद हों।
पञ्चक–(सं० नपु०) पाच का समूह, शकुनशास्त्र, धनिष्ठा आदि पाच नक्षत्र जिनमें किसी नये कार्य का आरभ करना निषिद्ध है, वह जिसके पाच अवयव हों।
पञ्च कन्या–(सं०स्त्री०)पुराण के अनुसार वे पाँच स्त्रियाँ जो सर्वदा कन्या ही रहीं–इनके नाम–अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मन्दोदरी हैं।
पञ्चकपाल–(सं०नपु०)एक प्रकार का यज्ञ।
पञ्चकर्म–(सं०नपु०)वैशेषिक के अनुसार–उत्क्षेपण,अवक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन–ये पाच कर्म।
पञ्च कर्मेन्द्रिय–(सं०नपु०) हस्त, पाद, पायु, उपस्थ और जिह्वा।
पञ्चकल्याण–(सं० पु०) वह घोड़ा जिसका सिर और चारो पैर सफेद हो तथा शेष शरीर किसी एक रग का हो–ऐसा घोड़ा शुभ फल देने वाला माना जाता है।
पञ्चकषाय–(सं० पु०) पाच प्रकार का कसैला द्रव्य यथा–जामुन,सेम्हर,खिरैंटी, मौलसिरी और बेर।
पञ्चकाम–(सं०पुं०) तन्त्र के अनुसार कामदेव के पाच नाम यथा–काम, मन्मथ,कन्दर्प,मकरध्वज और मीनकेतु।
पञ्चकोण–(सं०नपुं०) पाच कोने का क्षेत्र।
पञ्चक्रोशी–(सं० स्त्री०) पाच कोस की लबाई चौड़ाई के बीच में बसी हुई काशी नगरी।
पञ्च गङ्गा–(सं०स्त्री०)गगा,यमुना,सरस्वती, किरणा और धूतपापा–इन पाच नदियों का समूह, काशी का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ गगा में किरणा और धूतपापा

नदिया मिली थीं-ये दोनो नदियाँ अब लुप्त हो गई हैं।

पञ्चगत-(सं० नपु०) बीज गणित में पञ्चवर्ण युक्त राशि।

पञ्चगव्य-(स० नपु०) गो सबधी पाच प्रकार के द्रव्य यथा-दूध, दही, घी, गोवर और गोमूत्र।

पञ्चगुण-(स०पु०) पृथ्वी के पाच गुण यथा-शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध (वि०) पाच से गुणा किया हुआ।

पंचगौड़-(स०पु०) ब्राह्मणों का वह विभाग जिसमे सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल शामिल हैं।

पञ्चचक्र-(स० नपु०) तन्त्र के अनुसार पाच प्रकार के चक्र जिनके नाम-राजचक्र, महा चक्र, देवचक्र, वीर चक्र, और पशुचक्र हैं।

पञ्चचामर-(स० नपु०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर रहते हैं।

पञ्चजन-(स० पु०) पुरुप, पाच प्रकार के जनों का समूह, एक प्रजापति का नाम, राजा सगर के एक पुत्र का नाम।

पञ्चजन्य-(स० पु०) एक प्रसिद्ध शख जिसको श्रीकृष्ण वजाया करते थे।

पञ्चतत्व-(स०पु०) पाच तत्वों का समुदाय जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश हैं।

पञ्चमकार-(स०पु०) तन्त्रानुसार-मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन-पञ्चमकार कहलाते हैं।

पञ्चतन्त्र-(स० नपु०) विष्णुशर्मा विरचित एक सस्कृत ग्रन्थ का नाम।

पञ्चतप-(स० पु०) चारो ओर अग्नि जलाकर ग्रीष्म काल में खुले मैदान में बैठकर तपस्या करने वाला।

पञ्चतरु-(स० पु०) पाच वृक्ष यथा-मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन।

पञ्चता-(स० स्त्री०) मृत्यु, मौत।

पञ्चतालेश्वर-(स० पुं०) शुद्ध जाति का एक राग।

पञ्चतिक्त-(स०नपुं०) पाच प्रकार के तीते द्रव्य यथा-गिलोय, कण्टकारी, सोंठ, कुट और चिरायता।

पञ्चत्व-(स० नपु०) मरण, मृत्यु।

पञ्चदश-(स० वि०) पन्द्रहवा (पु०) पन्द्रह की सख्या।

पञ्चदशधा-(सं०अव्य०)पदरह प्रकार का।

पञ्चदशाह-(स० पुं०) पदरह दिन का समय।

पञ्चदशी-(स०स्त्री०) पूर्णिमा,अमावास्या।

पञ्चदेवता-(हिं० पु०) पाच प्रधान देवता जिनकी उपासना आजकल हिन्दुओं में प्रचलित है-यथा-आदित्य, गणेश, देवी, रुद्र और केशव।

पञ्चद्राविड-द्राविड राज्य के अधीन पाच प्रधान जनपद जिनके निवासी द्राविड़, अन्ध्र, कर्णाट, महाराष्ट्र और गुर्जर हैं।

पञ्चधा-(सं० अव्य०) पाच प्रकार।

पञ्चनद-(स० पुं०) पजाब प्रदेश जहा-सतलज, व्यास, रवी, चनाव और झेलम-ये पाच नदिया बहती हैं, पाच नदियों का समुदाय।

पञ्चपक्षी-(स०पु०) प्रश्नादि द्वारा शकुन जानने का शिवोक्त एक शास्त्र।

पञ्चपर्णिका-(स० स्त्री०) गोरक्षा नाम का पौधा।

पञ्चपर्व-(सं०नपु०) चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और रविसंक्रान्ति-ये पाच दिन।

पञ्चपल्लव-(स०नपु०) आम, जामुन, कैथ, विजौरा और वेल,-अथवा आम, पीपल, बर, पाकर और यज्ञोडुम्बर।

पञ्चपात्र-(स० नपु०) चौडे मुख का गिलास के आकार का पात्र जो पूजा आदि में जल रखने के काम में आता है।

पञ्चपाद-(स० वि०) पाच पैर वाला, (पुं०) सवत्सर।

पञ्चपितृ-(स०पु०) जन्मदाता, उपनेता या आचार्य, कन्यादाता, अन्नदाता और भयत्राता ये पाच पिता माने गये हैं।

पञ्चपुष्प-(स० नपु०) देवताओं को प्रिय पाच प्रकार के फूल यथा-चम्पा, आम, शमी, कमल और कनेर के फूल।

पञ्चप्राण-(स० पु०) शरीर स्थित पाच प्राण वायु जिनके नाम-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान हैं, हृदय देश में प्राण वायु, गुह्यदेश में अपान वायु, नाभि देश में समान, कण्ठ देश में उदान वायु तथा सम्पूर्ण शरीर में व्यान वायु व्याप्त रहती है।

पञ्चबाण-(स० पु०) कामदेव के पाच बाण जिनके नाम-द्रवण, शोषण, तापन मोहन और उन्मादन हैं, तथा कामदेव के पाचो पुष्प बाणोंके नाम कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल हैं।

पञ्चबाहु-(सं०पु०) शिव, महादेव।

पञ्चभद्र-(स० पु०) वह घोड़ा जिसके शरीर में पाच जगह फूल के चिह्न हों।

पञ्चभूत-(स०नपुं०) पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश।

पञ्चम-(स०वि०) पाचवा, सुन्दर, दक्ष, निपुण, (पु०) सगीत के सात स्वरों में से पाचवा स्वर।

पञ्चमकार-(स०नपुं०) तन्त्र के अनुसार-मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन-ये पाच मकार।

पञ्चमहापातक-(स०नपु०) मनुस्मृति के अनुसार पाच बहुत बडे पातक जिनके नाम-ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार, तथा इन पातकों के करने वालों के साथ ससर्ग।

पञ्चमहायज्ञ-(स० पु०) पाच कृत्य जिनका नित्य करना गृहस्थो के लिये परम आवश्यक है-इनके नाम-अध्ययन तथा अध्यापन (ब्रह्मयज्ञ), अन्न तथा उदक द्वारा पितृलोक को तर्पण (पितृयज्ञ), हवन, होम (देवयज्ञ) पशु पक्षी को अन्न खिलाना (भूतयज्ञ) तथा अतिथि सेवा (मनुष्य यज्ञ) हैं।

पञ्चमहाव्याधि-(सं० पुं०) पाच बडे

रोग यथा–अर्श (ववासीर) यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद।

पञ्चमहाव्रत–(स०पु०) अहिंसा, (सूनृता) सच बोलना (आस्तेय) चोरी न करना, ब्रह्मचर्य और (अपरिग्रह) दान दक्षिणा न लेना।

पञ्चमार–(स० पु०) बलदेव के एक पुत्र का नाम।

पञ्चमास्य–(स० पु०) कोकिल, कोयल (वि०) पाच महीने का।

पञ्चमी–(सं० स्त्री०) पाण्डवो की पत्नी द्रौपदी, किसी पक्ष की पाचवी तिथि, एक रागिणी का नाम।

पञ्चमुख–(स०पु०) सिंह, शिव, महादेव, पचमुखी रुद्राक्ष।

पञ्चमुखी–(स० स्त्री०) हुड़हुल का फूल, पार्वती।

पञ्चमुद्रा–(सं० स्त्री०) पूजा विधि में करने की पाच प्रकार की मुद्रा यथा–आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, सम्बोधिनी और सन्मुखी करणी।

पञ्चयाम–(स०पु०) दिवस, दिन।

पञ्चरत्न–(स०नपु०) पाच प्रकार के रत्न, कुछ लोग–सोना, हीरा, नीलम लाल और मोती को पञ्चरत्न कहते हैं, कुछ लोग–मोती, मूगा, वैक्रान्त, हीरा और पन्ना को पञ्चरत्न में गिनते हैं।

पञ्चरश्मि–(स० पु०) आदित्य, सूर्य–जिसकी किरणो मे पिंगल, शुक्ल, नील पीत और लोहित ये पाच रग हैं।

पञ्चरसा–(स० स्त्री०) आमला, हरीतकी, हरें।

पञ्चरात्र–(सं०नपु०) पाच रात में होने वाला यज्ञ, पाच रात।

पञ्चराशिक–(स० पु०) गणित में एक प्रकार का हिसाब जिसमें चार ज्ञात राशियो से पाचवीं निकाली जाती है।

पञ्चरीक–(स० पु०) सगीत में एक ताल का नाम।

पञ्चल–(स० पुं०) सकरकन्द।

पञ्चलवण–(सं० नपु०) वैद्यक के अनुसार पाच नमक यथा–काच, सेंधा, समुद्र, विट् और साचर।

पञ्चलोकपाल–(सं०पु०) पाच लोकपाल यथा–विनायक, दुर्गा, वायु और दोनों अश्विनी कुमार।

पञ्चलोह–(स०नपु०) सोना, चादी, तावा, सीसा और रागा ये पाच धातु पचलोह कहलाते हैं।

पञ्चवक्त्र–(स०पु०) शिव, महादेव।

पञ्चवटी–(स० स्त्री०) दण्डकारण्य का एक वन जहा वनवास के समय श्री रामचन्द्र रहते थे।

पञ्चवदन–(स०पु०) शिव, महादेव।

पञ्चवर्ग–(सं०पु०) पाच प्रहर में होने वाला एक यज्ञ।

पञ्चवर्ण–(स०नपु०) प्रणव के पाच वर्ण यथा—अ, उ, म, नाद और विन्दु।

पञ्चवर्णक–(स०पुं०) धतूरे का पेड़।

पञ्चवाण–(स० पुं०) कामदेव के पाच बाण।

पञ्चवायु–(स०पु०) शरीर में स्थित—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये पाच वायु।

पञ्चवार्षिक–(स०वि०) पाच बरस का।

पञ्चविध–(स०वि०) पाच प्रकार का।

पञ्चवृत्ति–(स० स्त्री०) पातञ्जलि के अनुसार मन की पाच वृत्ति यथा—प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति।

पञ्चशर–(सं० पु०) कन्दर्प, कामदेव, कामदेव के पाच बाण।

पञ्चशः–(स०अव्य०) पाच पाच करके।

पञ्चशाख–(सं०वि०) पनशाखा, जिसमें पाच बत्तिया हों।

पञ्चशिख–(स० पु०) सिंह, एक मुनि का नाम जो साख्य शास्त्र के प्रधान आचार्य थे।

पञ्चशीर्ष–(स०पु०) एक प्रकार का सर्प

पञ्चशुक्ल–(सं०पु०) एक प्रकारका कीड़ा

पञ्चसन्धि–(स० स्त्री०) व्याकरण में सन्धि के पाच भेद।

पञ्चस्नेह–(स०पु०) घी, तेल, चर्बी, मज्जा और मोम।

पञ्चाक्षर–(स०पु०) प्रणव, पाच अक्षर का मन्त्र।

पञ्चाग्नि–(स०नपु०) पाच प्रकार की अग्नि यथा–अन्वाहार्यपचन, गार्हपत्य, सभ्य, आहवनीय और आवसथ्य।

पञ्चाङ्ग–(स० नपु०) किसी वृक्ष की छाल, पत्ता, फूल, फल और जड़, पुरश्चरण विशेष—जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मण भोजन, ज्योतिष के अनुसार वह पत्रिका जिसमें वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण लिखे हों, कछुआ, एक प्रकार का घोड़ा, वह प्रणाम जो बाहु, जानु, मस्तक, वाक्य और दृष्टि द्वारा किया जावे।

पञ्चाङ्गी–(स० स्त्री०) हाथी की कमर में बाँधने का रस्सा।

पञ्चाङ्गुरि–(सं०वि०) पाच अगुलियो का (स्त्री०) हाथ।

पञ्चाङ्गुल–(स०वि०) जो पाच अगुल का हो (पु०) तेजपत्ता, रेंड़।

पञ्चातप–(स०पु०) धूपमें बैठकर अपने चारो ओर अग्नि रखकर तपस्या।

पञ्चानन–(स० पु०) शिव, महादेव, सिंह, सिंह राशि, सगीत में स्वर साधन की एक रीति।

पञ्चाननी–(स०स्त्री०) शिव की पत्नी, दुर्गा

पञ्चामृत–(स० नपु०) एक स्वादिष्ट द्रव्य जो घी, दूध, दही, मधु और चीनी मिलाकर बनाया जाता है।

पञ्चायत–(हिं०पु०) भारतवर्ष की ग्राम्य विचारसभा, जो आपस के झगडे निबटाती है।

पञ्चायुध–(सं०पु०) विष्णु का एक नाम

पञ्चाल–(स०पुं०) एक देश का नाम।

पञ्चालिका–(स० स्त्री०) पुतली, गुड़िया।

पञ्चाली–(स०स्त्री०) गुड़िया, द्रौपदी।

पञ्चावयव–(स० पु०) न्याय के पाच अवयव यथा प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

पञ्चाशिका–(स०स्त्री०) वह पुस्तक जिसमें पचास श्लोक या कविता हों।

पञ्चास्य-(स०पु०) सिंह, शिव, महादेव।
पञ्चिका-(स० स्त्री०) पाच खण्ड या अध्यायों का समूह।
पञ्चेन्द्रिय-(स०नपु०) पाच ज्ञानेन्द्रिया यथा श्रोत्र, त्वक्, नेत्र, रसना और घ्राण तथा पाच कर्मेन्द्रिया यथा-वाक्, पाणि, पायु, पाद और उपस्थ।
पञ्चेषु-(स०पु०) कामदेव के पाच बाण।
पञ्चोदन-(स० पु०) एक यज्ञ का नाम।
पञ्जर-(स०नपु०) शरीर की हड्डियों का समूह, अस्थिपञ्जर, शरीर, देह, चिड़िया का पिंजड़ा, कलियुग।
पञ्जराखेट-(स० पु०) मछली पकड़ने का टोकरा।
पञ्जाव-देखो पजाव।
पञ्जि-(स० स्त्री०) पजिका, पचाङ्ग।
पञ्जिका-(स० स्त्री०) रूई की प्योनी, तिथि वार आदि पञ्चाङ्ग युक्त पत्रिका।
पट-(सं० पु० नपु०) वस्त्र, कपड़ा, चित्र बनाने का कागज या कपड़ा, लकड़ी धातु आदि का वह पत्र जिसपर चित्र बनाया जाता हैं, वह चित्र जो बदरिकाश्रम, जगन्नाथपुरी आदि में यात्रियों को मिलता है, छान, छप्पर, वहली के ऊपर डालने का छप्पर, आड़, परदा, चिक, कपास, तृण, चिरौंजी का वृक्ष, (हिं० पु०) किवाड़ा, सिंहासन, चिपटी चौरस भूमि, पालकी का सरकौवाँ दरवाजा, कुश्ती का एक पेंच, टप्पा, टप् का शब्द, (वि०) ऐसी स्थिति जिसमें पेट जमीन पर हो तथा पीठ आकाश की ओर (क्रि०वि०) तुरत,शीघ्र, फौरन्.
पट खुलना-देवता के दर्शन के लिये मन्दिर का दरवाजा खुलना, पट पड़ना-मन्द होना, रुक जाना, न चलना।
पटइन-(हिं०स्त्री०) पटहारे जाति की स्त्री।
पटक-(स० पु०) शिविर, तबू सूती, कपड़ा।
पटकन-(हि० स्त्री०) पटकने की क्रिया या भाव, चपत, तमाचा, छोटा डडा या छड़ी।
पटकना-(हि०क्रि०) किसी वस्तु को जोर के साथ ऊचे स्थान से नीचे को झोक से गिराना, किसी बैठे या खड़े हुए मनुष्य को ज़ोर से नीचे को गिराना, कुश्ती में पछाड़ना या गिरा देना, शब्द करते हुए किसी वस्तु का फटना, अन्न का भींग कर सिकुड़ना, पचकना, किसी पर कोई काम पटकना-जिस काम को करने की किसी को इच्छा हो वह उसके सपुर्द करना।
पटकनिया-(हि० स्त्री०) पटकने की क्रिया या भाव, पटकान, भूमि पर गिर कर लोटने की क्रिया, पछाड़, लोटनिया
पटकनी-(हिं०स्त्री०) देखो पटकनिया।
पटका-(हिं० पु०) पेट में बाँधने का रूमाल या दुपट्टा, कमरबद, कमरपेंच, दीवार में जड़ी हुई पट्टी या बन्द।
पटकान-(हि०स्त्री०) देखो पटकबियाँ।
पटकार-(सं०पु०) कपड़ा बुनने वाला, जुलाहा, चित्रकार।
पटकुटी-(स० स्त्री०) कपडे का घर, तबू, खेमा।
पटच्चर-(स०नपु०) पुराना कपड़ा,चीर।
पटड़ी-(हि०स्त्री०) देखो पटरी।
पटतर-(हि० पु०) तुल्यता, समानता, समता, सादृश्य, उपमा।
पटतरना-(हि०क्रि०) बराबर ठहराना, उपमा देना।
पटतारना-(हिं०क्रि०)असमतल भूमि को समतल करना, पड़तारना, भाला आदि शस्त्र को किसीके ऊपर चलाने के लिये थामना या खींचना।
पटताल-(हिं०पु०)मृदग का एक ताल।
पटद-(स०पु०) कर्पास, कपास, रुई।
पटधारी-(हिं०वि०) जो वस्त्र पहिरे हो (पु०) तोशक खाने का अधिकारी।
पटना-(हि० क्रि०) समतल या चौरस होना, पक्की या कच्ची छत बनाना, खेत आदि का सींचा जाना, किसी वस्तु से किसी स्थान का परिपूर्ण होना, घर का दूसरा खण्ड बनाया जाना, दो मनुष्यो के विचार में समानता होना, मन मिलना, लेन देन,बेंचा बिक्री आदि में मूल्य आदि का स्थिर होना, गाढ मैत्री होना, ऋण का चुकता हो जाना।
पटना-विहार प्रान्त का एक प्रधान नगर इसका प्राचीन नाम पाटलिपुत्र था
पटनिया-(हिं० वि०) पटना नगर में बनी हुई, पटना नगर से सबध रखने वाली।
पटनी-(हिं०स्त्री०) कोठे के नीचे का कमरा, इस्तेमुरारी पट्टे पर मिली हुई जमीन, कोई वस्तु रखने के लिये दो खूटियों पर रक्खी हुई पटरी।
पटपट-(हि०स्त्री०) किसी हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द जो बार बार होवे,(क्रि०वि०)पट पट शब्द करता हुआ
पटपटाना-(हि०क्रि०) भूख प्यास अथवा सरदी गरमी के कारण अधिक कष्ट उठाना, बुरा हाल होना, किसी वस्तु में से पट् पट् शब्द निकलना, पछताना, शोक या दुःख करना, किसी वस्तु को पीट कर पटपट शब्द उत्पन्न करना।
पटपर-(हि०वि०) समतल, चौरस (पु०) नदी के आसपास की वह जमीन जो वर्षाकाल में प्रायः डूबी रहती है और जिसमें केवल रबी की फस्ल होती है, ऐसा स्थान जहाँ बनस्पति न उपजें, उजाड़ स्थान।
पटबधक-(हिं० पु०) एक प्रकार का रेहन जिसमें महाजन रेहन की हुई सम्पत्ति के आय से सूद लेने के बाद जो रकम बढ़ती है उसको मूल ऋण में काटता जाता है और सपूर्ण ऋण चुक जाने पर वह सम्पत्ति उसके मालिक को लौटा देता है।
पट बीजना-(हिं०पु०) खद्योत, जुगनू।
पटभ्रम-(हि०वि०) वह जो भूख के मारे अन्धा हो गया हो।
पट मञ्जरी-(स० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी का नाम।
पट मण्डप-(स० पु०) तबू, खेमा, कपडे का मकान।
पटमय-(स०नपु०) तम्बू,खेमा, लहँगा।

पटरा-(हिं०पु०) लकड़ी का लँबा चौरस तख्ता, पल्ला, पाटा, धोबी का पाट, हेंगा, पटरा कर देना-मार मार कर जमीन पर लेटा देना।

पटरानी-(हिं० स्त्री०) किसी राजा की सबसे बड़ी या मुख्य रानी जिसको राजा के साथ सिंहासन पर बैठने का अधिकार हो।

पटरी-(हिं०स्त्री०) काठ का लंबा पतला तख्ता, लिखने की तख्ती या पटिया,नरिया जमाने का चौड़ा खपड़ा, सड़क के दोनों किनारों पर मनुष्यों के चलने के लिये बना हुआ ऊंचा रास्ता, बगीचों में कियारियों के चारों ओर चलने का रास्ता,रविश, तावीज,जन्तर, स्त्रियों का हाथ में पहिरने का एक आभूषण, नहर के दोनों ओर के रास्ते, कपड़े के किनारों पर सीने की कलाबत्तू की बनी हुई पट्टी।

पटल-(सं० नपुं०) छान छप्पर, लाव लश्कर, लवाजमा, मोतियाबिन्द नामक आँख का रोग, तिलक, टीका, पुस्तक का एक भाग, परिच्छेद, समूह, ढेर, आँख का परदा, लकड़ी का चौरस टुकड़ा, पटरा, तख्ता, आवरण, परत, तह, तबक, ग्रन्थ, वृक्ष, परवल की लता, कसौंदे का वृक्ष।

पटलक-(सं० पु०) राशि, समूह, ढेर, आवरण, परदा, झिलमिली, बुरका, छोटी सन्दूक।

पटलता-(सं० स्त्री०) अधिकता।

पटवा-(हिं०पु०) वह जो सूत या रेशम में गहनों को गूथता है, पटहरा, पटसन, पाट, नारंगी के रंग का बैल।

पटवाद्य-(सं० पुं०) झांझ की तरह का एक प्राचीन बाजा।

पटवाना-(हिं० क्रि०) पाटने का काम दूसरे से कराना,ढँपवाना, छत ढलवाना, गड्ढों को मिट्टी आदि से भरवाना, पानी से तर कराना, दाम चुकवा देना, शान्त करना, दूर कर देना।

पटवाप-(सं० पु०) तम्बू, खेमा।

पटवारगरी-(हिं० स्त्री०) पटवारी का काम या पद।

पटवारी-(हिं० पु०) वह कर्मचारी जो गाँव की ज़मीन, उसकी लगान आदि का हिसाब किताब रखता हो, (स्त्री०) कपड़ा पहिराने वाली लौंडी।

पटवास-(सं० पु०) वस्त्र गृह, शिबिर, तम्बू, खेमा, साड़ी, लहंगा वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य।

पटवेश्म-(सं०नपुं०)शिविर, तम्बू खेमा।

पटसन-(हिं० पु०) एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशों में रस्सी, बोरे, टाट आदि बनाये जाते हैं, पाट, जूट।

पटहसिका-(सं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।

पटह-(सं०पु०, नपुं०) दुदुभी, नगाड़ा, बड़ा ढोल।

पटहता-(सं०स्त्री०) नगाड़े की ध्वनि।

पटहा-(हिं० पु०) देखो पटह।

पटहार-(हिं० पु०) जो रेशम के डोरे बनाता हो, रेशम के डोरे से गहना गूथने वाला (पु०) पटवा नामक जाति।

पटा-(हिं० पु०) एक प्रकार की लोहे की पट्टी जो किर्च के आकार की होती है जिससे लोग तलवार की काट और बचाव सीखते हैं, चटाई, लंबी धारी, सौदा, लेनदेन, लगाम की मुहरी, अधिकार पत्र, देखो पट्टा।

पटाई-(हिं० स्त्री०) पटाने की क्रिया या भाव, सिंचाई, आबपाशी, सिंचाई का वेतन, पाटनेकी क्रिया या मज़दूरी।

पटाक-(हिं० पु०) किसी छोटी वस्तु के गिरने का शब्द।

पटाका-(हिं०पु०) पट या पटाक शब्द, एक प्रकार की आतिशबाजी जिसके छूटने पर पटाक शब्द निकलता है, कीड़े या पटाके का शब्द, थप्पड़, चमाचा।

पटाखा-(हिं० पु०) देखो पटाका।

पटाना-(हिं०क्रि०)पटानेका काम कराना, गड्ढे को पाटकर भूमि समतल करना, छत को पीटकर बराबर कराना, पाटन बनवाना, मूल्य स्थिर करना, ऋण चुका देना, अदा करना।

पटापट-(हिं० क्रि०वि०) निरन्तर पट पट शब्द करते हुए (स्त्री०) लगातार पट पट शब्द होना।

पटापटी-(हिं०स्त्री०) वह वस्तु जो अनेक रंगों से रंगी हुई हो।

पटार-(हिं०स्त्री०) पिंजड़ा, पेटी, पिटारा, रेशम की डोरी।

पटालुका-(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक।

पटाव-(हिं०पु०) पाटने की क्रिया, पटा हुआ स्थान, पाटने का भाव, दीवारों को पाट कर बनाया हुआ ऊंचा स्थान, पाटन, लकड़ी का वह मज़बूत पटरा जिसको दरवाजे के ऊपर रख कर दीवार उठाई जाती है, भरेठा।

पटिका-(सं०स्त्री०) यवनिका, परदा।

पटिया-(हिं० स्त्री०) पत्थर का लंबा चौरस टुकड़ा, काठ का छोटा तख्ता, खाट या पलंग की पट्टी, पाटी, हेंगा, मांग, पट्टी, कम्बल या टाट की पट्टी, लिखने की पट्टी या तख्ती, सकरा लंबा खेत।

पटी-(सं०स्त्री०) कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा, परदा, नाटक का पर्दा, पटका, कमरबन्द।

पटीमा-(हिं० पु०) छीपियों का वह तख्ता जिस पर वे कपड़ा बिछाकर वस्त्र छापते हैं।

पटीर-(सं०नपुं०) मूली, ऊंचाई, मेघ, बादल, वंशलोचन, चन्दन, खैर, कन्दर्प, उदर, पेट, बरगद का वृक्ष, चालनी।

पटीलना-(हिं०क्रि०) किसी को भुलावे की बातें कहकर अपने अनुकूल करना, ढंग पर लाना, नीचा दिखाना, परास्त करना, कमाना, प्राप्त करना, मारना, पीटना, पूर्ण करना, सफलतापूर्वक कोई काम समाप्त करना, ठगना, छलना।

पटु-(सं०वि०) दक्ष, चतुर, रोगरहित, स्वस्थ, तीक्ष्ण, तेज, मनोहर, प्रकाशित, कठोर हृदय का, उग्र, धूर्त, (नपुं०)

नमक, परवल, करेला, जीरा, वच, नकछिकनी, चीनी कपूर।
पटुआ–(हिं० पु०) देखो पटुवा।
पटुक–(सं०पु०) पटोल, परवल।
पटुका–(हिं० पु०) गले में डालने का वस्त्र, चादर, धारीदार चारखाना।
पटुता–(स० स्त्री०) दक्षता, चतुराई, होशियारी, प्रवीणता।
पटुत्व–(स० नपु०) पटुता, दक्षता।
पटुपत्रिका–(सं०स्त्री०) पिण्ड खजूर।
पटुपर्णी–(स०स्त्री०) सत्यानाशी, कटेहरी।
पटुरूप–(स० वि०) बहुत चतुर, बड़ा चालाक।
पटुली–(हिं० स्त्री०) झूले के रस्से पर रखने की काठ की पटरी, गाड़ी या छकडे में जड़ा हुआ काठ का पटरा, चौकी, पीढा।
पटुवा–(हिं० पु०) पटसन, जूट, करेमू का शाक।
पटूका–(हिं०पु०) देखो पटका।
पटेबाज़–(हिं०पुं०) वह जो पटा खेलता हो, पटे से लड़ने वाला, एक प्रकार का खिलौना, व्यभिचारी और धूर्त मनुष्य, कुलटा चतुर स्त्री।
पटेर–(हिं०स्त्री०) सरकण्डे की जाति का एक पौधा जो जल में होता है।
पटेरक–(सं०नपुं०) मुस्तक, मोथा।
पटेरा–(हिं० पु०) देखो पटेला, पटैला।
पटेल–(हिं०पु०) गाँव का मुखिया या चौधरी, नवरदार, दक्षिण भारत की एक उपाधि।
पटेलना–(हिं० क्रि०) देखो पटीलना।
पटेला–(हिं० पु०) वह नाव जिसका विचला हिस्सा पटा हुआ हो, एक प्रकार की घास जिसकी चटाइया बनती हैं, सिल, हेंगा, पटिया, कुश्ती की एक पेंच।
पटेली–(हिं०स्त्री०) छोटा पटेला।
पटैत–(हिं० पुं०) पटेबाज, पटा खेलने या लड़ने वाला।
पटैला–(हिं० पु०) लकड़ी का किवाड़ बन्द करने के लिये लगा हुआ चिपटा डंडा, ब्योंड़ा, डंडा।
पटोर–(हिं०पुं०) पटोल, रेशमी कपड़ा।
पटोरी–(हिं०स्त्री०) रेशमी साड़ी।
पटोल–(स० नपु०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, परवल की लता।
पटोलक–(स० पुं०) शुक्ति, सीपी, सुतुही।
पटोलिका–(स० स्त्री०) सफेद फूल की तरोई।
पटोनी–(हिं० पु०) नाविक, मल्लाह, माझी।
पटोहाँ–(हिं० पु०) वह कमरा जिसके ऊपर दूसरा कमरा हो, पटबन्धक।
पट्ट–(सं० नपु०) नगर, शहर (पुं०) पहिया, घाव पर बाँधने की पट्टी, पाठ, ढाल, दुपट्टा, ढाल, राजसिंहासन, पीढा, पाटा, शिला, पगड़ी, रेशम, लाल रेशमी पगड़ी, चौरहा, (वि०) प्रधान।
पट्टक–(सं० पु०) लिखने की पटिया, तख्ती, चित्रपट, ताम्रपट जिस पर राजा का आदेश खोदा जाता था, पटका, कमरबन्द।
पट्टदेवी–(हिं० स्त्री०) राजा की प्रधान स्त्री, पटरानी।
पट्टदोल–(स० स्त्री०) कपडे का बना हुआ झूला।
पट्टन–(स०नपु०) पत्तन, नगर, बड़ा शहर।
पट्टमहिषी–(स० स्त्री०) राजा की प्रधान स्त्री, पटरानी।
पट्टरञ्ज–(सं० नपु०) पत्तरग, बक्कम।
पट्टराज्ञी–(स०स्त्री०) पटरानी।
पट्टा–(सं० पु०) किसी भूमि अथवा स्थावर सम्पत्ति के उपयोग का अधिकार पत्र जो स्वामी की ओर से असामी ठीकेदार या किरायेदार को लिखा जाता है, एक आभूषण जिसको स्त्रिया चूड़ियों के बीच में पहिरती हैं, पीढा, अधिकारपत्र, सनद, चपरास, पुरुष के सिर पर के बाल जो पीछे की ओर गिरे रहते हैं और बराबर कटे होते हैं, कामदार जूतियों पर का कपड़ा जिसपर काम बना होता है, एक प्रकार की तलवार, विवाह के समय देने का वह नेग जो नाई धोबी आदि को वर पक्ष से दिलवाया जाता है, चमडे का कमरबन्द, घोडे के माथे पर पहिराने का गहना, कुत्ते-बिल्ली आदि के गले में बाँधने की पट्टी।
पट्टिका–(स० स्त्री०) पठानी लोध, एक विचा लवा कपड़ा, चित्रपट, छोटी तख्ती, रेशमी फीता।
पट्टिकार–(स० वि०) रेशमी कपड़ा बुनने वाला।
पट्टिश–(स० पु०) तलवार के समान एक अस्त्र।
पट्टी–(स० स्त्री०) पठानी लोध, एक गहना जो पगड़ी में लगाया जाता है, तोबड़ा, घोडे के सीने में बाँधने की रस्सी, घोडे की सीधी दौड़ान, सरपट चाल, नेग, औवाब, किसी ज़मीदारी का वह भाग जो एक पट्टीदार के अधिकार में हो, छत या छाजन में लगाने का वल्ला, हंडे का किनारा, नाव के बीच में लगाने का तख्ता, टाट बनाने की सन की धज्जी, तिल या चने की दाल चिपका कर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई, सूती या ऊनी वस्त्र की धज्जी, पंक्ति, कतार, पांति, पटिया, लिखने की तख्ती, खाट की लवे बल में लगी हुई लकड़ी, धातु कागज या कपडे की धज्जी, घाव पर बाँधने की कपडे की धज्जी, बहकाने वाली शिक्षा, उपदेश, सिखावन, पाठ, सबक, माग के दोनों ओर के बैठाये हुए बाल, हिस्सा, विभाग।
पट्टीदार–(हिं० पु०) वह व्यक्ति जिसका किसी सम्पत्ति में हिस्सा हो, हिस्सेदार, बराबर का अधिकारी, सयुक्त सम्पत्ति के अंश का स्वामी, वह जिसको हिस्सा बाँटने का अधिकार हो।
पट्टीदारी–(हिं०स्त्री०) पट्टी होने का भाव, अनेक विभाग होना, भाईचारा, वह ज़मीदारी जिसमें अनेक हिस्सेदार हों।
पट्टीवार–(हिं० क्रि० वि०) हर पट्टी का

हिसाब किताब अलग अलग करते हुए, (वि०) अलग अलग पट्टी के अनुसार तैयार किया हुआ।
पट्टीश-(स०पुं०) शिव, महादेव।
पट्टू-(हिं० पु०) एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में बुना जाता है, एक प्रकार का धारीदार चारखाना, शुक, तोता।
पट्टे पछाड़-(हिं०पु०)कुश्ती की एक पेंच
पट्टे बैठक-(हिं०पु०)कुश्ती की एक पेंच
पट्टेत-(हिं० पु०) पटेत, मूर्ख, एक प्रकार का कबूतर।
पट्टोपाध्याय-(स० पु०) दान पत्र को लिखने वाला।
पठ्यमान-(हिं०वि०) पढे जाने योग्य।
पट्ठा-(हिं०पु०) तरुण, जवान, नवयुवक, वह बच्चा जिसमें यौवन का आगमन हो चुका हो, कुश्तीबाज़, लड़ाका, स्नायु, दलदार मोटा पत्ता, एक प्रकार का चौड़ा गोटा, बेल बनाई हुई गोंट, जाँघ के जोड़ का स्थान, मोटी नस, पट्ठा चढ़ना-नस पर नस का चढ़ जाना
पट्ठापछाड़-(हिं० वि०) हृष्ट पुष्ट और ताकतवर।
पट्ठी-(हिं०स्त्री०) देखो पठिया।
पठक-(स०पु०) पाठक, पढने वाला।
पठन-(स० नपु०) अध्ययन, पढना।
पठनीय-(स०वि०) पढने योग्य।
पठमञ्जरी-(स० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
पठ बेटा-(हिं०पु०) पठान का पुत्र।
पठवना-(हिं०क्रि०) भेजना।
पठवाना-(हिं०क्रि०) भेजवाना, दूसरे से भेजने का काम कराना।
पाठन-(हिं०पु०)भारतवर्ष के सीमा प्रान्त में रहने वाली एक मुसलमानी धर्म मानने वाली जाति।
पठाना-(हिं०क्रि०) भेजना, पठवाना।
पठानिन,पठानी-(हिं०स्त्री०)पठान की स्त्री
पठानी लोध-(हिं०पु०) एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फूल औषधियों में प्रयोग होते हैं तथा छिलका रंग बनाने के काम में आता है।
पठावन-(हिं० पुं०) सन्देश ले जाने वाला, दूत।
पठावनि,पठवनी-(हिं० स्त्री०) किसी मनुष्य को कहीं कोई वस्तु लेकर अथवा सन्देश पहुँचाने के लिये भेजना, इस कार्य की मज़दूरी।
पठावर-(स०स्त्री०) एक प्रकार की घास।
पठित-(स० वि०) वाचित, अधीत, शिक्षित, पढा हुआ, पढा लिखा।
पठितव्य-(स०वि०) पढने योग्य।
पठिति-(स०स्त्री०)शब्दालङ्कारका एक भेद
पठियर-(हिं०स्त्री०) वह बल्ला या पटिया जो कुवें के मुख पर बीचोबीच रख दी जाती है।
पठिया-(हिं० स्त्री०) यौवन प्राप्त स्त्री, जवान पुष्ट स्त्री।
पठोर-(हिं०स्त्री०) बिना ब्याई हुई जवान बकरी।
पठौनी-(हिं०स्त्री०) किसीको कुछ देकर कहीं भेजने की क्रिया या भाव।
पठ्यमान-(सं०वि०) जो पढा जाता हो।
पठछती-(हिं०स्त्री०) लकड़ी की पाटन, टाँड़, भीत की रक्षा के लिये लगाने वाला छप्पर।
पड़त, पड़ता-(हिं० पु०) वह दाम जो किसी वस्तु को तैयार करने में या खरीदने में लगा हो, सामान्य दर, औसत, शरह, लागत, लगान की दर, पड़ता खाना-खर्चा और मुनाफा मिल जाना, पड़ता फैलाना- मुनाफा रखते हुए किसी वस्तु का दाम स्थिर करना।
पड़ताल-(हिंस्त्री०) अनुसन्धान, छानबीन, गाँव या शहर के पटवारी द्वारा खेतों की फस्ल आदि विषय की जाँच।
पड़तालना-(हिं० स्त्री०) अनुसन्धान करना, छानबीन करना।
पड़ती-(हिं०स्त्री०) वह ज़मीन जो कुछ दिनों से जोती बोई न गई हो, पड़ती जदीद-वह जमीन जो एक साल तक जोती बोई न गई हो, पड़ती, कदीम-वह ज़मीन जो अनेक वर्षों से जोती बोई न गई हो।
पड़ना-हिं० क्रि०) पतित होना, गिरना, बिछाया जाना, डाला जाना, अधिक इच्छा होना, घुन लगना, देशान्तर होना, मैथुन करना, उत्पन्न होना, पैदा होना, उपस्थित होना, संयोग वश आ पड़ना, जाच करने पर ठहरना, बीमार होना, पड़ता खाना, अनिष्ट अवस्था को प्राप्त होना, हस्तक्षेप करना, दखल देना, विश्राम करने के लिये लेटना, डेरा डालना, ठहरना, रास्ते में मिलना, आय प्राप्ति आदि का औसत होना, ऊचे स्थान से नीचे को आना,पाया जाना, किसी पर पड़ना-आपत्ति आना, पड़ा होना-एकही स्थान पर बने रहना, पड़े रहना-बिना कुछ काम किये आलसी बने रहना, तुमको क्या पड़ी है ?-तुमसे क्या मतलब ?
पड़पड़-(हिं० स्त्री०) निरन्तर पड़ पड़ शब्द होना।
पड़पड़ाना-(हिं० क्रि०) पड़ पड़ शब्द होना, तीक्ष्ण वस्तु के स्पर्श से जलन सी मालूम होना, चरपराना।
पड़पड़ाहट-(हिं० स्त्री०) पड़ पड़ाने की क्रिया या भाव, चरपराहट।
पड़पोता-(हिं०पु०) प्रपौत्र, पोते का पुत्र
पड़म-(हिं०पु०) एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा जो खेमा आदि बनाने के काम में आता है।
पड़वा-(हिं०स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की पहिली तिथि, (पु०) भैंस का बच्चा।
पड़वाना-(हिं० क्रि०) गिरवाना।
पड़वी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की ऊख जो बैसाख या जेठ में बोई जाती है।
पड़ाइन-(हिं० स्त्री०) देखो पडाइन।
पड़ाका-(हिं० पु०) देखो पटाका।
पड़ाना-(हिं०क्रि०) झुकाना, गिराना।
पड़ापड़-(हिं०क्रि० वि०) देखो पटापट।
पड़ाव-(हिं० पुं०) यात्रा के बीच का

ठहराव, वह स्थान जहा यात्री ठहरते हो चट्टी, टिकान ।
पड़िया-(हिं०स्त्री०) भैंस का मादा बच्चा ।
पड़ियाना-(हिं०क्रि०) देखो भैंसाना ।
पड़िवा-(हिं०स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की पहिली तिथि प्रतिपदा ।
पड़ोस-(हिं०पु०) किसी के समीप का घर, आसपास का स्थान, समीपवर्ती स्थान , पड़ोस करना-पड़ोसमें बसना
पड़ोसी-(हिं०पु०) प्रति वासी, पड़ोस में रहने वाला ।
पड़ौसी-(हिं०पु०) देखो पड़ोसी ।
पढत-(हिं० क्रि०) पढने की क्रिया या भाव, लगा हुआ मन्त्र, जादू , पढता-पढने वाला ।
पढना-(हिं० क्रि०) किसी पुस्तक लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी हुई बात का ज्ञान हो जावे, उच्चारण करना, बॉचना, धारे से कहना नया सबक लेना, स्मरण रखने के लिये बारबार उच्चारण करना, मन्त्र फूकना, जादू करना, अध्ययन करना , शिक्षा प्राप्त करना, तोता मैना आदि का मनुष्यों के सिखलाये हुए शब्दों को उच्चारण करना , लिखना पढना-शिक्षा प्राप्त करना ।
पढनी-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान ।
पढनीउड़ी-(हिं०स्त्री०) उछल कर लॉंघने एक कसरत ।
पढवाना-(हिं० क्रि०) किसी से पढने का काम कराना, बॅचवाना, किसी के द्वारा शिक्षा दिलाना ।
पढवैया-(हिं०पु०) शिक्षार्थी, पढने वाला
पढाई-(हिं० स्त्री०) विद्याभ्यास, पठन, अध्ययन, पढने का काम, पाठन, पढाने का काम, पढने का ढग, पढाने के बदले में दिया जाने का धन, अध्यापन शैली, पढौनी ।
पढाना-(हिं० क्रि०) अध्यापन करना, शिक्षा देना, सिखाना, समझाना, कोई कला ,सिखलाना, तोता मैना आदि पक्षियों को बोलना सिखलाना ।

पढिना-(हिं०पु०) मीठे,तथा खारे पानी में रहने वाली एक प्रकार की बिना सेहरे की मछली ।
पढया-(हिं०पु०) पाठक, पढने वाला ।
पण-(सं०पु०) तावे का टुकड़ा जिसका व्यवहार प्राचीन काल में सिक्के के समान किया जाता था,वेतन, तनखाह, नौकरी, स्तुति, प्रशसा, प्राचीन काल की एक माप जो एक मुट्ठी अन्न के बराबर होती थी, घर,विष्णु, बेंचाविक्री करने वाला; द्यूत, जुआ, ग्लह, शर्त, बाजी, मूल्य, दाम, धन, सम्पत्ति, जायदाद, प्रतिज्ञा, शर्त, कौल, वह वस्तु जिसके देने का इकरार हो, व्यापार, व्यवहार, क्रय विक्रय की वस्तु, कोई कार्य जिसमें बाज़ी लगाई गई हो ।
पणग्रन्थि-(सं० पु०) हाट, बाज़ार ।
पणन-(सं० नपु०) वेचने की क्रिया या भाव , व्यापार करने की क्रिया बाज़ी लगाना ।
पणनीय-(सं०वि०) खरीदने या बेंचने योग्य ।
पणफर-(सं० नपु०) ज्योतिष की जन्म कुण्डली का दूसरा, पाचवा और ग्यारहवा घर ।
पणव-(सं० पु०) छोटा नगाड़ा, छोटा ढोल, एक वर्णवृत्त का नाम ।
पणबन्ध-(सं० पु०) बाज़ी या शर्त लगाना ।
पणश-(सं० पु०) कटहल ।
पणस-(सं०पु०) बिक्री की वस्तु, सौदा ।
पणसुन्दरी-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
पणस्त्री-(सं०स्त्री०) देखो पणसुन्दरी, रंडी
पणाङ्गना-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
पणायित-(सं०वि०) स्तुति किया हुआ, व्यवहार किया हुआ, खरीदा हुआ ।
पणि-(सं०स्त्री०) हाट, बाज़ार ।
पणित-(सं०वि०) व्यवहार किया हुआ, खरीदा हुआ ।
पणितव्य-(सं० वि०) प्रशसा करने योग्य, व्यवहार करने योग्य ।

पण्ड-(सं०पु०) क्लीब, नपुंसक, हिजड़ा (वि०) निष्फल ।
पण्डा-(सं०स्त्री०) तीक्ष्ण बुद्धि, शास्त्रज्ञान
पण्डित-(सं० पु०) शास्त्रज्ञ, जो शास्त्र को भली भांति जानता हो, विद्वान, विदग्ध, महादेव (वि०) चतुर, संस्कृत भाषा का विद्वान् ।
पण्डितता-(सं०स्त्री०) देखो पाण्डित्य ।
पण्डितराज-(सं० पु०) पण्डितों में श्रेष्ठ ।
पण्डिता-(सं० स्त्री०) विदुषी, विद्वान् महिला ।
पण्डिताइन-(सं०स्त्री०) देखो पण्डितानी
पण्डिताई-(हिं०स्त्री०) विद्वत्ता, पाण्डित्य ।
पण्डिताऊ-(हिं० वि०) पण्डितों के ढग का ।
पण्डितानी-(हिं०स्त्री०) पण्डित की स्त्री, ब्राह्मणी ।
पण्ड-(सं०वि०) मटमैला, पीला, सफेद ।
पण्य-(सं० वि०) खरीदने या बेंचने योग्य, व्यवहार करने योग्य, प्रशसा करने योग्य (पु०) व्यापार, सोदा, माल, हाट, बाजार, दूकान ।
पण्यदासी-(सं०स्त्री०) लौंडी, दासी,बॉदी
पण्यपति-(सं० पु०) बहुत बड़ा ,साहूकार, नगर सेठ ।
पाण्यफल-(सं०पु०) रोजगार में मुनाफा, नफा ।
पाण्यभूमि-(सं० स्त्री०) माल या सौदा इकट्ठा करने का स्थान,कोठी,गोदाम, गोला ।
पाण्यविलासिनी-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
पाण्य वीथिका-(सं०स्त्री०) हाट, बाज़ार।
पाण्यशाला-(सं० स्त्री०) विक्रय गृह, दूकान ।
पाण्य स्त्री-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
पाण्याङ्गना-(सं० स्त्री०) देखो पण्य स्त्री ।
पाण्याजीव-(सं०पु०) बनिया, सौदागर ।
पतखा-(हिं०पु०) एक प्रकार का बगला।
पतग-(हिं०पु०) एक प्रकार का वृक्ष, बक्कम, (स्त्री०) हवा में ऊपर उड़ाने का एक खिलौना जो बॉस की तीलियों के ढॉंचे पर कागज़ चिपका कर बनाया

जाता है, कनकैया, गुड्डी, देखो पतङ्ग

पतंगछुरी-(हिं०स्त्री०) पिशुन, चुगुलखोर

पतंगबाज़-(हिं०पु०) पतग उड़ाने वाला, पतग का शौकीन।

पतगबाज़ी-(हिं० स्त्री०) पतग उड़ाने की कला।

पतंगसुत-(हिं० पु०) देखो पतङ्गसुत।

पतंगा-(हिं०पु०) फतिंगा, एक प्रकार का परदार कीड़ा, स्फुलिंग, चिनगारी, दीपक की वत्ती का वह अश जो जल कर गिर पड़ता है, फूल, गुल।

पत-(हिं० स्त्री०) लज्जा, आबरू, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, (पु०) पति, स्वामी, खाविन्द, पत उतारना-अपमान करना, पत-पानी-मान प्रतिष्ठा, पत रखना-इज्जत आबरू बचाना।

पतई-(हिं०स्त्री०) पत्र, पत्ती।

पतखोवन-(हिं० पु०) ऐसा कार्य करने वाला जिससे अपनी या दूसरे की बेइज्जती हो।

पतंग-(स० पु०) पक्षी, चिड़िया।

पतङ्ग-(सं० पु०) पक्षी, चिड़िया, सूर्य, फतिंगा, टिड्डी, एक प्रकार का धान, चिनगारी, एक गन्धर्व का नाम, जल महुआ, शरीर, नाव, एक पर्वत का नाम, पारा, एक प्रकार का चन्दन, बाण, अग्नि, घोड़ा, पिशाच, मक्खी, कृष्ण का एक नाम, प्रजापति के एक पुत्र का नाम।

पतङ्गम-(स० पु०) पक्षी, चिड़िया, शलभ, टिड्डी।

पतङ्गिका-(स० स्त्री०) एक प्रकार की मधुमक्खी।

पतङ्गी-(स०पु०) पक्षी, चिड़िया।

पतङ्गेन्द्र-(स० पु०) गरुड़।

पतझड़-(हिं० स्त्री०) वह ऋतु जिसमें वृक्षों की पत्तियां झड़ जाती हैं, माघ और फागुन का महीना, अवनति काल, नाश का समय।

पतझर, पतझार-(हिं०स्त्री०) देखो पतझड़

पतञ्चिका-(स०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।

पतञ्जलि-(स०पुं०) योगशास्त्र के प्रणेता, पाणिनिके महाभाष्य के प्रणेता।

पतत्प्रकर्ष-(स० पु०) काव्य में एक प्रकार का रस दोष।

पतत्र-(स० नपु०) पक्ष, पख, डैना, वाहन, सवारी।

पतत्रि-(सं० पु०) पक्षी, चिड़िया।

पतत्रि केतन-(स०पु०) गरुडध्वज, विष्णु

पतत्री-(स०पु०) पक्षी, चिड़िया।

पतत्रिराज-(स० पु०) पक्षिराज, गरुड़।

पतद्भीरु-(स०पु०) श्येन पक्षी, बाज।

पतन-(सं० नपु०) गिरने या नीचे आने का भाव, गिरना, नीचे धँसने की क्रिया, अवनति, अधोगति, नाश, मृत्यु, पाप, जातिच्युति, उड़ने की क्रिया या भाव, उड़ान, किसी नक्षत्र का अक्षाश, (वि०) गिरता हुआ, उड़ने वाला या उड़ता हुआ।

पतनशील-(स० वि०) जिसका पतन निश्चित हो, गिरने वाला।

पतना-(हिं० पु०) योनि का किनारा।

पतनारा-(हिं० पु०) परनाला, मोरी।

पतनीय-(स०वि०) पतित होने वाला, गिरने वाला (नपु०) पतित करने वाला पाप।

पतनोन्मुख-(स० वि०) जिसका पतन, अधोगति या विनाश समीप आता हो, जो गिरना चाहता है।

पतपानी-(हिं० पु०) प्रतिष्ठा, मान, लाज, आबरू।

पतम-(स० पु०) चन्द्रमा, पक्षी, चिड़िया फतिंगा।

पतयालु-(स०वि०) देखो पतनशील।

पतयिष्णु-(स० वि०) पतनशील, गिरने वाला।

पतर-(हिं०वि०) कृशा, पतला, (पु०) पत्तल, पत्ता।

पतरा-(हिं० पु०) पत्तल, सरसों का पत्ता (वि०) पतला।

पतरी-(हिं० स्त्री०) पत्तल।

पतरू-(स०वि०) पतनशील, गिरने वाला

पतला-(हिं० वि०) कृश, जो मोटा न हो, जिसका दल मोटा न हो, झीना, हलका, अधिक तरल, अशक्त, असमर्थ, हीन, कमजोर, पतला पड़ना-आपत्ति में पड़ना, पतला हाल-दुर्दशा।

पतलाई, पतलापन-(हिं०) पतला होने का भाव।

पतली-(हिं०स्त्री०) द्यूत, जुआ।

पतलून-(हिं०पु०) वह पायजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और जो बटन से बंद किया जाता है।

पतली-(हिं०स्त्री०) सरकडा, सरपत।

पतवर-(हिं० क्रि० वि०) पंक्ति के क्रम से, बराबर से।

पतवा-(हिं० पु०) एक प्रकार का मचान जिसपर बैठकर शिकार किया जाता है।

पतवार-(हिं०स्त्री०) नाव का वह तिकोना अग जो इसके पीछे की ओर लगा होता है जिसके द्वारा नाव मोड़ी और घुमाई जाती है, कर्ण, कन्हर।

पतवारी-(हिं०स्त्री०) ऊख का खेत।

पतवाल-(हिं०स्त्री०) देखो पतवार।

पता-(हिं० पु०) किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान का ज्ञान कराने वाली वस्तु, लक्षण आदि जिसके द्वारा उसको पा सकें, अनुसन्धान, खोज, रहस्य, गूढ तत्व, जानकारी, खबर, चिट्ठी के पीठ पर लिखी हुई पते की इबारत, पता ठिकाना-किसी वस्तु का स्थान तथा परिचय, पता निशान-जिन बातों से कुछ जाना जा सके, पतेकी बात-भेद खोलने की बात।

पताई-(हिं० स्त्री०) सूख कर झड़ी हुई पौधे की पत्तियां।

पताका-(स० स्त्री०) ध्वजा, निशान, झंडा, सौभाग्य, तीर चलाने में अगुलियों की विशेष स्थिति, दस खर्व की सख्या, पिंगल के अनुसार किसी लघु गुरु वर्ण के छन्द अथवा छन्दों का स्थान जानने की रीति, वह डड़ा जिसमें पता का पहिराई जाती है, नाटक में वह स्थान जहां एक पात्र कोई बात

सोच रहा हो और दूसरा पात्र आकर दूसरे विषय की कोई ऐसी बात कहे जिससे उसके चिन्तागत विषय का पोषण होता हो, पताका उड़ाना अधिकार हो जाना, प्रसिद्धि होना, विजयी होना, पताका गिरना-हार जाना।

पताकिक, पताकी-(स० वि०) पताका युक्त, झंडी उठाने वाला।

पताकिनी-(सं० स्री०) एक देवी का नाम, सेना।

पतार-(हिं०पु०) देखो पाताल, वन, जंगल।

पतारी-(हिं०स्री०)एक प्रकार का जलपक्षी

पताल-(हिं०पु०) देखो पाताल।

पताल आँवला-(हिं०पु०)एक प्रकार का पौधा जो औषधि में प्रयोग होता है।

पताल कुम्हड़ा-(हिं०पु०) एक प्रकार का जंगली पौधा जिसकी बेल शकरकन्द की लता की तरह जीन पर फैलती है और इसकी गाँठों में कन्द फूटते हैं।

पतालदंती-(हिं० पु०) वह हाथी जिसके दाँत नीचे की ओर झुक जाते हैं।

पतावर-(हिं० पु०) पेड़ के सूखे पत्ते।

पतासी-(हिं० स्री०) बढ़इयों की छोटी रुखानी।

पति-(सं०पु०) मूल, गति, दूल्हा, शौहर, स्त्री का विवाहित पुरुष, भर्ता, अधिपति, स्वामी, मालिक, प्रभु, ईश्वर, प्रतिष्ठा, मर्यादा, लज्जा।

पतिआना-(हिं० क्रि०) विश्वास करना, ठीक मानना।

पतिंवरा-(स० स्री०) स्वयवरा, जो स्त्री अपना पति स्वय चुन ले, कालाजीरा।

पतिआर-(हिं० पु०) विश्वास, एतबार।

पतिकामा-(स० वि०) स्वामी को चाहने वाली स्त्री।

पतिघातिनी-(स० स्री०) पति को मारने वाली स्त्री।

पतित-(स० वि०) चलित, गया हुआ, गलित, गिरा हुआ, नीतिभ्रष्ट, आचार च्युत, जाति बहिष्कृत, जातिसे निकाला हुआ, अति नीच, महापातकी, अधम।

पतित उधारन-(हिं० वि०) पतित का उद्धार करनेवाला, ईश्वर, परमात्मा, ईश्वर का अवतार।

पतितता-(स० वि०) अधमता, नीचता, अपवित्रता।

पतितत्व-(स० पुं०) पतित होने का भाव

पतितपावन-(स० वि०) पतित को शुद्ध करनेवाला, पापी को पवित्र करनेवाला ईश्वर।

पतित्व-(स० नपु०) स्वामीत्व, स्वामी या मालिक होने का भाव।

पतित्वन-(सं० नपु०) यौवन, जवानी।

पतिदेवता-(सं० स्री०) जिस स्त्री का आराध्य एक मात्र पति हो।

पतिदेवा-(स०स्री०) पतिव्रता स्त्री।

पतिधर्म-(स० पु०) पति के प्रति स्त्री का धर्म।

पतिनी-(हिं०स्री०) देखो पत्नी।

पतियाना-(हिं० क्रि०) विश्वास करना, सच मानना।

पतिलोक-(स० पुं०) पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उस का पति रहता हो।

पतिवती-(हिं० वि०)सौभाग्यवती, सधवा

पतिवेदन-(स० पु०) पति प्राप्त कराने वाले शिव।

पतिव्रत-(स० स्री०) पति में निष्ठा पूर्वक अनुराग।

पतिव्रता-(स० स्री०) अपने स्वामी के प्रति अनन्य अनुराग करनेवाली तथा पति की सेवा करनेवाली स्त्री, सती, साध्वी

पतीजन, पतीजना-(हिं०क्रि०) विश्वास करना, पतिआना।

पतीरा-(हिं०स्री०) पंक्ति, पाति, कतार।

पतिरी-(हिं०स्री०) एक प्रकार की चटाई

पतील-(हिं०वि०) पतला।

पतीली-(हिं०स्री०)चौड़े मुँह की बटलोई, देगची।

पतुरिया-(हिं० स्री०) वेश्या, रंडी, व्यभिचारिणी स्त्री, छिनार औरत।

पतुली-(हिं० स्री०) कलाई में पहिरने का एक गहना।

पतेर-(हिं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, गर्त, गड्ढा।

पतोई-(हिं० स्री०) गुड़ बनाते समय खौलते रसमें से निकलने वाला फेन।

पतोखद-(हिं० स्री०) जड़ी बूटी की दवा, खरविरई।

पतोखा-(हिं० पुं०) पत्ते का बना हुआ पात्र, दोना, एक प्रकार का बगला।

पतोखी-(हिं०स्री०) पत्तो का बना हुआ छोटा छत्ता, घोघी, एक पत्ते की बनी हुई दोनिया।

पतोह, पतोहू-(हिं० स्री०) पुत्र वधू, बेटे की स्त्री।

पतौआ-(हिं०पुं०) पत्र, पत्ता।

पत्त-(स० पु०) पाद, पैर, पाव।

पत्तङ्ग-(स० पु०) रक्त चन्दन, ब्रक्रम नाम की लड़की, एक प्रकार का धान।

पत्तन-(स०नपु०) नगर, शहर, मृदङ्ग।

पत्तर-(हिं० पु०) किसी धातु को पीटकर तैयार किया हुआ पतला टुकड़ा, धातु की चद्दर, देखो पत्तल।

पत्तरङ्ग-(स०नपु०) लाल चन्दन, बक्कम

पत्तल-(हिं० स्री०) पत्तों को सींक से जोड़कर बनाया हुआ पात्र जो थाली के काम में लाया जाता है, पत्तल में परोसी हुई भोजन सामग्री, परोसा, एक पत्तल में खाने वाले-जिनमें परस्पर खान पान और विवाह आदि का व्यवहार होता हो, जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना-उपकार करने वाले की हानि करना, कृतघ्नता दिखलाना।

पत्ता-(हिं०पुं०) पेड़ पौधे का टहनी से निकला हुआ हरे रंग का फैला हुआ अवयव, पर्ण, पत्र, कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना, धातु की चद्दर, पत्तर, मोटे कागज का चौकोर टुकड़ा (वि०) बहुत हलका, पत्ता खड़कना-आशंका होना, खटका होना

पत्ति-(स० पु०) पैदल सिपाही, वीर, योद्धा, (स्री०) गति, चाल, प्राचीन काल की सेना का सबसे छोटा भाग जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े

और पाच पैदल सिपाही होते थे।

पत्तिक-(स०पु०) पदाति, पैदल सिपाही, प्राचीन काल की सेना का वह विभाग जिसमें दस घोडे, दस हाथी, दस रथ और दस पैदल सिपाही होते थे-ऐसे सेना विभाग का अफसर, (वि०) पैदल चलने वाला।

पत्ती-(हिं० स्त्री०) छोटा पत्ता, भाग, हिस्सा, फूल की पखड़ी या दल, भाँग, पत्ती के आकार का लकड़ी धातु आदि का टुकड़ा, पट्टी

पत्तीदार-(हि०पु०) साझीदार, हिस्सेदार

पत्तूर-(सं० पु०) जल- पिप्पली, पार्केड़ का वृक्ष, शमी का पेड़।

पत्थ-(हिं०पु०) देखो पथ्य।

पत्थर-(हि० पु०) पृथ्वी तल का कड़ा खण्ड या पिण्ड, सड़क की नाप बतलाने वाला भूमि में गड़ा हुआ पत्थर, रत्न, जवाहिर, बिनौला, ओला, बिलकुल नहीं, कुछ नहीं, पत्थर की तरह कठोर तथा भारी अयोग्य वस्तु, पत्थर का कलेजा-करुणा तथा दया रहित हृदय, पत्थर की छाती-कठोर हृदय, पत्थर की लकीर-हमेशा बनी रहने वाली वस्तु, पत्थर चटाना-पत्थर पर घिसकर हथियार तेज़ करना, पत्थर तले हाथ दबना-ऐसे सकट मे पड़ना जहाँ से छुटकारा कठिन हो, पत्थर तले से हाथ निकालना-सकट से छुटकारा पाना, पत्थर पर दूब जमना-असमव घटना का होना, पत्थर पसीजना-अत्यन्त कठोर हृदय के मनुष्य में दया उत्पन्न होना, पत्थर पर सिर पटकना-असमव बात के लिये उद्योग करना, पत्थर पड़ना-नष्ट होना, पत्थर पानी-आधी तूफान का समय

पत्थर कला-(हिं०पु०) पुरानी चाल की बन्दूक जिसमें बारूद सुलगाने के के लिये चकमक पत्थर लगा रहता था

पत्थर चटा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास, एक प्रकार का सर्प जो पत्थर चाटता है, एक प्रकार की मछली जो समुद्र के चट्टानों में चिपटी रहती है (वि०) कृपण, कजूस जो घरके बाहर न निकलता हो, सर्वदा घरमें रहने वाला।

पत्थर चूर (हिं०पु०) एक प्रकार का पौधा

पत्थरफोड़-(हि० पुं०) एक प्रकार की वनस्पति जो पत्थरों की सन्द में उत्पन्न होती है।

पत्थरफोड़ा-(हिं०पु०) पत्थर तोड़ने का पेशा करने वाला, सगतराश।

पत्थरबाज़-(हिं०पुं०) जो पत्थर फेंक कर किसीको मारता हो, ढेलवाह।

पत्थरबाज़ी-(हिं० स्त्री०) पत्थर फेंकने की क्रिया, ढेलवाही।

पत्थल-(हि० पु०) देखो पत्थर।

पत्नी-(स०स्त्री०) वेद विधान के अनुसार विवाहिता स्त्री, भार्या, जाया, दारा, सधर्मिणी।

पत्नीत्व-(स०नपु०)पत्नी का भाव या धर्म।

पत्नीवत्-(स० वि०) स्त्री की तरह, पत्नी के समान।

पत्नीव्रत-(स० पु०) अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री के साथ गमन न करने का सकल्प या नियम।

पत्य-(स० नपु०) पति का भाव यथा- सेनापत्य।

पत्याना-(हिं०क्रि०) देखो पतिआना।

पत्यारा-(हि०पु०) देखो पतिआरा।

पत्यारी-(हि०स्त्री०) पंक्ति,पाँति,कतार।

पत्योरा-(हिं० पु०) एक प्रकार की घी या तेल में बनाई हुई पत्तों की पकौड़ी।

पत्र-(स०नपु०) पत्ता, तेजपत्ता, चिड़ियो का पर, तीर में लगा हुआ पर, वाहन, पत्री, चिट्ठी, धातु की चद्दर, वरक, लिखा हुआ कागज, पट्टा, दस्तावेज, समाचारपत्र, अखबार, पृष्ठ, सफा।

पत्रक-(सं० नपु०) वृक्ष का पत्ता, तेजपत्ता, पत्तों की लड़ी,पलास का वृक्ष।

पत्रकृच्छ्र-(स०पु०) वह व्रत जिसमें पत्तों का काढा पीकर निर्वाह किया जाता है।

पत्रगुप्त-(स०पु०) त्रिधारा सेंहुड़।

पत्राङ्ग-(स०नपु०) लाल चन्दन,ब्रक्कम।

पत्रज-(सं०पु०) तेजपत्र, तेजपात।

पत्रजासव-(सं०पु०)परवल और ताड़ के पत्तो से बनाई हुई शराब।

पत्रद्रुम-(स०पु०)तालवृक्ष,ताड़ का पेड़।

पत्रपरशु-(स०पुं०) सोनार या लोहार की छेनी।

पत्रपाल-(स०पु०)लम्बा छुरा या कटार।

पत्रपाली-(स०स्त्री०) कतरनी, कैंची, वाण का पिछला भाग।

पत्रपुष्प-(स०पु०) लाल तुलसी, छोटा उपहार या भेंट।

पत्रपुष्पक-(स०पु०) भूर्जपत्र, भोजपत्र।

पत्रपुष्पा-(स०स्त्री०)छोटी पत्ती की तुलसी।

पत्रबन्ध-(सं०पु०) फलों और पत्तों की सजावट।

पत्रबाल-(स०पु०)क्षेपणी नाव का डाँड़ा।

पत्रभङ्ग-(स०पु०) वे चित्र और रेखायें जो स्त्रियाँ सुन्दरता बढ़ाने के लिये स्तन, कपोल आदि पर बनाती हैं।

पत्रमञ्जरी-(स०स्त्री०)पत्ते का अगला भाग।

पत्रमाल-(स०पु०) बेंत का पौधा।

पत्रमाला-(स० स्त्री०) पत्तो की बनी हुई माला।

पत्रयौवन-(स०नपु०)नया पत्ता,कोंपल।

पत्ररथ-(स०पुं०) पक्षी, चिड़िया।

पत्रलता-(सं०स्त्री०)वह लता जिसमें प्रायः पत्ते ही पत्ते हों।

पत्रवल्ली-(सं० स्त्री०) रुद्रजटा, पान।

पत्रवाज (स० पु०) पक्षी,चिड़िया,बाण।

पत्रवाह-(स०पु०) बाण, तीर, चिड़िया,, चिट्ठीरसा, हरकारा (वि०) चिट्ठी लिखने वाला।

पत्रवाहक-(स०पु०) देखो पत्रवाह।

पत्रविष-(स०नपु०) पत्तों में से निकला हुआ विष।

पत्रवेष्ट-(स० पुं०) कान में पहिरने का एक आभूषण, करनफूल।

पत्रव्यवहार-(स० पुं०) चिट्ठी लिखने और उत्तर पाने की क्रिया, खतकिताबत

पत्रशाक-(स०पु०) वह पौधा जिसके पत्तों का शाक बनाकर खाया जाता है।

पत्रशिरा-(सं० स्त्री०) पत्तों की नस।
पत्रश्रेणी-(सं०स्त्री०) देखो पत्रावली।
पत्रश्रेष्ठ-(सं० पुं०) बिल्वपत्र, बेलपत्र।
पत्रा-(हिं० पुं०) तिथि पत्र, जन्त्री, पञ्चाङ्ग, पन्ना, सफहा, वर्क, पृष्ठ।
पत्राल्य-(सं० नपुं०) तेजपत्ता, तालीसपत्र।
पत्राङ्ग-(सं० नपुं०) लाल चन्दन, बक्कम, भोजपत्र, कमलगट्टा।
पत्राञ्जन-(सं०नपुं०) मसी, काली स्याही
पत्रावलि, पत्रावली-(सं० स्त्री०) देखो पत्रभङ्ग, पत्तों की पंक्ति।
पत्रिका-(सं० स्त्री०) चिट्ठी पत्री, खत, कोई छोटा लेख, समाचार पत्र, अखबार, कोई सामयिक पत्र या पुस्तक, एक प्रकार का कपूर।
पत्रिन्-(सं०पुं०) वाण, तीर, चिड़िया, श्येन, बाज पक्षी, ताड़ का पेड़ (वि०) वह जिसमें पत्ते हों।
पत्रिणी-(सं०स्त्री०) नया अकुर, कोंपल।
पत्रिवाह-(सं०पुं०) हरकारा, चिट्ठीरसा।
पत्री-(सं० स्त्री०) लिपि, पत्र, चिट्ठी, दौने का पेड़, ताड़ का पेड़, खैर का वृक्ष, (हिं० स्त्री०) हाथ में पहिरने का एक आभूषण।
पथ-(सं० पुं०) पन्थ, मार्ग, राह, व्यवहार आदि की रीति, विधान। (हिं०पुं०) पथ्य, रोग के लिये उपयुक्त हलका आहार।
पथक-(सं० पुं०) प्रान्त, मार्ग, रास्ता
पथकल्पना-(सं०स्त्री०) जादू का खेल, इन्द्रजाल।
पथगामी-(हिं० पुं०) पथिक, बटोही, रास्ता चलने वाला।
पथचारी-(हिं०पुं०) रास्ता चलने वाला।
पथदर्शक-(सं० पुं०) मार्गदर्शक, राह दिखलाने वाला।
पथनार-(हिं० स्त्री०) गोबर के उपले या गोहरे बनाने का काम, पीटने या मारने की क्रिया।
पथप्रदर्शक-(सं० पुं०) देखो पथदर्शक।
पथरकला-(हिं०पुं०) पुराने ढग की कड़ाबीन या बंदूक जिसकी बारूद में चकमक पत्थर से आग उत्पन्न की जाती थी।
पथरचटा-(हिं० पुं०) एक प्रकार की औषधि।
पथरना-(हिं०क्रि०) औजार को पत्थर पर रगड़ कर तेज़ करना।
पथराना-(हिं० क्रि०) सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना, सजीव न रहना, स्तब्ध या जड़ होना।
पथरी-(हिं० स्त्री०) अश्मरी नामक रोग, मूत्राशय अथवा गुर्दे में पत्थर की तरह के छोटे बड़े टुकड़े पड़ जाने का रोग, कटोरे के आकार का पत्थर का बना हुआ पात्र, चकमक पत्थर, वह पत्थर जिस पर लोहे की चोट डालने से आग निकलती है, कुरन पत्थर, उस्तरा तेज करने की सिल्ली, एक प्रकार की मछली।
पथरीला-(हिं० वि०) पत्थरों से युक्त, जिसमें पत्थर हो।
पथरौटी-(हिं०स्त्री०) पत्थर की कटोरी, पथरी।
पथिक-(सं० पुं०) मार्ग चलने वाला, यात्री, मुसाफिर, राहगीर, पथिकशाला-सराय यात्रियों के ठहरने की धर्मशाला।
पथिका-(सं०स्त्री०) काला द्राक्षा, मुनक्का।
पथिकार-(सं०वि०) रास्ता बनाने वाला।
पथिकाश्रय-(सं० पुं०) पथिकों के ठहरने का स्थान।
पथिन्-(सं० पुं०) पथ, मार्ग, पथ चलने वाला।
पथिल-(सं० पुं०) बोझ ढोने वाला, निष्ठुर, क्रूर।
पथी-(हिं० पुं०) पथिक, यात्री, मार्ग चलनेवाला।
पथु-(हिं०पुं०) पथ, मार्ग।
पथेरा-(हिं०पुं०) ईंट पाथनेवाला, कुम्हार।
पथौरा-(हिं०पुं०) गोबर पाथने का स्थान।
पथ्य-(सं०पुं०) हितकर चिकित्सा, अच्छा इलाज, वह हलका और जल्दी से पचनेवाला खाना जो रोगी के लिये लाभकारक हो, सेंधा नमक, छोटी हर्रें का पेड़, हित, कल्याण, मगल, पथ्य से रहना-सयम से रहना।
पथ्यकरी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का लाल धान।
पथ्यका-(सं०स्त्री०) मेथिका, मेथी।
पथ्यभोजन-(सं०पुं०) लाभकारक आहार।
पथ्यशाक-(सं०पुं०) चौलाई का साग।
पथ्या-(सं०स्त्री०) हरीतकी, हर्रें, आर्या छन्द का एक भेद।
पथ्यापथ्य-(सं०नपुं०) रोग के हित और अहित कारक द्रव्य।
पथ्यावक्त्र-(सं०नपुं०) माया वृत्त का एक भेद।
पद-(सं०नपुं०) पैर, पाँव, वस्तु, शब्द, आवाज़, पैर का चिह्न, प्रदेश, व्यवसाय, काम, रक्षा, स्थान, जगह, चिह्न, निशान, किरण, श्लोक या किसी छन्द का चौथा भाग, जूता, छाता वस्त्र, पात्र, आभूषण आदि जो ब्राह्मणों को दान करके दिया जाता है, छ अगुल का परिमाण, ऋग्वेद या यजुर्वेद का पद पाठ, विभक्ति युक्त शब्द या धातु, दर्जा, मोक्ष, निर्वाण, गीत, भजन।
पदक-(सं०पुं०) एक प्रकार का आभूषण जिसमें किसी देवता के पैरों का चिह्न खुदा रहता है, पूजन के लिये बनाया हुआ देवता के पैरों का चिह्न, सोने चाँदी अथवा अन्य धातु का बना हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा जो कोई विशिष्ट या अद्भुत कार्य करने के उपलक्ष में किसी व्यक्ति या समाज को दिया जाता है यह प्रशसासूचक तथा योग्यता दिखलाने वाला होता है, तमगा।
पदग-(सं०पुं०) पैदल चलनेवाला, प्यादा।
पदगोत्र-(सं०नपुं०) भारद्वाज आदि चार ऋषियों का गोत्र।
पदचतुरूर्ध्व-(सं०पुं०) विषम वृत्त का एक भेद।
पदचर-(सं०पुं०) पैदल, प्यादा।
पदचारी-(सं०वि०) पैदल चलनेवाला।
पदचिह्न-(सं०पुं०) वह चिह्न जो चलते समय जमीन पर बन जाता है।

पदच्छेद-(सं०पु०) सन्धि और समास युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पदों को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग अलग करना।
पदच्युत-(सं०वि०) अपने पद या स्थान से हटाया या गिराया हुआ।
पदच्युति-(सं० स्त्री०) अपने पद से हटने या गिरने की क्रिया।
पदज-(सं०पुं०) पैर की अगुली, शूद्र (वि०) जो पैर से उत्पन्न हो।
पदज्ञ-(सं० वि०) राह जानने वाला।
पदतल-(सं० पुं०) पैर का तलवा।
पदता-(सं०स्त्री०) पदत्व, पद का धर्म।
पदत्याग-(सं०पु०)अपने पद या ओहदे को छोड़ने की क्रिया।
पदत्राण-(सं०पु०) पैरों की रक्षा करने वाला, जूता।
पदत्रान-(हिं०पु०) देखो पदत्राण।
पदत्री-(सं० पु०) पक्षी, चिड़िया।
पददलित-(सं० वि०) पैरों से कुचला हुआ, दबा कर हीन किया हुआ।
पददारिका-(सं० स्त्री०) पैर का एक रोग, बेवाय।
पदन्यास-(सं० पु०) गमन करना, चलना, कदम रखना, पैर रखने की एक मुद्रा, गोखरू, पद रचने का काम।
पदपंक्ति-(सं०स्त्री०)पदश्रेणी, पैर का चिह्न।
पदपद्धति-(सं०स्त्री०) पैर का चिह्न।
पदपटली-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का नाच।
पदबन्ध-(सं०पुं०)पदचिह्न, पैर का निशान।
पदभञ्जिका-(सं०स्त्री०) पजिका, टिप्पणी।
पदम-(हिं० पु०) बदाम की जाति का एक जगली पेड़।
पदमचल-(हिं०पु०) रेवन्द चीनी।
पदमनाभ-(हिं०पु०)पद्मनाभ, विष्णु, सूर्य।
पदमाकर-(हिं०पुं०) जलाशय, तालाब।
पदमाला-(सं०स्त्री०)पदश्रेणी, पैरों का चिह्न।
पदमूल-(सं०पु०) पैर का तलवा।
पदमैत्री-(सं०स्त्री०) काव्य में अनुप्रास।
पदयोजना-(सं०स्त्री०) कविता बनाने के लिये शब्दों को मिलाना।
पदर-(हिं० पुं०) डंघोढीदारों के बैठने का स्थान।
पदरथी-(सं०पुं०) जूता, खड़ाऊ।
पदरिपु-(हिं०पु०) कण्टक, काटा।
पदवाद्य-(सं० पु०) प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल।
पदवाना-(हिं० क्रि०) पदाने का काम दूसरे से कराना।
पदवाय-(सं०वि०)मार्ग दिखलाने वाला।
पदवि-(सं० स्त्री०) पद्धति, परिपाटी, पन्थ, रास्ता, उपाधि, खिताब, नियोग।
पदविग्रह-(सं०पु०)समास, समास वाक्य।
पदविच्छेद-(सं०पु०) पाद का विच्छेद, पदों को अलग अलग करने का काम।
पदवी-(सं०स्त्री०) पद्धति, राह, रास्ता, परिपाटी, तरीका, उपाधि, ओहदा, दरजा, खिताब।
पदसमूह-(सं०पु०) कविता का चरण, पदपाठ।
पदस्थ-(सं०वि०)जो पैरों के बल खड़ा हो।
पदाक-(सं०पुं०) सर्प, साप।
पदाङ्क-(सं० पु०) पैरो का चिह्न जो चलने में भूमि पर बन जाता है।
पदाति, पदातिक-(सं० पु०) पैदल सिपाही, प्यादा, नौकर (वि०) पैदल चलने वाला।
पदादिका-(हिं०पु०) पैदल सेना।
पदाधिकारी-(सं०पु०) वह जो किसी पद पर नियुक्त हो, अफसर, ओहदेदार।
पदाना-(हिं०क्रि०) पदाने का काम दूसरे से कराना, बहुत दिक करना, छकाना, तग कराना।
पदानुराग-(सं०पु०) देव चरण में भक्ति।
पदान्त-(सं०पु०)पद का शेष, पद का अन्त।
पदान्तर-(सं०नपु०)स्थानान्तर दूसरा पद।
पदार-(सं०पुं०) पाद धूलि, पैर की धूल।
पदारविन्द-(सं० नपुं०) पद्मरूपी पैर।
पदार्घ्य-(सं०पु०) वह जल जो किसी अतिथि या पूज्य के पैर धोने के लिये दिया जाय।
पदार्थ-(सं० पु०) धर्म, सत्व, वस्तु, पुराण के अनुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, वैद्यक के अनुसार रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति, चीज, पद का अर्थ, शब्द का विषय, साख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति, प्रकृति विकृति, विकृति और अनुभव ये चार प्रकार के पदार्थ माने गये हैं, आधुनिक नैयायिकों के मत से द्रव्य, गुण, कर्म सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ हैं।
पदार्थवाद-(सं० पु०) वह सिद्धान्त जिसमें भौतिक पदार्थ ही सब कुछ माने जाते हैं और ईश्वर तथा आत्मा का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जाता।
पदार्थ विज्ञान-(सं०पु०) विज्ञान शास्त्र, वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान प्राप्त होता है।
पदार्थ विद्या-(सं० स्त्री०) वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के गुणागुण का विचार करते हुए उनके कार्य आदि का वर्णन किया रहता है।
पदार्पण-(सं०पु०) किसी स्थान में पैर रखने या जाने की क्रिया (इस शब्द का प्रयोग केवल माननीय व्यक्ति के लिए किया जाता है)
पदावनत-(सं०वि०) विनीत, नम्र, जो पैरो पर झुका हो, जो प्रणाम करता हो।
पदावली-(सं०स्त्री०) पद समूह, वाक्यों की श्रेणी, भजनों का सग्रह।
पदाश्रित-(सं०वि०)शरण में आया हुआ, जो आश्रय में रहता हो।
पदास-(हिं० स्त्री०) पादने का भाव, पादने में प्रवृत्ति।
पदासन-(सं० नपु०) पादपीठ, जिस पर पैर रक्खा जाय।
पदासा-(हिं० पुं०) जिसकी पादने की इच्छा हो।
पदिक-(सं०पु०) पदाति, पैदल सेना, गले में पहिरने का एक प्रकार का गहना
पदी-(हिं०पु०) पैदल, प्यादा।
पदुम-(हिं० पु०) देखो पद्म, घोड़े का एक चिह्न।
पदुमिनी-(हिं०वि०) देखो पद्मिनी।
पदोड़ा-(हिं०पुं०) जो बहुत पादता हो,

डरपोक कायर।

पदोदक-(स० पु०) पैर धोने का जल, चरणामृत।

पद्धटिका-(स०पु०)एक मातृ छन्द, पद्धड़ी

पद्धति-(स० स्त्री०) पथ, रास्ता, पंक्ति, कतार, वह ग्रन्थ जिसमें किसी दूसरी पुस्तक का तात्पर्य समझाया जाता है, पदवी, प्रणाली, रीति, ढंग, तरीका, परिपाटी, कार्यप्रणाली, विधि, विधान, कर्म या संस्कार की विधि।

पद्धरि-(हि०पु०) देखो पद्धटिका।

पद्म-(स०पु०, नपुं०) कमल का फूल या पौधा, हाथी के माथे या सूंड़ पर बनाये हुए चित्र, सेना का पद्मव्यूह, पुराण के अनुसार एक कल्प का नाम, सीसक, सीसा, कुबेर की नव निधियों में से एक, पुष्करमूल, कुट नाम की औषधि, गणित में सोलहवें स्थान की संख्या, एक वर्णवृत्त का नाम, साँप के फन पर के चित्रित चिह्न, शरीर पर का सफेद दाग, एक प्रकार का गले का गहना, विष्णु का एक आयुध, सामुद्रिक के अनुसार पैर का एक विशेष चिह्न, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम, एक प्रकार का सर्प, तन्त्र के अनुसार शरीर के भीतरी भाग का एक कल्पित कमल, बलदेव का एक नाम, सोलह प्रकार के रतिबन्ध में से एक,एक नरक का नाम, एक प्राचीन नगर का नाम।

पद्मक-(स०नपुं०) कुट नाम की औषधि, सफेद कोढ़।

पद्मकन्द-(स० पु०) कमल की जड़, भिस्सा, भसीड़।

पद्मकर-(स० पु०) पद्ममणि, विष्णु।

पद्मकिञ्जल्क-(स०पु०)कमल का केसर।

पद्मकीट- (स० पु०) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।

पद्मकेतन-(स० पु०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।

पद्मकेतु-(सं०पु०) मृणाल के आकार का एक पुच्छल तारा।

पद्मकेशर-(सं० पु०) कमल का केशर।

पद्मकोष-(स०पु०)कमल के बीच का छत्ता।

पद्मगर्भ-(स०पु०) ब्रह्मा,विष्णु,सूर्य, शिव, महादेव, कमल का भीतरी भाग।

पद्मगुणा-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी।

पद्मगृहा-(सं० स्त्री०) पद्मालया, लक्ष्मी का एक नाम।

पद्मचारिणी-(स० स्त्री०) शमी वृक्ष, हलदी, लौख, वृद्धि, तरक्की।

पद्मज-(स० पु०) चतुर्मुख ब्रह्म।

पद्मतन्तु-(स०पु०)मृणाल,कमल की डंडी

पद्मदर्शन-(सं०पु०) श्रीवास, लोहबान।

पद्मनाभ-(स० पु०) विष्णु, महादेव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक सर्प का नाम, एक स्तम्भन शस्त्र।

पद्मनाभि-(स०पु०) पद्मनाभ, विष्णु।

पद्मनाल-(स०नपु०) मृणाल, कमलदण्ड।

पद्मनिधि-(सं० स्त्री०) कुबेर की नव निधियों में से एक।

पद्मपत्र-(स०नपु०) पुष्कर मूल,कमलदल

पद्मपाणि-(स० पु०) ब्रह्मा, बुद्ध की एक मूर्ति, सूर्य।

पद्मपाद-(स०पु०) शंकराचार्य के एक प्रधान शिष्य का नाम।

पद्मपुष्प-(स० पु०) कनेर का पेड़, एक प्रकार की चिड़िया।

पद्मप्रिया-(स०स्त्री०) जगत्कारु मुनि की पत्नी, गायत्री रूप महादेवी।

पद्मबन्ध-(स०पु०) एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमें अक्षर इस प्रकार लिखे जाते हैं कि कमल का रूप बन जाता है।

पद्मबन्धु-(स०पु०) सूर्य, भ्रमर, भौंरा।

पद्मभास, पद्मभू-(स०पु०) विष्णु।

पद्ममय-(स०वि०) पद्मयुक्त, पद्मनिर्मित।

पद्ममालिनी-(स० स्त्री०) गंगा।

पद्ममाली-(स०पु०) एक राक्षस का नाम

पद्ममुख-(स० वि०) कमल के समान मुख वाला।

पद्ममुखी-(स०स्त्री०) भटकटैया, धमासा।

पद्ममुद्रा-(स०पु०) एक तान्त्रिक मुद्रा।

पद्मयोनि-(स०पुं०) ब्रह्म,बुद्धका एक नाम

पद्मरज-(सं० पु०) कमल केशर।

पद्मराग-(स०पु०) लाल रंग का असली मानिक।

पद्मरेखा-(स०स्त्री०) सामुद्रिक के अनुसार हथेली में की एक शुभ रेखा।

पद्मरेणु-(स० पु०) पद्म केसर।

पद्मलाञ्छन-(स०पु०) ब्रह्मा, सूर्य, कुबेर बुद्ध (स्त्री०) तारा, लक्ष्मी, सरस्वती।

पद्मवासा-(स० स्त्री०) लक्ष्मी।

पद्मवीज-(स० नपु०) कमल बीज, कमल गट्टा।

पद्मवीजाभ-(स० नपु०) मखान फल, मखाना।

पद्मव्यूह-(स०पु०) एक प्रकारकी समाधि, प्राचीन काल में युद्ध के समय किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये सेना स्थापित करने की एक विधि इसमें सम्पूर्ण सेना कमल के आकार की हो जाती थी।

पद्मशायिनी-(स०स्त्री०) एक जलचर पक्षि

पद्मसमासन-(स० पु०) ब्रह्मा।

पद्मसम्भव-(सं० पु०) ब्रह्मा।

पद्मसूत्र-(स० नपुं०) कमल के फूलों की माला।

पद्मस्नुषा-(स० स्त्री०) गंगा, दुर्गा।

पद्महास-(स० पुं०) विष्णु।

पद्मा-(स० स्त्री०) लक्ष्मी, मनसादेवी, कमल दण्ड, मजीठ, भादों सुदी एकादशी,कुसुम्भका फूल,लवंग,गेंदेका वृक्ष।

पद्माकर-(स०पु०) बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल उत्पन्न होते हैं।

पद्माक्ष-(स० नपु०) कमलगट्टा, विष्णु।

पद्माख-(हि० पु०) देखो पद्म।

पद्माधीश (स० पु०) विष्णु।

पद्मान्तर-(स०नपु०) कमल के पत्ते।

पद्मालय-(स० पु०) ब्रह्मा।

पद्मालया-(स०स्त्री०) लक्ष्मी,गंगा,लवंग।

पद्मावती-(स०स्त्री०) मनसा देवी, पद्मादेवी, गेंदे का पौधा, पटना नगर का प्राचीन नाम, लक्ष्मी, स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम, युधिष्ठिर की एक रानी का नाम।

पद्मासन-(स० नपुं०) ब्रह्मा, शिव, सूर्य, मैथुन करने का एक आसन, योग

साधन का एक आसन जिसमें बायें जांघ पर दाहिनी जाँघ रक्खी जाती है, और छाती पर अगूठा रखकर नासिका का अग्रभाग देखा जाता है, पद्म के आकार का धातुनिर्मित आसन।
पद्मिनी-(स०स्त्री०) पद्मलता, कमलिनी, कोक शास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वश्रेष्ठ, सरोवर,तालाब, पद्म, कमल, कमलदण्ड, मादा हाथी, हथिनी, भीमसेन की प्रधान रानी का नाम, लक्ष्मी।
पद्मोत्तम, पद्मोत्तर-(स० पु०) कुसुम्भ का फूल।
पद्मोद्भव-(स० पु०) ब्रह्मा।
पद्मोद्भवा-(स०स्त्री०) मनसा देवी।
पद्य-(स०नपु०) कविता, काव्य, श्लोक, पिंगल के नियमों के अनुसार चार चरण वाला छन्द, पद्य दो प्रकार का होता है, जिसके अक्षर समान होते हैं उसको वृत्त तथा जो मात्रा के अनुसार होता है उसको जाति कहते हैं, वह कीचड़ जो सूखा न हो, शूद्र, (वि०) पैरों से सबंध रखनेवाला, जिसमें कविता के पद हों।
पद्यमय-(स०वि०) पद्य स्वरूप।
पद्या-(स०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा, मार्ग, रास्ता, शर्करा, गुड़।
पद्यात्मक-(स०वि०) जो पद्यमय या छद-बद्ध हो।
पद्रथ-(स०पु०) पैदल चलनेवाला।
पद्व-(स० पुं०) भूलोक, रथ, मार्ग।
पधरना-(हिं० क्रि०) किसी प्रतिष्ठित या पूज्य व्यक्ति का आगमन।
पधराना-(हिं०क्रि०) सम्मान पूर्वक ले जाना, किसी को आदर पूर्वक ले जाकर बैठाना, पधारने की क्रिया।
पधरावनी-(हिं०स्त्री०) आदर पूर्वक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को ले जाकर बैठाने की क्रिया, किसी देवता का स्थापन।
पधारना-(हिं० क्रि०) चले जाना, आ पहुंचना, गमन करना, आना, चलना, प्रतिष्ठित करना, आदर पूर्वक बैठाना।

पनंग-(हिं०पु०) सर्प, साप।
पन-(हिं०पु०) संकल्प, प्रतिज्ञा, आयु के चार भागों में से एक, ये चार विभाग, बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढावस्था और वृद्धावस्था है, (हिं०प्रत्य०) भाव-वाचक सज्ञा बनाने में प्रयोग होता है यथा-कलापन, लड़कपन।
पनकटा-(हिं०पु०) वह मनुष्य जो खेतों में इधर उधर सिंचाई के लिये पानी ले जाता है।
पनकपड़ा-(हिं०पु०) पानी से भिगाया हुआ लत्ता जो शरीर में कहीं पर कट जाने पर बाँधा जाता है।
पनकाल-(हिं०पु०) अति वर्षा के कारण अकाल।
पनकुट्टी-(हिं० स्त्री०) पान कूटने का छोटा खरल।
पनकौवा-(हिं० पु०) एक प्रकार का जलपक्षी।
पनगाचा-(हिं० पु०) पानी से सींचा हुआ खेत।
पनघट-(हिं०पु०) पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ पर लोग पानी भरते हैं।
पनच-(हिं० स्त्री०) प्रत्यचा, धनुष की डोरी, चिल्ला।
पनचक्की-(हिं० स्त्री०) पानी के वेग से चलाई जाने वाली चक्की या कल।
पनचोरा-(हिं०पु०) वह बरतन जिसकी पेंदी चौड़ी और मुँह छोटा हो।
पनडुब्बा-(हिं० पु०) पानी में गोता लगाने वाला गोताखोर, पानी में गोता लगाकर मछली पकड़ने वाली चिड़िया, जलाशय में रहने वाला एक प्रकार का कल्पित प्रेत, मुरगाबी।
पनडुब्बी-(हिं० स्त्री०) पानी में डुबकी लगाकर मछली पकड़ने वाली चिड़िया, एक प्रकार का छोटा जहाज जो पानी में डूबकर यन्त्र से चलता है, इसको अग्रेज़ी में सबमेरीन कहते हैं।
पनपना-(हिं० क्रि०) पानी मिलने के कारण फिरसे हरा हो जाना, रोग से मुक्त होकर स्वस्थ होना।

पनपनाहट-(हिं० स्त्री०) पनपन होने का शब्द।
पनपाना-(हिं०क्रि०) ऐसा कार्य करना जिससे कोई वस्तु पनपे।
पनफर-(स० पु०) फलित ज्योतिष के अनुसार लग्न से दूसरा, आठवां, पांचवा और ग्यारहवा स्थान।
पनबट्टा-(हिं०पु०) पान के बीडे रखने का छोटा डिब्बा।
पनबिछिया-(हिं०स्त्री०) डक मारने वाला पानी का एक कीड़ा।
पनभरा-(हिं०पु०) पानी भरने वाला, पनहरा।
पनलगवा-(हिं०पुं०) देखो पनकटा।
पनव-(हिं०पु०) देखो प्रणव।
पनवां-(हिं०पु०) हमेल का बीच का टुकड़ा
पनवाड़ी-(हिं०स्त्री०) पान का खेत, पान बेंचने वाला, तमोली।
पनवारा-(हिं०पु०) पत्ती की बनी हुई पत्तल जिसपर रखकर लोग भोजन करते हैं, एक आदमी के खाने भर का पत्तल भर भोजन।
पनस-(स०पु०) कटहल।
पनसखिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का फूल
पनसतालिका, पनसलाका-(स०) कटहल
पनसल्ला-(हिं० स्त्री०) वह स्थान जहा राहगीरों को पानी पिलाया जाता है, पनसाल, प्याऊ।
पनसाखा-(हिं० पु०) एक प्रकार की मसाल जिसमें तीन या पाच बत्तिया जलती हैं।
पनसार-(हिं०पु०) पानी से भली भाँति सींचने का काम।
पनसारी-(हिं०पु०) देखो पसारी।
पनसाल-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहा सर्व साधारण को पानी पिलाया जाता है, पौसरा, पानी की गहराई नापने की क्रिय
पनसिका-(स० स्त्री०) कान के भीतर फुनसी होने का रोग।
पनसी-(हिं०स्त्री०) कटहल का फल।
पनसुइया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी नाव जिसपर एकही खेने वाला

दो ढाँडा चला सक्ता है।
पनसूर-(हिं०पु०) एक प्रकार का बाजा।
पनसेरी-(हिं० स्त्री०) पाच सेर की बाट, पसेरी।
पनसोई-(हिं०स्त्री०) देखो पनसुइया।
पनहड़ा-(हिं० पु०) तमोली का पानी रखने का बरतन।
पनहरा-(हिं० पु०) पानी भरने वाला नौकर,पनभरा, सोनार की पानी रखने की थपरी।
पनहा-(हिं०पु०) कपडे या दीवार आदि की चौड़ाई, गूढ आशय, मर्म, चोरी का पता लगाने वाला, चुराई हुई वस्तु को लौटा देने के लिये दिया हुआ पुरस्कार।
पनहारा-(हिं०पु०)वह जो पानी भरने का काम करता हो, पनभरा।
पनहिया-(हिं०स्त्री०) देखो पनही,जूता।
पनहियाभद्र-(हिं०पु०) सिरपर जूतों की मार, सिर पर इतने जूते पडे कि बाल उड़ जावें।
पनही-(हिं०स्त्री०) उपानह, जूता, जूती।
पना-(हिं० पु०) आम इमली आदि से बनाया हुआ एक प्रकार का शर्बत, प्रपानक, पन्ना।
पनाती-(हिं० पु०) पुत्र अथवा कन्या का नाती, पोते अथवा नातीका लड़का
पनारा,पनाला-(हिं०पुं०) देखो परनाला
पनासना-(हिं०क्रि०) पालन पोषण करना
पनाह-(फा० स्त्री०) कष्ट सकट अथवा शत्रु से रक्षा पाने की क्रिया या भाव, त्राण, बचाव, रक्षा पाने का स्थान, शरण, बचावका स्थान,पनाह मागना-रक्षा किये जाने के लिये प्रार्थना करना
पनिक-(हिं० पु०) जुलाहों का एक कैंचीनुमा औजार।
पनिघट-(हिं० पु०) देखो पनघट।
पनिच-(हिं० पु०) देखो पनच।
पनियां-(हिं०वि०) पानी से उत्पन्न,पानी मिला हुआ, पानी मे रहने वाला, पनिया सोत-तालाब या कुआँ जिसमें पानी का सोता निकला हो, बहुत गहरा
पनियाला-(हिं० पु०) एक प्रकार का रगीन कपड़ा एक प्रकार का फल।
पनिसिगा-(हिं० पु०) जलपीपल
पनिहाँ-(हिं० वि०) पानी में रहने वाला जिसमें पानी मिला हो, जल सबधी (पु०) जासूस।
पनिहार-(हिं० पु०) देखो पनहर।
पनी-(हिं०पु०) प्रतिज्ञा करने वाला पुरुष.
पनीर-(फा०पु०) फाड़ कर जमाया हुआ दूध, छेना, पानी निकला हुआ दही।
पनीरी-(हिं०स्त्री०) वे छोटे पौधे जो एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान मे रोपे जाते हैं, बेहन की क्यारी।
पनीला-(हिं०वि०) जल युक्त,जिसमें पानी मिला हो।
पनु-(स० स्त्री०) स्तुति, प्रशसा।
पनुआं-(हिं०पु०) एक प्रकार का गुड़ का शर्बत, (वि०) फीका, जिसमें मिठास कम हो।
पनेथी-(हिं० स्त्री०) पानी मिला कर पोई हुई रोटी।
पनेहरा-(हिं०पु०) देखो पनहरा।
पनैला-(हिं०पु०) गरम कपड़ों के नीचे अस्तर देने का चिकना गाढा कपड़ा।
पनौआ-(हिं० पु०) पान के पत्तों की पकौड़ी।
पनौटी-(हिं०स्त्री०) पान रखनेकी पिटारी, पानदान।
पन्थलिका-(स०स्त्री०) पतली गली।
पन्न-(स० वि०) गिरा हुआ, पड़ा हुआ, नष्ट, गत।
पन्नई-(हिं० वि०) पन्ने के रंग का, गहरे हरे रग का।
पन्नग-(सं० पु०) सर्प, साप, पद्म-काठ, पदम, (हिं०पु०) पन्ना,मरकतमणि
पन्नगकेशर-(स० पु०) नाग केसर का फूल।
पन्नगनाशक-(स० पु०) गरुड़।
पन्नगपति-(स० पु०) शेष नाग।
पन्नगारि,पन्नगाशन-(स० पु०, गरुड़।
पन्नगी-(स०स्त्री०) साँपिन, मनसा देवी।
पन्ना-(हिं० पु०) मरकत मणि, हरे रग का एक रत्न, पृष्ठ, वरक, पत्र।
पन्नी-(हिं०स्त्री०) रागे या पीतल के बहुत पतले पत्र, सोनहला या रुपहला कागज बारुदकी एक तौल जो आधसेर के बराबर होती है, (पु०) पठानो की एक जाति।
पन्नीसाज-(हिं० पु०) पन्नी या तबक बनाने वाला।
पन्नीसाजी-(हिं० स्त्री०) पन्नी बनाने का काम या व्यवसाय।
पन्य-(सं० वि०) प्रशसा करने योग्य।
पन्यारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सदा बहार जगली वृक्ष।
पन्हाना-(हिं०क्रि०) देखो पहिराना।
पन्हारा-(हिं० स्त्री०) गेंहू के खेत मे होने वाला एक तृण।
पन्हैयां-(हिं०स्त्री०) देखो पनही।
पपटा-(हिं०पु०)देखो पपड़ा, छिपकली।
पपड़ा-(हिं० पु०) लकड़ी का पतला कुड़कीला छिलका, चिप्पड़, रोटी के ऊपर का छिलका।
पपड़िया-(हिं०वि०) पपड़ीदार, पपड़ी सबधी, पपड़िया कत्था-सफेद कत्था।
पपड़ियाना-(हिं० क्रि०) अत्यन्त सूख जाना, किसी वस्तु के परत का सूखकर सिकुड़ जाना।
पपड़ी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के ऊपर की परत जो सूखकर कड़ी हो गई हो, घाव के ऊपर की परत, खरड, छोटा पापड़, एक प्रकार की मिठाई।
पपड़ीला-(हिं०वि०) जिसपर पपड़ी जमी हो, पपड़ीदार।
पपनी-(हिं० स्त्री०) पलक के ऊपर के बाल, बरौनी।
पपरी-(हिं०स्त्री०) देखो पपड़ी।
पपहा-(हिं० पु०) धान की फस्ल को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा, एक प्रकार का घुन।
पपी-(स०पु०) सूर्य, चन्द्रमा।
पपीहा-(हिं० पु०) कीड़ा खाने वाला एक पक्षी जो वसन्त और वर्षाऋतु में

बहुधा आम के वृक्षों पर बैठकर बडे मीठे स्वर से गाता है, चातक, सितार में का लोहे का तार ।
पपीता-(हि०पु०) रेंड की तरह का एक पौधा जिसका फल पकाकर खाया जाता है
पपैया-(हि०पु०) आम का नया पौधा, अमोला ।
पपोटन-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसके बाँधने से फोड़ा पक जाता है ।
पपोटा-(हि० पु०) आँख के ऊपर का चमडे का परदा, पलक ।
पपोरना-(हि० क्रि०) बाँह को ऐंठ कर उसका उभाड़ ।
पपोलना-(हि० क्रि०) चबाना, मुह चलाना ।
पबई-(हि०स्त्री०) मैना की जाति का एक पक्षी ।
पबलिक्-(अं०स्त्री०) सर्व साधारण,जनता, आम लोग , (वि०) सार्वजनिक , पब्लिक् वर्क्स-वे निर्माण सबधी कार्य जो सर्व साधारणके हितके लिये सरकार की ओर से बनाये जाते हैं,इन्जिनियरी का एक मोहकमा ।
पब्बय-(हिं० पुं०) पर्वत, पहाड़ ।
पमार-(हि० पु०) अग्नि कुल क्षत्रियो की एक शाखा, प्रमार, पवार ।
पम्प-(अं० पु०) पानी खींचने या यन्त्र, देखो पप ।
पम्पा-(स० स्त्री०) दक्षिण देश की एक नदी और उसके समीप का एक सरोवर जिसका उल्लेख महाभारत और रामायण में आया है ।
पम्मन-(हिं० पु०) एक प्रकार की मोटी गेहूँ ।
पयःकुण्ड-(स०नपु०) दूध या जल रखने का घड़ा ।
पयःपान-(स० नपु०) दुग्ध पान, दूध पीना ।
पयः पालिनी-(स० स्त्री०) उशीर, खस ।
पयःपेटी-(स०स्त्री०) नारिकेल,नारियल ।
पयः प्रसाद्-(स० पु०) निर्मली का बीज
पय-(सं० नपु०) जल, पानी, दूध, अन्न, रात्रि, रात ।
पयद्-(हिं० पु०) देखो पयोद ।
पयधि-(हिं०पु०) देखो पयोधि समुद्र ।
पयनिधि-(हिं० पु०) देखो पयोनिधि ।
पयस्वान्-(हिं० वि०) पानी वाला ।
पयस्विन्,पयस्विनी-(स०) नदी, दूध देने वाली गाय, बकरी, धेनु, रात्रि , गायत्री रूपा महादेवी ।
पयस्वी-(हिं०वि०) पानी वाला, जिसमें जल हो ।
पयहारी-(हिं०पु०) वह तपस्वी या साधु जिसका आहार केवल दूध हो ।
पयादा-(हिं०पु०) देखो प्यादा ।
पयान-(हिं०पु०) गमन, यात्रा, जाना ।
पयार, पयाल-(हि०पु०) धान के सूखे डठल जिसमें से दाने निकाल लिये गये हों, पुआल , **पयाल झाड़ना**-वृथा का परिश्रम करना ।
पयोगल-(स०पु०) घनोपल, ओला ।
पयोज-(स०पु०) पद्म, कमल ।
पयोजन्मा-(स०पु०) मेघ, बादल,मोथा।
पयोद-(स०पु०) मेघ, बादल, मुस्तक, मोथा ।
पयोदन-(हिं०पु०) दूध भात ।
पयोदेव-(स०पु०) वरुण देवता ।
पयोधर-(सं०पु०) स्त्री का स्तन, मोथा, नारियल, तालाब, मदार, कसेरू,पर्वत, एक प्रकार की ऊख, समुद्र, गाय का थन, दोहा छन्द का एक भेद, छप्पय छन्द का एक भेद ।
पयोधारा-(स०स्त्री०) जल की धारा ।
पयोधि-(स०पु०) समुद्र ।
पयोनिधि-(सं०पु०) देखो पयोधि,समुद्र ।
पयोमुख-(स०वि०) दूध पीत, दुधमुहा ।
पयोमुच्-(सं०नपु०) मेघ, मोथा ।
पयोवाह-(स०पुं०) देखो पयोमुच् ।
परंच-(स०अव्य०) तौ भी, और भी, परन्तु ।
परदा-(फा०पु०) पक्षी, चिड़िया, एक प्रकार की हवादार नाव ।
परंपरा-(हि०स्त्री०) एक के पीछे दूसरा, सन्तति, वश परपरा, औलाद ।
परंपरागत-(हि०वि०) परपरा से आता हुआ ।
पर-(स० नपु०) केवल, ब्रह्म, मोक्ष, ब्रह्मा, शिव, विष्णु अथवा ब्रह्मा की आयु (वि०) श्रेष्ठ, जो दूर पर हो, अन्य, दूसरा ।
पर-(हिं० अव्य०) पश्चात्, पीछे, परन्तु, किन्तु, (फा० पुं०) चिड़िया का डैना, पख , **पर कट जाना**-शक्ति का ह्रास होना , **पर जमना**-नई नई शरारत सूझना, उपद्रव खड़ा करने के लिये उद्यत होना , **पर जलना**-साहस न होना,**पर न मारना**-पैर न खसकना।
परई-(हि०स्त्री०) मिट्टी का एक पात्र जो दिए से बड़ा होता है, सराव ।
परकटा-(हिं०वि०) जिसके परकटे हो ।
परचना-(हि० क्रि०) अभ्यास पड़ना, हिलना मिलना, चसका लगना ।
परकर्म-(स०नपुं०) दूसरे का काम ।
परकलत्र-(स० नपु०) दूसरे की औरत ।
परकसना-(हिं०क्रि०) प्रकाशित होना, प्रगट होना ।
परकाजी-(हि० वि०) परोपकारी, दूसरे का उपकार करने वाला ।
परकान-(हिं०पु०) तोपका कान या मूठ।
परकाना-(हिं०क्रि०) परचाना, हिलाना, मिलाना, धड़का खोलना, चसका लगाना ।
परकायप्रवेश-(सं०पु०) अपनी आत्मा को दूसरे के शरीर में प्रवेश करने की यौगिक क्रिया ।
परकार-(फा० पु०) वृत्त या गोलाई खींचने का एक औजार , (हि०) देखो प्रकार ।
परकारना-(हि० क्रि०) चारो ओर घुमाना ।
परकार्य-(स०नपुं०) दूसरे का कार्य ।
परकाल-(हि०पु०) देखो परकार ।
परकाला-(हि० पु०) सीढी, जीना, देहली, चौखट, दहलीज, खण्ड, टुकड़ा, शीशे का टुकड़ा, चिनगारी

आफत का परकाला-भयकर मनुष्य।
परकास-(हि० पु०) देखो प्रकाश।
परकासना-(हि० क्रि०) प्रगट करना, प्रकाशित करना।
परकिति-(हिं०स्त्री०) देखो प्रकृति।
परकीय-(स० वि०) पराया, दूसरे का, बेगाना।
परकीया-(स० स्त्री०) वह नायिका जो अपने पति को छोड़कर गुप्तभाव से अन्य पुरुष से प्रेम रखती हो।
परकृत-(स० स्त्री०) दूसरे का किया हुआ काम।
परकोटा-(हिं० पु०) किले की रक्षा के लिये इसके चारो ओर बनाई हुई दीवार, धुस, बाध, चह।
परख-(हि० स्त्री०) गुण दोष का अच्छी तरह ज्ञान करने के लिये अच्छी तरह देखभाल या जाच, परीक्षा, भला बुरा जानने की शक्ति, पहचान।
परखना-(हि०क्रि०) जाच करना, परीक्षा करना, गुण दोष स्थिर करने के लिये अच्छी तरह देखना भालना, भला बुरा पहिचानना, प्रतीक्षा करना, आसरा देखना।
परखवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से जँचवाना या परीक्षा कराना।
परखवैया-(हि० पु०) परखने वाला, जाँचने वाला।
परखाई-(हिं० स्त्री०) परखने का काम या मजदूरी।
परखाना-(हि० क्रि०) परखने का काम दूसरे से कराना, परीक्षा कराना, जँचवाना, सहेजवाना, सँभलवाना।
परखैया-(हिं०पुं०) परखने वाला।
परग-(हिं०पु०) पग, कदम, डग।
परगटना-(हि० क्रि०) प्रगट करना, जाहिर होना, खुलना, प्रगट होना।
परगत-(स०वि०) परप्राप्त, अपरगत।
परगना-(फा०पु०) भूमि का वह भाग जिसके अन्तर्गत बहुत से गाँव हों।
परगनी, परगहनी-(हि०स्त्री०)सोनारों का एक औज़ार जिसमें चादी या सोने की गुल्लिया ढाली जाती हैं।
परगसना-(हि० क्रि०) प्रगट होना, प्रकाशित होना।
परगाछा-(हि०पु०) एक प्रकार का गरम देश का पौधा।
परगास-(हि०पु०) देखो प्रकाश।
परगासना-(हि०क्रि०) प्रकाशित होना या करना।
परगुण-(स०वि०) उपकारी।
परग्रन्थि-(सं०पु०) अगुली की गाँठ।
परघट-(हि० वि०) देखो प्रगट।
परघनी-(हिं० स्त्री०) देखो परगहनी।
परचड-(हिं० वि०) देखो प्रचण्ड।
परचक्र-(स०नपु०) विपक्ष राजा।
परचन-(हिं०स्त्री०) जान पहचान।
परचना-(हिं०क्रि०)घनिष्ठता प्राप्त करना, हिलना मिलना,चसका लगाना,धड़का खुलना।
परचा-(फा० पु०) चिट्ठी, खत, पुरजा, प्रश्न पत्र, कागज का टुकड़ा, परिचय, जानकारी, प्रमाण, सबूत, परीक्षा, परख, जाँच।
परचाना-(हि० क्रि०) आकर्षित करना, हिलाना लिला, घनिष्ठता उत्पन्न करना, सकोच हटाना, धड़का खोलना, टेव या चसका लगाना।
परचार-(हिं०पु०) देखो प्रचार।
परचारना-(हिं०क्रि०) देखो प्रचारना।
परचित्त ज्ञान-(स०नपु०) दूसरे के मन का भाव जान लेना।
परचून-(हि० पुं०) आँटा, चावल, दाल, नमक, मसाला आदि भोजन सामग्री।
परचूनी-(हि०पु०) परचून बेंचने वाला बनिया, मोदी।
परचै-(हि०पु०) देखो परिचय।
परच्छन्द-(स० वि०) पराधीन, वह जो दूसरे के आधीन हो।
परछत्ती-(हि०स्त्री०) सामान रखने के लिये कोठरी के भीतर दीवार से सटा कर कुछ दूर तक लगाई हुई पाटन, टोड़ा हलकी छप्पर, छाजन।
परछन-(हि०स्त्री०) विवाह का एक रस्म जिसमें द्वार पर बारात आने पर कन्या पक्ष की स्त्रिया वर की पूजा करती हैं और आरती उतारती हैं।
परछना-(हि०क्रि०) परछने की क्रिया करना।
परछा-(हि० पु०) भीड़ हटना, समाप्ति, फैसला।
परछाईं-(हिं० स्त्री०) प्रकाश के आवरोध के कारण पड़ने वाली किसी वस्तु की छाया, छाया कृति, प्रतिबिम्ब, अक्स, परछाईं से डरना-अति भयभीत होना, बहुत डरना।
परछिद्र-(स० नपु०) दूसरे का दोष या ऐब।
परछालना-(हि०क्रि०) प्रक्षालन, धुलना।
परज-(हि० स्त्री०) एक रागिणी का का नाम, (पु०) कोयल (वि०) दूसरे से उत्पन्न।
परजन-(हिं० पु०) देखो परिजन।
परजन्य-(हि० पु०) देखो परजन्य।
पर जरना-(हि०क्रि०) सुलगना, दहकना, जलना, डाह करना, क्रुद्ध होना, कुढना।
परजवट-(हि० पु०) देखो परजौट।
परजा-(हि०स्त्री०) प्रजा, रैयत, आश्रितजन, जमीदार की जमीन पर बसने वाला, आसामी, काम धधा करने वाला।
परजात-(स० वि०) दूसरे से उत्पन्न, (पु०) कोयल, दूसरी जाति या बिरादरी का मनुष्य।
परजाता (हि० पु०) पारिजात, एक मझोले आकार का वृक्ष जिसके सुगन्धित फूल गुच्छो में लगते हैं, इसके फूल की डठी पीली होती है।
परजाति (स०स्त्री०) दूसरी जाति।
परजाय-(हि०पु०) देखो पर्याय।
परजित-(स० वि०) शत्रु से पराजित, दुश्मन से हराया हुआ।
परजौट-(हि० पु०) वह सालाना किराया जो मकान बनाने के लिये ली हुई जमीन पर लगे।
परञ्च-(स०अव्य०) परन्तु, लेकिन, तौभी।

परक्ष-(स०पुं०) छुरी का फल।
परक्षन-(स०पु०) वरुण देवता।
परक्षय-(स०पु०) वरुण (वि०) शत्रु को जीतने वाला।
परणना-(हि०क्रि०) विवाह करना।
परलंचा-(हि०स्त्री०) देखो पतञ्चिका।
परतः-(हि०अव्य०) अन्य से, दूसरे से, पश्चात्, पीछे, आगे।
परत-(हि०स्त्री०) किसी सतह के ऊपर का मोटाई का फैलाव, स्तर, तह, कपडे कागज़ आदि के अलग अलग भाग जो जोड़ने से नीचे ऊपर हो गये हों।
परतन्त्र-(स० वि०) पराधीन, परवश, (नपु०) उत्तम शास्त्र, उत्तम परिच्छेद।
परतच्छ-(हि०वि०) देखो प्रत्यक्ष।
परतल-(हि० पु०) लदू घोडे की पीठ पर रखने का बोरा।
परतला-(हि० पु०) कपडे चमडे आदि की चौड़ी पट्टी जो कन्धे पर से छाती और पीठ पर होती हुई तिरछी लटकती है और जिसमें तलवार लटकाई जाती है।
परता-(स० स्त्री०) श्रेष्ठता (हि० पु०) देखो पड़ता।
परताजना-(हि० पुं०) सोनारों का एक औज़ार।
परताप-(हि०पु०) देखो प्रताप।
परतापन-(स० पु०) वह जो दूसरे को कष्ट देता हो, गरुड़ के एक पुत्र का नाम।
परताल-(हि०स्त्री०) देखो पड़ताल।
परतिंचा-(हि०स्त्री०) देखो पतञ्चिका।
परती-(हि०स्त्री०) बिना जोती बोई हुई ज़मीन, वह चद्दर जिससे हवा करके अन्न में से भूसी उड़ाई जाती है।
परतीत-(हि०स्त्री०) देखो प्रतीति।
परतेजना-(हि० क्रि०) त्याग करना, छोड़ना।
परतोली-(हि०स्त्री०) गली।
परत्र-(स०अव्य०) अन्यत्र, दूसरे स्थान में, परलोक में, परत्रभीरु-धार्मिक, जिसको परलोक का भय हो।
परत्व-(स० नपु०) परता, पहिले या पूर्व होने का भाव।
परथन-(हि०पु०) देखो पलेथन।
परदा-(फा०पु०) आड़ करने का कपड़ा, टाट, चिक आदि, किसी के सामने न होने की स्थिति, आड़ छिपाव, परत, तह, आड़ करने वाली झिल्ली, चमड़ा आदि, विभाग करने की दीवार, स्त्रियों को घर के भीतर रखने का नियम, अंगरखे का छाती के ऊपर का भाग, सितार, हार्मोनियम आदि बाजे का वह स्थान जहां से स्वर निकलता है, दृष्टि या गति रोकने वाली वस्तु, व्यवधान, ओझल, नाव की पतवार, परदा खोलना-गुप्त बात को प्रगट करना, परदा डालना-किसी बात को छिपाना, आँख पर परदा पड़ना-देख न पड़ना, ढँका परदा-दोष या कलक को छिपाते हुए, मान मर्यादा बनाये हुए, परदा रखना-छिपा रखना, सामने न आना, परदा होना-स्त्रियों को किसी के सामने न आने देने का नियम, परदे में रखना-स्त्रियों को घर के भीतर रखना किसी के सामने न आने देना।
परदादा-(हि० पु०) प्रपितामह, दादा का बाप।
परदानशीन-(फा० वि०) अन्तःपुर में या परदे में रहने वाली।
परदार-(स० पु०) परभार्या, दूसरे की स्त्री, परदार गमन-पर स्त्री गमन, परदारगामी-दूसरे की स्त्री से संभोग करने वाला।
परदिवस-(स०नपु०)आज से दूसरा दिन।
परदेवता-(स० स्त्री०) श्रेष्ठ या इष्ट देवता।
परदुम्म-(हि०पुं०) देखो प्रद्युम्न।
परदेश-(स० पु०) दूसरा देश, विदेश।
परदेशी-(स० वि०) विदेशी, दूसरे देश में रहने वाला।
परदुःख-(स०नपु०) दूसरे की तकलीफ।
परधर्म-(स०पु०) दूसरे का धर्म,श्रेष्ठ धर्म।
परदोस-(हि०पु०) देखो प्रदोष।
परधान-(हि०वि०) देखो प्रधान (पुं०) परिधान।
परधाम-(स० पु०) वैकुण्ठ, परलोक, ईश्वर, विष्णु।
परध्यान-(स०नपु०) दूसरे का अनिष्ट चिन्तन।
परन-(हि०पु०) प्रतिज्ञा, टेक, अभ्यास, आदत, मृदंग आदि बजाने में बोलों के खण्ड।
परना-(हि०क्रि०) देखो पड़ना।
परनाना-(हि०पु०) नाना का पिता।
परनाम-(हि०पुं०) देखो प्रणाम।
परनाला-(हि० पुं०) नाबदान, मोरी, पनाला।
परनाली-(हि० स्त्री०) छोटी मोरी या नाबदान।
परनि-(हि०स्त्री०) आदत, टेक।
परनी-(हि०स्त्री०) धातु की बनी हुई पन्नी
परनौत-(हि०स्त्री०) नमस्कार, प्रणाम।
परन्तप-(स०वि०) प्रतापी, वैरियों को कष्ट देने वाला, जितेन्द्रिय (पु०) चिन्तामणि।
परन्तु-(हि०अव्य०) लेकिन, देखो परतु।
परपच-(हि०पु०) देखो प्रपच।
परपंचक-(हि०वि०) मायावी, फसादी, बखेड़िया।
परपची-(हि० वि०) धूर्त, बखेड़िया, फसादी।
परपक्ष-(स० पु०) विपक्ष की बात, विरोधियों का दल।
परपट-(हि०पु०) समतल भूमि, चौरस मैदान।
परपटी-(हि०स्त्री०) देखो पर्पटी।
परपद-(स०नपु०) श्रेष्ठ स्थान, मुक्ति।
परपराना-(हि०क्रि०) जीभ पर तीखा लगना, चुनचुनाना।
परपराहट-(हि० स्त्री०) परपराने का भाव, चुनचुनाहट।
परपाजा-(हि० पु०) प्रपितामह, दादा का पिता।
परपार-(हि० पुं०) दूसरी तरफ का

किनार, उस ओर का तट।
परपीडक-(स० पु०) दूसरे को कष्ट देने वाला, दूसरे की पीड़ा को समझने वाला।
परपुरुष-(स०पु०) अन्य पुरुष, विष्णु
परपुष्ट-(स० पु०) कोकिल, कोयल।
परपुष्टा-(स०स्त्री०) पराश्रया, वेश्या, रंडी
परपूठा-(हि० वि०) पक्क, पक्का।
परपूर्वा-(स०स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरा पति करती है
परपोता-(हि०पु०) देखो परपौत्र।
परपौत्र-(हि० पु०) पोते का पुत्र। परपोता।
परफुल्ल-(हि०वि०) देखो प्रफुल्ल।
परफुल्लित-(हि०वि०) देखो प्रफुल्लित
परवद-(हि०पु०) नाच की एक गत।
परब-(हि०पु०) देखो पर्व, (स्त्री०) किसी रत्न का छोटा टुकड़ा।
परवत-(हि०पु०) पर्वत, पहाड़।
परवस-(हि०वि०) देखो परवश,पराधीन
परवसताई-(हि० स्त्री०) पराधीनता, परतन्त्रता।
परवाल-(हि०पु०) आँख की बरौनी का कष्ट देने वाला फालतू बाल।
परवीन-(हि०वि०) देखो प्रवीण।
परवेस-(हि० पुं०) देखो प्रवेश।
परवोध-(हि०पु०) देखो प्रवोध।
परबोधना-(हि०क्रि०) ज्ञान का उपदेश करना,जगाना, समझाना,दिलासा देना
परब्रह्म-(स० नपु०) निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म।
परभाइ-(हि०पु०) देखो प्रभाव।
परभाग-(स० पु०) बचा हुआ अंश, दूसरी ओर का भाग, पश्चिम भाग।
परभाग्योपजीवी-(स० वि०) दूसरे की कमाई पर जीने वाला।
परभात-(हि०पु०) देखो प्रभात।
परभाती-(हि०स्त्री०) देखो प्रभाती।
परभाव-(हि०पु०) देखो प्रभाव।
परभुक्त-(स०वि०) दूसरे से भोगा हुआ
परभुक्ता-(स०स्त्री०) परपुरुष से संभोग की हुई स्त्री।

परभृत्-(स० पु०) काक, कौवा (वि०) दूसरे को पालने वाला।
परभृत-(स०पु०) कोकिल, कोयल।
परभृत्य-(स० पु०) दूसरे का सेवक।
परम-(स०वि०) उत्कृष्ट, बढ़कर, प्रधान, मुख्य, अत्यन्त, हद से ज्यादा, पहिला, (पु०) विष्णु, शिव।
परम.गति-(स०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष।
परमजा-(स० स्त्री०) प्रकृति।
परमट-(हि०पु०) संगीत में एक ताल।
परम तत्व-(स०पु०)मूल तत्व,मूल सत्ता, ब्रह्म ईश्वर।
परम देवी-(स०स्त्री०) महादेवी,पटरानी
परम धाम-(स० पु०) वैकुण्ठ, स्वर्ग।
परम पद-(स०नपु०) मोक्ष, मुक्ति।
परम पिता-(स० पु०) परमेश्वर।
परम पुरुष-(स०पु०)पुरुषोत्तम, विष्णु।
परमपूतिक-(स०पु०) अहिफेन,अफीम।
परमफल-(स०पु०) मोक्ष, मुक्ति।
परम ब्रह्मचारिणी-(स० स्त्री०) दुर्गा।
परम भट्टारक-(सं० पु०) महाराजाधिराज, एक छत्र राजाओं की एक उपाधि।
परम भागवत-(स० पुं०) वैष्णवों की एक साम्प्रदायिक उपाधि।
परम महत्-(स०वि०) सबसे बड़ा और व्यापक।
परम रस-(स०पु०)पानी मिलाहुआ मट्ठा।
परमर्षि-(स०पु०) वेदव्यास आदि ऋषि।
परमल-(हि० पु०) ज्वार या गेंहू का भूना हुआ दाना।
परमहंस-(स० पु०) ज्ञान की परम अवस्था, को पहुंचा हुआ सन्यासी, जिसको यह पूर्ण ज्ञान हो जाता है कि मै ही ब्रह्म हूँ, मैं ही परमात्मा हू, परमात्मा।
परमा-(हि०स्त्री०) शोभा, छवि, सुन्दरता।
परमाटा-(हि०पु०)संगीत का एक ताल।
परमाणु-(स० पुं०) पृथ्वी, जल, तेज, वायु तथा आकाश इन चारो भूतों का सब से छोटा भाग जिसके फिर विभाग नहीं हो सकते, अत्यन्त सूक्ष्म अणु।

परमाणु वाद-(स० पु०) न्याय तथा वैशेषिक दर्शनों का यह सिद्धान्त कि परमाणुओं से ही जगत् की सृष्टि है।
परमाणुवादी-इस सिद्धान्त को माननेवाला।
परमात्मा-(स० पु०) परब्रह्म, ईश्वर, चिदात्मा।
परमाद्वैत-(स० पु०) सर्व भेद रहित परमात्मा, विष्णु।
परमानन्द-(स० पु०) परम आनन्द स्वरूप ब्रह्म, परमात्मा, ब्रह्मानन्द, ब्रह्मके अनुभव का आनन्द।
परमान-(हि० पु०) देखो प्रमाण, सत्य वार्ता, अवधि, सीमा।
परमानना-(हि०क्रि०) प्रमाण मानना, ठीक समझना।
परमान्न-(सं० नपु०) पायस, खीर जो देवता और पितरों को अत्यन्त प्रिय है।
परमायु-(स०स्त्री०) जीवित काल, अधिक से अधिक आयु, मनुष्य की परमायु एक सौ वर्ष मानी जाती है।
परमार-(हि० पु०) राजपूत जाति की एक प्रधान शाखा, पॅवार,
परमारथ-(हि० पु०) देखो परमार्थ।
परमार्थ-(स० पु०) उत्कृष्ट पदार्थ, वास्तविक सत्ता, सार वस्तु, मोक्ष, सर्वथा अभाव रूप सुख।
परमार्थता-(स० स्त्री०) सत्य भाव।
परमार्थवादी-(हि० पु०) तत्वज्ञ, वेदान्ती, ज्ञानी।
परमार्थविद्-(स०वि०) परमार्थ वेत्ता।
परमार्थी-(स० वि०) यथार्थ तत्व को ढूढने वाला, मुमुक्षु, मोक्ष चाहनेवाला।
परमाह-(स०पु०)शुभ दिन अच्छा दिन।
परमुख-(हि०वि०) पराङ्मुख, विमुख, विपरीत आचरण करने वाला।
परमेश, परमेश्वर-(स० पु०) सृष्टि आदि का रचने वाला, सगुण त्रिमूर्तक ब्रह्म, विष्णु, शिव।
परमेश्वरी-(स० स्त्री०) दुर्गा।
परमेष्ठ-(स० पु०) प्रजापति।
परमेष्ठी-(सं० पुं०) अग्नि आदि

देवता, ब्रह्मा, शिव, महादेव, विष्णु, गरुड़, प्रजापति और उनके पुत्र।
परमेसर–(हिं० पुं०) देखो परमेश्वर।
परमैश्वर्य–(सं० नपु०) श्रेष्ठ ऐश्वर्य।
परमोद–(हिं० पु०) देखो प्रमोद।
परम्पर–(सं०पुं०) मृगमद, कस्तूरी।
परम्परा–(सं० स्त्री०) अपत्य, सन्तान, परिपाटी, अनुक्रम, एक के बाद एक।
परम्परागत–(सं० वि०) वंशानुक्रम से प्रचलित।
परम्परा प्राप्त–(सं० स्त्री०) जनश्रुति, प्रवाद।
परयंक–(हिं० पु०) देखो पर्यङ्क।
पररमण–(सं० पु०) पर स्त्री से रमण करने वाला, लम्पट, व्यभिचारी।
पररूप–(सं० वि०) दूसरे के समान रूप वाला।
परलउ–(हिं० पु०) देखो प्रलय।
परलत–(हिं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और जड़ औषधि में प्रयोग होती है।
परलय–(हिं० स्त्री०) प्रलय, सृष्टि का नाश या अन्त।
परला–(हिं० वि०) दूसरी ओर का, दूसरी तरफ का, उधर का, परले-सिरेका–बहुत अधिक, औवल दरजे का।
परलै–(हिं० पु०) देखो प्रलय।
परलोक–(सं० पु०) लोकान्तर, दूसरा लोक, स्वर्गादि, वह लोक जिसमें मृत्यु के बाद गति होती है, परलोकवासी–मृत्यु प्राप्त, परलोक सिधारना–मरना, परलोक गत–मृत्यु प्राप्त, मरा हुआ, परलोक गमन–मृत्यु, मरण, परलोक प्राप्ति–मरण।
परवत्–(सं० वि०) पराधीन, परवश।
परवर–(हिं० पु०) परवल, आँख का एक रोग।
परवरदिगार–(फा० पु०) पालन करने वाला, ईश्वर।
परवरिश–(फा०स्त्री०) पालन पोषण।
परवल–(हिं०पु०) एक प्रकार की लता जो टट्टियो पर चढाई जाती है और जिसके फलो की तरकारी बनती है।
परवश, परवश्य–(हिं० वि०) पराधीन, जो दूसरे के वश में हो।
परवश्यता–(सं०स्त्री०) पराधीनता।
परवस्ती–(हिं० स्त्री०) परवरिश, पालन पोषण।
परवा–(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की पहिली तिथि, एक प्रकार की घास।
परवा–(फा० स्त्री०) आशंका, खटका, चिन्ता, व्यग्रता, ख्याल, ध्यान, आसरा, भरोसा।
परवाई–(हिं० स्त्री०) देखो परवा।
परवाच्य–(सं० वि०) जिसको दूसरे बुरा कहते हो, निन्दित।
परवाज–(फा० स्त्री०) उड़ान।
परवाणि–(सं० पु०) मयूर, मोर।
परवाद–(सं० पु०) प्रवाद, अपवाद, दूसरे की निन्दा।
परवान–(हिं० पु०) सीमा, अवधि, प्रमाण, सबूत, यथार्थ बात।
परवानगी–(फा०स्त्री०) अनुमति, आज्ञा, इजाज़त।
परवानना–(हिं०क्रि०) उचित समझना।
परवाना–(फा०पु०) आज्ञा पत्र, फतिंगा, पखी।
परवाया–(हिं० पुं०) चारपाई के नीचे रखने का काठ का टुकड़ा।
परवाल–(हिं० पु०) देखो प्रवाल, मूगा।
परवाय–(हिं०पु०) आच्छादन, ढपना।
परवासी–(सं० वि०) दूसरे के घर बसने वाला।
परवाह–(हिं०पु०) देखो प्रवाह, बहाने का काम (फा०स्त्री०) व्यग्रता, चिन्ता, भरोसा, ध्यान।
परुवी–(हिं० स्त्री०) पर्व काल।
परवीन–(हिं० वि०) देखो प्रवीण।
परवेख–(हिं० पु०) चन्द्रमा के चारो ओर का प्रभा मण्डल जो हलकी बदली में देख पड़ता है।
परवेश–(हिं० पु०) देखो प्रवेश।
परवेश्म–(सं० नपु०) वैकुण्ठ, स्वर्ग।
परव्रत–(सं०पु०) धृतराष्ट्र का एक नाम।
परश–(सं० नपु०) पारस पत्थर, स्पर्श मणि, (पु०) स्पर्श, छूना।
परशाला–(सं०पु०) परगृह, दूसरेका घर।
परशासन–(सं०नपु०) दूसरे का आदेश।
परशु–(सं०पु०) कुठार, कुल्हाड़ी, तबर, भलुआ, प्राचीन काल का हिन्दुओ का युद्ध शस्त्र।
परशुधर–(सं०पु०) गणेश, परशुराम, (वि०) परशु धारण करनेवाला।
परशुराम–(सं०पु०) जमदग्नि ऋषि के पुत्र, भृगुपति, इन्होंने पृथ्वी को इक्कीस बार निःक्षत्रिय किया था।
परशुवन–(सं०नपु०)एक नरक का नाम।
परश्वध–(सं० पु०) कुठार, कुल्हाडी।
परसंग–(हिं०पु०) देखो प्रसङ्ग।
परसंसा–(हिं०पु०) देखो प्रशंसा।
परस–(हिं०पु०) स्पर्श, छूना, छूने की क्रिया, पारस पत्थर, स्पर्श मणि।
परसंग–(सं०त्रि०) दूसरे के साथ बन्धुता, प्रसङ्ग।
परसन–(हिं०पु०) छूने का भाव, स्पर्श, छूना, छूने का काम, (वि०) प्रसन्न, खुश।
परसना–(हिं०क्रि०) स्पर्श करना, छूना, स्पर्श कराना, छुलाना, किसी के सामने भोजन के पदार्थ रखना, परोसना।
परसन्न–(हिं०वि०) देखो प्रसन्न।
पर सम्बन्ध–(सं०पु०) दूसरे का सबंध।
परस पखान–(हिं० पु०) स्पर्शमणि, पारस पत्थर।
परसवर्ण–(सं०पु०) उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण।
परसा–(हिं० पु०) कुल्हाड़ी, कुठार, फरसा, देखो परोसा, पत्तल।
परसाद–(हिं०पु०) देखो प्रसाद।
परसाना–(हिं०क्रि०) स्पर्श करना, छुलाना, परोसवाना, भोजन बँटवाना।
परसाल–(फा०क्रि०वि०) गत वर्ष, पिछले साल, आगामी वर्ष, अगले साल, (हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जल में उगने वाली घास।
परसिद्ध–(हिं०वि०) देखो प्रसिद्ध।
परसिया–(हिं०स्त्री०) हँसिया।

परसीया-(हिं०पु०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी काली और मजबूत होती है।
परसु-(हिं०पु०) देखो परशु।
परसूक्ष्म-(स०पु०) एक सूक्ष्म परिमाण जो आठ परमाणुओं के बराबर माना जाता है।
परसेद-(हिं०पु०) देखो प्रस्वेद।
परसेवा-(स०स्त्री०) दूसरे की सेवा।
परसों-(हिं०अव्य०) बीते हुए कल से एक दिन पहले आने वाला, कल से एक दिन आगे।
परसोतम-(हिं०पु०) देखो पुरुषोत्तम।
परसोर-(हिं०पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।
परसौंहाँ-(हिं०वि०) स्पर्श करने वाला।
परस्त्री-(स०स्त्री०) दूसरे की स्त्री, परकीया नारी, परस्त्रीगमन-पराई स्त्री के साथ सम्भोग।
परस्पर-(स०अव्य०) एक दूसरे के साथ, आपस में।
परस्परानुमति-(स० स्त्री०) एक दूसरे की सलाह।
परस्परोपमा-(स० स्त्री०) एक अर्थालङ्कार जिसमें उपमान की उपमा उपमेय की और उपमेय की उपमा उपमान को दी जाती है, उपमेयोपमा।
परस्वध-(स० पु०) परश्वध, कुठार, कुल्हाड़ी।
परहरना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
परहार-(हिं०पु०) देखो प्रहार, परिहार।
परहारी-(हि० पु०) जगन्नाथ जी के पुजारी जो मन्दिर में ही रहते हैं।
परहित-(स०नपु०) दूसरे का कल्याण।
परहेज-(फा०पुं०) बुराई और दोष से दूर रहना, खाने पीने आदि का सयम, रोग उत्पन्न करने वाली या बढ़ानेवाली वस्तुओं का त्याग।
परहेजगार-(फा०पुं०) दोषों से दूर रहने वाला, बुराइयों से बचने वाला, सयमी, परहेज करने वाला।
परहेजगारी-(फा०स्त्री०) सयम, परहेज करने का काम।
परहेलना-(हिं० क्रि०) तिरस्कार या निरादर करना।
परांचा-(हि० पु०) तख्ता, पटरी, पाटन, बेड़ा।
परांठा-(हिं०पु०) तवे पर घी लगाकर सेंकी हुई चपाती, परौंठा।
परा-(सं०अव्य०) प्राधान्य, गति, विक्रम, वध आदि अर्थ में प्रयोग होता है, अनादर अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयोग होता है।
परा-(स०स्त्री०) उपनिषद् विद्या, ब्रह्मविद्या, एक प्रकार का सामगान, गायत्री, चार प्रकार की वाणियों में से पहिली वाणी जो नाद स्वरूपा और मूलाधार से निकली हुई मानी जाती है, (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम (हि०पु०) पक्ति, कतार, रेशम खोलने का एक लकड़ी का औजार।
पराक-(स०पु०) एक व्रत विशेष।
परा काष्ठा-(स०स्त्री०) चरम सीमा, हद, गायत्री का एक भेद, ब्रह्मा की आधी आयुष्य।
पराकोटि-(स०स्त्री०) देखो पराकाष्ठा।
पराक्रम-(स०पु०) शक्ति, बल, सामर्थ्य, पुरुषार्थ, उद्योग, विष्णु।
पराक्रमज्ञ-(स० पुं०) शत्रु के बल को जानने वाला।
पराक्रमी-(हि० वि०) वीर, पुरुषार्थी, उद्यमी, उद्योगी, बलवान्, बहादुर।
पराग-(सं०पु०) पुष्प धूलि, वह रज जो फूलों के बीच में केशरों पर जमी रहती है, धूलि, रज, उपराग, विख्याति, कपूर का चूर्ण, स्वच्छन्द गमन, एक प्रकार की सुगंधित चूर्ण जिसको शरीर में पोत कर स्नान किया जाता है।
पराग केशर-(स० पु०) फूलों के मध्य के वे लबे पतले सूत जिनकी नोक पर पराग लगा रहता है।
परागति-(स० पु०) शिव, महादेव (स्त्री०) गायत्री।
परागना-(हिं०क्रि०) अनुरक्त होना।
परागम-(स० पुं०) शत्रु का आगमन या आक्रमण।
पराङ्ग-(स०नपु०) शरीर का पिछला भाग
पराङ्गद-(स०पु०) शिव, महादेव।
पराङ्गव-(स०पु०) समुद्र।
पराङ्मुख-(स०वि०) विमुख, प्रतिकूल, विरुद्ध, निवृत्त, उदासीन, ध्यान न देने वाला।
पराङ्मुखता-(स०स्त्री०) प्रतिकूलता।
पराचित-(स० वि०) दूसरे से पाला पोसा हुआ।
पराचीन-(स०वि०) पराङ्मुख, विमुख, पुराना।
पराजय-(हिं०स्त्री०) पराभव, हार, शिकस्त
पराजिका-(हिं० स्त्री०) परज नाम की रागिणी।
पराजित-(सं० वि०) पराभूत, विजित, हारा हुआ।
पराजिष्णु-(स० वि०) विजयी, जीतने वाला।
पराण-(स०पुं०) प्राण।
परातंस-(स० वि०) धक्का देकर हटाया हुआ।
परात-(हि०स्त्री०) थाली के आकार का बड़ा पात्र, बड़ी थाली, थाल।
परातर-(स०वि०) बहुत दूर।
परात्पर-(स०पु०) परमात्मा, विष्णु।
परमेश्वर-(वि०) सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम।
परात्मा-(स०पु०) परब्रह्म, परमात्मा, दूसरे की आत्मा।
पराधि-(स० पु०) दूसरे का दुःख, दूसरे की मानसिक व्यथा।
पराधीन-(स०वि०) परवश, जो दूसरे के आधीन हो, परतन्त्र।
पराधीनता-(स० स्त्री०) परतन्त्रता, परवशता।
परान-(हि० पु०) देखो प्राण।
पराना-(हिं० क्रि०) भागना, पलायन।
परान्तक-(स०पु०) सर्वनाशक महादेव।
परान्तकाल-(स०पु०) मृत्यु का समय।
परान्तिका-(स० स्त्री०) मात्रा वृत्त का एक भेद।
परान्न-(सं०नपु०) दूसरे का दिया हुआ

भोजन , पराम्नपरिपुष्ट-दूसरे के भोजन से पली हुई शरीर,परान्नभोजी-दूसरे का अन्न खाने वाला।
परापर-(स०पु०) परुष फल, फालसा।
पराभव-(स० पु०) पराजय, हार, तिरस्कार, विनाश, मानहानि।
पराभिध-(स०नपु०) कुकुम, केसर।
पराभूत-(स०वि०) पराजित,हारा हुआ,नष्ट।
पराभूति-(स० स्त्री०) पराजय, हार।
परामर्श-(स०पु०) विचार, युक्ति,निर्णय, अनुमान, मन्त्रणा, सलाह, स्मृति, याद, खींचना।
परामर्शन-(स० नपु०) स्मरण, चिन्तन, विचार करना, मन्त्रणा करना।
परामर्शी-(स० वि०) निर्देशक, परामर्श देने वाला।
परामर्ष-(स०पु०) देखो परामर्श।
परामृत-(स०नपु०) मुक्ति, मोक्ष।
परामृष्ट-(स०वि०) निर्णय किया हुआ, विचारा हुआ,पकड़ कर खींचा हुआ।
परायचा-(फा०पु०) सिले हुए कपडे बेंचने वाला।
परायण-(स० वि०) प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ, अभीष्ट, गया हुआ, (पु०) विष्णु, आश्रय।
परायति-(स०स्त्री०) उत्तर काल (वि०) पराधीन।
परायत्त-(स०वि०) पराधीन, परवश।
पराया-(हिं० वि०) अन्य का, दूसरे का, जो अपना न हो, जो आत्मीय न हो, विराना।
परायुः-(स०पु०) ब्रह्मा।
परार-(हिं० वि०) दूसरे का, पराया, विराना।
परारध-(हिं०पुं०) देखो परार्ध।
पराारुक-(स०पु०) प्रस्तर, पत्थर।
परार्थ-(सं०वि०) जिसका उद्देश प्रधान न हो, दूसरे के निमित्त का (पु०) दूसरे का काम, दूसरे का उपकार।
परार्ध-(स०नपु०) एक शख की सख्या, ब्रह्म की आयु का आधा काल, कुकुम, केशर, खस, चन्दन।
परावत-(स०नपु०)परूषकफल, फालसा।
परावन-(हिं०पु०) पलावन, एक साथ अनेक मनुष्यों का भागना, भगदड़, पर्व, पुण्य काल।
परावर-(स० वि०) सर्वश्रेष्ठ, अगला पिछला।
परावरा-(स०स्त्री०) एक प्रकार की विद्या
परावर्त-(स० पु०) विनिमय, अदल बदल, पलटाव।
परावर्तन-(स०नपु०) पलटना, लौटना, परावर्तन व्यवहार-दुबारा विचार की प्रार्थना, अपील।
परावर्तित-(स० विं०) पलटाया हुआ, फेरा हुआ।
परावसु-(स०पु०)एक गन्धर्व का नाम।
परावह-(स०पु०) वायु के सात भेदों में से एक।
परावा-(हिं० वि०) देखो पराया।
परावाक-(स०पु०)तिरस्कार का वचन।
परावृत्त-(स०वि०)फेरा हुआ,बदलाहुआ।
परावृत्ति-(स०स्त्री०) पलटने या पलटाने की क्रिया या भाव, किसी मुकदमे का दुबारा फैसला।
पराशर-(स० पुं०) एक सर्प का नाम, एक गोत्रकार, एक ऋषि जो वसिष्ठ और शक्ति के पुत्र थे, एक प्रसिद्ध स्मृतिकार का नाम।
पराश्रय-(स० विं०) वह जो दूसरे के आश्रय में हो, अन्याश्रित।
पराश्रित-(स० वि०) पराधीन, दूसरे के आश्रित।
परास-(स०पु०) देखो पलाश।
परासन-(स० नपु०) मारण, वध, उत्तम आसन।
परासी-(स०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
परास्त-(स० वि०) पराजित, हारा हुआ, प्रभावहीन, दबा हुआ, ध्वस्त, जीता हुआ।
पराह-(स० पुं०) परदिन, दूसरा दिन।
पराह्न-(स० पु०) अपराह्न, दोपहर के बाद का समय, तीसरा पहर।
परि-एक सस्कृत उपसर्ग जिसके शब्द में जोड़ने से सर्वोत्तम, अच्छी तरह, अतिशय, त्याग, नियम अर्थों की वृद्धि होती है।
परिक-(हिं०स्त्री०) खोटी चाँदी।
परिकथा-(स० स्त्री०) वह कथा जिसके अन्तर्गत दूसरी कथा हो, धर्म विषयक कहानी।
परिकम्प-(स०पु०) भय, डर।
परिकर-(स०पु०) पर्यङ्क, पलग, परिवार, तैयारी, समूह, विवेक, ज्ञान, सहकारी, अनुचर वर्ग, एक अलकार जिसमें अभिप्राय पूर्ण विशेषणो के साथ विशेष्य का प्रयोग होता है।
परिकरमा-(हिं० स्त्री०) देखो परिक्रमा।
परिकराङ्कुर-(स० पु०) एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी शब्द का प्रयोग विशिष्ट उद्देश्य से किया जाता है।
परिकर्तिका-(स० स्त्री०) काटने के तरह की पीड़ा।
परिकर्षण-(स० नपु०) खींच कर दूसरे स्थान में ले जाना।
परिकल्कन-(स० पु०) वञ्चना,दगाबाज़ी।
परिकल्प-(स० नपु०) स्थिर निश्चय, बनावट, निर्देश, रचना।
परिकल्पन-(स०पुं०) चिन्तन, मनन, बनावट, रचना।
परिकल्पित-(स० वि०) स्थिर किया हुआ, ठहराया हुआ, मन में सोचकर बनाया हुआ।
परिकीर्ण-(स०वि०) विस्तृत, फैला हुआ।
परिकीर्तन-(स० नपु०) गुणों का विस्तृत वर्णन, अधिक प्रशसा।
परिकीर्तित-(स० वि०) प्रशसा किया हुआ, कहा हुआ, गाया हुआ।
परिकूट-(स०नपु०) नगर या किले के फाटक पर की खाई।
परिकृश-(स० वि०) अति दुर्बल, बड़ा दुबला।
परिकेश-(स० नपु०) बाल का अगला भाग।
परिक्रम, परिक्रमण-(स० पु०, नपु०) प्रदक्षिणा, परिक्रमा, चारो ओर घूमना

या फेरी देना।

परिक्रमा-(सं०स्त्री०) चारो ओर घूमना, चक्कर देना, किसी तीर्थ स्थान या देवमन्दिर के चारो ओर घूमने के लिये बना हुआ मार्ग।

परिक्रय-(सं०पु०) मोल लेना, खरीदना।

परिक्रिया-(सं०स्त्री०) खाई आदि घेरने की क्रिया।

परिक्लेद-(सं०पु०) आर्द्रता, भीगापन।

परिक्लेश-(सं०पु०) अत्यन्त दुःख।

परिक्षत-(सं०वि०) नष्ट, भ्रष्ट।

परिक्षय-(सं०पु०) ध्वंस, नाश, पतन।

परिक्षा-(सं० स्त्री०) मिट्टी, कीचड़ (हिं०स्त्री०) देखो परीक्षा।

परिक्षाम-(सं०वि०) अत्यन्त दुर्बल।

परिक्षालन-(सं० नपु०) धोने की क्रिया या भाव।

परिक्षित-(सं०वि०) खाई आदि से घेरा हुआ (हिं०वि०) देखो परीक्षित।

परिक्षेप-(सं०पु०) निक्षेप, चारो ओर घूमना।

परिक्षेपक-(सं०वि०) फेरा लगाने वाला, घूमने वाला।

परिखन-(हिं०वि०) रक्षक, रखवाली करने वाला।

परिखना-(हिं० क्रि०) प्रतीक्षा करना, आसरा देखना, परीक्षा करना, जाँचना।

परिखा-(सं० स्त्री०) किले के घेरने की खाई।

परिखात-(सं०नपु०) परिखा, खाई।

परिखान-(हिं० स्त्री०) पहिये की लीक या लकीर।

परिखेद-(सं०पु०) अत्यन्त दुःख, परिश्रम, मेहनत।

परिख्यात-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध, मशहूर।

परिगर्ण-(सं० पु०) गृह, घर।

परिगणन, परिगणना-(सं०नपु०) भली भाँति गणना करना, गणना करना, शुमार करना।

परिगणनीय-(सं०वि०) गिने जाने योग्य।

परिगणित-(सं०वि०) गिना हुआ।

परिगण्य-(सं० वि०) परिगणनीय, गिनने योग्य।

परिगत-(सं० वि०) ज्ञात, जाना हुआ, प्राप्त, मिला हुआ, विस्मृत, भूला हुआ, बीता हुआ, घिरा हुआ, मरा हुआ

परिगदित-(सं०वि०) कहा हुआ।

परिगर्वित-(सं०वि०) बड़ा घमंडी, बड़े गर्व वाला।

परिगर्हण-(सं०नपु०) बड़ी निन्दा।

परिगह-(हिं०पु०) कुटुम्बी, आश्रित जन।

परिगह्न-(सं०नपु०) बड़ा अन्धकार।

परिगीति-(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम।

परिगुण्ठित-(सं० वि०) छिपा हुआ, ढपा हुआ।

परिगूढ-(सं० वि०) अत्यन्त गुप्त।

परिगृहीत-(सं० वि०) स्वीकृत, ग्रहण किया हुआ, मिला हुआ।

परिगृह्या-(सं०स्त्री०) धर्म पत्नी, विवाहिता स्त्री।

परिग्रह-(सं० पु०) दान लेना, ग्रहण करना, सेना का पिछला भाग, अनुग्रह, कृपा, साधन, विष्णु, हाथ, शाप, शपथ, वेतन, पत्नी, भार्या, परिजन, परिवार, मूल, कन्द, अङ्गीकार, धन आदि का संग्रह, आदर पूर्वक कोई वस्तु लेना।

परिग्रहण-(सं० नपु०) पूर्ण रूप से ग्रहण करना, वस्त्र पहिरना।

परिघ-(सं० पु०) अर्गला, मुद्गर, बरछी, भाला, कलसा, घड़ा, गोपुर, घर प्रतिबन्ध, बाधा, पर्वत, तीर, मूढगर्भ, चन्द्रमा, जल, वज्र, सूर्य, स्थान, सूर्य के सामने वाला बादल, ज्योतिष का एक योग, फाटक, घोड़ा।

परिघात-(सं० पु०) हनन, हत्या, मार डालना।

परिघाती-(सं०वि०) हत्या करनेवाला।

परिघोष-(सं०पु०) बादल की गरज, शब्द।

परिचना-(हिं० क्रि०) देखो परचना।

परिचपल-(सं० वि०) जो हर समय घूमता फिरता रहे।

परिचय-(सं०पु०) विशेष रूप से ज्ञान, जानकारी, प्रमाण, लक्षण, अभ्यास, मश्क, किसी व्यक्ति के नाम धाम गुण आदि की जानकारी, जान पहिचान।

परिचर-(सं०पु०) रोगी की सेवा शुश्रूषा करनेवाला, अनुचर, भृत्य, खिदमतगार, टहलुआ।

परिचरजा-(हिं०स्त्री०) देखो परिचर्या।

परिचरण-(सं० पु०) सेवा, टहल, खिदमत।

परिचरणीय-(सं०वि०) सेवा करने योग्य।

परिचरिता-(सं० वि०) सेवा टहल करने वाला।

परिचरजा-(हिं०स्त्री०) देखो परिचर्या।

परिचरी-(सं०स्त्री०) दासी, टहलनी।

परिचर्या-(सं० स्त्री०) सेवा, शुश्रूषा, खिदमत, रोगी की सेवा।

परिचायक-(सं० पु०) जान पहिचान कराने वाला, सूचित करने वाला, जताने वाला।

परिचार-(सं०पु०) सेवा टहल, खिदमत, घूमने फिरने का स्थान।

परिचारक-(सं० पु०) भृत्य, दास, किंकर, चेट, रोगी की सेवा टहल करने वाला, देव मन्दिर आदि का प्रबन्ध कर्ता।

परिचारण-(सं० नपु०) सेवा, टहल, खिदमत, सहवास करना, संग करना।

परिचारना-(हिं० क्रि०) सेवा टहल करना, खिदमत करना।

परिचारिक-(सं०पु०) दास, सेवक।

परिचारिका-(सं०स्त्री०) दासी मजदूरनी

परिचारी-(हिं०वि०) सेवक, नौकर।

परिचार्य-(सं०वि०) सेवा करने योग्य।

परिचालक-(सं०पु०) सचालक, चलाने वाला, गति देने वाला, हिलाने वाला।

परिचालन-(सं० पु०) गति देना, हिलाना, चलाना, कार्यक्रम चलाना, चलने के लिये प्रेरित करना।

परिचालित-(सं०वि०) चलाया हुआ, जारी रक्खा हुआ, निर्वाह किया हुआ, हिलाया हुआ।

परिचित-(सं० वि०) जिसका परिचय हुआ हो, जाना समझा, मालूम, अभिज्ञ,

वाकिफ, मिलने जुलने वाला, मुलाकाती, सचित, इकट्ठा किया हुआ।
परिचिति–(सं०स्त्री०) अभिज्ञता, जानकारी
परिचुम्बन–(सं० नपु०) अति प्रेम से गाढ़ चुम्बन।
परिचो–(हि०स्त्री०) परिचय, ज्ञान।
परिच्छद–(सं०पु०) परिवार, परिजन, कुटुम्ब, वेश, पोशाक, पहिरावा, किसी पदार्थ को ढापने की वस्तु, असबाब, सामान, राजचिह्न, राजा के साथ रहने वाला नौकर।
परिच्छन्न–(सं० वि०) परिष्कृत, साफ किया हुआ, वस्त्रयुक्त, कपड़ा पहिने हुए, छिपा हुआ, ढपा हुआ, सजाया हुआ।
परिच्छित्ति–(सं० स्त्री०) परिच्छेद, सीमा, हद।
परिछिन्न–(सं०वि०) मर्यादित, विभक्त, सीमायुक्त।
परिच्छेद–(सं०पु०) विभाजन, काट कर विभाग करना, टुकड़े करना, ग्रन्थ या पुस्तक का ऐसा खण्ड जिसमें स्वतन्त्र विषय का वर्णन हो, अध्याय, प्रकरण।
परिच्छेद्य–(सं० वि०) विभाज्य, बाँटने योग्य।
परिच्युति–(सं०स्त्री०) पतन, गिरना।
परिछन–(हि०पु०) देखो परछन।
परिछाहीं–(हिं०स्त्री०) देखो परछाईं।
परिछिन्न–(हिं०वि०) देखो परिच्छन्न।
परिजंक–(हिं०पु०) देखो पर्यङ्क।
परिजटन–(हि०पुं०) देखो पर्यटन।
परिजन–(सं०पु०) परिवार, आश्रित वर्ग, सर्वदा साथ रहने वाला सेवक, अनुचरवर्ग।
परिजनता–(सं०स्त्री०) आधीनता।
परिजाड्य–(सं०स्त्री०) जड़ता, मूर्खता।
परिजात–(सं०वि०) जन्मा हुआ, उत्पन्न
परिज्ञप्ति–(सं०स्त्री०) जान पहिचान।
परिज्ञा–(सं०स्त्री०) सूक्ष्म ज्ञान।
परिज्ञात–(सं० वि०) विशेष रूप से जाना हुआ।
परिज्ञाता–(हिं०पु०) ज्ञानी, बुद्धिमान।
परिज्ञान–(सं०नपु०) किसी वस्तु का भली भाँति ज्ञान, सूक्ष्म ज्ञान।
परिज्ञेय–(सं०वि०) जानने योग्य।
परिडीन–(सं० पुं०) किसी पक्षी का आकाश में चक्कर खाते हुए उड़ना।
परिणत–(सं० वि०) पका हुआ, पचा हुआ, रूप बदला हुआ प्रौढ़, तुष्ट, बढ़ा हुआ।
परिणति–(सं०स्त्री०) अवनति, झुकाव, परिपाक, अन्त, प्रौढ़ता, पुष्टि, वृद्धता, बुढ़ाई।
परिणद्ध–(सं०वि०) बँधा हुआ, लपेटा हुआ, फैला हुआ, बढ़ा हुआ।
परिणय–(सं०पु०) विवाह, ब्याह, शादी।
परिणयन–(सं० पु०) विवाह करने की क्रिया।
परिणाम–(सं० पु०) विकार, प्रकृति का अन्यथा भाव, एक अर्थालंकार जिसमें एक वर्णनीय विषय में अन्य किसी वस्तु का आरोप किया जाता है और वह आरोप्यमान वस्तु अभिन्न रूप से प्रकृत विषय की उपयोगी होती है, रूपान्तर प्राप्ति, बदलने का भाव या कार्य, फल, नतीजा, बढ़ा होना, परिपुष्टि, विकास, समाप्त होना, बीतना, योग के अनुसार एक स्थिति का दूसरी स्थिति प्राप्त करना, सांख्य के अनुसार स्वाभाविक रूप से एक अवस्था त्यागकर दूसरी अवस्था प्राप्त करना।
परिणामदर्शी–(सं० त्रि०) भविष्य को जानकर काम करने वाला, सोच विचार कर काम करने वाला, सूक्ष्मदर्शी।
परिणाम दृष्टि–(सं० स्त्री०) आगामी फल की ओर दृष्टि।
परिणामवाद–(सं०पु०) वह सिद्धान्त जिसके अनुसार संसार की उत्पत्ति नाश आदि नित्य परिणाम रूप में मानी जाती है।
परिणामशूल–(सं०पु०) भोजन पचने के समय पेट में उत्पन्न होने वाला शूल या दर्द।
परिणामी–(सं० वि०) जो परिवर्तन स्वीकार करे, बदलने वाला।
परिणायक–(सं०पु०) सेनापति, नेता, पति
परिणाह–(सं० पु०) विस्तार, फैलाव, चौड़ाई।
परिणीत–(सं०वि०) विवाहित, जिसका ब्याह हो गया हो समाप्त, पूर्ण।
परिणेता–(हि०पु०) स्वामी, पति, भर्ता।
परिणेय–(सं०वि०) विवाह के योग्य।
परितः–(हि० अव्य०) चारो ओर, पूर्ण रूप से, सब प्रकार से।
परितच्छ–(हिं०पु०) देखो प्रत्यक्ष।
परितप्त–(सं०वि०) क्लेश अनुभव करता हुआ, अत्यन्त गरम, तपा हुआ, जलता हुआ।
परितप्ति–(सं०स्त्री०) जलन, दाह, गरमी।
परितर्पण–(सं०नपु०) भली भाँति तृप्ति।
परिताप–(सं० पु०) दुःख, सन्ताप, मानसिक क्लेश, पछतावा, भय, डर, अत्यन्त गरमी, कँपकपी, एक नरक का नाम।
परितापी–(हि०वि०) दुःखित, व्यथित, जिसको परिताप हो, पीड़ा देने वाला, सताने वाला।
परितिक्त–(सं० वि०) बहुत कड़ुवा, बहुत तीता (पु०) नीम का वृक्ष।
परितुष्ट–(सं० वि०) अच्छी तरह से सन्तुष्ट, प्रसन्न, खुश।
परितुष्टि–(सं०स्त्री०) सन्तोष, प्रसन्नता, खुशी।
परितृप्त–(सं०वि०) अच्छी तरह से सन्तुष्ट, अघाया हुआ।
परितोष–(सं०पु०) तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता
परितोषक–(सं०वि०) प्रसन्न करने वाला।
परितोषण–सन्तोष, तुष्टि।
परितोषी–(हि० वि०) संतोषी।
परितोस–(हि०पु०) देखो परितोष।
परित्यक्त–(सं० वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
परित्याग–(सं०पु०) त्यागने का भाव, अलग कर देना, छोड़ना।
परित्यागी–(सं०वि०) त्याग करने वाला, छोड़ने वाला।

परित्यागन-(सं०नपुं०) परित्याग, छोड़ना
परित्याज्य-(सं० वि०) परित्याग के योग्य, छोड़ने लायक।
परित्रस्त-(स०वि०) भीत, डरा हुआ।
परित्राण-(स०नपु०) रक्षा, आत्मरक्षा, बचाव, हिफाज़त, शरीर के रोंगटे।
परित्रात-(स०वि०) रक्षा किया हुआ।
परित्राता-(स० वि०) बचाने वाला, रक्षा करने वाला।
परिदर-(सं०पु०) दाँत का एक रोग।
परिदर्शन-(स० नपु०) अवलोकन, देखना।
परिदष्ट-(स० वि०) काटकर टुकड़ा किया हुआ।
परिदान-(स० नपु०) वापस करना, लौटा देना।
परिदाय-(स० पु०) सुगन्धि, खुशबू।
परिदाह-(स०पु०) शोक, सन्ताप।
परिदीन-(स० वि०) अत्यन्त खिन्न या उदास।
परिदेवक-(सं०पु०) विलाप करनेवाला।
परिध-(हिं०पु०) देखो परिधि।
परिधन-(हि० पु०) नीचे पहिरने का वस्त्र, धोती आदि।
परिधान-(स० नपुं०) पहिरने का वस्त्र, शरीर पर कपड़ा लपेटना, कपड़ा पहिरना, पोशाक, स्तुति, गायन आदि का समाप्त करना।
परिधापन-(स०नपु०) पहिरने की क्रिया।
परिधाय-(स० पु०) परिधान, वस्त्र, तितब, चूतड़।
परिधायक-(स० पु०) ढाँपने या लपेटने वाला।
परिधि-(स० पु०) रेखा गणित में वह रेखा जो किसी वृत्त के चारो ओर खींची जाती है, सूर्य, चन्द्र आदि के चारो ओर का प्रभामण्डल, चौहद्दी बनाने की रेखा, घेरा, बाड़ा, चहारदीवारी, नियमित मार्ग, कक्षा, वस्त्र, पोशाक।
परिधीर-(स० वि०) अत्यन्त गम्भीर।
परिधूपित-(स०वि०) धूप द्वारा सुवासित।
परिधेय-(स०वि०) पहिरने योग्य, (नपु०) कपड़ा, पोशाक, पहिरने का वस्त्र।
परिध्वस-(सं०पु०) अत्यन्त नाश।
परिनय-(हिं० पु०) देखो परिणय।
परिनिर्वाण-(स० नपु०) पूर्ण मोक्ष।
परिनिर्वृत्त-(स० वि०) पूर्ण रूपसे निर्वाण प्राप्त।
परिनिर्वृत्ति-(स०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष।
परिनिश्चय-(स० पु०) स्थिर निश्चय।
परिनिष्ठा-(स०स्त्री०) पूर्णता, समाप्ति।
परिन्यास-(स० पु०) काव्य में वह स्थान जहा कोई विशेष अर्थ पूरा होता हो, नाटक में प्रधान कथा की मूलभूत घटना की सूचना सकेत द्वारा किया जाना।
परिपक्क-(स० वि०) विकसित, प्रौढ, अच्छी तरह से पका हुआ, बहु दर्शी, अनुभवी, तजुर्बेकार, निपुण, प्रवीण, जो बिलकुल हज़म हो गया हो।
परिपक्वता-(स०स्त्री०) बहु दर्शिता।
परिपद्-(स० स्त्री०) जाल, फन्दा।
परिपन्थ-(स० पु०) वह जो मार्ग को रोके हो।
परिपन्थक, परिपन्थी-(स० पु०) शत्रु दुश्मन।
परिपवन-(स०पु०) चालनी, चलनी।
परिपाक-(स० पु०) पकना या पकाया जाना, पचने का भाव, बहुदर्शिता, निपुणता, कुशलता, कर्म का फल, परिणाम, प्रौढता, पूर्णता।
परिपाचन-(स० नपु०) अच्छी तरह से पच जाना।
परिपाटल-(स०वि०) पिलाहट लिये लाल रग का।
परिपाटी-(स० स्त्री०) अनुक्रम, श्रेणी, सिलसिला, प्रणाली, ढग, रीति, पद्धति, चाव, अङ्कगणित।
परिपार्श्वचर-(स०वि०) बगल में चलने वाले वाला।
परिपार-(हिं०पु०) मर्यादा।
परिपालक-(स० वि०) रक्षा करनेवाला।
परिपालन-(स०नपु०) परिरक्ष, देख रेख, रखवाली, रक्षा, बचाव।
परिपिच्छ-(स०पु०) मोर के पोछ का बना हुआ प्राचीन काल का एक आभूषण।
परिपिष्ट-(स०वि०) दलित, कुचला हुआ
परिपीडन-(स०नपु०) अत्यन्त कष्ट या हानि पहुँचाना।
परिपीवर-(स०वि०) बहुत मोटा ताजा।
परिपुष्ट-(स०वि०) अच्छी तरह से पुष्ट, जिसका पालन पोषण भली भाँति हुआ हो।
परिपूत-(स०वि०) विशुद्ध, अति पवित्र।
परिपूरक-(स०वि०) समृद्ध कर्ता, धन-धान्य से पूर्ण करनेवाला।
परिपूरित-(स०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, समष्टि किया हुआ।
परिपूरन-(हि० वि०) देखो परिपूर्ण।
परिपूर्ण-(स० वि०) खूब भरा हुआ, सम्पूर्ण, पूरा किया हुआ, तृप्त, अघाया हुआ।
परिपूर्णता-(स०स्त्री०) सम्पूर्णता।
परिपूर्णत्व-(स०नपु०) परिपूर्णता।
परिपूर्ति-(स०स्त्री०) परिपूर्ण होने की स्थिति या भाव।
परिपृच्छक-(स०पु०) पूछने वाला।
परिपेलव-(स० वि०) अति सुकुमार।
परिपोट-(स०नपु०) कान का एक रोग
परिपोषण-(स०नपु०) परिपुष्ट, पालन।
परिप्रश्न-(स० पु०) युक्तायुक्त प्रश्न, जिज्ञासा।
परिप्राप्ति-(स०स्त्री०) लाभ, मिलना।
परिप्रेषित-(सं० वि०) भेजा हुआ, निकाला हुआ।
परिप्रेष्य-(सं०पु०) दास, टहलुआ, (वि०) भेजने लायक।
परिप्लव-(स० वि०) अस्थिर, चचल, काँपता हुआ, गति युक्त, चलता हुआ (पु०) प्लावन, बाढ, नाव, अत्याचार।
परिप्लुत-(स० वि०) आर्द्र, भीगा हुआ, प्लावित, डूबा हुआ।
परिप्लुता-(स०स्त्री०) मदिरा, शराब
परिप्लुष्ट-(स० वि०) जला हुआ,

सुना हुआ।
परिफुल्ल-(स० वि०) खूब खिला हुआ, रोमांचित, जिसके रोंगटे खड़े हों।
परिबन्ध-(स०नपु०)जकड़ कर बाँधना।
परिबर्ह-(स०पु०) राजा का छत्र, चमर आदि, राजचिह्न।
परिबाधा-(स०स्त्री०)कष्ट, बाधा, पीड़ा।
परिबृंहण-(स०नपु०) उन्नति, बढती।
परिबोध-(स०पु०) सम्यक् ज्ञान।
परिभक्ष-(स० वि०) दूसरे का माल खाने वाला।
परिभक्षण-(स० नपु०) सपूर्ण रूप से खा जाना।
परिभग्न-(स० वि०) अच्छी तरह से चूर किया हुआ।
परिभव, परिभवन-(स० पु०, नपु०) अनादर, तिरस्कार, पराजय।
परिभवी-(हिं०वि०)तिरस्कार करनेवाला।
परिभाव-(स०पु०) अनादर,तिरस्कार।
परिभावन-(स० नपुं०) सयोग, मिलाप, चिन्ता।
परिभावना-(स०स्त्री०) चिन्ता, शोच, फिक्र, साहित्य में वह पद या वाक्य जिससे अधिक कुतूहल या उत्सुकता सूचित होती है या उत्पन्न होती है।
परिभावी-(हिं० वि०) तिरस्कार किया हुआ (पु०) तिरस्कार या अपमान करनेवाला।
परिभाषक-(स०वि०) निन्दक, निन्दा द्वारा किसी का अपमान करनेवाला।
परिभाषण-(स०नपु०) निन्दा करते हुए उलहना देना।
परिभाषा-(स० स्त्री०) स्पष्ट व सशय रहित कथन, किसी शब्द का इस प्रकार अर्थ करना कि जिसमें उसकी विशेषता और व्याप्ति पूर्णरूप से निश्चित हो जावे, किसी शास्त्र ग्रन्थ आदि की विशिष्ट सज्ञा, ऐसा शब्द जो किसी शास्त्र में निर्दिष्ट अर्थ में व्यवहार किया गया हो, शास्त्रकारों की बनाई हुई सज्ञा, लक्षण, सूत्र के छ लक्षणों में से एक, निन्दा, शिकायत।
परिभषित-(स०वि०) जिसकी परिभाषा की गई हो, अच्छी तरह से कहा हुआ।
परिभाषी-(हिं० वि०) बोलने वाला।
परिभुक्त-(स० वि०) जिसका उपभोग किया गया हो।
परिभू-(सं० वि०) जो चारो ओर से आच्छादित हो,(पु०) परिपालक,ईश्वर।
परिभूत-(स०वि०) अवमानित, तिरस्कार किया हुआ, पराजित, हराया हुआ।
परिभूषण-(स० पु०) सजाने की क्रिया या भाव।
परिभूति-(स०स्त्री०)निरादर,तिरस्कार।
परिभूषित-(स०वि०)सजाया या सँवार हुआ
परिभेद-(स० पुं०) तलवार तीर आदि का घाव।
परिभेदक-(स० वि०) गहरा घाव करनेवाला।
परिभोग-(स० पु०) उपभोग, स्त्री प्रसग, मैथुन।
परिभ्रम-(स० पु०) भ्रमण, भटकना, भ्रम, भ्रान्ति।
परिभ्रमण-(स०नपु०)पर्यटन, इधर उधर घूमना, चक्कर खाना, परिधि, घेरा।
परिभ्रष्ट-(स०वि०) पतित, गिरा हुआ, भागा हुआ।
परिमण्डल-(स०पु०) वर्तुलाकार (स्त्री०) चन्द्रमा के चारो ओर की प्रभा, परिधि, घेरा।
परिमन्थर-(स०वि०)बहुत धीरा या धीमा।
परिमन्द-(स०वि०) बहुत थका हुआ।
परिमर-(स० पु०) वायु, हवा।
परिमर्श-(स० पु०) परामर्श, विचार।
परिमर्ष-(स०पु०) ईर्षा, डाह, कुढन।
परिमल-(स० पु०) उत्तम गन्ध, खुशबू, मैथुन, सहवास, विमर्दन, मलने का काम, कुकुम आदि का मलना, परिमलज-मैथुन से प्राप्त सुख।
परिमाण-(स०पु०) माप, वह मान जो तौल या नापने से जानी जाय।
परिमाणक-(स०नपु०)नापनेका कोई यन्त्र।
परिमान-(हि०पु०) देखो परिमाण।
परिमार्गण-(स०नपु०) खोजना, ढूढना।
परिमार्जक-(स०नपुं०) धोने या माँजने वाला, परिशोधक, परिष्कारक।
परिमार्जन-(स० नपु०) परिशोधन, मार्जन, एक प्रकार की मिठाई।
परिमार्जित-(स० वि०) धोया हुआ, साफ किया हुआ, माँजा हुआ।
परिमित-(स० वि०) अल्प, थोड़ा, कम, यथार्थ परिमाण, जिसका परिमाण ज्ञात हो, तौला हुआ, युक्त, मिला हुआ।
परिमिति-(स०स्त्री०) भूमि मापन शास्त्र, (हि०स्त्री०) मर्यादा, इज्जत।
परिमिलन-(स० नपु०) अच्छी तरह मिलना।
परिमुख-(स०वि०)मुखमण्डल केचारोओर।
परिमुक्त-(स०वि०) पूर्ण रूप से मुक्त।
परिमूढ-(स०वि०) व्याकुल, विचलित, क्षोभित।
परिमृज्-(स०वि०) धोना या माँजना।
परिमृष्ट-(स०वि०) पकड़ा हुआ, परामर्श किया हुआ।
परिमेय-(स० वि०) नापने या तौलने योग्य, जिसके नापने या तौलने का प्रयोजन हो, सकुचित, थोड़ा।
परिमोक्ष-(स०पु०) सम्यक् मुक्ति, पूर्ण मोक्ष, परित्याग, छोड़ना, विष्णु।
परिमोक्षण-(स० नपु०) परित्याग, मुक्ति, मोक्ष।
परिमोष-(स० पु०) स्तेय, चोरी।
परिमोषक-(स० पु०) चोरी करनेवाला ठग, चोर।
परिमोहन-(स० नपु०) वशीकरण।
परिम्लान-(स०वि०) कुम्हलाया हुआ
परियक-(हि०पु०) देखो पर्यङ्क।
परियंत-(हि०अव्य०) देखो पर्यन्त।
परियस्त-(स० वि०) चारो ओर से घिरा हुआ।
परिया-(तामिल परैयान) दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति का नाम।
परियाण-(स०नपु०) घुमाई फिराई।
परियात-(स०वि०)लौटकर आया हुआ।
परिरक्षक-(स० वि०) सब तरह से

रक्षा करने वाला।
परिरक्षण-(सं० नपुं०) सब प्रकार से रक्षा।
परिरक्षणीय-(सं०वि०)रक्षा करने योग्य
परिरक्षा-(सं०स्त्री०) परिपालन।
परिरक्षित-(सं० वि०) उत्तम रूप से रक्षित।
परिरक्षी-(हिं०वि०)रक्षाकारी,बचाने वाला
परिरथ्या-(सं० स्त्री०) चौड़ी सड़क।
परिरम्भ-(सं०पुं०) परिरम्भन (सं०नपुं०) आलिंगन।
परिरम्भना-(हिं०क्रि०) आलिंगन करना
परिरोध-(सं०पुं०) अवरोध, रुकावट
परिलघु-(सं० वि०) बहुत छोटा।
परिलङ्घन-(सं०नपुं०) लम्फन, फलाग मारना।
परिलिखन-(सं०पुं०) रगड़कर किसी वस्तु को चिकनाना।
परिलिखित-(सं० वि०) रेखा से घिरा हुआ।
परिलुप्त-(सं०वि०) नष्ट, क्षति प्राप्त।
परिलेख-(सं० पुं०) कलम या कूची जिससे रेखा या चित्र बनाया जाय, चित्र का स्थूल रूप जिसमें केवल रेखा हो रंग न भरा हो, चित्र, तसवीर, उल्लेख, वर्णन।
परिलेखन-(सं० नपुं०) किसी वस्तु के चारो ओर रेखा खींचना।
परिलेखना-(हिं० क्रि०) समझना, ख्याल करना।
परिवंश-(सं०पुं०) धोखा, छल।
परिवत्सर-(सं० पुं०) एक पूरा वर्ष या साल।
परिवदन-(सं० नपुं०) परिवाद, निन्दा।
परिवर्जक-(सं० वि०) त्याग करनेवाला, छोड़ने वाला।
परिवर्जन-(सं०नपुं०) मारण, परित्याग।
परिवर्जनीय-(सं०वि०) त्याग करने योग्य
परिवर्जित-(सं०वि०)परित्यक्त,छोड़ा हुआ
परिवर्त-(सं० पुं०) विनिमय, बदला, घुमाव, चक्कर, युग का अन्त, अदल बदल, ग्रन्थ का अध्याय, स्वर साधन की एक प्रणाली।
परिवर्तक-(सं०वि०) घूमने फिरने वाला चक्कर खाने वाला, चक्कर देने वाला, बदलने वाला, उलटने पलटने वाला।
परिवर्तन-(सं०नपुं०) दो वस्तुओं का परस्पर अदल बदल, घुमाव, फेरा, जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जावे, बदलने की क्रिया, किसी काल या युग की समाप्ति।
परिवर्तनीय-(सं०वि०) बदलने लायक।
परिवर्तित-(सं० वि०) जिसका आकार या रूप बदल गया हो, बदला हुआ, जो बदले में मिला हो।
परिवर्ती-(हिं० वि०) परिवर्तनशील, बार बार बदलने वाला, बारबार घूमने वाला, बदला करने वाला।
परिवर्तुल-(सं०वि०) खूब गोल।
परिवर्धन-(सं० नपुं०) अच्छी तरह वृद्धि होना, किसी वस्तु का सख्या गुण आदि में खूब बढना।
परिवर्धित-(सं० वि०) बढा हुआ, बढाया हुआ।
परिवसथ-(सं०पुं०) ग्राम, गाँव।
परिवह-(सं० पुं०) सात पवनों में से एक, जो प्रातःकाल आकाश गंगा को बहाता हुआ शुक्र तारा को घुमाता है, अग्नि की सात जिह्वा में से एक।
परिवा-(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की पहिली तिथि, प्रतिपदा, पड़िवा।
परिवाद-(सं० पुं०) अपवाद, निन्दा, सितार या बीन बजाने का मिजराब।
परिवादक-(सं० वि०) निन्दा करने वाला, बीन बजाने वाला।
परिवादी-(हिं० वि०) अपवादक, निन्दा करने वाला।
परिवाप-(सं०पुं०) परिच्छद, मुण्डन।
परिवार-(सं० पुं०) परिजन समूह, कुटुम्ब, तलवार की खोली, म्यान, कोई ढापने वाली वस्तु, राजा या रईस के अनुचर जो उनके पीछे पीछे चलते हैं, अश्रित जन, एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समुदाय, कुल।
परिवारण-(सं०नपुं०) आवरण, तलवार की म्यान।
परिवास-(सं० पुं०) प्रवास, परदेश निवास, घर, सुगन्ध।
परिवाह-(सं०पुं०) राजा को भेंट देने योग्य वस्तु, फालतू पानी के निकलने का मार्ग, मेड आदि के ऊपर से जल का बहना।
परिवित्त-(सं०पुं०) वह मनुष्य जिसका छोटा भाई उससे पहिले अपना विवाह कर ले।
परिविद्ध-(सं० वि०) सब प्रकार से बंधा हुआ।
परिविष्ट-(सं०वि०) परिवृत, घेरा हुआ।
परिविहार-(सं०पुं०) भली भाँति विहार।
परिवीत-(सं० वि०) घिरा हुआ, लपेटा हुआ।
परिवृत-(सं०वि० ढपा हुआ, छिपा हुआ
परिवृति-(सं०स्त्री०) वेष्टन, छिपाने या घेरने की वस्तु।
परिवृत-(सं० वि०) ढपा या घिरा हुआ, समाप्त।
परिवृत्ति-(सं० स्त्री०) घुमाव, चक्कर, वेष्टन, घेरा, विनिमय, अदला बदला, समाप्ति, अन्त, किसी शब्द या पद को दूसरे ऐसे शब्द या पद से बदलना कि अर्थ वही बना रहे, एक अर्थालङ्कार जिसमे एक वस्तु को लेकर दूसरी वस्तु को लेने का वर्णन किया जाता है।
परिवृद्ध-(सं०वि०) खूब बढा हुआ।
परिवृद्धि-(सं०स्त्री०,परिवर्धन,खूब बढती।
परिवेत्ता-(हिं० पुं०) वह मनुष्य जो बडे भाई से पहिले अपना विवाह करले।
परिवेद-(सं०पुं०) परिज्ञान, पूरा ज्ञान।
परिवेदक-(सं०पुं०,पूरा ज्ञान कराने वाला
परिवेदन-(सं०नपुं०) विवाह, अग्निहोत्र के लिये अग्निस्थापन, विचरण, घूमना पूरा ज्ञान, लाभ, प्राप्ति, विद्यमानता, बडा दुःख या कष्ट, वादाविवाद।
परिवेश-(सं०पुं०) परिधि, वेष्टन, घेरा।
परिवेष-(सं०पुं०) परिधि, सूर्यका मण्डल,

परोसना, कोई ऐसी वस्तु जो चारों ओर से घेर कर किसी वस्तु की रक्षा करती हो, कोट, परकोटा, शहर पनाह की दीवार।

परिवेषण (सं० नपु०) परिधि, घेरा, परोसना, सूर्य या चन्द्र के चारो ओर का मण्डल, भोजन पात्र में अन्न आदि का दान।

परिवेष्टन-(स० नपु०) आच्छादन, चारो ओर से घेरना, ढापने या लपेटने की वस्तु, परिधि, घेरा।

परिवेष्टा-(हिं० पु०) परोसने वाला।

परिवेष्टित-(स० वि०) चारो ओर से घिरा हुआ।

परिव्यक्त-(स०वि०) अत्यन्त स्पष्ट या प्रगट

परिव्याध-(स०पु०) जलबेंत, कनेर का वृक्ष (वि०) चारो ओर से वेधने वाला।

परिव्रज्या-(स०स्त्री०) तपस्या, इधर उधर घूमना, भिक्षुक की भाँति जीवन बिताना

परिव्राज, परिव्राजक-(स० पु०) सब प्रकार के विषय भोगों का परित्याग करके भ्रमण करने वाला, सन्यासी, परमहस, यति, श्रमणक।

परिव्राट्-(स०पु०) परिव्राज, परिव्राजक।

परिशमित-(स० वि०) निर्वापित, दूर किया हुआ।

परिशाश्वत-(स० वि०) जो सर्वदा एकसा रहै।

परिशिष्ट-(स०नपु०) पुस्तक या लेख का वह अश जिसमें ऐसी बातें हों जो यथास्थान लिखने में छूट गई हों, पुस्तक की उपयोगिता बढाने के लिये अवशिष्ट विषयों की पूर्ति (त्रि०) अवशिष्ट, छूटा हुआ, ज़मीमा।

परिशीलन-(स०नपु०) सब बातों या विषयों को सोच समझ कर पढना, आलिंगन, स्पर्श, छूना।

परिशुद्ध-(स० वि०) अच्छी तरह से साफ किया हुआ।

परिशुद्धि-(स०स्त्री०) पाप से छुटकारा।

परिशुश्रूषा-(स० स्त्री०) भली भाँति सेवा करना।

परिशुष्क-(स०त्रि०) बहुत सूखा हुआ, रसहीन।

परिश्रुत-(स०नपु०) सुरा, मद्य, शराब।

परिशेष-(स०पु०) समाप्ति, अन्त, (वि०) अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ।

परिशोध-(स० पु०) पूर्ण शुद्धि, पूरी सफाई, ऋण की बेबाकी या चुकती।

परिशोधन-(स०नपु०) पूर्ण रीति से शुद्ध करना, कर्ज़ की बेबाकी।

परिशोषण-(स० नपु०) सब प्रकार से शुद्धता।

परिश्रम-(स०पु०) श्रम, क्लेश, प्रयास, उद्यम, व्यायाम, मेहनत।

परिश्रमी-(स०वि०) उद्यमी, मेहनती।

परिश्रय-(स०पु०) वेष्टन, घेरा, आश्रय, रक्षा का स्थान, सभा, परिषद्।

परिश्रयण-(स०नपु०) वेष्टन, घेरा।

परिश्रान्त-(स०वि०) बहुत थका हुआ।

परिश्रान्ति-(स०स्त्री०) थकावट।

परिश्राम-(स०पु०) क्लान्ति, थकावट।

परिश्रुत-(स० वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।

परिश्लिष्ट-(स०वि०) आलिंगित, छाती से लगाया हुआ।

परिषत्, परिषद्-(स०स्त्री०) प्राचीन काल की विद्वान् ब्राह्मणों की सभा, समूह, समाज, सभा, भीड़।

परिषद्-(स० पु०) सदस्य, सभासद, स्वामी के पीछे पीछे चलने वाले, अनुचर, मुसाहिब, दरबारी।

परिषद्वल-(स०त्रि०) सभासद, सदस्य।

परिषिक्त-(स० वि०) सींचा हुआ, जिसपर छिड़काव किया गया हो।

परिषीवण-(स०नपु०) गाँठ देना, सीना।

परिषेक-(स०पु०) छिड़काव, स्नान।

परिषेचक-(स० वि०) सींचने वाला, छिड़कने वाला।

परिष्कार-(स० पु०) सस्कार, शुद्धि, शोभा, अलकार, भूषण, सजावट, सयम, स्वच्छता, निर्मलता, शृगार।

परिष्कारण-(स० पु०) पाला पोसा हुआ, दत्तक पुत्र।

परिष्क्रिया-(स० स्त्री०) शुद्ध करना, माँजना, धोना, सजाना, विभूषित करना, सँवारना।

परिष्कृत-(स० वि०) विभूषित, सजाया हुआ, घिरा हुआ, शुद्ध किया हुआ।

परिष्टवन-(स० पु०) अच्छी तरह से स्तुति करना।

परिष्टोम-(स० पु०) हाथी के पीठ पर की झूल।

परिष्यन्द-(स० पु०) नदी, जल की धारा, द्वीप, टापू।

परिष्वङ्ग-(स० पु०) आलिंगन, गले मिलना।

परिसख्या-(स० नपु०) परिगणना, गिनती, एक अर्थालकार जिसमें पूछी या बिनी पूछी हुई बात उसी के समान दूसरी बात को व्यग या वाच्य के हटाने के निमित्त कही जाती है, यह कही हुई बात अन्य प्रमाणो से सिद्ध जान पड़ती है।

परिसंख्यान-(स०नपु०) परिगणन, गिनती।

परिसञ्चर-(स०पु०) सृष्टि का प्रलय काल

परिसभ्य-(स०पु०) सभ्य, सभासद।

परिसमन्त-(स० पु०) किसी वृत्त के चारो ओर की सीमा।

परिसमाप्त-(स०वि०) बिलकुल समाप्त, निःशेष।

परिसर-(स० पु०) नदी या पर्वत के आस पास की भूमि, मृत्यु, मौत, विधि, तरीका, शिरा, नाड़ी।

परिसरण-(स०नपु०) इधर उधर घूमना, पराभव, हार, मृत्यु, मौत।

परिसर्प-(स०पु०) किसी के चारो ओर घूमना, अपने कुटुम्बों से घिरा हुआ, घूमना, फिरना, एक प्रकार का सर्प एक प्रकार का कुष्ट रोग, नाटक में किसी व्यक्ति का केवल मार्ग के चिह्न आदि की सहायता से अनुमान करते हुए किसी को खोजने के लिए भटकते फिरना।

परिसाधन-(स० नपु०) परम विषय का साधन।

परिसारक-(स०पु०) इधर उधर भट-

करनेवाला।
परिसारी-(सं० वि०) भ्रमणकारी, घूमनेवाला।
परिसीमा-(सं० स्त्री०) चारो ओर की सीमा, हद, चौहद्दी।
परिस्कन्द-(सं० पु०) वह व्यक्ति जिसका पालन पोषण उसके पिता के अतिरिक्त दूसरे ने किया हो।
परिस्तरण-(सं०नपु०)छितराना, फैलाना, लपेटना।
परिस्तान-(फा०पु०) परियों के रहने का कल्पित स्थान, वह स्थान जहां सुन्दर नर नारियों का जमघट हो।
परिस्थान-(सं० नपु०) स्थिति, रहने का घर।
परिस्पन्दन-(सं० नपु०) अधिक हिलना या काँपना।
परिस्पर्धा-(सं० स्त्री०) धन, बल, यश आदि में किसी के बराबर होने की इच्छा
परिस्पर्धी-(सं० वि०) स्पर्धा या लाग डाट करनेवाला।
परिस्फुट-(सं० वि०) व्यक्त, प्रकाशित, विकसित, अच्छी तरह से खिला हुआ।
परिस्पन्द-(सं० पु०) क्षरण, झरना या बहना।
परिस्रव-(सं०पु०) टपकना, चूना, मन्द प्रवाह।
परिस्रुत-(सं० वि०) टपकता या चूता हुआ, (पु०) पुष्पसार, फलों का इत्र।
परिस्रुता-(सं०स्त्री०) अंगूर की शराब, वारुणी।
परिहस-(हिं०पु०) देखो परिहस।
परिहत-(सं०वि०) मृत, मरा हुआ, (हिं०स्त्री०) हल के अन्तिम और मुख्य भाग की वह सीधी खड़ी लकड़ी जिसके ऊपर की ओर मुठिया लगी होती है तथा नीचे की ओर हरिस तथा तरेली ठोंकी रहती है।
परिहर-(हिं०पु०) देखो परिहार।
परिहरण-(सं०नपु०) परिवर्जन, त्याग, किसी की वस्तु को जबरदस्ती छीन लेना, निवारण, निराकरण, अनिष्ट दोष आदि का उपचार करना।
परिहरणीय-(सं० वि०) त्यागने योग्य, हटाने या दूर करने लायक।
परिहरना-(हिं० क्रि०) त्यागना,छोड़ना।
परिहस-(हिं० पु०) परिहास, हँसी ठिल्लगी, ईर्षा, दुःख, खेद, डाह।
परिहा-(सं०पु०) एक प्रकार का छंद।
परिहाटक-(सं० नपु०) वलय, हाथ का कंगन।
परिहानि-(सं०स्त्री०) विशेष हानि, ज्यादा नुकसान।
परिहार-(सं० पु०) अवज्ञा, अनादर, उपेक्षा, पशुओं के चरने की सार्वजनिक भूमि, माफी जमीन, छूट, खण्डन, दोषादि दूर करने की युक्ति, लड़ाई में जीता हुआ धन, त्याग, छिपाने की क्रिया, उपचार, इलाज, त्यागने का कार्य, तिरस्कार, सूर्य और चन्द्र वंशीय राजपूतों की एक स्वतन्त्र शाखा, किसी अनुचित कार्य के करने का प्रायश्चित्त नाटक में दिखाया जाना।
परिहारना-(हिं०क्रि०,प्रहार करना,मारना।
परिहारक-(सं०वि०)परिहार करनेवाला।
परिहारी-(सं०वि०) निवारण, त्याग या हरण करनेवाला।
परिहार्य-(सं० वि०) जिसका परिहार किया जा सके।
परिहारयोग्य-(पु०) वलय, कङ्कण।
परिहाना-(हिं०पु०) हँसी ठिल्लगी, परिहास, क्रीड़ा, खेल।
परिहास-(सं०पु०) हँसी, दिल्लगी, ठट्ठा।
परिहित-(सं०वि०) पहिरा हुआ, ऊपर डाला हुआ, आच्छादित, चारो ओर से छिपा हुआ।
परिहीण-(सं० वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
परिहृत-(सं०वि०) पतित, भ्रष्ट, गिरा हुआ, नष्ट।
परी-(फा० स्त्री०) फारसी की प्राचीन कथाओं के अनुसार कोहकाफ पहाड़ पर बसने वाली कल्पित स्त्रियां जिनके कंधों पर उड़ने के लिये डैने रहते थे, अति रूपवती स्त्री, परम सुन्दरी।
परीक्षक-(सं०पु०) परखने या जाँचने वाला, इम्तिहान लेनेवाला।
परीक्षण-(सं० नपु०) परीक्षा, जाँच, पड़ताल।
परीक्षा-(सं०स्त्री०) गुण दोष विवेचन, वह कार्य जिससे किसी की योग्यता सामर्थ्य आदि जाना जावे, इम्तेहान, आजमाइश, समीक्षा, समालोचना, निरीक्षण, जाँच पड़ताल, अनुभव प्राप्त करने के लिये प्रयोग।
परीक्षित्-(सं० पु०) अर्जुन के पौत्र, अभिमन्यु के पुत्र-पाण्डु कुल के एक प्रसिद्ध राजा, शमीक ऋषि के शाप से इनको तक्षक ने डँसा था जिससे इनकी मृत्यु हुई थी-कलियुग का आरम्भ इनकी मृत्यु के बाद से हुआ था।
परीक्षित-(सं०वि०) जिसकी परीक्षा की गई हो।
परीक्ष्य-(सं०वि०) परीक्षा करने योग्य, जिसकी परीक्षा करना उचित हो।
परीखना-(हिं०क्रि०) देखो परखना।
परीछत-(हिं० पु०) देखो परीक्षित्।
परीछम-(हिं०पु०) पैर में पहिरने का एक आभूषण।
परीछा-(हिं०स्त्री०) देखो परीक्षा।
परीछित-(हिं०वि०) देखो परीक्षित।
परीजाद-(फा०वि०) अत्यन्त रूपवान्, बड़ा सुन्दर।
परीत-(सं०वि०) परिवेष्टित, घिरा हुआ।
परीताप-(सं०पु०) देखो परिताप।
परीतोष-(सं०पु०) परितोष, सन्तोष।
परीत्त-(सं०वि०) सकीर्ण, सङ्कुचित।
परीप्सा-(सं० स्त्री०) प्राप्त करने की अभिलाषा।
परीबन्द-(फा० पु०) कुश्ती की एक पेंच, एक प्रकार का कलाई पर पहिरने का आभूषण।
परीभाव-(सं०पु०) परिभाव, अनादर।
परीरम्भ-(सं०पु०)परिरम्भ, आलिङ्गन।
परीरू-(फा० वि०) अति सुन्दर, बड़ा खूबसूरत।

परीवाद-(सं०पु०) परिवाद, अपवाद, निन्दा।
परीवार-(सं०पु०) तलवार की म्यान, परिजन।
परीशान-(फा०वि०) परेशान, हैरानी।
परीशानी-(फा०स्त्री०) देखो।परेशानी।
परीषाह-(सं०पु०)जैन शास्त्रों के अनुसार बाईस प्रकार के त्याग।
परीसार-(हिं०पुं०) इधर उधर घूमना।
परीहार-(सं०पु०) अवज्ञा, अनादर।
परीहास-(सं०पु०)परिहास,उपहास,क्रीड़ा
परु-(सं०पु०) पर्वत, समुद्र, स्वर्ग लोग, ग्रन्थि।
परुई-(हिं०स्त्री०) भड़भूँजे की अन्न भूजने की नाद।
परुख-(हिं०वि०) देखो परुष।
परुखाई-(हिं०स्त्री०) परुषता, कठोरता, कड़ाई।
परुष-(सं०नपु०) कठोर बात, तीर, बाण, सरपत, (वि०) कठोर, कड़ा, निष्ठुर,अप्रिय,निर्दय,जिसको दया न हो
परुषता-(हिं०स्त्री०) कर्कशता, कठोरता, निर्दयता, निष्ठुरता (पु०) परुषता।
परुषत्व-(सं०नपु०) देखो परुषता।
परुषा-(सं०स्त्री०) रावी नदी, फालसा, काव्य में कठोर शब्दों के प्रयोग करने की रीति जिसमें टवर्गीय,द्वित्व, संयुक्त, रेफ और श, ष आदि वर्ण प्रयोग किये गये हो तथा लम्बे लम्बे समास अधिक आवें।
परुषाक्षर-(सं०पु०) कर्कश वचन, कठोर बात।
परुषित-(सं०वि०) कठोर वचन बोलने वाला।
परुषेतर-(सं०वि०) कोमल, मुलायम।
परुषोक्ति-(सं०स्त्री०) निष्ठुर वचन।
परूंगा-(हिं०पु०) एक प्रकार का पहाडी शाहबलूत का वृक्ष।
परूष, परूषक-(सं०नपु०) फालसा।
परे-(हिं०अव्य०) दूर, उधर, उस ओर, अतीत, बाहर, ऊपर, बढ़कर, पीछे, बाद।
परेई-(हिं०स्त्री०) पण्डुकी, फाखता, मादा कबूतर, कबूतरी।
परेखना-(हिं०क्रि०) सब ओर या सब पहलू से देखना, जाँचना, प्रतीक्षा करना, आसरा देखना।
परेखा-(हिं०स्त्री०) परीक्षा, जाँचपड़ताल, प्रतीति,विश्वास,पश्चात्ताप,पछतावा, खेद
परेग-(हिं०स्त्री०) लोहे की कील, छोटा काँटा।
परेट-(अं०पुं०) देखो परेड।
परेड-(अं०पु०) मैदान जहाँ सैनिकों को युद्ध शिक्षा दी जाती है, सैनिक शिक्षा, कवायद।
परेत-(हिं०पु०)देखो प्रेत,एक भूत योनि का नाम (वि०) मृत, मरा हुआ, परेत भूमि-प्रेतभूमि, श्मशान, परेत राज-यम, परेतवास-श्मशान भूमि।
परेता-(हिं०पु०) सूत लपेटने का जुलाहों का एक आजार, वह बेलन या चरखी जिसपर पतंग (गुड्डी) की डोरी, (नख) लपेटी जाती है।
परेर-(हिं०पु०) आकाश, आसमान।
परेली-(हिं०पु०) ताण्डव नृत्य का एक भेद।
परेवा-(हिं०पु०) पण्डूक पक्षी, कबूतर, तेज उड़ने वाली चिड़िया, तेज चलने वाला पत्रवाहक, हरकारा।
परेश-(सं०पु०) ईश्वर, विष्णु, ब्रह्मा।
परेशान-(फा०वि०) उद्विग्न, व्याकुल, घबड़ाया हुआ।
परेशानी-(फा०स्त्री०)व्याकुलता,उद्विग्नता
परेहा-(हिं०पु०) वह जमीन जो हल चलाने के बाद सींची गई हो।
परोधित-(सं०वि०)दूसरे से पाला पोसा हुआ (पु०) कोकिल, कोयल।
परो-(हिं०क्रि०वि०) देखो परसों।
परोक्ष-(सं०नपु०) अप्रत्यक्ष, अनुपस्थिति, अभाव, तपस्वी (वि०) जो सामने न हो, गुप्त, छिपा हुआ।
परोक्षत्व-(सं०नपु०) अदृश्य होने का भाव।
परोजन-(हिं०पु०) देखो प्रयोजन।
परोट-(सं०पु०) घी में पकाई हुई
परोढा-(सं०स्त्री०)विवाहित, ब्याहा हुआ।
परोना-(हिं०क्रि०) देखो पिरोना।
परोपकार-(सं०पु०) दूसरे के हित का काम, दूसरे का उपकार।
परोपकारक-(सं०पु०) वह जो दूसरे की भलाई करता हो।
परोपकारी-(सं०वि०) दूसरे का हित करनेवाला।
परोपजाप-(सं०पु०) शत्रुओं में परस्पर भेद करना।
परोरना-(हिं०क्रि०) अभिमन्त्रित करना, मन्त्र पढ़कर फूँकना।
परोल-(अं०पुं०) वह संकेत का शब्द जिसको सेना का अफसर अपने सिपाहियों को बतला देता है, जिसके उच्चारण करनेवाले को पहरेदार आने जाने से नहीं रोकते।
परोवरीण-(सं०वि०) जिसमें भला बुरा दोनो गुण हो।
परोवरीयस्-(सं०वि०) अत्यन्त श्रेष्ठ, परमात्मा।
परोसना-(हिं०क्रि०) खाने के लिये किसी के सामने तरह तरह के भोजन रखना, परसना।
परोसा-(हिं०पुं०) एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो थाली या पत्तल पर रख कर कहीं भेजा जाता है।
परोसी-(हिं०पुं०) देखो पड़ोसी।
परोसैया-(हिं०पु०)भोजन परसने वाला।
परोहन-(हिं०पु०) वह जिसपर सवार होकर यात्रा की जाय यथा-घोड़ा, बैलगाड़ी आदि।
परौता-(हिं०स्त्री०) अन्न को ओसाने के लिये हवा करने की चादर।
पर्कट-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का बगला।
पर्कटि-,पर्कटी(सं०स्त्री०)पाकड़ का वृक्ष।
पर्कार-(हिं०पु०) देखो परकार, परकाल
पर्काला-(हिं०पु०) देखो परकाला।
पर्गना-(हिं०पु०) देखो परगना।
पर्चा-(हिं०पु०) देखो परचा।
पर्चाना-(हिं०क्रि०) देखो परचाना।

पर्चन-(हिं० पु०) देखो परचून ।
पर्चूनिया-(हिं०पु०) देखो परचूनी ।
पर्ज-(हिं० पु०) देखो परज ।
पर्जंक-(हिं०पु०) देखो पर्यङ्क ।
पर्जनी-(स०स्त्री०)दारुहरिद्रा, दारुहल्दी
पर्जन्य-(स०पु०,इन्द्र, मेघ, बादल,विष्णु
पर्जन्या-(स० स्त्री०) दारुहल्दी ।
पर्ण-(स० नपु०) पत्र, पत्ता, ताम्बूल, पान, पक्ष, डैना, परासका पत्ता ।
पर्णकार-(स० पु०) पान बेंचने वाला, तमोली, बरई ।
पर्णकुटिका, पर्णकुटी-(स० पु०) पर्ण शाला, झोपड़ी केवल पत्तों की बनी हुई कुटी ।
पर्णकृच्छ्र-(स० पु०) एक व्रत जिसमें पांच दिन तक पत्तों का क्वाथ पीकर रहा जाता है ।
पर्णखण्ड-(स० पु०) पुष्पहीन वनस्पति ।
पर्णचीरपट-(स० पु०) शिव, महादेव ।
पर्णनाल-(स० नपु०) पत्तों का डंठल ।
पर्णभोजन-(स० वि०) जो केवल पत्ते खाकर रहता हो ।
पर्णमणि-(स०पुं०) हरित मणि, पन्ना ।
पर्णमूल-(स० नपु०) पान की जड़, कुलञ्जन ।
पर्णमृग-(स० पु०) वृक्षों पर रहने वाला पशु ।
पर्णल-(स० वि०) पर्णयुक्त, जिसमें पत्ते हों ।
पर्णलता-(स०स्त्री०) पान की बेल ।
पर्णवी-(स०वि०) खग, पक्षी ।
पर्णशय्या-(स०स्त्री०) पत्तों का बिछावन ।
पर्णशाला-(स० स्त्री०) पत्रों की बनी हुई कुटी ।
पर्णाटक-(स०पु०) एक ऋषि का नाम ।
पर्णाद-(स०वि०) पत्ते खाकर रहने वाला ।
पर्णाशन-(स०वि०) देखो पर्णाद, (पुं०) मेघ, बादल ।
पर्णास-(स०पु०) तुलसी ।
पर्णाहार-(सं० वि०) जो पत्ते खाकर रहता हो ।
पर्णिक-(स० वि०) पत्ते बेंचने वाला ।
पर्णिका-(सं०स्त्री०) पिठवन की लता ।
पर्णी-(हिं० पु०) वृक्ष, पेड़, तेजपत्ता, पिठवन, एक प्रकार की अप्सरा ।
पर्णोटज-(स० नपु०) देखो पर्णशाला ।
पर्त-(हिं०स्त्री०) देखो परत ।
पर्दनी-(हिं० स्त्री०) धोती ।
पर्दा-(हिं०पु०) देखो परदा ।
पर्दानशीन-(हिं० वि०) देखो परदा-नशीन ।
पर्पट-(स०पु०) पित्तपापड़ा, पपड़ी ।
पर्पटी-(स०स्त्री०) गोपीचन्दन, पपड़ी, उत्तर देश का एक सुगन्ध द्रव्य, पानड़ी ।
पर्पटीरस वैद्यक में एक प्रकार का रस ।
पर्परीक-(सं०पु०) सूर्य अग्नि, जलाशय ।
पर्ब-(हिं०पु०) देखो पर्व ।
पर्बत-(हिं०पु०) देखो पर्वत ।
पर्बती-(हिं०वि०) पहाड़ सम्बंधी, पहाड़ी ।
पर्यग्नि-(स० पु०) वह अग्नि जिसको लेकर परिक्रमा की जाती है ।
पर्यङ्क-(स० पु०) पलंग, योग का एक आसन, एक प्रकार का वीरासन ।
पर्यटन-(स०नपु०)भ्रमण, घूमना,फिरना
पर्यन्त-(स०पु०) समीप, पास, बगल (अव्य०) तक, लौं ।
पर्यन्तीकृत-(स०वि०)समाप्त किया हुआ ।
पर्यन्न-(स०पु०) गरजता हुआ बादल, बादल की गरज ।
पर्यय-(स०पु०) किसी नियम का उल्लङ्घन
पर्ययण-(सं०नपु०) घोड़े की पीठ पर रखने का वस्त्र, जीन ।
पर्यवरोध-(स०पु०) बाधा, रुकावट ।
पर्यवसान-(स०नपुं०) अन्त, समाप्ति, अन्तर्भाव, राग, क्रोध, ठीक अर्थ निश्चित करना ।
पर्यवसायी-(हिं०वि०)समाप्त करने वाला
पर्यवस्कन्द-(स०पु०) रथ से उतरना ।
पर्यवस्थान-(सं०नपु०) विरोध ।
पर्यवस्थित-(स०वि०) क्रोधयुक्त ।
पर्यसन-(स०नपु०) चारो ओर फेंकना ।
पर्यस्त-(स० वि०) पतित, प्रसारित, फैलाया हुआ, दूर किया हुआ ।
पर्यस्तापह्नुति-(सं०स्त्री०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु का गुण छिपाकर उस गुण का अन्य वस्तु में आरोपित होना वर्णन किया जाता है ।
पर्यस्तिका-(स०स्त्री०) पर्यङ्क,खाट,पलंग ।
पर्याकुल-(स० वि०) बहुत व्यग्र या घबड़ाया हुआ ।
पर्याकुलत्व-(स०नपु०) व्याकुलता ।
पर्याण-(स०नपु०) घोड़े का साज, जीन ।
पर्याप्त-(सं० वि०) यथेष्ट, काफी, पूरा, प्राप्त, मिला हुआ, जिसमें शक्ति या सामर्थ्य हो ।
पर्याप्ति-(स० स्त्री०) प्रकाश, प्राप्ति, शक्ति, नैयायिकों के मत से एक प्रकार का स्वरूप सम्बन्ध ।
पर्याय-(स०पु०) क्रम, परंपरा अनुक्रम, परिपाटी, प्रकार, अवसर, मौका, निर्माण, बनाने का काम, सम्पर्क विशेष एकार्थ वाचक शब्द, वह अर्थालंकार जिसमें एक वस्तुका क्रम से अनेक आश्रय लेना वर्णन किया जाता है । पर्याय क्रम-बड़ाई छोटाई आदि के विचार से प्रकार या सिलसिला, पर्याय वाचक-जिसमें पर्याय शब्द हों, पर्याय वृत्ति-एक वृत्ति को त्याग करके दूसरी ग्रहण करना, पर्याय शयन-अपनी अपनी पारी से सोना, पर्यायशब्द-पर्याय वाचक शब्द ।
पर्यायिक-(स०पु०) संगीत या नृत्य का अंग भेद ।
पर्यायोक्त-(स० वि०) जो क्रम से कहा गया हो (नपुं०) वह शब्दालङ्कार जिसमें कोई बात स्पष्ट रूपसे न कही जाकर घुमाव फिराव से कही गई हो अथवा किसी सुन्दर बहाने से कार्य साधन का वर्णन किया गया हो ।
पर्यालोचन-(स० नपु०) अनुशीलन, अच्छी तरह से देख भाल ।
पर्यालोचना-(स० स्त्री०) किसी वस्तु की पूरी देख भाल, पूरी जाँच पड़ताल ।
पर्यावर्त-(स०पु०) लौटना,वापस आना ।
पर्यास-(स० पु०) हनन, वध, नाश ।
पर्यासन-(स० नपुं०) किसी को घे

कर बैठना ।

पर्युत्थान-(सं० नपु०) अच्छी तरह से उठना ।

पर्युदय-(स० अव्य०) सूर्योदय का समीप होना ।

पर्युपासक-(स०नपु०) सेवा करने वाला

पर्युपासन-(स०नपु०) सेवा, सत्कार ।

पर्युप्ति-(स०स्त्री०) चारो ओर बीज बोना ।

पर्व-(स०नपु०) बासकी गॉठ, अगुलि की गिरह, उत्सव, प्रस्ताव, पूर्णिमा और प्रतिपदा की सान्धि, अश, भाग, धर्म, क्षण, सन्धि स्थान, अवसर, मौका, सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण, यज्ञ आदि के समय होने वाला उत्सव, भाग, टुकड़ा, पक्ष ।

पर्वक-(स०नपु०) पैर का घुटना ।

पर्वकाल-(स०पु०) पर्वका समय, पुण्य काल, पर्वके दिन, चन्द्रमा का क्षय काल ।

पर्वगामी-(स०पु०) पर्व के दिन स्त्री से सभोग करने वाला ।

पर्वण-(स०पु०) पूरा करने की क्रिया या भाव ।

पर्वणी-(सं०स्त्री०) पूर्णिमा, पौर्णमासी, सन्धि का एक रोग ।

पर्वत-(स०पु०) शैल, गिरि, पहाड़, किसी वस्तु का ऊचा ढेर, वृक्ष, पेड़, एक प्रकार का साग, सन्यासी, एक प्रकार के गन्धर्व, मरीचिके एक पुत्र का नाम, पर्वतकाक-डोम कौवा, पर्वतजा-(स०स्त्री०) नदी, गौरी, पार्वती ।

पर्वतपति-(स०पु०) हिमालय ।

पर्वतमोचा-(स०स्त्री०) पहाड़ी केला ।

पर्वतराज-(स०पु०) हिमालय पर्वत ।

पर्वतराजपुत्री-(स० स्त्री०) दुर्गा ।

पर्वतवासी-(हि० वि०) पहाड़ पर रहने वाला ।

पर्वतात्मजा-(स० स्त्री०) दुर्गा ।

पर्वतारि-(स० पु०) इन्द्र ।

पर्वताशय-(सं०पु०) मेघ, बादल ।

पर्वताश्रय-(स० वि०) पहाड़ पर रहने वाले ।

पर्वतास्त्र-(स० पु०) प्राचीन काल-का एक अस्त्र जिसके फेंकने पर शत्रु की सेना पर बडे बडे पत्थर गिरने लगते थे अथवा सेना के चारो ओर पहाड़ खडे हो जाते थे ।

पर्वती-(हिं०वि०) पर्वत सबधी, पहाड़ी ।

पर्वतीय-(स० वि०) पर्वत सबधी, पहाडी, पहाड पर रहने वाला, पहाड पर उत्पन्न होने वाला ।

पर्वतेश्वर-(स० पु०) पर्वतराज, हिमालय ।

पर्वतोद्भव-(स० पु०) हिंगुल, पारद, परा

पर्वतोद्भूत-(स० नपु०) अभ्रक, अबरख ।

पर्वधि-(स० पु०) चन्द्र, चन्द्रमा ।

पर्वमूल-(स० नपु०) चतुर्दशी और अमावस्या की मध्यवर्ती मुहूर्त ।

पर्वमूला-(स० स्त्री०) सफेद दूब ।

पर्वयोनि-(सं० पु०) गाँठदार वनस्पति यथा ऊख ।

पर्वर-(हि० पु०) देखो परवल, परवल ।

पर्वरिश-(फा० स्त्री०) पालन पोषण ।

पर्वरुट, पर्वरुह-(स० पु०) दाडिम, अनार ।

पर्वसन्धि-(स०पु०) घुटने पर का जोड, सूर्य या चन्द्रमा को ग्रहण लगने का समय, पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय ।

पर्वा-(हिं० स्त्री०) देखो परवाह ।

पर्वानगी-देखो परवानगी ।

पर्वाना-(हिं० पु०) देखो परवाना ।

पर्वाह-(स० पु०) पर्वदिन, उत्सव का दिन, (हिं० स्त्री०) देखो परवाह ।

पर्वणी-(हि० स्त्री०) देखो पर्व ।

पर्शनीय-(हि० वि०) स्पर्श करने योग्य ।

पर्शु-(स० पु०) परशु, फरसा, पसली ।

पर्शुका-(स० स्त्री०) छाती पर की हड्डी

पर्शुपाणि-(स० पु०) परशुराम ।

पर्शुराम-(स० पु०) देखो परशुराम ।

पर्ष-(स० वि०) निष्ठुर, कठोर ।

पर्षद-(स० स्त्री०) सभा, समाज ।

पर्हेज-(फा० पु०) रोग के समय सयम अथवा अपथ्य वस्तु का त्याग, बचना, दूर रहना, पर्हेजगार-पर्हेज करने वाला, सयम से रहने वाला ।

पलका-(हिं०स्त्री०) अति दूर का स्थान ।

पलंग-(हि०पु०) पर्यङ्क, सुन्दर चारपाई ।

पलंगड़ी-(हिं० स्त्री०) छोटी पलग ।

पलगतोड़-(हिं० पु०) एक प्रकार की स्तम्भन औषधि ।

पलंगपोश-(हि० पु०) पलग पर बिछाने की चादर ।

पलगिया-(हि० स्त्री०) छोटी पलग, खटिया ।

पलंडी-(हि० स्त्री०) नवका वह बास जिसमें पाल बाधी जाती है ।

पल-(स० पु०) समय का एक प्राचीन विभाग जो चौबीस सेकन्ड के बराबर होता है, घडी या दण्ड का साठवा भाग, धान का पुआल, चलने की क्रिया धोखेबाजी, तुला, तराजू, एक तौल जो चार कर्ष के बराबर होती है, आमिष, मास, मूर्ख, दृगचल, पलक, समय का अति सूक्ष्म विभाग, क्षण, पल मारते-अति सूक्ष्म काल में, तुरत, पल के पलमें-अति शीघ्र, बहुत जल्दी ।

पलई-(हि० स्त्री०) पेड की टहनी, वृक्ष का सिरा ।

पलक-(स० पु०) आँख के ऊपर का चमडे का परदा जिसके गिरने से आँख बन्द होती और उठने से खुलती है, क्षण, पल, पलक झपते-बहुत थोडे समय में, बात की बात में, किसी के लिये पलक बिछाना-बडे प्रेम से स्वागत करना, पलक भाँजना-पलक गिराना, पलक मारना-पलक गिराना, आँखों से इशारा करना, सेन देना, पलक गिराना-आँख बन्द होना, झपकी लगना, नींद आना, पलक से पलक न लगना-आँखें खुली रहना, नींद न आना ।

पलक दरिया-(हिं०वि०) अति उदार, बडा दानी ।

पलकनेवाज़-(हिं० वि०) अति उदार, क्षण भरमें निहाल कर देने वाला ।

पलकपीटा-(हि०पु०) आँख की बरौनी झड़ने का एक रोग ।

पलका-(हिं०पु०) पलग, चारपाई ।
पलक्या-(सं०स्त्री०) पालकी का साग ।
पलखन-(हिं०पु०) पाकर का पेड ।
पलगण्ड-(सं०पु०) कच्ची दीवार में मिट्टी का लेप करने वाला ।
पलङ्कट-(सं०वि०) भीरु, डरपोक ।
पलङ्कष-(सं०पु०) राक्षस, गुग्गुल ।
पलङ्कषा-(सं० स्त्री०) गुग्गुल, पलाश, गोरखमुण्डी, लाह, मक्खी, छोटा गोखरू ।
पलचर-(हिं० पु०) राजपूत जाति के पुराणोक्त उपदेवता ।
पलटन-(हिं०स्त्री०) अंग्रेजी पैदल सेना का एक विभाग इसमें दो या अधिक कंपनियां रहती हैं अर्थात् प्रायः दो सौ सैनिक रहते हैं, समूह, समुदाय दल ।
पलटना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु के ऊपर के भाग को नीचे और नीचे वाले को ऊपर करना या होजाना, अच्छी स्थिति प्राप्त करना, दिन बहुरना, बार बार उलटफेर करना, एक बात से मुकर कर दूसरी बात कहना, बदलना, लौटाना, फेरना, वापस करना, काया पलट होना, लौटना, वापस होना, पीछे फिरना, मुड़ना, एक वस्तु को त्याग कर दूसरी ग्रहण करना ।
पलटनिया-(हिं०पु०) पलटन में काम करने वाला, सैनिक, सिपाही ।
पलटा-(हिं०पु०) पलटने की क्रिया या भाव, प्रतिफल, बदला, परिवर्तन, नाव में वह पटरी जिसपर खेने वाला बैठता है, कुश्ती का एक पेंच, गाने में जल्दी जल्दी थोडे से स्वरों पर चक्कर लगाना अथवा ऊँचे स्वर तक पहुँच कर धीरे धीरे नीचे के स्वरों तक पहुँचना, लोहे या पीतल की बड़ी खुरचनी, पलट खाना-परिस्थिति का बदल जाना ।
पलटना-(हिं० क्रि०) बदलना, फेरना, लौटाना, वापस करना ।
पलटी-(हिं०स्त्री०) देखो पलटा ।
पलटे-(हिं० क्रि०वि०) प्रतिफल स्वरूप, बदले में ।
पलड़ा-(हिं०पु०) तुलापट, तराजू का पल्ला ।
पलथा-(हिं०पु०) पानी में कलैया मारना ।
पलथी-(हिं० स्त्री०) बैठने का एक ढग जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाए और बाएँ पैर का पंजा दहिने पट्टे के नीचे दबा कर रक्खा जाता है और दोनों टाँगें ऊपर नीचे हो होकर दोनों जाघों से त्रिकोण बनाती हैं ।
पलद-(सं० वि०) वह द्रव्य जिस के खाने से मांस की वृद्धि होती है ।
पलना-(हिं० क्रि०) पाला पोसा जाना, पर्वरिश पाना, खा पीकर मोटा ताजा होना, तैयार होना, कोई वस्तु किसी को देना ।
पलनाना-(हिं० क्रि०) घोडे को जीन कसकर तैयार करना ।
पलप्रिय-(सं०वि०) मांस खाने वाला ।
पलभक्षी-(हिं० पु०) मांसाहारी, मांस खाने वाला ।
पलरा-(हिं० पु०) देखो पलड़ा ।
पलल-(सं० नपु०) मांस, कीचड़, तिलका चूर्ण, तिलकुट, (पु०) सेवार, पत्थर, दूध, शव लाश, बल, शक्ति ।
पललप्रिय-(सं०वि०) देखो पलप्रिय ।
पलव-(सं०पु०) मछली फसाने का झाबा ।
पलवल-(हिं० पु०) देखो परवल ।
पलवा-(हिं० पु०) ऊख का अगौरा, अंगुली, चुल्लू ।
पलवाना-(हिं० क्रि०) किसी के द्वारा पालन पोषण कराना ।
पलवारी-(हिं०पु०) नाव खेने वाला माझी ।
पलवाल-(वि०) हृष्ट पुष्ट, हट्टा कट्टा ।
पलवैया-(हिं० वि०) पालन पोषण करने वाला ।
पलस्तर-(हिं० पु०) अंग्रेजी 'प्लास्टर' का अपभ्रंश, दीवार आदि पर गारे सिमेन्ट आदि का लेप, लेट, पलस्तर ढीला होना-अति व्यग्र होना, बड़ी परेशानी में पड़ना, पलस्तरकारी-पलस्तर करने या होने का काम ।
पलहना-(हिं० क्रि०) पत्तियों से भर जाना, पल्लवित होना, पत्तियां फूटना ।
पलहा-(हिं०पु०) कोमल पत्ता, कोंपल ।
पला-(हिं० पु०) पल, निमिष, तराजू का पलड़ा, पल्ला, किनारा, अंचल ।
पलाङ्ग-(सं०पु०) शिशुमार, सुइस ।
पलाण्डु-(सं० पु०) प्याज ।
पलाद-(सं० पु०) मांसभक्षक, राक्षस ।
पलान-(हिं० पु०) जानवरों की पीठ पर चढने या बोझ रखने के लिये कसने का चारजामा ।
पलानना-(हिं० क्रि०) घोड़े आदि पर पलान कसना गद्दी या चारजामा बाँधना, धावा करने के लिये तैयारी करना ।
पलाना-(हिं० क्रि०) पलायन करना, भाग जाना, भगा देना ।
पलानी-(हिं० स्त्री०) पैर की अंगुलियों में पहिरने का एक गहना, छप्पर ।
पलान्न-(सं०नपु०) चावल और मांस के मेल से बना हुआ भोजन, पोलाव ।
पलायक-(सं० वि०) पलायन कारी, भग्गू, भागने वाला ।
पलायन-(सं०नपु०) भागने की क्रिया या भाव, भागना ।
पलायमान-(सं०वि०) भागता हुआ ।
पलायित-(सं० वि०) भागा हुआ ।
पलायी-(सं०वि०) पलायक, भग्गू ।
पलाल-(सं०पु०) किसी पौधे का सूखा डंठल, पुआल ।
पलाश-(सं० नपु०) पत्र, पत्ता, ढाक का फूल, पलास का वृक्ष, कचूर, राक्षस, शासन, मगध देश, पाश, (वि०) निष्ठुर, कठोर ।
पलाशक-(सं० पु०) पलास का फूल ।
पलाशन-(सं०पु०) सारिका, मैना ।
पलाशनिर्यास-(सं०पु०) ढाक की गोंद ।
पलाशपर्णी-(सं० स्त्री०) अश्वगन्धा, असगन्ध ।
पलाशिका-(सं०पु०) बिदारीकन्द ।
पलाशी-(सं० वि०) पलाशयुक्त, मांसाहारी (पु०) राक्षस ।
पलास-(हिं० पु०) पलास, ढाक, देखो पलाश ।
पलासना-(हिं० क्रि०) सिल जाने पर जूते का फालतू चमड़ा काटना ।

पलिंजी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास।
पलिक-(सं०वि०)जो तौल में एक पल हो।
पलिका-(हिं० पु०) खाट, चारपाई।
पलिघ-(हिं० पु०) घड़ा, प्राचीर, चहारदीवारी, गोशाला, गोपुर, फाटक, अर्गला, अगरी।
पलित-(सं०नपु०) ताप, गरमी, गुग्गुल, कीचड़, मिर्च (वि०) वृद्ध, बूढ़ा, सफेद बाल वाला।
पलिती-(हिं०वि०) पलित रोग वाला।
पलिया-(हिं० पु०) पशुओं के गला फूलने का रोग।
पलिहर-(हिं०पुं०) वह खेत जो बरसात में बिना कुछ बोये हुए छोड़ दिया जाता है।
पली-(सं०स्त्री०) सामान्य मक्खी (हिं०स्त्री०) घी के तेल आदि के बड़े पात्र में से निकालने की एक प्रकार की करछी।
पलीत-(हिं० पु०) भूत, प्रेत, पिशाच, (वि०) दुष्ट धूर्त, चालाक, मिट्टी पलीत होना-दुर्दशा होना।
पलीता-(फा० पु०) वह बत्ती जिससे बदूक या तोप के रजक में आग लगाई जाती है, एक प्रकार की कपडे की बत्ती जो मसाल या पनशाखे में लगाई जाती है, बत्ती के आकार में लपेटा हुआ कागज़ जिस पर कोई मन्त्र लिखा होता है, प्रेत ग्रस्त लोगों को ऐसी बत्ती की धूनी दी जाती है (वि०) अति क्रुद्ध,आग बबूला,तेज भागने वाला
पलीती-(हिं०स्त्री०) छोटा पलीता।
पलीद-(फा० वि०) अपवित्र, गन्दा, घृणापूर्ण, नीच, दुष्ट, (पु०) भूत, प्रेत।
पलुआ-(हिं० वि०) पाला हुआ, पालतू, (पु०) सन की जाति का एक पौधा।
पलुहना-(हिं० क्रि०) पल्लवित होना, कोंपल निकलना।
पलुहाना-(हिं०क्रि०) हरा भरा करना।
पलूचना-(हिं०क्रि०) देना।
पलेट-(हिं०स्त्री०-अंग्रेजी'प्लेट्' का अपभ्रंश) लबी पट्टी, गोंट।
पलेटन-(अं० प्लेटम्- छापे के यन्त्र का वह चिपटा लोहे का भाग जिसके दबाने से अक्षर छपते हैं।
पलेड़ना-(हिं०क्रि०)धक्का देना,ढकेलना।
पलेथन-(हिं० पुं०) वह सूखा आटा जो रोटी बेलती समय लोई में लगाया जाता है जिसमें वह चकले में न चिपक जावे, परथन, किसी हानि के बाद होने वाला अनावश्यक (फालतू) व्यय, पलेथन निकलना-व्यग्र या परेशान होना।
पलेनर-(हिं०पु०-अंग्रेजी'प्लेनर'का अपभ्रंश) चौरस करने की पटिया।
पलेना-(हिं०पु०) देखो पलेनर।
पलेव-(हिं०पु०) खेत की हलकी सिंचाई, जूस, शोरबा, शोरबे को गाढा करने के लिये इसमें मिलाया हुआ आटा या मसाला।
पलोटना-(हिं०क्रि०) पैर दबाना, कष्ट के कारण लोटना पोटना या तड़फड़ाना।
पलोथन-(हिं०पु०) देखो पलेथन।
पल्टन-(हिं०पु०) देखो पलटन।
पल्टा-(हिं०पु०) देखो पलटा।
पलोवना-(हिं०वि०) पैर दबाना, सेवा शुश्रूषा करना।
पलोसना-(हिं० क्रि०) जल आदि से धोना,शुश्रूषा करके अपने पक्ष पर लाना।
पल्यङ्क-(सं०पु०) पलग, पर्यङ्क, खाट।
पल्ल-(सं०पु०) पलाल, पुआल।
पल्लव-(सं० पु०) नये निकले हुए कोमल पत्ते, किसलय, विस्तार, बल, हाथ में पहिरने का कगन, चपलता, नाच में हाथ रखने की एक विशेष स्थिति, पह्लव देश, दक्षिण का एक राजवश।
पल्लवग्राही-(सं०वि०) किसी विषय का पूर्ण ज्ञान न रखने वाला।
पल्लवना-(हिं०क्रि०) पत्ते निकलना, पल्लवित होना।
पल्लवाद-(सं०पु०) हरिण, हरिन।
पल्लवाधार-(सं०पु०) डाल, शाखा।
पल्लवास्त्र-(सं० पु०) कामदेव।
पल्लविक-(सं०वि०) कामुक, लम्पट।
पल्लवित-(सं०वि०) जिसमें नये नये पत्ते निकले हों, लहलहाता, हराभरा, विस्तृत, लबा चौड़ा, रोमाच युक्त, जिसके रोगटे खडे हो गये हों (नपु०) लाख का रग।
पल्लवित्-(सं० पु०) जिसमें पत्ते हों।
पल्ला-(हिं०पु०) किसी वस्त्र का अचल, दूरी, अधिकार में, पास, तरफ, तराजू की एक ओर की डलिया, पलड़ा, कैंची के दो भागो में से एक भाग, पटल, किवाड़, पहल, तीन मन का बोझा, चादर जिसमें अन्न बाँध कर लोग ले जाते हैं, दुपलिया टोपी का एक भाग (फा० वि०) देखो परला, पल्ला छूटना-छुटकारा पाना, पल्ला पसारना-किसी से कुछ मागने के लिये कपड़ा फैलाना, पल्ले पड़ना-प्राप्त होना, मिलना, पल्ले बाँधना-ज़िम्मे करना, पल्ला भारी होना-किसी पक्ष का बल बढना।
पल्लि-(सं० स्त्री०) कुटी, ग्राम, गाँव, घर, छिपकली।
पल्ली-(सं० स्त्री०) छोटा गाँव, कुटी, छिपकली, गोधा, बिस्तुइया।
पल्लू-(हिं० पु०) चौड़ी गोट, पल्ला, छोर, अँचरा।
पल्ले-(हिं०वि०) देखो परलय, पल्ला।
पल्लेदार-(हिं०पु०) आढत या दूकान में गल्ला तौलने वाला मनुष्य, बया, अन्न ढोने वाला कूली।
पल्लेदारी-(हिं० स्त्री०) अन्न तौलने का काम।
पल्लौ-(हिं०पु०) देखो पल्लव, पल्ला।
पल्वल-(सं०पु०)छोटा तालाब या गड्ढा।
पल्वलावास-(सं०पु०)कच्छप कछुआ।
पव-(सं०नपु०) गोमय, गोबर, (पु०) भूसी निकालना, ओसाना।
पवई-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की चिड़िया।
पवन-(सं०पु०) प्राण वायु, कुम्हार का आँवा, जल, पानी, विष्णु, श्वास, साँस, अन्न की भूसी अलगाना, (वि०) पावन, पवित्र।

पवन अस्त्र-(हि० पु०) वह अस्त्र जिसके चलाने से प्रचण्ड वायु बहने लगती है।
पवनकुमार-(सं०पु०) हनुमान, भीमसेन।
पवनचक्की-(हि०स्त्री०) वायु के वेग से चलनेवाली चक्की या कल।
पवनचक्र-(सं० पु०) चक्कर खाती हुई वायु, चक्रवात, बवन्डर।
पवनज, पवनतनय-(सं०पु०) हनुमान, भीमसेन।
पवनन्द, पवननन्दन-(सं०पु०)हनुमान्, भीमसेन।
पवनपति-(सं०पु०) वायु के अधिष्ठाता देवता।
पवनपरीक्षा-(सं०स्त्री०) ज्योतिषियों की एक क्रिया जिसके अनुसार आषाढ शुक्ल पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा को देखकर ऋतु का भविष्य बतलाया जाता है।
पवनपुत्र-(सं०पु०) हनुमान, भीमसेन।
पवनबाण-(सं० पु०) वह बाण जिसके चलने से वायु बड़े वेग से चलने लगे।
पवनवाहन-(सं०पु०) अग्नि।
पवनसंघात-(सं० पु०) दो ओर से वायु का आकर आपस में ज़ोर से टकराना।
पवनसुत-(सं०पु०) हनुमान्, भीमसेन।
पवनात्मज-(सं०पु०) भीमसेन, अग्नि।
पवनाश, पवनाशन-(सं०पु०)सर्प,साँप।
पवनाशिन्-(सं०पु०,सर्प, (वि०)जो हवा खाकर रहता हो।
पवनास्त्र-(सं०पु०) पुराण के अनुसार एक अस्त्र जिसके चलाने से वायु बड़े वेग से चलने लगती थी।
पवनी-(हिं० स्त्री०) गाव में वह नीच जाति जो गाव के रहनेवालों से नियमित रूप से कुछ खाना पीना पाती है।
पवनेष्ट-(सं०पु०)बकायन,नीबू का पेड़।
पवमान-(सं० पु०) स्वाहा देवी के गर्भ से उत्पन्न अग्नि के एक पुत्र का नाम, चन्द्रमा का एक नाम।
पवर-(हिं० स्त्री०) देखो पवरि।
पवरिया-(हि० पु०) देखो पौरिया।
पवर्ग-(सं०पु०)वर्णमाला का पाचवाँ वर्ग, जिसमें, प, फ, ब, भ, म ये पाच अक्षर हैं।
पवाँर-(हि० पु०) पमार क्षत्रियों की एक शाखा।
पवाँरना-(हि० क्रि०) गिराना, फेंकना, खेत में छितरा कर बीज बोना।
पवाई-(हि० स्त्री०) एक फर्द जूता, एक पैर का जूता, चक्की का एक पाट।
पवाड़-(हिं० पु०) चकवड़।
पवाड़ा-(हि०पु०) देखो पँवाड़ा।
पवाना-(हिं० क्रि०) भोजन कराना, खिलाना।
पवार-(हि०पु०) देखो परमार।
पवि-(सं० पु०) वज्र, बिजली, वाक्य, मार्ग, रास्ता, थूहर का वृक्ष।
पवित-(सं०वि०) पूत, पवित्र, शुद्ध।
पविताई-(हि०स्त्री०) पवित्रता, सफाई।
पवित्तर-(हिं०वि०) देखो पवित्र।
पवित्र (सं० वि०) शुद्ध, निर्मल, साफ (नपु०) विष्णु, महादेव, कार्तिकेय, तिल का पौधा, कुश की बनी हुई हाथ में पहिरने की पवित्री, शुद्ध द्रव्य, मधु, घी, यज्ञोपवीत, वर्षा, तांबा, कुश, दूध, जल, पानी, रगड़।
पवित्रक-(सं० नपु०) सूत का बना हुआ जाल, कुश, दौने का पेड़, गूलर या पीपल का वृक्ष, क्षत्रिय का यज्ञोपवीत।
पवित्रता-(सं० स्त्री०) स्वच्छता, शुद्धि, सफाई।
पवित्रधान्य-(सं०नपु०) यव, जौ।
पवित्रा-(सं० स्त्री०) श्रावण के शुक्ल पक्ष की एकादशी, रेशम के दानो की बनी हुई माला, तुलसी, हल्दी, शमी का वृक्ष, पीपल का पेड़।
पवित्रात्मा-(हिं० वि०) जिसकी आत्मा पवित्र हो, शुद्ध अन्तःकरण वाला।
पवित्रित-(सं० वि०) शुद्ध या निर्मल किया हुआ।
पवित्री-(सं०स्त्री०) कुश का बना हुआ छल्ला जो यज्ञादि के समय अनामिका में पहिरा जाता है।
पविधर-(सं० पु०) वज्र धारण करने वाले इन्द्र।
पवीर-(सं० नपु०) आयुध, शस्त्र, हल की फार।
पवेरना-(हिं०क्रि०) छितराकर बोना।
पवेरा-(हि०पु०) वह बोवाई जो अन्न को हाथ से छितरा कर या फेंककर की जावे।
पशम-(हि० स्त्री०) बहुत बढ़िया मुलायम ऊन जिसके दुशाले आदि बनते हैं, उपस्थ पर के बाल, शष्प, अति तुच्छ पदार्थ।
पशमी-(फा०वि०) ऊन का बना हुआ।
पशमीना-(फा०पु०) पशम, पशम का बना हुआ वस्त्र, चादर, दुशाला आदि।
पशव्य-(सं०वि०) पशु सम्बन्धी।
पशु-(सं० पु०) चार पैर से चलने वाले रोवाँ और पूँछ युक्त प्राणि, प्राणि मात्र, जीव, देवता, पागल, यज्ञ, सासारिक मनुष्यों की आत्मा।
पशुकर्म-(सं०नपु०)यज्ञ आदि में पशुओं का बलिदान।
पशुकाम-(सं०वि०) गाय भैंस आदि का अभिलाषी।
पशुक्रिया-(सं० स्त्री०) मैथुन।
पशुघ्न-(सं० वि०) पशुघातक।
पशुचर्या-(सं० स्त्री०) पशु के समान विवेक हीन आचरण।
पशुता-(सं०स्त्री०) पशु का भाव, मूर्खता, जानवरपन, उजड्डपन।
पशुत्व-(सं० स्त्री०) देखो पशुता।
पशुदा-(सं० स्त्री०) कुमार की एक अनुचरी का नाम।
पशुदेवता-(सं० स्त्री०) पशुओं की अधिष्ठात्री देवता।
पशुधर्म-(सं० पु०) पशुओं के समान यथेष्ट मैथुनादि कर्म, जो निन्दनीय समझे जाते हैं।
पशुनाथ-(सं०पु०) शिव, पशुस्वामी सिंह।
पशुप-(सं०वि०,पशुओं को पालनेवाला।
पशुपतास्त्र-(सं०पु०) शिव का शूलास्त्र।
पशुपति-(सं० पु०) शिव, महादेव,

हुताशन, अग्नि, औषधि, दवा।
पशुपाल–(स०पु०) पशुओं को पालनेवाला
पशुपालक–(स०वि०) पशुओं का रक्षक।
पशुपाश–(स०पु०)पशुरूप जीव का बधन
पशुपाशक–(स० पु०) एक रतिग्रन्थ का नाम।
पशुबन्धक–(स० पु०) पशुओं के बाँधने की रस्सी।
पशुभाव–(स० पु०) पशुत्व, साधकों की मन्त्र सिद्धि का एक विशेष प्रकार।
पशुमार–(स०अव्य०)पशु की तरह हिंसा।
पशुरक्षि–(स० पु०) गोपाल, ग्वाला।
पशुरक्षी–(स० पु०) पशु की रक्षा करने वाला।
पशुराज–(सं० पु०) सिंह, शेर।
पशवत्–(स० वि०) पशु तुल्य।
पश्चात्–(स०अव्य०) पीछे से, बाद में, फिर, अनन्तर, (पु०) पश्चिम दिशा, शेष, अन्त।
पश्चात् कर्म–(स० नपु०) वैद्यक के अनुसार वह कर्म जो शरीर के बल, वर्ण तथा अग्नि की वृद्धि के लिये रोग हटने पर किया जाता है।
पश्चात्ताप–(सं०पु०) पछतावा,अफसोस।
पश्चात्तापी–(स०वि०)पछतावा करने वाला।
पश्चादुक्ति–(स०स्त्री०) बाद में कहना।
पश्चाद्भाग–(स०पु०) पीछे का हिस्सा।
पश्चानुताप–(स०पु०)पछतावा,अफसोस।
पश्चान्मारुत–(स० पु०) पश्चिम की ओर बहने वाली वायु।
पश्चारुज–(स०पु०)बालकों का एक रोग।
पश्चार्ध–(स०वि०) शेषार्ध, अपरार्ध।
पश्चिम–(स०वि०) अन्तिम, जो बाद में उत्पन्न हुआ हो, बाद का (पु०) वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है। प्रतीची, पच्छिम।
पश्चिमरात्र–(स०पु०)रात्रिका शेष भाग।
पश्चिमवाहिनी–(स० वि०) पच्छिम की ओर बहने वाली (नदी)।
पश्चिमा–(स०स्त्री०) सूर्यास्त की दिशा, पच्छिम।
पश्चिमाचल–(स० पु०) एक कल्पित पर्वत जिसके विषय में लोगों की यह धारणा है कि अस्त होती समय सूर्य उसकी आड़ में छिप जाता है, अस्ताचल।
पश्चिमी–(हि० वि०) पच्छिम सबधी, पच्छिम का।
पश्चिमोत्तर–(स०स्त्री०) वायुकोण, पच्छिम और उत्तर के बीच का कोण।
पश्त–(फा०पु०) खम्भा।
पश्ता–(फा०पु०) तट, किनारा।
पश्तो–(हि० पु०) भारत की आर्य भाषाओं में से एक देशी भाषा जो भारत के पश्चिमोत्तर सीमा से लेकर अफगानिस्तान में बोली जाती है साढे तीन मात्रा का एक ताल।
पश्म–(फा०पु०) बकरी भेंड़ आदि का कोमल रोवा, पशम।
पश्मीना–(हिं० पु०) एक प्रकार का उत्तम मुलायम ऊनी वस्त्र, देखो पशमीना
पश्यन्ती–(स०स्त्री०) नाद की उस समय की अवस्था या स्वरूप जब वह मूलाधार के उठकर हृदय में जाता है, वाणी या सरस्वती के चार चक्र माने गये हैं– यथा–परा,पश्यन्ती,मध्यमा और वैखरी।
पश्यतोहर–(स० वि०) आँखों के सामने से चीज चुरा लेने वाला, जैसे सुनार।
पश्वयन–(स०नपु०) एक प्रकार का यज्ञ।
पश्वयन–(स० पु०) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ।
पश्वाचार–(स०पु०) देवी का वह पूजन जो कामना और सकल्प पूर्वक वेदोक्त विधान से किया जाता है।
पष–(हि०पु०)पक्ष,डैना,पख,पाख,तरफ।
पषा–(हि० पु०) श्मश्रु, दाढी।
पषाण–(न)–(हिं०पु०) देखो पाषाण।
पषारना (हि० क्रि०)–प्रक्षालन,धोना।
पसंगा (घा)–(हिं० पु०) वह बोझ जो तराजू के पल्लो का समभार करने के लिये उस पल्ले की ओर जोती में बाँध दिया जाता है जो पल्ला हलका होता है, पासग (वि०) बहुत कम या थोडे परिमाण का, पसघा भी न होना– कुछ भी न होना।
पसंती–(हि० स्त्री०) देखो पश्यन्ती।
पसद–(फा० वि०) रुचि के अनुसार, मनोनीत, जो अच्छा जान पडे, (स्त्री०) अभिरुचि, अच्छा लगना।
पसदा–(हि०पु०) एक प्रकार का कबाब।
पस–(फा० अव्य०) अतः, इस कारण।
पसई–(हि० स्त्री०) पहाड़ी राई।
पसताल (हि० पु०) पानी के आस पास होने वाली एक प्रकार की घास।
पसनी–(हि०स्त्री०) अन्न प्राशन सस्कार जिसमें बच्चो को पहिली बार अन्न खिलाया जाता है।
पसर–(हिं०पुं०) गहरी की हुई हथेली, आधी,अजली, विस्तार, फैलाव, आक्रमण, धावा, रात के समय पशु चुराने का काम।
पसरकटाली–(हि० स्त्री०) भटकटैया।
पसारना–(हि०क्रि०) विस्तृत होना,बढना, फैलाना, आगे की ओर बढाना, पैर फैलाकर सोना,हाथ पैर फैलाकर लेटना।
पसरहा–(हि० पु०) देखो पसरहट्टा।
पसरहट्टा–(हिं० पु०) वह बजार या हाट जिसमें पसारियो की दूकानें हो, जहा जड़ी बूटी,मसाले आदि बिकते हों।
पसराना–(हि०क्रि०) पसारने का काम दूसरे से कराना।
पसरौहाँ–(हिं० वि०) पसारने या फैलाने वाला।
पसली–(हि० स्त्री०) मनुष्यों तथा पशुओं के शरीर में छाती के अस्थि पजर की गोलाकार आड़ी हड्डियों में से एक, पर्शु, पसली फड़कना– उमग या जोश आना, हड्डी पसली तोड़ना–बेहद मारना।
पसवपेस–(हिं० पु०) देखो पसोपेश।
पसवा–(हि०पु०) हलका गुलाबी रग।
पसही–(हि० पु०) तिन्नी का चावल।
पसा–(हि० पु०) अजली।
पसाई–(हि०स्त्री०) एक प्रकार की घास।
पसाउ–(हि० पुं०) प्रसाद, अनुकम्पा, प्रसन्नता।

पसाना-(हिं० क्रि०) भात में का माड़ निकालना, पसेव निकालना या गिराना।
पसार-(हिं० पु०) पसारने की क्रिया या भाव विस्तार, फैलाव।
पसारना-(हिं० क्रि०) विस्तार करना, फैलाना, आगे को बढ़ाना।
पसारी-(हिं०पु०) देखो पसारी।
पसाव-हिं० पु०) वह पदार्थ जो पसाने पर निकले, माड़, पीच।
पसावन-(हिं पु०) किसी उबाली हुई वस्तु में का निकाला हुआ पानी, माड़, पीच।
पसिंजर-(अं०पु०) रेल या जहाज का मुसाफिर, मुसाफिरों को लेकर चलने वाली गाड़ी जो प्रत्येक स्टेशन पर रुकती है और डाक आदि से धीरे चलती है।
पसीजना-(हिं० क्रि०) किसी घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंशों का गरमी पाकर रसकर बहना, चित्त में दया उत्पन्न होना।
पसीना-(हिं०पु०) परिश्रम या गर्मी से शरीर में से निकलने वाला जल, श्रमवारि, स्वेद।
पसु-(हिं०पु०) देखो पशु, जानवर।
पसुरी-(हिं०स्त्री०) देखा पसली, पर्शु।
पसूज-(हिं०स्त्री०) वह सिलाई जिसमें तापें लगाये जाते हैं।
पसूजना-(हिं०क्रि०) सिलाई करना, सीना।
पसूता-(हिं०स्त्री०) प्रसूता, जिस स्त्री ने हाल में बच्चा जना हो, जच्चा।
पसेउ-(हिं०पु०) देखो पसेव।
पसेरी-(हिं०स्त्री०) पाँच सेर का बाँट, पसेरी।
पसेव-(हिं०पु०) वह तरल पदार्थ जो किसी पदार्थ के पसीजने पर निकले, रसकर निकलनेवाला जल, स्वेद, पसीना।
पसेवा-(हिं०पु०) सोनार की अंगीठी पर रखने का ईंट का टुकड़ा।
पसोपेश-(फा० पु०) द्विविधा, आगा-पीछा, सोच-विचार, हिचक, हानि लाभ, भला-बुरा।
पस्त-(फा० वि०) परास्त, हारा हुआ, थका हुआ, दबा हुआ, पस्तक़द-वामन, नाटा, पस्तहिम्मत-डरपोक, कायर।
पस्ताना-(हिं०क्रि०) देखो पछताना।
पस्तावा-(हिं०पु०) देखो पछतावा।
पस्ती-(फा०स्त्री०) निचाई, न्यूनता, कमी। (हिं०स्त्री०) देखो पस्ती।
पस्म-(अं० पु०) जहाज का खजानची या भंडारी।
पस्मीबबूल-(हिं०पु०) एक प्रकार का पहाड़ी बबूल का वृक्ष, इस पेड़ की गोंद।
पहँ-(हिं०अव्य०) निकट, समीप, पास।
पहँसुल-(हिं० स्त्री०) तरकारी काटने का हँसुआ।
पह-(हिं०स्त्री०) देखो पौ।
पहचनवाना-(हिं० क्रि०) पहचानने का काम कराना।
पहचान-(हिं०स्त्री०) पहचानने की क्रिया या भाव पहचानने की सामग्री, परिचय, जान-पहचान, लक्षण, निशानी, भेद या विवेक करने की क्रिया या भाव, किसी की योग्यता, गुण आदि जानने की क्रिया या भाव।
पहिचानना-(हिं० क्रि०) किसी व्यक्ति या वस्तु को देखते ही जान लेना कि वह कौन व्यक्ति या वस्तु है, चिन्ह करना, चीन्हना, किसी वस्तु का गुण दोष जानना, किसी वस्तु की आकृति रूप रंग देख कर उससे परिचित होना, अन्तर समझना।
पहटना-(हिं०क्रि०) भगाने के लिये या पकड़ने के लिये किसी का पीछा करना, खदेड़ना, किसी हथियार की धार तेज करना।
पहटा-(हिं०पु०) देखो पाटा, पटा।
पहन-(फा०पु०) बच्चे के वात्सल्य भावसे अथवा उसको देखकर जो दूध माता के स्तन में उतर आवे अथवा टपकने लगे।
पहनना-(हिं० क्रि०) परिधान करना, शरीर पर धारण करना।
पहनवाना-(हिं०क्रि०) पहिरने का काम किसी दूसरे से कराना।
पहनाई-(हिं०स्त्री०) पहनने की क्रिया या भाव, पहिनाने की मजदूरी।
पहनाना-(हिं०क्रि०) किसी के शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण कराना।
पहनावा-(हिं०पु०) परिधेय, पोशाक, पहिरने के प्रधान वस्त्र, वे वस्त्र जो सुन्दर अवसर पर पहिने जाते हैं, पहिरने का ढंग।
पहपट-हिं०पु०) स्त्रियों के गाने की एक प्रकार की गीत, कोलाहल, शोरगुल, गुप्तरूप से की हुई निन्दा, छल, ठगी, बदनामी की चारों ओर से चर्चा।
पहपटबाज-(हिं० पु०) शोरगुल करने वाला, फसादी, छली, फरेबी, धोखेबाज।
पहपटबाजी-(हिं०स्त्री०) झगड़ा-झंझट, छल।
पहपटहाई-(हिं०स्त्री०) झगड़ा करनेवाली, बात का बतगड़ करनेवाली।
पहर-(हिं०पु०) युग, समय, जमाना, दिन रात का आठवाँ भाग, तीन घंटे का समय।
पहरना-(हिं०क्रि०) देखो पहनना।
पहरा-(हिं०पु०) रखवाली करने का प्रबन्ध, चौकी, रक्षण, चौकीदारों का समुदाय रखवाली, हिफाजत, नियुक्ति, तैनाती, पहरेदारों को तीन तीन घंटे पर बदले जाना, हवालात, नजरबन्दी, रक्षक का रात के समय भ्रमण या चक्कर, युग, समय, चौकीदार की आवाज, पैर रखने का शुभ या अशुभ फल, पहरे में रहने की स्थिति, पहरा बदलना-नये पहरेदार की नियुक्ति, पहरा बैठाना-किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये चौकीदार नियुक्त करना, पहरा देना-चौकसी करना, पहरे में रखना-हवालात में बंद रखना।
पहराना-(हिं० क्रि०) देखो पहनाना।
पहरावनी-(हिं० स्त्री०) वह पोशाक जिसको कोई बड़ा अपने से छोटे को दे, खिलअत।
पहरावा-(हिं० पु०) देखो पहनावा।

पहरी-(हि०पु०) चौकीदार, पहरेदार, पहरा देनेवाला मनुष्य ।

पहरुआ, पहरू-(हि० पु०) पहरा देने वाला, रक्षक, सन्तरी, चौकीदार ।

पहल-(हि०पु०) किसी वस्तु की लवाई, चौड़ाई तथा मोटाई के कानों या रेखाओं से विभक्त समतल, अग, बगल, पहलू, तरफ, रजाई, तोशक आदि में की दबी हुई रुई की तह, जमा हुआ ऊन, परत, तह, किसी कार्य का आरभ, छेड़ ।

पहलदार-(हि० वि०) जिसमें पहल हों, जिसमें चारो ओर अलग अलग कटी हुई सतहें हों ।

पहलनी-(हि० स्त्री०) कोहड़े को गोल करने का सोनारो का एक औजार ।

पहलवान-(फा०पु०) कुश्ती लड़ने वाला बलवान् पुरुष, कुश्तीबाज, मोटा ताजा बल युक्त पुरुष ।

पहलवानी-(फा०स्त्री०) कुश्ती लड़ने का काम, कुश्ती लड़ने का पेशा, बल की अधिकता और दाँव पेंच में प्रवीणता ।

पहलवी-(फा०पु०) देखो पह्लवी ।

पहला-(हि०वि०) जो क्रम में प्रथम हो, आरभ, औवल, जमी हुई पुरानी रूई, पहल ।

पहलू-(फा०पु०) बगल और कमर के बीच का वह भाग जहा पसलिया होती हैं, पोर्श्व, पाजर, पक्ष, करवट, बल गुप्त सूचना, सकेत, विचारणीय विषय का कोई अग, किसी वस्तु के पृष्ठ देश पर का समतल कटाव, सेना का दहिना या बॉया भाग, पड़ोस, आस पास, पार्श्व भाग, बगल ।

पहले-(हि०अव्य०) आरभ मे, शुरू से, पूर्वकाल में, बीते समय मे, अगले जमाने मे, स्थिति मे पूर्व, देश क्रम में प्रथम, पेश्तर, आगे ।

पहलेज-(हि० पु०) एक प्रकार का खर्बूजा जो लबोतरा होता है ।

पहले पहल-(हि० अव्य०) सर्वप्रथम, पहिली बार ।

पहलौंठा, पहलौठा-(हि०वि०) प्रथम गर्भजात, पहिली बार के गर्भ से उत्पन्न ।

पहलौंठी, पहलौठी-(स०स्त्री०) प्रथम प्रसव, पहले पहल बच्चा जनना ।

पहाड़-(हि० पु०) प्राकृतिक रीति से बना हुआ पत्थर, चूने मिट्टी आदि की चट्टानो का ऊचा तथा बड़ा समूह, पर्वत गिरि, किसी वस्तु का भारी ढेर, दुःसाध्य अथवा अति कठिन कार्य, बहुत बड़े भार की वस्तु, वह जिससे निस्तार न हो सके, पहाड़ उठाना-कोई बहुत बड़ा काम अपने जिम्मे लेना, पहाड़ टूटना-एकाएक कोई बड़ा सकट आ पड़ना, पहाड़ से टक्कर लेना-अपने से अधिक बलवान् से मुकाबला करना ।

पहाड़ा-(हि० पु०) किसी अक के एक से लेकर दस तक के गुणनफलो की क्रमागत सूची ।

पहाड़िया-(हि० वि०) देखो पहाड़ी ।

पहाड़ी-(हि०वि०) पहाड़ पर रहने वाला, पहाड़ सबधी, (स्त्री०) छोटा पहाड़, पहाड़ी लोगो के गाने की धुन, सपूर्ण जाति की एक प्रकार की रागिणी ।

पहार-(हि०पु०) देखो पहाड़ ।

पहारी-(हि०वि०) देखो पहाड़ी ।

पहिचान-(हि० स्त्री०) देखो पहचान ।

पहिचानना-(हि०क्रि०) देखो पहचानना ।

पहित, पहिती-(हि०स्त्री०) पकी हुई दाल ।

पहिनना-(हि० क्रि०) देखो पहनना ।

पहिनाना-(हि० क्रि०) देखो पहनाना ।

पहिनावा-(हि० पु०) देखो पहनावा ।

पहियाँ-(हि०अव्य०) देखो पहँ ।

पहिया-(हि० पु०) गाड़ी, अजन अथवा यन्त्र में लगा हुआ लकड़ी या लोहे का चक्का, किसी यन्त्र का वह चक्राकार भाग जो अपनी धुरी पर घूमता हो, चक्र, चक्कर ।

पहिरना-(हि० क्रि०) देखो पहनना ।

पहिराना-(हि०क्रि०) देखो पहनाना ।

पहिरावना-(हि० क्रि०) देखो पहनाना ।

पहिरावनि, पहिरावनी-(हि० स्त्री०) देखो पहनावा ।

पहिला-(हि०वि०) प्रथम प्रसूता, पहले पहल व्याई हुई, देखो पहला, प्रथम ।

पहिले-(हि०अव्य०) देखो पहले ।

पहिलौठा-(हि०वि०) देखो पहलौठा ।

पहिलौठी-(हि०वि०) देखो पहलौठी ।

पहीति-(हि०स्त्री०) देखो पहिती ।

पहुँच-(हि०स्त्री०) किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति, किसी स्थान तक की गति, प्राप्ति रसीद, प्रवेश, गुजर, रसाई, तात्पर्य समझाने की शक्ति, जानकारी की सीमा, परिचय, किसी स्थान तक का लगातार फैलाव, पकड़, दौड, पैठ ।

पहुँचना-(हि० क्रि०) गति द्वारा किसी स्थान मे उपस्थित होना, एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त करना, तुल्य होना, अनुभव में आना, समझने मे समर्थ होना, जानकारी रखना, प्राप्त होना, मिलना, प्रविष्ट होना, पैठना, घुसना, गूढ अर्थ को जान लेना, कहीं तक फैलना, पहुँचा हुआ-सिद्ध पुरुष, अभिज्ञ, सब बातो का जानकार, पहुँचने वाला-गुप्त बातो का जानकार ।

पहुँचा-(हि० पु०) अग्र बाहु और हथेली के बीच का भाग, मणिबन्ध, कलाई, गट्टा ।

पहुँचाना-(हि० क्रि०) किसी निर्दिष्ट स्थान तक उपस्थित कराना या ले जाना, अनुभव कराना, बराबर करना, घुसाना, किसी को किसी विशेष अवस्था में ले जाना, अकेला न होने के लिये किसी के साथ कहीं पर जाना, प्रविष्ट कराना, पैठाना परिणाम के रूप मे प्राप्त कराना, अनुभव कराना ।

पहुँची-(हि० स्त्री०) हाथ की कलाई पर पहिरने का एक गहना ।

पहुनई-(हि०स्त्री०) देखो पहुनाई ।

पहुना-(हि० पु०) देखो पाहुना ।

पहुनाई-(हि० स्त्री०) अतिथि के रूप मे

कहीं जाना या आना, अतिथि सत्कार, खातिर, तवाज़ा।
पहुनी-(हि० स्त्री०) देखो पहुनाई।
पहुन्नी-(हिं० स्त्री०) वह पच्चड़ या फन्नी जिसको बढ़ई लकड़ी चीरते समय काठ में ठोंक देते हैं।
पहुप-(हि० पु०) पुष्प, फूल।
पहुमी-(हिं० स्त्री०) देखो पुहमी।
पहुरी-(हिं० स्त्री०) सगतराश की मठारने की टाकी।
पहूला-(हिं०स्त्री०) कुमुदिनी, कोई का फूल।
पहेरी, पहेली-(हि०स्त्री०) किसी वस्तु या विषय का इस प्रकार का वर्णन जो किसी अन्य वस्तु या विषय का वर्णन जान पड़ता हो और बहुत विचार करने पर घटाया जा सके, समस्या, बुझौवल, फेरवट की बात, पहेली बुझाना-फेरवट की बात करना।
पह्लव-(स० पु०) इस जाति के लोग पहिले क्षत्रिय थे जो बाद में मुसलमान हो गये।
पह्लव-(स० पु०) एक प्राचीन जाति, पारसी या ईरानी जाति।
पह्लवी-ईरान राज्य की प्राचीन भाषा
पह्लिका-(स०स्त्री०) जलकुम्भी।
पाँ, पाँइ-(हि०पु०) पद, पाँव, पैर।
पाँइता-(हि०पु०) देखो पाँयता।
पाँइवाग-(फा० पु०) महलों के आसपास चारों ओर बना हुआ छोटा बाग जिसमें राजमहलों की स्त्रियां टहलने जाया करती हैं।
पाउँ-(हि०पु०) पद, पाँव, पैर।
पाँक-(हिं०पु०) पङ्क, कर्दम, कीचड़।
पाँका-(हिं० पु०) देखो पाँक।
पाँख-(हि०पु०) पक्ष, पर।
पाँखड़ी-(हि०स्त्री०) देखो पाँखड़ी।
पाँखी-(हिं०स्त्री०) फतिंगा, चिड़िया, पक्षी।
पाँखुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पखड़ी।
पाँग-(हिं० पु०) गगबरार, कछार।
पाँगल-(हिं०पु०) उष्ट्र, ऊट।
पगा, पाँगानोन-(हि० पु०) समुद्र के जल से निकाला हुआ नमक।
पाँच-(हिं० वि०) जो गिनती में चार और एक हो (पु०) चार और एक की संख्या ५, अनेक मनुष्य, बहुत से लोग, जाति बिरादरी के मुखिया लोग, पंच, पाँचो अंगुलियां घीमें होना-सब प्रकार का सुख चैन मिलना, पाचो सवारों में नाम लिखाना-बड़े बड़े लोगों में अपनी गिनती करना।
पाँचक-(हिं० पु०) देखो पञ्चक।
पाँचजन्य-(हिं० पु०) देखो पञ्चजन्य, विष्णु के बजाने का शख, अग्नि।
पांचभौतिक-(हि० पु०) देखो पञ्चभौतिक, पञ्चतत्व का बना हुआ शरीर।
पांचर-(हि०वि०) कोल्हू के बीच में जड़े हुए लकड़ी के टुकड़े।
पाँचवाँ-(हि० वि०) जो क्रम से पाच के स्थान पर हो।
पाचा-(हिं०पु०) किसानों की घास भूसा हटाने की दाँतेदार फरुही।
पांचाल-(हि०पु०) पचाल (वि०) पान्चाल देश वासी, पाञ्चाल देश संबंधी।
पाचालिका-(हि० स्त्री०) देखो पाञ्चाली, कपड़े की बनी हुई पुतली, गुड़िया।
पाची-(हि० स्त्री०) तालाब में होनेवाली एक प्रकार की घास।
पाचैं-(हि० स्त्री०) किसी पक्ष की पाँचवी तिथि पंचमी।
पाजना-(हिं० क्रि०) टीन, लोहे पीतल आदि के टुकड़ो का टाँका लगाकर जोड़ना, झालना।
पाजर-(हि० पु०) बगल और कमर के बीच का वह हिस्सा जिसमें पसलियाँ होती हैं, छाती के अगल बगल का भाग, पसली, पार्श्व, बगल, सामीप्य।
पाजी-(हिं०स्त्री०) नदी का इतना सूख जाना कि उसको हलकर पार किया जा सके।
पाञ्ज-(हि०वि०) देखो पाँजी।
पाड़क-(हि०पु०) देखो पडुक।
पाडरा-(हिं०पु०) एक प्रकार की ऊख।
पाड़ी-(हिं० स्त्री०) खड्ग, तलवार।
पांडे-(हिं० पु०) कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा गुजराती ब्राह्मणों की एक शाखा, कायस्थों की एक शाखा, पण्डित, विद्वान् शिक्षक, रसोई बनाने वाला ब्राह्मण।
पाडेय-(हि०पु०) देखो पाडे।
पात्ति-(हिं०स्त्री०) पगत, पंक्ति, कतार, समूह, बिरादरी के लोग जो एक साथ बैठकर भोजन करते हैं।
पांथ-(हिं० वि०) पथिक, विरही, पांथ निवास-यात्रियों के ठहरने का स्थान।
पायँ-(हिं०पु०) पाद, पैर, चरण।
पाँयचा-(फा०पु०) पायजामे की मोहरी जिससे जांघ से लेकर टखने तक का अंग ढंपा रहता है, पायखाने में पैर रखने की बैठकी।
पाँयता-(हि० पु०) खाट या पलंग का उस ओर का भाग जिस ओर पैर किया जाता है, पैताना।
पाँव-(हिं०पु०) पाद, पैर।
पाँवर-(हि० वि०) देखो पामर।
पांवरी-(हि० स्त्री०) सोपान, सीढी, जूता, पैर रखने का स्थान, पैरी, दालान, बैठक।
पाशव-(स०पु०) रेह से निकाला हुआ नमक।
पांशु-(सं० पु०) धूलि, रज, बालू, एक प्रकार का कपूर, गोबर की खाद।
पांशुका-(स०स्त्री०) केवड़े का पौधा।
पाशुचत्वर-(सं०पु०) ओला।
पांशुज-(स० पु०) नमक जो नोनी मिट्टी से निकाला गया हो।
पांशुपत्र-(स०पु०) बथुवे का साग।
पांशुभव-(स०नपु०) देखो पाशुज।
पांशुलवण-(नपुं०) पागा नमक।
पाशुल-(स० वि०) व्यभिचारी, लपट, मैला, धूल से ढपा हुआ (पु०) शिव, महादेव।
पांशुला-(स० स्त्री०) कुलटा, रजस्वला, केतकी, भूमि।
पाँस-(हि०स्त्री०) शरीर निकाला हुआ

महुआ, खाद, खमीर जो किसी वस्तु को सड़ाने पर उठता है।
पाँसना-(हि०क्रि०) खेत में खाद डालना।
पाँसा-(हि० पु०) हड्डी या हाथीदाँत, के बने हुए चौसर खेलने के चौकोर टुकड़े, **पांसा पलटना**-किसी उद्योग का विपरीत फल होना।
पाँसी-(हिं० स्त्री०) भूसा आदि बाँधने का जाला।
पांसु-(स०पु०) धूलि, रज।
पांसुक-(स०पु०) धूलि, पागा नमक।
पांसुका-(सं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री।
पांसुकुली-(स० स्त्री०) राजमार्ग, चौड़ी सड़क।
पांसुकृत-(स०वि०)जो धूल हो गया हो।
पांसुक्षा-(स०पु०) पागा नमक।
पांसुखुर-(स० पुं०) घोड़े के खुर का एक रोग।
पांसुचन्दन-(स०पु०) शिव, महादेव।
पांसुचामर-(स० पुं०) तबू, खेमा, प्रशसा, धूलि का ढेर।
पांसुजालिक-(स०पु०)विष्णु का एक नाम।
पांसुपत्र-(स०नपु०) बंधुवे का साग।
पांसुभिक्षा-(स०स्त्री०) धव का पेड़।
पांसुर-(स० पु०) दशक, डाँस, खज, लगड़ा।
पांसुरी-(हि०स्त्री०) देखो पसली।
पांसुल-(स०पु०) शिव, महादेव, पापी, दूसरे की स्त्री से प्रेम करने वाला, केतकी वृक्ष।
पांसुला-(स० स्त्री०) कुलटा, रजस्वला, केतकी।
पाँही-(हिं०क्रि०वि०) समीप, निकट,पास।
पाइ-(हिं० पुं०) देखो पाद, पाँव।
पाइक-(हि०पु०) देखो पायक।
पाइका-(अ० पु०) नाप के विचार से छापे के टाइप का एक प्रकार।
पाइतरी-(हिं०स्त्री०)चारपाई का पैताना।
पाइप-(अं०पुं०) नल, नली, पानी का नल, हुक्के का नल, बाँसुरी की तरह का एक अंग्रेज़ी बाजा।
पाइरा-(हि०पु०) घोड़े के जीन में लगी हुई रकाब।
पाइल-(हिं०स्त्री०) देखो पायल।
पाई-(हिं०स्त्री०) एक पैसा, एक छोटा सिक्का जो एक पैसे में तीन होता है, छोटी सीधी लकीर जो किसी सख्या के आगे लिखने से चतुर्थांश प्रगट करती है, स्त्रियों के आभूषण रखने की पिटारी, पूर्ण विराम के लिये खींची हुई छोटी खड़ी रेखा, घुन की तरह का एक कीड़ा, घोड़े का एक रोग, दीर्घ आकार सूचक मात्रा, जुलाहों का एक ढाँचा जिस पर ताने माजे जाते हैं, छापे के घिसे हुए टाइप, किसी निश्चित मण्डल में नाचने की क्रिया।
पाईता-(हिं०पु०)एक वर्णवृत्त का नाम।
पाउन्ड-(अं०पु०) सोने का एक सिक्का जो बीस शिलिंग का होता है, इसका भाव सोने की दर के हिसाब से घटता बढ़ता है, एक अंग्रेजी तौल जो प्रायः आधसेर के बराबर होती है।
पाउँ-(हिं०पु०) देखो पाँव।
पाउडर-(अं० पु०) चूर्ण, बुकनी, दाँत साफ करने का मञ्जन, स्त्रियों की शोभा बढ़ाने के लिये मुख में लगाने की एक विलायती बुकनी।
पाक-(स०पु०)पकाने की क्रिया, रींधन, रसोई, खाये हुए पदार्थ की पचने की क्रिया, एक असुर जिसको इन्द्र ने मारा था, भय, बुढ़ापे में बालों का पकना, परिणति, दूध पीने वाला बच्चा, चाशनी में पकाई हुई औषधि, श्राद्ध में पिण्ड-दान के लिये पकाई हुई खीर।
पाक-(फा०वि०) पवित्र, शुद्ध, समाप्त, बेबाक, निर्मल, पाप रहित, निर्दोष साफ, **झगड़ा पाक करना**-मामला तय करना, बाधा हटाना, बखेड़ा हटाना, मार डालना।
पाक कृष्ण-(स०पु०) करौंदे का फल।
पाकट, पाकिट-(अं०स्त्री०) जेब,खरीता।
पाकठ (हिं० वि०) पका हुआ, पुराना, अनुभवी, तजुरबेकार,बलवान्,मज़बूत।
पाकड़-(हिं० पु०) देखो पाकर।
पाकदामन-(फा० वि०) निष्कलंक और विशुद्ध स्त्री, पतिव्रता स्त्री, सती।
पाकदामिनी-(फा०स्त्री०)पातिव्रत्य, सतीत्व
पाकद्विष-(स०पु०) पाकशासन, इन्द्र।
पाकना-(हिं०क्रि०) देखो पकना।
पाकपात्र-(स० नपुं०) भोजन पकाने का बरतन।
पाकपुटी-(स०स्त्री०) कुम्हार का आँवा।
पाकफल-(स०पु०) करौंदा।
पाकभाण्ड-(स० नपु०) वह बरतन जिसमें कुछ पकाया जावे या रक्खा जावे।
पाकयज्ञ-(स० पु०) वृषोत्सर्ग तथा गृह प्रतिष्ठा आदि का हवन जिसमें खीर की आहुति दी जाती है, पञ्च महायज्ञ के अंतर्गत वैश्वदेव, होम, बलि कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि भोजन इन चार प्रकार के महायज्ञ।
पाकर-(हि० पुं०) समस्त भारतवर्ष में होने वाला एक वृक्ष जो पञ्च वटों में से एक है।
पाकरञ्जन-(सं०नपु०) तेजपत्र,तेजपत्ता।
पाकरिपु-(स०पु०) इन्द्र का एक नाम।
पाकलि-(स०स्त्री०) कर्कटी, काकड़ासिंघी।
पाकशाला-(स०स्त्री०) महानस, रसोई बनाने का घर, बावर्ची खाना।
पाकशासन-(स०पुं०) इन्द्र।
पाकशासनि-(स०पु०)इन्द्र के पुत्र जयन्त
पाकशुक्ला-(सं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
पाकस्थली-(स० स्त्री०) उदर में का पक्वाशय जहाँ आहार का पाचन होता है
पाका-(हिं०वि०) देखो पक्का।
पाकागार-(स०पु०) रसोइया घर।
पाकातीसार-(स०पु०) अतीसार रोग का एक भेद।
पाकारि-(स०पु०) पाकशासन, इन्द्र।
पाकी-(फा०स्त्री०) निर्मलता, शुद्धता।
पाकीज़ा-(फा० वि०) पवित्र, सुन्दर, निर्दोष, बेऐब।
पाकु-(सं०वि०) रसोई बनाने वाला।
पाकेट-(अं० पु०) जेब, खलीता।
पाक्य-(स०नपु०) काला नमक, यवक्षार (वि०) पकने योग्य, पाचनीय।

पाक्य क्षार-(सं०पु०) जवाखार, शोरा।
पाक्यज-(सं०पु०) काचलवण।
पाक्या-(सं०स्त्री०) सज्जी जवाखार।
पाक्षायण-(सं०वि०) पक्ष में एक बार होने वाला।
पाक्षिक-(सं०वि०) किसी विशेष व्यक्ति का पक्ष करने वाला, पक्षपाती, तरफदार, पक्षियों को मारने वाला, जो प्रति पक्ष में एक बार हो, पक्ष या पखवाड़े से सम्बन्ध रखने वाला, दो मात्राओं का
पाखड-(हिं०पु०) देखो पाखण्ड, ढोंग, आडम्बर, पाखड फैलाना-किसी को छलने का उपाय करना।
पाखडी-(हिं०वि०) वेद विरुद्ध आचरण करने वाला, ढोंगी, धूर्त, कपटी, धोखेबाज, बनावटी धर्म दिखलाने वाला।
पाख-(हिं०पु०) महीने का आधा भाग, पन्द्रह दिन के समय, पखवाड़ा, मकान की चौड़ाई की दीवारों के वे भाग जो ऊँचे किये होते हैं जिनपर बँडेर रक्खे जाते हैं।
पाखण्ड-(सं०पु०)वेद विरुद्ध आचरण, वह व्यवहार जो किसी को धोखा देने के लिये किया जावे, कपट, छल, वह भक्ति या उपासना जो किसीको दिखलाने के लिये की जावे, ढोंग, ढकोसला, आडम्बर, नीचता।
पाखण्डी-(सं० वि०) देखो पाखडी, दूसरों को ठगने के निमित्त अनेक प्रकार का आयोजन करने वाला, कपटाचारी, ढोंगी, धूर्त।
पाखर-(हिं० स्त्री०) राल चढ़ाया हुआ टाट, लोहे का झूल जो युद्ध के समय हाथी या घोड़े की पीठ पर डाल दिया जाता था, देखो पाकर।
पाखरी-(हिं०स्त्री०) टाट का बना हुआ बड़ा चादर जिसको बैलगाड़ी में रख कर अनाज भूसा आदि लादा जाता है।
पाखा-(हिं०पु०) कोना, छोर, देखो पाख।
पाखान-(हिं०पु०) देखो पाषाण, पत्थर।
पाखाना-(फा०पु०) मल त्याग करने का स्थान, पुरीष, मल, गू।
पाग-(हिं०स्त्री०) पगड़ी, (पु०)वह शीरा या चाशनी जिसमें डुबोकर मिठाइयाँ रक्खी जाती हैं, चाशनी में पकाई हुई औषधि, फल आदि।
पागना-(हिं०क्रि०) चाशनी में लपेटना या सानना।
पागल-(सं०वि०)उन्मत्त, बावला, जिसका दिमाग ठीक न हो विक्षिप्त, जिसके होश हवास दुरुस्त न हो, मूर्ख, बेवकूफ।
पागलखाना-(हिं० पु०) वह स्थान जहां पागलों को रख कर उनकी चिकित्सा की जाती है।
पागलपन-(हिं०पु०) वह मानसिक रोग जिसमें मनुष्य की बुद्धि और इच्छा शक्ति में अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं और उसको कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान नहीं रहता, उन्माद, बावलापन मूर्खता चित्तविभ्रम।
पागली-(हिं०स्त्री०) देखो पगली।
पागुर-(हिं०पु०) देखो जुगाली।
पाचक-(सं० नपु०) पकाने या पचाने वाला, (पु०) पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली दवा, रसोइयादार, बावर्ची, पित्त में रहने वाली अग्नि।
पाचका-(सं०नपु०) कर्कटी, ककड़ी।
पाचन-(सं०नपु०) प्रायश्चित्त, अपक्व दोष को पचाने वाली औषधि, खट्टा रस, अग्नि, आग (वि०) पचाने वाला।
पाचनक-(सं०पु०) सोहागा।
पाचनशक्ति-(सं०स्त्री०) भोजन को पचाने की शक्ति, हाजमा।
पाचना-(हिं० क्रि०) अच्छी तरह से पकाना।
पाचनीय-(सं० वि०) पचाने या पकाने योग्य।
पाचर-(हिं० पु०) देखो पच्चर।
पाचल-(सं०पु०) अग्नि, वायु।
पाचिका-(सं०स्त्री०, रसोई बनाने वाली स्त्री
पाची-(सं०स्त्री०) पची नामक लता।
पाच्छा, पाच्छाह-(हिं० पु०)बादशाह।
पाच्य-(सं० वि०) पाचनीय, जो अवश्य पचाया या पकाया जा सके।
पाछ-(हिं०स्त्री०) जन्तु या पौधे के अग पर छुरी की धार से मार कर बनाया हुआ हलका घाव, रस निकालने के लिये वृक्ष की डाल या तने पर बनाया हुआ चीरा, अफीम निकालने के लिये पोस्ते की ढोंढी पर बनाया हुआ चीरा (पु०) पिछला भाग (क्रि० वि०) पीछे की ओर।
पाछना-(हिं० क्रि०) जन्तु या पौधे के अग पर छुरी की धार से इस प्रकार मारना कि छुरी गहरी न धँसे और केवल ऊपर का रक्त या रस निकल आवे
पाछल-(हिं०वि०) देखो पिछला।
पाछा-(हिं०पु०) देखो पीछा।
पाछिल-(हिं० वि०) देखो पिछला।
पाछी, पाछे-(हिं०क्रि०वि०)पीछे की ओर
पाज-(हिं० पु०) देखो पाजर।
पाजरा-(हिं०पु०) एक प्रकार का पौधा जिसकी छाल से रस निकाला जाता है
पाजस्य-(सं०पु०) देखो पाँजर।
पाजा-(हिं०पु०) देखो पाजना।
पाजामा-(फा० पु०) पैर में पहिरने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे सपूर्ण पैर ढप जाता है।
पाजी-(हिं०पु०) पैदल सेना का सिपाही, प्यादा, चौकीदार (वि०) दुष्ट, नीच, कमीना, लुच्चा।
पाजीपन-(हिं० पु०) दुष्टता, नीचता, कमीनापन।
पाजेब-(फा० स्त्री०) स्त्रियों के पैर में पहिरने का एक प्रकारका गहना जिसमें घुघुरू लगे होते हैं, नूपुर, मजीर।
पाञ्चजन्य-(सं०पु०) वह शख जिसको विष्णु धारण करते हैं, पाञ्चजन्य धर-विष्णु।
पाञ्चनद-(सं०वि०) पञ्चनद सबधी।
पाञ्चभौतिक-(सं०वि) पञ्चभूतों या तत्वों से बना हुआ मर्त्य शरीर।
पाञ्चालिका-(सं०स्त्री०) गुड़िया।
पाञ्चशर-(सं०वि०) कामदेव सम्बन्धी।
पाञ्चाल-(सं०पु०) द्रुपदराज का नगर,

इस देश का रहनेवाला बढ़ई, नाई, धोबी, जुलाहा और चमार इन पाचों का समुदाय।

पाञ्चालिका-(स० स्त्री०) लत्ते की बनी हुई गुड़िया।

पाञ्चाली-(सं० स्त्री०) गुडिया, पाञ्चाल देश की भाषा, पाडवों की स्त्री द्रौपदी का एक नाम, पीपल, स्वर साधन का एक ढङ्ग।

पाञ्जार्य-(स०वि०) पञ्जर सम्बन्धी।

पाट-(हि० पुं०) जूट का पौधा, वस्त्र, कपड़ा, चक्की का एक पल्ला, धोबी के कपड़ा पटक कर धोने का पत्थर, पल्ला, पीढ़ा, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, रेशम, नख, बटा हुआ रेशम, राज्य-शासन, सिंहासन, रेशम, एक प्रकार का कीड़ा।

पाटक-(स०वि०) छेदक, भेदक।

पाटकरण-(सं० पुं०) शुद्ध जाति का एक राग।

पाटच्चर-(स०पु०) चोर।

पाटन-(हिं० स्त्री०) पाटने की क्रिया या भाव, पटाव, कच्ची या पक्की छत, सर्प का विष उतारने का एक मन्त्र जो सर्प से काटे हुए मनुष्य के कान में चिल्ला कर पढा जाता है।

पाटना-(हि० क्रि०) किसी नीचे स्थान को उसके आस पास के धरातल के बराबर कर देना, सन्तुष्ट करना, सींचना, लकड़ी के बल्ले आदि बिछाकर आधार बनाना, ढेर लगा देना, दो दीवारों के बीच में किसी गहरे स्थान के ऊपर बल्ला आदि रखना।

पाटपाट-(स० वि०) अति चतुर, बड़ा होशियार।

पाटमहिषी-(हि० स्त्री०) प्रधान रानी, पटरानी।

पाटरानी-(हिं०स्त्री०) देखो पटरानी।

पाटल-(स० नपुं०) पाटली का फूल, गुलाबी रङ्ग, पाढ़र का वृक्ष, रोहिष घास।

पाटलकीट-(स० पु०) एक प्रकार का कीड़ा।

पाटला-(स०स्त्री०) पाटल का वृक्ष, लाल रङ्ग का लोध, दुर्गा।

पाटला-(हिं०पु०) भारत का शुद्ध किया हुआ बढ़िया सोना।

पाटलावती-(स०स्त्री०) दुर्गा।

पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र-(स० नपु०) मगध के प्रसिद्ध नगर का प्राचीन नाम, आजकल यह पटना नाम से प्रसिद्ध है।

पाटली-(स० स्त्री०) मुष्कक या कटभी वृक्ष, पटना नगर की अधिष्ठात्री देवी, (हि०स्त्री०) नाव में लगाने की लकड़ी की बल्ली।

पाटलोपल-(स० पु०) एक प्रकार का गुलाबी रत्न।

पाटव-(स० नपु०) पटुता, निपुणता, चतुराई, दृढता, मजबूती, आरोग्य।

पाटविक-(स०वि०) पटु, चालाक, धूर्त।

पाटवी-(हि० वि०) पटरानी से उत्पन्न, रेशमी वस्त्र।

पाटसन-(हि०पु०) पटसन, पटुआ।

पाटहिका-(सं० स्त्री०) गुञ्जा, घुमची, दुन्दुभी बजाने वाला।

पाटा-(हि० पु०) पीढा, वह आधार स्थान जो दो दीवारों के बीच में बास, बल्ली, पटिया आदि देकर बनाया जाता है।

पाटिका-(स०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा।

पाटित-(स०वि०) पाटा हुआ।

पाटी-(सं०स्त्री०) अनुक्रम, रीति, परिपाटी, श्रेणी, पक्ति, जोड़ती, बाकी, गुणा, भाग आदि का क्रम, (हि०पु०) वह लकड़ी की पट्टी या तख्ती जिस पर बालकों को विद्याभ्यास कराया जाता है, पटिया, पाठ, सबक, खाट की लम्बाई बल की लकड़ी, शिला, जन्ती, चट्टान, खपरैल का आधा भाग, **पाटी पढ़ना**-शिक्षा पाना।

पाटीकूट-(स०पुं०) चित्रक वृक्ष।

पाटीगणित-(स०नपु०) गणित शास्त्र, अङ्क विद्या।

पाटीर-(स० ०) एक प्रकार का चन्दन।

पाटूनी-(हि० पु०) वह मल्लाह जो किसी घाट का ठेकेदार हो।

पाट्य-(स०नपु०) पटसन, पटुआ।

पाठ-(स०पु०)शिष्य का अध्यापन, पढना, पढने की क्रिया, किसी धर्म पुस्तक को नियम पूर्वक पढने की क्रिया, किसी पुस्तक का वह अश जो एक बार पढा जाय, सबक, शब्दक्रम, अध्याय, किसी पुस्तक का परिच्छेद, **पाठ पढाना**-स्वार्थ साधन के लिये किसी को बहकाना, **उलटा पाठ पढाना**-उलटी पुलटी बातें समझा देना।

पाठक-(स० पु०) उपाध्याय, पढाने वाला, धर्मोपदेशक, बाँचने वाला, सारस्वत गौड, सरयूपारी तथा गुजराती ब्राह्मणों के एक वर्ग का नाम।

पाठदोष-(सं०पु०) पढने का वह ढङ्ग अथवा पढने के समय की वह चेष्टा जो निन्दित और वर्जित समझी जाती है

पाठन-(स० नपु०) पढने का ढङ्ग या भाव, अध्यापन, पढाना।

पाठना-(हिं०क्रि०) पढाना।

पाठपद्धति-(स० स्त्री०) पढ़ने की रीति या ढङ्ग।

पाठप्रणाली-(स०स्त्री०,देखो पाठपद्धति।

पाठभेद-(स०पु०) पाठान्तर, वह भेद जो एक ही ग्रन्थ की दो प्रतियो के पाठ में पाया जाता है।

पाठमञ्जरी-(स०स्त्री०)एक प्रकार की मैना

पाठशाला-(स०स्त्री०) पढाने का स्थान, अध्ययन गृह, विद्यालय, चटसाला।

पाठशालिनी-(स०स्त्री०)एक प्रकार की मैना

पाठा-(स० स्त्री०) पाढ नामकी लता (हि०पु०) हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा, तगड़ा, जवान मोटा ताजा बैल या भैंसा।

पाठान्तर-(स०नपु०) एकही पुस्तक की दो प्रतियों के लेख में किसी विशेष स्थान में भिन्न वाक्य या क्रम का होना पाठभेद।

पाठार्थी-(स०वि०) पढने वाला।

पाठालय-(सं०पु०) पाठशाला, विद्यालय

पाठिका-(स०स्त्री०) पाठ पढने वाली।

पाठित–(स० वि०) पढ़ाया हुआ सिखाया हुआ।
पाठी–(हिं०पु०)पाठ करने वाला, पाठक, पढ़नेवाला, चित्रक वृक्ष, चीता।
पाठीन–(स०पु०) पहिना मछली,गुग्गुल।
पाठ्य–(सं०वि०) पाठनीय, पढ़ने योग्य।
पाड़–(हिं०पु०) धोती, साड़ी आदि का किनारा, मचान, पुश्ता, बाँध, लकड़ी का बना हुआ ठाट, कटघरा, चर, दो दीवारों के बीच में पटिया देकर बनाया हुआ आधार स्थान, वह तख्ता जिसपर खड़ा करके अपराधी को फाँसी दी जाती है।
पाड़र–(हिं०स्त्री०) पाटल नाम का वृक्ष।
पाडल–(हिं० पु०) देखो पाटल।
पाडलीपुर–(हिं०पु०) देखो पाटलीपुत्र।
पाड़ा–(हिं०पु०) नगर का मुहल्ला,टोला।
पाड़िनी–(स०स्त्री०)मिट्टी का बरतन,हाडी
पाढ–(हिं० पु०) वह पीढा या पाटा जिसपर बैठकर सुनार, लोहार या बढ़ई काम करते हैं, वह मचान जिस पर बैठकर किसान अपने खेत की रखवाली करता है, कुवें के मुँह पर रक्खी हुई लकड़ी, सुनारों का नक्काशी करने का एक औजार, पाटा, लकडी की सीढ़ी।
पाढत–(हिं०स्त्री०) पढ़ने की क्रिया या भाव, जो कुछ पढ़ा जाय, मंत्र, जादू।
पाढर–(हिं०पु०) पाडर का वृक्ष।
पाढल–(हिं०पु०) देखो पाटल।
पाढा–(हिं०पु०) सफेद चित्ती का हरिन।
पाढी–(हिं०स्त्री०) सूत की लच्छी, यात्रियो को पार उतारने की नाव।
पाण–(स० पु०) व्यापार, बेंचाबिक्री, दाँव, बाजी, प्रशंसा, कर, हाथ।
पाणि–(स० नपु०) हस्त, हाथ, कर, घुमची का वृक्ष, एक कर्ष का परिमाण।
पाणिक–(स०वि०) जो खरीदा जा सके सौदा, कर, हस्त, हाथ।
पाणिकर्ण–(स० पु०) शिव, महादेव।
पाणिकर्म–(स० पु०) हाथ से बाजा बजाने वाला।
पाणिका–(स० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
पाणिगृहीत–(स० वि०) पाणि द्वारा ग्रहण किया हुआ, विवाहित।
पाणिग्रह–(स०पु०) विवाह, ब्याह।
पाणिग्रहण–(स० नपु०) हिन्दुओ में विवाह की वह रीति जिसमें पिता कन्या का हाथ वर के हाथ में देता है, विवाह, ब्याह।
पाणिग्रहणीय–(स० वि०) विवाह में दिया जाने वाला उपहार।
पाणिग्राह–(स० पु०) पाणिग्रहण करने वाला पति।
पाणिघ–(स० पु०) हाथ से बजाने के बाजे, शिल्पी, कारीगर।
पाणिघात–(स० पु०) हाथ से मारने की क्रिया, थप्पड़, मुक्का।
पाणिज–(स०पु०) अगुली, नख, नाखून।
पाणितल–(स०नपु०) हाथ का निचला भाग, करतल, हथेली, दो तोले के बराबर का परिमाण।
पाणिधर्म (स० पु०) विवाह सस्कार।
पाणिनि–(स० पु०) सस्कृत भाषा के सर्व प्रधान तथा प्राचीन व्याकरण शास्त्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
पाणिनीय–(स० वि०) पाणिनि का कहा हुआ, पाणिनि का ग्रन्थ पढ़ाने वाला।
पाणिनीयदर्शन–(सं० पु०) पाणिनि की अष्टाध्यायी व्याकरण।
पाणिपल्लव–(स०पु०) हाथ की अगुलिया
पाणिपीड़न–(सं० नपु०) पाणिग्रहण, विवाह, क्रोध पश्चात्ताप आदि के कारण हाथो को परस्पर मलना।
पाणिप्रदान–(स०नपु०) हाथ द्वारा शपथ करना।
पाणिबन्ध–(स० पु०) विवाह, ब्याह।
पाणिभुज–(स० पु०) उदुम्बर, गूलर का पेड़।
पाणिमणिका–(स० स्त्री०) कलाई पर की हड्डी।
पाणिमन्थ–(सं०पु०) करज का वृक्ष।
पाणिमर्द–(स०पु०) करकर्दम, करौंदा।
पाणिमुक्त–(स०नपु०) अस्त्र, हथियार।
पाणिमूल–(सं०नपु०) बाहुमूल, कलाई
पाणिरुह–(स० पु०) अगुली, नख, नाखून।
पाणिवाद–(सं० त्रि०) ढोल, मृदग आदि बाजे बजाने वाला, ताली बजाना, हाथ से बजाने वाले बाजे, मृदग, ढोल आदि बाजे।
पाणिरेखा–(सं० स्त्री०) हथेली पर की लकीरें।
पाणिवादक–(स०वि०)ताली बजाने वाला
पाणिसंग्रहण–(स०नपु०) हाथ पकड़ना।
पाणी–(हि० पुं०) देखो पाणि।
पाणीकरण–(सं० नपु०) पाणिग्रहण, विवाह।
पाण्डर–(स०नपु०) गैरिक, गेरू, एक प्रकार का पक्षी, पानड़ी (वि०) सफेद रग का।
पाण्डव–(स० पु०) पाण्डु राजा से युधिष्ठिर आदि पाच पुत्र, पाण्डव-नगर–दिल्ली का प्राचीन नाम पाण्डव भील, पाण्डवायन (स०पु०) श्रीकृष्ण।
पाण्डवीक–(स० पुं०)काली गौरैया।
पाण्डवीय–(सं० त्रि०) पाण्डव सबधी।
पाण्डवेय–(स० पु०) अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित्।
पाण्डित्य–(स० नपु०)विद्वत्ता, पडिताई।
पाण्डु–(स०पु०)पटोल, परवल, हलका पीला रग, इस नाम के राजा, सफेद रग, सफेद हाथी, एक रोग जिसमें पित्त के विकार से शरीर पीला पड़ जाता है, कामला रोग, नाग का एक भेद, एक प्राचीन देश का नाम।
पाण्डुक–(सं० पु०) पाण्डु राजा, परवल।
पाण्डुकण्टक–(स० पु०) अपामार्ग, चिचिड़ा।
पाण्डु-कम्बल–(सं०पु०) एक प्रकार का पत्थर।
पाण्डुतरु–स०पु०) धव का पेड़।
पाण्डुता–(सं० स्त्री०) पाण्डुत्व, पीलापन।
पाण्डुनाग–(स० पु०) पुन्नाग वृक्ष, सफेद हाथी, सफेद रग का साँप।

पाण्डुपुत्र-(सं० पुं०) पाण्डु के पुत्र, पाण्डव ।
पाण्डुभाव-(सं० पुं०) देखो पाण्डुता ।
पाण्डुमृत्तिका-(सं० स्त्री०) रामरज, पीली मिट्टी ।
पाण्डुर-(सं० पुं०) सफेद रंग, कामला रोग, धव का वृक्ष, खड़िया, कबूतर, बगला, श्वेत कुष्ठ (वि०) पीला, सफेद ।
पाण्डुरङ्ग-(सं०पुं०) एक प्रकार की घास
पाण्डुरता-(सं० स्त्री०) सफेदी ।
पाण्डुरा-(सं० स्त्री०) माषपर्णी, ककड़ी ।
पाण्डुराग-(सं० पुं०) दमनक, दौना ।
पाण्डुरागप्रिय-(सं० पुं०) मौलसिरी का पेड़ ।
पाण्डुरेक्षु (सं० पुं०) एक प्रकार की सफेद ऊख ।
पाण्डुरोग-(सं० पुं०) कामला रोग ।
पाण्डुलिपि, पाण्डुलेख-(सं०पुं०) लेख आदि का पहिला रूप, मसविदा ।
पाण्डुलोमा-(सं० वि०) जिसके रोवें सफेद हों ।
पाण्डुशर्मिला-(सं० स्त्री०) द्रौपदी ।
पाण्ड्य-(सं० पुं०) पाण्डु देशवासी, पाण्डु देश के राजा ।
पाण्य-(सं० वि०) स्तुति करने योग्य ।
पात-(सं० पुं०) पतन, गिरने की क्रिया या भाव, खगोल का वह स्थान जहां नक्षत्रों की कक्षायें क्रान्ति वृत्त को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे उतरती हैं, गिरने की क्रिया या भाव, टूटकर गिरने की क्रिया या भाव, राहु, नाश, मृत्यु, पड़ना या लगना (वि०) बचाने वाला, गिराने वाला (हिं०पुं०) पत्ता, कान में पहिरने का एक गहना, चाशनी
पातक-(सं० पुं०) अशुभ, पाप, दुष्कृत, गुनाह ।
पातकी-(हिं० वि०) पाप करने वाला, कुकर्मी, पापी ।
पातखावड़ा-(हिं० वि०) वह मनुष्य जो पत्तों के खड़कने से डर जाय ।
पातङ्ग-(सं० पुं०) शनैश्चर, यम, कर्ण, सुग्रीव ।
पातञ्जल-(सं० नपुं०) पातञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ योगसूत्र अथवा व्याकरण का महाभाष्य, पातञ्जलि मुनि प्रणीत योगदर्शन, पातञ्जलदर्शन-योगदर्शन, पातञ्जल भाष्य-व्याकरण का महाभाष्य नामक ग्रन्थ, पातञ्जल-सूत्र-योगसूत्र ।
पातन-(सं० पुं०) गिरने की क्रिया ।
पातबंदी-(हिं० स्त्री०) वह नकशा जिसमें जायदाद की अन्दाजी मालियत और उस पर का देन लिखा होता है ।
पातर-(हिं० वि०) सूक्ष्म, पतला, बारीक (स्त्री०) पत्तल, पतुरिया, वेश्या, रंडी ।
पातराज-(सं०पुं०) एक प्रकार का सर्प ।
पातल-(हिं०वि०) देखो पातर, पतला ।
पातव्य-(सं० वि०) रक्षा करने योग्य, पीने योग्य ।
पातशाह-(हिं० पुं०) देखो बादशाह ।
पातशाही-(हिं०वि०) देखो बादशाही ।
पाता-(हिं० पुं०) पत्ता (वि०) रक्षक, रक्षा करने वाला ।
पातवा-(फा०पुं०) पैर में पहिरने का मोजा
पातर-(हिं० पुं०) देखो पाताल ।
पाताल-(सं० नपुं०) विवर, गुफा, बिल, वड़वानल, पुराणानुसार पृथ्वी तल के नीचे का सातवां लोक-पाताल सात माने गये हैं यथा अतल, नितल, वितल गभस्तिमत्, तल, सुतल और पाताल, मात्रिक छन्द की संख्या कला आदि जानने का चक्र ।
पातालकेतु-(सं०पुं०) पाताल में रहने वाले एक प्रकार के दैत्य ।
पातालखण्ड-(सं०पुं०) पाताल लोक ।
पातालगरुडी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की लता, तितलौकी ।
पातालनिलय-(सं०पुं०) दैत्य, सर्प ।
पातालयन्त्र-(सं० नपुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कड़ी औषधियां पिघलाई जाती हैं, इस यन्त्र में काँच या मिट्टी का बरतन मुंह मिलकर एक के ऊपर दूर रक्खा जाता है और सन्धि स्थान में कपड़मिट्टी कर दी जाती है ।
पातालवासिनी-(हिं०स्त्री०)नागवल्ली लता
पाताली-(हिं० स्त्री०) ताड़ के फल के गूदे की टिकिया जिसको गरीब लोग खाते हैं ।
पाति-(सं०पुं०) प्रभु, स्वामी (हिं०स्त्री०) पत्ती, दल, पत्र, चिट्ठी ।
पातिक-(सं०पुं०) शिशुमार, सूंस नामक जलजन्तु ।
पातित-(सं०वि०) गिराया हुआ ।
पातित्य-(सं० नपुं०) पतित होने का भाव, गिरावट, अधःपतन, कुमार्गी होने का भाव ।
पातिली-(सं० स्त्री०) चिड़िया पकड़ने का फन्दा, मिट्टी का पात्र, हाँड़ी ।
पातिव्रत, पातिव्रत्य-(सं० नपुं०) स्त्री का पतिव्रता होने का धर्म ।
पातिसाहि-(हिं०पुं०) देखो बादशाह ।
पाती-(हिं०स्त्री०) मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, पत्र, चिट्ठी, पत्ती ।
पातुक-(सं०वि०) गिराने वाला, (पुं०) जल का प्रपात, झरना ।
पातुर, पातुरनी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी-
पात्त-(सं० पुं०) पापियों का उद्धार करने वाला ।
पात्य-(सं०वि०) पतनीय, गिराने योग्य ।
पात्र-(सं०वि०) अनेक गुणों से सम्पन्न (नपुं०) वह वस्तु जिसमें कुछ रक्खा जावे, भाण्ड, कोश, योग्य, राजमन्त्री, नदी का पाट, पत्ता, सुवा आदि यज्ञ की सामग्री, आधार, भाजन, नाटक का अभिनेता अथवा नायक या नायिका, नट
पात्रक-(सं०नपुं०) स्थाली, हाँड़ी, भीख मांगने का पात्र ।
पात्रट-(सं० पुं०) भिखमंगा (वि०) दुर्बल, दुबला पतला ।
पात्रतरङ्ग-(सं० पुं०) ताल देने का एक प्रकार का प्राचीन बाजा ।
पात्रता-(सं०स्त्री०) पात्रत्व, उपयुक्तता, योग्यता, पात्र का धर्म ।
पात्रत्व-(सं०नपुं०) देखो पात्रता ।
पात्रदुष्टरस-(सं० पुं०) केशवदास के

अनुसार काव्य का वह रसदोष जिसमें कवि जिस वस्तु को जैसा समझाना चाहता है उसके विरुद्ध ही रचना में कह जाता है।

पात्रशेष-(सं०पु०) खाकर छोड़ा हुआ अन्न आदि, उच्छिष्ट, जूठा।

पात्रसस्कार-(सं०पु०) पात्र की शुद्धि।

पात्रसञ्चार-(सं० पु०) भोजन के बाद जूठे पात्रों को उठाकर अलग रखना।

पात्री-(हिं०वि०) जिसके पास सुयोग्य मनुष्य हो, (स्त्री०) छोटे बरतन, उठौंवा, छोटी भट्ठी।

पात्रीय-(सं०वि०) पात्र सम्बन्धी।

पात्र्य-(सं० नपु०) वह जो पापों से बचाता हो।

पाथ-(सं०नपु०) जल, पानी (पु०) सूर्य, अग्नि, अन्न, वायु, आकाश (हिं०पु०) मार्ग, रास्ता।

पाथना-(हिं० क्रि०) ठोंक पीटकर सुडौल बनाना, गढना,पीटना, ठोंकना, मारना, किसी गीली वस्तु को साँचे में या हाथ से टिकिया आदि रूपमें करना-

पाथनाथ,पाथनिधि-(सं०पु०) समुद्र, सागर।

पाथस्पति-(सं०पु०) वरुण देवता।

पाथर-(हिं० पुं०) देखो पत्थर।

पाथा-(हिं०पु०) खरिहाम में अन्न नापने का बड़ा टोकरा, कोल्हू हाँकने वाला, एक प्रकार का अन्नमें लगनेवाला कीड़ा-

पाथि-(हिं० पु०) समुद्र, आँच, घाव पर की पपड़ी।

पाथेय-(सं० पुं०) वह धन जो यात्री राह खर्च के लिये ले जाता है, सम्बल, यात्री का रास्ते का कलेवा।

पाथेयक-(सं० वि०) वह जिसके पास राह खर्च हो।

पाथोज-(सं० नपु०) कमल, पद्म।

पाथोद-(सं० पु०) मेघ, बादल।

पाथोधर-(सं० पु०) मेघ, बादल।

पाथोधि,पाथोनिधि-(सं० पु०, समुद्र।

पाथ्य-(सं० वि०) आकाश या हवा में रहने वाला।

पाद-(सं० पु०) चरण, पैर, पाँव, चतुर्थांश, श्लोक का चौथा भाग,पेड़ की जड़, पुस्तक का विशेष अंश, गमन, मयूख, किरण, शिव, चिकित्सा के चार अंग यथा-वैद्य, रोगी, औषध और परिचारक, बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत, नीचे का भाग, (हिं० पु०) अधो वायु, गुदा द्वारा निकलने वाली वायु, गोज।

पादक-(सं० वि०) गमनकुशल, खूब चलने वाला,चतुर्थ भाग(पु०) छोटा पैर

पादकटक-(सं०पु०) नूपुर, पैर में पहरने का एक गहना।

पादगण्डिर-(सं० पु०) श्लीपद, फीलपाँव।

पादग्रन्थि-(सं०पुं०) गुल्फ, एँड़ी और घुट्ठी के बीच का स्थान।

पादग्रहण-(सं० नपु०) पैर छूकर प्रणाम करना।

पादग्राही-(सं०त्रि०)वह जो पैर छूता हो।

पादचत्वर-(सं० पु०) बकरा, पीपल का वृक्ष, बालू का भीटा (वि०) चुगलखोर।

पादचारी-(सं० पु०) पदाति, पैदल चलने वाला।

पादचिह्न-(सं० नपु०) दोनो पैरों के निशान।

पादज-(सं०पु०) शूद्र (वि०) जो पैर से उत्पन्न हो।

पादजल-(सं० नपुं०) वह जल जिससे किसी के पैर धुले गये हों, पादोदक, तक्र, मट्ठा।

पादटीका-(सं० स्त्री०) वह टिप्पनी जो किसी पुस्तक के पृष्ठ के नीचे लिखी गई हो, फुट्नोट्।

पादतल-(सं० नपु०) पैर का तलवा।

पादत्र,पादत्राण-(सं० पु०) पादरक्षक, जो पैर की रक्षा करे, पादुका, खड़ाऊँ, जूता।

पाददलित-(सं०वि०) पैरसे कुचला हुआ

पाददारिका-(सं० स्त्री०) पैर में का बिवाई नामक रोग।

पाददाह-(सं०पु०) पैर के तलवे में जलन होना।

पादधावन-(सं०पु०) पैर धोने की क्रिया।

पादनख-(सं०पु०)पैर की अंगुलियोंके नख

पादना-(हिं० क्रि०) अपान वायु त्याग करना वायु छोड़ना, गोज करना।

पादनालिका-(सं० स्त्री०) पैर में पहरने का एक गहना।

पादन्यास-(सं०पु०) पैर रखना,नाचना।

पादप-(सं०पु०)वृक्ष,पेड़, बैठने का पीढा।

पादपद्म-(सं० नपु०) चरण, कमल।

पादपद्धति-(सं० स्त्री०) रास्ता, पगडंडी।

पादपाश-(सं०पु०) घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी, पिछाड़ी।

पादपाशी (सं०स्त्री०)शृङ्खला,सिकड़,बेड़ी

पादपीठ-(सं०नपु०)पैरका आसन,पीढा।

पादपूरण-(सं० नपु०) किसी कविता के चरण को पूरा करना,वह शब्द या अक्षर जो कविता के पद को पूरा पूरा करने के लिये जोड़ा जाय।

पादप्रक्षालन-(सं०नपु०)पैरों का धोना।

पादप्रणाम-(सं० पु०) साष्टाङ्ग दण्डवत।

पादप्रतिष्ठान-(सं०पु०) पादपीठ,पीढा।

पादप्रधारण-(सं० नपु०)पादुका,खड़ाऊँ।

पादप्रहार-(सं० पु०) लात मारना, ठोकर मारना।

पादबद्ध-(सं० त्रि०) श्लोक का एक चरण युक्त।

पादबन्ध-(सं०पु०)पैरबाँधनेकी जंजीर,बेड़ी

पादभाग-(सं० पु०) पैर का तलवा, चौथाई भाग।

पादभुज-(सं० पु०) शिव, महादेव।

पादमुद्रा-(सं० स्त्री०) पैर का चिह्न।

पादमूल-(सं० नपु०) पैर का निचला भाग, पहाड़ की तराई।

पादरक्ष-(सं० वि०) वह जिसके पैरों की रक्षा हो।

पादरक्षण-(सं० नपु०) पादुका, खड़ाऊँ, जूता।

पादरज-(सं०नपु०) चरणों की धूलि।

पादरज्जु-(सं०स्त्री०) पैर बाँधने की रस्सी।

पादरथी-(सं०स्त्री०) पादुका, खड़ाऊँ।

पादरी-(हिं० पु०) ईसाई धर्म का

पुरोहित जो ईसाइयो का जातकर्म आदि सस्कार कराता है।

पादरोह, पादरोहण-(सं० पुं०) बर का पेड़।

पादलेप-(सं० पु०) पैर में लगाने का आलता, महावर।

पादवन्दन-(स० नपु०) पैर पकड़ कर प्रणाम करना।

पादवल्मीक-(स०पु०) श्लीपद, फीलपाँव

पादविक-(स०पु०) पथिक, मुसाफिर।

पादविदारिका-(स०स्त्री०) घोड़े के पैर का एक रोग।

पादविन्यास-(स० पु०) पैर रखने का ढंग।

पादवेष्टनिक-(स०पु०) पैर में पहिरने का मोज़ा।

पादशलाका-(स०स्त्री०)पैर की पतलीहड्डी

पादशाखा-(स० स्त्री०) पैर की अगुली।

पादशाह-(फा०पु०) देखो बादशाह।

पादशीली-(स०स्त्री०) कचूर।

पादशुश्रूषा-(स० स्त्री०) चरण सेवा, पैर दबाना।

पादशोथ-(स०पु०) पैर सूजने का रोग।

पादश्लाका-(स० स्त्री०) पैर की नली।

पादस्तम्भ-(स० पु०) सहारा लगाने की लकड़ी।

पादस्फोट-(स० पु०) एक प्रकार का कुष्ठ।

पादस्वेदन-(स० नपु०) पैर से पसीना निकलना।

पादहर्ष-(स० पु०) पेर में झुनझुनी होने का रोग।

पादहारक-(स०नपु०) चरण द्वारा हरण करना।

पादहीन-(स०वि०) जिसके चरण न हो, जिस कविता में तीन ही चरण हो।

पादहीना-(स०स्त्री०) आकाश लता।

पादाकुलक-(स० नपु०) एक प्रकार का मात्रा वृत्त चौपाई।

पादाक्रान्त-(स०वि०) पैरो से कुचला हुआ

पादाग्र-(हिं०नपु०) पैर की नोक।

पादाघात-(सं०पुं०) पैरों का प्रहार।

पादाङ्गद-(स० नपु०)नूपुर, पैजनी।

पादाति, पादातिक-(स० पु०) पैदल सिपाही।

पादानोन-(हिं०पु०) काला नमक।

पादान्त-(स० पु०) पाद का अन्त या आखरी भाग, पैर के समीप।

पादाभ्यङ्ग-(स० पु०) पैर के तलवे में तेल की मालिश।

पादाम्बु-(स० नपु०) तक्र, मठा।

पादारक-(स० पु०) नाव की यात्रियो के बैठने की लकड़ी की पटरी।

पादारध-(हिं० पु०) देखो पादार्घ।

पादार्घ-(स० पु०) पाद का अर्ध भाग, आठवाँ हिस्सा।

पादालिन्दी-(स० स्त्री०) नौका, नाव।

पादावर्त-(स० पु०) कुवें से जल निकालने का यन्त्र, रहट।

पादावसेचन-(स० नपु०) पैर धोना।

पादाविक-(स० पु०) पदाति, पैदल सिपाही।

पादासन-(स० पु०) पाँव रखने का आसन, पीढा।

पादी-(हिं०पु०) पैर वाले जल जन्तु यथा मगर घड़ियाल, गोह आदि।

पादीय-(हिं०पु०)पद वाला,मर्यादा वाला

पादुक-(स० पु०) गमनशील, चलनेवाला

पादुका-(स० स्त्री०) खड़ाऊँ, जूता पादुकाकार-चर्मकार, मोची।

पादू-(स०पु०) पादुका, खड़ाऊँ।

पादोदक-(सनपु०)वह जल जिसमे किसी के पैर धोया गया हो, चरणामृत।

पादोदर-(स० पु०) सर्प, साँप।

पाद्य-(स०नपु०)वह जल जिससे पैर धोया गया हो, पदोदक।

पाद्युक-(स० नपु०) पैर धोने की एक विधि।

पाद्यार्घ-(स०पु०) हाथ पैर धुलाने का जल, पूजा की सामग्री, पूजा में दिया हुआ धन, भेंट।

पाधा-(हिं०पु०) आचार्य, उपाध्याय, पण्डित।

पान-(सं० नपुं०) पीना, घूंट घूंट करके गले के नीचे उतारना, शराब पीना, पीने का पदार्थ, मद्य, पीने का बरतन, रक्षा, नहर, कलवार, निःश्वास जल, पौसरा, जय (वि०) रक्षा करने वाला।

पान-(हिं०पु०) पत्ता, एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्ते पर चूना, खैर, सुपारी रख कर बीड़ा बना कर लोग खाते हैं, ताम्बूल, पान के आकार की कोई वस्तु, ताश के पत्ते के चार भेदों में से एक, जूते मे का पान के आकार का रंगीन चमड़ा, लड़ी, गून, पानपत्ता-तुच्छ उपहार, छोटी सी भेंट,पान फूल-सामान्य भेंट, बड़ी सुकुमार वस्तु।

पानकुम्भ-(स०पुं०) जल का कलसा।

पानगोष्ठिका-(स०स्त्री०) वह स्थान जहा तान्त्रिक लोग इकट्ठा होकर मद्य पान करते हैं तथा कुछ जप पूजा करते हैं।

पानड़ी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सुगन्धित पत्ती।

पानदान-(हिं० पु०) वह डब्बा जिसमें पान, खैर सुपारी चूना आदि रक्खा जाता है।

पानदोष-(स०पु०) मद्यपान का व्यसन।

पानप-(स०वि०) शराबी, पियक्कड़।

पानभूमि-(स० स्त्री०) वह स्थान जहा एकत्र होकर लोग शराब पीते हैं।

पानमद-(स०पु०) शराब का नशा।

पानमात्रा-(स० स्त्री०) सुरापान की प्रशस्त मात्रा।

पानविभ्रम-(स०पु०) एक रागका नाम

पानस-(स०नपु०) कटहल से बनाई हुई मदिरा।

पानरा-(हिं० पु०) देखो पनारा, पनाला

पानही-(हिं० स्त्री०) पनही, जूता।

पाना-(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, हासिल करना, किसी विषय में किसी के बराबर होना, पास पहुँचना, समर्थ होना, जानना, समझना, भोजन करना, किसी खोई हुई वस्तु का मिल जाना, मोल लेना. पता लगाना, साक्षात् करना, देखना, अनुभव करना, अच्छा बुरा परिणाम भोगना, कुछ सुन लेना

या जान लेना, (वि०) जो प्राप्त हो सके, जिसके पाने का हक हो।

पानागार–(स०पुं०) जहा बहुत से लोग मिलकर शराब पीते हैं।

पानात्ययन–(स० पु०) अधिक मदिरा पीने से उत्पन्न होने वाला एक रोग।

पानि–(हि० पु०) देखो पाणि, हाथ, पानी, जल।

पानिक–(स०पु०) मदिरा बेंचने वाला, कलवार।

पानिग्रहण–(हिं०पु०) देखो पाणिग्रहण, विवाह।

पानिप–(हिं०पु०) द्युति, चमक, कान्ति।

पानी–(हि० पु०) पानीय, जल, वृष्टि, वर्षा, मेघ, जीभ आँख त्वचा आदि से निकलने वाला रस था पसेव, वीर्य, शुक्र, वर्ष, साल, मुलम्मा, मुलालम चीज, बारी, दफा, जलवायु, आबहवा, चमक, आब, कोई तरल वस्तु, कोई द्रव पदार्थ, अर्क, मान, प्रतिष्ठा, अवसर, मौका, कोई नीरस फीका पदार्थ, मद्य, द्वन्द्वयुद्ध, पानी की तरह का ठढा पदार्थ, पशुओं की वशगत विशेषता, सामाजिक अवस्था, मर्दानगी, हिम्मत, हथियार की उत्तमता, आब, जौहर, जूस, छवि, **पानी का बुलबुला**–क्षणभर में नष्ट होने वाला पदार्थ, **पानी की तरह धन बहाना**–अपव्यय करना, फजूल खर्ची करना, **पानी के मोल**–बड़े सस्ते दाम पर, **पानी टूटना**–तालाब, कुवें आदि में जल का अभाव, **पानी देना**–खेत सींचना, (पितरों को) तर्पण करना, **पानी पढना**–जल को मत्र से अभिमंत्रित करके छिड़कना, **पानी पानी होना**–अति लज्जा युक्त होना, **पानी फूकना**–जलको अभिमन्त्रित करना, **पानी फेर देना**–बिलकुल नष्ट कर देना, **पानी भरना**–अत्यन्त हीन प्रतीत होना, **पानी मे आग लगाना**–जहा झगड़ा होना असभव हो वहा उत्पन्न कर देना, **पानी मे फेकना**–नष्ट कर देना, **सूखे पानी मे डूबना**-धोखे में पड़ना, **मुँह मे पानी आना**–बड़ी लालच उत्पन्न होना, **पानी उतर जाना**–बेइज्जत होना, **पानी जाना**–अपमानित होना **पानी पानी कर देना**–क्रोध को शान्त करना, **पानी लगना**–कहीं का जल वायु स्वास्थ्य के हित न होना, **चुल्लू भर पानी मे डूब मरना**–अति लज्जित होना, मुह दिखाने योग्य न रह जाना।

पानी तराश–(फा०पु०) जहाज या नाव की पेंदी की वह लकड़ी जो पानी को चीरती है।

पानीदार–(हि०पु०) चमकदार, आबदार, माननीय, प्रतिष्ठित, आत्माभिमानी, साहसी, मरदाना, जीवट वाला, इज्जतदार।

पानीदेवा–(हिं०वि०) तर्पण या पिण्डदान देने वाला, अपने वश या कुल का, पुत्र, बेटा।

पानीफल–(हि० पु०) सिंघाड़ा।

पानीय–(स० नपु०) जल, (वि०) पाने योग्य, जो पिया जा सके।

पानीय फल–(स०नपु०) मखाना।

पानीय शालिका–(स० स्त्री०) प्यासों को पानी पिलाने का स्थान, पौसरा।

पानौरा–(हिं० पु०) पान के पत्ते की पकौड़ी।

पानूस–(हिं०पुं०) देखो फानूस।

पान्थ–(स०पु०) पथिक (वि०) वियोगी, विरही।

पान्थ निवास–(स० पु०) पथिकों के ठहरने का स्थान, सराय, चट्टी।

पान्थशाला–(स०स्त्री०) सराय, चट्टी।

पान्हर–(हि०पु०) एक प्रकार की सरपत।

पाप–(सं०नपु०) अधर्म, दुष्कृत, शास्त्र विहित कर्म न करने तथा निन्दित कर्म करने अथवा इन्द्रियों में अत्यन्त आसक्त होना, अपराध, वध, हत्या, अहित, बुराई, कसूर, कठिनाई, सकट, पापबुद्धि, खोटी नियत, क्लेश देने का विषय(वि०)पापिष्ट नीच, दुराचारी, अशुभ, **पाप उदय होना**–पूर्व जन्म के किये हुए पापों का फल मिलना, **पाप कटना**–पाप का नाश होना, **पाप बटोरना**–पातक करना, **पाप लगना**–दुष्कृत होना, **पाप कटना**–झझट दूर होना, **पाप मोल लेना**–जान बूझकर किसी झझट में फँसना, **पाप पड़ना**–अनिष्ट सिद्ध होना।

पाप कर्म–(स०नपु०) निषिद्ध कार्य, जिस करने से पाप हो।

पापकर्मी–(हि० वि०) पापी, पातकी।

पापकर्मी–(हि०वि०) पाप करने वाला।

पापकल्प–(स० वि०) दुष्कर्मी, पापकर्म से जीविका चलाने वाला।

पापकारी–(स०वि०) पाप कर्मी, पातकी।

पापकृत्–(सं० वि०) पापी, बदमाश।

पापक्षय–(सं०पुं०) पाप का नाश।

पापगण–(स०पुं०) छन्दशास्त्र के अनुसार ठगण का भेद।

पापग्रह–(स० पु०) फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य, मगल, शनि, राहु और केतु अथवा इन ग्रहो से युक्त बुध ग्रह जो अशुभ फल देनेवाले माने जाते हैं।

पापघ्न–(स० वि०) पाप नाशक, जिससे पाप का नाश हो।

पापघ्नी–(स०वि०) तुलसी।

पापचारी–(स०वि०) पाप करने वाला, पापी।

पापचेतस्–(स०वि०) पापबुद्धि, पापिष्ठ।

पापड़–(हि० पु०) उर्द अथवा मूग की धुली हुई बिना छिलके की दाल के आटे से बनाई हुई मसालेदार महीन पपड़ी (वि०) बारीक, पतला, सूखा, **पापड़ बेलना**–बड़े परिश्रम का कार्य करना, दुःख के दिन बिताना।

पापड़ा–(हि० पु०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी को खराद कर खिलौने बनाते हैं, बनडाल।

पापड़ाखार–(हिं० पु०) केले के पेड़ से निकाला हुआ क्षार।

पापत्व–(स० नपु०) पाप का धर्म या भाव।

पापदर्शी-(हि० वि०) अनिष्ट करने की इच्छा से देखने वाला।
पापदृष्टि-(स० वि०) अशुभ या अमगल दृष्टि वाला।
पापधी-(स०वि०) पापमति, मन्द बुद्धि।
पाप नक्षत्र-(स० नपु०) निन्दित नक्षत्र।
पापनाम-(स०वि०) अमगल नाम वाला, बदनाम।
पापनाशन-(स०वि०) पाप नाशक (पु०) विष्णु, शिव, वह प्रायश्चित्त जिसके करने से पापों का नाश हो।
पापनाशिनी-((०स्त्री०) काली तुलसी।
पापपति-(सं०पु०) उपपति, जार।
पाप पुरुष-(सं०पु०)तन्त्र में माना हुआ एक पुरुष जिसका सम्पूर्ण शरीर पाप मय होता है।
पाप फल-(स० नपु०) पाप का फल, जिसका फल अशुभ हो।
पाप बुद्धि-(स०वि०) पापमति, दुष्ट।
पापभक्षण-(स०पु०) काल भैरव, शिव।
पाप मति-(स०वि०) देखो पाप बुद्धि।
पापमुक्त-(स०वि०)निष्पाप, पापसे मुक्त।
पाप मोचनी-(स०स्त्री०) चैत्र के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम।
पापयक्ष्म-(स०पु०)राजयक्ष्मा, क्षयरोग।
पाप योनि-(स०स्त्री०) पाप करने से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के सिवाय पशु, पक्षी, वृक्ष आदि की योनि जिसको पातकी लोग नरक यातना भोग करने के बाद प्राप्त करते हैं।
पापर-(हि०पु०) देखो पापड़।
पाप रोग-(स० पु०) वह रोग जो किसी विशेष पाप करने से होता है, वसन्त रोग, छोटी माता।
पापरोगी-(स०वि०) वह जिसको कोई पाप रोग हुआ हो।
पापलेन-(फा० पु०) एक प्रकार का सूती कपड़ा।
पाप लोक-(स०पु०) पापियों के रहने का स्थान, नरक।
पाप लोक्य-(स०वि०) नरक सम्बन्धी।
पाप वाद-(स०पु०)अशुभ सूचक शब्द, अमङ्गल ध्वनि।
पाप विनाशन-(सं०नपु०) एक तीर्थ का नाम।
पाप शमनी-(स० स्त्री०) शमी वृक्ष।
पापशील-(स०वि०) दुष्ट स्वभाव का।
पाप सङ्कल्प-(सं०वि०)जिसने पाप करने का दृढ निश्चय कर लिया हो।
पापसम-(स०वि०)पाप तुल्य,पाप सदृश।
पाप हन्-(स०वि०) पाप नाशक।
पापहर-(स०वि०)पाप को नाश करनेवाला
पापहा-(स०वि०) देखो पापहर।
पापाङ्कुशा-(सं० स्त्री०) आश्विन मास की शुक्ला एकादशी का नाम।
पापा-(हिं०पु०) ज्वार बाजरे की फसल में लगने वाला एक कीड़ा, बच्चों का पिता को सबोधन करने का शब्द।
पापाचार-(स०पु०) पाप कार्य, पाप का आचरण, (वि०) पापी, दुराचारी।
पापात्मा-(स०वि०) पापिष्ठ,पापी,पातकी।
पापाशय-(सं०पु०)अधार्मिक,दुष्ट,पातकी।
पापाह-(स०पु०)निन्दित या अशुभ दिन।
पापही-(स०पु०) सर्प, साँप।
पापिष्ठ-(सं०वि०) बहुत बड़ा पापी,पातकी
पापी-(हिं०वि०) पाप करने वाला,निर्दय, क्रूर, दुराचारी, अपराधी, पाप करने वाला, दूसरे को कष्ट देने वाला।
पापोश-(फा०पु०) उपानह, जूता।
पाप्मा-(हिं०पु०) पाप (वि०) पापी।
पाबन्द-(फा०वि०) अस्वाधीन, जो किसी वस्तु का अनुसरण करने के लिये बाध्य हो, सेवक, दास, नौकर, आचरण में किसी विशेष बात को नियम पूर्वक रक्षा करने वाला, घोडे की पिछाड़ी।
पाबन्दी-(फा०स्त्री०) बद्धता, अधीनता, नियमित रूप से किसी बात का अनुसरण, मजबूरी, लाचारी।
पाम-(हि०स्त्री०) गोटे किनारी के छोर पर लगी हुई डोरी, चमडे पर,की फुसिया, खाज, खजुली।
पामघ्न-(स०पु०) गन्धक।
पामघ्नी-(स०स्त्री०) कुटकी।
पामड़ा-(हिं०पुं०) देखो पाँवड़ा।
पामर-(स०वि०) खल, दुष्ट, पाजी, नीच कुल में उत्पन्न, दुश्चरित्र, अधम, मूर्ख, निर्बुद्धि, बेवकूफ।
पामरी-(हिं०स्त्री०) उपरना, दुपट्टा,पामड़ी
पामा-(स०स्त्री०)एक प्रकार का कुष्ट रोग
पामाल-(हिं०वि०) पादाक्रान्त, पैर से कुचला हुआ,सत्यानाश,बरबाद,चौपट।
पामाली-(फा० स्त्री०) बरबादी, तबाही।
पामोज-(हि० पु०) एक प्रकार का कबूतर जिसके पजे तक पर से ढपे रहते हैं।
पायँ-(हिं० पु०) देखो पावँ।
पायँजेहरि-(हिं० स्त्री०) पाजेब नूपुर।
पायँता-(हि० पु०) चारपाई या पलग का वह भाग जिस पर पैर रहता है, पायताना।
पायँती-(हिं० स्त्री०) पायताना, पैताना।
पायंदाज-(फा० पु०) पैर पोछने का टाट आदि।
पयंपसारी-(हि० स्त्री०) निर्मली का पौधा और फल।
पाय-(स० नपु०) जल, परिमाण, (हिं०पु०) पाँव, पैर।
पायक-(स०वि०) पानेवाला, (हि०पु०) दूत, हरकारा, दास,सेवक पैदल सिपाही
पायखाना-(हि० पु०) देखो पाखाना।
पायजामा-(हिं० पु०) देखो पाजामा।
पायजेब-(हि० स्त्री०) देखो पाजेब।
पायड़ा-(हि० पु०) देखो पैड़ा।
पायताबा-(फा० पु०) खोली की तरह का एक पैर का पहिनावा जिससे पैर की अगुलियों से लेकर आधी टाँगें ढपी रहती हैं, मोजा।
पायदार-(फा० वि०) बहुत दिनो तक टिकने वाला, दृढ, मज़बूत।
पायदारी-(फा० स्त्री०) दृढता मज़बूती।
पायन-(सं० नपु०) पान।
पायना-(हिं० क्रि०) हथियार पर सान देना।
पायपोश-(हि० पु०) देखो पापोश।
पायमाल-(फा०वि०) पैरों से रौंदा हुआ, बरबाद।

पायमाली-(फा० स्त्री०) दुर्गति, बरबादी, खराबी।

पायरा-(हिं० पु०) रेकाब, एक प्रकार का कबूतर।

पायल-(हिं० स्त्री०) नूपुर, पाजेब, बाँस की सीढ़ी, तेज चलने वाली हथनी, वह बच्चा जिसके पैर जन्मते समय पहले बाहर निकलें।

पायस-(सं० पु०) खीर, देवदार के वृक्ष से निकला हुआ गोंद।

पायसा-(हिं० पु०) पड़ोस।

पाया-(हिं० पु०) पलग, कुर्सी, चौकी तखत आदि के तले में खड़े बल का लगा हुआ डंडा जिसपर इनका ढाँचा जड़ा होता है, गोड़ा, पावा, खभा, सीढ़ी, जीना, पद, ओहदा।

पायिक-(स० पु०) पैदल सिपाही।

पायित-(स० वि०) सान धरा हुआ।

पायी-(स० वि०) पानकारी, पीने वाला।

पायु-(स० पु०) मलद्वार, गुदा, पाखाना।

पार-(स० नपुं०) नदी का किनारा, (पु०) प्रान्त, भाग, छोर, ओर, तरफ, पारद, पारा, अन्त, हद (अव्य०) आगे, दूर, आरपार-नदी आदि के दोनो किनारे, पार उतरना-सफलता प्राप्त करना, किसी काम से छुट्टी पाना, पार करना-पूरा करना, समाप्त करना, निर्वाह करना, पार लगना-नदी आदि के पार पहुंचना, पार लगाना-अन्त तक पहुचाना, पूरा करना, उद्धार करना, पार होना-किसी कार्य को अन्त तक पहुचा देना, पार पाना-अन्तिम सीमा तक पहुचना, विजय प्राप्त करना।

पारक-(स०पु०) सुवर्ण सोना, (वि०) पूर्ति करने वाला, पार करने वाला, निपुण।

पारक्य-(स० वि०) परकीय, पराया, दूसरे का।

पारख-(हिं०स्त्री०) देखो पारिख, पारखी।

पारखद-(हिं०पु०) देखो पार्षद।

परखी-(हिं०पु०) परीक्षक, जाँचनेवाला परखनेवाला, जिसको परीक्षा करने की योग्यता हो।

पारग-(स० वि०) पारगामी, पार जाने वाला, समर्थ काम को पूरा करनेवाला, अभिज्ञ, जानकार।

पारगत-(स०वि०) समर्थ, पूरा जानकार।

पारचा-(फा०पु०) खण्ड, टुकड़ा, कपड़ा, पोशाक, पहरावा, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, कुँए के मुख पर रक्खी हुई पटिया जिसपर पैर रख कर पानी खींचा जाता है।

पारजात-(हिं० पु०) देखो पारिजात, परजाता।

पारजायिक-(सं० पु०) पर स्त्री गामी, व्यभिचारी।

पारण-(स० नपु०) वह भोजन जो किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन प्रथम बार किया जावे, इस सबध का कृत्य, मेघ, बादल, तृप्त करने की क्रिया या भाव, समाप्ति।

पारणा-(स० स्त्री०) उपवास, व्रत आदि के दूसरे दिन का प्रथम भोजन।

पारणीय-(स०वि०) पूरा करने योग्य।

पारतन्त्र्य-(स० नपु०) परतन्त्रता, पराधीनता।

पारत्रिक-(स० वि०) पारलौकिक, परलोक सबधी।

पारथ-(हिं० पु०) देखो पार्थ।

पारद-(स० पु०) पारा, एक प्राचीन म्लेच्छ जाति का नाम।

पारदर्शक-(स० वि०) जिसके भीतर से होकर प्रकाश की किरणें जा सके, आर पार दिखलाई देने वाला।

पारदर्शन-(स०वि०) सर्वज्ञ, पारगामी।

पारदर्शी-(सं०वि०) परिणाम दर्शी, चतुर, विद्वान्, दूरदर्शी, पटु, समर्थ।

पारदारिक-(स०पु०) परस्त्री से सभोग करने वाला।

पारदार्य-(स० नपु०) परदारागमन, व्यभिचार।

पारधी-(हिं० पु०) बहेलिया, व्याध, शिकारी, बधिक, हत्यारा (स्त्री०) ओट, आड़।

पारन-(हिं० पु०) देखो पारण।

पारना-(हिं० क्रि०) डालना, गिराना, रखना, पहरना, मिलाना, शामिल करना बुरी हालत होना, साँचे आदि में कोई वस्तु तैयार करना, जमीन पर लबा डालना, पछाड़ना, समर्थ होना, उत्पात मचाना, पिंडा पारना-पिण्डदानकरना।

पारबती-(हिं० स्त्री०) देखो पार्वती।

पारमार्थिक-(स०वि०) परमार्थ सबधी, वास्तविक, भ्रम रहित, स्वाभाविक।

पारम्परीण-(स०वि०) परम्परासे आगत।

पारम्पर्य-(स० नपु०) परम्परा का भाव, कुल क्रम।

पारयिष्णु-(सं० वि०) पारगामी, पार जाने वाला।

पारलौकिक-(स० पु०) परलोक सबधी, परलोक में शुभ फल देनेवाला।

पारवत-(स० पु०) पारावत, कबूतर।

पारवश्य-(स०नपु०) परतन्त्रता, परवशता

पारशव-(स०पु०) पराई स्त्री से उत्पन्न पुत्र, एक वर्णसंकर जाति जो ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न हो, लोहा, एक देश का नाम जहा मोती निकलता था।

पारश्वध-(स०पु०) परशुधारी।

पारश्वय-(स० नपु०) सुवर्ण, सोना।

पारस-(हिं०पु०) स्पर्श मणि, एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में लोगों में ऐसी प्रसिद्धि है कि इसमे लोहा छुलानेसे वह सुवर्ण हो जाता है, अत्यन्त लाभ देने वाली तथा उपयोगी वस्तु, खाने के के लिये रक्खा हुआ भोजन, पत्तल जिसमें खाने की सामग्री हो, एक पहाड़ी वृक्ष निकट, पास, भारतवर्ष के पश्चिम सिन्धु नद और अफगानिस्तान के आगे का एक देश, (वि०) आरोग्य, चगा, तन्दुरुस्त।

पारसनाथ-(हिं०पु०) देखो पार्श्व नाथ।

पारसव-(हिं०पु०) देखो पारशव।

पारसी-(हिं०वि०) पारस देश सबधी, पारस देश का, (पु०) पारस देश का रहने वाला मनुष्य, स्वदेश परित्याग

करके जो लोग भारतवर्ष में आकर बसे हैं, इन लोगों पर मुसलमानों ने बड़ा अत्याचार किया था जिससे इनको देश छोड़ना पड़ा।
पारसीक-(सं० पु०) पारस देश का निवासी, पारस देश का घोड़ा।
पारस्कर-(सं०पु०) एक देश का प्राचीन नाम, एक गृह्यसूत्रकारक मुनि का नाम
पारस्त्रैणेय-(सं०वि०) पर स्त्री से उत्पन्न पुत्र, जारज पुत्र।
पारस्परिक-(सं० वि०) परस्पर वाला, आपस का।
पारस्य-एक देश जिसका दूसरा नाम ईरान है।
पारा-(हिं०पु०) चादी की तरह सफेद चमकता हुआ एक तरल धातु जिसका द्रव रूप गरमी सरदी से नहीं बदलता, (फा० पु०) टुकड़ा, पत्थरों के ढोकों को जोड़कर बनी हुई दीवार, पारा पिलाना-किसी वस्तु को बहुत भारी बना देना।
पारायण (सं०नपु०) सम्पूर्णता, समाप्ति, नियमित समय में किसी ग्रन्थ का आदि से अन्त तक पाठ करना।
पारायणिक-(सं०पु०) आद्योपान्त पाठ करने वाला, पाठ करने वाला।
पारारुत-(सं०पु०) चट्टान, शिला।
पारावत-(सं० पु०) परेवा, पडुक, कबूतर, बदर, पर्वत, एक नाग का नाम, तेंदू का वृक्ष, एक प्रकार का खट्टा पदार्थ, दत्तात्रेय के गुरु का नाम।
पारावती-(सं०स्त्री०) ग्वालों की गीत, लवली फल, हरफा रेवड़ी।
पारावार-(सं०नपु०) आरापार, वारपार, सीमा, हद, समुद्र।
पारावारीण-(सं०वि०) आर पार करने वाला।
पाराशर-(सं०पु०) व्यासदेव, पराशर मुनि का वंशज, (वि०) पराशर सम्बधी, पराशर का बनाया हुआ।
पराशरि-(सं०पु०) वेदव्यास, शुकदेव।
पारि-(सं०स्त्री०) हद, पार, ओर, तरफ, दिशा, किसी जलाशय का किनारा।
पारिकुट-(सं०पु०) सेवक, नौकर।
पारिख-(हिं० पु०) देखो परख।
पारिक्षित-(सं० पु०) परीक्षित् के पुत्र जनमेजय।
पारिगर्भिक-(सं०पु०) कपोत, कबूतर।
पारिग्रामिक-(सं० वि०) गाँव के चारो ओर का।
पारिजात-(सं०पुं०) एक वृक्ष जो समुद्र मथन के समय निकला था और इन्द्र के नन्दन वन में स्थापित हुआ, परजाता, हरसिंगार, कचनार, ऐरावत के कुल का एक हाथी, एक तन्त्र शास्त्र का नाम, एक ऋषि का नाम।
पारितव्या-(सं० स्त्री०) स्त्रियों का सिर के बालों पर पहिरने का एक आभूषण।
पारितोषिक-(सं०वि०) प्रीतिकर, आनन्द देने वाला (पु०) वह वस्तु जो किसी को प्रसन्न करने के लिये दी जावे, इनाम, उपहार।
पारिन्द्र-(सं०पु०) सिंह, शेर।
पारिपन्थिक-(सं०पु०) डाकू, चोर।
पारिपात्र-(सं० पु०) सप्त कुलाचल में से एक पर्वत।
पारिपार्श्व-(सं०नपु०) सेवक, अनुचर, अरदली।
पारिपार्श्विक-(सं० पु०) नाटक के अभिनय मे एक विशेष नट जो स्थापक का अनुचर होता है। यह सूत्रधार नटीं आदि के साथ प्रस्तावना में आता है, पास में खड़ा होने वाला सेवक।
पारिप्लव-(सं० वि०) चचल (पु०) एक प्रकार का जलपक्षी, नाव, जहाज।
पारिप्लवनेत्र-(सं०नपु०) चचल चक्षु।
पारिबर्ह-(सं० पु०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।
पारिभद्र-(सं० पुं०) फरहद का पेड़, सरल वृक्ष, देवदारु, एक हरे रग का रत्न।
पारिभाव्य-(सं० नपुं०) परिभू या जामिन होने का भाव।
पारिभाषिक-(सं०नपु०) परिभाषा द्वारा अर्थबोधक पद, जिस शब्द का व्यवहार किसी विशेष अर्थ के सकेत में किया जाता है।
पारिमण्डल्य-(सं०नपु०) अणु या परमाणु का परिमाण।
पारिरक्षक-(सं०पु०) तपस्वी, साधु।
पारिव्राजक-(सं०नपु०) परिव्राज का भाव, सन्यास।
पारिश-(सं०पु०) फलीश, कमण्डलु।
पारिशील-(सं० पु०) एक प्रकार का मालपुआ।
परिषद्-(सं० पुं०) सभा मे बैठने वाला, सभ्य, सभासद (वि०) सभा सबधी।
पारिषद्क-(सं०वि०) पच से किया हुआ-
पारिसपीपल-(हिं०पु०) भिंडो की जाति का एक पेड़।
पारिहारिक-(सं०वि०) परिहार करने वाला
पारिहार्य-(सं०पु०) वलय, हाथ का कड़ा।
पारिहास्य-(सं०नपु०) परिहास का भाव।
पारी-(सं० स्त्री०) जलसमूह, (हि०स्त्री०) वारी, ओसरी, गुड़ का जमाया हुआ ढोका
पारीण-(सं०वि०) पारगामी।
पारीन्द्र-(सं०पु०) सिंह, अजगर सर्प।
पारीरण-(सं०पु०) कमठ, कछुआ, दण्ड।
पारु-(सं०पु०) अग्नि, सूर्य।
पारुष्य-(सं०नपु०) वाक्य की अप्रियता, कठोरता, इन्द्र के वन का नाम (पु०) बृहस्पति।
पारेरक-(सं०पु०) खड्ग, तलवार।
पारेवत-(सं० पुं०) एक प्रकार का अमरूद, एक प्रकार का खजूर।
पारे सिन्धु-(सं० अव्य०) समुद्र के दूसरे किनारे पर।
पारोक्ष-(सं० वि०) परोक्ष सम्बन्धी।
पार्क-(अं०पु०) बड़ा बगीचा, उपवन।
पार्घट-(सं०नपुं०) भस्म, राख।
पार्टी-(अं०स्त्री०) मण्डली, भोज, दावत।
पार्थ-(सं०पु०) पृथिवीपति, पृथा का पुत्र अर्जुन, अर्जुन वृक्ष।
पार्थक्य-(सं० नपु०) पृथक् होने का

भाव, वियोग, जुदाई ।
पार्थव–(स० नपु०) स्थूलता, मोटाई (वि०) पृथुराज सबन्धी ।
पार्थसारथि–(स० पु०) श्रीकृष्ण ।
पार्थिव–(सं० नपुं०) तगर पुष्प (पु०) पृथिवीपति,राजा,एक सवत्सर का नाम, मगल ग्रह, मिट्टी का बरतन, मिट्टी का बना हुआ शिवलिङ्ग, (वि०)मिट्टी आदि का बना हुआ, राजा के योग्य ।
पार्थिवी–(स०स्त्री०) सीता,उमा, पार्वती ।
पार्पर–(स०पु०) यम ।
पार्लामेन्ट्–(अ०स्त्री०) अंग्रेजी राज्य की शासन व्यवस्था करने वाली महासभा ।
पार्वण–(स०पु०) किसी पर्व के दिन किया जाने वाला श्राद्ध ।
पार्वत–(स० पु०) महानिम्ब, बकायन, एक प्रकार का अस्त्र (नपु०) हिंगुल, शिलाजीत (वि०) पर्वत सबन्धी, पर्वत पर होने वाला ।
पार्वती–(स०स्त्री०)पर्वतराज की कन्या, दुर्गा,शिव की अर्धाङ्गिनी,गोपालपुत्रिका, द्रौपदी, गोपी चन्दन, धातकी, सैंहली, पार्वतीनन्दन–कार्तिकेय ।
पार्वतीय–(स०वि०) पर्वत संबन्धी,पहाड़ी
पार्वतीलोचन–(स० पु०) एक ताल का नाम ।
पार्वतीश्वर–(स० पु०) एक शिवलिंग का नाम ।
पार्वतेय–(स० नपु०) सुरमा, (पु०) हुड़हुड़ का पौधा, धाय का वृक्ष (वि०) पर्वत पर होने वाला ।
पार्शव–(स०पु०) परशु से लड़ने वाला योद्धा ।
पार्शुका–(स०स्त्री०) पर्शुका, पसली ।
पार्श्व–(स०पुं०) काँख के नीचे का भाग, बगल, पसलियाँ, निकटता, समीपता, आस पास का स्थान , पार्श्ववर्ती– समीपस्थ ।
पार्श्वक–(स०वि०)धूर्तता से अपनी उन्नति चाहने वाला ।
पार्श्वग–(स० पु०) अनुचर, सेवक (वि०) बगल में चलने वाला ।
पार्श्वगत–(सं०वि०)निकट में रहने वाला
पार्श्वचर–(स० पु०) अनुचर, भृत्य, अरदली ।
पार्श्वतीय–(स०वि०) जो बगल में हो ।
पार्श्वद–(स०पु०) अनुचर, सेवक ।
पार्श्वदेश–(सं०पु०) पार्श्व भाग, बगल ।
पार्श्वनाथ–(स० पु०) जैनो के तेइसवें तीर्थङ्कर ।
पार्श्वभाग–(स०पु०) पक्षभाग, काँख ।
पार्श्ववक्त्र–(सं०पु०) शिव, महादेव ।
पार्श्ववर्ती–(स० पु०) पास रहने वाला मनुष्य ।
पार्श्वशायी–(स०वि०) पास में सोने वाला
पार्श्वसूत्रक–(स० पु०) एक प्रकार का प्राचीन आभूषण ।
पार्श्वस्थ–(स० पुं०) पार्श्वस्थित नट, अभिनय के नैटो में से एक जो पास में खड़ा रहता है, (वि०) पास में खड़ा रहने वाला ।
पार्श्वस्थित–(स० वि०) बगल में रहने वाला ।
पार्श्वानुचर–(स० पु०) अनुचर, अरदली ।
पार्श्वासन्न–(स० वि०) पास मे उपस्थित
पार्श्वास्थि–(स०नपु०) पर्शुका, पसली की हड्डी ।
पार्श्विक–(सं० वि०) सहचर, छली, धोखेबाज ।
पार्षत–(स० पु०) विराट के पुत्र धृष्टद्युम्न ।
पार्षती–(स०स्त्री०) द्रौपदी ।
पार्षद–(स० पु०) मन्त्री, पास मे रहने वाला सेवक, पारिषद, दर्शक ।
पार्ष्णि–(स०पु०) एँड़ी, पृष्ठ, (स्त्री०)कुन्ती।
पार्सल–(अ० पु०) बधी हुई गठरी, पुलिन्दा, डाक से भेजा जाने वाला पुलिन्दा ।
पाल–(स० पुं०) पालक, पालन करने वाला, चीते का वृक्ष (हि० पु०) पत्ता बिछा कर फलो को पकाने की विधि, वह स्थान जहा पत्तो को बिछा कर फल पकाये जाते हैं, तबू, शामि-
याना, चदवा, गाड़ी आदि ढाँपने का वस्त्र, ओहार, नाव मे बाँधने का मोटा वस्त्र, कबूतरों का जोड़ा खाना, (स्त्री०) ऊचा किनारा, कगार, पानी रोकने की बाँध या मेड़ ।
पालउ–(हिं०पु०) देखो पालव ।
पालक–(स०पु०) रक्षा करने वाला मनुष्य, सार्दस, चीते का वृक्ष, कुट नामक औषधि, हिंगुल (वि०) पालने वाला, (हि० पु०) एक प्रकार का शाक, पलग, पाला हुआ पुत्र ।
पालक जूही–(हिं० स्त्री०) औषधि मे प्रयोग होने वाला एक पौधा ।
पालकपुत्र–(स० पु०) पाला हुआ पुत्र, दत्तक पुत्र ।
पालकरी–(हि० स्त्री०) लकड़ी का टुकड़ा जो चारपाई के सिरहाने को ऊचा करने के लिये लगाया जाता है ।
पालकी–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की सवारी जिसको कहार लेकर चलते हैं, पीनस, खड़खड़िया, म्याना (स्त्री०) पालक का साग, पालकी गाड़ी–पालकी के आकार की घोड़ा गाड़ी ।
पालघ्न–(स० पु०) छत्राक, खुभी ।
पालङ्क–(स०पुं०) पालक का साग, बाज पक्षी, एक प्रकार का रत्न ।
पालङ्की–(स०स्त्री०) एक प्रकार का गन्ध द्रव्य, कुन्दुरु ।
पालट–(हि० स्त्री०) पटेबाजी, का एक हाथ (वि०) पाला पोसा हुआ लड़का, दत्तक पुत्र ।
पालटी–(अ०स्त्री०) जोड़ के तख्ते ।
पालतू–(हिं० वि०) पाला पोसा हुआ ।
पालथी–(हि०स्त्री०) देखो पलथी ।
पालन–(स० नपु०) तुरत की ब्याई हुई गाय का दूध, रक्षण, भरण पोषण, पर्वरिश, अनुकूल व्यवहार से किसी बात का निर्वाह, भग न करना, न टालना, लड़कों को बहलाने की गीत ।
पालना–(हि०क्रि०) पालन पोषण करना, पर्वरिश करना, पक्षी आदि को पोसना, अनुकूल आचरण द्वारा किसी बात

की रक्षा या निर्वाह करना, (पु०) बच्चों को सुलाने का खटोला या झूला जो रस्सियों से लटकाया रहता है।

पालनीय–(स० वि०) पालन करने योग्य

पालयिता–(हि०वि०) पालन करनेवाला।

पालल–(स०क्रि०) तिलपपड़ी।

पालव–(हि० पु०) कोमल पत्ता, कोपल, पत्ता।

पाला–(हि० पुं०) वायु में मिले हुए भाफ के अत्यन्त सूक्ष्म कण जो पृथ्वी के ठढी रहने पर उस पर बूदों के रूप में जम जाते हैं, हिम, बर्फ, ठढक से जमा हुआ पानी, सरदी, ठढ, व्यवहार का सयोग, सरोकार, वास्ता, दस पाच आदमियों के बैठने की जगह, मुख्य स्थान, सीमा निर्धारित करने के लिये बनी हुई मेड़ या भीटा, अनाज रखने की मिट्टी का बड़ा बरतन, कुश्ती लड़ने का स्थान, अखाड़ा, **पाला मार जाना**–पाला पड़ने से फसल को नुकसान पहुँचना, **पाला पड़ना**–सरोकार होना, जरूरत होना, किसीके **पाले पड़ना**–किसीके वश (गिरफ्त) में आ जाना।

पालागन–(हि०स्त्री०) नमस्कार, दण्डवत।

पालागल–(सं० पु०) झूठी खबर देने वाला मनुष्य।

पालान–(हि०पु०) देखो पलान।

पालाश–(स०वि०) हरितवर्ण, हरे रग का

पालाशी–(स०स्त्री०) खिरनी का पेड़।

पालि–मध्य एशिया में प्रचलित एक प्राचीन लिपि जिसमें लिखे हुए अशोक के समय के अनेक शिला लेख पाये जाते हैं, इसकी वर्णमाला के अक्षर देवनागरी से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। (स०स्त्री०) पक्ति, श्रेणी, कतार, कोना, प्रान्त, किनारा, वह स्त्री जिसकी दाढ़ी में बाल हों, सेतु, पुल, परिधि कुवाँ, चीलर, एक प्राचीन तौल, मेड़, बाँध, बटलोही, सीमा, प्रशसा, गोद, करारा, भीटा।

पालिक–(स०पु०) पलग, चारपाई, पालकी

पालिका–(स० स्त्री०) घर का कोना (वि०) पालने वाली।

पालित–(स०वि०) रक्षित, पाला हुआ, (पु०) कुमार का एक अनुचर, कायस्थों की एक उपाधि।

पालित्य–(स०नपु०) बालों की सफेदी।

पालिधा–(स०स्त्री०) फरहद का पेड़।

पालिन्द–(स०पु०) कुन्दरू नामक सुगन्ध द्रव्य।

पालिन्दी–(स०स्त्री०) भँगरैया, करैला।

पालिश–(अ० स्त्री०) चिकनाई और चमक, वह रोगन या मसाला जिसके पोतने से चमक और चिकनाहट आ जावे

पाली–(हि० वि०) पालन करने वाला, रक्षा करने वाला (स०स्त्री०) जुवाँ, थाली।

पाली–(हि० स्त्री०) वह स्थान जहाँ तीतिर बटेर बुलबुल आदि पक्षी लड़ाये जाते हैं, बरतन का ढपना, परई, एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रन्थ लिखे हुए हैं।

पाली शोष–(स०पु०) कान का एक रोग।

पालू–(हि०वि०) पालतू, पाला हुआ।

पालो–(हिं०पु०) गाँव में बस्ती से दूर की जमीन जिसमें सिचाई कुवें से होती है।

पाल्य–(स०वि०) पालने योग्य।

पाल्वल–(स०वि०) ताल में होने वाला, (पु०) ताल का पानी।

पावँ–(हि० पु०) चलने का अग, पाद, पैर, **पाँव अड़ाना**–हस्तक्षेप करना, **पाँव उखड़ जाना**–ठहरने की शक्ति न रहना, युद्ध में से भागना, **पांव उठाना**–चलने के लिये पैर बढ़ाना, **पांव घिसना**–चलते चलते पैरों का थकना, **पाँव जमना**–दृढ होना, स्थिर होना, **पॉव तोड़ना**–पैर थकाना, अधिक प्रयास करना, **पॉव तोड़कर बैठना**–अपने स्थान में टिक जाना, हार जाना, **पाँव धरना**–पैर छूकर प्रणाम करना, **बुरे रास्ते पर पाँव धरना**–बुरे आचरण में प्रवृत्त होना, **पाँव पकड़ना**–पैर छूना, बिनती करना, दीनता प्रगट करना, पैर छूकर प्रणाम करना, **पाँव पखारना**–पैर धोना, **पॉव पड़ना**–साष्टाग दंडवत् करना, शुश्रूषा करना, **पाँव पसारना**–पैर फैलाना, ठाट बाट दिखलाना, **पाँव पॉव चलना**–पैदल चलना, **पाँव पूजना**–बड़ा सत्कार करना, **पाँव फूँक फूँक कर चलना**–बहुत सम्हल कर काम करना, **पॉव फैलाना**–अधिक लालसा करना, **पाँव बढ़ाना**–अधिक बढ़ना, **पाँव भर जाना**–चलते चलते बहुत थक जाना, **पाँव भारी होना**–स्त्री का गर्भ धारण करना, **पॉव रोपना**–सकल्प करना, दृढ निश्चय करना, **पाँव लगना**–प्रणाम करना, **पाँव सोजाना**–पैर उठाने की शक्ति न रहना, **पाँव न होना**–साहस खो देना, **धरती पर पाँव न रखना**–बहुत घमड से चलना।

पाँव चप्पी–(हि० स्त्री०) थकावट दूर करने के लिये पैर दबाना।

पाँवड़ा–(हि० पु०) पैर रखने के लिये फैलाया हुआ कपड़ा।

पावँड़ी–(हि० स्त्री०) खड़ाऊ, जूता, गोंटा बुनने वालों का एक औजार।

पावँर–(हि० वि०) पामर, तुच्छ, नीच, मूर्ख।

पावँरी–(हि०स्त्री०) देखो पावड़ी।

पाव–(हि० पु०) चतुर्थ भाग, चौथाई, एक सेर का चौथाई भाग, चार छटाँक का परिमाण।

पावक–(स० पु०) अग्नि, सदाचार, चीते का वृक्ष, वरुण, एक ऋषि का नाम, सूर्य, अग्नि, मन्थवृक्ष, ऋषिभेद, सरस्वती (वि०) शुद्ध या पवित्र करने वाला।

पावकमणि–(स० पुं०) सूर्यकान्त मणि, आतशी शीशा।

पावकवर्ण–(स० वि०) अग्नि के समान तेजस्वी।

पावका–(सं०स्त्री०) सरस्वती।

पावकात्मज–(स०पु०) कार्तिकेय।

पावकि–(स०पु०) कार्तिकेय, पावक का पुत्र जो इक्ष्वाकु वशीय दुर्योधन की कन्या सुदर्शना से उत्पन्न हुआ था।

पावकुलक–(हिं० पु०) पादाकुलक छन्द, चौपाई ।

पावदान–(हिं०पु०) पैर रखने की वस्तु या स्थान, इक्के गाड़ी आदि में पैर रखने का स्थान, मेज के नीचे पैर रखने के लिये छोटी चौकी ।

पावन–(स०पु०) व्यास, पीली भगरैया, जल, विष्णु, सिद्ध, गोबर, रुद्राक्ष, कुट (नपु०) चीता, चन्दन, प्रायश्चित्त (त्रि०) शुद्ध, पवित्र, शुद्ध या पवित्र करने वाला ।

पावनता–(स० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धता।

पावनत्व–(स० नपु०) देखो पावनता ।

पावनध्वनि–(स०पु०) पवित्र ध्वनि,शख ।

पावना–(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, अनुभव करना, जानना, समझना, भोजन करना, पाना (पु०) रकम जो दूसरे से वसूल करनी हो, लहना ।

पावनि–(स०पु०) पवनसुत, हनुमान ।

पावनी–(स० स्त्री०) तुलसी, गाय,गगा, (त्रि०) पवित्र करने वाली, पवित्र, शुद्ध ।

पावमुहर–(हिं०स्त्री०) शाहजहा के काल का सोने का एक सिक्का जो मुहर का चौथाई होता था ।

पावल–(हिं० स्त्री०) देखो पायल ।

पावली–(हिं० स्त्री०) चार आने का सिक्का, चवन्नी ।

पावस–(हि० स्त्री०) वर्षाकाल, बरसात, सावन भादों का महीना ।

पावा–(हिं० पुं०) देखो पाया, गोरखपुर जिले का एक बड़ा गाँव, यहाँ पर गौतम बुद्ध कुछ दिनों तक ठहरे थे ।

पावित्र–(स०नपु०)एक प्रकार का छन्द ।

पावी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मैना ।

पाव्य–(स०त्रि०) पाक करने योग्य ।

पाश–(स० पु०) आर्य जाति का एक प्रकार का प्राचीन युद्धास्त्र, पशु पक्षियों को फँसाने का फन्दा, जाल, डोरी, रस्सी, बन्धन, एक योग विशेष, शब्द के अन्त में जोड़ने से इसका अर्थ—समूह, तथा निन्दा होता है यथा–केशपाश, छात्रपाश ।

पाशक–(स०पु०) पासा, चौपड़ ।

पाशकेरली–(स० स्त्री०) पासा फेंक कर कीजाने वाली फलित ज्योतिष की एक गणना ।

पाशक्रीडा–(स० स्त्री०) पासा खेलना ।

पाशधर–(स०पु०) पाशधारी वरुणदेवता।

पाशन–(स०नपु०) बन्धन ।

पाशपाणि–(स०पु०) वरुण देवता ।

पाशबन्धक–(स०पु०) व्याध, बहेलिया ।

पाशभृत्–(स०पु०) वरुण देवता ।

पाशमुद्रा–(स०स्त्री०) तन्त्रोक्त एक प्रकार की मुद्रा ।

पाशव–(स० त्रि०) पशु सबधी, पशु के समान ।

पाशवासन–(स० नपु०) एक आसन का नाम ।

पाशहस्त–(स० पु०) वरुण, शतभिषा नक्षत्र ।

पाशा–तुर्क देश के सरदारों की उपाधि ।

पाशान्त–(स०पु०) कपड़े का किनारा ।

पाशिक–(स०पु०) व्याध, बहेलिया ।

पाशित–(स०त्रि०) पाशयुक्त, बँधा हुआ।

पाशिन्–(स० पु०) वरुण, यम, व्याध, बहेलिया ।

पाशुक–(स० त्रि०) पशु सबधी ।

पाशुपत–(स० पु०) अगस्त का फूल, पशुपति देवता, पशुपति देवता के भक्त या उपासक शिव का कहा हुआ तन्त्र शास्त्र (त्रि०)शिव सबन्धी, पशुपति का ।

पाशुपतदर्शन–(स० नपु०) एक साम्प्रदायिक दर्शन जिसका उल्लेख माधवाचार्य ने सर्वदर्शन सग्रह में किया है ।

पाशुपतास्त्र–(स० नपु०) महादेव का वह अस्त्र जो बहुत प्रचण्ड था, अर्जुन ने कठोर तपस्या करके शिव से यह अस्त्र प्राप्त किया था ।

पाशुपाल्य–(स० नपु०) पशुओं के पालने की वृत्ति ।

पाशुबन्धक–(स० नपु०) वह स्थान जहा यज्ञ का बलि पशु बाँधा जाता है ।

पाश्चात्य–(स० त्रि०) पीछे होने वाला, पीछे का, पिछला, पश्चिम देश या दिशा का, पाश्चात्य दर्शन–अग्रेज़ी तथा अन्य युरोपीय भाषा में लिखा हुआ दर्शन शास्त्र ।

पाषक–(स० पु०) पैर में पहरने का एक गहना ।

पाषण्ड–(स०पु०) वैदिक धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, मिथ्याधर्मी, झूठा मत मानने वाला, झूठा आडबर दिखलाने वाला, कपट वेश धारी, ढोंगी दूसरा को ठगने के लिये साधुओं के समान रूप रग बनाने वाला ।

पाषण्डी–(स० त्रि०) वैदिक धर्म के विरुद्ध मत और आचरण ग्रहण करने वाला, झूठ मत मानने वाला,धूर्त,ढोंगी।

पाषर–(हिं० स्त्री०) देखो पाखर ।

पाषाण–(स० पु०) शिला, प्रस्तर, पत्थर, गन्धक ।

पाषाण कदली–(स०स्त्री०)पहाड़ी केला ।

पाषाणगर्दभ–(स०पु०)दाढ सूजने का रोग

पाषाण गैरिक–(स० नपु०) गेरू ।

पाषाण जतु–(स० नपु०) शिलाजतु, शिलाजीत ।

पाषाणदारक–(स०पु०) टाँकी, छेनी ।

पाषाणभिद्–(स०पु०)कुलत्थ, कुलथी ।

पाषाणभेद–(स० पु०) पथरचट् नामका सुन्दर पत्तियों का एक पौधा ।

पाषाणरोग–(स०पु०)अश्मरीरोग, पथरी।

पाषाणी–(स०स्त्री०) तौलने के काम में आने वाला पत्थर का टुकड़ा ।

पासग–(फा० पु०) तराजू की डाँडी का बराबर न होना, वह बोझ जो तराजू के पल्लों का बोझ बराबर करने के लिये तराजू की जोती में हलके पल्ले की ओर बाँध दिया जाता है ।

पास–(स० पुं०) पाशा, लाल रग का बतासा ।

पास–(हि०पु०)बगल, ओर, तरफ, समीपता निकटता,अधिकार, कब्जा,(अव्य०) निकट, समीप, बगल में, अधिकार में, किसी के प्रति, किसी को सबोधन करके (अ० पु०) गमन का अधिकार पत्र, राहदारी का परवाना, (वि०) पार

किया हुआ, तय किया हुआ, उत्तीर्ण, परीक्षा में सफल, स्वीकृत, प्रचलित, जारी, आसपास-लगभग, प्रायः करीब, पास फटकना-समीप आना।
पासना-(हिं०क्रि०) थनों में दूध आना।
पासनी-(हिं० स्त्री०) अन्नप्राशन, बच्चे को पहिले पहिल अन्न चटानेका संस्कार।
पासबद-(हिं०पु०) दरी बुनने के करघे की एक लकड़ी।
पासबुक-(अं०पु०) वह किताब जिसमें बैंक का हिसाब किताब रहता है, वह पुस्तक जिसमें किसी प्रकार के लेन देन का हिसाब किताब हो।
पासमान-(हिं० पु०) पार्श्ववर्ती, पास में रहने वाला।
पासवर्ती-(हिं० वि०) देखो पार्श्ववर्ती।
पासा-(हिं०पु०) हाथीदाँत या हड्डी के के बने हुए छपहल छोटे टुकडे जिन पर बिन्दियां बनी होती हैं जो चौसर खेलने में काम आता है, कामी, गुल्ली, चौसर का खेल, पीतल या काँसे का ठप्पा, पासा पड़ना-भाग्य के अनुकूल होना, पासा पलटना-दुर्भाग्य आना।
पासासार-(हिं० पु०) पासे की गोटी, पासे का खेल।
पासिका-(हिं०स्त्री०) पाश, फंदा जाल।
पासी-(हिं० पु०) जाल या फन्दा डालकर चिड़िया पकड़ने वाला, व्याध, बहेलिया, एक नीच और अस्पृश्य जाति, (स्त्री०) फन्दा, फाँसी, घास बाँधने की जाल, घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी, पिछाड़ी।
पासुली-(हिं०स्त्री०) देखो पसली।
पाहँ-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पत्थर, (हिं० अव्य०) निकट समीप, पास, किसी के प्रति।
पाहन-(हिं० पु०) पाषाण, पत्थर।
पाहरू-(हिं० पु०) पहरा देनेवाला, चौकीदार।
पाहा-(हिं०पु०)खेत के बीच में की मेड़।
पाहात-(स०पु०) शहतूत का पेड़।
पाहिं-(हिं०अव्य०) समीप, निकट, पास, किसी के निकट।
पाहि-(सं०) एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो' 'बचाओ'।
पाही-(हिं०स्त्री०) वह खेती जिसका किसान दूसरे गाँव में रहता हो।
पाहुँच-(हिं०स्त्री०) देखो पहुँच।
पाहुना-(हिं०पु०) अभ्यागत, अतिथि, जामाता, दामाद।
पाहुनी-(हिं०स्त्री०) स्त्री अतिथि, मेहमान औरत, आतिथ्य सत्कार, मेहमानदारी।
पाहुर-(हिं०पु०) भेंट, नजर, वह धन या वस्तु जो इष्ट मित्र या सम्बन्धी के यहा व्यवहार में दी जावे।
पाहू-(हिं०पु०) मनुष्य, अक्स, पत्थरों के जोड़ पर जड़ने का टेढ़ा लोहा।
पिंगूरा-(हिं०पु०) बच्चों को सुला कर झुलाने का पालना।
पिंजड़ा-(हिं०पु०) देखो पिंजरा।
पिंजरा-(हिं० पु०) लोहे बाँस आदि की तिलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।
पिंजरापोल-(हिं०पु०) गोशाला, पशु-शाला, वह स्थान जहा पालने के लिये चौपाये रक्खे जाते हैं।
पिंजियारा (हिं० पु०) रूई ओटने वाला।
पिंडखजूर-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का खजूर जिसके फल मीठे होते हैं और इन फलों से गुड़ भी बनाया जाता है।
पिंडरी-(हिं०स्त्री०) देखो पिंडली।
पिंडली-(हिं० स्त्री०) टांग के ऊपर का पिछला मासल भाग।
पिंडवाही-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा
पिंडा-(हिं० पुं०) गोलमटोल टुकड़ा, ढेला या लोंदा, गीली या ठोस वस्तु का टुकड़ा, शरीर, देह, श्राद्ध में पितरों को अर्पित करने का मधु, तिल आदि मिला हुआ लोंदा, स्त्रियों की गुप्तेन्द्रिय, पिंडा पानी देना-पिण्डदान और तर्पण करना।
पिंडारा-(हिं० पु०) एक प्रकार का शाक।
पिंडारी-(हिं० पु०) भारत के दक्षिण में बसनेवाली एक जाति जो पहिले खेती-बारी करती थी परन्तु बाद में लूटपाट करने लगी और मुसलमान हो गई।
पिंडालू-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का सकरकन्द, शफतालू, सुथनी।
पिंडिया-(हिं०स्त्री०) गुड आदि का मुट्ठी में बाँध कर बनाया हुआ छोटा टुकड़ा, मेली मुट्ठी, लपेटे हुए सूत, रस्सी या सुतली का छोटा गोला।
पिंडुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पिंडरी।
पिंशन-(हिं० स्त्री०) देखो पेनशन।
पिअ-(हिं०वि०) देखो प्रिय।
पिअरवा-(हिं०पु०) पति, (वि०) प्यारा।
पिअराई-(हिं०स्त्री०) पीलापन।
पिअरिया-(हिं०पु०) पीले रंग का बैल।
पिअरी-(हिं०स्त्री०) हल्दी से रंगी हुई धोती जो विवाहादि के समय वर तथा कन्या को पहिराई जाती है, देहाती स्त्रिया ऐसी धोती गंगाजी को भी चढाती हैं।
पिआज-(हिं०पु०) देखो प्याज।
पिआना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना।
पिआनो-(अं०पु०) देखो पियानो।
पिआर-(हिं०पु०) देखो प्यार।
पिआरा-(हिं०वि०) देखो प्यारा।
पिआस-(हिं० स्त्री०) देखो प्यास।
पिआसा-(हिं० वि०) देखो प्यासा।
पिउ-(हिं०पु०) पति, खाविन्द।
पिउनी-(हिं० स्त्री०) देखो पूनी।
पिक-(सं० पु०) कोकिल, कोयल, पिकदेव-आम का वृक्ष, पिकप्रिय-वसन्त काल, आम का वृक्ष।
पिकप्रिया-(सं० स्त्री०) बड़ी जामुन, कोकिला।
पिकबन्धु, पिकवल्लभ-(सं० पु०) आम का पेड़।
पिकाक्ष-(सं० पु०) तालमखाना (वि०) जिसकी आखें कोयल की तरह लाल हो।
पिकाङ्ग-(सं०पु०) चातक पक्षी, पपीहा।
पिकानन्द-(सं०पु०) वसन्त ऋतु।
पिकी-(सं०स्त्री०) कोकिला, मादा कोयल।
पिकुरस-(सं० पु०) मद्य, शराब।
पिक्क-(सं० पु०) हाथी का बच्चा।

पिघलना-(हिं० क्रि०) द्रवीभूत होना, किसी घन पदार्थ का गरमी से गलकर पानी के समान हो जाना, चित्त में दया उत्पन्न होना, पसीजना।
पिघलाना-(हिं० क्रि०) दयार्द्र करना, किसी के चित्त में दया उत्पन्न करना, किसी वस्तु को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप में लाना।
पिङ्ग-(सं०नपुं०) बालक, हरताल, भैंसा, (पुं०) चूहा, पीला रंग, भूरापन लिये लाल रंग, तामड़ा।
पिङ्गकपिशा-(सं० स्त्री०) गोबरौले के आकार का एक कीड़ा।
पिङ्गचक्षु-(सं०वि०) जिसकी आँखें भूरे रंग की हों।
पिङ्गजट-(सं०पुं०) शिव महादेव।
पिङ्गमूल-(सं०नपुं०) गर्जर, गाजर।
पिङ्गर, पिङ्गल-(सं० पुं०) नीला और पीला मिला हुआ रंग, एक नाग का नाम, एक पर्वत का नाम, एक संवत्सर का नाम, पिङ्गलाचार्य का बनाया हुआ छन्द का एक ग्रन्थ, एक यक्ष का नाम, उलूक, उल्लू पक्षी, नेवला, बन्दर, अग्नि, एक प्रकार का स्थावर विष, (नपुं०) पीतल, हरताल, खस, (वि०) तामड़ा, सुघनी रंग का।
पिङ्गलक-(सं०पुं०) एक प्रकार के यक्ष।
पिङ्गला-(सं० स्त्री०) लक्ष्मी का एक नाम, हठयोग के अनुसार दक्षिण पार्श्व मे अवस्थित एक नाड़ी का नाम, राजनीति, गोरोचन, शीशम का पेड़।
पिङ्गलिका-(सं०स्त्री०) मक्खी की तरह का एक कीड़ा जिसके काटने से जलन और सूजन होती है।
पिङ्गसार-(सं०पुं०) हरिताल, हड़ताल।
पिङ्गस्फटिक-(सं०पुं०) गोमेदक मणि।
पिङ्गा-(सं० स्त्री०) हलदी, गोरोचन, वंशलोचन, रक्तवाहिनी नाड़ी।
पिङ्गाक्ष-(सं०पुं०) शिव, महादेव, नक्र नामक जलजन्तु, बिल्ली (वि०) जिसकी आँखें तामड़े रंग की हों।
पिङ्गाची-(सं० स्त्री०) कुमार की एक मातृका का नाम।
पिङ्गाशी-(सं०स्त्री०) नील का पेड़।
पिङ्गेक्षण-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
पिङ्गेश-(सं०पुं०) अग्नि का एक नाम।
पिचक-(हिं०स्त्री०) देखो पिचकारी।
पिचकना-(हिं०क्रि०) किसी उभड़े हुए अथवा फूले हुए तल का दब जाना।
पिचकवाना-(हिं० क्रि०) पिचकाने का काम दूसरे से कराना।
पिचका-(हिं० पुं०) बड़ी पिचकारी।
पिचकाना-(हिं० क्रि०) फूले या उभड़े हुए तल को भीतर की ओर दबाना।
पिचकारी-(हिं०स्त्री०) एक नलदार यन्त्र जिससे कोई तरल पदार्थ खींच कर वेग से फेंका जाता है यह बाँस, लोहा, पीतल, काँच, टीन आदि की बनी होती है।
पिचकी-(हिं०स्त्री०) देखो पिचकारी।
पिचण्ड-(सं०पुं०) पशु का उदर या पेट।
पिचण्डक-(सं० वि०) पेटू, उदर पूरण में कुशल।
पिचण्डिक-(सं०वि०) तुन्दिल, तोंदीला।
पिचपिचा-(हिं०वि०) देखो चिपचिपा।
पिचपिचाना-(हिं० क्रि०) घाव आदि में से थोड़ा थोड़ा करके पछा आदि निकलना।
पिचपिचाहट-(हिं०स्त्री०) गीले या आर्द्र रहने का भाव।
पिचरिया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा कोल्हू।
पिचलना-(हिं०क्रि०) देखो कुचलना।
पिचवय-(हिं० पुं०) बरगद का पेड़।
पिचिण्ड-(सं० पुं०) उदर, पेट, पशु का अवयव।
पिचिण्डिका-(सं०स्त्री०) जाँघ की हड्डी।
पिचिण्डिल-(सं० वि०) बड़े पेटवाला, तोंदीला।
पिचु-(सं० पुं०) रूई, एक प्रकार का कुष्ट रोग, दो तोले के बराबर की तौल, एक असुर का नाम, एक प्रकार का धान।
पिचुक-(सं० पुं०) मैनफल का वृक्ष।
पिचुकिया-(हिं०स्त्री०) छोटी पिचकारी।
पिचुका-(हिं०पुं०) गोलगप्पा, पिचकारी।
पिचुमर्द-(सं० पुं०) नीम का पेड़।
पिचुल-(सं० पुं०) झाऊ का पेड़, समुद्र फल।
पिचू-(हिं०पुं०) सोलह माशे की तौल।
पिचोतरसौ-(हिं०पुं०) पहाड़े में एक सौ पांच की संख्या के लिये कहा जाता है।
पिच्चट-(सं० नपुं०) सीसा, रांगा, आँख का एक रोग।
पिच्चिट-(सं० पुं०) एक प्रकार का जहरीला कीड़ा।
पिच्चित-(सं० वि०) पिचका हुआ, जो दबकर चिपटा हो गया हो।
पिच्ची-(हिं० वि०) देखो पिच्चित।
पिच्छ-(सं०पुं०) पशु की पोंछ, लांगूल, मयूर पुच्छ, मोर की पूछ, चूड़ा, मोर की चोटी, मोचरस।
पिच्छक-(सं० पुं०) देखो पिच्छ।
पिच्छतिका-(सं०स्त्री०) शीशम का पेड़।
पिच्छन-(सं० नपुं०) किसी वस्तु को दबाकर चिपटा करने की क्रिया।
पिच्छबाण-(सं०पुं०) श्येन पक्षी, बाज़ चिड़िया।
पिच्छभार-(सं० पुं०) मोर की पोंछ।
पिच्छल-(सं०पुं०) मोचरस, आकाश बेल, शिंशप वृक्ष, शीशम का पेड़।
पिच्छिल-(हिं० वि०) जिस पर से पैर फिसल जावे, चिकना।
पिच्छिलपाद-(सं० पुं०) घोड़े के पैर का एक रोग।
पिच्छिलबीज-(सं०पुं०) दाड़िम, अनार।
पिच्छा-(सं०स्त्री०) पूग, सुपारी, मोचरस, निर्मली का पेड़, आकाश लता, नारंगी का पेड़।
पिच्छिका-(सं०स्त्री०) चँवर, मोरछल।
पिच्छिल-(सं० वि०) गीला और चिकना, माड़ मिला हुआ भात, पानी मिली हुई तरकारी, फिसलने वाला, जिसके सिरपर चूड़ा हो, खट्टा, कोमल, फूला हुआ (पुं०) लिसोड़े का वृक्ष, सरस व्यंजन।

पिच्छिलक-(सं० पुं०) साम्हर का वृक्ष, मोचरस।
पिच्छिलच्छदा-(सं० स्त्री०) पोय का साग, वेर का फल।
पिच्छिला-(सं० स्त्री०) शीशम, सेम्हर, तालमखाना, अगर, अरवी।
पिछड़ना-(हिं० क्रि०) श्रेणी में आगे या बराबर न रहना, पीछे रह जाना।
पिछलगा-(हिं० पुं०) सेवक, नौकर, खिदमतगार, आश्रित, आधीन, अनुगामी, दूसरे की सलाह से काम करने वाला, वह मनुष्य जो किसी के पीछे पीछे चले, शिष्य, किसी का मतानुयायी, चेला।
पिछलगी-(हिं०स्त्री०) अनुसरण, अनुयायी होना, अनुगमन करना।
पिछलगू-(हिं० वि०) देखो पिछलगा।
पिछलना-(हिं० क्रि०) पीछे की ओर हटना या मुड़ना।
पिछलपाई-(हिं०स्त्री०) जादूगरनी, चुड़ैल।
पिछला-(हिं०वि०) पीछे की ओर का, अन्त की ओर का, गत, बीता हुआ, पुराना, भूतकाल का, बाद का, (पुं०) एकदिन पहिले का पढा हुआ पाठ, वह खाना जो रोजे के दिनों में मुसलमान लोग रात रहते ही खा लेते हैं, सहरी, पिछली पहर-आधी रात के बाद का समय, पिछली रात-पिछली पहर।
पिछवाई-(हिं० स्त्री०) पीछे की ओर लटकाने का परदा।
पिछवाड़ा, पिछवारा-(हिं० पु०) घर के पीछे का स्थान या खाली जमीन, किसी मकान के पीछे का भाग।
पिछाड़ी-(हिं०स्त्री०) पीछे का भाग या हिस्सा, घोडे के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी।
पिछान-(हिं० स्त्री०) देखो पहचान।
पिछानना-(हिं०क्रि०) देखो पहचानना।
पिछारी-(हिं० स्त्री०) देखो पिछाड़ी।
पिछौड़-(हिं० वि०) किसी के मुख की ओर पीठ किया हुआ, जिसने अपना मुह पीछे कर लिया हो।
पिछौंड़ा-(हिं०वि०) पीछे की ओर का।
पिछौंता-(हिं०क्रि०वि०) पिछली ओर।
पिछौंही-(हिं० स्त्री०) देखो पिछौरी।
पिछौंहैं-(हिं० क्रि० वि०) पीछे की तरफ, पिछली ओर।
पिछौरा-(हिं०पु०) मरदाना दुपट्टा या चादर।
पिछौरी-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों की चादर जिसको वे धोती के ऊपर ओढती हैं, ऊपर से डालने का वस्त्र।
पिञ्ज-(सं० नपु०) शक्ति, ताकत, वध, एक प्रकार का कपूर।
पिञ्जक-(सं० नपु०) हरिताल, हड़ताल।
पिञ्जट-(सं०पु०) आँख का कीचड।
पिञ्जन-(सं० नपु०) धुनिये की कमान, धुनकी।
पिञ्जर-(सं० नपु०) हरताल, सुवर्ण, सोना, पक्षियों के रखने का पिंजड़ा, हड्डी की ठठेरी, (पु०) एक प्रकार का घोड़ा, पीला और लाल रंग, (वि०) पिला ऊदे रंग का, भूरापन लिये लाल।
पिञ्जरता-(सं० स्त्री०) भूरापन।
पिञ्जल-(सं० नपु०) हरताल (पुं०) जलबेंत (वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ, जिसका चेहरा पीला पड़ गया हो।
पिञ्जा-(सं० स्त्री०) हलदी, रूई।
पिञ्जान-(सं० नपु०) सुवर्ण, सोना।
पिञ्जिका-(सं० स्त्री०) रूई की पोली बत्ती, पूनी।
पिञ्जूष-(सं०पु०) कान का मैल, खूट।
पिञ्जेट-(सं० पु०) आँख का कीचड़।
पिटत-(हिं० स्त्री०) पीटने की क्रिया या भाव, मारपीट।
पिटक-(सं० पु०) बाँस बेत आदि का बना हुआ पेटारा, फुड़िया, फुसी, किसी ग्रन्थ का विभाग या खण्ड।
पिटका-(सं०स्त्री०) पिटारी, फुसी।
पिटना-(हिं० क्रि०) आघात सहना, मार खाना ठोका जाना, आघात पाकर बजना, (पु०) छत पीटने की लकडी की मुगरी।
पिटपिट-(हिं०स्त्री०) हलके आघात से उत्पन्न शब्द।
पिटरिया-(हिं०स्त्री०) देखो पिटारी।
पिटवाना-(हिं०क्रि०) पीटने का काम दूसरे से कराना, दूसरे से आघात कराना, मार खिलवाना, कुटवाना, ठोकवाना, बजवाना।
पिटाई-(हिं०स्त्री०) प्रहार, आघात, पीटने का काम, मारकूट, पिटवाने की मजदूरी, पीटने या मारने की मजदूरी।
पिटापिट-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु को कुछ देर तक बारबार पीटना, मारपीट।
पिटारा-(हिं० पु०) बाँस बेंत आदि के छिलके का बिना हुआ ढपनेदार गोल पात्र।
पिटारी-(हिं०स्त्री०) छोटा पिटारा, झापी।
पिट्टक-(सं०नपु०) दाँत की मैल।
पिट्टस-(हिं०स्त्री०) दुःख या शोक से छाती पीटना।
पिट्टू-(हिं० वि०) जिसको मार खाने का अभ्यास हो।
पिट्ठी-(हिं०स्त्री०) देखो पीठी।
पिट्ठू-(हिं० पु०) सहायक, अनुयायी, मददगार, पीछे चलने वाला, खेल में साथ देने वाला, किसी खेलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी बारी में उसके बदले में वह स्वयं खेलता है।
पिठ-(सं०पु०) पीड़ा, दुःख।
पिठर-(सं०नपु०) मोथा, एक प्रकार का घर, थाली, एक दानव का नाम।
पिठरक-(सं०पु०) एक नाग का नाम।
पिठरिका-(सं०स्त्री०) पात्र, थाली।
पिठवन-(हिं०स्त्री०) पृष्ठिपर्णी, एक लता जो औषधियों में प्रयोग होती है।
पिठी-(हिं०स्त्री०) देखो पिट्ठी।
पिठौनी-(हिं०स्त्री०) देखो पिठवन।
पिठौरी-(हिं०स्त्री०) पीठी की बनी हुई बरी पकौड़ी आदि।
पिडक-(सं०पु०) छोटा फोड़ा, फुसी।
पिड़का-(सं०स्त्री०) देखो पिडक।
पिढई-(हिं०स्त्री०) छोटा पीढा या पाटा।
पिण्ड-(सं०पु०नपु०) पित्रादि के उद्देश्य

से दिया जाने वाला अन्न, जीविका, आहार, भोजन, मदन वृक्ष, कोई गोल द्रव्य, जवा पुष्प, खीर आदि का हाथ से बाँधा हुआ गोल लोंदा, बल, घन।

पिण्डक-(सं०नपु०) पिण्डालु, चोल,(पु०) पिशाच, कवल।

पिण्डका-(सं० स्त्री०) मसूरिका, छोटी चेचक।

पिण्डखर्जूर-(सं०पु०) देखो पिंड खजूर

पिण्डज-(सं०पु०) वह जन्तु जो गर्भ से अडे के रूप में न निकले परन्तु बने हुए शरीर के रूप में निकले, जन्तु।

पिण्डत्व-(सं०नपु०) पिण्ड का भाव या फल।

पिण्डद-(सं०पु०) पिण्ड दान करने वाला। वह जो पिण्ड दान का अधिकारी हो।

पिण्डदान-(सं०नपु०) पिण्ड देने का काम जो श्राद्ध में किया जाता है।

पिण्डपात-(सं० पु०) पिण्डदान, भिक्षादान।

पिण्डपात्र-(सं०नपु०) वह पात्र जिसमें पिण्ड दिया जाता है, भिक्षापात्र।

पिण्डपाद-(सं०पु०) हस्ती, हाथी।

पिण्डपुष्प-(सं०नपु०) अड़हुल का फूल, कमल का फूल, अनार का वृक्ष।

पिण्डपुष्पक-(सं०पु०)बथुआ का साग।

पिण्डफल-(सं०नपु०) कद्दू।

पिण्डफला-(सं०स्त्री०) तितलौकी।

पिण्डबीज-(सं०पु०) कनेर का पेड़।

पिण्डभाज-(सं० वि०) पिण्डभोजी, पिण्ड खाने वाला।

पिण्डमय-(सं०वि०) गोलमटोल टुकड़ा।

पिण्डमुस्ता-(सं०स्त्री०) नागर मोथा।

पिण्डमूल-(सं०नपु०) गाजर, शलजम।

पिण्डयोनि-(सं० स्त्री०) योनि का एक प्रकार का रोग।

पिण्डरोग-(सं०पु०) कुष्ठ, कोढ।

पिण्डल-(सं०पु०) सेतु, पुल।

पिण्डस-(सं० पुं०) भिक्षा से जीविका निर्वाह करने वाला।

पिण्डस्थ-(सं० वि०) सयुक्त, मिश्रित, एक साथ मिला हुआ।

पिण्डा-(सं०स्त्री०) हलदी, एक प्रकार की कस्तूरी।

पिण्डाकार-(सं० वि०) बँधे हुए लोंदे के आकार का, गोल।

पिण्डामा-(सं० स्त्री०) एक प्रकारका गुड़।

पिण्डालु-(सं०पु०) एक प्रकार का शफतालू।

पिण्डाश-(सं०पु०) भिक्षुक, भिखारी।

पिण्डिका-(सं० स्त्री०) गोल टुकड़ा, पहिये की नाभि, इमली।

पिण्डित-(सं०वि०) घन, पिण्ड रूप में बँधा हुआ, गुणा किया हुआ (पु०) काँसा।

पिण्डी-(सं०वि०) शरीरधारी, शरीरी।

पिण्डीरिका-(सं० स्त्री०)चौराई का साग।

पिण्डिला-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी

पिण्डी-(सं० स्त्री०) कद्दू, लौकी, एक प्रकार का तगर, एक प्रकार का खजूर, ठोस टुकड़ा, लुगदी, वह वेदी जिस पर बलिदान किया जाता है, सूत, रस्सी आदि का लपेटा हुआ लच्छा।

पिण्डीपुष्प-(सं० पु०) अशोक वृक्ष।

पिण्डीशूर-(सं० पु०) घर में बैठे बैठे शूरता दिखलाने वाला, पेट्ट।

पिण्डोद्भवा-(सं०स्त्री०) मदिरा, शराब।

पिण्डोलि-(सं० स्त्री०) उच्छिष्ट पदार्थ, जूठन।

पितम्बर-(हिं०पु०) देखो पीताम्बर।

पितपापड़ा-(हिं०पु०) एक झाड जिसका उपयोग औषधियों में होता है।

पितर-(हिं०पु०) मृत पूर्व पुरुष, मरे हुए पुरखे जिनके नाम पर श्राद्ध और तर्पण किया जाता है।

पितरपति-(हिं०पुं०) यमराज।

पितराइंध-(हिं० स्त्री०) खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव।

पितराई-(हिं० स्त्री०) पीतल का स्वाद, पीतल का कसाव।

पितरिशूर-(सं० पु०) वह जो पिता के सामने शूरता दिखलाता हो।

पितरिहा-(हिं०वि०) पीतल का बना हुआ, (पु०) पीतल का घड़ा।

पिता-(हिं० पु०) जनक, बाप, वह जो जन्म देकर पालन पोषण करता है।

पितामह-(सं०पु०) पिता का पिता, दादा, ब्रह्मा, विधाता, शिव, महादेव, भीष्म, मूल नागक घास।

पितामही-(सं० स्त्री०) पितामह की स्त्री, दादी।

पितिया-(हिं० पु०) पिता का भाई, चाचा।

पितियानी-(हिं० स्त्री०) चाचा की स्त्री, चाची।

पितिया ससुर-(हिं०पुं०,स्त्री या पति का चाचा।

पितिया सास-(हिं०स्त्री०)स्त्री या पति का चाची।

पितु-(सं०पु०) अन्न, अनाज (हिं० पु०) पिता।

पितु पुत्र-(सं०पु०) योग्य पिता का योग्य पुत्र।

पितृस्वसा-(सं०स्त्री) पिता की बहिन, फुवा, मौसी।

पितृ-(सं०पु०) उत्पादक, जनक, पिता, वह जो पुत्रका पालन पोषण करता है, चाणक्य ने पाच प्रकार के पिता बतलाये हैं यथा-अन्नदाता, भयत्राता, श्वशुर, जनक और उपनेता, किसी व्यक्ति के मरे हुए बाप, दादा, परदादा आदि, मृत पुरुष जिनका प्रेतत्व छूट गया हो, एक प्रकार के देवता जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गये हैं।

पितृऋण-(सं० पु०) धर्मशास्त्र के अनुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक जिस ऋण से मनुष्य पुत्र उत्पन्न करने पर मुक्त होता है।

पितृक-(सं० वि०) पैत्रिक, पिता का, पिता का दिया हुआ।

पितृकर्म-(सं०नपु०) जो श्राद्ध तर्पण आदि पितरों के उद्देश से किये जाते हैं

पितृकल्प-(सं०वि०) पिता के सदृश।

पितृकानन-(सं०नपुं०) श्मशान।

पितृकार्य-(सं०नपु०) देखो पितृकर्म।

पितृकुल-(स० पु०) पिता के वश के लोग, पिता की ओर के सम्बन्धी।
पितृकृत-(स० वि०) पूर्व पुरुषों द्वारा किया हुआ।
पितृगण-(स० पु०) मनुपुत्र मरीचि आदि के पुत्र।
पितृगीता-(स०स्त्री०) पिता की माहात्म्य सूचक गीता।
पितृगृह-(स०नपु०) श्मशान, बाप का घर, स्त्रियों का पीहर, नैहर, मायका।
पितृघात-(स०पुं०) पिता की हत्या।
पितृतर्पण-(स०नपुं०) पितरों के उद्देश से किया जाने वाला बलिदान, तर्पण आदि।
पितृतिथि-(स०स्त्री०) अमावास्या।
पितृतीर्थ-(स०नपुं०) गया तीर्थ, दहने हाथ की तर्जनी और अगूठे के बीच का स्थान।
पितृत्व-(स० नपु०) पिता का भाव या धर्म।
पितृदत्त-(सं०वि०)पिता द्वारा दिया हुआ
पितृदान-(स०नपु०) पितरों के उद्देश से दिया हुआ अन्न आदि का दान।
पितृदाय-(सं० पु०) पिता से प्राप्त धन या सम्पत्ति, बपौती।
पितृदिन-(स०नपु०) अमावास्या।
पितृदेव-(स०पु०) पितृगण के अधिष्ठाता देवता।
पितृदैवत-(स०पु०) मघा नक्षत्र,यम।
पितृनाथ-(स०पु०) यमराज।
पितृपक्ष-(स० पु०) आश्विन मास का कृष्ण पक्ष, पितृकुल, पिता के सबन्धी।
पितृपति-(स० पु०) यमराज।
पितृपद-(स०पु०) पितृत्व, पितर होने की स्थिति।
पितृपितु-(स०पु०) पितरों के पिता ब्रह्मा
पितृप्रिय-(स०पु०) पीपल का वृक्ष, भगरैया।
पितृभोजन-(स० पु०) माष, उड़द।
पितृमन्दिर-(स० नपु०) पिता का घर
पितृमेध-(स०पु०) श्राद्ध से भिन्न वह यज्ञ जो पितरों की मृत्यु के बाद दशरात्र में किया जाता है।
पितृयज्ञ-(स०पुं०) पितरों के उद्देश से किया जाने वाला तर्पण।
पितृयाण-(स० पु०) पितरों का चन्द्र लोक गमन मार्ग।
पितृरूप-(स०पु०) शिव, महादेव।
पितृलोक-(स० पु०) पितरों का लोक, वह स्थान जहा पितर लोग रहते हैं, यह चन्द्रलोक के ऊपर है।
पितृवत्-(स०अव्य०) पिता तुल्य, पिता के सदृश।
पितृवन-(स० नपु०) श्मशान।
पितृवसति-(स०स्त्री०) श्मशान।
पितृवित्त-(स० नपुं०) बाप दादों की सम्पत्ति, मौरूसी जायदाद।
पितृव्य-(स०पु०) पिता के भाई,चाचा।
पितृहा-(स० पुं०) पिता की हत्या करनेवाला।
पित्त-(स०नपु०) शरीर के भीतर यकृत (जिगर) में बननेवाला एक तरल पदार्थ जो खाये हुए अन्न को पचाने में सहायता देता है, पित्त उबलना-तेज भूख लगना, पित्त गरम होना-जलदी से क्रोध आना, पित्तकर-पित्त को उत्पन्न करनेवाला द्रव्य, पित्तघ्न-पित्त का नाश करनेवाला, पित्तज्वर-पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला ज्वर।
पित्तपापड़ा-(हिं०पु०) देखो पितपापड़ा।
पित्तप्रकृति-(स० वि०) जिसकी प्रकृति पित्त की हो, जिसकी शरीर में वात और कफ की अपेक्षा पित्त अधिक हो।
पित्तप्रकोपी-(स०वि०) पित्त को बढाने वाली खाने पीने की वस्तु।
पित्तरक्त-(स० नपु०) एक प्रकार का रोग जो पित्त बिगड़ने से उत्पन्न होता है
पित्तल-(स० नपु०) पीतल नामक धातु, भोजपत्र, हरताल, (वि०) पित्तयुक्त, पित्त को बढाने वाला।
पित्ता-(हिं०पु०) पित्ताशय, जिगर में की वह थैली जिसमें पित्त रहता है, साहस, हिम्मत, हौसला, पित्ता उबलना-क्रोध चढ़ना, पित्ता निकालना-बड़ी मेहनत का काम करना, पित्ता मारना-क्रोध दबाना, कठिन कार्य करने में न घबड़ाना।
पित्तातिसार-(स०पु०) पित्त के प्रकोप से होनेवाला अतिसार।
पित्ताशय-(स०पु०) पित्त की थैली जो यकृत या जिगर में नीचे पीछे की ओर होती है।
पित्ती-(हिं०स्त्री०) गरमी के दिनों में पसीना मरने से शरीर में निकलने वाले महीन दाने, एक रोग जो पित्त की अधिकता अथवा रुधिर में अधिक गरमी आ जाने से उत्पन्न होता है, इसमें शरीर भर में दाने और लाल चिकोते पड़ जाते हैं,(पु०)पितृव्य,चचा।
पित्तोदर-(स०नपु०) पित्त के बिगड़ने से होने वाला उदर का एक रोग।
पित्र्य-(स०वि०) पितृ सम्बन्धी, जिसका श्राद्ध किया जा सके, (पु०) बड़ा भाई।
पित्र्या-(स०स्त्री०) अमावस्या, पूर्णमासी, मघा नक्षत्र।
पिदड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पिद्दी।
पिद्दा-(हिं०पु०) देखो पिद्दी, गुलेल के तात के बीच में लगी हुई गोली फेंकने की गद्दी।
पिद्दी-(हिं०स्त्री०) बया की जात की एक छोटी सुन्दर चिड़िया, फुदकी, अति तुच्छ प्राणी।
पिधातव्य-(सं०वि०) ढापने योग्य।
पिधान-(स०नपु०) आवरण, आच्छादन, परदा, ढपना, गिलाफ, किवाड़ा, तलवार की म्यान।
पिधानक-(स०पु०) खड्ग कोप, तलवार की म्यान।
पिन्-(अं० स्त्री०) कागज आदि नत्थी करने की लोहे या पीतल की छोटी महीन कील।
पिनकना-(हिं०क्रि०) ऊघना, नींद में आगे को झुकना, अफ़ीमचियों का नशे में ऊघना।
पिनकी-(हिं० पु०) पिनक लेनेवाला

अफीमची ।
पिनपिन-(हिं० स्त्री०) रोगी या दुर्बल बच्चे का अनुनासिक आवाज में रोना, बच्चों के पिन् पिन् करने का शब्द ।
पिनपिनहा-(हिं०वि०) पिनपिन करने वाला अथवा हरवख्त रोनेवाला बच्चा ।
पिनपिनाना-(हिं०क्रि०) धीमी आवाज में रुक रुक कर बच्चों का रोना ।
पिनपिनाहट-(हिं०स्त्री०) पिनपिन करके रोने की क्रिया या भाव, पिनपिन करके रोने का शब्द ।
पिनस-(सं०पु०) देखो पीनस ।
पिनसन, पिनसिन-(हिं० स्त्री०) देखो पेंशन ।
पिनाक-(सं० पु०) शिवजी का धनुष जिसको श्री रामचन्द्र ने जनकपुर में तोड़ा था, त्रिशूल, एक प्रकार का अभ्रक
पिनाकी-(सं० पु०) पिनाकधारी शिव, एक प्रकार तार लगा हुआ प्राचीन बाजा
पिन्नस-(हिं०स्त्री०) देखो पीनस ।
पिन्ना-(हिं० वि०) सर्वदा रोने वाला, (पु०) धुनकी ।
पिन्नी-(हिं०स्त्री०) आटे या अन्य प्रकार के अन्न के चूर्ण में गुड़ या चीनी मिलाकर बनाई हुई मिठाई ।
पिन्यास-(सं०नपु०) हिङ्गु, हींग ।
पिन्हाना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना ।
पिपरमिन्ट-(अं०पु०) पुदीने की जात का एक पौधा जिसमे से निकाला हुआ सत्व औषधियों मे प्रयोग होता है ।
पिपरामूल-(सं०पु०) पिप्पली की जड़ ।
पिपराही-(हिं०पु०) पीपल का जगल ।
पिपासा-(सं०स्त्री०) तृष्णा, प्यास, लोभ, लालच, एक प्रकार की व्याधि ।
पिपासित-(सं०वि०) पिपासायुक्त, प्यासा
पिपासु-(सं०वि०) तृषित, प्यासा उत्कट इच्छा करने वाला, लालची ।
पिपिली-(सं०स्त्री०) पिपीलिका, चींटी ।
पिपीलक-(सं०पु०) चींटा, चिंउटा ।
पिपीलिका-(सं०स्त्री०) चींटी, च्यूटी ।
पिपीली-(सं०स्त्री०) पिपीलिका, चींटी ।
पिप्टा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई
पिप्पल-(सं०नपु०) जल, पानी, (नपु०) अश्वत्थ, पीपल का पेड़ ।
पिप्पली-(सं० स्त्री०) पीपल की लता, इसके शहतूत के आकार फल ।
पिप्पलीमूल-(सं० नपु०) पिपरामूल ।
पिप्पिका-(सं०स्त्री०) दाँतों की मैल ।
पिप्रीषा-(सं०स्त्री०) प्रीति कामना ।
पिप्रीषु-(सं०वि०) प्रीति के अभिलाषी ।
पिय-(हिं०पु०) स्वामी, भर्ता, पति ।
पियदसी-सम्राट् अशोक का नामान्तर ।
पियर-(हिं०वि०) पीला, पीले रग का ।
पियरई-(हिं०स्त्री०) पीलापन ।
पियराई-(हिं०स्त्री०) पीलापन, जर्दी ।
पियराना-(हिं० क्रि०) पीला पड़ना या होना ।
पियरी-(हिं०स्त्री०) पीली रंगी हुई धोती, पीलापन, एक प्रकार का पीला रग ।
पियरोला-(हिं०पु०) पीले रग की एक प्रकार की चिड़िया ।
पियली-(हिं०स्त्री०) नारियल की खोपड़ी का टुकड़ा ।
पियल्ला-(हिं०पु०) दूध पीने वाला बच्चा ।
पियवास-(हिं०पु०) देखो प्रियवास ।
पिया-(हिं०पु०) देखो पिय , प्रिय ।
पियादा-(हिं०पु०) देखो प्यादा ।
पियाना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना ।
पियानो-(अं०पु०) एक प्रकार का बड़ा अग्रेजी बाजा जो मेज के आकार का होता है इसमे स्वर निकलने के लिये मोटे पतले तार लगे रहते हैं ।
पियावाँसा-(हिं०पु०) कटसरैया ।
पियार-(हिं० पु०) महुवे की तरह का एक वृक्ष जिसके बीज की गरी चिरोंजी कहलाती है जो खाने मे मीठी होती है ।
पियारा-(हिं०वि०) देखो प्यारा ।
पियाल-(सं० पु०) चिरौंजी का पेड़ ; देखो पियार ।
पियाला-(हिं० पु०) देखो प्याला ।
पियास-(हिं० स्त्री०) देखो प्यास ।
पियासा-(हिं०वि०) प्यासा ।
पियासाल-(हिं० पु०) बहेड़े या अर्जुन की जात का एक बड़ा वृक्ष, पीतसार ।
पियूख,पियूप-(हिं०पु०) देखो पीयूष ।
पिरकी-(हिं०स्त्री०) फुसी, फोड़िया ।
पिरता-(हिं० पु०) पूनी दबाने का काठ का टुकड़ा ।
पिरथी-(हिं० स्त्री०) देखो पृथ्वी ।
पिरन-(हिं०पु०)चौपायों का लगड़ापन ।
पिराई-(हिं० स्त्री०) देखो पियराई ।
पिराक-(हिं० पु०) एक प्रकार का चीनी का ढाल कर बना हुआ बड़ा अर्ध चन्द्राकार पकवान ।
पिराना-(हिं०क्रि०) पीड़ा होना, दुखना, दर्द होना, पीड़ा का अनुभव करना, सहानुभूति करना, दुःख समझना ।
पिरारा-(हिं०पु०) देखो पिड़ारा ।
पिरिच-(हिं०पु०) कटोरी, तश्तरी ।
पिरिया-(हिं० पु०) एक प्रकार का बाजा, कुवें से पानी खींचने की रहट ।
पिरीतम-(हिं०वि०) देखो प्रियतम ।
पिरोता-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा ।
पिरोज-(हिं०पु०)कटोरा, छोटी थाली ।
पिरोजना-(हिं० पु०) देखो प्रयोजन कनछेदन ।
पिरोजा-(फा० पु०) हरापन लिये एक प्रकार का नीला पत्थर , देखो फीरोजा
पिरोड़ा-(हिं० स्त्री०) पीली कड़ी मिट्टी की ज़मीन ।
पिरोना-(हिं० क्रि०) तागे आदि को सुई के छेद में डालना, छेद के पार निकालना या पहिराना, गूथना, पोहना।
पिरोला-(हिं०पु०) एक प्रकार का पक्षी ।
पिलई-(हिं० स्त्री०) वरवट, तापतिल्ली ।
पिलक-(हिं० पु०) अबलक कबूतर, एक प्रकार की पीले रग की चिड़िया ।
पिलकना-(हिं०क्रि०) ढकेलना, गिराना, लुढ़काना ।
पिलकिया-(हिं० पु०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया जिसका रग पीलापन लिये खाकी होता है ।
पिलखन-(हिं० पु०) पाकर का वृक्ष ।
पिलड़ी-(हिं० स्त्री०) मसालेदार कीमा ।
पिलचना-(हिं० क्रि०) तत्पर होना, लीन होना, काम में लग जाना, दो मनुष्यों

का परस्पर गुथना ।
पिलना-(हिं० क्रि०) एकबारगी प्रवृत्त होना या लग जाना, लिपट जाना, तेल निकालने के लिये पेरा जाना, किसी ओर एकबारगी टूट पड़ना, भिड़ जाना ।
पेलपिल,पिलपिला-(हि०वि०) इतना नरम या ढीला कि दबाने से भीतर का रस या गूदा बाहर निकल आवे।
पिलपिलाना-(हिं० क्र०) गूदेदार या रसदार वस्तु को इस प्रकार दबाना कि इसमें का रस ढीला होकर बाहर निकलने लगे ।
पिलपिलाहट-(हिं० स्त्री०) वह नरमी या मोलायमियत जो गूदे या रस के ढीले होने के कारण आगई हो ।
पिलवाना-(हिं० क्रि०) पिलाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को पिलाने में लगाना, पेरवाना, पेलने या पेरने का काम करना ।
पिलाना-(हि० क्रि०) पीने का काम कराना, पीने को देना, भीतर करना, किसी छेद में डाल देना ।
पिलिप्पिल-(स० वि०) चिक्कण,चिकना ।
पिलुडा-(हिं० पु०) देखो पुलिन्दा ।
पिलु-(स० पु०) एक रागिणी का नाम ।
पिलुनी-(स० स्त्री०) मूर्वा लता ।
पिल्ल-(स० पु०) ऑख का एक रोग जिसमें आँखों में से कीचड़ बहा करता है ।
पिल्लिका-(स०स्त्री०) हस्तिनी, हथिनी ।
पिल्ला-(हिं०पु०) कुत्ते का छोटा बच्चा ।
पिल्लू-(हि० पु०) बिना पैर का सफेद कीड़ा जो सडे हुए फल घाव आदि में पड़ जाता है ।
पिव-(हिं० पु०) देखो पिय ।
पिवाना-(हि० क्रि०) देखो पिलाना ।
पिशङ्ग-(स० पु०) पीलापन लिये भूरा रग, एक नाग का नाम (वि०) धूमिल रग का ।
पिशङ्गक-(स० पुं०) विष्णु भगवान् ।
पिशङ्गरूप-(स० वि०) पीतवर्ण, पीले रग का ।
पिशङ्गाश्व-(स०पु०) पीले रग का घोड़ा ।
पिशाच-(स० पु०) एक हीन देवयोनि, भूत, प्रेत ।
पिशाचक-(सं० पु०) भूत प्रेत भगाने वाला ओझा ।
पिशाचघ्न-(स० पुं०) सफेद या पीली सरसों, (वि०) पिशाचों को हटाने या नाश करने वाला ।
पिशाचता-(स० स्त्री०) पिशाच का भाव या धर्म ।
पिशाचवृक्ष-(स०पु०) सिहोर का वृक्ष ।
पिशाचसभ-(स० नपु०) पिशाचों की सभा ।
पिशाचालय-(स०पु०) पिशाचों का घर ।
पिशाचिका, पिशाची-(स० स्त्री०) छोटी जटामासी ।
पिशित-(स० नपु०) मास, गोश्त ।
पिशिता-(स० स्त्री०) जटामासी ।
पिशिताशन-(स०वि०) मास खाने वाला ।
पिशील-(स० नपु०) मिट्टी का प्याला ।
पिशुन-(स० नपु०) कुकुम, केशर, नारद, कौवा, कौशिक के एक पुत्र का नाम, आपस में लड़ाई लगाने वाला, चुगलखोर (वि०) क्रूर, दुष्ट ।
पिशुनता -(स०स्त्री०)क्रूरता, चुगलखोरी ।
पिशोर-(हिं० पु०) एक प्रकार की पहाड़ी झाड़ी ।
पिष्ट-(स० नपु०) सीसा, पिट्ठी, पीठी, (वि०) चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ ।
पिष्टक-(स० नपु०) तिल का चूर्ण, पिष्ट, पीठी, रोट, कचौड़ी, पूआ, एक प्रकार का ऑख का रोग, सीसा ।
पिष्टपचन-(स० नपु०) पीठी पकाने का बरतन ।
पिष्टपिण्ड-(सं०पुं०) पुरोडाश, पीठी ।
पिष्टपूर-(स० पु०) वटक, बरी, एक प्रकार की पीठी ।
पिष्टपेषण-(स० पु०) पीसे हुए को पीसना, एक बार कही हुई बात को बारबार दोहराना ।
पिष्टमेह-(स० पु०) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ सफेद पदार्थ गिरता है ।
पिष्टयोनि-(स०पु०) कचौरी या पुआ ।
पिष्टसौरभ-(स० पुं०) चन्दन जिसके पीसने से सुगन्ध निकलती है ।
पिष्टिका-(स०स्त्री०) दाल की पीठी,पीठी ।
पिष्टोदक-(स०नपु०) पीसे हुए चावल का पानी ।
पिसनहारी-(हिं० स्त्री०) आटा पीसने वाली, वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसकर चलती हो ।
पिसना-(हि० क्रि०) पिसकर तैयार होना, छोटे छोटे टुकड़ों में विभक्त होना, चूरचूर हो जाना, पीड़ित होना, कष्ट उठाना, थककर बेदम होना, अति परिश्रम से क्लान्त होना, दबना, कुचल जाना ।
पिसवाना-(हि० क्रि०) पीसने का काम दूसरे से कराना ।
पिसाई-(हि० स्त्री०) पीसने की क्रिया या भाव, पीसने की मजदूरी, पीसने का धधा, अत्यन्त अधिक श्रम ।
पिसाच-(हिं० पु०) देखो पिशाच ।
पिसान-(हि० पु०) अन्न का महीन पिसा हुआ चूर्ण, आटा ।
पिसिया-(हि० पु०) एक प्रकार का छोटा मुलायम गेहूँ ।
पिसुन-(हिं०पुं०) देखो पिशुन ।
पिसुराई-(हि० स्त्री०) सरकडे का छोटा टुकड़ा जिसपर लपेट कर पूनी बनाई जाती है ।
पिसेरा-(हिं० पु०) एक प्रकार का हिरन ।
पिसौनी-(हिं० स्त्री०) पीसने का काम, चक्की पीसने का धधा,परिश्रम का काम
पिस्त-(स०नपु०) पिस्ता ।
पिस्तई-(फा० वि०) पिस्ते के रग का, पीलापन लिये हरा ।
पिस्ता-(हि०पु०) एक छोटा पेड़ जिसका फल अच्छे मेवो में गिना जाता है ।
पिस्तौल-(हि०स्त्री०) छोटी बदूक, तमचा
पिस्सी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार का गेहू ।

पिस्सू-(हिं० पु०) उड़ने वाला एक छोटा कीड़ा जो मच्छड़ों की तरह काटता और रक्त चूसता है।

पिहकना-(हिं० क्रि०) मोर, कोयल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।

पिहान-(हिं० पु०) बरतन का ढपना।

पिहित-(सं० त्रि०) आच्छादित, छिपा हुआ, (पु०) वह अर्थालंकार जिसमें किसी व्यक्ति के मन का कोई भाव जान कर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रगट करना वर्णन किया जाता है।

पिहुआ-(हिं०पु०) एक प्रकार का पक्षी।

पिहोली-(हिं० पु०) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियां बड़ी सुगन्धित होती हैं।

पींजना-(हिं०क्रि०) रूई धुनना।

पींजरा-(हिं० पु०) देखो पिंजड़ा।

पींड-(हिं० पु०) किसी गीली वस्तु का गोला, पिंडी, पिण्ड, चरखे का बेलन, पिंडखजूर, शरीर, देह, वृक्ष का तना, पेड़ी।

पींडी-(हिं०स्त्री०) देखो पिंडी।

पींडुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पिण्डुली।

पी-(हिं०पु०)पपीहे की बोली,देखो पिय।

पीक-(हिं० स्त्री०) थूक से मिला हुआ पान का रस, ऊंची नीची भूमि, वह रंग जो कपड़े पर पहिली बार चढाया जाता है।

पीकदान-(हिं०पु०) एक प्रकार का डमरू के आकार का पात्र जिसमें पान की पीक डाली जाती है, उगालदान।

पीकना-(हिं०क्रि०) पिहिकना, पपीहे या कोयल का बोलना।

पीका-(हिं० पु०) किसी वृक्ष का नया कोमल पत्ता, कोंपल।

पीच-(सं० पुं०) नीचे का जबड़ा, (हिं०स्त्री०) माड।

पीचना-(हिं० क्रि०) पीसना दबना।

पीचू-(हिं०पु० करील का पक्का फल, एक प्रकार का झाड़।

पीछ-(हिं० स्त्री०) देखो, पीच, माड़।

पीछा-(हिं०पु०) पश्चात् भाग, पिछला हिस्सा, पीछे पीछे चल कर किसी के साथ लगे रहना, किसी घटना के बाद का काल, **पीछा दिखाना**-हट जाना, भाग जाना, **पीछा देना**-किसी काम में पहिले साथ देकर बाद को हट जाना, **पीछा करना**-खदेड़ना, परेशान करना, **पीछा छुड़ाना**-सम्बन्ध छोड़ाना, **पीछा छूटना**-छुटकारा पाना, पिंट छूटना, **पीछा छोड़ना**-समाप्त करना, बन्द करना।

पीछू-(हिं०क्रि०त्रि०) देखो पीछे।

पीछे-(हिं०अव्य०) विरुद्ध दिशा में पीछे की ओर कुछ दूरपर, अन्त में, आखिर में, पीठ की ओर, निमित्त, कारण, वास्ते, लिये, किसी की अनुपस्थिति या अभाव में, देश या काल क्रम में किसी के उपरान्त, कुछ देर बाद अनन्तर, आखीर में, **पीछे चलना**-अनुकरण करना, नकल करना, **पीछे छोडना**-किसी का पीछा करने के लिये किसीको दौड़ाना, **पीछे डालना**-बटोर रखना, **पीछे पडना**-किसी काम में निरन्तर उद्योग करना, किसी काम के लिए किसी को परेशान करना,**पीछे लगना**-पीछे पीछे चलना, पीछा करना, **पीछे लगाना**-सहारा या आश्रय देना, कुछ पता लगाने के लिये किसी के साथ कर देना, **पीछे छूटना**-पीछे रह जाना, **पीछे पडना**-दिक करना, **पीछे छोड़ना**-आगे बढ जाना।

पीजन-(हिं०पु०)ऊन धुनने की धुनकी।

पीजर-(हिं०पु०) देखो पिंजड़ा।

पीटन-(हिं० पु०) देखो पीटना।

पीटना-(हिं०क्रि०) प्रहार करना मारना, चोट देकर किसी वस्तु को चिपटी करना, किसी न किसी प्रकार से कोई वस्तु प्राप्त कर लेना, ठोंकना, किसी न किसी प्रकार से कोई काम समाप्त कर लेना, (पु०) आपत्ति मृत्यु शोक, मातम, आफत, **छाती पीटना**-अत्यन्त शोक या दुःख प्रगट करना।

पीठ-(सं० नपु०) पीढा, चौकी, आसन, वह स्थान जहां पर जपादि करके मंत्र सिद्ध किये जाते हैं, किसी मूर्ति के नीचे का आधार पिण्ड, कंस के एक मन्त्री का नाम, बैठने का एक विशेष ढङ्ग, सिंहासन, देवपीठ, एक असुर का नाम, वृत्त के किसी अंश का पूरक, अधिष्ठान, वेदी, प्रदेश, प्रान्त।

पृष्ठ-(हिं०स्त्री०) पेट के दूसरी ओर का स्थान, किसी वस्तु के बनावट का ऊपरी भाग, किसी वस्तु के रहने की जगह, **पीठ का**-पृष्ठ देश का, **चारपाई से पीठ लग जाना**-रोग से अति दुर्बल होना, **पीठ ठोंकना**-शाबशी देना, **पीठ दिखाना**-युद्ध में से भाग जाना, **पीठ देना**-विदा होना, मुँह मोड़ना, **पीठ पर**-एकही माता से उत्पन्न सतति में बाद का जन्मा हुआ, **पीठ पर हाथ फेरना**-शाबशी देना, **पीठ पर होना**-सहायक होना, **पीठ पीछे**-किसी की अनुपस्थिति में, **पीठ फेरना**-विदा होना, **पीठ लगना**-घाडे, बैल आदि की पीठ पर घाव होना, **पीठ लगाना**-लेटना।

पीठक-(सं०पु०) आसन, पीढा चौकी।

पीठग-(सं०त्रि०) खज लगड़ा।

पीठ गर्भ-(सं०पु०) वह गड्ढा जो किसी मूर्ति के बैठाने के लिये खोदा जाता है।

पीठचक्र-(सं० पु०) एक प्रकार का रथ।

पीठदेवता-(सं० स्त्री०) आधार शक्ति आदि देवता।

पीठनायिका-(सं० स्त्री०) भगवती, दुर्गा

पीठमर्द-(सं० पु०) नायक के चार सखाओं में से एक जो बोलने की चतुराई से नायिका का मान मोचन कर सकता है, कुपित नायिका को प्रसन्न करनेवाला नायक, (त्रि०) अति धृष्ट बड़ा ढीठ।

पीठस्थान-(सं०नपु०) देवता से अधिष्ठित देश, देखो पीठ।

पीठा-(हिं० पु०) आटे की लोई में

पीठी भर कर बनाया हुआ एक पकवान, पीढ़ा।
पीठि-(हिं०स्त्री०) देखो पीठ।
पीठिका-(सं०स्त्री०) मूर्ति अथवा खमे का मूल भाग, अध्याय।
पीठी-(हिं० स्त्री०) उड़द मूग आदि की छिलका उतार कर पीसी हुई दाल।
पीड़-(हिं०स्त्री०) सिर के बालो में बाँधने का एक प्रकार का आभूषण।
पीड़क-(स०पु०) दुःखदायी, पीड़ा देने वाला, अत्याचारी, सताने वाला, एक प्रकार का चमडे का रोग।
पीडन-(सं०नपु०) आक्रमण द्वारा किसी देश को नष्ट करना, दुःख देना, चाँपने या दबाने की क्रिया, नाश, लोप, सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण, पकड़ना, दबोचना, दबाना, पेरना, किसी वस्तु को भली भाँति पकड़ना।
पीडनीय-(स०वि०) दुःख पहुँचाने योग्य
पीड़ा-(स० स्त्री०) शारीरिक अथवा मानसिक क्लेश, वेदना व्यथा, व्याधि, रोग, एक सुगन्धित औषधि, शिर में लपेटी हुई माला।
पीड़ास्थान-(सं० नपु०) अशुभ ग्रहों के स्थान।
पीडित-(सं०वि०) क्लेशयुक्त, दुःखित, रोगी, बीमार, दबाया हुआ, मर्दन किया हुआ, (पु०) एक प्रकार के मन्त्र।
पीडुरी-(हिं० स्त्री०) देखो पिंडली।
पीढ़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी की छोटी नीचे पावे की चौकी जिसपर हिन्दू लोग भोजन करते समय बैठते हैं।
पीढ़ी-(हिं० स्त्री०) किसी वश या कुल में किसी विशेष व्यक्ति से आरभ करके उसके ऊपर या नीचे के पुरुषों का गणना क्रम से निश्चित स्थान, किसी विशेष व्यक्ति अथवा प्राणी का सन्तति समुदाय, सन्तान, सन्तति।
पीत-(स०नपु०) हरिताल, हरिचन्दन, (पु०) पीला रग पुष्परागमणि, पुखराज, एक प्रकार की सोम लता, पदमाख, कुसुम, प्रवाल, मूगा, भूरा रग (वि०) पीले रग का, पिया हुआ, भूरे रग का
पीतक-(स० नपु०) हरताल, अगुरु, केशर, पीतल, विजयसार मधु, पीला चन्दन, पीले रँग से रगा हुआ, गाजर, सफेद जीरा, पीली लोध, चिरायता।
पीतकन्द-(स० पुं०) गाजर।
पीतका-(स० स्त्री०) हल्दी, कूष्माण्ड, कटसरैया, पोई का साग, एक प्रकार का कीड़ा।
पीतकाष्ठ-(स०नपु०) पद्मकाष्ठ, पदमाख
पीतकेदार-(सं०पु०) एक प्रकार का धान।
पीतगन्ध-(स० नपु०) पीला चन्दन, हरिचन्दन।
पीतचन्दन-(स० नपु०) पीले रँग का चन्दन, हरिचन्दन।
पीतचोप-(सं०पुं०) पलाश का फूल, टेसू
पीतता-(स० स्त्री०) पीलापन, जर्दी।
पीततुण्ड-(स०पु०) बया पक्षी।
पीतत्व-(हिं०पु०) देखो पीतता।
पीतदारु-(स० नपु०) देवदार, हल्दी, चिरायता।
पीतदुग्धा-(स० स्त्री०) एक प्रकार का थूहर।
पीतद्रु-(स०पु०) दारुहल्दी।
पीतधातु-(सं० पु०) गोपीचन्दन, रामरज
पीतन-(स०नपु०) कुकुम, केशर, हरताल, देवदारु, पाकड़ का वृक्ष।
पीतनखता-(स० स्त्री०) नाखून का एक रोग।
पीतनाश-(सं० पु०) लकुच, बड़हर।
पीतनी-(स०स्त्री०) शालपर्णी, सरिवन।
पीतपराग-(स०पु०) कमल का केसर।
पीतपादप-(स०पु०) सोना पाठा, लोध का वृक्ष।
पीतपादा-(स०स्त्री०) सारिका, मैना पक्षी
पीतपुष्प-(स०नपुं०) घिया, तोरई, (पु०) कनेर, चपा, हिंगोट, लाल कचनार।
पीतपुष्पक-(स०पु०) बबूल का पेड़।
पीतपुष्पिका-(स०स्त्री०) जगली ककड़ी।
पीतपुष्पा-(स० स्त्री०) इन्द्र वारुणी, सहदेई, कटसरैया, अरहर, पीला कनेर सोना जुही।
पीतपुष्पी-(स०स्त्री०) महाबला, शख-पुष्पी।
पीतपृष्ठा-(सं०स्त्री०) पीली पीठ की कौड़ी।
पीतफल-(स० पु०) कमरख।
पीतफेन-(स०पु०) अरिष्टक वृक्ष, रीठा।
पीतबीजा-(स० पु०) मेथिका, मेथी।
पीतभद्रक-(स० पु०) एक प्रकार का बबूल।
पीतम-(हिं०वि०) देखो प्रियतम।
पीतमणि-(स०पुं०) पुष्पराग, पुखराज।
पीतमस्तक-(सं०पु०) एक प्रकार का बाज़
पीतमुण्ड-(स०पु०) एक प्रकार का हरिन
पीतमूलक-(स०नपु०) गर्जर, गाजर।
पीतमूली-(स० स्त्री०) रेवन चीनी।
पीतर-(हिं०पु०) देखो पीतल।
पीतरत्न-(सं० पु०) पीतमणि, पुखराज।
पीतराग-(स०नपु०) पद्म केसर (वि०) पीला।
पीतल-(हिं०पु०) जस्ते और ताबे के सयोग से बनी हुई एक उपधातु।
पीतवर्ण-(स०पु०) कदब (नपु०) मैनसिल, पीला चन्दन केसर।
पीतवल्ली-(सं० स्त्री०) आकाश बेल।
पीतवान-(हिं०पुं०) हाथी के दोनो आँखों के बीच का स्थान।
पीतवास-(सं०वि०) पीला वस्त्र पहिरने वाला (पु०) श्रीकृष्ण।
पीतबीजा-(स० स्त्री०) मेथी।
पीतशाल-(स० पु०) असना विजयसार नामक वृक्ष।
पीतशालि-(स० पु०) एक प्रकार का महीन धान।
पीतसरा-(हिं०पुं०) ससुर का भाई।
पीतसार-(स० नपु०) पीला चन्दन, हरिचन्दन, मलयज, चन्दन, गोमेदक-मणि अकोल का वृक्ष, बीजक, शिलारस।
पीतसारक-(स० पुं०) नीम का पेड़।
पीतसारि-(स० नपु०) काला सुरमा।
पीतसाल-(स०पु०) विजयसार का वृक्ष।
पीतस्कन्ध-(स०पुं०) शूकर, सुअर।
पीतस्फटिक-(स०पु०) पुष्पराग, पुखराज

पीतस्फोट-(स०पु०) खजुली, टट्टु, दाद ।
पीता-(स० स्त्री०) हल्दी, दारुहलदी, अतीस, गोरोचन, हरताल, ज़र्द चमेली, देवदार, राल, असगन्ध, आकाश वेल (वि०) पीले रंग का ।
पीताङ्ग-(स० पु०) सोना पाठा, पीला मेंढक, नारंगी का पेड़ (स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी ।
पीताब्धि-(स०.पु०) अगस्त्य मुनि ।
पीताभ-(स०पु०) पीला चन्दन (वि०) जिसमे पीली आभा निकलती हो ।
पीताभ्र-(स०नपु०)पीले रंग का अभ्रक ।
पीताम्बर-(स० पु०) विष्णु, कृष्ण(नपु०) पीला कपड़ा, रेशमी धोती जिसको पहन कर लोग पूजा पाठ करते हैं(वि०) पीले वस्त्र वाला ।
पीताश्म-(स०पु०) पुष्परागमणि पुखराज
पीति-(स०पु०) घोड़ा, हाथी का सूंड, गति ।
पीतिका-(स०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी ।
पीतु-(स०पु०) सूर्य, अग्नि, यूथपति ।
पीथ-(स०नपु०) जल, पानी, घी, सूर्य, अग्नि ।
पीदड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पिद्दी ।
पीन-(स०वि०) पुष्ट, स्थूल, मोटा ताजा, सम्पन्न कठिन, प्रवृद्ध (नपु०) स्थूलता, मोटाई ।
पीनक-(हिं० स्त्री०) अफीम के नशे में ऊंघना, आगे को झुक पड़ना ।
पीनता-(स० स्त्री०) स्थूलता, मोटाई ।
पीनना-(हिं०क्रि०) देखो पीजना ।
पीनस-(स० पु०) नाक का एक रोग (हिं०स्त्री०) पालकी ।
पीनसा-(स०स्त्री०) कर्कटी, ककड़ी ।
पीना-(हिं० क्रि०) जल या जल के समान अन्य वस्तु को घूंट घूंट करके गले के नीचे उतारना, घूंटना, मद्य पीना, शराब पीना, सोखना, चूसना, धूम्र पान करना, हुक्का चुरुट आदि का धुँवा भीतर खींचना, सहन करना, बरदाश्त करना, उपेक्षा करना, क्रोध या उत्तेजना का प्रगट न करना, मनो-विकार को भीतर ही दबा लेना, कुछ भी शेष या बाकी न रहना, किसी सम्बन्ध में मौन धारण करना, किसी बात को दबा देना, (हिं० पुं०) तीसी आदि की खली, डाट, डट्टा, लोहू का घूट पीना-किसी बात को बड़े कष्ट से सहन कर लेना ।
पीनी-(हिं० स्त्री०) तीसी, तिल आदि की खली ।
पीप-(हिं०स्त्री०) फूटे हुए फोडे या घाव के भीतर से निकलने वाला लसलसा सफेद पदार्थ, मवाद, पीब, रीम ।
पीपर-(हिं०पु०) देखो पीपल ।
पीपरपर्न-(हिं०पु०) कान मे पहिरने का एक गहना ।
पीपरामूल-(हिं०पु०) देखो पीपलामूल ।
पीपरि-(हिं०पु०) देखो पीपल ।
पीपल-(हिं०पु०) बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसको हिन्दू लोग बड़ा पवित्र मानते हैं एक लता जिसके पत्ते पान की तरह होते हैं, इसकी कलियाँ औषधियों में प्रयोग होती हैं ।
पीपलामूल-(हिं०पु०) पीपल की लत्ता की जड़ देखो पिपरामूल ।
पीपा-(हिं०पु०) ढोल के आकार का लोहे या काठ का बड़ा बरतन जो तरल पदार्थों के रखने के काम मे लाया जाता है ।
पीव-(हिं०पु०) देखो पीप ।
पीय-(हिं०पु०) देखो पिय ।
पीयर-(हिं०वि०) पीला, पीले रँग का ।
पीयु-(स०पु०)सूर्य, काल, समय, यूक, उल्लू पक्षी (वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, हिंसा करने वाला ।
पीयूख-(हिं०पु०) देखो पीयूष ।
पीयूष-(स० नपु०) सुधा, अमृत, दूध, गाय के ब्याने पर उसका सात दिन के भीतर का दूध ।
पीयूषमह, पीयूषभानु-(स०पु०)चन्द्रमा
पीयूष रुचि-(स० वि०) अमृत चाहने चन्द्रमा ।
पीयूष वर्ष-(स०पु०) चन्द्रमा, कपूर, एक प्रकार का मात्रिक छन्द जिसको आनन्द वर्धक भी कहते हैं ।
पीयूषोत्था-(स० स्त्री०)शालम मिश्री ।
पीर-(हिं० स्त्री०) सहानुभूति, करुणा, दया, हमदर्दी, पीड़ा, दुःख, प्रसव वेदना, (पु०) मुसलमानों के धर्म-गुरु (फा० वि०) महात्मा, सिद्ध, धूर्त, चालाक, वृद्ध, बूढ़ा, बुजुर्ग (फा० पु०) सोमवार का दिन ।
पीरजादा-(फा० पु०) किसी धर्मगुरु या पीर की सन्तान ।
पीर नाबालिग-(फा०वि०) सठियाया हुआ वृद्ध पुरुष जो बच्चों की तरह बातें करता हो ।
पीरमान-(हिं० पु०) मस्तूल पर के वे डंडे जिनपर पाल चढाई जाती है ।
पीरमुरशिद-(फा० पु०) गुरु, पूजनीय व्यक्ति ।
पीरा-(हिं० स्त्री०) देखो पीड़ा (वि०) देखो पीला ।
पीरी-(फा० स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढापा, हुकूमत, ठेका, चमत्कार, करामात, गुरुवाई, चेला मूड़ने का काम, धूर्तता, चालाकी ।
पीरू-(हिं०पु०) एक प्रकार का मुर्गा ।
पीरोजा-(हिं० पु०) देखो फीरोजा ।
पील-(फा० पु०) हस्ती, शतरंज का एक मोहरा जिसको ऊंट भी कहते हैं (हिं० पु०) कीड़ा ।
पीलक-(स० पु०) पिपीलिका, चींटी (हिं० पु०) एक प्रकार की पीले रंग की चिड़िया ।
पीलपाल-(हिं०पु०) हाथीवान,महावत ।
पीलपाँव-(हिं०) श्लीपद, पैर के फूल जाने का एक रोग, फीलपा ।
पीलवान-(हिं०पु०) हाथीवान, महावत ।
पीलसाज-(हिं० पुं०) दीपक जलाने की दियट ।
पीला-(हिं० पु०) एक प्रकार का हल्दी या सोने के सदृश रंग, शतरंज का एक मोहरा (वि०) जर्द, निस्तेज, कान्ति हीन, धुंधला सफेद , पीला

पड़ना या होना–रोग के कारण शरीर तथा मुख की रंगत पीली होना, भय के कारण चेहरा सफेद हो जाना।
पीलापन–(हिं० पु०) पीला होने का भाव, ज़र्दी।
पीलाम–(हिं०पु०) साटन नामक कपड़ा।
पीलिया–(हिं० पुं०) कामला रोग जिसमें मनुष्य का संपूर्ण शरीर और आँखें पीली पड़ जाती हैं।
पलीचिट्ठी–(हिं० स्त्री०) विवाह का निमन्त्रण पत्र।
पीलु–(स० पु०) फूल, परमाणु, हाथी, अस्थि खण्ड, हड्डी का टुकड़ा, कीड़ा वाण, अखरोट का वृक्ष, लाल कसरैया, सरपत का फल।
पीलुआ–(हिं०पु०) मछली पकड़ने का बड़ा जाल।
पीलुक–(स०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा।
पीलुनी–(स० स्त्री०) चने का साग।
पीलू–(हिं० पु०) सफेद लंबे कीड़े जो फलों के सड़ने पर उनमें पड़ जाते हैं, एक प्रकार का राग, एक प्रकार का का काटेदार वृक्ष।
पीव–(हिं०पु०) पिय, पति, देखो पीब।
पीवना–(हिं०क्रि०) देखो पीना।
पीवर–(स० वि०) स्थूल, गुरु, भारी, मोटा (पु०) जटा, कछुआ।
पीवरत्व–(सं०न०पु०) स्थूलता, मोटापन।
पीवरस्तनी–(स०स्त्री०) बड़े थन की गाय
पीवरा–(स० स्त्री०) असगन्ध, सतावर, (वि०) स्थूल, मोटा।
पीवरी–(स०स्त्री०) तरुणी, युवती स्त्री, गाय
पीवस–(स०वि०) स्थूल, मोटा।
पीवा–(हिं०वि०) स्थूल, पुष्ट, मोटा।
पीसना–(हिं० क्रि०) कुचल कर बुकनी करना, भुरकुस करना, कठोर परिश्रम करना, चूरचूर करना, महीन टुकड़े करना, किसी वस्तु को जल की सहायता से रगड़कर बारीक करना (पु०) पीसी जाने वाली वस्तु, एक मनुष्य के पीसने का हिस्सा, किसी को पीसना–अत्यन्त कष्ट देना।
पीसू–(हिं०पु०) एक प्रकार का कीडा; देखो पिस्सू।
पीह–(हिं०स्त्री०) चरबी।
पीहर–(हिं०पु०) स्त्रियों के माता पिता का घर, मायका।
पीहू–(हिं०पु०) देखो पीसू।
पुख–(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाज पक्षी
पुगफल–(हिं०पु०) देखो पुङ्गीफल।
पुगीफल–(हिं० पु०) देखो पुङ्गीफल।
पुछल्ला–(हिं०पु०) देखो पुछाला।
पुंछवाना–(हिं०क्रि०) देखो पुछवाना।
पुछार–(हिं०पु०) मयूर, मोर।
पुंछाला–(हिं०पुं०) पोंछ की तरह जोडी हुई वस्तु, पुछल्ला, अनावश्यक वस्तु जो किसी के साथ जोडी हुई हो आश्रित, चापलूस, साथ न छोडनेवाला
पुंज–(हिं० पु०) समूह, ढेर, देखो पुञ्ज।
पुजा–(हिं०पु०) समूह, गुच्छा, पूला।
पुंजी–(हिं०स्त्री०) देखो पूंजी।
पुड–(हिं०पुं०) दक्षिण की एक जाति जो पहिले रेशम के कीडे पालने का काम करती थीं, देखो पुण्ड।
पुंडरी–(हिं०पु०) भूमि कमल।
पुध्वज–(स०पु०) मूषिका चूहा।
पुमन्त्र–(स०पु०) वह मन्त्र जिसके अन्त में नमः या 'स्वाहा' हो।
पुयान–(स०नपु०) वह सवारी जिसको मनुष्य खीचते हो।
पुंरत्न–(सं० नपु०) पुरुषो में श्रेष्ठ।
पुंराशि–(स० स०) मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशिया।
पुंलक्षणा–(स० स्त्री०) पुरुष लक्षणा नपुसक स्त्री।
पुंलिङ्ग–(स० नपु०) पुरुष का चिह्न, शिश्न, पुरुष वाचक शब्द।
पुंवत्–(स० अव्य०) पुरुष की तरह, पुरुष वाची शब्द की तरह।
पुवत्सा–(स०स्त्री०) वह स्त्री जिसके केवल पुरुष सन्तान हों।
पुवृष–(स० पु०) छछूंदर।
पुवेश–(स०पु०) पुरुष का वेश, (वि०) पुरुष की तरह वेश धारी।
पुश्चल–(स०पु०) व्यभिचारी पुरुष।
पुश्चली–(स०स्त्री० व्यभिचारिणी, असती, कुलटा, छिनार।
पुश्चलीय–(अ०पु०) वेश्या पुत्र, कुलटा का पुत्र।
पुस–(हिं०पु०) पुरुष, मर्द।
पुंसवन–(स०नपु०) दुग्ध, दूध, द्विजों के सोलह सस्कारों में से एक जो गर्भाधान के तीसरे महीने में किया जाता है, वैष्णवों के एक व्रत का नाम।
पुंसवान्–(हिं०वि०) पुत्रवाला।
पुस्कामा–(स०स्त्री०) पुरुष की अभिलाषा करनेवाली स्त्री।
पुस्कोकिल–(स०पु०) नर कोयल पक्षी।
पुंस्त्व–(स०नपुं०) पुरुषत्व, पुरुष का धर्म, शुक्र, वीर्य।
पुआ–(हिं० पु०) चाशनी में पागी हुई आटे की मोटी रोटी या टिकिया।
पुआई–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष।
पुआल–(हिं० पुं०) एक प्रकार का जगली वृक्ष, देखो पयाल।
पुकार–(हिं० स्त्री०) रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट, दुहाई, अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये किसी को ऊंचे स्वर से सम्बोधन करना, किसी को नाम लेकर बुलाने की क्रिया, हाँक, माँग की चिल्लाहट, किसी पर पड़े हुए दुःख या हानि का निवेदन, नालिश, फरियाद, गोहार।
पुकारना–(हिं०क्रि०) रक्षा के लिये चिल्लाना, गोहार लगाना, घोषित करना चिल्ला कर कहना, रटना, धुन लगाना, किसी को नाम लेकर बुलाना, आवाज़ लगाना, किसी से चिल्ला कर कुछ मागना, चिल्ला कर कहना, नालिश या फरियाद करना।
पुक्कश–(स०पु०, अधम, नीच, चाण्डाल।
पुक्कस–(स०पु०) देखो पुक्कश।
पुक्कसी–(स०स्त्री०) नील का पौधा।
पुख–(हिं०पु०) देखो पुष्य।
पुखता–(हिं०वि०) देखो पुख्ता।

पुखर-(हिं०पु०) पुष्कर, तालाब।
पुखराज-(हिं० पु०) पीले रंग का एक रत्न।
पुच्य-(हिं०पु०) देखो पुष्य।
पुगना-(हिं०क्रि०) देखो पूजना।
पुगाना-(हिं०क्रि०) पूरा करना, पुजाना।
पुङ्ख-(स० पु०) बाण का पिछला भाग जिसमे पर खोसे रहते हैं।
पुङ्खित-(सं० वि०) वह बाण जिसमे पर लगे हो।
पुञ्ज-(स०नपु०पु०) समूह, ढेर।
पुद्गल-(स० पु०) आत्मा।
पुङ्गव-(स०वि०) किसी शब्द के अन्त में जोड़ने से इसका अर्थ श्रेष्ठ होता है।
पुङ्गवकेतु-(स० पु०) वृषध्वज, शिव।
पुचकार-(हि० स्त्री०) प्यार जताने के लिये ओठो से निकाला हुआ चूमने का शब्द, चुमकार।
पुचकारना-(हिं०क्रि०) चूमने का शब्द निकालकर प्यार दिखलाना, चुमकारना।
पुचकारी-(हि० स्त्री०) प्यार दिखलाने के लिये ओठों से निकाला हुआ चूमने का शब्द, चुमकार।
पुचारना-(हिं० क्रि०) पोतना, पुचारा देना।
पुचारा-(हिं०पु०) किसी वस्तु के ऊपर पानी से तर किया हुआ कपड़ा फेरना, वह गीला कपड़ा जिससे पोता या पुचारा दिया जाता है, पतला लेप करने की क्रिया, पानी में घोली हुई कोई वस्तु जिससे लेप किया जाता है, हलका लेप या तह, उत्साह बढाने की बात, झूठी प्रशंसा, चापलूसी, प्रसन्न करने के लिये मीठे वचन दगी हुई बन्दूक या तोप की गरम नली को ठंढा करने के लिये उस पर गीला कपड़ा रखना।
पुच्छ-(सं० पु०, नपु०) लांगूल, पूछ, दुम, किसी वस्तु का पिछला भाग, रोवेंदार पूंछ, पुच्छकण्टक-वृश्चिक, बिच्छू।
पुच्छटी-(स०स्त्री०) अंगुली मटकाना।
पुच्छन्तक-(स० पु०) तक्षक वंश का एक नाग।
पुच्छफल-(स० पु०) बेर का पेड़।
पुच्छमूल-(स०नपु०) पूछ की जड़।
पुच्छल-(स०वि०) पूछदार, दुमदार।
पुच्छलतारा-(हि० स्त्री०) देखो केतु।
पुच्छिका-(स० नपु०) जगली उड़द।
पुच्छिन्-(स० पु०) मदार, मुरगा, (वि०) दुमदार।
पुछल्ला-(हिं० पु०) अश्रित, चापलूस, खुशामद से पीछे लगा रहने वाला, बराबर पीछे लगा रहने वाला, साथ न छोड़ने वाला, अनावश्यक वस्तु जो साथ में जुटी हो, लम्बी दुम, पूछ की तरह की कोई वस्तु।
पुछार-(हिं०पु०) पूछने वाला, आदर करने वाला, खोज खबर लेने वाला।
पुछिया-(हिं०पु०) दुम्बा मेढा।
पुछैया-(हिं० पु०) पूछने वाला।
पुजना-(हि० क्रि०) सम्मानित होना, पूजा जाना।
पुजवाना-(हिं० क्रि०) पूजा करने में प्रवृत्त करना, आदर सम्मान कराना, पूरा कराना।
पुजाई-(हि० स्त्री०) पूजने का भाव या क्रिया, पूजने की मजदूरी, पूजा करने की क्रिया या भाव, पूजा करने की मजदूरी।
पुजाना-(हिं०क्रि०) पूजा मे प्रवृत्त करना अथवा नियुक्त करना, दूसरे से पूजा कराना, आदर सम्मान कराना, भेंट चढवाना, रुपया वसूल करना, घाव चोट आदि के गड्ढे भराना, पूर्ति करना, कमी दूर करना, सफल करना।
पुजापा-(हि० पु०) पूजा की सामग्री, पूजा की सामग्री रखने का पात्र।
पुजारी-(हि० पु०) देवमूर्ति की पूजा करने वाला, वह जो पूजा करता हो।
पुजाड़ी-(हि० [illegible]) पूजा की सामग्री रखने का पात्र।
पुजेरी (हि० पु० देखो पुजारी।
पुजैया-(हिं० पु०) पूजा करने वाला, पूरा करने या भरनेवाला, देखो पुजाई।
पुजौरा-(हि० पु०) पूजा के समय देवता को अर्पण करने की सामग्री, पूजा।
पुञ्ज-(स०पु०) समूह, राशि, ढेर।
पुञ्जराज-(स० पु०) दलपति, सरदार।
पुञ्जिक-(स०पु०) जमी हुई बरफ।
पुट-(स०नपुं०) जायफल, घोडे की टाप, कटोरा, औषधि पकाने का पात्र, अन्तःपट, एक वर्णवृत्त का नाम, दोना, कटोरा, ढापने की वस्तु, घेरा, सपुट, (हि०पुं०) किसी वस्तु में हलका मेल देने के लिये डाला हुआ छींटा, हलका छिडकाव, बहुत हलका मेल देने के लिये घुले हुए रग मे या किसी पतली चीज़ मे डुबाना।
पुटक-(स० नपुं०) पद्म, कमल।
पुटकन्द-(स०पु०) वाराहीकन्द।
पुटकित-(स०वि०) आबद्ध, बँधा हुआ।
पुटकिनी-(हिं०स्त्री०) पद्मिनी, कमलिनी, पद्म समूह, पद्मलता।
पुटकी-(हि०स्त्री०) दैवी आपत्ति, आफत, गजब, आकस्मिक मृत्यु, पोटली, गठरी, तरकारी आदि के रसे को गाढा करने के लिये मिलाया हुआ बेसन या आटा।
पुटग्रीव-(स०पुं०) गगरी, ताबे का घड़ा।
पुटपाक-(स० पु०) पत्ते के दोने मे रखकर औषधि पकाने की क्रिया, किसी मिट्टी आदि के पात्र में औषधि रखकर तथा उसका मुख अच्छी तरह से बन्द करके गड्ढे के भीतर गोहरा रख कर पकाने की विधि।
पुटभेद-(स० पु०) नदी आदि का चक्राकार जलवर्त, पानी का भँवर।
पुटभेदक-(स०नपु०) परतदार पत्थर।
पुटरिया-(हि० स्त्री०) देखो पोटली।
पुटरी-(हि० स्त्री०) देखो पोटली।
पुटास-(हि०पु०) देखो पोटास।
पुटिका-(स० स्त्री० इलायची, सपुट, पुड़िया।
पुटित-(स०त्रि०) पटा हुआ, सिला हुआ, बंद सकुचित, सिकुड़ा हुआ।
पुटिनी-(स०स्त्री० फेनी नाम की मिठाई।
पुटी-(स०स्त्री०) कौपीन, लगोटी, छोटा कटोरा, छोटा दोना पुड़िया।
पुटीन-(अ०पुं०) एक प्रकार का मसाला

जो छेद दरार आदि के भरने में काम आता है, किवाड़ों के शीशे भी इसीसे बैठाये जाते हैं।

पुटोदक-(स०पु०) नारिकेल, नारियल।

पुट्ठा-(हिं०पु०) चूतड़ का ऊपरी कड़ा भाग, पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग, चौपायो का चूतड़, घोडे की सख्या के लिये शब्द।

पुट्ठी- (हिं०स्त्री०) गाड़ी की पहिये के घेरे का वह भाग जिसमें आरे जडे रहते हैं।

पुठवार-(हिं०क्रि०वि०) पीछे, बगल में,

पुठवाल-(हिं० पु०) पृष्ठरक्षक,मददगार, चोरो के दल का वह मनुष्य जो सेंध के मुह पर पहरा देता है।

पुड़ा-(हि०पु०) बड़ी पुड़िया या बडल, ढोल मढ़ने का चमड़ा।

पुड़िया-(हिं०स्त्री०)आधार स्थान,भण्डार-घर, खान, मोड़ कर लपेटा हुआ कागज या पत्ता जिसमें कोई वस्तु रक्खी जाय, पुड़िया में लपेटी हुई औषधि की एक खुराक या मात्रा।

पुड़ी-(हि०स्त्री०)ढोल मढने का चमड़ा।

पुण्ड-(स०पु०) माथे पर लगाने का तिलक,टीका,दक्षिण देश की एक जाति

पुण्डरीक-(सं० नपु०) सफेद कमल, एक प्रकार का कुष्ठ, रेशम का कीड़ा, सफेद सर्प, दौने का पौधा, कमण्डलु, एक प्रकार का धान, सफेद आम,आग, बाण,सफेद हाथी,एक प्रकार की ऊख, घी, चीनी, एक अप्सरा का नाम।

पुण्डरीकाक्ष-(स०नपु०)विष्णु भगवान्।

पुण्डरीयक-(स०नपु०) स्थल कमल।

पुण्ड्र-स०पु०)श्वेत कमल,पाकर का वृक्ष, तिल का पौधा, तिलक, टीका, एक प्रकार की ऊख, माधवी लता, कृमि, कीड़ा, पुण्ड्र केलि-हाथी, पुण्ड्र वर्धन-पुड्र देश की राजधानी।

पुण्य-(स०नपु०)धर्म का कार्य, भला काम, शुद्धि, शुभ कार्य का सचय (वि०) धर्म विहित, पवित्र, शुभ, सुन्दर, अच्छा, सुगन्धित।

पुण्यक-(स० नपुं०) पुण्य देने वाला व्रत, विष्णु।

-पुण्य कर्ता-(स० पु०) पुण्य या शुभ कार्य करने वाला।

पुण्य कर्म-(स०नपु०) शुभ कर्म, जिस कार्य के करने से पुण्य होता है।

पुण्य काल-(स०पु०) शुभ समय, दान पुण्य करने का काल।

पुण्य कीर्तन-(स०पु०) विष्णु, (नपुं०) पुण्य कथन।

पुण्य कीर्ति-(स० पु०) पुण्य श्लोक जिसके कीर्तन से पुण्य होता है।

पुण्य कृत्-(स०वि०)पुण्यकर्ता, धार्मिक।

पुण्य क्षेत्र-(स० नपु०) पुण्य भूमि, आर्यावर्त, जहाँ जानेसे पुण्य होता है।

पुण्य गन्ध-(स०पु०) पवित्रगन्ध, चम्पा।

पुण्य गन्धि-(स०वि०) पवित्रगन्ध युक्त।

पुण्य गर्भा-(स०स्त्री०) गङ्गा।

पुण्य गृह-(स०नपु०) पुण्यशाला,पवित्र गृह

पुण्य जन-(स०पुं०)सज्जन,धर्मात्मा,यक्ष।

पुण्य जनेश्वर-(स० पुं०) कुबेर।

पुण्यता-(स०स्त्री०) पुण्य कर्म का भाव, पुण्यत्व।

पुण्य दर्शन-(स०वि०) जिसके दर्शन का शुभ फल हो (पु०) नीलकण्ठ पक्षी।

पुण्य नामन्-(स०पुं०) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

पुण्य प्रताप-(स०पु०) पुण्य बल से प्रतापवान्।

पुण्य प्रद-(स०वि०)पुण्य देने वाला।

पुण्य फल-(स०पु०) लक्ष्मी के रहने का वन (नपु०) पुण्य के अनुष्ठान का फल।

पुण्य भाज-(स० वि०) पुण्यात्मा।

पुण्य भूमि-(स०स्त्री०) आर्यावर्त देश, पुत्रवती स्त्री।

पुण्य रात्र-(स० पु०) पवित्र रात।

पुण्य लोक-(स० पु०) पुण्य करके चन्द्रलोक की प्राप्ति, धार्मिक मनुष्य।

पुण्य वत्-(स०वि०) पुण्ययुक्त, धर्मात्मा।

पुण्यवान्-(हि० वि०) धर्मात्मा, पुण्य करने वाला।

पुण्य शकुन-(सं० नपु०) शुभ शकुन या चिह्न।

पुण्य शाला-(स०स्त्री०)पवित्र गृह,पाक गृह

पुण्य शील-(स० वि०) पुण्य स्वभाव, अच्छे चाल चलन वाला।

पुण्यश्लोक-(स०पु०) विष्णु, युधिष्ठिर, राजा नल, (वि०) पुण्य चरित्र, पवित्र आचरण वाला।

पुण्य श्लोका-(स०स्त्री०) द्रौपदी,सीता।

पुण्य सम-(स० अव्य०) पुण्य तुल्य, पुण्य सदृश।

पुण्य स्थान-(स० नपु०) पवित्र स्थान, तीर्थ स्थान।

पुण्या-(स०स्त्री०) तुलसी।

पुण्याई-(हि०स्त्री०) पुण्य का फल, पुण्य का प्रभाव।

पुण्यात्मा-(स०वि०) पुण्यशील,धर्मात्मा, जो पुण्य करने मे प्रवृत्त हो।

पुण्यालङ्कृत-(स०वि०) पुण्यात्मा।

पुण्याह-(स०स्त्री०) पुण्यदिन,मगल दिवस

पुण्याह वाचन-(स०नपु०) देवादि कर्म में मगल के निमित्त 'पुण्याह' इस शब्द का तीन बार उच्चारण।

पुण्योदय-(स०पु०)पुण्य कर्म का उदय।

पुतरिया, पुतरी-(हि०स्त्री०)देखो पुतली

पुतला-(हिं० पु०) लकड़ी, मिट्टी, धातु कपडे आदि की बनी हुई पुरुष की मूर्ति।

पुतली-(हि०स्त्री०) लड़की, मिट्टी, धातु अथवा कपडे की की बनी हुई स्त्री की आकृति, गुड़िया, आँख के बीच का काला भाग, घोडे की टाप का निकला हुआ भाग, कपड़ा बुनने की कल, किसी स्त्री की सुकुमारता सूचित करने का शब्द, पुतली फिरजाना-आँखें पथरा जाना, पुतलीघर-कपड़ा बुनने की मिलें या कारखाना।

पुताई (हि०स्त्री०) पोतने की क्रिया या भाव, दीवार आदि पर मिट्टी गोबर चूना आदि पोतने का काम, पोतने की मजदूरी।

पुतारा-(हि० पु०) पोतने के लिये तर किया हुआ कपड़ा।

पुत्त-(हिं० पु०) देखो पुत्र, वेटा।

पुत्तरी–(हिं० स्त्री०) पुत्री, बेटी।
पुत्तल, पुत्तलक-(स० पु०) पुतला।
पुत्तलिका–(सं०स्त्री०) लड़की,मिट्टी, धातु, कपडे आदि की बनी हुई गुड़िया।
पुत्तली–(सं०नपुं०) प्रतिमूर्ति पुतली।
पत्तिका–(स० स्त्री०) एक प्रकार की मधुमक्खी।
पुत्र–(स०पु०) तनय, तनुज, लड़का, बेटा
पुत्रक–(स० पु०) पुत्र, बेटा, शरभ, टिड्डी, फतिंगा, दौने का पौधा, एक प्रकार का चूहा।
पुत्रकाम–(स० वि०) पुत्राभिलाषी।
पुत्रकामेष्टि–(स०स्त्री०) पुत्र प्राप्त करने के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ।
पुत्रकृतक–(स०पुं०) दत्तक पुत्र।
पुत्रकृत्य–(स०नपु०) पुत्रका कार्य पुत्रत्व।
पुत्रघ्नी–(सं०स्त्री०) पुत्र घातिनी स्त्री।
पुत्रजात–(स०वि० , जिसको पुत्र उत्पन्न हुआ हो।
पुत्रजीव–(स०पु०) पितौंजिया नामक वृक्ष जिसकी छाल और बीज औषधियों मे प्रयोग होते हैं।
पुत्रता–(सं० स्त्री०) पुत्र का धर्म।
पुत्रदा–(स०स्त्री०) लक्ष्मण कन्द, सफेद भटकटैयां।
पुत्रपौत्र–(स०नपु०)लड़के पोतो का समुदाय
पुत्रप्रदा–(सं०स्त्री०) सफेद भटकटैया।
पुत्रभाव–(स०पु०) पुत्रत्व, पुत्रता।
पुत्रवत् (स०वि०) पुत्र तुल्य पुत्र के सदृश
पुत्रवती–(स०वि०)जिसके पुत्र हो,पुत्रवाली
पुत्रवत्सल–(स० वि०) पुत्र के प्रति अधिक प्रेम युक्त।
पुत्रवधू–(स०स्त्री०) पुत्र की पत्नी पतोहू।
पुत्रश्रृङ्गी–(स० स्त्री०) मेढासिंघी।
पुत्रसख–(स०पु०) पुत्र का मित्र।
पुत्रहत–(स० वि०) जिसका पुत्र मर गया हो, (पु०) वसिष्ठ।
पुत्रिका–(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, सुता, तनुजा, पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या, पुतली, गुड़िया, स्त्री का चित्र, आँख की पुतली , पुत्रि का पुत्र–बेटी का बेटा, नाती।
पुत्री–(स०पु०) पुत्र युक्त, पुत्रवान् (स्त्री०) सुता, कन्या, बेटी।
पुत्रीय-(स०वि०) पुत्र सबन्धी।
पुत्रेष्टि–(स० स्त्री०) वह यज्ञ जो पुत्र की की कामना से किया जाता है।
पुत्रोत्सव–(स०पु०) पुत्र के जन्म दिन में किया जाने वाला उत्सव।
पुदीना–(फा० पु०) जमीन पर फैलने वाला एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों में अच्छी सुगन्ध होती है, इसको लोग चटनी आदि में पीस कर मिलाते हैं।
पुद्गल–(स० पु०) देह, शरीर, आत्मा परमाणु गन्ध तृण, रामकपूर।
पुनः–(हि० अव्य०) दोबारा, दूसरी बार, फिर, अनन्तर, उपरान्त, पीछे।
पुनःपराजय–(स०पु०) फिर से हार।
पुनःपाक–(सं०पु०) दूसरी बार पाक।
पुनः पुनः–(स० अव्य०) बारबार।
पुनःसस्कार–(स० पुं०) दूसरी बार उपनयन आदि सस्कार।
पुन–(हिं०पु०) पुण्य, धर्म।
पुनना–(हिं०क्रि०) भला बुरा कहना।
पुनरपगम–(स०पु०) फिर से जाना।
पुनरपि–(स०अव्य०) फिर से।
पुनरवसु–(हिं०पुं०) देखो पुनर्वसु।
पुनरभिधान–(स०नपु०) दुबारा कथन।
पुनरागत–(स० वि०) प्रत्यागत, दुबारा आया हुआ।
पुनरागम–(स०पु०) फिर से आना।
पुनरागमन–(स० नपु०) द्वितीय बार आगमन, फिर से आना, ससार में फिर जन्म लेना।
पुनरादि–(स० वि०) प्रथम, पहिला।
पुनरायन–(स० नपु०) पुनरागमन।
पुनरावर्त–(स० नपु०) पुनरागमन, चक्कर।
पुनरावर्ती–(स०वि०)बारबार आनेवाला, फिर जन्म लेने वाला।
पुनरावृत्त-(स०वि०) फिर से कहा हुआ, फिर से घूमकर आया हुआ।
पुनरावृत्ति–(स०स्त्री०) पुनर्जन्म, फिर से जन्म लेना, दोहराना, फिर से घूम कर आना, किये हुए काम को फिर से करना।
पुनराहार–(स० पु०) दुबारा भोजन।
पुनरुक्त–(स०वि०) फिर से कहा हुआ
पुनरुक्तता– (स० स्त्री०) साहित्य में वह दोष जो एक वाक्य को दुबारा कहने से होता है।
पुनरुक्तवदाभास–(स०पु०) वह अलकार जिसमें शब्द सुनने से पुनरुक्ति सी जान पडे परन्तु वस्तुतः ऐसा न हो।
पुनरुक्ति–(स० स्त्री०) एक बार कही हुई बात को फिर से कहना, कहे हुए वचन को दोहराना।
पुनरुत्पत्ति–(स० स्त्री०) पुनर्जन्म।
पुनर्गमन–(स० नपु०) दुबारा गमन, दोहराकर जाना।
पुनर्ग्रहण–(स० नपु०) फिर से लेना, पुनरुक्ति।
पुनर्जन्म–(स० नपु०) फिर से उत्पत्ति, एक शरीर छूटने पर दूसरी शरीर धारण करना।
पुनर्जात–(स०वि०) फिर से उत्पन्न।
पुनर्नवा–(स० स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ चौराई की पत्तियों के समान होती हैं, गदहपूरना।
पुनर्भव–(स० पु०) नख, नाखून, फिर से होना।
पुनर्भाव–(स० पु०) मृत्यु के बाद फिर से जन्म।
पुनर्भू–(सं०स्त्री०) वह विधवा स्त्री जिसका विवाह पति के मरने पर दूसरे पुरुष से हो
पुनर्मृत्यु–(स० पु०) दुबारा मृत्यु।
पुनर्यज्ञ–(स० पु०) फिर से किया हुआ यज्ञ।
पुनर्लाभ–(स० पु०) खोई हुई वस्तु को फिर से पाना।
पुनर्वचन–(स० नपु०) किसी वाक्य का बारबार प्रयोग।
पुनर्वसु–(स० पु०) विष्णु, शिव, कात्यायन मुनि, सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र, एक लोक।
पुनर्विवाह–(स०पु०) दुबारा विवाह।

पुनि-(हिं०क्रि०वि०) फिर फिर से, दुबारा
पुनी-(हिं०स्त्री०) पूर्णिमा, पूनों, पूनो (पु०) पुण्यात्मा, धर्मात्मा।
पुनीत-(हिं०वि०) पवित्र, शुद्ध, पाक।
पुन्न-(हिं०पु०) देखो पुण्य।
पुन्नाग-(सं०पु०) एक बड़ा फूल का वृक्ष, सुलतान चम्पा, जातिफल, श्वेत पद्म, सफेद कमल, जायफल।
पुन्नाट-(सं०पु०) चकवट का पौधा।
पुन्य-(स०पु०) देखो पुण्य।
पुपली-(हि०स्त्री०) बॉस की पतली नली।
पुप्पुट-(स०पु०) तालु का एक रोग।
पुप्फुस-(स० पु०) कमलगट्टे का छत्ता।
पुमान्-(स० पु०) पुरुष, मर्द, नर।
पुरः-(हि० अव्य०) आगे, पहिले।
पुरःसर-(हि० वि०) अग्रगण्य, अगुआ, सगी, साथी, साहित (पु०) अग्रगमन।
पुर-(स० नपु०) नगर, शहर, कसबा, गृह, घर, दुर्ग, गढ, किला, गुग्गुल, राशि, समूह, एक प्रकार के दैत्य, चमड़ा, पीली कटसरैया, देह, शरीर, कोठरी, अटारी, लोक, नक्षत्र, (वि०) पूर्ण, भरा हुआ (हिं०पु०) चरसा, कुवे से पानी निकालने का चमडे का बड़ा डोल, पुरवट।
पुरइन-(हि० स्त्री०) कमल का पत्ता, कमल।
पुरखा-(हि० पु०) पूर्वज, पूर्व पुरुष, कुल का वृद्ध पुरुष, बड़ा बूढा, पुरखे तर जाना-पुरखों की परलोक में उत्तम गति होना।
पुरग-(स० वि०) नगर में जाने वाला।
पुरगुर-(हिं० पु०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी के खिलौने बनाये जाते हैं।
पुरचक-(हिं०स्त्री०) चुमकार, पुचकार, प्रोत्साहन, बढावा, प्रेरणा, उसकान, पृष्ठपोषण, तरफदारी, समर्थन।
पुरजा-(फा० पु०) खण्ड, टुकड़ा, अवयव, अग, अश, धज्जी, कतरन, पक्षियों के महीन पर, पुरजे पुरजे करना-टुकडे टुकडे करना, चलता पुरज़ा-निपुण, होशियार, दुनियादार।
पुरजित्-(स०पु०) त्रिपुरारि, शिव।
पुरञ्जन-(स० पु०) जीव।
पुरञ्जनी-(स० स्त्री०) बुद्धि।
पुरञ्जय-(स० पु०) जनमेजय के पिता का नाम, ऐरावत हाथी के एक पुत्र का नाम (वि०) पुर को जीतने वाला।
पुरट-(स० नपु०) सुवर्ण, सोना।
पुरण-(स० पु०) समुद्र, सागर।
पुरतटी-(स० स्त्री०) छोटा हाट, छोटी बाज़ार।
पुरत्राण-(स० पु०) प्राकार, परकोटा, शहरपनाह।
पुरद्वार-(स० नपु०) शहरपनाह का फाटक।
पुरद्विष्-(स० पु०) शिव, महादेव।
पुरनियां-(हि० वि०) वृद्ध बुड्ढा।
पुरनी-(हिं० स्त्री०) अगूठे में पहिरने का छल्ला, तुरुही, बदूक का गज।
पुरन्दर-(सं० पु०) इन्द्र, ज्येष्ठा नक्षत्र, मिर्च, (वि०) नगर या घर को तोड़ने वाला, पुरन्दर पुरी-इन्द्रपुरी।
पुरन्ध्री-(स० स्त्री०) कुटुम्बिनी।
पुरपाल-(स० पु०) नगरपाल, कोतवाल।
पुरबला, पुरबुला-(हिं०वि०) पूर्व का, पहिले का, पूर्व जन्म सबधी।
पुरबिया-(हिं० वि०) पूर्व देश में उत्पन्न, पूरब का।
पुरबिहा-(हिं० वि०) देखो पुरबिया।
पुरभिद्, पुरमथन-(सं०पु०) शिव, महादेव।
पुरमार्ग-(स० पु०) नगर का मार्ग।
पुररक्ष-(स० पु०) नगर का रक्षक।
पुरला-(सं० स्त्री०) दुर्गा।
पुरवइया-(हि० स्त्री०) देखो पुरवाई।
पुरवट-(हिं० पु०) खेत सींचने के लिये कुए से पानी खींचने का चमडे का बड़ा डोल, मोट, चरसा।
पुरवना-(हिं० क्रि०) पूरा करना या होना, भरना, पुजाना, पर्याप्त होना, साथ पुरवना-साथ देना।
पुरवा-(हि० पु०) छोटा गाँव, खेड़ा, पुरा, पूर्व दिशा से चलने वाली हवा, पशुओं का गला फूलने का एक रोग, मिट्टी का कुल्हड़।
पुरवाई-(हि० स्त्री०) पूर्व दिशा से चलने वाली हवा।
पुरवासी-(सं० वि०) नगर में रहने वाला, शहरी।
पुरवैया-(हिं० वि०) देखो पुरवाई।
पुरशासन-(स० पु०) महादेव, शिव।
पुरश्चरण-(स० नपु०) किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहिले उपाय सोचकर अनुष्ठान करना, किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के निमित्त नियम पूर्वक मन्त्र का जप या स्तोत्र पाठ।
पुरषा-(हि० पु०) देखो पुरखा।
पुरसा-(हि० पु०) ऊचाई या गहराई की एक नाप जो प्रायः साढे चार या पाच हाथ की होती है।
पुरस्कार-(स० पु०) आदर, पूजा, प्रधानता, स्वीकार, उपहार, पारितोषिक, इनाम, सींचने की क्रिया।
पुरस्कृत-(स० वि०) पूजित, स्वीकृत, आगे किया हुआ, जिसको उपहार मिला हो।
पुरःसर-(स० स्त्री०) अगुआ, सगी, साथी (वि०) आगे का, पहिला।
पुरहत-(हि० पु०) वह अन्न द्रव्य आदि जो मगल कार्य में पुरोहित या प्रजा को पहिले दिया जाता है, आखत।
पुरहन-(सं० पु०) विष्णु, शिव।
पुरहा-(हिं० पु०) वह मनुष्य जो पुरवट का पानी गिराने के लिये नियुक्त रहता है।
पुरहूत-(हिं० पु०) देखो पुरुहूत।
पुरा-(स० अव्य०) प्राचीन काल में, पुराने समय में, (वि०) प्राचीन, पुराना (हि० पु०) पुरवा, गॉव, बस्ती।
पुराकल्प-(स० पु०) प्राचीन कल्प, पहिले का कल्प, प्राचीन काल, एक प्रकार का अर्थवाद जिसके अनुसार प्राचीन समय का इतिहास कहकर किसी विधि के करने के लिये लोग प्रवृत्त किये जाते हैं।

पुराकृत–(स० वि०) पूर्व जन्म में किया हुआ, पहिले समय में किया हुआ, पूर्व जन्म का पाप।
पुराग–(स० वि०) पूर्वगामी।
पुराज–(स० वि०) जो पूर्व काल में हुआ हो।
पुराण–(स० पु०) शिव, महादेव, प्राचीन आख्यान पुरानी कथा, (वि०) पुराना, हिन्दुओं का धर्म संबंधी आख्यान ग्रन्थ जिनमें संसार की सृष्टि, लय, प्राचीन ऋषि मुनियों और राजाओं की कथा रहती है, परंपरागत कथासंग्रह पुराण अठारह हैं इनमें विष्णु, ब्रह्माण्ड, मत्स्य आदि महापुराणों में, सृष्टि तत्व, पुनःसृष्टि और लय, देव और पितरों की वंशावली, मन्वन्तर का अधिकार तथा सूर्य और चन्द्रवंशीय राजाओं का संक्षित वर्णन पाया जाता है, इन अठारहो पुराणों के नाम–ब्रह्मपुराण, पाद्म, वैष्णव, शैव या वायु, भविष्य, मार्कण्डेय, आग्नेय, नारदीय, भागवत, ब्रह्मवैवर्त, लैङ्ग, वाराह, स्कान्द, वामन, कौर्म, मात्स्य, गारुड़ और ब्रह्माण्ड हैं।
पुराणकिट्ट–(स० नपु०) लौहमल, कौसीस।
पुराण पुरुष–(स० पु०) विष्णु।
पुराणप्रोक्त–(स० वि०) जो पुराण में कहा गया हो।
पुराणवित्–(स०वि०) पुराण जानने वाला
पुराणान्त–(स०पु०) पुराण का शेष, यम।
पुरातत्व–(स० पुं०) प्राचीन काल संबंधी विद्या।
पुरातन–(स०, पु०) विष्णु (वि०) प्राचीन, पुराना।
पुरातल–(स० नपु०) तलातल, सात पाताल के नीचे की भूमि।
पुराधिप–(स०पु०) नगर का अध्यक्ष।
पुरान–(हिं० पु०) देखो पुराण (वि०) पुराना।
पुराना–(हिं० वि०) जो बहुत दिनो से चला आता हो, प्राचीन काल का, जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो, जीर्ण, जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो, परिपक्व, पुरातन (हिं० क्रि०) पूरा करना, भरना, अनुसरण करना, पालन करना, इस प्रकार बाँटना कि सबको मिल जावे। अँटाना, पुजवाना, भरनां, किसी घाव या गड्ढे की खाली जगह को भरना, पुराना खुर्राट–वृद्ध, अनुभवी मनुष्य, पुराना घाघ–बड़ा धूर्त।
पुरारातिं, पुरारि–(स० पु०) शिव, महादेव।
पुराल–(हिं०पु०) देखो पयाल।
पुरावसु–(स०पु०) भीष्म।
पुरावित्–(स०वि०) पुराण जानने वाला।
पुरावृत्त–(स० नपु०) पुराना वृत्तान्त, इतिहास, पुराना हाल।
पुरि–(स०स्त्री०) पुरी, नदी, शरीर, राजा, एक प्रकार के सन्यासी।
पुरिखा–(हिं० पु०) देखो पुरखा।
पुरी–(स० स्त्री०) नगरी, शहर, जगन्नाथपुरी।
पुरीतत्–(स०पु०) अन्त्र, आँत।
पुरीमोह–(स०पु०) धतूरा।
पुरीष–(स०नपु०) विष्ठा, मल, गू।
पुरीषम–(स०पु०) माष, उड़द।
पुरु–(सं०पुं०) देवलोक, दैत्य, वह पर्वत जिस पर पुरूरवा का जन्म हुआ था, शरीर, पराग।
पुरुकृत्–(स०वि०) कर्म कर्ता।
पुरुक्ष–(स० वि०) वह जिसके पास बहुत अन्न हो।
पुरुख–(हिं०पु०) देखो पुरुष।
पुरुखा–(हिं०पु०) देखो पुरखा।
पुरुचेतन–(स० वि०) अनेक विषयों को जानने वाला।
पुरुजू–(स० पु०) पुरुराज के एक पुत्र का नाम।
पुरुजित्–(स०पु०) विष्णु।
पुरुदिन–(स०नपु०)बहु दिन,अनेक दिन।
पुरुप्रशस्त–(स० वि०) अनेक प्रकार से स्तुति किया हुआ।
पुरुभुज–(स०वि०) बहुत खाने वाला।
पुरुभूत–(स०पु०) पुरुहूत, इन्द्र।
पुरुमित्र–(स०पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
पुरुरुच्–(स०वि०) बहुत चमकीला।
पुरुरूप–(स० वि०) अनेक रूप धारण करने वाला।
पुरुष–(स०पु०) मनुष्य, आदमी, सांख्य के अनुसार प्राणियों का आत्मा स्वरूप, विष्णु, शिव, जीव, पूर्वज, पति, मनुष्य का शरीर या आत्मा, सूर्य, चेतना धातु, गुग्गुल, पुन्नाग वृक्ष, पारा, तिलक, व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम अथवा क्रियापद अपने लिये अथवा अन्य के लिये प्रयोग किया गया है–यथा "मैं" उत्तम पुरुष, "तुम" मध्यम पुरुष और "वह" प्रथम पुरुष कहलाता है।
पुरुषकार–(स० पु०) पुरुष की कृति, पौरुष, उद्योग।
पुरुषकुञ्जर–(स०पु०) पुरुषश्रेष्ठ।
पुरुषकेशरी–(स० पु०) नरसिंह रूपी विष्णु।
पुरुषग्रह–(स० पु०) फलित ज्योतिष के अनुसार मंगल, सूर्य और बृहस्पति।
पुरुषच्छन्दस्–(सं० पु०) दो पद का छन्द।
पुरुषता–(स० स्त्री०) पुरुषत्व, पुरुष का भाव।
पुरुषत्व–(स०नपु०) देखो पुरुषता।
पुरुष नक्षत्र–(स०पु०) ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा और पुष्य नक्षत्र।
पुरुषनाग–(स० पु०) पुरुष श्रेष्ठ।
पुरुषनाथ–(स०पु०) नरपाल, सेनापति।
पुरुष पुङ्गव–(सं० पु०) पुरुष श्रेष्ठ।
पुरुष पुण्डरीक–(स० पु०) देखो पुरुष पुङ्गव।
पुरुषपुर–(सं०नपु०) प्राचीन गान्धार राज्य की राजधानी, इसका वर्तमान नाम पेशावर है।

पुरुषमुख-(स० वि०) पुरुष के समान मुख वाला।

पुरुषमेध-(स० पु०) अश्वमेध, गोमेध आदि के समान एक यज्ञ जो वैदिक काल में किया जाता था, इसमें नर बलि दी जाती थी।

पुरुषराज-(स०पुं०) पुरुषश्रेष्ठ।

पुरुषराशि-(स०स्त्री०) ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुम्भ राशि।

पुरुषरूप-(स० नपु०) पुरुषाकार।

पुरुषरेषण-(स० वि०) पुरुष की हत्या करने वाला।

पुरुषवध-(सं० पुं०) नरहत्या।

पुरुषवत्-(स० वि०) मनुष्य के समान।

पुरुषवाह-(स० पुं०) नरवाहन, कुबेर।

पुरुषर्षभ पुरुष व्याघ्र-(स० पुं०) पुरुष श्रेष्ठ।

पुरुषव्याधि-(स०स्त्री०) उपदश रोग।

पुरुषशार्दूल-(स०पु०) पुरुष श्रेठ।

पुरुषशीर्ष-(स० नपु०) पुरुष का मस्तक।

पुरुषसिंह-(स० पुं०) पुरुषों में श्रेष्ठ।

पुरुष सूक्त-(स० नपुं०) ऋग्वेदोक्त एक सूक्त जो "सहस्र शीर्षा पुरुषः" से आरभ होता है, इसमें सोलह ऋचाएँ हैं, इसका पाठ अभिषेकादि अनेक कार्यों में होता है।

पुरुषाद्य-(स० पु०) विष्णु, राक्षस।

पुरुषाधम-(स० पु०) निकृष्ट नर, अधम मनुष्य।

पुरुषानुक्रम-(स० पु०) पुरखों से चली आती हुई परम्परा।

पुरुषान्तर-(सं०पु०) अन्य पुरुष, दूसरा आदमी।

पुरुषान्तरात्मा-(स० पुं०) जीवात्मा।

पुरुषायितवन्ध-(स०पु०) विपरीत रति।

पुरुषायुष-(स० नपुं०) पुरुष का आयु काल।

पुरुषारथ-(हिं०पु०) देखो पुरुषार्थ।

पुरुषार्थ-(स० पु०) पुरुष का प्रयोजन जो चार प्रकार का है यथा-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, पौरुष, पराक्रम, उद्यम, पुरुत्व, सामर्थ्य, शक्ति, बल।

पुरुषार्थी-(सं०वि०) पराक्रमी, परिश्रमी, उद्योगी, सामर्थ्यवान्, बली।

पुरुषाशी-(सं० पु०) नरभक्षक,राक्षस।

पुरुषेन्द्र-(स० पुं०) पुरुषश्रेष्ठ।

पुरुषोत्तम-(स० पु०) विष्णु, पुरुष-श्रेष्ठ, ईश्वर, कृष्ण, जगन्नाथ भगवान् जिनका मन्दिर उड़ीसा में है, नारायण मलमास का महीना, अधिक मास

पुरुह-स०वि०) प्रचुर, काफी।

पुरुहूत-(स० पु०) इन्द्र, इन्द्रयव।

पुरुहूता-(स० स्त्री०) भगवती की एक मूर्ति।

पुरुहूति-(स० स्त्री०) विष्णु।

पुरूद्वह-(स०पु०) सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

पुरूरवा-(स० पुं०) एक राजा का नाम जो ऋग्वेद के अनुसार इला के पुत्र थे, इनकी पत्नी का नाम उर्वशी था, पार्वण श्राद्ध के एक देवता का नाम, विश्वदेव।

पुरूवसु-(स० पु०) वहुत धन, बड़ी सम्पत्ति।

पुरेथा-(हि०पु०) हल की मूठ, परिहथा।

पुरैन-(हिं०स्त्री०) देखो पुरइन।

पुरोग-(स० वि०) अग्रगामी, आगे जाने वाला।

पुरोगत-(स०वि०) जो पहिले गया हो।

पुरोगति-(स०पु०) कुक्कुर, कुत्ता।

पुरोगम, पुरोगव, पुरोगा-(स०वि०) अग्रगामी, आगे जाने वाला।

पुरोगामी-(स०वि०) अग्रगामी।

पुरोगुरु-(स० वि०) जिसका अगला भाग भारी हो।

पुरोचन-(स० पु०) दुर्योधन के एक मित्र का नाम जिसको उसने पाण्डवों को जतुगृहमें जलाने के लिये नियुक्त किया था।

पुरोजन्मा-(स०वि०) बड़ा भाई।

पुरोजव-(स० वि०) आगे बढ़ने वाला, रक्षा करने वाला।

पुरोटि-(स०पु०) पत्तों का शब्द।

पुरोडाश-(स० पु०) यज्ञीय द्रव्य, वह वस्तु जो यज्ञ में होम की आवे, जव के आटे की बनी हुई रोटी, यज्ञ में हवन करने से बचा हुआ भाग, एक प्रकार का पीठा, सोमरस।

पुरोद्भवा-(स० स्त्री०) महामेदा नामक औषधि।

पुरोद्यान-(स०नपु०) नगर का बगीचा।

पुरोध-(स० पु०) पुरोहित।

पुरोधा-(हिं० स्त्री०) पुरोहिताई।

पुरोधिका-(स०स्त्री०) प्यारी स्त्री।

पुरोभाग-(स० पु०) अग्रभाग, अगला हिस्सा।

पुरोभागी-(स० वि०) केवल दोषों को देखने वाला।

पुरोमारुत-(स० पु०) पुरवैया हवा।

पुरोवर्ती-(स०वि०) सामने रहने वाला।

पुरोवात-(सं० पु०) पूरब से बहने वाली हवा।

पुरोहित-(स० पु०) यजमान के यहाँ यज्ञादि श्रौत कर्म, गृह कर्म, सस्कार शान्ति आदि कराने वाला, कर्म कराने वाला ब्राह्मण।

पुरोहिताई-(हिं०स्त्री०) पुरोहित का काम।

पुरोहितानी-(हिं०स्त्री०) पुरोहित की स्त्री।

पुर्जल-(हिं० पु०) कलाबत्तू लपेटने का यन्त्र।

पुर्जा-(हि० पु०) देखो पुरजा।

पुर्तगाल-युरोप के दक्षिण पश्चिम के कोण में स्थित एक प्रदेश।

पुर्तगाली-(हिं० वि०) पुर्तगाल देश सबधी, इस देश का रहने वाला।

पुर्तगीज़-(अ० वि०) पुर्तगाल देशवासी।

पुर्य-(सं० वि०) दुर्ग के मध्य का।

पुर्सा-(हिं० पु०) देखो पुरसा।

पुल-(स० वि०) विपुल, बहुत सा, (फा० पु०) सेतु, नदी, खाई गड्ढे आदि के आरपार जाने के लिये नाव पाट कर अथवा खभों पर पटरिया

बिछा कर बनाया हुआ रास्ता, बातों का पुल बाघना बहुत बकवाद करना, पुल टूटना-अधिकता होना,ताल लगना
पुलक-(सं०पु०) रोमाञ्च, प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपों का प्रफुल्लित होना, एक प्रकार का रत्न, याकूत, एक प्रकार का मोटा अन्न।
पुलकना-(हिं० क्रि०) रोमाचित होना, पुलकित होना, गद्गद होना।
पुलकाई-(हिं० स्त्री०) पुलकित होने का भाव, गद्गद होना।
पुलकाङ्ग-(सं०वि०) रोमाञ्चित अंगवाला (पुं०) वरुण का पाशास्त्र।
पुलकालि, पुलकावलि-(सं०स्त्री०) हर्ष, प्रेम आदि से प्रफुल्ल रोम।
पुलकित-(सं०वि०) रोमाञ्चित, हर्षयुक्त, गद्गद, प्रेम या हर्ष से जिसके रोएँ उभड़ आये हो।
पुलकी-(सं०वि०) रोमाञ्च युक्त, पुलकीकृत-हर्ष या प्रेम से रोमाञ्चित।
पुलकोद्गम-(सं० पु०) हर्ष, खुशी।
पुलट-(हिं० स्त्री०) देखो पलट।
पुलटिस-(हिं०स्त्री०-अं० पुल्टिस्) अलसी, रेंड़ी आदि का मोटा लेप जो फोडे घाव आदि के पकाने के लिये चढाया जाता है।
पुलपुला-(हिं० वि०) जो छूने में कड़ा न हो, जो इतना मोलायम हो कि छूने से धँस जावे।
पुलपुलाना-(हिं० क्रि०) किसी मुलायम वस्तु को दबाना, मुँह में लेकर दबाना, बिना चबाये हुए खाना, चूसना।
पुलपुलाहट-(हिं० स्त्री०) पुलपुला होने का भाव।
पुलस्त-(हिं० पुं०) देखो पुलस्त्य।
पुलस्ति-(सं० पु०) सप्तर्षि के अन्त के पुलस्त्य मुनि।
पुलस्त्य-(सं० पु०) ब्रह्मा के मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से एक तथा एक प्रजापति माने जाते हैं, शिव का एक नाम।
पुलह-(सं० पुं०) ब्रह्मा के मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में से एक तथा एक प्रजापति भी माने जाते हैं, एक गन्धर्व का नाम, शिव, महादेव।
पुलाक-(सं० पु०) एक तुच्छ धान्य, उबाला हुआ चावल, पोलाव, भात का माड़, सक्षेप, जल्दी।
पुलाककारी-(सं० वि०) क्षिप्रकारी, जल्दीबाज।
पुलाव-(हिं०पु०) मांस और चावल को एक साथ पकाकर बना हुआ एक व्यञ्जन
पुलिन्दा-(हिं० पु०) लपेटे हुए कपडे, कागज आदि का छोटा मुट्ठा या बंडल, गड्डी।
पुलकेशि-चालुक्य वंश के एक राजा का नाम।
पुलिन-(सं०पुं०) तट,किनारा, नदी के बीच में पड़ी हुई रेती, एक यक्ष का नाम पानी के भीतर से निकली हुई जमीन, पुलिनवती-एक नदी का नाम
पुलिन्द-भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति, पुलिन्दक-पुलिन्द जाति और उनके रहने का देश।
पुलिरिक-(सं०पु०) सर्प, साँप।
पुलिस-(अं०स्त्री०) प्रजा के जान माल की रक्षा के लिये तथा शान्ति स्थापन के लिये नियुक्त कर्मचारियो तथा सिपाहियो का वर्ग, पुलिसमैन-पुलिस का सिपाही, कान्स्टेबल्।
पुलिहोरा-(हिं० पु०) एक प्रकार का पक्वान।
पुली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का भूरा पक्षी(अं०स्त्री०)घिरनी,गड़ारी,छोटी पहिया
पुलुकाम-(सं० वि०) नाना प्रकार की कामना करने वाला।
पुलोमन्-(सं० पु०) एक दैत्य, इन्द्र का ससुर।
पुलोमजा-(सं०स्त्री०) पुलोम की कन्या, शची, इन्द्राणी।
पुलोमजित्,पुलोमभिद्-(सं०पु०)इन्द्र।
पुलोमही-(सं०स्त्री०) अहिफेन, अफीम।
पुलोमा-(सं०स्त्री०) भृगु की पत्नी, च्यवन ऋषि की माता।
पुल्ल-(सं०वि०) विकसित, खिला हुआ।
पुल्ला-(हिं० पु०) नाक में पहिरने का एक गहना।
पुल्ली-(हिं० स्त्री०) घडे के सूम का ऊपरी भाग।
पुवा-(हिं०पु०) पूआ, मालपुआ।
पुवार-(हिं०पु०) देखो पयाल, पुआल।
पुश्त-(फा० स्त्री०) पृष्ठ, पीठ, पीछा, वंश परंपरा में कोई एक स्थान, पीढी, पुश्त दरपुश्त-वंश परंपरा से,पुश्तहापुश्त-कई पीढियों तक।
पुश्तक-(फा०स्त्री०) दोलत्ती, घोडे गदहे आदि का पिछले दोनों पैरों से लात मारना।
पुश्तनामा-(फा०पु०) कुरसी नामा, पीढीनामा, वह कागज जिसपर पूर्वापर क्रम से किसी कुल में उत्पन्न लोगों के नाम लिखे हों।
पुश्तवानी-(फा०स्त्री०) वह आड़ी लकड़ी जो किवाड़ के पीछे पल्ले को पुष्ट करने के लिये गड़ी होती है।
पुश्ता-(हिं०पुं०) पानी की रोक के लिये अथवा मजबूती के लिये दीवार से लगाकर जमाया हुआ ईंट,पत्थर मिट्टी आदि का ढेर, ढालुआँ टीला बाँध, ऊँचा मेड़, किताब की जिल्द के पीछे का चमड़ा, पौने चार मात्राओं का एक ताल जिसमें तीन आघात और एक खाली रहता है।
पुश्तावदी-(फा०स्त्री०) पुश्ते की बधाई, पुश्ता उठाने का काम।
पुश्ती-(फा० स्त्री०) आश्रय, सहारा, टेक सहायता, मदद, पक्ष, तरफदारी, पीठ टेकने की बड़ी तकिया।
पुश्तैन-(हिं० स्त्री०) वंशपरंपरा, पीढी दर पीढी।
पुश्तैनी-(हिं० वि०) कई पुश्तो तक चलने वाला, बेटे, पोते, परपोते आदि तक बराबर चलने वाला,दादा परदादा के समय का पुराना।
पुषित-(सं०वि०) पोषण किया हुआ, पाला पोसा हुआ, वर्धित, बढा हुआ।
पुष्कर-(सं० नपुं०) हाथी के सूड़ का

अगला भाग, ढोल, मृदग आदि का मुखड़ा जिसपर चमड़ा मढ़ा जाता है आकाश, तलवार की म्यान, पद्म, कमल, एक प्रकार का रोग, पुराण में कहे हुए सात द्वीपो में से एक, राजा नल के छोटे भाई का नाम, सारस पक्षी, वाण, तीर, पिंजड़ा, नाचने की कला, सूर्य, मद, नशा, शिव, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, एक दिग्गज का नाम, एक प्रकार का ढोल, ताल, पोखरा, विष्णु, सर्प, करछी का कटोरा, ज्योतिष के अनुसार एक योग, आकाश, अश्व, पुष्करमूल, बुद्ध का एक नाम, एक तीर्थ जो अजमेर के पास है।

पुष्परक-(स०नपु०) पुष्करमूल।

पुष्करनाभ-(स० पु०) पद्मनाभ, विष्णु।

पुष्करपर्ण-(स०पु०) कमल का पत्ता।

पुष्करमूल-(सं० नपु०) पुष्कर देश में होने वाली एक औषधि।

पुष्करस्थपति-(स०पु०) शिव, महादेव।

पुष्कराक्ष-(स०पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।

पुष्करिका-(स०स्त्री०) शिश्न का एक रोग

पुष्करिणी-(स० स्त्री०) भूमिकमल, पुष्करमूल, जलाशय, पोखरा।

पुष्करी-(स०पु०) गज, हाथी।

पुष्कल-(स०पु०) शिव, महादेव, एक प्रकार का ढोल, एक असुर का नाम, वरुण के एक पुत्र का नाम, (नपु०) अन्न नापने की एक प्राचीन नाप, (वि०) प्रचुर, अधिक, परिपूर्ण, भरा हुआ, उपस्थित, पवित्र, श्रेष्ठ।

पुष्कलक-(स०पु०) कस्तूरीमृग।

पुष्कलावती-(स०स्त्री०) गान्धार राज्य की प्राचीन राजधानी।

पुष्ट-(स०वि०) पालन पोषण किया हुआ, बलवर्धक, ताकत लाने वाला, बलिष्ठ, मोटा ताज़ा, दृढ, पक्का, मज़बूत(नपु०) पुष्टि, (पु०) विष्णु।

पुष्टई-(हिं०स्त्री०) बल वीर्य को पुष्ट करने वाली औषधि।

पुष्टता-(स०स्त्री०)दृढता, मज़बूती, पोढापन

पुष्टि-(स०स्त्री०) पोषण, वृद्धि, सोलह मातृकाओं में से एक, धर्म की एक पत्नी, एक योगिनी का नाम, बलिष्ठता, बात की समर्थता, दृढता, मज़बूती।

पुष्टिकर-(स० वि०) पुष्ट करने वाला, ताकत देने वाला, बलवीर्य वर्धक।

पुष्टिकरी-(स०स्त्री०) गङ्गा।

पुष्टिकर्म-(स०नपु०) पुष्टि के लिये काम

पुष्टिका-(स०स्त्री०)जल की सीप, सुतुही।

पुष्टिकान्त-(स०पु०) गणाधिप, गणेश।

पुष्टिकाम-(स० वि०)जो पुष्ट होने की इच्छा करता हो।

पुष्टिकारक-(स० वि०) देखो पुष्टिकर।

पुष्टिद-(सं० वि०) पुष्टि देने वाला।

पुष्टिदा-(स०स्त्री०) वृद्धि नामक औषधि

पुष्टिमति-(स० पु०) अग्नि का एक भेद, सरस्वती।

पुष्टिमार्ग-(स० पुं०) वल्लभाचार्य के मत के अनुसार वैष्णवों का भक्ति मार्ग।

पुष्टिम्भर-(स०वि०) पुष्टि देने वाला।

पुष्टिवर्धन-(स०वि०) ताकत बढाने वाला

पुष्प-(स०नपु०) कुसुम, सुमन, फूल, स्त्रियो के ऋतुकाल का रज, आँख का फूली नामक रोग, कुबेर का विमान पुष्पक, लवग, मांस, रसवत, एक प्रकार का सुरमा, पुष्करमूल, घोड़ों का एक लक्षण।

पुष्पक-(स० नपु०) कुबेर का विमान जिसको रावण ने छीन लिया था और रावण वध के बाद श्री रामचन्द्र ने उसको कुबेर को दे दिया था, एक प्रकार का नेत्र रोग, फूली, रसवत, (नपुं०) एक पर्वत का नाम, मकान बनाने में एक प्रकार का मण्डप, पुष्प, फूल, इन्द्र का एक प्रिय तोता, हीरा कसीस।

पुष्पकर्ण-(स० वि०) वह जिसके कान पर फूल हो।

पुष्पकाल-(स०पु०) स्त्रियो का ऋतु समय, वसन्त ऋतु।

पुष्पकीट-(स०पु०) भौरा, फूल का कीड़ा-

पुष्पकृच्छ्र-(स० पु०) एक व्रत जिसमें केवल फूलों का क्वाथ पीकर महीना भर रहना होता है।

पुष्पकेतन, पुष्पकेतु-(स०पु०) कामदेव।

पुष्पगन्धा-(स०स्त्री०) सफेद जूही।

पुष्पगृह-(स०नपु०) फूल का घर।

पुष्पग्रन्थन-(स०नपु०) माला गूथना।

पुष्पचाप-(स० पु०) फूल का धनुष, कामदेव।

पुष्पचामर-(स०पु०)केतक, केवड़ा, दौना-

पुष्परज-(स०नपु०) फूल का रस, फूलो से उत्पन्न वस्तु।

पुष्पजासव-(स० पु०) फूलों से बनाई हुई मदिरा।

पुष्पद-(स० वि०) फूल देने वाला (पु०) वृक्ष।

पुष्पदन्त-(स० पु०) वायु कोण के दिग्गज का नाम, एक विद्याधर का नाम, एक नाग का नाम, विष्णु का एक अनुचर।

पुष्पदर्शन-(स० नपु०) स्त्रिया का रजोदर्शन।

पुष्पदाम-(स०नपु०) फूलो की माला, एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में सोलह अक्षर होते हैं।

पुष्पद्रव-(स०पु०) फूल का रस।

पुष्पधनु-(स०पु०) कामदेव।

पुष्पधन्वा-(स० पु०) कामदेव।

पुष्पधर-(स०पु०) महादेव, शिव।

पुष्पधारण-(स० पु०) विष्णु।

पुष्पध्वज-(स०पु०) पुष्पकेतन, कामदेव।

पुष्पनिक्ष-(स०पु०) भ्रमर, भौरा।

पुष्पनिर्यास-(स० पु०) मकरन्द, फूल का रस।

पुष्पपत्री-(स०पु०) कुसुमशर, कामदेव।

पुष्पपथ-(स० पु०) स्त्रियों के रज निकलने का मार्ग, योनि।

पुष्पपिण्ड-(स०पु०) अशोक का वृक्ष।

पुष्पपुट-(स० पु०) फूल की पखड़ियों का कटोरी के आकार का आधार।

पुष्पपुर-(स०नपु०) पाटलिपुत्र का एक प्राचीन नाम।

पुष्पफल-(स०पु०)कुष्माण्ड, कुम्हड़ा, कैथ

पुष्पभद्र-(स०पु०) वह मण्डप जिसमे

बाराठ खमे हों।
पुष्पभद्रक-(सं० नपुं०) देवताओं का एक उपवन।
पुष्पभव-(सं०पु०) मकरन्द, मधु।
पुष्पभूषित-(सं०वि०) फूलों से सुशोभित।
पुष्पमण्डन-(सं० नपुं०) फूलों का अलंकार।
पुष्पमास-(सं० पु०) वसन्त ऋतु के दो महीने।
पुष्पमित्र-(सं० नपुं०) एक राजवंश जिसको स्कन्दगुप्तने हराया था, देखो पुष्य मित्र।
पुष्पमृत्यु-(सं०पु०)एक प्रकार का नरकट।
पुष्परज-(सं०नपुं०) फूल की धूर, पराग।
पुष्परथ-(सं०पु०) फूल का रथ।
पुष्परस, पुष्परसोद्भव-(सं०पु०) फूल का मधु।
पुष्पराग-(सं० पु०) एक मणि विशेष, पुखराज।
पुष्परेणु-(सं०पु०) फूल की धूल, पराग।
पुष्परोचन-(सं०पुं०) नागकेसर।
पुष्पलावी-(सं०स्त्री०)माला बनाने वाली।
पुष्पलिक्ष-(सं०पु०) भ्रमर, भौरा।
पुष्पलिपि-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की, प्राचीन लिपि।
पुष्पलिह्-(सं०पु०) भ्रमर, भौंरा।
पुष्पवती-(सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री (वि०) फूली हुई।
पुष्पवाटिका-(सं० स्त्री०) फूलों की बगीचा, फुलवारी।
पुष्पवाण-(सं० पु०) कामदेव, फूलों का बाण।
पुष्पवृष्टि-(सं०स्त्री०) फूलों का ऊपर से गिरना, फूलों की वर्षा।
पुष्पवेणी-(सं०स्त्री०) फूलों की चोटी।
पुष्पशय्या-(सं०स्त्री०) फूलों की सेज।
पुष्पशर पुष्पशरासन-(सं०पु०)कामदेव।
पुष्पशून्य-(सं० वि०) बिना फूल का (पु०) गूलर।
पुष्पसमय-(सं० पु०) वसन्तकाल।
पुष्पसायक-(सं० पुं०) कन्दर्प, कामदेव।
पुष्पसार-(सं०पु०) पुष्प का रस।
पुष्पसारा-(सं०स्त्री०) तुलसी।
पुष्पहास-(सं० पु०) विष्णु फूलों का खिलना।
पुष्पहासा-(सं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री।
पुष्पहीन-(सं० वि०) बिना फूल का, गूलर का वृक्ष।
पुष्पहीना-(सं०स्त्री०) बन्ध्या, बाँझ स्त्री।
पुष्पा-(सं०स्त्री०) चम्पा, मालिनी, सौंफ।
पुष्पाकर-(सं० पु०) वसन्त ऋतु।
पुष्पाजीव पुष्पाजीवी-(सं०पु०) मालाकार, माली।
पुष्पाञ्जलि-(सं० पु०) अंगुली भर कर फूल जो किसी देवता पर चढ़ाये जावें।
पुष्पाम्बुज-(सं० नपुं०) मकरन्द।
पुष्पायुध-(सं०पु०) कुसुमायुध,कामदेव।
पुष्पार्क-(सं० पु०) फूलों का अर्क।
पुष्पासव-(सं० नपुं०) मधु, फूलों से बना हुआ मद्य।
पुष्पास्त्र-(सं० पु०) कुसुमायुध,कामदेव।
पुष्पिका-(सं०स्त्री० दाँत की मैल, किसी ग्रन्थ की समाप्ति के अन्त के वाक्य जो "इति श्री" करके आरम होते हैं।
पुष्पिणी-(सं०स्त्री०) धव का पेड़,रुई।
पुष्पित-(सं०वि०) कुसुमित, फूला हुआ।
पुष्पिता-(सं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री।
पुष्पिताग्रा-(सं० स्त्री०) एक अर्ध समवृत्त जिसके पहिले और तीसरे चरण में बारह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह अक्षर होते हैं।
पुष्पी-(सं० पु०) फूला हुआ वृक्ष।
पुष्पेषु-(सं० पु०) कामदेव।
पुष्पोत्सव-(सं० पु०) कुसुम क्रीड़ा, फूल का खेल।
पुष्पोद्यान-(सं० पु०) पुष्पवाटिका, फुलवारी।
पुष्य-(सं० पु०) सत्ताईस नक्षत्रों में से आठवां नक्षत्र, इसकी आकृति बाण के सदृश है, पुष्टि,पोषण,फल या सार वस्तु, पूस का महीना, मूल या सार वस्तु।
पुष्यनेत्रा-(सं०स्त्री०) वह रात्रि जिसमें रात भर पुष्य नक्षत्र रहे।
पुष्यमित्र-(सं०पु०) एक प्रतापी राजा जिसने मौर्यों के पीछे मगध देश में शुंग वंश का राज्य स्थापित किया था।
पुष्यलक-(सं०पु०) कस्तूरी मृग।
पुष्यस्नान-(सं० नपुं०) पूस के महीने में उस समय स्नान जब चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में रहता हो।
पुष्या-(सं०स्त्री०) पुष्य नक्षत्र।
पुष्यार्क-(सं० पुं०) ज्योतिष का एक योग जो कर्क की सक्रान्ति में सूर्य के पुष्य नक्षत्र में रहने पर होता है।
पुस-(हिं० पु०) बिल्ली को पुकारने का प्यार का शब्द।
पुंसाना-(हिं० क्रि०) उचित जान पड़ना, शोभा देना, अच्छा लगना,बन पड़ना, पूरा पड़ना।
पुस्त-(सं० नपुं०) शिल्पकर्म, दस्तकारी।
पुस्तक-(सं० नपुं०) पोथी, किताब, पुस्तकमुद्रा-एक तान्त्रिक मुद्रा।
पुस्तकाकार-(सं० वि०) पुस्तक के आकार का, पोथी के रूप का।
पुस्तकागार-(सं० पु०) जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो, पुस्तकालय।
पुस्तकालय-(सं० नपुं०) पुस्तकागार, जिस भवन में पुस्तकों को सग्रह हो।
पुस्तकी-(सं० स्त्री०) छोटे आकार की पोथी।
पुस्फुस-(सं० पु०) फुसफुस रोग।
पुहकर-(हिं०पुं०) देखो पुष्कर।
पुहकरमूल-(हिं०पु०) देखो पुष्करमूल।
पुहाना-(हिं० क्रि०) गुथवाना, पिरोने का काम दूसरे से कराना।
पुहुप-(हिं० पु०) देखो पुष्प, फूल।
पुहुमी-(हिं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
पुहुरेनु-(हिं०पु०) पुष्परेणु, पराग।
पुहुनी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
पूंगा-(हिं० पुं०) साप का कीड़ा (स्त्री०) सँपेरे का बाजा, महुवर।
पूंछ-(हिं०स्त्री०) पशु, पक्षी, कीड़े, आदि के शरीर का सबसे पिछला भाग,लागूल, पोंछ, दुम, किसी वस्तु का पीछे का भाग, पुछल्ला जो किसी के पीछे रहे,पिछलग्गू।
पूंछड़ी-(हिं०स्त्री०) लागूल, पुच्छ, पोंछ।

पूंछताछ-(हि०स्त्री०) देखो पूछताछ।
पूछना-(हि०क्रि०) देखो पूछना।
पूंछलतारा-(हिं०पु०) देखो केतु।
पूछना-(हिं०क्रि०)नये बन्दर को पकड़ना
पूंजी-(हि०स्त्री०) मूल धन, वह द्रव्य या धन जिससे कोई व्यापार आरम्भ किया जावे, किसी कारखाने की अचल सम्पत्ति, रुपया पैसा, धन, किसी विषय में जानकारी या सामर्थ्य, समूह, पुञ्ज, ढेर, पूंजीदार, पूंजीपति-वह जो किसी व्यवसाय में धन लगावे।
पूंठ-(हि० स्त्री०) देखो पीठ।
पूआ-(हि० पु०) मालपुआ, एक प्रकार की पूरी जो आँटे को गुड़ या चीने के रस में गूथ कर घी में पका ली जाती है
पूखन-(हि०पु०) देखो पोषण।
पूग-(स०न पु०) सुपारी का वृक्ष या फल कटहल, शहतूत का वृक्ष, ढेर, समूह, छन्द,भाव, पूगकृत-इकट्ठा किया हुआ, पूगपात्र-पीकदान, पूगपीठ-उगालदान, पूगफल-सुपारी; पूगवृक्ष-सुपारी का पेड़।
पूगी-(स०स्त्री०) सुपारी।
पूगोफल-(सं०नपु०) गुवाक, सुपारी।
पूंछ-(हि०स्त्री०) पूछने का भाव, जिज्ञासा, आदर, खातर, खोज, चाह, ज़रूरत।
पूछताछ-(हि०स्त्री०) अनुसन्धान, जिज्ञासा जाँच पड़ताल।
पूछना-(हि०क्रि०) किसी बात को जानने के लिये प्रश्न करना, जिज्ञासा करना, पता लगाना, किसी का सत्कार, जानने की चेष्टा करना, आदर करना, ध्यान देना, टोकना, बात न पूछना-तुच्छ समझ कर ध्यान न देना।
पूछपाछ-(हि०स्त्री०) देखो पूछताछ।
पूछाताछी, पूछापाछी-(हि०स्त्री०) पूछने की क्रिया या भाव।
पूछरी-(हिं० स्त्री०) पोंछ, दुम, पीछे का हिस्सा।
पूजक-(हिं०वि०) पूजा करने वाला।
पूज-(हि०पु०) देवता (वि०) पूजने योग्य
पूजक-(हिं० वि०) पूजा, अर्चना, देवता की वन्दना, आदर, सम्मान, आराधना
पूजना-(हि० क्रि०) गहराई भरना या बराबर होना, पूरा होना, कमी न रहना, समाप्त होना, बीतना, ऋण आदि का चुकता होना, श्रद्धा भक्ति से किसी की सेवा करना, किसी देवता की आराधना करना, सम्मान करना, आदर करना घूस देना, सिर झुकाना।
पूजनी-(स० स्त्री०) चटका, गौरैया पक्षी
पूजनीय-(स० वि०) आराध्य, पूजा करने योग्य, आदरणीय अर्चनीय।
पूजमान-(हिं०वि०) पूजनीय, पूज्य।
पूजा-(स० स्त्री०) पूजन, अर्चन, आराधना, ईश्वर या देवी देवता के प्रति श्रद्धा विनय सम्मान और समर्पण का भाव प्रगट करने का कार्य, किसी को प्रसन्न करने के लिये कुछ देना, आदर सत्कार, वह धार्मिक कृत्य जो जल, फल फूल, अक्षत, नैवेद्य आदि देवता पर चढा कर किया जता है, ताड़ना, दण्ड।
पूजार्ह-(स० वि०) मान्य, पूजने योग्य।
पूजित-(स०वि०) अर्चित, जिसकी पूजा की गई हो।
पूजितव्य-(स०वि०) पूजा करने योग्य।
पूज्य-(स० वि०) पूजनीय, माननीय, आदर के योग्य, पूजा के योग्य।
पूज्यता-(स०स्त्री०) पूजा योग्य होना।
पूज्यपाद-(स० वि०) जिसके पैर पूजनीय हों, अत्यन्त पूज्य या मान्य।
पूज्यमान-(स०वि०) जो पूजा जाता हो।
पूटीन-(हि० स्त्री०) देखो पुटीन।
पूठा-(हिं० पु०) देखो पुट्ठा।
पूठि-(हि० स्त्री०) देखो पीठ, पृष्ठ।
पूड़ा-(हि० पुं०) देखो पूआ।
पूड़ी-(हि० स्त्री०) देखो पूरी, मृदग या तबले पर मढा हुआ गोल चमड़ा।
पूणू-(हिं०स्त्री०) पूर्णिमा पुनवासी।
पूत-(स०वि०) व्रतादि द्वारा शुद्ध, पवित्र, सत्य, सच्चा, (पु०) शख सफेद कुशा, पलास, तिल का पौधा, भूसी निकाला हुआ अन्न, जलाशय।
पूत-(हि०पु०) पुत्र, बेटा, चूल्हे के दोनों ओर तथा पीछे का उभड़ा हुआ भाग।
पूतक्रतु-(स० पु०) इन्द्र।
पूतड़ा-(हिं० पुं०) छोटे बच्चों के नीचे मलमूत्र त्याग करने के लिये बिछाने का छोटा बिछौना।
पूतदारु-(स० पु०) पलाश, ढाक।
पूतद्रु-(स०पु०) खदिर, खैर का वृक्ष।
पूतधान्य-(स० नपु०) तिल।
पूतन-(स० पु०) गुदा का एक रोग।
पूतना-(स० स्त्री०) हरीतकी, हरैं, जटामासी, एक दानवी जिसको कस ने बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये भेजा था, जिसको श्रीकृष्ण ने मार डाला था, एक बालग्रह या बालरोग
पूतनारि-(स०पु०) श्रीकृष्ण।
पूतनिका-(स० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
पूतनी-(स० स्त्री०) पुदीना।
पूतपत्री-(स० स्त्री०) तुलसी पत्र।
पूतफल-(स० पुं०) पनस, कटहल।
पूतमति-(स० त्रि०) पवित्र बुद्धि, पवित्र अन्तःकरण वाला (पु०) शिव, महादेव।
पूतरा-(हिं०पु०)देखो पुतला, बालबच्चा।
पूतरी-(हि० स्त्री०) देखो पुतली।
पूता-(स० वि०) पवित्र, शुद्ध (स्त्री०) दूब।
पूतात्मा-(स० वि०) शुद्ध अन्तःकरण का (पुं०) विष्णु।
पूति-(सं० नपु०) रोहिष तृण, (स्त्री०) पवित्रता, दुर्गन्ध, बदबू (वि०) दुर्गन्ध युक्त, बदबूदार।
पूतिक-(स० नपु०) विष्टा, पायखाना।
पूतिकन्या-(स०स्त्री०) पूतिका, पुदीना।
पूतिकर्ण-(स० पु०) कान का एक रोग जिसमें कान से पीब निकलती है और बदबू आती है।
पूतिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की शहद की मक्खी, पोई का साग, पूतिकामुख शबूक, घोंघा।
पूतिकाष्ठ-(स०नपु०) देवदारु, देवदार।
पूतिकेसर-(स० पु०) नागकेसर।
पूतिगन्ध-(स० नपु०) एक प्रकार की सुगन्धित घास, दुर्गन्ध, बदबू।

पूतिगन्धा (सं० स्त्री०) बकुची।
पूतितैला-(सं० स्त्री०) मालकगनी।
पूतिदला-(सं०स्त्री०) तेजपत्र, तेजपात।
पूतिनस्य-(सं०पु०) नाक का एक रोग।
पूतिपत्र-(सं० पु०) सोनापाठा, पीला लोध।
पूतिमारुत-(सं० पु०) छोटी बेर, बेल का वृक्ष।
पूतिमांस-(सं० नपु०) दुर्गन्धी मास।
पूतिमूषिका-(सं० स्त्री०) छछूदर।
पूती-(हिं०स्त्री०) लहसुन की गाँठ।
पूतुद्र-(सं०पु०) देवदारु, देवदार।
पूथ, पूथा-(हिं०पु०) बालू का ऊचा टीला
पून-सं०वि०) नष्ट, बरबाद (हिं०पु०) जगली बादाम का वृक्ष, देखो पुण्य, पूर्ण
पूनना-(हिं०पु०) एक प्रकार की ऊख।
पूनव-(हिं०स्त्री०) देखो पूर्णिमा, पूनो।
पूनसलाई-(हिं० स्त्री०) पूनी बनाने की सलाई।
पूनाक-(हिं०स्त्री०) तेलहन में की बची हुई खली।
पूनिउं-(हिं०स्त्री०) देखो पूनो, पूर्णिमा।
पूनी-(सं० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धि (हिं०स्त्री०) धुनी हुई रुई की बड़ी बत्ती जो सूत कातने के लिये बनाई जाती है।
पूनो-(हिं०स्त्री०) पूर्णमासी, पूर्णिमा।
पूप-(सं०पु०) पूआ, मालपूआ।
पूपला-(सं०स्त्री०) प्राचीन काल का एक प्रकार का पकवान।
पूपली-(सं०स्त्री०) बाँस आदि की पोली नली, बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।
पूपाली-(सं०स्त्री०) पूआ, मालपूआ।
पूय-(सं०नपु०) खराब खून, मवाद पीब
पूयकुण्ड-(सं०पु०) एक नरक का नाम।
पूयरक्त-(सं०पु०) नाक का एक रोग।
पूयारि-(सं०पु०) नीम का वृक्ष।
पूयोद-(सं०नपु०) एक नरक का नाम।
पूर-सं०पु०) जल समूह, बाढ़, मसाले आदि जो पकवान के भीतर भरे जाते हैं, प्राणायाम में सास के भरने की क्रिया (हिं०वि०) देखो पूर्ण।

पूरक-(सं०पु०) वह अक जिसमें किसी सख्या का गुणा किया जावे, प्राणायाम का वह अग जिसमें नाक के एक छिद्र को बन्द करके दूसरे छिद्र द्वारा सास ऊपर को खींची जाती है, अशौच काल में मृत व्यक्ति के निमित्त दिया जाने वाला दस पिण्ड (वि०) पूरा करने वाला।
पूरण-(सं० नपु०) पूरक पिण्ड, वृष्टि, अकों का गुणा करना, कान में तेल डालना, (पु०) सेतु, पुल, नागरमोथा समुद्र वात के प्रकोप से होने वाला एक व्रण, परिपूर्ण करने की क्रिया।
पूरणी-(सं० स्त्री०) पूरा करने वाली, सेम्हर का वृक्ष।
पूरणीय-(सं०वि०) पूरा करने योग्य।
पूरन-(हिं०वि०) देखो पूर्ण।
पूरनकाम-(हिं०वि०) देखो पूर्णकाम।
पूरनपूरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मीठा कचौड़ी।
पूरनमासी-(हिं०स्त्री०) देखो पूर्णमासी।
पूरना-(हिं० क्रि०) पूर्ति करना, टोटा पूरा करना मनोरथ सिद्ध करना, मगल अवसरों पर भूमि पर अबीर आटे आदि से चौखूटे क्षेत्र बनाना, चौक बनाना, बटना पूर्ण या व्याप्त होना, बजाना, फूकना, ढापना।
पूरब-(हिं०पु०) वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है, पूर्व दिशा।
पूरबल-(हिं०पु०) प्राचीन समय पुराना जमाना, इस जन्म से पहिले का जन्म, पूर्वजन्म।
पूरबला-(हिं०वि०) प्राचीन काल का, पुरातन, पुराना, पहिले जन्म का।
पूरबिया, पूरबी-(हिं० वि०) पूर्व सबधी पूरब का, (स्त्री०) पूर्वी नाम की रागिणी।
पूरयितव्य-(सं०वि०) पूरा करने योग्य।
पूरा-(हिं० वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, जो खाली न हो समस्त, समूचा, बिना भाग किया हुआ, पूर्ण, जिसमें कोई कमी न हो, यथेष्ट, परिपूर्ण, भरपूर तुष्ट सम्पन्न, बात का पूरा-अपने वचन पर दृढ रहने वाला; काम पूरा उतरना-काम का पूरी तरह से सपादन होना, बात पूरी उतरना-कही हुई बात सच्ची ठहरना, दिन पूरे करना किसी न किसी प्रकार से दिन बिताना, दिन पूरे होना-मृत्युकाल समीप आना।
पूरिका-(सं०स्त्री०) पूरी, बरा।
पूरित-(सं०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, पूरा किया हुआ, गुणा किया हुआ, तृप्त, सन्तुष्ट।
पूरिया-(हिं० पु०) षाडव जाति का एक राग, पूरिया कल्याण-सपूर्ण जाति का एक प्रकार राग।
पूरी-(हिं० स्त्री०) एक खाद्य पदार्थ जो आटे को साधारण रोटी की तरह बेल कर घी में पका लिया जाता है, वह गोल चमड़ा जो ढोल मृदग आदि के मुख पर मढा रहता है।
पूरुजित्-(सं० पु०) विष्णु।
पूरुष-(सं० पु०) पुरुष, नर, आदमी चेतन, आत्मा।
पूर्ण-(सं० वि०) परिपूर्ण भरा हुआ, जिसको किसी प्रकार की इच्छा न हो, अखण्डित, समूचा, समग्र, परितृप्त, यथेष्ट, काफी, समाप्त, सफल, सिद्ध (पु०) एक गन्धर्व का नाम, जल, परमेश्वर, विष्णु, सगीत या ताल में वह स्थान जो 'सम अतीत' के एक मात्रा के बाद आता है।
पूर्णक-(सं०पु०) देवताओं की एक योनि, ताम्रचूड़, मुर्गा।
पूर्णकस-(सं० पु०) भरा हुआ घड़ा।
पूर्णकाम-(सं० पु०) परमेश्वर, (वि०) निष्काम, जिसकी सब कामना पूरी हो चुकी हो।
पूर्णकुट-(सं०पु०) एक प्रकार का पक्षी।
पूर्णकुम्भ-(सं०पु०) जल से भरा हुआ घड़ा।
पूर्णकोषा-(सं० स्त्री०) कचौरी नाम का पकवान।
पूर्णगर्भा-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसको

शीघ्र ही प्रसव होने वाला हो।
पूर्णचन्द्र-(स०पु०) पूर्णिमा का चन्द्रमा।
पूर्णतया पूर्णत -(स० अव्य०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से।
पूर्णता-(स०स्त्री० पूर्णत्व,पूर्ण होने का भाव।
पूर्णपरिवर्तक-(स० पु०) वह जीव जो अपने जीवन में अनेक बार अपना रूप बदलता है।
पूर्णपात्र-(स०नपु०) वस्तुपूर्ण पात्र होम के अन्त में ब्रह्माको देय दक्षिणा रूप द्रव्य, जलपूर्ण पात्र।
पूर्णप्रज्ञ-(स० वि०) पूर्ण ज्ञानी, बड़ा बुद्धिमान, पूर्णप्रज्ञ दर्शन के कर्ता माध्वाचार्य , पूर्णप्रज्ञदर्शन-वेदान्त सूत्र तथा इस पर के रामानुज कृत्य भाष्य का अवलम्बन करके बनाया हुआ दर्शन शास्त्र।
पूर्णबीज-(स० पु०) बीजपूर, बिजौरा नीबू।
पूर्णभद्र-(स० पु०) एक नाग का नाम।
पूर्णमा-(स०स्त्री०) देखो पूर्णिमा।
पूर्णमासी-(स०स्त्री०) चान्द्रमास की अन्तिम तिथि, शुक्लपक्ष का अन्तिम या पन्द्रहवा दिन।
पूर्णविराम-(स०पु०)लिखने में वह चिह्न जो वाक्य के पूरे होने पर लगाया जाता है, नागरी बगला आदि में इसके लिये एक खडी पाई "।" का प्रयोग किया जाता है।
पूर्णविषम-(स० पु०) सगीत के ताल में वह स्थान जो कभी कभी सम का काम देता है।
पूर्णहोम-(स०पु०)हवनके अन्तमें पूर्णाहुति
पूर्णा-(स० स्त्री०) ज्योतिष के अनुसार पचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावास्या तिथि।
पूर्णाघात-(स०पु०) सगीत का एक ताल।
पूर्णाञ्जलि-(स० वि०) जितना परिमाण एक अञ्जलि में समा सके।
पूर्णानन्द-(स०पु०) परमेश्वर, परब्रह्म।
पूर्णामृता-(स०स्त्री०) चन्द्रमा की सोलह कलाओं का नाम।
पूर्णायु-(स०पु०) सौ वर्ष का जीवन काल (वि०) पूरी आयुष्य वाला।
पूर्णावतार-(स० पु०) किसी देवता का सोलहो कलाओं से युक्त अवतार।
पूर्णाहुति-(स० स्त्री०) होम समाप्ति में अन्तिम आहुति।
पूर्णिका-(स० स्त्री०) दोहरी चोंच का एक पक्षी।
पूर्णिमा-(स०स्त्री०) पौर्णमासी, पुनवासी।
पूर्णेन्दु-(स० पु०) पूर्णिमा का चन्द्रमा, पूर्णचन्द्र।
पूर्णोत्सङ्ग-(स० वि०) जिसकी गोद भरी हो।
पूर्णोपमा-(स०स्त्री०) उपमा अलकार का वह भेद जिसमें उसके चारो अग अर्थात् उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म-पूर्ण रूप से प्रगट हो।
पूर्त-(स०पु०) पालन, खोदने या बनाने का काम, (वि०) पूरित, आच्छादित, दपा हुआ , पूर्तविभाग-वह सरकारी विभाग या मोहकमा जो सड़क, नहर, पुल, मकान आदि बनवाता है।
पूर्ति-(स०स्त्री०) पूरण, भरने का काम, गुणन, गुणा करने का काम, बावली कुप तालाव आदि का उत्सर्ग, पूर्णता, पूरापन, किसी आरभ किये हुए काम की समाप्ति, किसी काम में जितनी वस्तु आवश्यक हों उनको पूरी करने का काम।
पूर्तिकाम-(स०वि०)धन आदि से अपनी कामना पूरी करने वाला।
पूर्वभक्तिका-(स०स्त्री०) प्रातःकाल किया जाने वाला भोजन, जलपान।
पूर्भिद्य-(स०नपु०) सग्राम, युद्ध।
पूर्य-(स० वि०) पालन करने योग्य, पूरा करने योग्य।
पूर्व-(स०वि०) प्रथम, आदि, पहिले का आगे का, बड़ा, प्राचीन, पुराना, पिछला, (पु०) वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है (अव्य०) पहले।
पूर्वक-(स०पु०) पूर्वज बाप दादा(अव्य०) साथ सहित-इस अर्थ में प्रायः सयुक्त सज्ञा के अन्त में प्रयोग होता है, यथा ध्यान पूर्वक।
पूर्वकर्म-(स० नपु०) पहले किया जाने वाला कार्य।
पूर्वकल्प-(स०पु०) पूर्वकाल, पहला समय
पूर्वकाय-(स० पु०) शरीर में नाभि के उपर का भाग।
पूर्वकाल-(स०पु०) प्राचीन काल।
पूर्वकालिक-(स० वि०) पूर्व काल सबधी जिसकी स्थिति पूर्वकाल में हो जिसका जन्म पूर्वकाल में हुआ हो, पूर्वकालिक क्रिया-वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले होता हो
पूर्वकाष्ठा-(स०स्त्री०) पूर्व दिशा।
पूर्वकृत्-(स०पु०) पूर्वदिशा के कर्ता,सूर्य।
पूर्वकृत-(स०वि०)पूर्वकाल में किया हुआ।
पूर्वग-(स०वि०) पूर्वगामी।
पूर्वगङ्गा-(स०स्त्री०) नर्मदा नदी।
पूर्वज-(स०पु०) पूर्वपुरुष, पुरखा, चन्द्र लोक में रहने वाले पितरलोग (व०)पूर्व काल में उत्पन्न।
पूर्वजन-(स०पु०) पुराने समय के लोग।
पूर्वजन्म-(स०नपु०) पहिले का जन्म, पिछला जन्म।
पूर्वजन्मा-(स०पु०) अग्रज, बड़ा भाई।
पूर्वजा-(स०स्त्री०) बड़ी बहन।
पूर्वजाति-(स०स्त्री०) पूर्वजन्म, पिछला जन्म।
पूर्वज्ञान-(स०न पु०) पहिले का ज्ञान, पूर्व जन्म का ज्ञान।
पूर्वतन-(स०वि०) पुराने समय का।
पूर्वत-(स०अव्य०) पहले से।
पूर्वत्व-(स०नपु०)पूर्व का भाव, पुरानापन
पूर्वदक्षिणा-(स० स्त्री०) अग्निकोण, पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना।
पूर्वदिन-(स०नपु०) आज से पहिलेका दिन।
पूर्वदेह-(स०पु०) पहले का शरीर।
पूर्वनिरूपण-(स०पु०) भाग्य किस्मत।
पूर्वपक्ष-(स० पु०) कृष्णपक्ष, शास्त्रार्थ में सशय हटाने के लिये जो प्रश्न किया जाता है, फक्किका, अभियोग में वादी

का दावा।

पूर्वपक्षी–(स० वि०) पूर्व पक्ष उपस्थित करनेवाला, वह जो किसी प्रकार का दावा करे, मुद्दई।

पूर्वपक्षीय–(स०वि०) पूर्व पक्ष सबधी।

पूर्वपद–(स० नपु०) पूर्ववर्ती स्थान।

पूर्वपितामह–(स०पु०)प्रपितामह,परदादा

पूर्वपुरुष–(स०पु०) बाप दादा परदादा आदि पुरखा, ब्रह्मा।

पूर्वप्रज्ञा–(स०स्त्री०) पूर्वज्ञान, पूर्वस्मृति।

पूर्वफाल्गुनी–(स० स्त्री०) आश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से ग्यारहवा नक्षत्र जिसका आकार दो तारका युक्त चारपाई की तरह है, **पूर्वाफाल्गुनी भव**–बृहस्पति।

पूर्वा भाद्रपद–(स०पु०) आश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पर्चीसवा नक्षत्र, इसका आकार घण्टे की तरह का है तथा दो नक्षत्र युक्त है।

पूर्वभाग–(स० पु०) प्रथम भाग, ऊर्ध्व भाग।

पूर्वभाषी–(स०वि०)पहिले बोलने वाला।

पूर्वभूत–(सं० वि०) जो पहिले बीत गया हो।

पूर्वमीमांसा–(स०स्त्री०) जैमिनि ऋषि कृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें कर्मकाड सम्बन्धी विषयों का वर्णन है।

पूर्वरङ्ग (स०पु०) नाटक आरम्भ करने के पहिले विघ्न शान्ति अथवा दर्शकों को सावधान करने के लिये जो सगीत या स्तुति पढी जाती है

पूर्वराग–(स० पु०) पूर्वानुराग, प्रथम अनुराग, साहित्य में नायक अथवा नायिका की वह अवस्था जो दोनों के परस्पर सयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है।

पूर्वरात्र (स०पु०) रात्रि का पूर्व भाग।

पूर्वरूप–(सं० नपु०) पहिले का रूप, किसी वस्तु का वह रग ढङ्ग जिसमें वह पहिले रही हो, पूर्व लक्षण, आगम सूचक चिह्न, किसी वस्तु का वह चिह्न जो उसके उपस्थित होने से पहिले प्रगट हों, आसार।

पूर्वलक्षण–(स०नपु०) पूर्व चिह्न, आगम सूचक लक्षण।

पूर्ववत् (स० अव्य०) पूर्व तुल्य, पहले की तरह, कारण देखकर किसी कार्य का अनुमान।

पूर्ववयस(स०नपु०)छोटी उमर,अल्प वय

पूर्ववर्ती–(स०वि०) पहिले का, जो पहिले रह चुका हो।

पूर्ववाद–(स० पुं०) पहिला दावा या नालिश।

पूर्ववादी–(स० पुं०) जो न्यायालय में जाकर पहिले अभियोग उपस्थित करे मुद्दई।

पूर्ववायु (स०पु०) पुरवैया हवा।

पूर्ववार्षिक–(स० वि०) वर्षाकाल के पहिले का।

पूर्वविद्–(स० वि०) पुरानी बातों को जानने वाला।

पूर्व वृत्त–(स० नपु०) प्राचीन घटना, इतिहास।

पूर्ववैरी–(हि०पुं०) पहिले का शत्रु।

पूर्वशारद–(स०वि०)शरदऋतु के पहले का

पूर्वशैल–(स०पु०) उदयाचल।

पूर्वसर–(स० वि०) अग्रगामी, आगे चलने वाला।

पूर्वा–(स० स्त्री०) पूर्व दिशा, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र।

पूर्वाग्नि–(स०पु०) आवसथ्य अग्नि।

पूर्वाचल–(सं० पु०) उदयाचल।

पूर्वानिल–(स०पु०)पूरब से बहने वाली वायु

पूर्वानुराग–(स०पु०) अनुराग या प्रेम का आरम्भ, किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होनेवाला प्रेम, साहित्य में पूर्वानुराग तब तक माना जाता है जब तक प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप न हो, मिल जाने के उपरान्त उसको प्रेम या प्रीति कहते हैं।

पूर्वापर–(स० क्रि० वि०) अगला और पिछला, क्रमानुसार, (पु०) पूर्व और पश्चिम।

पूर्वापर्य–(सं०नपु०) पूर्वापर का भाव।

पूर्वाफाल्गुनी–(स० स्त्री०) अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से ग्यारहवा नक्षत्र, इसका आकार पलग की तरह का माना जाता है, इसमें दो तारे हैं।

पूर्वाभाद्रपद–(स० पु०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में पचीसवा नक्षत्र।

पूर्वाभिभाषी–(सं० वि०) पहिले बोलने वाला।

पूर्वाभिमुख–(स० वि०) पूरब की ओर मुख किया हुआ।

पूर्वार्जित–(स० वि०) पहिले का उपार्जित या कमाया हुआ।

पूर्वार्ध–(सं० पुं०) किसी पुस्तक का पहिला आधा भाग।

पूर्वाशी–(स० वि०) पहले भोजन करने वाला।

पूर्वाषाढा–(स० स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से बीसवा नक्षत्र जिसका आकार सूर्य की तरह का माना जाता है, इसमें चार तारे हैं, यह नक्षत्र अधोमुख है और इसका अधिष्ठाता देवता जल है।

पूर्वाह्न–(स० पु०) दिनमान का प्रथम भाग, प्रातः काल से दोपहर तक का समय।

पूर्वित–(स० वि०) पहिले किया हुआ, पहले बुलाया हुआ।

पूर्वी–(हि० वि०) पूर्व दिशा से सबध रखने वाला, पूरब का (पु०) एक प्रकार का चावल जो पूरब में होता है, विहार प्रान्त में गाया जानेवाला एक प्रकार का दादरा, **पूर्वीघाट**–दक्षिणी भारत के पूर्वी किनारे पर की पर्वतों की श्रेणी।

पूर्वेतर–(स०वि०) पूर्व से भिन्न, पश्चिम।

पूर्वेद्युः–(स०अव्य०) प्रातःकाल, सवेरा।

पूर्वोक्त–(स० वि०) पूर्व कथित, पहले कहा हुआ।

पूर्वोत्तरा–(स० स्त्री०) पूरब और उत्तर

के बीच की दिशा, ईशान कोण।
पूर्वोत्पन्न-(सं० वि०) पूर्व काल में उत्पन्न।
पूलक-(सं० पु०) घास का टीला या ढेर, मूंज आदि का बँधा हुआ गट्ठा।
पूला-(हिं० पु०) मूज आदि का बधा हुआ गट्ठा।
पूलिका-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का पूआ।
पूली-(हिं० स्त्री०) छोटा पूला।
पूवा-(हिं० पु०) देखो पूआ।
पूष-(सं० पुं०) शहतूत का वृक्ष, पौष मास।
पूषक-(सं० पु०) शहतूत का पेड़।
पूषण-(सं० पु०) सूर्य पुराण के अनुसार ग्यारह आदित्यों में से एक, (नपु०) पार्थिव पदार्थ, मिट्टी की बनी हुई वस्तु।
पूषणा-(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
पूषघ्न-(सं० पु०) वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।
पूषा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी, दाहिने कान की एक नाड़ी का नाम, देखो पूषण, सूर्य, पूषात्मज-मेघ, बादल, पूषा सुहृद्र-शिव, महादेव।
पूस-(हिं० पु०) पौष मास, अगहन के बाद तथा माघ के पहिले का महीना।
पृक्का-(सं० स्त्री०) असवरग नामक एक गन्ध द्रव्य।
पृकथ-(सं० नपु०) धन, सम्पत्ति।
पृक्ष-(सं० पुं०) अन्न, अनाज।
पृच्छक-(सं० वि०) जिज्ञासु, जानने की इच्छा करने वाला, प्रश्न करने वाला पूछने वाला।
पृच्छना-(सं० स्त्री०) जिज्ञासा करना, पूछना।
पृच्छा-(सं० स्त्री०) प्रश्न, सवाल।
पृत्-(सं० स्त्री०) सेना, युद्ध, सग्राम, लड़ाई।
पृतना-(सं०स्त्री०) सेना, फौज, सग्राम, लड़ाई, प्राचीन सेना विभाग जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़सवार और १२१५ पैदल सिपाही रहते थे, पृथनापति-सेनापति।
पृथक्-(सं०अव्य०) भिन्न, अलग,जुदा।
पृथककरण-(सं० नपु०) अलग करने का भाव, अलगाव।
पृथक्क्षेत्र-(सं० पु०) एक ही पिता परन्तु भिन्न माता से उत्पन्न सन्तान।
पृथक्छद-(सं०पु०) अखरोट का वृक्ष।
पृथकता-(सं०स्त्री०) अलगाव अलहदगी।
पृथक्त्व-(सं०नपुं०)अलग होने का भाव।
पृथक्पर्णी-(सं० स्त्री०) पिठवन नामक औषधि।
पृथगात्मता-(सं० स्त्री०) विरक्तता, विराग, अन्तर, भेद।
पृथक्जन-(सं०पु०) नीच पापी पुरुष।
पृथक् बीज-(सं० पुं०) भल्लातक, भिलावा।
पृथग्भाव-(सं०पु०) देखो पृथक्त्व।
पृथग्विध-(सं०वि०) नाना रूप का।
पृथवान-(सं०पुं०) पृथ्वी, भूमि।
पृथवी-(सं०स्त्री०) देखो पृथिवी।
पृथा-(सं० स्त्री०) पाण्डु की राजपत्नी, कुन्ती का दूसरा नाम, पृथाज-कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिर आदि, पृथापति-पाण्डुराज।
पृथिवी-(सं० स्त्री०) अचला, भूमि, धरा, धरणी, पृथिवीकम्प-भूकम्प, जलजला, पृथिवीगीता-पृथिवी की कथा जिसका वर्णन विष्णु पुराण में वर्णन किया गया है पृथिवीपति-राजा, यम पृथिवीमय-मृत्तिकामय, पृथिवीलोक-भूलोक, पृथिवीश्वर-राजा, पृथिवीस्थ-भूमि पर रहनेवाला
पृथु-(सं० पु०) त्रेतायुग के सूर्यवंशीय पञ्चम राजा जो राजा वेणु के पुत्र थे, चतुर्थ मन्वन्तर के एक सप्तर्षि, दानवों का एक भेद, शिव, महादेव, अग्नि, विष्णु, काला जीरा, अहिफेन, अफीम, एक हाथ का मान (वि०) महत्, बड़ा, विस्तृत, चौड़ा, अधिक चतुर, प्रवीण।
पृथुक-(सं० पु०) चिपिटक, चिवड़ा, बालक।
पृथुकीर्ति-(सं० वि०) जिसकी कीर्ति अधिक हो।
पृथुग्रीव-(सं० वि०) जिसकी गरदन लंबी हो।
पृथुजय-(सं०वि०) तेज चलने वाला।
पृथुता-(सं० स्त्री०) विस्तार, फैलाव।
पृथुत्व-(हिं० पु०) देखो पृथुता।
पृथुदर्शी-(सं० वि०) बहुदर्शी, चतुर, प्रवीण।
पृथुपाणि-(सं० वि०) जिसके हाथ बहुत लम्बे हों।
पृथुप्रथ-(सं० वि०) जिसका यश दूर तक फैला हो।
पृथुयशस्-(सं०वि०) बड़ा यशस्वी।
पृथुल-(सं० वि०) महत्, बड़ा, भारी, स्थूल, अधिक।
पृथुलाक्ष-(सं० वि०) बड़ी-बड़ी आँखों वाला।
पृथुवक्त्र-(सं०वि०) बड़े मुख वाला।
पृथुशिरा-(सं०स्त्री०) काली जोंक।
पृथुशेखर-(सं० पु०) पर्वत, पहाड़।
पृथुश्रव-(सं० वि०) बड़े कान वाला।
पृथुस्कन्ध-(सं०पु०) शूकर, सुअर।
पृथूदर-(सं० पु०) मेष, मेढा (वि०) बड़े पेट वाला।
पृथ्वी-(सं० स्त्री०) सौर जगत का वह ग्रह जिसपर हम सब प्राणी चलते फिरते हैं, भूमि, धरती, ज़मीन, मिट्टी, काला जीरा पुनर्नवा, बड़ी इलायची, मदार का पौधा, पञ्चभूतों या तत्वों में से एक जिसका प्रधान गुण गन्ध है परन्तु गौण रूप से इसमें स्पर्श, शब्द, रूप और रस ये चारो गुण भी विद्यमान हैं, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सत्रह अक्षर होते हैं।
पृथ्वीका-(सं० स्त्री०) बड़ी इलायची, काला जीरा।
पृथ्वी कुरवक-(सं०पु०) सफेद मदार।
पृथ्वीगर्भ-(सं०पु०) लम्बोदर, गणेश।
पृथ्वीगृह-(सं०नपु०) गह्वर, गुफा।
पृथ्वीज-(सं०वि०) भूमि से उत्पन्न(नपु०)

साभर नमक।

पृथ्वीतल–(सं० पु०) ससार, दुनिया, वह धरातल जिस पर हमलोग चलते फिरते हैं।

पृथ्वीधर–(स० पु०) पर्वत, पहाड़।

पृथ्वीनाथ–(स० पु०) राजा।

पृथ्वीपति पृथ्वीपाल–(स० पु०) पृथ्वी-पालक, राजा।

पृथ्वीपुत्र–(स० पु०) मगल ग्रह।

पृथ्वीश–(स०पु०) भूपति, राजा।

पृश्नि–(स० वि०) जिसका शरीर दुर्बल हो, सफेद रग का, चितकबरा, सामान्य, साधारण, (स्त्री०) किरण, चितकबरी गाय (पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम, अन्न, जल, वेद, अमृत।

पृश्निका–(स०स्त्री०) कुम्भिका, जलकुभी।

पृश्निगर्भ–(स० पु०) श्रीकृष्ण।

पृश्निपर्णी–(स० स्त्री०) पिठवन नाम की लता।

पृश्निभद्र–(स० पु०) श्रीकृष्ण।

पृश्निश्रृङ्ग–(स० पु०) गणेश।

पृषत्–(स० पुं०) विन्दु, बूद।

पृषदश–(स० पु०) वायु, हवा।

पृषद्वरा–(स० स्त्री०) मेनका की कन्या का नाम।

पृषद्वल–(स० पु०) वायु का घोड़ा।

पृषादर–(स०पु०) जिसका पेट छोटा हो।

पृषोद्यान–(सं० नपु०) छोटा बगीचा।

पृष्ट–(स० वि०) सिक्त, सींचा हुआ, पूछा हुआ।

पृष्टहायन–(स० पु०) गज, हाथी।

पृष्टि–(स० स्त्री०) जिज्ञासा, पूछने की क्रिया, पिछला भाग।

पृष्ठिपर्णी–(सं० स्त्री०) पिठवन लता।

पृष्ठ–(स० नपु०) शरीर के पीछे का भाग, पीठ, किसी वस्तु के तल का ऊपरी भाग, पीछा, पुस्तक का पत्र या पन्ना, पुस्तक के पत्र के एक ओर का तल।

पृष्ठगोप–(स० पु०) सेना के पिछले भाग की रक्षा करने वाला सैनिक।

पृष्ठग्रन्थि–(स० पु०) गण्डुरोग, कूबड़।

पृष्ठचर–(स० वि०) पीछे चलने वाला।

पृष्ठज–(स० वि०) जिसका जन्म पीछे हुआ हो।

पृष्ठदृष्टि–(स० पु०) भालू, रीछ।

पृष्ठपोषक–(स०पु०) पीठ ठोंकने वाला, सहायक, मदद करने वाला।

पृष्ठफल–(स० पु०) किसी पिण्ड के ऊपरी भाग का क्षेत्रफल।

पृष्ठभङ्ग–(स० पु०) युद्ध की वह रीति जिसमें शत्रु की सेना का पिछला भाग आक्रमण करके नष्ट कर दिया जाता है।

पृष्ठभाग–(स०पु०) पिछला भाग, पीठ।

पृष्ठमास–स० नपु०) पशु आदि के पीठ पर का मास।

पृष्ठमासद्–(स० वि०) पीठ पीछे निन्दा करने वाला, चुगलखोर, पीठ का मास खाने वाला।

पृष्ठयान–(स०नपु०) पीठ के बल चलना फिरना।

पृष्ठवश–(स०पु०) पीठ पर की हड्डी, रीढक, रीढ।

पृष्ठवाह्य–(स० पुं०) वह पशु जिसकी पीठ पर बोझ लादा जाता है।

पृष्ठशय–(स०वि०) पीठ के बल सोने वाला

पृष्ठश्रृङ्ग–(स० पु०) जगली बकरा।

पृष्ठश्रृङ्गी–(स० पु०) भैंसा, भीमसेन, भेंड़ा, नपुसक, हिजड़ा।

पृष्ठानुग, पृष्ठानुगामी–(स० वि०) पीछे जाने वाला।

पृष्ठास्थि–(स० नपु०) देखो पृष्ठवश।

पृष्ठ्य– (स० नपु०) बोझ ढोनेवाला घोड़ा

पृष्णिपर्णी–(स० स्त्री०) पिठवन लता।

पें–(हि० पु०) रोने या बाजा फूकने से निकलने का शब्द।

पेंग–(हि० स्त्री०) हिंडोले या झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर जाना, (पु०) एक प्रकार का पक्षी, **पेंग मारना**-झूले का वेग बढ़ाना।

पेंघट, पेंघा(हि०पु०) एक प्रकार की मटमैले रग की चिड़िया।

पेंच–(हिं०पु०) देखो पेच।

पेंचक–(हि०पु०) देखो पेचक।

पेंचकश–(हिं०पु०) देखो पेचकश।

पेंजनी–(हिं०स्त्री०) देखो पैंजनी।

पेंठ–(हि०स्त्री०) देखो पैंठ, पैठ।

पेंड़–(हिं० पु०) एक प्रकार का पीली चोंच का सारस।

पेंडुकी–(हि०स्त्री०) पडुक पक्षी, फाख़ता, सोनार की फुकनी, गुझिया नामक पकवान।

पेंदा-(हिं०पु०) किसी वस्तु का निचला भाग या आधार, तला।

पेंदी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु का निचला भाग, गुदा, मूली या गाजर की जड़।

पेंशन-(हिं०स्त्री०) देखो पेन्शन।

पेंशनर–(हिं०पु०) देखो पेन्शनर।

पेंसिल-(हिं०स्त्री०) देखो पेन्सिल।

पेउश–(हिं०पुं०) देखो पेउसी।

पेउसी–(हिं० स्त्री०) ब्याई हुई गाय या भैंस का पहिले दिन का दूध, एक प्रकार का पकवान।

पेखक–(हि०वि०) प्रेक्षक, देखने वाला।

पेखना–(हिं०क्रि०) देखना।

पेच–(स०पु०) उलूक पक्षी, उल्लू।

पेच–(फा० पु०) घुमाव, चक्कर, लपेट, धूर्तता, चालबाजी, पगड़ी की लपेट या फेरा, उलझन, बखेड़ा, पेट का मरोड़, चिदती, एक प्रकार का आभूषण जो टोपी या पगड़ी में खोसा जाता है, सिरपेंच, यन्त्र के किसी अश को रोकने या चलाने का पुरज़ा, घुमाकर चढ़ाने की कील, दो गुड्डियों के डोर का उड़ाती समय आपस में उलझना, यन्त्र या कल, मशीन, युक्ति, तरकीब, उपाय, कुश्ती का दाँव, पेंच घुमना-दूसरे के विचार को पलटने का युक्ति करना।

पेचक–(स०पु०) उलूक पक्षी, उल्लू, पर्यङ्क, पलग, मेघ, बादल (फा०स्त्री०) बटे हुए तागे की लच्छी।

पेचकश–(फा०पु०) लोहार या बढई का वह औजार जिससे वे पेच कसते या खोलते हैं, वह घुमौवा तार जिससे बोतल में का काग निकाला जाता है।

पेचताब-(फा०पुं०) विवशता आदि के कारण प्रगट न किया जाने वाला क्रोध, गुस्सा जो मन में ही रह जावे।
पेचदार-(फा० वि०) उलझाने वाला, जिसमें कोई पेंच या कल लगी हो, (पु०) एक प्रकार का कसीदे का काम।
पेचना-(हि० क्रि०) किसी दो वस्तुओं के बीच में तीसरी चीज़ को इस प्रकार से जमा देना कि पता न चले।
पेचनी-(हिं० स्त्री०) सीधी लकीर पर काढ़ा हुआ कसीदा।
पेचवान-(फा०पु०) फर्शी या गुडगुडी मे लगाने की बड़ी सटक, बड़ा हुक्का।
पेचा-(हि०पु०) उल्लूक पक्षी, उल्लू।
पेचिका-(सं०स्त्री०) मादा उल्लू पक्षी।
पेचिल-(स० पु०) गज, हाथी।
पेचिश-(फा०स्त्री०) पेट की मरोड़ जो आँव के कारण होती है।
पेचीदगी-(फा०स्त्री०) पेचीला होने का भाव, उलझन।
पेचीदा-(फा० वि०) पेचदार, जिसमें बहुत से पेच हों, कठिन, टेढा मेढा, उलझनदार।
पेचोला-(फा०वि०) घुमाव फिराव का, कठिन, मुशकिल।
पेचुली-(स० स्त्री०) एक प्रकार का साग।
पेज-(हि०स्त्री०) रबड़ी, बसौंधी (अ०पु०) पुस्तक का पृष्ठ, पन्ना, वरक, सफहा।
पेट-(हि०पु०) शरीर के भीतर का वह भाग जहा पहुच कर भोजन पचता है, उदर, अन्तःकरण, मन, दिल, बन्दूक या तोप का गोला भरने का स्थान, किसी पोली वस्तु को भरने स्थान, समाई, गुंजाइश गर्भ, हमल, चक्की का भीतरी भाग जीविका,रोजी पचौनी ओझर, पेट काटना-किफायत के विचार से जान बूझ कर कम खाना, पेट का धन्धा-जीविका के निर्वाह का उपाय, पेट का पानी न पचना-रोक न सकना, पेट का हलका- ओछे स्वभाव का, जो गंभीर न हो, पेटकी आग-भूख, पेटकी बात-गुप्त वार्ता, पेट खलाना-भूखे दिखलाना, दीनता प्रगट करना, पेट चलना-बारबार दस्त होना, पेट जलना बड़ी भूख लगना, पेट देना-मन की बात कह देना, पेट पालना-जीविका चलाना, पेट फूलना-किसी बात को जानने के लिये उत्कण्ठित होना, पेट में वायु का भर जाना, पेट मे दाढी होना-बाल्यावस्था से ही चालाक होना, पेटमे होना-छिपी तरह से कोई वस्तु किसी के पास में होना, पेट से पाँव निकालना-बुरे मार्ग में लगना, पेट गिरना-गर्भपात होना, पेट रहना-गर्भ रहना, पेटवाली-गर्भवती, पेट से होना-गर्भवती होना, पेट में पैठना-गुप्त वार्ता जानने के लिये घनिष्टता बढाना, पेट में होना-मन में होना, मालूम रहना।
पेटक-(स० पु०) मजूषा, पेटारा, समूह, ढेर।
पेटकैया-(हि०क्रि०वि०) पेट के बल।
पेटल-(हि०वि०) बडे पेट वाला तोंदीला।
पेटा-(हिं०पु०)सीमा,हद,पूरा विवरण,ब्योरा वृत्त, घेरा, किसी पदार्थ का मध्य भाग, बड़ा टोकरा, पशुओं की अँतड़ी, नदी बहने का मार्ग, नदी का पाट।
पेटाक-(स०पु०) पेटक, पिटारा।
पेटागि-(हिं०स्त्री०) पेट की आग, भूख।
पेटारा-(हि० पु०) देखो पिटारा।
पेटार्थी पेटार्थू-(हिं० वि०) पेट भरने के लिये सब कुछ करने वाला,पेटू,भुक्खड़।
पेटिका-(हिं० स्त्री०) छोटी पिटारी, सदूक, पेटी।
पेटी-(हि०क्रि०) छोटा सदूक, सन्दूकची, चपरास, पेट का वह भाग जहाँ त्रिवली पड़ती है, छाती और पेडू के बीच का स्थान, कमरबद, चौड़ा तसमा, नाई का कैंची छुरा आदि रखने का थैला, बुलबुल की कमर मे बाँधने की डोरी, पेटी पड़ना-तोद निकल आना।
पेटू-(हिं० वि०) जो खाता हो, भुक्खड़।
पेटेन्ट-(अ० वि०) किसी आविष्कार के विषय में सरकार द्वारा की हुई रजिस्ट्री जिसके हो जाने से अविष्कार करने वाला स्वय आर्थिक लाभ उठा सकता है तथा नकल करने वाला दण्डनीय होता है।
पेठ-(हि०पु०) देखो पैठ।
पेठा-(हिं०पु०) कूष्माण्ड, सफेद कुम्हड़ा।
पेड्-(अ० वि०) जिसका महसूल या किराया दे दिया गया हो, जो चुकता कर दिया हो।
पेड़-(हिं०पु०) वृक्ष, दरख्त।
पेड़ना-(हि०क्री०) देखो पेरना।
पेड़ा-(हिं० पु०) खोवे की बनी हुई गोल चिपटी मिठाई, गुथे हुए आँटे की लोई।
पेड़ी-(हिं०स्त्री०) काण्ड, पेड़ की धड़, मनुष्य का धड़, शरीर का ऊपरी भाग, पुराने पौधे में का पान,वह खेत जिसमें पहिले पहिले ऊख बोई गई हो बाद में वह खेत गेंहू बोने के लिये जोता जावे।
पेड़ू-(हिं०पु०) गर्भाशय, उपस्थ, नाभि और मूत्रेन्द्रिय के बीच का स्थान।
पेत्व-(स० नपु०) अमृत, घी, बकरा।
पेदड़ी-(हिं० स्त्री०) देखो पिद्दी।
पेन-(हि० पु०) लिसोडे की जाति का एक वृक्ष।
पेनी-(अं० स्त्री०) इङ्गलैंड का एक तांबे का सिक्का जो भारत के प्रायः तीन पैसे के मूल्य का होता है।
पेनिवेट्-(अ०पुं०) एक अंग्रेजी तौल जो प्रायः दस रत्ती के बराबर होती है।
पेन्शन्-(अ०स्त्री०)मासिक अथवा वार्षिक वृत्ति जो किसी व्यक्ति अथवा परिवार के लोगों को उसकी पिछली सेवा के कारण दी जाती है।
पेन्शनर-(अ० पु०) पेन्शन पानेवाला व्यक्ति।
पेन्सिल-(अ०स्त्री०) कलम के आकार की गोल लबी लकड़ी जिसके भीतर सीसे सुरमे रगीन खड़िया आदि की सलाई भरी होती है जो कागज़ पर लिखने के काम मे आती है।
पेन्हाना-(हिं० क्रि०) देखो पहनाना,

दूहते समय गाय भैंस आदि के थन में दूध उतरना।
पेपर-(अं०पु०) कागज़, दस्तावेज़, तमस्सुक समाचार पत्र, अखबार।
पेपरमिन्ट-(हि०पु०) देखो पिपरमिन्ट।
पेम-(हि०पु०) देखो प्रेम।
पेमचा-(हि०पुं०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
पेय-(स० पु०) जल, दूध, पीने की वस्तु (वि०) पीने योग्य, जो पिया जा सके।
पेया-(स० स्त्री०) चावल की बनी हुई एक प्रकार की लस्सी।
पेयूष-(स० पु०) ब्याई हुई गाय का सात दिन के भीतर का दूध, पेउस, अमत ताज़ा घी।
पेरना-(हिं० क्रि०) किसी काम के करने में देर लगाना, रस निकालने के लिये किसी वस्तु को दबाना, कष्ट देना, बहुत सताना, प्रेरणा करना, चलाना, भेजना, किसी वस्तु को किसी यन्त्र में डालकर घुमाना।
पेरली-(हिं० स्त्री०) ताण्डव नृत्य का एक भेद।
पेरवा-(हिं० पु०) कोल्हू में किसी वस्तु को पेरने वाला।
पेरा-(हि० पु०) घर आदि पोतने की पीली मिट्टी।
पेरिस-युरोप के फ्रास देश की राजधानी।
पेरी-(हि० स्त्री०) देखो पियरी।
पेरु-(स० पु०) अग्नि, सूर्य समुद्र।
पेरोज-(स०नपु०) फीरोज़ा नामक रत्न।
पेल-(सं० नपु०) पुरुष का अण्डकोष।
पेलढ-(हिं० पु०) देखो पेल्हड़।
पेलना-(हिं०क्रि०) धक्का देना, ढकेलना, टालना, बल प्रयोग करना, ज़बरदस्ती करना, घुसाना ज़ार से भीतर का दबाना, गुदा मैथुन करना, त्यागना, हटाना, आक्रमण करने के लिये आगे बढना, ढीलना देखो पेरना।
पेलव-(स० वि०) मृदु, कोमल, लघु, विरल, कृश, दुबला पतला, सूक्ष्म।
पेलवाना-(हि० क्रि०) पेलने का काम दूसरे से कराना।
पेला-(हि० पु०) आक्रमण, धावा, झगड़ा, तकरार, अपराध, कसूर, पेलने की क्रिया या भाव।
पेलि-(स०वि०) गमन शील, जाने वाला।
पेलिशाला-(स० स्त्री०) अश्वशाला, अस्तबल।
पेलू-(हिं० पु०) उपपति, जार, गुदा भजन करने वाला, ज़बरदस्त।
पेल्हड़- हि० पु०) अण्डकोष, फोता।
पेवँ-(हि० पु०) प्रेम, स्नेह।
पेवक्कड़-(हि० पु०) देखो पियक्कड़।
पेवड़ी-(हि० स्त्री०) रामरज, पीले रग की बुकनी।
पेवर-(हिं० पु०) पीला रंग।
पेवस-(हि० पु०) हालकी ब्याई हुई गाय या भैंस का दूध।
पेवसी-(हिं०स्त्री०) देखो पेवस।
पेश-(फा०क्रि०वि०)सन्मुख, सामने,आगे, **पेश आना**-व्यवहार करना, बरताव करना, **पेश कब्ज**-कटारी, **पेश करना**-सामने रखना, भेंट करना, दिखलाना,**पेश चलना**-जोर दिखलाना
पेशकश-(फा० पुं०) सौगाद, तोहफा, नजर, भेंट।
पेशकार-(फा०पु०) वह कर्मचारी जो हाकिम के सामने कागज पत्र पेश करता है और उसकी आज्ञा लेता है।
पेशकारी-(फा०स्त्री०) पेशकार का काम या पद।
पेशख़ेमा-(फा०पु०) फौज का अगला हिस्सा जो आगे चलता है, किसी बात का पूर्व लक्षण सेना की सामग्री जो पहले ही से आगे भेज दी जाती है।
पेशगी-(फा० स्त्री०) पुरस्कार, मज़दूरी आदि का वह अश जो काम होने से पहिले दी जाती है, अगौड़ी, अगाऊ।
पेशतर-(फा०क्रि०वि०) पूर्व, पहले।
पेशताख-(फा०स्त्री०) इमारतों में दरवाज़े के ऊपर की आगे की ओर निकली हुई मेहराब।
पेश दस्त-(हि०पुं०) देखो पेशकार।
पेशदस्ती-(फा०स्त्री०)ज़बरदस्ती,ज़्यादती।
पेशवन्द-(फा०पु०) चारजामे में लगा हुआ वह दोहरा बन्धन जो घोड़े की गरदन पर से लाकर दूसरी ओर बाँध दिया जाता है।
पेशबन्दी-(फा० स्त्री०) पहिले से सोची हुई बचाव की युक्ति, छल, धोखा।
पेशराज-(फा०पु०) वह मज़दूर जो राज या मेमार के लिये पत्थर ईंटा आदि ढोकर लाता है।
पेशल-(स०वि०)दक्ष, प्रवीण, चतुर,धूर्त, चालाक, कोमल, (पु०) विष्णु।
पेशलता-(सं०स्त्री०) सुकुमारता, नजाकत सुन्दरता, धूर्तता, चालाकी।
पेशलत्व-(स०नपु०) देखो पेशलता।
पेशवा-(फा० पु०) महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मन्त्रियों की उपाधि, सरदार, नेता, अगुआ।
पेशवाई-(फा० स्त्री०) अगवानी, किसी माननीय पुरुष के आगमन पर घरसे कुछ दूर चलकर उसका स्वागत करना, पेशवा का पद या कार्य, पेशवाओं की शासन विधि।
पेशवाज़-(फा० स्त्री०) एक प्रकार का घाघरा जिसको रडिया नाचती समय पहरती है।
पेशस्कार-(स० क्रि०) रूप बदलने वाला कीड़ा।
पेशा-(फा० पुं०) जीविका उपार्जन करने के लिये किया जाने वाला काम, व्यवसाय, उद्यम।
पेशानी-(फा०स्त्री०) कपाल,ललाट माथा, भाग्य, प्रारब्ध, किसी पदार्थ का ऊपरी तथा अगला भाग।
पेशाव-(फा० पु०) मूत्र, मूत, वीर्य, सन्तान, **पेशाब करना**-अति तुच्छ समझना, **पेशाव से चिराग जलना**-बड़ा यशस्वी या प्रतापी होना।
पेशाबखाना-(फा०पु०) पेशाब करने का स्थान।
पेशावार-पजाब के एक ज़िले तथा नगर का नाम, (फा० पु०) किसी

प्रकार का व्यवसाय करने वाला।
पेशि-(सं०स्त्री०) अंडा, अरहर की दाल।
पेशिका-(सं० स्त्री०) अंडा।
पेशी-(सं० स्त्री०) अंडा, वज्र, उड़द की दाल, पकी हुई फूल की कली, जटामासी, तलवार की म्यान, एक प्रकार का ढोल, गर्भकोष शरीर के भीतर की मास की गाँठ, पट्ठा (फा०स्त्री०) सामने होने की क्रिया या भाव, किसी मौकदमे की सुनवाई।
पेशीकोष-(सं०पुं०) अण्डकोष, फोता।
पेशीनगोई-(फा०स्त्री०) भविष्यवाणी।
पेश्तर-(फा०क्रि०वि०) पूर्व, पहले।
पेषक-(सं० वि०) पीसने वाला।
पेषण-(सं०नपु०) चूर्ण करना, पीसना।
पेषणी-(सं० स्त्री०) वह सिल जिस पर कोई वस्तु पीसी जावे।
पेषणीय-(सं० वि०) पीसने योग्य।
पेषना-(हिं०क्रि०) देखो पेखना।
पेस-(हिं०वि०) देखो पेश।
पेसल-(हिं०वि०) देखो पेशल।
पेहँटा-(हिं० स्त्री०) कचरी नामक लता का फल जो कुदरू के आकार का होता है।
पैंकड़ा-(हिं०पु०) पैर का कड़ा, ऊट की नकेल।
पैंग-(हिं० स्त्री०) मोर की पूछ, धनुष की डोरी।
पैंचना-(हिं० क्रि०) अनाज फटकना, पछोरना।
पैंचा-(हिं० पु०) पलटा, हेरफेर।
पैंजना-(हिं० पु०) पैर में, पहरने का एक गहना।
पैंजनियाँ,पैंजनी-(हिं०स्त्री०) पैर में पहरने का एक गहना जो चलने पर झनझन शब्द करता है सग्गड़ या बैलगाड़ी के पहिये के आगे की ओर की वह टेढी लकड़ी जिसके छेद में पहिये या धुरा निकला रहता है।
पैंठ-(हिं० स्त्री०) हाट, बाजार, दूकान, हाट लगने का दिन।
पैंठौर-(हिं०पुं०) दूकान, हाट।

पैंड़-(हिं० पु०) मार्ग, रास्ता, पगडंडी, पग, कदम, डग।
पैंड़ा (हिं० पु०) प्रणाली, रीति मार्ग, पथ, रास्ता, अस्तबल, घुड़साल, पैंड़े पड़ना-परेशान करना दिक करना।
पैंड़िया-(हिं० पुं०) कोल्हू में गन्ना भरने वाला।
पैंत-(हिं० स्त्री०) बाजी, दाँव।
पैंतालिस-(हिं० वि०) चालीस और पाँच की सख्या का (पु०) चालीस और पाच की संख्या ४५।
पैंती-(हिं० स्त्री०) श्राद्धादि कर्म करती समय अगुलियों में पहिरने का कुश का बना हुआ छल्ला, पवित्री।
पैंतीस-(हिं० वि०) तीस और पाच की सख्या का (पु०) तीस और पाच की संख्या ३५।
पैंयां-(हिं०स्त्री०) पाव, पैर।
पैंसठ-(हिं० वि०) साठ और पाच की सख्या का (पुं०) साठ और पाच की सख्या ६५।
पै-(हिं० पु०) माड़ी देने या कलफ चढाने की क्रिया, (स्त्री०) दोष, ऐब, त्रुटि (अव्य०) प्रति, ओर, तरफ, निकट, पास, समीप, परन्तु, पर, अनन्तर, पीछे, निश्चय, अवश्य (प्रत्य०) अधिकरण सूचक विभक्ति, पर, ऊपर, करणसूचक विभक्ति द्वारा, से, जोपै-यदि, तोपै-तो, फिर।
पैकर-(हिं०पु०) कपास की रूई इकट्ठा करने वाला।
पैकरमा-(हिं०स्त्री०) देखो परिक्रमा।
पैकरी-(हिं० स्त्री०) पाँव में पहरने का एक गहना।
पैकार-(फा० पुं०) छोटा व्यापारी, थोड़ी पूजी, का रोजगारी, फुटकर बेंचने वाला, फेरी वाला।
पैकारी-(हिं०पु०) देखो पैकार।
पैकी-(हिं०पु०) मेले आदि में घूम घूम कर तमाखू पिलाने वाला।
पैकेट-(अं०पु०) पुलिन्दा, छोटी गठरी।
पैखाना-(हिं०पु०) देखो पायखाना।

पैगंबर-(फा० पु०) धर्मप्रवर्तक, ईश्वर का सन्देश मनुष्य के पास लाने वाला।
पैगंबरा-(फा०स्त्री०) पैगंबर का कार्य या पद, (वि०) पैगंबर सबंधी।
पैग-(हिं० पु०) कदम, डग।
पैगाम-(फा०पु०) सन्देश, सन्देसा, विवाह के संबध की बात।
पैङ्गल-(सं०पुं०) पिङ्गल कृत छन्दशास्त्र
पैज-(हिं०स्त्री०) प्रतिज्ञा, पण, टेक, किसी के विरोध में किया हुआ हठ (पु०) पैतरा।
पैजनी-(हिं०स्त्री०) देखो पैंजनी।
पैजा-(हिं०पु०) किवाड़ के छेद में पहिराया हुआ लोहे का कड़ा, पायना।
पैजामा-(हिं०पु०) देखो पायजामा।
पैजार-(फा० पु०) जूता, पनही, जूता पैजार-जूते से मारपीट।
पैजावा-(हिं०पु०) ईंट पकाने का स्थान।
पैठ-(हिं०स्त्री०) प्रवेश, घुसने का काम, दखल, पहुँच, गति, आना जाना।
पैठना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना।
पैठाना-(हिं०क्रि०)प्रवेश कराना घुसाना।
पैठार-(हिं०पु०) प्रवेश, पैठ, प्रवेश द्वार, दरवाजा।
पैठारी-(हिं०स्त्री०) प्रवेश, पैठ, गति, पहुँच।
पैठौ-(हिं०स्त्री०) बदल, एवज।
पैड़ी-(हिं०स्त्री०) सीढी, पुरवट खींचते समय बैलों के चलने के लिये बना हुआ ढालुआँ रास्ता, पौदर।
पैतरा-(हिं०पु०) कुश्ती लड़ने में अथवा तलवार चलाती समय घूम फिर कर पैर रखने की मुद्रा, धूल पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।
पैतरी-(हिं०स्त्री०) रेशम फेरने की परेती।
पैतला-(हिं०वि०) छिछला, कम गहरा।
पैताना-(हिं०पु०) देखो पायताना।
पैतामह-(सं०वि०) पितामह सबंधी।
पैतृक-(सं०वि०) पितृसबंधी, पुश्तैनी।
पैतृक भूमि-जिस स्थान में बापदादे बसे रहे हों।
पैत्त-(सं०वि०) पित्तज, पित्त से उत्पन्न, पित्त सबंधी।

पैत्तल-(स०वि०) पीतल संबंधी ।
पैत्तिक-(स० वि०) पित्त से उत्पन्न, पित्त संबंधी ।
पैत्र्य-(स०वि०) पितृ संबंधी ।
पैथला-(हिं०वि०) छिछला, उथला ।
पैदर-(हिं०पुं०) देखो पैदल ।
पैदल-(हिं०पु०) पदाति, पैदल सिपाही, पाव पाव चलना, (वि०) पाँव पाँव चलने वाला,(क्रि०वि०)पाव पाव,पैदल ।
पैदा-(फा०वि०) प्रगट, उपस्थित,प्रसूत, जनमा हुआ, अर्जित, कमाया हुआ, आविर्भूत, घटित, प्राप्त, (स्त्री०) आय, आमदनी ।
पैदाइश-(फा०स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म ।
पैदाइशी-(फा०वि०)प्राकृतिक स्वाभाविक, जन्म का, बहुत पुराना ।
पैदावार-(फा०स्त्री०) उपज, फस्ल ।
पैदावारी-(हिं०स्त्री०) देखो पैदावार ।
पैन-(हिं०पु०)छोटा नाला,नाली,परनाली ।
पैना-(हिं०पु०) हलवाहों की बैल हाँकने की छोटी छड़ी लोहे की नुकीली छड़, अंकुश, धातु गलाने का मसाला (वि०) तीक्ष्ण, तेज, धारदार, चोखा ।
पैनाक-(स०वि०) पिनाक संबंधी ।
पैनाना-(हिं०क्रि०) छुरी आदि की धार चोखी करना ।
पैन्हना-(हिं०क्रि०) देखो पहनना ।
पैमक-(हिं० स्त्री०) कलाबत्तू की बनी हुई एक प्रकार की सुनहली गोंट ।
पैमाइश-(फा०स्त्री०) नापने की क्रिया या भाव, माप ।
पैमाना-(फा०पु०) मापने का औज़ार, जिससे कोई वस्तु नापी जाय, मानदण्ड।
पैमाल-(हिं०वि०) देखो पामाल ।
पैयाँ-(हिं०स्त्री०) पैर, पाँव ।
पैया-(हिं०पु०) पोला दाना, बिना सत्त का अन्न का दाना, दीन हीन खुक्ख ।
पैर-(हिं०पु०) गति साधक अंग, चरण, पाँव, धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न, खलिहान, डंठल सहित अन्न का अटाला, प्रदर रोग ।
पैर उठान-(हिं०पु०)कुश्ती का एक पेंच।
पैरगाड़ी-(हिं०स्त्री०) वह हलकी गाड़ी जो बैठे बैठे पैर घुमाने से चलती है, यथा बाइसिकल ।
पैरना-(हिं०क्रि०) पानी के ऊपर हाथ पैर चलाते हुए जाना तैरना ।
पैरवी-(फ़ा० स्त्री०) आज्ञापालन, किसी बात के अनुकूल प्रयत्न, कोशिश दौड़-धूप, अनुसरण, कदम चलना ।
पैरवीकार-(फा०पु०) पैरवी करने वाला।
पैरा-(हिं० पु०) पड़े हुए चरण, आया हुआ कदम, पैर में पहिरने का एक प्रकार का कड़ा, बाट बटखरे रखने का लकड़ी का खाना, ऊँची जगह पर चढ़ने के लिये बल्ले रख कर बना हुआ रास्ता ।
पैरा-(अं०पु०) लेख का उतना अंश जो एक साथ लिखा जावे और जो जगह छोड़ कर अलग न किया गया हो ।
पैराई-(हिं० स्त्री०) तैरने की क्रिया, तैरने की कला ।
पैराक-(हिं०पु०) तैरने वाला, तैराक ।
पैराग्राफ-(अं०पु०) देखो पैरा ।
पैराना-(हिं०क्रि०,तैराने का काम कराना ।
पैराव-(हिं० पु०) डुबाव, इतना गहरा पानी जो तैर कर ही पार किया जा सकता है ।
पैराशूट-(अं०पु०) वह बड़ा छाता जिसके सहारे गुब्बारे या वायुयान पर से उतरा जाता है ।
पैरी-(हिं०पु०) पैर में पहिरने का एक चौड़ा गहना, दवाँई, सूखे पौधों पर बैल चलाकर दाना अलगाने की क्रिया, सीढ़ी, पैड़ी, भेड़ों का बाल कतरने का काम ।
पैरेखना-(हिं०क्रि०) देखो परेखना।
पैरोकार-(हिं०पु०) देखो पैरवीकार ।
पैलगी-(हिं०स्त्री०) पालागन प्रणाम ।
पैला-(हिं०पु०) अन्न नापने की डलिया, दूध दही ढापने का मिट्टी का बरतन ।
पैली-(हिं०स्त्री०) देखो पैला ।
पैवंद-(फा०वि०)इष्ट मित्र, सम्बन्धी, कपड़े की चकती या थिगली, किसी वृक्ष की टहनी काटकर दूसरे उसी जाति के वृक्ष की टहनी में जोड़ कर बाँधने की विधि जिससे फल बढ़ जाते हैं ।
पैवंदी-(फा० वि०) दोगली वर्णसंकर, कलमी, पैवंद लगाकर उत्पन्न किया हुआ ।
पैवस्त-(फा०वि०) समाया हुआ, सोखा हुआ, जो प्रवेश होकर सब भागों में फैल गया हो ।
पैशलय-(स०नपु०) पेशलता कोमलता ।
पैशाच (स०वि० पिशाच संबंधी, पैशाच विवाह-आठ प्रकार के विवाहों में से वह विवाह जो सोई हुई कन्या को हरण करके अथवा मदोन्मत्त कन्या को फुसला घर उसके साथ विवाह किया जाता है ।
पैशाचिक-(सं० वि०) पिशाच संबंधी, राक्षसी, बीभत्स ।
पैशाची-(स०स्त्री०) प्राकृतिक भाषा का एक भेद ।
पैशुन-(स०नपु०) पिशुनता, चुगुलखोरी ।
पैशुनिक-(स०,वि०) पीठ पीछे निन्दा करने वाला, चुगुलखोर ।
पैशुन्य-(स०नपु०)पिशुनता,चुगलखोरी ।
पैष्टिक-(स०नपु०) अन्नों को सड़ाकर बनाया हुआ शराब ।
पैसना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना, पैठना ।
पैसरा-(हिं०पु०) व्यापार, प्रयत्न, झंझट, बखेड़ा ।
पैसा-(हिं०पु०)तीन पाई अथवा पाव आने के मूल्य का ताँबे का सिक्का,धन,दौलत।
पैसार-(हिं०पु०) प्रवेश द्वार, भीतर जाने का मार्ग ।
पैसिंजर गाड़ी-(हिं०स्त्री०) मुसाफिरों को ले जाने वाली रेलगाड़ी ।
पैसे वाला (हिं० पु०) धनी, धनवान्, मालदार ।
पैहरा-(हिं०पु०) पैकार, बनिया ।
पैहारी-(हिं० वि०) केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु) ।
पों-(हिं०स्त्री०) अधोवायु निकलने का शब्द,भोंपा फूँकने से निकला हुआ शब्द।

पोंकना-(हि०क्रि०) बहुत डरना, पतला दस्त होना ।
पोंका-हि० पुं०) वह फतिंगा जो पौधों पर उड़ता फिरता है ।
पोंगा-(हि० पु०) टीन आदि की नली, चोगा, बाँस की पोर या नली, (वि०) पोला, खोखला, मूर्ख ।
पोंगी-(हि०स्त्री०) छोटी पोली नली बाँस या ऊख का दो गाँठो के बीच का स्थान
पोंछ-(हि० स्त्री०) देखो पूछ ।
पोंछन-(हि०पु०) किसी वस्तु का पोंछ कर निकाला हुआ अंश ।
पोंछना-(हिं० क्रि०) किसी लगी या चिपकी हुई वस्तु को कपड़े आदि से हटाना, रगड़ कर साफ करना, काछना (पु०) पोंछने का कपड़ा ।
पोटा-(हि० पु०) नाक से निकला हुआ मल ।
पोआ-(हिं० पु०) साँप का छोटा बच्चा ।
पोआना-(हिं०क्रि०) पोने का काम दूसरे से कराना, आँटे की लोई को वेलकर सेंकने के लिये देना ।
पोइया-(हि० स्त्री०) घोड़े का दो दो पैर फेंक कर दौड़ना, घोड़े की सरपट चाल ।
पोइस-(हि०स्त्री०) घोड़े की सरपट चाल, (अव्य०) देखो, हटो, बचो ।
पोई-(हिं०स्त्री०) एक लता जिसकी पत्तियों का साग खाया जाता है, अंकुर, गेंहू आदि का छोटा पौधा, ऊख की आँख या पोर ।
पोकला-(हिं० पु०) महुए का पका हुआ फल ।
पोकल-(हि० वि०) निस्सार, पुलपुला, पोला, खोखला, तत्वहीन, कमजोर ।
पोख-(हि० पु०) पालने पोसने का संबंध, पोस ।
पोखनरी-(हि०स्त्री०) जुलाहे की ढरकी के बीच का गड्ढा ।
पोखना-(हिं० क्रि०) पालना, पोसना, थलकना, सोखना ।
पोखर-(हिं०पु०) तालाब, पोखरा, पृढे-वानी की एक बार ।
पोखरा-(हि० पु०) खोद कर बनाया हुआ तालाब ।
पोखराज-(हि०पु०) देखो पुखराज ।
पोखरी-(हि०स्त्री०)छोटा पोखरा या ताल
पोगण्ड-(स०पु०) पाच वर्ष से लेकर दस वर्ष तक की अवस्था का बालक, वह मनुष्य जिसका कोई अंग छोटा बड़ा या अधिक हो ।
पोच-(हिं० वि०) क्षीण, हीन, तुच्छ, नीच क्षुद्र ।
पोचारा-(हिं० पु०) देखो पुचारा ।
पोची-(हिं०स्त्री०) निचाई, हेठापन,बुराई
पोछना-(हि० क्रि०) देखो पोंछना ।
पोट-(स० पु०) स्पर्श, मेल, मिलान, (हिं० स्त्री०) मोटरी, पोटली, बगुचा, ढेर, पुस्तक के पन्ने का वह स्थान जहा सिलाई होती है ।
पोटगल-(स०पु०) नरकट, कास, एक प्रकार का सर्प ।
पोटना-(हिं० क्रि०) फुसलाना, बातों में लाना, समेटना, बटोरना ।
पोटरी-(हि०स्त्री०) देखो पोटली ।
पोटला-(हि०पु०) बड़ी गठरी ।
पोटली-हि०स्त्री०) छोटी गठरी या बगुचा
पोटा-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसमें पुरुष के लक्षण हों, दासी-(हिं० पु०) पेट की थैली, सामर्थ्य, समाई, चिड़िया का बच्चा, गेदा, नाक का मल, आँख की पलक, अंगुली का छोर ।
पोटास-(अं०पु०) शोरा, जवाखार आदि क्षार पदार्थ ।
पोट्टलिका, पोट्टली-(स०स्त्री०) पोटरी, छोटी गठरी ।
पोड़-(स०पु०) खोपड़ी का ऊपर का भाग
पोढ़ा-(हि० वि०) दृढ़, पुष्ट, मज़बूत, कठोर, कड़ा ।
पोढ़ाना-(हि०क्रि०) पुष्ट करना, पक्का करना या होना; मज़बूत होना ।
पोत-(स० पु०) नाव, जहाज़, घर की नीव, वस्त्र, कपड़ा, दस बरस का हाथी, छोटा पौधा, पशु आदि का छोटा बच्चा।
पोत-(हिं० स्त्री०) माला या गुरिया का दाना, काँच की गुरिया, (पु०) प्रवृत्ति, ढग, अवसर, दाँव, ज़मीन की लगान जो किसान देता है ।
पोतक-(स०पु०) तीन महीने का बच्चा, एक नाग का नाम ।
पोतकी-(स०स्त्री०) पोई नाम की लता ।
पोतज-(स०पु०) घोड़े हाथी आदि का वह बच्चा जो खेंड़ी सहित उत्पन्न हो ।
पोतड़ा-(हि० पु०) बच्चों के चूतड़ के नीचे रखने का वस्त्र, गतरा ।
पोतदार-(हिं० पु०) खजानची, जिसके पास लगान का रुपया रक्खा जावे, खज़ाने में रुपयों को परखने वाला ।
पोतधारी-(स० पु०) जहाज का अध्यक्ष ।
पोतन-(हि० पु०) स्वच्छ, पवित्र (वि०) पवित्र करने वाला ।
पोतनहर-(हिं० स्त्री०) वह पात्र जिसमें पोतने के लिये मिट्टी घोल कर रक्खी हो, घर पोतने वाली स्त्री, आँत, अँतड़ी ।
पोतना-(हि० क्रि०) किसी गीले पदार्थ को दूसरे पदार्थ पर फैला कर लगाना, चुपड़ना, गोबर, मिट्टी चूने आदि से किसी स्थान को लीपना, (पु०) पोतने का कपड़ा ।
पोतनायक-(स० पु०) जहाज का कप्तान, नाव का माझी ।
पोतभङ्ग-(स० पु०) जहाज का टक्कर खाकर नष्ट होना ।
पोतरज्जु-(स० पु०) नाव चलाने का डाड़ा या लग्गी ।
पोतला-(हि० पु०) तवे पर घी लगा कर सेकी हुई चपाती, पराठा ।
पोतवाह-(स० पु०) मल्लाह, माझी ।
पोता-(हि० पुं०) पौत्र, बेटे का बेटा, पवित्र वायु, विष्णु, घुली हुई मिट्टी जो दीवार आदि पर पोती जाती है, पोतने का कपड़ा, (फा० पु०) पोत, लगान, अंडकोष, देखो पोटा ।

पोताच्छादन-(सं० नपु०) तम्बू, डेरा।
पोताण्ड-(सं० पुं०) घोड़े के अण्डकोष का एक रोग।
पोतारा-(हिं० पु०) देखो पुतारा।
पोतारी-(हिं०स्त्री०) पोतने का कपड़ा।
पोताश्रय-(सं० पु०) बन्दरगाह।
पोतास-(सं० पु०) भीमसेनी कपूर।
पोतिका-(सं० स्त्री०) पोई की लता, वस्त्र, कपड़ा।
पोतिया-(हिं०पु०) सुरती, चूना, सुपारी आदि रखने की छोटी थैली, एक प्रकार का खिलौना।
पोती-(हिं० स्त्री०) पौत्री, पुत्र की बेटी रेशमी कपड़े पर माड़ी चढ़ाने की क्रिया, मिट्टी का लेप जो हड़िये की पेंदी में किया जाता है।
पोत्र-(सं० नपु०) हल की फार, वज्र, जहाज, नाव।
पोत्रायुध-(सं०पु०) शूकर, सुअर।
पोथकी-(सं० स्त्री०) छोटे बच्चों की आँख का एक रोग।
पोथा-(हिं० पु०) कागज़ों की गड्डी, बड़े आकार की पोथी।
पोथी-(हिं० स्त्री०) पुस्तिका, पोथी, किताब।
पोदना-(हिं० पु०) छोटे डीलडौल का पुरुष, नाटा या ठेंगना आदमी, एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
पोद्दार-(हिं०पु०) देखो पोतदार।
पोंना-(हिं० क्रि०) गीले आटे की लोई को हाथों में घुमा कर रोटी बनाना, पिरोना, गूथना, पकाना।
पोप-(अं० पु०) ईसाइयों के कैथोलिक् सम्प्रदाय के प्रधान गुरु जो इटली की राजधानी रोम में रहते हैं।
पोपला-(हिं०वि०) सिकुड़ा हुआ, पचका हुआ, बिना दाँत का, जिसके मुख में दाँत न हों।
पोपलाना-(हिं० क्रि०) पोपला होना।
पोपली-(हिं० स्त्री०) आम की गुठली को घिसकर बनाया हुआ बच्चों का बाजा।

पोय-(हिं०स्त्री०) देखो पोई।
पोया-(हिं० पुं०) नरम छोटा पौधा, बच्चा, साँप का छोटा बच्चा।
पोर-(हिं० स्त्री०) अंगुली की गाँठ या जोड़, दो गाँठों के बीच का अंगुली का भाग, रीढ़, पीठ, ऊख, बाँस आदि का वह भाग जो दो गाँठों के बीच में हो।
पोरा-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का, मण्डलाकार टुकड़ा लकड़ी का गोल कुन्दा, कुन्दे की तरह मोटा मनुष्य।
पोरिया-(हिं० स्त्री०) छल्ले के आकार का वह गहना जो हाथ या पैर के पोरों पर पहना जाता है।
पोरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की कड़ी मिट्टी।
पोर्ट-(अं० पुं०) अंगूर से बनी हुई एक प्रकार की शराब।
पोर्तुगीज़-देखो पुर्तगीज।
पोल-(सं० वि०) प्रभाव युक्त (पु०) एक प्रकार का फुलका, नाभि के नीचे का भाग (हिं० पु०) अवकाश, शून्य स्थान, सारहीनता, खोखलापन, प्रवेश द्वार, आंगन, पोल खोलना-गुप्त बात अथवा किसी के दोष को प्रगट करना।
पोलच-(हिं० पु०) वह ऊसर भूमि जिसको जोते हुए तीन वर्ष हो गये हों।
पोला-(हिं० वि०) जो भीतर से भरा न हो, पुलपुला, खोखला, निस्सार, तत्त्वरहित (पु०) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और नरम होती है।
पोलाद-(हिं०पु०) देखो फौलाद।
पोलारी-(हिं० स्त्री०) सोनार का छेनी के आकार का एक छोटा औजार।
पोलाव-(हिं०पु०) देखो पुलाव।
पोलिका-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की चपाती।
पोलिटिकल् एजेन्ट-(अं० पु०) दूसरे राज्य में नियुक्त किया हुआ राजा का प्रतिनिधि।

पोलिन्द-(सं० पु०) नाव में यात्रियों के बैठने को दोनों ओर की पटरी।
पोलिया-(हिं० स्त्री०) पैर में पहिरने का एक पोला गहना।
पोली-(सं०स्त्री०) पतली रोटी (हिं०स्त्री०) जंगली कुसुम।
पोलो-(अं० पु०) गेंद का एक अंग्रेज़ी खेल जो घोड़े पर चढ़ कर खेला जाता है।
पोशाक-(फा०स्त्री०) परिधान, पहिरावा।
पोशाकी-(फा० पु०) एक प्रकार का मलमल की तरह का कपड़ा।
पोशीदगी-(फा०स्त्री०) गुप्ति छिपाव।
पोशीदा-(फा०वि०) गुप्त, छिपा हुआ।
पोष-(सं० पु०) पालन पोषण, वृद्धि, बढ़ती, सन्तोष, तृप्ति, उन्नति, धन दौलत।
पोषक-(सं० वि०) पालक, पालने वाला, बढ़ाने वाला, सहायता देने वाला।
पोषण-(सं० नपु०) पुष्टि, पालन, बढ़ती, सहायता।
पोषध-(हिं०पु०) उपवास व्रत।
पोषधोषित-(सं०वि०)उपवास किया हुआ
पोषना-(हिं०क्रि०) पालना।
पोषयिष्णु-(सं० वि०)पोषक, पालनेवाला
पोषित-(सं० वि०) पाला हुआ।
पोष्य-(सं० वि०) पोषणीय पालने योग्य (पु०) भृत्य, सेवक नौकर, पोष्यपुत्र-पुत्र के समान पाला हुआ लड़का, दत्तक पुत्र, पालट।
पोस-(हिं० पु०) पालने वाले के साथ प्रेम।
पोसन-(हिं०पु०) रक्षा, पालन।
पोसना-(हिं०क्रि०) रक्षा करना, पालना, अपनी रक्षा में रखना।
पोस्ट-(अं० स्त्री०) जगह, स्थान, पद, नौकरी, डाकघर, पोस्ट आफ़िस-डाकखाना, पोस्ट कार्ड-डाक द्वारा भेजने का मोटे कागज का टुकड़ा, पोस्ट मास्टर-डाक घर का बड़ा कर्मचारी, पोस्ट मैन-चिट्ठी रसा।
पोस्ट मार्टम्-(अं० पु०) मृत्यु का कारण

निश्चित करने के लिये मरने के बाद लाश को चीरफाड़ करके परीक्षा करना।

पोस्टल गाइड्-(अं०पुं०) डाकघर के नियमों की पुस्तक।

पोस्टेज-(अं० स्त्री०) डाक द्वारा चिट्ठी, पारसल आदि भेजने का महसूल।

पोस्त-(फा० पु०) वल्कल, छिलका, खाल, चमड़ा, अफीम के पौधे का ढोंढा, पोस्ता।

पोस्ता-(फा० पु०) वह पौधा जिसके ढोंढें में से अफीम निकाली जाती है।

पोस्ती-(फा० पुं०) वह जो नशे के लिये पोस्ते के ढोंडे पीसकर पीता हो, आलसी आदमी, एक प्रकार का कागज़ का बना हुआ खिलौना जिसकी पेंदी भारी होती है और जो लिटाने पर खड़ा हो जाता है।

पोस्तीन-(फा० पु०) जानवरों की खाल का बना हुआ मुलायम वस्त्र, खाल का बना हुआ कोट जिसके भीतरी ओर रोवें रहते हैं, किताब के जिल्द का भीतरी भाग।

पोहना-(हिं० क्रि०) पिरोना, गूथना घिसना, पीसना, घुसाना, धँसाना, जड़ना छेदना, पोतना (वि०) घुसने वाला।

पोहर-(हिं० पु०) पशुओं के चरने का स्थान, चरहा, पशुओं का चारा।

पोहमी-(हि० स्त्री०) देखो पुहमी।

पोहा-(हि० पु०) पशु, चौपाया।

पोहिया-(हिं० पु०) चरवाहा।

पौंचा-(हि०पु०) साढे पाच का पहाड़ा।

पौंड़ई-(हि० वि०) गन्ने के रग का।

पौंड़ा-(हिं० पु०) एक प्रकार का बड़ी और मोटी जात का गन्ना जिसका छिलका कड़ा होता है परन्तु रस बहुत मीठा होता है।

पौंड़ी-(हिं० स्त्री०) देखो पौरी।

पौंढना-(हि०क्रि० देखो पौढ़ना, तैरना।

पौरना-(हिं० क्रि०) पौढना, तैरना।

पौंरि-(हिं० स्त्री०) देखो पौरो।

पौंरिया-(हि० पु०) देखो पौरिया।

पौंश्चल्य-(स० नपु०) पुरुष और स्त्री का छिपकर व्यभिचार।

पौंसवन-(स० नपु०) पुसवन सस्कार।

पौ-(हिं०स्त्री०) पौसला, प्याऊ, ज्योति, किरण, पासे की एक चाल या दाँव (पु०) पैर जड़, **पौ फटना**-प्रातः काल होना, **पौ बारह होना**-जीत का दाँव पड़ना, बन पड़ना, लाभ होना।

पौआ-(हिं०,पु०) देखो पौवा।

पौगण्ड-(स० नपुं०) पाच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।

पौठ-(हि० स्त्री०) जोत की वह रीति जिसके अनुसार जोतने का अधिकार प्रतिवर्ष बदलता जाता है।

पौडर-(अं०पु०) चूर्ण, बुकनी, मुख पर लगाने की गुलाबी या सफेद बुकनी।

पौढ़ना-(हि० क्रि०) लेटना, सोना, आगे पीछे हिलना।

पौढाना-(हिं०क्रि०) इधर उधर हिलाना, झुलाना, लेटाना, सुलाना।

पौण्डरीक-(स० नपु०) एक प्रकार का यज्ञ, स्थल कमल।

पौण्ड्र-(स० पु०) मोटा गन्ना, पौंढा, भीमसेन के एक शख का नाम, पुण्ड्र देश का राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था, एक प्राचीन पतित जाति।

पौण्ड्रक-(स० पु०) देखो पौण्ड्र।

पौण्य-(स० वि०) पुण्य कर्मकारक।

पौताना-(हिं० पु०) देखो पैताना।

पौत्तलिक-(सं० वि०) पुतली संबन्धी।

पौत्र-(स० पु०) पुत्र का पुत्र, पोता।

पौत्रिकेय-(सं०पुं०) लड़की का लड़का (नाती) जो अपने नाना की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो।

पौत्री-(स०स्त्री०) पुत्र की बेटी, पोती।

पौद-(हिं० स्त्री०) छोटा पौधा, नया निकला हुआ पेड़, वह छोटा पौधा जो एक स्थान से निकाल कर दूसरे स्थान में लगाया जा सके, सन्तान, वश, बड़े लोगों के चलने के लिये भूमि पर बिछाया हुआ वस्त्र, पाँवड़ी।

पौदर-(हि०स्त्री०) पैर का चिह्न, पगडंडी, वह ढालुआ मार्ग जिसपर से बैल कुवें से पुरवट खींचते हैं।

पौदा-(हि०पु०) देखो पौधा, छोटा वृक्ष।

पौधन-(हिं० स्त्री०) वह पात्र जिसमें रखकर खाना परोसा जाता है।

पौधा-(हि० पु०) नया निकलता हुआ पेड़, छोटा पेड़, क्षुप, गुल्म आदि।

पौधि-(हि० स्त्री०) देखो पौद।

पौन. पुनिक-(स० नपु०) गणित में दशमलव के वे अक जो बारबार आते हैं।

पौनरुक्त-(सं०वि०) बारबार कहना।

पौनर्णव-(स० पु०) सन्निपात ज्वर का एक भेद।

पौनर्भव-(स० पु०) वह पुत्र जो उस स्त्री से उत्पन्न हो जो विधवा होने पर अथवा पति से छोड़ी जानेपर अपनी इच्छा से दूसरे से विवाह कर ले।

पौनर्भवा-(स०स्त्री०) वह कन्या जिसका किसी के साथ एक बार विवाह हो चुका हो और दूसरी बार दूसरे के साथ विवाह किया जावे।

पौन-(हिं० पु०) देखो पवन, वायु, हवा, (वि०) तीन चौथाई भाग।

पौना-(हिं० पु०) पौन का पहाड़ा, लोहे की बड़ी करछी या झरनी।

पौनार, पौनारि-(हिं० स्त्री०) कमल के फूल की डडी।

पौनो-(हिं० स्त्री०) नाऊ, बारी, धोबी आदि जा विवाहादि उत्सवों पर नेग पाते हैं, छोटा पौना।

पौने-(हि०वि०) किसी सख्या का तीन चौथाई।

पौमान-(हिं०पु०) जलाशय, पोखरा।

पौर-(स० स्त्री०) रोहिष नाम की घास, नखी नामक गन्धद्रव्य, (वि०) नगर सबधी, नगर में उत्पन्न पूर्व दिशा का।

पौरक-(सं०पु०) घर के बाहर का बगीचा।

पौरजन-(स०पुं०) शहर में रहने वाला।

पौरन्दर-(स० वि०) इन्द्र सबधी, (स्त्री०) ज्येष्ठा नक्षत्र।

पौरव-(सं० पु०) पुरुवश, पुरु देश का

निवासी, (वि०) पुरु के वंश का ।
पौरवी-(सं०स्त्री०) युधिष्ठिर की एक स्त्री का नाम, संगीत में एक मूर्छना ।
पौरसख्य-(सं०पुं०) वह मैत्री जो एक नगर या ग्राम में रहने से परस्पर होती है ।
पौरस्त्री-(सं०स्त्री०) अन्तःपुर में रहने वाली स्त्री ।
पौरा-(हिं०पुं०) पड़े हुए चरण, आया हुआ कदम ।
पौराण-(सं०वि०) पुराण में लिखा या कहा हुआ, पुराण सम्बन्धी ।
पौराणिक-(सं० स्त्री०) पुराणवेत्ता, पुराणपाठी, प्राचीन काल का, अठारह मात्रा के छन्दों की संख्या ।
पौरि-(हिं० स्त्री०) देखो पौरी ।
पौरिया-(हिं० पुं०) द्वारपाल, ड्योढी-दार, दरबान ।
पौरी-(हिं०स्त्री०) ड्योढी सीढी, खड़ाऊँ ।
पौरुष-(सं० नपुं०) पुरुष का तेज, पुरुषत्व, पराक्रम, साहस, उद्यम, उद्योग, गहराई या ऊंचाई की एक माप, पुरसा (वि०) पुरुष संबंधी ।
पौरुषिक-(सं० वि०) पुरुष संबंधी ।
पौरुषेय-(सं०पुं०) जन समुदाय, पुरुष का कर्म, (वि०) आदमी का किया हुआ, आध्यात्मिक ।
पौरुष्य-(सं० नपुं०) पुरुषता, साहस ।
पौरुहूत-(सं०पुं०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र ।
पौरू-(हिं०पुं०) मिट्टी का एक भेद ।
पौरोहित-(सं०नपुं०) पुरोहित का धर्म या कार्य ।
पौरोहित्य-(सं० नपुं०) पुरोहित का कर्म, पुरोहिताई ।
पौर्णमास-(सं०पुं०) पौर्णमासी के दिन होने वाला एक यज्ञ ।
पौर्णमासिक-(सं०वि०) देखो पौर्णमास ।
पौर्णमासी-(सं०स्त्री०) पूर्णमासी ।
पौर्वदैहिक-(सं०वि०) पूर्व देह संबन्धी ।
पौर्वापर्य-(सं०नपुं०) अनुक्रमण, सिल-सिला, कारण, फल, नतीजा ।
पौलस्ती-(सं०स्त्री०) पुलस्त्य की कन्या, सूर्पनखा ।
पौलस्त्य-(सं० पुं०) पुलस्त्य का पुत्र या उनके वंश का पुरुष, रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण, चन्द्रमा ।
पौला-(हिं०पुं०) बिना खूटी का खड़ाऊ जिसमें छेद में फँसी हुई रस्सी से अंगूठा फँसा रहता है ।
पौलि-(सं०स्त्री०) पोलिका, फुलेका, रोटी ।
पौलिया-(हिं०पुं०) देखो पौरिया ।
पौली-(हिं०स्त्री०) पौरी, ड्योढी, पैर का एडी से लेकर अंगुलियों तक का भाग, धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न
पौलोमी-(सं०स्त्री०) इन्द्राणी, भृगु ऋषि की पत्नी का नाम ।
पौवा-(हिं०पुं०) एक सेर का चौथाई अंश, पाव भर दूध, पानी आदि अटने योग्य पात्र ।
पौष-(सं०पुं०) बारह महीनों के अन्तर्गत नवाँ महीना, जिस महीने की पुनवासी पुष्य नक्षत्र में हो, पूस का महीना ।
पौष्कर-(सं०नपुं०) पुष्करमूल, भसीड़, स्थलपद्म, रेंड़ी की जड़ ।
पौष्करिणी-(सं० स्त्री०) छोटा पोखरा या तालाब ।
पौष्कल्य-(सं०नपुं०) सम्पूर्णता ।
पौष्टिक-(सं०वि०) पुष्टि करने वाला, बल वीर्य को बढाने वाला ।
पौष्प-(सं० वि०) पुष्प संबंधी, फूल का बना हुआ ।
पौसरा, पौसला-(हिं०स्त्री०) प्यासों को पानी पिलाने का स्थान अथवा प्रबन्ध ।
पौसार-(हिं० स्त्री०) जुलाहे का राछ को ऊंचा नीचा करने के लिये लगा हुआ डंडा ।
पौसेरा-(हिं०पुं०) पाव सेर की तौल ।
पौहारी-(हिं०पुं०) वह जो केवल दूध पीकर रहता है अन्न आदि न खाता हो ।
प्याऊ-(हिं०पुं०) पौसरा, पौसला ।
प्याज-(फा०पुं०) एक प्रसिद्ध कन्द जो बिलकुल गोल गाँठ के आकार का होता है ।
प्याजी-(फा०वि०) हलके गुलाबी रंग का ।
प्यादा-(फा० पुं०) दूत, हरकारा, शतरंज के खेल में का एक मोहरा ।
प्याना-(हिं०क्रि०) पिलाना ।
प्यार-(हिं०पुं०) प्रेम, स्नेह, प्रेम दिखलाने का कार्य यथा आलिंगन, चुम्बन आदि, पियार नाम का वृक्ष जिसका बीज चिरौंजी कहलाता है ।
प्यारा-(हिं०वि०) प्रीतिपात्र, जिसको प्यार करें, जो भला मालूम हो, जो अच्छा लगे, जो छोड़ा न जाय ।
प्याल-(फा० पुं०) एक प्रकार का कटोरा जिसका ऊपरी भाग पेंदी से चौड़ा होता है, गर्भाशय, भीख माँगने का पात्र, तोप या बंदूक आदि में का वह गड्ढा जिसमें रंजक रक्खा जाता है ।
प्यावना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना ।
प्यासा-(हिं०स्त्री०) जल पीने की इच्छा, तृष्णा, तृषा, पिपासा, किसी पदार्थ को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा, प्रबल कामना खूनका प्यासा-हत्या करने के लिये उद्यत ।
प्यासा-(हिं०वि०) जिसको प्यास लगी हो, जो पानी पीना चाहता हो ।
प्युष-(सं०नपुं०) विभाग, दाह ।
प्यून-(अं०पुं०) चपरासी हरकारा ।
प्यूस-(हिं०पुं०) देखो पेवस ।
प्यो-(हिं०पुं०) पति, स्वामी ।
प्योरी-(हिं०स्त्री०) रुई की मोटी बत्ती, एक प्रकार का पीला रंग ।
प्योसर-(हिं०पुं०) हाल को ब्याई हुई गाय का दूध ।
प्योसार-(हिं० पुं०) स्त्री के पिता माता का घर, पीहर, मायका ।
प्र-(सं०अव्य०) एक संस्कृत का उपसर्ग जो गति, उत्कर्ष, उत्पत्ति, आरंभ, ख्याति तथा व्यवहार अर्थ के लिये प्रयोग किया जाता है ।
प्रउग-(सं०नपुं०) एक प्रकार का शस्त्र ।
प्रकच-(सं०वि०) जिसके रोंगटे खड़े हों ।
प्रकट-(सं० वि०) स्पष्ट, व्यक्त, हाज़िर, जो प्रत्यक्ष हुआ हो, आविर्भूत, उत्पन्न ।
प्रकटन-(सं०नपुं०) प्रकट होने की क्रिया

प्रकटित–(सं०वि०) जो प्रकट हुआ हो, प्रकाशित ।

प्रकथन–(सं०नपुं०) स्पष्ट रूप से कथन, खुलासा बयान ।

प्रकम्प–(सं०पुं०) कँपकँपी, थरथराहट ।

प्रकम्पन–(सं०पुं०) वायु,हवा, एक नरक का नाम, एक राक्षस काम (नपुं०) कम्प, बड़ी थरथराहट ।

प्रकम्पमान–(सं० वि०) जोर से थरथराता हुआ ।

प्रकम्पित–(सं०वि०) कम्पनयुक्त ।

प्रकर–(सं०नपुं०) समूह, खिला हुआ फूल, अधिकार, सहारा, मदद, खूब काम करने वाला ।

प्रकरण–(सं० नपुं०) प्रस्ताव, वृत्तान्त, ज़िक्र, प्रसंग का विषय, किसी ग्रन्थ का एक छोटा विभाग, दृष्ट काव्य के अन्तर्गत रूपक के दस भेदों में से एक ।

प्रकरणी–(सं०स्त्री०) शृंगार रस प्रधान कोई छोटा नाटक जिसको नाटिका भी कहते हैं ।

प्रकरी–(सं० स्त्री०) नाटक के प्रयोजन सिद्धि के पांच साधनों में से एक, इसमें किसी एक देशव्यापी चरित्र का वर्णन होता है, एक प्रकार का गान ।

प्रकर्तव्य–(सं०वि०) अवश्य करने योग्य ।

प्रकर्ता–(सं० वि०) अच्छी तरह से करने वाला ।

प्रकर्ष–(सं० पुं०) उत्तमता, अधिकता, बहुतायत ।

प्रकर्षक–(सं०पुं०) उत्तमता से करनेवाला

प्रकर्षण–(सं०नपुं०) आधिक्य, अधिकता

प्रकला–(सं० स्त्री०) एक कला का साठवा भाग ।

प्रकल्पना–(सं० स्त्री०) निश्चित करना, स्थिर करना ।

प्रकल्पित–(सं०वि०) निश्चित किया हुआ ।

प्रकश–(सं० पुं०) पीड़ा देना, कोड़े से मारना ।

प्रकाण्ड–(सं०पुं०) वृक्ष का तना, शाखा (वि०) बहुत विस्तृत, बहुत फैला हुआ, बहुत बड़ा ।

प्रकाम–(सं०वि०) यथेष्ट, काफी (पुं०) कामना, इच्छा ।

प्रकार–(सं० पुं०) सादृश्य, समानता, भेद, भाँति, तरह, किस्म (हिं० स्त्री०) प्राकार, चहारदीवारी, परकोटा, घेरा ।

प्रकारता–(सं० स्त्री०) विषय का भेद ।

प्रकारान्तर–(सं० पुं०) अन्य प्रकार, दूसरी तरह ।

प्रकाश–(सं०पुं०)वह जिसके द्वारा नेत्रों को वस्तुओं के रूप, रंग आकार आदि का ज्ञान होता है, दीप्ति, आभा, धूप, ज्योति, स्पष्ट रूप से समझ में आना, गोचर होना, विस्तार, विकाश, प्रसिद्धि, ख्याति, किसी ग्रन्थ या पुस्तक का विभाग, शिव, महादेव, वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम. (वि०) प्रकाशित, जगमगाता हुआ, प्रत्यक्ष, अति प्रसिद्ध ।

प्रकाशक–(सं०वि०) प्रकट करने वाला, (पुं०) सूर्य, शिव, महादेव ।

प्रकाशकार–(हिं०पुं०) देखो प्रकाशक ।

प्रकाशता–(सं०स्त्री०) प्रकाश का भाव या धर्म, प्रकाशत्व ।

प्रकाशधर्म–(सं० पुं०) सूर्य ।

प्रकाशधृष्ट–(सं० पुं०) वह नायक जो प्रकट रूप से नायिका के साथ धृष्टता का व्यवहार करता है तथा किसी प्रकार का संकोच नहीं करता ।

प्रकाशन–(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम, प्रकाशित करने का काम, किसी ग्रन्थ को छापकर सर्वसाधारण में प्रचलित करने का काम ।

प्रकाशमान–(सं० वि०) प्रकाशयुक्त, चमकीला, प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर ।

प्रकाशवान–(हिं०वि०) देखो प्रकाशमान ।

प्रकाशवियोग–(सं०पुं०) वह वियोग जो गुप्त न रहे सबको विदित हो जावे ।

प्रकाशसंयोग–(सं० पुं०) वह संयोग जो सबको विदित हो जावे ।

प्रकाशात्मा–(सं० पुं०) सूर्य, विष्णु, (वि०) व्यक्त स्वभाव वाला ।

प्रकाशित–(सं० वि०) जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो, चमकता हुआ, जो प्रकाश में आ चुका हो, शोभित, प्रकट ।

प्रकाशिता–(सं० स्त्री०) प्रकाश का भाव या धर्म ।

प्रकाशी–(सं०वि०) प्रकाशयुक्त, जिसमें प्रकाश हो ।

प्रकाश्य–(सं०वि०) प्रकाशनीय, ज़ाहिर करने लायक, (हिं० क्रि० वि०) प्रकट रूप से, स्पष्ट रूप से ।

प्रकास–(हिं०पुं०) देखो प्रकाश ।

प्रकासना–(हिं०क्रि०) प्रकट करना ।

प्रकीर्ण–(सं० वि०) छितराया हुआ, फैलाया हुआ, मिलाया हुआ, अनेक प्रकार का, भिन्न जाति का ।

प्रकीर्णक–(सं०नपुं०) अध्याय, प्रकरण, विस्तार, वह जिसमें विभिन्न वस्तु मिली हो, फुटकर, घोड़ा ।

प्रकीर्णकेशी–(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी ।

प्रकीर्तन–(सं०नपुं०) जोर से चिल्लाकर कीर्तन करना, घोषणा करना ।

प्रकीर्ति–(सं० स्त्री०) प्रशंसा, प्रसिद्धि, घोषणा ।

प्रकीर्तित–(सं०वि०) कथित, कहा हुआ ।

प्रकुपित–(सं० वि०) अति क्रुद्ध, जिसका क्रोध बहुत बढ़ गया हो ।

प्रकुल–(सं० नपुं०) प्रशस्त देह, सुन्दर शरीर ।

प्रकृत–(सं०वि०) अधिकृत, आरंभ किया हुआ, निर्मित, रचा हुआ, यथार्थ, वास्तविक, सच्चा, विकार रहित, श्लेष अलंकार का एक भेद ।

प्रकृतता–(सं० स्त्री०) प्रकृत का भाव, याथार्थ्य ।

प्रकृति–(सं० स्त्री०) स्वभाव, मिज़ाज, किसी पदार्थ का प्रधान गुण जो सर्वदा बना रहता हो, तासीर, लिंग, योनि, संसार का निर्माण करने वाली मूल शक्ति, आकाशादि पांचों तत्व, शक्ति, परमात्मा, जन्तु, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस अक्षर होते हैं, माता, भगवान् की माया शक्ति, सत्त्व, रज और तम का साम्यावस्था ।

प्रकृतिज–(सं० वि०) जो प्रकृति या

स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो।
प्रकृतिपुरुष-(सं०पु०) प्रधान पुरुष।
प्रकृतिभाव-(सं० पुं०) स्वभाव व्याकरण में सन्धि का वह नियम जिसमें दो पदों के मिलने से इनमें से किसी में कोई परिवर्तन नहीं होता।
प्रकृतिशास्त्र-(सं०पु०) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों का विचार किया जाता है
प्रकृतिसिद्ध-(सं० वि०) स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्राकृत।
प्रकृतिस्थ-(सं० वि०) स्वाभाविक, जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो।
प्रकृष्ट-(सं० वि०) मुख्य, प्रधान, खास (वि०) आकृष्ट, खींचा हुआ।
प्रकृष्टता-(सं० स्त्री०) उत्तमता, श्रेष्ठता।
प्रकोट-(सं० पु०) परकोटा, परिखा, शहरपनाह।
प्रकोप-(सं० पु०) अधिक क्रोध, बीमारी की तेजी, क्षोभ, चचलता, वात पित्त कफ में से किसी के बिगड़ने से रोग का उत्पन्न होना।
प्रकोपन-(सं०नपु०) बन्धन, क्रोध, क्षोभ, आग का सुलगाना, चचलता, वात पित्त अथवा कफ का कोप जिससे रोग उत्पन्न होता है।
प्रकोपनीय-(सं०वि०) क्रुद्ध करने योग्य।
प्रकोपित-(सं०वि०) उत्तेजित किया हुआ।
प्रकोष्ठ-(सं० पु०) केहुनी के नीचे का भाग, घर के प्रधान द्वार के पास की कोठरी, बड़ा आगन जिसके चारो ओर कोठरिया हों।
प्रक्खर-(सं० पु०) घोडे की पाखर, कुत्ता, खच्चर (वि०) प्रचण्ड, बहुत तेज़।
प्रक्रम-(सं० पु०) क्रम, सिलसिला, अवसर, मौका, उल्लघन, किसी कार्य के आरभ में किया हुआ उपाय।
प्रक्रमण-(सं० नपुं०) पार करना, आरभ करना।
प्रक्रमभङ्ग-(सं० पु०) साहित्य का वह दोष जो तब होता है जब किसी नियम के आरभ किये हुए क्रम का ठीक पालन नहीं किया जाता।
प्रक्रान्त-(सं० वि०) आरभ किया हुआ।
प्रक्रिया-(सं०स्त्री०) प्रकरण,नियत विधि, युक्ति तरीका।
प्रक्रोश-(सं० पु०) आक्रोश।
प्रक्लेद-(सं० पु०) आर्द्रता, नमी, तरी।
प्रक्लेदन-(सं०नपु०) गीला करना,भिगोना
प्रक्ष-(हि० वि०) पूछने वाला।
प्रक्षय-(सं०पु०) नाश, बरबादी।
प्रक्षयण-(सं०पु०) विनाशन नाश करना।
प्रक्षर-(सं० पु०) घोडे का पाखर।
प्रक्षरण-(सं० नपु०) झरना, बहना।
प्रक्षालन-(सं० नपु०) मार्जन, जल से धोने की क्रिया।
प्रक्षालनीय-(सं०वि०) धोने या साफ करने योग्य।
प्रक्षालित-(सं० वि०) धोया हुआ, साफ किया हुआ।
प्रक्षिप्त-(सं०वि०) फेका हुआ, ऊपर से बढ़ाया हुआ, अन्दर रक्खा हुआ।
प्रक्षेप-(सं० पु०) वह द्रव्य जो औषध आदि में ऊपर से डाला जाय, फेकना, छितराना, मिलाना, बढाना, किसी व्यापार में हिस्सेदारों की अलग अलग लगाई हुई पूंजी।
प्रक्षेपण-(सं० नपु०) निक्षेपण, फेंकना, ऊपर से मिलाना, निश्चित करना।
प्रक्षेपलिपि-(सं०स्त्री०) अक्षर लिखने की एक विशेष रीति।
प्रक्षोभण-(सं०नपु०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
प्रक्ष्वेदन-(सं०पुं०) लोहे की तीर।
प्रखर-(सं० पु०) घोडे की पाखर, खच्चर, (वि०) तीक्ष्ण, प्रचण्ड, धारदार पैना, चोखा।
प्रखल-(सं०वि०) अति दुष्ट, बड़ा पाजी।
प्रख्या-(सं०स्त्री०) उपमा,समता,बराबरी।
प्रख्यात-(सं० वि०) विख्यात, प्रसिद्ध, मशहूर।
प्रख्याति-(सं०स्त्री०) विख्याति, प्रसिद्धि।
प्रगट (हि०वि०) देखो प्रकट।
प्रगटना-(हिं०क्रि०) सम्मुख होना, प्रकट होना, सामने आना।
प्रगटना-(हिं०क्रि०) प्रकट करना, ज़ाहिर करना।
प्रगण्ड-(सं०पु०) कन्धे से लेकर केहुनी तक का भाग।
प्रगण्डी-(सं० स्त्री०) किले की बाहरी दीवार जिस पर बैठकर दूर की वस्तु देख पड़ती है।
प्रगतजानु-(सं०वि०)मुड़े हुए पैर वाला।
प्रगम-(सं०नपुं०) आगे को बढ़ना।
प्रगमन-(सं०नपु०)उन्नति लड़ाई झगड़ा
प्रगमनीय-(सं०वि०) आगे बढने लायक
प्रगर्जन-(सं० नपु०) अति भयकर शब्द, गरज।
प्रगल्भ-(सं० वि०) उद्धत, जिसमें नम्रता न हो निर्लज्ज,धृष्ट, बेहया, अभिमानी, चतुर, उत्साही, साहसी, ठीक समय पर उत्तर देने वाला, हाजिर जवाब, बकवादी, निर्भय, निडर गभीर,समर्थ, मुख्य, प्रधान, पुष्ट।
प्रगल्भता-(सं०स्त्री०) गम्भीरता, प्रधानता, पुष्टता, सामर्थ्य, वृथा की बकवाद, उत्साह, साहस, धृष्टता, निर्लज्जता, अभिमानी, चातुरी, निर्भयता, हाजिर जवाबी।
प्रगल्भवचना-(सं० स्त्री०) वह मध्या नायिका जो बातों ही बात में अपना दुःख और क्रोध प्रकट करती और उलाहना देती है।
प्रगल्भा-(सं०स्त्री०) प्रौढा नायिका।
प्रगल्भित-(सं० वि०) प्रगल्भ युक्त।
प्रगसना-(हि० क्रि०) देखो प्रगटना।
प्रगाढ़-(सं०वि०) अतिशय, अधिक, दृढ़, गहरा, गाढा, घना, कठोर, कड़ा।
प्रगाता-(सं०वि०) अच्छा गाने वाला।
प्रगाद्य-(सं०नपुं०)कथनीय कहने योग्य।
प्रगामी-(सं० वि०) जाने वाला।
प्रगाहन-(सं०नपु०) अवगाहन, मज्जन, माजना।
प्रगीति-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छद।
प्रगुणी-(सं०वि०) अति गुणी, गुणवान्।
प्रगुण्य-(सं०वि०) चतुर हुशियार।
प्रगृहीत-(सं० वि०) अच्छी तरह से पकड़ा हुआ।

प्रगेशय–(सं० वि०) प्रातःशायी, सवेरे सोने वाला।
प्रग्रह–(सं०पु०) तराजू में बँधी हुई डोरी, घोड़े की लगाम, किरण, भुजा, बाहु, बन्दी, अनुग्रह, कृपा, किसी ग्रह के साथ रहनेवाला छोटा ग्रह, उपग्रह, ग्रहण का आरम्भ, आधार, सोना, विष्णु, शासन, धारण करने का ढङ्ग, आदर, सत्कार, मार्गदर्शक।
प्रग्रहण–(सं०पु०) ग्रहण करने की क्रिया या भाव।
प्रगीव–(सं०पु०) झरोखा, छोटी खिड़की, अस्तबल।
प्रघट–(हिं०वि०) देखो प्रकट।
प्रघटना–(हिं० क्रि०) देखो प्रकटना।
प्रघट्टक–(सं०पु०) सिद्धान्त, (वि०) सयोजक, मिलाने वाला।
प्रघण–(सं०पु०) आलिन्द, बरामदा, तावे का घड़ा।
प्रघस–(सं०पु०) असुर, राक्षस, रावण की सेना का एक सेनानायक जिसको हनुमान् ने मारा था, (वि०) भक्षक, खाने वाला।
प्रघुण, प्रघूर्ण–(सं०पु०) अतिथि, पाहुन।
प्रघोर–(सं०वि०) अधिक कठिन।
प्रचण्ड–(सं०वि०) अधिक तीव्र, बहुत तेज, प्रबल, कठोर, भयङ्कर, असह्य, प्रतापी, पुष्ट, उग्र, बलवान् (पु०) शिव के एक गण का नाम।
प्रचण्डता–(सं०स्त्री०) तेजी, तीखापन।
प्रचण्डत्व–(सं० पु०) देखो प्रचण्डता।
प्रचण्डमूर्ति–(सं० स्त्री०) उग्रमूर्ति, वरुण वृक्ष।
प्रचण्डा–(सं० स्त्री०) अति कोपवती, दुर्गा, चण्डी, सफेद दूब।
प्रचय–(सं०पु०) समूह, झुण्ड, ढेर, वृद्धि, बीज गणित में एक प्रकार का सयोग।
प्रचर–(सं०पु०) मार्ग, रास्ता, गमन।
प्रचरना–(हिं०क्रि०) चलना, फैलना।
प्रचरण–(सं० नपु०) विचरण, चलना फिरना।
प्रचरित–(सं०वि०) चलता हुआ।
प्रचल–(सं०पुं०) मयूर, मोर।
प्रचलन–(सं०नपु०) प्रवर्तन, चलना।
प्रचला–(सं० स्त्री०) वह निद्रा जो कुछ लोगों को खड़े खड़े या बैठे हुए आ जाती है, गिरगिट।
प्रचलित–(सं०वि०) चलता हुआ, जिसकी चलन हो, स्थिर, दृढ, प्रसिद्ध।
प्रचाय–(सं० पु०) राशि, ढेर, सचय, अधिकता।
प्रचायक–(सं०वि०) ढेर लगाने वाला।
प्रचार–(सं०पु०) प्रचरण, चलन, रवाज, प्रसिद्धि।
प्रचारक–(सं०वि०) प्रचार करने वाला, फैलाने वाला।
प्रचारण–(सं० नपु०) प्रचार, चलन, रिवाज़।
प्रचारना–(हिं० क्रि०) प्रचार करना, विस्तार करना, फैलाना, ललकारना।
प्रचारित–(सं० वि०) विस्तृत, फैलाया हुआ, प्रचार किया हुआ।
प्रचारी–(सं०वि०) प्रचार करने वाला।
प्रचालित–(सं० वि०) प्रचार किया, हुआ, जो चलाया गया हो।
प्रचिकीर्षु–(सं० वि०) जो बदला लेना चाहता हो।
प्रचित–(सं० नपु०) दण्डक वृत्त का एक भेद।
प्रचुर–(सं०वि०) अनेक, प्रभूत, बहुत।
प्रचुरता–(सं० स्त्री०) बहुलता, अधिकता, ज्यादती।
प्रचुर पुरुष–(सं०पुं०) अनेक लोग।
प्रचेता–(हिं० पु०) मुनिविशेष, वरुण, एक प्रजापति का नाम, राजा पृथु के प्रपौत्र का नाम, (वि०) चतुर, बुद्धिमान्।
प्रचेय–(सं० वि०) चुनने या सग्रह करने योग्य।
प्रचोद–(सं० पु०) प्रेरणा, उत्तेजना।
प्रचोदक–(सं०वि०) उत्तेजित करनेवाला।
प्रचोदन–(सं० नपु०) उत्तेजना, प्रेरणा, आज्ञा, नियम, कायदा।
प्रचोदित–(सं०वि०)उत्तेजित किया हुआ।
प्रच्छक–(सं०वि०) पूछने वाला।
प्रच्छद–(सं० पु०) लपेटने का वस्त्र, चोगा, कम्बल।
प्रच्छना–(सं० स्त्री०) जिज्ञासा, पूछना।
प्रच्छन्न–(सं० वि०) आच्छादित, ढपा हुआ, गोपित, छिपा हुआ।
प्रच्छर्दन(सं० नपु०) वमन, कय, उल्टी।
प्रच्छादन–(सं० नपु०) ओढने का वस्त्र, चादर, आँख की पलक, छिपाना, ढापना।
प्रच्छादित–(सं० वि०) आच्छादित, ढपा हुआ।
प्रच्छाय–(सं० नपु०) उत्तम छाया, अच्छी छाह।
प्रच्छिल–(सं०वि०) निर्जन, जनशून्य।
प्रच्छेदन–(सं०नपु०) काटने की क्रिया।
प्रच्छेद्य–(सं०वि०) काटने योग्य।
प्रच्यवन–(सं०नपु०) झरना, बहना।
प्रजंत–(हिं०अव्य०) देखो पर्यन्त।
प्रजन–(सं० पु०) पशुओं के गर्भ धारण करने का समय, सन्तान उत्पन्न करने का कार्य।
प्रजनन–(सं० नपु०) जन्म, धात्री कर्म, दाई का काम, सन्तान उत्पन्न कराने का काम।
प्रजनिका–(सं०स्त्री०)जन्म देने वाली माता
प्रजनिष्णु–(सं०वि०) जन्म देने वाला।
प्रजय–(सं०पु०) अच्छी जीत।
प्रजरना–(हिं० क्रि०) अच्छी तरह से जलना।
प्रजल्प, प्रजल्पन–(सं० पु०) व्यर्थ की इधर उधर की बातचीत, गपशप।
प्रजल्पित(सं० वि०) व्यक्त, प्रकट, कहा हुआ।
प्रजल्पिता–(सं० स्त्री०) बकवादी औरत।
प्रजव–(सं० पु०) तेज चाल।
प्रजा–(सं० स्त्री०) सन्तति, सन्तान, वह जनसमूह जो किसी एक राजा के आधीन या एक राज्य के अन्तर्गत रहता हो, उत्पत्ति, राज्य के निवासी, रिआया, रैयत।
प्रजाकाम–(सं० वि०) पुत्र की इच्छा

रखने वाला।
प्रजाकार-(सं०पु०) प्रजापति, ब्रह्मा।
प्रजागर-(सं० पु०) पूरी तरह का जागरण, नींद न आना, विष्णु, प्राण (वि०) रक्षा करने वाला।
प्रजागरण-(सं० नपु०) बिलकुल नींद न आना।
प्रजागरा-(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
प्रजाघ्न-(सं० वि०) प्रजा का नाश करने वाला।
प्रजातन्तु-(सं०पुं०) सन्तान, औलाद, वंशकुल।
प्रजातन्त्र-(सं० पु०) वह शासन पद्धति जिसमें कोई राजा नहीं होता परन्तु जन समूह समय समय पर अपना शासक चुन लेते हैं।
प्रजाता-(सं०स्त्री०) प्रसूता स्त्री, वह स्त्री जिसको बालक उत्पन्न हुआ हो।
प्रजाद्वार-(सं० नपु०) सन्तान उत्पन्न करने का साधन।
प्रजाधर्म-(सं० पु०) प्रजा या पुत्र का कर्तव्य।
प्रजाध्यक्ष-(सं०पु०) प्रजापति, सूर्य।
प्रजानाथ-(सं० पु०) लोकनाथ, राजा, ब्रह्मा, मनु।
प्रजानाक-(सं०पु०) काल, यम।
प्रजापति-(सं०पु०) सृष्टि कर्ता, ब्रह्मा, महीपाल, राजा, इन्द्र, जामाता, सूर्य, अग्नि, विश्वकर्मा, यज्ञ, घर का मालिक, तितुली, एक तारे का नाम, साठ संवत्सरोंमें से पाँचवाँ संवत्सर, आठ प्रकार के विवाहों में से एक, पिता, बाप।
प्रजापाल-(सं० पु०) प्रजा का पालन करनेवाला।
प्रजायिनी-(सं०स्त्री०) माता।
प्रजारना-(हिं०क्रि०) अच्छी तरह से जलाना।
प्रजावती-(सं०स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री, भौजाई, गर्भवती स्त्री।
प्रजासत्ता-(सं०स्त्री०) देखो प्रजातन्त्र।
प्रजाहित-(सं०स्त्री०) जल, पानी, (वि०) प्रजा की भलाई।
प्रजिन-(सं०पुं०) वायु, हवा।
प्रजीवन-(सं० नपु०) जीविका, रोज़ी।
प्रजुलित-(सं०वि०) देखो प्रज्वलित।
प्रजुष्ट-(सं०वि०) प्रसक्त, लगा हुआ।
प्रजेश्वर-(सं० पु०) राजा, नृप।
प्रजोग-(हि०पु०) देखो प्रयोग।
प्रज्झटिका-(सं०स्त्री०) प्राकृत छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।
प्रज्ञ-(सं०पु०) विद्वान्, पण्डित, जानकार।
प्रज्ञता-(सं०स्त्री०) विद्वत्ता, पाण्डित्य।
प्रज्ञप्ति-(सं०स्त्री०) संकेत, इशारा, ज्ञान, सूचना, खबर।
प्रज्ञा-(सं० स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि, अक्ल, सरस्वती।
प्रज्ञाचक्षु-(सं०पु०) धृतराष्ट्र, (वि०) जिसके पास प्रज्ञारूपी चक्षु हो, अन्धा।
प्रज्ञाढ्य-(सं०वि०) बुद्धियुक्त, विद्वान्।
प्रज्ञान-(सं०नपु०) बुद्धि, ज्ञान, चिह्न, निशान
प्रज्ञाप्त-(सं०वि०) आज्ञा दिया हुआ।
प्रज्ञामय-(सं०वि०) प्रज्ञा स्वरूप, बुद्धिमान्।
प्रज्वलन-(सं०नपु०) अच्छी तरह से जलने की क्रिया।
प्रज्वलित-(सं०वि०) दहकता या धधकता हुआ, अति स्वच्छ, बहुत साफ।
प्रज्वलिया-(हिं०पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं।
प्रज्वालन-हिं०क्रि०) जलाना, दहकाना।
प्रण-(हिं० पु०) किसी काम के करने के लिये किया हुआ अटल निश्चय, प्रतिज्ञा।
प्रणखं-(सं०पु०) नख का अगला भाग।
प्रणत-(सं०वि०) प्रणाम करता हुआ, वक्र, बहुत झुका हुआ (पु०) प्रणाम करनेवाला, दास, सेवक, भक्त, उपासक।
प्रणतपाल-(सं०पुं०) दीन रक्षक, दास या भक्तों का पालन करनेवाला।
प्रणति-(सं०स्त्री०) विनती, नम्रता, प्रणाम, दण्डवत।
प्रणम-(हिं०पुं०) देखो प्रणाम।
प्रणमन-(सं० पु०) दण्डवत या प्रणाम करना, झुकना।
प्रणम्य-(सं०वि०) प्रणाम करने योग्य, वन्दनीय।
प्रणय-(सं०पु०) प्रीति युक्त, प्रार्थना, प्रेम, निर्वाण, मोक्ष, विश्वास, भरोसा, श्रद्धा, प्रार्थना, स्त्री का सन्तान उत्पन्न करना।
प्रणयन-(सं० नपु०) रचना, बनाना, करना, होम के समय अग्नि का एक संस्कार।
प्रणयिनी-(सं०स्त्री०) प्रेमिका, प्रियतमा, स्त्री, पत्नी।
प्रणयी-(सं० पु०) प्रेम करने वाला, पति, स्वामी।
प्रणव-(सं० पु०) ॐ कार, परमेश्वर, ओंकार मन्त्र जो-अ, उ और म की सन्धि से बना है, इसमें अकार शब्द से विष्णु, उकार से महेश और मकार से ब्रह्मा का बोध होता है।
प्रणवना-(हिं०क्रि०) प्रणाम या नमस्कार करना, श्रद्धा भक्ति पूर्वक किसीके सामने झुकना।
प्रणस-(सं०वि०) बिना नाक का, नकटा।
प्रणाद-(सं०पु०) बहुत ज़ोर से होने वाला शब्द।
प्रणाम-(सं०पु०) दण्डवत्, नमस्कार।
प्रणामी-(सं०वि०) प्रणाम करने वाला।
प्रणायक-(सं०पु०) सेनानायक, सरदार।
प्रणाल-(सं०पु०) जल निकलने का मार्ग।
प्रणालिका-(सं०स्त्री०) परनाली, बन्दूक की नली।
प्रणाली-(सं० स्त्री०) पानी निकलने का मार्ग, नाली, परिपाटी, श्रेणी, रीति, पद्धति चाल, ढंग, जल के दो बड़े भागों को मिलाने वाला जल मार्ग।
प्रणाश-(सं०पु०) मृत्यु, मौत, नाश, बरबादी।
प्रणाशन-(सं०पु०) ध्वंस, नाश, बरबादी।
प्रणाशी-(सं०वि०) नाश करने वाला।
प्रणिधान-(सं० पु०) ध्यान, मन की एकाग्रता, समाधि, भक्ति, प्रयत्न, अधिक उपासना, अर्पण, भावी जन्म के सबंध में किसी प्रकार की प्रार्थना।
प्रणिधि-(सं०पुं०) प्रार्थना, विनती, भेदिया।
प्रणिनाद-(सं०पु०) वज्र के समान गरजना।

प्रणिपतन-(स०नपु०) प्रणाम, दण्डवत।
प्रणिहित-(स० वि०) रक्खा हुआ, मिलाया हुआ।
प्रणीत-(स०वि०) निर्मित, बनाया हुआ, फेंका हुआ, संशोधित, सुधारा हुआ, प्रवेश किया हुआ, पास पहुँचा हुआ, भेजा हुआ, (पु०) मन्त्र से संस्कार किया हुआ जल, अग्नि।
प्रणीता-(स० स्त्री०) मन्त्रोच्चारण सहित छान कर रक्खा हुआ जल, वह पात्र जिसमें ऐसा जल रक्खा जाता है।
प्रणुत-(स० वि०) स्तुति किया हुआ, प्रशंसा किया हुआ।
प्रणेजन-(स० वि०) धोने या साफ करने वाला।
प्रणेता-(स०वि०)रचयिता, बनाने वाला।
प्रणोदित-(स०वि०) प्रेरित, नियोजित।
प्रतत-(स०वि०) विस्तृत, लम्बा चौड़ा।
प्रतति-(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव।
प्रतन-(स०वि०) पुरातन, पुराना।
प्रतनु-(स० वि०) बहुत, छोटा, बहुत बारीक, क्षीण।
प्रतपन-(सं०नपु०)एक नरक का नाम।
प्रतंचा-(हि०पु०) देखो प्रत्यञ्चा।
प्रतच्छ-(हि०वि०) देखो प्रत्यक्ष।
प्रतप्त-(सं०वि०) तापित, तपा हुआ।
प्रतमक-(स०पु०)एक प्रकार का श्वास रोग।
प्रतमाली-(हिं०स्त्री०)छोटा कटोरा,कटोरी।
प्रतर्क-(स०पु०)संशय,सन्देह,वादाविवाद।
प्रतर्दन-(स०नपुं०) ताडन (पु०) काशी के एक प्राचीन राजा दिवोदास का पुत्र, एक ऋषि का नाम, विष्णु (वि०) मारने वाला।
प्रतल-(स०नपु०)हाथ की हथेली, पाताल के सातवें भाग का नाम।
प्रतान-(स०पु०) एक ऋषि का नाम, एक प्रकार का वायु रोग जिसमें बारबार मूर्छा आती है, बेल, लता, रेशा, (वि०) विस्तृत, लंबा चौड़ा, रेशेदार।
प्रताप-(स० पु०) पौरुष, वीरता, बल, पराक्रम, तेज, ताप, गरमी, ऐसा प्रभाव जिसके कारण उपद्रवी या विरोधी शान्त रहें, मदार का पौधा।
प्रतापन-(स०नपु०)पीडन, कष्ट पहुँचाना, (पु०) विष्णु, एक नरक का नाम (वि०) कष्ट देने वाला।
प्रतापवान्-(हि०वि०) प्रताप युक्त,इकबाल मन्द।
प्रतापस-(स० पु०) उत्तम तेजस्वी, सफेद मदार।
प्रतापी-(हिं०वि०) प्रतापवान्, इकबाली दुःख दायी, सताने वाला।
प्रतारक-(स० वि०) वञ्चक, ठग, धूर्त, चालाक।
प्रतारण-(सं०नपु०) वंचन,धूर्तता, ठगी।
प्रतारणा-(सं० स्त्री०) देखो प्रतारण।
प्रतारणीय-(स० वि०) ठगने लायक।
प्रतारित-(स० वि०) वञ्चित, जो ठगा गया हो।
प्रतिंचा-(हिं० स्त्री०) प्रत्यञ्चा, धनुष की डोरी, ज्या, चिल्ला।
प्रति-(स०अव्य०) एक उपसर्ग जो शब्दों के आरम्भ में—प्रतिनिधि, प्रतिकूल, विपरीत प्रत्येक, दुबारा, ऊपर, समीप, लक्षण, विरोध, अल्पमात्रा, निश्चय, अंश, निन्दा, स्वभाव, प्रतिदिन तथा व्याप्ति—अर्थों को बोधित करने के लिये जोड़ा जाता है।
प्रति-(हिं०अव्य०) सामने, ओर, तरफ मुकाबले में, (स्त्री०) नकल, एकही प्रकार की अनेक वस्तुओं में से एक वस्तु, अदद।
प्रतिकण्ठ-(स०अव्य०) कण्ठ के समीप।
प्रतिकर्तव्य-(स०वि०)बदला चुकाने योग्य
प्रतिकर्म-(स० नपु०) किसी दूसरे के द्वारा प्रेरित कर्म, वेश, भेस, बदला, शरीर को सँवारना।
प्रतिकांक्षी-(स०वि०) आकाक्षा युक्त।
प्रतिकामिनी-(स० स्त्री०) सपत्नी, सौत।
प्रतिकाय-(स० पु०) प्रतिमा, प्रतिरूप, तसवीर।
प्रतिकार-(स० पु०) बदला, किसी की बात का उचित उपाय।
प्रतिकारक,प्रतिकारी-(स० वि०) बदला चुकाने वाला।
प्रतिकाश-(स०वि०) तुल्य,सदृश,समान।
प्रतिकुञ्चित-(स० वि०) वक्र, टेढा किया हुआ।
प्रतिकूप-(स० पु०) परिखा, खाई।
प्रतिकूल-(स० वि०) जो अनुकूल न हो, उलटा, विपरीत, विरुद्ध, (नपु०) प्रतिपक्षी।
प्रतिकूलता-(स०स्त्री०)प्रतिकूल आचरण।
प्रतिकूल वचन-(सं०नपु०) विरुद्ध वाक्य।
प्रतिकृत-(स० वि०) जिसका बदला हो चुका हो।
प्रतिकृति-(स० स्त्री०) प्रतिमूर्ति,प्रतिमा चित्र, तसवीर, प्रतीकार, बदला, प्रतिबिम्ब, छाया।
प्रतिकृत्य-(सं०वि०)प्रतीकार करने योग्य।
प्रतिक्रम-(स० पु०) प्रतिकूल आचरण।
प्रतिक्रिया-(स० स्त्री०) प्रतीकार, बदला, संस्कार, सजावट, शमन या निवारण का उपाय।
प्रतिक्रुष्ट-(स०वि०) दरिद्र, नीरस।
प्रतिक्षण-(स०अव्य०) बारबार,फिरफिर।
प्रतिक्षिप्त-(स० वि०) तिरस्कार किया हुआ, रोका हुआ, बुलाया हुआ, भेजा हुआ, फेंका हुआ।
प्रतिक्षेप-(स०पु०)फेंकना,रोकना,तिरस्कार।
प्रतिख्याति-(स०स्त्री०) विख्याति,प्रसिद्धि।
प्रतिगत-(स०वि०)जो वापस आ गया हो।
प्रतिगिरि(स०पु०) छोटा पर्वत।
प्रतिगृह-(स०अव्य०) घर घर में।
प्रतिगृहीत-(सं०वि०) ग्रहण किया हुआ, लिया हुआ।
प्रतिगृहीता-(स० स्त्री०) धर्मपत्नी, वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो।
प्रतिगृह्य-(स०वि०) लेने योग्य।
प्रतिगेह-(सं०अव्य०) घर घर में।
प्रतिग्या-(हि०स्त्री०) देखो प्रतिज्ञा।
प्रतिग्रह-(स० पु०) ग्रहण, स्वीकार, सेना का पिछला भाग, ब्राह्मण का विधि पूर्वक दिये हुए दान को लेना,प्रतिकूल ग्रह, विरोध या मुकाबला करना, पाणि, ग्रहण, अभ्यर्थना, स्वागत, अधिकार

में लाना, पकड़ना, किसी के अभियोग चलाने पर उस पर बदले में अभियोग चलाना, ग्रहण।
प्रतिग्रहण-(सं०नपु०) विधि पूर्वक दिया हुआ दान लेना।
प्रतिग्रही, प्रतिग्रहीता-(हिं० वि०) प्रतिग्रह या दान लेने वाला।
प्रतिग्राह-(सं० पु०) प्रतिग्रह ग्रहण करना।
प्रतिग्राहक, प्रतिग्राही-(सं० वि०) देखो प्रतिग्रही।
प्रतिग्राह्य-(सं० वि०) ग्रहण करने योग्य।
प्रतिघ-(सं० पु०) क्रोध, मूर्छा, प्रतिफल, रुकावट डालने वाला।
प्रतिघात-(सं० पु०) प्रतिबन्ध, बाधा, निराशा, वह आघात जो एक आघात लगने पर आप से आप उत्पन्न हो, टक्कर, मारण, मारना।
प्रतिघातक-(सं० वि०) प्रतिघात करने वाला।
प्रतिघातन-(सं० नपु०) हत्या, बाधा, रुकावट।
प्रतिघाती-(सं० वि०) टक्कर लगाने वाला, विरोध करने वाला (पु०) शत्रु, वैरी।
प्रतिचिन्तन-(सं० पु०) पुनर्विचार, फिर से सोचना।
प्रतिच्छन्द-(सं० नपु०) प्रतिकृति, अनुरोध।
प्रतिच्छा-(हिं० स्त्री०) देखो प्रतीक्षा।
प्रतिच्छाया-(सं० स्त्री०) प्रतिमूर्ति, सादृश्य, चित्र, तसवीर, प्रतिबिम्ब, परछाई।
प्रतिच्छेद-(सं०पु०) प्रतिबन्ध, रुकावट।
प्रतिछाई-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतिच्छाया।
प्रतिछाया-(हिं०स्त्री०) प्रतिबिंब, परछाई।
प्रतिछाहीं-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतिछाया।
प्रतिजङ्घा-(सं० स्त्री०) जांघ का अगला भाग।
प्रतिजल्प-(सं० पु०) सम्मति देना, सलाह करना।
प्रतिजागर-(सं० पुं०) बड़ी सावधानी से रखना।
प्रतिजिह्वा-(सं० स्त्री०) गले की भीतर की घाटी, कौवा।
प्रतिजीवन-(सं० नपु०) फिर से जन्म होना।
प्रतिज्ञा-(सं० स्त्री०) किसी काम के करने के लिये दृढ़ निश्चय, 'न्याय के पांच अवयवों में से पहला अवयव, शपथ, सौगन्ध, कसम, अभियोग, दावा।
प्रतिज्ञात-(सं० वि०) अंगीकृत, स्वीकार किया हुआ।
प्रतिज्ञान्तर-(सं० नपु०) तर्क में निग्रह स्थान का एक भेद।
प्रतिज्ञापत्र-(सं० नपु०) वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो, एकरारनामा
प्रतिज्ञाविरोध-(सं० पु०) न्याय में वह स्थिति जब प्रतिज्ञा और हेतु दोनों का विरोध होता है।
प्रतिज्ञाहानि-(सं० नपु०) न्याय में निग्रह स्थान का एक भेद।
प्रतिज्ञेय-(सं०वि०) प्रतिज्ञा करने योग्य।
प्रतिताल-(सं० पु०) संगीत में ताल का एक भेद।
प्रतितूणी (सं० स्त्री०) एक प्रकार का वातजन्य रोग।
प्रतिदत्त-(सं० वि०) लौटाया अथवा वापस किया हुआ, बदले में दिया हुआ
प्रतिदान-(सं०नपु०) विनिमय, बदला, ली हुई या रक्खी हुई वस्तु का लौटाना
प्रतिदारण-(सं० नपु०) युद्ध, लड़ाई।
प्रतिदिन-(सं० नपु०) प्रत्यह, हर रोज।
प्रतिदिवन्-(सं०पु०) प्रतिदिन, सूर्य।
प्रतिदिवस-(सं०अव्य०) देखो प्रतिदिन।
प्रतिदेय-(सं०क्रि०) खरीदी हुई वस्तु को फेर देना।
प्रतिद्वन्द्व-(सं० नपुं०) बराबरी वालों की लड़ाई।
प्रतिद्वन्द्वी-(सं० पु०) शत्रु, मुकाबले का लड़ने वाला।
प्रतिधावन-(सं० नपुं०) पीछे की ओर दौड़ना।
प्रतिध्वनि-(सं० पु०) प्रतिशब्द, वह शब्द जो अपनी उत्पत्ति स्थान पर फिर से सुनाई पड़े, गूंजना, दूसरे के भावों या विचारों का दोहराया जाना।
प्रतिनन्दन-(सं०नपु०) आशीर्वाद पूर्वक अभिनन्दन।
प्रतिनव-(सं०वि०) नूतन, नया।
प्रतिना-(हिं०स्त्री०) देखो पृतना।
प्रतिनाड़ी-(सं० स्त्री०) उपनाड़ी, छोटी नाड़ी।
प्रतिनाद-(सं०पु०) प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि
प्रतिनायक-(सं० पुं०) नाटकों तथा काव्यों के आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र।
प्रतिनाह-(सं० पुं०) श्वास बन्द होने का एक रोग।
प्रतिनिधि-(सं० पुं०) प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त पुरुष।
प्रतिनिधित्व-(सं० पु०) प्रतिनिधि होने का कार्य या भाव।
प्रतिनियम-(सं०पु०) व्यवस्था, प्रत्येक के लिये एक नियम।
प्रतिनिर्जित-(सं० वि०) पराजित, हराया हुआ।
प्रतिनिर्देश-(सं० पु०) वह जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका हो।
प्रतिनिर्यातन-(सं० नपु०) अपकार के बदले में किया हुआ अपकार।
प्रतिनिवृत्त-(सं० वि०) प्रत्यागत, लौटा हुआ।
प्रतिप-(सं० पु०) राजा शन्तनु के पिता का नाम।
प्रतिपक्ष-(सं० पुं०) प्रतिवादी, शत्रु, विरुद्ध पक्ष।
प्रतिपक्षता-(सं०स्त्री०) विपक्षता, विरोध।
प्रतिपक्षी-(सं०पु०) विपक्षी, विरोधी, शत्रु
प्रतिपच्छ-(हिं०पु०) देखो प्रतिपक्ष।
प्रतिपच्छी-(हिं० पु०) देखो प्रतिपक्षी।
प्रतिपत्-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतिपद।
प्रतिपत्ति-(सं०स्त्री०) प्राप्ति, ज्ञान, अनुमान, निरूपण, प्रतिपादन, निश्चय, दृढ़ विचार, परिणाम, आदर, सत्कार,

गौरव, स्वीकृति, प्रतिष्ठा, चित्त में स्थिर होना, कार्य में परिणत होना, प्रतिपत्ति कर्म-श्राद्ध आदि में सबसे अन्त में किया जाने वाला कर्म।
प्रतिपद्-(सं० स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, मार्ग, रास्ता, आरंभ, बुद्धि, समझ, अग्नि की जन्म तिथि।
प्रतिपद-(सं०अव्य) पद पद में, स्थान स्थान में।
प्रतिपदा-(सं० स्त्री०) किसी पक्ष की पहली तिथि।
प्रतिपन्न-(सं०वि०) जाना हुआ, स्वीकार किया हुआ, परिपूर्ण, निश्चित, शरणागत, प्रतिष्ठित, प्राप्त, जो मिला हो, अभियुक्त, गृहीत, लाया हुआ, प्रचण्ड।
प्रतिपात्र-(सं०अव्य०) प्रत्येक मनुष्य।
प्रतिपादक-(सं०वि०) निर्वाह करने वाला, उत्पन्न करने वाला।
प्रतिपादन-(सं० नपु०) दान, उत्पत्ति, पुरस्कार, इनाम, प्रमाण, सबूत, प्रतिपत्ति, अच्छी तरह समझाना, निरूपण।
प्रतिपादनीय-(सं०वि०)दान करने योग्य।
प्रतिपादित-(सं० वि०) दिया हुआ, स्थिर या निश्चय किया हुआ, शोधा या सुधारा हुआ।
प्रतिपाद्य-(सं० वि०) निरूपण करने योग्य,दातव्य, देने योग्य।
प्रतिपाप-(सं० पु०) किसी पापी के प्रति किया जाने वाला कठोर व्यवहार।
प्रतिपार-(हिं० पु०) देखो प्रतिपाल।
प्रतिपाल, प्रतिपालक-(सं०वि०) रक्षक, पोषक, राजा, पालन पोषण करने वाला।
प्रतिपालन-(सं० नपु०) पालन पोषण करने की क्रिया या भाव, निर्वाह, रक्षा।
प्रतिपालना-(हिं० क्रि०) रक्षा करना, पालन पोषण करना।
प्रतिपालनीय-(सं० वि०) प्रतिपालन करने योग्य।
प्रतिपालित-(सं०वि०) पालन किया हुआ।
प्रतिपुरुष-(सं० अव्य०) प्रत्येक पुरुष (पु०) प्रतिनिधि, वह पुतला जिसको प्राचीन काल में चोर लोग, प्रवेश करने के पहले घर में फेंक देते थे।
प्रतिपुस्तक-(सं० नपु०) किसी ग्रन्थ या पुस्तक की नकल।
प्रतिपूजन-(सं० पु०) दूसरे को पूजा करते देखकर तदनुसार स्वयं पूजा करना, अभिवादन।
प्रतिप्रहार-(सं०पु०) मार पर मार, अनुरूप प्रहार।
प्रतिप्राकार-(सं० पुं०) किले के बाहर की दीवार।
प्रतिप्रिय-(सं० नपु०) किसी उपकार के के बदले में किया हुआ उपकार।
प्रतिप्लवन-(सं०नपु०)पीछेकी ओर कूदना।
प्रतिफल-(सं०नपु०) प्रतिबिम्ब, छाया, प्रत्युपकार, परिणाम, नतीजा।
प्रतिफलित-(सं०वि०) प्रतिबिम्बित।
प्रतिबद्ध-(सं०वि०) जिसमें किसी प्रकार का प्रतिबन्ध या रुकावट न हो।
प्रतिबन्ध-(सं० पुं०) बाधा, विघ्न, रुकावट, प्रबन्ध, इन्तजाम, बंदोबस्त।
प्रतिबन्धक-(सं०वि०)बाधा डालने वाला, रोकने वाला।
प्रतिबन्धकता-(सं०स्त्री०) विघ्न, रुकावट, अड़चन।
प्रतिबन्धु-(सं०पु०)जो बन्धु के समान हो।
प्रतिबल-(सं०वि०) समान शक्ति वाला।
प्रतिबला-(सं०स्त्री०)ककही नाम का पौधा
प्रतिबाधक-(सं०वि०)बाधा करने वाला, कष्ट पहुँचाने वाला।
प्रतिबाहु-(सं०पु०)बाँह का अगला भाग।
प्रतिबिम्ब-(सं० पु०) प्रतिमा, मूर्ति, परछाहीं, दर्पण, शीशा, चित्र, तसवीर, प्रतिबिम्बक-परछाहीं के समान पीछे पीछे चलने वाला।
प्रतिबिम्बवाद-(सं० पुं०) वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसके अनुसार जीव ईश्वर का प्रतिबिम्ब माना जाता है।
प्रतिबिम्बित-(सं०वि०) जिसकी परछाहीं पड़ती हो जो परछाहीं पड़ने के कारण देख पड़ता हो।
प्रतिबीज-(सं०वि०) जिसकी उत्पन्न करने की शक्ति नष्ट हो गई हो।
प्रतिबुद्ध-(सं०वि०) जागता हुआ, ज्ञात, जो जाना गया हो, जिसकी उन्नति हुई हो
प्रतिबुद्धि-(सं० स्त्री०) विपरीत बुद्धि, उलटी समझ।
प्रतिबोध-(सं०पु०) जागरण, ज्ञान।
प्रतिबोधक-(सं० पु०) शिक्षक, प्रतिरोध करने वाला, ज्ञान उत्पन्न करने वाला, जगानेवाला।
प्रतिबोधन-(सं० नपु०) ज्ञान उत्पन्न करना, जागरण।
प्रतिभट-(सं०पु०) शत्रु, वैरी, बराबरी का योद्धा।
प्रतिभटता-(सं०स्त्री०) शत्रुता, वैर।
प्रतिभा-(सं०स्त्री०) बुद्धि, समझ, दीप्ति, चमक, समानता, असाधारण बुद्धिमानी।
प्रतिभाग-(सं०नपु०) प्रत्येक भाग।
प्रतिभानु-(सं०पु०) सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
प्रतिभामुख-(सं०वि०)प्रभावशाली,प्रगल्भ
प्रतिभावत्-(सं० वि०) प्रभावशाली, चमकदार।
प्रतिभावान्-(हिं०वि०)देखो प्रतिभावत्।
प्रतिभाशाली-(सं०वि०) प्रभावशाली।
प्रतिभाषा-(सं० स्त्री०) प्रत्युत्तर, जवाब, वादी का कथन, मुद्दई का बयान।
प्रतिभास-(सं० पु०) प्रकाश, चमक, आकृति, भ्रम।
प्रतिभासम्पन्न-(सं०वि०) प्रतिभाशाली।
प्रतिभाहानि-(सं०पु०) बुद्धिनाश।
प्रतिभू-(सं० पु०) ज़मानत करने वाला, ज़ामिन।
प्रतिभेद-(सं० पुं०) अन्तर, फ़र्क।
प्रतिभेदन-(सं०नपु०) विभाग करना, खोलना।
प्रतिभोग-(सं०पु०) उपभोग।
प्रतिम-(सं०वि०) समान, सदृश।
प्रतिमण्डक-(सं०पु०)एक राग का नाम।
प्रतिमण्डल-(सं०वि०)सूर्य आदि चमकते हुए ग्रहों का मण्डल।
प्रतिमन्त्रण-(सं० नपु०) उत्तर देना, जवाब देना।
प्रतिमल्ल-(सं०पु०) शत्रुता, विरोध।

प्रतिमा-(स० स्त्री०) अनुकृति, किसी वास्तविक या कल्पित आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र, प्रतिबिम्ब, छाया, धातु, पत्थर, मिट्टी आदि की बनाई हुई किसी देवता की मूर्ति, बाँट, बटखरा, वह अलकार जिसमें किसी मनुष्य, पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन किया होता है ।

प्रतिमान-(स०नपु०) प्रतिबिम्ब, परछाही, हाथी के निकले हुए दाँतो के बीच का स्थान, समानता, बराबरी, हाथी का ललाट,दृष्टान्त,उदाहरण,प्रतिनिधि,एवजी।

प्रतिमाया-(स०स्त्री०) प्रतिरूप माया, ।

प्रतिमाला-(स०स्त्री०) अन्त्याक्षरी पढना ।

प्रतिमास-(स०अव्य०) हर महीने ।

प्रतिमुक्त-(स०वि०)परित्यक्त, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ, फिरसे दिया हुआ ।

प्रतिमुख-(स०नपु०) नाटक की पाच अग सन्धियो में से एक ।

प्रतिमुद्रा-(स० स्त्री०) नामाङ्कित मोहर की छाप ।

प्रतिमुहूर्त-(स०अव्य०) निरन्तर,लगातार ।

प्रतिमूर्ति-(स०स्त्री०) देवतादि की मूर्ति ।

प्रतिमोक्षण-(स०नपु०) मोक्ष की प्राप्ति ।

प्रतिमोचन-(स०नपु०) बन्धन से मुक्त करना ।

प्रतियत्न-(स०पु०)लालच,रचना,सत्कार ।

प्रतियान-(स०नपु०)लौटना,वापस आना ।

प्रतियुद्ध-(स०नपु०)बराबरी की लड़ाई ।

प्रतियोग-(स०पु०)शत्रुता, दुश्मनी,विरुद्ध पदार्थों का सयोग, फिर से किया जाने वाला उद्योग, किसी पदार्थ के परिणाम को नष्ट करने वाली वस्तु ।

प्रतियोगिता-(स० स्त्री०) प्रतिद्वन्द्विता, विरोध, शत्रुता, उपराचढ़ी ।

प्रतियोगी-(हि० वि०) विरोधी, वैरी, सहायक, मददगार,हिस्सेदार, मुकाबला करने वाला, साथी, बराबर वाला ।

प्रतियोद्धा-(हि०पु०)शत्रु,वैरी,लड़ने वाला

प्रतिरक्षण-(सं०पु०) रक्षा, हिफाज़त ।

प्रतिरथ-(स०पु०)बराबरी का लड़ने वाला ।

प्रतिराज-(स०पु०) विपक्ष राजा ।

प्रतिरात्र-(स०अव्य०) प्रत्येक रात को ।

प्रतिरुद्ध-(स०वि०)अवरुद्ध, रुका हुआ ।

प्रतिरूप-(स० नपु०) प्रतिमा, मूर्ति, चित्र, तस्वीर (वि०) अनुरूप, एकसा ।

प्रतिरूपक-(स० नपु०) प्रतिबिम्ब ।

प्रतिरोद्धा-(हि० वि०) विरोधी, बाधा डालने वाला ।

प्रतिरोध-(स०पु०) विरोध, तिरस्कार; प्रतिबिम्ब ।

प्रतिरोधक-(स०पु०) रोकने या बाधा डालने वाला ।

प्रतिरोधन-(स०नपुं०) प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव ।

प्रतिरोधित-(स० वि०) निवारित, रोका हुआ ।

प्रतिरोधी-(हि०पु०)देखो प्रतिरोधक ।

प्रतिलक्षण-(स०नपु०) चिह्न, सबूत ।

प्रतिलभ्य-(स०वि०) प्राप्त करने योग्य ।

प्रतिलम्भ-(स०पु०) लाभ, प्राप्ति ।

प्रतिलाभ-(स० पु०) लाभ, एक राग का नाम ।

प्रतिलिपि-(स०स्त्री०) किसी लेख की नकल ।

प्रतिलोम-(स०वि०)विपरीत, प्रतिकूल, उलटा, जो सीधा न गया हो, जो नीचे से ऊपर को गया हो ।

प्रतिलोमज-(स० पु०) नीच वर्ण के पुरुष तथा उच्च वर्ण की कन्या से उत्पन्न सन्तान ।

प्रतिलोम विवाह-(स०पु०) वह विवाह, जिसमें वर नीच वर्ण का तथा कन्या उच्च वर्ण की हो ।

प्रतिवक्तव्य-(स०वि०) जवाब देने योग्य ।

प्रतिवचन-(स०नपु०) उत्तर,विरुद्ध वाक्य ।

प्रतिवत्स-(स०अव्य०) हर साल ।

प्रतिवर्तन-(स० नपु०) वापस आना, लौटना ।

प्रतिवसथ-(स० पु०) ग्राम, गाँव ।

प्रतिवस्तु-(स०स्त्री०) तुल्य रूप पदार्थ ।

प्रतिवस्तूपमा-(स० स्त्री०) वह अलकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन पृथक् पृथक् वाक्यो में किया जाता है ।

प्रतिवहन-(स० नपु०) विरुद्ध दिशा में जाना ।

प्रतिवाक्य-(स०नपुं०) प्रतिध्वनि,प्रत्युत्तर

प्रतिवाणि-(स० स्त्री०) प्रतिकूल वाक्य, प्रतिध्वनि ।

प्रतिवात-(स०वि०) जिस ओर से वायु बहती हो ।

प्रतिवाद-(स० पु०) किसी के वाक्य या सिद्धान्त को खण्डन करने के लिये अथवा उसका विरोध करने के लिये कहा हुआ वाक्य, विवाद, बहस, विरोध, खण्डन, उत्तर, जवाब ।

प्रतिवादक-(स०पु०)प्रतिवाद करने वाला ।

प्रतिवादिता-(स०स्त्री०)प्रतिवाद का भाव ।

प्रतिवादी-(स० पु०) प्रतिवाद का खण्डन करने वाला, वह जो किसी बात में तर्क करे, वादी का उत्तर देने वाला ।

प्रतिवारण-(सं० पु०) निवारण, रोकना, मना करना, मस्त हाथी

प्रतिवार्य-(स०वि०) निवारण करने योग्य

प्रतिवास-(स० स्त्री०) सुगन्धि, खुशबू, पड़ोस ।

प्रतिवासिता-(स०स्त्री०)पड़ोसका निवास

प्रतिवासी-(स० पु०) पड़ोस मे रहने वाला, पड़ोसी ।

प्रतिविधि-(स० पु०) प्रतीकार ।

प्रतिविधेय-(स० वि०) प्रतीकार करने योग्य ।

प्रतिविन्ध्य-(सं० पु०) द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम ।

प्रतिविभाग-(स०पु०) प्रत्येक विभाग ।

प्रतिविरक्ति-(स०स्त्री०) वैराग्य, विराम ।

प्रतिविरुद्ध-(स०वि०) विरुद्ध आचरण करने वाला ।

प्रतिविशिष्ट-(सं०वि०) उत्कृष्ट ।

प्रतिविषा-(स०स्त्री०) अतिविषा,अतीस ।

प्रतिवीक्षणीय-(स०वि०) देखने योग्य ।

प्रतिवीर-(स०पु०) बराबरी का योद्धा ।

प्रतिवेश-(स०पु०)पड़ोस का घर, पड़ोस ।

प्रतिवेशी-(सं०वि०) प्रतिवासी, पड़ोस मे रहने वाला ।

प्रतिवेश्म-(सं०नपु०) पड़ोस का मकान
प्रतिवेश्य-(सं० पु०)पड़ोस में रहनेवाला
प्रतिशङ्का-(सं०स्त्री०) बराबर बनी रहने वाली शंका ।
प्रतिशब्द-(सं०पु०) प्रतिध्वनि, गूंज ।
प्रतिशम-(सं०पु०) नाश, मुक्ति ।
प्रतिशयन-(सं० नपु०) धरना देना ।
प्रतिशयित-धरना देने वाला ।
प्रतिशशी-(सं०वि०)चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब।
प्रतिशाप-(सं०पु०) फिरसे शाप देना।
प्रतिशिष्य-(सं० पु०) चेले (शिष्य) का चेला ।
प्रतिशिष्ट-(सं० वि०) भेजा हुआ, लौटा हुआ ।
प्रतिशीवन-(सं०नपु०) ठहरने का स्थान ।
प्रतिशोध-(हिं०पु०) बदला चुकाने के लिये किया जाने वाला काम ।
प्रतिश्याय-(सं०पु०) पीनस रोग, जुकाम।
प्रतिश्रम-(सं० पु०) परिश्रम, मेहनत ।
प्रतिश्रय-(सं० पु०) यज्ञशाला, सभा-स्थान, निवास ।
प्रतिश्रव-(सं०नपु०) अंगीकार, स्वीकार ।
प्रतिश्रुत-(सं०वि०) स्वीकार किया हुआ ।
प्रतिश्रुति-(सं०स्त्री०) अंगीकार, प्रतिध्वनि, गूंज, प्रतिज्ञा, एकरार ।
प्रतिश्रोता-(सं०पुं०) अनुमति देने वाला।
प्रतिषिद्ध-(सं० वि०) निषिद्ध, निषेध किया हुआ ।
प्रतिषेध-(सं०पु०) खण्डन,निषेध,मनाही, वह अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध का इस प्रकार वर्णन किया जाता है जिसमे इससे कोई विशेष अर्थ निकले।
प्रतिषेधक-(सं०वि०) मना करने वाला, रोकने वाला ।
प्रतिषेधन-(सं०नपु०) प्रतिषेध, निषेध ।
प्रतिषेधनीय-(सं०वि०)मना करने लायक।
प्रतिषेधोपमा-(सं०स्त्री०) उपमा अलंकार का वह भेद जहाँ उपमान और उपमेय की समानता प्रतिषेध द्वारा विलक्षण रूप से वर्णन की जाती है ।
प्रतिष्टम्भ-(सं०पु०) प्रतिबन्ध,रुकावट।
प्रतिष्ठा-(सं० स्त्री०) मान मर्यादा, गौरव, आदर, सत्कार, व्रत का उद्यापन, देवता की प्रतिमा का स्थापन, स्थान, आश्रय, चार वर्णों का एक वृत्त, स्थिति,ठहराव, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति, एक प्रकार का छन्द ।
प्रतिष्ठान-(सं०नपु०)पुरूरवा की राजधानी, प्रतिष्ठित करने की क्रिया, उपाधि,पदवी, प्रसिद्धि, देवमूर्ति की स्थापना, स्थापित करने की क्रिया, वह कृत्य जो व्रतादि के समाप्त होने पर किया जाता है,
प्रतिष्ठानपुर-चन्द्र वंश के पहिले राजा पुरूरवा की राजधानी ।
प्रतिष्ठापन-(सं०नपु०)किसी देवमूर्ति की स्थापना ।
प्रतिष्ठापत्र-(सं०पु०) सम्मानपत्र, वह पत्र जो किसीकी प्रतिष्ठा करने के लिये दिया जावे ।
प्रतिष्ठावान्-(हिं० वि०) प्रतिष्ठा योग्य, इज्जतदार ।
प्रतिष्ठित-(सं० वि०) प्रतिष्ठा युक्त, आदरप्राप्त, इज्जतदार, प्रशंसित, विख्यात, जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो (पुं०) विष्णु ।
प्रतिसंक्रम-(सं०पुं०) संचार,प्रतिच्छाया।
प्रतिसंख्या-(सं० स्त्री०) सांख्य के अनुसार ज्ञान का एक भेद, चेतना ।
प्रतिसंवत्सर-(सं०अव्य०)हरसाल,प्रतिवर्ष।
प्रतिसंहृत-(सं० वि०) संकुचित, सिकुड़ा हुआ ।
प्रतिसञ्चर-(सं०पु०) प्रलय काल ।
प्रतिसदृश-(सं० वि०) सबको समान देखने वाला ।
प्रतिसन्धान-(सं०नपु०) अनुसन्धान, ढूँढ़ना ।
प्रतिसन्धि-(सं०पुं०) अनुसन्धान,पुनर्जन्म
प्रतिसम-(सं० वि०) जो देखने में समान न हो ।
प्रतिसर-(सं०पु०) जादू का मन्त्र, एक प्रकार का हाथ में पहरने का गहना, प्रातःकाल, सेना का पिछला भाग, भृत्य, नौकर, हथनी, मण्डल ।
प्रतिसर्ग-(सं०पु०) ब्रह्मा की सृष्टि के बाद दक्ष आदि की सृष्टि ।
प्रतिसव्य-(सं०वि०) विपरीत,प्रतिकूल ।
प्रतिसन्धानिक-(सं० पु०) मागध, स्तुति पाठक ।
प्रतिसामन्त-(सं०पु०) विपक्ष, शत्रु ।
प्रतिसार-(सं० पु०) दूरीकरण, अलग करना ।
प्रतिसारणीय-(सं०वि०) एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान में ले जाने योग्य ।
प्रतिसारित-(सं० वि०) अलग किया हुआ, हटाया हुआ, बदला हुआ, शोधा हुआ।
प्रतिस्त्री-(सं०स्त्री०) परनारी, दूसरे की औरत ।
प्रतिस्थान-(सं०अव्य०) हर जगह ।
प्रतिस्पर्धा-(सं०स्त्री०) किसी काम में दूसरे से बढ़ने की इच्छा या उद्योग, चढ़ा उपरी, विवाद, झगड़ा ।
प्रतिस्पर्धी-(सं०वि०) विद्रोही, उद्दण्ड, बराबर या मुकाबला करने वाला ।
प्रतिस्राव-(सं० पु०) कान में से पीब निकलने का एक रोग।
प्रतिहत-(सं०वि०) हटाया हुआ, मना किया हुआ,चोट खाया हुआ,उसकाया हुआ, रुका हुआ,बंधा हुआ,आशाहीन, निराश।
प्रतिहति-(सं०स्त्री०) क्रोध, हटाने की चेष्टा, टक्कर ।
प्रतिहन्ता-(सं०पु०) बाधक, रोकने वाला
प्रतिहन्तव्य-(हिं०वि०) मारने योग्य ।
प्रतिहरण-(सं०नपु०) विनाश, बरबादी।
प्रतिहस्त-(सं०पु०) प्रतिनिधि ।
प्रतिहार-(सं० पु०) द्वारपाल, दरवान, चोबदार,नकीब,द्वार,ड्योढी,ऐन्द्रजालिक बाजीगर, प्राचीन काल का एक राज-कर्मचारी जो सर्वदा राजा के पास रहता था और उनको समाचार आदि सुनाया करता था ।
प्रतिहारक-(सं० पु०) ऐन्द्रजालिक, बाजीगर ।
प्रतिहारी-(सं०पु०) द्वारपाल, दरवान ।
प्रतिहार्य-(सं०वि०) परिहार्य, छोड़ने योग्य

प्रतिहास-(स०पु०) हँसी करने वाले के साथ हँसी, सफेद कनेर का वृक्ष।

प्रतिहिंसा-(स०स्त्री०) बदला चुकाना, बदला लेना, बदला चुकाने के लिये हिंसा करना।

प्रतीक-(स०पु०)अवयव,अंग,चिह्न निशान, परवल, मरु के पुत्र का नाम, उपासना का एक भेद, मुख, आकृति, सूरत, किसी गद्य या पद्य के आदि या अन्त के कुछ शब्दों को लिख या पढ़कर पूरे वाक्य या पद का पता लगाना।

प्रतीकार-(स०पु०) अपकार का बदला चुकाने के लिये किया हुआ काम।

प्रतीकाश-(स०पु०) प्रतिकाश उपमा।

प्रतीकोपासना-(स०स्त्री०) व्यापक ब्रह्म भावना करके किसी विशेष पदार्थ का पूजन करना।

प्रतीक्ष-(स०वि०) प्रतीक्षा करने वाला, राह देखने वाला।

प्रतीक्षक-(स०वि०) आसरा देखने वाला, पूजा करने वाला।

प्रतीक्षण-(स० नपु०) आसरा देखना, कृपादृष्टि।

प्रतीक्षा-(स० स्त्री०) प्रतीक्षण, आसरा, इन्तज़ार, प्रतिपालक, पालन पोषण।

प्रतीक्षणीय-(स०वि०) प्रतीक्षा करनेयोग्य

प्रतीघात-(स० पु०) रुकावट, बाधा, टक्कर, निराश।

प्रतीची-(स०स्त्री०) पश्चिम दिशा।

प्रतीचीन-(स०वि०) पश्चिम दिशा का, पछाँह का, पराङ्मुख, जिसने मुह फेर लिया हो।

प्रतीच्छक-(स०वि०) ग्राहक,लेने वाला।

प्रतीच्य-(स०वि०) पश्चिम दिशा का।

प्रतीत-(स० वि०) प्रसिद्ध, मशहूर, प्रसन्न, खुश, विदित, जाना हुआ।

प्रतीति-(स० स्त्री०)विश्वास, दृढ़ निश्चय, प्रसिद्धि,आदर,आनन्द,ज्ञान,जानकारी।

प्रतीनाह-(स०पु०) कान का एक रोग, पताका।

प्रतीप-(स० वि०) प्रतिकूल, उलटा, (पु०) एक चन्द्रवंशी राजा का नाम, एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को उपमान के समान न कहकर इसके विपरीत उपमान को उपमेय के समान वर्णन करते हैं अथवा उपमेय द्वारा उपमान का तिरस्कार दिखलाया जाता है।

प्रतीपग-(स० वि०) उलटा आचरण करने वाला।

प्रतीपगति-(स०स्त्री०) प्रतिकूल गति।

प्रतीपगमन-(स०नपु०) प्रतिकूल गमन।

प्रतीपतरण-(स०नपु०) जल के प्रवाह के विपरीत नाव चलाना।

प्रतीपदर्शिनी-(स० स्त्री०) वह स्त्री जो देखते ही अपना मुँह फेर ले।

प्रतीपवचन-(स० नपु०) प्रतिकूल वाक्य, खण्डन।

प्रतीपोक्ति-(स०स्त्री०) देखो प्रतीप वचन

प्रतीयमान-(स० वि०) ध्वनि या व्यंग द्वारा प्रकट होता हुआ।

प्रतीर-(स०नपु०) तट, किनारा।

प्रतीवत (स०वि०) गोलाकार, वर्तुल।

प्रतीवाप-(स० पु०) दैवी उपद्रव।

प्रतीवेश-(स० पु०) प्रतिवेश, पड़ोस।

प्रतीवेशी-(स० वि०) पड़ोस में रहने वाला, पड़ोसी।

प्रतीहार-(स० पु०) द्वार, दरवाज़ा, देखो प्रतिहार।

प्रतीहारी-(स०वि०) द्वाररक्षक, द्वारपाल।

प्रतीहारी-(स० स्त्री०) द्वारपालिका, ड्योढ़ी दारिन।

प्रतुण्डुक-(स०पु०) जीवक नाम का साग।

प्रतुद-(स० पु०) ऐसे पक्षी जो चोंच से तोड़कर अपना भक्ष्य खाते हैं।

प्रतुष्टि-(स० स्त्री०) अधिक सन्तोष।

प्रतूलिका-(स० स्त्री०) तोशक, गद्दा।

प्रतोद-(स० पु०) पैना, चाबुक।

प्रतोली-(स०स्त्री०) रास्ता, सड़क, गली, कूचा, किले का वह द्वार जो नगर की ओर हो जिसमें सीढ़िया लगी हो।

प्रत्न-(स०वि०) पुरातन, प्राचीन, पुराना।

प्रत्नतत्त्व-(सं०नपु०) वह विद्या जिसमें प्राचीन बातों का विवरण हो।

प्रत्यंचा-(हि० स्त्री०) देखो प्रत्यञ्चा, धनुष की डोरी।

प्रत्यंश-(स० नपु०) प्रत्येक अंश या विभाग।

प्रत्यक्-(हि० क्रि० वि०) पीछे, पश्चिम।

प्रत्यक्पुष्पी-(स० स्त्री०) अपामार्ग, चिचिड़ा।

प्रत्यक्ष-(स०वि०) इन्द्रिय ग्राह्य, जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा होसके, इन्द्रियगोचर, जो आखों के सामने हो, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो सबसे श्रेष्ठ माना जाता है, (हिं० क्रि० वि०) आँखों के सामने।

प्रत्यक्षता-(स०स्त्री०) प्रत्यक्ष होने का भाव

प्रत्यक्षदर्शन-(स०नपु०) साक्षात् संबंध से देखना, वह साक्षी जिसने अपनी आँखों से किसी घटना को देखा हो।

प्रत्यक्षदर्शी-(स० वि०) वह साक्षी या गवाह जिसने अपनी आँखों से घटना देखा हो।

प्रत्यक्षदृष्ट-(स० वि०) जो प्रत्यक्ष रूप से देखा गया हो।

प्रत्यक्षप्रमा-(स० स्त्री०) यथार्थ ज्ञान।

प्रत्यक्षवादी-(स० पु०) वे लोग जो प्रत्यक्ष के भिन्न और किसी प्रमाण को नहीं मानते।

प्रत्यक्षीकरण-(स० नपु०) इन्द्रियों द्वारा ज्ञान करा देना।

प्रत्यक्षीभूत-(स० वि०) जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा हुआ हो।

प्रत्यगात्मन्-(स० पु०) ब्रह्मचैतन्य, परमेश्वर।

प्रत्यगाशापति-(स०पु०) पश्चिम दिशा के अधिपति, वरुण।

प्रत्यग्र-(स०वि०) नूतन, नया, शोधित, शोधा हुआ।

प्रत्यङ्गिरा-(स० स्त्री०) तान्त्रिकों की एक देवी।

प्रत्यञ्चा-(स०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।

प्रत्यनीक-(स० पु०) विरोधी, शत्रु, विघ्न, बाधा, प्रतिवादी, एक अर्थालंकार जिसमें किसी के पक्ष में रहने वाले या संबंधी के प्रति किसी हित या

अहित का किया जाना वर्णन किया जाता है।

प्रत्यनुमान-(सं० नपुं०) तर्क में वह अनुमान जो किसी दूसरे के अनुमान का खण्डन करते हुए किया जावे।

प्रत्यन्तपर्वत-(सं०पुं०) किसी बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत।

प्रत्यन्तर-(सं० वि०) समीप, पास।

प्रत्यपकार-(सं०पुं०) किसी अपकार के बदले में किया हुआ अपकार।

प्रत्यभिचरण-(सं०पुं०) रोक ने या हटाने की क्रिया।

प्रत्यभिज्ञा-(सं० स्त्री०) वह ज्ञान जो किसी देखी हुई वस्तु को अथवा उसके समान किसी अन्य वस्तु के फिरसे देखने पर उत्पन्न हो।

प्रत्यभिज्ञादर्शन-(सं०नपुं०) वह दर्शन जिसके अनुसार भक्तवत्सल महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञान-(सं० नपुं०) सदृश वस्तु को देखकर किसी पहिले देखी हुई वस्तु का स्मरण।

प्रत्यभिभाषी-(सं० वि०) अभिनन्दन करने वाला।

प्रत्यभियोग-(सं० पुं०) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगाने वाले पर चलावे।

प्रत्यभिवाद-(सं० पुं०) वह आशीर्वाद जो किसी बड़े का अभिवादन करने पर मिले।

प्रत्यमित्र-(सं० पुं०) शत्रु, दुश्मन।

प्रत्यय-(सं०पुं०) आधीन, ज्ञान, बुद्धि, शपथ, सौगन्ध, विश्वास, प्रमाण रूप निश्चय, व्याकरण में वह अक्षर या शब्द जो मूल शब्द के अन्त में लगाने से विशिष्ट अर्थ उत्पन्न करता है, छन्दों के भेद और उनकी संख्या जानने की रीति, सम्मति, निर्णय, चिह्न, आवश्यकता, व्याख्या, विचार, आचार, प्रसिद्धि, कारण, हेतु, छिद्र, सहायक, मददगार, स्वाद, ज़ायका।

प्रत्ययकारी-(सं०वि०)विश्वास दिलानेवाला।

प्रत्ययित-(सं० वि०) विश्वस्त, विश्वास किया हुआ, लौटाया हुआ।

प्रत्ययी-(सं०वि०) विश्वस्त,विश्वास पात्र।

प्रत्यर्चन-(सं० नपुं०) प्रति पूजा।

प्रत्यर्थक-(सं० पुं०) वैरी, शत्रु।

प्रत्यर्थी-(सं० पुं०) शत्रु, प्रतिवादी, मुद्दालेह।

प्रत्यर्पण-(सं० नपुं०) दान में पाये हुए धन को फिर से दान करना।

प्रत्यर्पित-(सं०वि०) फिरसे लौटाया हुआ।

प्रत्यवरोह-(सं० पुं०) सोपान, सीढ़ी, उतरना।

प्रत्यवरोही-(सं० वि०) उतरने वाली।

प्रत्यवसान-(सं० नपुं०) भोजन।

प्रत्यवसित-(सं० वि०) खाया हुआ।

प्रत्यवस्कन्द-(सं० पुं०) प्रतिवादी का वह उत्तर जो वादी के कहने का खण्डन करने के लिये दिया जावे।

प्रत्यवस्थान-(सं० नपुं०) शत्रु के रूप में रहना।

प्रत्यवहार-(सं०पुं०) संहार, मार डालना।

प्रत्यवाय-(सं०पुं०) नित्य कर्म न करने से उत्पन्न पाप, बड़ा परिवर्तन, उलटफेर।

प्रत्यवेक्षण-(सं० नपुं०) अनुसन्धान, खोज, विचार, सावधानी।

प्रत्यस्तगमन-(सं०नपुं०) सूर्य का डूबना।

प्रत्यस्त्र-(सं०नपुं०) तुल्य रूप का अस्त्र।

प्रत्यह-(सं०अव्य०) प्रति दिन, हर रोज़।

प्रत्याक्षेपक-(सं० वि०) उपहास करने वाला, हँसी उड़ाने वाला।

प्रत्याख्यात-(सं० वि०) अस्वीकृत, नामंजूर किया हुआ।

प्रत्याख्यान-(सं० नपुं०) निराकरण, दूर करना, खण्डन।

प्रत्यागत-(सं०वि०) वापस आया हुआ, लौटा हुआ।

प्रत्यागति-(सं० स्त्री०) दुबारा आना।

प्रत्यागमन-(सं० नपुं०) लौट आना, वापसी।

प्रत्याघात-(सं० पुं०) चोट के बदले चोट, टक्कर।

प्रत्याचार-(सं०पुं०) अच्छे आचरण वाला।

प्रत्यात्मा-(सं० वि०) एकाकी, अकेला, (नपुं०) प्रतिबिम्ब, छाया।

प्रत्यादिष्ट-(सं० वि०) जताया हुआ, छोड़ा हुआ।

प्रत्यादेश-(सं०पुं०) निराकरण, खण्डन।

प्रत्यानयन-(सं०नपुं०) फिर से लाना।

प्रत्यानीत-(सं०वि०) फिरसे लाया हुआ।

प्रत्यापत्ति-(सं०स्त्री०) वैराग्य,पुनरागमन।

प्रत्याम्नाय-(सं० पुं०) प्रतिनिधि, रूप मे किया जाने वाला।

प्रत्यायक-(सं० वि०) विश्वासकारक, बोधक।

प्रत्यायित-(सं० वि०) विश्वस्त।

प्रत्यालीढ-(सं०नपुं०) धनुष चलाने वाले के बैठने का एक ढंग।

प्रत्यावर्तन-(सं० नपुं०) प्रतिनिवृत्ति, लौट आना।

प्रत्यावृत्त-(सं०वि०) लौटा हुआ, दोहराया हुआ।

प्रत्याशा-(सं०स्त्री०) आकांक्षा, भरोसा।

प्रत्याश्रय-(सं०पुं०) शरण का स्थान।

प्रत्यासत्ति-(सं०स्त्री०) निकटता, समीपता।

प्रत्यासन्न-(सं०वि०) निकटवर्ती, समीपका।

प्रत्यासर, प्रत्यासार-(सं०पुं०) सेना के पीछे का भाग।

प्रत्याहार-(सं०पुं०) योग के आठ अंगों में से एक जिसमें इन्द्रियों को उनके विषयों से हटा कर चित्त की ओर अनुसरण कराया जाता है, इन्द्रियों का पूर्ण रूप से निग्रह।

प्रत्युक्त-(सं०वि०) उच्चरित, जवाब दिया हुआ।

प्रत्युत-(सं०अव्य०) इसके विरुद्ध, वरन्, बल्कि, विपरीतता, विपरीत भाव।

प्रत्युत्कर्ष-(सं०पुं०) मूल्य की अधिकता।

प्रत्युत्तर-(सं० नपुं०) उत्तर का उत्तर, जवाब का जवाब।

प्रत्युत्थान-(सं०नपुं०) किसी बड़े या पूज्य के आने पर उसके स्वागत के लिये आसन छोड़ कर खड़े हो जाना।

प्रत्युत्पन्न-(सं० वि०) जो फिर से अथवा ठीक समय पर उत्पन्न हुआ हो, तत्पर,

प्रत्युत्पन्नमति–ठीक समय पर काम करने वाली बुद्धि।
प्रत्युदाहरण–(स० नपु०) उदाहरण के विपरीत उदाहरण।
प्रत्युद्गम, प्रत्युद्गमन–(स० नपु०) देखो प्रत्युत्थान।
प्रत्युपकार–(स०पु०) किसी उपकार के बदले में किया जाने वाला उपकार।
प्रत्युपकारी–(स०वि०) उपकार का बदला देने वाला।
प्रत्युपक्रिया–(स०स्त्री०) देखो प्रत्युपकार।
प्रत्युपभोग–(स०पु०) सुख का उपभोग।
प्रत्युपवेश–(स०पु०) बलपूर्वक स्वीकार कराना।
प्रत्युपस्थान–(स०नपु०) निकटवर्ती स्थान।
प्रत्युपहार–(स०पुं०) भेंट देने योग्य द्रव्य।
प्रत्युष, प्रत्यूष–(स०पुं०) प्रभात, सवेरा, सूर्य, एक वसुका नाम।
प्रत्यूह–(स०पु०) विघ्न, बाधा।
प्रत्येक–((स०वि०) बहुतो में से हर एक, अलग अलग।
प्रत्येकत्व–(स०पु०) अलग अलग होने का भाव।
प्रत्रास–(स०पु०) कम्प, कँपकँपी।
प्रथम–(स०वि०) प्रधान, मुख्य, पहिला, सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम (क्रि० वि०) आगे, पहले, पेश्तर, प्रथम कल्पित–जिसकी कल्पना पहले की गई हो, प्रथम कारक–व्याकरण में कर्ता कारक, प्रथम गर्भ–प्रथमवार का गर्भ।
प्रथमज, प्रथमजात–(स०वि०) अग्रज, जो पहले उत्पन्न हुआ हो।
प्रथमतः–(स० अव्य०) पहले से, सबसे पहले।
प्रथम पुरुष–(स०पु०) आदि पुरुष, पुराने जमाने का आदमी, व्याकरण में वह सर्वनाम जिसके विषय में कुछ कहा जाता है यथा–वह पुरुष, वह स्त्री, वह पशु आदि।
प्रथम रात्र–(स०पु०) रात का पहला भाग
प्रथम सङ्गम–(स०पु०) पहली बार भेंट।
प्रथमा–(स०स्त्री०) व्याकरण में कर्ता कारक, मद्य, शराब।
प्रथमार्ध–(स०पु०) पहिले का आधा अंश
प्रथमी–(हिं०स्त्री०) देखो पृथ्वी।
प्रथमेतर–(स०वि०) भिन्न, दूसरा।
प्रथा–(स० स्त्री०) ख्याति, प्रसिद्धि, रीति, रिवाज, चाल, नियम।
प्रथित–(स०वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।
प्रथिवी–(स०स्त्री०) देखो पृथ्वी।
प्रथु–(स०पु०) देखो पृथु, विष्णु।
प्रद–(स०वि०) दाता, देने वाला, यौगिक शब्द के अन्त में इस शब्द का प्रयोग होता है जैसे सुखप्रद, कष्टप्रद इत्यादि
प्रदक्षिण–(स०पु०) देवमूर्ति को दाहिनी ओर करके भक्तिपूर्वक उसके चारो ओर घूमना, परिक्रमा।
प्रदक्षिणा–(स०स्त्री०) देखो प्रदक्षिण।
प्रदग्धव्य–(स०वि०) दहन योग्य, जलाने लायक।
प्रदत्त–(स०वि०) अर्पित, दिया हुआ, एक गन्धर्व का नाम।
प्रदर–(स० पु०) तोड़ने या फाड़ने का काम, स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसदार स्राव निकलता है।
प्रदर्श–(स० पु०) भेंट, मुलाकात, आज्ञा, हुक्म।
प्रदर्शक–(स०वि०) देखने या दिखलाने वाला, (पु०) गुरु।
प्रदर्शन–(स० नपु०) उल्लेख, जिक्र, दिखलाने का काम, प्रदर्शनी।
प्रदर्शनी–(स० स्त्री०) वह जगह जहा पर भिन्न भिन्न प्रकार को वस्तु लोगो को दिखलाने के लिये रक्खी जाती है, नुमायश।
प्रदर्शित–(स०वि०) दिखलाया हुआ।
प्रदल–(स०पु०) बाण, तीर।
प्रदव्य–(स० पु०) दावानल, जङ्गल की आग।
प्रदहन–(स०नपु०) अच्छी तरह से जलना
प्रदाता–(स०वि०) खूब दान देनेवाला, (पु०) इन्द्र।
प्रदातव्य–स०वि०) दान देने के योग्य।
प्रदान–(स०नपुं०) दान देने की क्रिया, विवाह, अङ्कुश।
प्रदानरुचि–स०वि०) जिसको दान देने में रुचि हो।
प्रदानशूर–(स०पु०) दानवीर, बड़ा दानी।
प्रदायक–(स० वि०) दानकारी, दान देने वाला।
प्रदायी–(स०वि०) दान देने वाला।
प्रदाव–(स० नपुं०) दावाग्नि, जङ्गल की आग।
प्रदाह–(स० पु०) शरीर में जलन जो अधिक ज्वर आदि में उत्पन्न होती है।
प्रदिग्ध–(स० नपु०) विशेष प्रकार से पकाया हुआ मास।
प्रदिव–(स०वि०) खूब चमकने वाला, (स्त्री०) पुरातन, पुराना, पर्व का दिन।
प्रदिशा–(स० स्त्री०) दो मुख्य दिशाओं के बीच का कोना।
प्रदीप–(स० पु०) दीप, दीआ, चिराग, प्रकाश, रोशनी, सम्पूर्ण जाति का एक राग।
प्रदीपक–(स०पु०) प्रकाशक, प्रकाश में लाने वाला, एक प्रकार का भयकर स्थावर विष जिसके सूँघने से ही मनुष्य मर जाता है।
प्रदीपति–(स०स्त्री०) देखो प्रदीप्ति।
प्रदीपन–(स० नपु०) प्रकाश करने का काम, उद्दीपन, चमकाना, उजाला करना
प्रदीपिका–(स०स्त्री०) छोटी लालटेन, एक रागिणी का नाम।
प्रदीप्त–(स०वि०) उज्वल, चमकता हुआ, प्रकाशवान्, जगमगाता हुआ।
प्रदीप्ति–(स०स्त्री०) प्रकाश, रोशनी, चमक
प्रदुमन–(हि० पु०) देखो प्रद्युम्न।
प्रदेय–स०वि०) दान के उपयुक्त, दान करने योग्य।
प्रदेश–(स०पु०) किसी देश का बड़ा विभाग, प्रान्त, सूबा, स्थान, जगह, सज्ञा, नाम, अङ्ग, अवयव, भीत, दीवार, पद, अगूठे के अगले सिरे से लेकर तर्जनी के अगले सिरे तक की दूरी, छोटा बित्ता।

प्रदेशकारी–(स॰पु॰) योगियो का एक सम्प्रदाय ।
प्रदेशन–(स॰नपु॰) भेंट, नजर ।
प्रदेशनी, प्रदेशिनी–(स॰स्त्री॰) तर्जनी, अगूठे के पास की अगुली ।
प्रदेशी–(स॰वि॰) प्रदेश सम्बन्धी ।
प्रदेह–(स॰ पु॰) फोडे आदि के ऊपर लगाने का लेप ।
प्रदोष–(स॰पु॰) रजनीमुख, रात्रि के प्रथम चार दण्ड का काल, सूर्यास्त के बाद चार दण्ड का काल, बड़ा दोष, भारी अपराध, सन्ध्या समय होने वाला, अँधेरा, त्रयोदशी का व्रत जिसमें दिन भर उपवास करके सन्ध्या समय शिव का पूजन करके भोजन किया जाता है।
प्रदोह–(सं॰ पु॰) दोहन, दुहना ।
पद्धटिका–(स॰स्त्री॰) देखो प्रज्झटिका ।
प्रद्युम्न–(स॰ पु॰) कन्दर्प, कामदेव, रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम (वि॰) अत्यन्त बलवान्, बड़ा वीर ।
प्रद्योत–(सं॰पु॰) रश्मि, किरण, दीप्ति, चमक, एक यक्ष का नाम ।
प्रद्योतन–(स॰ पुं॰) सूर्य, (नपु॰) दीप्ति, चमक, जो खूब चमकता हो ।
प्रद्राव–(स॰ पु॰) पलायन, भागना ।
प्रद्वार–(स॰नपु॰) दरवाजे का अगला भाग
प्रद्वेष–(स॰पु॰) शत्रुता, वैर ।
प्रद्वेषण–(सं॰ नपु॰) घृणा, द्वेष ।
प्रधन–(स॰ नपु॰) युद्ध, लड़ाई (वि॰) जिसके पास बहुत धन हो ।
प्रधर्ष–(सं॰ पु॰) आक्रमण, धावा ।
प्रधर्षक–(स॰वि॰) आक्रमण करने वाला ।
प्रधर्षण–(स॰नपु॰) आक्रमण, चढाई, अनादर, अपकार, बलात्कार ।
प्रधा–(स॰ स्त्री॰) दक्ष प्रजापति की कन्या जिसका विवाह कश्यप से हुआ था ।
प्रधान–(स॰ नपु॰) ईश्वर, परमात्मा, सेनाध्यक्ष, सचिव, मन्त्री, सरदार, नेता, (वि॰) मुख्य, सर्वश्रेष्ठ, उत्तम, प्रमुख ।
प्रधानक–(स॰ नपु॰) साख्य के अनुसार बुद्धितत्व ।
प्रधानता–(स॰ स्त्री॰) प्रधान होने का भाव या धर्म, कार्य या पद, श्रेष्ठता, उत्तमता ।
प्रधानात्मा–(स॰पु॰) परमात्मा, विष्णु ।
प्रधानी–(हिं॰स्त्री॰) प्रधान का कर्म या पद ।
प्रधावन–(सं॰नपु॰) तेजी से दौड़ना (पु॰) वायु, हवा ।
प्रधि–(स॰ पु॰) नेमि, पहिये का धुरा ।
प्रधी–(स॰स्त्री॰) तीव्र बुद्धि, अच्छी समझ
प्रधूपित–(स॰वि॰) तप्त, तपाया हुआ, दीप्त, चमकता हुआ ।
प्रध्मात–(स॰वि॰) ध्वनित, शब्द करता हुआ
प्रध्यान–(सं॰नपु॰) गम्भीर ध्यान ।
प्रध्वस–(स॰ पु॰) नाश, साख्य के अनुसार किसी पदार्थ की अतीत अवस्था
प्रध्वंसक–(स॰वि॰) नाश, करने वाला
प्रध्वंसन–(स॰नपु॰) नाश, बरबादी ।
प्रध्वस्त–(स॰ वि॰) जो नष्ट हो गया हो, जो बीत गया हो ।
प्रन–(हि॰ पु॰), देखो प्रण, सकल्प, दृढ निश्चय ।
प्रनति–(हि॰स्त्री॰) देखो प्रणति ।
प्रनवना–(हि॰ क्रि॰) देखो प्रणमना ।
प्रनष्ट–(स॰वि॰) अच्छी तरह से नष्ट ।
प्रनामी–(हि॰ पु॰) प्रणाम करने वाला (स्त्री॰) वह धन या दक्षिणा जो गुरु ब्राह्मण आदि को शिष्य या भक्त लोग प्रणाम करती समय देते हैं ।
प्रनाशन–(हिं॰पु॰) देखो प्रणाशन ।
प्रनाशी–(स॰ वि॰) नाश करने वाला ।
प्रनिघातन–(स॰नपु॰) वध, हत्या ।
प्रनिपात–(हि॰ पु॰) देखो प्रणिपात ।
प्रनीड–(स॰ वि॰) घोसला छोड़ने वाली (पक्षी) ।
प्रपक्व–(स॰वि॰) अच्छी तरह से पका हुआ ।
प्रपक्ष–(स॰ पु॰) पख का अगला भाग ।
प्रपञ्च–(स॰पु॰) विस्तार, फैलाव, सचय, भवजाल, ससार, विपर्यास, उलट पुलट, ससारी जजाल, झमेला, बखेड़ा, धोखा, आडम्बर, ढोंग ।
प्रपञ्चक–(स॰ वि॰) फैलाने वाला ।
प्रपञ्चित–(सं॰ वि॰) भ्रमयुक्त, ठगा हुआ ।
प्रपञ्ची–(स॰वि॰) प्रपञ्च करने वाला, छली, कपटी, ढोंगी, बखेड़िया, झगड़ालू ।
प्रपण–(स॰ पु॰) विनिमय, बदला ।
प्रपत्ति–(स॰ स्त्री॰) अनन्य भक्ति ।
प्रपद–(स॰नपु॰) पैर का अगला भाग ।
प्रपन्न–(स॰ वि॰) प्राप्त, आया हुआ, शरणागत, शरण में आया हुआ ।
प्रपर्ण–(स॰नपु॰) गिरा हुआ पत्ता ।
प्रपलायन–(हि॰पु॰) पलायन, तेजी से भाग जाना ।
प्रपा–(स॰स्त्री॰) वह स्थान जहा प्यासो को पानी पिलाया जाता है, पौसरा ।
प्रपाक–(स॰ पु॰) पकाने की क्रिया ।
प्रपाठक–(स॰पु॰) श्रौत ग्रन्थ (वेद) के अध्यायों का एक अश ।
प्रपाणि–(स॰ पु॰) पाणितल, हथेली ।
प्रपात–(स॰पु॰) पहाड़ या चट्टान का खड़ा किनारा, पानी का झरना, कूल, किनारा, जल की धारा जो ऊचे स्थान से गिरती हो, एकबारगी नीचे को गिरना ।
प्रपाद–(स॰ पु॰) असमय में प्रसव ।
प्रपान–(स॰नपु॰) पौसरा, प्याऊ ।
प्रपापूरण–(स॰ नपु॰) पानी के हौज़ को जल से भरना ।
प्रपालन–(स॰नपु॰) अच्छी तरह रक्षा करना ।
प्रपितामह–(स॰ पु॰) परब्रह्म, ब्रह्मा, दादा के बाप, परदादा ।
प्रपितव्य–(स॰पु॰) परदादा का भाई ।
प्रपित्व–(स॰ पु॰) सग्राम, युद्ध (वि॰) पाया हुआ, समीप का ।
प्रपित्सु–(स॰वि॰) पाने की इच्छा करने वाला ।
प्रपीडन–(स॰नपु॰) अधिक कष्ट देना या सताना ।
प्रपुञ्ज–(स॰पु॰) बहुत बड़ा समूह या झुण्ड ।
प्रपुत्र–(स॰पु॰) पौत्र, बेटे का बेटा ।
प्रपुन्नड़, प्रपुनाट–(स॰ पु॰) चकवड़ का वृक्ष ।

प्रपुष्पित-(स०वि०) फूलों से लदा हुआ।
प्रपूरक-(सं० वि०) पूरा करने वाला, प्रसन्न करने वाला।
प्रपूरिका-(स०वि०)कण्टकारी,भटकटैया।
प्रपूरित-(स०वि०) परिपूर्ण किया हुआ, भरा हुआ।
प्रपृष्ठ-(स०वि०) जिसकी पीठ ऊची हो।
प्रपौत्र-(स०पु०) पोते का लड़का,परपोता
प्रपौत्री-(स०स्त्री०) पोते की कन्या,परपोती
प्रप्लावन-(स०नपु०)पानी से आग बुझाना।
प्रफुड़ना, प्रफुलना-(हि०क्रि०) फूलना।
प्रफुल्ता-(हि०स्त्री०) कमलिनी, कुमुदिनी, कोई।
प्रफुलित-(हि० वि०) कुसुमित, खिला हुआ, प्रफुल्ल, आनन्दित।
प्रफुल्ल-(स०वि०) विकसित,खिला हुआ, कुसुमित,फूला हुआ,प्रसन्न, आनन्दित, खुला हुआ,जो वद या मुदा हुआ न हो
प्रवन्ध-(स०पु०) वाधने की डोरी आदि, कई वस्तुओ या वातो का एक मे गॅठना, योजना, वाक्य रचना का विस्तार, उपाय, आयोजन, व्यवस्था, वन्दोवस्त, इन्तेजाम, पूर्वापर सगति, बॅधा हुआ सिलसिला।
प्रवन्धकल्पना-(स०स्त्री०)सन्दर्भ रचना, प्रवध रचना, ऐसा लेख जिसमें थोड़ी ही वात सच हो और कथा में वहुतसी वातें मनसे गढकर मिलादी गई हो।
प्रवर्ह-(स०वि०) प्रधान, श्रेष्ठ।
प्रवल-(स० वि०) वलवान्, प्रचण्ड, उग्र, तेज, जोरदार, वड़ा, घोर।
प्रवला-(स०स्त्री०) वहुत वलवती, प्रचण्ड।
प्रवलाकी-(स०पु०) सर्प, साँप।
प्रवाल-(हि०पु०) देखो प्रवाल, मूगा।
प्रवालपद्म-(स०नपु०) लाल कमल।
प्रवास-(हिं पुं०) देखो प्रवास।
प्रवाह-(हि०पु०) देखो प्रवाह।
प्रवाहु-(स०पु०) हाथ का अगला भाग, पहुँचा।
प्रवीन-(हि० वि०) देखो प्रवीण।
प्रवुद्ध-(स० वि०) पण्डित, ज्ञानी, जागा हुआ, खिला हुआ, सचेत, होश मे आया हुआ।
प्रवुद्धता-(स० स्त्री०) यथार्थ या पूर्ण ज्ञानी।
प्रवोध-(स० पु०) यथार्थ ज्ञान, विकाश, चेतावनी, नींद हटना,जागना,सान्त्वना, ढाढस, पूर्ण वोध।
प्रवोधक-(स०वि०) चेताने वाला, जगाने वाला, समझाने वाला, ढाढस देने वाला।
प्रवोधन-(स० नपु०) यथार्थ ज्ञान, जागरण, जागना, विकाश, खिलना, नींद से उठना, आश्वासक, ज्ञान देना।
प्रवोधना-(हिं० क्रि०) नींद से उठना, जागना, समझना, वुझाना,सचेत करना, मन में वैठाना, ढाढस या तसल्ली देना, सिखाना, पट्टी पढाना।
प्रवोधनी-(स० स्त्री०) कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी, देवोत्थान एकादशी जिस दिन भगवान् सोकर उठते हैं।
प्रवोधित-(स० वि०) जगाया हुआ, ज्ञान प्राप्त।
प्रवोधिता-(स० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम जिसको सुनन्दिनी या मञ्जुभाषिणी भी कहते हैं।
प्रवोधी-(स०वि०) जगाने वाला।
प्रवोधिनी-(स०स्त्री०) देखो प्रवोधनी।
प्रभग्न-(स०वि०) भग्न, टूटा फूटा हुआ।
प्रभञ्जन-(स० पु०) प्रचण्ड वायु, आधी, तोड़ फोड़, विनाश, वरवादी।
प्रभद्र-(स० पु०) नीम का पेड़ (वि०) श्रेष्ठ।
प्रभद्रक-(स० नपु०) पद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
प्रभद्रा-(स०स्त्री०) प्रसारिणी लता।
प्रभव-(स०पु०) जन्म हेतु, जल निकलने का मार्ग, पराक्रम, उत्पत्ति, सृष्टि, ससार, विष्णु, एक सवत्सर का नाम, एक मुनि का नाम।
प्रभवन-(स०नपु०) उत्पत्ति,अधिष्ठान।
प्रभविष्णु-(स० वि०) प्रभावशील (पु०) विष्णु।
प्रभा-(स०स्त्री०) दीप्ति, चमक, प्रकाश, तेज, दुर्गा, कुवेरपुरी, राजा नहुष की माता का नाम, एक अप्सरा का नाम, सूर्य का विम्व वारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसको मन्दाकिनी भी कहते हैं।
प्रभाउ-(हिं०पुं०) देखो प्रभाव।
प्रभाकर-(स० पु०) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, समुद्र, एक नाग का नाम।
प्रभाकीट-(स०पु०) खद्योत, जुगनू।
प्रभाग-(स० पु०) विभाग का विभाग, भग्नाश।
प्रभात-(स० नपु०) प्रातःकाल, प्रत्यूष, सवेरा।
प्रभाती-(स० स्त्री०) दन्तधावन, दातुन, प्रातःकाल गाने की एक प्रकार की गीत
प्रभान-(स०नपुं०) ज्योति, दीप्ति।
प्रभापन-(स०नपु०) उजाला करना।
प्रभामण्डल-(स०नपु०) गोलाकार रश्मि।
प्रभामय-(स०वि०) दीप्तिमय।
प्रभाव-(स० पुं०) प्रताप, तेज, सामर्थ्य, महिमा, विक्रम, माहात्म्य, शक्ति, शान्ति, उद्भव, साख, अन्तःकरण को किसी ओर प्रवृत्त करने का गुण, प्रवृत्ति पर होने वाला फल या परिणाम।
प्रभावज-(स०वि०) प्रभाव से उत्पन्न।
प्रभावती-(स०स्त्री०) वडे रोव दाव वाली स्त्री, कुमार की एक मातृका का नाम, सूर्य की पत्नी, शिव की एक वीणा का नाम, तेरह अक्षरो का एक छन्द जिसको रुचिरा भी कहते हैं, एक राग का नाम।
प्रभावन्-(स०वि०) प्रभावशाली।
प्रभाष-(स०पु०) एक वस्तु का नाम।
प्रभाषण-(स०नपु०) अच्छी तरह कहना।
प्रभाषी-(स० वि०) अच्छी तरह से बोलने वाला।
प्रभास-(स० पु०) एक वसु का नाम, कुमार का एक अनुचर, ज्योति, दीप्ति (वि०) पूर्ण, प्रभा युक्त।
प्रभासन-(स०नपु०) दीप्ति, ज्योति।
प्रभासना-(हि०क्रि०)दिखाई पड़ना।
प्रभिन्न-(स०वि०) पूर्ण भेद युक्त।
प्रभु-(स० पु०) विष्णु, शिव, पारद,

पारा, अधिपति, नायक, स्वामी, नेता, अधिप, पालक, शब्द, आवाज, भगवान्, ईश्वर ।

प्रभुता, प्रभुताई–(स० स्त्री०) महत्व, बड़ाई, वैभव, शासन का अधिकार, हुकूमत ।

प्रभुत्व–(स०पु०) देखो प्रभुता ।

प्रभुत्वाक्षेप–(सं०पु०) एक अर्थालंकार जिसमें कोई नायिका अपने प्रभुत्व के अभिमान से नायक को बाहर जाने से रोकती है ।

प्रभुभक्त–(स०पु०) बढ़िया घोड़ा (वि०) नमकहलाल ।

प्रभूत–(स०वि०) प्रचुर, अधिक, उन्नत, बढ़ा हुआ, निकाला हुआ, बहुत (पु०) पञ्च भूत, तत्व ।

प्रभूति–(स० स्त्री०) उत्पत्ति, शक्ति, अधिकता ।

प्रभृति–(स० अव्य०) इत्यादि, आदि, वगैरह ।

प्रभेद–(सं०पु०) विभिन्नता, भेद, अन्तर, शरीर में फोड़ा निकलना ।

प्रभेदक–(स०वि०) विभाग करने वाला ।

प्रभेदनी–(स०स्त्री०)छेद करने का औज़ार

प्रभेदिका–(स०वि०) छेद करने वाली ।

प्रभ्रंश–(स०पु०)विभिन्न होना, भ्रष्ट होना ।

प्रभ्रष्ट–(स०वि०) टूटा फूटा हुआ ।

प्रमण्डल–(स०पु०) पहिये का धुरा ।

प्रमत्त–(स० वि०) उन्मत्त, मतवाला, विक्षिप्त, पागल, जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो, जो सन्ध्या वन्दन आदि न करता हो (पु०) एक प्रकार का कौवा, प्रमत्त गीत–जो गीत पागल गाता हो ।

प्रमत्तता–(स०स्त्री०) मस्ती, पागलपन ।

प्रमथ–(स०पु०) घोटक, घोड़ा, शिव के परिषद या गण जिनकी संख्या छत्तीस करोड़ कही जाती है, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

प्रमथन–(स०स्त्री०) वध, हत्या, मथना, जड़ से उखाड़ना, रौंदना, छोड़ना, तिरस्कार, अपमान ।

प्रमथनाथ, प्रमथाधिप–(सं०पुं०) शिव, महादेव ।

प्रमथालय–(स०पु०) एक नरक का नाम ।

प्रमथित–(सं०नपुं०) नवनीत, मक्खन ।

प्रमद–(स०पु०)हर्ष, आनन्द, धतूरे का फल या फूल, वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम, उन्मत्तता, मतवालापन (वि०) मतवाला ।

प्रमदकानन–(स० नपु०) राजाओं का अन्तःपुर का बगीचा ।

प्रमदा–(स०स्त्री०) सुन्दर स्त्री, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर रहते हैं, देवी का एक नाम ।

प्रमदावन–(स०नपु०) देखो प्रमद कानन

प्रमन्यु–(स०वि०) बड़ा गुस्सवर (पु०) अतिक्रोध ।

प्रमय–(स०पुं०) वध, हिंसा ।

प्रमर्दन–(स० वि०) अच्छी तरह से रगड़ने वाला (पुं०) एक असुर का नाम, अच्छी तरह से मलना दलना, खूब कुचलना, रौंदना, दमन करना, नष्ट करना ।

प्रमा–(स० वि०) यथार्थ ज्ञान, शुद्ध बोध, वह ज्ञान जिसमें किसी प्रकार का भ्रम न हो ।

प्रमाण–(स० नपु०) सत्यता, सचाई, निश्चय, विष्णु, नित्य, मर्यादा, शास्त्र, एक अलङ्कार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का वर्णन हो, प्रामाणिक वस्तु, प्रमा, सबूत, मूल धन, आदेश प्रमाण पत्र, (वि०) सत्यवादी, सच बोलने वाला, मान्य स्वीकार करने योग्य, प्रमाणित, चरितार्थ, (अव्य०) पर्यन्त, तक , प्रमाण कुशल–अच्छा तर्क करने वाला , प्रमाण कोटि–प्रमाण मानी जानेवाली बातो का समुदाय ।

प्रमाणता–(स०स्त्री०) प्रमाण का भाव या धर्म ।

प्रमाणना–(हिं०क्रि०) देखो प्रमानना ।

प्रमाणपत्र–(स०पुं०) वह लिखा हुआ कागज जिसपर का लेख किसी बात का प्रमाण हो, सार्टिफिकेट ।

प्रमाण पुरुष–(स०पु०) जिसके निर्णय को मानने के लिये दोनों पक्ष के लोग तैयार हो, पच ।

प्रमाणलक्षण–(स० नपु०) वह लक्षण जिससे प्रमाण सिद्ध होता हो ।

प्रमाण वाक्य–(स०नपु०) आप्त वाक्य, वेद वाक्य ।

प्रमाणान्तर–(सं० स्त्री०) अन्य प्रकार का उपाय ।

प्रमाणिक–(स० वि०) वह जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध हो ।

प्रमाणिका–(स०स्त्री०) छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं, इसका दूसरा नाम–'नग-स्वरूपिणी' है ।

प्रमाणित–(स० वि०) प्रमाण द्वारा सिद्ध, सच्चा ठहराया हुआ ।

प्रमाणी–(स०स्त्री०) प्रमाणिका छद ।

प्रमाणीकृत–(स०वि०) प्रमाण रूप से जो स्वीकार किया गया हो ।

प्रमाता–(स०त्रि०) प्रमाणों द्वारा प्रमेय के ज्ञान को प्राप्त करनेवाला, ज्ञान उत्पन्न करने वाला, आत्मा, चेतन पुरुष, विषय से भिन्न विषयी, द्रष्टा, साक्षी, (स्त्री०) पिता की माता, दादी ।

प्रमातामह–(स० पु०) मातामह का पिता, परनाना ।

प्रमातामही–(सं० स्त्री०) प्रमातामह की पत्नी, परनानी ।

प्रमात्व–(स०नपु०) प्रमा का धर्म या भाव ।

प्रमाथ–(स०पुं०) मथन, बल पूर्वक हरण, मर्दन, नाश करना, दुःख देना, हत्या करना, शिव के एक गण का नाम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, किसी स्त्री के साथ बलात्कार ।

प्रमाथी–(स० वि०) मारनेवाला, पीड़ा देनेवाला, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम एक अप्सरा का नाम ।

प्रमाद–(स०पुं०) भ्रम, भ्रान्ति, असावधानी, अन्तः करण की दुर्बलता, योग शास्त्र के अनुसार समाधि के साधनों को झूठा मानना ।

प्रमादिक–(स०वि०)भूल चूक करनेवाला ।

प्रमादिका–(स०स्त्री०) वह कन्या जिसको किसी ने दूषित कर दिया हो।
प्रमादी–(सं०वि०)असावधानी करने वाला (पुं०) बावला, पागल।
प्रमादिनी–(स०स्त्री०) एक रागिणी का नाम
प्रमान–(हिं०पु०) देखो प्रमाण।
प्रमानना–(हिं०क्रि०) प्रमाणित मानना या करना, सिद्ध करना, स्थिर करना, यथार्थ जानना।
प्रमानी–(हिं०वि०) प्रामाणिक, प्रमाण योग्य, माननीय, मानने लायक।
प्रमापण–(स० नपु०) मारण, नाश।
प्रमापयिता–(स० वि०) घातक, नाश करने वाला।
प्रमार–(स० पु०) राजपूत क्षत्रियों की एक श्रेणी, देखो परमार।
प्रमार्जक–(स०वि०) साफ करने वाला।
प्रमार्जन–(स० नपु०) अच्छी तरह से साफ करना, झाड़ना, पोछना, हटाना।
प्रमित–(स०वि०) ज्ञात, विदित, निश्चित, अल्प, थोड़ा, परिमित, प्रमाणित।
प्रमिताक्षरा–(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं।
प्रमिताशन–(स० नपु०) अल्प भोजन, थोड़ा खाना।
प्रमीति–(स० स्त्री०) मृत्यु, मरण।
प्रमीलक–(स०पु०) शरीर का आलस्य या दुर्बलता, झपकी, उंघाई।
प्रमीलन–(स०नपुं०) निमीलन, मूंदना।
प्रमीला–(स० स्त्री०) तन्द्रा, उँघाई, अवसाद, थकावट, ग्लानि, शिथिलता।
प्रमीली–(स०वि०) आँख मूंदने वाला।
प्रमुक्ति–(स०स्त्री०) निर्वाण, मोक्ष।
प्रमुख–(स०नपु०) समूह, ढेर, आरम्भ, (वि०) मुख्य, प्रधान, पहला, प्रतिष्ठित, मान्य, (अव्य०) इससे आरम्भ करके, तत्काल, उसी समय, सामने, इत्यादि, वगैरह।
प्रमुच–(स० वि०) मुक्ति देने वाला।
प्रमुद–(स०स्त्री०) अत्यन्त आनन्द (वि०) आनन्दित।
प्रमुदित–(स०वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
प्रमुदितवदना–(स०स्त्री०) बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसको मन्दाकिनी भी कहते हैं।
प्रमूषित–(स०वि०) अपहृत, चोराया हुआ।
प्रमृश–(स० वि०) पण्डित, विद्वान्।
प्रमृष्ट–(स०वि०) मार्जित, धोया हुआ।
प्रमेय–(स० वि०) जो प्रमाण का विषय हो सके, जिसका मान या अन्दाज़ बतलाया जा सके, निर्धारण करने योग्य (पु०) यथार्थ ज्ञान का विषय।
प्रमेयत्व–(स० नपु०) प्रमेय का भाव या धर्म।
प्रमेह–(स० पु०) मूत्र दोष, बहुमूत्र का रोग, वह रोग जिसमें मूत्र के साथ शरीर के अनेक पोषक धातु निकला करते हैं।
प्रमेही–(स० पु०) प्रमेह का रोगी।
प्रमोक्ष–(स० पुं०) निर्वाण, मुक्ति, छुटकारा।
प्रमोचन–(स० नपुं०) अच्छी तरह से छुड़ाना।
प्रमोद–(स० पुं०) हर्ष, आनन्द, सुख, कुमार के एक अनुचर का नाम, एक सिद्धि का नाम।
प्रमोदक–(स०पु०) साठी नाम का धान।
प्रमोदन–(स० पुं०) विष्णु, (नपु०) आनन्द देना।
प्रमोदा–(स०स्त्री०) साङ्ख्य के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जो आधिदैविक दुःखों पर प्राप्त होती है।
प्रमोदित–(स०वि०) हर्षित, आनन्दित।
प्रमोदी–(स०वि०) अति प्रसन्न, हर्ष जनक
प्रमोह–(स०पु०) मूर्छा।
प्रमोही–(स०वि०) मोह जनक।
प्रयंक–(हिं०पु०) देखो पर्यङ्क।
प्रयंत–(हिं० अव्य०) देखो पर्यन्त।
प्रयत–(स० वि०) पवित्र, नम्र, दीन, दिया हुआ।
प्रयतात्मा–(सं०वि०) जितेन्द्रिय, संयमी।
प्रयत्न–(स०पुं०) चेष्टा, कोशिश, प्रयास, इष्ट साधन का ज्ञान, किसी काम करने की इच्छा, चिकीर्षा, प्राणियों की क्रिया या व्यापार, व्याकरण में वर्णों के उच्चारण में होने वाली एक क्रिया जो दो प्रकार की होती है–मुख से ध्वनि निकलने के पहले वागिन्द्रियों की क्रिया को आभ्यन्तर प्रयत्न तथा ध्वनि के अन्त की क्रिया को वाह्य प्रयत्न कहते हैं।
प्रयत्नवान्–(हिं०वि०)प्रयत्न में लगा हुआ।
प्रयसा–(स०स्त्री०) एक राक्षसी जिसको रावण ने सीता को समझाने के लिये नियुक्त किया था।
प्रयस्त–(स०वि०) परिश्रम से किया हुआ
प्रयाग–(स०पु०) एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा और यमुना के संगम पर है, इलाहाबाद।
प्रयागवाल–(हिं० पु०) प्रयाग तीर्थ का पंडा।
प्रयाचक–(स०वि०) याचना करने वाला मांगने वाला।
प्रयाचन–(स०नपुं०) याचना, प्रार्थना।
प्रयाण–(स० नपुं०) गमन, जाना, रवानगी युद्ध यात्रा, चढाई, आरम्भ, **प्रयाण काल**–जाने का समय, मृत्युकाल
प्रयात–(स०पुं०) ऊँचा किनारा, (वि०) गया हुआ, मरा हुआ, सोया हुआ (नपु०) गमन, जाना।
प्रयातव्य–(स०वि०) चढाई करने योग्य
प्रयास–(स०पु०) प्रयत्न, उद्योग, आयास, श्रम, मेहनत, इच्छा।
प्रयुक्त–(स०वि०) अच्छी तरह से जोड़ा हुआ, प्रेरित, लगाया हुआ, जिसका खूब प्रयोग किया गया हो, अच्छी तरह से मिला हुआ।
प्रयुक्ति–(सं०स्त्री०) प्रयोजन, प्रयोग।
प्रयुजमान–(स० वि०) जिसका प्रयोग किया गया हो।
प्रयुत–(स०नपु०) दस लाख की संख्या (वि०) सहित, समेत, अस्पष्ट, खूब मिला हुआ।
प्रयुत्सु–(स०पु०) योद्धा, वीर, वायु, इन्द्र, सन्यासी।

प्रयोक्ता-(सं०पु०) प्रयोग या व्यवहार करने वाला, प्रधान अभिनय करने वाला, सूत्रधार, ऋण देने वाला, महाजन।

प्रयोग-(सं० पु०) अनुष्ठान, साधन, अनुमान में पाचो अवयवों का उच्चारण, नाटक का खेल, व्यवहार, क्रिया का साधन, कोई तान्त्रिक उपचार या साधन, दृष्टान्त, घोड़ा, यज्ञ आदि कर्मों की पद्धति, सूद पर रुपया देना, साम दण्ड आदि उपायों का अवलम्बन

प्रयोगातिशय-(सं०पु०) नाटकाङ्ग प्रस्तावना का एक भेद।

प्रयोगी-(सं०वि०) प्रयोग करने वाला।

प्रयोजक-(सं० वि०) अनुष्ठान करने वाला, प्रयोग कर्ता, प्रेरक, काम में लगाने वाला, प्रेरक, प्रदर्शक, प्रबन्ध करने वाला।

प्रयोजन-(सं०नपु०) हेतु, कार्य, काम, कारण, उद्देश्य, अभिप्राय, मतलब, व्यवहार, उपयोग।

प्रयोजनवती लक्षणा-(सं० स्त्री०) वह लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रगट करती हो।

प्रयोजनवत्-(सं० वि०) मतलब रखने वाला।

प्रयोजनीय-(सं०वि०) काम का,मतलब का

प्रयोज्य-(सं०वि०) प्रयोग में लाने योग्य, कर्तव्य, काम में लगाये जाने लायक (पु०) मूल धन, नौकर।

प्रराध्य-(सं०वि०) प्रशंसा या आराधना करने योग्य।

प्ररुह्-(सं०वि०) भूमि के ऊपर बढने वाला।

प्ररूढ-(सं०वि०) प्रवृद्ध, खूब बढा हुआ, उत्पन्न।

प्ररेचन-(सं० नपु०) रुचि दिलाना, उत्तेजित करना, मोहित करना।

प्ररोचना-(सं०स्त्री०) उत्तेजना, बढावा, रुचि उत्पन्न करने की क्रिया, नाटक की प्रस्तावना का एक अंग, जिसमें दर्शकों को रुचि उत्पन्न करने की बात कही जाती है, अभिनय के बीच में आगे आने वाली बात का रुचिकर रूपमें कथन।

प्ररोह्-(सं० पुं०) अंकुर, अखुआ, कल्ला, उत्पत्ति, आरोह, चढाव, ऊपर की ओर निकलना।

प्ररोहण-(सं० नपु०) उत्पत्ति, आरोह, चढाव, भूमि से निकलना, उगना।

प्ररोहभूमि-(सं०स्त्री०) उर्वरा भूमि, उपजाऊ जमीन।

प्ररोहशाखी-(सं० पु०) ऐसे वृक्ष जिनकी कलम लगाने से लग जाय।

प्रलपन-(सं० नपु०) अनर्थक बात, बकवाद।

प्रलपित-(सं० वि०) कथित, कहा हुआ।

प्रलम्ब-(सं०पु०) एक दानव जिसको बलराम ने मारा था, पयोधर, स्तन, कार्य में शिथिलता, व्यर्थ का विलम्ब, ताड़ का अंकुर, रागा, अंकुर, अखुआ शाखा, डाल, एक प्रकार का हार, प्रलम्बन, लटकाव (वि०) लम्बमान, लटका हुआ, लबा, टगा हुआ, निकला हुआ, बढा हुआ, शिथिल, सुस्त।

प्रलम्बन-(सं० नपु०) लटकाव, झुलाव अवलम्बन, सहारा लेना।

प्रलम्बित-(सं०वि०) नीचे तक लटका हुआ

प्रलम्बी-(सं० वि०) आश्रयी, सहारा लेने वाला, दूर तक लटकने वाला।

प्रलम्भ-(सं० पु०) अधिक लाभ।

प्रलम्भन-(सं०नपु०)अतिलाभ,छल,धोखा

प्रलय-(सं० पुं०) ससार के नाना रूपों का प्रकृतिमें लीन होकर मिट जाना,कल्पान्त, वैष्णवों के मत से नायिकों के सात्विक भावों में से के एक भाव, साहित्य में सात्विक भाव का एक भेद, मूर्छा, बेहोशी, विलीन होना,लय को प्राप्त होना

प्रलयता-(सं०स्त्री०) प्रलय का भाव या धर्म

प्रलव-(सं०पु०) खण्ड,टुकड़ा,छोटा अंग।

प्रलवन-(सं०नपु०) अच्छी तरहसे काटना।

प्रलाप-(सं० पु०) अनर्थक बात,व्यर्थ की बकवाद, निष्प्रयोजन पागलों की सी बकझक।

प्रलापक-(सं० पु०) सन्निपात ज्वर का एक भेद।

प्रलापन-(सं० नपु०) बकवाद, बकझक।

प्रलापी-(सं०वि०) अडबड बकने वाला।

प्रलीन-(सं०वि०) चेष्टा शून्य, जड़वत्।

प्रलीनता-(सं०स्त्री०) प्रलय, नाश।

प्रलून-(सं० पुं०) एक प्रकार का कीड़ा (वि०) छिन्न भिन्न कटा हुआ।

प्रलेप-(सं०पु०) शरीर पर किसी औषधि का लेप चढाना, पुल्टिस।

प्रलेपक-(सं०वि०) लेप करने वाला (पु०) एक प्रकार का पुराना ज्वर।

प्रलेपन-(सं०पु०) लेप करने या पोतने की क्रिया।

प्रलेहन-(सं० नपु०) जीभ से किसी वस्तु को चाटना।

प्रलेप-(सं०पु०) ध्वंस, नाश।

प्रलोभ-(सं०पु०) अति लोभ, लालच।

प्रलोभक-(सं०वि०) ललचाने वाला।

प्रलोभन-(सं० नपुं०) लोभ दिखाना, ललचाना।

प्रलोभी-(सं०वि०) लोभ में फँसाने वाला।

प्रलोभित-(सं०वि०) ललचाया हुआ।

प्रलोलुप-(सं०वि०) बड़ा लालची।

प्रवचना-(हिं०स्त्री०) धूर्तता, छल,कपट।

प्रवक्ता-(सं० वि०) उपदेश देने वाला, अच्छी तरह समझा कर कहने वाला।

प्रवग-(सं०पु०) खग, पक्षी।

प्रवचन-(सं० नपु०) अर्थ खोल कर समझाना,वेदाङ्ग,किसी वाक्य की व्याख्या

प्रवचनीय-(सं० वि०) समझा कर कहने योग्य।

प्रवट-(सं०पुं०) गोधूम, गेंहू।

प्रवण-(सं०वि०) जो क्रम से नीचा होता गया हो, ढालुवाँ, आयत, लम्बा, उदार, आसक्त, क्षीण, विनीत, अनुकूल, नम्र, निपुण, नत, झुका हुआ, स्निग्ध 'तर, (पु०) ढाल, उतार, चौरहा, पहाड़ का किनारा, आहुति, उदर, पेट।

प्रवत्स्यत्पतिका-(सं०स्त्री०) वह नायिका जिसका पति विदेश जाने वाला हो।

प्रवत्स्यत्प्रयसी-(सं०स्त्री०) देखो प्रव-

त्यत्पतिका।
प्रवदन–(सं०नपुं०) घोषणा।
प्रवपन–(सं०नपुं०) मूछ दाढी मुड़वाना।
प्रवपन–(सं०नपुं०) तेजी से चलना।
प्रवयस्–(सं०वि०) बुड्ढा, पुरातन, पुराना
प्रवर–(सं० नपुं०) अगर की लकड़ी, गोत्र, सन्तति, काली मूंग, (वि०) श्रेष्ठ, मुख्य।
प्रवरललिता–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।
प्रवरा–(सं० स्त्री०) अगर की लकड़ी, पलाश वृक्ष।
प्रवर्ग–(सं०पुं०) हवन करने की अग्नि।
प्रवर्त–(सं० पुं०) एक प्रकार का गोल आभूषण, एक प्रकार के मेघ, कार्यारम्भ, ठानना।
प्रवर्तक–(सं० वि०) आरम्भ करने वाला, किसी काम को चलाने वाला, प्रवृत्त करने वाला, काम में लगाने वाला, गति देनेवाला, न्याय करनेवाला, आविष्कार करनेवाला, उत्तेजित करनेवाला, उसकाने वाला, (नपुं०) नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार वर्तमान समय का वर्णन करता है, और उसी सम्बन्ध को लेकर पात्र प्रवेश करता है।
प्रवर्तन–(सं०नपुं०) प्रवृत्ति, कार्य आरम्भ करना, ठानना, प्रचार करना, काम को चलाना, उत्तेजना, उसकाना।
प्रवर्तना–(सं०स्त्री०) आरम्भ, उत्तेजना, उभाड़ना, उसकाना, किसी कार्य में प्रवृत्ति
प्रवर्तित–(सं०वि०) चलाया हुआ, आरम्भ किया या ठाना हुआ, उभाड़ा हुआ, लौटाया हुआ।
प्रवर्ती–(सं०वि०) प्रवाहशील, अग्रगामी।
प्रवर्धक–(सं०वि०) वृद्धि करने वाला।
प्रवर्ष–(सं०पुं०) अति वृष्टि।
प्रवर्षण–(सं०नपुं०) अति वृष्टि, बहुत वर्षा, किष्किन्धा के समीप का एक पर्वत जिसपर राम लक्ष्मण ने निवास किया था।
प्रवर्ह–(सं०वि०) श्रेष्ठ, प्रधान।
प्रवल्हिका–(सं०स्त्री०) प्रहेलिका, पहेली।
प्रवसन–(सं० नपुं०) विदेश गमन, बाहर जाना।
प्रवह–(सं०पुं०) वह कुण्ड जिसमें नाली द्वारा जल जाता हो, बड़ा बहाव, सात वायुओं में से एक, घर, नगर आदि से बाहर निकलना।
प्रवहन–(सं०नपुं०) यान, सवारी, पोत, नाव, कन्या को ब्याह देना।
प्रवाच–(सं०वि०) युक्ति पूर्वक बोलने वाला, अच्छी बहस करने वाला, बहुत बोलने वाला।
प्रवाचक–(सं०वि०) अच्छा बोलने वाला
प्रवाचन–(सं० नपुं०) अच्छी तरह से कहना।
प्रवाण–(सं०नपुं०) कपड़े का किनारा बनाना।
प्रवात–(सं०पुं०) प्रबल वायु, तेज हवा।
प्रवाद–(सं०पुं०) आपस की बात चीत, जन समाज में प्रसिद्ध वाक्य, अपवाद, झूठी बदनामी, जनरव, जनश्रुति, अफवाह।
प्रवादक–(सं०पुं०) बाजा बजाने वाला।
प्रवाद्य–(सं०वि०) कहने योग्य, प्रकाशित, करने योग्य।
प्रवान–(हिं०पुं०) देखो प्रमाण।
प्रवापी–(सं०वि०) बोने वाला।
प्रवार–(सं०पुं०) चादर, दुपट्टा।
प्रवारण–(सं०नपुं०) निषेध।
प्रवाल–(सं०पुं०नपुं०) विद्रुम, मूंगा।
प्रवास–(सं०पुं०) विदेश, अपना घर या देश त्याग कर दूसरे देश में निवास करना।
प्रवासन–(सं० पुं०) देश या नगर से बाहर निकालना, वध।
प्रवासित–(सं० वि०) देश से निकाला हुआ, हत, मारा हुआ।
प्रवासी–(सं०वि०) परदेश में रहने वाला, परदेसी।
प्रवाह–(सं०पुं०) प्रवृत्ति, झुकाव, पानी की गति, जल का स्रोत, धारा, बहता हुआ पानी, विस्तार, चलता हुआ क्रम, सिलसिला, कार्य का बराबर चलता रहना।
प्रवाहक–(सं०वि०) अच्छी तरह लेजाने वाला राक्षस।
प्रवाहणी–(सं०स्त्री०) मलद्वार की सबसे ऊपरी कुण्डली जो मल को बाहर फेंकती है।
प्रवाहिका–(सं० स्त्री०) ग्रहणी रोग, अतीसार।
प्रवाहित–(सं० वि०) बहता हुआ, ढोया हुआ।
प्रवाही–(सं०वि०) बहने या बहाने वाला, तरल द्रव, प्रवाह युक्त (स्त्री०) बालुका, बालू।
प्रविख्याति–(सं०स्त्री०) अति प्रसिद्धि।
प्रविचय–(सं०पुं०) परीक्षा, अनुसन्धान खोज।
प्रविचार–(सं०पुं०) उत्तम रूप से विचार।
प्रविदारण–(सं० नपुं०) युद्ध, लड़ाई।
प्रविपल–(सं०पुं०) विपल के साठ भाग में से एक भाग।
प्रविरल–(सं०वि०) अत्यल्प, बहुत थोड़ा।
प्रविवाद–(सं०पुं०) तर्क वितर्क करना।
प्रविषा–(सं०स्त्री०) अतिविषा, अतीस।
प्रविष्ट–(सं०वि०) पैठा हुआ, घुसा हुआ।
प्रविष्टक–(सं०नपुं०) घरमें घुसने वाला।
प्रविसना–(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना।
प्रविस्तार–(सं०पुं०) पर्याप्त चौड़ाई।
प्रवीण–(सं०वि०) निपुण, शिक्षित, कुशल, होशियार, अच्छा गाने बजाने वाला।
प्रवीणता–(सं०स्त्री०) कुशलता, चतुराई।
प्रवीर–(सं०वि०) बड़ा योद्धा, बहादुर, प्रवीरवर–एक प्रकार के असुर,
प्रवीरबाहु–एक प्रकार के राक्षस।
प्रवृत्–(सं०नपुं०) अन्न, अनाज।
प्रवृत्त–(सं० वि०) नियुक्त, रत, लीन, किसी ओर झुका हुआ, उत्पन्न।
प्रवृत्तक–(सं० नपुं०) एक मात्रावृत्त का नाम।
प्रवृत्ति–(सं०स्त्री०) प्रवाह, बहाव, वार्ता, वृतान्त, चित्त का किसी ओर लगाव

या झुकाव, उत्पत्ति, सासारिक विषयों का ग्रहण, नैयायिकों के मत से एक यत्न विशेष, हाथी का मद।
प्रवृद्ध्-(स०वि०) प्रौढ़, खूब पका हुआ, अच्छी तरह से बढ़ा हुआ(पु०) तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।
प्रवृद्धि-(स०स्त्री०) उन्नति, तरक्की।
प्रवेण-(स०पु०) एक प्रकार का बकरा।
प्रवेता-(सं०पु०)रथ हाँकने वाला,सारथी।
प्रवेद-(स०पु०) अच्छी समझ।
प्रवेदन-(स०नपु०) ज्ञापन, घोषणा।
प्रवेप-(स०पु०) कम्पन, कँपकँपी।
प्रवेरित-(स०वि०) इधर उधर पड़ा हुआ।
प्रवेश-(स०पु०)गति, पहुँच, भीतर जाना, घुसना, किसी विषय की जानकारी।
प्रवेशक-(स०पु०) नाटक के अभिनय में वह स्थल जहाँ कोई पात्र अपनी वार्तालाप से दो अंकों के बीच की घटना का परिचय देता है।
प्रवेशनीय-(स०वि०) घुसने लायक।
प्रवेशिका-(स० स्त्री०) प्रवेश के लिये दिया जाने वाला धन, वह पत्र, चिह्न आदि जिसको दिखला कर कोई कहीं प्रवेश पा सकता है।
प्रवेशित-(स०वि०) प्रवेश कराया हुआ।
प्रवेश्य-(स०वि०) घुसने योग्य।
प्रवेष्ट-(स०पु०) बाहु का निचला भाग।
प्रवेष्टक-(स० पुं०) दक्षिण बाहु, दहना हाथ।
प्रबोध-(स०नपु०) ज्ञान, समझ।
प्रव्रजन-(स०नपु०) सन्यास।
प्रव्रजिता-(स०स्त्री०)जटामासी,गोरखमुंडी।
प्रव्रज्या-(स० स्त्री०) सन्यास।
प्रव्रश्चन-(स० पु०) कुठार, कुल्हाड़ी।
प्रव्राज-(स०पु०)बहुतनीचीजमीन,सन्यास।
प्रव्राजित-(स०वि०)निर्वासित,देशनिकाला
प्रशंस-(हि०वि०)प्रशसा के योग्य, (स्त्री०) प्रशसा।
प्रशसक-(स० वि०) प्रशसाकारी, स्तुति करने वाला, खुशामदी।
प्रशसन-(स० नपु०) गुणकीर्तन, गुणों का वर्णन करते हुए स्तुति करना, सराहना, धन्यवाद।
प्रशंसना-हि० क्रि०) गुणानुवाद करना, प्रशसा या स्तुति करना।
प्रशंसनीय-(स० वि०) प्रशसा के योग्य, तारीफ के लायक।
प्रशंसा-(स०स्त्री०)प्रशसन, बड़ाई,तारीफ, स्तुति, अर्थवाद।
प्रशंसित-(सं० वि०) प्रशसा युक्त, सराहा हुआ।
प्रशसोपमा-(स०स्त्री०) वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशसा करके उपमा की प्रशंसा दिखलाई जाती है।
प्रशंस्य-(स० वि०) प्रशसनीय।
प्रशम-(स० पु०) उपशमन, शान्ति।
प्रशमन-(स०स्त्री०)मारण,वध,शमता शान्ति स्थिर करना, वश में लाना, नाश करना, अस्त्रों का प्रहार (वि०) शान्ति करनेवाला।
प्रशस्त-(स०वि०) प्रशसनीय, मनोहर, अति श्रेष्ठ, उत्तम, (नपु०) क्षेम, कुशल।
प्रशस्तपाद-(स०पु०) एक प्रसिद्ध नैयायिक जिन्होंने वैशेषिक सूत्र की टीका लिखी है।
प्रशस्ति-(स०स्त्री०) प्रशसा, स्तुति, वह प्रशसा सूचक वाक्य जो किसी को पत्र लिखते समय पत्र के आदि में लिखा जाता है, सिरनामा, राजा के वह आज्ञापत्र जो प्राचीन समय मे पत्थरों, चट्टानों या ताम्रपत्रों पर खोदे जाते थे, प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के आदि और अन्त की कुछ पंक्तिया जिनसे पुस्तक के कर्ता, विषय, काल आदि का कुछ पता चलता है।
प्रशस्तिकृत्-(स०वि०)प्रशसा करने वाला।
प्रशस्य-(स०वि०)प्रशसनीय, श्रेष्ठ,उत्तम।
प्रशाखा-(सं०स्त्री०) शाखा में से निकली हुई शाखा, टहनी।
प्रशान्त-(स० वि०) स्थिर, चंचलता रहित, शान्त, निश्चल वृत्ति का, (पु०) एक महासागर जो एशिया और अमेरिका के बीच में है।
प्रशान्तता-(स०स्त्री०) निश्चलता,शान्ति।
प्रशान्तात्मा-(स०पु०) शिव, महादेव, प्रशात स्वभाव वाला।
प्रशासित-(स०वि०)अच्छा शासन किया हुआ, शिक्षित।
प्रशास्ता-(स० पु०) शासनकर्ता।
प्रशिथिल-(स० वि०) अति शिथिल, बहुत थका हुआ।
प्रशिष्य-(स० पु०) शिष्य का शिष्य।
प्रशोष-(स०पु०) शुष्क होना, सोखना।
प्रशोषण-(स०पु०) सोखना, सुखाना।
प्रश्न-(स० पु०) जिज्ञासा, सवाल, पूछने की बात, विचारणीय विषय, एक उपनिषद् का नाम।
प्रश्नदूती-(स०पु०) प्रहेलिका, पहेली, बुझौवल।
प्रश्नि-(स०स्त्री०) एक ऋषि का नाम जलकुम्भी।
प्रश्नोत्तर-(सं० नपु०) प्रश्न का उत्तर, सवाल जवाब, वह काव्यालङ्कार जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं।
प्रश्रय-(स०पु०) विनय, आश्रय स्थान, सहारा, टेक, एक देवता का नाम।
प्रश्रयण-(स०नपु०) विनय, शिष्टाचार।
प्रश्रयी-(स०वि०) शान्त, नम्र, विनीत।
प्रश्लिष्ट-स०वि०)अच्छी तरह मिला हुआ।
प्रश्लेष-(स०पु०) व्याकरण की सन्धि में स्वरों का परस्पर मिल जाना।
प्रश्वास-(स०पु०) साँस लेती समय वह वायु जो नाक से बाहर निकलती है।
प्रष्टव्य-(स०वि०) पूछा जाने योग्य।
प्रष्टा-(स०पु०) प्रश्नकर्ता, पूछने वाला।
प्रष्टि-(स०पु०) तीन बैली गाड़ी में वह बैल जो आगे जोता जाता है, तिपाई।
प्रसंख्या-(स० स्त्री०) मीज़ान, टोटल, चिन्ता, ध्यान।
प्रसक्त-(स०वि०)संबद्ध, आसक्त, सश्लिष्ट, लगा हुआ, मिला हुआ।
प्रसक्ति-(स०स्त्री०) प्रसग, अनुमति, आपत्ति।
प्रसङ्ग-(स० पु०) घनिष्ठ सबध, मेल, हेतु, कारण, प्रस्ताव, अवसर, मैथुन, अनुरक्ति, लगन, विषयों का परस्पर

सम्बध, व्याप्ति रूप सम्बन्ध, प्रकरण, अर्थ की सगति, विस्तार।
प्रसङ्गसम-(स०पु०) न्याय में जाति के अन्तर्गत एक प्रकार का प्रतिषेध।
प्रसत्ति-(स० स्त्री०) निर्मलता, शुद्धि।
प्रसन्न-(स० वि०) सन्तुष्ट, निर्मल, स्वच्छ, अनुकूल, खुश (पु०) महादेव, शिव।
प्रसन्नता-(स०स्त्री०) अनुग्रह, कृपा, हर्ष, आनन्द, प्रफुल्लता, निर्मलता, स्वच्छता।
प्रसन्नमुख-(स०वि०) जिसकी आकृति से प्रसन्नता टपकती हो।
प्रसन्नात्मा-(स० वि०) जो सदा प्रसन्न रहे (पुं०) विष्णु।
प्रसन्नित-(स०वि०) देखो प्रसन्न।
प्रसन्नान्ध-(स०पु०) घोडे की आँख का एक रोग।
प्रसभ-(स० वि०) बलात्कार।
प्रसर-(स० पु०) विस्तार, फैलाव, वेग, तेजी, समूह, व्याप्ति, साहस, वीरता, उत्पत्ति, प्रेम।
प्रसरण-(स० नपु०) सेना का इधर उधर जाना, आगे बढ़ना, फैलाव, उत्पत्ति, व्याप्ति, विस्तार।
प्रसरित-(स० वि०) विस्तृत, फैला हुआ, आगे बढा हुआ।
प्रसर्जन-(स०वि०) गिराना, डालना।
प्रसर्पण-(स०नपु०) फैलाव, घुसना, पैठना।
प्रसर्पी-(स०वि०) गतिशील, रेंगने वाला।
प्रसव-(स०पु०) बच्चा जनने की क्रिया, प्रसूति, जन्म, उत्पत्ति, सन्तान, आज्ञा।
प्रसवन-(स०नपु०) बच्चा जनना, गर्भपात।
प्रसव वेदना-(स०स्त्री०) वह पीड़ा जो बच्चा जनने के समय होती है।
प्रसविता-(स० वि०) जन्म देने वाला, आज्ञा देने वाला, पिता, बाप।
प्रसवित्री-(स० स्त्री०) जन्म देने वाला, माता।
प्रसविनी-(स०स्त्री०) जन्म देने वाली, माता।
प्रसव्य-(स० वि०) प्रतिकूल, (पु०) बाईं ओर से परिक्रमा करना।
प्रसहन-(स०पु०) सहन, क्षमा, आलिंगन।
प्रसातिका-(स०स्त्री०) सावाँ नाम का अन्न।
प्रसाद-(स० पु०) प्रसन्नता, खुशी, स्वच्छता, कृपा, अनुग्रह, स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय, वह पदार्थ जिसको देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें, देवता को चढाने की वस्तु, काव्य का गुण भेद, वह स्वच्छ भाषा जिसको सुनते ही भाव समझ में आ जावे, शब्दालंकार के अन्तर्गत एक वृत्ति, धर्म की पत्नी मूर्ति से उत्पन्न एक पुत्र।
प्रसादक-(स० वि०) निर्मल, प्रसन्न करने वाला, (पु०) प्रसाद।
प्रसादन-(स०वि०) प्रसन्न करने वाला, प्रसन्नता देने वाला।
प्रसादना-(स०स्त्री०) परिचर्या, सेवा।
प्रसादनीय-(स०वि०) प्रसन्न करने योग्य।
प्रसादान्न-(स०नपु०) देवता का प्रसाद रूप अन्न।
प्रसादी-(हि० स्त्री०) नैवेद्य, देवताओं को चढाया हुआ पदार्थ, वह पदार्थ जो बड़ा छोटे को देता हो।
प्रसाधक-(स० वि०) सम्पादन करने वाला, राजाओं को कपड़ा गहना आदि पहनाने वाला।
प्रसाधन-(स०नपु०)अलकार,शृगार,वेश।
प्रसाधनी-(स०स्त्री०) सिद्धि, कंघी।
प्रसाधित-स०वि०)अलकृत,सजाया हुआ।
प्रसार-(स० पु०) विस्तार, फैलाव, इधर उधर जाना, निर्गम, निकास, सचार।
प्रसारण-(स० नपु०) विस्तारकरण, फैलाना, पसारना, पढाना।
प्रसारिणी-(स०स्त्री०) गन्धप्रसारी लता, चारुपर्णी।
प्रसारित-(स० वि०) विस्तरित, फैलाया हुआ।
प्रसारिणी-(स०स्त्री०) लजालु, लाजवन्ती, देवधान।
प्रसारी-(स०वि०) फैलाने वाला।
प्रसित-(स०नपु०) पीब, मवाद।
प्रसिति-(स०स्त्री०) किरण, ज्वाला, रस्सी।
प्रसिद्ध-(स० वि०) विख्यात, मशहूर, अलकृत, विभूषित, सजाया हुआ।
प्रसिद्धता-(स०स्त्री०) प्रसिद्ध होने का भाव
प्रसिद्धि-(स०स्त्री०) ख्याति, भूषा, सिंगार।
प्रसुत-(स०वि०) दबाकर निचोड़ा हुआ।
प्रसुप्त-(स०वि०) निद्रित, सोया हुआ।
प्रसुप्ति-(स०स्त्री०)उत्तम निद्रा,गहरी नींद।
प्रसू-(स० स्त्री०) माता, जननी, घोड़ी, केला, (वि०) उत्पन्न करने वाली।
प्रसूका-(स०स्त्री०) घोड़ी, असगन्ध।
प्रसूत-(स० वि०) सजात, उत्पन्न, (पु०) कुसुम, फूल, स्त्रियों का एक रोग जो प्रसव के बाद होता है। (हि०पु०) एक रोग जिसमें हाथ पैर से पसीना छूटता है।
प्रसूता-(स०स्त्री०) बच्चा जनने वाली स्त्री।
प्रसूति-(स०स्त्री०) प्रसव, जनन, उद्भव, तनय, बेटा, बेटी, सन्तान, कारण, उत्पत्ति-स्थान, दक्ष प्रजापति की स्त्री का नाम, वह स्त्री जिसने प्रसव किया हो।
प्रसूतिका-(स०स्त्री०) देखो प्रसूता।
प्रसून-(स० नपु०) पुष्प, फूल, मदार का वृक्ष।
प्रसूनक-(स०पु०) मुकुल, कली, फूल।
प्रसूनबाण,प्रसूनेषु-(स० पु०) कन्दर्प, कामदेव।
प्रसृत-(स०वि०) बढा हुआ,फैला हुआ, नियुक्त, तत्पर, भेजा हुआ, गया हुआ (पु०) हथेली भर का मान, गहरी की हुई हथेली।
प्रसृता-(स० स्त्री०) जघा, जाघ।
प्रसृति-(स०स्त्री०) विस्तार,फैलाव,सन्तति, सोलह तोले का परिमाण।
प्रसृष्ट-(स०वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ, दुःखित।
प्रसेक-(स०पु०,सेंकना,निचोड़,छिड़काव, एक असाध्य रोग, पसेव।
प्रसेदिका-(स०स्त्री०) छोटा बगीचा।
प्रसेव-(स० पु०) वीन की तुम्बी, कपड़े की थैली, (वि०) सिला हुआ,

विख्यात, प्रसिद्ध ।
प्रस्कन्दन–(स० नपु०) विरेचन, जुलाब, अतिसार रोग, शिव, महादेव ।
प्रस्कन्दिका–(स०स्त्री०) सग्रहणी रोग ।
प्रस्खलन–(स० नपु०) पतन, गिराव ।
प्रस्तर–(स० पु०) शिला, पत्थर, मणि, बिछावन, चमडे की थैली, प्रस्तार, समतल, एक ताल का नाम ।
प्रस्तरण–(स०नपु०) बिछावन, बिछौना ।
प्रस्तरिणी–(स०स्त्री०) गोजिह्वा, गावजुबाँ,
प्रस्तव–(स०पु०) स्तुति, प्रशसा, प्रभाव ।
प्रस्तरोपल–(स० पु०) चन्द्रकान्त मणि ।
प्रस्तान्न–(स०नपु०) पुराना चावल ।
प्रस्तार–(स०पु०) घास का जगल, पत्तों का बिछौना, विस्तार, फैलाव, वृद्धि, परत, सीढ़ी, समतल भूमि, छन्द शास्त्र के अनुसार वह प्रत्यय जिससे छन्दों के भेद की सख्या और रूपों का ज्ञान होता है, प्रस्तार पद्धति–पक्ति छन्द का एक भेद, ।
प्रस्ताव–(स० पु०) अवसर, प्रकरण, विषय, छिड़ी हुई बात, ज़िक्र, चर्चा, सभा के सामने उपस्थित की हुई बात, विषय, परिचय, भूमिका ।
प्रस्तावन–(स०पु०) प्रस्ताव करने का भाव ।
प्रस्तावना–(स०स्त्री०) आरभ, कथोद्धात, वह प्रसग जो नाटकादि ग्रन्थ मे अभिनय के पूर्व विषय का परिचय देने के लिये उठाया जाता है ।
प्रस्तावित–(स०वि०) जिसके लिये प्रस्ताव किया गया हो ।
प्रस्तुत–(स०वि०) उपयुक्त, योग्य, प्राप्त, उद्यत, तैयार, प्रकरण युक्त, जिसकी प्रशसा की गई हो, जो किया गया हो, जो कहा गया हो, जिसकी बात उठाई गई हो ।
प्रस्तुतालङ्कार–(स० पु०) वह अलकार जिसमें एक प्रस्तुत विषय के सबध में कोई बात कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत में घटाया जाता है ।
प्रस्तुति–(स० स्त्री०) प्रस्तावना, प्रशसा, उपस्थिति, स्मृति, तैयारी ।
प्रस्थ–(स०पु०) प्राचीन काल का एक मान जो प्रायः एक द्रोण का सोलहवा भाग माना जाता था, पहाड़ का ऊंचा किनारा, विस्तार, फैलाव, ।
प्रस्थपुष्प–(स० पु०) छोटे पत्तों की तुलसी, जमीरी नीबू ।
प्रस्थान–(स०नपु०) मार्ग, गमन, रवानगी, पहरने के वस्त्र आदि जिसको ठीक मुहूर्त न मिलने पर लोग यात्रा की दिशा में किसी के घर रख आते हैं और यात्रा करते समय ले लेते हैं ।
प्रस्थानी–(हिं०वि०) प्रस्थान करने वाला, जाने वाला ।
प्रस्थापन–(स० नपु०) स्थापन, प्रस्थान करना, भेजना ।
प्रस्थापित–(स०वि०) प्रेषित, भेजा हुआ ।
प्रस्थायी–(स०वि०) जो भविष्य में यात्रा करने वाला हो ।
प्रस्थिका–(स०स्त्री०) आमड़ा, पुदीना ।
प्रस्थित–(स०वि०) जो जाने को तैयार हो, स्थिर, ठहरा हुआ, दृढ, मजबूत, जो गया हो, ।
प्रस्थिति–(स०स्त्री०) प्रस्थान, यात्रा ।
प्रस्निग्ध–(स०वि०) तेल लगाया हुआ ।
प्रस्नुषा–(स०स्त्री०) पतोह, पुत्र की स्त्री ।
प्रस्फुट–(स०वि०) प्रकट, साफ, खिला हुआ ।
प्रस्फुरण–(स०पु०) प्रकाशित होना ।
प्रस्फोटन–(स०नपु०) सूर्प, सूप, पीटना, विकसित होना, फटकना, किसी पदार्थ का एकाएक फूटना या खुलना जिसमें भीतर का पदार्थ वेग से बाहर निकल आवे ।
प्रस्रव–(स०पु०) झरना, बहना ।
प्रस्रवण–(स०पु०) स्वेद, पसीना, किसी स्थान से निकल कर बहता हुआ पानी, सोता, झरना, दूध, मूत्र, पेशाब ।
प्रस्राव–(स०पु०) अच्छी तरह से बहना, मूत्र, पेशाब ।
प्रस्रुत–(स०वि०) झड़ा हुआ, गिरा हुआ ।
प्रस्वाद–(स०वि०) अच्छा स्वाद देने वाला ।
प्रस्वाप–(स० पु०) वह वस्तु जिसके प्रयोग से निद्रा आवे ।
प्रस्वेद–(स० पु०) घर्म, पसीना ।
प्रहत–(स०वि०) प्रताड़ित, पीटा हुआ, प्रसारित, फैलाया हुआ, (पु०) प्रहार, ठोकर ।
प्रहन्ता–(स०वि०) मारने वाला ।
प्रहर–(स०पु०) दिन रात के आठ भागों में से एक भाग, तीन घटे का समय ।
प्रहरक–(स० पु०) पहरेदार जो घटा बजाता हो ।
प्रहरखना–(हि०क्रि०) आनन्दित होना, खुश होना ।
प्रहरण–(स० नपु०) मारना, फेंकना, हटाना, हरण करना, छीनना ।
प्रहरणकलिका–(स० स्त्री०) चौदह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति ।
प्रहरणीय–(स०वि०) हरण करने योग्य ।
प्रहरी–(स० पु०) पहर पहर पर घटा बजाने वाला, पहरा देने वाला, चौकीदार
प्रहर्ता–(स०वि०) प्रहार करने वाला, योद्धा
प्रहर्ष–(स०पु०) हर्ष, अत्यन्त आनन्द ।
प्रहर्षण–(स०पु०) बुध ग्रह, आनन्द, एक अलकार जिसमें बिना प्रयत्न के किसी वाछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है (वि०) हर्ष देने वाला ।
प्रहर्षणी–(स०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी, एक वर्णवृत्त का नाम ।
प्रहस–(स०पु०) एक असुर का नाम ।
प्रहसन–(स०नपु०) अट्टहास, जोर की हँसी, परिहास, हँसीदिल्लगी, रूपक का एक अग, व्यगोक्ति, चुहल, खिल्ली ।
प्रहाण–(स०नपु०) परित्याग, चित्त की एकाग्रता ।
प्रहार–(स०पु०) आघात, चोट, युद्ध ।
प्रहारक–(स०पु०) प्रहारी, मारने वाला ।
प्रहारना–(हि०क्रि०) आघात पहुँचाना, मारना ।
प्रहारित–(स०वि०) जिस पर वार किया गया हो ।
प्रहारी–(स० वि०) प्रहार करने वाला, मारने वाला, नष्ट करने वाला, फेंकने वाला, चलाने वाला, (पु०) एक राक्षस का नाम ।

प्रहार्य—(सं॰वि॰) हरण करने योग्य।
प्रहास—(सं॰पुं॰) जोर की हँसी, ठहाका, शिव, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम
प्रहासिक, प्रहासी—(सं॰पु॰) लोगों को हँसाने वाला।
प्रहित—(सं॰वि॰) प्रेरित, उसकाया हुआ, फेंका हुआ।
प्रहृत—(सं॰वि॰) फेंका हुआ, मारा हुआ।
प्रहृष्ट—(सं॰वि॰) अत्यन्त प्रसन्न।
प्रहेणक, प्रहेलक—(सं॰नपु॰) लपसी।
प्रहेलिका—(सं॰स्त्री॰) कूटार्थ कथा, पहेली
प्रह्रास—(सं॰पु॰) क्षय, नाश।
प्रह्लाद—(सं॰पु॰) दैत्यपति हिरण्यकश्यपु के पुत्र जो विष्णु के बड़े भक्त थे, आनन्द, आमोद।
प्रह्लादक—(सं॰वि॰) सन्तोषजनक।
प्रह्लादन—(सं॰नपु॰) प्रसन्न करना।
प्रह्लादिनी—(सं॰स्त्री॰) लाल लाजवन्ती।
प्रह्व—(सं॰वि॰) नम्र, विनीत।
प्रह्वण—(सं॰ नपु॰) बुलाना।
प्राइमर—(अं॰ पु॰) किसी भाषा के वर्णमाला की पुस्तक।
प्राइवेट—(अं॰वि॰) जो सार्वजनिक न हो, व्यक्तिगत, निजी, गुप्त, छिपाकर रक्खा हुआ, प्राइवेट सक्रेटरी—किसी बड़े आदमी का निज का मन्त्री या सहायक
प्रांशु—(सं॰वि॰) उच्च, उन्नत।
प्रांशुता—(सं॰स्त्री॰) उच्चता, ऊँचापन।
प्राकर्षिक—(सं॰पु॰) स्त्रियों के बीच में नाचने वाला मनुष्य, रंडियों का दलाल
प्राकाम्य—(सं॰ नपु॰) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।
प्राकार—(सं॰पु॰) प्राचीर, चहारदीवारी।
प्राकाश्य—(सं॰पु॰) ख्याति, प्रसिद्धि।
प्राकृत—(सं॰वि॰) नीच, प्रकृति से उत्पन्न, स्वाभाविक लौकिक, संसारी, साधारण, मामूली (स्त्री॰) बोल चाल की वह भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रान्त में हो, एक प्राचीन भाषा जिसका प्रचार प्राचीन समय में भारतवर्ष में था, बहुत से पंडितों का मत है कि प्राकृत भाषा से ही संस्कृत भाषा निकली है।
प्राकृतज्वर—(सं॰ पु॰) ऋतु के प्रभाव से होने वाला ज्वर।
प्राकृततन्त्र—(सं॰नपु॰) प्रजा के हस्तगत राज्य शासन, प्रजातन्त्र।
प्राकृतमित्र—(सं॰ नपु॰) जिसके साथ स्वाभाविक मित्रता हो।
प्राकृतशत्रु—(सं॰ पु॰) स्वाभाविक शत्रु।
प्राकृतसमाज—(सं॰ पु॰) साधारण लोक का समाज।
प्राकृतिक—(सं॰ वि॰) प्रकृति सम्बधी, स्वाभाविक, साधारण, मामूली, जो प्रकृति से उत्पन्न हो, सांसारिक, लौकिक, प्राकृतिक इतिवृत्त—वह शास्त्र जिससे सृष्ट (प्राकृतिक) पदार्थ के स्वरूप और अवस्था का ज्ञान हो, प्राकृतिक भूगोल—भूगोल विद्या का वह अंग जिसमें भौगोलिक तत्वों का तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया जाता है, प्राकृतिक विज्ञान—वह शास्त्र जिसके द्वारा प्राकृतिक कार्य विषयक ज्ञान प्राप्त होता है।
प्राक—(सं॰वि॰) पहिले का, अगला (पुं॰) पूर्व दिशा, पूरब।
प्राक्केवल—(सं॰ वि॰) जो पहले ही से भिन्न रूप में प्रकट रहा हो।
प्राक्छाय—(सं॰ नपु॰) जिस समय छाया पूर्व की ओर पड़ती हो।
प्राक्तन—(सं॰ वि॰) प्राचीन, पुराना।
प्राक्फल—(सं॰ पु॰) पनस, कटहल।
प्राक्सन्ध्या—(सं॰ स्त्री॰) सूर्योदय के समय का काल, प्रातःकाल, सवेरा।
प्राक्सी—(अं॰स्त्री॰) वह व्यक्ति जो किसी दूसरे व्यक्ति के स्थान पर उसका काम करे, प्रतिनिधि।
प्राखर्य—(सं॰नपु॰) प्रखरता, तीक्ष्णता, तेजी।
प्रागभाव—(सं॰ पु॰) वह अभाव जो प्रतियोगी उत्पन्न करता है, वह पदार्थ जिसका अन्त होता हो।
प्रागल्भ्य—(सं॰ नपु॰) निर्भयता, साहस, वीरता, प्रधानता, प्रबलता, घमंड, चतुराई।
प्रागुक्ति—(सं॰स्त्री॰) पूर्वोक्ति, पूर्वकथन।
प्रागुत्तरा—(सं॰ स्त्री॰) पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा।
प्राग्गामी—(सं॰वि॰) अग्रगामी, पूर्वगामी।
प्राग्जन्म—(सं॰नपु॰) पूर्व जन्म।
प्राग्ज्योतिष—(सं॰ पु॰) कामरूप देश, कामाख्या देश।
प्राग्ज्योतिषपुर—इस देश की राजधानी, जो आजकल गोहाटी के नाम से प्रसिद्ध है।
प्राग्द्वार—(सं॰ स्त्री॰) पूरब की ओर का दरवाजा।
प्राग्भार—(सं॰पु॰) पर्वत का अग्रभाग।
प्राग्सर—(सं॰वि॰) अगला, पहला, श्रेष्ठ।
प्राग्वत्—(सं॰अव्य॰) पहले के समान।
प्राघात—(सं॰पु॰) कड़ी चोट।
प्राघुण—(सं॰ पु॰) पाहुन, अतिथि।
प्राङ्क—(सं॰ पुं॰) छोटा नगाड़ा।
प्राङ्गण—(सं॰नपु॰) एक प्रकार का ढोल, घर के बीच का खुला हुआ स्थान, आंगन।
प्राचार्य—(सं॰पु॰) गुरु, शिक्षक, आचार्य, पण्डित।
प्राचिका—(सं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की जंगली मक्खी।
प्राची—(सं॰स्त्री॰) पूर्व दिशा, पूरब।
प्राचीन—(सं॰ वि॰) पूर्व देश का, पहिले का, वृद्ध, बुड्ढा, पुरातन, पुराना, अग्रज (पु॰) प्राचीर।
प्राचीनता—(सं॰ स्त्री॰) पुराना होने का भाव, पुरानापन।
प्राचीन तिलक—(सं॰पु॰) चन्द्रमा।
प्राचीनत्व—(सं॰ नपु॰) पुरानापन, प्राचीनता।
प्राचीनशाल—(सं॰पु॰) पुराना घर।
प्राचीपति—(सं॰पु॰) इन्द्र।
प्राचीर—(सं॰ नपु॰) परकोटा, शहरपनाह, चहारदीवारी।
प्राचुर्य—(सं॰नपु॰) प्रचुरता, बहुतायत।
प्राचेतस्—(सं॰ पु॰) वाल्मीकि मुनि का नाम, विष्णु, वरुण के पुत्र का नाम।
प्राच्य—(सं॰ पु॰) पूर्व देश या पूर्व

देशा में उत्पन्न (वि०) पूर्वी,पूर्व काल का, पुराना।
प्राच्यवृत्ति–(सं० स्त्री०) वैताली वृत्ति (छन्द) के एक भेद का नाम।
प्राजन–(सं० नपुं०) कोड़ा, चाबुक।
प्राजापत्य–(सं० नपुं०) बारह दिन के एक व्रत का नाम, रोहिणी नक्षत्र, आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें पिता कन्या को अलङ्कृत करके वर को दान करके देता है प्रजापति के पुत्र, (वि०) प्रजापति से उत्पन्न, प्रजापति संबंधी।
प्राजिक–(सं० पुं०) श्येन, बाज पक्षी।
प्राज्ञ–(सं० पुं०) वेदान्त के अनुसार जीवात्मा, (वि०) बुद्धिमान्, चतुर, पण्डित, समझदार।
प्राज्ञत्व–(सं०पुं०) बुद्धिमत्ता, पाण्डित्य।
प्राज्ञा–(सं० स्त्री०) बुद्धिमती, विदुषी, सूर्य की पत्नी का नाम।
प्राज्य–(सं० वि०) प्रचुर, अधिक, बहुत जिस पदार्थ में बहुत घी पड़ा हो।
प्राञ्जल–(सं०वि०) सरल, सीधा, सच्चा।
प्राञ्जलि–(सं०वि०) जो अंजुली बाँधे हो।
प्राड्विवाक–(सं०पुं०) विचारक, न्यायाधीश, जज।
प्राण–(सं० पुं०) ब्रह्म, ब्रह्मा, वायु, हवा, श्वास, सांस, बल, शक्ति,पुराण के अनुसार एक कल्प का नाम,जीवन, ज्ञान, अग्नि, परम प्रिय व्यक्ति, धाता के पुत्र का नाम, विष्णु, देहस्थित वायु जिससे प्राणी जीवित रहता है, काल का वह भाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके, **प्राण उड़जाना**–बहुत घबड़ा जाना, बहुत डर जाना, **प्राण का गले तक आजाना**–मृत्यु का समीप आ जाना, **प्राण जाना या निकलना**–मृत्यु प्राप्त होना, **प्राण डालना**–जीवन प्रदान करना, **प्राण छोड़ना**–मरना, **प्राण देना**–मर जाना, **किसी पर प्राण देना**–किसी को प्राण से अधिक चाहना, **प्राण निकलना**–मर जाना, **प्राणोपर बीतना**–बड़े संकट में पड़ना, **प्राण लेना**–मार डालना, **प्राण हारना**–साहस छोड़ देना।
प्राण अधार–(हिं० पुं०) स्वामी, पति, अति प्रिय व्यक्ति।
प्राणक–(सं०पुं०) प्राणिमाण,जीवक वृक्ष।
प्राणकर–(सं० वि०) शक्तिवर्धक, ताकत देने वाला।
प्राणकष्ट–(सं० पुं०) बहुत बड़ा कष्ट या दुःख।
प्राणकान्त–(सं० पुं०) प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी।
प्राणघात–(सं०पुं०) हत्या, वध।
प्राणघ्न–(सं०वि०) प्राण लेने वाला।
प्राणजीवन–(सं०पुं०) परम प्रिय व्यक्ति, अत्यन्त प्रिय मनुष्य, विष्णु।
प्राणत्याग–(सं० पुं०) प्राण का परित्याग, मरना।
प्राणद–(सं० नपुं०) जल, पानी, रुधिर, विष्णु, (वि०) प्राणों की रक्षा करनेवाला
प्राणदा–(सं०स्त्री०) हरीतकी, हर्रे।
प्राणदाता–(सं०वि०) जीवन देने वाला।
प्राणदान–(सं० नपुं०) जीवनदान, किसी को मरने या मारे जाने से बचाना।
प्राणद्रोह–(सं०पुं०) प्राणहत्या।
प्राणधन–(सं० पुं०) अत्यन्त प्रिय।
प्राणधार–(सं०वि०) जीवित, प्राण वाला।
प्राणधारण–(सं०नपुं०) जीव धारण,शिव।
प्राणधारी–(सं० वि०) प्राणयुक्त, जीवित, जो सांस लेता हो, चेतन।
प्राणनाथ–(सं० पुं०) पति, स्वामी, प्रिय व्यक्ति, प्रियतम।
प्राणनाथी–(हिं० पुं०) गुरु प्राणनाथ के संप्रदाय का अनुयायी, इनका चलाया हुआ संप्रदाय।
प्राणनाश–(सं०पुं०) प्राणत्याग।
प्राणनाशक–(सं०वि०)मार डालने वाला।
प्राणनिग्रह–(सं०पुं०) प्राणायाम की क्रिया।
प्राणपति–(सं० पुं०) आत्मा, स्वामी, पति, हृदय, प्रिय व्यक्ति।
प्राणपत्नी–(सं०स्त्री०)प्राण के समान पत्नी।
प्राणपरिग्रह–(सं० पुं०) प्राणधारण, जन्म।
प्राणपरिवर्तन–(सं० पुं०) किसी मरे हुए पुरुष की आत्मा को किसी जीवित पुरुष के शरीर में बुलाना।
प्राणप्यारा–(हिं०पुं०)अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी।
प्राणप्रतिष्ठा–(सं० स्त्री०) प्राण धारण करना, हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार किसी नई बनी हुई मूर्ति को मन्दिर में स्थापित करते समय मन्त्रों को पढ़कर उसमें आरोपण करना।
प्राणप्रद–(सं० वि०) प्राणदाता शरीर का स्वास्थ्य तथा बल आदि बढ़ानेवाला
प्राणप्रिय–(सं० वि०) प्राण के समान प्यारा, अतिप्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी, प्रियतम।
प्राणबल्लभ–(हिं० पुं०) देखो प्राणवल्लभ।
प्राणभृत्–(सं०वि०) प्राण धारण करने वाला, (पुं०) विष्णु।
प्राणमय–(सं० वि०) प्राणसंयुक्त, जिसमें प्राण हो।
प्राणमय कोश–(सं०पुं०)वेदान्त के अनुसार पांच कोशों में से दूसरा कोश जो प्राण, अपान, व्यान, उदान, और समान पांचो प्राणो से बना हुआ माना जाता है।
प्राणयात्रा–(सं० स्त्री०) सांस का खींचना और छोड़ना वह व्यापार जिससे मनुष्य जीवित रहता है।
प्राणयोनि–(सं०पुं०)प्राणवायु, परमेश्वर।
प्राणरन्ध्र–(सं०नपुं०) नासिका, नाक।
प्राणरोध–(सं०पुं०) प्राणायाम।
प्राणवध–(सं०पुं०) जान से मार डालना।
प्राणवल्लभ–(सं० पुं०) अत्यन्त प्रिय, बहुत प्यारा, पति, स्वामी।
प्राणवायु–(सं० स्त्री०) प्राण, जीव।
प्राणव्यय–(सं० पुं०) प्राणनाश।
प्राणशरीर–(सं० पुं०) उपनिषदों के अनुसार एक सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है।
प्राणसंयम–(सं० पुं०) प्राणायाम।
प्राणसंशय, प्राणसङ्कट, प्राणसन्देह–(सं० पुं०) जीवन की आशङ्का।
प्राणसम–(सं०पुं०) प्राणों के समान।

प्राणसम्भूत–(सं॰पु॰) वायु, हवा।
प्राणसार–(स॰ वि॰) बलिष्ठ, ताकतवर।
प्राणहर–(सं॰वि॰)मारक,नाश करने वाला
प्राणहानि–(स॰स्त्री॰)वह अवस्था जिसमें प्राणों पर सकट हों, जानजोखिम।
प्राणहारी–(हिं॰ वि॰) प्राण लेने वाला।
प्राणघात–(स॰पु॰) पीड़ा, कष्ट, हत्या।
प्राणाधार, प्राणाधिक–(सं॰वि॰) प्राणों से अधिक प्रिय, अत्यन्त प्रिय, प्यारा।
प्राणाधिनाथ–(स॰पु॰) पति, स्वामी।
प्राणान्त–(स॰ पुं॰) प्राणनाश, मरण।
प्राणान्तक–(स॰वि॰) जान लेनेवाला।
प्राणाबाध–(सं॰ पुं॰) प्राणसशय, जानजोखिम।
प्राणायाम–(स॰ पुं॰) प्राण वायु गति विच्छेद कारक व्यापार भेद, योग के आठ अङ्गों में से एक जिसमें श्वास और प्रश्वास को यथाविधि अपने अधिकार में किया जाता है।
प्राणायामी–(स॰ वि॰) प्राणायाम करनेवाला।
प्राणिद्यूत–(स॰नपु॰) मेढा, तीतर, घोडे आदि जीवों की लड़ाई या दौड़ पर लगाई जाने वाली बाज़ी।
प्राणी–(हिं॰ पु॰) जीव, जन्तु, मनुष्य, व्यक्ति, पुरुष या स्त्री (वि॰) जिसमें प्राण हो।
प्राणेश,प्राणेश्वर–(स॰पु॰) पति, स्वामी, प्रेमी व्यक्ति, बहुत, प्यारा।
प्राणोपहार–(स॰पु॰) आहार, भोजन।
प्रात–(हिं॰ अव्य॰) सवेरे, तड़के।
प्रातः–(स॰पु॰) प्रभात, तड़का।
प्रात.कर्म–(स॰ पु॰) प्रातःकाल के समय किया जाने वाला कर्म, प्रातः कार्य।
प्रातःकाल–(स॰ पु॰) प्रभात काल, सवेरे का समय।
प्रात.कालीन–(स॰वि॰)प्रातःकाल सबधी।
प्रातःकृत्य–(स॰नपु॰) वह शास्त्रविहित कर्म जो प्रातःकाल किया जाता है।
प्रातःसन्ध्या–(स॰स्त्री॰) वह वैदिक अथवा तान्त्रिक उपासना जो प्रातःकाल की जाती है।
प्रातःस्नायी–(स॰ वि॰) प्रातःकाल स्नान करने वाला।
प्रातःस्मरण–(स॰ पु॰) प्रातःकाल के समय ईश्वर देवतादिके नामों का स्मरण
प्रातःस्मरणीय–(स॰ वि॰) जो प्रातःकाल के समय स्मरण करने योग्य हो।
प्रातनाथ–(हि॰ पु॰) सूर्य।
प्रातरभिवादन–(स॰ पु॰) प्रातःकाल का प्रणाम।
प्रातराश–(स॰पु॰)प्रातःकाल का जलपान, कलेवा।
प्रातर्भोजन–(स॰नपु॰) देखो प्रातराश।
प्रातस्त्रिवर्गा–(स॰ स्त्री॰) दुर्गा।
प्रातिकामी–(स॰पु॰) दुर्योधन के एक दूत का नाम, भृत्य, नौकर।
प्रातिज्ञ–(स॰ नपु॰) आलोचना का विषय।
प्रातिपक्ष–(स॰वि॰) विरुद्ध, प्रतिकूल।
प्रातिपद–(स॰वि॰) प्रतिपद सबधी।
प्रातिपदिक–(स॰वि॰) प्रतिपद तिथि में होने वाला, (पु॰ अग्नि) सस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो न धातु हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगाने से हुई हो–इसके अन्तर्गत ऐसे नाम,सर्वनाम, तद्धितान्त, कृदन्त और समासान्त पद हैं जिनमें कारक की विभक्तियाँ न लगाई गई हों।
प्रातिभ–(स॰वि॰)प्रतिभा युक्त (पु॰) एक प्रकार का विघ्न जो योगियों को उनकी योगक्रिया में होता है।
प्रातिभाव्य–(स॰ नपु॰) प्रतिभूका भाव, ज़मानत।
प्रातिरूप्य–(स॰नपु॰) प्रतिरूप का भाव, अनुरूप।
प्रातिलोमिक–(स॰वि॰) विपक्ष, विरुद्ध।
प्रातिवेश्यक–(स॰पु॰) प्रतिवेशी,पड़ोसी।
प्रातिशाख्य–(स॰नपु॰) वह ग्रन्थ जिसमें विभिन्न वेदों के स्वर, पद, सहिता आदि का निर्णय लिखा हुआ है।
प्रातिहार–(स॰पु॰) जादूगर, द्वारपाल।
प्रातिहार्य–(स॰नपु॰) इन्द्रजाल, माया।
प्रातीपिक–(स॰वि॰) विरुद्ध आचरण करने वाला।
प्रात्यक्ष–(स॰वि॰) प्रत्यक्ष सबधी।
प्रात्यहिक–(सं॰स्त्री॰) दैनिक, प्रतिदिन का
प्राथमिक–(स॰वि॰) प्रारभिक, जो पहले उत्पन्न हुआ हो।
प्राथम्य–(स॰नपु॰) प्रथमता, पहलापन।
प्रादुर्भाव–(स॰ पु॰) आविर्भाव, प्रकट होना, उत्पत्ति, विकाश।
प्रादुर्भूत–(स॰वि॰) प्रकटित, विकसित, उत्पन्न, निकला हुआ।
प्रादुर्भूत मनोभवा–(स॰ स्त्री॰) मध्या नायिका का एक भेद, यह तब कही जाती है जब इसके चित्त में काम का पूरा प्रादुर्भाव होता है और इसमें काम कला के सब चिह्न प्रगट होते हैं।
प्रादेश–(स॰ पु॰) तन्त्र के अनुसार तर्जनी और अगूठे के बीच का भाग, प्रदेश, स्थान।
प्रादेशिक–(स॰ वि॰) किसी एक देश का, प्रान्तिक, प्रसगानुसार, (पु॰) ज़मीदार, सूबेदार।
प्रादेशी–(स॰वि॰) विलेस्त भर का।
प्रादोष–(स॰वि॰) प्रदोष सबधी।
प्राधनिक–(स॰ पु॰) योद्धा, लड़ाका।
प्राधा–(स॰ स्त्री॰) दक्ष की एक कन्या का नाम, कश्यप की एक स्त्री का नाम।
प्राधान्य–(स॰ नपु॰) प्रधानता, मुख्यता, श्रेष्ठता।
प्राधीत–(स॰वि॰) अच्छी तरह पढा हुआ
प्राध्व–(स॰पु॰) लबी राह, प्रहर।
प्राध्वन–स॰पु॰) अच्छी सड़क।
प्राध्वर–(स॰पु॰) वृक्ष की शाखा।
प्रान–(हि॰पु॰) देखो प्राण।
प्रान्त–(स॰पु॰) अन्त, किनारा, दिशा, प्रदेश।
प्रान्तग–(स॰ वि॰) सीमा प्रदेश पर रहने वाला।
प्रान्तभूमि–(स॰ स्त्री॰) सोपान, सीढी, योग शास्त्र के अनुसार समाधि।
प्रान्तर–(स॰ नपु॰) वन, जगल, दो गाँव के बीच की भूमि, वृक्ष का खोखला अश।

प्रान्तिक–(स०वि०)प्रान्त सम्बन्धी, प्रान्तीय।
प्रांशु–(स०वि०) ऊँचा (पु०) विष्णु।
प्रापक–स०वि०) पाने वाला।
प्रापण–(स०नपुं०) ले आना, मिलना।
प्रापणिक–(स०पु०) माल बेंचने वाला।
प्रापति–(हिं० स्त्री०) देखो प्राप्ति।
प्रापना–(हि०क्रि०) प्राप्त होना, मिलना
प्राप्त–(स०वि०)लब्ध, उत्पन्न, पाया हुआ, मिला हुआ।
प्राप्तकाल–(स०पु०) कोई काम करने योग्य समय, उपयुक्त या उचित समय, मरण योग्य काल, विवाह योग्य उम्र (वि०) जिसका काल आ गया हो।
प्राप्तजीवन–(स० वि०) पुनर्जीवन, जिसकी नई ज़िन्दगी हुई हो।
प्राप्तदोष–(स० वि०) जिसने कोई अपराध किया हो।
प्राप्तबुद्धि–(स० वि०) बुद्धिमान्, चतुर, जो बेहोश होने पर फिर से होश में आया हो।
प्राप्त मनोरथ–(स०वि०) जिसकी वांछा पूरी हुई हो।
प्राप्त यौवन–स०वि०) जिसकी युवावस्था आ गई हो, जवान।
प्राप्त रूप–(स०वि०) पण्डित, रूपवान्।
प्राप्तव्य–(स०वि०) मिलने योग्य, प्राप्य।
प्राप्ति–(स०स्त्री०) उदय, धन की वृद्धि, लाभ, फायदा, प्रापण, मिलना, पहुँच, आय, आमदनी, भाग्य, प्रवेश, कामदेव की पत्नी, समिति, संघ, कंस की एक स्त्री का नाम, संगति, मेल, फलित ज्योतिष के अनुसार लग्न से ग्यारहवाँ स्थान, आठ प्रकार की सिद्धि में से एक, नाटक का सुखद उपसंहार, प्राणायाम की चार अवस्थाओं में से एक
प्राप्ति सम–(स०नपु०) न्याय दर्शन के अनुसार वह प्रत्यवस्थान जो हेतु और साध्य को ऐसी स्थिति में जब कि दोनों साध्य हों अवशिष्ट बतला कर दी जावे
प्राप्य–(स० वि०) प्राप्त करने योग्य, जहाँ तक पहुंच हो सकती हो, गम्य, मिलने योग्य।
प्राप्य कारी–(स०पु०) वह इन्द्रिय जो किसी विषय तक पहुँच कर मनुष्य को उस वस्तु का ज्ञान कराती है।
प्राबल्य–(स०नपु०) प्रबलता, प्रधानता।
प्राबोधक–(स० पु०) वह मनुष्य जो राजाओं को उनकी स्तुति सुनाकर जगाने के लिये नियुक्त हो।
प्राभव–(स० नपु०) प्रभुत्व, अधिकार, श्रेष्ठता।
प्राभृत–(स०नपु०) उपहार, नजर।
प्रामाणिक–(स०पु०) हैतुक, जो प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो, माननीय, मानने योग्य, शास्त्रसिद्ध, सत्य, ठीक (पु०) व्यापारियों का मुखिया।
प्रामाण्य–(स०नपु०) मानमर्यादा।
प्रामाद्य–(स० पु०) उन्माद, पागलपन, अड्डूसा।
प्रामिसरीनोट–(अ०पु०) एक प्रकार का सरकारी कागज़ या ऋणपत्र, हुंडी।
प्राय–(स० पु०) मरण, मौत, अवस्था, उम्र, समान, तुल्य, लगभग (वि०) जाने वाला।
प्रायः–(स०अव्य०)बहुधा, अकसर, विशेष कर, लगभग, करीब करीब।
प्रायण–(स० नपु०) एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, जन्मान्तर, पारण।
प्रायणान्त–(स०पु०) मृत्यु, मरण।
प्रायदर्शन–(स० नपु०)साधारण घटना जो प्रायः देखने में आती हो।
प्रायद्वीप–(स० पुं०) स्थल का वह भाग जो तीन ओर से पानी से घिरा हो तथा केवल एक ओर स्थल से मिला हो।
प्रायभव–(स० वि०) जो सामान्य रूप से होता हो।
प्रायवृत्त–(स०वि०) वर्तुलाकार, अण्डाकार।
प्रायशः–(स० अव्य०) सब प्रकार से, बहुधा।
प्रायश्चित–(स० नपु०), शास्त्रानुसार किया हुआ वह कृत्य जिससे शुद्ध होकर मनुष्य पापों से निर्मुक्त हो जाताहै।
प्रायश्चित्तिक–(सं० वि०) प्रायश्चित्त सम्बन्धी, प्रायश्चित्त के योग्य।
प्रायश्चित्ती–(स० वि०) प्रायश्चित्त करने वाला।
प्रायिक–(स०वि०) प्रायः होने वाला।
प्रायोगिक–(स०वि०) जिसका प्रयोग नित्य होता है।
प्रायोज्य–(स०वि०)प्रयोग में आनेवाला।
प्रायोपवेश–(स०पु०) अनशन व्रत।
प्रारब्ध–(स०नपु०) भाग्य, अदृष्ट, किस्मत (वि०) आरम्भ किया हुआ।
प्रारब्धी–(हिं०वि०) भाग्यवान्।
प्रारम्भ–(सं०पु०) आरम, शुरू, आदि।
प्रारम्भण–(स०नपु०) आरम्भ करना, शुरू करना।
प्रारम्भिक–(स०वि०) प्राथमिक, आरम्भ का, शुरू का।
प्रार्जयिता–(स०वि०)दान करनेवाला, दानी
प्रार्ण–(स० वि०) जिसके ऊपर बहुत सा कर्ज हो।
प्रार्थक–(स०वि०) प्रार्थना करने वाला।
प्रार्थना–(स०स्त्री०) याचना, मांगना, किसी से नम्रता पूर्वक कुछ कहना, विनती, अवरोध, घेरा डालना, एक तान्त्रिक मुद्रा का नाम।
प्रार्थनापत्र–(स० पु०) निवेदन पत्र, अर्जी
प्रार्थना समाज–(स० पुं०) ब्राह्म समाज की तरह का एक मत, इसके अनुयायी जात पात का भेद नहीं मानते और न मूर्ति पूजा करते हैं।
प्रार्थनीय–(स०वि०) प्रार्थना करने योग्य
प्रार्थयिता–(स०वि०)प्रार्थना करने वाला
प्रार्थित–(सं०वि०) याचित, मांगा हुआ।
प्रार्थी–(सं०वि०) निवेदक, प्रार्थना करने वाला, इच्छुक।
प्रालम्ब–(सं०नपु०,वह माला जो गरदन से छाती तक लटकी हो।
प्रलम्बिका–(स० स्त्री०) गले में पहरने का एक प्रकार का हार।
प्रालेय–(स०नपु०) हिम, तुषार, बर्फ।
प्रालेयरश्मि, प्रालेयांशु–(स०पुं०)चन्द्रमा
प्रावर–स०पुं०) प्राचार, चहार दीवारी।
प्रावरण–(स०नपुं०) आच्छादन, ढपना, ओढ़ने का वस्त्र, चादर।

प्रावार-(स०पु०) उत्तरीय वस्त्र,ओढना।
प्रावीण्य- स०नपु०) प्रवीणता, कुशलता
प्रावृट्-(स०पु०) वर्षा ऋतु।
प्रावृषा-,स०स्त्री०) वर्षाकाल।
प्रावृषेय-(स०वि०)वर्षाकाल में होनेवाला
प्रावेप-(स०वि०) कॉपने वाला।
प्रावेशिक-(स० वि०) प्रवेश करने में सहायता देने वाला।
प्राशन-(स०स्त्री०) भोजन,खाना,चखना।
प्राशनीय-(स०वि०) खाने योग्य।
प्राशित-(स०वि०) भक्षित, खाया हुआ।
प्राशी-(स०वि०) भक्षक, खाने वाला।
प्राश्निक-,स०वि०) प्रश्नकर्ता,पूछनेवाला
प्रास-(स०पु०) प्राचीन काल की एक प्रकार का भाला।
प्रासङ्ग-(स०पुं०) हल का जुआ, तराजू की डडी।
प्रासङ्गिक-,स०वि०) प्रसग सबधी, प्रसग का, प्रसग द्वारा प्राप्त।
प्रासच-(स०पु०) अति वृष्टि, बाढ।
प्रासाद-(स०पु०) देवता और राजाओ का घर, हर्म्य, महल, प्रासाद कुक्कुट-कबूतर, प्रासाद प्रस्तर-महल आदि की समतल छत, प्रासादशृङ्ग-राजभवन का शिखर।
प्रासादिक-(स० वि०) दयालु, कृपालु, सुन्दर।
प्रासेव-(स० पु०) घाडे की लगाम।
प्रास्प्रेक्टस-(अ०पु०) वह छपा हुआ पत्र जिसमें किसी बडे कार्य का विस्तृत वर्णन तथा कार्य प्रणाली आदि लिखी होती है।
प्राहारिक-(स०पु०) पहरुआ, चौकीदार।
प्राहुण-(स०पु०)पाहुन,अतिथि,मेहमान।
प्रिन्टर-(अ० पु०) किसी मुद्रालय में छापने का काम करने वाला, वह जो छपी हुई पुस्तक आदि की छपाई का ज़िम्मेदार हो।
प्रिन्टिङ्-(अ०स्त्री०) छापने काम, छपाई; प्रिन्टिङ् इङ्क-टाइप छापने की स्याही, प्रिंटिङ् प्रेस-हाथ से टाइप छापने की कल, प्रिन्टिङ मेशीन-अजन या बिजली से चलाई जाने वाली टाइप छापने की कल।
प्रिन्स्-(अ०पु०)राज कुमार, शाहज़ादा, प्रिन्स् आव् वेल्स्-इङ्लैन्ड के सबसे बडे राजकुमार की पदवी।
प्रिय-(स० पु०) भर्ता, स्वामी, पति, जामाता, दामाद, हित, भलाई, ईश्वर, ऋद्धि नामक औषधि (वि०) जिससे प्रेम हो, प्यारा, ललित, मनोहर।
प्रियंवद-(स०पु०) खेचर, एक प्रकार के गन्धर्व, (वि०) प्रिय वचन बोलने वाला
प्रियवदा-(स० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं, प्रियवादिनी।
प्रियकर्म-(स०नपु०) हित कार्य।
प्रियकाङ्क्षी-(स०वि०)भला चाहने वाला
प्रियकार-(सं०वि०) हितचिन्तक।
प्रियकृत्-(स० पु०) विष्णु का एक नाम
प्रियङ्कर- स०पु०)एक दानव का नाम, अश्वगन्ध, असगन्ध, सफेद भटकटैया।
प्रियङ्गु-(स०स्त्री०) कगनी नामक अन्न।
प्रिय जन-(स०पु०) प्रिय व्यक्ति।
प्रिय जात- स०वि०)अग्नि का एक नाम
प्रिय तनु-(स०वि०) सुन्दर शरीर वाला।
प्रियतम-स०पु०स्वामी, पति, (वि०) प्राणों से बढकर प्रिय।
प्रियतर-(स०वि०) जो दो मे से अधिक प्रिय हो।
प्रियता-(स०स्त्री०) प्रिय होने का भाव।
प्रियत्व-(स०नपु०) प्रेम, स्नेह, प्रियता।
प्रियदत्ता-(स०स्त्री०) पृथ्वी।
प्रियदर्शन-(स० वि०) जो देखने में सुन्दर हो, एक गन्धर्व का नाम।
प्रियदर्शी-(स० वि०) सब को प्रिय समझने वाला। (पुं०) राजा अशोक की एक उपाधि।
प्रियधाम-(स० नपु०) प्यारा स्थान।
प्रियपात्र-(स० वि०) जिसके साथ प्रेम किया जावे।
प्रियभाषण-(स० नपुं०) मधुर वचन बोलना।
प्रियभाषी-(स० वि०) मधुर वचन बोलने वाला।
प्रियरूप-(स० वि०) अति सुन्दर।
प्रियवक्ता-(स०वि०,प्रिय वचन बोलनेवाला
प्रियवचन-(स०नपु०) प्रिय वाक्य, मधुर वचन।
प्रियवर-(स०वि०)अति प्रिय, सबसे प्यारा
प्रियवाद्-(स० पु०) मधुर वचन, मीठी बोली।
प्रियवादी -(स०वि०) मीठा बोलने वाला
प्रियवादिनी-(स०स्त्री०) सारिका, मैना।
प्रियसख-(स०पु०)प्रियबन्धु,प्रिय का सखा
प्रियसन्देश-(सं० पु०) प्रिय सवाद, खुशखबरी।
प्रिया-(सं० स्त्री०) नारी, भार्या, पत्नी, जोरू, इलायची, चमेली, मदिरा,वार्ता, सन्देश, प्रेमिका, स्त्री, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पाच अक्षर होते हैं।
प्रियातिथि-(स० वि०) अतिथि का सत्कार करने वाला।
प्रियात्मा-(स०पु०) जिसका चित्त उदार और सरल हो।
प्रियाम्बु-स०पु०) आम का वृक्ष या फल
प्रियोदित-(स०पु०) मीठे वचन।
प्रिवी कौन्सिल-(अ०पु०)इङ्गलैंड मे वहाँ के राजा को परामर्श देने वाला परिषद् जिसका एक विभाग न्याय विभाग का सर्व प्रधान होता है।
प्री-(स०स्त्री०) प्रेम, प्रीति, कान्ति,चमक।
प्रीअक-(हि०पु०) कदम्ब, कदम।
प्रीत-(स०वि०) प्रसन्न, तृप्त, प्रीति युक्त, देखो प्रीति।
प्रीतात्मा-(स० पु०) शिव का नाम।
प्रीतम-(हिं०पु०) पति, स्वामी प्यारा।
प्रीति-(स० स्त्री०) तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, प्रेम, स्नेह, फलित ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से दूसरा योग।
प्रीतिकर, प्रीतिकारक-(स० वि०) प्रीति जनक, प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला।
प्रीतिद-(सं०पु०) विदूषक, भाँड, (वि०) सुखदायक।
प्रीतिदत्त-(स० नपु०) प्रीति पूर्वक दिया

हुआ दान।

प्रीतिपात्र-(स०पु०) जिसके साथ प्रीति की जाय, प्रेमभाजन, प्रेमी।

प्रीतिभोज-(स० पु०) वह भोजन या खानपान जिसमें मित्र और बन्धु-बान्धव प्रेम पूर्वक सम्मिलित हों।

प्रीतिभोज्य-(सं० वि०) प्रीति पूर्वक भोजनीय।

प्रीतिमत्-(स० वि०) प्रेम रखने वाला।

प्रीतिरीति-(स०स्त्री०)प्रेम का परस्पर सम्बध।

प्रीतिवर्धन-(स०पु०,विष्णु का एक नाम।

प्रीत्यर्थ-(स०अव्य०) प्रीति के कारण, प्रसन्न करने के लिये, वास्ते, लिये।

प्रूफ-(अ०पु०) प्रमाण, सबूत, किसी वस्तु का प्रभाव होने से पूरा बचाव, छपने वाली पुस्तक आदि का वह नमूना जो उसके छापने से पहिले अशुद्धता दूर करने के लिये तैयार किया जाता है।

प्रम-(अ०पु०) समुद्र की गहराई नापने का लट्टू के आकार का एक यन्त्र।

प्रेक्षक-(स० वि०) दर्शक, देखने वाला।

प्रेक्षण-(स०नपु०) चक्षु, आँख, देखने की क्रिया, दर्शन।

प्रेक्षणीय-(स०वि०) देखने योग्य।

प्रेक्षा-(स० स्त्री०) प्रज्ञा, बुद्धि, नाच तमाशा, शाखा, दृष्टि, निगाह, शोभा, किसी विषय की अच्छी बुरी बातों का विचार करना।

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह-(स०नपु०) मन्त्रणा गृह, राजाओं आदि का मन्त्रण करने का स्थान।

प्रेक्षित-(स०वि०) दृष्ट, देखा हुआ।

प्रेक्षी-(स०वि०) बुद्धिमान्, समझदार।

प्रेत-(स० पु०) मरा हुआ प्राणी, मृत मनुष्य, नरक में रहने वाला प्राणी, एक देवयोनि जो पिशाचों की तरह की होती है, वह कल्पित शरीर जो मृत्यु के बाद प्राप्त होती है।

प्रेतकर्म-(सं०नपु०) प्रेत कार्य, हिंदुओं में वह कर्म जो मृतक के दाह के बाद से सपिण्डीकरण तक किया जाता है।

प्रेतकार्य-(स०पु०) देखो प्रेतकर्म।

प्रेतगृह-(स०पु०)मुरदा जलाने का स्थान, श्मशान, मरघट।

प्रेतगेह-(हिं०पु०) देखो प्रेत गृह,मरघट।

प्रेतत्व-(स०नपु०) प्रेतता, प्रेत का भाव या धर्म।

प्रेतदाह-(स० पु०) मृतक को जलाने का कार्य।

प्रेतदेह-(स०पु०) पुराण के अनुसार मृतक का वह कल्पित शरीर जो मृत्यु समय से सपिण्डीकरण तक उसकी आत्मा को प्राप्त होता है।

प्रेतनी-(हि०स्त्री०)प्रेत की स्त्री,चुड़ैल,भूतनी

प्रेतयज्ञ-(स०नपु०) वह यज्ञ जिसके करने से प्रेतयोनि प्राप्त होती है।

प्रेतलोक-(स० पु०) यमपुरी।

प्रेतविधि-(स० पु०) मृतक का दाह आदि करना।

प्रेतशिला-(स०स्त्री०) गया की वह शिला जिस पर प्रेतों के उद्देश्य से पिण्डदान किया जाता है।

प्रेतशौच-(स० नपु०) मृत व्यक्ति के निमित्त शौच, मरने का अशौच।

प्रेतहार-(सं०पु०) मृत शरीर को उठाकर श्मशान पर ले आनेवाला।

प्रेता-(सं०स्त्री०)पिशाची, भगवती कात्यायनी का एक नाम।

प्रेताधिप-(सं०पुं०) प्रेताधिपति, यमराज।

प्रेतान्न-(स०नपु०) वह अन्न जो प्रेत के उद्देश्य से दिया जावे।

प्रेताशिनी-(स० स्त्री०) मृतकों को खाने वाली भगवती का एक नाम।

प्रेताशौच-(स०नपुं०) हिन्दुओं में सपिण्ड की मृत्यु के बाद होनेवाला अशौच जो ब्राह्मणों में दस, क्षत्रियों में बारह, वैश्यों में पन्द्रह और शूद्रों में तीस दिन होता है, मरणाशौच।

प्रेतास्थि-(स०नपु०)मृत व्यक्ति की हड्डी।

प्रेति-(स०पु०)अन्न, मरण, आगे, बढ़ती।

प्रेतिक-(स०पु०) मृत व्यक्ति, प्रेत।

प्रेतिनी-(हि०स्त्री०) पिशाचिनी, डाइन।

प्रेती-(हि०पु०) प्रेतपूजक, प्रेत की उपासना करने वाला।

प्रेतेश-(स०पु०) यमराज।

प्रेतोन्माद-(स०पु०,एक प्रकार का उन्माद या पागलपन जिसको लोग समझते हैं प्रेत के कोप से होता है।

प्रेत्य-(स०पु०) लोकान्तर, परलोक।

प्रेत्यभाव-(स०पु०) मरणान्तर पुनर्जन्म।

प्रेप्सु-(स०वि०) जो किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा करता हो।

प्रेम-(स०पु०नपु०) मित्रता, स्नेह, प्रीति, अनुराग प्यार, मोहब्बत माया और लोभ, स्त्री जाति और पुरुष जाति का पारस्परिक स्नेह जो बहुधा रूप, गुण, स्वभाव, सान्निध्य अथवा कामवासना के कारण होता है, एक अलङ्कार का नाम।

प्रेमकर्ता-(स०पु०)प्रेम करनेवाला, प्रेमी।

प्रेमकलह-(स०पु०) प्रेम के कारण हँसी दिल्लगी या झगड़ा करना।

प्रेमगर्विता-(स० स्त्री०) साहित्य में वह नायिका जिसको अपने पति के प्रेम का बड़ा अभिमान हो, जिसको इस बात का अभिमान हो कि मेरा पति मुझको बहुत चाहता है।

प्रेमनीर-(स०पु०) प्रेम के कारण आँखों में निकलने वाला आंसू, प्रेमाश्रु।

प्रेमपातन-(स० नपु०) प्रेम के आवेग में रोना।

प्रेमपात्र-(स० पु०) वह जिससे प्रेम किया जाय।

प्रेमपाश-(स० स्त्री०) प्रेम का फन्दा या जाल।

प्रेमपुत्तलिका-(स०स्त्री०)प्यारी स्त्री,भार्या।

प्रेमपुलक-(स० स्त्री०) प्रेम के कारण होने वाला रोमाञ्च।

प्रेमबन्ध-(स० पु०) गहरा प्रेम।

प्रेमभक्ति-(स० स्त्री०) श्रीकृष्ण की वह भक्ति जो बड़े प्रेम से की जाय।

प्रेमवारि-(स० नपु०) प्रेम के कारण निकलने वाला आँसू।

प्रेमा-(स० पु०) स्नेही, इन्द्र, वायु, उपजाति वृत्त का ग्यारहवां भेद।

प्रेमाक्षेप-(स०पु०) वह अलंकार जिसमें प्रेम का वर्णन करने ही में बाधा

दिखलाई जाती है।
प्रेमामृत-(सं०नपु०) प्रेमरूप सुधा।
प्रेमालाप-(सं०पु०) प्रेम पूर्वक वार्तालाप।
प्रेमालिङ्गन-(सं०पु०) प्रेम पूर्वक आलिंगन, नायक और नायिका का एक विशेष प्रकार का आलिंगन।
प्रेमाश्रु-(सं० नपु०) देखो प्रेमवारि।
प्रेमिक, प्रेमी-(सं० पु०) प्रेम करने वाला, वह जो प्रेम करता हो, आसक्त, आशिक।
प्रेममार्ग-(सं०पु०) वह मार्ग जो मनुष्य को सांसारिक विषयों में फँसाता है।
प्रेय-(सं० पु०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई एक भाव किसी दूसरे भाव का अथवा स्थायी का अंग होता है।
प्रेयर-(अं० स्त्री०) स्तुति ईश्वरवन्दना।
प्रेयस्-(सं०पु०) पति, स्वामी, वल्लभ, प्रियतम।
प्रेयसी-(सं०स्त्री०) प्रियतमा, प्यारी स्त्री।
प्रेयस्ता-(सं० स्त्री०) प्रियता।
प्रेरक-(सं० वि०) प्रेरणा करने वाला, किसी काम में प्रवृत्त करने वाला।
प्रेरणा-(सं० स्त्री०) दबाव डालना, उत्तेजना देना, दबाव, जोर।
प्रेरणार्थक क्रिया-(सं० स्त्री०) किसी क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह कर्ता से किसी के प्रेरणा द्वारा हुआ है यथा 'पढ़ना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप 'पढ़वाना' है।
प्रेरणीय-(सं० वि०) प्रेषणीय, भेजने योग्य, प्रेरणा करने योग्य।
प्रेरयिता-(सं०पु०) प्रेरणा करने वाला, उभाड़ने वाला, आज्ञा करने वाला, भेजने वाला।
प्रेरित-(सं० वि०) प्रेषित, भेजा हुआ, उत्तेजित, उभाड़ा हुआ धक्का दिया हुआ
प्रेषक-(सं०वि०) प्रेरक, भेजने वाला।
प्रेषण-(सं०नपु०) भेजना, रवाना करना।
प्रेषयिता-(हिं० वि०) भेजने वाला।
प्रेषित-(सं० वि०) प्रेरणा किया हुआ, भेजा हुआ, (नपु०) स्वर साधन की एक प्रणाली।
प्रेषितव्य-(सं०वि०) भेजने योग्य।
प्रेष्य-(सं०पु०) दास, सेवक, दूत।
प्रेष्यता-(सं०स्त्री०) दासत्व, दूतत्व।
प्रेस-(अं० पु०) वह यन्त्र जिसमें कोई वस्तु दबाई या कसी जावे, छापने की कल, छापाखाना, प्रेस एक्ट-वह कानून जिसके द्वारा छापेखाने के अधिकारियों की स्वतन्त्रता आदि का नियन्त्रण होता है, प्रेसमैन्-प्रेस पर कागज़ छापने वाला।
प्रेसिडेन्ट्-(अं० पु०) किसी सभा का प्रधान व्यक्ति, सभापति।
प्रेसिडेन्सी-(अं०स्त्री०) सभापति का पद, शासन की सुविधा के लिये बृटिश भारत में प्रदेशों का विभाग।
प्रोक्त-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
प्रोक्षण-(सं० नपु०) सेचन, पानी छिड़कना, पानी का छींटा, विवाह की एक रीति, परिछन।
प्रोक्षणी-(सं०स्त्री०) कुश की बनी हुई मुद्रिका।
प्रोक्षित-(सं० वि०) सींचा हुआ, बलिदान किया हुआ, निहत, मारा हुआ।
प्रोग्राम्-(अं० पु०) कार्यक्रम, कार्यक्रम सूचक पत्र।
प्रोज्झित-सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ।
प्रोटेस्टेन्ट्-(अं०पु०) ईसाइयों का एक सम्प्रदाय।
प्रोत-(सं०नपु०) वस्त्र, कपड़ा (वि०) सिला हुआ, अच्छी तरह गुथा हुआ, गांठ दिया हुआ।
प्रोत्कर्ष-(सं० नपु०) श्रेष्ठता, उत्तमता।
प्रोत्खात-(सं०वि०) गड्ढा किया हुआ।
प्रोत्तुङ्ग-(सं०वि०) बहुत ऊंचा।
प्रोत्तेजित-(सं०वि०) अत्यन्त उभाड़ा हुआ
प्रोत्फुल्ल-(सं० वि०) अच्छी तरह खिला हुआ।
प्रोत्साह-(सं० पु०) बहुत उत्साह या उमंग।
प्रोत्साहक-(सं०पु०) हिम्मत बाँधने वाला।
प्रोत्साहन-(सं० नपु०) अधिक उत्साह बढ़ाना, हिम्मत बँधाना, नाटक में एक अलंकार।
प्रोत्साहित-(सं०वि०) उत्तेजित, उत्साह बढ़ाया हुआ, प्रवर्तित, ठाना हुआ।
प्रोथ-(सं०पु०) कमर, गर्भाशय, पथिक, चिथड़ा (वि०) स्थापित रक्खा हुआ, प्रसिद्ध।
प्रोथित-(सं० वि०) भूमि के भीतर गाड़ा हुआ।
प्रपोज़-(अं०क्रि०) प्रस्ताव करना।
प्रपोज़ल्-(अं०पु०) प्रस्ताव।
प्रोप्राइटर-(अं०पु०) स्वामी, मालिक।
प्रोफेसर-(अं० पु०) विश्वविद्यालय आदि का अध्यापक, किसी विषय का बड़ा पण्डित।
प्रोबेशन्-(अं० पु०) किसी कार्य करने की योग्यता के विषय में जाँच।
प्रोबेशनरी-(अं०वि०) योग्यता की जाँच के संबंध रखने वाला, जो इस शर्त पर नियुक्त किया जावे कि यदि सन्तोषजनक कार्य करेगा तो स्थायी रूप में नियुक्त कर लिया जाता।
प्रोमोशन्-(अं० पु०) किसी पदाधिकारी का अपने पद से ऊँचे पद पर नियुक्त किया जाना, तरक्की।
प्रोष-(सं०पु०) अति सन्ताप, बड़ा दुःख।
प्रोषित-(सं० वि०) प्रवासी, जो विदेश गया हो।
प्रोषित नायक-(सं० पु०) वह नायक जो विदेश में अपनी नायिका के वियोग से विकल हो।
प्रोषितपतिका-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति के विदेश जाने से दुःखित हो।
प्रोषितप्रेयसी, प्रोषितभर्तृका-(सं०पु०) वह स्त्री जिसका स्वामी परदेश में रहता हो।
प्रोषितभार्या नायक-(सं० स्त्री०) वह नायक जिसकी नायिका विदेश में रहती हो।
प्रोष्यत्पत्नी नायक-(सं०स्त्री०) वह नायक जिसकी नायिका परदेश जाने वाली हो।

प्रोष्ठपद–(सं० पुं०) भादों का महीना, पूर्वाभाद्रपद और उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र।
प्रोष्ठपदी–(सं० पुं०) भाद्रपद मास की पूर्णिमा।
प्रोष्ण–(सं०पुं०) अति उष्ण, बहुत गरम।
प्रोह–(सं० स्त्री०) पर्व-सन्धिस्थान, (वि०) चतुर।
प्रौढ़–(सं० वि०) वर्धित, अच्छी तरह बढ़ा हुआ, पुष्ट, मजबूत, प्रगल्भ, निपुण, चतुर, होशियार, युवा, जवान, पुरातन, गंभीर, गूढ़, (पुं०) चौबीस अक्षर का एक तान्त्रिक मन्त्र।
प्रौढता–(सं०स्त्री०)प्रौढ का भाव, प्रौढत्व।
प्रौढत्व–(सं० नपुं०) देखो प्रौढता, प्रौढावस्था।
प्रौढा–(सं०स्त्री०) अधिक वय वाली स्त्री, तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की स्त्री, वह स्त्री जिसको जवान हुए बहुत दिन हो चुके हों, कामकला भली भाँति जानने वाली स्त्री।
प्रौढा अधीरा–(सं० स्त्री०) वह प्रौढा नायिका जो अपने नायक में विलास सूचक चिह्न देख कर प्रत्यक्ष रूप में क्रोध दिखलावे।
प्रौढाधीरा–(सं०स्त्री०) वह प्रौढा नायिका जो अपने नायक में विलास सूचक चिह्न देख कर व्यंग रूप से क्रोध दिखलावे।
प्रौढाधीराधीरा–(सं०स्त्री०) वह नायिका जो अपने नायक में परस्त्रीगमन के चिह्न देख कर कुछ व्यंग और कुछ प्रत्यक्ष क्रोध दिखलावे।
प्रौढि–(सं० स्त्री०) प्रौढता, धृष्टता, वादा विवाद।
प्रौढोक्ति–(सं०स्त्री०) गूढ रचना, किसी बात को खूब बढा कर कहना; वह अलंकार जिसमें उत्कर्ष का हेतु न रहने पर कल्पित किया जाता है।
प्रौण–(सं०वि०) निपुण, चतुर, होशियार।
प्रौष्ठपदी–(सं० स्त्री०) भाद्रपद मास की पूर्णिमा।
प्रौह–(सं० पुं०) यथाविधि विवाह।
प्लक्ष–(सं० पुं०) पाकर का वृक्ष, पीपल का पेड़, सात कल्पित द्वीपों में से एक।
प्लक्षादेवी–(सं० स्त्री०) सरस्वती नदी।
प्लव–(सं० नपुं०) नागरमोथा, एक प्रकार की सुगंधित घास, प्लवन, बाढ, बन्दर, शब्द, आवाज़, वापस आना, लौटना, साठ संवत्सरों में से एक, स्नान करना, नहाना, तैरना, जल में तैरने वाली चिड़िया (वि०) तैरता हुआ।
प्लवग–(सं०पुं०) बन्दर, मेढक, हरिण (वि०) तैरने वाला।
प्लवङ्ग–(सं० पुं०) बन्दर, हरिन, साठ संवत्सरों में से एक।
प्लवङ्गम–(सं०पुं०) बन्दर, एक प्रकार का मातृक छन्द (वि०) कूद कूद कर चलने वाला।
प्लवन–(सं० पुं०) उछलना, कूदना, तैरना, उतार।
प्लवर्ग–(सं०पुं०) अग्नि, जलपक्षी।
प्लांचेट–(अं०पुं०) मेस्मेरिज़िम की एक प्रकार की पान के आकार की तख़्ती जिसके नीचे पहिया होती है और एक पेंसिल लगी होती है।
प्लाट्–(अं० पुं०) ज़मीन का टुकड़ा, षड्यंत्र, मनसूबा।
प्लाटफार्म–(हिं० पुं०) देखो प्लेटफ़ार्म।
प्लावगा–(सं०पुं०) मर्कट, बन्दर।
प्लावन–(सं० नपुं०) मज्जन, संतरण, तैरना, बाढ, किसी पदार्थ को अच्छी तरह से धोना।
प्लावित–(सं० वि०) जल में डूबा हुआ।
प्लास्टर्–(अं० पुं०) लेप, पलस्तर।
प्लीडर–(अं० पुं०) वकील, वह जो वकालत करता हो।
प्लीहा–(सं० पुं०) पेट की तिल्ली; प्लीहाकर्ण–कान का एक रोग; प्लीहोदर प्लीहा का रोग।
प्लुष्टि–(सं०पुं०) स्नेह, प्रेम, अग्नि।
प्लुत–(सं०नपुं०) घोड़े की टेढी चाल जिसको पोई कहते हैं, स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्रा का होता है; प्लुतगति–शशक, खरहा।
प्लुष–(सं०पुं०) स्नेह, प्रेम, दाह।
प्लेट्–(अं०पुं०) किसी धातु का पत्तर या टुकड़ा।
प्लेटफ़ार्म–(अं० पुं०) समतल चबूतरा, रेलवे स्टेशन पर बना हुआ ऊँचा चबूतरा जिसमें सटकर रेलगाड़ी खड़ी होती है।

फ

फ-हिन्दी वर्णमाला का बाईसवा व्यजन तथा पवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है-इसके उच्चारण करने में जीभ का अगला भाग ओठों से लगता है।

फ-(स० नपु०) रूखा वचन, फुफकार, निष्फल भाषण, जृम्भा, जमाई,फललाभ।

फंक-(हिं०स्त्री०) देखो फाक।

फंका-(हिं० पु०) सूखे दाने या बुकनी की उतनी मात्रा जितनी एक बार मुह में फाकी जा सके, खण्ड, टुकड़ा।

फंकी-(स० स्त्री०) सूखी फाँकने की चूर्ण आदि की पुड़िया, फाकने की दवा, उतनी दवा जितनी एक बार में फाँकी जा सके।

फंग-(हि०पु०) बन्धन, फन्दा, अनुराग, राग।

फंद-(हिं०पु०) बधन, फन्दा, दुःख, कष्ट, गूज, मर्म, रहस्य, जाल, छल, धोखा, नथिये की काँटी फसाने का फन्दा।

फंदना-(हिं० क्रि०) फन्दे में पड़ना, फँसना, उल्लघन करना, फाँदना।

फंदरा-(हिं० पु०) देखो फदा।

फदवार-(हिं०वि०) फदा लगाने वाला।

फंदा-(हि० पु०) किसी वस्तु या प्राणी को फँसाने के लिये बनाया हुआ रस्सी आदि का घेरा, कष्ट, दुःख, पाश, फाँस, फंदा लगाना-किसी को फँसाने के लिये जाल फैलाना, धोखा देना, फंदे में पड़ना-धोखे में पड़ना।

फंदाना-(हि०क्रि०) जाल में फँसाना, फन्दे में लाना, उछालना, कुदाना।

फँफाना-(हिं० क्रि०) शब्द को उच्चारण करती समय जीभ काँपना, हकलाना, खौलते हुए दूध आदि का ऊपर को उठना।

फँसना-(हि०क्रि०) बन्धन में पड़ना, पकड़ा जाना, उलझना, अटकना।

फँसनी-(हिं० स्त्री०) कसेरे की एक प्रकार की हथौड़ी।

फँसाना-(हि० क्रि०) वशीभूत करना, अपने वश में लाना, अटकाना, बझाना।

फँसिहारा-(हि० वि०) फँसाने वाला।

फक-(हि०वि०) स्वच्छ, सफेद, बदरग, (स्त्री०) दो मिली हुई वस्तु का अलग होना, रंग फक पडना-घबड़ाहट से चेहरे का रग फीका पड़ जाना।

फकड़ी-(हि०स्त्री०) दुर्गति,दुर्दशा,आपत्ति।

फक़त-(अ० वि०) पर्याप्त, बस,केवल, सिर्फ।

फ़कीर-(अ० पु०) भिक्षुक, भीख माँगने-वाला, भिखमगा, निर्धन मनुष्य,ससार-त्यागी, साधु,मुसलमान भिक्षुक सम्प्रदाय।

फ़कीरी-(हि०स्त्री०) भिखमगापन, निर्धनता, साधुता।

फक्किका-(स० स्त्री०) अनुचित व्यवहार, धोखेबाज़ी, जो बात शास्त्र के कठिन स्थल को स्पष्ट करने के लिये पूर्व पक्ष में कही जाय, कूट प्रश्न।

फ़खर-(फा०पु०) गौरव,अभिमान,फख।

फग-(हि० पु०) देखो फग, बन्धन।

फगुआ-(हिं० पु०) होली के उत्सव का दिन, फागुन के महीने में लोगों का वह आमोद प्रमोद जो वसन्त ऋतु के उपलक्ष में मनाया जाता है इसमें लोग आपस में रग डालते हैं तथा अनेक प्रकार के अश्लील गाने गाते हैं, फाग के उपलक्ष में दी जानेवाली वस्तु, अश्लील गीत जो फागुन के महीने में गाई जाती है।

फगुआना-(हि० क्रि०) फागुन के महीने में किसी के ऊपर रग छोड़ना अथवा उसको सुनाकर अश्लील गीत गाना।

फगुनहट-(हि० स्त्री०) फागुन में चलने वाली तेज़ हवा जो गर्द से भरी होती है, फागुन में होनेवाली वर्षा।

फगुनियाँ-(हि०पु०)त्रिसन्धि नाम का फूल।

फगुहारा-(हिं० पु०) फगुआ गाने वाला पुरुष, वह जो फागुन में होली खेलने के लिये किसी के घर जावे।

फ़जर-(अ० स्त्री०) प्रातःकाल, सवेरा

फजल-अ० पु०) कृपा, अनुग्रह मेहरबानी।

फजिर-(हि०स्त्री०) देखो फजर।

फजिल-(हि०पु०) देखो फजल।

फज़ीलत-(अ०स्त्री०) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता

फजीहत-(अ०स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा।

फजीहती-(हि०स्त्री०) देखो फजीहत।

फ़ज़ूल-(अ० वि०) व्यर्थ, निरर्थक, बेफायदा, फजूल खर्च-अपव्यय, निरर्थक व्यय करने वाला फ़जूलखर्ची-अपव्यय (बेकार खर्च) करना।

फञ्जिका-(स०स्त्री०) भगरैया, जवासा।

फट्-(स०अव्य०) तन्त्रोक्त अस्त्र नामक मन्त्र भेद जो आवाहन, प्रोक्षण आदि में प्रयोग होता है।

फट-(स० पु०) फणा, फन, पाखण्ड, धोखा, (हि०स्त्री०) किसी पतली हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द।

फटक-(हि० पु०)स्फटिक, बिल्लौर पत्थर, (हिं०अव्य०)तत्क्षण, झटपट।

फटकन-(हि० स्त्री०) अन्न की भूसी आदि जो फटक कर निकाली जाय।

फटकना-(हि० क्रि०) फटफट शब्द करना, सूप पर अन्न आदि को हिलाकर साफ करना, फेंकना, पटकना,चलाना, पहुँचाना, अलग होना, हाथ पैर हिलाना, तड़फड़ाना, श्रम करना, हाथ पैर पटकना, परखना, जाचना, फटके से रूई धुनना।

फटकरी-(हि० स्त्री०) देखो फिटकरी।

फटका-(हि०पु०) धुनिये की धुकनी, तड़फड़ाहट, गुणहीन कविता, तुकबन्दी, एक प्रकार की बलुई मिट्टी, चिड़ियों को उड़ाने के लिये पेड़ पर बधी हुई लकड़ी जिसकी रस्सी खींचने और ढीली करने से उसमें से फटफट शब्द होता है।

फटकाना-(हि० क्रि०) फटकने का काम

दूसरे से कराना, फेंकना, अलग करना

फटकार-(हिं०स्त्री०) झिड़की, दुतकार, शाप , देखो फिटकार ।

फटकारना-(हिं० क्रि०) झटका देकर फेंकना, शस्त्र आदि चलाना, अलग करना, दूर करना, छितराना, कपड़े को पटक कर धोना, किसी मिली हुई वस्तु को इस प्रकार से हिलाना कि वह छितरा जावे, लाभ उठाना, लेना, किसी को कड़ी बात कहकर चुप कर देना ।

फटक्रिया-(हिं०पु०) एक प्रकार का विष

फटकी-(सं०स्त्री०) फिटकरी (हिं०स्त्री०) बहेलियों की चिपटी टोकरी जिसमें वे चिड़ियों को बन्द करते हैं ।

फटना-(हिं० क्रि०) आघात लगने पर किसी वस्तु का टूटना या उसमें दरार पड़ना, किसी वस्तु का बीच का भाग कटकर अलग हो जाना, किसी पदार्थ का बीच में से कटकर छिन्न भिन्न होना, किसी बात की अधिकता होना, अधिक पीड़ा होना, पृथक् होना, अलग होना, किसी द्रव पदार्थ में ऐसा विकार होना कि उसमें का सार भाग और पानी अलग हो जावे , छाती फटना-असह्य दुःख पहुँचना, मन (चित्त) का फटना-सबंध त्याग देना , फट पड़ना-सहसा पहुँच जाना ।

फटफट-(हिं० स्त्री०) फटफट शब्द, वृथा की बकवाद, जूते आदि के पटकने का शब्द ।

फटफटाना-(हिं०क्रि०) फट फट शब्द होना, टक्कर मारना, इधर उधर फिरना, प्रयास करना, व्यर्थ बकवाद करना, हिलाकर फट फट शब्द करना या होना ।

फटा-(सं०स्त्री०)सर्प का फन, दम्भ,घमंड, छल धोखा (हिं० पु०) छिद्र, छेद, **किसीके फटे में पाँव डालना**-किसीके संकट को अपने ऊपर ले लेना ।

फटिक-(हिं० पु०) स्फटिक, बिल्लौर, संगमरमर पत्थर ।

फटिका-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की शराब ।

फटिकारी-(सं० स्त्री०) फिटकरी ।

फट्ठा-(हिं० पु०) चिरे हुए बाँस की छड़, फलटा ।

फट्ठी-(हिं०स्त्री०) बाँस की चिरी हुई पतली छड़ ।

फड़-(हिं०स्त्री०) जुआ खेलने की एक रीति, जुए का दाँव जिस पर जुआरी बाजी लगाकर जुआ खेलते हैं, पक्ष,दल, जुए का अड्डा, वह स्थान जहां दुकानदार बैठकर माल खरीदता या बेंचता है, वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है, चरख, गाड़ी का हरसा, लकड़ी का मोटा चिरा हुआ बल्ला ।

फड़क, फड़कन-(हिं०स्त्री०) फड़कने की क्रिया या भाव, फड़फड़ाहट, धड़कन, उत्सुकता, लालसा ।

फड़कना-(हिं०क्रि०) फड़फड़ करना, फड़फड़ाना, हिलना डोलना, उद्यत होना, गति होना, हिलना डोलना, तड़फड़ाना, नीचे ऊपर या इधर उधर बारबार हिलना, किसी अंग में गति होना, पक्षियों का पर हिलाना, फड़क उठना-प्रसन्न होना, **बोटी फड़कना**-अति चंचल होना ।

फड़काना-(हिं०क्रि०) विचलित करना, हिलाना, उत्सुक बनाना,उमंग दिलाना ।

फड़नवीस-(हिं० पु०) महाराष्ट्र राज कर्मचारी का एक विशेष पद ।

फड़फड़ाना-(हिं० क्रि०) फड़फड़ शब्द उत्पन्न करना या होना, घबड़ाना, उत्सुक होना, तड़फड़ाना ।

फड़िङ्गा-(सं०स्त्री०) झींगुर, फतिंगा ।

फड़बाज, फड़िया-(हिं०पु०) वह पुरुष जो लोगों को अपने घर जुआ खेलाता है।

फड़ी-(हिं०स्त्री०) ईंटों की ढेर ।

फड़ोलना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को उलटना पुलटना या इधर उधर करना ।

फण-(सं० पु०) साँप का फन, रस्सी का फन्दा, मुट्ठी, नाव का ऊपरी अगला भाग ।

फणकर, फणधर, फणभृत् , फणवत्-(सं०पु०) सर्प, साँप ।

फणा-(सं०स्त्री०) सर्प का फन ।

फणाकर, फणाधर, फणाभर-(सं०पु०) सर्प, साँप ।

फणि-(सं०पु०) विष ।

फणिक-(हिं०पु०) नाग, सर्प ।

फणिकेशर- (सं० नपु०) नागकेसर ।

फणिचम्पक-(सं० पु०) जंगली चम्पा ।

फणिज्जा-(सं०स्त्री०)एक प्रकार की तुलसी जिसकी पत्तियां बहुत छोटी होती हैं ।

फणितल्पग-(सं० पु०) भगवान् विष्णु ।

फणिपति, फणिपात-(सं०पु०) देखो फणीन्द्र ।

फणिप्रिय-(सं०पु०) वायु, हवा ।

फणि फेन-(सं०पु०) अहिफेन, अफीम ।

फणिभुज-(सं०पु०) पन्नगाशन, गरुड़ ।

फणि मुक्ता-(सं०स्त्री०) साँप की मणि ।

फणि मुख-(सं० नपु०) चोर की सेन लगाने की सबरी ।

फणिलता, फणिवल्ली-(सं० स्त्री०) नागवल्ली, पान ।

फणीन्द्र, फणीश-(सं०पु०) शेष नाग, वासुकि, बड़ा साँप ।

फणी-(हिं०पु०) सर्प, साँप ।

फतवा-(अं० पु०) वह व्यवस्था जो मुसलमानों के आचार्य या मौलवी मुसलमानी धर्मशास्त्र के अनुसार किसी कर्म के अनुकूल या प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं ।

फतह-(सं०स्त्री०) विजय, जीत, सफलता, फतहमन्द-जिसकी जीत हुई हो ।

फतिंगा-(हिं०पु०) एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा ।

फतीलसोज़-(फा० पु०) पीतल या किसी धातु की बनी हुई दीवट, चिरागदान ।

फ़तीला-(अ० पु०) जरदोजी का काम करने वालों की लकड़ी की तीली ।

फतूर-(अ० पु०) दोष, विकार, उपद्रव, हानि, विघ्न, बाधा, नुकसान ।

फ़तूरिया-(अ०वि०) उत्पात करने वाला, उपद्रवी ।

फतूह–(अ० स्त्री०) विजय, जीत, लूट का माल, वह धन जो लड़ाई जीतने पर प्राप्त हो।
फ़तूही–(अ० स्त्री०) बिना बाँह की कुरती, बँहकटी, सलूका, विजय या लूट का धन।
फते–(हिं० स्त्री०) देखो फतह।
फतेह–(अ० स्त्री०) विजय, जीत।
फदकना–(हिं० क्रि०) फदफद शब्द करना, खदबदाना, देखो फुदकना।
फदका–(हिं० पुं०) गुड़ का पाग जो बहुत गाढ़ा न हुआ हो।
फन–(हिं० पु०) साँप का फैलाया हुआ सिर, फण।
फ़न–(फा० पु०) गुण, खूबी, दस्तकारी, विद्या, मक्कारी, ठगने का ढग।
फनकना–(हिं० क्रि०) सनसनाते हुए हवा में हिलना, फनफनाना।
फनकार–(हिं० स्त्री०) फनफन होने का शब्द, वैसा शब्द जैसा साँप के फुफकारने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न होता है।
फनगना–(हिं० क्रि०) पौधों में नये नये अकुर निकलना।
फनगा–(हिं० पु०) देखो फतिंगा।
फनना–(हिं० क्रि०) कार्य का आरंभ होना।
फनफनाना–(हिं० क्रि०) फनफन शब्द उत्पन्न करना, चचलता के कारण इधर उधर हिलना।
फनस–(हिं० पुं०) कटहल।
फनिधर–(हिं० पु०) सर्प, साँप।
फनिपति–(हिं० पु०) फणिपति।
फना–(अ० स्त्री०) नाश, बरबादी।
फनिंग–(हिं० पु०) देखो फणीन्द्र, सर्प, साप।
फनिंद–(हिं० पु०) देखो फणीन्द्र।
फनि–(हिं० पु०) देखो फण, फणी।
फनूस–(हिं० पु०) देखो फानूस।
फन्नी–(हिं० स्त्री०) लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली वस्तु को दृढ़ करने के लिये ठोंका जाता है, जोलाहो का एक प्रकार का कघी की तरह का औजार।
फफदना–(हिं० क्रि०) किसी गीले पदार्थ का बढकर फैलना, बढना।
फफसा–(हिं० पु०) फुसफुस, फेफड़ा।
फफूंदी–(हिं० स्त्री०) काई की तरह की सफेद तह जो बरसात के दिनो में फल, लकड़ी आदि पर लग जाती है, स्त्रियों की साड़ी का बधन, नीवी।
फफोर–(हिं० पु०) एक प्रकार का जगली प्याज।
फफोला–(हिं० पु०) आग में जलने से चमडे पर का पोला उभाड़ जिसके भीतर पानी भर जाता है, छाला, दिल के फफोले फोड़ना–अपने चित्त का रोष प्रगट करना।
फबकना–(हिं० क्रि०) मोटा होना।
फबती–(हिं० स्त्री०) समय के अनुकूल बात, हँसी की बात जो किसी पर घटती हो, चुटकी, व्यग, फबती उड़ाना–हँसी उड़ाना, फबती कहना–हँसी उड़ाना।
फबन–(हिं० स्त्री०) सुन्दरता, शोभा, छवि।
फबना–(हिं० क्रि०) उचित स्थान पर रखना, सुन्दर या भला जान पड़ना, ऐसे स्थान पर रखना या लगाना जहाँ अच्छा जान पडे।
फबि–(हिं० स्त्री०) देखो फबन,
फबीला–(हिं० वि०) जो भला जान पड़ता हो, सुन्दर शोभा देने वाला।
फम्फरा–(स० पु०) सन्निपात रोग।
फर–(स० नपुं०) फलक, सामना, मोकाबला।
फरक–(हिं० स्त्री०) फरकने का भाव या क्रिया, फुरती से उछलने कूदने की चेष्टा।
फ़रक़–(अ० पु०) दो वस्तुओं के बीच का अन्तर, दूरी, कमी, कसर, पार्थक्य, अलगाव, भेद, अन्तर, परायापन।
फरकन–(हिं० पुं०) फड़कने का भाव या क्रिया।
फरकना–(हिं० क्रि०) फड़कना, उड़ना, उमड़ना, आप से आप बाहर आना।
फरका–(हिं० पु०) छप्पर जो अलग से छाकर बडेर पर चढ़ाया जाता है, द्वार पर लगाने का टट्टर, बडेर की एक ओर की छाजन, पल्ला।
फरकाना–(हिं० क्रि०) सचालित करना, हिलाना, बारबार हिलाना, फड़फड़ाना, अलग करना।
फरकी–(हिं० स्त्री०) बाँस की पतली तीली जिसमें लासा लगाकर चिड़ीमार चिड़ियों को फँसाता है, दीवार में खडे बल रखने के पत्थर।
फरकीला–(हिं० पु०) देखो फड़कीला।
फरचा–(हिं० वि०) जो जूठा न हो, शुद्ध, पवित्र।
फरजद–(फा० पु०) पुत्र, बेटा, लड़का।
फ़रज़िंद–(हिं० पु०) देखो फरजद।
फरजी–(फा० पु०) शतरज का एक मोहरा जिसको रानी या वज़ीर भी कहते हैं (वि०) नकली, बनावटी, कल्पित, फरजीबंद–शतरज के खेल का वह योग जिसमें फरज़ी किसी प्यादे के बल पर विपक्ष के बादशाह को हरा देता है।
फरद–(अ० स्त्री०) वस्तुओं की सूची आदि जो याद रखने के लिये किसी कागज़ पर अलग लिखी गई हो, एक प्रकार का लक्का कबूतर, एक प्रकार का पहाड़ी पक्षी, वह कविता जिसमें केवल दो पद रहते हैं, रज़ाई या दुलाई का उपरी पल्ला, एक साथ काम में आने वाले कपड़ो के जोड़ों में से एक कपड़ा (वि०) अनुपम, बेजोड़।
फरना–(हिं० क्रि०) देखो फलना।
फरफंद–(हिं० पु०) नखरा, चोचला, दाँवपेंच, छल कपट।
फरफर–(हिं० पु०) किसी पदार्थ के उड़ने या फड़फड़ाने से उत्पन्न शब्द।
फरफराना–(हिं० क्रि०) देखो फड़फड़ाना
फरफुंदा–(हिं० पु०) देखो फतिंगा।
फरमाबरदार–(फा० वि०) आज्ञाकारी, हुक्म मानने वाला।
फरमा–(अं० पु०) किसी चीज़ में ढालने का साचा, ढाँचा, डौल, लकड़ी आदि

का बना हुआ ढाँचा जिसपर रखकर मोची जूता बनाते हैं, कागज़ का पूरा तख्ता जो प्रेस में एक बार में छापा जाता है।
फ़रमाइश-(फा० स्त्री०) वह आज्ञा जो कोई चीज लाने या बनाने आदि के लिये दी जाय।
फ़रमाइशी-(फा० वि०) विशेष रूप से आज्ञा देकर मँगाया या तैयार कराया हुआ।
फ़रमान-(फा० पु०) अनुशासन पत्र, राजा का आज्ञापत्र।
फ़रमाना-(फा०क्रि०) आज्ञा देना, हुक्म देना, यह शब्द आदर सूचित करने के लिये प्रयोग किया जाता है।
फ़रयाद-(हि०स्त्री०) देखो फरियाद।
फ़रयारी-(हिं०स्त्री०) हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है।
फरराना-(हिं०क्रि०) देखो फहराना।
फरलांग-(अ० पु०) भूमि की लम्बाई की एक अंग्रेजी नाप जो एक मील का आठवा भाग होती है।
फ़रलो-(अ०स्त्री०) एक प्रकार की छुट्टी जो सरकारी नौकरो को आधे वेतन पर मिलती है।
फरवरी-(अ०पु०) अंग्रेजी वर्ष का दूसरा महीना जिसमें तिसरे साल २९ दिन तथा अन्य वर्ष में २८ दिन होते हैं।
फ़रवार-(हिं० पु०) खलिहान।
फरवी-(हिं०पु०) एक प्रकार का भूना हुआ चावल, मुरमुरा, चावल।
फ़रश-(अ० पु०) बैठने के लिये बिछाने का वस्त्र, बिछावन, समतल भूमि, पत्थर या ईंटे बिछाकर अथवा गारे चूने से बनाई हुई कोठरी के भीतर की समतल भूमि, छत, गच।
फ़र्शबंद-(फा०पु०) वह ऊंचा समतल स्थान जहा फरश बना हो।
फ़रशी-(फा० स्त्री०) पीतल आदि का बना हुआ बरतन जिसपर सटक आदि रखकर लोग तमाखू पीते हैं, इस पर रखकर जो हुक्का पिया जाता है।
फरस-(हिं० पु०) देखो फरश।
फरसा-(हिं० पु०) चौड़ी तथा तेज़ धार की कुल्हाड़ी।
फरसी-(हिं० स्त्री०) देखो फरशी।
फरहटा-(हिं० पु०) चरखी के बीच में जड़ी हुई पतली चौड़ी पटरी।
फ़रहत-(अ० स्त्री०) आनन्द, प्रसन्नता (हि० पु०) समुद्र के किनारे पर होने वाला एक वृक्ष।
फरहर-(हि०वि०) शुद्ध, निर्मल, साफ, तेज़, हराभरा, प्रसन्न।
फरहरना-(हि०क्रि०) फरकना, फहराना, उड़ाना।
फरहरा-(हिं० पु०) झंडा, पताका, (वि०) स्पष्ट, शुद्ध, निर्मल, अलग अलग, प्रसन्न, खिला हुआ।
फरहरी-(हि० स्त्री०) फल।
फरहा-(हि० पुं०) धुनिये का रूई धूनने का कमान।
फरही-(हिं० स्त्री०) लकड़ी का वह चौड़ा टुकड़ा जिस पर बरतन रखकर कसेरे रेतते हैं।
फराक-(हिं० पु०) मैदान (वि०) लंबा चौड़ा।
फ़राक़त-(फा० वि०) विस्तृत, फैला हुआ, लबा चौड़ा तथा समतल, देखो फरागत।
फराख़-(फा०वि०) विस्तृत, लबा चौड़ा।
फराख़ी-(फा०स्त्री०) विस्तार, चौड़ाई, सफलता।
फ़रागत-(अ० स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा, निश्चिन्तता, बेफिक्री, मल त्याग करना, पैखाना फिरना।
फ़राज़-(फा० वि०) ऊंचा।
फ़रामोश-(फा० वि०) विस्मृत, भूला हुआ, चित्त से गिरा हुआ।
फ़रार-(अ० वि०) जो भाग गया हो; भागा हुआ।
फराल-(हि० स्त्री०) विस्तार, फैलाव, तख्ता।
फ़रासीस-(फा०पु०) फ्रान्स देश, इस देश का रहने वाला, एक प्रकार का छींट का कपड़ा।
फ़रासीसी-(हिं० वि०) फ्रान्स देश का रहने वाला, फ्रान्स देश का बना हुआ, फ्रान्स देश का।
फरिया-(हिं० स्त्री०) वह लहगा जो सामने की ओर सिला नही रहता, (पु०) मिट्टी की नाद।
फ़रियाद-(फा०पु०) दुःखित या पीड़ित प्राणियों का परित्राण के लिये चिल्लाना, शिकायत, नालिश, प्रार्थना, विनय, विनती।
फ़रियादी-(फा० वि०) फरियाद या नालिश करने वाला।
फरियाना-(हि०क्रि०) छाट कर अलग करना, पक्ष निर्णय करना, तय करना, साफ करना, साफ साफ देख पड़ना।
फ़रिश्ता-(फा० पु०) मुसलमानी धर्म ग्रन्थों के अनुसार ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार कोई काम करता है, देवता।
फरी-(हि० स्त्री०, फाल, गाड़ी का हरसा, फड़, गतके की मार रोकने की चमड़े की ढाल, फली।
फ़रीक़-(अ० पुं०) प्रतिद्वद्वी, दो पक्षो में से किसी पक्ष का मनुष्य, मुकाबला करने वाले, तरफदार, विरोधी, विपक्षी, फरीक़सानी-प्रतिवादी।
फरुहा-(हि० पु०) देखो फवड़ा।
फरुही-(हिं० स्त्री०) छोटा फावड़ा, फावड़े के आकार का एक लकड़ी का औज़ार जो घोड़े की लीद हटाने अथवा खेत की क्यारी बनाने के काम में आता है मथानी, एक प्रकार का भूना हुआ चावल जो भीतर से पोला हो जाता है लाई।
फरुहरी-(हिं० स्त्री०) देखो फुरहरी।
फरेंदा-(हि० पु०) एक प्रकार की बड़ी गूदेदार मीठी जामुन।
फरेन्द्र-(स० पु०) जामुन का वृक्ष।
फ़रेब-(फा०पु०) कपट, धोखा।
फ़रेबी-(हिं० वि०) कपटी, धोखा देने वाला।

फरेरी-(हिं०स्त्री०) जंगल के फल, जंगली मेवा।
फरेंदा-(फा० पुं०) एक प्रकार का तोता
फरो-(फा० वि०) तिरोहित, दबा हुआ।
फरोख्त-(फा० स्त्री०) विक्रय, बिक्री।
फरोदस्त-(फा० पु०) एक प्रकार का सकर राग।
फर्क-(हिं०पु०) देखो फरक।
फर्च-(हिं०वि०) देखो फरच।
फर्चा-(हिं० पु०) देखो फरचा।
फर्जंद-(हिं० पु०) देखो फरजद।
फ़र्ज़-(अ० पु०) कर्तव्य कर्म, उत्तरदायित्व, कल्पना, मान लेना।
फ़र्ज़ी-(फा० वि०) कल्पित, माना हुआ, नाम मात्र का (पु०) देखो फरजी।
फर्द-(फा० स्त्री०) कागज, कपडे आदि का टुकडा जो किसी के साथ जुटा या लगा हो, रजाई, शाल आदि का ऊपरी पल्ला जो अलग बनता और बिकता है, कागज का टुकड़ा जिस पर किसी वस्तु का विवरण सूची आदि लिखी जाय, अलग अलग रहने वाला पशु या पक्षी।
फ़र्माना-(फा०वि०) देखो फरमाना।
फर्याद-(फा०स्त्री०) देखो फरियाद।
फर्रा-(हिं० पु०) गेंहू या धान की फस्ल का एक रोग।
फर्राटा-(हिं० पु०) वेग, तेजी, देखो खर्राटा।
फ़र्राश-(अ०पु०) वह नौकर जो खेमा गाडने, सफाई करने, फर्श बिछाने तथा दीपक जलाने आदि का काम करता है, खिदमतगार।
फर्राशी-(फा० वि०) फर्श या फर्राश के कामों से सबंध रखने वाला, (स्त्री०) फर्राश का काम या पद।
फ़र्लो-(अ० स्त्री०) देखो फरलो।
फर्श-(अ० स्त्री०) बिछावन, बिछौने का कपड़ा।
फर्शी-(अ० स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा हुक्का (वि०) फर्श सबंधी, फ़र्शी सलाम-ज़मीन पर झुक कर सलाम करना।

फलक-(फा०पु०) अन्तरिक्ष, आकाश; देखो फलॉस।
फल-(स० नपु०) लाभ, वनस्पति में होने वाला गूदे से परिपूर्ण वह बीजकोश जो फूलों में से विशिष्ट ऋतु में उत्पन्न होता है, गणित की किसी क्रिया का परिणाम, उद्देश्य की सिद्धि, त्रैराशिक की तीसरी राशि, व्याज, सूद, क्षेत्रफल, प्रयोजन दरकार, स्त्री का रज, वमन, त्रिफला, दान, इन्द्रजव, गुण, प्रभाव, बदला, कर्म का भोग, शुभ कर्मों का परिणाम, बाण भाले आदि का नुकीला तेज भाग, ढाल हल की फाल, प्रतिफल, बदला, न्याय के अनुसार प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न अर्थ, फलित ज्योतिष में ग्रहों के योग का सुख अथवा दुःख सूचक परिणाम।
फलक-(स०नपु०) चक्र, ढाल, लकड़ी आदि का तख्ता, चौकी, मेज, हथेली, वरक, चादर, जलपात्र रखने का आधार, धोबी का पाट, नितंब, चूतड़, हड्डी का टुकड़ा, खाट की बीनैन।
फलक-(अ०पु०) आकाश, स्वर्ग।
फलकण्टक-(स०पु०) पनस, कटहल।
फलकना-(हिं०क्रि०) छलकना, फरकना।
फलकपाणि-(स० पु०) हाथ में ढाल लेकर लड़ने वाला योद्धा।
फलकयन्त्र-(स० नपु०) ज्योतिष का एक यन्त्र।
फलकर-(हि०पु०) वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाता है।
फलका-(अ०पु०) छाला, फफोला, जहाज की छत में का दरवाजा।
फलकृष्ण-(सं० पु०) करज वृक्ष, जल आवला।
फलकेशर-(स०पु०) नारियल का वृक्ष।
फलकोष-(स०पु०) अण्डकोष।
फलग्राही-(स० वि०) फल देने वाला।
फलत-(सं०अव्य०) फलस्वरूप, इसलिये।
फलत्रय-(स०नपु०) त्रिफला, हर्रा, बहेरा, आमला।
फलत्रिक-(स० नपु०) देखो फलत्रय।

फलद-(सं०वि०) फल देने वाला।
फलदा-(हि०पु०) हिन्दुओं में विवाह स्थिर करने की एक रीति, वर रक्षा, विवाह सम्बन्धी टीके की रस्म।
फलदार-(हि०वि०) फल वाला, जिसमें फल लगे हों।
फलद्रुम-(स०पु०) फला हुआ वृक्ष।
फलना-(हि०क्रि०) फल से युक्त होना, फल लगना, परिणाम निकलना लाभदायक होना, शरीर के किसी भाग में छोटे छोटे दाने निकलना, फलना फूलना-सम्पन्न और सुखी होना।
फलपाक-(स०पु०) करमर्दक, करौंदा।
फलपादप-(स०पु०) फल का वृक्ष।
फलपुच्छ-(स०पु०) वह वनस्पति जिसकी जड़ में गाठ पडती हो।
फलपुष्पा-(स०स्त्री०) पिण्डखजूर।
फलपूर-(स० पु०) दाडिम, अनार, बिरौजा नीबू।
फलप्रद-(स० वि०) फल देने वाला।
फलभागी-(स० वि०) फल का भोग करनेवाला।
फलभूमि-(स० स्त्री०) वह स्थान जहा कर्मों का फल भोगना पड़ता है।
फलभोग-(स० पु०) कर्मफल, सुख दुःख आदि का भोग।
फलमत्स्या-(स० स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुआर।
फलमुख्या-(सं०स्त्री०) अजमोदा।
फलमुण्ड(सं०पु०) नारियल का पेड़।
फलयोग-(स० पु०) नाटक में वह स्थान जिसमें फल की प्राप्ति अथवा उसके नायक की अर्थसिद्धि हो।
फलराज-(स०पु०) तरबूज, खरबूजा।
फललक्षणा-(स०स्त्री०) फल हेतु का लक्षण।
फलवर्ति-(स० स्त्री०) घाव में रखने की कपडे की मोटी बत्ती।
फलवर्तुल-(सं०नपु०) कुम्हड़ा, तरबूज।
फलवान्-(स०वि०) जिसमें फल लगे हों।
फलविक्रयी-(सं०वि०) फल बेंचने वाला।
फलवृक्ष-(स० पु०) फल का पेड़।
फलश्रेष्ठ-(सं०पु०) आम का वृक्ष।

फलस–(स॰पु॰) कटहल का वृक्ष।
फलस्थापन–(स॰ नपु॰) दस प्रकार के सस्कारों में से तीसरा सस्कार।
फलस्नेह–(स॰ पुं॰) अखरोट का वृक्ष।
फलहरी–(हिं॰ स्त्री॰) वन के वृक्षों के फल, मेवा।
फलहार–(हिं॰पु॰) देखो फलाहार।
फलहारी–(स॰वि॰) फल चुराने वाला, (स्त्री॰) कालिका देवी।
फलहारी–(हिं॰वि॰) जो अन्न से न बना हो,जिस खाद्य पदार्थ के बनाने में केवल फलों का उपयोग किया गया हो।
फलाँ–(फा॰वि॰) अमुक, कोई अनिश्चित व्यक्ति।
फलांग–(हिं॰ स्त्री॰) एक स्थान से उछल कर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या उसका भाव, मलखंभ की एक कसरत, एक फलाग में तय करने की दूरी।
फलांगना–(हिं॰क्रि॰) कूदना, फाँदना।
फलांश–(हिं॰ पुं॰) तात्पर्य, साराश, असल मतलब।
फला–(स॰स्त्री॰) प्रियगु, शमी वृक्ष।
फलागम–(स॰ पुं॰) फल आने का काल, शरद काल।
फलादन–(सं॰ वि॰) फल खाने वाला (पु॰) शुक, तोता।
फलादेश–(स॰ पु॰) किसी बात का फल या परिणाम बतलाना, फल कहना।
फलाध्यक्ष–(स॰ नपु॰) फल देने वाला, ईश्वर।
फलाना–(अ॰पु॰) अमुक,कोई अनिश्चित व्यक्ति,(हिं॰क्रि॰) फलने में प्रवृत्त करना
फलान्त–(स॰ पु॰) फल का अन्त या शेष।
फलाफल–(स॰ नपु॰) अच्छा और बुरा फल।
फलाम्ल–(स॰ नपु॰) अमलबेत।
फलाराम–(स॰ पु॰) फल का बगीचा।
फलार्थी–(स॰ वि॰) फल की कामना करने वाला।
फलालीन–(अं॰ पु॰) एक प्रकार का कोमल ऊनी वस्त्र।
फलाशी–(स॰ वि॰) फलभोजी, फल खाने वाला।
फलासव–(स॰पु॰) फलों से बनी हुई मदिरा।
फलास्थि–(स॰ पु॰) नारियल का वृक्ष।
फलाहार–(स॰ पुं॰) केवल फलों का भोजन।
फलाहारी–(हिं॰पु॰) वह जो केवल फल खाकर निर्वाह करता हो, (वि॰) जो केवल फलो से बना हो,फलाहार सबधी
फलित–(स॰वि॰) फलवान्, फला हुआ, पूर्ण सपूर्ण (पु॰) पत्थरफूल, छरीला, फलित ज्योतिष–ज्योतिष शास्त्रका वह भाग जिसमें ग्रहों के योग से फलाफल बतलाया जाता है।
फलितव्य–(स॰ वि॰) फलने योग्य।
फलिन–(स॰ वि॰) फला हुआ, जिसमें फल लगे हों (पु॰) पनस, कटहल।
फलिनी–(स॰ स्त्री॰) मूसली, इलायची, मेंहदी।
फली–(हिं॰ स्त्री॰) पौधों के वे फल जो चिपटे और लबे होते हैं जिनमें बीज भरे होते हैं।
फलीता–(अ॰ पुं॰) वृक्ष की छाल या रेशों को बटकर बनाई हुई रस्सी, बत्ती, पलीता।
फलीभूत–(स॰ वि॰) फलदायक, लाभदायक।
फलेंदा–(हिं॰ पु॰) एक प्रकार का बड़ा, गूदेदार मीठा जामुन।
फलोदय–(सं॰ पु॰) लाभ, हर्ष, आनन्द, फल की उत्पत्ति।
फलोद्भव–(स॰ वि॰) जो फल से उत्पन्न हुआ हो।
फलोपजीवी–(स॰ वि॰) जो केवल फल खाकर जीविका निर्वाह करता हो।
फल्गु–(स॰ वि॰) असार, निरर्थक, व्यर्थ, सामान्य, क्षुद्र, छोटा (स्त्री॰) गया क्षेत्र की एक नदी।
फल्गुनीभव–(स॰ पु॰) बृहस्पति का एक नाम।
फल्ला–(हिं॰ पु॰) एक प्रकार का पीले रग का रेशम।
फसकड़ा–(हिं॰ पु॰) पलथी।
फसकना–(हिं॰ क्रि॰) बैठना, धँसना, (वि॰) जलदी से धँसने या फट जाने वाला।
फसकाना–(हिं॰ क्रि॰) कपड़े को दबाकर फाड़ना, धँसाना बैठाना।
फ़सल–(अं॰ स्त्री॰) ऋतु, मौसम, समय, काल, खेत की उपज, अन्न की वह उपज जो वर्षके प्रत्येक अयन में होती है
फ़सली–(अ॰वि॰) ऋतु सबधी (हिं॰ पु॰) अकबर की चलाई हुई वह सवत् जो ईसवी सन् से ५८३ वर्ष कम है इसका प्रचार फस्ल या खेती बारी के काम में होता है, हैज़ा रोग।
फ़साद–(अ॰पु॰) विद्रोह, बलवा, उपद्रव, उधम, बिगाड़, लड़ाई, झगड़ा,विवाद।
फ़सादी–(फा॰ वि॰) उपद्रवी, लड़ाका, झगड़ालू, नटखट, पाजी।
फसिल–(हिं॰स्त्री॰) देखो फसल।
फ़स्त, फ़स्द–(अ॰स्त्री॰) नस को फाड़कर शरीर का दूषित रुधिर निकालने की क्रिया, फ़स्द खुलवाना–नस कटवा कर शरीर का दूषित रुधिर निकलवाना।
फस्फोरस–(अं॰पु॰) देखो फासफरस्।
फ़हम–(अ॰स्त्री॰) विवक, ज्ञान, समझ
फ़हमाइस–(फा॰स्त्री॰) शिक्षा, आज्ञा,हुक्म
फहरना–(हिं॰ क्रि॰) हवा में उड़ना।
फहरान–(हिं॰स्त्री॰) फहराने का भाव या क्रिया।
फहराना–(हिं॰क्रि॰) हवा में उड़ने के लिये किसी वस्तु को खुली छोड़ देना, हवा में रहरह कर हिलना या उड़ना। हवा में पसरना।
फहरानि–(हिं॰ स्त्री॰) देखो फहरान।
फहरिस्त–(हिं॰स्त्री॰) देखो फेहरिस्त।
फहश–(अ॰वि॰) अश्लील फूहड़।
फाक–(हिं॰ स्त्री॰) किसी फल आदि का एक सिरे से दूसरे सिरे तक काटकर अलगाया हुआ टुकड़ा, किसी गोल या पिण्डाकार वस्तु का काटा या चिरा हुआ टुकड़ा, खण्ड, कोई टुकड़ा।

फाँकड़ा-(हि० वि०) तिरछा बाका, हृष्ट पुष्ट।

फाँकना-(हि०क्रि०) चूर दाने या बुकनी के रूप की किसी वस्तु को दूर से मुँह में डालना, धूळ फाँकना-दुर्दशा भोगना।

फाँका-(हि० पु०) उतनी वस्तु जो एक बार फाँकी जाय।

फाँग, फाँगी-(हि० स्त्री०) एक प्रकार का साग।

फाँट-(हि०स्त्री०) किसी वस्तु को यथाक्रम कई भागों में बाँटने की क्रिया, क्रम से बाँटा हुआ भाग, औषधि का क्वाथ या काढा करना।

फाँटना-(हि० क्रि०) विभाग करना, बाँटना, काढा करना।

फाँटबंदी-(हिं० स्त्री०) वह कागज जिसमें किसी गाँव के पट्टीदारों के अनुसार गाँव की आमदनी लिखी होती है।

फाँटा-(हिं०पु०) दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ने की कोनिया।

फाँड़, फाँड़ा-(हि०पु०) धोती या दुपट्टे का वह भाग जो कमर में बँधा रहता है

फाँद-(हि० स्त्री०) उछलने का भाव, उछाल, चिड़ियों के फँसाने का फन्दा, बन्धन।

फाँदना-(हि०क्रि०) झटके से शरीर को ऊपर उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा पड़ना, कूदना, कूदकर लाघना, फँसाना, फदे में डालना।

फाँदी-(हिं०स्त्री०) गट्ठर बाधने की रस्सी।

फाँफी-(हिं०स्त्री०) बहुत बारीक झिल्ली, मलाई की पतली तह जो दूध के ऊपर पड़ जाती है, जाला या माड़ा जो आँख की पुतलियों पर पड़ जाता है।

फाँस-(हि० स्त्री०) पाश, बधन, वह रस्सी जिसका फन्दा डालकर शिकारी प्रशु पक्षी फँसाते हैं बास या काठ का कड़ा रेशा या नोक, महीन काटा, पतली तीली या खमाची।

फाँसना-(हि० क्रि०) बधन में डालना, पकड़ना, धोखे में डालना, जाल मे फसाना, किसी पर ऐसा प्रभाव डालना कि वह वश में हो जावे।

फाँसी-(हिं० स्त्री०) पाश, फँसाने का फदा, मौत की सज़ा जो गले में फन्दा डालकर दी जाती है, पाश द्वारा प्राण दण्ड, फांसी चढ़ना-पाश द्वारा प्राण दण्ड पाना, फासी देना-पाश, द्वारा मार डालना, अत्यन्त कष्ट देना।

फाइल-(अ०स्त्री०) नत्थी, मिसिल, लोहे का तार जिसमें कागज़ या चिट्ठिया नत्थी की जाती हैं, सामयिक पत्रों आदि के कुछ पूरे अकों के समूह।

फा-(स०पु०) सन्ताप, वृर्थ की बकवाद।

फाक़ा-(अ०पु०) उपवास, निराहार रहना

फाकामस्त फाकेमस्त-(फा०वि०) वह जो खाने पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिन्ता ना करता हो।

फाखतई-(हि० वि०) भूरापन लिये लाल रग का।

फ़ाख़ता-(अ० स्त्री०) पडुक पक्षी, घवँरसा।

फाग-(हि० पु०) फाल्गुन महीने में होने वाला उत्सव जिसमें लोग एक दूसरे पर रग या गुलाल डालते हैं और वसन्त ऋतु की गीत गाते हैं, फाग में गाई जानेवाली गीत।

फागुन-(हिं० पु०) शिशिर ऋतु का दूसरा महीन, माघ के बाद का महीना फाल्गुन।

फागुनी-(हि०वि०) फागुन संबधी।

फ़ाज़िल-(अ० वि०) आवश्यकता से अधिक, जरुरत से ज्यादा, विद्वान्।

फाटक-(हि० पु०) बड़ा द्वार, बड़ा दरवाज़ा, तोरण, फटकन, पछोड़न।

फाटकी-(हि० स्त्री०) फिटकरी।

फाटना-(हिं० क्रि०) देखो फटना।

फाड़न-(हिं० पु०) कागज़ या कपडे का फाड़ कर निकाला हुआ भाग, दही के ताजे मक्खन की छाछ।

फाड़ना-(हिं० क्रि०) खण्ड करना, टुकडे करना, चीरना, सधि या जोड़ फैलाकर खोलना, धज्जिया उड़ाना, किसी गाढे द्रव पदार्थ का जल और सार भाग अलगाना।

फाणि-(सं० स्त्री०) गुड़।

फाणित-(स० नपु०) खूब खौलाकर गाढा किया हुआ ऊख का रस, राब, शीरा।

फाण्ड-(स० नपु०) गर्भ।

फ़ातिहा-(अ०पु०) प्रार्थना वह चढावा जिसको मुसलमान लोग मरे हुए लोगों के नाम पर देते हैं।

फानना-(हि० क्रि०) किसी काम को हाथ में लेना, रूई को फटकना या धुनना।

फानूस-(फा० पु०) एक प्रकार की लालटेन, समुद्र के किनारे पर ऊचे स्थान पर जो प्रकाश जलाया जाता है, शीशे की मृदगी, कमल या गिलास जिसके भीतर मोमबत्तिया जलाई जाती हैं, भट्टी।

फाफर-(हि० पुं०) कूट्टू।

फाफा-(हिं० स्त्री०) पोपली बुढ़िया।

फाब-(हिं० स्त्री०) देखो फबन।

फाबना-(हिं० क्रि०) देखो फबना।

फ़ायदा-(अ० पु०) लाभ, नफा, अच्छा फल, भला परिणाम, प्रयोजन की सिद्धि, पूरा करना, उत्तम प्रभाव, अच्छा असर।

फ़ायदेमद-(फा० पु०) उपकारक, लाभदायक।

फायर-(अ० पु०) आग, बदूक की गोली का चलना, फायरमैन-अजन में कोयला झोकने वाला।

फाया-(हि० पु०) देखो फाहा।

फार-(हि० पुं०) देखो फाल।

फारखती-(अ० स्त्री०) वह कागज़ या लेख जो इस बात का प्रमाण दे कि किसी के ज़िम्मे जो कुछ बाकी या वह चुकता हो गया, बेबाकी, चुक्ती।

फारना-(हिं० क्रि०) देखो फाड़ना।

फारम-(अ० पु०) दरखास्त, रसीद आदि के नमूने जिसमें यह दिखलाया

जाता है कि किस स्थान में कौन सी बात लिखना चाहिये, छापने के बैठाये हुए उतने अक्षर जितने एक तख्ते कागज़ पर छापने के लिये पर्याप्त हों, छपाई में एक पूरा तख्ता कागज़ का जो एक बार छापा जाता है।
फारस–देखो पारस।
फ़ारसी–(फा०स्त्री०) फारस देश की भाषा।
फारा–(हिं०पु०) फाल, कतरा, देखो फाल
फाल–(सं० पु०) लोहे की चौकोर लंबी छड़ जिसका सिरा नुकीला होता है जो हल की अकड़ी के नीचे लगाई होती है कुश, कुशी, सूता, कपड़ा, फावड़ा महादेव, बलदेव।
फाल–(हिं०स्त्री०) किसी ठोस वस्तु में से काटा हुआ पतला टुकड़ा, (पु०) डग, फलांग, कदम का फासला, (स्त्री०) कटी हुई सुपारी, फाल बांधना–उछल कर लाँघना।
फालकृष्ट–(सं०वि०) हल से जोता हुआ।
फालगुप्त–(सं०पु०) बलराम का एक नाम।
फालतू–(हिं० वि०) आवश्यकता से अधिक, जरूरत से ज्यादा, जो किसी के काम के लायक न हो, निकम्मा।
फालसई–(फा० वि०) फालसे के रंग का, ललाई लिये हुए हलका ऊदा।
फ़ालसा–(फा० पु०) एक छोटा वृक्ष जिसके फल मटर से कुछ बड़े होते हैं और खाने में खटमीठे होते हैं।
फालिज–(अ०पु०)पक्षाघात रोग, लकवा
फ़ालूदा–(फा० पु०) गेहूँ के सत्त से बनाया हुआ एक प्रकार का शर्बत।
फाल्गुन–(सं०पु०) अर्जुन का एक नाम, वह चान्द्रमास जिसकी पूर्णिमा फाल्गुनी नक्षत्र में होती है, फाल्गुन का महीना।
फाल्गुनप्रिय–(सं०पु०) शरद।
फाल्गुनि–(सं०पु०) अर्जुन का एक नाम।
फाल्गुनी–(सं०स्त्री०) पूर्वा फाल्गुनी तथा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।
फावड़ा–(हिं० पु०) एक प्रकार का लोहे का औज़ार जो मिट्टी खोदने तथा हटाने में काम आता है, फरसा।
फावड़ी–(हिं०स्त्री०) छोटा फावड़ा,फरुही।
फ़ाश–(फा० वि०) प्रकट, ज्ञात।
फ़ास्फ़रस–(अं० पु०) एक अत्यन्त ज्वलनशील मूल द्रव्य।
फासला–(अ० पु०) अन्तर, दूरी।
फास्ट–(अं०वि०) शीघ्र चलनेवाला,तेज।
फाहा–(हिं०पु०) फाया, घाव, फोड़े आदि पर लगाने की मरहम से तर की हुई पट्टी।
फ़ाहिशा–(अ० वि०) पुंश्चली, छिनाल।
फिंकवाना–(हिं०क्रि०) देखो फेंकवाना।
फिंगा–(हिं०पु०) एक प्रकार की चिड़िया
फि–(सं०पु०) पाप, कोप, निष्फल वाक्य।
फिकई–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा अन्न।
फ़िक़रा–(अ०पु०) वाक्य, व्यंगोक्ति।
फिकैत–(हिं पु) फरी या गदका चलानेवाले।
फ़िक्र–(अ०स्त्री०) ध्यान, विचार, चिन्ता, सोच, यत्न, तदबीर, उपाय का विचार।
फ़िक्रमन्द–(फा० वि०) चिन्ताग्रस्त।
फिङ्गक–(सं० पु०) फिंगा नामक पक्षी।
फिचकुर–(हिं० पु०) वह फेन जो मूर्छा या बेहोशी में मुख से निकलता है।
फिट–(हिं० अव्य०) धिक्कार का शब्द, धिक्, छि'।
फिटकरी–(हिं० स्त्री०) देखो फिटकिरी।
फिटकार–(हिं० पु०) धिक्कार, लानत, शाप, कोस, हलकी मिलावट, भावना।
फिटकिरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो लाल, काला, पीला तथा सफेद भी होता है।
फिटकी–(हिं०स्त्री०) छींटा,कपड़े का फुचड़ा
फिटन–(अं० स्त्री०) एक प्रकार की चार पहिये की खुली गाड़ी।
फिट्टा–(हिं० वि०) अपमानित, फटकार खाया हुआ।
फितना–(अ०पु०) दगा फसाद, झगड़ा, एक प्रकार का फूल, एक प्रकार का इत्र।
फ़ितरती–(अ० वि०) चतुर, चालाक, मायावी, फितूरी।
फ़ितूर–(अ० पु०) उपद्रव, झगड़ा, न्यूनता, घाटा, विपर्यय, खराबी।
फ़ितूरी–(हिं० वि०) झगड़ालू, लड़का, उपद्रवी, फसादी।
फ़िदवी–(फा०वि०) आज्ञाकारी, स्वामि-भक्त, हुक्म मानने वाला (पु०) सेवक, दास।
फिनिया–(हिं०स्त्री०) कान में पहरने का एक गहना।
फिनीज–(हिं० स्त्री०) दो मस्तूल की छोटी नाव।
फिरंग–(हिं०पु०) देखो फिरङ्ग।
फिरंगी–(हिं०वि०) देखो फिरङ्गी।
फिरट–(हिं० वि०) विरुद्ध, खिलाफ, विरोध करने के लिये उन्नत।
फिर–(हिं०क्रि० वि०) पुनः, दुबारा, अनन्तर, उपरान्त, भविष्य में किसी समय, आगे बढ़कर, आगे चल कर, उस अवस्था में, इसके अतिरिक्त, इसके सिवाय, फिर फिर–बारबार, फिर क्या है?–तब तो कोई चिन्ता की बात नहीं है।
फिरक–(हिं० स्त्री०) असबाब ढोने की एक प्रकार की छोटी गाड़ी।
फिरकना–(हिं०क्रि०) किसी गोल वस्तु का एक स्थान पर घूमना, थिरकना, नाचना।
फ़िरक़ा–(अ० पु०) जाति, सम्प्रदाय, पंथ, जत्था।
फिरकी–(हिं०स्त्री०) लड़कों के नचाने का एक खिलौना, मालखंभ की एक कसरत, कुश्ती की एक पेंच, तागा बटने की तकली के नीचे लगा हुआ धातु आदि का गोल टुकड़ा जो तकले में लगाकर चरखे में लगाया जाता है।
फिरङ्ग–(सं० पु०) युरोप का एक देश, गोरा का मुल्क, फिरंगिस्तान, आतशक रोग, गरमी।
फिरङ्गी–(हिं० वि०) फिरंग देश का रहने वाला गोरा।
फिरंग देशका–(हिं० स्त्री०) विलायती तलवार।
फिरता–(हिं० पु०) वापसी, अस्वीकार, (वि०) वापस, लौटाया हुआ।
फिरना–(हिं० क्रि०) विचरना, टहलना,

चक्कर या फेरा लगाना, इधर उधर चलना, ऐंठा जाना, पलटना, विपरीत होना, मुड़ना, प्रचारित होना, मुड़ना, झुकना, विरुद्ध होना, लड़ने को तैयार हो जाना, स्थिति बदलना, दूसरी ओर जाना, एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्पर्श करते हुए जाना, वापस होना, उलटा होना, सैर करना, प्रवृत्त होना, जी फिर जाना–विरक्त या उदासीन होना, सिर फिरना–बुद्धि भ्रष्ट होना, पागल होना।

फिरवा–(हिं० पु०) गले में पहरने का सोने का एक गहना।

फिरवाना–(हिं०क्रि०) फेरने या फिराने का काम दूसरे से कराना।

फ़िराक़–(अ० पु०) वियोग, बिछोह, चिन्ता, खटका, खोज, टोह।

फिराना–(हिं०क्रि०) इधर उधर चलाना, चक्कर देना, नचाना, विचलित करना, बात पर स्थिर न रहने देना, पलटाना, लौटाना, घुमाना, सैर कराना, ऐंठना, मरोड़ना, स्थिति बदलना, बारबार फेरे लगाना।

फ़िरार–(अ०पुं०) भागना, चल देना।

फ़िरारी–(फा०वि०) भागने वाला, भगेडू।

फिरि–(हिं०क्रि०वि०) देखो फिर।

फिरियाद–(हि०स्त्री०) देखो फरियाद।

फ़िरिश्ता–(फा०पु०) देवदूत।

फिरिहरा–(हि०पुं०) एक प्रकार का पक्षी

फिरिहरी–(हिं०स्त्री०) बच्चों का घुमाने का खिलौना, फिरकी।

फिल्ली–(हिं० स्त्री०) लोहे के छड़ का टुकड़ा जो करघे के दूर में लगाया जाता है, पिंडली।

फिस–(हिं०वि०) कुछ नहीं, टायँ टायँ फिस–धूमधाम देख पड़ी पर नतीजा कुछ न निकला।

फसड्डी–(हिं० वि०) जो काम पे पीछे रह जावे, जा किसी काम में बढ न सके, जिसका कुछ किया न हा सके।

फस फिसाना–(हि०क्रि०) शिथिल होना, ढीला पड़ना।

फिसलन–(हिं०स्त्री०)फिसलने की क्रिया या भाव, रपटन, सरकन।

फिसलना–(हिं० क्रि०) चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर का न जमना, झुकना, प्रवृत्त होना।

फिसलाना–(हिं० क्रि०) किसी को ऐसा करना कि वह फिसल जाय।

फ़िहरिस्त–(फा० स्त्री०) तालिका, सूची, बीजक।

फी–(अ०अव्य०) प्रत्येक, हर एक।

फीका–(हि० वि०) नीरस, स्वादहीन, मलिन, जो चटकीला न हो, प्रवाहहीन व्यर्थ, कान्तिहीन, बिना तेज का, धूमिल, व्यर्थ, निष्फल।

फ़ीता–(हि० पु०) पतला किनारा या कोर, नेवार की पतली धज्जी सूत आदि जो किसी वस्तु को बांधने के काम में आता है।

फीफरी–(हि०स्त्री०) देखो फेफरी।

फीरनी–(फा०स्त्री०) एक प्रकार की खीर।

फ़ीरोजा–(फा०पु०) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर जो हरापन लिये नीले रंग का होता है।

फ़ीरोजी–(फा० वि०) हरापन लिये नीले रंग का।

फ़ील–(फा० पु०) हाथी।

फीलख़ाना–(फा० पु०) हस्तिशाला, हाथी बाँधने का स्थान।

फीलपा–(फा० पु०) एक प्रकार का रोग जिसमें पैर फूल आते हैं।

फीलपाया–(फा० पुं०) ईंटे का बना हुआ मोटा खंभा जिसपर छत ठहराई जाती है।

फ़ीलवान–(फा०पुं०) हाथीवान।

फीली–(हि० स्त्री०) घुटने के नीचे एड़ी तक का भाग, पिंडली।

फ़ील्ड–(अं० पु०) खेत, मैदान, गेंद खेलने का मैदान।

फ़ीस–(अं०स्त्री०) शुल्क, कर, मेहनताना।

फुकना–(हि०क्रि०) भस्म होना, जलना, मुह की हवा भर कर निकाला जाना, नष्ट होना (पुं०) बांस पीतल आदि की नली, प्राणियों के शरीर का मूत्र रहने का अवयव।

फुकनी–(हिं० स्त्री०) बांस पीतल आदि की नली जिसमें मुह को हवा भर कर आग को दहकाने के लिये उसपर छोड़ते हैं, भाथी।

फुँकरना–(हि०क्रि०) मुह से हवा छोड़ना।

फुंकवाना–(हिं० क्रि०) फूकने का काम दूसरे से कराना, मुह से हवा का झोंका निकलवाना, भस्म करवाना, जलवाना।

फुँकाना–(हि०क्रि०)फूकने का काम कराना

फुँकार–(हि०पु०) फूत्कार।

फुंदना–(हिं० पु०) फूल के आकार की गाठ जो झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बाधी जाती है, झब्बा।

फुंदिया–(हि० स्त्री०) देखो फुदना।

फुंदी–(हिं० स्त्री०) फंदा, गाठ, बिंदी, गाँठ, टीका।

फुसी–(हिं०स्त्री०) छोटी फोड़िया।

फुआरा–(हिं०पुं०) देखो फुहारा।

फु–(स० पु०) तुच्छ वाक्य।

फुक–(स० पु०) पक्षी।

फुकना–(हिं० क्रि०) देखो फुकना।

फुकाना–(हिं०क्रि०) देखो फुकाना।

फुचड़ा–(हिं० पु०) वह सूत या रेशा जो कपडे, कालीन, चटाई आदि बुनी हुई वस्तु के बाहर निकला रहता है।

फुट–(स०पु०) साँप का फन (हि०वि०) अयुग्म, जिसका जोड़ा न हो, जिसका क्रम या परस्पर सबध अलग हो (अं०पु०) एक अंग्रेजी मान जो बारह या छत्तीस जव के बराबर होता है।

फुटकर फुटकल–(हि० वि०) विषम, अकेला, थोड़ा थोड़ा, इकट्ठा नहीं, जिसका जोड़ा न हो, भिन्न भिन्न, कई प्रकार का, जिसका कोई सिलसिला न हो।

फुटका–(हिं०पुं०)फफोला, धान का लावा

फुटकी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया, फुदकी, किसी वस्तु के छोटे लच्छे या कण जो दूध आदि के ऊपर अलग अलग देख पड़ते हैं।

रुधिर, पीव आदि का छींटा जो किसी वस्तु पर देख पड़ता है।

फुटनोट-(अ० स्त्री०) वह टिप्पणी जो किसी लेख या पुस्तक के पृष्ठ में नीचे की ओर दी जाती है।

फुटपाथ-(अ० पुं०) पगडडी, सड़क के दानों ओर की पटरी।

फुटबाल-(अ०पु०) पैर से ठोकर मारकर खेलने का बड़ा गेंद।

फुटेहरा-(हिं० पुं०) मटर या चने का भूना हुआ दाना जिसका छिलका फटकर अलग हो गया हो।

फुटैल-(हिं० वि०) देखो फुट्टैल।

फुट्ट-(हिं० वि०) देखो फुट।

फुट्टक-(सं०पु०) एक प्रकार का वस्त्र।

फुट्टैल-(हिं० वि०) झुड या समूह से अलग, अकेला रहने वाला, जिसका जोड़ न हो, जो जोड़ से अलग हो, हतभाग्य, अभागा।

फुत्कार-(सं० पु०) फूँक, मुँह से हवा छोड़ने का शब्द।

फुत्कृति-(सं० स्त्री०) देखो फुत्कार।

फुदकना-(हिं० क्रि०) उछल उछल कर कूदना, फूले न समाना, उमग में आना।

फुदकी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

फुनंग-(हिं० स्त्री०) वृक्ष या शाखा का अगला हिस्सा, अकुर।

फुन-(हिं० अव्य०) पुनः, फिरसे।

फुनगी-(हिं० स्त्री०) वृक्ष या वृक्ष की शाखाओं का अग्र भाग, फुनग।

फुनना-(हिं०पु०) देखो फुदना।

फुप्फुस-(सं० पु०) फेफड़ा जो हृदय के बाँई ओर रहता है।

फुफुदी-(हिं०स्त्री०) वह डोर जो लँहगे, इजारबन्द या स्त्रियो की साड़ी में कसी जाती है, नीवी।

फुफकाना-(हिं०क्रि०) देखो फुफकारना।

फुफकार-(हिं० पु०) फूत्कार, हवा का शब्द जो साप के मुख से निकलता है।

फुफकारना-(हिं०क्रि०) फूत्कार करना।

फुफुनी-(हिं०स्त्री०) देखो फुफूदी।

फुफू-(हिं०स्त्री०) देखो फूफी।

फुफेरा-(हिं०वि०) फूफा से उत्पन्न, फूफा सबधी।

फुर-(हिं०स्त्री०) पक्षी का पर फड़फड़ाने का शब्द, (वि०) सत्य, सच्चा।

फुरकाना-(हिं० क्रि०) देखो फड़काना।

फुरती-(हिं० स्त्री०) शीघ्रता, तेजी।

फुरतीला-(हिं०वि०) तेज़,जो सुस्त न हो

फुरना-(हिं०क्रि०) सचा ठहरना, पूरा उतरना, प्रभाव उत्पन्न करना, प्रकाशित होना,चमक उठना, सफल होना, मुख से शब्द निकालना, उदय होना, फड़कना, हिलना, पूरा उतरना।

फुरफुर-(हिं० स्त्री०) उड़ने में पर की फड़फड़ाहट से उत्पन्न शब्द।

फुरफुराना-(हिं० क्रि०) फुरफुर शब्द करना,हलकी वस्तु का लहराना,उड़कर परों से शब्द निकालना, कान में रूई की फुरेरी फिराना।

फुरफुराहट-(हिं०स्त्री०) पख फड़फड़ाने का भाव।

फुरफुरी-(हिं०स्त्री०) देखो फुरफुराहट।

फुरमान-(हिं०पु०) देखो फरमान,आज्ञा, सनद।

फुरमाना-(हिं०क्रि०) देखो फरमाना।

फुरसत-(अ० स्त्री०) अवकाश, अवसर, समय, छुट्टी, बीमारी से छुटकारा, आराम।

फुरहरना-(हिं० क्रि०) स्फुरित होना, निकलना।

फुरहरी-(हिं० स्त्री०) पर को फुला कर फड़फड़ाने का शब्द, फरफराहट, कँप, कँपी, रोमाञ्च, कपडे आदि का हवा के हिलने से उत्पन्न शब्द, देखो फुरेरी।

फुराना-(हिं० स्त्री०) प्रमाणित करना,

फुरेरी-(हिं०स्त्री०) रोमाञ्च युक्त कँपकपी रोंगटे खडे होना, रूई लपेटी हुई सींक जो तेल इत्र दवा आदि में डुबो कर काम में लाई जाती है, फुरेरी लेना- सर्दी के कारण काँपना।

फुर्ती-(हिं०स्त्री०) देखो फुरती।

फुर्सत-(अ०स्त्री०) देखो फ़ुरसत।

फुलका-(हिं०पु०) पतली हलकी रोटी, चपाती, फफोला, छाला, छोटी कड़ाही।

फुलचुही-(हिं०स्त्री०) एक छोटी चिड़िया जो सर्वदा फूलों पर उड़ती फिरती है, यह नीलापन लिये काले चमकते रग ही होती है।

फुलझड़ी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमें से फूलों के सामान चिनगारिया निकलती हैं, विवाद या कलह उत्पन्न करने वाली बात।

फुलझरी-(हिं०स्त्री०) देखो फुलझड़ी।

फुलनी-(सं०स्त्री०) ऊसर में होने वाली एक प्रकार की घास।

फुलमती-(सं०स्त्री०)एक रागिणी का नाम

फुलरा-(हिं०पु०) देखो फुदना।

फुलवर-(हिं० पु०) एक प्रकार का कपड़ा जिसपर रेशम के वेल बूटे कढे होते हैं।

फुलवाई-(हिं० स्त्री०) देखो फुलवारी

फुलवार-(हिं०पु०) प्रसन्न, खुश।

फुलवारी-(हिं०स्त्री०) उद्यान, बगीचा, वह उत्सव जिसमें फूलों की सजावट होती है, कागज़ के बने हुए फूल, वृक्ष आदि जो बारात के साथ निकाले जाते हैं।

फुलसुंघा-(हिं०पुं०) काले रग की एक चिड़िया।

फुलसुंघी-(हिं०स्त्री०)एक छोटी चिड़िया, देखा फुलचुही।

फुलहारा-(हिं०पु०) माली।

फुलाई-(हिं० स्त्री०) फूलने का भाव।

फुलाना-(हिं०क्रि०)किसी वस्तु को फैलाव को वायु आदि का दबाव पहुँचा कर बाहर की ओर बढ़ाना, गर्वित करना, घमड बढाना, अति आनन्द देकर आपे से बाहर करना, फूलों से युक्त करना रोमाञ्चित करना, मुँह फुलाना-रूठना

फुलायल-(हिं०पु०) देखो फुलेल।

फुलाव-(हिं० पु०) फूलने का भाव या अवस्था।

फुलावट-(हिं०स्त्री०) फूलने की क्रिया,

या भाव, उभाड़, या सूजन।

फुलावा-(हिं० पु०) स्त्रियों के सिर के वालोको गूथनेकी क्रिया,फुदनेदार डोरी

फुलिंग-हिं० पु०) स्फुलिङ्ग, चिनगारी।

फुलिया-(हि० स्त्री०) कील या काटा जिसका माथा फैला हुआ हो, कील या छड़ के आकार की कोई वस्तु जिसका सिरा गोल और उभड़ा हुआ हो, कान में पहरने का लौंग नाम का गहना।

फुलिसकेप-(अं० पु०) एक प्रकार का चिक्ना कागज़ जो १८ इच लम्बा और १३ इच चौड़ा होता है।

फुलुरिया-(हि० स्त्री०) छोटे बच्चों के चूतड़ के नीचे विछाने का मोटा कपड़ा आदि।

फुलेरा-(हिं० पु०) फूल की बनी हुई छतरी जो देवताओं की मूर्ति के ऊपर लगाई जाती है।

फुलेल-(हि०पु०) सुगन्ध युक्त तेल, फूलों के सुगध से वसा हुआ तेल जो सिर में लगाया जाता है।

फुलेली-(हि० स्त्री०) फुलेल रखने का काच का पात्र।

फुलेहरा-(हिं० पु०) उत्सवों में द्वार पर लगाने के सूत, रेशम आदि के बने हुए झब्बेदार वन्दरवार।

फुलौरा-(हिं०पु०) बड़ी फुलौरी, पकौड़ा

फुलौरी-(हि०स्त्री०) चने मटर आदि के वेसन की वरी, वेसन की पकौड़ी।

फुल्ल-(स०वि०) विकसित, फूला हुआ। (पु०) पुष्प, फूल।

फुल्लदाम-(स०पु०) उन्नीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

फुल्लन-(स०वि०) वायु से भरा हुआ।

फुल्ललोचन-(स०वि०)प्रफुल नेत्रों वाला।

फुल्लारविन्द-(स० स्त्री०) फूला हुआ कमल।

फुल्ली-(हिं० स्त्री०) फुलिया, फूल के आकार का कोई आभूषण।

फुवारा-(हिं० पु०) देखो फुहारा।

फुस-(हि० स्त्री०) अति मन्द स्वर,धीमी आवाज़।

फुसकारना-(हिं०क्रि०) फूक मारना।

फुसड़ा-(हिं० पुं०) देखो फुचड़ा।

फुसफुसा-(हिं० वि०) जो पुष्ट न हो, मद्दा, नरम, ढीला, कमजोर, जल्दी से टूट जाने वाला।

फुसफुसाना-(हिं० क्रि०) अति मन्द स्वर से बोलना।

फुसलाना-(हि० क्रि०) भुलावा देकर शान्त और चुप करना, बहलाना, मीठी मीठी बातें कहकर अनुकूल करना, किसी ओर प्रवृत्त करने के लिये इधर उधर की बातें करना।

फुहार-(हि० पु०) जलकण, पानी का छींटा, महीन बूदो की झड़ी, झींसी।

फुहारा-(हिं० पु०) जल की वह टोटी जिसमें से महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठते और नीचे गिरते हैं, जल का महीन छींटा।

फुही-(हिं०स्त्री०) पानी का महीन छींटा, महीन महीन बूदो की झड़ी।

फूक-(हिं० स्त्री०) वह हवा जो ओठो को चारो ओर से सिकोड़ कर निकाली जाय, साँस, मुह की हवा, मन्त्र पढ कर मुह से फेंकी हुई हवा, फूंक निकल जाना-मृत्यु होना, प्राण निकल जाना, झाड फूक-मन्त्र तन्त्र की विधि, फूकना-(हिं० क्रि०) ओठो को चारो ओर से सिकोड़ कर वेग से हवा फेंकना, धातुओं को रसायन की रीति से भस्म करना, फूँक-कर-प्रज्वलित करना या जलाना, मन्त्र आदि पढकर किसी पर फूँक मारना, बाँसुरी आदि बाजों को मुख से हवा फूँककर बजाना, कष्ट देना, सताना, चारों ओर फैलाना, व्यर्थ व्यय करना, फूँक फूक कर पैर रखना-बड़ी सावधानी से कोई काम करना, फूक तापना-सब कुछ खर्च कर डालना।

फूंका-(हि०पु०) भाथी या नली से आग पर फूँक मारने की क्रिया, फोड़ा, फफोला, बाँस की नली में जलन पैदा करने वाली औषधियों को भरकर गाय के थन में लगाकर फूँकना जिसमें उसका सब दूध बाहर निकल आवे।

फूद,फूदा-(हि०स्त्री०) फुँदना, झब्बा।

फूई-(हिं० स्त्री०) घी के ऊपर का गाज जो तपाने पर आ जाता है।

फूट-(हिं० स्त्री०) फूटने की क्रिया या भाव, विरोध, वैर, बिगाड़, एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर फूट जाती है।

फूटन-(हि० स्त्री०) किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो फूट कर अलग हो गया हो, शरीर के जोड़ों की पीड़ा।

फूटना-(हि० क्रि०) भग्न होना, खण्ड होना, नष्ट होना, बिगड़ना, शरीर पर दाने के रूप में प्रगट होना, अकुर शाखा आदि रूप में निकलना, अकुरित होना, अखुआ फूटना, व्याप्त होना, फैलना, मिला रहना, कली का खिलना, शब्द का मुख से निकलना, शरीर के जोड़ों में पीड़ा होना, किसी पतली वस्तु का रस कर निकलना, भेद खुलना, रोक का दवाव से हट जाना, खौलते पानी में बुलबुले निकलना, मुख से शब्द निकालना, बोलना, साथ छोड़ना, भीतर से झोक के साथ निकलना, प्रकाशित होना, कुरकना, दरकना, शाखा के रूप में अलग होकर सीध में निकलना, दूसरे पक्ष में जाना, मेड बाँध आदि का टूट जाना, फूटी आंखो न भाना-बहुत बुरा लगना; फूटफूट कर रोना-अति विलाप करना।

फूटा-(हि० वि०) भग्न, टूटा हुआ।

फूत्कार-(स०पु०) मुख से हवा छोड़ने का शब्द।

फूफा-(हिं०पु०) पिता की बहिन का पति।

फूफी-(हिं०स्त्री०) पिता की बहिन, बुआ।

फूल-(हिं० पु०) पौधों में वह ग्रन्थि जिसमें से फल उत्पन्न होते हैं, पुष्प, कुसुम, शरीर पर का सफेद दाग, श्वेत कुष्ट, पहली बार की उतारी हुई देशी शराब, मासिक धर्म में निकलने

वाला स्त्रियों का रुधिर, फुलिया, फूल के आकार की नक्काशी या वेलवूटे, स्त्रियों के पहरने का एक प्रकार का गहना, दीपक का गुल, आग की चिनगारी, तावे और रागे के मेल से बनी हुई एक मिश्र धातु, सूखे साग या भाग की पत्तियां, गर्भाशय, आटे चीनी आदि का उत्तम भेद, घुटने पर की गोल हड्डी, टिकिया, वह हड्डी जो शव जलाने पर बच जाती है, फूले झड़ना–मधुर और प्रिय शब्द बोलना, फूल सा–सुन्दर और सुकुमार, फूल सूघकर रहना–बहुत कम आहार करना।

फूल–(हिं० स्त्री०) प्रफुल्ल होने का भाव, आनन्द, प्रसन्नता, उत्साह।

फूलकारी–(हिं० स्त्री०) वेलवूटे बनाने का काम।

फूल गोभी–(हिं० स्त्री०) गोभी की एक जाति जिसमें मञ्जरियों का बधा हुआ ठोस पिण्ड होता है जो तरकारी के काम में आती है।

फूलडोल–(हिं०पु०) चैत्र शुक्ल एकादशी के दिन होने वाला एक उत्सव।

फूलदान–(हिं०पु०) काँच, पीतल, चीनी मिट्टी आदि का गिलास के आकार का फूलों को रखने का गुलदस्ता।

फूलदार–(हिं० वि०) जिस पर वेलवूटे या फूल पत्ते काढकर या अन्य प्रकार से बनाये गये हो।

फूलना–(हिं०क्रि०) फूलों से युक्त होना, किसी सतह का उठा होना, विकसित होना, खिलना, घमड करना, मोटा होना, मुह फुलाना, रूठना, शरीर के किसी भाग का सूजना, प्रफुल्ल होना, आनन्दित होना भीतर से किसी वस्तु के भर जाने से बाहरी हिस्सा बढ जाना, फूलना फलना–समृद्ध और सुखी होना, फूलना फालना–प्रफुल्ल होना, फूला फूला फिरना–आनन्द में घूमना, फूले अग न समाना–अति आनन्द युक्त होना; मुँह फुलाना–रूठना।

फूलविरज–(हिं० पु०) एक प्रकार का धान।

फूलमती–(हिं०स्त्री०) एक देवी का नाम, एक प्रकार की रागिणी।

फूला–(हिं० पु०) पक्षियों का एक रोग, ऊख का रस पकाने का बड़ा कड़ाहा, लावा।

फूली–(हिं० स्त्री०) सफेद दाग जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है, एक प्रकार की सब्जी।

फूस–(हिं० पु०) छप्पर आदि छाजने को सूखी हुई लम्बी घास, तृण, तिनका, खर।

फूहड़–(हिं० वि०) जो किसी काम को भली भांति न कर सके, जो वेढगी बातें करता हो, देखने में कुरूप और भद्दा।

फूहर–(हिं०वि०) देखो फूहड़।

फूहा–(हिं० पु०) रूई का गोला।

फूही–(हिं० लि०) पानी की महीन बूद, महीन बूंदो की झड़ी, झींसी।

फेंक–(हिं०स्त्री०) फेंकने की क्रिया का भाव

फेंकना–(हिं० क्रि०) इस प्रकार की गति देना कि दूर पर जा गिरे, एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान पर डालना, कुश्ती में पटकना, अपने ऊपर का भार दूसरे पर डालना, गँवाना, खोना, जुए में पासे आदि को भूमि पर लुड़काना, अपव्यय (फजूल खर्ची) करना, चलाना, उछालना, छोड़ना, तिरस्कार से त्यागना, असावधानी से इधर उधर हटाना।

फें करना–(हिं० क्रि०) चीत्कार सहित रोना।

फेंट–(हिं० स्त्री०) कमर का मण्डल या घेरा, कमर में बाधा हुआ कपड़ा, कमरबन्द, फेंटा, लपेट, फेंट धरना–कमर पकड़ लेना जिसमें भाग न सके (स्त्री०) फेंटने की क्रिया या भाव।

फेंटना–(हिं० क्रि०) लेप या लेई की तरह की किसी वस्तु को हाथ या अगुलियों से मथना, ताश की गड्डी को उलट पलट करके अच्छी तरह मिलाना।

फेंटा–(हिं०पु०) कमर का घेरा, कमरबद, पटुका, सिर पर लपेटने की छोटी पगड़ी।

फेंटी–(हिं० स्त्री०) अटेरन पर लपेटा हुआ सूत।

फेमी–(सं०वि०) देखो फेनी।

फेकरना–(हिं०क्रि०) आच्छादन रहित होना, नगा होना।

फेकारना–(हिं० क्रि०) खोलना या नगा करना।

फेन–(सं०पु०) जल के ऊपर उठा हुआ बुलबुला, झाग, नाक का मल, नेटा।

फेनक–(सं० पु०) टिकिया के आकार का एक पकवान।

फेनका–(सं०स्त्री०) रीठे का वृक्ष।

फेनप–(सं०वि०) फेन पीने वाला।

फेनमेह–(सं०पु०) एक प्रकार का प्रमेह जिसम वीर्य फेन की तरह थोड़ा थोड़ा गिरता है।

फेनल–(सं०वि०) फेनयुक्त।

फेनाग्र–(सं० नपु०) बुद्बुद, बुलबुला।

फेनिका–(सं० स्त्री०) फेनी नाम की मिठाई।

फेनिल–(सं० नपु०) वेर का फल, मैनफल, रीठे का पेड़ (वि०) फेनयुक्त, फेन वाला।

फेनी–(हिं० स्त्री०) लपेटे हुए सूत के लच्छे के आकार की मिठाई।

फेफड़ा–(हिं० पु०) शरीर के भीतर छाती के हड्डियो के नीचे का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव सास लेते हैं, फुफ्फुस।

फेफड़ी–(हिं० स्त्री०) गरमी या खुश्की से ओंठो पर पपड़ी पड़ना।

फेफरी–(हिं०स्त्री०) देखो फेफड़ी।

फेरु–(सं० पु०) शृगाल, सियार।

फेर–(हिं० पु०) घुमाव, चक्कर, उलटफेर, मोड़, घुमाव, उलझन, भ्रम, सशय, हानि, घाटा, भूत, प्रेत का

प्रभाव, युक्ति, उपाय, अदला बदला, रद्द बदल, अन्तर, फर्क, भेद, धोखा, दुबधा, झंझट, चालबाजी, ढंग, उपाय, युक्ति, दिशा, ओर (क्रि० अव्य०) पुनः, एकबार फिर, फेरखाना–घूम कर जाना, दिनों का फेर–समय या दशा का परिवर्तन, कुफेर–बुरे दिन, दुर्दशा, सुफेर–अच्छी दशा, फेर में पड़ना–भ्रम में पड़ना, निन्यानवे का फेर–धन संचित करने की लालसा, हेर फेर–उलट फेर, लेन देन।

फेरण्ड–(सं०पुं०) शृंगाल, सियार।

फेरना–(हिं० क्रि०) पलटना, बदलना, बारबार दोहराना, स्थान या क्रम बदलना, किसी पदार्थ की स्थिति बदलना, प्रचार करना, सामने ले जाकर रखना, घुमाना, घोड़े आदि को ठीक चलने की शिक्षा देना, वापस कर देना, लौटाना, ऐंठना, मरोड़ना, पीछे चलाना, भिन्न दिशा में प्रवृत्त करना, गति बदलना, चक्कर देना, किसी वस्तु पर रखकर इधर उधर ले जाना, चक्कर देना, पोतना, तह चढ़ाना, पानी फेरना–नष्ट करना, खराब करना।

फेरपलटा–(हिं०पु०) द्विरागमन, गौना।

फेरफार–(हिं०पु०) परिवर्तन, उलटफेर, चक्कर, अन्तर, घुमाव फिराव, पेंच, टाल मटूल, बहाना।

फेरव–(सं० पु०) सियार, राक्षस (वि०) धूर्त, चालबाज।

फेरवट–(हिं०स्त्री०) फेरने का भाव, लपेटने में एकबार का घुमाव, पेंच, अन्तर, फर्क, घुमाव फिराव।

फेरवा–(हिं० पु०) तार को दो तीन बार लपेट कर बनाया हुआ छल्ला।

फेरा–(हिं० पु०) परिक्रमण, चक्कर, लौटकर फिर आना, लपेट, फेर, बारबार आना जाना, आवर्त, घेरा, मण्डल, लपेटने में एकबार का घुमाव।

फेराफेरी–(हिं० स्त्री०) हेराफेरी, इधर का उधर।

फेरि–(हिं० अ०) पुनः, फिर से।

फेरी–(हिं० स्त्री०) परिक्रमा, प्रदक्षिणा, वह चरखी जिस पर रस्सी पर ऐंठन चढ़ाई जाती है, कई बार जाना, चक्कर, किसी फकीर का किसी बस्ती में भिक्षा के लिये फेरा लगाना, देखो फेरा, फेर।

फेरीवाला–(हिं०पु०)घूम घूम कर सौदा बेचने वाला व्यापारी।

फेरुआ–(हिं० पु०) देखो फेरवा।

फेरौरी–(हिं० स्त्री०) टूटे फूटे खपरैल निकाल कर उनके स्थान में नये खपरैल रखने की क्रिया।

फेल–(सं०नपु०) उच्छिष्ट, जूठा पदार्थ।

फ़ेल–(अ०नपु०) कार्य काम।

फेल–(अं०पुं०) किसी कार्य में असफलता

फेला–(सं० स्त्री०) जूठा पदार्थ।

फ़ेलो–(अं० पु०) सभासद, सभ्य।

फ़ेल्ट–(अं०पु०) जमाया हुआ ऊन।

फेस–(अं०पु०) चेहरा, सामना, घड़ी का सामने का भाग जिसपर अङ्क रहते हैं, टाइप का ऊपरी भाग जिसमें अक्षर उभडे हुए ढले होते हैं।

फेहरिस्त–(हिं०स्त्री०) देखो फिहरिस्त।

फैन्सी–(अं० स्त्री०) देखने में सुन्दर, रूप रंग में मनोहर, दिखौवा, तड़कभड़क।

फैक्टरी–(अं०स्त्री०) कारखाना।

फैज–(अं०पुं०)वृद्धि, लाभ,परिणाम,फल।

फैदम–(अं० पु०) गहराई की छ फुट की नाप।

फैर–(अं० स्त्री०) बंदूक तोप इत्यादि का दगना।

फैल–(हिं० स्त्री०) विस्तृत, लंबा चौड़ा, फैला हुआ।

फैलना–(हिं०क्रि०) लगातार स्थान घेरना बहुतायत से मिलना, पूरी तरह से तन करके किसी ओर बढ़ना, मुड़ा न रहना इधर उधर तक पहुँचना, आग्रह करना, प्रसिद्ध होना, ज़िद करना, स्थूल होना, मोटाना, बिखरना, अधिक खुलना, संख्या बढ़ना, व्यापक होना, भाग का ठीक ठीक लगना, छितराना,- बिखरना

फैलसूफ–(हिं०वि०) फजूल खर्च।

फैलसूफी–(हिं०स्त्री०) फज़ूल खर्ची।

फैलाना–(हिं० क्रि०) लगातार स्थान घिरवाना, इधर उधर दूर तक पहुँचाना, छेद या गड्ढे को बड़ा करना, हिसाब किताब करना, रेखा लगाना, वृद्धि करना, बढ़ाना, गुणा भाग की क्रिया को ठीक होने की परीक्षा करना, पसारना, प्रचलित करना, पूरा तान कर किसी ओर बढ़ाना, बिखेरना, व्यापक करना, छा लेना, प्रसिद्ध करना, चारो ओर प्रकट करना।

फैलाव–(हिं० स्त्री०) विस्तार, प्रचार, लंबाई चौड़ाई।

फैशन–(अं०पु०) चाल, ढंग, रीति,प्रथा

फैसला–(अ० पु०) इस बात का निबटारा कि दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है, किसी मुकदमे में अदालत की आखरी राय।

फोंक–(हिं० पु०) तीर के पीछे की नोक जिसपर पर लगाये जाते हैं, वस्त्र में की फटन।

फोंका–(हिं०पु०) लंबा और पोला चोंगा

फोंका गोला–(हिं० पु०) तोप का लंबा गोला।

फोंकट–(हिं०वि०) निःसार, पोला, व्यर्थ।

फोकला–(हिं० वि०) छिलका।

फोट–(हिं० पु०) स्फोट, धड़ाका।

फोकस–(अं० पु०) वह बिन्दु जहां पर प्रकाश की छितराई हुई किरणें एकत्रित होती हैं, फोटो लेती समय लेन्स द्वारा आई हुई छाया जो छाया चित्रपट पर पड़ती है।

फ़ोटो–(अं० पु०) छायाचित्र, फोटोग्राफ–फोटो के यन्त्र से उतारा हुआ चित्र, फोटोग्राफर–फोटो के चित्र उतारने वाला, फ़ोटाग्राफी–फोटो के यन्त्र द्वारा चित्र उतारने की कला।

फोड़ना–(हिं० क्रि०) खरी वस्तु के टुकडे टुकडे करना, फूट करके विग्रह कराना, एकबारगी भेद खोल देना, अंकुर, कनखे आदि का निकलना, शाखा के

रूप में अलग होकर किसी सीध में जाना, किसी पोली वस्तु पर आघात डालकर उसके खण्ड करना, साथ छुड़ाना, शरीर में घाव या फोड़े का निकलना, भेदभाव उत्पन्न करना, विदीर्ण करना।

फोड़ा–(हिं० पुं०) एक प्रकार का शोथ या उभाड़ जो शरीर पर रुधिर के बिगड़ने से उत्पन्न हो जाता है, इसमें जलन और पीड़ा होती है और रुधिर सड़ कर पीव हो जाता है।

फोड़िया–(हिं०स्त्री०) छोटा फोड़ा, फुंसी।

फ़ोता–(फा० ०पु) पटुका, कमरबन्द, पगड़ी, ज़मीन की लगान या पोत, कोष, थैली, अण्डकोष।

फोतेदार–(फा० पु०) कोषाध्यक्ष, खजानची, तहसीलदार, रोकड़िया।

फ़ोनोग्राफ–(अ० पुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसमें गाये हुए राग, कही हुई बातें, बाजे आदि के स्वर चूड़ियों में भरे जाते हैं और ज्यों के त्यों सुनाये जाते हैं।

फोया–(हिं० पु०) रूई का लच्छा।

फोरना–(हिं० क्रि०) देखो फोड़ना।

फ़ोरमैन–(अ० पु०) कारखाने में काम करने वालों का जमादार।

फ़ोलियो–(अ० पुं०) कागज़ के तख्ते का आधा भाग।

फोहारा–(हिं० पु०) देखो फ़ुहारा।

फौआरा–(हिं० पु०) देखो फ़ुहारा।

फौकिना–(हिं० क्रि०) डींग हाकना, बढबढ कर बातें करना।

फौज–(अ० स्त्री०) सेना, लश्कर, झुण्ड, जत्था।

फ़ौजदार–(फा० पु०) सेना का प्रधान, सेनापति।

फ़ौजदारी–(फा० स्त्री०) लड़ाई झगड़ा, मारपीट, दण्ड नियम, वह अदालत या कचहरी जहा ऐसे मुकदमो का निर्णय किया जाता है जिनमें अपराध किये हुए व्यक्ति को दण्ड मिलता है।

फौजी–(फा०वि०) फौज सबधी, सैनिक।

फौत–(अ०वि०) नष्ट, मृत, मरा हुआ।

फौरन–(अ०क्रि०वि०) तत्काल, झटपट।

फ़ौलाद–(फा० पु०) हथियार बनाने का उत्तम कड़ा लोहा।

फ़ौलादी–(फा० वि०) फौलाद का बना हुआ, दृढ़, मजबूत, (स्त्री०) भाले की लकड़ी।

फौवारा–(हिं० पु०) देखो फ़ुहारा।

फ्राक–(अ० पु०) बच्चों के पहरने का एक प्रकार का लबा कुरता।

फ्रान्स–पश्चिम युरोप में की फरासीसियों की जन्म भूमि, यह राज्य।

फ्री–(अ० वि०) स्वतन्त्र, बिना महसूल का, फ्री ट्रेड–वह वाणिज्य जिसमें माल पर किसी प्रकार का कर न लगे।

फ्रीमेसन्–(अ० पु०) फ्रीमेसनरी नामक गुप्त सघ का सदस्य।

फ्रेन्च्–(अ० वि०) फ्रान्स देश का।

फ्रेम–(अ०पु०) तसवीर आदि का चौखटा।

फ्लूट–(अ० पु०) बसी की तरह का एक अग्रेज़ी बाजा।

ब

ब–हिन्दी वर्णमाला का तेइसवा व्यजन तथा पवर्ग का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण दोनो ओठों को मिलाकर किया जाता है।

ब–(स० पु०) वरुण, जल, सिन्धु, गन्ध, कुम्भ, गत।

बंक–(हि० वि०) टेढा, तिरछा, विक्रमशाली, पुरुषार्थी, दुर्गम, जहा पहुचना कठिन हो, (अ० पु०) वह कार्यालय या सस्था जो अपने यहा लोगो का रुपया जमा करती और सूद देती है अथवा सूद पर ऋण देती है, लोगों की हुडिया लेती और भेजती है तथा सब प्रकार के महाजनी कारबार करती है।

बंकट–(हिं० वि०) वक्र, टेढा।

बंकनाल–(हि० स्त्री०) सुनारों की महीन फुकनी जिससे चिराग की लौ फूक कर वे महीन काम जोड़ते हैं।

बंकराज–(हि०पु०) एक प्रकार का सर्प।

बकवा–(हि०पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।

बंकसाल–(हि० पु०) जहाज का बड़ा कमरा।

बंका–(हि०वि०) टेढा, तिरछा, बलवान्, पराक्रमी।

बॉका–(पुं०) हरे रग का एक प्रकार का कीड़ा जो धान की फस्ल को हानि पहुँचाता है।

बंकाई–(हि०स्त्री०) टेढापन, तिरछापन।

बंकी–(हिं० स्त्री०) देखो बाक।

बंकुर–(हिं० पु०) देखो वक, टेढा।

बंकुरता–(हिं० स्त्री०) वक्रता, टेढापन

बंगला–(हि० पु०) एक मज़ला चारो ओर से खुला हुआ मकान जिसमें चारो तरफ बरामदे होते हैं, मकान की ऊपरी छत पर बना हुआ हवादार कमरा, बगाल देश का पान बगाली भाषा (वि०) बगाल सबधी, बगाल देश का।

बंगाला–(हि० पु०) बगाल प्रान्त, एक रागिणी का नाम।

बगालिका–(हि० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।

बंगाली–(हि० पु०) बगाल देश का निवासी, सपूर्ण जाति का एक राग

(स्त्री०) बंगाल देश की भाषा बंगाली।
बंगू-(हि० पु०) लड़कों का नचाने का एक खिलौना।
बंगोमा-(हि० पु०) एक प्रकार का कछुआ।
बंचक-(हिं० पु०) धूर्त, पाखंडी।
बंचकता, बंचकताई-(हिं० स्त्री०) धूर्तता, चालबाजी।
बंचन-(हि० पु०) छल, धूर्तता।
बंचनता-(हि० स्त्री०) ठगी, छल।
बंचना-(हि० स्त्री०) छल, ठगी (क्रि०) ठगना, धोखा देना।
बंचर-(हिं० पु०) देखो बनचर।
बँचवाना-(हि० क्रि०) दूसरे को पढने में प्रवृत्त करना, पढवाना।
बंचित-(हि० वि०) देखो वञ्चित।
बंछना-(हिं० क्रि०) इच्छा करना, चाहना।
बंछित-(हिं० वि०) देखो वाञ्छित।
बंज-(हि० पु०) देखो बनिज, एक प्रकार का पहाड़ी बलूत का वृक्ष।
बंजर-(हि० पु०) वह भूमि जिसमें कुछ उत्पन्न न हो सके, ऊसर।
बंजारा-(हि० पु०) देखो बनजारा।
बंझा-(हि० वि०) जिसके सन्तान न हो, बाँझ।
बँटना-(हिं० क्रि०) अलग अलग विभाग या हिस्सा होना, कई व्यक्तियों को अलग अलग किसी वस्तु का दिया जाना (पु०) देखो बटना।
बंटवाई-(हि०स्त्री०) बाँटने की मजदूरी।
बँटवाना-(हिं० क्रि०) वितरण करवाना, सब को अलग अलग करके दिलवाना, बाँटने का काम दूसरे से करवाना।
बँटवारा-(हि० पु०) बाटने की क्रिया, विभाग।
बँटवैया-(हि० वि०) बाँटने वाला।
बंटा-(हि० पु०) चौकोर या गोल छोटा डब्बा (वि०) छोटे आकार या कद का।
बँटाई-(हि० स्त्री०) वितरण, बाँटने का काम या मजदूरी, बाँटने का भाव, खेती की वह रीति जिसमें किसान भूमि की लगान न देकर फ़स्ल का निर्धारित अंश देता है।
बँटाना-(हि०क्रि०) अंश ले लेना, भाग करा लेना, किसी काम में हिस्सेदार होने के लिये अथवा दूसरे का बोझ हलका करने के लिये शामिल करना।
बँटावन-(हि० वि०) बाँटने या भाग करने वाला।
बंटी-(हि० स्त्री०) छोटा बटा, पशुओं को फँसाने की जाल।
बँटैया-(हि० पु०) हिस्सा देने वाला, बाँटने वाला।
बंडल-(अं० पु०) कागज, कपड़े आदि की बँधी हुई छोटी गठरी, पुलिंदा।
बंडा-(हि० पु०) एक प्रकार का कच्चू जो गोल गाँठदार होता है।
बंडी-(हि०स्त्री०) बिना आस्तीन की मिरजई, बगलबन्दी, फतुही।
बंडेरा-(हि०) खपरैल की छाजन में मगरे पर रखने की लकड़ी।
बंद-(फा०पु०) किसी वस्तु को बाँधने का पदार्थ, पानी रोकने की मेंड़, शरीर के अंगों का कोई जोड़, बन्धन, कैद, कागज का लंबा सकरा टुकड़ा, कपड़े का महीन फीता जो चोली अंगरखे आदि में पल्ले बाँधने के लिये सिला होता है, उर्दू की कविता का पद या टुकड़ा (फा० वि०) थमा हुआ, रुका हुआ, जो जारी न हो, जो किसी तरह की कैद में हो, जो बंधा हुआ हो, जो खुला न हो, इस प्रकार से घिरा हुआ कि उसके भीतर कोई जान सके, ढका हुआ, ताला बंद किया हुआ, जो चारो ओर से घिरा हो, जिसका मुँह या अगला भाग खुला न हो।
बंदगी-(फा०स्त्री०) ईश्वर का आराधना, ईश्वर की भक्ति पूर्वक वन्दना, सेवा, खिदमत, प्रणाम, सलाम, आदाब।
बंद गोभी-(हिं०स्त्री०)करमकल्ला,पातगोभी
बंदन-(हिं०पु०) देखो वन्दन (हिं० स्त्री०) रोली, ईंगुर, सिन्दूर।
बंदनता-(हि० स्त्री०) आदर या वन्दना किये जाने की योग्यता।
बंदनवार-(हि० पु०) वन्दनमाला, फूल पत्ते आदि की बनी हुई माला जो शुभ अवसरों में द्वार पर लटकाई जाती है, तोरण।
बंदना-(हि०स्त्री०) देखो वन्दना, (क्रि०) प्रणाम करना।
बंदनी-(हि० स्त्री०) सिर पर पहरने का स्त्रियों का एक आभूषण (वि०) देखो वन्दनीय।
बंदनीमाला-(हिं०स्त्री०) वह लंबी माला जो गले से पैरों तक लटकती हो।
बंदर-(हि० पु०) मनुष्य के आकार से मिलता जुलता एक पशु, कपि, मर्कट, बंदर घुड़की (भभकी) केवल डराने या धमकाने की डॉट डपट (फा० पुं०) समुद्र के किनारे पर का वह स्थान जहाँ जहाज ठहरते हैं।
बंदरगाह-(फा०पु०) समुद्र के किनारे पर जहाजों के ठहरने के लिये बना हुआ स्थान।
बंदली-(हि०पु०) एक प्रकार का धान।
बंदवान-(हि० स्त्री०) बंदीगृह का रक्षक, कैदखाने का अफसर।
बंदसाल-(हिं०पु०) कैदखाना, जेल।
बंदा-(फा० पु०) सेवक, दास, शिष्ट और विनीत भाषा में यह शब्द उत्तम पुरुष के लिये प्रयोग होता है।
बंदानी-(फा० पु०) गोलदाज़, तोप चलाने वाला, एक प्रकार का गुलाबी रंग
बंदारू-(हिं० वि०) आदरणीय, पूजनीय, वन्दन करने योग्य।
बंदाल-(हिं० पु०) देवदाली, घघरबेल।
बंदि-(हि० स्त्री०) कारानिवास, कैद।
बंदिया-(हि०स्त्री०) स्त्रियों के सिर पर पहरने का एक आभूषण, बंदी।
बंदिश-(फा०स्त्री०) बाँधने की क्रिया या भाव, रचना, योजना, प्रबंध, षड्यन्त्र।
बंदी-(फा०पु०) कैदी, (स्त्री०) दासी, चेरी।
बंदी-(हिं०पु०) चारणों की एक जाति जो प्राचीन काल में राजाओं की कीर्ति गान करती थी, भाट (स्त्री०) एक प्रकार

का आभूषण जिसको स्त्रियाँ सिर पर पहरती हैं।
बंदीखाना-(फा०पु०) कैदखाना, जेलखाना।
बंदीघर-(हि०पु०) देखो बंदीखाना।
बंदीवान-(हि०पु०) कैदी।
बंदूक-(अ०स्त्री०) धातु का बना हुआ नली के रूप का एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें सीसे की गोली रख कर बारूद से चलाई जाती है।
बंदूकची-(फा०पु०) बंदूक चलाने वाला सिपाही।
बंदूख-(हिं०स्त्री०) देखो बंदूक।
बंदेरी-(फा०स्त्री०) दासी, चेरी।
बंदोबस्त-(फा०स्त्री०) प्रबन्ध, इन्तेज़ाम, वह विभाग (मोहकमा) जिसके सपुर्द खेतों आदि को नाप कर उनका कर निर्धारित करने का कार्य होता है, खेती के लिये भूमि को नाप कर उसकी मालगुज़ारी स्थिर करना।
बंध-(हि० पु०) देखो बन्ध, बन्धन,
बंधक, बंधन-देखो बन्धक, बन्धन।
बँधना-(हि० क्रि०) बंधन में आना, बाँधा जाना, प्रेमपाश में बद्ध होना, मुग्ध होना, वचन बद्ध होना, फँसना, अटकना बंदी होना, कैद होना दुरुस्त होना, ठीक होना, स्थिर होना, (पु०) कोई बाँधने की वस्तु, वह थैली जिसमें स्त्रियाँ सीने परोने की सामग्री रखती हैं।
बँधनि-(हि०स्त्री०) वह जिसमें कोई चीज़ बंधी हो, बंधन, उलझाने या फँसाने की वस्तु।
बँधवाना-(हि० क्रि०) बाँधने का काम दूसरे से कराना, कैद कराना, तालाब, कुआ आदि बनवाना, नियत कराना, मुकर्रर कराना।
बंधान-(हिं०पु०) लेन देन के विषय में निश्चित क्रम या नियम, पानी रोकने का बाँध, संगीत में ताल का सम, वह धन या पदार्थ जो लेन देन की परिपाटी के अनुसार दिया जावे।
बँधाना-(हि० क्रि०) बाँधने का काम दूसरे से कराना, धारण कराना, कैद कराना।
बंधाल-(हिं०पुं०) जहाज या नाव की पेंदी में वह स्थान जहा पर पानी छेदों में से जमा हो जाता है।
बंधिका-(हि० स्त्री०) ताने की साथी बाँधने की डोरी।
बंधित-(हि० स्त्री०) वन्ध्या, बाँझ।
बंधी-(हिं० पु०) वह जिसमें किसी प्रकार का बंधन हो, बंधेज।
बंधुआ-(हि०पु०) बंदी, कैदी।
बँधुवा-(हि० पुं०) देखो बंधुआ।
बंधुक-(हि०पु०) देखो बन्धुक।
बंधुता, बंधुत्व-देखो बन्धुता, बन्धुत्व।
बंधेज-(हि०पु०) किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति, नियत समय पर अथवा नियत रूप से कुछ देने की क्रिया या भाव, प्रतिबन्ध, रुकावट, बाजीकरण, नियत समय पर नियत रूप से दिया जाने वाला धन या पदार्थ।
बंध्या-(हि०स्त्री०) देखो बन्ध्या, बाँझ स्त्री।
बंध्यापन-(हि० पु०) बाँझपन।
बंध्यापुत्र-(हिं० पु०) कोई असम्भव घटना।
बंपुलिस-(हि० स्त्री०) म्युनिसिपैलिटी आदि का बनाया हुआ सार्वजनिक मलत्याग करने का स्थान।
बंब-(हि० स्त्री०) ब ब शब्द जो शैव लोग कहा करते हैं, युद्ध के आरंभ में वीरों का उत्साहवर्धक नाद, हल्ला, दुंदुभी, नगाड़ा।
बंबा-(हिं० पु०) पानी की कल, जल का सोता, पानी बहने की नल।
बंबाना-(हिं० क्रि०) गौ आदि पशुओं का बाँबाँ शब्द करना, रंभाना।
बंबू-(हि० पुं०) बाँस की छोटी पतली नली जिससे चंडू पिया जाता है।
बंस-(हि०पुं०) देखो वंश, परिवार।
बंसकार-(हि० पु०) बाँसुरी।
बंसरी-(हि०स्त्री०) देखो बंसी।
बंसलोचन-(हिं० पुं०) बाँस का सार भाग जो उसके जल जाने के बाद सफेद छोटे छोटे टुकड़ों में पाया जाता है।
बंसार-(हिं०पु०) भण्डार घर।
बंसी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की मुह से फूक कर बजाने का बाजा जो बाँस की नली का बनाया जाता है, बाँसुरी, मछली फँसने का एक औज़ार, धान के खेतों में होने वाली एक प्रकार की घास, विष्णु, कृष्ण, और रामजी के चरणों का रेखा चिह्न (पु०) एक प्रकार का गेहूँ।
बंसीधर-(हि०पु०) वंशीधर, श्रीकृष्ण।
बहंगी-(हिं०स्त्री०) भार ढोने का एक उपकरण जिसमें बाँस के डंडे के दोनों सिरों पर रस्सियों में छीके लटकाये रहते हैं।
बहिष्ट-(स०वि०) बहुत अधिक, बहुत ज़्यादा।
बइठना-(हि०क्रि०) देखो बैठना।
बउर-(हिं०पु०) देखो बौर।
बउरा-(हि०वि०) बावला, पागल।
बक-(स० पु०) बगुला, अगस्त का फूल, कुबेर, एक राक्षस जिसको भीमसेन ने मारा था, बकासुर (हि०स्त्री०) बकबक, बकवाद।
बकचंदन-(हि०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष
बकचा-(हिं०पु०) देखो बकुचा।
बकची-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की मछली
बकजित्-(स० पु०) भीमसेन, श्रीकृष्ण।
बकठाना-(हि०क्रि०) किसी बहुत कसैली चीज़ के खाने से मुख का स्वाद बिगड़ जाना।
बकतर-(फा०पु०) लोहे की कड़ियों का बना हुआ जाल, लड़ाई में पहरने का एक प्रकार का जिरह या कवच।
बकता-(हि०वि०) देखो वक्ता।
बकदर्शी-(स०पु०) पारावत, कबूतर।
बकध्यान-(हिं०पु०) पाखंड पूर्ण मुद्रा, ऐसी चेष्टा या ढंग जो देखने में बड़ी साधु जान पड़े परन्तु जिसका भीतरी आशय अनुचित और दुष्ट हो।

बकध्यानी-(हि॰वि॰) वह जो देखने में सीधा सादा परन्तु वस्तुतः कपटी हो।
बकना-(हि॰क्रि॰) प्रलाप करना, बड़बड़ाना, ऊटपटाग बातें करना।
बकनिसूदन-(स॰ पु॰) भीमसेन, श्रीकृष्ण।
बकपञ्चक-(स॰नपु॰) कार्तिक महीने की शुक्ल पक्षी की एकादशी से पूर्णमासी तक का समय।
बकबक-(हि॰ स्त्री॰) प्रलाप, बकवाद, बकने की क्रिया या भाव।
बकमौन-(हि॰पु॰) अपना उद्देश्य सिद्ध करने के लिये बगले की तरह सीधे बन कर चुपचाप रहने की क्रिया या भाव, (वि॰) चुपचाप अपना काम साधने वाला।
बकयन्त्र-(स॰पु॰) मुडे हुए लबे गरदन की काच की गोल पेंदें की शीशी जिसको वैद्य लोग तेल आदि उतारने के काम में लाते हैं।
बकर-कसाब-(हि॰पु॰) वह पुरुष जो बकरों का मास बेंचता हो।
बकरना-(हि॰क्रि॰) आप से आप बकना, बड़बड़ाना, अपना दोष या करतूतें स्वय कबूल करना या कह देना।
बकरा-(हिं॰ पु॰) फटे हुए खुर का एक प्रसिद्ध छोटे कद का चौपाया जिसकी पूछ और सींग छोटी होती है, यह जुगाली करता है, कुछ बकरों की ठोढ़ी के नीचे दाढी भी होती है।
बकराना-(हि॰क्रि॰) दोष या करतूत कहलाना, बकरीद, मुसलमानो का एक पर्व।
बकल-(हिं॰ पु॰) देखो बकला।
बकलस-(अ॰पु॰) लोहे, पीतल आदि का बना हुआ अकुसीदार छल्ला जो किसी बधन के दोनों छोरों के मिलाये रखने या कसने के काम में लाया जाता है।
बकला-(हि॰ पु॰) पेड़ की छाल, फल के ऊपर का छिलका।
बकली-(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का सुन्दर लबा वृक्ष।
बकवाद-(हि॰ स्त्री॰) व्यर्थ की वार्ता, बकबक।
बकवादी-(हिं॰ वि॰) बकबक करने वाला, बक्की।
बकवाना-(हि॰ क्रि॰) बकने के लिये किसी को प्रेरणा करना, किसी से बकवाद॰कराना।
बकवास-(हिं॰ स्त्री॰) व्यर्थ की बातचीत, बकबक करने का अभ्यास या इच्छा।
बकवृत्ति-(स॰ पुं॰) कपटचारी मनुष्य जो बगले के समान नीचा मुख किये रहता है।
बकवैरी-(स॰पु॰) बलराम, श्रीकृष्ण।
बकव्रती-(स॰ पु॰) मिथ्या विनीत, कपटी।
बकस-(अ॰ पु॰) कपडे, कागज़ आदि रखने का सदूक, छोटा डब्बा, खाना।
बकसा-(हिं॰पु॰) जल में होने वाली एक प्रकार की घास।
बकसना-(हिं॰ क्रि॰) देखो बख्शना।
बकसाना-(हि॰ क्रि॰) क्षमा कराना, माफ करना।
बकसी-(हि॰ पुं॰) देखो बख्शी।
बकसीला-(हि॰ वि॰) जिसके खाने से जीभ ऐंठने लगे और मुख का स्वाद बिगड़ जाय।
बकसीस-(फा॰स्त्री॰)पारितोषिक इनाम।
बकसुआ-(हि॰ पु॰) देखो बकलस।
बकाउर-(हिं॰ स्त्री॰) देखो बकावली।
बकाना-(हिं॰ क्रि॰) बकबक करने के लिये उद्यत करना, बकबक कराना, कहलाना।
बकायन-(हि॰पु॰) नीम की जाति का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और हलकी होती है।
बकाया-(अ॰पु॰) शेष,बाकी, बचा हुआ
बकारि-(स॰ पु॰) श्रीकृष्ण, भीमसेन।
बकारी-(हिं॰ स्त्री॰) मुख से निकलने वाला शब्द।
बकावली-(हिं॰स्त्री॰)देखो गुलबकावली।
बकासुर-(स॰ पु॰) एक दैत्य जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
बकी-(हि॰ स्त्री॰) बकासुर की बहिन पूतना का एक नाम।
बकुचा-(हिं॰पु॰) छोटी गठरी, बकचा।
बकुचना-(हिं॰ क्रि॰) सकुचित होना, सिकुड़ना।
बकुचाना-(हि॰ क्रि॰) किसी वस्तु को गठरी बाँध कर कधे पर लटकाना या पीठ पर बाधना।
बकुची-(हिं॰ स्त्री॰) एक पौधा जो औषधियों के काम में आता है, छोटी गठरी।
बकुचौंहाँ-(हिं॰वि॰) बकुचे के समान
बकुर-(स॰ पु॰) सूर्य, बिजली (वि॰) भयकर, डरावना।
बकुरना-(हि॰क्रि॰) देखो बकरना।
बकुराना-(हि॰ क्रि॰) स्वीकार कराना, मजूर कराना।
बकुल-(स॰ पु॰) मौलसिरी का वृक्ष।
बकुला-(हिं॰ पु॰) देखो बगला।
बकुली-(स॰स्त्री॰) बकुल, मौलसिरी।
बकेन,बकेना-(हिं॰ स्त्री॰) वह गाय या भैंस जिसको बच्चा दिये प्रायः सालभर हो गया हो, जो बरदाई न हो और दूध देती हो।
बकेल-(हिं॰स्त्री॰) परास की जड़ जिसको कूटकर रस्सी बनाई जाती है।
बकैयाँ-(हिं॰ पु॰) बच्चों का घुटने के बल चलने का ढङ्ग।
बकोट-(हि॰स्त्री॰) बकोटने या नोचने की क्रिया या भाव, किसी पदार्थ की उतनी मात्रा जो एक बार चगुल में पकड़ी जा सके।
बकोटना-(हिं॰ क्रि॰) पजा मारना, नाखूनों से नोचना।
बकौड़ा-(हि॰पु॰) परास की कूटी हुई जड़ जिसकी रस्सी बनाई जाती है।
बकौरी-(हि॰स्त्री॰)देखो गुलबकावली।
बक्कम-(अ॰ पु॰) एक पेड़ जो छोटा और नुकीला होता है, इसकी लकड़ी मज़बूत होती है, इसकी लकड़ी, छिलके और फलों से लाल रग निकाला जाता है

बक्कल–(हिं॰पु॰) वल्कल, छिलका, छाल।
बक्का–(हिं॰ पु॰) धान के फस्ल में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
बक्काल–(अ॰ पु॰) बनियाँ।
बक्की–(हिं॰ वि॰) बकवाद करने वाला, बहुत बोलने वाला, एक प्रकार का भदहिंया धान।
बक्कुर–(हिं॰ पु॰) वचन बोली।
बक्खर–(हिं॰ पु॰) वह खमीर जो कई प्रकार के पौधे पत्तियों और जड़ों को कूटकर तैयार किया जाता है।
बक्स–(हिं॰ पु॰) देखो बकस।
बखत–(हिं॰ पु॰) देखो वक्त।
बखतर–(हिं॰ पु॰) देखो बकतर।
बखर–(हिं॰ पु॰) देखो बक्खर।
बखरा–(हिं॰ पु॰) भाग, हिस्सा, बाँट।
बखरी–(हिं॰ स्त्री॰) एक कुटुम्ब के रहने योग्य ईंट मिट्टी आदि का बना हुआ गाँव का मकान।
बखरैत–(हिं॰ पु॰) हिस्सेदार, साझीदार।
बखसीस–(हिं॰ स्त्री॰) देखो बक्सीस।
बखान–(हिं॰ पु॰) वर्णन, कथन, गुण-कीर्तन, प्रशंसा, बड़ाई।
बखानना–(हिं॰क्रि॰) वर्णन करना, कहना, बुरा भला कहना, गाली गलौज देना, प्रशंसा करना।
बखार–(हिं॰ पु॰) दीवार या टट्टी आदि से घेर कर बनाया हुआ अन्न रखने का स्थान।
बखारी–(हिं॰ स्त्री॰) छोटा बखार।
बखिया–(फा॰ पु॰) एक प्रकार की महीन और मज़बूत सिलाई।
बखियाना–(हिं॰ क्रि॰) किसी वस्त्र पर बखिया की सिलाई करना, बखिया करना
बखीर–(हिं॰ स्त्री॰) मीठे रस में पकाया हुआ चावल, एक प्रकार की खीर।
बखील–(अ॰ वि॰) कृपण, कंजूस।
बख़ूबी–(फा॰ क्रि॰ वि॰) पूर्ण रूप से, भलीभाँति, अच्छी तरह से।
बखेड़ा–(हिं॰ पुं॰) आडम्बर, व्यर्थ का विस्तार, कठिनता, विवाद, झगड़ा, झंझट, उलझन।
बखेड़िया–(हिं॰वि॰) बखेड़ा करने वाला, झगड़ालू।
बखेरना–(हिं॰ क्रि॰) चीजों को इधर उधर फैलाना या फेंकना।
बखेरी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का कँटीला वृक्ष।
बखोरना–(हिं॰ क्रि॰) टोकना, छोड़ना।
बख़्त–(फा॰ पु॰) भाग्य, तकदीर।
बख्तर–(फा॰ पु॰) बकतर, सन्नाह।
बख्शना–(फा॰ क्रि॰) देना, त्यागना, छोड़ना, क्षमा करना।
बख्शवाना–(हिं॰क्रि॰) किसी को बख्शने में प्रवृत्त करना।
बख़्शिश, बख्शीश–(फा॰ स्त्री॰) उदारता, दानशीलता, दान क्षमा।
बग–(हिं॰ पु॰) बगला।
बगई–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की घास, एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है।
बगछुट–(हिं॰क्रि॰वि॰) बड़े वेग से, सरपट चाल से।
बगड़ना–(हिं॰ क्रि॰) बिगड़ना, खराब होना, बहकना, भूलना, ठीक रास्ते से हट जाना, गिरना।
बगडर–(हिं॰ पु॰) मच्छड़।
बगड़वाना–(हिं॰ क्रि॰) बिगड़वाना, खराब कराना, भुलवाना, प्रतिज्ञा भंग करना, गिरा देना।
बगदाद–तुरकी की राजधानी।
बगदाना–(हिं॰ क्रि॰) खराब करना, बिगाड़ना, भड़काना, भुलाना।
बगना–(हिं॰क्रि॰) घूमना फिरना।
बगनी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की घास, बगई।
बगमेल–(हिं॰पु॰) बराबर २ चलना, पांति बांध कर चलना, समानता।
बगर–(हिं॰ पु॰) प्रसाद, महल, बड़ा मकान, दरवाज़े के सामने का सहन, आंगन, गाय बाँधने का का स्थान, घर, कोठरी, मकान (स्त्री॰) बगल।
बगरना–(हिं॰ क्रि॰) बिखरना, फैलना, छितराना।
बगराना–(हिं॰क्रि॰) छितराना, फैलाना, बिखरना।
बगरी–(हिं॰पु॰) एक प्रकार का भदैंया धान
बगरूरा–(हिं॰पु॰) देखो बगुला।
बगल–(फा॰स्त्री॰) बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, काँख, समीप का स्थान, अंग-रखे या कुरते आदि की अस्तीन में कंधे के जोड़ के नीचे लगाया हुआ कपड़े का टुकड़ा, इधर उधर का या किनारे का भाग, पार्श्व भाग, बगल में दबाना–अपने अधिकार में रखना, बगलें बजाना–बड़ी खुशी मनाना, बगलें झांकना–भागने का प्रयत्न करना
बगल गंध–(हिं॰ पु॰) काख का फोड़ा, कँखौरी, एक प्रकार का रोग जिसमें काँख से बड़ी दुर्गन्ध निकलती है।
बगलबंदी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार की मिरजई जिसमें बगल के नीचे बंद लगे रहते हैं।
बगला–(हिं॰ पुं॰) सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, एक झाड़ीदार पौधा।
बगलामुखी–(सं॰स्त्री॰) एक तान्त्रिक देवी
बगलियाना–(हिं॰ क्रि॰) अलग करना, बगल में लाना या करना, बगल से होकर जाना, राह काट कर निकलना।
बगली–(हिं॰वि॰) बगल का, बगल से सम्बंध रखने वाला, कपड़े का वह टुकड़ा जो अंगे, कुरते आदि में अस्तीन के नीचे लगाया जाता है, वह थैली जिसमें दर्जी सुई तागा रखते हैं, बगली टांग–कुश्ती की एक पेंच, बगली बाँह–एक प्रकार की कसरत, बगली लंगोट–कुश्ती का एक पेंच।
बगलौहाँ–(हिं॰ वि॰) बगल ओर झुका हुआ, तिरछा।
बगसना–(हिं॰क्रि॰) देखो बख्शना।
बगा–(हिं॰पु॰) जामा, बागा, (पु॰) बगला।
बगाना–(हिं॰ क्रि॰) टहलाना घुमाना, फिराना, जल्दी जल्दी जाना, भागना।
बगार–(हिं॰पुं॰) गाय बांधने का स्थान।
बगारना–(हिं॰क्रि॰) पसारना, फैलाना।
बग़ावत–(अ॰स्त्री॰) बागी होने का भाव,

विद्रोह, बलवा, राजद्रोह।
बगिया–(हिं०स्त्री०) छोटा बगीचा, छोटा उपवन।
बगीचा–(फा० पु०) उपवन, वाटिका, छोटा बाग।
बगुला-(हि०पु०) देखो बगला।
बगूला–(हिं०पु०) वह वायु जो गरमी के दिनों में कभी कभी एक स्थान पर भँवर सी घूमती हुई देख पड़ती है, वातचक्र, बवन्डर।
बगेरी–(हि० स्त्री०) खाकी रङ्ग की एक छोटी चिड़िया।
बगैचा–(हि०पुं०) देखो बगीचा।
बगैर–(अ०अव्य०) विना, सिवाय।
बग्गी, बग्घी–(हि० स्त्री०) पालकी के आकार की चौपहिया गाड़ी।
बघम्बर–(हिं०पु०) बाघ की खाल जिस पर साधु लोग बैठ कर ध्यान लगाते हैं, बाघ की खाल की तरह बिना हुआ कम्बल।
बघनहा–(हिं०पु०) एक प्रकार का हथियार जिसमें नाखून के समान चिपटे टेढ़े काँटे रहते हैं, यह अगुलियों में पहना जाता है, एक प्रकार का गहना जिसमें बाघ के नख सोने या चादी में मढे रहते हैं।
बघार-(हि० पु०) छौंक, तड़का, बघारने की महँक, बघारने का मसाला।
बघारना–(हि० क्रि०) तड़का देना, छौंकना, अपनी योग्यता से अधिक बेमौके खर्च करना।
बघेरा–(हि० पु०) लकड़बग्घा।
बघेली–(हिं०स्त्री०) बरतन खरादने वालो का खूँटा।
बच–(हि० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ औषधों में प्रयोग होती हैं, वचन, वाक्य।
बचका–(हि० पु०)एक प्रकार का पकवान
बचकाना–(हि० वि०) बच्चों के योग्य, बच्चों के समान, थोड़ी अवस्था का।
बचत–(हिं० स्त्री०) वह अश जो व्यय होने के बाद बच रहे, शेष, बचाव, बचने का भाव, लाभ, मुनाफा।
बचन–(हि० पु०) वाणी, वचन, वचन डालना-माँगना, वचन छोड़ना-प्रतिज्ञा भग करना, कहकर मुकर जाना, वचन बाँधना-प्रतिज्ञा करना, वचन हारना-बात हारना।
बचना–(हि० क्रि०) रक्षित रहना, हटना, अलग होना, दूर रहना, परहेज़ करना, बाकी रहना, छूट जाना, रह जाना, छूट जाना, किसी के अन्तर्गत न आना
बचपन–(हि० पु०) बाल्यावस्था, लड़कपन
बचवैया–(हिं० वि०) बचाने वाला, रक्षा करने वाला।
बचा–(हि० पु०) देखो बच्चा, लड़का।
बचाना–(हि० क्रि०) कष्ट या आपत्ति से हटा रखना, रक्षा देना, पीछे करना, हटाना, व्यय न होने देना, किसी बुरी बात से अलग रखना, छिपाना, चुराना, प्रभाव न पड़ने देना, ऐसे रोग से मुक्त करना जिसमे मृत्यु का भय हो।
बचाव–(हि०पु०) बचाने का भाव, रक्षा।
बचिया–(हि० स्त्री०) कसीदे के काम में छोटी छोटी बूटियाँ।
बचूना–(हि० पु०) भालू का बच्चा।
बचो–(हि० पु०) एक प्रकार की बारहमासी लता।
बच्चा–(फा० पु०) किसी प्राणी का नवजात शिशु, बालक, लड़का, बच्चों का खेल–सरल कार्य, (वि०) अनभिज्ञ, अनजान, बच्चाकश–जो बहुत से बच्चे जनती हो, बच्चादानी–गर्भाशय।
बच्ची–(हिं० स्त्री०) छोटी कन्या, बालिका।
बच्छ–(हिं० पुं०) बच्चा, बेटा, बछडा।
बच्छनाग–(हिं० पु०) देखो बछनाग।
बच्छल–(हिं० वि०) देखो वत्सल, माता पिता के समान लाड़ प्यार करनेवाला।
बच्छस–(हि० पु०) छाती, सीना।
बच्छा–(हि० पु०) गाय का बछवा, किसी जानवर का बच्चा।
बछ, बछड़ा–(हिं० पुं०) गाय का बच्चा।
बछनाग–(हि० पु०) हिरन के सींग के आकार का एक स्थावर विष जो एक पहाड़ी पौधे की जड़ है।
बछरा–(हि० पु०) देखो बछड़ा।
बछरू–(हिं० पु०) देखो बछड़ा, बछवा।
बछल–(हिं० वि०) देखो वत्सल।
बछवा,बछेड़ा–(हि० पु०) गाय का बच्चा
बछेरू–(हि० पु०) देखो बछड़ा।
बछौटा–(हि० पु०) वह चन्दा जो हिस्से मुताबिक लगाया जावे।
बजत्री–(हि०पु०) बाजा बजाने वाला, बजनियाँ।
बजकन्द–(हिं० पु०) एक प्रकार की जगली लता।
बजकना–(हि० क्रि०) किसी पदार्थ का सड़कर बुलबुले फेंकना, बजबजाना।
बजका–(हि० पु०) बेसन की पकौड़ी जो पानी में भिगोकर दही में डाली जाती है।
बजट–(अ० स्त्री०) आगामी वर्ष या मास के लिये होनेवाले आय व्यय का लेखा, जो पहिले से तैयार किया जाता है।
बजड़ना–(हि०क्रि०) पहुचना, टकराना।
बजड़ा–(हि०पु०) देखो बजरा।
बजनक–(हि०पु०) पिस्ते का फूल जिससे रेशम रगा जाता है।
बजना–(हि० क्रि०) किसी प्रकार के आघात या हवा के ज़ोर से बाजे आदि मे शब्द उत्पन्न होना, प्रसिद्ध होना, प्रहार होना, आघात पड़ना, अड़ना, हठ करना, शस्त्रों का चलाना, बोलना, ज़िद करना, (पु०) बजाने वाला बाजा, रुपया, (वि०) बजाने वाला।
बजनियां–(हिं०पु०) बाजा बजाने वाला।
बजनिहा–(हि०पु०) देखो बजनिया।
बजनी–(हि० वि०) बजाने वाला, जो बजाता हो।
बजमारा–(हि०वि०) वज्र से मारा हुआ, जिस पर वज्र पड़ा हो।
बजरग–(हिं० वि०) वज्र के समान पुष्ट शरीर वाला।
बजरगबली–(हिं०पु०) महावीर, हनुमान।
बजर–(हि० पु०) देखो वज्र।
बजरबट्टू–(हिं० पु०) एक वृक्ष के फल का दाना जिसकी माला बनाकर बच्चों

को पहिराई जाता है।
बजरंग बोंग–(हिं० पु०) बास का मोटा भारी डडा, एक प्रकार का अगहनिया धान।
बजरहड्डी–(हिं०स्त्री०) घोडे के पैर मे होने वाला एक प्रकार का फोड़ा।
बजरा–(हिं० पु०) एक प्रकार की बड़ी पटी हुई नाव, देखो बाजरा।
बजरागि–(हिं०स्त्री०) देखो बिजली।
बजरी–(हिं०स्त्री०) ककड़ के छोटे छोटे टुकडे जो गच के ऊपर पीट पर बैठाया जाता है, किले की दीवारों के ऊपर बना हुआ कगूरा जिसके छिद्रो मे से गोली चलाई जाती हैं, ओला,
बजवाई–(हिं० स्त्री०) बाजा बजाने की मज़दूरी।
बजवाना–(हिं० क्रि०) बजाने के लिये किसी को प्रेरणा करना, बजाने मे किसी को प्रवृत्त करना।
बजवैया–(हिं० वि०) जो बजाता हो, बजाने वाला।
बजा–(फा०वि०) उचित, वाजिब, ठीक,
बजालाना–किसी कार्यको पूरा करना।
बजागि–(हिं०पु०) वज्रकी आग, बिजली।
बजाज–(अ० पु०) कपडे का व्यापारी, कपड़ा बेंचने वाला।
बजाजा–(फा० वि०) कपड़ा बिकने का स्थान, बजाजो का बाज़ार।
बजाजी–(फा० स्त्री०) कपड़ा बेंचने का व्यापार, बजाज का काम, बजाज की दूकान का सामान।
बजाना–(हिं० क्रि०) बाजे आदि पर आघात पहुचा कर अथवा हवा के ज़ोर से उसमे से शब्द उत्पन्न करना, आघात पहुचाना, किसी वस्तु से मारना, बजाकर–सब के सन्मुख, प्रत्यक्ष रूपसे, ठोकना–बजाना–भली भांति जाच पड़ताल करना।
बजाय–(फा०अव्य०) स्थान पर, बदले में।
बजार–(हिं०पु०) देखो बाज़ार।
बजारी–(हिं०वि०) साधारण, सामान्य, बजारू।
बजुआ–(हिं०पु०) देखो बाजू।
बजुल्ला–(फा०पु०) बाह पर पहरने का एक गहना, बिजायठ।
बजूखा–(हिं०पु०) देखो बजूखा।
बज्जर–(हिं० वि०) कड़ा, पुष्ट (पु०) देखो वज्र।
बज्जात–(हिं०वि०) बज्जात, दुष्ट, पाजी।
बज्जाती–(हिं० स्त्री०) दुष्टता, पाजीपन।
बज्र–(हिं० पु०) देखो वज्र।
बझवट–(हिं० स्त्री०) बाझ स्त्री, कोई मादा पशु, बाल तोडी हुई पौधों की डठल।
बझना–(हिं० क्रि०) बधन मे पड़ना, फसना, उलझना, ज़िद करना।
बझान–(हिं०स्त्री०) बझने की क्रिया या भाव, बझाव।
बझाना–(हिं० क्रि०) बधन मे डालना, उलझाना, फसाना।
बझाव–(हिं० पु०) फँसने की क्रिया या भाव, अटकाव, उलझन।
बझावट–(हिं० स्त्री०) बझने की क्रिया या भाव, उलझाव।
बझावना–(हिं० क्रि०) देखो बझाना।
बट–(हिं० पु०) देखो वट, बड़ा नामक का पकवान, गोल वस्तु, मार्ग, रास्ता, बट्टा, लोढिया, बाँट, बटखरा, रस्सी की ऐठन या बल।
बटई–(हिं० स्त्री०) बटेर नामकी चिड़िया
बटखर, बटखरा–(हिं०पुं०) तौलने का मान, बाट।
बटन–(अं० पु०) धातु आदि की बनी हुई चिपटी गोल घुडी जो पहरने के वस्त्रों में सिली जाती है, (हिं० स्त्री०) रस्सी आदि बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव, एक प्रकार का बादले का तार।
बटना–(हिं० क्रि०) कई तन्तुओं तागों या तारों को एक साथ मिलाकर इस प्रकार ऐंठना कि वे सब मिल कर एक हो जावें, सिल पर रख कर किसी वस्तु का पिसा जाना।
बटपरा–(हिं० पुं०) देखो बटवार।
बटपार–(हिं० पु०) देखो बटमार।
बटपारी–(हिं० स्त्री०) डकैती, ठगी।
बटम–(हिं० पु०) कोना नापने का यन्त्र, गोनिया।
बटमार–(हिं० पुं०) डाकू, लुटेरा।
बटला–(हिं० पु०) देग, देगचा, बड़ी बटलोई।
बटली, बटलोई–(हिं०स्त्री०) चौड़े मुह का गोल बरतन, देगची।
बटवाना–(हिं०क्रि०) देखो बटवाना।
बटवायक–(हिं० पु०) रास्ते पर पहरा देने वाला, चौकीदार।
बटवार–(हिं० पु०) रास्ते पर पहरा देने वाला पहरेदार।
बटा–(हिं० पु०) गोल वस्तु, गोला, पथिक बटोही, राही, गेंद, ढेला, रोड़ा, गणित में अपूर्ण सख्या में अश भाग यथा $\frac{3}{5}$ तीन बटा पाच।
बटाई–(हिं०स्त्री०) बटने या ऐंठन डालने का काम, बटने की मज़दूरी, देखो बँटाई
बटाऊ–(हिं० पु०) बाट चलने वाला, बटोही, पथिक, **बटाऊ होना**–चलेजाना
बटाक–(हिं० वि०) बड़ा, ऊचा।
बटाना–(हिं०क्रि०) रुक जाना, बद हो जाना
बटाली–(हिं० स्त्री०) बढ़इयो का एक औज़ार, रुखानी।
बटिया–(हिं० स्त्री०) कोई गोलमटोल टुकड़ा, छोटा गोला, लोढिया, छोटा बट्टा।
बटी–(हिं०स्त्री०) बड़ी नामका पकवान।
बटुआ–(हिं०पु०) देखो बटुवा, (वि०) सिल बट्टे से पिसा हुआ।
बटुक–(स०पु०) लड़का, बच्चा।
बटुरना–(हिं०क्रि०) सिमटना, फैला न रहना, इकट्ठा होना।
बटुला–(हिं० पु०) बड़ी बटलोई।
बटुवा–(हिं०पु०) कपडे या चमडे की थैली जिसमें कई खाने रहते हैं, बड़ी बटलोई।
बटेर–(हिं०स्त्री०) तीतर या लवा की जात की एक छोटी चिड़िया जो भूरे रग की होती है।
बटेरबाज–(हिं० पुं०) बटेर पालने या लड़ाने वाला।

बटेरबाजी–(हि० स्त्री०) बटेर पालने या लड़ाने का काम।
बटेरा–(हिं०पु०) कटोरा, गहरी तश्तरी।
बटोई–(हिं०पु०) देखो बटोही।
बटोर–(हि० पु०) बहुत से मनुष्यों का इकठ्ठा होना, गमघट, जमावड़ा, कूडे करकट का ढेर, वस्तुओं का ढेर जो इधर उधर से बटोर कर इकट्ठा किया गया हो।
बटोरन–(हि० स्त्री०) बटोर कर इकट्ठा किया हुआ ढेर, कूडे करकट का ढेर।
बटोरना–(हिं०क्रि०) बिखरी हुई वस्तुओ को इकठ्ठा करके ढेर लगाना, समेटना फैला न रहने देना।
बटोहिया–(हि०पु०) देखो बटोही।
बटोही–(हि० पुं०) पथिक, राहगीर, मुसाफिर।
बट्ट–(हि० पु०) गेंद, गोला, बाँट, बटखरा, बल, शिकन।
बट्टा–(हि० पु०) दलाली, दस्तूरी, हानि, नुकसान, पूरे मूल्य में वह कमी जो किसी सिक्के आदि के तुड़ाने में देना पडे, पान अथवा जवाहिरात रखने का डिब्बा, एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी, पत्थर आदि का गोल टुकड़ा, कूटने या पीसने का पत्थर, लोढ़ा, वह कमी जो लेनदेन में किसी वस्तु के मूल्य में दी जाती है, बट्टा लगना–कलक लगना।
बट्टा खाता–(हिं०पुं०) वह वही जिसमें डूबी हुई रकम का लेखा रहता है।
बट्टा ढाल–(हि० वि०) खूब समतल और चिकना।
बट्टी–(हि०स्त्री०) छोटा बट्टा, पत्थर आदि का गोल छोटा टुकड़ा बड़ी टिकिया, कटा हुआ चिकना टुकड़ा, कूटने पीसने का पत्थर, लोढ़िया।
बट्टू–(हि०पु०)धारीदार चारखाना, बजर-बट्टू, बोड़ा, लोबिया नामक तरकारी।
बट्टेबाज–(हि०वि०) जादूगर, धूर्त,चालाक
बठिया–(हि० स्त्री०) पाथे हुए सूखे कडों का ढेर।
बठूचना–(हिं०क्रि०) देखो बैठना।
बडगा–(हि० पु०) देखो वड़ेरी।
बगड़ी–(हि० पु०) अश्व, घोड़ा।
बड़–(हिं०स्त्री०) प्रलाप, बकवाद (पुं०) बरगद का वृक्ष। (वि०) बड़ा।
बड़कुइयाँ–(हिं० पु०) कच्चा कुआँ।
बड़गूजर–राजपुताना वासी एक क्षत्रिय जाति।
बड़गुल्ला–(हिं० पु०) एक प्रकार का बगला।
बड़दुमा–(हिं०पुं०) लम्बी पोंछ का हाथी।
बड़प्पन–(हि० पु०) महत्व, गौरव, श्रेष्ठता, बड़ाई।
बड़बट्टा–(हि०पु०) बरगद का फल।
बड़बड़–(हि०स्त्री०) व्यर्थ का बोलना, बकवाद।
बड़बड़ाना–(हि०क्रि०) प्रलाप करना, व्यर्थ की बकवाद करना, मुँह में ही कुछ बोलना।
बड़बड़िया–(हिं० वि०) बड़बड़ करने वाला, बकवादी।
बड़बेरी–(हि०स्त्री०) देखो झरबेरी।
बड़बोल, बड़बोला–(हिं० वि०) लम्बी चौड़ी बातें करने वाला, सीटने वाला।
बड़भाग,बड़भागी–(हिं०वि०)भाग्यवान्, बडे भाग्य वाला।
बड़रा–(हि०वि०) विशाल, बड़ा।
बड़राना–(हिं०क्रि०) बर्राना,बरबर करना।
बड़वा–(हिं०स्त्री०) घोड़ी,अश्विनी नक्षत्र, दासी, समुद्र के भीतर की अग्नि।
बड़वाग्नि–(स० पु०) समुद्र के भीतर की अग्नि या ताप।
बड़वानल–(स० पु०) देखो बडवाग्नि।
बड़वामुख–(स० पु०) महादेवजी का एक नाम।
बड़वार–(हिं०वि०) बडा, विशाल।
बड़वारी–(हि० स्त्री०) महत्व, बड़प्पन, प्रशसा।
बड़वाल–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी भेड़।
बड़वासुत–(स०पु०) अश्विनी कुमार।
बड़हंस–(हिं०पु०) एक सकर राग का नाम।
बड़हंस सारंग–(हि०पु०) सपूर्ण जाति का एक राग।
बड़हसिका–(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
बड़हन–(हि०पु०) एक प्रकार का धान।
बड़हल–(हिं० पु०) एक बड़ा वृक्ष जिसके फल शरीफे के आकार के बे-डौल होते हैं और खाने में मीठे होते हैं।
बड़हार–(हि० पु०) बरातियों की वह ज्योनार जो विवाह के बाद की जाती है।
बड़ा–(हि०वि०) अधिक विस्तृत,खूब लम्बा चौड़ा, अवस्था में अधिक, ज्यादा उम्र का, गुण प्रभाव आदि में उत्तम, किसी बात में बढकर, श्रेष्ठ उत्तम, बुजुर्ग, अधिक परिमाण का, (पु०) मसाला मिली हुई उर्द की पीठी को घी या तेल में तल कर बनाया हुआ एक पकवान।
बड़ा घर–बन्दीगृह, कैदखाना।
बड़ाई–(हि०स्त्री०) परिमाण या विस्तार की अधिकता, परिमाण का विस्तार, महिमा, प्रशसा, पद, मान, मर्यादा, वय विद्या आदि की वृद्धि, बड़प्पन, श्रेष्ठता, बड़ाई देना–आदर सत्कार करना।
बड़ादिन–(हि० पु०) २५ दिसम्बर का दिन जो ईसुमसीह का जन्मदिवस माना जाता है, ईसाई लोग इस दिन त्योहार मनाते हैं।
बड़ापीलू–(हिं० पु०) एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।
बड़ाबोल–(हिं०पु०) अहकार के शब्द।
बड़ासबरा–(हि०पु०) कसेरों का बरतन में जोड़ लगाने का औज़ार।
बड़ी–(हि०स्त्री०) उड़द मूग आदि की पीठी की बनाई हुई छोटी छोटी टिकिया, मास की बोटी।
बड़ी कटाई–(हिं०स्त्री०) बड़ी जाति की भटकटैया।
बड़ीगोटी–(हि० स्त्री०) चौपायों का

एक रोग।
बड़ी माता-(हि०स्त्री०) शीतला रोग, चेचक।
बड़ी मैल-(हि० स्त्री०) खाकी रंग की एक चिड़िया।
बड़ी मौसली-(हि०स्त्री०)लोहे का ठप्पा जिससे थालियों में नकाशी की जाती है
बड़े लाट-(हि०पु०) भारतवर्ष में अंग्रेज़ी साम्राज्य के प्रधान शासक।
बड़ेरर-(हि० पु०) चक्रवात, बवंडर।
बड़ेरा-(हि०पु०) छाजन में लंबे बल की लकड़ी जिस पर ठाठ रक्खा जाता है, कुवें पर खंभों पर रक्खी हुई वह लकड़ी जिस पर घिरनी लगाई रहती है
बड़ौखा-(हि० पु०) एक प्रकार का नरम गन्ना।
बढ-(हि०वि०) अधिक, ज्यादा।
बढई-(हि० पुं०) काठ को छील और गढकर अनेक प्रकार के सामान बनाने वाला।
बढती-(हि० स्त्री०) मात्रा, मान या सख्या में वृद्धि, धन धान्य की वृद्धि, सम्पत्ति आदि का बढना।
बढ्दार (हि०स्त्री०)पत्थर काटने की टाँकी
बढ़न-(हि०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।
बढ़ना-(हि० क्रि०) वर्धित होना वृद्धि को प्राप्त होना उन्नति करना अग्रसर होना, भाव में वृद्धि होना, लोभ होना, दुकान आदि का बन्द होना चिराग का बुझना, परिमाण या सख्या में अधिक होना किसी से किसी बात में अधिक होना, किसी स्थान में आगे जाना, बढ़कर चलना-घमंड करना।
बढ़नी-(हि०स्त्री०) झाड़ू, नोहारी, पेशगी अन्न या रुपया जो खेती करने के लिये दिया जाता है।
बढ़ाना-(हि०क्रि०)फैलाना, लम्बा करना, विस्तार या परिमाण में अधिक करना, किसी कार्यालय को बन्द करना, भाव अधिक कर देना समाप्त होना, पद अधिकार सुख सम्पत्ति आदि में अधिक करना, चलाना, उन्नत करना, बल, प्रभाव गुण आदि में अधिक करना, नाप तौल गिनती आदि में अधिक करना अधिक तीव्र करना, चिराग बुझाना, चुक जाना, समाप्त होना, बाकी रह जाना।
बढ़ानी-(हि०स्त्री०) कटारी, कटार।
बढ़ाव-(हिं० पु०) बढने की क्रिया या भाव विस्तार, वृद्धि, अधिकता तरक्की।
बढावना-(हि०क्रि०) देखो बढ़ाना।
बढ़ावा-(हिं० पु०) उत्तेजना प्रोत्साहन, साहस दिखलाने वाला वार्ता, मन बढ़ाने की बात, कठिन काम में प्रवृत्त करने के शब्द।
बढ़िया-(हिं० वि०) उत्तम, अच्छा, (पु०) एक प्रकार का कोल्हू, अन्न, गन्ने आदि की फस्ल का एक रोग।
बढ़ेल-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की मुलायम रोंवें की भेड़।
बढ़ेला-(हि०पु०) जगली सुअर।
बढैया-(हि० वि०) बढ़ने या बढ़ाने वाला उन्नति करने वाला।
बढोतरी-(हि० स्त्री०) उन्नति, बढ़ती, उत्तरोत्तर वृद्धि।
वणिक्-(स० पु०) वाणिज्य करने वाला, बनियाँ, सौदागर, विक्रेता, बेंचने वाला, वणिक्पथ-हाट, बाज़ार।
वणिग्बन्धु-(सं० पु०) नील का पौधा, बनियों का बन्धु।
वणिग्भाव-(स०पुं०) वाणिज्य, बनियाई।
वणिज्-(स०पु०) देखो वणिक्, बनियाँ।
वणिज्य, वणिज्या-(स०)देखो वाणिज्य।
बत-(हिं० स्त्री०) बात-यौगिक शब्दों में इसका प्रयोग होता है, यथा बतकही।
बतक-(हि० स्त्री०) देखो बतख।
बतकहाव-(हि०पु०)बातचीत, वादाविवाद।
बतकही-(हिं०स्त्री०) वार्तालाप बातचीत।
बतख-(हि० स्त्री०) हंस की जाति की पानी में तैरनेवाली एक सफेद चिड़िया।
बतचल-(हि० वि०, बकवादी बक्की।
बतबढ़ाव-(हि० पु०) व्यर्थ बात बढ़ाना, झगड़ा बढाना।
बतरस-(हिं०पुं०) वार्तालाप का आनन्द, बातों का मज़ा।
बतरान-(हि० स्त्री०) बातचीत।
बतराना-(हि०क्रि०) बातचीत करना।
बतरौंहा-(हि० वि०) बातचीत करने का उत्सुक।
बतलाना-(हि० क्रि०) देखो बताना।
बताना-(हिं० क्र०)निर्देश करना, दिखाना अभिज्ञ करना बताना समझाना बुझाना, नाचने गाने में भाव बताना किसी कार्य में नियुक्त करना दण्ड देकर ठीक रास्ते पर लाना मारपीट कर दुरुस्त करना, प्रदर्शित करना (हि०पु०) हाथ का कड़ा, वह पुराने कपडे की चीर जिसपर पगड़ी बाँधी जाती है।
बताशा-(हि० पु०) देखो बतासा।
बतास-(हि० स्त्री०) गठिया वात रोग, वायु, हवा।
बतासफेनी-(हि० स्त्री०) टिकिया के आकार की एक मिठाई।
बतासा-(हि०स्त्री०) चीनी की चाशनी टपकाकर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई बुलबुला, एक प्रकार की आतशबाज़ी।
बतिया-(हि० पु०) थोड़े दिनों का लगा हुआ कच्चा छोटा फल।
बतियाना-(हि०क्रि०) बातचीत करना।
बतियार-(हि० स्त्री०) बातचीत।
बत्तू-(हि० पुं०) देखो कलाबत्तू।
बतौर-(अ०क्रि०वि०) रीति से तरीके पर, सदृश मानिन्द तरह पर।
बत्तक-(हि०स्त्री०) देख बत्तख।
बत्तिस-(हिं०वि०) देखो बत्तीस।
बत्ती (हिं०स्त्री०) सूत रूई कपडे आदि की पतली छड़ या मोटा फीता जो चिराग जलाने के लिये उपयोग में आता है प्रकाश, दीआ पगड़ी का ऐंठा हुआ कपड़ा, मोमबत्ती बत्ती के आकार की कोई चीज़ फूस का मुट्ठा जो छाजन में लगाया जाता है, घाव में मवाद साफ करने के लिये भरने की कपड़े की लंबी बत्ती, पलीता।
बत्तीस-(हि० वि०) तीस और दो की

संख्या का, (पु०) तीस और दो की संख्या ३२ ।
वत्तीसा-(हिं० पु०) वत्तीस औषधियों को मिलाकर वना हुआ पुष्टई का एक प्रकार का लड्डू ।
वत्तीसी-(हिं०स्त्री०) वत्तीस का समूह, मनुष्य के नीचे ऊपर के दाँतों की पंक्ति जिनकी पूरी संख्या वत्तीस होती है ।
वथान-(हिं०पु०) गाय बैल के रहने का स्थान ।
वथुआ-(हिं० पु०) एक छोटा पौधा जिसका साग वना कर खाया जाता है ।
वद-(फा०स्त्री०)जाघ पर की गिलटी, बाघी चौपायों की एक छूत की बीमारी, नीच मनुष्य, पलटा, एवज (वि०) बुरा, निकृष्ट, खराव ।
वदअमली-(हिं०स्त्री०) राज्य में अशान्ति, हलचल, बुरा प्रवन्ध ।
वदइन्तजामी-(फा०स्त्री०) अव्यवस्था, बुरा प्रवंध ।
वदकारी-(फा०स्त्री०) कुकर्म, व्यभिचार ।
वदक़िस्मत-(फा० वि०) मन्दभाग्य, अभागा ।
वदख़त-(फा० पुं०) बुरा अक्षर, बुरा लेख, (वि०) बुरे अक्षर लिखने वाला ।
वदगुमान-(फा०वि०) सन्देह की दृष्टि से देखने वाला ।
वदगुमानी-(फा०स्त्री०) मिथ्या सन्देह ।
वदगोई-(फा०स्त्री०) निन्दा, शिकायत, चुगली ।
वदचलन-(फा०वि०) बुरे आचरण का, कुकर्मी ।
वदचलनी-(फा० स्त्री०) वदचलन होने की क्रिया या भाव, व्यभिचार ।
वदज़वान-(फा०वि०) कटुभाषी, गाली गलौज करने वाला ।
वदज़ात-(फा०वि०) नीच, ओछा, खोटा ।
वदतमीज़-(फा० वि०) अशिष्ट, गँवार, वेहूदा ।।
वदतर-(फा०वि०) किसी की अपेक्षा बुरा, और भी बुरा ।
वददियानती-(फा० स्त्री०) विश्वासघात, धोखेवाज़ी, वेईमानी ।
वददुआ-(फा० स्त्री०) शब्दों से प्रगट की हुई अहित कामना, शाप ।
वदन-(फा० पु०) शरीर, देह ।
वदनतौल-(फा०स्त्री०) मलखम की एक कसरत ।
वदनिकाल-(फा०पु०) मलखम की एक कसरत ।
वदनसीव-(फा० वि०) बुरे भाग्य का, अभागा ।
वदनसीवी-(फा० स्त्री०) दुर्भाग्य ।
वदना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना, कहना, स्थिर करना, ठहराना, स्वीकार करना, मान लेना, होड़ लगाना, वाजी लगाना, गिनती में लाना, कुछ समझना, बड़ा मानना, वदकर-हठपूर्वक, जान बूझकर ।
वदनाम-(फा०वि०) कलंकित, जिसकी निन्दा या दुर्नाम होता हो ।
वदनामी-(फा० स्त्री०) अपकीर्ति, लोकनिन्दा ।
वदनीयत-(फा०वि०) जिसका अभिप्राय बुरा हो, जिसके मन में धोखा देने की इच्छा हो ।
वदनीयती-(फा० स्त्री०) दगावाज़ी, वेईमानी ।
वदनुमा-(फा० वि०) कुरूप, भद्दा ।
वदपरहेज़-(फा० वि०) कुपथ्य करने वाला, जो खाने पीने में संयम न रखता हो ।
वदपरहेज़ी-(फा०स्त्री०) कुपथ्य, खाने पीने आदि में असंयम ।
वदवख़्त-(फा०वि०) वदकिस्मत, अभागा ।
वदवू-(फा० स्त्री०) बुरी गन्ध, दुर्गन्ध, वदवूदार-दुर्गन्धयुक्त ।
वदमज़ा-(फा० वि०) बुरे स्वाद का, खराव जायके का, आनन्द रहित ।
वदमस्त-(फा०वि०)कामोन्मत्त, नशेमें चूर ।
वदमस्ती-(फा०स्त्री०) उन्मत्तता, मतवालापन, लम्पटता ।
वदमाश-(फा०वि०) दुर्वृत्त, दुष्ट, खोटा, दुराचारी, वदचलन ।
वदमाशी-(फा०स्त्री०) नीचता, दुष्टता, खोटाई, बुरी वृत्ति, व्यभिचार, पाजीपन ।
वदमिज़ाज-(फा०वि०) बुरे स्वभाव का, चिड़चिड़ा ।
वदमिज़ाजी-(फा०स्त्री०) चिड़चिड़ापन ।
वदरंग-(फा०वि०) बुरे रंग का, जिसका रंग अच्छा न हो, जिसका रंग खराव हो गया हो, ताश के खेल में रंग दाँव पर दूसरे रंग का ताश फेंकना ।
वदरंगी-(फा० स्त्री०) रंग का फीकापन या भद्दापन ।
वदर-(सं० नपुं०) कपास, विनौला, बड़ा वेर का वृक्ष, वेर का फल, आठ माशे की तौल (फा० वि०) बाहर ।
वदरनवीसी-(फा०स्त्री०) हिसाव किताव की जाँच ।
वदरवीज-(सं०नपुं०) वेर की गुठली ।
वदरा-(सं० स्त्री०) कपास, वाराहीकन्द (हिं० पु०) वादल, मेघ ।
वदरामलक-(सं० नपुं०) जल आमला
वदरास्थि-(सं० नपुं०) वेर की गुठली
वदराह-(फा० वि०) कुमार्गी, दुष्ट, बुरे राह पर चलने वाला ।
वदरि-(सं० स्त्री०) वेर का पौधा या फल ।
वदरिकाश्रम-(सं० पुं० नपुं०) श्रीनगर (गढ़वाल) के पास अलकनन्दा नदी के पश्चिमी किनारे पर अवस्थित एक तीर्थ, यहां पर नारायण तथा व्यास का आश्रम है ।
वदरिया-(हिं० स्त्री०) देखो वदली ।
वदरी-(हिं० स्त्री०) देखो वदली ।
वदरीनाथ-(सं० पु०) हिमालय पर्वत के एक शिखर का नाम ।
वदरीनारायण-(सं० नपुं०) वदरीनारायण की मूर्ति जो वदरिकाश्रम में है ।
वदरूल-(हिं०पुं०) पत्थर की जाली पर एक प्रकार की नक्काशी ।
वदरौंह-(फा०वि०) कुमार्गी, वदचलन (पु०) वदली का आभास ।
वदल-(अ० पु०) परिवर्तन, हेरफेर, प्रतीकार, पलटा, एवज़ ।
वदलगाम-(फा०वि०) मुहज़ोर, जिसको

भला बुरा कहने में कुछ सकोच नहीं होता।

बदलना-(हिं० क्रि०) परिवर्तित होना, भिन्न होना, और का और होना, एक स्थान पर दूसरे को करना, एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना अथवा एक के स्थान पर दूसरा हो जाना, बात बदलना - कोई बात कहकर उससे मुकर जाना।

बदलवाना-(हिं० क्रि०) बदलने का काम दूसरे से कराना।

बदला-(अ० पुं०) विनियम, परस्पर लेनदेन का व्यवहार, किसी वस्तु के स्थान की दूसरी वस्तु से पूर्ति, एवज़, प्रतीकार, प्रतिफल, पलटा, किसी कर्म का परिणाम जो भोगना पड़े, किसी वस्तु के स्थान पर दूसरा जो दूसरी वस्तु दे।

बदलाना-(हिं०क्रि०) देखो बदलवाना।

बदली-(हिं० स्त्री०) फैलकर छाया हुआ बादल, एक के स्थान पर दूसरे की उपस्थिति, एक स्थान या पद से दूसरे स्थान पर नियुक्ति, तबदीली।

बदलौवल-(हिं० स्त्री०) अदलबदल, हेरफेर।

बदशकल-(फा० वि०) कुरूप, भद्दा, बेडौल।

बदसलूकी-(फा०स्त्री०) अशिष्ट व्यवहार, अपकार।

बदसूरत-(फा० वि०) भद्दी सूरत का, कुरूप।

बदस्तूर-(फा०क्रि० वि०) ज्यों का त्यों, जैसे का तैसा।

बदहज़मी-(फा० स्त्री०) अजीर्ण,अपच, अन्न का ठीक पाचन न होना।

बदहवास-(फा० वि०) अचेत, बेहोश, विकल, व्याकुल, श्रान्त, शिथिल।

बदा-(हिं०वि०) प्रारब्ध में लिखा हुआ।

बदान-(हिं० स्त्री०) किसी बात का प्रतिज्ञा पूर्वक पहले से स्थिर किया जाना।

बदाबदी-(हिं०स्त्री०) दो पक्षों का एक दूसरे के विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ, लाग डाट।

बदाम-(हिं० पु०) देखो बादाम।

बदामी-(फा०वि०) बदाम के रग का।

बदि-(हिं० स्त्री०) बदला, पलटा, (अव्य०) वास्ते, बदले में।

बदी-(हिं० स्त्री०) कृष्णपक्ष, अधेरा पाख, (फा०स्त्री०) अपकार, बुराई।

बदे-(हिं० अव्य०) वास्ते, लिये।

बदौलत-(फा०क्रि०वि०) कृपा से, कारण से, सबब से,ओर से।

बद्दर, बद्दल-(हिं० पु०) देखो बादल।

बद्द-(हिं० वि०) अपमानित, बदनाम।

बद्ध-(स० वि०) बधन युक्त बधा हुआ, फसा हुआ, बिना रोक का, परिमित, व्यवस्थित, निर्धारित, ठहराया हुआ,बैठा हुआ, जमा हुआ, पड़ा हुआ, ठहरा हुआ, अज्ञान में फसा हुआ।

बद्धक-(स० पु०) बन्दी, कैदी।

बद्धकोष्ठ-(सं० पु०) अच्छी तरह मल न निकलने की अवस्था या रोग, पेट साफ न होना।

बद्धजिह्व-(सं० वि०) जिसको जीभ हिलाने में कष्ट होता हो।

बद्धपरिकर-(स० वि०) कमर बाँधे हुए, तैयार।

बद्धपुरीष-(सं० वि०) जिसका मल रुक गया हो।

बद्धफल-(स०पु०) करज का वृक्ष।

बद्धमुष्टि-(स० वि०) जिसकी मुट्ठी बधी हो, कृपण, कजूस।

बद्धरसाल-(स० पु०) एक उत्तम जाति का आम।

बद्धवर्चस-(स० वि०) मल का अवरोध करने वाला।

बद्धवीर-(स०वि०) जिसकी सेना शत्रुओं में घिर गई हो।

बद्धशिख-(स० वि०) जिसकी शिखा या चोटी बँधी हो।

बद्धी-(हिं० स्त्री०) डोरी, रस्सी, तस्मा, बाधने की कोई वस्तु, चार लड़ी का एक आभूषण।

बध-(स०पु०) हनन, हत्या।

बधक-(स० वि०) वध करने वाला, हत्या करने वाला, (नपु०) व्याधि,मृत्यु।

बधगराड़ी-(हिं० स्त्री०) रस्सी बटने का एक औजार।

बधना-(हिं० क्रि०) बध करना हत्या करना, (पुं०) मिट्टी या धातु का टोटीदार लोटा, चूड़ी बनाने वाले का एक औजार।

बधभूमि-(स०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर अपराधियों को प्राणदण्ड दिया जाता है।

बधस्थली-(स०स्त्री०) श्मशान।

बधाई-(हिं० स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, पुत्र जन्म पर किया जाने वाला आनन्द मगल, मगल अवसर का गाना बजाना, शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार, आनन्द मगल, चहल पहल, आनन्द प्रगट करने वाला सन्देश, मुबारकबादी।

बधाङ्कक-(स०नपुं०)कारागार, कैदखाना

बधाना-(हिं० क्रि०) बध कराना, दूसरे से मरवाना।

बधाया-(हिं०पु०) देखो बधाई।

बधावना-(हिं०पु०) देखो बधावा।

बधावा-(हिं० पु०) बधाई, मगल अवसरों पर सबधियों तथा इष्ट मित्रों के यहाँ से आने वाला उपहार, मगलाचार, मगल अवसर पर का गाना बजाना।

बधिक-(हिं० पु०) बध करने वाला, मारने वाला, जल्लाद, व्याध, बहेलिया।

बधिया-(हिं० पु०) वह पशु जो अण्डकोश कुचल कर या निकाल कर षड (नपुसक) कर दिया गया हो, आख्ता, खस्सी, एक प्रकार की मीठी ऊख।

बधियाना-(हिं० क्रि०) बधिया करना या बनाना।

बधिर-(स०वि०) बहरा, जिसमें सुनने की शक्ति न हो।

बधिरता-(स०स्त्री०) बहरापन।

बधू-(स०स्त्री०) स्त्री, औरत, नव विवाहिता स्त्री, पतोहू, भार्या, पत्नी, बधू जन-नारी, स्त्री।

वधूटी-(स० स्त्री०) पुत्र की स्त्री, पतोहू, नई आई हुई वहू, सौभाग्यवती स्त्री।

वधूत्सव-(स० पुं०) वधू का प्रथम रजोदर्शन।

वधूरा-(हिं० पु०) अधड़, ववडर।

वधोद्यत-(स० वि०) वह जो मारने के लिये तैयार हो।

वध्य-(स० वि०) मार डालने योग्य, वध्यभूमि-फाँसी देने का स्थान, श्मशान।

बन-(हिं०पु०) देखो वन, जंगल, अरण्य, बाग, बगीचा, बन आलू-जमीकन्द के प्रकार का एक पौधा, बनकडा-वह कडा जो जगल में आपसे आप सूखकर तैयार होता है।

बनक-(हिं०स्त्री०) वन की उपज, जगल की पैदावार (स्त्री०) सजधज, वेशभूषा।

बनकटी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का बाँस।

बनकर-(हिं० पु०) जगल में होने वाले पदार्थों की आमदनी।

बनकल्ला-(हिं० पु०) एक प्रकार का जगली वृक्ष।

बनकस-(हिं० पुं०) एक प्रकार की जगली घास।

बनकोरा-(हि० पु०) लोनिया का साग।

बनखड-(हिं०पु०)जगल का कोई भाग।

बनखडी-(हि० स्त्री०) छोटा सा जगल (वि०) वन में रहने वाला।

बनखरा-(हिं० पु०) वह खेत जिसमें पिछली फस्ल में कपास बोई गई हो।

बनगाव-(हि० पु०) एक प्रकार का बड़ा हिरन।

बनचर-(हि० पु०) वन्य पशु, जंगल में रहने वाला पशु, जगली मनुष्य, वन में रहने वाला मनुष्य।

बनचारी-(हि० पु०) वन में घूमने वाली, जगल मे रहने वाला मनुष्य या पशु, जल में रहने वाले जन्तु।

बनचौंर-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की जगली गाय।

बनज-(हिं० पु०) कमल, शख, जल में होने वाले पदार्थ, वाणिज्य, व्यवसाय।

बनजर-(हि०स्त्री०) देखो वजर।

बनजात-(हिं०पु०) कमल, पद्म।

बनजारा-(हि० पु०) वह व्यापारी जो बैलों पर अन्न लादकर देश देश में घूम कर बेंचता है, टँड़िया, व्यापारी, बनिया।

बनज्योत्स्ना-(हिं०स्त्री०) माधवी लता।

बनड़ा-(हि० पु०) एक राग का नाम, बनड़ा जैत-रूपक ताल पर बजने वाला एक राग।

बनत-(हि०स्त्री०) रचना, बनावट, अनुकूलता, मेल, एक प्रकार की रेशम या मखमल पर काढने की वेल।

बनताई-(हि० स्त्री०) जगल का घनापन या भयकरता।

बनतुरई-(हिं०स्त्री०) बदाल।

बनतुलसी-(हि० स्त्री०) बवई नाम का पौधा जिसकी पत्ती और मजरी तुलसी के समान होती हैं।

बनद-(हि० पु०) मेघ, बादल।

बनदाम-(हिं०स्त्री०) वनमाला।

बनदेवी-(हि०स्त्री०)वनकी अधिष्ठात्री देवी

बनधातु-(स०स्त्री०) गेरू या कोई रगीन मिट्टी।

बनना-(हिं०क्रि०) रचा जाना, तैयार होना, आपस में मित्रता होना, अच्छा अवसर प्राप्त होना स्वरूप धारण करना, मूर्ख ठहरना, श्रृगार करना, महत्व की मुद्रा धारण करना, समाप्त होना, कोई विशेष पद या अधिकार प्राप्त करना, अविष्कार होना, अपने को अधिक योग्य प्रमाणित करना, वसूल होना, सभव होना दुरुस्त या मरम्मत होना, व्यवहार में आने योग्य किसी पदार्थ का होना, एक पदार्थ का रूप बदल कर दूसरा पदार्थ हो जाना, ठीक दशा या रूप में आना, बना रहना-जीवित रहना, बनकर-अच्छी तरह से।

बननि-(हि०स्त्री०)बनावट, सिंगार पटार।

बननिधि-(हि०पुं०) समुद्र।

बनपट-(हि० पु०) वृक्षों की छाल आदि से बनाया हुआ कपड़ा।

बनपति-(हिं०पु०) सिंह, शेर।

बनपथ-(हि० पु०) वह रास्ता जिसमें बहुत से जगल पड़ते हों।

बनपाट-(हि० पु०) जगली पटुआ।

बनपाती-(हि० स्त्री०) देखो वनस्पति।

बनपाल-(हि० पु०) वन या बाग का रक्षक।

बनप्रिय-हि० पु०) कोकिल, कोयल।

बनफल-(हिं० पुं०) जगली मेवा।

बनफ़शई-(फा०वि०)बनफशे के रग का।

बनफ़शा-(फा० पु०) एक प्रकार का छोटा पहाड़ पर होने वाला पौधा जिसके फूल, पत्तिया और जड़ औषधियों में प्रयोग होती हैं।

बनवास-(हि० पु०) वन में रहने या बसने की क्रिया या अवस्था, प्राचीन काल का देश से निकाले जाने का दड

बनवासी-(हिं०वि०) बनमें रहने वाला, जगली।

बनवाहन-(हि० पु०) जलयान, नाव।

बनबिलाव-(हि० पुं०) बिल्ली की जाति का एक जगली जन्तु।

बनमानुस-(हि० पु०) एक जगली जन्तु जो बन्दर से बड़ा होता है, जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता जुलता है, बिलकुल जगली आदमी।

बनमाला-(हि० स्त्री०) तुलसी, कद, मदार परजाता और कमल इन पाचो फूलों से बनी हुई माला।

बनमाली-(हि० पु०) वनमाला धारण करने वाला, विष्णु, नारायण, मेघ, बादल

बनमुर्गा-(हिं० पुं०) जगली मुरगा।

बनर-(हि० पु०) एक प्रकार अस्त्र।

बनरखा-(हि० पु०) वन का रक्षक, जगल की रखवाली करने वाला, बहेलियों तथा जगल में रहने वालों की एक जाति।

बनरा-(हि० पु०) वर, दूल्हा, विवाह के समय की एक प्रकार की मगल गीत।

बनराज, बनराय-हि० पु०) जगल का राजा, सिंह, बहुत बड़ा वृक्ष।

बनरी-(हिं० स्त्री०) नवबधू, नई ब्याही हुई बहू।
बनरीठा-(हिं० पु०) एक प्रकार का जगली रीठा।
बनरीहा-(हिं०पु०) एक प्रकार की घास।
बनरुह-(हिं० पु०) वह पौधा जो जगल में आप से आप उगता है, जगली पेड़, पद्म, कमल।
बनवना-(हिं० क्रि०) देखो बनाना।
बनवर-(हिं० पु०) बिनौला।
बनबसन-(हिं० पु०) वृक्ष की छाल का बना हुआ कपड़ा।
बनवा-(हिं० पु०) पनडुब्बी नामक जलपक्षी।
बनवाना-(हिं० क्रि०) बनाने का काम दूसरे से कराना।
बनवारी-(हिं० पु०) वनमाली, श्रीकृष्ण का एक नाम।
बनवासी-(हिं०पु०)जगल में रहने वाला
बनवैया-(हिं० वि०) बनाने वाला।
बनसपती-(हिं० स्त्री०) देखो वनस्पति।
बनसार-(हिं० पु०) जहाज पर चढ़ने उतरने का स्थान।
बनसी-(हिं० स्त्री०) देखो वंशी।
बनस्थली-(हिं० स्त्री०) वनखण्ड, जगल का कई भाग।
बनस्पती-(हिं० पु०) देखो वनस्पति, वनस्पति विद्या-वनस्पति शास्त्र।
बनहटी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी नाव।
बनहरदी-(हिं० स्त्री०) दारु हल्दी।
बना-(हिं०पु०) वर, दूल्हा, एक छन्द का नाम, इसका दूसरा नाम दण्डकला है
बनाइ-(हिं० क्रि० वि०) अत्यन्त, बहुत, भली भाँति, अच्छी तरह।
बनाउ-(हिं० पु०) देखो बनाव।
बनाचरि-(हिं० स्त्री०) देखो बाणावली।
बनाग्नि-(हिं० स्त्री०) दावानल।
बनात-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का ऊनी वस्त्र जो कई रग का होता है।
बनाती-(हिं०वि०) बनात का बना हुआ।
बनाना-(हिं०क्रि०) प्रस्तुत करना, रचना, एक पदार्थ को बदल कर दूसरा तैयार करना, रूप बदल कर अपने व्यवहार योग्य करना, आविष्कार करना, पूरा करना, दोष हटाकर ठीक करना, मूर्ख ठहरना, कोई विशेष पद अथवा शक्ति देना, अच्छी स्थिति में पहुँचना, वसूल करना, ठीक रूप या दशा में लाना, उपार्जित करना., बनाकर-भली भाँति, अच्छी तरह से।
बनाफर-(हिं०पु०) क्षत्रियों की एक जाति
बनावंत-(हिं० पु०) विवाह करने के निमित्त लड़के और लड़की की जन्म कुण्डली मिलाना।
बनाम-(फा० अव्य०) किसी के प्रति, नाम पर या नाम से, यह शब्द प्रायः अदालती कारवाइयों में प्रयोग होता है, वादी के नाम के पीछे और प्रतिवादी के नाम के पहले रक्खा जाता है।
बनाय-(हिं० क्रि० वि०) पूर्ण रूप से, अच्छी, तरह से।
बनार-(हिं० पु०) काला कसौंदा, एक प्राचीन राज्य जो वर्तमान काशी की उत्तरी सीमा पर था, कहा जाता है कि 'बनारस' नाम इसी राज्य के नाम पर पड़ा है।
बनारसी-(हिं० वि०) काशी सबधी, काशी निवासी।
बनारी-(हिं०स्त्री०) कोल्हू में लगी हुई रस गिरने की लकड़ी की नली।
बनाव-(हिं० पु०) रचना, बनावट, शृंगार, सजावट, युक्ति, तदबीर, तरकीब।
बनावट-(हिं० स्त्री०) बनाने या बनने का भाव, गढन, ऊपरी दिखावा, आडबर।
बनावटी-(हिं० वि०) कृत्रिम, नकली, दिखौवा।
बनावन-(हिं० पुं०) ककड़ी, मिट्टी, छिलके आदि जो अन्न को साफ़ करने पर निकलें, बिनन।
बनावनहारा-(हिं० पु०) रचयिता, बनाने वाला, बिगडे को बनाने वाला।
बनावरि-(स० वि०) बाणों की पक्ति।
बनासपति-(हिं० स्त्री०) देखो वनस्पति, जड़ी, बूटी, पत्ती, फल फूल आदि।
बनि-(हिं० वि०) समस्त, सब।
बनिक-(हिं० पु०) वणिक्, बनिया।
बनिज-(हिं० पु०) वस्तुओं का क्रय विक्रय, व्यवसाय, रोजगार, व्यापार की वस्तु सौदा।
बनिजना-(हिं० क्रि०) व्यापार करना, खरीदना, बेचना, अपने अधीन करना।
बनिजारा-(हिं० पु०) देखो बनजारा।
बनजारिन-(हिं० स्त्री०) बनजारा जाति की स्त्री।
बनजारी-(हिं० स्त्री०) बनजारे की स्त्री।
बनित-(हिं० स्त्री०) वेषभूषा, बानक।
बनिता-(हिं० स्त्री०) औरत, स्त्री, भार्या, पत्नी।
बनिया-(हिं० पु०) व्यापार करने वाला मनुष्य, वैश्य, आटा चावल आदि बेंचने वाला मोदी।
बनियाइन-(हिं०स्त्री०) बनिये की स्त्री (अ० स्त्री०) सूत रेशम आदि की बनी हुई बडी या कुरती जो शरीर में चिपकी रहती है।
बनिस्बत-(फा०अव्य०)अपेक्षा,मुकाबले में
बनिहार-(हिं० पु०) वह नौकर जो खेत की रखवाली आदि के लिये नियुक्त किया जाता है।
बनी-(हिं० स्त्री०) बनस्थली, वन का टुकड़ा, बाग, वाटिका, (पु०) नायिका, दुलहिन।
बनीनी-(हिं० स्त्री०) वैश्य जाति की स्त्री, बनिये की स्त्री।
बनेठी-(हिं० स्त्री०) वह लम्बी लाठी जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं जिसका व्यवहार पटेबाज़ी के खेल और अभ्यासों में किया जाता है।
बनैला-(हिं० वि०) वन्य, जगली।
बनौटी-(हिं० वि०) कपासी, कपास के फूल के समान।
बनौरी-(हिं० स्त्री०) वर्षा के साथ गिरने वाला ओला या पत्थर।
बनौवा-(हिं० वि०) कृत्रिम, बनावटी।

वन्दर-(हिं०पु०) देखो वदर।
वन्ध-(स० पु०) वन्धन, शरीर गाठ, गिरह, कैद, पानी राकने का वॉध, योग साधना की एक मुद्रा।
वन्धक-(स० नपु०) ऋण के वदले में महाजन के पास रखने की वस्तु, रेहन, गिरवी, वदला, वाधने वाला।
वन्धकी-(स० स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री वदचलन औरत, वेश्या, रडी।
वन्धकर्ता-(हिं०पुं०) शिव, महादेव।
वन्धन-(स० नपु०) वाधने की क्रिया, वह जिससे कोई वस्तु वाधी जाय, वध, हत्या, रस्सी, वधन स्थान, कैदखाना, शरीर का सन्धि-स्थान, शिव, महादेव (वि०) वाधने वाला।
वन्धनी-(स० स्त्री०) शरीर के वन्धन स्थान पर की मोटी नसें जो अवयवों को वाधे रहती हैं।
वन्धनीय-(स० वि०) वाधने योग्य।
वन्धमोचनिका-(सं०स्त्री०) एक योगिनी का नाम।
वन्धयिता-(हि० वि०) वाधने वाला।
वन्धस्तम्भ-(स० पु०) हाथी वाधने का खूटा।
वन्धु-(स० पु०) सगोत्र,वान्धव, स्वजन, भाई वन्द।
वन्धुक-(स० पु०) दुपहरिया नाम के फूल का पौधा।
वन्धुजन-(स०पु०) आत्मीय कुटुम्ब।
वन्धुता-(स० स्त्री०) वन्धु होने का भाव, भाईचारा।
वन्धुत्व-(स० पु०) मित्रता, दोस्ती।
वन्धुदा-(सं० स्त्री०) वेश्या, रडी, व्यभिचारिणी स्त्री।
वन्धुपाल-(स०पु०) अपने कुटुम्ब का पालन करने वाला।
वन्धुर-(स०नपु०) मुकुट, गुलदुपहरिया, वहरा मनुष्य, हस, काकड़ासिंघी, चिड़िया (वि०) सुन्दर, नम्र,ऊचानीचा
वन्धुल-(स० पु०) रडी का लड़का, (वि०) सुन्दर।
वन्धूर-(स०वि०) रम्य, सुन्दर।
वन्ध्य-(स०वि०) निष्फल, विफल।
वन्ध्या-(स० स्त्री०) जिस स्त्री को सन्तान न होता हो, वाझ स्त्री, वन्ध्या तनय-अनहोनी वात, वन्ध्या-पुत्र-कभी न होने वाली वात।
वन्नी-(हिं०स्त्री०) फस्ल का कोई अश जो खेत को काम करने वालों की वेतन के वदले में दिया जाता है।
वह्नि-(हिं० स्त्री०) देखो वह्नि।
वप-(हि० पु०) वाप, पिता।
वपमार-(हिं०वि०) अपने पिता की हत्या करने वाला, सवके साथ अन्याय करने वाला।
वपतिस्मा-(अं० पु०) ईसाई सप्रदाय का वह सस्कार जो किसी व्यक्ति को ईसाई वनाने के समय किया जाता है।
वपना-(हि० क्रि०) वीज वोना।
वपु-(हिं० पु०) देखो वपु, शरीर, अवतार, रूप।
वपुख-(हिं० पु०) शरीर, देह।
वपुरा-(हिं०वि०) अशक्त, वेचारा।
वपौती-(हि० स्त्री०) पिता से मिली हुई सम्पत्ति।
वप्पा-(हि०पु०) पिता, वाप।
वफारा-(हि०पु०) जल मे औषधि औटा कर उसकी भाफ से शरीर के किसी अग को सेकने की क्रिया, वह औषधि जिसकी भाफ से ऐसी सेक की जावे।
वफौरी-(हिं० स्त्री०) भाफ से पकाई हुई वरी।
ववकना-(हि०क्रि०) आवेग में आकर जोर से वोलना, वमकना।
ववर-(फा०पु०) वर्वरी देश का शेर, वड़ा शेर एक प्रकार का मोटा कम्वल जिस पर धारिया वनी होती हैं।
ववा-(हि०पु०) देखो वावा।
ववुआ-(हि०पु०) पुत्र या दामाद के लिये प्यार का शब्द, रईस, जमीदार।
ववुई-(हिं० स्त्री०) कन्या, वेटी, किसी सरदार या वावू की वेटी, छोटी ननद।
ववुर, ववूल-(हि० पु०) एक प्रसिद्ध काटेदार वृक्ष जो मझोले कद का होता है।
ववूला-(हिं०पु०) देखो वगूला वुलवुला।
वभनी-(हिं०स्त्री०) छिपकली के आकार का एक पतला छोटा कीड़ा जिसकी शरीर पर सुन्दर लम्वी धारिया होती हैं।
वभूत-(हि० स्त्री०) देखो भभूत विभूति।
वभ्रु-(स० पु०) अग्नि, शिव, विष्णु, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, कपिला गौ।
वभ्रुक-(स०वि०) नेवला, वन्दर।
वभ्रुधातु-(स०पु०) सोना, सुवर्ण, गेरू।
वभ्रुवाह-(स०पु०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम।
वम-(अ० पु०) विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का गोला जो गिरने पर वडे वेग से फटता है, (हि०पु०) शिव के उपासकों का वम् वम् शब्द, शहनाई वालो का वाई ओर का नगाड़ा, वह लम्वा वास जो गाड़ी आदि में आगे की ओर लगा रहता है जिसमें घोड़ा खड़ा करके जोता जाता है, वम वोलना-सव सामग्री का समाप्त होना।
वमकना-(हि०क्रि०) शेखी हाँकना।
वमचख-(हि०स्त्री०) शोरगुल, लड़ाईझगड़ा
वमना-(हिं०क्रि०) वमन करना, कै करना।
वमपुलिस-(हिं०पु०) देखो वपुलिस।
वमीठा-(हि०पु०) वल्मीक, वाची।
वमुकावला-(फा०क्रि०वि०) विरुद्ध, मुकावले में।
वमूजिव-(फा०क्रि०वि०) अनुसार, मुताविक
वम्भर-(स०पु०) भ्रमर, भौंरा।
वम्भारि-(स० पु०) वह जो ससार का पालन पोषण करता हो।
वम्हनपियाव-(स० पु०) ऊख को पहिले पहिल पेरती समय इसका कुछ रस ब्राह्मणों को पिलाना।
वम्हनी-(हि० स्त्री०) देखो वभनी, ऊख का एक रोग, लाल रग की ज़मीन, आँख का एक रोग।
वयण्ड-(हि०स्त्री०) हाथी, गज।
वय-(हिं०पुं०) देखो वय।
वयन-(हिं०पु०) वाणी, वात।

बयना–(हिं०क्रि०) वर्णन करना, कहना, बीज जमाना या लगाना, (पु०) देखो बौना।
बयनी–(हिं० स्त्री०) बोलने वाली।
बयल–(हिं०पुं०) सूर्य।
बयस–(हिं० स्त्री०) देखो वय, उम्र, **बयस सिरोमनि**–यौवन, युवावस्था, जवानी।
बया–(हिं० पु०) गौरैया के आकार तथा रङ्ग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो बड़ी कारीगरी से अपना घोंसला तृणों से बनाता है, अनाज तौलने वाला मनुष्य।
बयाई–(हिं० स्त्री०) अन्न आदि तौलने की मजदूरी, तौलाई।
बयान–(फा०पु०) वर्णन, चर्चा, विवरण, वृत्तान्त, हाल।
बयाना–(हिं० पु०) वह धन जो किसी काम के लिये दिये जानेवाले पुरस्कार के लिये बात पक्की हो जाने पर पेशगी दिया जाता है और पूरा पुरस्कार देती समय काट लिया जाता है।
बयाबान–(फा० पु०) जङ्गल, उजाड़ स्थान।
बयार–(हिं०स्त्री०) पवन, हवा।
बयारा–(हिं०पु०)हवा का झोंका, तूफान
बयारी–(हिं०स्त्री०) देखो बियारी।
बयाला–(हिं०पु०) दीवार में का छेद या झरोखा, ताख, आला, किलेकी दीवार का वह छोटा छिद्र जिसमें से तोप का गोला पार करके जाता है, पटाव के नीचे का स्थान, किलों में वह जगह जहाँ तोपें लगी रहती हैं।
बयालिस–(हिं०पु०) चालीस और दो की संख्या ४२ (वि०) जो संख्या में चालीस और दो हो, **बयालिसवाँ**–जो क्रम से बयालिस के स्थान पर हो।
बयासी–(हिं०वि०) अस्सी और दो की संख्या का (पु०) अस्सी और दो की संख्या ८२।
बरग–(हिं० पुं०) एक छोटे कद का वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और मुलायम होती है।
बरँगा–(हिं० पु०) छत पाटने की पत्थर या लकड़ी की पटिया।
बर–(सं० नपु०) देखो वर।
बर–(हिं०पु०) वह जिसका विवाह होता हो, दुल्हा, आशीर्वाद सूचक वचन, बल, शक्ति, वर का पेड़ (वि०) श्रेष्ठ, अच्छा (फा०अव्य०) ऊपर (फा०वि०) श्रेष्ठ, पूर्ण, पूरा (फा०पु०) एक प्रकार का कीड़ा जिसको खाने से पशु मर जाते हैं, **बर परना**–श्रेष्ठ होना, **बर खाँचना**–दृढ़ता दिखलाना, **बर आना (पाना)**–बढ़कर होना, (अव्य०) वरन, बल्कि, देखो बल, सिकुड़न।
बर अग–(हिं०स्त्री०) योनि, भग।
बरई–(हिं०पु०)पान के खेती करने वाली एक जाति, तमोली।
बरकंदाज़–(फा०पुं०) वह सिपाही या चौकीदार जिसके पास बड़ी लाठी रहती हो, रक्षक, तोड़ेदार, बंदूक लेकर चलने वाला सिपाही।
बरकत–(अ०स्त्री०) अधिकता, बढ़ती, लाभ, फायदा, समाप्ति, अन्त, एक की संख्या, प्रसाद, कृपा, धन दौलत, वह बचा हुआ धन जो इस विचार से छोड़ दिया जाता है कि इसमें कुछ और वृद्धि हो।
बरकती–(अ०वि०) जिसमें बरकत हो, बरकत सबधी।
बरकदम–(फा० स्त्री०) एक प्रकार की चटनी (अव्य०) फौरन, मुस्तैदी से।
बरकना–(हिं० क्रि०) निवारण होना, बचना, अलग रहना, हटना।
बरकरार–(फा०वि०) स्थिर, उपस्थित, मौजूद।
बरकाज़–(हिं०पु०) विवाह, शादी।
बरकाना–(हिं०क्रि०) निवारण करना, बचाना, पीछा छोड़ना, फुसलाना, बहलाना।
बरख–(हिं०पु०) वर्ष, साल।
बरखना–(हिं०क्रि०) वर्षा होना, पानी बरसना।
बरखा–(हिं०स्त्री०) वर्षा, वृष्टि, पानी बरसना, वर्षा ऋतु।
बरखास्त–(फा०वि०) नौकरी से हटाया हुआ, मौकूफ, सभा आदि का विसर्जन होना, जिसकी बैठक समाप्त हो गई हो
बरखिलाफ–(फा०क्रि०वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध।
बरगन्ध–(हिं०पु०) सुगन्धित मसाला।
बरग–(फा०पु०) पत्र, पत्ता।
बरगद–(हिं० पुं०) वट वृक्ष, बर का पेड़
बरगेल–(हिं० पु०) एक प्रकार का लवा पक्षी।
बरचर–(हिं० पु०) एक प्रकार का देवदार वृक्ष।
बरचस–(हिं०पु०) मल, विष्ठा।
बरछा–(हिं० पु०) फेंक कर या भोंक कर मारने का एक हथियार, भाला।
बरछैत–(हिं०पु०) भाला बरदार, बरछा चलाने वाला।
बरजन–(हिं०क्रि०) मना करना, रोकना।
बरजनि–(हिं०स्त्री०)रुकावट, मनाही।
बरज़बान–(फा० वि०) कण्ठस्थ, जो ज़बानी याद हो।
बरजोर–(हिं० वि०) प्रबल, ज़बरदस्त, अत्याचार या अनुचित रीति से बल का प्रयोग करने वाला, (क्रि० वि०) बहुत ज़ोर से।
बरजोरी–(हिं० स्त्री०) बल का प्रयोग, ज़बरदस्ती, (क्रि०वि०) ज़बरदस्ती से।
बरट–(सं०पु०) एक प्रकार का अन्न।
बरणना–(हिं०क्रि०) वर्णन करना।
बरत–(हिं०पु०) व्रत, उपवास, (स्त्री०) रस्सी, वह रस्सा जिसपर चढ़कर नट खेल करता है।
बरतन–(हिं० पु०) कोई वस्तु रखने का मिट्टी या धातु का पात्र, व्यवहार, बरताव।
बरतना–(हिं० क्रि०) व्यवहार करना, बरताव करना, व्यवहार में लाना।
बरतनी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की लकड़ी की कलम, लिखने का ढग।
बरतर–(फा० वि०) श्रेष्ठतर, अधिक, अच्छा।

बरतरफ़–(फा० वि०) ओर किनारे, अलग, नौकरी से अलग किया हुआ, मौकूफ ।
बरताना–(हिं० क्रि०) वितरण करना, बाटना ।
बरताव–(हिं० पु०) किसी के प्रति किया जाने वाला कार्य, व्यवहार ।
बरती–(हि० स्त्री०) ब्रत्ती (वि०) जिसने व्रत या उपवास किया हो ।
बरतेला–(हिं० स्त्री०) जुलाहे की करगह के दाहने ओर की खूटी ।
बरतोर–(हिं० पु०) बाल की जड़ टूट जाने से होने वाला फोड़ा ।
बरदना–(हि० क्रि०) देखो बरदाना ।
बरदवान–(हि० पु०) तेज़ हवा ।
बरदवाना–(हि०क्रि०) बरदाने का काम दूसरे से कराना ।
बरदा–(हि० पु०) देखो बरधा ।
बरदाना–(हि०क्रि०) गाय, भैस, बकरी आदि पशुओं की उनकी जाति के नर पशुओ से सतान उत्पन्न कराने के लिये सयोग कराना, जोड़ा खिलवाना, जोड़ा खाना ।
बरदाफ़रोश–(फा०पु०) दासों को खरीदने और वेंचने वाला ।
बरदाफ़रोशी–(फा०स्त्री०) गुलाम वेंचने का काम ।
बरदार–(फा० वि०) किसी पदार्थ के ढोने वाला, पालन करने वाला, मानने वाला ।
बरदाश्त–(फा० स्त्री०) सहन करने की क्रिया या भाव, सहन ।
बरदौर–(हिं० पु०) मवेशियों को बाधने का स्थान ।
बरधा–(हि० पु०) बैल ।
बरधवाना–(हि०क्रि०) देखो बरदवाना।
बरधाना–(हि०क्रि०) देखो बरदाना ।
बरधी–(हि०पु०) एक प्रकार का चमड़ा
बरन–(हि० पुं०) देखो वर्ण ।
बरनन–(हि० पु०) देखो वर्णन ।
बरनना–(हि० क्रि०) वर्णन करना, बयान करना ।
बरनर–(अ० पु०) लम्प का ऊपरी भाग जिसमें बत्ती लगाई जाती है ।
बरना–(हि० क्रि०) पति या पत्नी के रूप में अंगीकार करना, दान देना, नियुक्त करना, किसी काम में लगाना, किसी काम के लिये किसी को चुनना, देखो बलना ।
बरनाल–(हि० पु०) जहाज़ में का पानी निकलने का मार्ग या परनाला ।
बरनेन–(हि० स्त्री०) विवाह मुहूर्त के पहले होने वाली एक रस्म ।
बरपा–(फा०वि०) खड़ा हुआ, उठा हुआ, इस शब्द का प्रयोग प्रायः झगड़ा, फसाद आदि अशुभ बातों के लिये किया जाता है ।
बरफ–(हिं० स्त्री०) देखो बर्फ ।
बरफी–(फा०स्त्री०) जमाकर बनाई हुई कोई चौकर मिठाई ।
बरबंड–(हि० पु०) प्रचण्ड, बलवान्, उद्दण्ड, ताकतवर, देखो बलवन्त ।
बरबट–(हि० वि०) देखो बरबस ।
बरबत–(अ०पु०) एक प्रकार का बाजा ।
बरबर–(हि० स्त्री०) व्यर्थ की बात, बर्बर ।
बरबरी–(हिं०स्त्री०) एक देश का नाम, एक प्रकार की बकरी ।
बरबस–(हि०क्रि०वि०) बलपूर्वक, जबरदस्ती व्यर्थ, फजूल ।
बरबाद–(फा०वि०) नष्ट, चौपट, व्यर्थ, खर्च किया हुआ ।
बरबादी–(फा०स्त्री०)नाश, खराबी तबाही
बरम–(हि० पु०) कवच, जिरहबख्तर ।
बरमा–(हिं० पु०) लकडी आदि में छेद करने का एक औजार, ब्रह्मदेश ।
बरमी–(हि०पु०) बरमा देश का रहने वाला, (स्त्री०) बरमा देश की भाषा, छोटा बरमा ।
बरम्हा–(हिं०पु०) ब्रह्मा, बरमा देश ।
बरम्हाना–(हिं०क्रि०) ब्राह्मण का आशीर्वाद देना ।
बरम्हाव–(हि०पु०) ब्राह्मण का आशीर्वाद
बररे–(हि०पुं०) देखो बर्रे ।
बरवट–(हि०स्त्री०)तापतिल्ली नाम का रोग
बरवल–(हि० पु०) एक प्रकार का पहाडी भेंड ।
बरवा बरवै–(हिं०पु०) ध्रुव या कुरङ्ग नाम का छन्द, जिसमें उन्नीस मात्रा होते हैं ।
बरषना–(हि०क्रि०) बरसना, वर्षा होना।
बरषा–(हि०स्त्री०) वृष्टि, पानी बरसना, वर्षा काल, बरसात ।
बरषाना–(हि० क्रि०) देखो बरसाना ।
बरषासन–(हिं० पुं०) अन्न का उतना परिमाण जितना एक परिवार एक वर्ष में खा सके ।
बरस–(हि० पु०) वर्ष, तीन सौ पैंसठ दिन अथवा बारह महीने का समूह साल
बरसगाँठ (हि० स्त्री०) सालगिरह, वह दिन जिसमें किसी का जन्म हुआ हो, जन्म दिन ।
बरसना–(हि० क्रि०) आकाश से जल के बूँदों का निरन्तर गिरना, मेह पड़ना, वर्षा के जल की तरह किसी पदार्थ का ऊपर से गिरना, अधिक प्रगट होना, आसाया जाना ।
बरसाइत–(हि०स्त्री०) ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या जिस दिन स्त्रिया वटसावित्री का पूजन करती हैं ।
बरसाइन–(हि० स्त्री०) प्रति वर्ष ब्याने वाली गाय ।
बरसाऊ–(हि०वि०) बरसने वाला ।
बरसात–(हिं०स्त्री०) वर्षाऋतु, वर्षाकाल ।
बरसाती–(हिं०वि०) वर्षा सम्बन्धी, बरसात का, (पु०) बरसात में होने वाला घोड़ों का एक रोग, चरस पक्षी बरसात में होने वाली एक प्रकार की फुंसिया, एक प्रकार का वर्षा ऋतु में पहरने का कपड़ा जिसके पहरने से शरीर नहीं भींगता ।
बरसाना–(हिं० क्रि०) वृष्टि या वरसा करना, अन्न को ओसाना, वर्षा की तरह निरन्तर ऊपर से गिरना, अधिक मात्रा या सख्या में चारो तरफ से प्राप्त कराना ।
बरसायत–(हिं० स्त्री०) शुभ मुहूर्त, देखो

बरसाइत।

बरसावना-(हिं०क्रि०) देखो बरसाना।

बरसी-(हिं० स्त्री०) वह श्राद्ध जो किसी मृतक के उद्देश्य से उसके मरने की तिथि के ठीक एक वर्ष बाद होता है।

बरसू-(हिं०पु०) एक प्रकार का वृक्ष।

बरसौंड़ी-(हिं० स्त्री०) प्रति वर्ष लिया जाने वाला कर।

बरसौंहाँ-(हिं०वि०) बरसने वाला।

बरहेटा-(हिं०पु०) कड़वा भटा।

बरह-(हिं० पु०) वृक्ष पौधे आदि का पत्ता

बरहना-(फा०वि०) नग्न, नंगा।

बरहम-(फा० वि०) उत्तजित, क्रुद्ध, भड़का हुआ।

बरहा-(हिं०पु०) खेत में सिंचाई के लिये बनाई हुई छोटी नाली, मोटा रस्सा।

बरही-(हिं० पु०) मोर, मुर्गा, अग्नि, इन्धन का बोझ, पत्थर आदि उठाने का मोटा रस्सा, साही नामक जन्तु, प्रसूता का सन्तान उत्पन्न करने के बारहवें दिन का स्नान तथा अन्य क्रियायें

बरहीपीड़-(हिं० पु०) मोर के परों का बना हुआ मुकुट।

बरहीमुख-(हिं० पु०) देखो वर्हिमुख, देवता।

बरहौं-(हिं० पु०) देखो बरही।

बरह्मंड-(हिं०पुं०) देखो ब्रह्माण्ड।

बरह्मावना-(हिं० क्रि०) ब्राह्मण का आशीर्वाद देना, आसीस देना।

बरांडल-(हिं० पु०) मस्तूल के बांधने का जहाज पर का रस्सा।

बरांडा-(हिं० पु०) देखो बरामदा।

बरांडी-(अं० स्त्री०) एक प्रकार की विलायती शराब।

बरा-(हिं०पु०) एक प्रकार का पकवान जो उड़द की दाल को पीसकर बनाया जाता है, भुजा पर पहरने का एक गहना

बराई-(हिं० स्त्री०) देखो बड़ाई।

बराक-(हिं०पु०) युद्ध लड़ाई, महादेव (वि०) अधम, पापी, बेचारा, बापुरा, शोचनीय।

बराट-(हिं० स्त्री०) कौड़ी।

बरात-(हिं० स्त्री०) वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर को लेकर कन्या वाले के घर पर जाते हैं, जनेत, एक साथ जाने वाले अनेक मनुष्यों का समुदाय।

बराती-(हिं० पु०) वर के साथ कन्या के घर बरात में जाने वाला मनुष्य।

बरान कोट-(अं० पु०) वह बड़ा कोट या लवादा जो सिपाही लोग जाड़े या बरसात में वर्दी के ऊपर पहनते हैं।

बराना-(हिं०क्रि०) जान बूझकर अलग करना, बचाना रक्षा करना, प्रसंग पड़ने पर भी कोई बात छिपा रखना, देख रेख कर अलग करना, छांटना खेत में सिंचाई का काम करना, चुनना, छांटना।

बराबर-(फा० वि०) मान, संख्या, महत्व, मूल्य आदि के विचार से समान, तुल्य, एकसा, समान पद का, ठीक, जैसा चाहिये वैसा, समतल, जो ऊँचा नीचा न हो, (क्रि०वि०) सर्वदा निरन्तर, लगातार, एक साथ एक पंक्ति में, **बराबर करना**-अन्त करना, समाप्त करना।

बराबरी-(हिं०स्त्री०) समानता, तुल्यता, सादृश्य, सामना, मुकाबला।

बरामद-(फा० वि०) जो बाहर निकल आया हो, बाहर आया हुआ, चोरी गई हुई या खोई हुई वस्तु जो कहीं से खोजकर निकाली जावे, (स्त्री०) निकासी, आमदनी, वह जमीन जो नदी के हट जाने से निकल आई हो।

बरामदा-(फा० पु०) घर की सीमा से कुछ बाहर निकला हुआ तथा ढंपा हुआ,तंग लंबा भाग,मकान के आगे का छाया हुआ तथा तीन ओर से खुला हुआ स्थान, बारजा, ओसारा, दालान।

बरामीटर-(हिं०पु०) देखो बैरोमीटर।

बराय-(फा०अव्य०,निमित्त, वास्ते, लिये।

बरायन-(हिं०पु०) विवाह के समय वर के हाथ में पहराने का लोहे का छल्ला।

बरार-(हिं०पु०) देखो बेरार (हिं०पुं०) एक प्रकार का जंगली पशु।

बरारक-(हिं०पु०) हीरक, हीरा।

बरारी-(हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी, **बरारी श्याम**-एक संकर राग का नाम।

बराव-(हिं० पु०) निवारण, बचाव।

बरास-(हिं० पु०) भीमसेनी कपूर, पाल को घुमाने की रस्सी।

बराह-(हिं०पु०) देखो वराह, (फा०क्रि० वि०) द्वारा, जरिये से, के तौर पर।

बराही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की पतली ऊख।

बरिआत-(हिं०स्त्री०) देखो बरात।

बरिच्छा-(हिं०पु०) देखो बरच्छा।

बरिया-(हिं०वि०) बलवान्, ताकतवर।

बरियाई-(हिं० क्रि० वि०) जबरदस्ती, हठपूर्वक।

बरियारा-(हिं० पु०) इक प्रकार का छतनारा छोटा पौधा, खिरेंटी, बनमेथी

बरियाल-(हिं० पु०) एक प्रकार का पतला बांस।

बरिल-(हिं० पुं०) पकौड़ी या बरे की तरह का एक पकवान।

बरिल्ला-(हिं०पु०) सज्जी खार।

बरिषा-(हिं०स्त्री०) देखो वर्षा।

बरिष्ठ-(हिं०पु०) देखो वरिष्ठ।

बरिस-(हिं०पु०) वर्ष, साल।

बरी-(हिं० स्त्री०) गोल टिकिया बटी, एक प्रकार की घास, उर्द या मूंग की पीठी के सुखाये हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े, वह मेवा या मिठाई जो विवाह के बाद वर पक्ष की तरफ से दुलहिन के घर भेजे जाते हैं (फा०वि०) मुक्त, छूटा हुआ।

बरीस-(हिं०पु०) देखो वर्ष साल।

बरीसना-(हिं०क्रि०) देखो बरसना।

बरु-(हिं०अव्य०) चाहे,कुछ चिन्ता नहीं, भले ही (हिं०पु०) देखो वर।

बरुआ-(हिं०पुं०) ब्रह्मचारी, ब्राह्मण का पुत्र, बटु, उपनयन संस्कार, मूंज के छिलके की बनी हुई बद्धी जिससे डलिया आदि बनाई जाती हैं।

वरुक-(हिं०अव्य०) देखो वरु ।
वरुना-(हिं०पु०) एक प्रकार का सीधा सुन्दर वृक्ष, बन्ना, या बरुआरी भी इसको कहते हैं ।
वरुनी-(हिं०स्त्री०) आँख की पलक के किनारे पर के बाल ।
वरुला-(हिं०पु०) देखो बरूला ।
वरुवा-(हिं०पु०) देखो बरुआ ।
वरुयी-(हिं०स्त्री०) सई और गोमती के बीच की एक नदी ।
वरेड़ा-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का वह मोटा गोल लट्ठा जो लगाई बल में छाजन के नीचे लगाया जाता है, छाजन या खपरैल के बीच का सबसे ऊंचा स्थान
वरेड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो बरेढा ।
वरे-(हिं० अव्य०) बदले में, पलटे में निमित्त, वास्ते, (क्रि०वि०) जबरदस्ती, बड़े जोर से, ऊंचे स्वर से ।
वरेखी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का गहना जिसको स्त्रियां भुजा पर पहरती हैं, (हिं० स्त्री०) विवाह सम्बध के निमित्त कन्या को देखना, ठहरौनी ।
वरेजा-(हिं० पु०) पान का बगीचा या भीटा ।
वरेत वरेता-(हिं०पु०) सन का मोटा रस्सा, नार ।
वरेदी-(हिं०पु०) चरवाहा ।
वरेषी-(हिं०स्त्री०) देखो बरेखी ।
वरो-(हिं० स्त्री०) बाल की जड़ की पतली रेखा ।
वरोक-(हिं०पुं०) विवाह सम्बध पक्का होने पर कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाने वाला द्रव्य, बरच्छा ।
वरोठा-(हिं०पु०) ड्योढ़ी, पौरी, बैठक, दीवानखाना, बरोठे का चार-द्वार पूजा ।
वरोधा-(हिं० पु०) वह खेत जिसमें पिछली फसल कपास रही हो ।
वरोरु-(हिं०वि०) देखो बरोरु ।
वरोह-(हिं०स्त्री०) बरगद की सता जो नीचे की ओर बढ़ती हुई जमीन पर जाकर जड़ पकड़ लेती है ।
वरौंछी-(हिं० स्त्री०) सोनार की गहना साफ करने की सुअर के बालों की बनी हुई कूंची ।
वरौंखा-(हिं०पु०) एक प्रकार का ऊंचा और लंबा गन्ना ।
वरौठा-(हिं०पु०) देखो बरोठा ।
वरौनी-(हिं०स्त्री०) देखो बरुनी ।
वरौरी-(हिं०स्त्री०) बरी नाम का पकवान, बड़ी ।
वर्क-(अ० स्त्री०) विद्युत्, बिजली, (वि०) तेज, चालाक, अच्छे प्रकार से अभ्यस्त, तुरत उपस्थित होने वाला ।
वर्कत-(हिं०स्त्री०) देखो बरकत ।
वर्खास्त-(हिं०वि०) देखो बरखास्त ।
वर्छा-(हिं०पु०) देखो बरछा ।
वर्ज-(हिं०वि०) देखो वर्ज ।
वर्जना-(हिं०क्रि०) देखो बरजना ।
वर्णना-(हिं० क्रि०) वर्णन करना, बखान करना ।
वर्तन-(हिं०पु०) देखो बरतन ।
वर्तना-(हिं०क्रि०) व्यवहार करना, काम में लाना ।
वर्ताव-(हिं०पु०) देखो बरताव ।
वर्द-(हिं०पु०) वृष, बैल ।
वर्दाश्त-(फा०स्त्री०) देखो बरदाश्त ।
वर्न-(हिं०पु०) देखो वर्ण ।
वर्फ-(फा०स्त्री०) हिम, जमा हुआ जल, यन्त्रों की सहायता से अथवा कृत्रिम रीति से जमाया हुआ पानी जिससे गर्मी के दिनों में लोग पीने का पानी ठंढा करते हैं, कृत्रिम रीति से जमाया हुआ दूध, फलों का रस आदि जो गरमी के दिनों में खाने के काम में आता है ।
वर्फिस्तान-(फा० पु०) बर्फ का मैदान या पहाड़ ।
वर्फी-(फा०स्त्री०) देखो बरफी ।
वर्वट-(सं०पु०) राजमाष बोड़ा ।
वर्वटी-(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी, एक प्रकार का धान ।
वर्वर-(सं० वि०) हकलाता हुआ, घुंघुरवा, असभ्य, जंगली, अशिष्ट, उद्दण्ड, (पु०) जंगली आदमी, असभ्य मनुष्य, हथियार की झनकार, एक प्रकार का नाच, एक प्रकार का कीड़ा।
वर्वरा-(सं० स्त्री०) वनतुलसी, एक प्रकार की मक्खी ।
वर्वरी-(सं० स्त्री०) वन तुलसी, ईंगुर, पीत चन्दन ।
वर्रा-(हिं० पु०) रस्से की खिंचाई जो प्रायः गांवों में कुआर सुदी चौदस को होती है ।
वर्राक-(अ०वि०) धवल,सफेद चमकीला, जग मगाता हुआ, तेज, वेगयुक्त,चतुर, चालाक, तीव्र, अच्छी तरह से अभ्यास किया हुआ ।
वर्राना-(हिं० क्रि०) व्यर्थ बकबक करना, स्वप्न की अवस्था में बोलना ।
वर्रे-(हिं०पु०) भिड़ नामक कीड़ा,ततैया
वर्वुर-(सं० नपु०) जल, पानी, बबूल का पेड़ ।
वर्सात-(हिं०स्त्री०) देखो बरसात ।
वर्ह-(सं०नपु०) मोर का पक्ष,पत्र,पत्ता ।
वर्हणा-(सं० वि०) शत्रु का संहार करने वाला ।
वर्हिण-(सं०पु०) मयूर, मोर, वर्हिण वाहन-कार्तिकेय ।
वर्ही-(सं०पु०) मयूर, मोर ।
वर्हिमुख-(सं० पु०) देवता, अग्नि ।
वर्हिसद्-(सं०पु०) पितरों के अधिष्ठाता देवगण ।
वलंद-(फा० वि०) ऊंचा ।
वल-(सं० नपु०) सेना, स्थूलता, मोटापन, सामर्थ्य,ताकत,वरुण वृक्ष, बलदेव, बलराम, रुधिर, कौवा, पीपल, शरीर, वीर्य, कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम, नेत्र, बादल, आश्रय, सहारा, भरोसा, भार उठाने की शक्ति, पार्श्व ।
वल-(हिं० पु०) लपेट, फेरा, ऐंठन, मरोड़, टेढ़ापन, सिकुड़न घुमाव, अन्तर फर्क, वल खाना-ऐंठन के साथ टेढ़ा होना, झुकना, घाटा सहना, वल पड़ना-फर्क होना ।
वलकट-(हिं० वि०) पेशगी ।

बलकना–(हिं० क्रि०) उफान खाना, उबलना, खौलना, आवेश में आना, उमड़ना।
बलकर–(स० वि०) जिसमें बल की वृद्धि हो।
बलकल–(हिं०पु०) देखो वल्कल।
बलकाना–(हिं० क्रि०) उबालना, खौलाना, उत्तेजित करना।
बलकुआ–(हिं०पु०) एक प्रकार का घास।
बलकृत–(स० वि०) शक्ति या बल देने वाला।
बलक्त–(स० वि०) बलयुक्त।
बलगम–(स० पुं०) श्लेष्मा, कफ।
बलचक्र–(स० नपु०) सेना का व्यूह, राजदण्ड।
बलज–(स०नपु०) खेत, नगर का द्वार, फसल, धान का ढेर, युद्ध, लड़ाई, दरवाजा।
बलजा–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, रज्जु, रस्सी।
बलद–(स०पु०) वृषभ, साड़, बैल, असगध, (वि०) बल देने वाला।
बलदण्ड–(स०पु०) कसरत करने का एक प्रकार का लकड़ी का ढाचा।
बलदाऊ–(हिं०पु०) बलदेव, बलराम।
बलदीनता–(स०स्त्री०) ग्लानि, लज्जा।
बलदेव–(स०पु०) बलराम।
बलना–(हिं०क्रि०) जलना, दहकना।
बलनिग्रह–(स० पुं०) शक्ति या बल का क्षय।
बलनेह–(हिं०पु०)एक सकर राग का नाम।
बलन्धरा–(स०स्त्री०) भीमसेन की पत्नी।
बलपति–(स०पु०) इन्द्र का एक नाम।
बलपुच्छक–(स०पु०) काक, कौवा।
बलप्रद–(स०वि०)बल देनेवाला,बलदायक।
बलप्रसू–(स०स्त्री०)बलरामकी माता रोहिणी
बलबलाना–(हि०क्रि०) ऊट का बोलना, निरर्थक शब्द बोलना, व्यर्थ की बकवाद करना।
बलबलाहट–(हि० स्त्री०) ऊट की बोली, व्यर्थ की बकवाद, अहकार, घमड।
बलबीज–(हिं०पु०) ककही नामक पौधे का बीज।
बलबीर–(हि० पु०) बलराम के भाई श्री कृष्ण।
बलभ–(सं०पु०) एक विषैला कीडा।
बलभद्र–(स० पु०) अनन्त, बलदेवजी, लोध, नील गाय, एक पर्वत का नाम।
बलभद्रा–(स०स्त्री०)कुमारी,जगली गाय।
बलभी–(हिं०स्त्री०)वह कोठरी जो मकान के सबसे ऊपर वाली छत पर बनी हो, चौबारा।
बलम, बलमा–(हिं०पु०) पति, नायक।
बलय–(हिं०पु०) देखो वलय।
बलराम–(स०पु०) श्रीकृष्ण के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न थे।
बलल–(स०पु०) बलराम।
बलवत्–(स०वि०) ताकतवर (पु०)शिव।
बलवंड–(हिं०वि०) बलवान्, ताकतवर।
बलवन्त–(स० वि०) बलवान्, बली।
बलवर्धन–(स० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम (पु०) सेना की वृद्धि।
बलवला–स०स्त्री०) गन्धक।
बलवा–(फा० पु०) विद्रोह, विप्लव, बगावत, दगा।
बलवाई–(फा०वि०)विद्रोही, बागी,उपद्रवी, बल वाला, फसाद करने वाला।
बलवान्–(स० वि०) बलिष्ट, ताकतवर, दृढ़, मजबूत, शक्तिमान्।
बलविवर्णिका–(स० स्त्री०) दुर्गा का एक नाम।
बलविन्यास–(सं० पु०) युद्ध के लिये सैन्य व्यूह की रचना।
बलवीर–(हिं०पु०) देखो बलबीर।
बलव्यसन–(स० पु०) सेना को तितर बितर करना।
बलव्यूह–(स०पुं०)एक प्रकार की समाधि
बलशाली–(स०वि०)बलवान्, ताकतवर।
बलशील–(सं० वि०) बलवान्, बली।
बलसम्भव–(स०पु०) साठी का धान।
बलसुम–(हि० वि०) बलुआ, जिसमें बालू हो।
बलसूदन–(स०पु०) विष्णु।
बलसेना–(सं० स्त्री०) सेनादल।
बलस्थिति–(सं०स्त्री०) शिविर, छावनी।
बलहर–(स० वि०) बल नाशक।
बलहीन–(स०वि०) बलशून्य, बल रहित।
बला–(स०स्त्री०) बरियरा नाम का पौधा, दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम, लक्ष्मी, पृथ्वी, नाटकों में छोटी बहन के लिये सबोधन का शब्द, वह विद्या जिसको विश्वामित्र ने रामचन्द्र को सिखलाया था, इसके प्रभाव से युद्ध में भूख प्यास नहीं लगती।
बला–(अ० स्त्री०) दुःख, कष्ट, आपत्ति, आफत, व्याधि, रोग, भूत, प्रेत की बाधा, बलाका–अत्यन्त, बहुत।
बलाई–(हिं० स्त्री०) देखो बलाय।
बलाक–(स० पु०) बक, बगला, एक राक्षस का नाम।
बलाकी–(स० स्त्री०) एक प्रकार का बगला, बगलों की पंक्ति, एक प्रकार का नाच, कामुकी स्त्री।
बलाकी–(स०पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
बलाग्र–(स० नपु०) सेना का अगला भाग, सेनापति (वि०) बलवान्।
बलाङ्गक–(स० पु०) वसन्त ऋतु।
बलाट–(स० पु०) मुद्ग, मूग।
बलाढ्य–(स०वि०) शक्तिशाली, बलवान्
बलात्–(सं० अव्य०) बलपूर्वक, ज़बरदस्ती, हठ से।
बलात्कार–(स० पुं०) किसी की इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक कोई काम करना, अत्याचार, अन्याय, किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध सभोग करना।
बलात्मिका–(स०स्त्री०) हाथी सूड़ नामक पौधा।
बलाधिक–(स०पु०) अधिक बलशाली।
बलाध्यक्ष–(स० पु०) सेनापति।
बलानुज–(स० पुं०) श्रीकृष्ण।
बलाय–(स० पुं०) वरुण वृक्ष (अ०पु०) आपत्ति विपत्ति, दुःख, कष्ट, प्रेत आदि की बाधा, बहुत कष्ट देने वाला मनुष्य, देखो बला।
बलाराति–(स० पु०) इन्द्र, विष्णु।
बलालक–(स०पु०) जल आमला।

वलावलेप-(सं० पु०) दर्प, गर्व, अहंकार।
वलाश-(सं० पु०) गले का एक रोग।
वलास-(हिं०पु०) वरुना नाम का पौधा।
वलाह-(हिं० पु०) घोड़ा, अश्व।
वलाहक-(सं०पु०) मेघ, बादल, मोथा, एक दैत्य का नाम, श्रीकृष्ण के रथ के एक घोडे का नाम, एक प्रकार का बगला, एक नाग का नाम।
वलि-(सं० पु०) भूमिका कर, उपहार, भेंट, चवर का डंडा, पूजा सामग्री, पंच महायज्ञों में से एक, खाने की वस्तु, अन्न, चढावा, नैवेद्य, वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जावे, प्रह्लाद का पोता जो दैत्यों का राजा था (स्त्री०) सखी, छोटी बहन, वलि चढना-मृत्यु को प्राप्त होना, वलि चढाना-पशु को मारकर देवता को चढाना, वलि जाना-न्योछावर होना, वलि जाऊं- अपने प्राण मैं तुम पर न्योछावर करता हूँ।
वलिकर्म-वलिदान।
वलिदान-(सं० नपु०) किसी देवता के उद्देश्य से नैवेद्य आदि पूजा की सामग्री चढाना, दुर्गा आदि देवता को चढाने के लिये बकरे आदि पशु को मारना।
वलिध्वंसी-(हिं० पु०) विष्णु।
वलिनन्दन-(सं० पु०) वलि के पुत्र वाणासुर।
वलिसूदन-(सं०पु०) वलिध्वंसी, विष्णु।
वलिपशु-(हिं० पु०) वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाता हो।
वलिपुष्ट-(सं० पु०) काक, कौवा।
वलिप्रदान-(सं०पु०) देखो वलिदान।
वलिप्रिय-(सं० पु०) काक, कौवा।
वलिबन्धन-(सं० पु०) विष्णु।
वलिभ-(सं० पुं०) वृद्ध पुरुष, बूढा आदमी।
वलिभुक्-(सं० पु०) कौवा।
वलिभृत्-(सं०वि०) कर देने वाला, आधीन।
वलिभोजन, वलिभोजी-(सं०पु०) कौवा
वलिमन्दिर-(सं० नपु०) अधोलोक, पाताल।
वलिया-(हिं०वि०) बलवान्, ताकतवर।
वलिवर्द-(सं० पु०) वृष, सांड।
वलिवेश्म-(सं० नपु०) पाताल।
वलिवैश्वदेव-(सं० पु०) भूतयज्ञ नामक पांच महायज्ञों में से चौथा यज्ञ जिसमें गृहस्थ पके हुए अन्न में से एक एक ग्रास लेकर मन्त्र पूर्वक भिन्न भिन्न स्थानों में रखता है।
वलिश-(सं० पु०) मछली फसाने की बंसी।
वलिष्ठ-(सं० पु०) ऊंट (वि०) अधिक बलवान्।
वलिसद्म-(सं० नपु०) रसातल।
वलिहन्-(सं०पु०) विष्णु, वामनदेव।
वलिहारना-(हिं० क्रि०) वलिदान करना, न्योछावर करना।
वलिहारी-(हिं० स्त्री०) श्रद्धा भक्ति प्रेम आदि के कारण अपने को निछावर करना, कुरबान, वलिहारी जाना-निछावर होना, वलिहारी लेना-प्रेम दिखलाना।
वली-(सं० स्त्री०) चमडे पर की झुर्री, वह रेखा जो चमडे के सिकुड़ने से पड़ती हो (वि०) पराक्रमी, बलवान्।
वलीक-(सं०नपु०) ओलती, ओरी।
वलीन-(सं० पु०) वृश्चिक, बिच्छू।
वलिवैठक-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बैठक की कसरत।
वलीमुख-(सं० पुं०) वानर, बन्दर।
वलीयान्-(सं० पु०) गर्दभ गदहा।
वलीवर्द-(सं० पु०) वृषभ, बैल।
वल शक-(सं० पु०) आमडे का पेड़।
वलु-(हिं० अव्य०) देखो वरु।
वलुआ-(हिं० वि०) रेतीला, जिसमें बालू अधिक मिला हो।
वलूच, वलूची-वलूचिस्तान देश का निवासी।
वलूत-(सं०पु०) ठंढे देश में होने वाला माजूफल की जाति का एक वृक्ष।
वलैया-(सं० स्त्री०) वला, वलाय, वलैया लेना-मंगल कामना सहित प्यार करना, किसी के रोग, कष्ट आदि को अपने ऊपर ले लेना।
वलोत्कट-(सं०वि०) अति बल युक्त।
वल्कल-(हिं० पु०) देखो वल्कल।
वल्कस-(सं० पु०) वह तलछट जो आसव बनाने में नीचे बैठ जाता है।
वल्कि-(फा० अव्य०) अन्यथा, इसके विरुद्ध ऐसा न हो कि, वेहतर, अच्छा।
वल्लभ-(हिं०पु०) देखो वल्लभ।
वल्लम-(हिं० पु०) बरछा, भाला, डंडा, सोंटा, वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसको प्रतिहार या चोबदार राजाओं के आगे आगे लेकर चलते हैं।
वलूमटेर-(अं० पु० वालन्टियर शब्द का अपभ्रंश) स्वयंसेवक, वह मनुष्य जो अपनी इच्छा से सेना में भरती होता है।
वल्लमवर्दार-(हिं० पु०) वह नौकर जो राजाओं की सवारी या बारात के साथ हाथ में बल्लम लेकर चलता है।
वल्लव-(सं०पु०) चरवाहा, रसोइया-दार, भीम का वह नाम जो उन्होंने विराट के यहां रसोइये के रूप में रक्खा था।
वल्ला-(हिं० पु०) लकड़ी का मोटा लंबा डंडा, मोटा डंडा, गेंद मारने की लकड़ी का डंटा, नाव खेने का डंडा, टांड़ा, शहतीर।
वल्लारी-(हिं० स्त्री०) संपूर्ण जाति की एक रागिणी।
वल्ली-(हिं०स्त्री०)छोटा वल्ला, देखो वल्ली
वल्व-(सं० नपु०) ज्योतिष में एक करण का नाम।
ववंड़ना-(हिं० क्रि०) व्यर्थ इधर उधर घूमना।
ववंडर-(हिं० पु०) चक्रवात, चक्र की तरह घूमती हुई वायु, आंधी, तूफान।
वव-(सं० पु०) ज्योतिष में पहले करण का नाम।
ववघूरा-(हिं०पु०) ववंडर, चक्रवात।
ववन-(हिं० पु०) देखो वमन।
ववना-(हिं०क्रि०) छिटकना, बिखरना, छितराना (पु०) वामन, बौना।

बवरना-(हिं०क्रि०) देखो बौरना।
बवादा-(हिं०स्त्री०) हल्दी की तरह की एक जड़ी।
बवासीर-(अ०स्त्री०) आर्श रोग, गुदा में मस्सा निकल आने का रोग।
बशिष्ठ-(हिं०पु०) देखो वसिष्ठ।
बशीरी-(अं०पु०) एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा।
बसंत-(हिं०पु०) देखो वसन्त।
बसंता-(हिं०पुं०)हरे रग की एक चिड़िया।
बसती-(हिं०वि०) वसन्त ऋतु सबधी, वसन्त का, सरसों के फूल के समान० रग, पीला कपड़ा (वि०) पीले रग का।
बसंदर-हिं०पु०) अग्नि, आग।
बस-(फा०वि०) पर्याप्त, भरपूर, बहुत, कफी (अव्य०) पर्याप्त, काफी, केवल, सिर्फ, (हिं०पु०) देखो वश।
बसन-(हिं०पु०) देखो वसन।
बसना-(हिं०क्रि०) स्थायी रूप से रहना, निवास करना, रहना, जनपूर्ण होना, ठहरना, सुगन्ध से पूर्ण हो जाना, डेरा डालना, सुगन्ध से भर जाना, (पु०) वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेट कर रक्खी जाय, वेठन, बरतन भाड़ा, थैली, घर बसना-गृहस्थी का बनना, कुटुम्ब सहित आनन्द से रहना, मन मे बसना-याद रखना।
बसनि-(हिं०स्त्री०) निवास, रहना, वास।
बसर-(फा०पु०) कालक्षेप, गुज़र।
बसवार-(हिं०पु०) छौंक, बघार।
बसवास-(हिं०पु०) निवास, रहना, रहने का ढंग या सुविधा, रहने का ढग, ठिकाना, स्थिति।
बसह-(हिं०पु०) वृषभ, बैल।
बसा-(हिं०स्त्री०)वसा, चर्बी,बरैं,भिड़।
बसात-(हिं०पु०) देखो बिसात।
बसाना-(हिं०क्रि०) बसने देना, रहने का ठिकाना देना, ठहराना, टिकाना, आबाद करना, रखना, बैठाना, वास देना, महकाना, बदबू करना, ज़ोर चलाना, घर बसाना-गृहस्थी जमाना, कुटुम्ब सहित रहने की व्यवस्था करना।
बसिऔरा-(हिं०पु०) बासी भोजन सीतला अष्टमी आदि के वे दिन जिनको स्त्रिया बासी भोजन करती हैं।
बसिया-(हिं०वि०) देखो बासी।
बसियाना-(हिं०क्रि०) बासी हो जाना।
बसिष्ठ-हिं०पु०) देखो वसिष्ठ।
बसीकत-(हिं०स्त्री०) बसने का भाव या क्रिया, रहन, बस्ती, आबादी।
बसीकर-(हिं०वि०) वश में करने वाला।
बसीकरन-(हिं०पु०) देखो वशीकरण।
बसीठ-(हिं०पु०) दूत, सन्देश ले जाने वाला मनुष्य।
बसीठी-(हिं०स्त्री०)दौत्य, दूत का काम।
बसीत-(अं०पु०) एक यन्त्र जो जहाज़ पर सूर्य का अक्षाश देखने के लिये रहता है।
बसीना-(हिं०पु०) रहन, रहायश।
बसु-(हिं०पु०) देखो वसु।
बसुफला-(हिं०पु०) एक वर्णवृत्त जिसका तारक भी कहते हैं।
बसुदेव-(हिं०पु०) देखो वसुदेव।
बसुधा-(हिं०स्त्री०) देखो वसुधा।
बसुमती-(हिं०स्त्री०) देखो वसुमती।
बसुला, बसूला-(हिं०पु०) बढ़ई का लकड़ी छीलने और गढ़ने का औजार
बसूली-(हिं०स्त्री०) मेमार का बसुले के आकार का छोटा औज़ार।
बसेरा-(हिं०वि०) रहने वाला, बसने वाला, (पु०) यात्रियों का टिकने का स्थान, वह स्थान जहा पक्षी रात में रहते हैं, टिकने या रहने का भाव, निवास, रहना, बसेरा करना-टिकना, ठहरना, डेरा देना, बसेरा लेना-टिकना, ठहरना, बसेरा देना-ठहराना, ठहरने का स्थान देना।
बसेरी, बसैया-(हिं०वि०) निवासी, रहने वाला।
बसोवास-(हिं०पु०) निर्वासस्थान।
बसौंधी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की रबड़ी जो सुगन्धित और लच्छेदार होती है।
बस्ट-(अं०पुं०) मूर्ति या चित्र में मुख तथा छाती के ऊपर के भाग की बनावट।
बस्त-(स०पु०)सूर्य, बकरा, बस्तकर्ण-शाल का वृक्ष, असना का पेड़, बस्तगन्धा-अजमोदा।
बस्तर-(हिं०पु०) देखो वस्त्र।
बस्ता-(फा०पु०)कपडे का चौकोर टुकड़ा जिसमें कागज़ के पुट्ठे, पुस्तक, बही खाते आदि बाधकर रक्खे जाते हैं।
बस्तार-(फा०पु०) एक में बधीं हुई अनेक वस्तुओं का समूह, पुलिंदा।
बस्ती-(हिं०स्त्री०) जनपद, निवास, आबादी, बहुत से घरों का समूह जिसमें लोग बसते हैं।
बस्तु-(हिं०पु०) देखो वस्तु।
बस्त्र-(हिं०पुं०) देखो वस्त्र।
बस्य-(हिं०वि०) देखो वश्य।
बस्साना-(हिं०क्रि०) दुर्गन्ध देना, बदबू निकलना।
बहँगा-(हिं०पुं०) बड़ी बँहगी।
बहँगी-(हिं०स्त्री०) तराजू के आकार का एक ढाँचा जिसके दोनों ओर के पलरों पर बोझ ले जाते हैं, कावर।
बहकना-(हिं०क्रि०) मार्ग भ्रष्ट होना, रास्ता भूल जाना, भटकना, किसी की बात या भुलावे में आ जाना, किसी के फ़ुसलाने में कोई काम कर बैठना, किसी बात में लग जाने पर शान्त होना, मद से चूर रहना, आपे में न रहना, ठीक स्थान पर न जाकर दूसरी ओर जा पड़ना, चूकना, बिना भला बुरा विचारे किसी के फ़ुसलाने में आकर कोई काम कर बैठना, बहकी बहकी बातें करना-मतवाले की तरह बकबक करना।
बहकाना-(हिं०क्रि०) ठीक लक्ष्य या स्थान से दूसरी ओर ले जाना, फेरना या फर देना, भुलावा देना, भटकाना, शान्त करना, बहलाना, ठीक रास्ते से दूसरी ओर ले जाना या फेरना, बातों में फ़ुसलाना, भरमाना।
बहकावट-(हिं०स्त्री०) बहकाने की क्रिया या भाव।

वहतोल-(हिं० स्त्री०) पानी वहाने की नाली, नरहा।
वहत्तर-(हि० वि०) सत्तर और दो की सख्या का (पु०) सत्तर और दो की संख्या ७२, वहत्तरवाँ-जिसका स्थान वहत्तर पर पड़े।
वहदुरा-(हिं०पु०) एक प्रकार का कीड़ा जो चने की फसल को खराव करता है।
वहन-(हिं० स्त्री०) देखो वहिन (स्त्री०) वहने की क्रिया या भाव।
वहना-(हि० क्रि०) हट जाना या दूर होना, पानी की धारा मे पड़कर जाना ऊपर रख कर ले चलना, जल्दी जल्दी अडे देना, व्यर्थ खर्च हो जाना, उठना, चलना, धारण करना, रखना, हवा का चलना, वहुतायत से मिलना, द्रव रूप के पदार्थ का किसी ओर चलना, बुरा या अधम होना, ठीक लक्ष्य से हट जाना, फिसलना, वूद वूद करके या धारा रूप मे निकलना, मारा मारा फिरना, अवारा होना, सत् मार्ग से विचलित होना, गर्भपात होना, निर्वाह करना, धन डूव जाना, सस्ता मिलना, कुमार्गी होना, वहती गंगा मे हाथ धोना-ऐसी वात से फायदा उठाना जिससे अनेक लोग लाभ उठाते हो।
वहनापा-(हिं०पु०) वहन का सम्वन्ध।
वहनी-(हिं०स्त्री०) वह्नि, आग, ऊख के रस रखने की ठिलिया।
वहनु-(हिं०पु०) देखो वहन,सवारी,यान
वहनेली-(हिं० स्त्री०) वह जिसके साथ वहनापा हो।
वहनोई-(हिं०पु०) वहन का पति।
वहनौता-(हिं०पु०) वहिन का पुत्र।
वहनौरा-(हिं०पु०) वहिन का ससुराल।
वहरा-(हिं०पु०) वह जो कान से कम सुनता हो, वो विलकुल न सुनता हो।
वहराना-(हि० क्रि०) भुलावा देना, वहकाना, दुःख की वात भुलाने के लिये ऐसी वात कहना जिसमें चित्त प्रसन्न हो जावे।
वहरिया-(हिं० पु०) वल्लभ सम्प्रदाय के मदिर के वे कर्मचारी जो मन्दिर के वाहर रहते हैं।
वहरियाना-(हिं०क्रि०) वाहर निकालना, अलग करना, अलग होना, वाहर की ओर होना, नाव का किनारे से हट कर मझधार की ओर जाना या ले जाना।
वहरी-(हिं० स्त्री०) वाज़ पक्षी के आकार की परन्तु इससे कुछ छोटी एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।
वहरू-(हिं० पु०) मझोले कद का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट और सुन्दर होती है।
वहरूपिया-(हिं० पु०) वह जो नाना प्रकार के रूप धारण करता हो, देखो वहुरूपिया।
वहल-(स०पु०) नाव, ईख (वि०) पुष्ट, मजबूत, प्रचुर, अधिक, स्थूल, मोटा (हि०स्त्री०) वैल से खींची जाने वाली एक प्रकार की छतरीदार गाड़ी।
वहलत्वच्-(स०पु०) सफेद लोध, भोजपत्र का वृक्ष।
वहलना-(हिं० क्रि०) दुःखकी वात भूल कर चित्त का दूसरी ओर लगना, मनोरञ्जन होना, चित्त प्रसन्न होना।
वहला-(स०स्त्री०) वड़ी इलायची।
वहलाना-(हिं०क्रि०)दुःख की वात भुलवाकर मन को दूसरी ओर फेरना,भुलवा देना, वातों में लगाना, चित्त प्रसन्न करना, मनोरञ्जन करना।
वहलाव-(हिं०पु०) मनोरञ्जन, प्रसन्नता, वहलने या वहलाने का भाव।
वहलिया-(हिं०पु०) देखो वहेलिया।
वहली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छतरीदार या परदेदार वैलगाड़ी,खड़खड़िया।
वहल्ला-(हिं० पु०) प्रसन्नता, आनन्द।
वहल्ली-(हिं०पु०)कुश्ती की एक पेंच।
वहस-(अ०स्त्री०)खण्डन मण्डन की विधि, विवाद, झगड़ा,हुज्जत,दलील,होड़,वाजी।
वहसना-(हिं०क्रि०) वादाविवाद करना, तर्क वितर्क करना,होड़ या शर्त लगाना।
वहादुर-(फा०पु०)उत्साही, वीर,साहसी, शूरवीर, पराक्रमी।
वहादुरी-(फा० स्त्री०) वीरता, शूरता।
वहाना-(हिं०क्रि०) द्रव पदार्थों को नीचे की ओर छोड़ना, ढलकाना, लुड़काना वृथा व्यय करना, हवा चलाना, फेंकना, डालना, सस्ता वेचना, पानी की धारा में डालना, लगातार वूद या धारा के रूप में छोड़ना, खोना गॅवाना।
वहाना-(फा०पु०) किसी वात से वचने के लिये अथवा अपना आशय सिद्ध करनेके लिये झूठ कहना, हीला हवाला, प्रसङ्ग, निमित्त, वह वात जिसकी ओट में असली वात छिपाई जाय।
वहार-(फा०स्त्री०) फूलों के खिलने का मौसम, वसन्त ऋतु, यौवन का विकास, शोभा, सौन्दर्य, प्रफुल्लता, आनन्द, मौज, नारगी का फूल, एक रागिणी का नाम, कौतुक, तमाशा।
वहारगुर्जरी-(फा०स्त्री०)सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
वहारना-(हिं०क्रि०) देखो वुहारना।
वहारी-(हिं०स्त्री०) देखो वुहारी।
वहाल-(फा०वि०) पूर्ववत्, ज्यों का त्यों, स्वस्थ, आरोग्य, प्रसन्न, खुश।
वहाली-(फा० स्त्री०) पुनर्नियुक्ति, फिरसे उसी स्थान पर नियुक्ति, धोखा देने की वात, वहाना।
वहाव-(हिं० पु०) प्रवाह, वहने की क्रिया या भाव, वहती हुई धारा, वहता हुआ जल आदि।
वहिः-(सं०अव्य०) वाहर।
वहिअर-(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।
वहिक्रम-(हिं०पु०) आयुष्य, उमर।
वहित्र-(स०पु०) देखो वहित्र, नाव।
वहिन-(हिं० स्त्री०) भगिनी, माता की वेटी।
वहिनापा-(हिं०पु०) देखो वहनापा।
वहियाँ-(हि०स्त्री०) वाहु, वाह।
वहिरंग-(सं०वि०)वाहर वाला, वाहरी, जो मण्डली में न हो।
वहिर-(हिं०वि०) देखो वहरा।
वहिरत-(हि०अव्य०) वाहर।

वहिराना-(हि॰ क्रि॰) निकाल देना, बाहर करना।
वहिर्गत-(स॰ वि॰) जो बाहर गया हो, अलग, जुदा।
वहिर्जानु-(स॰ अव्य॰) दोनों हाथों को घुटनों के बाहर किये हुए।
वहिर्द्वार-(स॰नपु॰)तोरण, बाहरी दरवाज़ा
वहिर्ध्वजा-(स॰स्त्री॰) दुर्गा देवी।
वहिर्निर्गमन-(स॰ नपु॰) बाहर जाना।
वहिर्भूत-(स॰ वि॰) अलग, जुदा, जो बाहर गया हो।
वहिर्भूमि-(सं॰ स्त्री॰) वस्ती के बाहर की भूमि।
वहिर्मुख-(स॰वि॰) पराङ्मुख, विरुद्ध।
वहिर्यान-(स॰ नपु॰) वहिर्गमन।
वहिर्लम्व-(स॰ वि॰) बाहर की ओर लम्बायमान।
वहिर्लापिका-(स॰ स्त्री॰) वह पहेली जिसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों में नहीं रहता, बाहर रहता है।
वहिला-(हि॰वि॰) वन्ध्या, बाझ।
वहिष्क-(स॰ वि॰) वहिःस्थित, जो बाहर हो।
वहिष्करण-(स॰नपुं॰) वाहर करना।
वहिष्कार-(स॰पु॰) निकालना, बाहर करना, दूर करना, हटाना।
वहिष्कृत-(स॰वि॰) त्यागा हुआ, अलग किया हुआ।
वहिष्कृति-(स॰ स्त्री॰) बाहर करने की क्रिया।
वहिष्प्राण-(स॰ वि॰) जिसके प्राण बाहर निकल गये हों।
वही-(हि॰स्त्री॰) हिसाब किताब लिखने की पुस्तक।
वहीखाता-(हि॰स्त्री॰)हिसाब की पुस्तक।
वहीर-(हि॰ स्त्री॰) जनसमूह, भीड़भाड़, सेना के साथ चलनेवाले साईस, सेवक, दुकानदार आदि का झुंड, सेना की सामग्री, (अव्य॰) बाहर।
वहीरा-(हिं॰पु॰) देखो वहेड़ा।
वहु-(स॰ वि॰) एक से अधिक, अधिक, ज्यादा (स्त्री॰) देखो वहू, वधू।
वहुक-(स॰पु॰) केकड़ा, चातक, पपीहा, छोटा तालाब, (वि॰) अधिक मूल्य देकर खरीदा हुआ।
वहुकण्टक-(सं॰ पु॰) छोटा गोखरू, जवासा, खजूर का वृक्ष, सहिजन का वृक्ष
वहुकुन्द-(स॰पु॰) सुरण, ओल।
वहुकन्या-(स॰ स्त्री॰,घृतकुमारी,घिकुआर
वहुकर-(स॰पुं॰) ऊँट, (वि॰) झाड़ू देने वाला, बहुत से काम करने वाला।
वहुकरी-(स॰स्त्री॰) मार्जनी, झाड़ू।
वहुक्षम-(सं॰वि॰, अधिक सहने वाला
वहुगन्ध-(स॰ नपु॰) दारचीनी, पीत चन्दन।
वहुगन्धदा-(स॰स्त्री॰) कस्तूरी।
वहुगन्धा-(स॰ स्त्री॰) चम्पा, जूही, स्याह जीरा।
वहुगुण-(स॰ वि॰) अनेक गुणों से युक्त (पु॰) गन्धर्वों का एक भेद।
वहुगुना-(हि॰पु॰) चौडे मुह का एक गहरा वरतन जो अनेक कामों मे लाया जाता है।
वहुज्ञ-(स॰वि॰) वहुदर्शी, जानकर, वहुतसी वार्तो को जानने वाला।
वहुग्रन्थि-(स॰ पु॰।) झाऊ का पेड़।
वहुचारी-(स॰ वि॰) अनेक स्थानों में घूमने वाला।
वहुचित्र-(स॰वि॰) अनेक प्रकार का।
वहुजल्प-(स॰वि॰) बहुत बोलने वाला, बकवादी।
वहुजात-(स॰ वि॰) तेजचलने वाला
वहुटनी-(हिं॰ स्त्री॰) बाह पर पहरने का एक गहना।
वहुत-(हि॰वि॰) आवश्यकता से अधिक, अनेक, परिमाण, मात्रा या गिनती में अधिक,ज्यादा,पर्याप्त, काफी,(क्रि॰वि॰) अधिक परिमाण में, वहुत अच्छा-स्वीकार सूचित करने वाला वाक्य, बहुत करके-अधिकतर, प्रायः, बहुत कुछ-संख्या में अधिक, बहुत खूब-वाह वाह, बहुत अच्छा।
वहुतक-(हि॰ वि॰) बहुत से, बहुतेरे।
वहुतर-(स॰वि॰) प्रभूत, अनेक।
वहुतों-(हि॰ वि॰) बहुत।
वहुता-(स॰स्त्री॰) अधिकता, बहुत्व।
वहुताइत-(हि॰ स्त्री॰) देखो बहुतायत।
वहुताई-(हि॰स्त्री॰) अधिकता ज़्यादती।
वहुतात,वहुतायत-(हि॰स्त्री॰) अधिकता, ज़्यादती।
वहुतृण-(स॰नपु॰) काकमाची।
वहुतृण-(स॰नपु॰) मूंज नाम की घास।
वहुतेरा-(हि॰ वि॰) अधिक, बहुतसा (क्रि॰ व॰) वहुत परिमाण में, बहुत प्रकार से।
वहुतेरे-(हि॰ वि॰) सख्या में अधिक, बहुत से।
वहुत्व-(सं॰पु॰) आधिक्य, अधिकता।
वहुदर्शिता-(स॰ स्त्री॰) बहुतसी बातों का ज्ञान।
वहुदर्शी-(स॰ पु॰) जिसने बहुत कुछ देखा हो, अनुभवी, जानकर।
वहुदल, वहुदला-(स॰) चेंच नाम का साग।
वहुदुग्ध-(स॰ पु॰) गोधूम, गहू, थूहर का पेड़।
वहुधन-(स॰वि॰) धनी, अमीर।
वहुधनेश्वर-(स॰ पु॰) कुबेर।
वहुधर-(स॰पु॰) शिव, महादेव।
वहुधा-(स॰ अव्य॰) अनेक प्रकार या ढंग से, प्रायः, अकसर, अधिकतर, वहुधात्मक-स्वयम्भु।
वहुधान्य-(स॰ वि॰) जिसके पास बहुत अन्न हो, (नपु॰) बारहवें सवत्सर का नाम।
वहुधार-(स॰नपु॰) एक प्रकार का हीरा
वहुध्वज-(स॰पु॰) शूकर, सुअर।
वहुनाद-(स॰ पु॰) शख।
वहुपत्र-(स॰ पु॰) अभ्रक, अबरख, प्याल, हरताल।
वहुपत्री-(स॰ स्त्री॰) घीकुआर,तुलसी,
वहुपत्नीक-(स॰ वि॰) जिसके अनेक स्त्रिया हों।
वहुपद-(स॰ पु॰) बरगद का पेड़।
वहुपशु-(स॰ वि॰) जिसके पास बहुत से पशु हों।

वहुपुत्र-(स० वि०) जिसके बहुत से पुत्र हो ।
वहुपुष्प-(स० पु०) नीम का वृक्ष ।
वहुप्रकार-(सं०वि०) अनेक तरह का ।
वहुप्रज-(स० वि०) जिसके बहुत से सतान हो ।
वहुप्रद-(स०वि०) बहुत देने वाला (पु०) शिव, महादेव ।
वहुफल-(स०पु०) कदव वृक्ष, वर का पेड़।
वहुफली-(स०स्त्री०) जगली गाजर ।
वहुवल-(स०पु०)सिंह, शेर, (वि०)वलवान्
वहुवाहु-(स० पुं०) रावण ।
वहुबीज-(स०पु०)विजौरी नीवू,शरीफा।
वहुभाषी-स०वि०) बहुत बोलने वाला, बकवादी, (पु०) वह जो अनेक भाषा जानता हो ।
वहुभुजक्षेत्र-(स०पु०) रेखा गणित में वह क्षेत्र जो चारों ओर से अनेक रेखाओं से घिरा हो ।
वहुभुजा-(स०स्त्री०) दशभुजा दुर्गा ।
वहुभोजन-(स०नपु०) अतिशय भोजन ।
वहुमञ्जरी-(स० स्त्री०) तुलसी ।
वहुमत-(स०पु०) बहुत से मनुष्यों का अलग मत, बहुत से लोगों की मिलकर एक राय ।
वहुमल-(स०पु०) सीसा नामक धातु ।
वहुमान-(स०वि०) अधिक माननीय ।
वहुमानी-(स०वि०) अधिक आदरणीय ।
वहुमान्य-(स० वि०) जिसका बहुत से लोग आदर करते हों ।
वहुमुख-(स०पु०) अनेक मुख ।
वहुमूत्र-(स०पु०) वह रोग जिसमें पेशाब बहुत होती है ।
वहुमूर्ति-(स० वि०) अनेक रूप धारण करनेवाला, बहुरूपिया ।
वहुमूलक-(स०नपु०) उशीर, खस ।
वहुमूला-(स० स्त्री०) सतावर, आमडे का वृक्ष ।
वहुमूल्य-(स० वि०) अधिक दाम का, कीमती ।
वहुयाजी-(स० वि०) बहुत से यज्ञ करने वाला ।
वहुरंगा-(हिं०वि०) चित्र विचित्र, अनेक रग का, अस्थिर चित्त का, मनमौजी ।
वहुरगी-(हिं०वि०) अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला, अनेक रग दिखलाने वाला, बहुरूपिया ।
वहुरना-(हिं०क्रि०)वापस आना लौटना, फिर हाथ में आना, फिर मिलना ।
वहुराशिक-(सं०पुं०)गणित में एक त्रैराशिक द्वारा दूसरे त्रैराशिक की निर्दिष्ट राशि जानने की विधि ।
वहुरि-(हिं०क्रि०वि०)इसके उपरान्त,फिरसे
वहुरिया-(हिं०स्त्री०) नई बहू ।
वहुरी-(हिं०स्त्री०) चवर्ण, चवेना ।
वहुरूप-(स०पु०) शिव, विष्णु, कामदेव, ब्रह्मा, गिरगिट, केश, ताण्डव नृत्य का का एक भेद, (वि०) नाना रूप युक्त ।
वहुरूपा-(स०स्त्री०) दुर्गा, अग्नि की सात जिह्वा में से एक ।
वहुरूपिया-(सं०पु०) अनेक रूप धारण करने वाला मनुष्य ।
वहुरोमा-(स०पु०) भेड़ा, बन्दर, (वि०) जिसके शरीर में बहुत रोवें हों ।
वहुल-(सं०नपुं०) आकाश, सफेद मिर्च, अग्नि, (वि०)प्रचुर, अधिक, ज्यादा, बहुल गन्धा-छोटी इलायची ।
वहुलता-स०स्त्री०) बहुलत्व, अधिकता ।
वहुला-(स०स्त्री०) एला, इलायची, नील का पौधा, कृत्तिका नक्षत्र, एक गाय का नाम , बहुला चौथ-भादो बदी चौथ जिस दिन स्त्रिया व्रत करती हैं ।
वहुली-(हिं०स्त्री०) एला, इलायची ।
वहुवचन-(स०पु०) व्याकरण की एक परिभाषा जिसमें एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है ।
वहुवर्ण-(सं०पुं०)अनेक वर्ण, अनेक जाति
वहुवादी-(स०वि०) बहुत बोलने वाला ।
वहुवार-(स०पुं०) अनेक बार ।
वहुवारक-(स०पु०) लिसोडे का वृक्ष ।
वहुवार्षिक-(स० वि०) कई वर्षों तक होने वाला ।
वहुविघ्न-(स० वि०) अनेक प्रकार की वाधायें ।
वहुविध-(स० वि०) बहुत सी वातें जानने वाला ।
वहुविध-(स० वि०) नाना प्रकार का, तरह तरह का ।
वहुविस्तीर्ण-(स०वि०) बहुत लम्बा चौड़ा
वहुव्ययी-(स०वि०) बहुत खर्चीला ।
वहुव्रीहि-(स० पुं०) एक प्रकार का समास जिसमें दो या दो से अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है वह किसी अन्य पद का विशेषण होता है ।
वहुशक्ति-स०वि०) बहुत शक्तिशाली ।
वहुशत्रु-सं०वि०) जिसके अनेक शत्रु हों ।
वहुशिख-(स०वि०) अनेक शाखा युक्त ।
वहुशृङ्ग-(स०पु०) विष्णु ।
वहुश्रुत-(स० वि०) जिसने अनेक विद्वानों से भिन्न भिन्न शास्त्रों की बातें सुनी हो ।
वहुसख्यक-(स० पुं०) गिनती में बहुत ।
वहुसार-(स० पु०) खदिर, खैर ।
वहुसुत-स०वि०) जिसके बहुत सन्तान हों
वहुस्वन-(स०पु०) पेचक, उल्लू पक्षी ।
वहूँटा-(हि० पु०) बाँह पर पहरने का एक आभूषण ।
वहू-(हिं० स्त्री०) पुत्रवधू पतोहू, नवविवाहिता स्त्री, दुलहिन, पत्नी, स्त्री ।
वहून्न-(स० नपु०) प्रचुर अन्न ।
वहूपमा-(स० स्त्री०) एक प्रकार का अर्थालकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म से अनेक उपमान कहे जाते हैं ।
वहेंगवा-(हिं० पु०) भुजगा पक्षी ।
वहेंत-(हि० स्त्री०) ताल या गड्ढे में बहकर जमी हुई मिट्टी ।
वहेचा-(हिं० पुं०) घडे का ढाँचा जो चाक पर से गढ कर उतारा जाता है ।
वहेड़ा-(हिं० पु०) अर्जुन की जाति का एक बड़ा तथा ऊँचा वृक्ष, इसके फल दवा के काम में आते हैं ।
वहेतू-(हिं० वि०) इधर उधर मारा फिरने वाला, व्यर्थ घूमने वाला ।
वहेरा-(हिं०पु०) देखो बहेड़ा ।
वहेला-(हिं०पु०) कुश्ती का एक पेंच ।

बहेलिया–(हिं० पु०) पशु पक्षियों को पकड़ने या मारने का व्यवसाय करने वाला, चिड़ीमार, व्याध।
बहोर–(हिं०पु०) फेरा, पलटा, (क्रि०वि०) फिरसे।
बहोरना–(हिं० क्रि०) वापस करना, लौटाना।
बहुरि–(हिं० अव्य०) पुनः, फिरसे।
बह्वक्षर–(स०वि०) अनेक अक्षरों का पद।
बह्वाशी–(स० वि०) बहुत भोजन करने वाला।
बॉ–(हिं० पुं०) गाय बैल के बोलने का शब्द (पु०) बार, बेर, दफा।
बांक–(हिं० पु०) बाहु पर पहरने का एक आभूषण, एक प्रकार की कसरत, नदी का मोड़, पैर मे पहरने का एक प्रकार का चादी का गहना, गन्ना छीलने का एक औज़ार, हाथ में पहरने की चौड़ी चूड़ी, एक प्रकार की छोटी टेढ़ी छूरी, वक्रता, टेढ़ापन, लोहे का बना हुआ कसकर पकड़ने का शिकजा, (वि०) टेढ़ा, घुमावदार, तिरछा, बाका।
बांकड़ा–(हिं० वि०) शूरवीर, साहसी (पु०) धुरे के नीचे आडे बल लगी हुई लकड़ी जो छकडे में जड़ी होती है।
बांकड़ी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का सुनहला या रुपहला फीता जो बादले और कलाबत्तू से बनाया जाता है।
बांकडोरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का हथियार।
बांकनल–(हिं० पु०) सोनारों की धातु की बनी हुई पतली टेढ़ी फुकनी।
बांकना–(हिं०क्रि०) टेढ़ा करना या होना
बांकपन–(हिं०पु०) तिरछापन, टेढ़ापन, छवि,शोभा,सजावट,बनावट, छैलापन।
बांका–(हिं०वि०) वीर, बहादुर,बना ठना, सुन्दर, छैला, टेढ़ा, तिरछा, (पु०) लोहे का बना हुआ एक टेढ़ा हथियार, वह बालक या युवा पुरुष जो सुन्दर वस्त्र और अलकारों से सजाकर पालकी या घोडे पर बैठाकर जलूस या बारात के साथ निकाला जाता है।
बांकिया–(हिं० पु०) नरसिंघा नाम का टेढ़ा बाजा जो फूककर बजाया जाता है।
बांकुर, बाकुरा–(हिं०वि०) पतली धार का, टेढा, बाका, चतुर, होशियार।
बांग–(फा० स्त्री०) शब्द, आवाज, चिल्लाहट,पुकार, वह ऊंचा शब्द जो नमाज़ का समय सूचित करने के लिये मुल्ला मसजिद में करता है, अजान, प्रातः काल का मुरगे का बोलने का शब्द।
बांगड़–(हिं० वि०) मूर्ख, बेवकूफ।
बांगर–(हिं०पु०) छकड़ा गाड़ी का लबे बल बधा हुआ बास, एक प्रकार का बैल, वह जमीन जो झील, नदी आदि के बढने पर कभी पानी में नहीं डूबती।
बांगा–(हिं०पु०) बिना ओटी हुई रूई, कपास।
बांगुर–(हिं० पुं०) पशु या पक्षियों को फसाने का जाल, फदा।
बांचना–(हिं० क्रि०) पढना, बाकी न बचना, छोड़ देना।
बांछना–(हिं० क्रि०) अभिलाषा करना, चाहना, इच्छा करना, अच्छी बुरी चीज़ों को चुनना या छाटना।
बांछा–(हिं०स्त्री०) देखो वाञ्छा, इच्छा।
बांछित–(हिं०वि०) देखो वाञ्छित, इच्छा किया हुआ।
बांछी–(हिं०वि०) अभिलाषा या इच्छा करने वाला, चाहने वाला।
बांझ–(हिं०स्त्री०) वन्ध्या, वह स्त्री जिसको सन्तान न होती हो, एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष।
बांझपन, बाझपना–(हिं० पु०) बाझ होने का भाव, वन्ध्यात्व।
बांट–(हिं० पु०) बाटने की क्रिया या भाव, भाग, हिस्सा, घास या पुआल का बना हुआ रस्सा, बांटे पड़ना–हिस्से में या बाट में आना।
बांटचूट–(हिं०स्त्री०) भाग, हिस्सा, देना दिलाना।
बांटना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु के अनेक विभाग करके अलग अलग रखना, हिस्सा करना, वितरण करना, प्रत्येक व्यक्ति को थोड़ा थोड़ा देना।
बांटा–(हिं० पुं०) बाटने की क्रिया या भाव, विभाग, हिस्सा।
बांड़–(हिं०पु०) दो नदियों के सगम के बीच की भूमि।
बांड़ा–(हिं० पु०) वह पशु जिसकी पूछ कट गई हो, वह पुरुष जिसके लड़के वाले न हों (वि०) बिना पूछ का।
बांडी–(हिं० स्त्री०) बिना पूछ की गाय, कोई मादा पशु जिसकी पूछ कट गई हो, छोटी लाठी।
बांड़ीबाज़–(हिं० पु०) लाठीबाज़, लकड़ी लड़ने वाला,उपद्रवी, शरारती।
बांद–(फा० पु०) सेवक, दास।
बांदर–(हिं० पु०) देखो बन्दर।
बांदा–(हिं० पु०) किसी वृक्ष के ऊपर उगी हुई दूसरी बनस्पति।
बांदी–(हिं० स्त्री०) दासी, लौंडी।
बांदू–(हिं० पु०) कैदी, बधुवा।
बांध–(हिं० पु०) मिट्टी ईंट या पत्थर का बना हुआ धुस जो जलाशय के किनारे पर पानी रोकने के लिये बनाया जाता है।
बांधना–(हिं० क्रि०) रस्सी तागे आदि से किसी पदार्थ को बधन में करना, गाठ लगाकर कसना, कैद करना, पकड़ कर बन्द करना, मकान आदि बनाना, ठीक करना, दुरुस्त करना, किसी चूर्ण को हाथों में दबाकर पिण्ड बनाना, पानी का बहाव रोकने का प्रबध करना, नियत करना, मुकर्रर करना, मन्त्र तन्त्र द्वारा किसी शक्ति का अवरोध करना, प्रेमपाश में बद्ध करना, रचना के लिये सामग्री इकट्ठा करना, मन में बैठाना, स्थिर करना, नियत करना, योजना करना।
बांधनी पौरि–(हिं० स्त्री०) पशुओं को बांधने की जगह।
बांधनू–(हिं० पु०) उपक्रम, मनसूबा, कल्पित वार्ता, मनगढत, मिथ्या अभि-

योग, झूठा दोष, किसी होने वाली बात के विषय में पहलेही से तरह तरह के विचार कर लेना, वह बंधन जो रंग-रेज लोग चुदरी या लहरियेदार रंगाई के लिये कपडे में बांध देते हैं, कलंक, तोहमत।

वांधव-(हिं० पु०) देखो बान्धव, भाईबन्द।

वांबी-(हि० स्त्री०) दीमक के रहने का भीटा, सर्प की बिल, बवीठा।

वांवना-(हिं०क्रि०) रखना।

वांवारथी-(हिं०पु०) वामन, बौना।

वाँयाँ-(हिं०वि०) देखो बायाँ।

वांस-(हिं०पु०)तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूरपर गांठ होती हैं और गांठों के बीच का स्थान पोला होता है, भाला, पीठ की रीढ, नाव खेने की लग्गी,सवा तीन गज या सौ इञ्च की एक नाप, लाठा, बांस पर चढना-अपमानित होना, बांसपर चढाना-कलङ्कित करना, मन बढा देना, बांसों उछलना-बहुत खुश होना।

वांसपूर-(हिं० पु०) एक प्रकार का बहुत महीन वस्त्र।

वांसफल-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान।

वांसली-(हि० स्त्री०) मुरली, बांसुरी, रुपया पैसा रखने की एक प्रकार की पतली जालीदार लंबी थैली जो कमरमें बांधी जाती है, हिमयानी।

वांसा-(हिं० पु०) बांस की छोटी नली जो हल के साथ बँधी रहती है जिसमें अन्न भरा रहता है और खेत में गिरता जाता है, नाक के ऊपर की हड्डी जो दोनो नथनो के ऊपर बीच में रहती है, एक प्रकार का छोटा पौधा।

वांसागड़ा-(हिं०पु०) कुश्ती की एक पेंच।

वांसी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का मुलायम पतला बांस, एक प्रकार की गेंहू, एक प्रकार की घास।

वांसुरी-(हि० स्त्री०) मुख से फूंककर बजाने का एक बाजा, बांसुली।

वांसुली-(हि० स्त्री०) देखो बांसुरी, एक प्रकार की घास जो फसल को हानि पहुँचाती है, बांसुली कन्द-एक प्रकार का जंगली सूरन।

वांह-(हिं० स्त्री०) बाहु, भुजा, बल, शक्ति, भुजबल, कुरते, अंगे, कोट आदि की आस्तीन, शरण, सहारा, भरोसा, सहायक, मददगार, एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं, बांह गहना या पकड़ना-सहायता करना, सहारा देना, विवाह करना, बांह देना-मदद करना, बांह बोल-मदद करने के वचन, बांह टूटना-निराश्रय होना, सहायक न रह जाना, बांह तोड़-कुश्ती की एक पेंच, बांह मरोड़-कुश्ती की एक पेंच।

वांही-(हि० स्त्री०) देखो बांह।

वा-(हिं०पु०) जल, पानी (फा० पु०) बार, दफा, मरतबा।

वाइ-(हि०स्त्री०) देखो बाई।

वाइविरंग-(हि० स्त्री०) विडंग नामक औषधि।

वाइबिल-ईसाइयों की धर्म पुस्तक।

वाइस-(फा० पुं०) कारण, सबब, देखो बाईस।

वाइसवां-(हिं०वि०) देखो बाईसवा।

वाइसिकिल-(अं० स्त्री०) मनुष्य के पैर से चलाने को एक प्रसिद्ध गाड़ी जिसमें दो पहिया आगे पीछे होती हैं।

वाई-(हिं० स्त्री०) त्रिदोप में से वात दोष जिसके प्रकोप से मनुष्य बेसुध हो जाता है, स्त्रियों का आदर सूचक शब्द, यथा तारा बाई, लक्ष्मी बाई आदि, उत्तरी प्रान्तों में यह शब्द वेश्याओं के नाम के आगे लगाया जाता है, बाई की झोंक-वायु का आवेश, बाई चढ़ना-गर्व से अधिक बकबक करना, बाई पचना-घमंड टूटना।

वाईस-(हि० वि०) बीस और दो की संख्या का (पुं०) बीस और दो की संख्या २२।

वाईसवा-(हि०वि०) जो क्रम से बाईस के स्थान पर हो।

वाईसी-(हि० स्त्री०) बाईस वस्तुओं का अथवा बाईस पद्यों का समूह।

वाउ-(हि० पु०) वायु, पवन, हवा।

वाउर-(हिं० वि०) बावला, पागल, भोला भाला, अज्ञान, मूर्ख, मूक, गूंगा।

वाउरी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की घास।

वाउल-(हिं० पु०) एक वैष्णव सम्प्रदाय जिसके प्रवर्तक चैतन्य महाप्रभु कहे जाते हैं।

वाएँ-(हिं०क्रि०वि०)बाईं ओर,बाईं तरफ।

वकचाल-(हिं० वि०) बड़ा बकवादी, अधिक बोलने वाला।

वाकना-(हिं० क्रि०) बकबक करना।

वाकरी-(हिं० स्त्री०) पांच महीने की ब्याई हुई गाय।

वाकल-(हिं० पु०) देखो वल्कल।

वाकला-(अ०पु०) एक प्रकार की बड़ी मटर जिसकी कलियों की तरकारी बनाई जाती हैं, एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्ते रेशम के कीड़ो को खिलाये जाते हैं।

वाकसी-(हि० क्रि०) जहाज के पाल को एक ओर से दूसरी ओर करना।

वाका-(हि०पु०) वाक्, वाणी।

वाकी-(अ०वि०) अवशिष्ट, शेष, बचा हुआ, गणित में एक संख्या में से दूसरी को घटाने की विधि, घटाने के बाद बची हुई संख्या, (अव्य०) परन्तु, लेकिन, (स्त्री०) एक प्रकार का धान।

वाकुभा-(हिं०पु०) जलकुंभी का सुखाया हुआ केसर।

वाखरि-(हि० स्त्री०) देखो बखरी।

वाग-(अ० पु०) वाटिका, उपवन, बगीचा, घोडे की लगाम, बाग मोड़ना-किसी ओर प्रवृत्त करना या घुमाना।

वागडोर-(हि० स्त्री०) घोडे की लगाम में बांधने की रस्सी, लगाम।

वागना-(हिं० क्रि०) चलना, फिरना,

घूमना, टहलना, बोलना।

बागबान-(फा०पु०) बाग की रखवाली तथा प्रबंध करने वाला, माली।

बागबानी-(फा० स्त्री०) माली का पद या काम।

बागर-(हिं० पु०) नदी के किनारे की वह ऊँची ज़मीन जहा तक नदी का पानी कभी नहीं पहुँचता।

बागल-(हिं० पु०) बक, बगला।

बागा-(फा० पु०) पुराने समय का अंगे की तरह का घुटने तक लबा पहरावा, जामा।

बागी-(अ० पु०) राजद्रोही, वह जो प्रचलित शासन प्रणाली अथवा राज्य के विरुद्ध बलवा करे।

बागीचा-(फा०पु०) उपवन, बगीचा।

बागुर-(हिं०पुं०) पशु या पक्षी फँसाने का जाल।

बागेसरी-(हिं०स्त्री०) सरस्वती, सपूर्ण जाति की एक रागिणी।

बाघंबर-(हिं० पु०) बाघ की खाल जो बिछाने के काम में आती है, एक प्रकार का रोवेंदार कम्बल।

बाघ-(हिं० पु०) सिंह, शेर।

बाघा-(हिं० पु०) चौपायों का पेट फूलने का एक रोग।

बाघी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की गिलटी जो बहुधा गरमी के रोगियों के जाघ और पैर के जोड़ में हो जाती है।

बाचना-(हिं०क्रि०)सुरक्षित रखना, बचाना

बाचा-(हिं० स्त्री०) बोलने की शक्ति, वार्तालाप, बातचीत, बाचाबंध-जिसने किसी प्रकार की प्रतिज्ञा की हो।

बाछ-(हिं० पु०) चन्दा, बेहरी।

बाछड़ा-(हिं० पु०) देखो बछड़ा।

बाछा-(हिं०पु०) गाय का बच्चा, बछवा, बच्चा, लड़का।

बाज़-(अ० पु० एक प्रसिद्ध शिकारी पक्षी, श्येन पक्षी,एक प्रकार का बगला, तीर में लगा हुआ पर, (फा०प्रत्यय) जो शब्दों के अन्त में लगने से खेलने, करने, शौक रखने वाले आदि का अर्थ बतलाता है यथा-दगाबाज़, नशेबाज आदि (फा०वि०) वचित,रहित (क्रि०वि०) बिना, बगैर, बाज़ आना-रहित होना, दूर होना, बाज़ करना-मना करना, रोकना, बाज़ रखना-मना करना।

बाज-(अ०वि०) कोई कोई, कुछ।

बाज-(हिं० पु०) घोड़ा, बाजा, सितार में का पक्के लोहे का तार, बजाने की रीति या ढग, ताने के सूत में देने की लकड़ी।

बाजड़ा-(हिं०पु०) देखो बाजरा।

बाज़दावा-(फा० पु०) अपने अधिकारों का त्याग, अपने दावे से बाज़ आना।

बाजन-(हिं०पु०) देखो बाजा।

बाजना-(हिं० क्रि०) बाजे आदि का बजना, प्रसिद्ध होना, कहलाना, लड़ना भिड़ना, सामने पहुँच जाना, चोट लगना।

बाजरा-(हिं० पु०) एक प्रकार की बड़ी घास जिसकी बालों में हरे रग के छोटे-छोटे दाने लगते हैं, जोंधरी।

बाजहर-(हिं०पु०) देखो जहरमोहरा।

बाजा-(हिं० पु०) वाद्य, बजाने का कोई यन्त्र जिसमें से राग रागिणी निकाली जाती हैं अथवा जो ताल देने के लिये बजाया जाता है, बाजा गाजा-अनेक प्रकार के बाजों का समुदाय।

बाज़ाप्ता-(फा० क्रि० वि०) जाप्ते के साथ, नियम के अनुसार (वि०) जो नियमानुकूल या जाप्ते का हो।

बाज़ार-(फा० पु०) वह स्थान जहा पर तरह तरह की चीज़ों की दूकान हो, हाट, पैंठ, वह स्थान जहा पर नियत समय पर दुकानें लगती हैं, बाज़ार करना-बाज़ार में चीज़ों के खरीदने के लिये जाना, बाज़ार गर्म होना-बाजार में ग्राहकों की अथवा बिकाऊ चीज़ों की अधिकता होना, अच्छी तरह से काम चलना, बाज़ार तेज होना-चीज़ों का महगा होना, बाज़ार उतरना (मन्दा होना)-चीज़ें सस्ती होना, दाम घट जाना।

बाज़ारी-(फा० वि०) बाजार सबधी, बाजार का, सामान्य, मामूली, अशिष्ट, इधर उधर घूमने वाला, मर्यादा रहित।

बाज़ारू-(हिं०वि०) देखो बाज़ारी।

बाजि-(हिं० पु०) घोड़ा, पक्षी, बाण,

बाज़ी-(फा० स्त्री०) शर्त, दाँव, बदान, खेल में प्रत्येक खिलाड़ी का खेलने का समय जो क्रम से एक दूसरे के बाद आता है, ऐसी शर्त जिसमें हार जीत होने पर कुछ धन का भी लेनदेन होता हो, बाज़ी मारना-दाँव जीतना, बाज़ी ले जाना-बढ़ा या श्रेष्ठ ठहरना।

बाजी-(हिं०पु०) घोड़ा, बजनिया।

बाजीगर-(फा० पु०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

बाजु-(फा० अव्य०) बिना, बगैर, अतिरिक्त, सिवाय।

बाजू-(फा० पु०) भुजा, बाहु, बाह पर का गोदना, वह जो सर्वदा सहायता देता हो, बाह पर पहरने का एक आभूषण, चिड़िया का डैना, सेना का किसी ओर का पक्ष।

बाजूबद-(फा०पु०) बाह पर पहरने का एक प्रकार का गहना।

बाजूवीर-(हिं०पु०) देखो बाजूबद।

बाझन-(हिं०स्त्री०) बझने या फसने का भाव, उलझन, फसावट,बखेड़ा, झझट।

बाझना-(हिं० क्रि०) देखो बझना।

बाट-(हिं० पु०) मार्ग, रास्ता, पत्थर आदि का वह टुकड़ा जो तौलने के काम में आता है, बटखरा, पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज पीसी जाती है, (स्त्री०) बटन, बल, बाट करना-मार्ग बनाना, बाट देखना (जोहना)-आसरा देखना, बाट पड़ना-कष्ट देना, पीछे पड़ना, डाका पड़ना, बाट पारना-डाका डालना।

बाटना-(हिं०क्रि०) चूर्ण करना, सिलपर बट्टे से कोई चीज़ पीसना।

बाटली-हिं०स्त्री०) जहाज पर का पाल

तानने का रस्सा।

वाटिका-(सं० स्त्री०) उपवन, उद्यान, बगीचा, फुलवारी, गद्य काव्य का एक भेद।

वाटी-(हिं०स्त्री०) गोली पिण्ड, अंगारों या उपलों पर सेकी हुई गोली या पेड़े के आकार की रोटी, लिट्टी, चौड़े मुह का कटोरा।

वाढ्किन्-(सं० पु०) लकड़ी का दस्ता लगा हुआ एक प्रकार का हूला।

वाड्व-(सं० स्त्री०) घोड़ियों का समूह, बड़वानल ब्राह्मण।

वाड्वाग्नि-(सं०पुं०) बड़वानल।

वाड्व्य-(सं०नपुं०) ब्राह्मणों का समूह।

वाड्स-(सं० पु०) मत्स्य, मछली।

वाड़ा-(हिं० पु०) वह खुली हुई ज़मीन जो चारों ओर से खुली हो,पशुशाला।

वाडिस्-(अं० स्त्री०) स्त्रियों के पहरने की एक प्रकार की अंगरेजी ढंग की कुरती।

वाड़ी-(हिं०स्त्री०) वाटिका, वारी,फुलवारी।

वाडीगार्ड्-(अं० पुं०) शरीर रक्षक, राजा महाराजों के साथ उनके शरीर की रक्षा के लिये रहने वाला थोड़े से सैनिकों का दल, इस प्रकार के सैनिकों में से एक सिपाही।

वाढ्-(सं० नपुं०) वृद्धि, अधिकता, प्रतिज्ञा।

वाढ-(हिं० स्त्री०) बढ़ने की क्रिया या भाव, बढ़ती, अधिक वर्षा के कारण नदी आदि के जल का तेजी से बढ़ना, बंदूक तोप आदि का निरन्तर छूटना, व्यापार में होने वाला लाभ, तलवार छुरी आदि की धार, सान; बाढ दगना-तोपों का निरन्तर छूटना।

वाढकढ-(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार।

वाढना-(हिं०क्रि०) देखो बढ़ना।

वाढि-(हिं०स्त्री०) देखो बाढ।

वाढी-(हिं० स्त्री०) बढ़ाव, अधिकता, वृद्धि, लाभ, मुनाफा, अन्न उधार देने पर मिलने वाला ब्याज।

वाढीवान-(हिं० पु०) छुरी कैंची आदि पर सान रखने वाला।

वाण-(सं० पु०) तीर, सायक, अग्नि, गाय का थन, सिर का अगला भाग, भरसत, निशाना, केवल, पांच की संख्या, राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र का नाम।

वाणधि-(सं० पु०) तूण, तरकश।

वाणपति-(सं०पु०) शिव, महादेव।

वाणपथ-(सं०पु०) उतनी दूरी जहां तक बाण जा सके।

वाणविद्या-(सं० स्त्री०) बाण चलाने की विद्या, तीरन्दाजी।

वाणलिङ्ग-(सं०नपु०) स्फटिक का शिवलिङ्ग जो नर्मदा नदी में मिलता है।

वाणारि-(सं० पु०) वाणासुर के शत्रु विष्णु।

वाणासुर-(सं०पु०) राजा बलि के सौ पुत्रों में से सबसे बड़े पुत्र का नाम।

वाणिज्य-(सं०पु०) व्यापार, रोज़गार।

वात-(हिं०स्त्री०) वचन, प्रसंग, फैली हुई चर्चा, योग्यता गुण आदि के संबंध में कथन, उपदेश, सीख, मर्म, रहस्य, प्रतिज्ञा, मान मर्यादा, विश्वास,कामना, इच्छा, ढंग, रीति, व्यवहार तत्व, वस्तु, प्रभाव, स्वभाव, गुण, प्रकृति, संबंध, मूल्य, दाम, तात्पर्य, अभिप्राय, कर्तव्य, गुप्त बात, प्रश्न, प्रशंसा का विषय, चमत्कारपूर्ण वार्ता, विशेषता, धोखा देने के लिये कहे हुए शब्द, बनावटी कथन, बहाना, सन्देश, व्यवस्था, परस्पर वार्तालाप, बटने वाली स्थिति, सार्थक शब्द या वाक्य, किंवदन्ती, खबर, उचित उपाय, खूबी, कामना, भेद, बात उठाना-चर्चा करना, बात कहते-तुरत,फ़ौरन,बात काटना-किसी के बोलते रहते बीच में बात बोल उठना; बात की बात में-तुरत, बात खाली जाना-प्रार्थना निष्फल होना, बात टलना-कहना व्यर्थ होना, बात टालना-सुनकर अनसुनी करना, बात न पूछना-क़दर न करना, बात पर लाना-बातों पर ध्यान न देना, बात पाना-छिपा हुआ अर्थ समझ लेना, बात खोना-मान मर्यादा नष्ट होना, बात जाना-अपमानित होना, बात बनना-प्रतिष्ठा पाना, बात का धनी-अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, बात पक्की करना-दृढ निश्चय करना, बात रखना-अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना, बात जाना-विश्वासपात्र न रह जाना, बात खोना-साख बिगड़ना, बात बनना-विश्वास रहना, बात पूछना-खोजखबर लेना,बात बढना-बातों बात में झगड़ा हो जाना, बात बढ़ाना-झगड़ा करना, बात बनाना-बहाना करना ,बातों में उड़ाना-हँसी में किसी बात को टाल देना, बातों में लगाना-बातचीत करने में लीन होना, बात उठाना-चर्चा चलाना, बात छिड़ना-प्रसंग उठाना, बात निकालना-बात चलाना, बात उड़ना-चर्चा फैलना, बात का बतगड़ करना-बात को व्यर्थ पेचीदा करना ,बात न पूछना-अवस्था पर ध्यान न देना, बात बढ़ना-किसी घटना का भयंकर रूप धारण करना, बात बनना-अर्थ सिद्धि होना, बात बनाना-बहानेबाजी करना, बात बात में-हर विषय में, बात बिगड़ना-मामला नष्ट होना, बातों बातों में-बात चीत करते हुए, बात ठहरना-विवाह सबंध पक्का होना, बातों में आजाना-किसी की बात सच्ची जानकर धोखे में आ जाना।

बातकटक-(हिं०पु०) वायु का एक रोग।

बातचीत-(हिं० स्त्री०) दो अथवा अनेक मनुष्यों का परस्पर बात करना, वार्तालाप।

वातप-(हिं० पु०) हिरन।

बातफरोश-(हिं० पु०) इधर उधर की झूठी गप्प लगाने वाला।

वातिङ्गन-(सं० पु०) बैगन।

वाती-(हिं० स्त्री०) देखो बत्ती।

वातुल-(हिं०वि०) पागल,सनकी,बौड़हा।

वतूनिया,बातूनी-(हिं० वि०) बहुत

बोलने वाला, वकवादी।

बाथ-(हिं०पु०) अंक, गोद।

बाथू-(हिं० पु०) वथुआ का साग।

बाद-(हिं०पु०) वाद, तर्क वितर्क, बहस, प्रतिज्ञा, शर्त, झगड़ा, विवाद, झंझट (अव्य०) निरर्थक, फजूल।

बाद-(फा०अव्य०) पश्चात्, पीछे (वि०) अलग किया हुआ, छोड़ा हुआ, (पु०)दस्तूरी,कमिशन,अतिरिक्त,सिवाय, असली दाम से अधिक दाम जो व्यापारी माल पर लिख देते हैं और दाम बताती समय उसको घटा देते हैं।

बादकाकुल-(सं० पु०) संगीत में एक ताल का नाम।

बादना-(हिं० क्रि०) बकवाद करना, हुज्जत करना।

बादनुमा (फा० पुं०) वायु की दिशा सूचित करने वाला यन्त्र, पवन प्रकाश।

बादबान-(फा०पु०) पाल।

बादर-(सं०पु०) कपास का पौधा, कपूर, (वि०) आनन्दित, प्रसन्न, (हिं०पु०) बादल, मेघ।

बादरङ्ग-(सं०पु०) पीपल का वृक्ष।

बादरा-(सं० स्त्री०) कपास का पौधा, पानी, रेशम।

बादरायण-(सं०पु०)वेदव्यासका एक नाम

बादरिया-(हिं०स्त्री०) देखो बदली।

बादल-(हिं० पु०) वह भाफ जो पृथ्वी पर के जल में से उठकर आकाश में जाती है और फिर पानी के रूप में पृथ्वी पर बूंद बूंद करके गिरती है, मेघ, बादल उठना-आकाश में बादलो का इकट्ठा होना; बादल गरजना-मेघों का गड़गड शब्द करना, बादल घिरना-मेघो का चारों ओर छा जाना, बादल छँटना-मेघों का टुकडे टुकडे होकर अलगाना।

बादला-(हिं०पु०) सोने या चादी का महीन चिपटा किया हुआ तार जो कलाबत्तू बनाने के काम में तथा गोटा बुनने के काम में आता है।

बादशाह-(फा०पु०) राजा, शासक, श्रेष्ठ पुरुष, मनमाना करने वाला, स्वतन्त्र व्यक्ति, ताश का वह पत्ता जिस पर बादशाह की तस्वीर बनी रहती है, शतरंज का सबसे बड़ा मुहरा।

बादशाहजादा-(फा०पु०) राजकुमार।

बादशाहजादी-(फा०स्त्री०) राजकुमारी।

बादशाहत-(फा० स्त्री०) शासन, राज्य, हुकूमत।

बादशाह पसन्द-(फा० पुं०) हलका आसमानी रंग।

बादहवाई-(हिं०क्रि०वि०) व्यर्थ, फजूल।

बादाम-(फा०पुं०) जामुन आदि वृक्षों की तरह का एक पेड जिसका तना मोटा होता है, इसका फल मेवों में गिना जाता है।

बादामा-(फा० पु०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

बादामी-(फा० वि०) बादाम के छिलके के रंग का, कुछ पीलापन लिये लाल रंग का, बादाम के आकार का, अण्डाकार, गहना रखने की एक प्रकार की डिबिया, एक प्रकार का धान, (पु०) बादामी रंग का घोड़ा।

बादि-(हिं०अव्य०) व्यर्थ, फजूल।

बादिया-(हिं०पु०)पेंच बनाने का लोहारों का एक औजार।

बादी-(फा० वि०) वायु विकार सम्बन्धी, वायु सम्बन्धी, वायु का विकार उत्पन्न करने वाला, (स्त्री०) शरीर में की वायु (पु०) किसी के विरुद्ध अभियोग चलाने वाला, मुद्दई, शत्रु, प्रतिद्वंद्वी, लोहारों का सिकली करने का एक औजार।

बादुना-(हिं०पुं०) घेवर नाम की मिठाई बनाने का एक औजार।

बाध-(सं० पुं०) प्रतिबन्धक, रुकावट, उत्पात, उपद्रव, कष्ट, पीड़ा, कठिनता, अर्थ की असंगति, वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव सा हो, मूंज की पतली रस्सी।

बाधक-(सं० वि०) प्रतिबन्धक, बाधा जनक, दुःखदायी, रुकावट करनेवाला

बाधकता (सं० स्त्री०) बाधक का भाव या धर्म, बाधा।

बाधन-(सं०नपु०) कष्ट, पीड़ा, प्रतिबन्धक बाधा।

बाधना-(हिं०क्रि०)बाधा डालना, रोकना, विघ्न करना, बाधा डालना।

बाधा-(सं० स्त्री०) कष्ट, पीड़ा, विघ्न, रुकावट, भय, डर, निषेध, मनाही, संकट, अड़चन।

बाधित-(सं० वि०) रोका हुआ, जिसको करने में रुकावट पडती हो प्रभावहीन, ग्रस्त, असङ्गत, जिसको सिद्ध करने में रुकावट हो।

बाधिर्य-(सं०नपु०)बधिरता रोग,बहरापन

बाध्य-(सं०वि०)बाधनीय,रोका जानेवाला

बाध्यता-(सं० नपु०) बाध्यत्व।

बान-(हिं०पु०) बाण, तीर,एक प्रकार का वृक्ष, एक प्रकार की आतिशबाजी जो तीर के आकार की होती है,धुनकी की तात में मारने का डंडा, समुद्र या नदी की ऊँची लहर, अभ्यास, आदत, बनावट, (पु०) कान्ति, रंग।

बानइत-(हिं० वि०) बाना चलाने या खेलने वाला, बाण चलाने वाला, तीरदाज योद्धा, बहादुर।

बानक-हिं०स्त्री०) वेष, भेस, एक प्रकार का रेशम।

बानगी-(हिं०स्त्री०) किसी माल का वह अंश जो गाहक को दिखलाने के लिये दिया जाता है, नमूना।

बानर-(हिं०पु०) बन्दर।

बानबे-(हिं० वि०) नब्बे और दो की संख्या का (पु०) नब्बे और दो की संख्या ९२।

बाना-(हिं०पु०) वस्त्र, पोशाक अंगीकार किया हुआ धर्म,रीति, भाले के आकार का एक शस्त्र, दोनों ओर की धार वाली तलवार के आकार का एक लंबा हथियार जिसके दोनों किनारों पर लट्टू लगे रहते हैं, एक प्रकार का सूत जिस पर गुड्डी उड़ाई जाती है, खेत की पहली बार की जुताई,कपडे की बुनावट में वे तागे जो ताने जाते हैं, आड़े बल

के तागे, भरना, मेस, स्वभाव, बुनाई (क्रि०) सिकुड़ने वाले छेद को बढ़ाना या फैलाना।
बानात-(हिं०स्त्री०) देखो बनात।
बनावरी-(हिं०स्त्री०) बाण चलाने की विद्या, तीरदाज़ी।
बानि-(हिं० स्त्री०) बनावट, सजधज, अभ्यास, आदत, चमक, कान्ति, वाणी, वचन।
बानिक-(हिं०स्त्री०) वेश,श्रृंगार,सजधज।
बानिन-(हिं० स्त्री०) बनियाइन, बनिये की स्त्री।
बानिया-(हिं०स्त्री०) बनिया, व्यापारी।
बानी-(हिं०स्त्री०) मुख से निकाला हुआ शब्द, वचन, प्रतिज्ञा, सरस्वती, आभा, चमक, साधु महात्मा का उपदेश, वाणिज्य, एक प्रकार की पीली मिट्टी, गोला, बाना नामक हथियार (अ०पु०) आरभ करने वाला, चलाने वाला, बुनियाद डालने वाला।
बानैत-(हिं० पु०) बाण चलाने वाला, बाना फेरने वाला,तीरदाज़,योद्धा,सैनिक
बान्धव-(स०पु०) भाई बन्धु, नातेदार, रिश्तेदार, मित्र, दोस्त।
बान्धवक-(स०वि०) बान्धव सबधी।
बान्धव्य-(स०पु०) जाति सम्पर्क।
बाप-(हिं०पु०) पिता, जनक, बापदादा-पूर्व पुरुष, पुरखा, बाप मां-पालन या रक्षा करने वाला।
बापा-(हिं०पु०) देखो बाप्पा।
बापिका-(हिं०स्त्री०) देखो वापिका।
बापी-(हिं०स्त्री०) देखो वापी, बावली।
बापुरा-(हिं०वि०) तुच्छ,दीन,बेचारा।
बापू-(हिं०पु०) देखो बाबू, बाप।
बाफ (हिं०स्त्री०) देखो भाफ।
बाफता-(फा०पु०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिसपर कलाबत्तू या रेशम की बूटिया बनी रहती हैं।
बाब-(अ०पु०)पुस्तक का एक विभाग, परिच्छेद, मुकदमा, विषय, अभिप्राय, आशय।
बाबची-(हिं०स्त्री०) देखो बकुची।
बाबत-(अ०स्त्री०) विषय, सबध।
बाबरची-(हिं०पु०) देखो बावरची।
बाबरी-(हिं०स्त्री०) सिर पर के लबे बाल, ज़ुल्फ़।
बाबा-(हिं०पु०)पिता,बाप, पितामह दादा, वृद्ध पुरुष, एक आदर सूचक शब्द जो साधु सन्यासियों के लिये प्रयोग होता है, लड़कों के लिये प्यार का शब्द
बाबी-(हिं०स्त्री०) सन्यासिन, कन्या के लिये प्यार का शब्द।
बाबुना-(हिं० पु०) पीले रग की एक चिड़िया।
बाबुल-(हिं० पु०) देखो बाबू।
बाबू-(हिं० पु०) एक आदर सूचक शब्द, भला आदमी, पिता के लिये सबोधन, क्षत्रिय ज़मींदारों के लिये प्रयुक्त शब्द, राजा के बधु बाधवों के लिये प्रयुक्त शब्द।
बाबूडा-(हिं०पु०) बाबू के लिये घृणा सूचक शब्द।
बाबूना-(फा० पु०) एक छोटा पौधा जिसके फूलो का तेल औषधि के काम में आता है।
बाभन-(हिं०पु०) ब्राह्मण, भूमिहार।
बाम-(हिं०वि०) देखो वाम। (फा०पु०) अटारी, कोठा, मकान, के ऊपर की छत, साढ़े तीन हाथ का एक मान, पुरसा, कबूतरों के बैठने का ऊँचा अड्डा (हिं० स्त्री०) स्त्रियों के कान में पहरने का एक गहना।
बामा-(हिं० स्त्री०) देखो वामा।
बामी-(हिं० स्त्री०) देखो बाबी।
बायँ-(हिं० वि०) बायाँ, खाली, चूका हुआ, लक्ष्य पर न बैठा हुआ, बायँ देना-तरह देला, छोड़ना।
बाय-(हिं० स्त्री०) वायु, हवा, वात का प्रकोप, बाउली, बेहर।
बायक-(हिं० पु०) दूत, पढ़ने वाला, बतलाने वाला।
बायकाट-(अ० पुं०) सम्बन्ध आदि का त्याग, बहिष्कार, किसी माग के पूरी होने तक किसी दल का व्यवस्थित रूप से बहिष्कार।
बायन-(हिं० पु०) वह मिठाई या पकवान आदि जो उत्सव आदि के उपलक्ष्य में लोग अपने इष्ट मित्रों के घर भेजते हैं, भेंट, उपहार, बयाना, बायन करना-छेड़ छाड़ करना।
बायबिड़ंग-(हिं०पु०) पहाड़ पर होने वाली एक लता जिसमें छोटे छोटे मटर के बराबर गोल फल गुच्छों में लगते हैं जो सूखने पर औषधि के के काम में आते हैं।
बायबिल-देखो बाइबिल।
बायबी-(हिं०वि०) अपरिचित, अजनबी, बाहरी, नया आया हुआ।
बायव्य-(हिं० वि०) देखो वायव्य।
बायरा-(हिं०पु०) कुश्ती का एक पेंच।
बायल-(हिं०वि०) जो दाँव खाली जाय।
बायला-(हिं० वि०) वायु का विकार बढ़ाने वाला।
बायलर-(अ० पु०) इजन में भाफ उत्पन्न करने का कोठा।
बायस-(हिं० पु०) देखो वायस।
बायस्कोप-(अ० पु०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा परदे पर चलते फिरते चित्र दिखलाये जाते हैं।
बायाँ-(हिं० वि०) पूर्वाभिमुख खड़े होने पर किसी मनुष्य का उत्तर की ओर का पार्श्व, प्रतिकूल, विरुद्ध, बायें हाथ से बजाने का तबला, बाया देना-जान बूझकर बचा जाना।
बायें-(हिं०क्रि०वि०) विपरीत, विरुद्ध, बाईं ओर, बायें होना-खिन्न होना।
बारंबार-(हिं० क्रि० वि०) पुनः पुनः, लगातार।
बार-(हिं०पु०) द्वार, दरवाज़ा, दरबार, आश्रय, स्थान, (स्त्री०) काल, समय, अतिकाल, देर, दफा, मरतबा, (पु०) घेरा, रोक, किसी हथियार की बाढ या धार, नाव, थाली आदि का किनारा, (फा० पु०) भार, बोझा, वह माल जो नाव पर लादा जाय, बारबार-फिर फिर, (हिं०पु०) देखो बाल; बाला।

बारक-(हिं० स्त्री०) छावनी आदि में सैनिकों के रहने के लिये बना हुआ पक्का मकान।
बारकीर-(स०पुं०) यूका, जोंक।
बारगह-(हिं० स्त्री०) डेवढ़ी, डेरा, खेमा, तंबू।
बारगीर-(फा०पु०) साईस का सहायक।
बारजा-(हिं०पुं०) कोठा, अटारी, बरामदा, दरवाज़े के ऊपर पाटकर बनाया हुआ बरामदा, मकान के आगे की दालान।
बारतिय-(हिं०स्त्री०)देखो बारस्त्री, वेश्या।
बारतुण्डी-(हिं०स्त्री०) आल का पेड़।
बारदाना-(फा०पु०) व्यापारी चीजों को रखने का बरतन या वेठन, सेना के खाने पीने का सामान, रसद, टूटे फूटे लोहे लकड़ी के सामान।
बारन-(हिं०पु०) देखो वारण।
बारना-(हिं०क्रि०) रोकना, मना करना, प्रज्वलित करना, जलाना, जोंधरी बाजरे आदि के दाने अलगाना।
बारनिश-(अं०पुं०) लकड़ी लोहे आदि पर पोतने का चमकीला रंग।
बारबँटाई-(फा० स्त्री०) फस्ल के बोझ की बँटाई।
बारबधू,बारबधूटी-(हिं०स्त्री०)वेश्या,रंडी।
बारबरदार-(फा०पु०)बोझा ढोने वाला।
बारबरदारी-(फा०स्त्री०) सामग्री आदि ढोने की क्रिया या इस काम की मजदूरी
बारमुखी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बारवा-(हिं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
बारह-(हिं०वि०)दस और दो की संख्या का, (पु०) दस और दो की संख्या १२, बारह बाट करना-तितिर बितर करना, नष्ट करना।
बारहखड़ी-(हिं०स्त्री०) वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यञ्जन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ अं, अः इन बारह स्वरों को मात्रा के रूप में लगाकर बोलते या लिखते हैं।
बारहदरी-(हिं० स्त्री०) चारों ओर से खुला हुआ हवादार बैठक जिसमें बारह दरवाज़े होते हैं।
बारह पत्थर-(हिं०पु०) सीमा सिवान, छावनी।
बारहबान-(हिं० पुं०) एक प्रकार का उत्तम सोना।
बारहबाना-(हिं०वि०) चमकता हुआ, खरा, चोखा।
बारहबानी-(हिं०वि०) सूर्य के समान चमकने वाला, पापरहित, निर्दोष, खरा, चोखा, सच्चा, पक्का, (स्त्री०) सूर्य के समान चमक।
बारहमासा-(हिं० पु०) एक प्रकार का गद्य या गीत जिसमें किसी विरही या विरहिनी के मुख से बारहो महीने की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन कराया जाता है।
बारहमासी-(हिं०वि०) बारहो महीनों में होने वाला, सदा बहार, सब ऋतुओं में फलने फूलने वाला।
बारहवफ़ात-(अ० पु०) मुसलमानों के विश्वास के अनुसार वह तिथि जिस दिन मोहम्मद साहब बीमार हो कर मर गये थे।
बारहवाँ-(हिं०वि०) जो बारहवें स्थान में हो।
बारहसिंघा-(हिं०पु०) हरिन की जाति का एक चौपाया जिसकी सींघ में कई एक शाखा निकली रहती हैं।
बारहाँ-(हिं० वि०) देखो बारहवा, (फा० क्रि० वि०) अनेक बार, अक्सर, बारबार।
बारहीं-(हिं०स्त्री०) बच्चे के जन्म से बारहवा दिन, जिस दिन उत्सव आदि किये जाते हैं, (हिं० पु०) किसी मनुष्य के मरने से बारहवा दिन।
बारा-(हिं०वि०) बाल्यावस्था का, जो सयान न हो, (पु०) बेलन के सिरे पर लगाई हुई लोहे की कगनी, महीन तार खींचने की जन्ती, वह मनुष्य जो कुवें पर खड़ा होकर मोट का पानी उलटकर गिराता है।
बारात-(हिं०स्त्री०) वरयात्रा, वह समाज जो वर के साथ उसको ब्याहने के लिये सजधज कर वधू के घर ले जाता है।
बारादरी-(हिं०स्त्री०) देखो बारहदरी।
बारानी-(फा०वि०) बरसाती, (स्त्री०) वह ज़मीन जिसपर केवल बरसात के पानी से फस्ल उत्पन्न होती है वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिये बरसात में पहरा या ओढ़ा जाता है।
बारामीटर-(अं०पुं०) देखो बैरोमीटर।
बारिक-(अं०पु०) फौज के सिपाहियों के रहने का स्थान, छावनी।
बारिगर-(हिं०पु०) हथियारों पर सान रखने वाला, सिकलीगर।
बारिधर-(हिं०पु०) मेघ, बादल, एक वर्णवृत्त का नाम।
बारिधि-(हिं०पु०) देखो वारिधि।
बारिवाह-(हिं०पु०) बादल।
बारिश-(फा०पु०)वृष्टि, वर्षा, वर्षा ऋतु।
बारिस्टर-(अं०पु०) वह वकील जिसने विलायत की कानून की परीक्षा पास किया हो, यह दीवानी तथा फौजदारी सभी अदालत में विना वकालतनामे के किसी मोकदमें में बहस कर सकता है
बारी-(हिं०स्त्री०) तट, किनारा, धार,बाढ़, हाशिया, बगीचे खेत आदि के चारो ओर बना हुआ घेरा, किसी बरतन की कोर, नवयौवना, थोड़े उम्र की स्त्री, कन्या, लड़की, अवसर मौका, पारी, जहाजों के रहने का स्थान, बंदरगाह, घर, मकान, क्यारी, खिड़की, झरोखा, वह स्थान जहाँ वृक्ष लगाये गये हो, (पु०) एक जाति जो पत्तल बनाने का काम करती है, देखो बाली, बारी बारी से-क्रम से, एक के पीछे दूसरा, बारी बँधना-अलग अलग समय निश्चित होना।
बारीक-(फा०वि०) छोटा, महीन, पतला, सूक्ष्म, जो बिना सोचे समझे ध्यान में न आ सके, जिसके अणु अति सूक्ष्म हों, जिसकी रचना में कला की निपुणता प्रगट हो।
बारीका-(फा०पु०) चित्रकार की महीन

कलम ।

वारीकी-(फा०स्त्री०) सूक्ष्मता, पतलापन, खूबी, वह गुण या विशेषता जो साधारण दृष्टि से समझ में न आवे ।

वारुणी-(हिं०स्त्री०) देखो वारुणी ।

वारू-(हिं०पु०) देखो बालू।

वारूद-(तु० स्त्री०) गन्धक, शोरा और कोयले के योग से बनाई हुई वह बुकनी जो आग लगने से वडे वेग से भभगती है, बम, आतिशबाज़ी,तोप बदूक आदि के गोले चलाने में इसकी आवश्यकता होती है, गोली वारूद-लड़ाई के सामान, वारूद खाना-गोला वारूद आदि बनाने का स्थान ।

वारूदानी-(हिं०स्त्री०) देखो वारूदानी ।

वारे-(फा०क्रि०वि०) अन्त को , वारे में, सबध में, विषय में ।

वारोमोटर-(हिं०पु०) देखो वैरोमीटर ।

वारोठा-(हिं०पु०) विवाह का एक रस्म जो वरके द्वारपर आनेपर किया जाता है

वार्हस्पत-(स०वि०) वृहस्पति सवधी ।

वाल-(स० पु०) वालक, लड़का, किसी प्राणी का बच्चा, बुद्धिहीन मनुष्य, लोम, केश, कुन्तल, घोडे का बच्चा, वछेड़ा, हाथी की दुम, नारियल, पोंछ दुम, (वि०) मूर्ख, नासमझ, वह जो पूरी बाढ पर न पहुँचा हो, जिसको उगे हुए थोडे दिन हुए हों (स्त्री०) कुछ अन्न के पौधों के डंठल का अग्र भाग जिसमें दानों के गुच्छे लगे रहते हैं, वाल बाँका न होना-किसी प्रकार का कष्ट न पहुचना, वाल पकाना-वृद्ध होना, अनुभव प्राप्त करना, वाल वाल बचना-किसी आपत्ति में पड़ने से थोड़ा ही वच जाना ।

वाल-(अ०पु०) अँग्रेजी नाच ।

वालक-(स० पु०) पुत्र, शिशु, लड़का, थोड़ी उम्र का बच्चा, अबोध या अनजान मनुष्य,हाथी या घोडे का बच्चा,केश,वाल

वालकता-(सं० स्त्री०) लड़कपन ।

वालकताई-(हिं० स्त्री०) वाल्यावस्था, लड़कपन ।

वालकपन-(हिं०पु०) वालक होने का भाव, लड़कपन, नासमझी ।

वालकप्रिया-(स०स्त्री०)इन्द्रवारुणी,केला।

वालकाण्ड-(स० पु०) रामायण का वह भाग जिसमें रामचन्द्र के जन्म तथा वाललीला आदि का वर्णन है ।

वालकाल-(सं० पुं०) वाल्यावस्था, वचपन ।

वालकी-(हिं०स्त्री०) कन्या, पुत्री ।

वालकृष्ण-(स० पु०) वाल्यावस्था के श्री कृष्ण ।

वालकेलि-(स०स्त्री०) लडकों का खेल, खिलवाड, अति साधारण या तुच्छकाम

वालकेशी-(स०स्त्री०) एक प्रकारकी घास

वालक्रीडन-(स० नपु०) लडकों का खेल ।

वालक्रीडा-(सं०स्त्री०) लडकों का खेल और काम ।

वालखिल्य-(स०पु०) पुराण के अनुसार ब्रह्मा के रोमकूप से उत्पन्न साठ हजार ऋषी जो डील डौल में अगूठे के बराबर थे ।

वालगर्भिणी-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसने पहले पहल गर्भ धारण किया हो ।

वालगोपाल-(स० पु०) श्रीकृष्ण की वाल्य मूर्ति, परिवार के बच्चे ।

वालग्रह-(स० पु०) वालकों की हत्या करने वाले ग्रह विशेष, अनाचार करने पर ये वालकों को सताते हैं ।

वालचरित-(स०नपु०)लडकोंका खिलवाड

वालचर्य-(स०पु०) कार्तिकेय, वालकों का चरित्र ।

वालछड़-(हिं० स्त्री०) जटामासी ।

वालजीवन-(स०नपु०) दुग्ध दूध ।

वालटी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की डोलची जिसका नीचे का घेरा सकरा तथा ऊपर का चौडा होता है इसको उठाने के लिये एक दस्ता भी लगा रहता है ।

वालतनय-(स०पु०) वालक, पुत्र ।

वालतन्त्र-(स०नपुं०) वालकों के लालन पालन की विद्या, धात्रीत्व ।

वालतृण-(सं०नपु०) नवतृण,हरी घास

वालतोड़-(हिं० पु०) देखो वरतोर ।

वालद-(हिं० पु०) वैल ।

वालत्व-(स० नपु०) वालकता,लडकपन ।

वालधि-(हिं०स्त्री०) पूछ, दुम ।

वलना-(हिं० क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना ।

वालपत्र (स०पुं०) नया पत्ता, कोपल ।

वालपन-(हिं०पु०) वाल्यावस्था,लडकपन

वालपर्णी-(स०स्त्री०) मेथिका, मेथी ।

वालपुष्पी-(स०स्त्री०) यूथिका जूही ।

वालवच्च-(हिं०पु०) सन्तान, फौलाद ।

वालवुद्धि-(स० स्त्री०) वालकों के समान बुद्धि ।

वालबोध-(स० स्त्री०) देवनागरी लिपि ।

वालबोधक-(स०स्त्री०) वहुत सहज ।

वाल ब्रह्मचारी-(सं० पुं०) वह जिसने वाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो ।

वालभाव-(स० पु०) लडकपन ।

वालभोग-(स० पु०) वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे प्रातःकाल रक्खा जाता है, जलपान, कलेवा ।

वालम-(हिं० पुं०) पति, स्वामी, प्रेमी वालम खीरा-एक प्रकार का वडा खीरा

वालमुकुन्द-(स० पु०) वाल्यावस्था के श्रीकृष्ण जी ।

वालमूलक-(स०नपु०)छोटी कच्ची मूली

वालरोग-(स०पुं०) वालक की व्याधि

वाललीला-(स०स्त्री०) वालकों की क्रीडा, लडकों का खेल ।

वालव-(स० पु०) फलित ज्योतिप के अनुसार दूसरे कर्ण का नाम ।

वालवत्स्य-(स० पु०) कपोत,कबूतर ।

वालविधु-(स० पु०) अमावस्या के वाद के दिन का नवीन चन्द्रमा ।

वालव्यजन-(स०नपुं०) लडके का पखा

वालसांगड़ा-(हिं० पुं०) कुश्ती का एक पेंच ।

वालसूर्य-(स० नपु०) उदय काल का सूर्य, वैदूर्यमणि ।

वालस्थान-(स० नपु०) शिशुत्व, लड़कपन

वालहस्त-(सं० पु०) केश समूह ।

बाला-(स० स्त्री०) नारियल, हल्दी, बेले का पौधा, बारह वर्ष से सोलह वर्ष तक की स्त्री, एक बरस की गाय, घृत-कुमारी, घीकुआर, खैर, एक प्रकार का आभूषण, एक वर्णवृत्त का नाम, एक प्रकार का गेंहू की फस्ल को नष्ट करने वाला कीड़ा, दश महाविद्याओं में से एक, सुगन्धवाला, पत्नी, स्त्री, पुत्री, कन्या, छोटी इलायची, **बोल बाला रहना**-आदर का बढ़ना, **बाला भोला**-बहुत सीधा सादा।

बाला-(फा० पु०) ऊचा, जो ऊपर की ओर हो।

बालाई-(हिं० स्त्री०) देखो मलाई, (फा० वि०) ऊपरी ऊपर का, निश्चित आय के अतिरिक्त।

बालाखाना-(फा०पु०) मकान के ऊपर का कमरा।

बालादस्ती-(फा०स्त्री०) अनुचित रीति से ले लेना, ज़बरदस्ती।

बालादित्य-(सं० पु०) तुरंत का उगा हुआ सूर्य।

बालापन-(हिं०पु०) बचपन, लड़कपन।

बालाबर-(फा० नपु०) एक प्रकार का अगरखा जिसमें चार कलिया और छ बन्द होते हैं।

बालारुण-(स०पु०) देखो बालादित्य।

बालार्क-(स०पु०) प्रातःकाल का सूर्य।

बालि-(स० पु०) वानरों का अधिपति जो सुग्रीव का बड़ा भाई था।

बालिका-(स०स्त्री०)कन्या, छोटी लड़की, पुत्री, बेटी, इलायची, कान में पहरने की बाली।

बालिग-(अ० पु०) प्राप्तवयस्क, युवा, वह जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो

बालिनी-(स०स्त्री०) अश्विनी नक्षत्र।

बालिश-(स०नपु०) उपधान, तकिया, शिशु, बालक, (वि०) मूर्ख, अबोध (फा०स्त्री०) तकिया।

बालिश्त-(फा० पु०) बित्ता, प्रायः नव इञ्च की नाप।

बालिस ट्रेन-(अ० स्त्री०) वह रेलगाड़ी जिसपर सड़क बनाने के सामान लाद कर भेजे जाते हैं।

बालिहन्ता-(स०पु०) श्रीरामचन्द्र।

बाली-(हिं० स्त्री०) कान में पहरने का एक प्रसिद्ध आभूषण, पौधों का वह भाग जिसमें दाने लगे रहते हैं।

बालु-(स० स्त्री०) बालू, कपूर।

बालुका-(स०स्त्री०) बालू, ककड़ी, कपूर, **बालुका प्रभा**-एक नरक का नाम, **बालुकामय**-बालू से भरा हुआ, **बालुका यन्त्र**-वह यन्त्र जिसमे औषधि फूकने के लिये बालू भरी हाडी में रक्खी जाती है।

बालुङ्की-(स०स्त्री०) कर्कटी, ककड़ी।

बालू-(हिं० पु०) पत्थर का वह महीन चूर्ण या कण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ पर से आता है और नदियो के किनारे पर जम जाता है, रेणुका, रेत, **बालू की भीत**-शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु।

बालूक-(स० पु०) एक प्रकार का विष।

बालूचरा-(हिं०पु०) वह जमीन जिसपर छिछला पानी भरा हो।

बालूदानी-(हिं०स्त्री०) बालू रखने की झझरीदार छोटी डिबिया जिसमें से बालू गिरा कर रोशनाई के लेख आदि सुखाये जाते हैं।

बालूबुर्द-(हिं० वि०) बालू पड़ कर नष्ट हो गया हुआ (पु०) वह उपजाऊ भूमि जो बालू के जम जाने से ऊसर हो गई हो।

बालूसाही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।

बालेन्दु-(स०पु०) नया उदित चन्द्र।

बालेय-(स० पु०) रासभ, गदहा, एक दैत्य का नाम, चावल (वि०) बालकों के हित का, बलिदान करने योग्य।

बाल्टी-(हिं०स्त्री०) देखो बालटी।

बाल्य-(स०नपु०) बालक का भाव, लड़कपन, बालक होने की अवस्था, (वि०) बालक सम्बन्धी, बचपन का।

बाल्यावस्था-(सं०स्त्री०) प्रायः सोलह वर्ष तक की अवस्था लड़कपन।

बाल्हक-(स०नपु०) कुकुम केसर।

बाल्हीक-(सं०पु०) जनमेजय के एक पुत्र का नाम।

बाव-(स० पु०) वायु, हवा, अपान वायु, बाई, (फा०पु०) ज़मीदारों का एक हक जो उनको असामी की कन्या के विवाह के समय मिलता है।

बावड़ी-(हिं०स्त्री०) वह बड़ा चौड़ा कुवा जिसमें उतरने के लिये सीढ़िया लगी रहती हैं, बावली, छोटा तालाब।

बावन-(हिं०वि०) पचास और दो की सख्या का, (पुं०) पचास और दो की सख्या ५२, **बावन तोले पाव रत्ती**-बिलकुल सही और ठीक, **बावन वीर**-बड़ा चतुर और वीर।

बावना-(हिं०वि०) देखो बौना।

बावभक-(हिं०स्त्री०) झक, पागलपन।

बावर-(फा०पु०) विश्वास, यकीन।

बावरची-(फा०पुं०) भोजन पकाने वाला, रसोइयादार, **बावरची खाना**-पाकशाला, रसोइया घर।

बावरा-(हिं०वि०) देखो बावला।

बावरी-(हिं० स्त्री०) देखो बावली।

बावल-(हिं०पु०) अन्धड़, आधी।

बावला-(हिं०वि०)विक्षिप्त, पागल,सनकी।

बावलापन-(हिं०पु०) झक, पागलपन।

बावली-(हिं०स्त्री०) सीढ़िया लगा हुआ छोटा गहरा तालाब या चौडे मुँह का कुवा।

बावाँ-(हिं०वि०) बाईं ओर का, बायाँ, विरुद्ध।

बाशिंदा-(फा०पु०)निवासी, रहने वाला।

बाष्कल-(स०पुं०) वीर, योद्धा, वादी, एक ऋषि का नाम।

बाष्प-(हिं० पु०) भाफ, लोहा, आसू, एक प्रकार की जड़ी, गौतम बुद्ध के एक शिष्य का नाम।

बास-(हिं० पु०) निवास, रहने की क्रिया या भाव, रहने का स्थान, तेज़ धार की छुरी, एक प्रकार का अस्त्र, अग्नि, आग, इच्छा, वस्त्र, कपड़ा,

गन्ध महक, बदबू (पु०) एक प्रकार का ऊंचा वृक्ष, एक छन्द का नाम।
वासकर्णी-(सं० स्त्री०) यज्ञशाला।
वासकसज्जा-(सं० स्त्री०) वह नायिका जो अपने पति या प्रियतम के आने के समय केलि क्रीड़ा की सामग्री एकत्रित करती हो।
वासठ-(हिं० वि०) साठ और दो की सख्या का (पु०) साठ और दो की संख्या ६२, वासठवाँ-वह जो क्रम से बासठ के स्थान पर हो।
वासदेव-(हिं०पु०) अग्नि, आग, देखो वासुदेव।
वासन-(हिं०पु०) बरतन, भाड़।
वासना-(हिं० स्त्री०) इच्छा चाह, गन्ध महक, (क्रि०) सुवासित करना, महकाना।
वासफूल-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान।
वासमती-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का धान जिसका चावल पकने पर सुगन्धित होता है।
वासर-(हिं० पु०) वासर, दिन, प्रातः काल, सवेरा, प्रातः काल गाने की गीत।
वासव-(सं० पु०) इन्द्र।
वासवी-(हिं० पु०) अर्जुन, वासवी दिशा-पूर्व दिशा।
वाससी-(सं०पु०) वस्त्र, कपड़ा।
वासा-(हिं०पु०) एक प्रकार की चिड़िया, अडूसा, वह स्थान जहां पकी हुई रसोई दाम देने पर मिलती है।
वासित-(हिं०वि०) सुगन्धित किया हुआ।
वासिन्दा-(हिं०वि०) देखो बाशिन्दा।
वासी-(हिं०वि०) जो ताजा न हो, देर का अथवा एकदिन पहले का बना हुआ, जो हरा भरा न हो, सूखा या कुम्हलाया हुआ, कुछ देर तक का रक्खा हुआ, बसने वाला, रहने वाला, वासी कढी मे उबाल आना-वृद्धावस्था में जवानी का उमग आना।
वासौंधी-(हिं०स्त्री०) देखो बसौंधी।
वाह-(सं०पुं०) वाहु, बाँह (हिं०पु०) खेत जोतने की क्रिया, खेत की जोताई।

वाहकी-(हिं०स्त्री०)कहार की स्त्री,कहारिन
वाहड़ी-(हिं०स्त्री०) कुम्हड़ौरी डाल कर पकाई हुई खिचड़ी।
वाहन-(हिं०पु०) एक प्रकार का ऊंचा लवा वृक्ष।
वाहना-(हिं० क्रि०) ढोना, लादना या चढाकर ले जाना, फेंकना, चलाना, पकड़ना, धारण करना, बहना, खेत में हल चलाना, गाड़ी घोड़े आदि का हाँकना, गाय भैंस आदि को गाभिन कराना।
वाहनी-(हिं०स्त्री०) सेना, फौज।
वाहवली-(हिं०पु०)कुश्ती की एक पेंच।
वाहम-(फा०क्रि०वि०)परस्पर, आपस में।
वाहर-(हिं०क्रि०वि०) किसी निश्चित या कल्पित सीमा से हटकर, बगैर, सिवाय, अलग, प्रभाव या अधिकार से पृथक्, किसी दूसरे स्थान पर, दूसरी जगह, दूसरे शहर मे, वाहर होना-प्रगट होना, वाहर करना-हटाना, दूर करना, वाहर वाहर-दूर से, बिना किसी को बतलाये हुए, वाहर का-वह जो आत्मीय न हो, पराया, बेगाना।
वाहर जामी-(हिं० पु०) ईश्वर का अवतार, यथा राम, कृष्ण आदि।
वाहरी-(हिं०वि०)वाहर वाला,वाहर का, पराया, बेगाना, जो घर का न हो, जो आपस का न हो, अजनबी, ऊपरी, जो केवल बाहर से देखा जावे।
वाहरी टांग-(हिं० स्त्री०) कुश्ती की एक पेंच।
वाहस-(हिं०पु०) अजगर।
वाहालोरी-(हिं०क्रि०वि०) भुजा से भुजा अथवा हाथ से हाथ मिलाकर।
वाहा-(हिं०पु०) वह रस्सी का टुकड़ा जिससे नाव का डाँड़ा बाँधा रहता है।
वाहिज-(हिं०पु०) ऊपर से, बाहर से।
वाहिनी-(हिं०स्त्री०,सेना,फौज,नदी,सवारी
वाहिर-(हिं०क्रि०वि०) देखो बाहर।
वाहीं-(हिं०स्त्री०) देखो बाँह, बाहु।
वाहु-(सं०पु०) भुजा, बाँह।
वाहुक-(सं०पु०) नकुल का नाम, एक नाग का नाम, राजा नल जब अयोध्या के राजा के सारथी बने थे तब उन्होंने अपना नाम बाहुक रक्खा था।
वाहुकर-(सं० वि०) हाथों से काम करने वाला।
वाहु कुन्थ-(सं०पु०) पक्ष, पख।
वाहुज-(सं०पु०) क्षत्रिय जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के हाथ से मानी जाती है, सुग्गा, (वि०) वह जो बाहु से उत्पन्न हो।
वाहुजन्य-(सं०वि०)बाहुज,बाहु से उत्पन्न
वहुज्या-(सं०पुं०) गणित की भुजज्या।
वाहुत्राण-(सं०नपु०) चमड़े लोहे आदि का बना हुआ वह दस्ताना जो युद्ध मे हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है।
वाहुदन्तिन्, वाहुदन्तेय-(सं०पु०) इन्द्र।
वाहु पाश-(सं०पु०) एक युद्धकौशल जो बाहु द्वारा बना होता है।
वाहुबल-(सं०नपु०) हाथों की ताकत, पराक्रम, बहादुरी।
वाहुभाष्य-(सं० नपु०) बहुत बोलनेवाला।
वाहुभूषा-(सं० नपु०) बाँह पर पहरने का एक आभूषण, केयूर।
वाहुभेदी-(सं० पु०) विष्णु।
वाहुमूल-(सं० नपु०) कन्धे और बाँह का जोड़, काँख।
वाहुयुद्ध-(सं० नपु०) मल्लयुद्ध, कुश्ती।
वाहुयोध-(सं० पु०) पहलवान।
वाहुल-(सं० नपु०) बहुतायत, ज्यादती, अग्नि, कार्तिक मास, हाथ में पहरने का कवच।
वाहुलग्रीव-(सं० पुं०) मयूर, मोर।
वाहुलेय-(सं० पुं०) कार्तिकेय।
वाहुल्य-(सं० नपु०) आधिक्य, अधिकता।
वाहुविस्फोट-(सं० पु०) ताल ठोंकना।
वाहुवीर्य-(सं० नपु०) बाहुबल, पराक्रम।
वाहुशालिन्-(सं० पु०) शिव, भीम, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
वाहुशिखर-(सं० पु०) स्कन्ध, कन्धा।
वाहुशोष-(सं०पु०) बाँह में होने वाला एक प्रकार का वायुरोग।
वाहुसम्भव-(सं० पुं०) क्षत्रिय।
वाहुहजार-(हिं० पु०) देखो सहस्रबाहु।

बाह्य-(सं० नपुं०) भार ढोने वाला पशु, (वि०) ढानेवाला, बाहरी, बाहर का।
बाह्यपटी-(सं० स्त्री०) जवनिका, नाटक का परदा।
बाह्याभ्यन्तर-(सं० पुं०) प्राणायाम का एक भेद।
बाह्याचरण-(सं० पुं०) आडवर, ढकोसला
बाह्यालय-(सं० पुं०) बाहर का घर।
बाह्लीक (सं० पुं०) काम्बोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम, यह स्थान काबुल के उत्तर ओर है।
बिंग-(हिं० पुं०) देखो व्यंग।
बिंजन-(हिं० पुं०) देखो व्यंजन।
बिन्दु-(हिं० पुं०) पानी का बूंद, वीर्य का बूंद, दोनो भौंहों के बीच का स्थान, देखो बिंदी।
बिंदा-(हिं० स्त्री०) एक गोपी का नाम, माथे पर का गोल बड़ा टीका, इस आकार का कोई चिह्न।
बिंदी-(हिं० स्त्री०) शून्य, सुन्ना, माथे पर लगाने का गोल छोटा टीका, इस आकार का कोई चिह्न।
बिंदुका-(हिं० पुं०) बिंदी, गोल टीका।
बिंदुरी, बिंदुली-(हिं० स्त्री०) माथे पर का गोल टीका, टिकुली।
बिंद्राबन-(हिं० पुं०) देखो वृन्दावन।
बिंध-(हिं० पुं०) देखो विन्ध्याचल।
बिंधना-(हिं० क्रि०) छेदा जाना, फसना, उलझना।
बिंधिया-(हिं० पुं०) मोती में छेद करने वाला
बिंब-(हिं० पुं०) देखो बिम्ब, प्रतिबिम्ब, छाया।
बिंबा-(हिं० पुं०) देखो बिम्बा, बिम्ब, प्रतिच्छाया।
बि-(हिं० वि०) दो, एक और एक।
बिअहुता (हिं० वि०) विवाह का, विवाह सम्बन्ध का, जिसका विवाह हो गया हो
बिआधि-(हिं० स्त्री०) देखो व्याधि।
बिआधु-(हिं० पुं०) देखो व्याध।
बिआना-(हिं० क्रि०) पशुओं का बच्चा देना, जनना।
बिआपी-(हिं० वि०) देखो व्यापी।
बिओग, बिओगी-(हिं० वि०) देखो वियोग, वियोगी।
बिकट-(हिं० वि०) देखो विकट।
बिकना-(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ का मूल्य लेकर दिया जाना, बेंचा जाना, बिक्री होना, किसी के हाथ बिकना-किसी का दास या सेवक होना
बिकरम-(हिं० पुं०) देखो विक्रमादित्य।
बिकरार, बिकराल-(हिं० वि०) व्याकुल, डरावना, भयानक, देखो विकराल।
बिकल-(हिं० वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, देखो विकल।
बिकलाई (हिं० स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी।
बिकलाना-(हिं० क्रि०) व्याकुल होना घबड़ाना व्याकुल या बेचैन करना।
बिकवाना-(हिं० क्रि०) बेचने का काम दूसरे से कराना, किसी से बिक्री करना।
बिकसना-(हिं० क्रि०) खिलना, फूलना, बहुत प्रसन्न होना।
बिकसाना-(हिं० वि०) विकसित कराना, खिलाना, प्रफुल्लित करना, प्रसन्न करना
बिकाऊ-(हिं० वि०) बिकने योग्य, बिकने वाला।
बिकाना-(हिं० क्रि०) देखो बिकना।
बिकार-(हिं० वि०) देखो विकार, देखो विकराल, भयंकर।
बिकारी-(हिं० वि०) बिकृत रूपवाला, हानि कारक, सख्या या मान सूचित करने के लिये अकों के आगे लगाने की टेढी रेखा।
बिक्री-(हिं० स्त्री०) बेंचे जाने की क्रिया या भाव, वह धन जो बेंचने से प्राप्त होता है।
बिक्रू-(हिं० वि०) बिकाऊ, बेचने योग्य।
बिख-(हिं० पुं०) विष, जहर।
बिखम-(हिं० वि०) देखो विषम।
बिखरना-(हिं० क्रि०) खण्डों या कणो का इधर उधर गिरना या फैल जाना, छितराना।
बिखराना-(हिं० क्रि०) देखो बिखेरना।
बिखाद-(हिं० पुं०) देखो विषाद।
बिखेरना-(हिं० क्रि०) इधर उधर फैलाना तितर बितर करना, छितराना।
बिगड़ना-(हिं० क्रि०) असली रूप रंग या गुण का नष्ट हो जाना, बदचलन होना क्रुद्ध होना, अप्रसन्नता प्रगट करना, विरोधी होना, पशु आदि का अपने रक्षक की आज्ञा से बाहर होना, बुरी अवस्था को प्राप्त होना, लड़ाई झगड़ा होना, व्यर्थ खर्च होना, किसी पदार्थ के बनते समय उसका ठीक न उतरना दुर्दशा को प्राप्त होना, खराब होना।
बिगड़ेदिल-(हिं० पुं०) वह जो बात बात में लड़ने झगड़ने लगे, वह जो बिगड़ा हुआ हो, कुपथ पर चलने वाला।
बिगड़ैल-(हिं० वि०) ज़रासी बात पर क्रुद्ध होने वाला, हठ करने वाला, जिद्दी।
बिगर-(हिं० क्रि० वि०) रहित, बिना बगैर
बिगरना-(हिं० क्रि०) देखो बिगडना।
बिगराइल-(हिं० वि०) देखो बिगड़ैल।
बिगसना-(हिं० क्रि०) देखो विकसना।
बिगहा-(हिं० पुं०) देखो बीघा।
बिगही-(हिं० स्त्री०) क्यारी, बरही।
बिगाड़-(हिं० पुं०) वैमनस्य, लड़ाई झगड़ा दोष बुराई, बिगडनेकी क्रिया या भाव।
बिगाड़ना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु के स्वाभाविक रूप रंग या गुणको नष्ट करना कुमार्ग में लगाना, बुरी अवस्था में लाना, व्यर्थ व्यय करना, किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करना, बुरी आदत डालना, बहकाना, किसी वस्तुको बनाते समय उसमें ऐसा विकार उत्पन्न कर देना कि वह ठीक न बन सके।
बिगाना-(अ० वि०) जो अपना न हो, पराया, अजनबी, अनजान।
बिगार-(हिं० पुं०) देखो बिगाड़।
बिगारी-(हिं० स्त्री०) देखो बेगारी।
बिगास-(हिं० पुं०) देखो विकास।
बिगासना-(हिं० क्रि०) विकसित करना।
बिगिर-(हिं० क्रि० वि०) बगैर, सिवाय।
बिगुन-(हिं० वि०) गुण रहित, जिसमें कोई गुण न हो।
बिगुर-(हिं० वि०) बिना गुरु का, जिसने

किसी गुरु से शिक्षा न प्राप्त किया हो।
विगुरचिन–(हि०स्त्री०) देखो बिगूचन।
बिगुरदा–(हि० स्त्री०) प्राचीन समय का एक प्रकार का हथियार।
बिगुल–(अ० पु०) एक प्रकार की अंग्रेज़ी ढंग की तुरही जो सैनिकों को इकट्ठा करने के लिये अथवा अन्य संकेत के निमित्त बजाई जाती है।
बिगुलर–(अ०पु०) बिगुल बजाने वाला।
बिगूचन–(हिं०स्त्री०) मनुष्य के चित्त का भ्रम, असमंजस, कठिनता, दिक्कत।
बिगूचना–(हिं० क्रि०) संकोच में पड़ना, अड़चन में पड़ना, दबाया जाना, पकड़ा जाना, दबोचना।
बिगूतना–(हिं०क्रि०) देखो बिगूचना।
बिगोना–(हि०क्रि०) नष्ट करना, विनाश करना, दिक करना, तंग करना, छिपाना, चुराना, बहकाना, भ्रम में डालना।
बिग्गाहा–(हिं०पु०) आर्या छन्द का एक भेद, इसको उद्गीति भी कहते हैं।
बिग्रह–(हि० पु०) देखो विग्रह।
बिघटना–(हि० क्रि०) विनाश करना, बिगाड़ना।
बिघन–(हिं० पु०) देखो विघ्न, बिघन हरन–विघ्नोंको हटाने वाले गणेश जी।
बिच–(हि०वि०) देखो बीच।
बिचकाना–(हिं०क्रि०) किसी को चिढाने के लिये मुह टेढा करना, मुह चिढाना, मुह बनाना।
बिचच्छन–(हि०वि०) देखो विचक्षण।
बिचरना–(हिं०क्रि०) इधर उधर घूमना, चलना फिरना, पर्यटन करना, सफर करना।
बिचलना–(हि०क्रि०) विचलित होना, इधर उधर हटना, किसी बात को कह कर मुकर जाना, हिम्मत हारना।
बिचला–(हिं०वि०) बीचका, बीच वाला।
बिचलाना–(हि० क्रि०) विचलित करना, हिलाना, डिगाना, तितर बितर करना।
बिचवान, बिचवानी–(हिं०पु०) मध्यस्थ, वह जो झगड़ा निबटाता हो।
बिचहुत–(हिं०पु०) सन्देह, दुबधा, अन्तर
बिचारना–(हि० क्रि०) विचार करना,
बिचारमान (हिं० वि०) विचार करने वाला, विचारने योग्य।
बिचारा–(हिं०वि०) देखो बेचारा।
बिचारी–(हि०वि०) विचार करनेवाला।
बिचाल–(हि० पु०) अन्तर, फर्क।
बिचेत–(हि०वि०) अचेत, मूर्च्छित, बेहोश
बिच्छित्ति–(सं० स्त्री०) शृंगार रसके ग्यारह भावो में से एक जिसमें किसी पुरुष का थोडे ही शृंगार से मोहित होना वर्णन किया जाता है।
बिच्छू–(हि०पु०) एक छोटा जहरीला जानवर जिसके पूछ में डंक होता है जिसमें विष रहता है, एक प्रकार की घास जिसके छू जाने से बिच्छू के काटने के समान जलन और पीड़ा होती है।
बिछना–(हिं० क्रि०) फैलाया जाना, छितराया जाना, जमीन पर गिराया जाना
बिछलना–(हिं०क्रि०) देखो फिसलना।
बिछलाना–(हिं० क्रि०) फिसलाना।
बिछवाना–(हिं० क्रि०) बिछाने का काम दूसरे से करना।
बिछाना (हिं०क्रि०) भूमि पर पूरे विस्तार से फैलाना, जमीन पर गिराना या लिटा देना, बिखेरना, किसी वस्तु को भूमि पर कुछ दूर तक फैला देना।
बिछावन–(हि०पु०) देखो बिछौना।
बिछिया–(हिं०स्त्री०) पैर की अंगुलियों में पहरने का एक प्रकार का छल्ला।
बिछिप्त–(हि०वि०) देखो विक्षिप्त।
बिछुआ–(हिं० पु०) पैर में पहरने का एक प्रकार का गहना, एक प्रकार की छोटी छुरी, अगिया नामक पौधा।
बिछुड़न–(हि० स्त्री०) बिछुड़ने या अलग होने का भाव, वियोग जुदाई।
बिछुड़ना–(हिं० क्रि०) साथ रहने वाले दो व्यक्तियों का अलग होना, जुदा होना, प्रेमियों का परस्पर वियोग होना।
बिछुरना–(हि०क्रि०) देखो बिछुड़ना।
बिछुरता–(हि०पु०) बिछुड़ने वाला।
बिछूना–(हि० पु०) वह जो बिछुड़ गया हो।
बिछोड़ा–(हिं० पु०) बिछोह, बिछुड़ने की क्रिया या भाव।
बिछाय, बिछोह–(हिं० पु०) वियोग, विरह, जुदाई।
बिछौना–(हि० पु०) बिछाने का वस्त्र, बिछावन, बिस्तर।
बिजड़–(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार।
बिजन–(हिं० पु०) व्यजन, पंखा, (वि०) एकान्त, जिसके साथ दूसरा कोई न हो।
बिजयघंट (हिं०पु०) मन्दिरों में लटकाने का बड़ा घंटा।
बिजयसार–(हिं० पु०) एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली वृक्ष इसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है।
बिजली–(हिं० स्त्री०) वह शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे कभी कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है, विद्युत्, बादलों के टकराने तथा रसायनिक क्रिया से उत्पन्न होने वाला वह प्रकाश जो आकाश में कभी कभी देख पड़ता है, आम की गुठली के भीतर की गिरी, कान में पहरने का एक गहना, गले में पहरने का एक आभूषण, (वि०) अधिक तीव्र या चंचल, चमकीला, तेज़ चमकने वाला, बिजली गिरना–आकाश से विद्युत् का तेज़ी के साथ भूमि पर आना, बिजली कड़कना–आकाश में गड़गड़ाहट होना
बिजहन–(हिं० वि०) वह बीज जिसमें उगने की शक्ति नष्ट हो गई हो।
बिजातो–(हिं० वि०) दूसरी जाति का दूसरी तरह का, जाति से निकाला हुआ, बहिष्कृत।
बिजान–(हि० वि०) अज्ञान, अनजान।
बिजायठ–(हि०पु०) बाहु पर पहरने का एक आभूषण, बाजूबन्द।
बिजुरी–(हिं० स्त्री०) देखो बिजुली।

बिजूका, बिजूखा-(हिं०पु०) विभीषिका, पशु पक्षियों के डराने के लिये खेत में गाड़ा हुआ पुतला।
बिजैसार-(हिं०पुं०) देखो विजयसार।
बिजोग-(हिं०पु०) देखो वियोग।
बिजोरा-(हि० वि०) निर्बल, बलहीन, अशक्त।
बिजोहा-(हिं०पु०) एक छन्द का नाम।
बिजौरा-(हि० पु०) नीबू की जाति का एक वृक्ष जिसके फल नारगी के बराबर होते हैं।
बिजौरी-(हि०स्त्री०) कुम्हड़ौरी।
बिज्जु-(हिं०स्त्री०) बिजली, विद्युत्।
बिज्जुपात-(हिं०पुं०) बिजली का गिरना।
बिज्जुल-(हिं०स्त्री०) बिजली,(पु०) त्वचा, छिलका।
बिज्जू-(हि० पु०) बिल्ली की तरह का एक जगली जानवर।
बिज्जूहा-(हिं०पु०) एक वर्णिकवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होतेहैं।
बिझंवारी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की भाषा जो छत्तीसगढ़ में बोली जाती है।
बिझरा-(हि० पु०) एक में मिला हुआ मटर, चना, गेंहूँ और जव।
बिझुकना-(हि० क्रि०) भयभीत होना, डरना, भड़कना, टेढा होना।
बिझुकाना-(हिं०क्रि०) भड़काना, डराना, टेढा करना।
बिट-(हिं० पु०) देखो विट्, नायक का वह साथी जो सब कलाओं में निपुण हो, पक्षियों की विष्ठा, बीट।
बिटरना-(हि० क्रि०) घघोलना, घघोल कर गन्दा करना, गन्दा होना। घघोला जाना।
बिटिया-(हिं०स्त्री०) बेटी, पुत्री।
बिट्ठल-(हिं०पु०) विष्णु का एक नाम, बबई प्रान्त में शोलापुर के अन्तर्गत पढरपुर नगर की एक प्रधान देवमूर्ति जो बुद्ध की मूर्ति सी जान पड़ती है।
बिठलाना-(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।
बिठाना-(हिं० क्रि०) बैठाना।
बिडव-(हि० पु०) विडम्ब, आडम्बर।
बिडवना-(हिं०क्रि०) रूप बनाना, नक्ल करना, निन्दा, उपहास, हँसीठट्ठा।
बिड़-(हि० पु०) विष्ठा, एक प्रकार का नमक।
बिडर-(हिं० वि०) छितराया हुआ, दूरदूर (वि०) निर्भय, जिसको डर न लगती हो, धृष्ट, ढीठ।
बिडरना-(हि०क्रि०) अस्त व्यस्त होना, तितर बितर होना, पशुओं का भयभीत होना, बिचकना।
बिडराना-(हि० क्रि०) तितर बितर करना, भगाना।
बिड़वना-(हिं० क्रि०) तोड़ना।
बिडारना-(हिं०क्रि०) डरा कर भगाना, नष्ट करना।
बिडाल-(स० पुं०) बिलाव, बिल्ली, बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसको दुर्गा ने मारा था, दोहे का एक भेद, बिड़ालपाद-एक तौल जो एक कर्ष के बराबर होती है, बिडालावृत्तिक-लोभी, कपटी स्वभाव का।
बिडालाक्ष-(स०वि०) वह जिसकी आँखें बिल्ली की आँखों के सदृश हों।
बिडालिका-(स०स्त्री०) बिल्ली, हरताल।
बिड़ाली-(स० स्त्री०) एक प्रकार का आँख का रोग।
बिड़ौजा-(स०पु०) इन्द्र का एक नाम।
बिढती-(हिं०पु०) लाभ, मुनाफा, नफा।
बिढ़ंवना-(हिं० क्रि०) एकत्रित करना, सञ्चित करना, इकट्ठा करना।
बिढाना-(हि०क्रि०) देखो बिढवना।
बित-(हिं०पु०) देखो वित्त, धन, द्रव्य शक्ति, सामर्थ्य, आकार, कद।
बितताना-(हिं० क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना, सताना, कष्ट देना।
बितना-(हिं०पु०) बित्ता, रस्से के फन्दे में लगाने का लकड़ी का छोटा टुकड़ा।
बितरना-(हिं०क्रि०) बाटना।
बितवना-(हि०क्रि०) बिताना।
बिता-(हिं०पुं०) देखो बित्ता।
बिताना-(हि०क्रि०) समय आदि व्यतीत करना, गुज़ारना, काटना।
बिताल-(हिं०पु०) देखो बैताल।
बितावना-(हि०क्रि०) देखो बिताना।
बितीतना-(हि० क्रि०) व्यतीत होना, गुजरना, बिताना।
बितु-(हिं०पुं०) देखो वित्त।
बित्त-(हिं०पु०) देखो वित्त, धन दौलत।
बित्ता-(हिं०पुं०) हाथ की सब अगुलियों को फैलाकर अगूठे के सिरे से कानी अगुली के सिरे तक की पूरी बालिश्त।
बिथकना-(हिं० क्रि०) चकित होना, थकना, हैरान होना।
बिथरना-(हिं०क्रि०) इधर उधर होना, छितराना, खिल जाना।
बिथा-(हिं०स्त्री०) देखो व्यथा, पीड़ा।
बिथारना-(हि०क्रि०)छिटकाना,बिखेरना
बिथित-(हिं०वि०) देखो व्यथित।
बिथोरना-(हि०क्रि०) देखो बिथराना।
बिदकना-(हि० क्रि०) फटना, चिरना, घायल होना, भड़कना
बिदकाना-(हि० क्रि०) विदीर्ण करना, फाड़ना, घायल करना।
बिदर-(हि०पु०) विदर्भ देश (आधुनिक नाम-बरार) जस्ते और तावे के मेल से बनी हुई एक उपधातु।
बिदरी-(हिं०स्त्री०) बिदुर धातु का बना हुआ सामान।
बिदरीसाज़-(हिं० पु०) बिदर धातु के बरतन आदि बनाने वाला।
बिदरन-(हिं०स्त्री०) दरार, फटन (वि०) फाड़ने या चीरने वाला।
बिदल-(स० नपु०) दाल, अनारदाना, बास का बना हुआ पात्र, लाल सोना, पीठी।
बिदला-(स० स्त्री०) निसोथ (वि०) जिसमे पत्ते न हो
बिदा-(अ० स्त्री०) प्रस्थान रवानगी, जाने की आज्ञा, द्विरागमन, गवन, गौना।
बिदाई-(हिं०स्त्री०) बिदा होने का भाव या क्रिया, बिदा होने की आज्ञा, किसी के बिदा होने के समय दिया जाने वाला धन।

बिदामी–(हिं०वि०) देखो बादामी।
बिदारना–(हिं० क्रि०) चीरना, फाड़ना, नष्ट करना, बिगाड़ना।
बिदारी कंद–(हिं०पु०) एक प्रकार का लाल कन्द जो प्रायः बेल की जड़ मे होता है।
बिदुराना–(हिं०क्रि०) धीरे धीरे हँसना, मुसकराना।
बिदुरानी–(हिं० स्त्री०) मुसकुराहट।
बिदूषना–(हिं० क्रि०) कलंक या दोष लगाना।
बिदेस–(हिं० पुं०) अपने देश के अतिरिक्त अन्यदेश, परदेश।
बिदोख–(हिं० पुं०) वैमनस्य, वैर, शत्रुता।
बिद्दत–(अ० स्त्री०) अत्याचार, दोष, बुराई, दुर्दशा, विपत्ति, कष्ट, तकलीफ, जुल्म।
बिधँसना–(हिं०क्रि०) नष्ट करना, बरबाद करना।
बिध–(हिं०पु०) हाथी का चारा, ब्रह्मा, प्रकार, तरह, जमाखर्च का हिसाब, आमदनी और खर्च का लेखा, बिध-मिलाना–आय व्यय की रकमों को देखना कि ठीक लिखी गई हैं या नहीं।
बिधना–(हिं०पु०) विधि, विधाता, ब्रह्मा।
बिधवट्टी–(हिं०स्त्री०) भूमि कर की वह रीति जिसमे फस्ल के कूत पर रकम दी जाती है।
बिधवपन–(हिं०पु०) वैधव्य, रँड़ापा।
बिधवा–(हिं० स्त्री०) देखो विधवा।
बिधवाना–(हिं०क्रि०) देखो बिंधवाना।
बिधाँसना–(हिं० क्रि०) विध्वस करना, नष्ट करना।
बिधाई–(हिं० पु०) विधायक, विधान करने वाला।
बिधाना–(हिं०क्रि०) देखो बिंधाना।
बिधानी–(हिं०पु०) रचने या बनाने वाला
बिधिना–(हिं० स्त्री०) देखो बिधना।
बिन–(हिं० अव्य०) बिना।
बिनई–(हिं० वि०) देखो विनयी।
बिनऊ–(हिं०स्त्री०) देखो विनय।
बिनता–(हिं०पु०) एक प्रकार की चिड़िया
बिनति, बिनती–(हिं०स्त्री०) निवेदन, प्रार्थना।
बिनन–(हिं० स्त्री०) बिनने या चुनने की क्रिया या भाव, बुनने की क्रिया, बुनावट, किसी चीज में से चुनकर निकाला हुआ कूड़ा करकट, चुनन।
बिनना–(हिं०क्रि०) छोटी छोटी चीजो को एक एक करके अलग करना, चुनना, इच्छानुसार सग्रह करना, छाट कर अलगाना, देखो बुनना।
बिनवना–(हिं० क्रि०) प्रार्थना करना, विनय करना।
बिनसना–(हिं०क्रि०) नष्ट होना या करना, बरबाद करना।
बिनसाना–(हिं०क्रि०)नष्ट करना, बिगाड़ना, भ्रष्ट होना।
बिना–(हिं० अव्य०) छोड़ कर बगैर।
बिनाई–(हिं०स्त्री०) बीनने चुनने की क्रिया या भाव, इस कार्य की मजदूरी।
बिनाती–(हिं०स्त्री०) देखो बिनती।
बिनाना–(हिं०क्रि०) देखो बुनना।
बिनानी–(हिं०वि०) अज्ञानी, अनजान, (स्त्री०) विशेष विचार, गौर।
बिनावट–(हिं०स्त्री०) देखो बुनावट।
बिनासना–(हिं०क्रि०) सहार करना, नष्ट करना, बरबाद करना।
बिनि, बिनु–(हिं० अव्य०) बिना।
बिनै–(हिं०स्त्री०) देखो विनय।
बिनौका–(हिं० पु०) पहले धान का पकवान जो देवता के निमित्त अलग कर दिया जाता है।
बिनौरिया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास जो चारे के काम में आती है।
बिनौला–(हिं० पु०) कपास का बीज।
बिन्दु–(हिं० पु०) देखो बिन्दु, बूँद।
बिन्दुक–(स० पु०) गोल टीका।
बिन्दुचित्रक–(स०पुं०) एक प्रकार का गुलदार हिरन।
बिन्दुतन्त्र–(स०पु०) चौपड़ आदि की बिसात।
बिन्दुपत्र–(सं०पु०) भूर्जपत्र, भोजपत्र।
बिन्दुमाधव–(स०पु०) विष्णु का एक नाम।
बिन्दुरेखा–(स० स्त्री०) बिन्दुओं से बनी हुई रेखा।
बिन्दुवासर–(स०पु०) वह दिन जब गर्भ का प्रथम सचार होता है।
बिन्दुसार–(स० पु०) चन्द्रगुप्त के एक पुत्र का नाम।
बिपच्छ–(हिं०पुं०) देखो विपक्ष, शत्रु, (वि०) विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध।
बिपच्छी–(हिं०पु०) शत्रु, विरोधी, दुश्मन।
बिपत–(हिं०स्त्री०) देखो विपत्ति।
बिपत्ति–(हिं०स्त्री०) देखो विपत्ति।
बिपर–(हिं०पु०) देखो विप्र, ब्राह्मण।
बिफरन–(हिं०वि०) देखो विफल।
बिफरना–(हिं०क्रि०) विद्रोही या बागी होना।
बिबछना–(हिं० क्रि०) विरोधी होना, उलझना।
बिबरन–(हिं०वि०) बदरंग, जिसका रंग खराब हो गया हो, देखो विवरण।
बिबस–(हिं० क्रि०) विवश, मजबूर, पराधीन,पर तन्त्र,(क्रि०वि०) लाचारी से।
बिबहार–(हिं०पु०) देखो व्यवहार।
बिबाई–(हिं०स्त्री०) पैर के तलवे के फटने का रोग।
बिबाक–(हिं०वि०) देखो बेबाक।
बिबि–(हिं०वि०) दो।
बिभित्सा–(हिं० स्त्री०) भेद करने की इच्छा।
बिमन–(हिं०वि०) अति दुःखी, चिन्तित, उदास (क्रि०वि०) बिना चित्त लगाये, अनमना हो कर।
बिमानी–(हिं०वि०) मान रहित।
बिमोहना–(हिं० क्रि०) मोहित करना, लुभाना।
बिमौरा–(हिं०पु०) वल्मीक, बाँबी।
बिम्ब–(सं० नपुं०) प्रतिबिम्ब, छाया, अक्स, मूर्ति, कमण्डलु, (नपु०) सूर्य या चन्द्रमा का मण्डल, सूर्य, आभास, झलक, गिरगिट, एक छन्द का नाम।

बिम्बक-(स०नपु०) कुदरू का फल।
बिम्बित-(स० वि०) प्रतिबिम्ब युक्त।
बिम्बु-(स० स्त्री०) पूगीफल, सुपारी।
बिय-(हि०वि०) युग्म, दो, दूसरा।
बियत-(हि०पु०) वियत्, आकाश।
बियर-(अ० स्त्री०) एक प्रकार की अंगरेजी शराब।
बियरसा-(हिं०पु०) एक प्रकार का बहुत ऊँचा पहाड़ी वृक्ष।
बिया-(हि०पु०) बीज, (वि०) अन्य, दूसरा।
बियाड़-(हि०पु०) वह खेत जिसमें पहले बीज बोये जाते हैं बाद मे उखाड़ कर दूसरे खेत मे रोपे जाते हैं।
बियाधा-(हि०पु०) देखो व्याधा।
बियाधि-(हि०स्त्री०) देखो व्याधि।
बियान-(हिं० पु०) प्रसव, पशुओं का बच्चा देना।
बियाना-(हि०क्रि०,पशुओं का बच्चा देना
बियापना-(हिं० क्रि०) देखो व्यापना।
बियाबान-(फा० पु०) उजाड़ स्थान या जङ्गल।
बियारी,बियालू-(हि०स्त्री०) देखो व्यालू
बियाह-(हिं० पु०) विवाह, व्याह।
बियाहता-(हिं०स्त्री०)जिसके साथ विवाह हुआ हो।
बियो-(हिं० पु०) पौत्र, पोता।
बिरङ्ग-(हि० वि०) कई रङ्गों का, जिसमें एक से अधिक रङ्ग हो, बिना रङ्ग का।
बिरञ्ज-(फा० पु०) पका हुआ चावल, भात।
बिरञ्जी-(फा० स्त्री०) लोहे की छोटी कील, छोटा काटा।
बिरगिड-(अ०स्त्री०)सेना का एक विभाग जिसमें कई रेजिमेन्ट होते हैं।
बिरछ-(हि० पु०) देखो वृक्ष।
बिरछिक-(हिं० पु०) देखो वृश्चिक।
बिरझना-(हिं० क्रि०) झगड़ा करना।
बिरतंत-(हि० पु०) देखो वृत्तान्त।
बिरताना-(हिं० क्रि०) बाटना।
बिरथा-(हि०वि०) वृथा, व्यर्थ, निरर्थक।
बिरद-(हि० पु०) बड़ाई, यश, देखो विरद।
बिरदत-(हि० पु०) बड़ा, प्रसिद्ध, वीर या योद्धा, (वि०) प्रसिद्ध, नामी।
बिरध-(हि० वि०) देखो वृद्ध।
बिरधाई-(हि० स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढापा
बिरधापन-(हि०पु०)वृद्ध होने का भाव, बुढापा, वृद्धावस्था।
बिरमना-(हि० क्रि०) विराम करना, सुस्ताना, ठहरना, मोहित होना।
बिरमाना-(हि० क्रि०) व्यतीत करना, बिताना, ठहराना रोक रखना, मुग्ध करना, मोहित करना।
बिरला-हिं०वि०) कोई कोई,इक्का दुक्का
बिरवा-(हि०पु०) वृक्ष, पौधा, चना।
बिरवाही-(हि० स्त्री०) छोटे छोटे पौधों का कुञ्ज।
बिरषभ-(हि०पु०) देखो वृषभ।
बिरसन-(हिं०पु०) विष, जहर।
बिरहिनी-(हिं० स्त्री०) वह नायिका जो अपने प्रियतम के विरह से दुःखित हो।
बिरही-(हि० पु०) वियोग से पीड़ित पुरुष।
बिराजना-(हि० क्रि०) शोभित होना, शोभा देना, बैठना।
बिरादर-(फा०पु०) भ्राता, भाई।
बिरादरी-(फा०स्त्री) बन्धुत्व, भाईचारा, जातीय समाज।
बिरान, बिराना-(हि०वि०) देखो बेगाना
बिराना-(हि०क्रि०) मुह चिढाना।
बिरिख-(हि०पुं०) देखो वृष, वृक्ष।
बिरिछ-(हि०पु०) देखो वृक्ष।
बिरियां-(हिं० स्त्री०) समय, वख्त, बार, दफा।
बिरिया-(हिं० स्त्री०) कान में पहरने का कटोरी के आकार का एक गहना।
बिरी-(हि०स्त्री०) देखो बीड़ी, बीड़ा।
बिरुआ-(हि पु०) एकप्रकार का राजहंस
बिरुझना-(हि०क्रि०)उलझना, झगड़ना।
बिरोजा-(हि०पु०) देखो गधा बिरोजा।
बिरोधना-(हि० पु०) विरोध करना, वैर करना।
बिलंगी-(हि०स्त्री०) अलगनी, अरगनी।
बिलंद-(हिं०वि०) बुलंद, ऊंचा, बड़ा, बेकार, जो विफल हो गया हो।
बिलम्बना-(हिं०वि०) विलम्ब करना, देर करना, रुकना ठहरना।
बिल-(स० नपु०) छेद, सूराख, गुहा, कन्दरा, (पु०) घोडा, बेंत (हि०पु०) जगली जानवरों के रहने का स्थान जिसको वे जमीन को खोद कर बनाते हैं(अ०पु०) पावने के हिसाब का पुरजा, कानून का मसविदा जो कानून बनाने वाली सभा के सामने उपस्थित किया जाता है।
बिलकुल-(अ०क्रि०वि०) आदि से अन्त तक, पूरा पूरा, सब, सिर से पैर तक, निरा, निपट।
बिलखना-(हि० क्रि०) विलाप करना, रोना, दुःखी होना, सिकुड़ना।
बिलखाना-(हि०क्रि०)रुलाना,दुःखी करना
बिलग-(हिं०वि०) पृथक्, अलग, जुदा, (पु०) अलग होने का भाव, द्वेष आदि, बुरा भाव।
बिलगाना-(हिं०क्रि०) पृथक् होना, अलग करना, अलगाना, चुनना, छाँटना।
बिलगी-(हि० पु०) एक प्रकार का संकर राग।
बिलच्छन-(हिं०वि०) देखो विलक्षण।
बिलच्छना-(हि० क्रि०) लक्ष करना, ताड़ लेना।
बिलटी-(अ० स्त्री० 'बे बिल्' का अपभ्रंश) रेल के द्वारा भेजे जाने माल की वह रसीद जो रेलवे कम्पनी से मिलती है।
बिलनी-(हि० स्त्री०) काली भौंरी जो दीवारों या किवाड़ों पर अपने रहने के लिये मिट्टी की बाँबी बनाती है आख की पलक पर होने वाली फुंसी।
बिलपना-(हिं०क्रि०) विलाप करना,रोना
बिलफेल-(अ०क्रि०वि०) सम्प्रति, अभी।
बिलबिलाना-(हि० क्रि०) छोटे छोटे कीडों का इधर उधर रेंगना, असबद्ध प्रलाप करना, व्याकुल होकर बकना, भूख से बेचैन होना, कष्ट के कारण व्याकुल होकर रोना और चिल्लाना।
बिलम-(हि० पु०) देखो विलम्ब, देर।

बिलमना-(हिं० क्रि०) विलम्ब करना, देर करना, ठहरना, रुकना।
बिलमाना-(हिं० क्रि०) अटका रखना, रोक रखना।
बिललाना-(हिं० क्रि०) विलाप करना, विलख कर रोना, व्याकुल होकर बड़बड़ाना।
बिलवाना-(हिं० क्रि०) नष्ट करना, बरबाद करना, दूसरे से किसी वस्तु को नष्ट कराना, छिपाना, दूसरे से छिपाने का काम कराना।
बिलवास-(सं० पु०) बिल में रहने वाला जन्तु।
बिलवासी-(सं० वि०) बिल में रहने वाला
बिलशय-(सं० पु०) सर्प, साप।
बिलसना-(हिं० क्रि०) भोग करना, अच्छा जान पड़ना, शोभा देना।
बिलसाना-(हिं० क्रि०) भोग करना, काम में लाना, दूसरे से भोग कराना।
बिलस्त-(हिं० पुं०) देखो बालिश्त।
बिलहरा-(हिं० पु०) बास की तीलियों का बना हुआ एक प्रकार का चिपटा डब्बा।
बिला-(अ० अव्य०) बिना, बगैर।
बिलाई-(हिं० स्त्री०) बिल्ली, लोहे या लकड़ी की सिटकनी जो किवाड़ों को बन्द करने के लिये लगाई जाती है, अकुसी या काँटा जिससे कुवें में गिरे हुए गगरे लोटे आदि निकाले जाते हैं।
बिलाईकन्द-(हिं० पु०) देखो विदारीकद
बिलाना-(हिं० क्रि०) नष्ट होना, विलीन होना, अदृश्य होना, छिप जाना।
बिलार-(हिं० पु०) मार्जार, बिल्ली।
बिलारी-(हिं० स्त्री०) मार्जारी, बिल्ली।
बिलारीकन्द-(हिं० पु०) देखो विदारीकद।
बिलाव-(हिं० पु०) देखो बिलार।
बिलावर-(हिं० पु०) देखो बिल्लौर।
बिलावल-(सं० पु०) एक राग का नाम।
बिलासना-(हिं० क्रि०) भोगना, भोग करना।
बिलिंबी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार के कमरख का फल।
बिलियर्ड-(अं० पु०) बड़ी मेज़ पर खेलने का अटेका एक अंग्रेजी खेल।
बिलिया-(हिं० स्त्री०) कटोरी, गाय बैल के गले का एक रोग।
बिलूर-(हिं० पु०) देखो बिल्लौर।
बिलेशय-(सं० पुं०) सर्प, चूहा, नेवला, खरहा।
बिलैया-(हिं० स्त्री०) बिल्ली, कद्दू मूली आदि के लच्छे काटने का एक औजार, सिटकिनी, कद्दूकस।
बिलोकना-(हिं० क्रि०) परीक्षा करना, देखना।
बिलोकनि-(हिं० स्त्री०) देखने की क्रिया, दृष्टिपात, कटाक्ष।
बिलोड़ना-(हिं० क्रि०) व्यग्र होना, घबड़ाना, दही दूध मथना।
बिलोन-(हिं० वि०) बिना नमक का, कुरूप, भद्दा।
बिलोना-(हिं० क्रि०) मथना, खूब हिलाना, ढालना, गिराना।
बिलोरना-(हिं० क्रि०) देखो बिलोड़ना।
बिलोलना-(हिं० क्रि०) हिलना, डोलना।
बिलोवना-(हिं० क्रि०) देखो बिलोना।
बिलौर-(हिं० पु०) देखो बिल्लौर।
बिल्कुल-(हिं० क्रि० वि०) देखो बिलकुल।
बिल्म-(सं० नपु०) चमक, टोपी, पगड़ी।
बिल्मुक्ता-(अ० वि०, जो घट बढ न सके, (पु०) वह पट्टा जिसके अनुसार लगान घटाया बढाया न जा सके।
बिल्ल-(सं० नपु०) आलवाल, थाला।
बिल्लमूला-(सं० स्त्री०) वाराहीकन्द।
बिल्ला-(हिं० पुं०) मार्जार नर बिल्ली, चपरास की तरह की पतली पट्टी जो बाह पर या गले में पहरी जाती है।
बिल्ली-(हिं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध मासाहारी पशु, किवाड़ आदि में लगाने की सिटकिनी, बिलैया।
बिल्ली लोटन-एक प्रकार की बूटी।
बिल्लूर-(हिं० पु०) देखो बिल्लौर।
बिल्लौर-(हिं० पु०) एक प्रकार का स्वच्छ पारदर्शक पत्थर, स्फटिक, स्वच्छ शीशा।
बिल्लौरी-(हिं० वि०) बिल्लौर का बना हुआ, बिल्लौर पत्थर का, बिल्लौर के समान स्वच्छ।
बिल्व-(सं० पु०) बेल का वृक्ष।
बिल्वपत्र-(सं० नपु०) बेल की पत्ती।
बिल्ववन-(सं० नपुं०) बेल का जगल।
बिवरना-(हिं० क्रि०) देखो ब्योरना।
बिवराना-(हिं० क्रि०) सिर के बालों को सुलझवाना, या सुझलाना।
बिशप्-(अं० पु०) ईसाई मत का बड़ा पादड़ी।
बिषान-(हिं० पु०) देखो विषाण।
बिसच-(हिं० पु०) सचय न होना, कार्य की हानि, बाधा, लापरवाही, भय, डर।
बिसंभर-(हिं० पु०) देखो विश्वम्भर।
बिसंभार-(हिं० वि०) बेखबर, असावधान, गाफिल।
बिस-(हिं० पु०) देखो विष।
बिसखपरा-(हिं० पु०) गोह की जाति का एक विषैला जन्तु, पुनर्नवा, एक प्रकार की जगली बूटी।
बिसखापर-(हिं० पु०) देखो बिसखपरा।
बिसज-(सं० नपु०) पद्म, कमल।
बिसटी-(हिं० स्त्री०) बेगार।
बिसतरना-(हिं० क्रि०) विस्तार करना, बढाना, फैलाना।
बिसद-(हिं० वि०) देखो विशद।
बिसन-(हिं० पुं०) देखो व्यसन।
बिसनी-(हिं० वि०) जिसको किसी बात का व्यसन हो, जिसको सामान्य चीज़ें अच्छी न लगें, शौकीन, छैला, चिकनिया।
बिसमऊ-(हिं० पु०) देखो विस्मय।
बिसमरना-(हिं० क्रि०) विस्मरण होना, भूल जाना।
बिसमय-(हिं० पु०) देखो विस्मय।
बिसमिल-(फा० वि०) आहत, घायल।
बिसमिल्लाह-(अ० पु०) श्रीगणेश, आरम्भ।
बिसयक-(हिं० पु०) देश, रियासत।
बिसरना-(हिं० क्रि०) विस्मृत होना, भूल जाना।
बिसरात-(हिं० पु०) खच्चर।

बिसराना-(हिं०क्रि०) ध्यानमें न रखना।
बिसराम-(हिं० पुं०) देखो विश्राम।
बिसरावना-(हि०क्रि०) देखो बिसराना।
बिसल-(सं० नपुं०) पल्लव, कोंपल।
बिसवार-(हिं० पुं०) हज्जाम की छूरा चमोटा आदि रखने की पेटी, किसबत।
बिसवास-(हिं० पुं०) देखो विश्वास।
बिसवासिनी-(हि०वि०) विश्वास करने वाली, जिसपर विश्वास हो।
बिसवासी-(हिं०वि०) जो विश्वास करे, जिस पर विश्वास हो, जिस पर विश्वास किया जा सके।
बिससना-(हिं०क्रि०) वध करना, शरीर काटना, चीरना फाड़ना, विश्वास करना, एतबार करना।
बिसहना-(हिं०क्रि०)मोल लेना,खरीदना
बिसहर-(हिं० पुं०) सर्प, साप।
बिसहरु-(हिं० पुं०) मोल लेने वाला, खरीददार।
बिसहिनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।
बिसायँध-(हिं० वि०) सड़ी मछली की गन्ध वाला, (स्त्री०) सड़ी मछली के समान गन्ध।
बिसाख-(हिं०स्त्री०) देखो विशाखा।
बिसात-(अ० स्त्री०) जमा, पूंजी, धन-सम्पत्ति का विस्तार, सामर्थ्य, हैसियत, हकीकत, शतरंज या चौपड़ का वह कपड़ा जिसपर खाने बने होते हैं।
बिसाती-(अ०पुं०) विस्तर बिछाकर उस पर सौदा रख कर बेंचने वाला, छोटी चीजों का दुकानदार।
बिसाना-(हिं०क्रि०) वस चलना, काबू में होना, ज़हर का प्रभाव करना।
बिसारद-(हिं०पुं०) देखो विशारद।
बिसारना-(हिं०क्रि०) ध्यान में न रखना, भुलाना।
बिसारा-(हि०वि०)विषाक्त, विष भरा हुआ
बिसास-(हिं०पुं०) विश्वास।
बिसासिनी, बिसासिनी-(हिं०स्त्री०)जिस पर विश्वास न किया जा सके, विश्वास घातिनी।
बिसासी-(हिं०वि०) छली, कपटी, जिस पर विश्वास न किया जा सके।
बिसाह-(हि०पुं०) क्रय, खरीद।
बिसाहना-(हिं० क्रि०) खरीदना, मोल लेना, अपने साथ करना, (पुं०) मोल लेने की वस्तु,मोल लेने की क्रिया,खरीद
बिसाहनी-(हिं०स्त्री०) जो वस्तु मोल ली जाय, सौदा।
बिसाहा-(हिं०पुं०)खरीदी हुई वस्तु,सौदा
बिसिख-(हिं०पुं०) देखो विशिख।
बिसियर-(हिं०वि०) विषैला, जहरीला।
बिसुनना-(हिं०क्रि०) खाती समय किसी वस्तु का नाक की ओर चढ जाना।
बिसुवा-(हिं०पुं०) देखो बिस्वा।
बिसूरना-(हिं०क्रि०) चिन्ता करना, सोच करना, (स्त्री०) चिन्ता, फिक्र।
बिसेन-(हिं०पुं०)क्षत्रियों की एक शाखा।
बिसेस-(हिं०वि०) देखो विशेष।
बिसेषना-(हिं० क्रि०) ब्योरेवार वर्णन करना, निश्चित करना, विशेष रूप से होना।
बिसेसर-(हिं०पुं०) देखो विश्वेश्वर।
बिस्कुट-(अ० पुं०) खमीरी आटे की तन्दूर पर पकी हुई एक प्रकार की टिकिया।
बिस्तर-(हिं०पुं०) बिछौना, बिछावन, विस्तार, बढ़ाव।
बिस्तरना-(हिं०क्रि०) विस्तार पूर्वक वर्णन करना या कहना, अधिक करना,फैलाना बात को बढ़ाकर कहना।
बिस्तारना-(हिं० क्रि०) विस्तार करना, फैलाना।
बिस्तुइया-(हिं०स्त्री०) गृहगोधा, छिपकली
बिस्वा-(हिं०पुं०)एक बीघे,का बीसवाभाग बीसो बिस्वा-आवश्यक, निःसदेह।
बिस्वादार-(हिं०पुं०)पट्टीदार हिस्सेदार।
बिस्वास-(हिं०पुं०) देखो विश्वास।
बिहग-(हिं०पुं०) देखो विहङ्ग, पक्षी।
बिहंडना-(हिं०क्रि०) टुकडे टुकडे करना, तोड़ना, नष्ट करना,काटना, मार डालना।
बिहँसना-(हिं० क्रि०) मुस्कराना, मन्द हास करना, प्रफुल्लित होना, फूल का खिलना।
बिहँसाना-(हिं० क्रि०) प्रफुल्लित होना, खिलना।
बिहग-(हिं०पुं०) देखो विहङ्ग, पक्षी।
बिहतर-(हिं०वि०) देखो बेहतर।
बिहतरी-(फा०स्त्री०) कुशल, भलाई।
बिहद-(फा० वि०) असीम, परिमाण से अधिक।
बिहवल-(हिं०वि०) विह्वल, व्याकुल।
बिहरना-(हिं०क्रि०) भ्रमण करना, घूमना फिरना, सैर करना, विदीर्ण होना, फूटना, फटना, टूट कर अलग होना।
बिहराना-(हिं०क्रि०) फटना।
बिहरी-(हिं०स्त्री०) चन्दा।
बिहाग-(हि० पुं०) एक राग का नाम।
बिहागड़ा-(हिं०पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
बिहान-(हिं०पुं०) प्रातः काल, सवेरा, (क्रि०वि०) कल्ह, कल।
बिहाना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना, गुज़रना, बीतना।
बिहारना-(हिं०क्रि०) विहार करना, केलि क्रीड़ा करना।
बिहाल-(फा०वि०) व्याकुल, बेचैन।
बिहिश्त-(फा०स्त्री०) बैकुण्ठ, स्वर्ग।
बिही-(फा०स्त्री०) पंजाब तथा काबुल में होने वाला एक वृक्ष जिसके फल अमरूद के समान होते हैं।
बिहीदाना-(फा०पुं०) बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम में आता है।
बिहीन-(हिं०वि०) विहीन, रहित, बिना।
बिहून-(हिं०वि०) रहित, बिना।
बिहोरना-(हि०क्रि०) देखो बिछुड़ना।
बींड़ा-(हिं०पुं०) कच्चे कुवें की दीवार न गिरने के लिये लगाया हुआ टहनियों आदि से बना हुआ मेड़रा, घास आदि की बनी हुई गेडुरी, एक प्रकार का गोल आसन, पिंड, पिंडी, लकड़ी या वास का बँधा हुआ गट्ठर।
बींड़िया-(हि०पुं०) तीन बैल की गाड़ी में सबसे आगे जोता हुआ बैल।
बींड़ी-(हि०स्त्री०) सूत की वह पिंडी जो

किसी चीज़ पर लपेट कर बनाई जाती है।
बींधना-(हिं०क्रि०) बेंधना, छेदना।
बी-(फ़ा०स्त्री०) बीबी।
बीका-(हिं०वि०) वक्र, टेढा।
बीख-(हिं०पु०) पद, कदम, डग।
बीग-(हि०पु०) भेड़िया।
बीगना-(हिं०क्रि०) फेंकना, छितराना, छींटना, गिराना।
बीगहाटी-(हि० स्त्री०) बीघे के हिसाब से लगाई जाने वाली लगान।
बीघा-(हिं० पु०) खेत नापने का वह वर्ग मान जो बीस बिस्वे का होता है।
बीच-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का मध्य भाग, अवकाश, अन्तर, अवसर, मौका भेद, फरक, (स्त्री०) तरङ्ग, लहर, बीच खेत-खुले मैदान में, सब के सामने, बीच बीच में-थोड़ी थोड़ी देर बाद, बीच करना-झगडा तय करना, बीच पड़ना-झगडा निबटाने के लिये मध्यस्त बनना, बीच डालना-उलट फेर करना, बीच में पड़ना-बिचवई या मध्यस्थ होना, जिम्मेदार होना, जमानत पड़ना, बीच में कूदना-बिला ज़रूरत दस्तनदाजी करना, बीच रखना-पराया समझना, बीच में रख कर कहना-कसम खाना।
बीचु-(हिं०पु०) अन्तर, फर्क, अवसर, मौका
बीचोबीच-(हि० क्रि० वि०) बिलकुल मध्य या बीच में।
बीछना-(हिं० क्रि०) चुनना, छाटना।
बीछी, बीछू-(हिं० पु०) देखो बिच्छू बिछुआ।
बीज-(स० नपु०) प्रधान करण, शुक्र, अंकुर, वृक्ष आदि के अंकुर का आधार, बीजगणित, मूल, प्रकृति, मूल, जड़, देवताओं के मूल मन्त्र।
बीजक-(स०पु०) सूची, फेहरिस्त, वह सूची जिसने माल का ब्योरा, मूल्य आदि लिखा हो, बीज, गडे हुए धन की सूची जो उसके साथ रहती है असना का वृक्ष, बिजौरी नीबू, कबीरदास के पदो के तीन सग्रहों में से एक।
बीजकर्ता-(स० पु०) शिव, महादेव।
बीजक्रिया-(स० स्त्री०) बीजगणित के नियमानुसार गणित के किसी प्रश्न की क्रिया।
बीजगणित-(स०नपु०) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरो को सख्याओ का द्योतक मानकर अज्ञात सख्याए आदि जानी जाती हैं।
बीजगुप्ति-(सं०स्त्री०) सेम, धान की भूसी।
बीजत्व-(स० नपु०) बीज का भाव या धर्म, बीजपन।
बीजदर्शक-(स० पु०) वह व्यक्ति जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो।
बीजधान्या-(स०नपुं०) धान्यक, धनिया।
बीजन-(हि०पुं०) व्यजन, बेना, पखा।
बीजपुर, बीजपूर्ण-(स०पु०) बिजौरा नीबू।
बीजपेशिका-(स० स्त्री०) अण्डकोष।
बीजबन्द-(हिं०पु०) बरियारी के बीज।
बीजमन्त्र-(स०नपु०) भिन्न भिन्न देवता के उद्देश्य से निर्दिष्ट मूल मन्त्र।
बीजमातृका-(स०स्त्री०) कमलगट्टा।
बीजरत्न-(स०पु०) उड़द की दाल।
बीजरेचन-(स० नपु०) जमालगोटा।
बीजरी-(हिं०स्त्री०) देखो बिजली।
बीजल-(स०वि०) बीजयुक्त, जिसमें बीज हो, (हिं० स्त्री०) तलवार।
बीजवर-(सं०पु०) एक प्रकार का उड़द।
बीजवाहन-(स०पु०) शिव, महादेव।
बीजवृक्ष-(स०पु०) असना का पेड़।
बीजा-(हि० वि०) दूसरा।
बीजाक्षर-(सं०नपु०) किसी बीज मन्त्र का पहला अक्षर।
बीजाङ्कुर-(स० पु०) प्रथम अकुर, अखुआ।
बीजाध्यक्ष-(स०पु०) शिव, महादेव।
बीजित-(स० वि०) बोया हुआ।
बीजी-(हिं० स्त्री०) गरी, मींगी, गुठली।
बीजु-(हि०स्त्री०) बिजुली, विद्युत।
बीजुपात-(हिं० पु०) देखो वज्रपात।
बीजुरी-(हिं०स्त्री०) देखो बीजली।
बीजू-(हिं०वि०) जो बीज से उत्पन्न हो, कलम से उतार कर न बढाया गया हो।
बीझना-(हिं०क्रि०) लिप्त होना, फँसना।
बीझा-(हि०वि०) निर्जन एकान्त।
बीट-(हि० स्त्री०) पक्षियों की-विष्ठा, मल, गू।
बीठक-(हि०पु०) देखो विट्ठल।
बीड़-(हि० स्त्री०) एक के ऊपर एक रक्खे हुए रुपयों की तही या गड्डी।
बीड़ा-(हिं० पु०) पान की गिलौरी, खीली, बीड़ा उठाना-किसी काम करने के लिये उद्यत होना।
बीड़िया-(हि० वि०) बीड़ा उठाने वाला, अगुआ।
बीड़ी-(हिं०स्त्री०) बीड़ा, गड्डी, बीड, मिस्सी जिसको स्त्रिया दातों में मलती हैं, शहतूत के सूखे पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूरा जिसको जलाकर सिगरेट की तरह लोग पीते हैं, एक प्रकार की नस्व।
बीतना-(हि० क्रि०) समय का व्यतीत होना, वक्त कटना या गुजरना, सघटित होना, घटना, दूर होना, छूट जाना।
बीता-(हिं० पु०) देखो बित्ता।
बीथित-(हि०वि०) व्यथित, दुःखित।
बीधना-(हि०क्रि०)फसना, देखो बींधना।
बीन-(हि०स्त्री०) वीणा, सितार की तरह का एक बाजा जिसके दोनों ओर बडे बडे तुबे लगे रहते हैं।
बीनना-(हि० क्रि०) छोटी छोटी चीजों को उठाना, चुनना, छाँट कर अलगाना।
बीफै-(हि०पु०) वृहस्पतिवार, गुरुवार।
बीबी-(फा० स्त्री०) कुलीन स्त्री, कन्या, बिना ब्याही हुई लड़की, पत्नी, स्त्री, स्त्रियो के लिये आदर सूचक शब्द।
बीभत्स-(स० पु०) काव्य के नव रसो में से एक रस जिसमें ऐसी बातों का वर्णन होता है जिससे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है (वि०) घृणित, जिसको देखकर घृणा उत्पन्न हो,

क्रूर, पापी।
बीभत्सिक-(स०वि०) घृणित, निन्दित।
बीभत्सु-(स० पु०) अर्जुन का एक नाम।
बीम-(अ० पु०) जहाज की लबे बल की शहतीर, जहाज का मस्तूल।
बीमा-(फा० पु०) आर्थिक हानि पूरा करने की जिम्मेदारी जो निश्चित धन लेकर उसके बदले में दी जाती है, वह पत्र या पर्सल आदि जिसकी ज़िम्मेदारी डाक विभाग लेता है।
बीमार-(फा०पु०) रोगग्रस्त, रुग्ण, रोगी, बीमारदार-रोगियो की सेवा करने वाला, बीमारदारी-रोगियों की शुश्रूषा।
बीमारी-(फा० स्त्री०) व्याधि, रोग, बुरा अभ्यास, झझट।
बीय (हिं०वि०) देखो बीजा, दूसरा।
बीया-(हिं० वि०) द्वितीय, दूसरा (पु०) बीज, दाना।
बीर-(हिं०वि०) देखो वीर, (पु०) भ्राता, भाई, (स्त्री०) सखी, सहेली, कान में पहरने का एक आभूषण, कलाई में पहरने का एक आभूषण, पशुओं के चरने का स्थान, चरागाह।
बीरउ-(हिं०पु०) देखो बिरवा।
बीरज-(हिं० पु०) देखो वीर्य।
बीरन-(हिं० पु०) भ्राता, भाई।
बीरनि-(हिं० स्त्री०) कान मे पहरने का एक गहना।
बीरबहूटी-(हिं० स्त्री०) गहरे लाल रग का एक छोटा कीड़ा जो बरसात के आरभ मे इधर उधर रेंगता देख पड़ता है, इन्द्रगोप।
बीरा-(हिं० पु०) देखो बीड़ा, देवता का प्रसाद जो भक्तो को बाटा जाता है।
बीरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कान में पहरने का आभूषण, तरना, वह लोहे का छेददार टुकड़ा जिसपर रखकर लोहार किसी लोहे आदि मे छेद करते हैं।
बीरो-(हिं०पु०) वृक्ष, पेड़।
बील-(हिं०वि०) पोला, भीतर से खाली, वह नीची ज़मीन जिसमें पानी भरा रहता है, बेल।
बीस-(हिं० वि०) दस की दूनी सख्या का (पु०) दस की दूनी सख्या २०। बीस बिस्वे-सभावतः (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
बीसना-(हिं० क्रि०) खेलने के लिये बिसात फैलाना।
बीसवां-(हिं० वि०) बीस के स्थान पर पड़ने वाला।
बीसी-(हिं० स्त्री०) बीस वस्तुओं का समूह, कोड़ी, ज्योतिष के अनुसार साठ सवत्सरों के तीन विभागों में से एक विभाग, (पु०) तौलने का काटा, (स्त्री०) प्रति बीघे दो बिस्वे की उपज जो ज़मीदार को दी जाती है।
बीहड़-(हिं०वि०) विषम, ऊचा नीचा, जो समतल न हो, विकट, पृथक्, जुदा।
बुद-(हिं०स्त्री०) बूद, टोप, वीर्य (पु०) तीर, (वि०) थोड़ासा।
बुंदकी-(हिं०स्त्री०)गोल छोटी बिंदी, छोटा गोल दाग या धब्बा, बुंदकीदार-जिस पर बु दकियां बनी या पड़ी हो।
बुदवान-(हिं० पु०) छोटे छोटे बूदो की वर्षा।
बुंदा-(हिं०पु०) कान मे पहनने का एक गहना जो बुलाक के आकार का होता है, लोलक, माथे पर लगाने की बड़ी टिकली, बड़ी टिकली के आकार का गोदना।
बुदिया-(हिं०स्त्री०) देखो बूंदी।
बुदीदार-(हिं० वि०) जिसमें छोटी छोटी बिंदिया बनी या लगी हों।
बुदेलखंड-देखो बुन्देलखण्ड।
बुदेला-देखो बुन्देला।
बुदौरी-(हिं०स्त्री०) बूदी या या बु दिया नाम की मिठाई।
बुआ-(हिं०स्त्री०) देखो बूआ।
बुक-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कपड़ा (अं० स्त्री०) पुस्तक, किताब।
बुकचा-(हिं०पु०) वह गठरी जिसमें कपडे बंधे हो।
बुकची-(हिं०स्त्री०) छोटी गठरी, दर्जियो की वह थैली जिसमें वे सीने का सामान रखते हैं।
बुकनी-(हिं०स्त्री०) किसी चीज का महीन पिसा हुआ चूर्ण, वह महीन चूर्ण जिसकी पानी में घोलने से कोई रग बनता है।
बुकवा-(हिं०पु०) उबटन, बटना।
बुकस-(हिं०पु०) भगी, मेहतर।
बुका-(हिं०पु०) देखो बुक्का।
बुकुन-(हिं०पु०) बुकनी, पाचक, चूर्ण।
बुक्क-(स० पु०) छाग, बकरा, हृदय, कलेजा।
बुक्कन-(स०नपु०) कुत्ते का भूकना।
बुक्कस-(सं०पु०) चाण्डाल।
बुक्का-(हिं० पु०) कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण।
बुक्कार-(स०पु०) सिंह का गरजना।
बुख़ार-(अ० पु०) ज्वर, ताप, भाफ, क्रोध, शोक दुःख आदि का आवेग।
बुख़ारचा-(फा०पु०) कोठरी के भीतर की तख्तों से बनी हुई छोटी कोठरी, खिड़की, आगे का छोटा बरामदा।
बुग-(हिं०पु०) मच्छड़।
बुगचा-(हिं०पु०) देखो बुकचा।
बुगदर-(हिं० पु०) मच्छड़।
बुगदा-(फा०पु०,हत्या करने का कसाइयों का छुरा।
बुगिअल-(हिं०पु०) पशुओं के चरने का स्थान, चरागाह।
बिगुल-(हिं०पु०) देखो बिगुल।
बुज़कसाब-(फा० पु०) पशुओ की हत्या करने वाला तथा उनकी मास बेचने वाला।
बुज़दिल-(फा० वि०) डरपोक, कायर।
बुजनी-(हिं०स्त्री०) कान में पहरने का एक गहना।
बुज़ुर्ग-(फा०वि०) वह जो अवस्था में अधिक बड़ा हो, (पु०) पूर्वज, बाप दादा।
बुज़ुर्गी-(फा० स्त्री०) बुजुर्ग होने का भाव

बड़प्पन।
बुज्जर-(हिं०पु०)एक प्रकार की चिड़िया।
बुज्जी-(फा० वि०) बकरी।
बुज्झा-(हिं०स्त्री०,एक प्रकार की चिड़िया।
बुझना-(हिं० क्रि०)जलने का अन्त होना, चित्त का उत्साह मन्द पड़ना, गरम चीज का पानी पड़कर ठंढा होना,पानी का किसी तपी हुई चीज पर पड़ कर छौंका जाना।
बुझाई-(हिं०स्त्री०)बुझानेकी क्रिया या भाव
बुझाना-(हिं० क्रि०) जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना, तपे हुए पदार्थ को पानी में डालकर ठंढा करना, सन्तोष देना, जी भरना, किसीको बुझाने में लगाना, पानी को छौंकना, चित्त के आवेग को शान्त करना, अधिक जलने से रोकना, समझाना, अग्नि शान्त करना।
बुझारत-(हिं०स्त्री०) गाँव के जमीदारों के वार्षिक आय व्यय का लेखा।
बुट-(हिं०स्त्री०) देखो बूटी।
बुटना-(हिं०क्रि०) भागना।
बुड़की-(हिं०स्त्री०) डुबकी, गोता।
बुड़ना-(हिं०क्रि०) देखो बूड़ना।
बुड़बुड़ाना-(हिं०क्रि०) कुढ़कर अस्पष्ट रूप से बड़बड़ करना।
बुड़ाना-(हिं०क्रि०) डुबाना, गोता देना।
बुड़ाव-(हिं०पु०) देखो डुबाव।
बुड्ढा-(हिं०वि०) पचास साठ वर्ष की अवस्था का, जिसका वय अधिक हो गया हो।
बुढना-(हिं०पु०) पत्थर फूल, छड़ीला
बुढवा-(हिं०वि०) देखो बुड्ढा।
बुढाई-(हिं० स्त्री०) वृद्धत्व, बुढापा।
बुढाना-(हिं०क्रि०) वृद्धावस्था को प्राप्त होना, बुड्ढा होना।
बुढापा-(हिं० पु०) बुड्ढे होने की अवस्था, वृद्धावस्था।
बुढौती-(हिं०स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढापा।
बुत-(फा०पु०)प्रतिमा, मूर्ति,प्रियतम, जिसके साथ प्रेम किया जाय, (वि०) चुपचाप मूर्ति की तरह बैठने वाला।
बुतना-(हिं०क्रि०) देखो बुझना।
बुतपरस्त-(फा०वि०) मूर्ति पूजक, मूर्तियों की पूजा करने वाला, रसिक, सौन्दर्य का उपासक।
बुतपरस्ती-(फा० स्त्री०) मूर्ति पूजा।
बुत शिकन-(फा०पु०) मूर्ति का तोड़ने या नष्ट करने वाला।
बुताना-(हिं०क्रि०) देखो बुझाना।
बुत्त-(हिं० वि०) देखो बुत।
बुत्ता-(हिं०पु०) हीला हवाला, बहाना, धोखा, पट्टी।
बुदबुद-(सं० पु०) बुलबुला, बुल्ला।
बुदबुदा-(हिं०पु०) बुलबुला, बुल्ला।
बुद्ध-(सं०पु०) भगवान के एक अवतार का नाम, (वि०) जागरित, जागा हुआ, ज्ञानवान्, ज्ञानी, विद्वान्, पण्डित पु०) बौद्ध धर्म के प्रवर्तक शाक्यमुनि जो राजा शुद्धोदन के पुत्र थे।
बुद्धत्व-(सं०नपु०) बुद्ध का भाव या धर्म
बुद्धि-(सं० स्त्री०) मन की वह शक्ति जिसके अनुसार मनुष्य किसी उपस्थित विषय के संबंध में ठीक ठीक विचार या निर्णय करता है, समझ अक्ल, एक प्रकार का छन्द जिसको लक्ष्मी भी कहते हैं, छप्पय का एक भेद, उपजाति वृत्त का एक भेद।
बुद्धिकामा-(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
बुद्धिचक्षु-(सं०पु०) धृतराष्ट्र।
बुद्धिजीवी-(सं० वि०) वह जो बुद्धि द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो।
बुद्धिपर-(सं० वि०) बुद्धि से अतीत, जहाँतक बुद्धि न पहुँच सके।
बुद्धि पूर्व-(सं०वि०) जो जान बूझकर किया गया हो।
बुद्धिमत्ता-(सं०स्त्री०) बुद्धिमान होने का भाव, समझदारी, अक्लमन्दी।
बुद्धिमान्-(सं० वि०) वह जो बहुत समझदार या अक्लमन्द हो।
बुद्धिमानी-(हिं०स्त्री०,देखो बुद्धिमत्ता।
बुद्धिवंत-(हिं० वि०) बुद्धिमान् अक्लमन्द।
बुद्धिशक्ति-(सं० स्त्री०) मेधा शक्ति।
बुद्धिशाली-(सं०वि०) बुद्धिमान्,समझदार
बुद्धिशील-(सं०वि०) बुद्धिमान्।
बुद्धिशुद्ध-(सं०वि०)अच्छी समझ वाला।
बुद्धिसहाय-(सं०पु०) मन्त्री, वजीर।
बुद्धिहत-(सं० वि०) बुद्धिहीन, जिसमें बुद्धि न हो।
बुद्धिहीन-(सं० वि०) निर्बुद्धि, मूर्ख, बेवकूफ।
बुद्बुद्-(सं०पु०) बुलबुला, बुल्ला।
बुध-(सं० पु०) विद्वान्, पण्डित, नवग्रह के अन्तर्गत चौथा ग्रह, जो सूर्य से अति समीप रहता है, सूर्यवंशीय एक राजा का नाम।
बुधजामी-(हिं०पु०) चन्द्रमा, बुध के पिता।
बुधतात-(सं०पु०) चन्द्रमा।
बुधरत्न-(सं०नपु०) मरकत मणि।
बुधवान-(हिं०वि०) बुद्धिमान, पण्डित।
बुधवार-(सं०पु०) बुधग्रह का दिन,सात वारों में से एक वार जो मंगलवार के बाद और गुरुवार के पहले होता है।
बुधा-(सं०स्त्री०) जटामासी।
बुधान-(सं०पु०) गुरु, प्रियवादी, कवि।
बुधि-(हिं०स्त्री०) देखो बुद्धि।
बुधित-(सं०वि०) ज्ञात, जाना हुआ।
बुधिल-(सं०वि०) विद्वान्, पण्डित।
बुनना-(हिं०क्रि०) ताने बाने की सहायता से कपड़ा तैयार करने की क्रिया, इस क्रिया के समान अन्य कोई वस्तु तैयार करना।
बुनाई-(हिं०स्त्री०) बुनने की क्रिया या भाव, बुनने की मजदूरी, बुनावट।
बुनावट-(हिं० स्त्री०) बुनने में सूतों के संयोग का ढंग।
बुनियाद-(फा०स्त्री०)जड़,मूल,असलियत, नींव।
बुन्देला-(हिं०पु०) बुन्देल खण्ड निवासी एक राजपूत जाति।
बुबुकना-(हिं०क्रि०) ज़ोर ज़ोर से रोना, पुक्का मारना।

बुबुकारी-(हि॰क्रि॰) उच्च स्वर से रोना।
बुबुधान-(स॰पुं॰) आचार्य, पण्डित।
बुभुक्षा-(स॰ स्त्री॰) क्षुधा, खाने की इच्छा।
बुभुक्षित-(स॰ वि॰) क्षुधित, भूखा।
बुभुक्षु-(स॰वि॰) जिसको भोजन करने की इच्छा हो।
बुभूषक-(स॰ वि॰) यश की इच्छा करने वाला।
बुभूषा-(स॰स्त्री॰) यश की इच्छा।
बुयाम-(अ॰पुं॰) चीनी मिट्टी का बना हुआ गोल ऊँचा बरतन जो तेज़ाब, अचार आदि रखने के काम में लाया जाता है, जार।
बुरकना-(हि॰ क्रि॰) महीन अथवा पिसी हुई चीज़ को दूसरी चीज पर हाथ से धीरे धीरे छिड़कना, भुरभुराना (पु॰) लड़कों की दावात जिसमें वे खड़िया मिट्टी घोल कर पटिये पर लिखने के लिये रखते हैं।
बुरक़ा-(अ॰पु॰) मुसलमानी स्त्रियों का सिर से पैर तक सर्वाङ्ग ढापने का पहरावा जिसमें आख के स्थान पर जाली लगी रहती है, वह झिल्ली जिसमें जन्म के समय बच्चा लिपटा रहता है, खेड़ी।
बुरकाना-(हि॰ क्रि॰) भुरभुराने या छिड़कने का काम दूसरे से कराना।
बुरदू-(अ॰ पु॰) जहाज़ का बगल का भाग, पार्श्व।
बुरा-(हि॰ वि॰) निकृष्ट, खराब, बुरा मानना-द्वेष रखना, भला बुरा-हानि लाभ, गाली गलौज।
बुराई-(हि॰ स्त्री॰) बुरा होने का भाव, बुरापन, नीचता, खोटापन, अवगुण, दोष, निन्दा, शिकायत, किसी के सबध में कही हुई बुरी बात।
बुरादा-(फा॰पु॰) वह चूर्ण जो लकड़ी को चीरने से निकलता है, चूरा, कुनाई।
बुरापन-(हि॰पु॰) देखो बुराई।
बुरुश, बुरुस-(अ॰ पु॰) अंग्रेज़ी, ब्रश का अपभ्रंश, अंग्रेज़ी ढग की कूची जो रगने साफ करने आदि के काम में आती है।
बुरुल-(हिं॰पु॰) एक प्रकार का बहुत बड़ा वृक्ष।
बुर्ज-(अ॰पु॰) किले आदि इमारतों में ऊपर की ओर बना हुआ गोल या पहलदार शिखर जिसमें बैठने के लिये थोड़ी सी जगह होती है, गुम्बद, गरगज, मीनार का ऊपरी भाग।
बुर्द-(फा॰स्त्री॰) अतिरिक्त लाभ, ऊपरी आमदनी, शर्त, बाजी, शतरज के खेल में वह अवस्था जब एक पक्ष में केवल बादशाह ही अकेला बच जाता है, यह आधी मात समझी जाती है।
बुर्श-(हि॰ पु॰) देखो बुरुश।
बुलद-(फा॰वि॰) जिसकी ऊचाई बहुत हो, बहुत ऊचा, भारी।
बुलदी-फा॰ स्त्री॰) अधिक ऊचाई।
बुलडाग-(अ॰पुं॰) मझोले आकार का एक प्रकार का विलायती कुत्ता जो बड़ा ताकतवर और देखने में भयकर होता है।
बुलबुल-(अ॰स्त्री॰,फा॰स्त्री॰) एक प्रसिद्ध गाने वाली काली छोटी चिड़िया, बुलबुलबाज़-बुलबुल का खेलाड़ी या शौकीन।
बुलबुला-(हिं॰ पु॰) बुद्बुद्, पानी का बुल्ला।
बुलवाना-(हिं॰क्रि॰) बुलाने का काम दूसरे से कराना।
बुलाक-(हि॰पु॰) एक लबा सुराहीदार मोती जिसको स्त्रियाँ नथ में या दोनों नथनों के बीच के परदे में पहनती हैं।
बुलाकी-(हि॰पु॰) घोडे की एक जाति।
बुलाना-(हि॰ क्रि॰) आवाज़ देना, पुकारना, किसी को बोलने में लगाना, किसी को अपने पास आने के लिये कहना।
बुलावा-(हि॰पु॰) बुलाने की क्रिया या भाव, निमन्त्रण।
बुलाह-(हि॰ पु॰) वह घोड़ा जिसकी गरदन पुष्ट के और पूछके बाल पीले हों।
बुलिन-(अ॰स्त्री॰) पालके लच्चे में बाधने का रस्सा।
बुलौवा-(हिं॰पुं॰) देखो बुलावा।
बुल्लन-(हि॰पु॰) मुख, चेहरा, बुल्ला।
बुल्ला-(हिं॰ पु॰) बुद्बुद्, बुलबुला।
बुष, बुस-(स॰ नपु॰) अनाज के ऊपर का छिलका।
बुहरी-(हि॰स्त्री॰) देखो बहुरी।
बुहारना-(हिं॰ क्रि॰) झाड़ू देना, झाड़ू से साफ करना।
बुहारी-(हि॰स्त्री॰) झाड़ू, बढनी, सोहनी।
बूद-(हि॰स्त्री॰) जल आदि का थोड़ा अश जो गिरती समय छोटी सी गोली या दाने का रूप धारण करता है, एक प्रकार का रगीन देशी कपड़ा, वीर्य, शुक्र, बूदें गिरना-अल्प वृष्टि होना, झींसी पड़ना।
बूदा-(हिं॰पु॰) बड़ी टिकली, सुराहीदार लम्बोतरा मोती जो कान या नाक में पहरा जाता है।
बूंदाबूंदी-(हिं॰स्त्री॰) अल्प वृष्टि, हलकी वर्षा।
बूंदी-(हिं॰स्त्री॰) वर्षा के जल के बूद, एक प्रकार की मिठाई, बुन्दिया।
बू-(फा॰स्त्री॰) वास, गन्ध, मँहक, दुर्गन्ध, बदबू।
बूआ-(हि॰स्त्री॰) पिता की बहिन, फूफी, बड़ी बहन, (पु॰) चगुल।
बूई-(हिं॰पु॰) एक प्रकार का पोधा जिसको जला कर सज्जीखार निकाला जाता है।
बूक-(हिं॰ पु॰) माजूफल की जाति का एक बड़ा वृक्ष।
बूकना-(हि॰ क्रि॰) किसी चीज़ को पीस कर महीन चूर्ण करना, अपने को अधिक योग्य प्रमाणित करने के लिये गढकर बातें करना।
बूका-(हि॰पु॰) नदी के हटने से निकली हुई ज़मीन।
बूगा-(हि॰ पु॰) भूसा।
बूच-(अ॰पु॰) बड़ी मेख, बड़ा काटा।
बूचड़-(अ॰पु॰) पशुओं का मास आदि

बेंचने के लिये उनकी हत्या करने वाला, कसाई, बूचड़ खाना–कसाई बाड़ा, जहा पशु मारे जाते हैं।
बूचा–(हिं०वि०) जिसके कान कटे हों, कनकटा, वह जो किसी अग के कट जाने के कारण भद्दा और कुरूप दिखाई पड़ता हो।
बूची–(हिं०पु०) वह भेंड जिसके कान बाहर न निकले हो।
बूजन–(फा० पु०) बन्दर।
बूजना–(हिं०क्रि०) धोखा देना, छिपाना।
बूझ–(हिं०स्त्री०) बुद्धि, समझ, ज्ञान पहेली
बूझन–(हिं० स्त्री०) देखो बूझ।
बूझना–(हिं० क्रि०) जानना, समझना, प्रश्न करना, पूछना।
बूंट–(हिं० पु०) चने का हरा पौधा, चने का हरा दाना, होरहा, वृक्ष, पेड़, (अ० पु०) अग्रेजी ढग का जूता, जिससे पैर के गट्टे तक ढप जाते हैं।
बूटनि–(हिं० स्त्री०) बीरबहूटी नाम का कीड़ा।
बूटा–(हिं०पु०) छोटा वृक्ष, पौधा, वृक्ष फल पत्ते आदि का चित्र जो कपडे दीवार आदि पर रग विरगे बनाये जाते हैं, बडी बूटी।
बूटी–(हिं० स्त्री०) वनस्पति, जड़ी, बनौषधि, भाग, ताश में बनी हुई टिक्की, फल फूल के छोटे चिह्न जो वस्त्रादि पर बनाये जाते हैं।
बूड़ना–(हिं० क्रि०) निमज्जित होना, डूबना, निमग्न होना, लीन होना।
बूड़ा–(हिं०पु०) जल की बाढ़ जो वर्षा के कारण आती है।
बूढ़, बूढ़ा–(हिं० वि०) देखो बुड्ढा।
बूता–(हिं०पु०) बल, पराक्रम, शक्ति।
बूना–(हिं०पु०) चनार नामक वृक्ष।
बूम–(अं० पु०) वह लट्ठा जो जहाज नाव आदि को ठीक मार्ग दिखलाने के लिये गाड़ा जाता है।
बूरना–(हिं० क्रि०) डूबना।
बूरा–(हिं०पु०) भूरे रग की कच्ची चीनी, शक्कर, महीन चूर्ण, सफूफ।

बूरी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बहुत छोटी वनस्पति।
बूला–(हिं०पु०) पायल का बना हुआ जूता
बृच्छ–(हिं० पु०) देखो वृक्ष।
बृहण–(सं० वि०) पुष्टि कारक।
बृहित–(सं० नपु०) हाथी की चिग्घाड़।
बृटिश–(हिं०वि०) देखो ब्रिटिश।
बृष–(सं० पु०) देखो वृष।
बृहच्चञ्चु–(सं०वि०) लम्बी चोंच वाला।
बृहज्जाल–(सं० नपु०) बड़ी जाल।
बृहतिका–(सं०स्त्री०)उत्तरीय वस्त्र, उपरना
बृहती–(सं० स्त्री०) बनभटा, उत्तरीय वस्त्र, उपरना, कण्टकारी, भटकटैया, वाक्य, एक वर्णवृत्त का नाम, विश्वावसु गन्धर्व की वीणा का नाम, वैद्यक के अनुसार एक मर्मस्थान जो बिचो बीच पीठ में रीढ़ के दोनो तरफ है, बृहती कल्प–एक प्रकार का कायाकल्प, बृहतीपति–बृहस्पति।
बृहत्–(सं० वि०) विशाल, बहुत बड़ा, ऊँचा, दृढ, पर्याप्त, बलिष्ठ, दृढ, मजबूत, बृहत्कन्द–गाजर, बृहत्कीर्ति–एक असुर का नाम, बृहत्कुक्षि–बड़ी तोंद वाला, बृहत्तृण–बास, बृहत्त्वच्–नीम का पेड, बृहत्पाद–बरगद का पेड़, बृहत्पीलु–जगली अखरोट, बृहत्पुष्प–केले का पेड़, बृहत्पुष्पी–सन का पौधा, बृहत्फल–कुम्हड़ा, कटहल, बृहत्फला–तितलौकी।
बृहदङ्ग–(सं०पु०) मतङ्गज, हाथी।
बृहदश्व–(सं० पु०) एक ऋषि का नाम।
बृहदारण्यक–(सं०नपु०) शतपथ ब्राह्मण का एक प्रसिद्ध उपनिषद्।
बृहदेला–(सं०स्त्री०) बड़ी इलायची।
बृहद्दली–(सं०स्त्री०) लज्जावन्ती, लजालु।
बृहद्धन–(सं०नपु०) महाधन, बड़ी धन दौलत।
बृहद्धल–(सं०नपु०) बड़ा हल।
बृहद्बीज–(सं०पु०) आम्रातक, आमड़ा।
बृहद्भानु–(सं० पु०) सत्यभामा के एक पुत्र का नाम, अग्नि, चित्रक वृक्ष।
बृहद्रथ–सं० पु०) इन्द्र यज्ञ पात्र, शत-

धन्वा के पुत्र का नाम, जरासन्ध के पिता का नाम, देवरात के पुत्र का नाम।
बृहद्वयस्–(सं०वि०) ज्यादा उम्र वाला।
बृहद्वर्ण–(सं०पु०) सोनामक्खी।
बृहद्वल्ली–(सं०स्त्री०) करेला।
बृहन्नल–(सं० पु०) बड़ा नरकट, बाहु, बाँह, अर्जुन का एक नाम।
बृहन्नला–(सं०स्त्री०) अर्जुन का वह नाम जिसको उन्होंने अज्ञातवास के समय में धारण किया था जब स्त्री के वेश में रहकर वह राजा विराट की कन्या को नाचना गाना सिखलाते थे।
बृहन्नारायण–(सं०पु०) एक उपनिषद् का नाम।
बृहन्नेत्र–(सं० वि०) बड़ी बड़ी आँख वाला, दूर का।
बृहस्पति–(सं० पु०) अगिरा के पुत्र, देवताओं के गुरु, सौर जगत् का एक ग्रह, बृहस्पति वार–गुरुवार, बीफै।
बेंग–(हिं०पु०) मेक, मेढ़क।
बेंगल–(हिं०पु०) वह बीज जो किसानों को बोने के लिये सवाई पर दिया जाता है, बेगा।
बेंच–(अं०स्त्री०) लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई लम्बी सकरी चोकी, सरकारी न्यायालय के कार्यकर्ता।
बेंचना–(हिं०क्रि०) देखो बेचना।
बेंट, बेंठ–(फा०स्त्री०) काठ का दस्ता जो औजारों को पकड़ने के लिये लगाया जाता है, दस्ता।
बेंड़–(हिं० पु०) वह भेड़ा जो झुड में बच्चे पैदा करने के लिये छूटा रहता है, पड़ाव (स्त्री०) चाँड, थोक।
बेंड़ा–(हिं० वि०) आड़ा, तिरछा, कठिन, मुश्किल।
बेंडी–(हिं०स्त्री०) बास की बनी हुई एक प्रकार की टोकरी।
बेंढ–(हिं०पु०) हवा के रुख पर घूमने वाला एक यन्त्र, फरहरा।
बेंत–(हिं० पु०) एक प्रसिद्ध लता जिसका डठल बड़ा लचीला होता है जो छड़ी के काम में आता है, इसकी

टोकरिया आदि भी बनाई जाती हैं, बेंत की तरह काँपना-थरथर काँपना
बेंदली-(हिं० स्त्री०) माथे पर लगाने की बिंदी, टिकली।
बेंदा-(हिं० पुं०) माथे पर लगाने का तिलक, टीका, स्त्रियों के माथे पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण, टिकली के आकार का एक गहना।
बेंदी-(हिं० स्त्री०) टिकली, बिंदी, बदी नामक आभूषण, शून्य, सुन्ना।
बेंवड़ा-(हिं०पु०) वह लकड़ी जो बन्द दरवाज़े के पीछे लगाई जाती है, अरगल
बेंवताना-(हिं० क्रि०) सिलाने के लिये किसीसे कपड़ा नपवाना।
बे-(फ० अव्य०) बिना, बगैर, अशिष्टता सूचक एक संबोधन का शब्द।
बेअंत-(हिं० वि०) जिसका अन्त न हो, बेहद।
बेअक़ल-(फ० वि०) मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ।
बेअकली-(फा० स्त्री०)मूर्खता, बेवकूफी।
बेअदब-(फा० वि०) बड़ों का आदर सम्मान न करने वाला।
बेअदबी-(फा० स्त्री०) बेअदब होने का भाव, गुस्ताखी।
बेआब-(फा० वि०) जिसमें आब या चमक हो, अप्रतिष्ठित, तुच्छ।
बे आबरू-(फा०वि०)जिसकी कोई प्रतिष्ठान हो, बेइज़्ज़त।
बेआबी-(फा० स्त्री०) मलिनता, गन्दापन।
बेआरा-(हिं० पु०) एक में मिला जव और चना।
बे ओनी-(हिं० स्त्री०) कघी की तरह का जुलाहों का एक औजार।
बे इंसाफी-(फा० स्त्री०) इंसाफ का अभाव, अन्याय।
बेइज्जत-(फा० वि०) अप्रतिष्ठित, अपमानित, जिसका अपमान किया गया हो।
बेइज्जती-(फा०स्त्री०) अपमान, अप्रतिष्ठा।
बेइलि-(हिं०पु०) देखो बेला।
बे इल्म-(फा० पु०) जो कोई विद्या न जानता हो, जो कुछ पढा लिखा न हो
बेईमान-(फा० वि०) अधर्मी, जिसको धर्म का कोई विचार न हो, वह जो अन्याय, कष्ट आदि से अनाचार करता हो।
बेईमानी-(फा० स्त्री०) बेईमान होने का भाव।
बेउज्र-(फा०वि०) जो कोई काम करने में या आज्ञा पालन करने में किसी प्रकार की आपत्ति न करे।
बेक़दर-(फा०वि०) अप्रतिष्ठित, बेइज्जत।
बेक़दरी-(फा०स्त्री०) अप्रतिष्ठा बेइज्जती।
बेकनाट-(सं० पु०) सूद खोर।
बेकरा-(हिं०पु०) चौपायों का एक रोग।
बेक़रार-(फा० वि०) व्याकुल, विकल, घबराया हुआ।
बेक़रारी-(फा०स्त्री०) व्याकुलता, बेचैनी।
बेकल-(हिं०वि०) व्याकुल, व्यग्र।
बेकली-(हिं० स्त्री०) बेकल होने का भाव घबड़ाहट, बेचैनी।
बेकस-(फा० वि०) निराश्रय, निःसहाय, दीन, गरीब, बिना मा बाप का।
बेक़सूर-(हिं०वि०) निरपराध, जिसका कोई कसूर न हो।
बेकहा-(हिं०वि०) जो किसी का कहना न मानता हो।
बेक़ानूनी-(फा० वि०) जो कायदे कानून के खिलाफ हो।
बेक़ाबू-(फा०वि०) विवश, जिसका अपने ऊपर काबू न हो, जो किसी के वश में न हो।
बेकाम-(हिं० वि०) जो किसी काम का न हो, निकम्मा, (क्रि० वि०) निरर्थक, व्यर्थ।
बेकायदा-(फा० वि०) नियम विरुद्ध, कायदे के खिलाफ।
बेकार-(फा० वि०) निरर्थक, जो किसी काम मे न आसके, निकम्मा।
बेकारी-(फा०स्त्री०) निरुद्यम या खाली होने का भाव।
बेकान्यो-(हिं० पुं०) पुकारने का संबोधन का शब्द।
बेक़ुसूर-(फा०वि०) निरपराध, जिसका कोई दोष या क़ुसूर न हो।
बेकुरा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का बाजा
बेख-(फा० स्त्री०) मूल, जड़, सवाग, नकल, मेस।
बेखटक-(हिं०वि०) बिना किसी प्रकार के खटके या रुकावट के, बिना सकोच या असमजस का, (क्रि० वि०) बिना आगा पीछा किये हुए।
बेख़ता-(फा० वि०) निरपराध, बेकुसूर।
बेख़बर-(फा० वि०) अनजान, बेसुध, बेहोश।
बेख़बरी-(फा०स्त्री०) अज्ञानता, बेहोशी।
बेखुर-(हिं०पु०) एक प्रकार की चिड़या
बेख़ौफ़-(फा०वि०) निर्भय, निडर।
बेग-(हिं० पु०) देखो वेग (अं०पु०) चमड़े, कपड़े आदिका बना हुआ थैला
बेगड़ी-(हिं० पु०) नगीना बनाने वाला, हक्काक।
बेगम-(सं० स्त्री०) राजपत्नी, राज्ञी, रानी, ताश का वह पत्ता जिसमें रानी का चित्र बना रहता है।
बेगर-(हिं०पु०) अचार में मिलाया हुआ मसाला, (क्रि०क्रि०वि०) देखो बगैर।
बेगरज़-(फा०वि०) जिसको कोई ग़रज़ या परवा न हो (क्रि०वि०) निष्प्रयोजन, व्यर्थ।
बेगरज़ी-(फा०स्त्री०) बेगरज़ होने का भाव।
बेगवती-(सं०स्त्री०) एक वर्णार्ध वृत्त का नाम।
बेगसर-(हिं०पु०) खच्चर।
बेगानगी-(फा०स्त्री०) परायापन।
बेगाना-(फा०वि०) जो अपना न हो, गैर, पराया अनजान, नावाकिफ।
बेगार-(फा०स्त्री०) बिना मज़दूरी दिये हुए किसी से ज़बरदस्ती लिया हुआ काम, बेमन से किया हुआ काम, बेगार टालना-किसी काम को बिना मन लगाये करना।
बेगारी-(फा०स्त्री०) बेगार में काम करने वाला आदमी।

वेगि–(हिं०क्रि०वि०) शीघ्रता या जल्दी से, तुरत।

वेगुन–(हिं०पु०) देखो बैंगन।

वेगुनाह–(फा०वि०) जिसने कोई गुनाह न किया हो, जिसने कोई पाप न किया हो, निरपराध, निर्दोष, वे कुसूर।

वेगुनी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की सुराही

वेचक–(हिं० पु०) विक्री करने वाला, वेचने वाला।

वेचना–(हिं०क्रि०) विक्रय करता, मूल लेकर कोई पदार्थ देना।

वेचवाना, वेचाना–(हिं० क्रि०) देखो विकवाना।

वेचारा–(फा० वि०) जिसका कोई अवलम्ब न हो,गरीव, दीन,नि सहाय।

वेचिराग–(फा० वि०) जहा दीपक न जलता हो, उजड़ा हुआ।

वेचैन–(फा० वि०) विकल, व्याकुल, जिसको किसी प्रकार का चैन न पडता हो।

वेचैनी–(फा०स्त्री०) विकलता, घवडाहट।

वेजड़–(फा०वि०) विना जड या बुनियाद का, जिसके मूल में कोई तत्व या सार न हो।

वेजवान–(फा० वि०) जिसमें बोलने चालने की शक्ति न हो, मूक, गूँगा, जो दीनता या नम्रता के कारण किसी प्रकार का विरोध न करता हो, गरीव, दीन।

वेजा–(फा० वि०) जो अपने उचित स्थान पर न हो, अनुचित, नामुनासिव, बुरा, खराव।

वेजान–(फा०वि०) जिसमें जीवन शक्ति न हो, जिसमें कुछ भी दम न हो, मृतक,मुरदा, निर्बल,कमज़ोर कुम्हलाया या मुरझाया, हुआ।

वेजाप्ता–(फा०वि०) जो ज़ाप्ते के अनुसार न हो, कानून या नियम के विरुद्ध।

वेज़ार–(फा० वि०) जिसका मन किसी वात से बड़ा दुःखी हो।

वेजू–(अ०पु०) एक प्रकार का जगली जानवर।

वेजोड़–(फा०वि०) जिसमें जोड़ न हो, जो एक ही टुकडे का बना हो, अद्वितीय, अनुपम।

वेझना–(हिं० क्रि०) देखो वेधना।

वेझरा–(हिं० पु०) गेंहू, जव, चना, मटर आदि में से दो या तीन मिले हुए अन्न।

वेझा–(हिं० पु०) लक्ष्य, निशाना।

वेटकी–(हिं०स्त्री०) वेटी, पुत्री, लड़की।

वेटला–(हिं० पु०) वेटा, पुत्र।

वेटा–(हिं० पु०) पुत्र, लड़का।

वेटौना–(हिं० पु०) देखो वेटा।

वेठ–(हिं०पु०) एक प्रकार की ऊसर भूमि

वेठन–(हिं० पु०) कपडे का टुकड़ा जो किसी चीज के लपेटने के काम में आता है, बँधना।

वेठिकाने–(फा०वि०) जो अपने उचित स्थान पर न हो, व्यर्थ, निरर्थक, विना सिर पैर का।

वेड्–(अं० पु०) नीचे का भाग, तल, विस्तर विछौना।

वेड़–(हिं०पु०) मेड़, थाला, नगद रुपया

वेड़ना–(हिं०क्रि०) छोटी दीवार खड़ी करना, थाला बाँधना।

वेड़ा–(हिं० पु० लट्ठे, वास, तख्ते आदि को एक में वाधकर वनाया हुआ ढाँचा जिस पर वैठकर नदी पर चलते हैं, तिराना, नाव, वहुत सी नाव या कहाजों का समूह (वि०) जो आँखों के समानान्तर एक ओर से दूसरी ओर गया हो, कठिन, मुश्किल। वेड़ा पार करना–सकट से छुड़ाना।

वेड़िया–(हिं० पु०) वास की वनी हुई छिछली टोकरी जो खेत सींचने में पानी उछालने के काम मे लाई जाती है।

वेड़िन, वेड़िनी–(हिं०स्त्री०) नाचने गाने वाली नट जाति की स्त्री।

वेड़ी–(हिं०स्त्री०) लोहे की कड़ी या जजीर जो अपराधियों के पैर में डाल दी जाती है जिसमें वे स्वतन्त्रतापूर्वक घूम फिर न सकें, निगड़ बाँस की वनी हुई टोकरी जो पानी उछाने के काम में लाई जाती है, (स्त्री०) छोटी नाव या वेड़ा।

वेडौल–(हिं०वि०)जिसका आकार अच्छा न हो, भद्दा, जो उपयुक्त स्थान पर न हो, वेढगा।

वेढंग,वेढगा–(हिं०वि०) बुरे ढग का, कुरूप, भद्दा।

वेढंगापन–(हिं०पु०)वेढगे होने का भाव

वेढ–(हिं०पु० नाश, वरवादी, बोया हुआ वह बीज जिसमें अंकुर निकल आया हो

वेढई–(हिं० स्त्री०) पीठी आदि भरी हुई कचौड़ी।

वेढन–(हिं० पुं०) वह जिससे कोई चीज घेरी हो।

वेढना–(हिं०क्रि०) वृक्ष खेत आदि को रक्षा के निमित्त टट्टी वाघ आदि से घेरना, चौपायों को घेर कर हाँक ले जाना।

वेढव–(हिं० वि०) जिसका ढग अच्छा न हो, जो देखने में ठीक न जान पड़े, भद्दा, (क्रि० वि०) अनुचित रीति से, बुरी तरह से।

वेढा–(हिं०पु०) घर के सामने का छोटा सा तरकारी आदि वोने के लिये घेरा हुआ स्थान, एक प्रकार का हाथ में पहरने का आभूषण।

वेढाना–(हिं० क्रि०) ओढाना, घिरवाना

वेणीफूल–(हिं० पु०) फूल के आकार का सिर पर पहरने का एक प्रकार का गहना, सीसफूल।

वेतकल्लुफ़–(हिं० वि०) सीधा सादा व्यवहार करने वाला, जिसको ऊपरी शिष्टाचार का विशेष ध्यान न हो, अपने हृदय की वात स्पष्ट रूप से कहने वाला (क्रि० वि०) विना सकोच के, वेधड़क।

वेतकल्लुफ़ी–(फा० स्त्री०) सरलता, सादगी।

वेतकसीर–(फा०वि०) निरपराध, वेगुनाह

वेतना–(हिं० क्रि०) प्रतीत होना, जान पडना।

वेतमीज़–(फा०वि०)जिसको तमीज़ न हो,

अशिष्ट, उद्दण्ड, बेहूदा।
बेतरह-(फ़ा०क्रि०वि०) अनुचित रूप से, बुरी तरह से, विलक्षण ढग से, (वि०) बहुत अधिक या ज़्यादा।
बेतरीक़ा-(फ़ा०वि०) अनुचित, बेकायदा (क्रि०वि०) अनुचित रूप से, बिना ठीक तौर से।
बेतहाशा-(फ़ा०क्रि०वि०) बड़ी शीघ्रता से, बड़ी तेज़ी से, बड़ी घबड़ाहट से, बिना सोचे समझे।
बेताब-(फ़ा० वि०) दुर्बल, कमजोर, व्याकुल, घबड़ाया हुआ, बेचैन।
बेताबी-फ़ा०स्त्री०) दुर्बलता, कमज़ोरी, व्याकुलता, बेचैनी।
बेतार-(हिं०वि०) बिना तार का, जिसमें तार न हों, बेतार का तार-एक नया आविष्कार जिसमें खबर गाने आदि रेडियो के यत्र से भेजे जाते हैं, इसमें तार एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं लगे रहते।
बेताल-(हिं० पु०) देखो वेताल, भूत योनि विशेष।
बेताल-(हिं० पु०) भाट, वन्दी।
बेताला-(हिं०स्त्री०) वह बाजा या सगीत जो ताल के सहगामी न हो।
बेतुका-(हिं०वि०) बेढगा, बेमेल।
बेतुका छंद-(हिं०पु०) वह छद जिसमें तुक न मिलते हों, अमिताक्षर छन्द।
बेतौर-(अ० क्रि० वि०) बुरी तरह से, बेढंगेपन से (वि०) बेढगा।
बेद-(हिं० पु०) देखो वेद।
बेदक-(हिं०पु०) हिन्दू, वेद मानने वाला
बेदख़ल-(फ़ा० वि०) जिसका दखल कब्जा न हो।
बेदख़ली-(फ़ा०स्त्री०) सपत्ति पर से दखल कब्जा हटाया जाना अथवा न होना।
बेदम-(फ़ा०वि०) मृतक, मुरदा, जिसकी जीवन शक्ति कम हो गई हो, अधमरा, जर्जर।
बेदमॅजनू-(फ़ा०पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी शाखायें बहुत झुकी रहती हैं।
बेदमल-(हिं०पु०) लकड़ी की वह तख्ती जिसपर तेल लगाकर सिकली गर अपना मस्किला नाम का औजार रगड़कर चमकाते हैं।
बेदमुश्क-(फ़ा०पु०) पजाब में होने वाला एक वृक्ष जिसमें बड़े कोमल सुगधित फूल होते हैं इन फूलों का अर्क दवाओं में व्यवहार होता है।
बेदर्द-(फ़ा०वि०) कठोर हृदय, निर्दय।
बेदर्दी-(फ़ा०स्त्री०) निर्दयता, बेरहमी।
बेदलैला-(फ़ा०पु०) एक प्रकार का पौधा जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं।
बेदाग-(फ़ा०वि०) जिसमें कोई दाग या धब्बा न हो, साफ, निर्दोष, शुद्ध, निरपराध, बेकसूर।
बेदाना-(हिं०पु०)एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार, बिहीदाना नामक फल के बीज, (वि०) मूर्ख, बेवकूफ।
बेदाम-(हिं०वि०) बिना दाम का, जिसका कुछ मूल्य न दिया गया हो।
बेधड़क-(हिं० क्रि० वि०) बिना किसी प्रकार के सकोच के,बिना किसी प्रकार के भय या आशका के, निडर होकर बिना रुकावट के, बिना आगा पीछा सोचे समझे (वि०) निर्भय, निडर।
बेधना-(हिं० क्रि०) किसी नुकीली चीज से छेद करना, शरीर में घाव करना।
बेधर्म-(हिं० वि०) जिसको अपने धर्म का ध्यान न हो, धर्म से गिरा हुआ।
बेधिया-(हिं०पु०) अकुश।
बेधीर-(हिं०वि०) देखो अधीर।
बेनग-(हिं०पु०)एक प्रकार का पहाड़ी बांस।
बेन-(हिं० पु०) बसी, मुरली, सँपेरे की तुमड़ी, महुवर, एक प्रकार का वृक्ष, बांस।
बेन-(अ० पु०) जहाज़ के मस्तूल पर लगाने की झडी, हवा का रुख जानने की चरखी।
बेनज़ीर-(फ़ा० वि०) अनुपम, जिसकी समता कोई न कर सके।
बेनट-(हिं० स्त्री०) अग्रेज़ी 'बेयोनेट्' का अपभ्रश, बदूक के अगले सिरे पर लगी हुई किर्च, सगीन।
बेना-(हिं० पु०) बांस का बना हुआ छोटा पखा, व्यजन खस, उशीर, बांस, माथे के बीचमें पहरने का एक प्रकार का गहना।
बेनागा-(हिं०क्रि०वि०) निरन्तर, लगातार।
बेनिमून-(फ़ा०वि०) अनुपम, अद्वितीय।
बेनी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की चोटी, वेणी, एक प्रकार का धान, गगा, यमुना और सरस्वती का सगम, त्रिवेणी, किवाड़ के पल्ले में लगी हुई वह लड़की जो दूसरे पल्ले को खुलने से रोकती है।
बेनु-(हिं० पुं०) देखो वेणु, बसी, मुरली, बांस।
बेनुली-(हिं० स्त्री०) जाते या चक्की के किल्ले पर रक्खी हुई वह लकड़ी जिसके दोनो सिरों पर जोती रहती है।
बेनौटी-(हिं० पु०) कपास के फूल के समान रग।
बेपरद-(फ़ा०वि०) अनावृत, बिना परदे का, नग्न, नगा।
बेपरवा, बेपरवाह-(फ़ा०वि०) जिसको किसी प्रकार की फिक्र न हो, बेफिक्र, हानि लाभ का विचार न करके अपनी इच्छानुसार काम करने वाला, मनमौजी, उदार।
बेपरवाही-(फ़ा० स्त्री०) अपने मन के अनुसार काम करना, बेफिकरी।
बेपर्द-(हिं०वि०) देखो बेपरद।
बेपाई-(हिं० वि०) हक्काबक्का, भौंचक।
बेपार, बेपारी-देखो व्यापार, व्यापारी।
बेपीर-(फ़ा० वि०) दूसरे से सहानुभूति न रखने वाला, निर्दय, बेरहम।
बेपेंदी-(हिं० वि०) बिना पेंदी का, इधर उधर लुढ़कने वाला, बेपेंदी का लोटा-वह मनुष्य जो बारबार अपने विचार को बदलता हो।
बेफ़ायदा-(फ़ा० वि०) निरर्थक, व्यर्थ का (क्रि० वि०) नाहक।
बेफ़िक्र-(फ़ा०वि०) निश्चिन्त, बेपरवा।
बेफ़िक्री-(फ़ा०स्त्री०) बेफिक्र होने का भाव
बेबस-(हिं० वि०) विवश, लाचार,

जिसका कुछ वश न चले, परवश, पराधीन।
बेवसी-(हिं०स्त्री०) विवशता, पराधीनता।
बेवाक-(फा०वि०) जो अदा कर दिया गया हो, चुकता किया हुआ।
बेबुनियाद-(फा०वि०) निर्मूल, बेजोड़।
बेब्याहा-(हिं०वि०) अविवाहित, कुआरा।
बेभाव-(फा० क्रि० वि०) जिसका कोई हिसाब या गिनती न हो, बेहद।
बेम-(हिं०स्त्री०) जुलाहों की कघी।
बेमन-(हिं०क्रि०वि०) बिना मन लगाये (वि०) जिसका मन न लगता हो।
बेमरम्मत-(फा०वि०) जिसकी मरम्मत न हुई हो।
बेमरम्मती-(फा०स्त्री०) बेमरम्मत होने का भाव।
बेमारी-(हिं०स्त्री०) देखो बीमारी।
बेमालूम-(हिं०क्रि०वि०) बिना किसी को पता दिये हुए (वि०) जो मालूम न पड़ता हो, जिसका पता न लगता हो।
बेमिलावट-(फा०वि०) बिना मिलावट का, खालिस।
बेमुनासिब-(फा०वि०) जो मुनासिब न हो, अनुचित।
बेमुरव्वत-(फा० वि०) जिसमें शील सकोच का अभाव हो, तोतेचश्म।
बेमुरव्वती-(फा० स्त्री०) बेमुरव्वत होने का भाव, तोतेचश्मी।
बेमौक़ा-(फा०वि०) जो उपयुक्त अवसर पर न हो, (पु०) अवसर का अभाव।
बेयरा-(हिं०पु०) देखो बेरा।
बेर-(हिं० पु०) एक कटीला वृक्ष जिसके फल मीठे होते हैं, बेर का फल (स्त्री०) बार, दफा, विलम्ब, देर।
बेरजरी-(हिं०स्त्री०) जगली बेर, झरबेरी।
बेरजा-(हिं० पु०) देखो बिरोजा।
बेरवा-(हिं० पु०) कलाई मे पहरने का एक गहना, कडा।
बेरस-(फा०वि०) बिना रस का, रसहीन, जिसका स्वाद अच्छा न हो, बेमजा, फीका।
बेरहम-(फा०वि०) निर्दय, दया-रहित, निठुर।
बेरहमी-(फा०स्त्री०) निर्दयता, निष्ठुरता।
बेरा-(हिं०पु०) बेला, समय, वख्त, प्रातः-काल, तड़का, एक में मिला हुआ चना और जव।
बेरा-(अ० पु०) साहब लोगों का वह चपरासी जो चिट्ठी पत्री ले जाता और लाता है।
बेरादरी-(हिं०पु०) देखो बिरादरी।
बेराम-(हिं० वि०) देखो बीमार।
बेरामी-(हिं० स्त्री०) देखो बीमारी।
बेरिआ-(हिं० स्त्री०) समय, बेला।
बेरिज-(हिं० स्त्री०) किसी जिले की कुल जमा।
बेरिया-(हिं० स्त्री०) समय, काल।
बेरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी लता, एक में मिली हुई सरसों और तीसी, बेर, उतना अनाज जितना चक्की में एक बार डाला जाता है, मुट्ठी भर अन्न
बेरुआ-(हिं० पु०) वह बास का टुकड़ा जो नाव खींचने के गून में बधा होता है।
बेरुई-(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बेरुकी-(हिं०स्त्री०) बैलों की जीभ में होने वाला एक रोग।
बेरुख-(फा० वि०) जो समय पड़ने पर मुख फेर ले, बेमुरव्वत, क्रुद्ध, नाराज।
बेरुखी-(फा० स्त्री०) बेमुरव्वती।
बेरूप-(हिं० वि०) कुरूप, बदशक्ल।
बेरोक-(फा०क्रि०वि) निर्विघ्न, बेखटके,
बेरोकटोक-बिना किसी अड़चन के।
बेरोजगार-(फा०वि०) जिसके पास करने को कोई काम धधा न हो।
बेरौनक-(फा० वि०) जिस पर रौनक न हो, उदास।
बेर्रां-(हिं० पु०) मिले हुए जव चने का आटा।
बेलद-(फा० वि०) ऊचा, जो बुरी तरह से परास्त हुआ हो, विफल मनोरथ।
बेलव-(हिं० पुं०) देखो विलम्ब।
बेल-(हिं० पु०) मझोले आकार का एक प्रसिद्ध कटीला वृक्ष जिसके फल का मोटा कड़ा छिलका होता है, बिल्व, श्रीफल, (स्त्री०) वे छोटे कोमल पौधे जो अपने बल पर ऊपर नहीं उठ सकते, लता, वल्ली, सन्तान वश, नाव, खेने का डाड़ा, घोडे के पैर का एक रोग, फीते पर बना हुआ जरदोज़ी या रेशम का काम, विवाह आदि अव-सरों पर नेगियों को देने का धन, कपडे दीवार आदि पर बनी हुई फल पत्तियां, (फा० पु०) एक प्रकार की कुदाली, एक प्रकार का लबा खुरपा, (अ० पु०) कपडे कागज़ आदि की बड़ी गठरी जो एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजी जाती है, गाठ।
बेलक-(हिं० पु०) फरसा, फावड़ा।
बेलकी-(हिं० पु०) चरवाहा।
बेलखजी-(हिं० पु०) एक प्रकार का ऊचा पहाड़ी वृक्ष।
बेलगिरी-(हिं० स्त्री०) बेल के फल का गूदा।
बेलचा-(फा० पु०) एक प्रकार की छोटी कुदाल, जिससे बाग की क्यारिया बनाई जाती हैं, एक प्रकार लबी खुरपी।
बेलज्जत-(फा०वि०) स्वाद रहित, जिसमें किसी प्रकार का स्वाद न हो, जिसमें कोई सुख न मिले।
बेलड़ी-(हिं० स्त्री०) छोटी बेल या लता।
बेलदार-(फा० पु०) वह मजदूर जो जमीन खोदने का काम करता हो।
बेलदारी-(फा० स्त्री०) फौड़ा चलाने का काम।
बेलन-(हिं० पु०) लोहे लकडी पत्थर आदि का गोल भारी टुकड़ा जो अपने अक्ष पर घूमता है और इसको लुढ़का कर चीज पीसने तथा सड़क आदि को समतल करने के काम में लाते हैं, रोलर, कोल्हू का जाठ, किसी यन्त्र में लगा हुआ रोलर के आकार का पुरजा, एक प्रकार का जड़हन धान, रुई धूनने की मुठिया का हत्था, कोई लबा गोल लुढ़कने वाला पदार्थ।
बेलना-(हिं० पुं०) काठ का गोल लबा

दस्ता जो बीच में मोटा और दोनों ओर पतला होता है, यह पूरी रोटी आदिको बेलने के काम में आता है, (हि० क्रि०) चकले पर लोई रखकर बेलना से बढा कर गोल करना, तथा पतला करना, नष्ट करना, चौपट करना, पानी के छींटे उड़ाना, पापड़ बेलना–काम बिगाड़ना।
बेलपत्ती, बेलपत्र–(हि० पु०) बेल के वृक्ष की पत्ती जो शिवजी को चढाई जाती है।
बेलपाता–(हि०पु०) देखो बेलपत्र।
बेलसना–(हि०क्रि०) भोगविलास करना, सुख लूटना।
बेलवागुरा–(हि०पु०) हरनो को पकड़ने का जाल।
बेलबूटेदार–(हि० वि०) जिसमें बेल बूटे बने हों।
बेलहरा–(हि० पु०) वास या धातु की बनी हुई लबोतरी पिटारी जिसमें पान के बीडे रक्खे जाते हैं।
बेलहरी–(हि०पु०) साची पान।
बेलहाजी–(हि०स्त्री०) धोती डुपट्टे आदि पर किनारा छापने का ठप्पा।
बेला–(हि० पु०) एक छोटा पौधा जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं, मल्लिका, लहर, कटोरा, वायोलिन नाम का बाजा, चमडे की बनी हुई छोटी कुल्हिया, समुद्र का किनारा, वेला, समय।
बेलाग–(हि० पु०) जिसमें किसी प्रकार की लगावट न हो, साफ, खरा।
बेलाडोना–(अं०पु०) मकोय का सत्व।
बेलि–(हि० स्त्री०) देखो बेल।
बेलिया–(हि० स्त्री०) छोटी कटोरी।
बेली–(हि० पु०) सगी साथी।
बेलौस–(हि०वि०) सच्चा, खरा, बेमुरव्वत।
बेवकूफ–(फा०वि०) मूर्ख, नासमझ।
बेवकूफी–(फा०स्त्री०) मूर्खता, नासमझी।
बेवक्त–(फा०क्रि०वि०) अनुपयुक्त समय पर, कुसमय में।
बेवतन–(फा० वि०) बिना घर द्वारका, परदेसी।
बेवपार–(हि०पु०) देखो व्यापार।
बेवफा–(फा०वि०) जो मित्रता आदि का निर्वाह न करता है, कृतघ्न, दुश्शील, बेमुरव्वत, दूसरे के किये हुए उपकार को न मानने वाला।
बेवर–(हि०पु०) एक प्रकार की घास।
बेवरा–(हि०पु) विवरण, ब्योरा।
बेवरेवाजी–(हि०स्त्री०)धूर्तता,चालबाजी।
बेवरेवार–(हि० वि०) विवरण सहित, तफसील वार।
बेवसाय–(हि०पु०) देखो व्यवसाय।
बेवस्था–(हि०स्त्री०) देखो व्यवस्था।
बेवहरना–(हिं०क्रि०) व्यवहर या वरताव करना।
बेवहरिया–(हि०पु०) लेन देन का व्यवहार करने वाला, महाजन।
बेवहार–(हि०पु०) देखो व्यवहार।
बेवा–(फा०स्त्री०) विधवा, राड़।
बेवाई–(हि०स्त्री०) देखो बेवाई।
बेवान–(हि०पु०) देखो विमान।
बेश–(हि० पु०) देखो वेश।
बेशऊर–(फा० वि०) फूहड़, मूर्ख, नासमझ।
बेशऊरी–(फा०स्त्री०) मूर्खता, नासमझी।
बेशक–(फा०क्रि०वि०) निःसन्देह, जरूर, अवश्य।
बेशक़ीमत–(फा०वि०) बहुमूल्य, कीमती।
बेशकीमती–(फा०वि०) देखो बेश,कीमत
बेशरम–(फा०वि०) निर्लज्ज, बेहया।
बेशरमी–(फा०स्त्री०) निर्लज्जता, बेहयाई।
बेशी–(फा० स्त्री०) अधिकता, ज्यादती, लाभ, मुनाफा, साधारण से अधिक काम करने की मजदूरी।
बेशुमार–(फा०वि०) अगणित,अनगिनती असंख्य।
बेश्म–(हि०पु०) देखो वेश्म, गृह, घर।
बेसदर–(हि०पु०) देखो वैश्वानर, अग्नि
बेसंभर–(हि० वि०) बेहोश।
बेसन–(हि०पु०) चनेका महीन आटा,रेहन
बेसनी–(हि० वि०) बेसन का बना हुआ (स्त्री०) बेसन भरी हुई पूरी।
बेसबब–(फा०क्रि०वि०) बिना सबब या कारण के, अकारण।
बेसबरा–(फा० वि०) अधीर, जिसको सब्र या सन्तोष न हो।
बेसबरी–(फा०स्त्री०) अधैर्य, असन्तोष।
बेसमझ–(फा०वि०) मूर्ख, नासमझ।
बेसमझी–(हि०स्त्री०) मूर्खता, नासमझी।
बेसर–(हि० पु०) नाक में पहरने का नथ, खच्चर।
बेसरा–(फा० वि०) आश्रयहीन, जिसको ठहरने के लिये कोई स्थान न हो, बेसरो सामान–जिसके पास कुछ भी सामान न हो, बड़ा दरिद्र।
बेसवा–(हि० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बेसवार–(हि० पु०) वह सड़ा हुआ मसाला जिससे शराब बनाई जाती है।
बेसा–(हिं०पु०) देखो वेश, (स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बेसारा–(हिं०वि०) बैठने या ठहरने वाला
बेसाहना–(हिं०क्रि०) मोल लेना, खरीदना, झगडा आदि अपने ऊपर लेना।
बेसाह, बेसाहा–(हिं०पु०) खरीदा हुआ माल, सौदा।
बेसिलसिले–(हिं० क्रि० वि०) अव्यवस्थित रूप में।
बेसी–(फा० क्रि० वि०) अधिक, ज्यादा
बेसुध–(हि०वि०) अचेत, बेहोश, बेखबर, बदहवास।
बेसुधी–(हिं०स्त्री०) बेखबरी, बेहोशी।
बेसुर–(हि० वि०) जिसका स्वर (संगीत में) ठीक न हो, बेमेल स्वर का।
बेसुरा–(हि०वि०) जो नियमित स्वर में न हो, बेमौका।
बेस्वाद–(हि० वि०) स्वाद रहित, जिसमें अच्छा स्वाद न हो, बदजायका।
बेहगम–(हिं०वि०) बेढंगा, विकट, बेढब।
बेहगमपन–(हि०पु०) बेढंगापन, भद्दापन
बेहँसना–(हि० क्रि०) जोर से हँसना, ठट्ठा मार कर हँसना।
बेह–(हि०पु०) वेध, छिद्र, छेद।
बेहड़–(हिं०वि०) देखो बीहड।
बेहतर–(फा० वि०) किसी की अपेक्षा अच्छा, किसी से बढ कर (अव्य०)

प्रार्थना या आदेश की उत्तर में स्वीकृति सूचक शब्द।
वेहतरी–(फा०स्त्री०) अच्छापन,भलाई।
वेहद–फ़ा०वि०) जिसकी कोई सीमा न हो, अपार, अपरिमित बहुत अधिक।
वेहन– हिं० पु०) अन्न आदि का बीज जो खेत में बोया जाता है, बीज, (वि०) पीला, जर्द।
वेहना– हिं० पु०) जुलाहों की एक जाति जो प्रायः धुनने का काम करती है, धुनिया।
वेहया–(फा०वि०) जिसको हया या लज्जा न हो, निर्लज्ज।
वेहयाई– फा०स्त्री०) निर्लज्जता, वेशर्मी।
वेहर–(हिं०वि०) स्थावर, अचर, पृथक्, अलग, (पु०) वावली।
वेहरा–(हि०क्रि०) तड़क जाना, दरार पड़ना।
वेहरा–(हि०पुं०) एक प्रकार की घास, मूंज की वनी हुई चिपटी पेटारी (वि०) पृथक्, अलग।
वेहराना–(हि०क्रि०) दरार होना,फटना।
वेहरी–(हि० स्त्री०) किसी विशेष कार्य के लिये वहुत से मनुष्यों से चदे के रूप में इकट्ठा किया हुआ धन, इस प्रकार से चदा वसूल करने की क्रिया।
वेहला–(हि०पु०) सारगी की तरह का एक प्रकार का अग्रेजी वाजा।
वेहाल–(फ़ा०वि०)वेचैन, व्याकुल,विकल।
वेहाली–(फ़ा० स्त्री०) वेहाल होने का भाव, वेचैनी।
वेहिसाव–(फ़ा०क्रि०वि०) वहुत अधिक, वहुत ज्यादा।
वेहुनरा–(हि० वि०) जो कोई हुनर न जानता हो, मूर्ख, तमाशा दिखलाने वाला भालू या वन्दर।
वेहुरमत–(फा० वि०) जिसकी कोई प्रतिष्ठा न करता हो, वेइज्जत।
वेहूदगी–(फा०स्त्री०)अशिष्टता, असभ्यता।
वेहूदा–(फा० वि०) शिष्टता या सभ्यता के विरुद्ध, अशिष्टता पूर्ण, जो सभ्यता या शिष्टता न जानता हो।
वेहूदापन–(फ़ा०पु०) वेहूदगी, अशिष्टता।
वेहून–(हि०क्रि०वि०) सिवाय,वगैर,विना।
वेफ़िक्र–(फा०वि०) चिन्ता रहित, वेफिक्र।
वेहोश–(फ़ा०वि०) अचेत, वेसुध।
वेहोशी–(फा०स्त्री०) अचेतना, मूर्छा।
वैंक–(अ० पु०) वह सस्था या कोठी जहाँ लोग व्याज पाने की इच्छा से रुपया जमा करते हैं तथा ऋण भी लेते हैं।
वैंगन–(हिं० पु०) एक वार्षिक पौधा जिसके फल तरकारी वनाने के काम में आते हैं भटा।
वैंगनी–(हि० वि०) ललाई लिये नीले रग का।
वैंजनी–(हिं० वि०) देखो वैंगनी।
वैंड–(अ० पु०) वाजा वजाने वालों का झुड जिसमें सव लोग एक साथ वाजा वजाते हैं झुड।
वैंडा–(हि०वि०) देखो वेंड़ा।
वै (हि० स्त्री०) वैसर जुलाहे की कघी, देखो वय, (हिं०स्त्री०) विक्री,वेंचना।
वैकल–(हि० वि०) उन्मत्त, पागल, सनकी।
वैकुंठ–(हि० पु०) देखो वैकुण्ठ।
वैखरी–(हि० स्त्री०) देखो वैखरी।
वैखानस–(हिं०वि०) देखो वैखानस।
वैग–(अ०पु०) वेग, झोला, थैला।
वैगन–(हि० पु०) देखो वैंगन, भटा।
वैगना–(हि० पु०) एक प्रकार का पकवान।
वैगनी–(हि० वि०) देखो वैंगनी।
वैजंती–(हिं० स्त्री०) देखो वैजयन्ती, विष्णु की माला, फूल के एक पौधे का नाम।
वैज–(अ० पु०) चिह्न, चपरास।
वैजई–(हि०पु०)एक प्रकार का हलका नीला रग।
वैजनाथ–(हि० पु०) देखो वैद्यनाथ।
वैजयंती–(हिं० स्त्री०) देखो वैजयन्ती।
वैजला–(हि०पुं०) कवड्डी का एक खेल।
वैजा–(अ० पु०) अण्डा, एक प्रकार का फोड़ा जिसके भीतर पानी भरा होता है।
वैजीय–(स०वि०) वीज सवंधी।
वैजेय–(स०वि०) वीज से उत्पन्न।
वैटरी–(अ० स्त्री०) तोपखाना, काच आदि का वह पात्र जिसमें रसायनिक प्रक्रिया द्वारा विजली उत्पन्न की जाती है।
वैटा– हि०स्त्री०) रूई ओटने की चर्खी।
वैठ–(हि०पु०) राजकीय कर।
वैठक–(हि०स्त्री०)वैठने का स्थान,आसन, पीठ, वैठने का ढग, सग, मेल, एक प्रकार की कसरत, वह स्थान जहा वहुत से लोग आकर वैठते हों सभासदो का एकत्रित होना, अधिवेशन, वैठने का व्यापार, काँच धातु आदि की दीवट, साथ उठना वैठना, वैठने का आसन, किसी मूर्ति या खभे की नीचे की चौकी।
वैठका–(हिंपुं०) वह चौपाल या दालान जहा पर वैठकर लोग वातचीत करते हैं
वैठकी–(हिं० स्त्री०) वारवार उठने वैठने की कसरत, आसन, आधार।
वैठन–(हि० स्त्री०) वैठने की क्रिया या भाव, वैठने का ढग, वैठक, आसन।
वैठना–(हिं० क्रि०) स्थित होना, आसन जमाना, तौल में ठहरना या परता पड़ना, बिगड़ना, निरुद्योग रहना, जोड़ा खाना, पिघल कर जम जाना, पक्षियों का अण्डा सेना, किसी पद पर स्थित होना, जमना, अँटना, समाना, रखनी वनकर रहना, पौधे का ज़मीन में लगना, घोड़े आदि पर सवारी करना, निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचना, अभ्यस्त होना, ठीक होना, धँसना, घुली हुई वस्तु का तल में जमना, अस्त होना, खर्च होना, लागत लगाना, काम से खाली रहना, व्यवसाय हीन होना, लक्ष्य या निशाने पर पड़ना, पचक जाना, दवना, वैठते उठते–हर अवस्था में, वैठे वैठाये–अकारण, वैठे वैठे–अचानक, एकाएक।
वैठनी–(हि० स्त्री०) करगह का वह स्थान जिसपर वैठकर जुलाहे कपड़ा वुनते हैं।

बैठवाई–(हिं० स्त्री०) बैठानी की मज़दूरी
बैठवाना–(हिं० क्रि०) बैठाने का काम दूसरे से कराना, पेड़ पौधे लगवाना।
बैठा–(हिं० पु०) चमचा या बड़ी करछी।
बैठाना–(हिं० क्रि०) दबाकर बराबर करना, पचकाना या धँसाना, लक्ष्य पर जमाना, घोडे आदि पर सवार कराना, पौधे को लगाना, बेकाम कर देना, किसी स्त्री को रखनी की तरह रख लेना, घुली हुई वस्तु को तल में जमाना, अभ्यस्त करना, नीचे की ओर ले जाना, पद पर स्थापित करना, नियत स्थान पर ठीक करना, उपविष्ट करना, उड़ाना या टिकाना, बिगाड़ना, ठीक जगह पर पहुँचाना।
बैठारना, बैठालना–(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।
बैठना–(हिं० क्रि०) वेढना, बन्द करना।
बैड़ाल–(सं० वि०) बिल्ली सम्बन्धी।
बैत–(अ० स्त्री०) पद्य, श्लोक।
बैतरनी–(हिं० स्त्री०) देखो बैतरणी, एक प्रकार का अगहनियाँ धान।
बैताल–(हिं० पु०) देखो बेताल।
बैतालिक–(हिं० वि०) देखो वैतालिक।
बैद–(हिं० पु०) देखो वैद्य, चिकित्सक।
बैदगी–(हिं० स्त्री०) वैद्य की विद्या या व्यवसाय।
बैदल–(सं० नपुं०) दाल की पीठी।
बैदूर्य–(हिं० पु०) देखो वैदूर्य।
बैदेही–(हिं० स्त्री०) देखो वैदेही।
बैन–(हिं० पुं०) वार्ता, बात, बैन झरना–मुख से बात निकलना।
बैनतेय–(हिं० पु०) देखो वैनतेय।
बैना–(हिं० पुं०) वह मिठाई पकवान आदि जो विवाहादि उत्सवों के उपलक्ष में इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजा जाता है।
बैपार–(हिं० पु०) देखो व्यापार, रोज़गार।
बैपारी–(हिं० पु०) व्यापार करनेवाला, रोज़गारी।
बैयन–(हिं० पुं०) बाना बैठाने का लकड़ी का एक औज़ार।
बैयर–(हिं० स्त्री०) स्त्री, औरत।
बैया–(हिं० पु०) बै, बैसर।
बैरङ्ग–(अं० वि०) वह चिट्ठी या पार्सल जिसका महसूल भेजने वाले ने न दिया हो और जो पाने वाले से वसूल किया जाय
बैर–(हिं० पु०) देखो वैर, शत्रुता, द्रोह, विरोध, दुश्मनी, बेर का वृक्ष या फल, हल में लगा हुआ चोंगा जिसमें भरा हुआ बीज हल चलने में बराबर कूड़ में गिरता जाता है। बैर निकालना–शत्रुता का बदला लेना। बैर ठानना–शत्रुता मान लेना, द्रोह आरम्भ करना, बैर पड़ना–दुश्मन बनकर तकलीफ देना; बैर मोल लेना–शत्रुता उत्पन्न करना, बैर लेना–बदला लेना।
बैरख–(हिं० पु०) ध्वजा, पताका, निशान
बैरा–(हिं० पुं०) बीज गिराने के लिये हल में लगा हुआ चोंगा, (अं० पु०) सेवक, चाकर।
बैराखी–(हिं० स्त्री०) भुजा पर पहरने का एक गहना, बैरखी।
बैराग–(हिं० पु०) देखो वैराग्य।
बैरागी–(हिं० पु०) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।
बैराग्य–(हिं० पु०) देखो वैराग्य।
बैराना–(हिं० क्रि०) वायु के प्रकोप से बिगड़ना।
बैरी–(हिं० वि०) देखो वैरी, विरोधी, शत्रु, दुश्मन।
बैल–(हिं० पु०) वृक्ष, एक चौपाया जिसकी मादा गाय कहलाती है, मूर्ख मनुष्य।
बैलर–(हिं० पु० अं० 'बायलर' का अपभ्रंश) पीपे के आकार का लोहे का बड़ा पात्र जो भाफ से चलने वाली कलों में रहता है
बैलून–(अं० पु०) गुब्बारा, वह बड़ा गुब्बारा जिस पर चढ़कर लोग पहिले हवा में उड़ा करते थे।
बैल्व–(सं० वि०) बेल सम्बधी, बेल का।
बैषानस–(सं० पु०) देखो वैखानस।
बैसंदर–(हिं० पु०) देखो वैश्वानर, अग्नि।
बैस–(हिं० स्त्री०) आयु, उम्र, युवावस्था, जवानी, क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा
बैसना–(हिं० क्रि०) देखो बैठना।
बैसर–(हिं० स्त्री०) जुलाहों का एक यन्त्र जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं।
बैसवारा–(हिं० पु०) अवध के पश्चिमी प्रान्त का नाम।
बैसाख–(हिं० पु०) देखो वैशाख, चैत के बाद के महीने का नाम।
बैसाखी–(हिं० वि०) वैशाख महीने की (हिं० पु०) वह लाठी जिसके सिरे पर अर्धचन्द्राकार आड़ी लकड़ी लगी होती है जिसको बगल में रखकर लंगडे लोग टेक कर चलते हैं।
बैसाना–(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।
बैसारना–(हिं० क्रि०) बैठाना।
बैसिक–(हिं० पु०) रंडी से प्रेम करने वाला मनुष्य।
बैहर–(हिं० वि०) भयानक, प्रचण्ड, क्रोधी, (स्त्री०) वायु, हवा।
बोंक–(हिं० पु०) लोहे का मुड़ा हुआ कीला जो पल्ले के नीचे की काल में लगाया जाता है।
बोंगना–(हिं० पु०) चौडे मुख का एक प्रकार का बरतन।
बोआई–(हिं० स्त्री०) बोने का काम, बोने की मजदूरी।
बोक, बोकरा–(हिं० पु०) बकरा।
बोकरी–(हिं० स्त्री०) देखो बकरी।
बोखार–(हिं० पुं०) देखो बुखार, ज्वर।
बोगुमा–(हिं० पु०) घोडे का एक रोग जिसमें उनके पेट में पीड़ा होती है।
बोज–(हिं० पुं०) घोडे का एक भेद।
बोजा–(फा० स्त्री०) चावल से बनी हुई शराब
बोझ–(हिं० पुं०) ऐसा गट्ठर, राशि आदि जिसको उठाने में कठिनता जान पडे, भार, गुरुत्व, भारीपन, कठिन कार्य, खटका या असमञ्जस, उतना ढेर जितना बैलगाड़ी आदि पर लादा जा सके, वह व्यक्ति जिसके सबंध में ऐसी बात करना हो जो कठिन जान पडे, उतना भार जितना एक बैल की पीठ पर लादा जावे, कठिन कार्य को पूरी करने की चिन्ता।
बोझना–(हिं० क्रि०) नाव गाड़ी आदि

पर माल रखना।
बोझल–(हिं०वि०) भारी, वजनदार।
बोझा–(हिं०पु०) देखो बोझ।
बोझाई–(हिं० स्त्री०) बोझने या लादने का काम, इस काम की मजदूरी।
बोट–(अं०स्त्री०) नाव, नौका, अग्निबोट, स्टीमर।
बोटा–(हिं० पु०) लकड़ी का छोटा मोटा कटा हुआ टुकड़ा।
बोटी–(हिं०स्त्री०) माम का छोटा टुकड़ा, **बोटी बोटी करना**–टुकड़े टुकड़े करना
बोड़–(हिं०स्त्री०) सिर पर पहरने का एक प्रकार का फूल के आकार का गहना, बोर
बोड़री–(हिं० स्त्री०) नाभि, तोंदी।
बोड़ल–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पहाड़ी पक्षी।
बोड़ा–(हिं०पु०) अजगर, बड़ा सर्प, एक प्रकार की लंबी पतली फली जिसकी तरकारी खाई जाती है, लोबिया।
बोड़ी–(हिं०स्त्री०) दमड़ी, अति अल्प धन, पौधे वृक्ष आदि की फली, अगस्त की कली।
बोत–(हिं० पु०) घोड़ों की एक जाति।
बोतक–(हिं० पु०) पान की पहले वर्ष की खेती।
बोतल–(अं०स्त्री०) काच का लंबी गरदन का एक पात्र जो द्रव पदार्थ रखने के काम में आता है।
बोतलिया–(हिं०वि०) बोतल के रंग का, कालापन लिये हरा।
बोता–(हिं० पु०) ऊँट का बच्चा जिस पर सवारी न होती हो।
बोदकी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कुसुम जिसके फूल का रंग बनता है।
बोदर–(हिं०स्त्री०) लचीली छड़ी, ताल के किनारे का सिंचाई का पानी चढ़ाने का स्थान।
बोदा–(हिं० वि०) जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, मूर्ख, सुस्त, मट्ठर, जो दृढ़ या मजबूत न हो।
बोदापन–(हिं०पु०) मूर्खता, नासमझी।
बोध–(सं०पु०) ज्ञान, भ्रम का न होना, सन्तोष धैर्य, धीरज।
बोधक–(सं०पु०) ज्ञापक, ज्ञान कराने वाला, श्रृंगार रस के हावों में से एक जिसमें किसी संकेत या क्रिया द्वारा अपने मन का भाव दूसरे को जताया जाता है (वि०) ज्ञान कराने वाला।
बोधकर–(सं० पु०) जो प्रातः काल किसी को जगाता है।
बोधगम्य–(सं०वि०) समझ में आने योग्य।
बोधस–(सं० पु०) अभिप्राय जानने वाला, श्री कृष्ण।
बोधन–(सं० नपु०) ज्ञापन, जताना, विज्ञापन, इश्तहार, अग्नि को सुलगाना, चैतन्य संपादन।
बोधना–(हिं०क्रि०) जान देना समझाना।
बोधनी–(सं० स्त्री०) बोध, पीपल का पेड़, कार्तिक शुक्ला एकादशी।
बोधनीय–(सं० वि०) समझाने लायक।
बोधान–(सं०पु०) बृहस्पति, विष्णु।
बोधि–(सं० पु०) बोध, ज्ञान, पीपल का वृक्ष।
बोधित–(सं०वि०) ज्ञापित, जताया हुआ।
बोधितरु–(सं० पु०) पीपल का वृक्ष, गया में स्थित वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे गौतम बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया था।
बोधिद्रुम–(सं०पु०) देखो बोधितरु।
बोधिसत्व–(सं०नपु०) वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो।
बोध्य–(सं०वि०) बोधयोग्य, बोधनीय।
बोना–(हिं० क्रि०) किसी दाने या फल के बीज को इसलिये मिट्टी में डालना जिसमें उसमें से अंकुर फूटें और पौधा उत्पन्न हो, बिखराना, इधर उधर डालना।
बोवा–(हिं० पु०) स्तन थन, गट्ठर, गठरी, घर का सामान।
बोव्वी–(हिं० स्त्री०) पुन्नाग जाति का एक सदाबहार वृक्ष।
बोय–(हिं०स्त्री०) गन्ध, दुर्गन्ध, बदबू।
बोर–(हिं०पु०) डुबाने की क्रिया, गोल कंगूरेदार घुँघरू, गुच्छ के आकार का एक गहना जो सिर पर पहना जाता है।
बोरका–(हिं० पु०) दावात, मिट्टी की दावात जिसमें लड़के खड़िया मिट्टी घोलकर रखते हैं।
बोरना–(हिं० क्रि०) किसी द्रव पदार्थ में निमग्न करना, डुबोना, कलंकित करना, बदनाम करना, योग देना, मिलाना, डुबाकर भिगोना, घुले हुए रंग में डुबाकर रँगना।
बोरसी–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का वह बरतन जिसमें आग रक्खी जाती है, अंगीठी।
बोरा–(हिं०पु०) अन्न आदि रखने का टाट का बना हुआ थैला, छोटा घुँघरू।
बोरिका–(हिं० पु०) देखो बोरका।
बोरिया–(हिं० स्त्री०) छोटा थैला, (फा० पु०) विस्तर, चटाई, **बोरिया बँधना उठाना**–यात्रा की तैयारी करना
बोरी–(हिं० स्त्री०) टाट की छोटी थैली, छोटा बोरा।
बोरो–(हिं० पु०) एक प्रकार का मोटा धान।
बोर्ड–(अं० पुं०) किसी स्थायी कार्य के लिये बनी हुई समिति, मोटे कागज़ की दफ्ती, वह समिति, या कमेटी जो माल के मोकदमों का फैसला करती है।
बोर्डिङ् हाउस्–(अं० पु०) विद्यार्थियों के रहने का मकान, छात्रावास।
बोल–(हिं० पु०) वाणी, वचन, व्यंग, ताना, प्रतिज्ञा, वादा, संख्या, अदद, गीत का टुकड़ा, अन्तरा, एक प्रकार का सुगन्धित गोंद, **बोलवाला होना**–मान-मर्यादा बनी रहना।
बोलचाल–(हिं०स्त्री०) वार्तालाप, बातचीत, परस्पर सद्भाव, मेल मिलाप, हस्तक्षेप, प्रति दिनकी बातचीत, चलतू भाषा।
बोलता–(हिं० पु०) आत्मा, जीवन तत्व, अर्थ युक्त शब्द, बोलने वाला प्राणी, मनुष्य, हुक्का, प्राण, (वि०) वाचाल, बकवादी।
बोलती–(हिं० स्त्री०) वाक्, वाणी।
बोलनहारा–(हिं० वि०) बोलने वाला,

(पु०) क्षुद्र आत्मा।
बोलना-(हिं० क्रि०) मुख से शब्द निकालना, किसी वस्तु का शब्द उत्पन्न करना, कथन करना, कहना, कहलाना, पुकारना, आवाज़ देना, ठहराना, रोक टोक करना, बोलना चालना-वार्तालाप करना, बोल जाना-मृत्यु को प्राप्त होना, कुछ शेष न रहना।
बोलवाना-(हिं० क्रि०) उच्चारण कराना, देखो बुलवाना।
बोलवाला-(अ० पु०) एक बहुत ऊंचा सदा बहार वृक्ष।
बोलसर-(हि० पु०) मौलसिरी का पेड़। घोड़े की एक जाति।
बोलाचाली-(हि० स्त्री०)देखो बोलचाल।
बोलाना-(हि० क्रि०) देखो बुलाना।
बोलावा-(हि० पु०) देखो बुलावा, निमन्त्रण।
बोली-(हि० स्त्री०) मुख से निकला हुआ शब्द, वाणी,अर्थ युक्त शब्द वा वाक्य, वचन, नीलाम करने वाले और लेने वाले का चिल्ला कर दाम कहना, किसी प्रदेश की भाषा, हँसी दिल्लगी, बोली बोलना-व्यंगके शब्द बोलना।
बोलीदार-(हिं०पुं०) वह असामी जिसको जोतने बोने के लिये खेत जबानी कह कर दिया गया हो।
बोल्लाह-(हि०पु०) घोडेकी एक जाति।
बोवना-(हि० क्रि०) देखो बेना।
बोवाई-(हि० स्त्री०) बोने की क्रिया या भाव।
बोवाना-(हिं० क्रि०) बोनेका काम दूसरे से कराना।
बोह-(हि० स्त्री०) डुबकी, गोता।
बोहनी-(हि० स्त्री०) किसी सौदे की पहली बिक्री, किसी दिन की पहली बिक्री।
बोहारना-(हि० क्रि०) देखो बुहारना।
बोहारी-(हि० स्त्री०) झाड़ू।
बोहित-(हि० पु०) बड़ी नाव।
बौंड़-(हिं० स्त्री०) किसी पौधे की डोरी के रूप में दूर तक जाने वाली टहनी, लता, बेल।
बौंड़ना-(हिं० क्रि०) लता की तरह बढ़ना, टेहनी फेंकना।
बौंडर-(हि० पु०) चक्र वायु, बवंडर, वायु का झोका।
बौंड़ी-(हिं० स्त्री०) लता या पौधे के कच्चे फल, फली, छीमी, बोड़ी,ढोंढ़।
बौआना-(हि० क्रि०) स्वप्न की अवस्था में बोलना, बर्राना, अडबड बकना।
बौखल-(हि०वि०) पागल, सनकी, झक्की
बौखलाना-(हि० क्रि०) सनक जाना, थोड़ा पागल हो जाना।
बौखा-(हिं० स्त्री०) हवा का तेज झोका।
बौछाड-(हि० स्त्री०) वायु के झोंके से तिरछी आती हुई पानी के बूँदों का समूह, झपास, किसी वस्तु का अधिक संख्या में कहीं पर आकर गिरना, लगातार बात पर बात जो किसी से कही जाय, कोई पदार्थ बहुत सा देते जाना या सामने रखते जाना, व्यंगपूर्ण बात, ताना।
बौछार-(हिं०स्त्री०) देखो बौछाड़।
बौड़हा-(हि० वि०) पागल, सनकी, बावला।
बौता-(हि० पु०) समुद्र में तैरता हुआ निशान।
बौद्ध-(स० पु०) गौतमबुद्ध के मत का अनुयायी (वि०) बुद्ध द्वारा प्रचारित।
बौद्धधर्म-(हि० पु०) गौतम बुद्ध का चलाया हुआ मत, भगवान् बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म।
बौधायन-(स०पु०) एक ऋषि का नाम
बौना-(हिं०पु०) वामन, छोटे डील डौल का मनुष्य, बहुत ठिगना आदमी।
बौभुक्ष-(स० वि०) क्षुधित, भूखा।
बौर-(हि० पु०) आम के वृक्ष की मञ्जरी, मौर।
बौरई-(हि० स्त्री०) पागलपन, सनक।
बौरना-(हि० क्रि०) आम के वृक्ष का फूलना, इसमें मञ्जरी निकलना।
बौरहा-(हि०वि०) विक्षिप्त, पागल,सनकी।
बौरा-(हि० वि०) विक्षिप्त, पागल, अज्ञान, गूंगा, अज्ञान।
बौराई-(हि० स्त्री०) सनक, पागलपन।
बौराना-(हि० क्रि०) विक्षिप्त होना, पगला जाना, सनक जाना, उन्मत्त होना, विवेक या बुद्धि रहित हो जाना।
बौराह-(हिं० वि०) पागल, सनकी, बावला।
बौरी-(हि०स्त्री०) बावली या पागल स्त्री।
बौलड़ा-(हि०पु०) सिर पर पहरने का एक प्रकार का गहना।
बौलसिरी-(हि०स्त्री०) देखो मौलसिरी।
ब्यंग, ब्यंजन-(हि० पु०) देखो व्यङ्ग, व्यञ्जन।
ब्यतीतना-(हि०क्रि०)व्यतीत होना,बीतना।
ब्यक्ति, ब्यजन-(हि०पु०) देखो व्यक्ति, व्यजन।
ब्यथा, ब्यथित-(हि० पु०) देखो व्यथा, व्यथित।
ब्यवहर-(हि०पु०) देखो व्यवहार,उधार।
ब्यवहरिया-(हि० वि०) रुपये का लेन-देन करने वाला महाजन।
ब्यवसाय-(हि०पु०) देखो व्यवसाय।
ब्यवस्था-(हि० स्त्री०) देखो व्यवस्था।
ब्यवहार-(हि० पु०) व्यवहार, रुपये का लेनदेन, व्यवहारिक सबध, इष्ट मित्र का सबंध, सुख दुःख में परस्पर समिलित होने की रीति।
ब्यवहारी-(हि० वि०) लेन देन करने वाला, जिसके साथ लेन देन हो, व्यापारी, कार्यकर्ता, मामला करने वाला, जिसके साथ प्रेम का व्यवहार हो।
ब्यसन ब्यसनी-(हिं० वि०) देखो व्यसन, व्यसनी।
ब्याज-(हि० पुं०) वृद्धि, सूद, देखो व्याज।
ब्याध, ब्याधा-(हि० पु०) देखो व्याध, व्याधा।
ब्याधि-(हि०स्त्री०) देखो व्याधि,बीमारी।
ब्याना-(हि० क्रि०) पशुओं का बच्चा पैदा करना, गर्भ से निकलना, उत्पन्न करना।
ब्यापना-(हि० क्रि०) चारो ओर व्याप्त

होना या फैलना, प्रभाव डालना, ग्रसना, घेरना।
व्यापार-(हिं०पु०) देखो व्यापार।
व्यारी-(हिं०स्त्री०) रात का भोजन,व्यालू।
व्याल-(हिं०पु०) देखो व्याल।
व्याली-(हिं० स्त्री०) सर्पिणी, नागिन, (वि०) सर्प को धारण करने वाला।
व्यालू-(हिं०पु०) रात का भोजन।
व्याह-(हिं० पुं०) देखो विवाह, पाणिग्रहण, दार परिग्रह।
व्याहता-(हिं० वि०) जिसके साथ विवाह हुआ हो।
व्याहना-(हिं०क्रि०) किसी का किसी के साथ, विवाह सम्बन्ध कर देना।
व्याहुला-(हिं०वि०) विवाह सम्बन्धी।
व्यूगा-(हिं०पुं०) चमडे को रगड़ कर मुलायम करने का चमार का एक लकड़ी का औजार।
व्योंचना-(हिं०क्रि०) किसी अंग का एक बारगी इधर उधर मुड़ कर पीड़ा उत्पन्न होना, मुरक जाना।
व्योंत-(हिं०पु०) विवरण, भावना, युक्ति, उपाय, साधन या सामग्री आदि की सीमा, काम पूरा होने का हिसाब, किताब, पहरावा बनाने के लिये कपडे की काट छांट, प्रबन्ध, अवसर, संयोग, आयोजन, तैयारी, समाई, ढब, तरीका।
व्योंतना-(हिं०क्रि०) कोई पहरावा बनाने के लिये कपडे को नाप कर काटना छाटना।
व्योंताना-(हिं०क्रि०) शरीर की नाप के अनुसार कपडा कटवाना।
व्योपार, व्योपारी-(हिं०)देखो व्यापार, व्यापारी।
व्योरन-(हिं०स्त्री०) सुझलाने या सँवारने की क्रिया या ढंग।
व्योरना-(हिं०क्रि०) उलझी हुई वस्तु के तार तार अलगाना, उलझे हुए बालों को सँवारना।
व्योरा-(हिं० पु०) विवरण, तफसील, वृत्तान्त, समाचार, किसी विषय के भीतर की सारी बात, अन्तर, भेद, व्योरेवार-विस्तार सहित।
व्योसाय-(हिं०पु०) देखो व्यवसाय।
व्योहर-(हिं०पु०) रुपये का लेन देन, व्यापार।
व्योहरा-(हिं०पुं०) सूद पर रुपया देने वाला, हुण्डी चलाने वाला।
व्योहरिया-(हिं० पु०) महाजनी करने वाला, सूद पर रुपया कर्ज देने वाला।
व्यौहर-(हिं०पु०) देखो व्योहर।
व्यौहरिया-(हिं०पु०) देखो व्योहरिया।
व्यौहार-(हिं०पु०) देखो व्योहार।
व्रज-(हिं०पु०) देखो व्रज।
व्रजना-(हिं०क्रि०) चलना।
व्रजवादिनी-(हिं०पु०) एक प्रकार का आम।
ब्रध्न-(सं०पु०) सूर्य, शिव, दिन, घोडा।
ब्रह्मंड-(हिं०पु०) देखो ब्रह्माण्ड।
ब्रह्म-(सं०नपु०) वेद, तपस्या, तप, सत्य, तत्व, यथार्थ, ज्ञानमय परमात्मा,आनन्द स्वरुप आत्मा, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से पचीसवा योग, आत्मा, चैतन्य, आठ की संख्या, ब्रह्मराक्षस, वह ब्राह्मण जो मरकर प्रेत योनिको प्राप्त हुआ हो, ब्रह्मा, ब्राह्मण, ब्रह्मकन्यका-ब्राह्मी बूटी, ब्रह्मकर-वह धन जो ब्राह्मण, गुरु या पुरोहित को दिया जावे, ब्रह्मकर्म-वेद विहित कार्य, ब्रह्म कल्प-उतना समय जितने में एक ब्रह्मा रहते हैं, ब्रह्मकाष्ठ-शहतूत, ब्रह्मकृत-विष्णु, शिव, इन्द्र, ब्रह्मकोशी-अजमोदा।
ब्रह्मगति-(सं०स्त्री०) निर्वाण, मोक्ष।
ब्रह्मगर्भ-(सं०पुं०) अजमोदा, हुलहुल का फूल।
ब्रह्मगाँठ-(हिं०स्त्री०) जनेऊ में की गाठ।
ब्रह्मगीतिका-(सं०स्त्री०) ब्रह्मा की स्तुति
ब्रह्मगोल-(सं०पु०) भूमण्डल, पृथ्वी।
ब्रह्मग्रन्थि-(सं०पु०) यज्ञोपवीत की मुख्य गाँठ।
ब्रह्मग्रह-(सं०पु०) ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मघातक-(सं०पु०) ब्रह्महत्या कारक।
ब्रह्मघाती-(सं०वि०) ब्राह्मण की हत्या करने वाला।
ब्रह्मघातिनी-(सं०स्त्री०) ब्राह्मण की हत्या करने वाली स्त्री।
ब्रह्मघोष-(सं० पुं०) वेदध्वनि, वेदपाठ।
ब्रह्मघ्न-(सं०वि०) ब्राह्मण का मारने वाला
ब्रह्मचर्य-(सं० नपु०) एक आश्रम का नाम, आठ प्रकार के मैथुन से बचने की साधना, यम का एक भेद वीर्य को सुरक्षित करने का प्रतिबन्ध, पुरुष को स्त्री सभोग तथा अन्य वासनाओं से अलग रह कर केवल अध्ययन करने में निरन्तर लगे रहना।
ब्रह्मचारिणी-(सं० स्त्री०) ब्रह्मचर्य पालन करने वाली स्त्री, दुर्गा की एक मूर्ति, पार्वती, सरस्वती।
ब्रह्मचारी-(सं० पु०) उपनयन के बाद नियम पूर्वक वेदादि के अध्ययन के लिये गुरू के घर में रहने वाला एक गन्धर्व का नाम।
ब्रह्मज-(सं० पु०) हिरण्यगर्भ।
ब्रह्मजटा-(सं० स्त्री०) दमनक, दौने का पौधा।
ब्रह्मजन्म-सं०नपु०) उपनयन सस्कार।
ब्रह्मजीवी-(सं० पु०) श्रौत आदि कर्म करा के जीविका चलाने वाला।
ब्रह्मज्ञ-(सं० पु०) विष्णु, कार्तिकेय (वि०) ब्रह्मको जानने वाला।
ब्रह्मज्ञान-(सं० नपु०) ब्रह्मविषयक ज्ञान, अपने आत्मा का यथार्थ अनुभव, अद्वैत सिद्धान्त का पूर्ण बोध।
ब्रह्मज्ञानी-(सं० वि०) परमार्थ तत्व का ज्ञान रखने वाला।
ब्रह्मज्य-(सं० वि०) ब्राह्मण के ऊपर अत्याचार करने वाला।
ब्रह्मण्य-(सं० पुं०) विष्णु, शनैश्चर, कार्तिकेय, (वि०) ब्रह्म सम्बन्धी, ब्रह्मण्यदेव-श्रीकृष्ण।
ब्रह्मण्यता-(सं० पु०) ब्राह्मण का धर्म या भाव।
ब्रह्मताल-(सं० स्त्री०) चतुर्मुख ताल का नाम।

ब्रह्मत्व–(सं० नपुं०) ब्राह्मणत्व, ब्रह्मा होने भाव या धर्म।
ब्रह्मदण्ड–(सं० पुं०) ब्राह्मण का शाप रूप दण्ड, ब्रह्म शाप।
ब्रह्मदर्भा–(सं०स्त्री०) यमानिका, अजवाइन
ब्रह्मदान–(सं० नपुं०) वेद का अध्ययन।
ब्रह्मदारु–(सं०नपुं०) शहतूत का पेड़।
ब्रह्मदिन–(सं०पुं०) ब्रह्मा का एक दिन।
ब्रह्मदैत्य–(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जिसने मरने पर प्रेतयोनि पाई हो, ब्रह्मराक्षस
ब्रह्मदोष–(सं०पुं०) ब्रह्महत्या, ब्राह्मण की हत्या करने का पाप।
ब्रह्मदोषी–(सं० वि०) जिसको ब्रह्महत्या लगी हो।
ब्रह्मद्रोही–(सं० वि०) ब्राह्मणों से द्रोह करने वाला।
ब्रह्मद्वार–(सं० नपुं०) खोपड़ी के बीच का छिद्र, ब्रह्मरन्ध्र।
ब्रह्मधातु–(सं० पुं०) ब्रह्मरूप धातु, रुद्र।
ब्रह्मनाभ–(सं० पुं०) विष्णु।
ब्रह्मनिष्ठ–(सं० वि०) ब्रह्म ज्ञान सम्पन्न ब्राह्मणों का भक्त।
ब्रह्मपति–(सं० पुं०) बृहस्पति।
ब्रह्मपत्र–(सं० नपुं०) पलास का पत्ता।
ब्रह्मपद–(सं० पुं०) ब्रह्मत्व, मोक्ष मुक्ति ब्राह्मणत्व।
ब्रह्मपर्णी–(सं०स्त्री०) पिठवन नाम की लता
ब्रह्मपादप–(सं० पुं०) पलास का वृक्ष।
ब्रह्मपाश–(सं० पुं०) ब्रह्मा का दिया हुआ पाश नामक अस्त्र।
ब्रह्मपिशाच–(सं० पुं०) ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मपुत्र–(सं० पुं०) एक बड़ी नदी जो मानसरोवर से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है, ब्रह्मा का पुत्र, वसिष्ठ, नारद, मारीचि।
ब्रह्मपुत्री–(सं०स्त्री०) सरस्वती नदी।
ब्रह्मपुर–(सं० नपुं०) हृदय, ब्रह्मलोक।
ब्रह्मपुराण–(सं० नपुं०) वेदव्यास प्रणीत पुराण जिसको लोग आदि पुराण कहते हैं।
ब्रह्मपुरी–(सं०स्त्री०) काशी धाम।
ब्रह्मपुरोहित–(सं० पुं०) देवताओं के पुरोहित, बृहस्पति।
ब्रह्मफास–(हिं०स्त्री०) देखो ब्रह्मपाश।
ब्रह्मबल–(सं० पुं०) वह तेज या शक्ति जो ब्राह्मण को तप करने से प्राप्त हो।
ब्रह्मबीज–(सं०नपुं०) प्रणव, ओंकार।
ब्रह्मभवन–(सं०नपुं०) ब्रह्मलोक।
ब्रह्मभाव–(सं० पुं०) ब्रह्म का स्वरूप।
ब्रह्मभूय–(सं० नपुं०) ब्रह्मत्व, मोक्ष।
ब्रह्मभोज–(सं०पुं०) ब्राह्मणों को भोजन कराना।
ब्रह्ममय–(सं०वि०) ब्रह्म स्वरूप।
ब्रह्ममुहूर्त–(सं० पुं०) सूर्योदय के तीन चार घड़ी पहले का समय, प्रभात, तड़का।
ब्रह्ममेखल–(सं० पुं०) मुञ्जतृण, मूंज।
ब्रह्मयज्ञ–(सं० पुं०) शिष्यों का विधिपूर्वक वेदाभ्यास, वेदाध्ययन।
ब्रह्मयोग–(सं० पुं०) समाधि का एक भेद, अठारह मात्राओं का एक ताल।
ब्रह्मयोनि–(सं० वि०) जिसका उत्पत्ति कारण ब्रह्म हो।
ब्रह्मरथ–(सं०पुं०) ब्रह्मा का वाहन, हंस।
ब्रह्मरन्ध्र–(सं० नपुं०) ब्रह्मतालु, मस्तक के मध्य का वह गुप्त छिद्र जिसमें से होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।
ब्रह्मराक्षस–(सं० पुं०) वह ब्राह्मण जो मर कर प्रेत योनि को प्राप्त हुआ हो।
ब्रह्मरात–(सं० नपुं०) याज्ञवल्क्य मुनि का एक नाम।
ब्रह्मरात्र–(सं०पुं०) देखो ब्रह्ममुहूर्त।
ब्रह्मरात्रि–(सं०पुं०) ब्रह्मा की एक रात जो एक कल्प के बराबर होती है।
ब्रह्मराशि–(सं०पुं०) पवित्र ग्रन्थ समूह।
ब्रह्मरीति–(सं० स्त्री०) ब्रह्मा या ब्राह्मण की रीति।
ब्रह्मरूपक–(सं० पुं०) एक प्रकार का छन्द जिसमें सोलह अक्षर होते हैं, इसको चित्रा या चञ्चला भी कहते हैं।
ब्रह्मरेखा–(सं०स्त्री०) भाग्य या अभाग्य का लेख, ब्रह्मलेख।
ब्रह्मर्षिदेश–(सं० पुं०) कुरुक्षेत्रादि चार देश का नाम।
ब्रह्मलेख–(सं० पुं०) भाग्य या अभाग्य का लेख जिसके विषय में कहा जाता है कि ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं।
ब्रह्मर्षि–(सं० पुं०) ब्राह्मण ऋषि।
ब्रह्मलोक–(सं० पुं०) वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं, सत्यलोक।
ब्रह्मवक्ता–(सं० पुं०) परब्रह्म रूप सत्य का प्रचारक।
ब्रह्मवध–(सं०पुं०) ब्राह्मण की हत्या।
ब्रह्मवर्चस–(सं०नपुं०) वह शक्ति जिसको ब्राह्मण तप करने से प्राप्त करता है।
ब्रह्मवाद–(सं० पुं०) वेदपाठ, वेद का पढ़ना पढ़ाना।
ब्रह्मवादी–(सं० पुं०) वेदान्ती, वेदों को पढ़ाने वाला।
ब्रह्मवादिनी–(सं० स्त्री०) गायत्री।
ब्रह्मवास–(सं० पुं०) ब्रह्मलोक।
ब्रह्मविद्–(सं० पुं०) विष्णु, शिव, (वि०) ब्रह्म का जानने वाला, वेद का अर्थ समझने वाला।
ब्रह्मविद्या–(सं० स्त्री०) ब्रह्मज्ञान, दुर्गा, उपनिषद् का एक भेद, वह विद्या जिसके द्वारा ब्रह्म का ज्ञान हो सके।
ब्रह्मविवर्धन–(सं० पुं०) विष्णु (नपुं०) तप आदि का विशेष रूप से बढ़ना।
ब्रह्मवृक्ष–(सं० पुं०) पलास का वृक्ष, गूलर का पेड़।
ब्रह्मवृत्ति–(सं०स्त्री०) ब्राह्मण की जीविका।
ब्रह्मवृद्ध–(सं० वि०) जिसकी शक्ति तप करने से बढ़ गई हो।
ब्रह्मवृन्द–(सं० नपुं०) ब्राह्मण सभा।
ब्रह्म वेद–(सं० पुं०) वेदान्त।
ब्रह्मवैवर्त–(सं०नपुं०) वह प्रतीति मात्र जो ब्रह्म का कारण हो, ब्रह्म के कारण प्रतीत होने वाला जगत्, अठारह पुराणों में से एक पुराण का नाम, श्री कृष्ण।
ब्रह्मव्रत–(सं० नपुं०) वह व्रत जो ब्रह्मलोक की प्राप्ति के लिये किया जाता है
ब्रह्मशाला–(सं० नपुं०) वेदाध्ययन का

स्थान।
ब्रह्म शासन-(सं०नपुं०) वेद या स्मृति की आज्ञा।
ब्रह्मसत्र-(सं०नपुं०) ब्रह्मयज्ञ।
ब्रह्म समाज-(सं० पुं०) राजा राममोहन राय का प्रचार किया हुआ एक संप्रदाय।
ब्रह्म सर्प-(सं०पुं०) हलाहल विष।
ब्रह्म सुता-(सं०स्त्री०) सरस्वती।
ब्रह्म सू-(सं०पुं०) प्रद्युम्न, अनिरुद्ध।
ब्रह्मसूत्र-(सं० नपुं०) यज्ञोपवीत, जनेऊ, व्यास मुनि का बनाया हुआ शारीरिक सूत्र जिसमें ब्रह्म का प्रतिपादन है।
ब्रह्मस्तम्भ-(सं०पुं०) ब्रह्माण्ड।
ब्रह्मस्वरूप-(सं० पुं०) जगत् प्रकृति का प्रतिरूप।
ब्रीडना-(हिं०क्रि०) लज्जित होना।
ब्रह्महत्या-(सं० स्त्री०) ब्राह्मण का वध, ब्राह्मण को मार डालना।
ब्रह्महन्-(सं० पुं०) ब्रह्महत्या करने वाला
ब्रह्महुत-(सं० नपुं०) अतिथि पूजन रूप यज्ञ।
ब्रह्मा-(सं०पुं०) ब्रह्म के सगुण रूपों में से वह जो सृष्टि की रचना करता है, विधाता, यज्ञ के एक ऋत्विक् का नाम
ब्रह्माक्षर-(सं० नपुं०) प्रणव, ओंकार।
ब्रह्माणी-(सं०स्त्री०) ब्रह्मा की स्त्री, शक्ति, सावित्री, गायत्री, दुर्गा।
ब्रह्माण्ड-(सं० नपुं०) चौदहो भुवनों का समूह, विश्वगोलक, सम्पूर्ण विश्व, कपाल, खोपड़ी।
ब्रह्मादि जाता-(सं०स्त्री०) गोदावरी।
ब्रह्मानन्द-(सं०पुं०) ब्रह्म स्वरूप आनन्द, ब्रह्मज्ञान होने पर जो आनन्द प्राप्त होता है
ब्रह्माभ्यास-(सं०पुं०) वेदाभ्यास।
ब्रह्मायतन-(सं०नपुं०) ब्रह्ममन्दिर।
ब्रह्मासन-(सं०नपुं०) ध्यानासन, योगासन
ब्रह्मावर्त-(सं०पुं०) सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।
ब्रह्मास्त्र-(सं० नपुं०) वह सबसे श्रेष्ठ अस्त्र जो मन्त्रों से चलाया जाता था।
ब्रह्मास्य-(सं०नपुं०) ब्राह्मण का मुख।
ब्रह्मिष्ठा-(सं०स्त्री०) दुर्गा।
ब्रात-(हिं०पुं०) देखो व्रात्य।
ब्राह्म-(सं०वि०) ब्राह्मण का किया हुआ;
ब्राह्मण-(सं०पुं०) अग्रजन्मा, भूदेव, विप्र, ब्राह्मण जाति, शिव, विष्णु, मंत्र से भिन्न वेद का अंश, अग्नि, एक नक्षत्र का नाम।
ब्राह्मणता-(सं०स्त्री०) ब्राह्मणत्व (सं०नपुं०) ब्राह्मण का भाव या धर्म।
ब्राह्मण प्रिय-(सं० पुं०) विष्णु।
ब्राह्मण भोजन-(सं० नपुं०) ब्राह्मणों का खिलाना।
ब्राह्मण वध-(सं०पुं०) ब्राह्मण की हत्या।
ब्राह्मणी-(सं०स्त्री०) ब्राह्मण की स्त्री।
ब्राह्मण्य-(सं० नपुं०) ब्राह्मण का धर्म, विप्रत्व।
ब्राह्म मुहूर्त-(सं० पुं०) अरुणोदय काल के प्रथम दो दण्ड।
ब्राह्म समाज-(सं०पुं०) एक धर्म समाज जिसमें एक मात्र परब्रह्म की उपासना की जाती है।
ब्राह्मय-(सं०वि०) ब्रह्म संबंधी।
ब्राह्मी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, सरस्वती, रोहिणी नक्षत्र, एक बूटी का नाम, भारतवर्ष की एक प्राचीन लिपि जिससे नागरी बँगला, आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं।
ब्राह्मी कन्द-(सं०पुं०) वाराही कन्द।
ब्रिगेड-(अं०पुं०) सेना का समूह।
ब्रिटिश-(अं०वि०) इंगलिस्तान का, अंग्रेजी
ब्रीवियर-(अं० पुं०) एक प्रकार का छोटा टाइप।
ब्रुश-(अं०पुं०) देखो बुरुस।
ब्लाक-(अं०पुं०) चित्र छापने का ठप्पा।

भ

भ-हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ तथा पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है—इसके उच्चारण में ओष्ठ के साथ जिह्वा का अग्रभाग स्पर्श होता है इससे यह स्पर्श वर्ण कहलाता है।
भ-(सं० नपुं०) नक्षत्र, ग्रह, राशि, भौंरा, पर्वत, भ्रांति, छन्दशास्त्र के अनुसार वह गण जिसका आदि का वर्ण गुरु तथा शेष दो वर्ण लघु होते हैं।
भंकार-(हिं० पुं०) भयंकर ध्वनि या शब्द।
भँकारी-(हिं० स्त्री०) भुनगा, एक प्रकार का छोटा मच्छड़।
भंग-(हिं० पुं०) देखो भङ्ग, खण्ड, टुकड़ा, भाँग।
भंगड़-(हिं०वि०) बहुत भाँग पीने वाला, वह जो प्रतिदिन बहुत भाँग पीता हो, भँगेड़ी।
भंगना-(हिं० क्रि०) तोड़ना, दबाना, टूटना, दबना।
भंगरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो भाँग के रेशे से बुना जाता है, वर्षाकाल में होने वाली एक प्रकार वनस्पति, भँगरैया।
भंगराज-(हिं० पुं०) कोयल के तरह की एक चिड़िया, देखो भंगरा।
भंगरैया-(हिं० स्त्री०) देखो भंगरा।
भंगार-(हिं० पुं०) वह गड्ढा जो कूप खनते समय पहले खोदा जाता है, वह गड्ढा जो बरसात के दिनों में ज़मीन के दब जाने से बन जाता है, कूड़ा करकट, घासफूस।
भंगिरा-(हिं० पुं०) देखो भंगरा।
भंगी-(हिं० वि०) नष्ट होने वाला, भंग करने वाला, रेखाओं के झुकाव से खींचा हुआ चित्र, एक अ[illegible] जाति जिसका

काम मूत्र आदि उठाना है, (वि०) भाँग पीने वाला, भँगेड़ी।
भगुर-(हिं० वि०) देखो भङ्गुर, नाशवान्, टेढ़ा।
भगेडी-(हि०पु०) अधिक भाँग पीने वाला
भंगेरा-(हि० पु०) भाँग की छाल का बना हुआ कपड़ा, भगरैया।
भंगेला-(हि० पु०) देखो भगेरा।
भजक-(हिं०वि०)देखो भञ्जक,तोड़ने वाला।
भजन-(हिं० पु०) देखो भञ्जन, तोड़ने का काम।
भंजना-(हिं० क्रि०) विभक्त होना, टुकडे टुकडे होना, किसी बडे सिक्के का छोटे सिक्कों मे बदला जाना, भुनना, बटा जाना, मोड़ा जाना, भाँजा जाना।
भंजनी-(हि० स्त्री०) करघे का एक अग जो ताने के फैलाने के लिये उसके किनारे पर लगा रहता है।
भंजाना-(हि० क्रि०) तोड़वाना, बडे सिक्के के बदले मे छोटे सिक्के देना, भुनाना, रस्सी कागज आदि को भाँजने मे दूसरे को नियुक्त करना।
भझा-(हिं० पु०) कुवे के किनारे के खभे पर आठ बल रक्खी हुई लकड़ी।
भंटकटैया-(हिं०पु०) देखो भटकटैया।
भटा-(हि० पु०) वैगन।
भड-(हिं० पु०) देखो भाँड़, (वि०) गाली बकने वाला, धूर्त।
भडताल-(हिं० पु०) एक प्रकार का नाच और गाना जिसमे एक मनुष्य गाता है और शेष लोग उसके पीछे तालियाँ पीटते हैं।
भडतिल्ला-(हिं० पुं०) देखो भडताल।
भडना-(हि० क्रि०) भग करना, तोड़ना, नष्ट भ्रष्ट करना, अपकीर्ति फैलाना, बदनाम करना,हानि पहुँचाना,बिगाड़ना।
भंडफोड-(हि० पु०) मिट्टी के बरतनों को गिराना या तोड़ना फोड़ना, मिट्टी के बरतनों का टूटना फूटना, भेद खोलने का काम, भटाफोड़।
भॅड़भॉड़-(हि० पु०) एक कँटीला पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ औषधि के काम में आती हैं।
भॅड़रिया-(हि० पु०) एक जाति का नाम, इस जाति के लोग शनैश्चर आदि ग्रहों का दान लेते हैं तथा लोगों का हाथ देखकर भविष्य फल बतलाते हैं, पाखडी, ढोंगी, धूर्त (स्त्री०) दीवार का ताखा जिसमें पल्ले लगे हो।
भंड़सार, भंडसाल-(हि० स्त्री०) वह गोदाम जहा सस्ता अन्न खरीद कर महगा बेंचने के लिये इकट्ठा किया जाता है।
भडा-(हि० पु०) पात्र, बरतन, भाडा, भडार, रहस्य, भेद, भडा फूटना-भेद खुल जाना।
भडाना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना,तोड़ना, फोड़ना, उपद्रव करना, उछल कूद करना।
भडार-(हि० पु०) कोष, खजाना, अन्न रखने का स्थान, कोठार, पाकशाला, भडारा, उदर, पेट, अग्निकोण, देखो भडारा।
भंडारा-(हि० पु० देखो भडार, झुड, समूह, उदर, पेट, साधुओं का भोज।
भडारी-(हिं० स्त्री०) कोष, खजाना, छोटी कोठरी (पु०) कोषाध्यक्ष, खजानची, रसोइया, रसोइयादार।
भंडेरिया-(हि०पु०) देखो भॅडरिया।
भडेरियापन-(हिं० पु०) पाखंड, ढोंग, मक्कारी।
भंड़ौआ-(हिं० पु०) भाडों के गाने की गीत, ऐसी गीत जो सभ्य समाज में गाने योग्य न हो, हास्य रस की निकृष्ट कविता।
भंभूरी-(हि० स्त्री०) बबूल की जाति का एक वृक्ष।
भंभरना-(हिं० क्रि०) भयभीत होना, डरना।
भभा-(हिं० पु०) बिल, छेद।
भंभाका-(हि०स्त्री०) कोई बड़ा छिद्र।
भंमाना-(हिं० क्रि०) गौ आदि पशुओं का चिल्लाना, रभाना।
भमीरी-(हि० स्त्री०) एक प्रकार का बरसाती फतिंगा, झुलाहा।
भंभेरि-(हि०स्त्री०) भय, डर।
भंमर-(हि० पुं०) बड़ी मधुमक्खी, बरैं, भिड़।
भॅवन-(हि० स्त्री०) देखो भ्रमण, घूमना फिरना।
भंवना-(हिं० क्रि०) घूमना फिरना, चक्कर लगाना।
भॅवर-(हिं० पु०) देखो भ्रमर, भौंरा, गडढा, जल के बहाव में वह स्थान जहा पानी की लहर एक केन्द्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है।
भॅवरकली-(हि० स्त्री०) लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि चारो ओर घूम सके।
भँवरगीत-(हि०पु०) देखो भ्रमरगीत।
भवरजाल-(हि०पु०) संसार के झगडे, भ्रमजाल।
भंवरभीख-(हि० स्त्री०) वह भीख जो घर घर घूम घूम कर मागी जाय।
भवरा-(हि० पु०) देखो भौंरा, भ्रमर।
भंवरी-(हि० स्त्री०) भँवर, पानी का चक्कर, जन्तुओं के शरीर पर का वह स्थान जहा पर रोवें या बाल एक केन्द्र पर घूमे रहते हैं, घूमघूम कर सौदा बेंचना, चक्कर लगाना, गश्त, परिक्रमा।
भंवाना-(हि० क्रि०) भ्रम में डालना, चक्कर देना, घुमाना।
भंवारा-(हिं०वि०)भ्रमणशील,घुमाने वाला।
भंसना-(हि०वि०) पानी के ऊपर तैरना, पानी में डाला या फेंका जाना।
भसरा-(हि० पु०) देखो भजनी।
भइया-(हि० पु०) भ्राता, भाई, एक आदर सूचक शब्द जो बराबर वालों के लिये प्रयोग होता है।
भक-(हि० वि०) आग के एकाएक जलने या धुवें के निकलने से उत्पन्न शब्द इसका प्रयोग, 'से' विभक्ति के साथ होता है।
भकक्षा-(स०स्त्री०) नक्षत्र की कक्षा।
भकरॉध-(हि० स्त्री०) अन्न के सड़ने की गन्ध।

भकरांधा–(हि० वि०) सड़ा हुआ।
भकसा–(हि०वि०) जो अधिक समय तक पड़ा रहने के कारण दुर्गन्धयुक्त हो गया हो।
भकसाना–(हि०क्रि०) किसी खाद्य पदार्थ का बदबूदार और कसैला हो जाना।
भकाऊ–(हिं० पु०) बच्चों को डराने का शब्द, हौवा।
भकार–(स० पु०) 'भ' स्वरूप वर्ण।
भकुआ–(हिं० वि०) मूढ़, मूर्ख।
भकुआना–(हिं० क्रि०) व्यग्र होना, घबड़ा जाना, चकपकाना,मूर्ख बनाना, चकपका देना।
भकुड़ा–(हिं० पु०) तोप में बत्ती आदि ठूसने का मोटा गज।
भकुड़ाना–(हिं० क्रि०) तोप का मुँह लोहे के गज से साफ करना।
भकुवा–(हिं० वि०)देखो भकुआ।
भकूट–(स० स्त्री०)ज्योतिष में एक प्रकार की राशियों का समूह।
भकोसना–(हि०क्रि०) बिना अच्छी तरह से कुचले खा जाना, निगलना,खाना।
भक्किका–(स० स्त्री०) झिल्ली, झींगुर।
भक्त–(स०नपु०) भात, धन, (वि०)तत्पर, भक्तियुक्त, सेवा करने वाला, बाट कर दिया हुआ, अलग किया हुआ।
भक्तकंस–(स० पु०) कांसे का पात्र जिसमे भात खाया जाता है।
भक्तकार–(स० पु०) रसोइयादार।
भक्तजा–(स० स्त्री०) अमृत।
भक्तता–(स० स्त्री०) भक्तत्व, भक्ति।
भक्तदास–(स० पु०) वह दास जो केवल भोजन लेकर ही काम करता हो।
भक्तपन–(हिं० पु०) भक्ति।
भक्तरुचि–(स० स्त्री०) भोजन करने की प्रबल इच्छा।
भक्तवत्सल–(स० वि०) भक्तों पर स्नेह करने वाला, (पु०) विष्णु।
भक्तशाला–(स० स्त्री०) रसोइया घर।
भक्ताई–(हि०स्त्री०) देखो भक्ति।
भक्ति–(स०स्त्री०)विभाग,सेवा, शुश्रूषा, बांटने की क्रिया, खण्ड, अवयव, रेखा से किया हुआ विभाग, श्रद्धा, विश्वास, रचना, पूजा, अर्चन, स्नेह, अनुराग, उपचार, एक वृत्त का नाम, भगवत् पूजा में अनुराग, भक्तिकर–भक्ति योग्य।
भक्तियोग–(स०पु०) भक्ति का साधन, सर्वदा भगवान में श्रद्धा पूर्वक मन लगा कर उनकी उपासना करना।
भक्तिरस–(स० पु०) वह रस जिसका स्थायि भाव भक्ति है।
भक्तिराग–स०पु०) भक्ति का पूर्वानुराग।
भक्तिवाद–(स०पु०) भक्ति विषयक कथा
भक्तिसूत्र–(स०नपु०) वैष्णव सम्प्रदाय का एक सूत्र ग्रन्थ जिसमे भक्ति का वर्णन है।
भक्ष–(स०पु०) अशन, खाने का काम, खाने का पदार्थ।
भक्षक–(स०त्रि०) खादक, खाने वाला।
भक्षकार–(स०पु०) हलवाई।
भक्षण–(स०नपु०) किसी वस्तु को दातो से काट कर खाना, भोजन करना।
भक्षना–(हि०क्रि०) भोजन करना,खाना।
भक्षणीय–(स०वि०) भक्षण योग्य, खाने लायक।
भक्षयिता–(स०वि०) खाने वाला।
भक्षित–(स०वि०) खाया हुआ।
भक्षी–(स०वि०) भक्षक, खाने वाला।
भक्ष्य–(सं०वि०) खाने योग्य (पु०) अन्न आहार, भक्ष्यकार–हलवाई।
भक्ष्याभक्ष्य–(स० नपु०) खाने तथा न खाने योग्य पदार्थ।
भख–(हि०पु०) आहार, भोजन।
भखना–(हि०क्रि०) भोजन करना, खाना, निगलना।
भखी–(हि० स्त्री०) दलदल मे होने वाली एक प्रकार की घास।
भगंदर–(हि०पु०) देखो भगन्दर।
भग–(सं० पु०) स्त्री की योनि, लिंग, गुदा, रवि, सूर्य, बारह आदित्यों में से एक, छ प्रकार की विभूतिया, इच्छा, माहात्म्य, यत्न, धर्म, मोक्ष, सौभाग्य, कान्ति, चन्द्रमा, धन, पद, एक देवता का नाम, ऐश्वर्य।
भगण–(स० पु०) वह समय जो किसी ग्रह के मेषादि बारहो राशिया के अतिक्रम में लगता है, छन्द शास्त्र के अनुसार, वह गण जिसके आदि का एक वर्ण गुरु और अन्त के दो वर्ण लघु होते हैं।
भगत–(हि० पु०) देखो भक्त, सेवक, उपासक, साधु, वह जो मास न खाता हो, विचारवान्, ओझा, वेश्या का सफरदाई, होली में स्वांग बनाने वाला, भूत प्रेत उतारने वाला।
भगतिया–(हि० पु०) राजपूताने की एक वैष्णव जाति।
भगदड़, भगदर–(हि०स्त्री०) किसी कारण से त्रस्त होकर बहुत से लोगों का एका एक भागना।
बगतबछल(हि०वि०) देखो भक्तवत्सल।
भगति–(हि० स्त्री०) देखो भक्ति।
भगती–(हि०स्त्री०) देखो भक्ति।
भगन–(हि० वि०) देखो भग्न।
भगना–(हि० पु०) बहिन का पुत्र, भाजा, भागना।
भगनी–(हि० स्त्री०) देखो भगिनी।
भगन्दर–(स० पु०) गुदा में व्रण होने का रोग।
भगर–(हि० पु०) सड़ा हुआ अन्न, छल, कपट।
भगरना–(हि० क्रि०) खत्ते मे अन्न का सड़ने लगना।
भगल–(हि०पु०) जादू, छल, कपट, हाथ की सफाई, इन्द्रजाल।
भगली–(हि०पु०) ढोंगी,छली, बाजीगर।
भगवंत–(हि०पु०) देखो भगवत्।
भगवती–(स०स्त्री०) देवी,गौरी,सरस्वती, दुर्गा।
भगवत्–(स० पु०) परमेश्वर, बुद्ध, शिव, विष्णु, सूर्य, कार्तिकेय, वेदव्यास, पूजनीय गुरु (वि०) पूजनीय।
भगवत्पदी–(सं० स्त्री०) गंगा का एक नाम।
भगवद्गीता–(स० स्त्री०) महाभारत के

भीष्म पर्व के अन्तर्गत अठारह अध्याय का वह ग्रथ जिसमें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोगका उपदेश है जिसको श्रीकृष्ण ने अर्जुन का मोह छुड़ाने के लिये प्रश्नोत्तर रूप में युद्धस्थल में किया था।

भगवद्भक्त–(स० पु०) ईश्वर का भक्त

भगवान्, भगवान–(हि०पु०) परमेश्वर, विष्णु, कोई आदरणीय व्यक्ति, (वि०) पूज्य, ऐश्वर्ययुक्त।

भगहारी–(स० पुं०) शिव, महादेव।

भगाङ्कुर–(स०पु०)अर्शरोग, ववासीर।

भगाना–(हि० क्रि०) किसी को भागने में प्रवृत्त करना, दौड़ाना हटाना, खदेरना, दूर करना।

भगास्त्र–(स० पु०) प्राचीन काल का एक अस्त्र।

भगिनी–(स० स्त्री०) सहोदरा, बहिन, भगिनीपति–बहनोई।

भगीरथ–(स० पु०) सूर्य वंशीय राजा अंशुमान् के पुत्र दिलीप के लड़के थे, घोर तपस्या करके यह गगा को पृथ्वी पर लाये थे, (वि०) भगीरथ की तपस्या के समान कठिन, बहुत बड़ा।

भगेड़ू–(हिं० वि०) वह जो कहीं से छिपकर भागा हो, वह जो काम पड़ने पर भाग जाता हो, कायर।

भगोड़ा–(हि०वि०) भागने वाला, कायर।

भगोल–(स० पु०) नक्षत्रचक्र, खगोल।

भगौती–(हि० स्त्री०) देखो भगवती।

भगौहा–(हि० वि०) वह जो भागने को तैयार हो,कायर, गेरूसे रँगा हुआ,गेरुआ

भग्गुल, भग्गू–(हि० वि०) जो विपत्ति देखकर भागता हो, युद्ध क्षेत्र से भगा हुआ, कायर।

भग्न–(स० वि०) पराजित, हारा हुआ, टूटा हुआ।

भग्नदूत–(सं०पु०) रणक्षेत्र से भाग कर आई हुई सेना जो राजा को हार का समाचार देने आती है।

भग्नपृष्ठ–(स०वि०)जिसकी पीठ टूट गई हो

भग्नांश–(स० पु०) मूल द्रव्य का विभाग या खण्ड।

भग्नावशेष–(सं० पुं०) किसी टूटे हुए पदार्थ के टुकड़े, किसी टूटे फूटे मकान का अंश, खडहँर।

भग्नाश–(स०वि०) जिसकी आशा भग हो गई हो, हताश।

भङ्ग–(स०पु०)तरंग, लहर, खण्ड,पराजय, हार, कुटिलता, भय, डर, रोग, बाधा, विनाश, टेढे होने या झुकने का भाव, लकवा, गमन, एक नाग का नाम, भङ्गवास–हल्दी।

भङ्गा–(स०स्त्री०) भाग।

भङ्गी–(स०पु०) भग करने वाला, नष्ट करने वाला।

भङ्गुर–(स०वि०) नाश होने वाला, टेढा, (पु०) नदी का घुमाव।

भङ्गुरता–(स०स्त्री०) कुटिलता टेढ़ापन।

भचक–(हिं०स्त्री०) भचक कर चलने का भाव, लगड़ापन।

भचकना–(हि० क्रि०) आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना, चलती समय पैर का टेढामेढा पड़ना।

भचक्र–(स०नपु०)नक्षत्र समूह,राशि चक्र

भच्छ–(हि०पुं०) देखो भक्ष्य।

भच्छना–(हिं०क्रि०)भक्षण करना,खाना।

भजक–(स० वि०) विभाजक, भाग करने वाला।

भजन–(स०नपु०)भाग, खण्ड, सेवा,पूजा, वार वार किसी देवता या पूज्य का नाम लेना, स्मरण, देवता के उद्देश्य से गाई जाने वाली गीत, स्तोत्र, गुणकीर्तन

भजना–(हिं० क्रि०) सेवा करना, आश्रय लेना, आश्रित होना, देवता आदि का नाम वार वार लेना, भाग जाना, प्राप्त होना, पहुँचना, देवता का नाम जपना।

भजनानन्द–(स०पु०) वह आनन्द जो परमेश्वर का नाम लेने से प्राप्त होता है

भजनानन्दी–(स०पु०) जो दिन रात भजन करने में मस्त रहता है।

भजनी–(हिं०वि०) भजन गाने वाला।

भजनीय–(स०वि०) विभाग करने योग्य, सेवा करने योग्य, आश्रय लेने योग्य।

भजमान–(स०वि०) विभाग करने वाला, सेवा करने वाला।

भजाना–(हि०क्रि०) दौड़ाना, भगाना, दूर करना।

भजियाउर–(ह०स्त्री०) एक प्रकार का भोजन जो दही चावल तथा घीआ आदि को एक साथ पकाकर बनाया जाता है।

भज्य–(स० वि०) सेवा करने योग्य, भजने योग्य।

भञ्ज–(स०वि०) तोड़ने वाला।

भञ्जन–(स०नपु०) भग करना, नाश, ध्वस, भाग।

भञ्जनक–(स०पु०) एक प्रकार का लकवा जिसमें मुख टेढा हो जाता है।

भञ्जा–(स०स्त्री०)अन्नपूर्णा का एक नाम।

भट–(स०पु०)युद्ध करने या लड़ने वाला, योद्धा, वीर, सैनिक, एक वर्णसकर जाति

भटकटाई, भटकटैया–(हि० स्त्री०) एक छोटा,काँटेदार पौधा जिसके पत्तों पर भी काँटे होते हैं।

भटकना–(हि० क्रि०) भ्रम में पड़ना, रास्ता भूल जाना, इधर उधर घूमते फिरना।

भटकाना–(हि०क्रि०) भ्रम में डालना, धोखा देना, गलत रास्ता वतलाना।

भटकैया–(हि० वि०) भटकने या भटकाने वाला।

भटकौहां–(हिं०वि०)भ्रम में डालने वाला, भटकाने वाला।

भटतीतर–(हि० पु०) एक प्रकार की चिड़िया।

भटधर्मा–(हिं० वि०) वीर धर्म का पालन करने वाला, सच्चा वहादुर।

भटनास–(हि० स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसकी फलियो के दानों की दाल बनाई जाती है।

भटनेरा–(हि०पु०) वैश्यों की एक उपाधि।

भटभेरा–(हि०पुं०) दो वीरों का सामना, आकस्मिक मिलन, अनायास होनेवाली भेंट, टक्कर, धक्का।

भटा–(हि० पु०) भटा, वैंगन

भटियारा–(हिं० पु०) देखो भठियारा।
भटियारी–(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
भटियाल–(हिं० क्रि० वि०) नदी की धारा की ओर।
भटू–(हिं० स्त्री०) प्रिय व्यक्ति, सखी, एक आदर सूचक शब्द जो स्त्रियों के लिये व्यवहार किया जाता है।
भटेरा–(हिं०पु०) वैश्यों की एक जाति।
भटैया–(हिं० स्त्री०) देखो भटकटैया।
भटोट–(हिं० पु०) यात्रियों के गले में फांसी लगाने वाला ठग।
भटोला–(हिं०वि०) भाट के योग्य (पु०) वह भूमि जो भाट को दी गई हो।
भट्ट–(सं०पु०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक उपाधि, पण्डित, योद्धा, भाट, सूर।
भट्ट प्रयाग–(सं०पु०) गंगा और यमुना का संगम स्थान।
भट्टारक–(सं० पु०) नाटकों में राजा इस नाम से पुकारा जाता है, सूर्य, देव, पूज्य व्यक्ति।
भट्टारकवार–(सं०पु०)आदित्यवार,रविवार
भट्टिनी–(सं० स्त्री०) ब्राह्मण की भार्या, नाटक की भाषा में राजा की वह पत्नी जिसका अभिषेक न हुआ हो।
भट्टी–(हिं० स्त्री०) देखो भट्ठी।
भट्ठी–(हिं० पु०) बड़ी भट्ठी, ईंट खपड़े आदि के पकाने का पजावा, हलवाई का बड़ा चूल्हा, देशी शराब बनाने का कारखाना।
भठियाना–(हिं० क्रि०) समुद्र में भाटा आना, समुद्र के पानी का नीचे उतरना।
भठियारपन–(हिं० पु०) भठियारों की तरह लड़ना और गाली बकना।
भठियारा–(हिं० पु०) सराय का प्रबंध करने वाला।
भठियाल–(हिं०पु०) देखो भाटा।
भठुली–(हिं०स्त्री०) ठठेरों की छोटी भट्ठी।
भड़वा–(हिं०पु०)आडम्बर, दिखौवा शान।
भड़–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की हलकी नाव, वीर, योद्धा।
भड़क–(हिं० स्त्री०) दिखौवा चमक दमक, चमकीलापन, सहम, भड़कने का भाव।
भड़कदार–(हिं० वि०) चमकीला, रोबदार, भड़कीला।
भड़कना–(हिं० क्रि०) प्रज्वलित होना, तेजी से जल उठना, तेज़ होना, क्रुद्ध होना, चौंकना, घोड़े आदि का डरकर पीछे हटना।
भड़काना–(हिं०क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना, चमकना, बढ़ावा देना, उत्तेजित करना, उभाड़ना, भयभीत करना, किसी को इस प्रकार भ्रम में डालना कि वह कोई काम करने के लिये तैयार न हो।
भड़कीला–(हिं० वि०) भड़कदार, चमकीला, डरकर उत्तेजित होने वाला, चौकन्ना होने वाला।
भड़कीलापन–(हिं० पु०) भड़कीला होने का भाव।
भड़भड़–(हिं० स्त्री०) आघात से उत्पन्न शब्द, जनसमूह, भीड़भाड़, व्यर्थ की अधिक वार्ता।
भड़भड़ाना–(हिं० क्रि०) भड़भड़ शब्द करना, व्यर्थ की बकवाद करना।
भड़भड़िया–(हिं० वि०) व्यर्थ की बात करने वाला, बकवादी, गप्पी।
भड़भाड़–(हिं० पु०) एक कटीला पौधा, घमोय।
भड़भूजा–(हिं० पु०) हिन्दुओं की एक छोटी जाति जो भाड़ में अन्न भूनने का काम करती है।
भड़वा–(हिं०पु०) देखो भड़ुआ।
भड़सार–(हिं०स्त्री०) देखो भडरिया।
भड़हर–(हिं०स्त्री०) देखो भडेहर।
भड़ार–(हिं० पु०) देखो भडार।
भड़ाल–(हिं०पु०) वीर, योद्धा, लड़ाका।
भड़िहा–(हिं० पु०) तस्कर, चोर, ठग।
भड़िहाई–(हिं०क्रि०वि०) चोरों की तरह लुक छिपकर।
भड़ी–(हिं०स्त्री०) वह उत्तेजना जो किसी को मूर्ख बनाने या उत्तेजित करने के लिये दी जाय, झूठा बढ़ावा।
भड़ुआ–(हिं० पु०) वह जो रंडियों की दलाली करता हो, रंडियों के साथ तबला या सारंगी बजाने वाला, सफरदाई।
भड्डुर–(हिं०पु०) ब्राह्मणों में निम्न श्रेणी की एक जाति, इस जाति के लोग ग्रहों का दान लेते हैं और तीर्थों में यात्रियों को दर्शन आदि कराते हैं, भडर।
भणन–(सं०नपुं०) कथन, उक्ति।
भणना–(हिं० क्रि०) कहना।
भणित–(सं० वि०) कथित, कहा हुआ, (स्त्री०) कही हुई बात।
भण्टा–(सं०स्त्री०) वार्ताकी, बैंगन।
भण्ड–(सं० पु०) भाड़ (वि०) धर्म का झूठा अभिमान करने वाला, धूर्त।
भण्डक–(सं०पु०) खञ्जन पक्षी।
भण्डन–(सं०नपुं०) क्षति, हानि।
भण्डहासिनी–(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
भण्डी–(सं०स्त्री०) सिरिस का पेड़।
भतवान–(हिं०पु०) विवाह की एक रीति जिसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगों को कच्ची रसोई खिलाते हैं।
भतार–(हिं० पु०) देखो भर्ता, पति, शौहर।
भतीजा–(हिं०पु०) भाई का पुत्र।
भतुआ–(हिं०पु०) सफेद कुम्हड़ा, पेठा।
भत्ता–(हिं०पु०) किसी कर्मचारी को यात्रा के समय दिया जाने वाला दैनिक व्यय।
भदई–(हिं० वि०) भादो महीने का (स्त्री०) भादों के महीने में तैयार होने वाली फस्ल।
भदमद–(हिं०वि०) बहुत मोटा, भद्दा।
भदयल–(हिं० पुं०) मेढक।
भदावर–(हिं० पु०) ग्वालियर राज्य का एक प्रान्त जहा के बैल बडे प्रसिद्ध होते हैं।
भदेस–(हिं०वि०) कुरूप, भद्दा।
भदैल–(हिं० पु०) मेढक।
भदैला–(हिं० वि०) भादों महीने का।
भदैसिल–(हिं०वि०) भद्दा, कुरूप।
भदौंह–(हिं० वि०) भादो के महीने में होने वाला।
भद्दा–(हिं० वि०) जो देखने में सुन्दर

न हो, कुरूप, बेढगा, भद्दापन–कुरूपता, बेढगापन।
भद्र–(स० नपु०) क्षेम कुशल, ज्योतिष में एक करण का नाम, महादेव, खजन पक्षी, बैल, कदब, ब्रज के एक वन का नाम, स्वरसाधन की एक प्रणाली, रामजी के एक सहोदर भाई, विष्णु का एक द्वारपाल, कदब, सुमेरु पर्वत, चन्दन, सोना, उत्तर दिशा के दिग्गज का नाम (वि०) सभ्य, श्रेष्ठ, कल्याणकारी (हिं० पु०) सिर, दाढी तथा मूछो के सब बालों का मुडन।
भद्रक–(स० नपु०) देवदारु, बाइस अक्षरों का एक छन्द।
भद्रकपिल–(स०पु०) शिव, महादेव।
•भद्रका–(सं० स्त्री०) इन्द्रजव।
भद्रकाय–(सं० पु०) श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
भद्रकार, भद्रकारक–(स०वि०) कल्याण करने वाला।
भद्रकाली–(स० स्त्री०) कात्यायनी, दुर्गा की एक मूर्ति।
भद्रगणित–(स० नपु०) बीज गणित के अन्तर्गत एक गणित जो चक्रविन्यास की सहायता से की जाती है।
भद्रता–(स० स्त्री०) सभ्यता, शिष्टता, भलमनसी।
भद्रघन–(स० पु०) नागरमोथा।
भद्रचारु–(स० पु०) वासुदेव के पुत्र का नाम।
भद्रनामन्–(स० पु०) कठफोड़वा नामक पक्षी।
भद्रपदा–(स० स्त्री०) पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र।
भद्रपीठ–(स०पु०) वह सिंहासन जिसपर राजाओं या देवताओं का अभिषेक किया जाता है।
भद्रबला–(स० स्त्री०) माधवी लता।
भद्ररूपा–(स०स्त्री०) सुन्दर श्री।
भद्रवती–(स० स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम।
भद्रवसन–(सं० नपुं०) सुन्दर पहरावा।
भद्रविराट–(स० पु०) एक वर्णार्ध सम वृत्त का नाम।
भद्रशील–(स० वि०) सच्चरित्र, जिसका आचरण अच्छा हो।
भद्रषष्ठी–(स०स्त्री०) दुर्गा देवी।
भद्रसोमा–(स० स्त्री०) गगा नदी।
भद्रा–(स०स्त्री०) आकाश गगा, फलित ज्योतिष में द्वितीया,सप्तमी और द्वादशी तिथियों का नाम, शमी, हल्दी, गाय, केकय राज की कन्या जो कृष्ण को ब्याही थी, सुभद्रा का एक नाम, पिंगल में उपजाति का एक भेद,बाधा,अड़चन, पृथ्वी, फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग का नाम।
भद्राकरण–(स० नपुं०) मुंडन, सिर का बाल मुड़वाना।
भद्रानन्द–(स० पु०) स्वर साधना की एक प्रणाली।
भद्रावती–(स०स्त्री०) कटहल का वृक्ष।
भद्राश्रय–(सं०पुं०) चन्दन।
भद्रासन–(स०नपु०) देखो भद्रपीठ।
भद्रिका–(स०स्त्री०) भद्रा तिथि, एक वर्णवृत्त का नाम।
भद्री–(हिं०वि०) भाग्यवान्।
भद्रला–(स०स्त्री०) बड़ी इलायची।
भनक–(हिं०स्त्री०) धीमा शब्द, ध्वनि, उड़ती खबर।
भनकना–(हि० क्रि०) धीरे से बोलना या कहना।
भनना–(हि०क्रि०) कहना।
भनभनाना–(हि० क्रि०) भनभन शब्द करना, गुजारना।
भनभनाहट–(हिं० स्त्री०) भनभनाने का शब्द, गुजार।
भनित–(हि०वि०) देखो भणित।
भपति–(स०पु०) चन्द्रमा।
भबका–(हिं०पु०) अर्क उतारने या शराब चुआने का यन्त्र।
भभक–(हिं०स्त्री०)किसी वस्तु का एकाएक गरम होकर ऊपर को उबलना, उबाल।
भभकना–(हिं०क्रि०) गरमी पाकर किसी वस्तु का फूटना, उबलना, प्रज्वलित होना, भड़कना, ज़ोर से जल उठना।
भभका–(हिं०पु०) देखो भबका।
भभकी–(हि०स्त्री०) झूठी धमकी, घुड़की।
भभूका–(हिं०पु०) ज्वाला, लपट।
भभूत–(हि० स्त्री०) वह भस्म जिसको शैव लोग माथे पर तथा भुजा पर लगाते हैं
भभ्भड़–(हि०स्त्री०)जन समुदाय,भीड़भाड़
भम्भ–(सं०पु०) मक्खी, मच्छड़, धुवा।
भभरना–(हि०क्रि०) डरना, घबड़ाना, भयभीत होना, भ्रम में पड़ना।
भय–(स० नपु०) भय हेतु, वह मनोविकार जो किसी आने वाली आपत्ति या आशका से उत्पन्न होता है, भय खाना–डरना।
भयकर–(स० वि०) भयकारक, जिसको देख कर डर लगे।
भयकर्ता–(स० वि०) भयकारक, भय उत्पन्न करने वाला।
भयङ्कर–(स० वि०) भयजनक, जिसको देखने से भय लगे।
भयकरता–(हिं० स्त्री०) भयकर होने का भाव, भीषणता।
भयजात–(स०वि०) भय से उत्पन्न।
भयद–(स०वि०) भय उत्पन्न करने वाला
भयदायी–(स० वि०) डरावना।
भयनाशन–(स० पुं०) विष्णु।
भयप्रद–(स० वि०) भयानक, जिसको देख कर भय उत्पन्न हो।
भयभीत–(स० वि०) जिसके मन में भय उत्पन्न हुआ हो, डरा हुआ।
भयभ्रष्ट–(स० वि०) जो डर के मारे भागा हो।
भयमोचन–(सं०वि०) भय छुड़ाने वाला
भयवाद–(हि० पु०) एक ही गोत्र या वश के लोग, भाईबद, सजातीय, बिरादरी का मनुष्य।
भयहरण–(सं० वि०) भय का नाश करने वाला।
भयहारी–(हिं०वि०) डर दूर करने वाला
भया–(हि० वि०) हुआ।
भयाकुल–(स०वि०)डरसे घबड़ाया हुआ
भयातिसार–(स० पु०) डरके मारे बहुत

से त्रस्त आना।
भयातुर-(सं०वि०,डर से घबड़ाया हुआ।
भयान-(हिं० वि०) देखो भयानक।
भयानक-(सं०वि०) भयकर, डरावना, जिसको देखने से भय लगता हो (पु०) व्याघ्र, राहु साहित्य में वह रस जिसमें भीषण दृश्यों का वर्णन रहता है।
भयाना-(हिं० क्रि०) डरना, डराना।
भयापह-(सं०वि०) भय नाशक।
भयावन-(हिं० वि०) डरावना।
भयावह-(सं०वि०) भयकर, डरावना।
भयावहा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
भय्या-(हिं०पु०) भैया, भाई।
भरंत-(हिं० स्त्री०) भ्रान्ति, सन्देह।
भर-(सं०वि०) अतिशय, बहुत, पूरा, कुल, भरण करने वाला, (पु०) भार, बोझ, सग्राम, दो सौ पल का एक परिमाण, (हिं० पु०) पुष्टि, मोटाई (क्रि०वि०) द्वारा, बलसे (हिं०पु०) एक अस्पृश्य जाति।
भरक-(हिं०पु०) एक प्रकार का पक्षी, देखो भड़क।
भरकना-(हिं० क्रि०) देखो भड़कना।
भरका-(हिं०पु०) वह जमीन जिसकी मिट्टी काली और चिकनी हो।
भरकूट-(हिं० पु०) मस्तक, मोथा।
भरचिंटी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की घास।
भरट-(सं०पुं०) कुम्हार, सेवक, नौकर।
भरण-(सं० नपुं०) पालन पोषण,भरणी नक्षत्र जिसके बदले कुछ दिया जाय, भरती।
भरणी-(सं० स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र, इसकी आकृति त्रिकोण सी है।
भरणीभू-(सं० पु०) राहु ग्रह।
भरणीय-(सं०वि०) पालने पोसने योग्य।
भरण्ड-(सं०पु०) स्वामी, मालिक,राजा, बैल, पृथ्वी, कृमि, कीड़ा।
भरण्य-(सं०नपु०) मूल्य, वेतन तनखाह
भरण्यु-(सं०पु०) मेघ,अग्नि,ईश्वर बैल।
भरत-(सं० पु०) एक मुनि जो नाट्य शास्त्र के सृष्टिकर्ता थे, नट, रामचन्द्र के छोटे भाई, जुलाहा, खेत, कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र, शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यन्त के पुत्र जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था, उत्तर भारत का प्राचीन नाम, सगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम, लवा पक्षी, काँसा, कसकुट।
भरतखण्ड-(सं० नपु०) राजा भरत के किये हुए पृथ्वी के नवखण्डों में से एक, भारतवर्ष।
भरतप्रसू-(सं० स्त्री०) भरत की माता कैकेयी।
भरतरी-(हिं० स्त्री०) पृथ्वी।
भरतवर्ष-(हिं० पु०) देखो भारतवर्ष।
भरता-(हिं० पु०) एक प्रकार का सालन जो भटा, अरुई, आलू आदि को भून कर बनाया जाता है।
भरताग्रज-(सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।
भरतार-(हिं०पु०) पति, स्वामी, मालिक
भरताश्रम-(सं० पु०) भरत मुनि का आश्रम।
भरतिया-(हिं० वि०) कसकुट या कासे का बना हुआ (पु०) कसकुट के पात्र बनाने वाला ठठेरा।
भरती-(हिं० स्त्री०) भरे जाने का भाव, भरा जाना, प्रवेश या दाखिल होना, वह नाव जिसमें माल लादा जाता हो, नक्काशी या चित्रकारी के बीच का खाली स्थान, समुद्र का ज्वार, पानी की बाढ़, सावा नामक अन्न, **भरती करना**-बीच बीच में रखना।
भरथ-(सं० पु०) लोकपाल, (हिं० पु०) देखो भरत।
भरथरी-(हिं० पु०) देखो भर्तृहरि।
भरदूल-(हिं० पु०) देखो भरत पक्षी।
भरद्वाज-(सं० पु०) एक ऋषि का नाम, इनके वशज, एक गोत्र का नाम, एक प्रकार का पक्षी।
भरना-(हिं० क्रि०) पूर्ण करना खाली स्थान को पूरा करने के लिये कोई चीज डालना, उलटना, ढालना, ऋण चुकाना, शरीर का हृष्ट पुष्ट होना, शरीर के किसी अग में पीड़ा होना, घाव के गड्ढे का बराबर होना, कोई कसर न रहना, अवकाश या छिद्र का बन्द होना, तोप या बन्दूक में गोली बारूद आदि का होना, उड़ेला जाना, किसी खाली पात्रका पूर्ण होना, पशुओं पर बोझ लादना,पद पर नियुक्त करना, तोप बन्दूक आदि में बारूद डालना निर्वाह करना, निबाहना, काटना, खेत में पानी देना, किसी की गुप्त रूप से निन्दा करना, कठिनता से समय बिताना, काटना, डसना, सहना, झेलना, **घर भरना**-खूब धन देना।
भरना-(हिं० पु०) भरने की क्रिया या भाव, उत्कोच, घूस, रिश्वत।
भरनि-(हिं० स्त्री०) पहरावा, पोशाक।
भरनी-(हिं० स्त्री०) करघे में की ढरकी, नार, छछूदर, मोरनी, एक प्रकार की जगली बूटी।
भरपाई-(हिं०क्रि०वि०) भली भाति, पूर्ण रूप से (स्त्री०) जो कुछ बाकी हो वह पूरा पूरा पा जाना वह रसीद जो पूरी पूरी वसूली हो जाने पर दी जाय।
भरपूर-(हिं० वि०) जो पूरी तरह से भरा हुआ हो, पूरा पूरा, परिपूर्ण, (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से, भली भाँति, अच्छी तरह पूरा करके (पु०) समुद्र की ज्वार।
भरभराना-(हिं० क्रि०) रोवाँ खड़ा होना, घबड़ाना।
भरभूंजा-(हिं० पु०) देखो भड़भूजा।
भरभेंटा-(हिं०पु०) सामना, मोकाबला।
भरम-(हिं० पुं०) भ्रम, भ्रान्ति, सशय, सन्देह, धोखा, भेद, रहस्य, **भरम गँवाना**-भेद खोलना।
भरमना-(हिं० क्रि०) भटकना, धोखे में पड़ना, मारा मारा फिरना, चलना, घूमना, (स्त्री०) भ्रम, भ्रान्ति, भूल, गलती।
भरमाना-(हिं० क्रि०) भ्रम या चक्कर में

डालना, बहकाना, चकित होना, हैरान होना।
भरमार-(हिं० स्त्री०) अत्यन्त अधिकता, बहुत ज्यादती।
भरराना-(हिं०क्रि०) भर भर शब्द करते हुए गिरना, अरराना, टूट पड़ना, दूसरे को टूट पड़ने में प्रवृत्त करना।
भरल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी जंगली भेड़
भरवाई-(हिं० स्त्री०) भरवाने की क्रिया या भाव, भरवाने की मजदूरी।
भरवाना-(हिं० क्रि०) भरने का काम दूसरे से कराना।
भरसक-(हिं० क्रि० वि०) यथाशक्ति, जहाँ तक हो सके।
भरसन-(हिं० स्त्री०) भर्त्सना, डाँट फटकार
भरसाईं-(हिं० पु०) देखो भाड़।
भरहरना-(हिं० क्रि०) देखो भरमराना।
भरहराना-(हिं० क्रि०) देखो भहराना।
भराँति-(हिं० स्त्री०) देखो भ्रांति।
भराई-(हिं० स्त्री०) भरने की क्रिया या भाव, भरने की मजदूरी।
भरापूरा-(हिं० वि०) जिसमें किसी बात की न्यूनता न हो।
भराव-(हिं० पु०) भरने का भाव, भरने का काम, कसीदा काढने में पत्तियों के बीच के स्थान को तागों से भरना।
भरित-(हिं० वि०) भरा हुआ, पीला, जिसका पालन पोषण किया गया हो।
भरिया-(हिं०वि०) भरने वाला, पूर्ण करने वाला, ऋण चुकाने वाला, (पु०) ढलाई करने वाला।
भरी-(हिं० स्त्री०) दस मासे या एक रुपये के बराबर की तौल।
भरु-(स० पु०) विष्णु, शिव, समुद्र, स्वामी, सुवर्ण, (हिं०पुं०) बोझ, वजन।
भरुआ-(हिं० पु०) देखो भडुआ, टसर।
भरुकच्छ-(स० पु०) भरोच का प्राचीन नाम।
भरुज-(स० पु०) छोटा सियार।
भरुहाना-(हिं० क्रि०) गर्व करना, घमंड करना, धोखा देना, बहकाना, उत्तेजित करना, बढावा देना।
भरुही-(हिं० स्त्री०) कलम बनाने की एक प्रकार की कच्ची किलक।
भरेठ-(हिं० पु०) दरवाजे के ऊपर लगाई हुई लकड़ी जिसपर दीवार उठाई जाती है।
भरैया-(हिं०वि०) पालन करने वाला, रक्षक, भरने वाला, जो भरता हो।
भरोसा-(हिं० पु०) अवलम्ब, आश्रय, आसरा, सहारा, आशा, उम्मेद, दृढ विश्वास, यकीन।
भरोसी-(हिं० वि०) भरोसा या आसरा करने वाला, आश्रित, विश्वसनीय, जिस पर भरोसा किया जावे।
भरौती-(हिं०स्त्री०) वह रसीद जिसमें भरपाई की गई हो।
भरौना-(हिं० वि०) बोझल, वजनी।
भर्ग-(स० पु०) शिव, महादेव, भूना हुआ अन्न।
भर्जन-(स०नपु०) भूना हुआ अन्न।
भर्तव्य-(स० वि०) भरण पोषण करने योग्य
भर्ता-(हिं० पु०) अधिपति, विष्णु, मालिक, स्वामी, पति खाविन्द।
भर्तार-(हिं० पु०) पति, स्वामी, खाविन्द
भर्तृघ्नी-(स०स्त्री०) पतिघातिनी।
भर्तृत्व-(स०नपु०) पति का भाव या धर्म।
भर्तृमती-(स० स्त्री०) सधवा स्त्री।
भर्तृहरि-(स० पु०) एक प्रसिद्ध कवि जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के भाई थे
भर्त्सक-(स०वि०) तिरस्कार करने वाला।
भर्त्सन-(स० नपु०) निन्दा, शिकायत, डाँट-डपट।
भर्त्सना-(स० स्त्री०) निन्दा डाँट-डपट, फटकार।
भर्म-(हिं० पु०) देखो भ्रम।
भर्मन-(हिं० पु०) देखो भ्रमण।
भर्रा-(हिं० पु०) पक्षियों की उड़ान, एक प्रकार की चिड़िया।
भर्राना-(हिं० क्रि०) भर्र भर्र शब्द होना।
भर्सन-(हिं० स्त्री०) निन्दा, अपवाद, डाँट फटकार।
भल-(स० पुं०) मार डालने की क्रिया, वध
भलका-(हिं० पु०) एक प्रकार का बाँस।
भलटी-(हिं० स्त्री०) लोहा काटने का एक औजार, हँसिया।
भलपति-(हिं०पुं०) भाला रखने वाला।
भलमनसत-(हिं० स्त्री०) सज्जनता, भलमनसी।
भलमनसाहत-(हिं०स्त्री०) सज्जनता।
भलमनसी-(हिं०स्त्री०) सज्जनता, शराफत
भला-(हिं०वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया, (पु०) लाभ, मुनाफा, कल्याण।
भलाई-(अव्य०) अस्तु खैर, भला बुरा-उचित अनुचित, डाट फटकार, हानि लाभ, भलेही-इसमें कोई हानि नहीं है।
भलाई-(हिं०स्त्री०) अच्छापन, भलापन, सौभाग्य, उपकार, नेकी।
भलापन-(हिं० पुं०) देखो भलाई।
भले-(हिं० क्रि०वि०) भलीभाँति, अच्छी तरह से, (अव्य०) वाह, खूब।
भलेरा-(हिं० पु०) देखो भला।
भल्ल-(सं० पु०) भल्लूक, भालू, एक प्रकार का बाण, वध, हत्या, भिलावें का वृक्ष।
भल्लक-(स० पु०) भल्लूक, भालू।
भल्लाक्ष-(स० वि०) जिसको कम देख पड़ता हो, मन्ददृष्टि।
भल्लातक-(स०पु०) भिलावें का वृक्ष।
भल्लुक, भल्लूक-(स० पु०) भल्लूक, भालू।
भवँ-(हिं०स्त्री०) देखो भौंह।
भवग-(हिं० पुं०) भुजग, सर्प।
भवत-(हिं०वि०) आपका, आप लोगों का
भवँरकली-(हिं० स्त्री०) देखो भँवरकली।
भवँरी-(हिं० स्त्री०) देखो भँवरी।
भवँलिया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की नाव, भौलिया।
भव-(स० पु०) जन्म, उत्पत्ति, शिव, महादेव, ससार, क्षेम कुशल, प्राप्ति, कारण, हेतु, मेघ, बादल, कामदेव, ससार का दुःख, जन्म मरण का दुःख, (हिं० पु०) भय, डर, (वि०) कल्याण कारक, शुभ उत्पन्न, जनमा हुआ।
भवकेतु-(स० पु०) एक प्रकार का पुच्छल तारा।

भवक्षिति-(सं० स्त्री०) जन्मभूमि।
भवचाप-(सं० पु०) शिवजी के धनुष का नाम।
भवत्-(सं० त्रि०) मान्य, पूज्य, तुम (पु०) विष्णु, भूमि, जमीन।
भवतव्यता-(हिं०स्त्री०) देखो भवितव्यता
भवदा-(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
भवदीय-(सं०त्रि०) आपका, तुम्हारा।
भवधरण-(सं० पु०) संसार को धारण करने वाला, परमेश्वर।
भवन-(सं० नपु०) प्रासाद, महल, गृह, घर, छप्पय का एक भेद (हिं०पु०) जगत्, संसार, भवनपति-घर का स्वामी।
भवना-(हिं० क्रि०) घूमना।
भवनी-(हिं०स्त्री०) गृहिणी, भार्या, स्त्री।
भवपाली-(सं० स्त्री०) संसार की रक्षा करने वाली शक्ति।
भववन्धन-(सं०पु०) संसार की झंझट।
भवभञ्जन-(सं० पु०) संसार का नाश करने वाला, काल, परमेश्वर।
भवभय-(सं० पु०) संसार में बारबार जन्म लेने और मरने का भय।
भवभामिनी-(सं०स्त्री०) पार्वती, भवानी।
भवभावन-(सं० पु०) विष्णु।
भवभूप-(सं०पु०) संसार के भूषण।
भवमोचन-(सं०त्रि०) संसार के बन्धनों से छुड़ाने वाला, भगवान्।
भवर्ग-(सं० पु०) नक्षत्र वर्ग।
भववामा-(सं०स्त्री०) शिवजी की स्त्री, पार्वती।
भवविलास-(सं०पु०) माया, ज्ञान के अन्धकार से उत्पन्न होने वाला संसार का सुख।
भवशूल-(सं० पु०) सांसारिक दुःख और क्लेश।
भवसंभव-(सं०त्रि०) संसार में होने वाला।
भवाँ-(हिं० स्त्री०) चक्कर, भौंरी।
भवाँना-(हिं०क्रि०) घुमाना फिराना।
भवा-(सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती।
भवानी-(हिं० स्त्री०) भवपत्नी, दुर्गा।
भवानीवल्लभ-शिव, महादेव।
भवितव्य-(सं०त्रि०) भवनीय, अवश्य होने वाली, होनहार।
भवितव्यता-(सं० स्त्री०) भाग्य, अदृष्ट, किसमत, भावी, होनहार।
भविपुला-(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम।
भविष्णु-(सं० त्रि०) भवनशील।
भविष्य-(सं० त्रि०) आने वाला काल, भविष्यत् काल संबंधी।
भविष्यगुप्ता-(सं० स्त्री०) गुप्ता नायिका का एक भेद, वह नायिका जो रति की अभिलाषा रखती हो परन्तु पहले इसको छिपाने का उद्योग करे।
भविष्यत्-(सं० त्रि०) वर्तमान काल के उपरान्त का काल, आगामी काल।
भविष्यद्वक्ता-(सं० पु०) वह जो होने वाली बात को पहले ही से कह दे।
भविष्यद्वाणी-(सं० स्त्री०) भविष्य-वाणी, भविष्य की बात जो पहले ही से कही गई हो।
भवीला-(हिं० त्रि०) भावयुक्त, भावपूर्ण, तिरछा बाँका।
भवेश-(सं० पु०) संसार का स्वामी, शिव का एक नाम।
भव्य-(सं० त्रि०) शुभ, मंगल सूचक, जो देखने में भारी और सुन्दर जान पड़े, शानदार, सत्य, सच्चा, योग्य, श्रेष्ठ, बड़ा, प्रसन्न, भविष्य में होने वाला।
भव्यता-(सं० स्त्री०) भव्य होने का भाव या धर्म।
भव्या-(सं०स्त्री०) उमा, पार्वती।
भष-(सं० पु०) कुक्कुर, कुत्ता (हिं० पु०) भोजन।
भषण-(सं०नपु०) कुत्ते का भूकना।
भषना-(हिं०क्रि०) भोजन करना, खाना।
भषी-(सं० स्त्री०) कुतिया।
भसन-(सं० पु०) भ्रमर, भौंरा।
भसना-(हिं० क्रि०) पानी के तल पर तैरना, पानी में डूबना।
भसम-(हिं० पु०) देखो भस्म।
भसमा-(हिं० पु०) पीसा हुआ आटा, नील की पत्ती की बुकनी, बाल काला करने का एक प्रकार का खिजाब।
भसान-(बंगला पु०) काली या सरस्वती आदि की मूर्ति को पूजा के उपरान्त नदी में प्रवाह करना।
भसाना-(हिं० क्रि०) पानी में डुबाना, पानी में किसी चीज को तैरने के लिये छोड़ना।
भसिंड-(हिं० स्त्री०) कमल की जड़।
भसींड़-(हिं०स्त्री०) कमलनाल, मुरार।
भसुंड-(हिं० पु०) हाथी, गज।
भसुर-(हिं० पु०) पति का बड़ा भाई, जेठ।
भसूंड़-(हिं० पु०) हाथी का सूंड़।
भसूचक-(सं०पु०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
भस्त्रका, भस्त्रा-(सं०स्त्री०) आग सुलगाने की भाथी।
भस्म-(सं० पु०) लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख, चिता की राख, अग्निहोत्र की राख (त्रि०) जो जलाकर राख हो गया हो।
भस्मक-(सं० नपु०) भस्म कीट नामक रोग।
भस्मकारी-(हिं० त्रि०) जलाने वाला।
भस्मता-(सं० स्त्री०) भस्म का भाव या धर्म।
भस्मप्रिय-(सं०पु०) शिव का एक नाम।
भस्मवेधक-(सं० पु०) कर्पूर, कपूर।
भस्मस्नान-(सं० पु०) सारे शरीर में भस्म पोतना।
भस्माकार-(सं० पु०) रजक, धोबी।
भस्माङ्ग-(सं०पु०) कपोत, कबूतर।
भस्मासुर-(सं० पु०) एक दैत्य का नाम जिसकी तपस्या से सन्तुष्ट होकर शिवजी ने उसको वरदान दिया था कि जिसके सिर पर तुम हाथ रक्खोगे वह भस्म हो जायगा।
भस्मित-(सं०त्रि०) जलाया हुआ।
भस्मीभूत-(सं० त्रि०) जो जल कर राख हो गया हो, जिसका नाश किया गया हो।
भहराना-(हिं०क्रि०) झोंके से गिर पड़ना, टूट पड़ना, फिसल पड़ना।

भहूं–(हिं० स्त्री०) देखो भौंह ।
भाईं–(हिं०पुं०)खरादने वाला कारीगर।
भाउं–(हिं० पुं०) भाव, अभिप्राय, मतलब ।
भांउर–(हिं० स्त्री०) देखो भौंवर ।
भांकड़ी–(हिं०पु०) गोखरू की तरह का एक जगली पौधा ।
भांग (हिं०स्त्री०) सन की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तिया मादक होती हैं, विजया, बूटी,भांग खा जाना-पागलपन की बातें करना, घर मे भूजी भाग न होना-बहुत गरीब होना ।
भागरा–(हिं० स्त्री०) किसी धातु के महीन कण ।
भांज–(हिं०स्त्री०) किसी पदार्थ को मोड़ने या तह करने की क्रिया, भाजने का काम, वह धन जो नोट, रुपये आदि को बदलने में दिया जाय, भुनाई ।
भाजना–(हिं०क्रि०) तह करना, मोड़ना, मुद्गर आदि को घुमाना, दो या अनेक लड़ियो को एक में मिला कर बटना ।
भाजा–(हिं० पुं०) देखो भानजा ।
भाजी–(हिं० स्त्री०) बहिन की पुत्री, किसी होते हुए काम में बाधा डालने वाली बात, शिकायत ।
भाट–(हिं० पु०) देखो भाट ।
भांटा–(हिं० पु०) बैंगन ।
भांड़–(हिं० पुं०) मसखरा, ठिठोलिया, विदूषक, वह जो खूब हसा सक्ता हो, एक प्रकार के पेशेवर जो राजसभा, महफिल आदि मे तरह तरह की नकल उतारते नाचते गाते और हसी मजाक कर के लोगो को हँसाते हैं, बेहया, नगा, (पु०) बरतन, पात्र, उपद्रव, उत्पात ।
भांड़ना–(हिं०क्रि०) मारे मारे फिरना, बेकार इधर उधर घूमना, भ्रष्ट करना, बिगाड़ना, अपमानित करना ।
भांडा–(हिं०पु०) पात्र, बरतन, बड़ा पात्र
भाडागार–(हिं० पु०) देखो भाण्डागार, कोष ।
भांडागारिक–(हिं० पु०) भडारी, कोषाध्यक्ष ।
भांडार–(हिं० पुं०) देखो भाण्डार ।
भाति–(हिं० स्त्री०) तरह, किस्म, प्रकार ।
भांपना–(हिं० क्रि०) पहचानना, देखना, अन्दाज़ कर लेना, ताड़ना ।
भांमी–(हिं०पु०) जूते की मरम्मत करने वाला चमार ।
भायँ भायँ–(हिं० पु०) निर्जन स्थान का शब्द ।
भांरी–(हिं०स्त्री०) देखो भावर ।
भावना–(हिं० क्रि०) किसी चीज को खराद पर घुमाना, खरादना ।
भांवर–(हिं० स्त्री०) चारो ओर घूमना या चक्कर काटना, परिक्रमा करना, अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू मिल कर करते हैं, हल जोतती समय एक बार खेत के चारो ओर घूम आना (पु०) देखो भौंरा ।
भा–(सं० स्त्री०) प्रभा, चमक, प्रकाश, कान्ति, शोभा, किरण, बिजली.(हिं०अव्य०) यदि इच्छा हो ।
भाइ–(हिं० पु०) भाव, विचार, प्रीति, प्रेम, स्वभाव (स्त्री०) प्रकार, चाल ढाल।
भाइप–(हिं०पु०) भाई चारा, आत्मीयता।
भाई–(हिं० पु०) भ्राता, सहोदर, भैया, अपनी जाति या समाज का कोई व्यक्ति, बिरादरी का मनुष्य, सबोधन का एक शब्द, किसी वंश या परिवार की किसी एक पीढी के व्यक्ति के लिये उसी पीढी का दूसरा मनुष्य यथा-ममेरा या चचेरा भाई ।
भाईचारा–(हिं० पु०) भाई के समान होने का भाव,परम मित्र या बन्धु होने का भाव ।
भाईदूज–(हिं० स्त्री०) कार्तिक शुक्ल द्वितीया, यम द्वितीया,जिस दिन बहिन भाई को टीका लगाती और भोजन कराती हैं ।
भाईपन–(हिं० पु०) भ्रातृत्व, परम मित्र या बन्धु होने का भाव ।
भाईबन्दु–(हिं० पुं०) भाई और मित्र बन्धु, अपनी जाति और बिरादरी के लोग ।
भाई बिरादरी–(हिं० स्त्री०) जाति या समाज के लोग ।
भाउ–(हिं० पु०) भाव, चित्तवृत्ति, विचार, जन्म, उत्पत्ति ।
भाऊ–(हिं० पु०) भाव, भावना, स्वभाव, चित्तवृत्ति, विचार, प्रेम, स्नेह, महत्व, महिमा, स्वरूप, शक्ल, सत्ता, अवस्था, हालत ।
भाएँ–(हिं०क्रि०वि०) बुद्धि के अनुसार ।
भाकर–(स०पु०) भास्कर, सूर्य ।
भाकसी–(हिं०स्त्री०) भट्ठी, भरसाई ।
भाकोष–(स० पु०) सूर्य ।
भाक्त–(स० वि०) भक्त सम्बन्धी ।
भाक्ष–(स०वि०)खाने योग्य, भक्षणशील ।
भाख–(हिं० पु०) देखो भाषण ।
भाखना–(हिं० क्रि०) बोलना, कहना ।
भाखर–(हिं० पुं०) पर्वत, पहाड़ ।
भाखा–(हिं०स्त्री०) देखो भाषा ।
भाग–(स० पु०) अंश, हिस्सा, भाग्य, प्रारब्ध, गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बाटने की क्रिया, प्रातःकाल का समय, वैभव, ऐश्वर्य, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, ललाट, पार्श्व, तरफ, सौभाग्य ।
भागक–(स० वि०) देखो भाजक ।
भागकर–(स०पु०) विभाग करने वाला, बाटने वाला ।
भागड़–(हिं० स्त्री०) बहुत से लोगों का घबड़ाकर एकाएक भागना, भगदड़ ।
भागण–(स०पु०) सूर्य आदि की प्रभा ।
भागत्याग–(हिं०पु०) वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिलकुल छोडे हुए हो ।
भागदा–(स० स्त्री०) भाग देने वाला ।
भागधेय–(स० नपु०) भाग्य, प्रारब्ध, (पु०) वह कर जो राजा को दिया जाता है, दायाद, सपिन्ड ।
भागना–(हिं० क्रि०) चटपट दूर हो जाना, कोई काम करनेसे बचना, पिंड, छुड़ाना, टल जाना, हट जाना ।

भागनेय-(सं०पु०)देखो भागिनेय, भानजा

भागफल-(सं० पु०) गणितमें वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो, लब्धि।

भागरा-(हि०पु०) एक संकर राग का नाम

भागवत-(हिं०वि०)भाग्यवान्, भाग्यशील।

भागवत-(सं० नपु०) अठारह पुराणों के अन्तर्गत एक महापुराण, (सं० वि०) भगवद्भक्त, जो भगवान् का भक्त हो, (पु०) तेरह मात्राओं का एक छन्द।

भागवती-(सं० स्त्री०) वैष्णवो की कंठी जिसको वे गले में पहनते हैं।

भागवान-(हि० वि०) देखो भाग्यवान्।

भागसिद्ध-(सं० पु०) एक प्रकार का हेत्वाभास।

भागहर-(सं० वि०) भाग या अंश लेने वाला।

भागहार-(सं० पु०) गणित में किसी राशि को कुछ निश्चित अंशों में विभक्त करने की क्रिया।

भागार्ह-(सं० वि०) जो विभक्त करने योग्य हो।

भागासुर-(सं०पु०) एक असुरका नाम।

भागिक-(सं०वि०) वह ऋण जो ब्याज पर दिया गया हो।

भागिनेय-(सं० पु०)भगिनीपुत्र, भानजा।

भागिनेयी-(सं० स्त्री०) भानजी, बहिन की लड़की।

भागी-(हि० पु०) अधिकारी, हिस्सेदार, हकदार, शरीक।

भागीरथ-(हिं० पु०) देखो भगीरथ।

भागीरथी-(सं० स्त्री०) जाह्नवी, गंगा, राजा भगीरथ गंगा को इस लोक में लाये थे।

भाग्य-(सं० नपु०) शुभाशुभ कर्म, प्रारब्ध, अदृष्ट, किस्मत, नसीब, तकदीर, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, (वि०) जो विभाग करने के योग्य हो।

भाग्यवत्-(सं० वि०) भाग्ययुक्त, भाग्यवान्

भांगक-(सं० नपु०) फटा हुआ वस्त्र।

भाचक्र-(सं० पु०) क्रांति वृत्त।

भाजक-(सं० वि०) विभाग करने वाला, (पु०) गणित में वह अंक जिससे कोई संख्या भाग दी जावे।

भाजकांश-(सं० पु०) वह संख्या जिससे किसी राशि को भाग देने पर कुछ शेष न बचे।

भाजन-(सं० नपु०) आधार, पात्र, बरतन, योग्य, एक परिमाण का नाम।

भाजनता-(सं० स्त्री०) भाजनत्व योग्यता।

भाजना-(हिं० क्रि०) भाग देना।

भाजित-(सं० वि०) पृथक् या अलग किया हुआ।

भाजी-(सं० स्त्री०) मांड, पीच, (हि०स्त्री०) साग, तरकारी, मिठाई, पकवान आदि जो तेहवारो पर इष्ट मित्र या सम्बन्धियों के घर भेजा जाता है।

भाज्य-(सं० वि०) विभाग करने योग्य, (पु०) वह संख्या जो भाजक से भाग दी जाती है।

भाट-(हि० पु०) स्तुतिपाठक, राजाओं का यश वर्णन करने वाला, बन्दी,चारण, राजदूत, (हि०स्त्री०) नदी के दो करारों के बीच की भूमि, नदी का किनारा, नदी का बहाव,नदी के बहाव की मिट्टी।

भाटक-(सं० पु०) भाड़ा, किराया।

भाटा-(हि० पु०) पानी का चढाव की ओर से उतार की ओर जाना, समुद्र के चढाव का उतरना, पथरीली भूमि।

भाटिया-(हि० पु०) राजपूत जाति की एक शाखा।

भाट्यौ-(हि० पु०) भाट या बन्दी का काम, राजाओं का यश कीर्तन।

भाठ-(हिं० स्त्री०) वह मिट्टी जिसको नदी बाढ में लाती है और उतार के समय कछार में जमाती है (हि०पु०) गड्ढा।

भाठी-(हि० स्त्री०) पानी का उतार, देखो भट्ठी।

भाड-(हिं०पु०) भड़भूजो की भट्ठी जिसमें वे अन्न भूनते हैं, भाड़ झोंकना-तुच्छ कार्य करना, भाड़ मे फेंकना या झोंकना-बरबाद करना।

भाडा-(हि० पु०) किराया, एक प्रकार की ऊँची घास, वह दिशा जिस ओर वायु बहती हो, भाड़े का टट्टू-वह जो क्षण भर के लिये सहायता देता हो।

भाण-(सं० पु०) नाटकादि दशरूपक के अन्तर्गत एक रूपक विशेष जो एक अंक का होता है और इसमें हास्यरस की प्रधानता रहती है, ब्याज, मिस, बहाना, ज्ञान, बोध।

भाण्ड-(सं० नपु०) पात्र, बरतन, बनिये का मूल धन, पूंजी, भाण्डक-छोटा बरतन, भाण्डपति-बनियाँ, व्यवसायी, भाण्डपुट-नाई, भाण्डशाला-भंडारघर, भाण्डागारिक-भंडारी।

भाण्डार-(सं० नपु०) भंडारघर।

भाण्डारिक-(सं० पु०) भंडारघर का अध्यक्ष, भण्डारी।

भाण्डिनी-(सं०स्त्री०) मंजूषा छोटी पेटी।

भात-(सं० नपु०) प्रभात, सवेरा,प्रकाश।

भात-(हिं०पु०) पानी में उबाला हुआ चावल, विवाह की एक रस्म जिसमें समधी को भात खिलाने के लिये कन्या के घर बुलाया जाता है।

भाता-(हिं० पु०) फस्ल का वह अंश जो हलवाहे को खलिहान में से किसी को दिया जाता है।

भाति-(सं० स्त्री०) कान्ति, शोभा, (हिं०स्त्री०) देखो भांति।

भाथा-(हिं०पु०) तीर रखने की चमड़े की थैली, तरकश, तूणीर, बड़ी भाथी।

भाथी-(हिं०स्त्री०) चमड़े की बनी हुई धौंकनी जिसमें से हवा फेंक कर भट्ठी की आग सुलगाई जाती है।

भादों-(हि०पु०) सावन के बाद के तथा कुआर के पहिले के महीने का नाम, भाद्रपद।

भाद्र, भाद्रपद-(सं० पु०) भादों का महीना।

भाद्रपदा-(सं० स्त्री०) पूर्वा भाद्रपदा तथा उत्तरा भाद्र पदा नक्षत्र।

भाद्रमातुर-(सं० पुं०) जिसकी माता सती हो।

भान-(सं० नपु०) प्रकाश रोशनी, दीप्ति, चमक, आभास, प्रतीति, ज्ञान।

भानजा-(हिं०पु०) बहिन का लड़का।
भानना-(हिं० क्रि०) नष्ट करना, भग करना, तोड़ना, काटना, मिटाना, दूर करना, समझना।
भानमती-(हिं० स्त्री०) वह नटी जो जादू का खेल करती हो, जादूगरनी, भानमती का पेटारा-विभिन्न वस्तुओं का संग्रह।
भानवी-(हिं० स्त्री०) यमुना नदी।
भानवीय-(स० वि०) सूर्य सम्बधी।
भाना-(हिं०क्रि०) जान पड़ना, मालूम होना, रुचना, अच्छा लगना, शोभा देना, चमकना, सोहना।
भानु-(स० पु०) सूर्य, विष्णु, किरण, मदार, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, प्रभु, मालिक (स्त्री०) कृष्ण की एक कन्या का नाम, धर्मकी एक पत्नी का नाम।
भानुकम्प-ग्रहण आदि के समय सूर्य के बिम्ब का काँपना।
भानुज-(स०पु०) शनैश्चर, यम, कर्ण।
भानुजा-(स० स्त्री०) यमुना नदी।
भानुतनया-(स० स्त्री०) यमुना नदी।
भानुदिन-(स० नपु०) सूर्य का दिन, रविवार।
भानुपाक-(सं० पु०) औषध आदि को सूर्य की गरमी से पकाने की विधि।
भानुफला-(स०स्त्री०) कदली, केला।
भानुमत्-(स० पु०) सूर्य (वि०) दीप्तिमान्, प्रकाशमान्।
भानुमती-(स० स्त्री०) विक्रमादित्य की रानी का नाम जो इन्द्रजाल विद्या जानती थी, दुर्योधन की पत्नी, गगा, जादूगरनी।
भानुमान-(हिं० पु०) दशरथ के ससुर का नाम।
भानुवार-(स०पुं०) रविवार, आदित्यवार
भानुसुत-(स० पु०) यम, मनु, कर्ण, शनैश्चर।
भानुसुता-(सं०स्त्री०) यमुना नदी।
भान्त-(स०पु०)नक्षत्र और राशि का अन्त
भाप-(हिं० स्त्री०) वाष्प, पानी के सूक्ष्म कण जो उसके खौलने पर ऊपर उठते देख पड़ते हैं, ठढक पाकर ये कुहरे आदि का रूप धारण करते हैं।
भापना-(हिं० क्रि०) देखो भाँपना।
भाबर-(हिं० पु०) एक प्रकार की पहाड़ी घास जिसकी रस्सी बनाई जाती है।
भाभर-(हिं० पु०) पहाड़ों के नीचे तराई के बीच का जगल, एक प्रकार की पहाड़ी घास।
भाभरा-(हिं० वि०) लाल रग का।
भाभरी-(हिं० स्त्री०) गरम राख।
भाभी-(हिं० स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री।
भाम-(स०पु०) क्रोध, गुस्सा, सूर्य, बहनोई एक वर्णवृत्त का नाम (हिं० स्त्री०) भामा, स्त्री।
भामक-(स०पु०) भगिनी पति, बहनोई।
भामण्डल-(स०नपु०)किरणों की मेखला।
भामा-(स०स्त्री०) क्रुद्ध स्त्री, स्त्री, औरत।
भामिनी-(स० स्त्री०) क्रोध करने वाली स्त्री, स्त्री, औरत।
भाय-(हिं०पु०) भाई, अन्तः करण की प्रवृत्ति, भाव, ढग, परिमाण, दर, भांति, भाव।
भायप-(हिं० पु०) भ्रातृभाव, भाईचारा।
भाया-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा।
भार-(स०पु०) गुरुत्व, बोझ, विष्णु, बीस पसेरी का परिमाण, (हिं० पु०) वह बोझ जो बहँगी के दोनों पलरों में रखकर कन्धे पर उठा कर ले जाते हैं, आश्रय, सहारा, रक्षा, जवाबदेही, उत्तरदायित्व, भार उठाना-किसी कामकी जवाबदेही अपने ऊपर लेना, भार उतारना-ऋण आदि से मुक्त होना।
भारकी-(स०स्त्री०) पालन पोषण करने वाली स्त्री, दाई।
भारङ्गी-(स०स्त्री०) एक पौधा जिसकी जड़, डाल और पत्ते औषधियों में प्रयोग होते हैं, भगरैया।
भारण्ड-(स० पु०) एक प्रकार का शकुन पक्षी।
भारत-(स० पु०) महाभारत का पूर्व रूप जिसका मूल चौबीस हजार श्लोकों का है, इसको वेदव्यास ने बनाया था, (पु०) नट, अग्नि, भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष, कथा लम्बा चौड़ा विवरण, घोर युद्ध, बड़ा सग्राम।
भारत खण्ड-(स०पु०) देखो भारतवर्ष।
भारतवर्ष-(स०पु०) वह देश जो उत्तर में हिमालय पर्वत तक, दक्षिण में कन्याकुमारी तक, पश्चिम में सिन्धु नदी तक तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी तक विस्तृत है, हिन्दुस्तान।
भारती-(स०स्त्री०) वचन, वाक्य, सरस्वती, ब्राह्मी, सन्यासियों के दस नामों में से एक, एक वृत्ति का नाम जिसके द्वारा रौद्र और वीभत्स-रस का वर्णन किया जाता है।
भारतीय-(स० वि०) भारत सम्बन्धी, भारत का।
भारतुला-(स०स्त्री०)खम्भे का मध्य भाग।
भारतेश्वर-(स०पु०) राजा भरत।
भारथ-(स०पु०)भारद्वाज पक्षी,(हिं०पु०), देखो भारत, युद्ध, सग्राम।
भारथी-(हिं० पु०) योद्धा, सिपाही।
भारदण्ड-(हिं० पु०) एक प्रकार की कसरत।
भारद्वाज-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम, द्रोणाचार्य, अगस्त्य मुनि, मगल ग्रह, बृहस्पति पुत्र, अस्थि, हड्डी, (वि०) भारद्वाज के कुल में उत्पन्न।
भारभारी-(स०वि०)बोझ उठाने वाला।
भारभृत्-(स०वि०) बोझ उठाने वाला, (पुं०) विष्णु।
भारयष्टि-(स०स्त्री०) भारवहन दण्ड, बँहगी
भारव-(सं०नपु०) धनुष की रस्सी।
भारवाह, भारवाहक-(स० वि०) बोझा ढोने वाला।
भारवाही-(स०वि०) देखो भारवाह।
भारवि-(सं० पु०) एक प्राचीन कवि जिन्होंने किरातार्जुनीय नामक महाकाव्य रचा था।
भारवी-(स०पु०) तुलसी का पेड़।
भारा-(हिं० वि०) देखो भारी, (पु०) देखो भाड़ा।

भाराक्रान्ता-(सं० स्त्री०) एक वर्णित वृत्ति का नाम।
भारावलम्बकत्व-(सं० पु०) पदार्थों के परमाणुओं का परस्पर आकर्षण, अनेक पदार्थों में ऐसा गुण होने के कारण वे टूट नहीं सकते।
भारिक-(सं०पु०) बोझ ढोनेवाला।
भारी-(हिं०वि०) गुरु, अधिक भार का, कठिन, विशाल, अधिक, अत्यन्त, असह्य, फूला हुआ,गम्भीर, प्रबल,शांत।
भारीपन-(हिं० पु०) भारी होने का भाव, गुरुत्व।
भारूप-(सं० नपु०) चिदात्मक आत्मा।
भार्गव-(सं० पुं०) भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष, परशुराम, शुक्राचार्य, मार्कण्डेय हाथी, कुम्हार, हीर, एक उपपुराण का नाम, जमदग्नि, च्यवन ऋषि, संयुक्त प्रान्त में रहने वाली एक जाति।
भार्गवी-(सं० स्त्री०) पार्वती, लक्ष्मी, दूब, भृगु वंश की स्त्री।
भार्गवेश-(सं०पु०) परशुराम।
भार्या-(सं० स्त्री०) शास्त्र विधि से विवाहित पत्नी, जाया, दारा, कलत्र, जोरू, भार्यात्व-भार्या का भाव या धर्म।
भाल-(सं०नपु०)ललाट, मस्तक, कपाल, (हिं०पु०) भाला, बरछा, तीर की नोक भालू, रीछ।
भालचन्द्र-(सं० पु०) शिव, महादेव गणेश।
भालदर्शन-(सं०नपु०) सिन्दूर, सेंदुर।
भालना-(हिं०क्रि०) ध्यान पूर्वक देखना, अच्छी तरह देखना, अन्वेषण करना, तलाश करना।
भालनेत्र-(सं० पु०) शिव, महादेव।
भाललोचन-(सं०पु०) भालनेत्र, शिव।
भालवी-(हिं०पु०) रीछ, भालू।
भाला-(हिं० पु०) बरछा, साग।
भाला बरदार-(हिं० पु०) बरछा चलाने वाला।
भालाङ्क-(सं० पु०) कच्छप, कछुआ, शिव, ललाट पर का चिह्न।
भालि-(हिं०स्त्री०) बरछी, शूल, काँटा।
भाली-(हिं०स्त्री०) भाले की नोक, काँटा।
भालुक-(सं०पु०) भल्लूक, भालू, रीछ।
भालुनाथ-(हिं० पु०) जामवन्त।
भालू-(हिं०पु०) एक स्तनपायी भयंकर चौपाया जो जंगलों और पहाड़ों में पाया जाता है।
भावंतु-(हिं० पु०) भावी, होने वाला, होनहार।
भावँर-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास।
भाव-(सं० पु०) मन का विकार, सत्ता, अभिप्राय, स्वभाव, जन्म, चित्त, आत्मा, चेष्टा, संसार, उपदेश, योनि, प्रेम, बुध, जन्तु, विभूति, विषय, क्रिया, लीला, पदार्थ, चोचला, नखरा, मुख की आकृति या चेष्टा, आदर, प्रतिष्ठा, देवता के प्रति श्रद्धा भक्ति, कल्पना, ढंग, तरीका, अवस्था, विश्वास, भावना, नायक या नायिका के मनमें उत्पन्न होने वाला विकार, शरीर या अंगों का संचालन, (हिं०पु०) निर्ख, दर, भाव गिरना-किसी वस्तु का दाम घटना; भाव देना-आकृति द्वारा मन का भाव प्रगट करना।
भावइ-(हिं० अव्य०) जो इच्छा हो, जो जी चाहे।
भावक-(सं०पु०) मन का विकार, भाव, भक्त, प्रेमी (वि०) भाव पूर्ण, भाव से भरा हुआ, भाव करने वाला, उत्पन्न करने वाला, (क्रि०वि०) किंचित्, थोड़ा सा, जरासा।
भावगति-(हिं० स्त्री०) विचार, इच्छा, इरादा।
भाव गम्भीर-(सं० वि०) जिसका भाव या तात्पर्य कठिन हो।
भावगम्य-(सं० वि०) भक्ति भाव से जानने योग्य।
भावग्राह्य-(सं० वि०) भक्ति से ग्रहण करने योग्य।
भावज-(सं० वि०) भाव से उत्पन्न (हिं०स्त्री०) भाई की स्त्री, भौजाई।
भावता-(हिं० वि०) प्रिय, जो अच्छा जान पड़े (पु०) प्रियतम।
भावताव-(हिं० पु०) किसी वस्तु का मूल्य या भाव, निर्ख।
भावदया-(सं० स्त्री०) किसी जीव को दुःखित देखकर मन में दया उत्पन्न होना।
भावन-(हिं०वि०) जो प्रिय या अच्छा जान पड़े।
भावना-(सं०स्त्री०) अनुभव तथा स्मृति से उत्पन्न होने वाला चित्त का एक संस्कार, अधिवासन, साधारण विचार या कल्पना, ध्यान, इच्छा, चाह, वैद्यक के अनुसार किसी चूर्ण आदि को किसी रस या तरल पदार्थ में बार बार मिलाकर घोटना तथा सुखाना, अच्छा लगना, (वि०) प्रिय, प्यारा।
भावनाश्रय-(सं० पु०) शिव का एक नाम।
भावनि-(हिं० स्त्री०) मनकी बात, जो चित्तमें आवे।
भावनीय-(सं०वि०) चिन्ता या विचार योग्य।
भावप्रकाश-(सं० पु०) वैद्यक का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।
भावबन्धन-(सं० पु०) प्रेम पाश से जोड़ना।
भावबोधक-(सं०वि०) वह जिसके द्वारा भाव का बोध हो।
भावभक्ति-(हिं० स्त्री०) आदर सत्कार।
भावयितव्य-(सं० वि०) चिन्ता के योग्य।
भावयिता-(सं० वि०) पालने पोसने वाला।
भावरूप-(सं०वि०) प्रकृत, यथार्थ।
भावली-(हिं० स्त्री०) खेत के उपज की बँटाई जो जमींदार और काश्तकार के बीच होती है।
भाववाचक-(सं०पु०) व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव, गुण अथवा धर्म सूचित होता है-यथा तरलता, मनुष्यत्व इत्यादि।
भाववाच्य-(सं०पु०) व्याकरण में क्रिया

का वह रूप जिससे यह विदित होता है कि वाक्य का उद्देश उस क्रिया का कर्ता और कार्य नहीं है परन्तु केवल कोई भाव है, इसमे कर्ता के साथ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है यथा–रोगी से खाया नहीं जाता।

भाववृत्त–(स०स्त्री०) ब्रह्मा (वि०) सृष्टि सबधी।

भावशवलता–(स०स्त्री०) वह अलकार जिसमे कई भावों की सन्धि रहती है।

भावसन्धि–(स०स्त्री०) वह अलकार जिसमे विरुद्ध भावों की सन्धि का वर्णन रहता है।

भावसत्य–(स०वि०) ऐसा सत्य जो ध्रुव न हो परन्तु भाव दृष्टि से सच्चा जान पडे।

भावसबलता–(हिं०स्त्री०) वह अलकार जिसमे कई एक भावो का अलकार एक साथ वर्णन किया जाता है।

भावात्मक–(स० वि०) किसी विषय की प्रकृत अवस्था का सूचक।

भावाभाव–(स० पु०) एक अलकार का नाम।

भावार्थ–(स०पु०) वह अर्थ या टीका जिसमे मूल का केवल भाव आजावे अक्षरक्षः अनुवाद न हो, अभिप्राय, तात्पर्य।

भावालङ्कार–(सं०पु०) एक प्रकार का अलकार।

भाविक–(स० पु०) वह अलकार जिसमे भूत और भावी बातें वर्तमान की तरह वर्णन की गई हों (वि०) मर्म जानने वाला।

भावित–(स०वि०) सुगन्धित किया हुआ, मिला हुआ, सोचा हुआ, मिलाया हुआ, शुद्ध किया हुआ, भेंट किया हुआ, जिसमे रस आदि की भावना दी गई हो।

भावी–(हिं०स्त्री०) भविष्य काल, आने वाला समय, भाग्य, प्रारब्ध, भवितव्यता, अवश्य होने वाली बात।

भावुक–(स०नपुं०) मगल, आनन्द (पु०) सज्जन, भला आदमी (वि०) भावना करने वाला, सोचने वाला, अच्छी भावना करने वाला, जिस पर अच्छे भावों का तुरत प्रभाव पड़ता हो।

भावें–(हिं० अव्य०) चाहे।

भावोत्सर्ग–(सं० पु०) बुरे भावों का त्याग।

भावोदय–(स०पु०) वह अलकार जिसमे किसी भाव के उदय होने की अवस्था का वर्णन किया जाता है।

भाव्य–(स० वि०) अवश्य होने वाला, भावना करने योग्य।

भाषक–(स०वि०) वक्ता, बोलने वाला।

भाषज्ञ–(सं०पु०) भाषा जानने वाला।

भाषण–(स०नपु०) वक्तृता, व्याख्यान, कथन, बात चीत।

भाषना–(हि०क्रि०) भोजन करना, खाना, बात चीत करना।

भाषा–(स० स्त्री०) वाक्य, बोली, किसी विशेष जन समूह में प्रचलित बातचीत करने का ढग, वह अव्यक्त शब्द जिससे पशु पक्षी अपने मन के भाव को प्रगट करते हैं, वाणी, आधुनिक हिन्दी भाषा, अभियोग पत्र।

भाषातत्व–(स० नपुं०) शब्द तत्व का विज्ञान।

भाषान्तर–(स० पु०) अनुवाद, उल्था, तरजुमा।

भाषाबद्ध–(स० वि०) साधारण देशभाषा से बना हुआ।

भाषासम–(स० पु०) शब्दालकार का वह भेद जिसमें केवल ऐसे शब्दों की योजना की जाती है जो अनेक भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होते हैं।

भाषित–(स० वि०) कथित, कहा हुआ।

भाषी–(हिं०वि०) कहने या बोलने वाला।

भाष्य–(सं० नपु०) सूत्रों की व्याख्या या टीका, सूत्रग्रन्थों का विस्तृत वर्णन, किसी गूढ वाक्य की व्याख्या।

भाष्यकार–(स० पु०) सूत्रों की व्याख्या या टीका करने वाला।

भास–(स० पुं०) दीप्ति, प्रकाश, चमक, मुर्गा, गिद्ध, मयूख, किरण, इच्छा, स्वाद, मिथ्या ज्ञान, एक सस्कृत के कवि का नाम।

भासक–(स०वि०) प्रकाशक, द्योतक।

भासकर्ण–(स० पु०) रावण की सेना का एक मुख्य नायक जिसको हनुमान ने मारा था।

भासन–(स० नपु०) दीपन, प्रकाशन।

भासना–(हि० क्रि०) प्रकाशित होना, चमकना, कहना, लिप्त होना, देख पड़ना, फँसना।

भासन्त–(स०पुं०) सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र।

भासमान–(सं०वि०) दिखाई पड़ता हुआ, (हिं० पु०) सूर्य।

भासित–(स० वि०) दिखाई पड़ने वाला, मालूम होने वाला।

भासित–(स०वि०) तेजोमय, चमकीला।

भासुर–(सं० पु०) स्फटिक, बिल्लौर, वीर योद्धा।

भास्कर–(स० पु०) सूर्य, अग्नि, सुवर्ण, सोना, मदार का वृक्ष, शिव, महादेव, वीर, सयुक्त प्रदेश की एक जाति जो पत्थर पर नक्काशी करते हैं।

भास्कर विद्या–(स० स्त्री०) पत्थर पर नक्काशी करने की कला।

भास्कराचार्य–(स० पुं०) भारतवर्ष के एक प्रधान ज्योतिर्विद का नाम।

भास्वर–(स० पु०) सूर्य, दिन, (वि०) चमकीला।

भिंग–(हि० पु०) एक प्रकार का कीड़ा, बिलनी, भौंरा।

भिंगाना–(हि० क्रि०) देखो भिगोना।

भिंजाना–(हि०क्रि०) देखो भिगोना।

भिंडा–(हिं० पु०) बड़ी सड़क।

भिंड़ि–(हिं० पु०) ढेलवाँस।

भिंडी–(हि० स्त्री०) एक पौधे की फली जिसकी तरकारी बनती है।

भिक्षण–(स०नपु०) भिक्षा मागनेकी क्रिया

भिक्षा–(स० स्त्री०) याचन, मागना, सेवा, भीख, मागी हुई वस्तु, **भिक्षाकरण**–भीख मागने का काम, **भिक्षाचर**–भीख मागने वाला, **भिक्षाटन**–भीख

माँगने के लिये इधर उधर घूमना।
भिक्षापात्र-(सं० नपुं०) भीख मागने का बरतन।
भिक्षार्थी-(सं०वि०) भिक्षुक, भिखमगा।
भिक्षावृत्ति-(सं० वि०) भीख मागकर जीविका निर्वाह करने वाला।
भिक्षु-(सं० पुं०) भीख मागने वाला, भिक्षुक, भिखारी, परिव्राजक, सन्यासी, बौद्ध सन्यासी।
भिक्षुक-(सं०पुं०)भिक्षोपजीवी, भिखारी।
भिक्षुणी-(सं०स्त्री०) बौद्ध सन्यासिनी।
भिक्षुरूप-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
भिखमगा-(हिं०पुं०) भिक्षुक, भिखारी।
भिखार-(हिं० पुं०) भिखमगा, भिखारी।
भिखारिणी-(हिं० स्त्री०) भीख माँगने वाली स्त्री।
भिखारिन-(हिं०स्त्री०) देखो भिखारिणी।
भिखारी-(हिं० पुं०) भिक्षुक, भीख माँगने वाला।
भिखिया-(हिं० स्त्री०) देखो भिक्षा।
भिगाना, भिगोना-(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ को पानी से तर करना, गीला करना
भिच्छा-(हिं० स्त्री०) देखो भिक्षा।
भिच्छु-(हिं० पुं०) देखो भिक्षु।
भिजवाना-(हिं० क्रि०) भेजने का काम दूसरे से कराना।
भिंजवाना-(हिं० क्रि०) भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
भिजाना-(हिं०क्रि०) भिगोना, तर करना, गीला करना।
भिजोना-(हिं० क्रि०) देखो भिगोना।
भिज्ञ-(सं० वि०) जानकार।
भिटना-(हिं० पुं०) छोटा गोल फल।
भिटनी-(हिं०स्त्री०) स्तन के आगे का भाग
भिड़-(हिं० स्त्री०) बरैं, ततैया।
भिड़ना-(हिं० क्रि०) लड़ना, झगड़ना, टक्कर खाना, लड़ाई करना, मैथुन करना, सटना।
भिडज-(हिं० पुं०) शूर वीर आदमी।
भिण्डक-(सं० पुं०) भिंडी नामक पौधा।
भितल्ला-(हिं० पुं०) दोहरे कपडे का भीतरी पल्ला, अस्तर, (वि०) भीतरका।
भितल्ली-(हिं० स्त्री०) चक्की के नीचेका पाट
भिताना-(हिं०क्रि०) भयभीत करना, डराना
भित्ति-(सं० स्त्री०) भीत, दीवार, भय, डर, खड, टुकड़ा, प्रदेश अवकाश, अन्तर, चित्र बनाने का आधार, नीव,
भित्तिचौर-सेंध लगाने वाला चोर।
भिद्-(सं०स्त्री०) अन्तर, प्रभेद, (वि०) भेद-कर्ता, छेद करने वाला।
भिदुर्क-(सं०नपुं०) वज्र, खड्ग, तलवार
भिदना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना, छेदा जाना, घायल होना।
भिदा-(सं०स्त्री०) धन्याक, धनिया।
भिदिर-(सं० नपुं०) वज्र।
भिदुर-(सं० नपुं०) वज्र।
भिद्र-(सं० पुं०) वज्र।
भिनकना-(हिं० क्रि०) भिन भिन शब्द करना, घृणा उत्पन्न होना, किसी काम का अपूर्ण रह जाना।
भिनभिनाना-(हिं० क्रि०) भिन भिन शब्द करना।
भिनसहरा, भिनसार-(हिं० पुं०) प्रातः-काल, सवेरा।
भिनहीं-(हिं०क्रि०वि०) प्रातःकाल, सवेरे।
भिन्न-(सं०वि०) कटा हुआ, भेदित, अन्य, दूसरा, प्रफुल्ल, खिला हुआ, पृथक्, (पुं०) गणित में वह सख्या जो एकाई से कम हो, भिन्नकर्ण-जिसके कान कट गये हों, भिन्नजातीय-भिन्न भिन्न सप्रदाय का।
भिन्नता-(सं० स्त्री०) भिन्न होने का भाव, भेद, अलगाव।
भिन्नत्व-(सं०नपुं०) भिन्नता, जुदाई।
भिन्नलिङ्ग-(सं० नपुं०) एक अलकार जिसमे भिन्न वचन और भिन्न लिंग द्वारा उपमा दी जाती है, पृथक् लिंग या चिह्न।
भिन्नवर्ण-(सं०नपुं०) पृथक् वर्ण, भिन्न रग।
भिन्नर्थक-(सं० वि०) दूसरे अर्थ का।
भियना-(हिं० क्रि०) डरना।
भिया-(हिं० पुं०) भ्राता, भाई।
भिरना-(हिं० क्रि०) देखो भिड़ना।
भिरिंग-(हिं० पुं०) देखो भृग।
भिलनी-(हिं०स्त्री०) भील जाति की स्त्री, एक प्रकार का धारी दार कपड़ा या चारखाना।
भिलावाँ-(हिं० पुं०) एक जगली वृक्ष जिसके फल औषधियों में प्रयोग होते हैं, भल्लातक।
भिल्ल-(सं०पुं०) भील जाति।
भिश्ती-(अ० पुं०) मशक द्वारा पानी ढोने वाला मनुष्य, सक्का।
भिषक्-(सं० पुं०) चिकित्सक, वैद्य, भिषक्प्रिया-गुरुच, भिषग्वरा-हरीतकी, हरैं।
भिषज-(सं०पुं०) चिकित्सक, वैद्य, औषध
भिष्टा-(हिं०पुं०) देखो विष्टा, मल, गू।
भिसज-(हिं० पुं०) वैद्य।
भिसटा-(हिं०पुं०) विष्टा, मल, गू।
भिसर-(हिं०पुं०) ब्राह्मण।
भिसिणी-(हिं० पुं०) व्यसनी।
भिस्त-(अ०स्त्री०) स्वर्ग, वैकुण्ठ।
भिस्स-(हिं०स्त्री०) कमल की जड़, भसींड़।
भिस्सा-(सं०स्त्री०) अन्न, अनाज।
भींगना-(हिं०क्रि०) देखो भिगना।
भींगी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का फतिंगा
भींचना-(हिं०क्रि०) खींचना, कसना, मूदना, बन्द करना।
भींजना-(हिं० क्रि०) आर्द्र होना, गीला होना, प्रेम से मग्न होना, स्नान करना, नहाना, समा जाना, घुस जाना, हेल मेल बढाना,
भींट, भींत-(हिं०) देखो भीट, भीत।
भी-(हिं०स्त्री०) भय, डर, (अव्य०)अवश्य, निश्चय करके, अवश्य, जरूर, ज्यादा, तक।
भीउँ-(हिं० पुं०) भीम, भीमसेन।
भीक-(हिं०वि०) भीत, डरा हुआ।
भीकर-(सं०वि०) भयकर, डरावना।
भीख-(हिं०स्त्री०) भिक्षा, भिक्षा में दी हुई चीज़।
भीखम-(हिं० पुं०) देखो भीष्म, (वि०) भयानक, डरावना।
भीगना-(हिं०क्रि०) आर्द्र होना।
भीचर-(हिं०पुं०) वीर, बहादुर।

भीजना-(हिं० क्रि०) देखो भींगना।
भीट-(हि० पु०) उभरी हुई भूमि, टीला।
भीटा-(हि० पु०) टीलेदार या ऊंची भूमि, पानकी खेती की ढालुआ ज़मीन जो चारो ओर से लता या छाजन से ढपी रहती है।
भीड़-(हि० स्त्री०) बहुत से मनुष्यों का जमाव, जमघट, जनसमूह, सकट, आपत्ति, **भीड़ छटना**-जन समूह का तितर बितर होना, **भीड़ भड़क्का**-बहुत से मनुष्यों का समूह, **भीड़ भाड़**-जमघट।
भीड़ना-(हिं० स्त्री०) मिलने या भरने की क्रिया।
भीड़ा-(हि०वि०) सकुचित, सकरा, तग।
भीड़ी-(हिं० स्त्री०) भिंडो, रामतरोई।
भीत-(स नपु०) भय, डर (वि०) भययुक्त, डरावना (हि० स्त्री०) भित्तिका, दीवार, विभाग करने का परदा, छत, चटाई, खण्ड, टुकडा, स्थान, जगह, छिद्र, दरार, त्रुटि, कसर, अवसर, मौका (हि०वि०) डरा हुआ, **भीत मे दौड़ना**-असभव काम करने का प्रयत्न करना, **भीत के बिना चित्र बनाना**-बिना सिर पैर की बातें करना।
भीतर-(हि० क्रि०) अन्दर, में (पु०) अन्तकरण, हृदय, अन्तःपुर, ज़नानखाना।
भीतरा-(हि० वि०) ज़नानखाने मे आने जाने वाला मनुष्य।
भीतरिया-(हि०पु०) वल्लभ सप्रदाय के वे प्रधान पुजारी जो मन्दिर के भीतर मूर्ति के पास रहते हैं।
भीतरी-(हिं०वि०) भीतर वाला, अन्दर का, **भीतरी टाग**-कुश्ती की एक पेंच।
भीति-(स०स्त्री०) भय, डर (हिं० स्त्री०) दीवार।
भीतिकर-(स०वि०) भयकर, डरावना।
भीतिकारी-(स०वि०) भयानक, डरावना।
भीती-(स० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
भीन-(हिं०पु०) प्रातः काल, सवेरा।
भीनना-(हि०क्रि०)समा जाना, भर जाना।
भीम-(स०वि०) भीषण, घोर, भयकर, (पु०) शिव, महादेव, विष्णु, महादेव की आठ मूर्तियों में से आकाश मूर्ति, भयानक रस, एक गन्धर्व का नाम, एक राक्षस का नाम, अङ्गिरस नाम की अग्नि, अठारह अक्षर का एक मन्त्र, पाचो पाण्डवों में से एक जो कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न थे, वृकोदर, विदर्भ के राजा का नाम, कुम्भकर्ण का एक पुत्र जो रावण का सेनापति था।
भीमचण्डी-(स०स्त्री०)एक देवी का नाम।
भीमता-(स० स्त्री०) भीमत्व, भयकरता।
भीमतिथि-(स०पु०)माघ सुदी एकादशी
भीमनाद-(स०पु०) सिंह, शेर, भयकर शब्द
भीमपलाशी-(स०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक सकर रागिणी।
भीमबल-(स० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
भीममुख-(स०वि०) डरावने मुख वाला, (पु०) एक प्रकार का बाण।
भीमर-(सं० नपु०) युद्ध, लड़ाई।
भीमरथ-(स० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्री कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
भीमराज-(हि० पु०) काले रग की एक प्रसिद्ध चिड़िया, भृङ्गराज।
भीम रात्रि-(स०स्त्री०) भयकर रात।
भीमल-(स०वि०) भयकर, डरावना।
भीम विक्रम-(स० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
भीम शासन-(स०पु०)कठोर शासन।
भीमसेन-(स० पु०) मध्यम पाण्डव, भीम, एक प्रकार का कपूर।
भीमसेनी-(हि० पु०) भीमसेनी कपूर, (वि०) भीमसेन सबधी, **भीमसेनी एकादशी**-ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, निर्जला एकादशी, माघ शुक्ला एकादशी, **भीमसेनी कपूर**-एक प्रकार का उत्तम कपूर, बरास।
भीमहास-(स० नपु०) इन्द्रतूल, गुड्डी की डोरी।
भीमा-(स० स्त्री०) रोचन नामक गन्ध-द्रव्य, चाबुक, दुर्गा देवी।
भीमोत्तर-(स०पु०)कुष्माण्ड, कुम्हड़ा।
भीमोदरी-(स० स्त्री०) उमा, दुर्गा का एक नाम।
भीम्राथली-(हिं०पु०)घोडे की एक जाति
भीर-(स० पु०) देखो आभीर, अहीर।
भीर-(हिं० स्त्री०) देखो भीड़, सकट, विपत्ति, दुःख, कष्ट (वि०) भयभीत, डरा हुआ।
भीरना-(हि०क्रि०) भयभीत होना, डरना।
भीरा-(हि०पु०) एक प्रकार का वृक्ष।
भीरी-(हि० स्त्री०) अरहर की टाल।
भीरु-(स० वि०) भयभीत, डरपोक, कायर (पु०) सियार, बेले का फूल, ईख की एक जाति।
भीरुक-(स० नपु०) वन, जगल, उल्लू, चादी।
भीरुता-(स०स्त्री०) भीरुत्व, कायरता, भय, डर।
भीरुताई-(हिं०स्त्री०) देखो भीरुता।
भीरुहृदय-(स०पु०) हिरन।
भीरे-(हिं०क्रि०वि०) समीप में, पास।
भील-(हिं०पु०) एक प्रसिद्ध जगली जाति (हिं०स्त्री०) ताल की सूखी मिट्टी जो पपड़ी के समान हो जाती है,
भीलभूषण-गुजा, घुमची।
भीष-(हिं० स्त्री०) देखो भिक्षा, भीख।
भीषक-(स०वि०) भयकारक, भयकर।
भीषज-(स०पु०) भिषक्, वैद्य।
भीषण-(स० पु०) साहित्य में भयानक रस, कुदरू, कबूतर, शिव, ब्रह्मा, (वि०) भयानक, डरावना, जो बड़ा उग्र या दुष्ट हो।
भीषणक-(स०वि०) डरावना।
भीषणता-(सं० स्त्री०) भीषण होने का भाव, डरावनापन, भयकरता।
भीषणी-(स० स्त्री०) सीता की एक सखी का नाम।
भीषन-(हिं०वि०) देखो भीषण, भयंकर।
भीषम-(हि० पु०) देखो भीष्म।
भीष्म-(स० वि०) भयानक, भयकर (पु०) शिव, महादेव, राक्षस, साहित्य

में भयानक रस, शान्तनु राजा के पुत्र, गाङ्गेय ।
भीष्मक–(स०पु०) विदर्भ देश के राजा जो श्रीकृष्ण की महिषी रुक्मिणी के पिता थे ।
भीष्मसुता–(स० स्त्री०) श्रीकृष्ण की स्त्री रुक्मिणी ।
भीष्मगन्धक–(स०पु०) माधवी लता ।
भीष्मपञ्चक–(स० नपु०) कार्तिक शुक्ला एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक की पाच तिथियां ।
भीष्मपितामह–(स०पु०) देखो भीष्म ।
भीष्मसू–(स०स्त्री०) गंगा ।
भीष्माष्टमी–(स० स्त्री०) माघ शुक्ल अष्टमी–इसी दिन भीष्म ने प्राण त्याग किया था ।
भीसम–(हिं०पु०) देखो भीष्म ।
भुंइ–(हिं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी ।
भुइंधरा–(हिं०पु०) देखो भुँइहरा ।
भुंइफोर–(हिं० पु०) वर्षा ऋतु में तालावों के आस पास मिलने वाली एक प्रकार की खुमी ।
भुंइहरा–(हिं० पु०) भूमि खोद कर बनाया हुआ स्थान, भूमि के नीचे बना हुआ कमरा, तहखाना ।
भुगाल–(हिं० पु०) तुरही, भोंपा ।
भुंजना–(हिं०क्रि०) भून जाना, झुलसना ।
भुंडली–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा, पिल्लू ।
भुंडा–(हिं०वि०) बिना सींग का ।
भुअंग–(हिं०पु०) देखो भुजङ्ग, सर्प, साप ।
भुअगम–(हिं०पु०) सर्प, साप ।
भुअन–(हिं०पु०) देखो भुवन ।
भुआर, भुआल–(हिं०पु०) भूपाल, राजा ।
भुई–(हिं० स्त्री०) भूमि, पृथ्वी, भुई आँवला–एक प्रकार की घास जो औषधियों में प्रयोग की जाती है ।
भुईंडोल–(हिं०पु०) भूकम्प, भूचाल ।
भुइधरा–(हिं०पु०) समतल भूमि पर आवा लगाने का एक विधि ।
भुइंनास–(हिं०पु०) किसी वस्तु के एक किनारे को भूमि में इस प्रकार गाड़ना कि उसको कुछ अंश भूमि के भीतर गड़ जावे, बिना जड़ का एक छोटा पौधा ।
भुइंहार–(हिं०पु०) देखो भूमिहार ।
भुई–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा, पिल्लू ।
भुक–(हिं०पु०, भोजन खाद्य पदार्थ आहार
भुक्खड़–(हिं०वि०) जिसको भूख लगी हो, भूखा, कँगाल, दरिद्र, वह जो बहुत खाता हो, पेटू, जिसको प्रायः भूख लगी हो ।
भुक्त–(स०वि०) भक्षित, जो खाया गया हो, उपभुक्त, भोगा हुआ, वह जिसका भोग हो चुका हो ।
भुक्तशेष–(स०नपु०) उच्छिष्ट, जूठा ।
भुक्ति–(स०स्त्री०) भोजन, आहार लौकिक सुख ग्रहों का किसी राशि में एक एक करके जाना, कब्जा, दखल, भुक्तिपात्र–भोजन करने का बरतन, भुक्तिप्रद–भोग देने वाला ।
भुखमरा–(हिं० वि०) वह जो भूखों मरता हो, भुक्खड़, जो खाने के लिये मरा जाता हो, पेटू ।
भुखाना–(हिं०क्रि०) भूख से पीडित होना
भुखालू–(हिं०वि०) जिसको भूख लगी हो, भूखा ।
भुगत–(हिं०स्त्री०) देखो भुक्ति ।
भुगतना–(हिं० क्रि०) भोगना, सहना, बीतना, चुकाना, निबटाना, दूर होना ।
भुगतान–(हिं०पु०) निबटारा, फैसला, मूल्य या देन का चुकाना, देना, देन ।
भुगताना–(हिं० क्रि०) सपादन करना, पूरा करना, बिताना, लगाना, बेबाक करना, दुःख सहने के लिये बाध्य करना, दूसरे को भुगताने के लिये प्रवृत्त करना, भोग कराना ।
भुगाना–(हिं० क्रि०) भोग कराना ।
भुग्न–(स०वि०) वक्र, टेढा, रोगी ।
भुगुति–(हिं० स्त्री०) देखो भुक्ति ।
भुच्चड़–(हिं०वि०) मूर्ख, बेवकूफ ।
भुजग–(हिं०पु०) देखो भुजङ्ग, सर्प ।
भुज–(स० स्त्री०) भुजा, बाहु, बाँह, कर, हाथ, दो की सख्या, भोजपत्र, छाया का आधार, लपेट, समकोणों का पूरक कोण, किसी क्षेत्र के किनारे की रेखा, प्रान्त, किनारा, शाखा, डाली, त्रिभुज का आधार, भुजकोटर–कक्ष, काख, बगल ।
भुजग–(स०पु०) साँप, आश्लेषा नक्षत्र ।
भुजगदारण–(स० पु०) गरुड़ ।
भुजगनिसृता–(स० स्त्री०) एक वर्णिक-वृत्त का नाम ।
भुजगपति–(स०पु०) वासुकि, अनन्त ।
भुजगशिशुवृता–(स० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में नव अक्षर होते हैं ।
भुजगाशन–(स० पु०) गरुड़ ।
भुजगी–(स०स्त्री०) सर्पिणी, साँपिन ।
भुजगेन्द्र–(स० पु०) सर्पराज, वासुकि ।
भुजङ्ग–(स० पु०) सर्प, स्त्री का यार, सीसा नामक धातु ।
भुजङ्गप्रयात–(सं० नपु०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं ।
भुजङ्गभोजी–(स० पु०) गरुड़, मयूर, मोर ।
भुजङ्गम–(स०पु०) सर्प, साप ।
भुजङ्गलता–(स०स्त्री०) नागवल्ली, पान ।
भुजङ्गविजृम्भित–(स० नपु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छब्बीस वर्ण होते हैं ।
भुजङ्गसंगता–(स० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नव वर्ण होते हैं ।
भुजङ्गा–(हिं०पु०) काले रग का मधुर स्वर बोलने वाला एक प्रसिद्ध पक्षी ।
भुजङ्गान्तक–(स०पु०) मोर, गिद्ध ।
भुजङ्गिनी–(सं० स्त्री०) गोपाल नामक छन्द का दूसरा नाम, सर्पिणी, नागिन ।
भुजङ्गी–(स०स्त्री०) सर्पिणी, एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं ।
भुजङ्गेरित–(स० नपु०) एक छन्द का नाम ।
भुजङ्गेश–(स०पु०) वासुकि, शेषनाग ।
भुजज्या–(स० स्त्री०) त्रिकोण क्षेत्र की भुजग्रीवा ।

भुजदण्ड-(स०पु०) बाहुदण्ड।
भुजदल-(स०पु०) हस्त, हथेली।
भुजपाश-(सं० पु०) गले में हाथ डालना, गलबाँही।
भुजप्रतिभुज-(स० पु०) सरल क्षेत्र की समानान्तर या आमने सामने की भुजाएँ।
भुजबद-(हिं० पु०) बाह में पहिरने का एक आभूषण, बाजूबन्द।
भुजबन्ध-(स० पु०) बाजूबन्द, अगद।
भुजबल-(स० पु०) बाहुबल (हिं०पुं०) शालिहोत्र के अनुसार एक भौंरी जो घोडे के अगले पैर के ऊपर होती है।
भुजबाथ-(हि० पु०) अँकवार।
भुजमूल-(स० नपु०) बाहुमूल, काख, मोढा, पक्खा।
भुजवा-(हि० पु०) भड़भूँजा।
भुजशिखर,भुजशिर-(स०)स्कन्ध,कन्धा
भुजा-(स० स्त्री०) बाँह, हाथ, भुजा उठाना-प्रतिज्ञा करना।
भुजागम-(स०पु०) वृक्ष,भेड़।
भुजाग्र-(स०पु०) कर, हाथ।
भुजान्तर-(स०नपु०) क्रोड़, गोद।
भुजाना-(हिं०क्रि०) देखो भुनाना।
भुजामध्य-(स० नपु०) बाहु का मध्य भाग, केहुनी।
भुजामूल-(स०नपु०) काख, बगल।
भुजाली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की टेढी बड़ी छूरी, खुखरी, छोटी बरछी।
भुजिया-(हिं०पु०) उबाला हुआ धान, उबाले हुए धान का चावल।
भुजिष्या-(स०स्त्री०)गणिका,वेश्या,दासी।
भुजेल-(हिं०पु०) भुजगा नामक पक्षी।
भुजौना-(हिं० पु०) भाड़ में भूजा हुआ अन्न, चबैना, भुनने या भुनाने की मजदूरी।
भुट्टा-(हि० पु०) जुआर या बाजरे की बाल, मक्के की हरी बाल।
भुठार-(हि० पु०) रेतीली भूमि में उत्पन्न घोड़ा।
भुठौर-(हिं० पु०) घोडे की एक जाति।
भुड़ली-(हि०स्त्री०) एक प्रकार का फूल।
भुडारी-(हिं० पु०) बाल के डठल के साथ लगा हुआ अन्न का दाना।
भुन-(हिं० पु०) अव्यक्त गुजार का शब्द, मक्खी आदि का शब्द।
भुनगा-(हिं० पु०) छोटा उड़ने वाला एक कीड़ा, फतिंगा, अति दुर्बल मनुष्य।
भुनगी-(हिं० स्त्री०) ईख के पौधे को हानि पहुँचाने वाला एक छोटा कीड़ा।
भुनना-(हि० क्रि०) भूना जाना, आग की गरमी से पक कर लाल होना, नोट रुपये आदि के बदले में छोटे सिक्कों का मिलना।
भुनभुनाना-(हिं० क्रि०) भुनभुन शब्द करना, मन ही मन में क्रुद्ध कर धीरे धीरे कुछ बड़बड़ाना।
भुनाना-(हि० क्रि०) भूनने का काम कराना, नोट रुपये आदि को छोटे सिक्कों में बदलना।
भुनुगा-(हिं०स्त्री०) देखो भुनगा।
भुवि-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
भुरकना-(हि० क्रि०) सूख कर भुरभुरा हो जाना, भूलना, किसी बुकनी को किसी पदार्थ के ऊपर छिड़कना, भुरभुराना।
भुरका-(हि० पु०) बुकनी, अबीर, मिट्टी का बड़ा कसोरा, देखो बोरकना।
भुरकाना-(हिं० क्रि०) भुरभुरा करना, छिड़कना, भुलावा देना, बहकाना।
भुरकी-(हिं०स्त्री०) अन्न रखने का छोटा कोठिला, छोटा कुल्हड़, पानी का छोटा गड्ढा।
भुरकुटा-(हिं०पु०) छोटा कीड़ा मकोड़ा।
भुरकुन-(हि०पु०) चूर्ण, चूरा।
भुरकुस-(हिं० पु०) चूर्ण, चूरा, भुरकुस निकलना-हड्डी पसली का चूरचूर होना
भुरत-(हि० पु०) एक प्रकार की बरसाती घास।
भुरता-(हिं० वि०) दब कर या कुचला जाकर पिस जाना, चोखा या भरता नाम का सालन।
भुरभुर-(हिं० स्त्री०) ऊसर या रेतीली भूमि में होने वाली एक प्रकार की घास।
भुरभुरा-(हिं०वि०)वह जो थोडे आघात से चूर चूर हो जावे, कुड़कीला।
भुरवना-(हि० क्रि०) भ्रम में डालना, भुलवाना, फुसलाना।
भुरली-(हि० स्त्री०) फसल को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
भुराई-(हि०स्त्री०) भोलापन, भूरापन।
भुराना-(हिं० क्रि०) भूलना भुलाना।
भुलक्कड़-(हिं० वि०) भूलने के स्वभाव वाला,जो बात को सर्वदा भूल जाता हो।
भुलना-(हि० पु०) देखो भुलक्कड़, एक प्रकार की घास।
भुलभुला-(हि० पु०) गरम राख।
भुलवाना-(हिं० क्रि०) भूलने के लिये प्रेरणा करना, भ्रम में डालना, विस्मृत करना, देखो भुलाना।
भुलसना-(हिं० क्रि०) गरम राख में झुलसना।
भुलाना-(हिं० क्रि०) भ्रम में डालना, धोखा देना, विस्मृत करना, भूलना। भटकना, भ्रम में पड़ना।
भुलावा-(हिं०पु०) छल, कपट, धोखा।
भुवंग-(हिं०पु०) देखो भुजग,सर्प, साप।
भुवंगम-(हिं०पु०) सर्प, साप।
भुवः-(स०पुं०) सात लोकों के अन्तर्गत दूसरा लोक, जो सूर्य और भूमि के बीच में है, अन्तरिक्ष लोक।
भुव-(स०पु०) अग्नि, आग, भुवोलोक, (स्त्री०) ससार, पृथ्वी।
भुवन-(स० नपुं०) जगत्, ससार, जल, आकाश, जन, चौदह की सख्या, पुराणानुसार-भूः, भुवः, स्व, महः, जनः, तपः और सत्य ये सात स्वर्ग लोक तथा-अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत्, महातल, रसातल और पाताल ये सात पाताल हैं, भूतजात, सृष्टि, एक मुनि का नाम।
भुवनकोश-(स०पु०) भूगोल, भूमण्डल।
भुवनपति-(स०पुं०) ससार का मालिक।
भुवनपाल-(हिं०पुं०) देखो भूपाल।
भुवनपावन-(स०त्रि०) भुवन को पवित्र

करने वाली गङ्गा।
भुवनाधीश–(स० पु०) त्रिभुवन के अधिपति।
भुवपाल–(स०पु०) देखो भूपाल।
भुवर्लोक–(स० पु०) अन्तरिक्ष लोक।
भुवनपति–(सं०पु०) भूपति, नृप, राजा।
भुवा–(हिं० पु०) रूई, घूवा।
भुवार–(हि०पु०) देखो भुवाल।
भुवाल–(हिं०पु०) राजा।
भुवि–(हिं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
भुशुण्डी–(हिं०पु०) काकभुशुण्डी, इनके विषय में यह प्रसिद्ध है कि ये अमर और त्रिकालज्ञ थे,एक अस्त्र का नाम।
भुस–(हिं० पु०) भूसा।
भुसी–(हिं० स्त्री०) देखो भूसी।
भुसौठा–(हिं०पु०) भूसा रखने का स्थान
भूकना–(हि० क्रि०) कुत्ते का भों भों करना, व्यर्थ बकबक करना (पु०) कुत्ते का शब्द।
भूंख, भूंखा–(हि०) देखो भूख, भूखा।
भूंचाल–(हि० पु०) भूकम्प।
भूंजना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु को आग में डालकर अथवा अन्य प्रकार से गरमी पहुँचा कर पकाना, तलना, पकाना, कष्ट देना, सताना।
भूंजा–(हि० पु०) भूना हुआ अन्न, चवेना, भड़भूजा।
भूडरी–(हिं० स्त्री०) माफी जमीन जो नाऊ, बारी आदि को दी गई हो।
भूंड़िया–(हिं०वि०) मगनी के हल बैल से खेती करने वाला।
भूंडोल–(हि०पु०) देखो भूकम्प।
भूरो–(हिं० पु०) भ्रमर, भौंरा।
भू–(स०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, स्थान, जगह, सीता की सखीका नाम (हिं०स्त्री०) भौंह
भूआ–(हि० पु०) रूई के समान हलकी तथा मुलायम वस्तु का छोटा टुकड़ा।
भूक–(हि०पुं०) देखो भूख।
भूकदम्बा–(स० स्त्री०) गोरखमुण्डी।
भूकन्द–(स०पु०) सूरण, ओल।
भूकम्प–(स०पु०) कुछ प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के ऊपरी भाग का एकाएक हिल उठना, भूचाल, भूडोल।
भूकर्ण–(स०पु०) ज्योतिष शास्त्र में निरक्ष मण्डल का व्यासार्ध।
भूकाक–(स० पु०) छोटा बाज पक्षी।
भूकेश–(स० पु०) सेवार, बर वृक्ष की जटाएँ जो भूमि पर लटकती हैं।
भूकेशा–(स० स्त्री०) राक्षसी।
भूख–(हि० स्त्री०) शरीर का वह वेग जिसमें भोजन की इच्छा हो, क्षुधा, अभिलाषा,कामना, आवश्यकता,जरूरत
भूखन–(हिं० पु०) देखो भूषण।
भूखना–(हि०क्रि०) सजाना।
भूखर–(हि० स्त्री०) क्षुधा, भूख, इच्छा।
भूखा–(हिं०वि०) क्षुधित, जिसको भोजन की प्रबल इच्छा हो, दरिद्र, जिसके पास खाने तक को न हो, इच्छुक, इच्छा करने वाला।
भूगर–(स०नपु०) विष, जहर।
भूगर्भ–(स० पु०) विष्णु, पृथ्वी का भीतरी हिस्सा, भूगर्भ गृह–तहखाना।
भूगर्भ शास्त्र–(स०पु०) वह शास्त्र जिसके द्वारा हमको यह ज्ञान होता है कि पृथ्वी का संघटन किस प्रकार हुआ है, उसकी ऊपरी तल तथा मध्य का भाग किन किन तत्वों से बना है, उसका आदि रूप क्या था तथा किन कारणो से वर्तमान रूप इसको प्राप्त हुआ है।
भूगोल–(स० पु०) भुवन कोष, भूमण्डल, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी भाग का स्वरूप तथा उसके प्राकृतिक विभागों का ज्ञान हमको होता है, भूगोल विद्या–(स० पु०) वह विद्या जिसके द्वारा पृथ्वी की आकृति, धर्म, विभाग गति तथा सम्बन्ध आदि जाना जाता है।
भूघन–(स०पु०) प्राणियों का शरीर।
भूचक्र–(स० नपु०) पृथ्वी की परिधि, विषुवत् रेखा, अयन वृत, क्रान्ति वृत्त।
भूचणक(स०पु०)मूगफली, चिनिया बादाम
भूचर–(स०पु०) भूमि पर रहने वाला प्राणी, शिव, महादेव, दीमक, एक प्रकार की तान्त्रिक सिद्धि।
भूचरी–(स०स्त्री०) योग शास्त्र के अनुसार समाधि अङ्ग की एक मुद्रा, इसका निवास नाक में है और इसके द्वारा प्राण और अपान वायु दोनों एकत्र हो जाते हैं।
भूचाल–(हि० पुं०) भूकम्प, भूडोल, जलजला।
भूचित्र–(स०नपु०) पृथ्वी का मानचित्र, नकशा।
भूटान–(हि० पु०, एक स्वाधीन पहाड़ी देश जो नेपाल के पूरब में है।
भूटानी–(हिं० वि०) भूटान सम्बन्धी, भूटान देश का, (पु०) भूटान देश का घोड़ा, (स्त्री०)भूटान देश की भाषा।
भूटिया बादाम–(हि०पु०) एक मझोले आकार का पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट होती है, इस वृक्ष का फल खाया जाता है।
भूड़–(हिं० स्त्री०) बालू मिली हुई जमीन, कुए का सोत।
भूडोल–(हि० पुं०) भूकम्प।
भूण–(हिं०पु०) जल भ्रमण, जल विहार, समुद्री यात्रा।
भूत–(स० नपु०) न्याय के अनुसार वे मूल द्रव्य जो सृष्टि के मुख्य उपकरण हैं जिनकी सहायता से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई है, मृत शरीर, शव, पिशाच आदि, वस्तु तत्व, सत्य, कुमार कार्तिकेय, लोध, कृष्ण पक्ष, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो यह सूचित करता है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका, वे कल्पित आत्माएँ जिनके विषय में यह माना जाता है कि वे अनेक प्रकार की उपद्रव करती हैं और कष्ट पहुँचाती हैं, वासुदेव के सबसे बड़े पुत्र का नाम, कृष्ण पक्ष, वृक्ष, देव योनि विशेष, अतीत काल, वह समय जो बीत गया हो, प्राणी, जन्तु, सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, चर अथवा अचर पदार्थ या प्राणी, (वि०) युक्त, मिला हुआ, बीता हुआ सदृश, समान, वह जो हो चुका हो, भूतदया–प्राणि मात्र पर दया करना,

भूत चढ़ना या सवार होना–अधिक क्रोध होना, बहुत ठह करना ; भूत का पकवान–भ्रम में डालने वाली असत्य वस्तु ।
भूतकर्ता–(स० पु०) ब्रह्मा ।
भूतकला–(स० स्त्री०) पच भूतों को उत्पन्न करने वाली एक शक्ति ।
भूतकाल–(स० पुं०) अतीत काल, बीता हुआ समय ।
भूतकालिक–(स० वि०) अतीत काल सम्बन्धी ।
भूतकृत–(स०पुं०) देवता, विष्णु ।
भूतखाना–(हि०पु०) बहुत मैला कुचैला तथा अधेरा घर ।
भूतघ्न–(स० वि०) भूत का नाश करने वाला ।
भूतचारी–(स०पु०) शिव, महादेव ।
भूतजटा–(स० स्त्री०) जटामासी ।
भूततत्त्व–(स०नपु०) पञ्चभूत का भाव या धर्म ।
भूतत्व–(स०नपु०) भूत का भाव या धर्म, भू विषयक तत्व ।
भूतत्वविद्या–(स० स्त्री०) भूगर्भ शास्त्र, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के भीतर के पदार्थों के विषय में ज्ञान होता है ।
भूतद्रावी–(स०पु०) लाल कनेर ।
भूतधात्री–(स० स्त्री०) पृथ्वी ।
भूतनाथ–(स० पुं०) शिव, महादेव ।
भूतपक्ष–(स० पु०) कृष्ण पक्ष ।
भूतपति–(स०पु०) कृष्ण,शिव,महादेव।
भूतपाल–(स० पु०) विष्णु ।
भूतपूर्णिमा–(स० स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा ।
भूतपूर्व–(स०वि०) वर्तमान काल के पहले का, इस समय से पहले का ।
भूतभर्ता–(स०पु०)भूतपति,शिव,महादेव ।
भूतभव्य–(सं० पु०) विष्णु ।
भूतभावन–(स०पु०) विष्णु, महादेव, (वि०) भूतपालक ।
भूतभाषा–(स०स्त्री०) पैशाचिक भाषा ।
भूतभृत्–(स० पु०) विष्णु ।
भूतभैरव–(स० पु०) भैरव की एक मूर्ति का नाम ।
भूतमहेश्वर–(स० पु०) विष्णु ।
भूतयज्ञ–(स० पु०) गृहस्थों के पञ्च यज्ञो में से एक, बलिवैश्वा, भूत बलि ।
भूतल–(स०नपु० पृथ्वी, ससार, पृथ्वी का ऊपरी तल, धरातल, पृथ्वीके नीचे का भाग, पाताल ।
भूतवत्–(स०वि०) पूर्ववत्, पहले के समान
भूतवादी–(स०वि०)ठीकठीक बोलने वाला।
भूतवाहन–(स०पु०) शिव का एक नाम।
भूतविद्–(स० वि०) सर्वज्ञ, बीती हुई बातो को जानने वाला ।
भूतशुद्धि–(स० स्त्री०) तन्त्र के अनुसार शरीर के चौबीस तत्वों की भावना करते हुए बीज विशेष द्वारा शरीर का शोधन ।
भूतससार–(स०पु०) जगत्, विश्वब्रह्माण्ड
भूतसञ्चार–(स० पुं०) भूतोन्माद नामक रोग ।
भूतसंप्लव–(स० पु०) प्रलय ।
भूतहत्या–(स०स्त्री०) जीवहत्या ।
भूताङ्कुश–(स०पु०) गावजुबान ।
भूतात्मा–(स०पु०) परमेश्वर,जीवात्मा, शिव, विष्णु, युद्ध, देह, शरीर ।
भूताधिपति–(स० पु०) भूतनाथ, शिव ।
भूतान्तक–(सं० पुं०) यम, रुद्र ।
भूतार्त–(स० वि०) भूतग्रस्त ।
भूतावास–(स० पु०) शरीर,विष्णु,ससार।
भूति–(स०स्त्री०) शिव की अणिमा आदि आठ सिद्धिया, भस्म, राख, वैभव, ऐश्वर्य, सगिन्धि, सत्ता, उत्पत्ति, विष्णु, लक्ष्मी, जाति, वृद्धि, अधिकता,
भूतिकर्म–(स०नपु०) गार्हस्थ्य सस्कार ।
भूतिकाम–(स० वि०) जिसको ऐश्वर्य की कामना हो ।
भूतिद–(स०पु०) शिव, मदादेव ।
भूतिदा–(स०स्त्री०) गगा ।
भूतिनिधान–(स०नपु०) धनिष्ठा नक्षत्र ।
भूतिनी–(हिं०स्त्री०) जिस स्त्री ने भूतयोनि प्राप्त की हो, डाकिनी, शाकिनी आदि ।
भूतिवाहन–(सं०पु०)शिव का एक नाम ।
भूतीवानी–(हिं०स्त्री०) भस्म, राख ।
भूतृण–(स०नपु०) रोहिस घास ।
भूतेश, भूतेश्वर–(स० पु०) परमेश्वर, शिव, महादेव ।
भूतेष्टा–(स०स्त्री०) काली तुलसी, आश्विन कृष्ण चतुर्दशी ।
भूतोन्माद–(स० पु०) भूत पिशाच के आक्रमण होने वाला उन्माद रोग ।
भूतोपदेश–(स० पु०) यथार्थ विषय में शिक्षा ।
भूत्तम–(स०नपु०) सुवर्ण, सोना ।
भूदार–(स० पु०) शूकर, सुअर ।
भूदेव–(स०पु०) ब्राह्मण ।
भूधन–(स० पु०) राजा, नृप ।
भूधर–(स०पु०) शेष नाग, विष्णु, राजा, एक प्रकार का औषधि बनाने का बालुका यन्त्र ।
भूधरता–(स० स्त्री०) भूधर का भाव या धर्म ।
भूधरेश्वर–(स० पु०) पर्वतों का राजा हिमालय
भून–(हिं०पु०) देखो भ्रूण ।
भूनना–(हि० क्रि०) आग पर रखकर पकाना, गरम घी या तेल मे डालकर पकाना, तलना गरम बालू मे डालकर पकाना, अधिक कष्ट देना, तकलीफ पहुचाना ।
भूनेता–(स०पु०) भूपति, राजा ।
भूप–(स०पु०) नृपति, राजा ।
भूपति–(स० पु०) राजा, नृप, बटुक-भैरव ।
भूपद–(स०पु०) वृक्ष, पेड़ ।
भूपदी–(स०स्त्री०) मल्लिका, चमेली ।
भूपरा–(हि०पु०) सूर्य ।
भूपरिधि–(स०पु०) पृथ्वीकी परिधि,व्यास।
भूपाल–(स०पु०) नृप, राजा ।
भूपाली–(स०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
भूपुत्र–(स०पु०) मङ्गल, नरकासुर ।
भूप्रकम्प–(स०पु०) भूकम्प ।
भूबिम्ब–(स०नपु०) पृथ्वी की छाया ।
भूभल–(हिं०स्त्री०) गरप राख या धूल, गरम रेत
भूभुज–(स०पु०) नृप, राजा ।
भूभुरि–(हि० स्त्री०) देखो भूभल ।

भूभृत्-(सं०पु०) पर्वत, राजा।
भूमण्डल-(सं० नपु०) मण्डलाकार भूमिभाग, पृथ्वी।
भूमय-(सं०वि०) सूर्य पत्नी, छाया।
भूमि-(सं०स्त्री०) वसुधा, पृथ्वी, जमीन, स्थान,जगह, क्षेत्र, आधार, वास स्थान, योगियों की एक अवस्था, प्रदेश, प्रान्त, जड़, बुनियाद।
भूमिकम्प-धरती का डोलना, भूडोल।
भूमिका-(सं० स्त्री०) रचना, बनावट, दूसरा भेष धारण करना, वेदान्त मत से चित्त की एक अवस्था, वक्तव्य विषय की सूचना, ग्रन्थ का आभास, मुखबन्ध, दीवाचा।
भूमिखण्ड-(सं० नपु०) भूमि का भाग।
भूमिगम-(सं०पु०) उष्ट्र ऊंट।
भूमिगर्त-(सं० पु०) भूमि मे का विवर, छिद्र, छेद।
भूमिगुहा-(सं०स्त्री०) भूमि गह्वर सुरंग।
भूमिगृह-(सं० नपु०) तहखाना।
भूमिचल (सं०पु०) भूकम्प, भूडोल।
भूमिज-(सं० वि०) जो भूमि से उत्पन्न हुआ हो, (नपु०) सुवर्ण, सोना, गुग्गुल, सीसा, एक अनार्य जाति का नाम।
भूमिजा-(सं०स्त्री०) सीता, जानकी।
भूमिजीवी-(सं० पुं०) वैश्य, खेतिहर, किसान।
भूमितल-(सं०नपु०) भूतल, पृथ्वी का ऊपरी भाग।
भूमित्व-(सं० नपु०) भूमि का भाव या धर्म।
भूमिदण्ड-(हिं० पु०) एक प्रकार की कसरत।
भूमिदेव-(सं० पु०) ब्राह्मण, राजा।
भूमिधर-(सं०पु०) पर्वत, पहाड़।
भूमिप, भूमिपति, भूमिपाल-(सं०पु०) भूपति, राजा।
भूमिपिशाच-(सं० पुं०) ताड़ का वृक्ष।
भूमिपुत्र-(सं०पु०)मगल ग्रह, नरकासुर।
भूमिपुत्री-(सं०स्त्री०) सीता, जानकी।
भूमिभाग-(सं० पु०) स्थान, जगह।
भूमिभुज-(सं० पु०) राजा, भूपति।
भूमिभृत्-(सं०पु०) राजा, पर्वत, पहाड़।
भूमिया-(हिं० पु०) भूमि का अधिकारी, ग्रामदेवता, ज़मीदार।
भूमिरुह-(सं० पु०) वृक्ष, पेड़।
भूमिलोक-(सं०पु०) पृथ्वीलोक।
भूमिष्ठ-(सं० वि०) भूमि पर गिरा हुआ, उत्पन्न।
भूमिसम्भवा-(सं०स्त्री०) सीता,जानकी।
भूमिसुत-(सं० पु०) मगल ग्रह, नरकासुर, वृक्ष।
भूमिसुता-(सं०स्त्री०) सीता, जानकी।
भूमिसुर-(सं० पु०) ब्राह्मण।
भूमिहार-(हिं०पु०) विहार प्रदेश वासी एक श्रेणी के ब्राह्मण।
भूमीन्द्र-(सं०पु०) भूपति, राजा।
भूम्य-(सं०वि०) भूमि पर होने योग्य।
भूय-(सं० अव्य०) बहुत, अधिक, फिर से।
भूयण-(हिं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
भूयिष्ठ-(सं०वि०) बहुतर, प्रचुर।
भूर-(हिं०वि०) बहुत, अधिक (पु०) बालू।
भूरज-(हिं० पु०) भोजपत्र का पेड़, धूलि, गर्दा।
भूरजपत्र-(हिं०पु०) भोजपत्र।
भूरपूर-(हिं० क्रि० वि०) देखो भरपूर।
भूरला-(हिं०पु०) वैश्यो की एक जाति।
भूरसी दक्षिणा-(हिं०स्त्री०) वह थोड़ी थोड़ी दक्षिणा जो किसी बड़े यज्ञ, दान अथवा धर्मकृत्य के अन्त में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।
भूरा-(हिं०पु०) धूमिल या खाकी रंग, युरोप देश का निवासी, कच्ची चीनी, खाड़, वह चीनी जो कच्ची चीनी को साफ कर के और पका कर बनाई जाती है,(वि०) मिट्टीके रग का, खाकी।
भूरि-(सं० नपु०) सुवर्ण, सोना (पु०) शिव, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, (वि०) प्रचुर, अधिक, बड़ा भारी।
भूरिगम-(सं० पु०) गर्दभ, गदहा।
भूरिज-(सं० वि०) जो एक समय मे बहुत सा उत्पन्न हो।
भूरिता-(सं० स्त्री०) भूरित्व, ज्यादती।
भूरितेज-(सं० वि०) अतिशय तेजस्वी (पु०) सुवर्ण, सोना, अग्नि, आग।
भूरिद, भूरिदा-(सं० वि०) बहुत दान देने वाला।
भूरिधामन्-(सं०वि०) अति प्रभावशाली।
भूरिबला-(सं०स्त्री०) अतिबला, ककही।
भूरुह-(सं० पु०) वृक्ष, पेड़।
भूरोह-(सं० पु०) केंचुआ।
भूर्जपत्र-(सं० पु०) भोजपत्र।
भूर्णि-(सं०स्त्री०) मरु भूमि, रेगिस्तान।
भूर्लोक-(सं० पु०) मर्त्य लोक।
भूल-(हिं० स्त्री०) भूलने का भाव, गलती, चूक, दोष, अपराध, अशुद्धि।
भूलक-(हिं० पु०) जो भूल करता हो, भूलने वाला।
भूलता-(सं०स्त्री०) केंचुआ नामक कीड़ा।
भूलना-(हिं०क्रि०) विस्मरण होना, याद न रहना, धोखे में आना, गल्ती करना, गुम कर देना, आसक्त होना, अनुरक्त होना, इतराना, घमड करना, गुम हो जाना, खो जाना, (वि०) भूलने वाला।
भूलभुलैया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की घुमावदार और चक्कर में डालने वाली इमारत जिसमें एक ही तरह के बहुत से रास्ते और दरवाजे रहते हैं जिसके भीतर जाकर बाहर निकलना कठिन होता है, बहुत घुमाव फिराव की बात या घटना, पेचीली बात, चकाबू।
भूलोक-(सं०पु०) पृथ्वीलोक, ससार।
भूलोटन-(हिं०वि०)पृथ्वी पर लोटने वाला
भूवलय-(सं०नपु०) भूमिकी परिधि।
भूवल्लभ-(सं०पु०) राजा।
भूवा-(हिं० पु०) रूई (वि०) रूई के समान सफेद।
भूविद्या-(सं० स्त्री०) वह शास्त्र जिसके अध्ययन करने से भूमि के भीतर के तत्वों का ज्ञान होता है।
भूशक्र-(सं०पु०) नृपति, भूपति, राजा।
भूशय्या-(सं० स्त्री०) भूमि पर सोना, शयन करने की भूमि।

भूशायी–(हिं० वि०) पृथ्वी पर सोने वाला, पृथ्वी पर गिरा हुआ, मृतक, मरा हुआ।
भूषण–(स०नपु०) अलकार, आभरण, गहना, ज़ेवर, शोभा बढाने वाली वस्तु, (पु०) विष्णु।
भूषणता–(सं० स्त्री०) भूषण का भाव या धर्म।
भूषन–(हिं० पु०) देखो भूषण।
भूषना–(हि० क्रि०) अलकृत करना, सजाना।
भूषा–(स० स्त्री०) अलकृत करने या सजाने की क्रिया, आभूषण, गहना।
भूषित–(स०वि०) अलकृत, गहना पहरे हुए, सज्जित, सजाया हुआ।
भूष्य–(सं०वि०) सजाने योग्य।
भूसस्कार–(स०पु०) यज्ञ करने से पहले भूमि को साफ करने, नापने, रेखा खींचने आदि की क्रिया।
भूसन–(हिं०पुं०) देखो भूषण।
भूसना–(हिं०क्रि०) कुत्तों का भूकना।
भूसा–(हिं० पु०) तुष, भूसी।
भूसी–(हि० स्त्री०) किसी प्रकार के अन्न या दाने के ऊपरका छिलका, भूसा
भूसीकर–(हिं०पु०) एक प्रकार का धान
भूसुत–(स०पु०) मगल ग्रह, वृक्ष, पेड़, नरकासुर।
भूसुता–(स०स्त्री०) सीता, जानकी।
भूसुर–(स०पुं०) ब्राह्मण।
भूस्वर्ग–(स०पु०) सुमेरु पर्वत।
भृकुटी–(स०स्त्री०) भ्रकुटी, भौंह।
भृगु–(स० पु०) एक प्रसिद्ध ऋषि, शुक्राचार्य, परशुराम, शिव, भृगुवार, शुक्रवार।
भृगुकच्छ–(स०नपु०) नर्मदा नदी के उत्तर तटपर स्थित एक तीर्थ का नाम
भृगुतनय–(सं०पु०) शुक्राचार्य।
भृगुनन्दन, भृगुनायक–(सं० पु०) परशुराम।
भृगुनाथ–(स०पु०) परशुराम।
भृगुमुख्य–(स०पु०) परशुराम।
भृगुरेखा–(स०स्त्री०) विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था।
भृगुलता–(स०स्त्री०) देखो भृगुरेखा।
भृङ्ग–(स० नपुं०) दारचीनी, अभ्रक (पु०) भ्रमर, भौंरा, भृगराज, भगरैया, एक प्रकार का कीड़ा, काले रग का एक प्रसिद्ध पक्षी, भृङ्गप्रिया–माधवी लता, भृङ्गबन्धु–कदम्बवृक्ष, भृङ्गमोही–कनक चम्पा।
भृङ्गराज–(स० पु०) कालेरग का एक प्रसिद्ध पक्षी।
भृङ्गि–(स०पु०) शिवजी का एक द्वारपाल
भृङ्गी–(सं० स्त्री०) अतिविषा, अतीस, भौंरी, भाग, वीरबहूटी नाम का कीड़ा (पु०) शिवजी का एक द्वारपाल।
भृङ्गीश–(स०पु०) शिव, महादेव।
भृत–(सं० वि०) पुष्ट, पाला हुआ, भरा हुआ (पु०) भृत्य, दास।
भृतक–(स० पु०) वह जो वेतन लेकर काम करता हो।
भृति–(स० स्त्री०) वेतन, तनखाह, मूल्य, दाम, पालन पोषण, नौकरी, मजदूरी।
भृतिका–(स०स्त्री०) वेतन, तनखाह।
भृत्य–(स० पु०) दास, नौकर।
भृत्यता–(स० स्त्री०) भृत्य का भाव या कर्म।
भृत्या–(स० स्त्री०) दासी, चाकरनी।
भृमि–(स० पु०) पानी में का भँवर या चक्कर।
भृश–(स० नपु०) बहुत अधिक, ज़्यादा
भृष्ट–(स०वि०) आँच से पकाया हुआ, भूना हुआ, भृष्टकार–भड़भूजा।
भेंगा–(हिं० वि०) जिसकी आख की पुतली टेढी रहती हो।
भेंट–(हिं० स्त्री०) मिलना, मुलाकात, उपहार, नज़राना।
भेंटना–(हिं० क्रि०) मिलना, मुलाकात करना, आलिंगन करना, गलें लगाना।
भेंटाना–(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ तक हाथ पहुचाना, हाथ से छुआ जाना, मिलना।
भेंड़–(हि० स्त्री०) देखे भेड़।
भेंवना–(हिं०क्रि०) भिगोना, तर करना।
भेउ–(हिं० पु०) देखो भेद, रहस्य, गुप्त बात।
भेक–(स०पु०) मेढक, काला अबरख, बादल
भेकभुज–सर्प, साप, भेकी–मेढकी।
भेख–(हिं० पु०) देखो वेष।
भेखज–(हिं० पुं०) देखो भेषज।
भेज–(हिं० स्त्री०) जो कुछ भेजा जाय, लगान।
भेजना–(हि० क्रि०) किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान को रवाना करना।
भेजवाना–(हिं० क्रि०) भेजने का काम दूसरे से कराना।
भेजा–(हि० पु०) खोपड़ी के भीतर का गूदा, मग्ज़, चन्दा, बेहरी।
भेट–(हि० स्त्री०) देखो भेंट।
भेटना–(हि०पु०) कपास के पौधे का फल
भेड़–(हिं० स्त्री०) बकरी की जाति का एक चौपाया जिसके रोवें के कम्बल आदि बनते हैं, गाडर, भेड़िया धसान–बिना सोचे बिचारे किसी का अनुसरण।
भेड़ा–(हिं०पु०) भेड़ जाति का नर, मेढा
भेड़िया–(हि०पु०) एक प्रसिद्ध मासहारी जगली पशु।
भेड़ी–(स० स्त्री०) मादा भेड़, नीची भूमि के चारो ओर का बाध।
भेतव्य–(स०वि०) भय के योग्य।
भेद–(स० पु०) प्राचीन राजनीति के अनुसार शत्रु को वश में करने का तीसरा उपाय, शत्रु को बहका कर अपनी ओर मिलाना अथवा शत्रुओं में द्वेष उत्पन्न करना, मर्म, तात्पर्य, अन्तर फर्क, प्रकार, किस्म, छिपी हुई बात, भेदने या छेदने की क्रिया।
भेदक–(स० वि०) विदारक, छेदने वाला, वैद्यक में रेचक या दस्तावर (औषधि)।
भेदकर–(स० वि०) भेद करने वाला।
भेदकातिशयोक्ति–(सं० स्त्री०) एक अर्थालकार जिसमें किसी वस्तु का

अतिशय वर्णन किया जाता है।
भेदड़ी-(हिं० स्त्री०) खड़ी।
भेदन-(सं० नपु०) विदारण, छेदना, वेधना, अमलबेंत, हींग, सुअर (वि०) विरेचन, दस्त लाने वाला।
भेदनीय-(सं० वि०) भेद करने योग्य।
भेद बुद्धि-(सं० स्त्री०) एकता का अभाव, फूट।
भेद भाव-(सं०पु०) अन्तर, फर्क।
भेद वादी-(सं० वि०) भिन्न मतावलम्बी
भेदित-(सं०वि०) भिन्न, विदारित।
भेदित्व-(सं०नपु०,भेद का भाव या धर्म
भेदिनी-(सं० स्त्री०) तन्त्र के अनुसार षट्चक्र को भेदने की शक्ति।
भेदिया-(हिं०पु०) भेद लेने वाला, गुप्त रहस्य को जानने वाला,गुप्तचर,जासूस।
भेदी-(हिं०पु०) गुप्त वार्ता को जानने वाला, जासूस (वि०) भेद करने वाला।
भेदी सार-(सं०पुं०) बढइयों का लकड़ी छेदने का बरमा।
भेद्य-(सं० वि०) भेद करने योग्य, छेदने योग्य।
भेन-(हि० स्त्री०) भगिनी, बहिन।
भेना-(हिं०क्रि०) भिगोना, तर करना।
भेमस-(हिं०पु०) एक प्रकार का पतला बांस।
भेर-(सं०पु०) भेरी,पटह,दुन्दुभी, नगाड़ा
भेरवा-(हिं०पु०) एक प्रकार का खजूर।
भेरा-(हिं०पु०, देखो बेड़ा, एक प्रकार का वृक्ष।
भेरी-(सं०स्त्री०,बड़ा ढोल या नगाड़ा,पटह
भेरीकार-(हिं०पु०) नगाड़ा बजाने वाला
भेरुण्ड-(सं० वि०) भयानक, भयकर।
भेल-(सं०पु०) भेलक, बेड़ा, (वि०) मूर्ख, चचल।
भेलक-(सं०पु०) नदी आदि पार करने का बेड़ा, प्लव, तारण।
भेला-(हिं०पु०) भेंट, मुलाकात, बड़ा गोला या पिण्ड।
भेली-(हिं० स्त्री०) गुड़ आदि की बट्टी या पिंडी।
भेव-(हि०पु०)रहस्य,भेद, गुप्तवार्ता,बारी
भेवना-(हि०क्रि०) भिगोना,तर करना।
भेश-(हिं०पु०) देखो वेश।
भेष-(हि०पु०) देखो वेश।
भेषज-(स०नपु०)औषधि,दवा,जल,सुख
भेषजागार-(स० नपु०) औषध बनाने का घर।
भेषजाङ्ग-(सं०नपु०)औषधि का अनुपान
भेषना-(हिं०क्रि०) स्वाग बनाना।
भेस (हि० पु०) वह बनावटी रूप रग तथा पहरावा जो वास्तविक रूप को छिपाने के लिये धारण किया जाता है,वेष
भेसज-(हि०स्त्री०) औषधि, दवा।
भेसना-(हिं०क्रि०) वेश धारण करना, वस्त्र आदि पहरना।
भैंस-(हिं० स्त्री०) गाय की जात का परन्तु उससे बड़ा काले रग का एक चौपाया जिसको लोग दूध के लिये पालते हैं, एक प्रकार की मीठे जल की मछली।
भैंसा-(हि०पु०) भैंस का नर, पुराण के अनुसार यह यम का वाहन माना जाता है
भैंसाव-(हिं०पु०) भैंस और भैंसे का जोड़ा खाना।
भैंसासुर-(हिं०पु०) देखो महिषासुर।
भैंसोरी-(हिं०स्त्री०) भैंस का चमड़ा।
भै-(हि०पु०) देखो भय, डर।
भैक्ष-(स०नपु०) भिक्षा मागने की क्रिया या भाव, भिक्षा, भीख, भैक्ष चर्या-भीख मागने का काम, भैक्ष जीविका-भीख मागकर जीविका का निर्वाह, भैक्ष वृत्ति-भिक्षा द्वारा जीवनोपाय।
भैक्षा कुल-(स० नपु०) अति विशाल, वह स्थान जहा पर बहुत से लोगों को भिक्षा मिलती हो।
भैचक-(हि० वि०) विस्मित, चकित, घबड़ाया हुआ, भौचक।
भैंजन-(हिं०वि०) भय उत्पन्न करने वाला
भैदा-(हिं०वि०) भयप्रद, डरावना।
भैन-(हि०स्त्री०) भगिनी, बहिन।
भैना, भैनी-(हि०स्त्री०) देखो भैन,बहिन
भैने-(हि०पु०)बहिन का पुत्र,भानजा।
भैम-(स०वि०)भीम सम्बधी (पु०) राजा उग्रसेन।
भैमी-(स०स्त्री०) दमयन्ती।
भैयस-(हि० पु०) पैत्रिक सम्पत्ति मे भाइयों का अश या हिस्सा।
भैया-(हि० पु०) भ्राता, भाई, एक सबोधन का शब्द जो बराबरी वाले तथा छोटों के लिये व्यवहार किया जाता है, नाव की पट्टी या तख्ती।
भैयाचार, भैयाचारी-(हि०पु०) देखो भाईचारा।
भैयादोज-(हि० स्त्री०) कार्तिक शुक्ल द्वितीया, भाईदूज, जिस दिन बहिन भाई को टीका लगाती हैं।
भैरव-(स० वि०) भयकर, डरावना, (पु०) शकर, महादेव, साहित्य में भयानक रस, भयानक शब्द, शिव के गण, एक राग का नाम, भैरव मस्तक-ताल का एक भेद।
भैरवी-(सं०स्त्री०) महाविद्या की मूर्ति का एक भेद, चामुण्डा, सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी का नाम, शरद ऋतु के प्रभात में यह गाई जाती है।
भैरवीचक्र-(स० नपु०) तान्त्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट तिथियों में भैरवी का पूजन करने के लिये इकट्ठा होते हैं।
भैरवी यातना-(स० स्त्री०) पुराण के अनुसार वह यातना जो प्राणियों को भैरव देते हैं।
भैरवेश-(स० पु०) शकर, महादेव।
भैरू-(हि० पु०) देखो भैरव।
भैरो-(हि० पु०) देखो भैरव।
भैरिक-(स०पु०) दुन्दुभि बजाने वाला।
भैरी-(हि०स्त्री०) देखो बहरी।
भैयाद-(हि०पु०) भाईचारा, बिरादरी।
भैषज, भैषज्य-(स०नपु०) औषध, दवा
भैहा-(हि० पु०) डरा हुआ, भयभीत, प्रेतग्रस्त।
भौं-(हि०स्त्री०) भों भों का शब्द।
भोंकना-(हि० क्रि०) किसी नुकीली चीज़ को ज़ोर से किसी चीज़ में धँसाना, घुसेड़ना।

भौंगरा-(हिं०पु०) एक प्रकार की लता।
भोगाल-(हिं०पु०) बड़ा भोंपा।
भौंचाल-(हिं० पु०) देखो भूकम्प।
भौंड़ा-(हिं० वि०) कुरूप, भद्दा, (पु०) जुआर की जाति की एक प्रकार की घास, भौंड़ापन-कुरूपता, भद्दापन।
भौंड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मेंढ़ जिसके पेट पर के रोवें सफेद होते हैं।
भौंतरा-(हिं०वि०)जिसकी धार तेज न हो।
भौंपू-(हिं० वि०) मूर्ख, बेवकूफ, भोला, सीधा।
भोंपू-(हिं० पु०) तुरही की तरह का मुँह से फूँककर बजाने का बाजा।
भोंसले-महाराष्ट्र राजन्य गण की एक उपाधि।
भो-(हिं० क्रि०त्रि०) भया, हुआ।
भोकस-(हिं०पु०) एक प्रकार के राक्षस (वि०) भुक्खड़।
भोकार-(हिं०स्त्री०) जोर से रोने का शब्द
भोक्ता-(स०वि०) भोजन करने वाला, खाने वाला, सुख दुःख का उपभोग करने वाला, भोगने वाला, (पु०) भर्ता, पति, खाविन्द।
भोग-(सं०पु०) सुख या दुःख, सुखदुःख का अनुभव, भोजन, शरीर, मान, पुण्य पाप का फल, पालन पोषण, धन दौलत, साँप का फन, किराया, भाड़ा, रखेली स्त्री को दिया जाने वाला वेतन, स्त्री समोग, मैथुन, प्रारब्ध, खाद्य पदार्थ जो देवी देवता के आगे रक्खा जाता है, सूर्य आदि ग्रहो का राशि स्थिति का काल।
भोगगृह-(स०नपु०)वासगृह, रहने का घर
भोगत्व-(स०नपु०) भोग का भाव या धर्म
भोगदेह-(स० पु०) स्वर्ग या नरक भोगने के लिये सूक्ष्म देह।
भोगना-(हिं० क्रि०) शुभाशुभ कर्मों के फलों का अथवा सुख दुःख का अनुभव करना, भुगतना, सहन करना, स्त्री प्रसग करना।
भोगपति-(स० पु०) किसी नगर या प्रान्त का अधिकारी।
भोगपात्र-(स०नपु०) वह पात्र जिसमें नैवेद्य रख कर देवता को अर्पण होता है।
भोगबन्धक-(स०पु०) बधक या रेहन रखने की वह रीति जिसमें उधार लिये हुए रुपये का सूद नहीं देना होता परन्तु कुछ काल के लिये महाजन को सम्पत्ति का भोग करने का अधिकार होता है।
भोगभूमि-(स०स्त्री०) वह स्थान जहा केवल भोग ही होता है कर्म नहीं होता।
भोगलाभ-(स० पु०) सुखभोग आदि की प्राप्ति।
भोगलिप्सा-(स०स्त्री०) व्यसन, लत।
भोगली-(हिं०स्त्री०) छोटी नली, पुपली, नाक में पहरने की नथ, कान में पहरने का एक आभूषण, चिपटे तार या बादले का बना हुआ एक प्रकार का सलमा।
भोगवती-(स० स्त्री०) नागों की स्त्री, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
भोगवस्तु-(स०नपु०) उपभोग्य द्रव्य।
भोगवाना-(हिं०क्रि०) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना, भोग कराना।
भोगविलास-(स० पु०) आमोद प्रमोद, सुख चैन।
भोगस्थान-(स० नपु०) भगभूमि, रमणी गृह।
भोगाना-(हिं० क्रि०) भोगने में दूसरे को प्रवृत्त करना, भोग कराना।
भोगावली-(स०स्त्री०) स्तुति, भोगश्रेणी।
भोगिनी-(स०स्त्री०) राजा की रखेली स्त्री।
भोगिभुज्-(स० पु०) मयूर, मोर।
भोगी-(सं० पु०) सर्प, राजा, नापित, हज्जाम, अश्लेषा नक्षत्र, शेषनाग, वह जो भोगता हो, ज़मीदार(वि०) इन्द्रियों का सुख चाहने वाला, विषयासक्त, भुगतने वाला, सुखी, विषयी, व्यसनी, विलासी, आनन्द लेने वाला, खाने वाला।
भोग्य-(स०वि०) भोगने योग्य, काम मे लाने योग्य, जिसका उपभोग किया जावे, (नपु०) धनधान्य।
भोग्यत्व-(स०नपु०) भोगने का धर्म या भाव।
भोग्यभूमि-(स०स्त्री०) मर्त्य लोक।
भोग्यमान-(स०वि०) जो अभी भोगा न गया हो।
भोग्या-(स०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
भोज-(स० पु०) चन्द्रवंशी एक राजा का नाम, श्रीकृष्ण के एक ग्वाल सखा का नाम, कच्छ के अन्तर्गत एक स्थान जो आजकल भुज कहलाता है, (हिं०पु०) बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना, जेवनार, खाने की चीज़, परमार वंशी एक प्रसिद्ध राजा का नाम जो बड़े विद्वान् थे।
भोजक-(स० वि०) भोजन करने वाला, भोग विलास करने वाला, भोगी, ऐयाश।
भोजदेव-(स०पुं०) भोजराज जो कान्यकुब्ज देश के राजा थे।
भोजन-(स०नपु०) भक्षण, कड़े पदार्थों को दाँतों से कुचल कर निगलना, भोजन या खाने की सामग्री, भोजन काल-भोजन करने का समय, भोजन त्याग-भोजन छोड़कर उठ जाना, भोजन पात्र-जिस पात्र में भोजन किया जाता है, भोजन वेला-खाने का समय, भोजन व्यग्र-पेट्ट, भोजनशाला-रसोइया घर।
भोजनालय-(स० पु०) पाकशाला, रसोइया घर।
भोजनीय-(स०वि०) भोजन करने योग्य।
भोजपत्र-(हिं० पुं०) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी छाल प्राचीन समय में पुस्तकादि लिखने के काम में आती थी।
भोज परीक्षक-(स० पु०) रसोई की परीक्षा करने वाला।
भोजपुरिया-(हिं० पु०) भोजपुर का निवासी, भोजपुर सबंधी,
भोजपुरी-(स०स्त्री०)राजा भोज की राजधानी भोजपुर की भाषा, (पु०)भोजपुर निवासी (वि०) भोजपुर सबंधी।

भोजयिता-(हिं॰वि॰)भोजन करने वाला।
भोजयितव्य-(स॰ वि॰) भोजन करने योग्य।
भोजराज-कान्यकुब्ज-(कन्नौज) के एक प्रसिद्ध राजा जो रामभद्र देव के पुत्र थे।
भोजवाजी-(स॰ स्त्री॰) ऐन्द्रजालिक क्रीड़ा, रहस्य पूर्ण तमाशे, जादूगरी।
भोजविद्या-(स॰ स्त्री॰) ऐन्द्रजालिक विद्या, वाजीगरी।
भोजी-(हिं॰वि॰) भोजन करने वाला।
भोजू-(हिं॰ पु॰) भोजन।
भोजेश-(स॰पुं॰) भोगराज, कंस।
भोज्य-(स॰ वि॰) भोजन करने योग्य, (पु॰) खाद्य पदार्थ।
भोट-(हिं॰पु॰) भूटान देश, एक प्रकार का बड़ा पत्थर।
भोटिया-(हिं॰ पु॰) भूटान देश का निवासी भूटान देश की भाषा, (वि॰) भूटान देश सम्बन्धी, **भोटिया बादाम**-आलूबुखारा, मू गफली।
भोडर-(हिं॰ पु॰) अभ्रक, अबरख, अबरख का चूर, बुक्का, एक प्रकार का गन्धविडाल।
भोडल-(हिं॰पु॰) अबरक।
भोडागार-(हिं॰पु॰) भण्डार घर।
भोण-(हिं॰पु॰) गृह, घर।
भोना-(हिं॰क्रि॰) लिप्त होना, भीनना, अनुरक्त होना।
भोपा-(हिं॰पु॰) एक प्रकार की तुरही, मूर्ख, वेवकूफ।
भोबरा-(हिं॰पुं॰) एक प्रकार की घास।
भोभो-(स॰ अव्य॰) सम्बोधन का शब्द, अरे! हो!
भोम, भोमी-(हिं॰ स्त्री॰) पृथ्वी।
भोर-(हिं॰ पुं॰) प्रातः काल, तड़का, सबेरा, एक प्रकार का बड़ा पक्षी, घोखा, भूल (वि॰) चकित, घबड़ाया हुआ।
भोरा-(हिं॰ पुं॰) देखो भोर, (वि॰) सीधा, भोला भाला।
भोराई-(हिं॰ स्त्री॰) भोलापन, सिधाई।
भोराना-(हिं॰क्रि॰) भ्रम में डालना, बहकाना, भ्रम में पड़ना, धोखे में आना
भोरानाथ-(हिं॰पु॰) देखो भोलानाथ, शिव
भोरु-(हिं॰पु॰) देखो॰ भोर।
भोला-(हिं॰ वि॰) सरल, सीधा सादा, मूर्ख, वेवकूफ।
भोलानाथ-(स॰पु॰) शिव, महादेव।
भोलापन-(हिं॰ पु॰) सरलता, सिधाई, मूर्खता।
भोलाभाला-(हिं॰वि॰) सरल चित्त का, सीधा सादा।
भोलि-(स॰पु॰) उष्ट्र, ऊट।
भोसर-(हिं॰वि॰) मूर्ख, वेवकूफ।
भौं-(हिं॰ स्त्री॰) आख के ऊपर के वालो की श्रणी, भौंह।
भौंकना-(हिं॰क्रि॰) भौं भौं शब्द करना, कुत्तों का वोलना, निरर्थक वोलना, बकबक करना।
भौंगर-(हिं॰पु॰) छत्रियों की एक जाति
भौंचाल-(हिं॰पु॰) देखो भूकम्प।
भौंडी-(हिं॰ स्त्री॰) छोटा पहाड़, पहाड़ी
भौंतुवा-(हिं॰ पुं॰) काले रग का खटमल के आकर का एक कीड़ा जो वर्षा ऋतु में पानी के ऊपर चक्कर खाता फिरता है, एक प्रकार का रोग जिसमें गिल्टी निकल आती है, तेली का बैल जो दिन भर कोल्हू में जुता रहता है।
भौंर-(हिं॰पु॰) भौंरा, जल का आवर्त, भॅवर कली, मुश्की घोड़ा।
भौंरकली-(हिं॰स्त्री॰) देखो भॅवरकली
भौंरा-(हिं॰पु॰) काले रग का उड़ने वाला एक फतिंगा, बड़ी मधुमक्खी, हिंडोले की लकडी, मकान के नीचे का तहखाना, अन्न रखने का गड्ढा, ज्वार आदि की फस्ल को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा, गडेरिये का भेडो की रखवाली करने वाला कुत्ता, पशुओं का एक रोग, गाड़ी के पहिये का मध्य भाग, रहट की खडे बल की चरखी, काला या लाल भड़, लट्टू के आकार का एक खिलौना, सारङ्ग, डगर।
भौंराना-(हिं॰ क्रि॰) परिक्रमा करना, घुमाना, चक्कर काटना, फेरी लगाना, विवाह की भँवर दिलाना, व्याह करना।
भौंरी-(हिं॰स्त्री॰) पशुओं के शरीर में का रोवें का चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुण दोष का निर्णय होता है, तेज बहते हुए पानी का चक्कर, आवर्त, भङ्गाकडी, वाटी, विवाह के समय वर और वधू का अग्नि का परिक्रमा करना।
भौंह-(हिं॰ स्त्री॰) आँख के ऊपर की हड्डी पर के वाल, भृकुटी, भौं, **भौंह चढ़ाना**-त्योरी चढ़ाना, खफा होना, **भौंह जोहना**-खुशामद करना।
भौ-(हिं॰ पु॰) भव, ससार, जगत्, भय, डर।
भौका-(हिं॰पु॰) बडी दौरी, टोकरा।
भौगिया-(सं॰ वि॰) ससार के सुखों को भोगने वाला।
भौगोलिक-(स॰वि॰) भूगोल सम्बन्धी, भूगोल का।
भौचक-(हिं॰वि॰) स्तम्भित, घबडाया हुआ, हक्का बक्का।
भौचाल-(हिं॰पुं॰) देखो भूकम्प।
भौज, भौजाई-(हिं॰स्त्री॰) भाई की स्त्री, भावज।
भौज्य-(स॰पु॰) वह राज्य प्रबन्ध जिसमें राजा प्रजा से लाभ उठाता हो परन्तु वह प्रजा के स्वत्वों का कुछ विचार न करता हो।
भौठा-(हिं॰पु॰) छोटा पहाड, टीला।
भौत-(स॰पु॰) वह वलि जो भोजन के पहले प्राणियों के उद्देश्य से दी जाती है, (वि॰) भूत सबधी।
भौतिक-(स॰ वि॰) पञ्चभूत या सृष्टि सबधी, पञ्च तत्वों से बना हुआ, पार्थिव, शरीर सबधी, शरीर का, भूत योनि का (पु॰) महादेव, शिव, शरीर की इन्द्रिया।
भौतिक विद्या-(स॰ स्त्री॰) भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी आदि को बुलाने तथा इनसे ग्रस्त मनुष्यों पर से इनको

हटाने की विद्या।
भौतिकसृष्टि-(सं० स्त्री०) आठ प्रकार की देव योनि, पाच प्रकार की तिर्यक् योनि तथा मनुष्य योनि इन तीनों का समुच्चय।
भौन-(हिं० पु०) देखो भवन, घर, मकान।
भौना-(हिं०क्रि०) भ्रमण करना, घूमना।
भौम-(सं०पु०) मगल ग्रह, नरकराज, एक प्रकार का पुच्छल तारा (वि०) भूमि सबधी, भूमि से उत्पन्न , **भौम चार**-ज्योतिष के अनुसार मगल ग्रह का सचार, **भौम जल**-भूमि सबधी जल,
भौमन-(सं०पु०) विश्वकर्मा।
भौम प्रदोष-(स० पु०) मगलवार को पड़ने वाला प्रदोष।
भौम रत्न-(सं०नपु०) प्रवाल, मूँगा।
भौम वार-(स०स्त्री०) मगलवार।
भौमासुर-(स० पु०) नरकासुर नामक दैत्य।
भौमिक-(स०वि०) भूमि सम्बधी, (पु०) भूमि का अधिकारी, जमीदार।
भौमी-(स०स्त्री०) सीता, जानकी।
भौर-(हिं०पु०) घोडे का एक भेद, देखो भँवर, भौरा।
भौलिया-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की नाव जो ऊपर से ढपी रहती है।
भौवन-(स०वि०) भुवन सबधी।
भौसा-(हिं० पुं०) जन समूह, भीड़ भाड़, हो हुल्लड़।
भ्रंगारी-(हिं०पु०)झींगुर।
भ्रंगी-(हिं० पु०) एक प्रकार का भनभनाने वाला फतिंगा।
भ्रंश-(स०पु०) ध्वस, नाश, अधःपतन, भागना, (विं०) भ्रष्ट, खराब; **भ्रंशन**-अधः पतन।
भ्रंकुश-(स० पु०) स्त्री वेश में नाचने वाला पुरुष।
भ्रकुटि-(स०स्त्री०) भृकुटी, भौंह।
भ्रत-(हिं०पु०) दास, सेवक।
भ्रद-(हिं०पु०) हाथी।
भ्रम-(स० पु०) मिथ्या ज्ञान, भ्रान्ति, धोखा, सन्देह, सशय, मूर्छा, बेहोशी, भ्रमण, जल निकलने की मोरी, कुम्हार का चाक, खोदने का हथियार, **भ्रमकारी**-भ्रम में डालने वाला।
भ्रमण-(स०नपु०)घूमना फिरना, यात्रा, सफर, मण्डल, फेरी, चक्कर।
भ्रमणीय-(स०वि०) घूमने फिरने वाला।
भ्रमत्व-(स०नपु०)भ्रम का भाव या धर्म
भ्रमना-(हिं०क्रि०) धोखा खाना, भूल करना, भटकना, भूलना।
भ्रम मूलक-(स०वि०) जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।
भ्रमर-(स०पु०) मधुकर, भौंरा।
भ्रमरक-(सं०पु०) माथे पर के लटकने वाले बाल।
भ्रमर कण्टक-(स०पुं०) एक प्रकार के फतिंगे जो दीपक को बुता देते हैं।
भ्रमरगीत-(हिं० स्त्री०) दोहे का एक भेद, एक प्रकार का छप्पय।
भ्रमर पदक-(स०नपु०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक पाद में बारह अक्षर होते हैं।
भ्रमर माली-(स० स्त्री०) एक सुन्दर सुगन्ध का पौधा।
भ्रमर विलासिता-(स०स्त्री०) एक वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं।
भ्रमरानन्द-(स०पु०) वकुल,मौलसिरी।
भ्रमरावली-(सं० स्त्री०) एक वृत्त का नाम जिसको नलिनी या मनहरण भी कहते हैं, भौंरों की पक्ति।
भ्रमरी-(स० स्त्री०) मिरगी रोग, भौंरे की मादा।
भ्रम वात-(स०पु०) आकाश में का वह वायुमण्डल जो सर्वदा चक्कर खाता रहता है।
भ्रमात्मक-(स०वि०) सदिग्ध, जिसके विषय में भ्रम हो।
भ्रमाना-(हिं० क्रि०) घुमाना फिराना, बहकाना।
भ्रमी-(हि०वि०)चकित, जिसको भ्रम हो, भौचक।
भ्रमित-(स०वि०) शकित,घूमता हुआ।
भ्रष्ट-(सं०वि०) पतित, दूषित,दुराचारी, खराब।
भ्रष्टा-(स०स्त्री०) दुश्चरित्रा स्त्री, छिनाल औरत।
भ्राजन-(स०नपु०)चमक दमक, दीपन।
भ्राजना-(हि०क्रि०) शोभायमान होना, **भ्राजमान**-शोभायमान।
भ्रात, भ्राता-(हि० पु०) सगा भाई, सहोदर भ्राता।
भ्रातृत्व-(स०नपु०)भ्राता का भाव या धर्म
भ्रातृ द्वितीया-(स०स्त्री०)देखो भाईदूज।
भ्रातृ पुत्र-(स०पु०)भाई का पुत्र, भतीजा
भ्रातृ वधू (स०स्त्री०)भाई की स्त्री,भौजाई
भ्रातृ भाव-(स०पु०) भाई के समान प्रेम या सबध, भाईचारा, ज्योतिष में लग्न से तृतीय स्थान।
भ्रान्त-(स०वि०)व्याकुल, घबड़ाया हुआ, उन्मत्त, विकल भूला हुआ, तलवार के हर हाथों में से एक।
भ्रान्तापह्नुति-(स०स्त्री०) एक काव्यालकार जिसमें भ्रम दूर करने के लिये सची बात का वर्णन रहता है।
भ्रान्ति-(स०स्त्री०) भ्रम, धोखा, सशय, भ्रमण, भँवरी, मोह, प्रमाद, एक प्रकार का काव्यालकार जिसमें किसी वस्तु को दुसरी वस्तु के साथ उसकी समानता देखकर भ्रम से उसको दूसरी ही वस्तु समझ लेना वर्णन किया जाता है।
भ्रान्तिमत्-(स० वि०) भ्रमज्ञान युक्त (पु०) वह अर्थालकार जिसमें एक वस्तु का अन्य वस्तु में ज्ञान होना दिखलाया जाता है।
भ्रान्तिहर-(स० वि०) भ्रम का नाश करने वाला, (पुं०) मन्त्रणा द्वारा भ्रान्ति दूर करने वाला मन्त्री।
भ्राम-(स०वि०) भ्रम युक्त, सशय युक्त।
भ्रामक-(स० पु०) शृगाल, सियार, चुबक पत्थर, कान्ति लोहा, (वि०) भ्रम में डालने वाला, बहकाने वाला, सन्देह उत्पन्न करने वाला, धूर्त, चाल-बाज, चक्कर में डालने वाला।

भ्रामर-(सं० नपु०) मधु, शहद, अपस्मार रोग, दोहे का एक भेद (वि०) भ्रमर सबधी।
भ्रामरी-(सं० स्त्री०) पार्वती का एक नाम
भ्रश्य-(सं० नपु०) आयुध, हथियार।
भ्राष्ट्र-(सं० नपु०) आकाश, वह पात्र जिसमें भड़भूजे अन्न को भूनते हैं।
भ्रुकुंश-(सं० पु०) वह मनुष्य जो स्त्री का वेश धारण करके नाचता हो।
भ्रुकुटी-(सं० स्त्री०) क्रोध आदि द्वारा भौंह चढ़ाना, भृकुटी, भौंह।
भ्रुकुटी मुख-(सं० नपु०) एक प्रकार का सर्प।
भ्रू-(सं० स्त्री०) भौंह- भौं।
भ्रूभङ्ग-(सं० पु०) भौंह चढ़ाना।
भ्रूकुंस-(सं० पु०) देखो भ्रुकुंस।
भ्रूकुटी-(सं० त्रि०) क्रोधादि द्वारा भौंहों को तिरछी करना।
भ्रूक्षेप-(सं० पु०) सकेत बताने के लिये भौंहों को तिरछी करना, भ्रूविलास।
भ्रूण-(सं० पु०) स्त्री का गर्भ, बालक की गर्भ में रहने की अवस्था।
भ्रूणघ्न-(सं० वि०) भ्रूण हत्याकारी, बालक को गर्भ में रहते हत्या करने वाला।
भ्रूणहति-(सं० स्त्री०) देखो भ्रूणहत्या।
भ्रूणहत्या-(सं० स्त्री०) गर्भस्थ बाल को जान से मार डालना।
भ्रूणहन्-(सं० स्त्री०) भ्रूणहत्या करने वाला
भ्रूप्रकाश-(सं० पु०) एक प्रकार का काला रग जिससे शृंगार आदि के लिये भौंहें बनाते हैं।
भ्रूभङ्ग-(सं० पु०) क्रोध आदि प्रकट करने के लिये भौंह चढ़ाना।
भ्रूभेद-(सं० पु०) भ्रूभङ्ग, भ्रूविकार।
भ्रूभेदी-(सं० वि०) भौंहे चढ़ाये हुए।
भ्रूविकार-(सं० पु०) भ्रूभङ्ग, भौंहें चढ़ाना
भ्रूविक्षेप-(सं० पु०) भौंहों को चढ़ाकर अप्रसन्नता दिखलाना।
भ्रूविचेष्टित-(सं० पु०) भ्रूविक्षेप, त्यौरी चढ़ाना।
भ्रूविलास-(सं० पु०) भ्रूभङ्ग, त्यौरी चढ़ाना।
भ्रेष-(सं० पु०) भय, डर, गमन, चलना, नाश, हानि, नुक्सान।
भ्वहरना-(हिं० क्रि०) भयभीत होना, डरना
भ्वासर-(हिं० वि०) मूर्ख, बेवकूफ।

म

म-हिन्दी वर्णमाला का पच्चीसवां व्यञ्जन तथा पवर्ग का अन्तिम वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ और नासिका है, जीभ के अगले भाग का दोनों ओठों से स्पर्श होने पर इसका उच्चारण होता है।
म-(सं० पु०) शिव, चन्द्रमा, ब्रह्मा, यम, विष समय।
मई-(हिं० स्त्री०) मय जाति की स्त्री, ऊटनी।
मई-(अं० स्त्री०) अंग्रेजी वर्ष का पाचवा महीना, इसमें सर्वदा ३१ दिन होते हैं, यह प्राय: वैशाख में पड़ता है।
मउर-(हिं० पु०) विवाह के समय दुलहे के सिर पर पहराने का फूलों का बना हुआ मुकुट या सेहरा, मौर, मउर छोड़ाई-विवाह के बाद मौर को खोलने का रस्म।
मउरी-(हिं० स्त्री०) छोटा मौर जो विवाह के समय कन्या के सिर पर बांधा जाता है।
मउलसिरी-(हिं० स्त्री०) देखो मौलसिरी।
मउसी-(हिं० स्त्री०) देखो मौसी।
मंखी-(हिं० स्त्री०) बच्चों के गले में पहराने का एक प्रकार का गहना।
मंग-(हिं० स्त्री०) देखो मांग।
मंगता-(हिं० पु०) भिक्षुक, भिखमगा।
मंगन-(हिं० पु०) भिक्षुक, भिखमगा।
मंगनी-(हिं० स्त्री०) मांगने की क्रिया या भाव, वह पदार्थ जो किसी व्यक्ति को इस शर्त पर दिया जाय कि मांगने पर कुछ काल के बाद वह इसको वापस करदे, विवाह के पहले की वह रस्म जिसमें वर और कन्या का सबध निश्चय किया जाता है।
मंगलामुखी-(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
मंगली-(हिं० वि०) जिस जन्म कुण्डली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मगल ग्रह पड़ा हो।
मंगवाना-(हिं० क्रि०) मांगने का काम दूसरे से कराना, किसी दूसरे को मांगने में प्रवृत्त करना।
मंगाना-(हिं० क्रि०) देखो मगवाना, विवाह सबधकी बातचीत पक्की करना।
मंगेतर-(हिं० वि०) किसी के साथ जिसके विवाह की बातचीत पक्की हो गई हो।
मंगोल-वह जाति जो मध्यम एशिया तथा उसके पूर्व के भाग में बसी है।
मंजना-(हिं० क्रि०) मांजा जाना, अभ्यस्त होना।
मंजाना-(हिं० क्रि०) मांजने का काम दूसरे से कराना, मांजना, मजवाना।
मंजार-(हिं० पु०) देखो मार्जार, बिल्ली।
मंजिल-(अ० स्त्री०) मकान का खण्ड, मरातिब, यात्रा में ठहरने का स्थान, पड़ाव।
मंजीर-(हिं० पु०) नूपुर, घुघरू।
मंजीरा-(हिं० पु०) करताल नामक बाजा
मंजु-(हिं० वि०) देखो मञ्जु, सुन्दर।
मंजुल-(हिं० वि०) देखो मञ्जुल, मनोहर, सुन्दर।
मंजूर-(अ० वि०) स्वीकृत, जो मान लिया गया हो।
मंजूरी-(हिं० स्त्री०) मंजूर होने का भाव, स्वीकृति।
मंजूषा-(हिं० स्त्री०) देखो मञ्जूषा, छोटा पेटारा।
मंझा-(हिं० पु०) सूत कातने के चरखे का मध्य भाग, अटेरन के बीच की

ककड़ी, चौकी, पलग, खाट, वह पदार्थ जिससे पतग की डोरी माजी जाती है (स्त्री॰) सामान्य उपज का खेत जो गोइड़ से निकृष्ट और पालो से अच्छा होता है।

मंझार–(हि॰क्रि॰वि॰)मध्य भागमें, बीचमें

मझियार–(हिं॰ वि॰) मध्य या बीचका।

मंडना–(हि॰क्रि॰) मर्दित करना, दलित करना, भरना, शृगार करना, सजाना।

मंडर–(हि॰ पु॰) देखो मण्डल।

मडरना–(हि॰ क्रि॰) चारो ओर से घेर लेना, मडल बाघ कर छा जाना।

मडराना–(हिं॰ क्रि॰) मडल बाघ कर या चक्कर देते हुए उड़ना, किसी के पास ही घूम फिर कर रहना, परिक्रमण करना, किसी के चारो ओर घूमना।

मडरी–(हि॰स्त्री॰) पुआल की बनी हुई गोदरी या चटाई।

मंडलाना–(हि॰ क्रि॰) देखो मड़राना।

मंडलीक–(हिं॰पु॰) देखो माण्डलीक, बारह राजाओं का अधिपति।

मंड़वा–(हिं॰ पु॰) देखो मण्डप।

मंडा–(हि॰ पु॰) दो विस्वे के नाप की भूमि, एक प्रकार की बगला मिठाई।

मंडार–(हिं॰पु॰) गड्ढा, डलिया, झाबा।

मडियार–(हिं॰पु॰) झरबेरी नाम की कँटीली झाड़ी।

मडी–(हिं॰स्त्री॰) थोक बिक्री का स्थान, बड़ी बाज़ार या हाट, दो विस्वे के बराबर भूमि।

मंडुआ–(हिं॰ पु॰) एक प्रकार का क्षुद्र अन्न।

मंडूक–(हिं॰पुं॰) देखो मण्डूक, मेढक।

मडूर–(हिं॰पुं॰) देखो मण्डूर, लोह कीट।

मंढा–(हिं॰ पु॰) किमखाब बुनने वाले का लकड़ी का एक औज़ार।

मंत–(हि॰पु॰) देखो मत्र, सलाह।

मंत्रिता–(हि॰ स्त्री॰) देखो मन्त्रित्व।

मंत्री–(हिं॰ पु॰) देखो मन्त्री, सलाह देने वाला।

मंदऊ–(हिं॰पु॰) घोडे का एक रोग।

मंदधूप–(हिं॰ पु॰) काली धूप।

मंदरा–(हिं॰ वि॰) नाटा, ठिंगना, (हि॰पु॰) एक प्रकार का बाजा।

मदरी–(हिं॰ स्त्री॰) एक प्रकार का वृक्ष, गँड़ली।

मंदा–(हिं॰ वि॰) धीमा, मन्द, ढीला, कम दाम का, सस्ता, शिथिल, निकृष्ट, खराब।

मदान–(हिं॰पु॰) जहाज़ का अगला भाग

मदिल–(हिं॰ पु॰) देखो मन्दिर।

मदी–(हि॰ स्त्री॰) किसी वस्तु के भाव का कम होना, सस्ती।

मंदील–(हि॰ पु॰) एक प्रकार का सिर पर पहरने का आभूषण।

मंसना–(हि॰क्रि॰) मनमें सकल्प करना, इच्छा करना, मनसना।

मंसब–(अ॰ पु॰) पदवी, पद, स्थान, अधिकार, कर्तव्य, काम।

मशा–(हिं॰ स्त्री॰) अभिप्राय, आशय, मतलब।

मसा–(हिं॰ स्त्री॰) सकल्प, अभिरुचि, अभिप्राय, इच्छा, आशय।

मंसूख–(अं॰वि॰) रद्द किया हुआ, काटा हुआ, खारिज किया हुआ।

मंसूबा–(हि॰ पु॰) देखो मनसूबा।

मकई–(हिं॰स्त्री॰) ज्वार नामक अन्न।

मकड़ा–(हि॰ पुं॰) बड़ी मकड़ी।

मकड़ी–(हि॰ स्त्री॰) आठ पैर वाला एक प्रसिद्ध कीड़ा, लूता।

मकतब–(अ॰पु॰) पाठशाला, मदरसा।

मक़ता–(हिं॰ पु॰) मगध देश का मुसलमानी नाम।

मकदूर–(अ॰पु॰) शक्ति, सामर्थ्य, ताकत

मकनातीस–(अ॰पु॰) चुम्बक पत्थर।

मक़फूल–(अ॰ वि॰) रेहन किया हुआ, गिरवीं रक्खा हुआ।

मक़बरा–(अ॰पु॰) समाधि, रौज़ा, वह मकान जिसमें किसी की लाश गड़ी हो।

मकबूजा–(अ॰वि॰) अधिकृत, कबज़ा किया हुआ।

मकर–(स॰ पु॰) एक प्रकार का जल जन्तु, मगर, मेषादि बारह राशियों में से दसवीं राशि, मछली, माघ महीना, छप्पय का एक भेद, (फा॰पु॰) छल, कपट, धोखा, फ़रेब।

मकर कुण्डल–(स॰ नपु॰) गले में पहरने का एक प्रकार का गहना।

मकरकेतन–(स॰पु॰) कन्दर्प, कामदेव।

मकरतार–(हिं॰पु॰) बादले का तार।

मकरध्वज–(स॰पु॰) कन्दर्प, कामदेव, रससिन्दूर, चन्द्रोदय रस।

मकरन्द–(स॰ पुं॰) फूलों का रस जिसको मधुमक्खिया और भौंरे आदि चूसते हैं, पुष्प केसर, कुन्द का फूल, एक वृत्त का नाम जिसको माधवी या मञ्जरी भी कहते हैं।

मकरन्दिका–(स॰ स्त्री॰) एक प्रकार का छन्द जिसको प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।

मकरपति–(सं॰ पु॰) कामदेव, ग्राह।

मकरव्यूह–(स॰ पुं॰) एक प्रकार की सेना की रचना जिसमें सैनिक मकर के आकार में खडे किये जाते हैं।

मकर संक्रान्ति–(स॰ स्त्री॰) वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है, हिन्दू लोग इसको पुण्य दिन मानते हैं, खिचड़वार।

मकरसप्तमी–(स॰स्त्री॰) माघ मास की शुक्ला सप्तमी।

मकरा–(हि॰ पु॰) भूरे रग का एक कीड़ा, मडुवा नामक अन्न, हलवाई की सेव बनाने की चौघड़िया।

मकराकार–(स॰वि॰) मगर या मछली के आकार का।

मकराकृत–(स॰ वि॰) देखो मकराकार।

मकराक्ष–(स॰ पु॰) खर का पुत्र, रावण का भतीजा।

मकराङ्क–(स॰ पु॰) कामदेव, समुद्र।

मकरानन–(स॰ पु॰) शिव के एक अनुचर का नाम।

मकराना–(हिं॰ पु॰) राजपूताने का एक प्रदेश जहा का सगमरमर बहुत प्रसिद्ध है।

मकराराई–(हि॰ स्त्री॰) काली राई।

मकरालय, मकरावास–(स॰पु॰) समुद्र।

मकरासन–(स॰नपु॰) तान्त्रिकों का

एक आसन जिसमें हाथ और पैर पीठ की ओर कर लिये जाते हैं।
मकरी-(स० स्त्री०) मगर की मादा, मगरनी, चक्की में की वह लकड़ी जो जुए से बधी रहती है
मकरूह-(फा०वि०) अपवित्र, घृणित।
मकरेड़ा-(हिं०पु०) ज्वार या मक्के का डठल।
मकरौरा-(हि० पु०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो प्रायः आम के वृक्षों पर चिपका रहता है
मकलई-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की गोंद।
मक़सद-(अ० पु०) मनोरथ, मनोकामना, तात्पर्य, अभिप्राय।
मकसूद-(अ०वि०)उद्दिष्ट (पु०) मनोरथ, अभिप्राय।
मकां-(फा० पु०) देखो मकान, घर।
मकाई-(हिं०स्त्री०) बड़ी जुन्धरी, ज्वार।
मकान-(फा० पु०) रहने की जगह, निवास स्थान, घर।
मक़ाम-(फा०पु०) देखो मुकाम।
मकार-(स० पु०)म स्वरूप वर्ण, तन्त्रोक्त पाच पदार्थ-यथा-मद्य, मास, मत्स्य, मैथुन, और मुद्रा।
मकुंद-(हिं०पु०) देखो मुकुन्द।
मकु-(हिं०अव्य०) कदाचित्, शायद, चाहे, वरन, बल्कि, क्या जाने।
मकुआ-(हि० पु०) बाजरे के पत्तों का एक रोग।
मकुट-(हिं०पु०) देखो मुकुट।
मकुना-(हिं००पु) वह नर हाथी जिसके बहुत छोटे दाँत हों, बिना मूछ का मनुष्य।
मकुनी-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की कचौड़ी जो आटे के भीतर बेसन या चने की पीठी भर कर बनाई जाती है, एक प्रकार की बाटी या लिट्टी
मकुर-(स०पु०) कुम्हार का डडा जिससे वह चाक को चलाता है, दर्पण, शीशा, मुकुल, कली, बकुल, वृक्ष, मौलसिरी।
मकुल-(स० पु०) बकुल मौलसिरी,
मकूनी-(हि० स्त्री०) देखो मकुनी।
मकूला-(अ०पु०) कहावत, वचन, कथन।
मकेरा-(हिं०पु०) जिस खेत में ज्वार या बाजरा बोया जाता है।
मको-(हि०स्त्री०) देखो मकोय।
मकोइचा-(हिं०वि०) मकोय के रगका, ललाई लिये पीला।
मकोई-(हिं०स्त्री०) जगली मकोय जिसमें काटे होते हैं।
मकोड़ा-(हिं०पु०) कोई छोटा कीड़ा।
मकोय-(हिं० स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसमें छोटे गोल फल लगते हैं, इसके दो भेद होते हैं, एकमें पीले सुपारी के बराबर खटमीठे फल लगते हैं, इसके फलको रसभरी कहते हैं, दूसरी जातिमें फालसे के बराबर के हरे या लाल छोटे फल लगते हैं जो दवाओं में उपयोग किये जाते हैं।
मकोरना-(हिं० क्रि०) देखो मरोड़ना।
मकोसल-(हिं० पु०) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसकी लकड़ी कड़ी होती है और इमारतों में प्रयोग होती है।
मकोहा-(हिं० पुं०) लाल रग का एक प्रकार का कीड़ा जो फसल को बहुत हानि पहुँचाता है।
मक्कर-(हिं०पुं०) छल, कपट, नखरा।
मक्का-(अ०पु०) मुसलमानों का एक तीर्थस्थान जो अरब देश में है (हि० पु०) ज्वार, मकई।
मक्कार-(अ०वि०) छली, कपटी, फरेबी।
मक्कारी-(अ०स्त्री०) छल, धोखेबाजी।
मक्कुल-(स०नपु०)शिलाजतु,शिलाजीत।
मक्कोल-(स०नपु०) खटिका, खड़िया।
मक्खन-(हिं०पु०) गाय या भैंस के दूध का वह सार भाग जो दूध या दही को मथने से प्राप्त होता है, जिसको तपाने से घी बनता है, कलेजे पर मक्खन मला जाना-शत्रुकी हानि देख कर प्रसन्न होना।
मक्खा-(हिं०पुं०) बड़ी जाति की मक्खी, नर मक्खी।
मक्खी-(हिं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध उड़ने वाला छोटा कीड़ा जिसके छ पैर होते हैं, यह ससार भर में सर्वत्र पाया जाता है, मक्षिका मधुमक्खी, जीती मक्खी निगलना-जान बूझ कर ऐसा काम करना जिससे बाद में पछताना पड़े, मक्खी की तरह फेंक देना-अनावश्यक समझ कर हटा देना, मक्खी मारना-वृथा का कार्य करना।
मक्खी चूस-(हिं० वि०) बहुत बड़ा कृपण, बड़ा कँजूस।
मक्खी मार-(हिं०पुं०) एक प्रकार का जानवर जो मक्खियों को खा जाता है, एक प्रकार की छड़ी।
मक्खीलेट-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जाली जिस पर छोटी छोटी बूटिया बनी रहती है।
मक़दूर-(अ०पु०) सामर्थ्य, ताक्त, काबू, वश, समाई, गुज इश, धन, दौलत।
मक्सी-(हि० पु०) बिलकुल काले रग का घोड़ा, गुलदार सब्जा घोडा।
मक्ष-(स०पुं०) क्रोध, गुस्सा, समूह, ढेर।
मक्षिका-(स० स्त्री०) मक्खी, शहद की मक्खी, मक्षिका मल-सिक्थ, मोम, मक्षिका सन-मधु मक्खी का छत्ता।
मख-(स०पु०) याग, यज्ञ, मखघ्न-यज्ञ नाशक।
मखजन-(अ० पुं०) भण्डार, कोष।
मखतल-(हिं०पु०) काला रेशम।
मखतूली-(हिं० वि०) काले रेशम का बना हुआ।
मखदूम-(अ० पु०) स्वामी, मालिक, (वि०) पूज्य, सेवा करने के योग्य।
मखद्विष, मखद्वेषी-(स०पु०) राक्षस।
मखधारी-(हि०पु०) यज्ञ करने वाला।
मखन-(हिं० पु०) देखो मक्खन।
मखना-(हि०पु०) देखो मकुना।
मखनाथ-(स०पु०)यज्ञ के स्वामी, विष्णु।
मखनिया-(हि०पु०) मक्खन बनाने या बेंचने वाला (वि०) जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।
मखमल-(अ०स्त्री०) एक प्रकारका बढ़िया रेशमी कपड़ा जो एक तरफ रूखा तथा

दूसरी तरफ चिकना और मुलायम होता है।
मखमली-(अ० वि०) मखमल का बना हुआ, मखमल की तरह का।
मखमित्र-(स० पु०) विष्णु।
मखराज-(स० पु०) यज्ञों में श्रेष्ठ, राजसूय यज्ञ।
मखलूक-(अ० पु०) ईश्वर की सृष्टि।
मखशाला-(स० स्त्री०) यज्ञशाला, यज्ञ करने का स्थान।
मखसूस-(अ० वि०) जो किसी विशेष कार्य के लिये अलग कर दिया गया हो।
मखस्वामी-(स०पु०)यज्ञ के स्वामी,विष्णु,
मखाना-(हिं०पु०)देखो ताल मखाना
मखान्न-(स० नपु०) यज्ञीय अन्न।
मखालय-(स० ०पु०) यज्ञशाला।
मखी-(हिं० स्त्री०) देखो मक्खी।
मखोना-(हिं०पु०) एक प्रका का कपड़ा
मखौल-(हिं० पु०) हँसी दिल्लगी।
मग-(हिं० पु०) मार्ग, रास्ता, राह, मगधदेश, मगह, एक प्रकार के शाक ब्राह्मण, मगध देश का निवासी।
मगज़-(अ० पु०) मस्तिष्क, दिमाग, गरी, गूदा, मगज खाना या चाटना-व्यर्थ की वकवाद करके परेशान करना, मगज़ खाली करना-बहुत दिमाग लगाना, मगज चट- जो बहुत बकवाद करता हो, मगज चट्टी-बकवाद मगजपच्ची-किसी काम में बहुत दिमाग लड़ाना।
मगजी-(हिं० स्त्री०) पतली गोट जो कपडे के किनारे पर लगाई जाती है।
मगण-(स० पु०) कविता के आठ गणों में से एक गण जिसमें तीनों वर्ण गुरु होते हैं।
मगद-(हिं० पु०) एक प्रकार की मिठाई जो मूग के आटे और घी से बनाई जाती है।
मगदर,मगदल-(हिं० पु०) एकप्रकार का लड्डू जो मूग या उड़द के आटे में घी और चीनी मिलाकर मथ कर बनाया जाता है।
मगदा-(हिं० पु०)रास्ता दिखलाने वाला
मगदूर-(हिं० पु०) देखो मकदूर।
मगध-(स० पु०) दक्षिणी विहार का प्राचीन नाम, मगधजा, मगधजा फल (सं० त्रि० , पिप्पली, पीपल।
मगधीय-(स०वि०) मगध देश सबंधी।
मगधेश-(स० पुं०) मगध देश का राजा, जरासन्ध।
मगन-(हिं० वि०) मग्न, डूबा हुआ, प्रसन्न, लीन, खुश।
मगना-(हिं०क्रि०) लीन या तन्मय होना
मगर-(हिं० पु०) इस नाम का एक प्रसिद्ध जल जन्तु, मीन, मछली, कान में पहरने का मछली के आकार का एक गहना (अव्य०) लेकिन, परन्तु।
मगरब-(अ० पुं०) पश्चिम, पच्छिम।
मगरमच्छ-(हि० पु०) बड़ी मछली, मगर नामक जल जन्तु।
मगरूर-(अ०वि०)अभिमानी, घमडी।
मगरूरी-(हिं० स्त्री०) अभिमान, घमड।
मगेरा-(हिं० पु०)नदी का ऐसा किनारा जो जोतने बोने योग्य हो।
मगरोसन-(अ० स्त्री०) नस्य, सुघनी।
मगलूब-(फा०पु०) पराजित, जीता हुआ
मगस-(हि० पु०)ऊख की सीठी, खोई
मगसिर-(हि०पु०) अगहन का महीना।
मगह-(हिं० पु०) मगध देश।
मगहपति-(हिं० पु०) मगध देश का राजा, जरासन्ध।
मगही-(हि०वि०) मगध सबधी, मगध देश का, मगह में उत्पन्न (पु०) एक प्रकार का पान।
मगु-(स० पुं०) शाकद्वीपी ब्राह्मण देखो भग।
मग्ज़-(अ० पुं०) मस्तिष्क, दिमाग, किसी फल के भीतर का गूदा।
मग्ज़रोशन-(फा०स्त्री०) नस्य, सुँघनी।
मग्न-(स० वि०) तन्मय, लीन, प्रसन्न, स्नात, डूबा हुआ, नशे में चूर, नीचे की ओर गिरा हुआ, (पु०) एक पर्वत का नाम।
मघ-(स०पु०)धन,सम्पत्ति,पुरस्कार,इनाम
मघई-(हिं० वि०) देखो मगही।
मघवती-(स० स्त्री०) इन्द्राणी।
मघवा-(स०पु०) इन्द्र , मघवाप्रस्थ-इन्द्रप्रस्थ नाम का नगर, मघवारिपु-मेघनाद।
मघा-(स०स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र, इसमें पाँच तारे हैं।
मघाना-(हिं० पु०) एक प्रकार की बरसाती घास।
मघारना-(हिं० क्रि०) माघ महीने में हल चलाना।
मघी-(स०स्त्री०) एक प्रकार का धान।
मघोनी-(स० स्त्री०) इन्द्राणी।
मघौना-(हिं० पु०) नीले रग का वस्त्र।
मङ्ग-(स०पु०) नाव का अगला भाग।
मङ्गल-(सं० नपुं०) अभीष्ट विषय की सिद्धि, कल्याण, कुशल, शुभ, क्षेम, (पुं०) मगल ग्रह, भौम, कुज, मङ्गल चण्डिका-दुर्गा,मङ्गलच्छाय-वर का पेड़ , मङ्गल पाठक-वन्दीजन, स्तुति पाठक , मङ्गलप्रद-मंगलदाता , मङ्गलप्रदा-शमी वृक्ष , मङ्गलवाद-आशीर्वाद , मङ्गलवाद्य-वह बाजा जो शुभ अवसर पर बजाया जाता है , मङ्गलवार-सोमवार के बाद का वार, मङ्गलशब्द-मगल ध्वनि, मङ्गलसूत्र-वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद रूपमें कलाई पर बाधा जाता है।
मङ्गला-(स०स्त्री०) पार्वती, सफेद दूब, पतिव्रता स्त्री, हरिद्रा, हल्दी।
मङ्गलाचरण-(स० नपु०) शुभ कार्य के पहले मगल जनक कार्यका आचरण।
मङ्गलामुखी-(हि०स्त्री०) वेश्या, रडी।
मङ्गलारम्भ-(स० पु०) मगल जनक कार्य का आरभ।
मङ्गल्य-(स०वि०) मगल जनक, सुन्दर, (पु०) पीपल, वेल का वृक्ष, नारियल, कैथ, चन्दन, सोना, सिन्दूर।
माङ्गल्या-(स० स्त्री०) दुर्गा, हल्दी, ऋद्धि, शमी, जटामासी।

मचक-(हिं० स्त्री०) दवाव, बोझ ।
मचकना-(हि० क्रि०) किसी पदार्थ को इस प्रकार जोर से दवाना कि मचमच शब्द निकले, झटके से किसी पदार्थ को हिलाना ।
मचका-(हि० पु०) झोंका धक्का, झूले की पेंग ।
मचना-(हिं०क्रि०) फैलना, छा जाना, किसी ऐसे कार्य का प्रचलित होना जिसमें कुछ शोरगुल हो ।
मचरग-(हि०पु०) एक प्रकार का पक्षी ।
मचल-(हि० स्त्री०) मचलने की क्रिया या भाव ।
मचलना-(हिं० क्रि०) ज़िद्द करना, अड़ना, हठ करना ।
मचला-(हिं० वि०) मचलने वाला, अनजान बनने वाला, जो बोलने के अवसर पर चुप रहे ।
मचलाना-(हि०क्रि०) किसी को मचलने में प्रवृत्त करना, वमन की इच्छा होना, ओकाई आना ।
मचवा-(हिं०पु०) खाट, पलग, खटिया या चौकी का पावा, नाव ।
मचान-(हिं० स्त्री०) चार खभो पर वास का टट्टर बाँधकर वनाया हुआ स्थान जिसपर बैठकर लोग शेर आदि का शिकार करते हैं, या किसान खेत की रखवाली करते हैं, दिया रखने की दीवट ।
मचाना-(हिं०क्रि०) ऐसा कार्य आरभ करना जिसमें शोर गुल हो ।
मचिया-(हिं०स्त्री०) ऊँचे पायों की एक आदमी के बैठने योग्य छोटी चारपाई ।
मचिलई-(हिं० स्त्री०) मचलने का भाव, मचलाहट, ।
मचेरी-(हिं० स्त्री०) बैलो के जुए के नीचे लगी हुई लकड़ी ।
मच्छ-(हिं०पु०) बड़ी मछली, दोहे का एक भेद , मच्छ असवरी-मदन, कामदेव , मच्छ घातिनी-मछली फसाने का लवा काटा ।
मच्छड़, मच्छर-(हिं०पु०) एक प्रसिद्ध छोटा फतिंगा जो वर्षा तथा ग्रीष्म ऋतु मे गरम देशों मे पाया जाता है ।
मच्छरता-(हिं०स्त्री०) द्वेष, ईर्ष्या, डाह ।
मच्छरिया-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की बुलबुल ।
मच्छी-(हि०स्त्री०) देखो मछली , मच्छी कांटा-एक प्रकार की सिलाई । मच्छीमार-धीवर, मल्लाह ।
मच्छोदरी-(हि०स्त्री०) देखो मत्स्योदरी ।
मछरंगा-(हि० पु०) एक प्रकार का जलपक्षी, राम चिड़िया ।
मछली-(हि०स्त्री०) सदा जल मे रहने वाला एक प्रसिद्ध जीव, मत्स्य, मीन, मछली के आकार का लटकन जो गहनो मे लगाया जाता है , मछली गोता-कुश्ती की एक पेंच , मछली डड-एक प्रकार की कसरत , मछली दार-दरी की एक प्रकार की बुनावट । मछलीमार-धीवर, मछुवा ।
मछुआ, मछुवा-(हिं० पु०) मछली मारने वाला, धीवर, मल्लाह ।
मछेह-(हिं० पु०) शहद का छत्ता ।
मजकूर-(फा०वि०) जिसका उल्लेख या जिक्र पहले किया जा चुका है, मजकूर एवाला-पूर्वोक्त, ऊपर कहा हुआ ।
मजकूरात-(फा० पु०) अराजी की लगान जो गाव के खर्च मे आती है ।
मजकूरी-(फा० पु०) ताल्लुकेदार, विना तनखाह का चपरासी ।
मजदूर-(फा० पु०) बोझ ढोने वाला कुली, मोटिया, कारखाने आदि मे काम करने वाला मनुष्य ।
मजदूरी-(फा० स्त्री०) मजदूर का काम, जीविका निर्वाह के लिये किया जाने वाला कोई छोटा परिश्रम का कार्य, बोझ ढोने आदि का पुरस्कार, वह धन जो किसी परिश्रम के बदले मे दिया जाता हो,
मजना-(हिं०क्रि०,निमज्जित होना, डूबना ।
मजनूं-(अ० पु०) पागल, दीवाना, आशिक, प्रेमी, अति दुर्बल मनुष्य, अरब के एक सरदार का पुत्र जिसका असली नाम कायस था वह लैला नाम की कन्या पर आसक्त हो गया और जब उसने सुना कि इसका विवाह दूसरे के साथ हो जायगा तब वह पागल हो गया ।
मजबूत-(अ० वि०) दृढ, पुष्ट, अटल, बलवान, ताकतवर ।
मजबूती-(हिं० स्त्री०) दृढता, ताकत, साहस ।
मजबूर-(अ०वि०) विवश, लाचार ।
मजबूरन-(फा०क्रि०वि०) विवश होकर, लाचारी से ।
मजबूरी-(अ० स्त्री०) विवशता, लचारी ।
मजमा-(अ०पु०) बहुत से मनुष्यों का एक स्थान पर इकट्ठा होना भीड़, जमघट ।
मजमुआ-(अ०वि०) इकट्ठा किया हुआ, (पु०) बहुत से पदार्थों का समूह, खजाना, एक प्रकार का इत्र ।
मजमून-(अ०पु०) वह विषय जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय, लेख ।
मजरुआ-(फा०वि०) जोता बोआ हुआ ।
मजरूह-(अ०वि०) घायल, जख्मी ।
मजल-(फा० स्त्री०) मजिल, पड़ाव ।
मजलिस-(अ०स्त्री०) सभा, समाज, वह स्थान जहा पर बहुत से लोग एकत्रित हो, नाच रग का स्थान, महफिल ।
मजलिसी-(अ० पु०) नेवता देकर बुलाया हुआ मनुष्य-(वि०) मजलिस सबधी, सबको प्रसन्न करने वाला ।
मजहब-(अ०पु०) धार्मिक सप्रदाय, मत ।
मजहबी-(अ० वि०) किसी धार्मिक सम्प्रदाय से सबध रखने वाला ।
मजा-(फा०पु०) स्वाद, आनन्द, सुख, लज्जत, दिल्लगी, मजाक, मजा चखाना-अपराध करने के लिये किसी को दण्ड देना, मजा आ जाना-दिल्लगी मजाक होना ।
मजाक-(अ०पु०) हँसी दिल्लगी, ठट्ठा, प्रवृत्ति, रुचि ।

मज़ाकन्–(अ०क्रि०वि०) हँसी दिल्लगी की तौर पर।
मज़ाकिया–(हि० वि०) हँसी दिल्लगी करने वाला, भाँड।
मज़ाज–(फा०पु०)गर्व,अभिमान, अधिकार
मज़ाज़–(अ०वि०)कृत्रिम,बनावटी,कल्पित।
मज़ार–(अ०पु०) समाधि, कब्र, मकबरा।
मजारी–(हि०स्त्री०) मार्जार, बिल्ली।
मजाल (अ०स्त्री०) शक्ति, सामर्थ्य।
मजिल–(हि०स्त्री०) देखो मञ्ज़िल।
मजिष्टर–(हिं०पु०) देखो मजिस्ट्रेट।
मजिस्ट्रेट–(अ०पुं०) फौजदारी अदालत का अफसर जो भारतवर्ष में ज़िले के माल विभाग का भी अधिकारी होता है
मजिस्ट्रेटी–(अ० स्त्री०)मजिस्ट्रेट का कार्य या पद, मजिस्ट्रेट की अदालत।
मजीठ–(हि०स्त्री०) पहाड़ों में होने वाली एक प्रकार की लता जिसकी जड़ और डठल में से लाल रग निकाला जाता है
मजीठी–(हिं०वि०) लाल रग का (स्त्री०) जोत, रूई ओटने की चरखी में की बीच की लकड़ी।
मजीर–(हिं०स्त्री०) केले आदि की घौद।
मजीरा–(हि० पु०) कासे की बनी हुई छोटी छोटी कटोरियों की जोड़ी जिनके बीच में छेद होता है जिनमे से डोरा पिरो कर एक दूसरे से टकराई जाती हैं, इनको बजाकर सगीत के साथ साथ ताल दिया जाता है।
मजूमदार–(अ० पु०) बादशाही अमलदारी में सरकारी कागज़ात रखने वाले अधिकारी।
मजूर (मजूरा) मजूरी–देखो मज़दूर, मज़दूरी।
मजेज–(हि०पु०) देखो मिजाज़,अहकार
मज़ेदार–(फा०वि०)स्वादिष्ट,जायकेदार, आनन्द लाने वाला,उत्तम,बढ़िया,अच्छा
मज़ेदारी–(फा०स्त्री०) स्वाद,आनन्द,मज़ा
मज्ज–(हिं० स्त्री०) देखो मज्जा।
मज्जन–(स०नपु०) स्नान,नहाना,मज्जा।
मज्जना–(हि०क्रि०) नहाना,गोता लगाना
मज्जफल–(स० नपु०) माजूफल।
मज्जर–(स०पु०) एक प्रकार की घास।
मज्जा–(स०स्त्री०) अस्थिसार, हड्डी के भीतर का गूदा, मज्जारस–शुक्र, वीर्य, मज्जासार–जायफल।
मञ्जूक–(स०पु०) मण्डूक, मेंढक
मझ, मझ–(हिं०क्रि०वि०) बीच में।
मझधार–(हिं० स्त्री०) नदी की मध्य धारा, बीच धारा, किसी कार्य का मध्य
मझला–(हि०वि०) मध्य का, बीच का।
मझाना–(हिं०क्रि०) प्रविष्ट होना या करना,बीच में धँसना या धँसाना,पैठना
मझार–(हि०क्रि०वि०) बीच में।
मझावना–(हिं०क्रि०) देखो मझाना।
मझिया–(हिं० स्त्री०) गाड़ी की पेंदी में लगी हुई लकड़ी।
मझियाना–(हि०क्रि०) मध्य में होकर आना या निकलना, नाव खेना।
मझियारा–(हिं०वि०) बीच का,मध्य का।
मझुआ–(हि० पुं०) हाथ में पहरने की एक प्रकार की चूड़ी।
मझेला–(हिं०पु०) जूते का तल्ला सीने का चमार का एक औजार।
मझोला–(हि० वि०) मझला, बीचका, मध्यम आकार का, जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा हो।
मझोली–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बैल गाड़ी,जूता सीने की एक प्रकारकी टेकुरी।
मञ्च–(स०पु०) पीढा, मचिया, ऊँचा बना हुआ मण्डप, मञ्चकाश्रय–खटमल, मञ्चमण्डप–खेत में बनी हुई मचान।
मञ्जर–(स०नपु०) मुक्ता, मोती।
मञ्जरि–(स०स्त्री०)छोटे पौधे लता आदि का नया कल्ला, कोंपल, फल या फूलों का गुच्छा।
मञ्जरित–(स०वि०) अकुरित, मुकुलित।
मञ्जरी–(स०स्त्री०) मुक्ता, मोती, लता, तुलसी, एक छन्द जिसके प्रत्येक पाद में चौदह अक्षर होते हैं।
मञ्जरीक–(स०पु०) मोती, तिल का पौधा, तुलसी, बेंत, अशोक का वृक्ष।
मञ्जिका–(स०स्त्री०) वेश्या, रडी।
मञ्जिफला–(स० स्त्री०) कदली, केला।
मञ्जिष्ठा–(स०स्त्री०) मजीठ।
मञ्जीर–(स०पु०) नूपुर घुघरू, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं।
मञ्जीरक–(स०पु०) जिसमें से घुघरू के समान शब्द निकलते हो।
मञ्जु–(स०वि०) मनोहर,सुन्दर, मञ्जुकेशी–श्रीकृष्ण, मञ्जुगमना–हसी, मञ्जुघोष–एक बौद्धाचार्य का नाम, मञ्जुनाशी–दुर्गा का एक नाम।
मञ्जुपाठक–(स० पु०) शुक पक्षी, तोता, (वि०) अच्छी तरह पढने वाला।
मञ्जुप्राण–(स०पु०) ब्रह्मा।
मञ्जुभाषी–(स० वि०) सुन्दर बोलने वाला,एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं।
मञ्जुल–(स०वि०) मनोहर,सुन्दर (नपु०) नदी या ताल का किनारा, एक प्रकार का पक्षी, अजीर का पेड़।
मञ्जुवादी–(स० वि०) मधुर वचन बोलने वाला।
मञ्जुहासिनी–(स० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं।
मञ्जुषा–(स०स्त्री०) मजूषा, पिटारी।
मञ्जुसौरभ–(सं० नपु०) एक प्रकार का छन्द।
मञ्जूषा–(स० स्त्री०)–पिटक, पिटारी, पत्थर।
मट–(हि० पु०) मिट्टी का बड़ा पात्र, मटका।
मटक–(हिं० स्त्री०) मटकने की क्रिया या भाव, चाल, गति, हाव भाव।
मटकना–(हि०क्रि०) अगों को हिलाते हुए चलना, लचक कर या नखरा करते हुए चलना, लौटना, फिरना, नेत्र, भृकुटी, अगुली आदि का इस प्रकार चलाना जिसमे कुछ लचक या नखरा देख पड़े।
मटकान–(हिं० स्त्री०) नृत्य, नाचना, मटक, नखरा।

मटका–(हिं०पु०) मिट्टी का बड़ा घड़ा जिसका मुख चौड़ा होता है।
मटकाना–(हिं०क्रि०) अङ्गों को नखरे के साथ हिलाना डुलाना, चमकाना, मटकने में दूसरे को लगाना।
मटकी–(हिं०स्त्री०) छोटा मटका, कमोरी, मटकाने का भाव, मटक।
मटकीला–(हिं० वि०) मटकने वाला, नखरे के साथ अङ्गों को हिलाने वाला।
मटकौअल–(हिं० स्त्री०) मटकने की क्रिया या भाव, मटक।
मटना–(हिं०पु०) एक प्रकार का गन्ना
मटमंगरा–(हिं० पु०) विवाह के पहले की एक रस्म जिसमें किसी शुभ दिन वर या वधू के घर की स्त्रिया गाती बजाती गाव के बाहर जाती हैं।
मटमैला–(हिं० वि०) मिट्टी के रग का, धूमिल।
मटर–(हिं० पु०) एक प्रकार का मोटा अन्न, इसकी फलियों को छीमी कहते हैं जो मीठी होती हैं और कच्ची भी खाई जाती है।
मटरगश्त–(हिं० पु०) टहलना, इधर उधर घूमना टहलना, सैर सपाटा।
मटरगश्ती–(हिं०स्त्री०) देखो मटरगश्त।
मटरवोर–(हिं० पु०) मटर के बराबर के घुघरू।
मटराला–(हिं० पु०) जव के साथ मिला हुआ मटर।
मटलनी–(हिं० स्त्री०) मिट्टी का कच्चा बरतन।
मटा–(हिं० पु०) एक प्रकार का लाल चींटा जो छत्ता बना कर आम के पेड़ों पर रहता है।
मटिआना–(हिं० क्रि०) अशुद्ध बरतन को मिट्टी आदि लगाकर साफ करना, मिट्टी से ढापना, सुन कर अनसुनी करना, देखो मटियाना।
मटिया–(हिं० स्त्री०) मिट्टी, मृत शरीर, लाश, (वि०) मिट्टी के समान, मटमैला एक प्रकार का पक्षी।
मटियामस्मान, मटियामेट–(हिं०वि०) नष्ट, खराब।
मटियार–(हिं० पु०) वह खेत जिसमें चिकनी मिट्टी अधिक हो।
मटियाला–(हिं०वि०) देखो मटमैला।
मटीला–(हिं० वि०) देखो मटमैला।
मटुका–(हिं० पु०) देखो मटका।
मटुकी–(हिं० स्त्री०) देखो मटकी।
मट्टक–(स०पु०) एक प्रकार की मछली।
मट्टी–(हिं०स्त्री०) देखो मिट्टी।
मट्ठर–(हिं० वि०) आलसी, सुस्त।
मट्ठा–(हिं० पु०) मथा हुआ दही जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो, तक्र छाछ।
मट्ठी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पकवान।
मठ–(स०पु०) रहने की जगह, निवास स्थान, छात्रावास, देवगृह, मन्दिर, वह मकान जिसमें एक महन्त की अधीनता में बहुत से साधु रहते हैं।
मठधारी–(हिं०पु०) मठाधीश, अनेक मठों का अधिकारी।
मठर–(स० पु०) वह जो शराब पीकर मतवाला हुआ हो।
मठरना–(हिं० पु०) सोनारों या कसेरों की एक प्रकार की छोटी हथौड़ी।
मठरी–(हिं०स्त्री०) देखो मट्ठी, टिकिया।
मठाधिपति, मठाधीश–(स० पु०) मठ का महन्त।
मठान–(हिं० पु०) देखो मठरना।
मठिया–(हिं० स्त्री०) फूल धातु की बनी हुई हाथ की चूड़िया, छोटी कुटी।
मठी–(हिं० स्त्री०) छोटा मठ, मठ का अधिकारी या महन्त।
मठुलिया–(हिं०स्त्री०) टिकिया या मठरी नाम का पकवान।
मठोर–(हिं०स्त्री०) दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।
मठोरना–(हिं० क्रि०) छोटी हथौड़ी से धीरे धीरे ठोंकना।
मठोरा–(हिं० पु०) एक प्रकार का बढई का रन्दा।
मड़ई–(हिं० स्त्री०) पर्णशाला, छोटी कुटी या झोपड़ी।
मड़क–(हिं० स्त्री०) गुप्त बात, रहस्य।
मड़मड़ाना–(हिं०क्रि०) देखो मरमराना।
मड़राना–(हिं० क्रि०) देखो मड़राना।
मड़ला–(हिं० पु०) अनाज रखने की छोटी कोठरी।
मड़वा–(हिं० पु०) देखो मण्डप।
मड़वारी–(हिं० पु०) देखो मारवाड़ी।
मड़हा–(हिं०पु०) मिट्टी का बना हुआ छोटा घर, भूना हुआ चना।
मड़ाड–(हिं० पु०) कच्चा तालाब, कुएँ आदि में का गड्ढा जो दीवारों के गिरने से बन गया हो।
मड़ुआ–(हिं० पु०) बाजरे की जाति का एक क्षुद्र अन्न, एक प्रकार का पक्षी।
मड़ैया–(हिं० स्त्री०) पर्णशाला, कुटी, मिट्टी का बना हुआ छोटा घर, मड़ई।
मड़ोड़, मड़ोर–(हिं० स्त्री०) देखो मरोड़।
मड़ोड़ी–(हिं०स्त्री०) लोहे की छोटी पेंचदार कटिया।
मढ–(हिं० पु०) दात के ऊपर की मैल (वि०) अड़ कर बैठने वाला, जो हटाने पर भी जल्दी न हटे।
मढ़ना–(हिं०क्रि०) चारो ओरसे घेर लेना, चौफेर से लपेटना, ढोल मृदग आदि बाजों पर चमड़ा लपेटना, बल पूर्वक किसी पर आरोपित करना, किसी के गले लगाना, आरभ होना, शुरू होना।
मढ़वाना–(हिं०क्रि०) मढने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ा–(हिं० पु०) मिट्टी का बना हुआ छोटा घर।
मढ़ाई–(हिं० स्त्री०) मढने का काम या मजदूरी।
मढ़ाना–(हिं०क्रि०) मढने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ी–(हिं०स्त्री०) छोटा मठ, छोटा देवालय, छोटा घर, छोटा मण्डप, पर्णशाला झोपड़ी।
मढ़ैया–(हिं०वि०) मढने वाला।

मणि-(सं० पु०) बहुमूल्य पत्थर, रत्न, जवाहिर, बकरे के गले की थैली, लिंग का अग्रभाग, एक नाग का नाम, मणिबन्ध, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति।
मणिक-(सं०न०पु०) मिट्टी का घड़ा।
मणिकण्ठ-(सं० पु०) चाष नामक पक्षी।
मणिकर्णिका-(सं० स्त्री०) काशी का एक तीर्थ विशेष, रत्न जड़ा हुआ कान का एक आभूषण।
मणिकानन-(सं० पु०) कण्ठ, गला, रत्नवन।
मणिकार-(सं०पु०) रत्नों को जड़कर गहने बनाने वाला, जवहरी।
मणिकूट-(सं० पु०) कामरूप के एक पर्वत का नाम।
मणिकेतु-(सं० पु०) एक बहुत छोटा पुच्छल तारा।
मणिगुण-(सं० पु०) एक वर्णिक वृत्त जिसको शशिकला या शरभ भी कहते हैं, मणिगुणनिकर-एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पद्रह अक्षर होते हैं।
मणिग्रीव-(सं० पु०) कुबेर के एक पुत्र का नाम।
मणिचूड-(सं०पु०)एक विद्याधर का नाम।
मणित-(सं०नपुं०) मैथुन के समय किया जाने वाला वार्तालाप।
मणितारक-(सं० पु०) सारस पक्षी।
मणिदोष-(सं० पु०) रत्नादि के दोष।
मणिधर-(सं०पु०) सर्प, साप।
मणिपुर-(सं० नपु०) तन्त्र के अनुसार षट्चक्रों में से एक जो नाभि देश में अवस्थित है।
मणिप्रभा-(सं०स्त्री०) एक छन्द का नाम
मणिबन्ध-(सं० पु०) करग्रन्थि, कलाई, गट्टा, नव अक्षर के एक वृत्त का नाम।
मणिबीज-(सं०पु०) अनार का वृक्ष।
मणिभद्र-(सं० पु०) शिवजी के एक प्रधान गण का नाम।
मणिभावर-(सं०पु०) सारस पक्षी।
मणिभू-(सं० स्त्री०) वह खान जिसमें से रत्न निकलते हों।
मणिभूमि-(सं०स्त्री०) रत्नों की खान।
मणिमञ्जरी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
मणिमण्डप-(सं०पु०) रत्नमय गृह।
मणिमध्य-(सं०नपु०)एक प्रकार का छन्द जिसके प्रति चरण में नव अक्षर होते हैं।
मणिमन्थ-(सं०नपु०) सेंधा नमक।
मणिमाला-(सं०स्त्री०) मणियों की माला, हार, चमक, दीप्ति, लक्ष्मी, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं।
मणिरत्न-(सं० नपु०) हीरा, जवाहिर।
मणिराग-(सं०नपु०) हिंगुल, सिंगरिफ।
मणिराज (सं०पु०)श्रेष्ठ मणि, उत्तम रत्न
मणिवीज-(सं०पु०) अनार का पेड़।
मणिश्याम-(सं० पु०) इन्द्रनील मणि, नीलम।
मणिसर, मणिसूत्र-(सं० पु०) मोतियों की माला।
मणी-(हिं०पु०,सर्प, साप,(सं०स्त्री०) मणि।
मणीवक-(सं०नपु०) पुष्प, फूल।
मण्ड-(सं० पुं०) अन्न आदि का रस, सार, रेंड़ी का वृक्ष, दही का पानी, सजावट, मेढक, माड़।
मण्डक-(सं० पु०) मैदे की एक प्रकार की रोटी, माधवी लता, गीत का एक अङ्ग।
मण्डन-(सं० नपु०) आभूषण, गहना, शृंगार करना, सजाना, प्रणाम आदि द्वारा किसी मत को सिद्ध या पुष्ट करना।
मण्डप-(सं०पु०नपु०) मनुष्यों के विश्राम करने का स्थान जो चारो ओर से खुला रहता है, देवालय के ऊपर का गोल भाग, शामियाना, चदवा, देव गृह, मण्डप क्षेत्र-पवित्र स्थान।
मण्डपिका-(सं०स्त्री०) छोटा मडप,मढी।
मण्डल-(सं० नपु०) चन्द्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़ने वाला घेरा, वृत्ताकार घेरा, समाज, समूह, शरीर की आठ सन्धियों में से एक, ग्रह घूमने की कक्षा, गेंद, गोल चिह्न, चक्र, पहिया, बिम्ब, छाया।
मण्डलक-(सं०नपु०) बिम्ब, छाया,दर्पण, मण्डलाकार व्यूह।
मण्डलाकार-(सं०वि०) गोल।
मण्डलायित-(सं०नपु० वर्तुल, गोलाकार।
मण्डलित-(सं०वि०) गोल किया हुआ।
मण्डली-(सं०स्त्री०) गोष्ठी, समूह, मनुष्यों का सघ जमघट।
मण्डलीक, मण्डलेश, मण्डलेश्वर-(सं०पु०) बारह राजाओं का अधिपति।
मण्डा-(सं० स्त्री०) सुरा, शराब।
मण्डित-(सं० वि०) भूषित, सजाया हुआ, पूरित, भरा हुआ।
मण्डूक-(सं०पु०) भेक, मेढक, प्राचीन काल का एक बाजा, एक प्रकार का नाच, घोड़े की एक जाति, दोहे का एक भेद, रुद्र ताल का एक भेद।
मण्डूकी-(सं० स्त्री०) ब्राह्मी बूटी, निर्लज्ज स्त्री।
मण्डूर-(सं० पु०) गलाये हुए लोहे का मल।
मतंग-(हिं०पु०) देखो मतङ्ग, हाथी, मेघ, बादल।
मतगा-(हिं०पु०) एक प्रकार का बास।
मतगी-(हिं० स्त्री०) हाथी का सवार।
मत-(सं०नपु०) सम्मति, राय, आशय, धर्म, पन्थ, ज्ञान,सम्प्रदाय,(हिं०क्रि०वि) निषेध वाचक शब्द, नहीं।
मतङ्ग-(सं० पु०) मेघ, बादल, एक ऋषि का नाम जो शबरी के पुत्र थे, एक दानव का नाम।
मतगज-(सं०पु०) हस्ती, हाथी।
मतना-(हिं०क्रि०) आशय स्थिर करना, उन्मत्त होना।
मतरिया-(हिं०स्त्री०) देखो माता, (वि०) सलाह देने वाला।
मतलब-(अ० पु०) अर्थ, अभिप्राय, तात्पर्य, सम्बन्ध, वास्ता, उद्देश्य विचार, अपना हित, स्वार्थ, निज का लाभ।
मतलबी-(अ०वि०) स्वार्थी, खुदगरज।
मतवार, मतवारा-(हिं० वि०) देखो मतवाला।

मतवाला-(हिं० वि०) उन्मत्त, पागल, व्यर्थ का गर्व करने वाला, मदमस्त, नशे मे चूर, (पुं०) शत्रु को मारने के लिये पहाड़ या किले पर से फेंका हुआ पत्थर, एक प्रकार का कागज का बना हुआ खिलौना जिसकी पेंदी भारी होती है इसलिये फेंकने पर यह खड़ा हो जाता है।

मता-(हिं० पु०) देखो मत (स्त्री०) देखो मति।

मताधिकार-(स० पु०) मत देने का अधिकार।

मतानुयायी-(स० पु०) किसी के मत के अनुसार आचरण करने वाला, किसी के मत को मानने वाला।

मतारी-(हिं०स्त्री०) महतारी, माता।

मतावलम्बी-(सं०पु०) किसी एक मत, सिद्धान्त या सम्प्रदाय का अवलम्बन करने वाला।

मति-(स०स्त्री०) बुद्धि, समझ, इच्छा, स्मृति, सम्मति, सलाह, (हिं०क्रि०वि०) देखो मत (हिं०अव्य०) सदृश, समान,

मतिगर्भ-बुद्धिमान्, चतुर।

मतिदर्शन-(स० नपु०) वह शक्ति जिससे दूसरे के मन का भाव जाना जाता है।

मतिपूर्व-(स० अव्य०) बुद्धिपूर्वक, सोच विचार कर।

मतिभेद-(स० पु०) बुद्धि की भिन्नता।

मतिभ्रंश-(स०पु०)बुद्धिनाश, पागलपन

मतिभ्रम-(स० पु०) बुद्धिभ्रंश,बुद्धिनाश

मतिभ्रान्ति-(स० स्त्री०)देखो मतिभ्रम

मतिमत्-(स०वि०)बुद्धिवान्, विचारवान्, (पु०) शिव।

मतिमन्त-(स०वि०) देखो मतिमत्।

मतिमान-(स०वि०)बुद्धिवान्,विचारवान्

मतिमाह-(हिं०वि०) देखो मतिमान।

मतिविभ्रम-(स० पु०) उन्माद रोग, बुद्धिनाश।

मतिशाली-(हिं०वि०) मेधावी,बुद्धिमान्।

मती-(हिं०स्त्री०)देखो मति,(क्रि०वि०) मत

मतीरा-(स०पु०) कलिन्दा, तरबूज।

मतीश्वर-(स० पु०) विश्वकर्मा का एक नाम।

मतीरु-(हिं०पु०) एक प्रकार का बाजा।

मत्कुण-(स०पुं०) खटमल, बिना मोछ का आदमी, नारिकेल, नारियल।

मत्कुणिका-(स०स्त्री०) कुमार की एक मातृका का नाम।

मत्त-(स०पु०) धतूरा, कोयल, भैंस, (वि०) मस्त, मतवाला, उन्मत्त, पागल, प्रसन्न, खुश, (हिं० स्त्री०) मात्रा।

मत्तकाशिनी-(स०स्त्री०) उत्तम नारी, अच्छी औरत।

मत्तकोश-(स०पु०) हस्ती, हाथी।

मत्तगामिनी-(स०स्त्री०) उन्मत्त की तरह चलने वाली स्त्री।

मत्तता-(स०स्त्री०) मतवालापन।

मत्तताई-(हिं०स्त्री०) मस्ती, मतवालापन

मत्तनाग-(स० पुं०) मतवाला हाथी।

मत्तमयूर-(स० पु०) मेघ बादल, पन्द्रह अक्षरों का एक वृत्त।

मत्तमातङ्ग लीलाकर-(स०पु०) दण्डक वृत्त का एक भेद।

मत्त वारण-(स०नपु०) मकान के आगे की दालान या बरामदा, आंगन के ऊपर की छत, सुपारी का चूरा, मतवाला हाथी।

मत्तविलासिनी-(स० स्त्री०) एक छन्द का नाम।

मत्तासमक-(स० पु०) चौपाई छन्द का एक भेद।

मत्ता-(स० स्त्री०) मदिरा, शराब, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे बारह अक्षर होते हैं, एक भाववाचक प्रत्यय जो "पन" के अर्थ का होता है यथा-बुद्धिमत्ता।

मत्ताक्रीड़ा-(स० स्त्री०) तेईस अक्षरों का एक छन्द।

मत्तेभगमना-(स० स्त्री०) मतवाले हाथी के समान गति वाली स्त्री।

मत्तेभ विक्रीडित-(स०नपु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में २१ अक्षर होते हैं।

मत्था-(हिं०पुं०) ललाट, माथा, सिर, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग

मत्सर-(स०पु०) किसी का विभव या सुख न देख सकना, ईर्षा,डाह, जलन, क्रोध, गुस्सा, (वि०) कृपण, कंजूस, डाह करने वाला।

मत्सरता-(स०स्त्री०) डाह, जलन, हसद

मत्सरी-(स०वि०)दूसरे से डाह रखने वाला

मत्स्य-(स०पु०) मीन, मछली, विराट् देश, नारायण, बारहवीं राशि, छप्पय छन्द का एक भेद।

मत्स्यगन्धा-(स०स्त्री०) जलपीपल, व्यास की माता सत्यवती का एक नाम, सोमलता।

मत्स्यधानी-(स०स्त्री०) मछली रखने का पात्र।

मत्स्यनारी-(स०स्त्री०) देखो मत्स्याङ्गना

मत्स्यपुराण-(स० नपु०) अठारह महापुराणों में से एक पुराण का नाम।

मत्स्यबन्ध-(स०पु०) मछली पकड़ने वाला, धीवर।

मत्स्यबन्धन-(स०पुं०) मछली पकड़ने की वंसी।

मत्स्यमुद्रा-(स० स्त्री०) सभी पूजाओं में की जाने वाली एक तान्त्रिक मुद्रा।

मत्स्यरङ्ग-(स० पु०) एक प्रकार की चिड़िया।

मत्स्यराज-(स० पु०) विराट देश का राजा, रोहू मछली।

मत्स्याक्षक-(सं० पु०) सोमलता।

मत्स्याङ्गना-(सं० स्त्री०) मत्स्यनारी, वह प्राणी जिसका मुख स्त्री के समान तथा बाकी शरीर का भाग मछली के समान होता है।

मत्स्यावतार-(स० पुं०) भगवान् का मत्स्यरूपी अवतार।

मत्स्याशन-(स०पु०) मत्स्यभक्षक, मछली खाने वाला।

मत्स्यासन-(स० नपुं०) तान्त्रिकों के अनुसार योग का एक आसन।

मत्स्येन्द्रनाथ-(हिं० पुं०) एक हठ योगी साधु जो गोरखनाथ के गुरु थे।

मत्स्योदरी-(स० स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती, काशी के एक तीर्थ का नाम, मछोदरी।
मत्स्योपजीवी-(स०पु०) धीवर, मल्लाह
मथन-(स० पु०) मथने की क्रिया या भाव, बिलोना, गनियारी नामक वृक्ष, एक अस्त्र का नाम, (वि०) मथने वाला
मथना-(हि०क्रि०) किसी तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से वेग पूर्वक हिलाना या चलाना, रगड़ना, चला कर मिलाना, ध्वंस करना, नष्ट करना, घूम घूम कर पता लगाना, किसी काम को बारबार करना,(पु०) मथानी, रई।
मथनियां-(हि०स्त्री०) मथनी (पु०) दूध को मथ कर मक्खन निकालने वाला।
मथनी-(हि०स्त्री०) मथने की क्रिया, वह मटका जिसमें दही मथा जाता है।
मथवाह-(हिं०पु०) पीलवान्, महावत।
मथानी-(हि० स्त्री०) काठ का डंडा जिसके सिरे पर एक खोरिया लगी रहती है इससे दही में मथ कर मक्खन निकाला जाता है।
मथित-(स०वि०) मथा हुआ, घोलकर भली भांति निकाला हुआ।
मथुरा-(स०स्त्री०) यमुना नदी के किनारे पर बसा हुआ एक प्राचीन नगर जो पुराणों के अनुसार सात पुरियों में से एक है, मथुरानाथ-श्रीकृष्ण।
मथुरिया-(हि० वि०) मथुरा से सम्बन्ध रखने वाला, मथुरा का।
मथुरेश-(स०पु०) श्रीकृष्ण।
मथौरा-(हिं० पु०) बढ़इयों का एक प्रकार का रन्दा।
मथौरी-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के सिर पर पहरने का एक गहना।
मथ्य-(स०वि०) मथने योग्य (हि०पु०) माथा।
मदंध-(हि०वि०) देखो मदान्ध।
मद-(स० पु०) एक गन्धयुक्त द्राव जो मतवाले हाथी की कनपटियों में से बहता है, आनन्द, हर्ष, वीर्य, एक दानव का नाम, कामदेव, उन्मत्तता, पागलपन, गर्व, अहंकार, मद्य, शराब, उन्माद रोग, नशा, मतवालापन, कस्तूरी (वि०) मत्त, मस्त, मदवाला।
मद-(अ० स्त्री०) खाता बही, कार्य विभाग, सरिश्ता, अधिकार, ऊंची लहर, ज्वार।
मदक-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत्व से बनाया जाता है, तमाखू की तरह इसको लोग चिलम पर रख कर पीते हैं।
मदकची-(हिं०वि०) मदक पीने वाला।
मदद्रुम-(स० पुं०) ताड़ का पेड़।
मदकर-(स०पुं०) धतूरे का पेड़, सुरा, शराब (वि०) मदसे उन्मत्त करने वाला।
मदकल-(स० पु०) मस्त हाथी, मत वाला (वि०) उन्मत्त, बावला।
मदकारी-(हि०वि०) जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई हो।
मदकी-(हि० वि०) मदक पीने वाला, मदकची।
मदखूला-(अ० स्त्री०) रखेली औरत।
मदगन्धा-(सं०स्त्री०) मदिरा, शराब।
मदगल-(हि० वि०) मत्त, मस्त।
मदजल-(स०नपु०) मत्त हाथी के मस्तक का स्राव।
मदद-(अ०स्त्री०) सहायता, सहारा, किसी कामके लिये नियुक्त मज़दूर राज आदि, मदद खर्च-किसी काम के लिये पेशगी दिया हुआ धन।
मददगार-(फा०वि०) सहायता देने वाला।
मदन-(स० पुं०) कामदेव, वसन्त, मत्तता, धतूरा, मैनफल, भौंरा, उड़द, खैर का वृक्ष, वकुल वृक्ष, मौलसिरी, कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन, मैना, अखरोट का वृक्ष, भोग, ज्योतिष में लग्न से सातवें स्थान का नाम, प्रेम, एक प्रकार की गीत, रूपमाल छन्द का दूसरा नाम, छप्पय का एक भेद, खजन पक्षी।
मदनक-(स० पु०) दमनक, दौना, मोम, खैर, धतूरा, मैनफल, मौलसिरी।
मदनकदन-(स०पु०) शिव, महादेव।
मदनगृह-(स० नपु०) स्त्री की योनि।
मदनगोपाल-(स० पु०) श्रीकृष्ण।
मदनचतुर्दशी-(स० स्त्री०) चैत्र शुक्ला चतुर्दशी।
मदनचोर-(स० पु०) एक प्रकार का छोटा पक्षी।
मदनताल-(स० पु०) सगीत में एक प्रकार का ताल।
मदनदमन, मदनदहन-(स०पु०) शिव, महादेव।
मदन दोला-(स०स्त्री०) इन्द्र ताल का एक भेद।
मदननालिका-(स०स्त्री०) दुश्चारित्रा स्त्री।
मदनपक्षी-(स०पु०) खजन पक्षी।
मदनपति-(स० पु०) इन्द्र, विष्णु।
मदनपाठक-(स०पु०) कोकिल, कोयल।
मदनपाल-(स०पुं०) रतिपति, कामदेव।
मदनफल-(स० पु०) मैनफल।
मदन बान-(हिं० पु०) एक प्रकार का बहुत अच्छी तीव्र गन्धका बेले का फूल।
मदनभवन-(स० नपु०) देखो मदनगृह।
मदनमञ्जरी-(स० स्त्री०) यक्षराज दुदुभि की कन्या,नायिका का एक भेद।
मदनमनोरमा-(स०स्त्री०) सवैया छन्द का एक भेद, इसका दूसरा नाम दुर्मिल है।
मदनमनोहर-(स० पुं०) दण्डक का एक भेद, मनहर छन्द।
मदनमाल्लिका-(स०स्त्री०) मल्लिका वृत्ति का एक नाम।
मदनमस्त-(हिं० पु०) चंपे की जाति का उग्र तथा सुन्दर गन्ध का एक फूल।
मदनमहोत्सव-(स० पु०) चैत्र शुक्ला एकादशी से लेकर इसी पक्षकी चतुर्दशी तक होने वाला प्राचीन काल का एक उत्सव।
मदनमालिनी-(स०स्त्री०) नायिका का एक भेद।
मदनमोदक-(स० पु०) सवैया छन्द का एक भेद।
मदनमोहन-(स० पु०) श्रीकृष्ण।

मदनरिपु-(सं० पु०) शिव, महादेव।
मदनरेखा-(सं०स्त्री०) विक्रमादित्य की माता का नाम।
मदनललिता-(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह वर्ण होते हैं।
मदनलेखा-(सं०पु०) नायक नायिका के परस्पर प्रेम का पत्र।
मदनशलाका-(सं०स्त्री०) सारिका, मैना, कोयल।
मदनसदन-(सं० स्त्री०) स्त्री की योनि।
मदनसारिका-(सं०स्त्री०) मैना पक्षी।
मदनहर-(सं०पु०) देखो मदनहरा।
मदनहरा-(सं० स्त्री०) चालीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
मदना-(सं० पु०) सारिका पक्षी, मैना।
मदनाङ्कुश-(सं०पु०) पुरुष चिह्न, लिंग।
मदनान्तक-(सं०पु०) शिव, महादेव।
मदनान्ध-(सं० वि०) कामान्ध।
मदनायुध-(सं०पुं०) कामदेव का अस्त्र।
मदनारि-(सं० पु०) शिव, महादेव।
मदनालय-(सं०पु०) स्त्री चिह्न, भग।
मदनावस्था-(सं० स्त्री०) कामुकों की विरहावस्था।
मदनास्त्र-(सं० पु०) देखो मदनायुध।
मदनी-(सं०स्त्री०) सुरा, मदिरा, कस्तूरी, मेथी।
मदनीया-(सं०स्त्री०) मल्लिका वृक्ष, बेला।
मदनोत्सव-(सं० पु०) एक प्रकार का उत्सव, देखो मदन महोत्सव।
मदनोत्सवा-(सं० स्त्री०) स्वर्गवेश्या, अप्सरा।
मदनोद्यान-(सं०नपु०) सुन्दर बगीचा।
मदमत्त-(सं० वि०) नशे में चूर, एक छन्द का नाम।
मदरसा-(अ०पु०) विद्यालय, पाठशाला।
मदराग-(सं०पुं०) नशे में चूर मनुष्य, पागल मुर्गा।
मदलेखा-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं, मतवाले हाथियों की श्रेणी।
मदवारि-(सं०नपुं०) हाथी का मदजल।
मदसार-(सं० पु०) ताल वृक्ष, शहतूत का वृक्ष।
मदस्थल-(सं० नपु०) मदिरा पीने का स्थान, शराबखाना।
मदाखिलत-(अ०स्त्री०) बाधा, रुकावट, प्रवेश अधिकार, मदाखिलत बेजा-ऐसे स्थान में प्रवेश करना जहां जाने का अधिकार न हो, अनुचित हस्तक्षेप।
मदाढ्य-(सं०वि०) मदयुक्त, मदान्ध।
मदान्ध-(सं०वि०) मदमत्त, नशे में चूर।
मदाम्बर-(सं० पु०) पागल हाथी।
मदार-(सं० पु०) हाथी, सुअर, कामुक (हिं० पु०) आक का वृक्ष, अकवन, मदारगदा-धूप में सुखाया हुआ मदार का दूध।
मदारिय, मदारी-(हिं०पु०) मुसलमान फकीर सम्प्रदाय का एक व्यक्ति, ये लोग शाह मदार के अनुयायी हैं, बन्दर भालू आदि का तमाशा दिखलाने वाला, कलन्दर, बाजीगर।
मदालस-(सं०नपु०) मद के कारण आलस्य
मदालसा-(सं०स्त्री०) गन्धर्वराज विश्वकेतु की कन्या जिसको पातालकेतु राक्षस उठा ले गया था और उसने इसके पाताल में रक्खा था।
मदावस्था-(सं० स्त्री०) पागलपन की अवस्था।
मदिया-(हिं०स्त्री०) मादा प्राणी।
मदिरा-(सं०स्त्री०) शराब, मद्य, वासुदेव की पत्नी का नाम, बाईस अक्षरों का एक वर्णिक छन्द।
मदिराक्ष-(सं०वि०) जिसकी आखें मद से भरी हों।
मदिराक्षी-(सं०स्त्री०) मस्त आखों वाली
मदिरागृह-(सं० नपु०) शराबखाना।
मदिष्णु-(सं०वि०) नशे में आनन्द लेने वाला।
मदीना-(अ०पु०) अरब का नगर जहां मुहम्मद साहब की समाधि (कब्र) है।
मदीय-(सं०वि०) मेरा।
मदीयून-(फा० पु०) कर्जदार, देनदार।
मदीला-(हिं० वि०) नशे में भरा हुआ, नशीला।
मदुकल-(हिं० पु०) दोहे का एक भेद, जिसका दूसरा नाम गयन्द है।
मदोत्कट-(सं० पु०) कपोत, कबूतर, (वि०) मदोन्मत्त।
मदोद्धत-(सं० वि०) मत्त, अभिमानी, घमंडी।
मदोन्मत्त-(सं०वि०) उन्मत्त, नशे में चूर।
मदोल्लापी-(सं०पु०) कोकिल, कोयल।
मदोवै-(हिं०स्त्री०) देखो मन्दोदरी।
मद्दूसाही-(हिं० पु०) एक प्रकार का पुराना तावे का चोकोर पैसा।
मद्धिम-(हिं० वि०) मध्यम, मन्दा, किसी की अपेक्षा कम अच्छा।
मद्धे-(हिं० अव्य०) सबंध में, विषय में, बाबत, बीच में, लेखे में।
मद्य-(सं०नपु०) सुरा, मदिरा, शराब।
मद्यप-(सं० वि०) मदिरा पीने वाला, शराबी।
मद्यपान-(सं० नपुं०) शराब पीना।
मद्यबीज-(सं० नपु०) खमीर जो शराब बनाने के लिये उठाया जाता है।
मद्यवासिनी-(सं० स्त्री०) धव का पेड़।
मद्यमोद-(सं०पु०) बकुल वृक्ष, मौलसिरी
मद्र-(सं० पु०) एक प्राचीन जनपद जो वर्तमान रावी और झेलम नदी के बीच में था, हर्ष, आनन्द, मद्रकार-मंगल कारक, मद्रसुता-नकुल तथा सहदेव की माता का नाम।
मध-(हिं०पु०) देखो मध्य, (अव्य०) में।
मधन-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम
मधिम-(हिं०वि०) देखो मध्यम, मद्धिम।
मधु-(सं० नपु०) मद्य, शराब, जल, पानी, दूध, मकरन्द, महुवे का वृक्ष, शहद, अमृत, सुधा, घी, मुलेठी, मक्खन, शिव, महादेव, घृत, घी, मिश्री, अशोक वृक्ष, एक दैत्य जिसको विष्णु ने मारा था, मीठा रस, चैत का महीना, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो लघु वर्ण होते हैं, एक राग का नाम (वि०) मीठा, स्वादिष्ट।
मधुक-(सं० नपु०) जेठीमद, त्रपु,

सीसा, महुवे का पेड़ या फूल।
मधुकण्ठ-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।
मधुकर-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा, कामी पुरुष
मधुकरी-(सं०स्त्री०) भ्रमरी, भौंरी, वह भिक्षा जिसमें पका हुआ अन्न दिया जाता है।
मधुलोचन-(सं० पु०) शिव, महादेव।
मधुका-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की लता।
मधुकुम्भा-(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मात्रिका का नाम।
मधुकृत्-(सं०पु०) भ्रमर, भौंरा।
मधुकैटभ-(सं० पु०) मधु और कैटभ नाम के दो असुर जिनको विष्णु ने मारा था।
मधुकोष-(सं०पु०) मधुमक्खी का छत्ता।
मधुगन्ध-(सं० पु०) मीठी महक, अर्जुन वृक्ष, मौलसिरी का पेड़।
मधुगायन, मधुघोष-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।
मधुचक्र-(सं०नपुं०) मधुमक्खी का छत्ता
मधुच्छन्दा-(सं० स्त्री०) मोरशिखा नाम की बूटी।
मधुज-(सं० नपुं०) सिक्थ, मोम।
मधुजा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, सीता, शक्कर।
मधुजित्-(सं०पु०) विष्णु।
मधुजीरक-(सं० पुं०) सौंफ।
मधुतृण-(सं०पु०) इक्षु, ईख।
मधुत्व-(सं०नपुं०) मधुरत्व, मीठापन।
मधुदीप-(सं० पु०) कन्दर्प, कामदेव।
मधुदोह-(सं० पु०) शहद निकालने की क्रिया।
मधुद्रुम-(सं०पुं०) महुए का वृक्ष।
मधुद्विष्-(सं०पु०) विष्णु।
मधुधारा-(सं०स्त्री०) मधु की वृष्टि।
मधुनो-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा।
मधुप-(सं० पु०) भ्रमर, भौंरा, शहद की मक्खी।
मधुपटल-(सं० पु०) शहद की मक्खी का छत्ता।
मधुपति-(सं० पु०) श्रीकृष्ण।
मधुपर्क-(सं० पुं०) पूजन का एक उपचार जिसमें दही, घी, जल, मधु और चीनी मिलाकर देवताओं को चढ़ाया जाता है।
मधुपाका-(सं०स्त्री०) षड्भुजा, खरबूजा।
मधुपायी-(सं० पु०) भ्रमर, भौंरा, मधु पीने वाला।
मधुपीलु-(सं०पु०) अखरोट का वृक्ष।
मधुपुरी-(सं० स्त्री०) मथुरा नगरी।
मधुपुष्प-(सं०पु०) सिरिस का पेड़।
मधुपुष्पा-(सं० स्त्री०) धव का वृक्ष।
मधुप्रमेह-(सं० पु०) वह रोग जिसमें पेशाब के साथ शक्कर आती है।
मधुप्रिय-(सं० पु०) बलराम।
मधुफल-(सं०पु०) मीठा नारियल, दाख।
मधुवन-(सं० पु०) व्रज भूमि के एक वन का नाम।
मधुबहुल-(सं० स्त्री०) बासन्ती लता, सफेद जूही।
मधुबीज-(सं० पु०) दाडिम, अनार।
मधुभार-(सं० पु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ मात्रायें होती हैं।
मधुभिद्-(सं०पु०) विष्णु।
मधुमक्खी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मक्खी जो फूलों का रस चूसकर शहद इकट्ठा करती है।
मधुमक्षिका-(सं०स्त्री०) देखो मधुमक्खी।
मधुमज्जन-(सं०पु०) अखरोट का पेड़।
मधुमती-(सं० स्त्री०) गंगा, एक छन्द का नाम, समाधि सिद्धि का एक भेद।
मधुमत्त-(सं० वि०) वसन्त ऋतु में प्रसन्न होने वाला।
मधुमल्ली-(सं०स्त्री०) मालती लता।
मधुमाखी-(हिं०स्त्री०) देखो मधुमक्खी।
मधुमात-(सं०पु०) एक राग का नाम।
मधुमातसारंग-(सं० पुं०) सारग राग का एक भेद।
मधुमाधव-(सं० पु०) वसन्त काल।
मधुमाधवी-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम, एक छन्द का नाम।
मधुमालती-(सं०स्त्री०) मालती लता।
मधुमेह-(सं० पुं०) प्रमेह रोग जिसमें मधु के समान मूत्र निकलता है।
मधुयष्टि-(सं०स्त्री०) इक्षु, ईख।
मधुयष्टिका-(सं०स्त्री०) जेठीमद नामक औषधि।
मधुर-(सं० पु०) मीठा रस, महुए का पेड़, बादाम का पेड़, चिरौंजा, नीबू, वग, राग, एक प्रकार का आम, गुड़, एक प्रकार की घास (वि०) जिसका स्वाद मीठा हो, मनोरञ्जक, सुन्दर, जो सुनने में अच्छा जान पड़े, धीरे चलने वाला।
मधुरई-(हिं०स्त्री०) सुकुमारता, मधुरता, कोमलता, मीठापन।
मधुरता-(सं० स्त्री०) मधुरत्व, मधुर होने का भाव, सौन्दर्य, सुन्दरता, मिठास, कोमलता, मृदुता।
मधुरत्व-(सं०नपु०) माधुर्य, मधुरता।
मधुरफल-(सं० पु०) तरम्बूज, तरबूज।
मधुरलता-(सं०स्त्री०) जेठीमद।
मधुरसिक-(सं० पु०) भ्रमर, भौंरा।
मधुरस्वर-(सं० त्रि०) गन्धर्व।
मधुरा-(सं०स्त्री०) मीठा नीबू, सतावर, पालक का साग, मसूर, केले का पौधा, जेठीमद, सौंफ।
मधुराई-(हिं०स्त्री०) मधुरता, मिठास, कोमलता, सुन्दरता।
मधुराक्षर-(सं०त्रि०) सुन्दर अक्षर।
मधुराज-(सं० पु०) भ्रमर, भौंरा।
मधुरान्न-(सं० पु०) मिठाई।
मधुराना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु में मीठा रस आ जाना मीठा होना, सुन्दर हो जाना।
मधुरालापा-(सं० स्त्री०) सारिका, मैना पक्षी।
मधुरासव-(सं० पु०) आम्र, आम।
मधुरिका-(सं० स्त्री०) सौंफ।
मधुरिपु-(सं०पु०) विष्णु।
मधुरिमा-(हिं०स्त्री०) मीठापन, मिठास, सौन्दर्य, सुन्दरता।
मधुरी-(हिं० स्त्री०) मुख से फूक कर बजाने का एक प्रकार का बाजा, आम का पेड़, सुन्दरता।
मधुल-(सं० नपुं०) मद्य, शराब।
मधुलिका-(सं० स्त्री०) राजिका, राई,

एक प्रकार की शराब, मूंग, मसूर।
मधूलिह, मधुलोलुप-(स०पु०) भ्रमर, भौंरा।
मधुवन-(स०पु०) यमुना नदी के किनारे मथुरा के पास का एक वन, किष्किन्धा के पास सुग्रीव का एक वन।
मधुवर्ण-(स०वि०) सुन्दर स्वरूप वाला।
मधुवल, मधुवामन-(स०पु०) भ्रमर, भौंरा
मधुवासिनी-(स० स्त्री०) छोटे धव का वृक्ष।
मधुविद्या-(स० स्त्री०) एक प्रकार की गुप्त विद्या।
मधुवीज-(स०पुं०) दाडिम, अनार।
मधुवृक्ष-(स० पु०) महुए का पेड़।
मधुशर्करा-(स० स्त्री०) शहद से बनाई हुई शक्कर।
मधुशिता-(स०स्त्री०) सफेद सेम।
मधुश्री-(सं०स्त्री०) वसन्त की शोभा।
मधुसङ्काश-(स०वि०) देखने में सुदर।
मधुसख-(स०पु०) कन्दर्प, कामदेव।
मधुसम्भव-(सं०नपु०) सिक्थ, मोम।
मधुसहाय, मधुसुहृद-(स०पु०) कदर्प, कामदेव।
मधुसूदन-(स०पु०) भ्रमर, भौंरा, श्रीकृष्ण।
मधुसूदनी-(स०स्त्री०) पालक का साग।
मधुस्थान-(स०नपु०) मधुमक्खी का छाता
मधुस्नेह-(स०पु०) मोम।
मधुस्यन्दन-(स०पुं०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
मधुस्रवा-(स०स्त्री०) जेठीमद, लजालू नामक पौधा।
मधुस्वर-(स० पु०) कोकिल, कोयल।
मधुहन्-(स० पु०) विष्णु।
मधूक-(स०पु०) महुए का पेड़, मुलेठी।
मधूकरी-(स०स्त्री०) मधुकरी, भ्रमरी।
मधूत्सव-(म०पु०) वसन्तोत्सव।
मधूलिका-(स०स्त्री०) मुलेठी, एक प्रकार का मोटा धान, छोटे दाने की गेंहूं, एक प्रकार की मक्खी।
मध्य-(स०नपु०) अवसान, विश्राम, किसी वस्तु के बीच का अंश, कटि, कमर, मध्यमावृत्ति, सङ्गीत के एक सप्तक का नाम, वैद्यक के अनुसार सोलह वर्ष से सत्तर वर्ष की अवस्था, अन्तर, भेद, (वि०) मध्यम बीच का।
मध्यक्षामा-(स०स्त्री०) एक छद का नाम।
मध्यखण्ड-(स० नपु०) ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी का वह भाग जो उत्तर क्रान्ति और दक्षिण क्रान्ति के बीच में पड़ता है।
मध्यगत-(सं०वि०) मध्य स्थित, बीच का
मध्यचारी-(सं०वि०) बीच में चलने वाला
मध्यतः-(स०अव्य०) मध्य में, बीच में।
मध्यता-(स० स्त्री०) मध्य का भाव या धर्म।
मध्यतापिनी-(सं० स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम।
मध्यदिन-(स०नपु०) मध्याह्न दोपहर।
मध्यदेश-(सं०पु०) भारतवर्ष का वह प्रदेश जिसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत पश्चिम में कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग है।
मध्यदेह-(स० पु०) उदर, पेट।
मध्यन्दिनीय-(म०वि०) मध्याह्न सबंधी।
मध्य प्रदेश-(स० पु०) मध्य भारत के अन्तर्गत एक भूमि भाग।
मध्यभाव-(स०पु०) मध्यम अवस्था।
मध्यम-(स० पु०) सगीत के अनुसार चतुर्थ स्वर, इस नाम का राग, मध्य देश, वह नायक जो नायिका के क्रोध दिखलाने पर अपना प्रेम प्रकट न करे तथा उसकी चेष्टाओं से उसके मनका भाव जानले, मध्यम खण्ड-बिचला भाग, मध्यम जात मझला।
मध्यमता-(स० स्त्री०) मध्यम होने का भाव।
मध्यमपदलोपी-(हि० पु०) लुप्त पद समास, वह समास जिसमें पहिले पद का आगामी पद से सबध बतलाने वाला शब्द लुप्त रहता है।
मध्यमपुरुष-(स० पुं०) व्याकरण के अनुसार वह व्यक्ति जिससे कुछ कहा जाय।
मध्यमरात्र-(स०पु०) मध्यरात्रि, आधीरात।
मध्यमलोक-(स० पु०) पृथ्वी।
मध्यमवयस-(स० नपु०) सोलह वर्ष से सत्तर वर्ष तक की अवस्था।
मध्यमवाह-(स० वि०) मन्द गति से चलने वाला।
मध्यमस्थ-(स०वि०) मध्यस्थित, बीचका।
मध्यमा-(स० स्त्री०) बीच की अगुली, तीन अक्षर का छन्द, छोटे जामुन का वृक्ष, रजस्वला स्त्री, वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम अथवा दोष के अनुसार उसका सत्कार या अपमान करे
मध्यमादि-(स० पुं०) सगीत में एक प्रकार का ताल।
मध्यमाहरण-(सं० नपुं०) बीजगणित की वह क्रिया जिसके अनुसार कोई अव्यक्त मान निकाल लिया जाता है।
मध्यमिक-(स० वि०) बीचका।
मध्यमिका-(स० स्त्री०) रजस्वला स्त्री।
मध्यरात्र-(स० पु०) निशीथ, आधी रात।
मध्यरेखा-(स० स्त्री०) पृथ्वी के मध्य भाग की कल्पित रेखा जो उत्तर दक्षिण मानी जाती है।
मध्यलोक-(स० पु०) पृथ्वी।
मध्यवर्ती-(स०वि०) मध्य का बिचला।
मध्यवय-(हिं०पु०, जीवन का मध्य भाग
मध्यवृत्त-(स० पु०) नाभि।
मध्यशरीर-(स० वि०) पेट, उदर।
मध्यशायी (स० वि०) मध्यवर्ती, बीच का।
मध्यस्थ-(स० पु०) पंच, वह जो बीचमें पड़ कर दो मनुष्यों के झगडे को निबटाता है।
मध्यस्थता-(स० स्त्री०) मध्यस्थ होने का भाव या धर्म।
मध्यस्थल-(स० नपु०) कटि देश, कमर
मध्यस्थित-(स०वि०) मध्यवर्ती, बीचका।
मध्या-(स० स्त्री०) काव्य शास्त्र के अनुसार वह नायिका जिसमें काम और लज्जा समान हो, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन अक्षर होते हैं।
मध्यान्ह-(हि० पुं०) देखो मध्याह्न।

मध्यायु–(सं० नपुं०) तेंतीस वर्ष से पैसठ वर्ष की आयु ।
मध्याह्न–(सं०पु०) दिन का मध्य भाग, ठीक दोपहर का समय, मध्याह्नोत्तर–तीसरा प्रहर ।
मध्ये–(सं० क्रि०वि०) बाबत, बारे में ।
मध्व–(सं० पु०) माध्व सम्प्रदाय के प्रवर्तक ।
मध्वक–(सं० पु०) शहद की मक्खी ।
मध्वक्ष–(सं० वि०) जिसके नेत्र मधुके समान हों ।
मध्वाचार्य–(सं० पु०) एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो मध्वाचारि सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे ।
मध्वाधार–(सं०पु०) मधुमक्खीका छत्ता।
मध्वालु–(सं० नपुं०) एक प्रकार के पौधे की जड़ जो खाने में मीठी होतीहै
मध्वाहुति–(सं०स्त्री०) मधु की आहुति
मन क्षेप–(सं०पु०) मन का उद्वेग ।
मनःपति–(सं० पु०) विष्णु ।
मन.प्रसाद–(सं०पु०) मनकी प्रसन्नता ।
मन. शास्त्र–(सं० पु०) मनो विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें मन तथा मन के विकारों का वर्णन हो ।
मनःशिल–(सं० पु०) मन.शिला, मैनसिल ।
मन.शिला–(सं० स्त्री०) देखो मनःशिल ।
मन स्थैर्य–(सं० नपुं०) मन की स्थिरता।
मन–(सं० पु०) अन्तःकरण, प्राणियों में वह शक्ति जिससे वेदना, इच्छा,सकल्प, प्रयत्न, बोध, विचार आदि उत्पन्न होते हैं, इच्छा, इरादा, अन्तःकरण की चार वृत्तियों में से वह वृत्ति जिससे सकल्प विकल्प होता है , मन से मन अटकना–मोहब्बत होना , मन टूट जाना–हताश होना , मन बढ़ना–उत्साह की वृद्धि होना , मन बूझना–चित्त का अभिप्राय जानना , मन हरा होना–चित्त प्रसन्न होना , मन के लड्डू खाना–अनिश्चित आशा पर प्रफुल्लित होना , मन चलना–अभिलाषा होना, किसी का मन टटोलना–किसी के मन की बात जानने का उद्योग करना, मन डोलना–लोभ उत्पन्न होना , मन देना–चित्त लगाना, मन तोड़ना–साहस त्यागना , मन फेरना–चित्त हटा लेना , मन बढ़ाना–उत्साह बढ़ाना , मन मे बसना–अच्छा जान पड़ना , मन बहलाना–चित्त प्रसन्न करना , मन भरना–विश्वास होना , मन भर जाना–तृप्ति या सन्तोष होना , मन भाना–अच्छा लगना , मन मानना–तृप्ति होना , निश्चय होना , मन में रखना–गुप्त रखना, याद कर रखना , मन मे लाना–विचारना , मन मिलना–दो व्यक्तियों की समान प्रकृति होना , मन मारना–उदासीनता धारण करना , मन मैला करना–सन्तुष्ट न होना , मन मोटा होना–चित्त हट जाना , मन मोड़ना–चित्तवृत्ति को दूसरी ओर लगाना , किसी का मन रखना–अभिलाषा पूर्ण करना , तबीयत लगाना , मन लाना–तबीयत लगाना , मन से उतर जाना, भूल जाना , मनही मन–चुपचाप, हृदय में , मनमाना–अपनी इच्छानुसार ।
मन–(हि० पु०) चालीस सेर की तौल, मणि, बहुमूल्य पत्थर ।
मनई–(हि०पु०) मनुष्य ।
मनकना–(हि०क्रि०) चेष्टा करना, हिलना डोलना, तर्क वितर्क करना ।
मनकरा–(हि० वि०) प्रकाशमान, चमकदार ।
मनका–(हि० पु०) बिल्लौर, लकड़ी आदि का छेदा हुआ गोल दाना जिसको पिरोकर माला या सुमिरनी बनाई जाती है, गुरिया, रीढ के ठीक ऊपर की गरदन के पीछे की हड्डी ।
मनकामना–(हि० स्त्री०) मनोरथ, अभिलाषा, इच्छा ।
मनकूला–(अ०वि०) चर (सम्पत्ति)
मनकूहा–(अ० वि०) विवाहिता, जिसके साथ निकाह हुआ हो ।
मनगढ़त–(हि० वि०) कपोल कल्पित, जिसकी केवल कल्पना मात्र कर ली गई हो, जिसकी वास्तव में सत्ता न हो।
मनचला–(हि० वि०) साहसी, निडर, हिम्मतवर, रसिक ।
मन चाहता–(हिं० वि०) मन के अनुकूल, यथेच्छ।
मनचाहा–(हिं०वि०) अभिलषित, इच्छा किया हुआ ।
मनचीता–(हिं० वि०) मनचाहा, मन में सोचा हुआ ।
मनजात–(हि०पु०) कामदेव ।
मनन–(सं० नपुं०) अनुचिन्तन, बारबार विचार करना, सोचना, अच्छी तरह से अध्ययन करना ।
मननशील–(सं० वि०) किसी विषय पर अच्छी तरह विचार करने वाला ।
मननाना–(हिं० क्रि०) गूंजना ।
मनभाया–(हि० वि०) जो मन को अच्छा लगे ।
मनभावता–(हि० वि०) प्रिय, प्यारा । जो अच्छा लगता हो ।
मनभावन–(हिं०वि०) मन को अच्छा लगने वाला ।
मनमंत–(हि०वि०) देखो मैमत ।
मनमति–(हिं०वि०) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करने वाला ।
मनमथ–(हि०पु०) देखो मन्मथ,कामदेव
मनमानता–(हि० वि०) मनोवाछित, मनमाना ।
मनमाना–(हि०वि०) मनोनीत, मनके अनुकूल, जो मन को अच्छा लगे, इच्छानुकूल, यथेच्छ ।
मनमुखी–(हि०वि०) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करने वाला ।
मनमुटाव–(हि०स्त्री०) वैमनस्य होना, मन फिर जाना ।
मनमोदक–(हि० पु०) मन का लड्डू, वह कल्पित या असभव बात जो अपनी प्रसन्नता के लिये मन में बनाई गई हो ।
मनमोहन–(हि० वि०) मन को लुभाने

वाला, प्रिय, प्यारा, (पु०) श्रीकृष्ण, एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्रायें होती हैं।
मनमोहनी–(हिं० वि०) मन को लुभाने वाली।
मनमौजी–(हिं० वि०) मनमाना काम करने वाला।
मनरज–(हिं०वि०) मनोरजक, चित्त को प्रसन्न करने वाला।
मनरंजन–(हिं०वि०) देखो मनोरञ्जन, चित्त को प्रसन्न करने वाला।
मनलाडू–(हिं० पु०) देखो मनमोदक।
मनवा–(हिं० पु०) नरमा, राम कपास।
मनवाञ्छित–(हिं०वि०) देखो मनोवाञ्छित
मनवाना–(हिं०क्रि०) किसी को मानने में प्रवृत्त करना।
मनशा–(अ० स्त्री०) तात्पर्य, मतलब, इच्छा, इरादा।
मनसना–(हिं० क्रि०) सकल्प करना, इच्छा करना, दृढ निश्चय करना, इरादा करना, हाथ में जल लेकर सकल्प का मन्त्र पढकर कोई चीज दान करना।
मनसब–(अ०पु०) अधिकार, पद, स्थान, वृत्ति, कर्म, काम।
मनसबदार–(फा०पु०)उच्च पद का कोई पुरुष, ओहदेदार।
मनसा–(स० स्त्री०) एक देवी जिसकी पूजा ज्येष्ठ में गगादशहरा के दिन बगाल में घर घर होती है (हिं० स्त्री०) अभिलाषा, मनोरथ, सकल्प, कामना, इच्छा, अभिप्राय, मन, बुद्धि, (वि०) मन से उत्पन्न, (क्रि० वि०) मन के द्वारा, मन से।
मनसाकर–(हिं० वि०) मनोरथ पूर्ण करने वाला।
मनसाना–(हिं०क्रि०) उमग या तरग में आना, सकल्प का मन्त्र पढ़कर या पढाकर दूसरे से दान आदि कराना।
मनसापञ्चमी–(स० स्त्री०) आषाढ कृष्ण पञ्चमी का दिन।

मनसायन–(हिं०वि०) वह स्थान जहां मन बहलाने के लिये कुछ लोग इकट्ठे हों, मनोरम स्थान।
मनसिकार–(स० पु०) मनोयोग, ध्यान
मनसिज, मनसिशय–(स०पु०) कन्दर्प, कामदेव।
मनसूख–(अ०वि०) अप्रमाणित ठहराया हुआ, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
मनसूखी–(अ०स्त्री०) मनसूख होने का भाव या क्रिया।
मनसूबा–(अ० पु०) आयोजन, युक्ति, विचार, इरादा, मसूबा बाँधना–तरकीब सोचना।
मनसेधू–(हिं०पु०) मनुष्य, मनई।
मनस्क–(स० नपु०) मनोयोग, 'मन' शब्द का अल्पार्थ रूप जिसका प्रयोग समस्त पदों में होता है यथा–तन्मनस्क
मनस्कान्त–(स०वि०) मनके अनुकूल, प्रिय
मनस्काम–(स०पु०) मनोरथ, अभिलाषा
मनस्ताप–(स० पु०) आन्तरिक दुःख, पछतावा।
मनस्ताल–(स०पु०) दुर्गा देवी के सिंह का नाम, (नपु०) हरताल।
मनस्थ–(स० वि०) अन्तःकरणमें स्थित।
मनस्विन्–(स०पु०) उच्च विचार वाला, स्वेच्छाचारी, मनमौजी।
मनस्विनी–(स०स्त्री०) श्रेष्ठ विचार की स्त्री, प्रजापति की एक स्त्री का नाम।
मनस्वी–(हि०वि०) देखो मनस्विन्।
मनहस–(स०पु०) पद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मनहर–(हिं०वि०) मनको हरने वाला, मनोहर, घनाक्षरी छन्द का एक नाम।
मनहरण–(हिं० पु०) मन के हरने की क्रिया या भाव, पद्रह अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसको नलिनी या भ्रमरावली भी कहते हैं। (वि०) मनोहर, सुन्दर।
मनहरन–(हि०वि०) मनको हरने वाला।
मनहार–(हिं०वि०) देखो मनोहारी।
मनहारि–(हिं०वि०) देखो मनोहारी।
मनहुँ–(हिं० अव्य०) मानो, जैसे, यथा।
मनहूस–(अ० वि०) अप्रिय दर्शन जो देखने में बुरा जान पड़े, अशुभ, बुरा।

मना–(अ०वि०) वर्जित, निषिद्ध, जो कुछ करने से रोका गया हो, वारण किया हुआ, अनिश्चित।
मनाई–(हि० स्त्री०) देखो मनाही।
मनाक्–(स० अव्य०) अल्प, थोड़ा, मन्द
मनाक–(हिं०वि०) अल्प, थोड़ा।
मनाका–(स०स्त्री०) हस्तिनी, हथिनी।
मनादी–(हि०स्त्री०) देखो मुनादी।
मनाना–(हिं० क्रि०) दूसरे को मानने पर उद्यत करना, स्वीकार कराना, जो अप्रसन्न हो उसको प्रसन्न करने का प्रयत्न करना, स्तुति करना, प्रार्थना करना, सकरवाना, अप्रसन्न को प्रसन्न करने के लिये विनय करना, किसी मनोकामना के पूर्ण होने के लिये देवी देवता से प्रार्थना कराना।
मनावन–(हिं०पु०) अप्रसन्न व्यक्ति को प्रसन्न करने का काम, मनाने की क्रिया।
मनावी–(स०स्त्री०)मनु की पत्नी का नाम।
मनाही–(हि० स्त्री०) निषेध, रोक।
मनि–(हिं० स्त्री०) देखो मणि।
मनिका–(हि० स्त्री०) माला में पिरोया हुआ दाना, गुरिया।
मनित–(स०वि०) ज्ञात, जाहिर।
मनिया–(हिं०स्त्री०) मनका, कठी, गुरिया, माला में पिरोया हुआ दाना।
मनियार–(हिं० वि०) देदीप्यमान, चमकीला, दर्शनीय, शोभा युक्त (हिं० पु०) चूड़ी बनाने वाला, चुड़िहारा।
मनी आर्डर–(अ० पु०) रुपये की हुडी जो किसी को रुपया चुकाने के लिये एक डाकखाने से दूसरे डाकखाने में भेजी जाती है।
मनी–(हिं० स्त्री०) देखो मणि, वीर्य, गर्व अहकार।
मनीर–(हि० स्त्री०) मोरनी।
मनीषा–(स०स्त्री०) बुद्धि, अक्ल, स्तुति, प्रशसा।
मनीषित–(स०वि०) अभिलषित, वाछित।
मनीषिता–(स०स्त्री०)बुद्धिमत्ता, बुद्धिमानी।
मनीषिन्–(स० पु०) पण्डित, ज्ञानी,

बुद्धिमान्।
मनीषी-(हिं० पु०) देखो मनीषिन्।
मनु-(सं० पु०) मनुष्य, मन्त्र, ब्रह्म के पुत्र, मानव जाति के आदि पुरुष ये संख्या में चौदह हैं, इनके नाम-स्वयंभुव स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्ष सावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, रुद्र सावर्णि, देव सावर्णि धर्म सावर्णि और इन्द्र सावर्णि हैं, मन, अन्तःकरण विष्णु, अग्नि, ब्रह्मा, विद्वान्, चौदह की संख्या,
मनु-(हि० अव्य०) मानो, जैसे।
मनुआँ-(हिं०पु०) मन, मनुष्य, नरमा, देव कपास।
मनुज-(सं० पु०) मनुष्य, आदमी, मनुजपति-राजा, मनुजलोक-मृत्यु लोक।
मनुजात-(सं०वि०) मनु या मनुष्य से उत्पन्न।
मनुजाद-(सं० पु०) मनुष्य को खाने वाला, राक्षस।
मनुजाधिप-(सं० पु०) मनुष्यों का अधिपति, राजा।
मनुजा-(सं०स्त्री०) स्त्री, नारी औरत।
मनुजेन्द्र-(सं०पु०) देखो मनुजाधिप।
मनुयुग-(सं०नपु०) मन्वन्तर।
मनुराज-(सं० पु०) कुबेर।
मनुश्रेष्ठ-(सं०पु०) विष्णु।
मनुप-(सं० पु०) मनुष्य, आदमी, पति।
मनुपेन्द्र-(सं०पु०) देखो मनुजेन्द्र।
मनुष्य-(सं०पु०) मनुज, मानव, पुरुष, आदमी, नर, मनुष्यकार-पुरुषों की की हुई चेष्टा, मनुष्य गन्धर्व-मानव रूपी गन्धर्व।
मनुष्यता-(सं०स्त्री०) मनुष्य का भाव या धर्म, सभ्यता, शिष्टता, दया भाव, चित्त की कोमलता।
मनुष्यत्व-(सं०नपु०) मनुष्य का भाव या धर्म।
मनुष्ययज्ञ-(सं०पु०) अतिथि सत्कार।
मनुष्यरथ-(सं० पु०) वह रथ जिसको मनुष्य खींचते हैं।

मनुष्यलोक-(सं०पु०) नृलोक, पृथ्वी।
मनुष्यसव-(सं०पु०) मनुष्य द्वारा किया हुआ यज्ञ।
मनुसंहिता-(सं०स्त्री०) मानव धर्मशास्त्र
मनुसाई-(हिं० स्त्री०) पुरुषार्थ, बहादुरी, पराक्रम, मनुष्यता, आदमीयत।
मनुस्मृति-(सं०स्त्री०)मनु प्रणीत एक धर्म ग्रन्थ, मानव धर्मशास्त्र।
मनुहार-(हिं०स्त्री०) मनौआ, खुशामद, वह विनती जो किसी को प्रसन्न करने या क्रोध शान्त करने के लिये की जाती है, विनय, प्रार्थना आदर, सत्कार।
मनुहारना-(हिं०क्रि०) खुशामद करना, मनाना, आदर-सत्कार करना, विनय करना, प्रार्थना करना।
मनूरी-(अ० स्त्री०) मुरादाबादी कलई करने की बुकनी।
मनेजर-(अं०पु०) किसी कार्यालय आदि का प्रबन्धकर्ता।
मनो-(हिं०अव्य०) मानो।
मनोकामना-(हिं०स्त्री०)अभिलाषा,इच्छा।
मनोगत-(सं०वि०) मनःस्थित, जो मन में हो (पु०) कन्दर्प, कामदेव।
मनोगति-(सं०स्त्री०) मन की गति, चित्त वृत्ति, अभीष्ट, इच्छा।
मनोगवी-(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा।
मनोज-(सं०पु०) कन्दर्प,कामदेव,मदन।
मनोजव-(सं०पु०) विष्णु, मन का वेग, वायु के एक पुत्र का नाम, रुद्र के एक पुत्र का नाम (वि०) पितृतुल्य, अधिक वेगवान्।
मनोजात-(सं०वि०)जो मन से उत्पन्न हो
मनोज्ञ-(सं०वि०) रुचिर,सुन्दर,मनोहर।
मनोज्ञता-(सं० स्त्री०) सुन्दरता, खूबसूरती।
मनोज्ञा-(सं० स्त्री०) मनोहरा,सुन्दरी, मैनसिल, शराब, मगरैला, जावित्री का फूल।
मनोदाही-(हिं०वि०)मनको जलाने वाला।
मनोदुष्ट-(सं०वि०) दुष्ट या खराब हृदय वाला।
मनोदेवता-(सं०पु०) अन्तरात्मा विवेक।

मनोधृत-(सं०वि०) जितेन्द्रिय।
मनोनिग्रह-(सं०पु०) चित्त की वृत्तियों का निरोध, मनको वश में रखना।
मनोनीत-(सं०वि०) जो मन के अनुकूल हो, चुना हुआ, पसन्द।
मनोहारी-(हिं०वि०) मनको हरने वाला
मनोभव-(सं० पु०) कन्दर्प, कामदेव, (वि०) मन से उत्पन्न।
मनोभिराम-(सं० वि०) मनोज्ञ, सुन्दर।
मनोभूत-(सं० पु०) चन्द्रमा।
मनोमथन-(सं०पु०) मदन, कामदेव।
मनोमय-(सं०वि०) मनोरूप, मानसिक।
मनोमय कोश-(सं० पु०) वेदान्त शास्त्र के अनुसार पाच कोशो में से वह कोश जिसके अन्तर्गत मन, अहकार और कामेन्द्रिया मानी जाती हैं।
मनोयायी-(हिं० वि०) इच्छानुसार गमन करने वाला।
मनोयोग-(सं० पु०) चित्तवृत्ति का निरोध करके एकाग्र करना और किसी एक पदार्थ पर लगाना।
मनोयोनि-(सं० पु०) कन्दर्प, मनोभू, कामदेव।
मनोरञ्जक-(सं० वि०) चित्त को प्रसन्न करने वाला।
मनोरञ्जन-(सं०नपुं०) चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव, एक बगला मिठाई का नाम।
मनोरथ-(सं० पु०) अभिलाषा, वाछा, इच्छा, मनोरथ तृतीया-चैत्र शुक्ला तृतीया जिस दिन व्रत करने से मनोरथ से सिद्ध होता है, मनोरथ दायक-अभीष्ट फल देने वाला, कल्पवृक्ष,
मनोरथ द्वादशी – चैत्र शुक्ल द्वादशी,
मनोरथ सिद्धि-अभिलाषा का पूर्ण होना
मनोरम-(सं० वि०) सुन्दर, मनोहर, सखी छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्रायें होती हैं।
मनोरमा-(सं०स्त्री०) गोरोचन, बुद्ध की एक शक्ति का नाम, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरणमें दस वर्ण होते हैं, दोधक छन्द का एक नाम, आर्या छन्द का

एक भेद, चौदह अक्षरों का एक वर्णवृत्त, दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त, सात सरस्वतियों में से चौथी का नाम—इन सातों के नाम—सुप्रभा, काञ्चनाक्षी, विशाला, मनोरमा, सरस्वती, सुरेणु और विमलोदका है।

मनोरा–(हिं०पु०) दीवार पर गोबर से बनाये हुए चित्र जो दीवाली के बाद बनाये जाते हैं तथा रंग बिरंगे फूल पत्तों से सजाकर प्रति दिन सन्ध्या को दीपक जलाकर पूजे जाते हैं तथा झूमक गीत गाई जाती है।

मनोराज–(हिं० पु०) मन की कल्पना, मन गढन्त।

मनोरिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सिकड़ियों की जंजीर जिसको स्त्रिया ओढनी या साड़ी के किनारे पर टाक देती हैं जो ओढने पर सिर पर लटकती है

मनोलय–(सं०पु०) मन का नाश, प्रकृति पुरुष के मिल जाने पर मन अहंकार में लुप्त हो जाता है।

मनोलौल्य–(सं० नपुं०) चित्त की चंचलता।

मनोवती–(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम

मनोवाञ्छा–(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा

मनोवाञ्छित–(सं०वि०) इच्छित, चाहा हुआ।

मनोविकार–सं०पु०,मनकी वह अवस्था जिसमें किसी प्रकारका सुखद या दुःखद, भाव, विचार या विकार उत्पन्न हो।

मनोविज्ञान–(सं०पु०) वह शास्त्र जिसमें मनकी वृत्तियोंका अनुशीलन होता है।

मनोविद्–(सं० वि०) मन के भावों को जानने वाला।

मनोवृत्ति–(सं० स्त्री०) मन का व्यापार या कार्य।

मनोवेग–(सं० पु०) मनोविकार।

मनोव्यापार–(सं० पु०) मन की क्रिया, विचार।

मनोसर–(हिं०पु०) मन की वृत्ति।

मनोहत–(सं० वि०) प्रतिहत, निराश।

मनोहर–(सं० वि०) सुन्दर, चित्त को आकर्षण करने वाला, (पु०) सोना, छप्पय का एक भेद एक संकर राग का नाम।

मनोहरता–(सं० स्त्री०) मनोहर होने का भाव, सुन्दरता।

मनोहरताई–(हिं०स्त्री०) देखो मनोहरता

मनोहरा–(सं० स्त्री०) मनोहारिणी, सोनजुही का फूल, एक अप्सरा का नाम

मनोहरी–(हिं० स्त्री०) कान में पहरने की छोटी बाली।

मनोहारी–(सं०वि०) मनोहर, चित्ताकर्षक

मनोह्लाद–(सं०पु०) चित्त की प्रसन्नता।

मनौती–(हिं० स्त्री०) असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करना, किसी देवी देवता की विशिष्ट रूप से पूजा करने का संकल्प।

मन्तव्य–(सं० पु०) मन, विचार, (वि०) मानने योग्य।

मन्त्र–(सं० पु०) वेद का वह भाग जिसमें मन्त्रों का संग्रह है-यह ब्राह्मण से पृथक् है, रहस्यपूर्ण बात, परामर्श, सलाह, देवता के साधन के निमित्त वैदिक वाक्य जिनको पढकर यज्ञादि क्रिया की जाती है, मन्त्रकार–मन्त्र रचने वाला ऋषि, मन्त्रकुशल–मन्त्र जानने वाला, मन्त्रकृत–परामर्श देने वाला, मन्त्री, मन्त्रगृह–वह स्थान जहाँ मन्त्र या सलाह दी जाती हो, मन्त्रजल–अभिमन्त्रित किया हुआ जल मन्त्रजिह्व–अग्नि, मन्त्रज्ञ–मन्त्र जानने वाला, भेद जानने वाला।

मन्त्रण–(सं० नपुं०) मन्त्रणा, सलाह।

मन्त्रणा–(सं० स्त्री०) परामर्श, सलाह।

मन्त्रद–(सं० पु०) मन्त्रदाता (सं०वि०) मन्त्र देने वाला गुरु।

मन्त्रमूर्ति–(सं०पु०) शिव, महादेव।

मन्त्रवादी–(सं०वि०) मन्त्र जानने वाला

मन्त्रविद्या–(सं० स्त्री०) मन्त्रशास्त्र।

मन्त्रसंहिता–(सं० स्त्री०) वैदिक मन्त्रों का संग्रह।

मन्त्रसाधन–(सं० नपुं०) अभिलषित विषय की सिद्धि।

मन्त्रसिद्धि–(सं०स्त्री०) मन्त्र की सफलता

मन्त्रिता–(सं०स्त्री०) मन्त्री का काम।

मन्त्रित्व–(सं०पु०) देखो मन्त्रिता।

मन्त्री–(सं० पु०) वह पुरुष जिसके परामर्श से राज्य के कामकाज होते हों, अमात्य, सचिव, सलाह देने वाला मनुष्य, शतरंज की एक गोटी का नाम, वजीर।

मन्त्रोदक–(सं०नपुं०) मन्त्र पढा हुआ जल

मन्थ–(सं०पु०) मन्थ दण्डक, मथानी, औषधि को जल में पकाने की एक विधि, हिलाने या नष्ट करने की क्रिया, सूर्य का किरण, मन्थक–मथने वाला, मन्थज–मक्खन, मन्थन–मथना, डूबकर पता लगाना, मन्थनोद्भव–नवनीत, मक्खन।

मन्थर–(सं० नपुं०) कोष, खजाना, मथानी, गुप्तचर, क्रोध, वैशाख मास, मक्खन, फल, (वि०) मन्द सुस्त, भारी, वक्र, टेढा, निश्चल, नीच, अधम।

मन्थरा–(सं० स्त्री०) कैकयी की दासी जिसने राम को वनवास देने के लिये उनको उभाड़ा था।

मन्था–(सं०स्त्री०) मेथिका, मेथी।

मन्थान–(सं० पु०) मन्थनदण्ड, मथानी, शिव, महादेव, एक छन्द का नाम, भैरव का एक भेद।

मन्थिनी–(सं०स्त्री०) दही मथने का बरतन

मन्द–(सं०पु०) शनि ग्रह, यम, जठरानल, प्रलय, अभाग्य (वि०) शिथिल, सुस्त, धीमा, आलसी, दुष्ट, खल, मूर्ख, मन्दकर्म–कार्यहीन, मन्दकारी–हानि करने वाला, मन्दगति–धीमी चाल चलने वाला, मन्दजात–धीरे धीरे उत्पन्न।

मन्दता–(सं०स्त्री०) आलस्य, धीमापन, क्षीणता।

मन्दधी, मन्दबुद्धि–(सं० वि०) अल्प बुद्धि, कम अक्ल।

मन्दभागी–(सं०वि०) हतभाग्य, अभागा

मन्दभाग्य–(सं० वि०) हतभाग्य दुर्भाग्य

मन्दभाषिणी–(सं० स्त्री०) देखो मृदु भाषिणी।

मन्दयन्ती-(स०स्त्री०) दुर्गा देवी।
मन्दा-(स०वि०) मन्द, धीमा, शिथिल, खराब नष्ट भ्रष्ट, बिगड़ा हुआ, सस्ता।
मन्दाकिनी-(स०स्त्री०) स्वर्ग गगा, गगा की वह प्रधान धारा जो स्वर्ग को चली गई है, सक्रान्ति विशेष, बारह अक्षरों की एक वर्गवृत्ति।
मन्दाक्रान्ता-(स०स्त्री०) सत्रह अक्षरों के एक वर्णवृत्त का नाम (वि०) थोड़ा जीता हुआ।
मन्दाक्ष-(स०नपु०) लज्जा।
मन्दाग्नि-(स०पु०) अग्नि मन्द होने का रोग।
मन्दान-(हिं०पु०) जहाज का अगला भाग
मन्दानिल-(सं० पु०) मलय पर्वत की मन्द वायु।
मन्दार-(स०पु०) अर्कवृक्ष, हाथी, स्वर्ग, हाथ एक विद्याधर का नाम, मन्दराचल पर्वत, हिरण्यकश्यपु के एक पुत्र का नाम।
मन्दार माला-(स० स्त्री०) बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति का नाम।
मन्दार सप्तमी-(स०स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी।
मन्दारी-(स०स्त्री०) लाल अकवन।
मन्दिर-(स०नपु०) गृह, घर, जिस घर में देवी या देवता का स्थापन किया हो, वास स्थान, नगर, समुद्र, एक गन्धर्व का नाम, मन्दिर पशु-बिल्ली, मन्दिर मणि-शिव, महादेव।
मन्दिरा-(स०स्त्री०) मजीरा नामक बाजा
मन्दिल-(हिं०पु०) देवालय, घर, वह अल्प धन जिसको दुकानदार दाम देते समय धार्मिक कृत्य के लिये काट लेता है
मन्दी-(हिं०स्त्री०) भाव का कम होना, सस्ती।
मन्दील-(हिं०पु०) एक प्रकार का सिर पर पहरने का आभूषण।
मन्दुरा-(स०स्त्री०) अस्तबल, घुड़साल, बिछाने की चटाई।
मन्दुरिक-(स०पु०) घोडे का साईस।
मन्दोदरी-(स०स्त्री०) रावण की पटरानी का नाम, मन्दोदरी सुत-मेघनाद।
मन्दोष्ण-(स०वि०) थोड़ा गरम गुनगुना
मन्द्र-(स० पु०) मृदग, हाथी की एक जाति, (वि०) प्रसन्न, सुन्दर, मनोहर, धीमा, सगीत में स्वरों के तीन भेदों में से एक।
मन्द्राज-(स०पु०) भारतवर्ष के दक्षिण का एक प्रधान नगर, मन्द्राजी-मन्द्राज सबधी, मन्द्राज में रहने वाला।
मन्नत-(हिं० स्त्री०) किसी विशेष कामना की पूर्ति के लिये किसी देवी देवता की पूजा आदि करने की प्रतिज्ञा, मानता, मनौती मन्नत उतारना-ऐसी प्रतिज्ञा को पूरी करना, मन्नत मानना-किसी मनोरथ को पूरा होने के लिये देवी देवता की विशेष पूजा करने की प्रतिज्ञा करना।
मन्ना-(हिं०पु०) एक प्रकार का मीठा निर्यास जो अनेक वृक्षों में से निकलता है, यह औषधियों में प्रयोग होता है।
मन्मथ-(स०पु०) कामदेव, कैथ का वृक्ष, काम चिन्ता।
मन्मथालय-(स०पु०) प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का स्थान।
मन्मन-(सं०पु०) गद्गद वाणी, कान में गुप्त बात कहना।
मन्य-(स०वि०) माननीय, मानने योग्य।
मन्या-(स०स्त्री०) गरदन के पिछले भाग की एक शिरा का नाम।
मन्यु-(स०पु०) कार्य, स्तोत्र, शोक, यज्ञ, क्रोध, दीनता, शिव, अहकार, अग्नि, मन्युमय-क्रोधमय, गुस्सवर, अति भयकर
मन्वन्तर-(स०नपु०) एकहत्तर दिव्य युग का नाम, दैवयुग का एक सहस्र युग ब्रह्मा का एक दिन होता है इसी एक दिन का नाम मन्वन्तर है जो गणना करने से तीस करोड़, सड़सठ लाख, बीस हजार वर्ष होता है।
मन्वाद्य-(स०पु०) धान्य, धान।
मम-(स०सर्व०) मेरा या मेरी, ममकार-अपनी कमाई हुई सम्पत्ति।
ममता-(स० स्त्री०) यह मेरा है' इस प्रकार का भाव, ममत्व, अपनापन, लोभ, मोह, अभिमान, गर्व, स्नेह, प्रेम, माता का अपनी सन्तान पर स्नेह, ममतायुक्त-कृपण, कजूस, अभिमानी।
ममत्व-(स०नपु०) ममता, स्नेह, अभिमान, गर्व।
ममरी-(हि०स्त्री०) बन तुलसी, दौना।
ममिया-(हि०वि०) जो सम्बन्ध में मामा के स्थान पर पड़ता हो, यथा ममिया ससुर, सास आदि।
ममियाउर, ममिऔरा-(हिं०पु०) मामा का घर।
ममीरा-(अ० पु०) हल्दी की जाति के एक पौधे की जड़ जो आँखों के रोगों की अपूर्व औषधि मानी जाती है।
मम्मी-मिश्र देश की प्रसिद्ध मृत मनुष्य की रक्षित शरीर।
मयंक-(हि०पु०) देखो मृगाक, चन्द्रमा।
मयद-(हिं०पु०) देखो मृगेन्द्र, शेर।
मयन्दी (हि०स्त्री०) गाड़ी की पहिये के चक्के पर लगाने की सामी।
मय-(स०पु०) दिति के पुत्र का नाम, एक प्रसिद्ध दानव, एक देश का नाम, अश्व, घोड़ा, खचर, चिकित्सक, वैद्य, (हि० अव्य०) तद्धित का एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार, तथा प्राचुर्य अर्थ में शब्दो के अन्त में लगाया जाता है, यथा-आनन्दमय।
मयगल-(हिं० पु०) मस्त हाथी।
मयंक-(स०पु०) चन्द्रमा।
मयट-(स० पु०) पर्णशाला, झोपड़ी।
मयन-(स० नपुं०) मधुप, मक्खी का छत्ता, (हि०पु०) देखो मदन, कामदेव।
मयमत, मयमत्त-(हि० वि०) मदोन्मत्त, मस्त।
मयसुता-(स० स्त्री०) मन्दोदरी।
मयस्सर-(अ०वि०) उपलब्ध, प्राप्त, जो मिलता हो।
मया-(हिं०स्त्री०) देखो माया।
मयार-(हिं०वि०) कृपालु, दयावान्।
मयारी-(हिं० स्त्री०) वह धरन जिस पर हिंडोले की रस्सी लटकाई जाती है,

छाजन की धरन जिस पर बंडेर रक्खे जाते हैं।
मयु-(सं० पु०) किन्नर, मृग, मयु-राज-कुबेर।
मयूक-(सं०पु०) मयूर, मोर।
मयूख-(सं०पु०) रश्मि, किरण, प्रकाश, ज्वाला, पर्वत।
मयूखी-(सं० स्त्री०) भारत के प्राचीन आर्यों का एक प्रकार का अस्त्र।
मयूर-(सं०पु०) शिखी, बर्हि, मोर।
मयूरगति-(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस अक्षर होते हैं।
मयूर ग्रीवक-(सं० नपुं०) तुत्थ, तूतिया।
मयूरध्वज-(सं०पु०) पुराण वर्णित एक प्राचीन राजा जिसकी राजधानी रत्नपुरी थी।
मयूरपुच्छ-(सं० पु०) मोर की पूछ, चन्द्रिका।
मयूररथ, मयूरवाहन-(सं०पु०) स्कन्द, कार्तिकेय।
मयूरशिखा-(सं०स्त्री०) शिखालु नामक पौधा।
मयूर सारिणी-(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तेरह वर्ण होते हैं।
मयूरा-(सं०स्त्री०) काली तुलसी,अजमोदा
मयूरासन-(सं०पु०)शाहजहा का बनाया हुआ,मयूर के आकार का प्रसिद्ध सिंहासन
मयूरिका-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।
मयूरी-(सं०स्त्री०) मोरनी।
मयोभव-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
मरद-(हिं०पु०) देखो मकरन्द।
मरक-(हिं० स्त्री०) दबाकर सकेत या इशारा करना, देखो मड़क, मृत्यु, मरण
मरकट-(हिं० पु०) देखो मर्कट।
मरकत-(सं०पु०) पन्ना नाम का रत्न
मरकना-(हिं० क्रि०) दबाव पड़कर टूट जाना, देखो मुड़कना।
मरकहा-(हिं० वि०) जो पशु सींघ से मारता हो, सींघ से मारने वाला।
मरकाना-(हिं०क्रि०) दबा कर चूरचूर करना, देखो मुड़काना।
मरकूम-(अ० वि०) लिखित, लिखा हुआ
मरकोटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी मिठाई
मरखन्ना-(हिं०वि०) देखो मरकहा।
मरखम-(हिं० पु०) देखो मलखम।
मरगजा-(हिं० वि०) मसला हुआ, गींजा हुआ।
मरगोल-(अ०पु०) गानेमें स्वर का कम्प, गिटकिरी।
मरघट-(हिं० पु०) मुरदों को जलाने का स्थान, श्मशान, (वि०) कुरूप और विकराल आकृति का, जो सदा उदास रहता है, मनहूस।
मरचोबा-(हिं० पु०) एक प्रकार की तरकारी।
मरज-(अ० पु०) रोग, बीमारी, बुरी आदत।
मरजाद, मरजादा-(हिं०स्त्री०) मर्यादा, रीति, परिपाटी, सीमा, हद्द, आदर, सत्कार, प्रतिष्ठा।
मरजिया-(हिं० वि०)मर कर जीने वाला, जो प्राण देने को उद्यत हो मरने वाला, मृतप्राय, अधमरा।
मरजी-(अ०स्त्री०) इच्छा, चाह, स्वीकृति, आज्ञा, प्रसन्नता, खुशी।
मरजीवा-(हिं०पु०) देखो मरजिया।
मरण-(सं०नपु०) मृत्यु, पञ्चतत्व, मौत।
मरणान्त-(सं०वि०) मरण पर्यन्त,मृत्यु तक
मरणोत्तर-(सं०वि०) मृत्यु के बाद का।
मरत-(हिं०पु०) मरण, मृत्यु।
मरतबा-(अ०पु०) पदवी, पद, बार,दफा
मरतबान-(हिं०पु०) देखो अमृतबान।
मरद-(हिं० पु०) देखो मर्द।
मरदई-(हिं० स्त्री०) साहस, वीरता, पराक्रम।
मरदन-(हिं० पु०) देखो मर्दन।
मरदना-(हिं० क्रि०) मर्दन करना, मसलना, नाश करना, गूँथना, माड़ना।
मरदनिया-(हिं० पु०) शरीर में तेल की मालिश करने वाला सेवक।
मरदानगी-(फा० स्त्री०) शूरता, वीरता, उत्साह, साहस, पराक्रम।
मरदाना-(फा०वि०) पुरुष सबंधी, पुरुष के सदृश।
मरदूद-(अ०वि०)नीच, लुचा, तिरस्कृत।
मरन-(हिं०पु०) देखो मरण।
मरना-(हिं० क्रि०) मृत्यु को प्राप्त होना, बहुत दुःख सहना,कुम्हलाना,मुरझाना, सूख जाना, बेकाम हो जाना, लज्जा आदि के कारण मस्तक न उठा सकना, वेग का कम होना, रोना, पछतावा करना, डाह करना, जलना, वशीभूत होना, हारना, किसी पर मरना-आसक्त होना, मर मिटना-परिश्रम करते करते नष्ट हो जाना,मरा जाना-व्याकुल होना,घबड़ाना, पानी मरना-नींव या दीवारमें पानी धँसना,बदनाम होना।
मरनी-(हिं० स्त्री०) मृत्यु, मौत, दुःख, कष्ट, वह शोक जो किसी के मरने पर उसके सबंधियों को होता है, मृत्यु सबंधी कृत्य।
मरन्द, मरन्दक-(सं०पु०) देखो मकरन्द
मरभुक्खा-(हिं० वि०) भूख का मारा, भुक्खड़, दरिद्र।
मरम-(हिं०पु०) देखो मर्म।
मरमर-(हिं० पु०) एक प्रकार का दानेदार चिकना पत्थर, मार्बल।
मरमरा-(हिं० पु०) एक पक्षी का नाम, थोड़ा खारा पानी, (वि०) सहज में टूटने वाला, कुड़कीला।
मरमराना-(हिं० क्रि०) वृक्ष की शाखा का दबाव पाकर मरमर शब्द करना।
मरम्मत-(अ० स्त्री०) किसी वस्तु के टूटे-फूटे अंश को ठीक करने का काम, दुरुस्ती।
मरवट-(हिं० स्त्री०) वह माफी ज़मीन जो किसी के मारे जाने पर उसके लड़केवालों को दी जाती है।
मरवा-(हिं०पु०) देखो मरुआ।
मरवाना-(हिं०स्त्री०) वध कराना, मारने के लिये दूसरे को प्रवृत्त करना।
मरसा-(हिं०पु०) एक प्रकार का साग।
मरसिया-(अ०पु०) शोक सूचक कविता

जो प्रायः मुहर्रम के दिनो में पढी जाती है, मरण शोक, रोना पीटना।
मरहट-(हिं० पुं०) मरघट, श्मशान, मसान।
मरहटा (हि० पु०) महाराष्ट्र देश का निवासी, उनतीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
मरहठा-(हिं०पु०) महाराष्ट्र देश वासी, महाराष्ट्र।
मरहठी-(हिं० वि०) महाराष्ट्र सबंधी (स्त्री०) वह भाषा जो महाराष्ट्र देश में बोली जाती है।
मरहम-(अ० पु०) औषधियों से बना हुआ घाव या पीड़ा के स्थान पर लगाने का गाढा चिकना लेप।
मरहला-(अ० पु०) यात्रियों के रात में ठहरने का स्थान, टिकान, पड़ाव झोपड़ी, मरातिब, मञ्ज़िल, दरजा, मरहला तय करना-कठिन कार्य को पूरा करना।
मरहून-(अ० वि०) जो रेहन किया गया हो, गिरवीं रक्खा हुआ।
मरहूना-(फ़ा० वि०) रेहन किया हुआ।
मरहूम-(अ०वि०) स्वर्गवासी, मृत
मरात्तिब-(अ० पु०) पद, दरजा, उत्तरोत्तर आने वाली स्थिति या अवस्था, ध्वजा, झंडा, पृष्ठ, तह, मकान का खण्ड, तल्ला।
मराना-(हिं०क्रि०) मारने के लिये प्रेरणा करना, मरवाना।
मरायल-(हिं० वि०) जिसने कई बार मार खाई हो, निर्जीव, निर्बल, निःसत्व, बेदम (पुं०) घाटा।
मरायु-(स० वि०) मरणशील, मरने वाला।
मराल-(स०पु०) राजहंस, काजल,बादल, घोड़ा, हाथी, एक प्रकार का बत्तक, खल, दुष्ट (वि०) चिकना।
मरिंद-(हिं० पु०) देखो मलिन्द,मरन्द।
मरिच-(स० नपु०) गोलमिर्च, मिरिच।
मरिचा-(हिं०पु०) लाल बड़ा मिरच।
मरियम-(अ० स्त्री०) इसुमसीह की माता का नाम जो कुमारी थी।
मरियल-(हिं० वि०) देखो मड़ियल, बहुत दुबला पतला।
मरिया-(हिं०स्त्री०) खाट के पायताने में कसने की रस्सी।
मरी-(हि० स्त्री०) देखो महामारी, एक सक्रामक रोग जिससे अनेक मनुष्यों की एक साथ मृत्यु होती है।
मरीचि-(स०पु०) एक ऋषि जो पुराणों में ब्रह्मा के मानसिक पुत्र तथा एक प्रजापति लिखे गये हैं, यह सप्तर्षियों में से एक कहे गये हैं, दनु के एक पुत्र का नाम, एक दैत्य का नाम, एक मरुत् का नाम जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे, (स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, किरण, कान्ति, ज्योति, मरीचिगर्भ-सूर्य, मरीचि जल-मृग तृष्णा।
मरीचिका-(स० स्त्री०) मृगतृष्णा, मरुभूमि में जल का आभास, सिरोह,किरण।
मरीची-(हि० पु०) सूर्य और चन्द्रमा (वि०) किरण युक्त, मरीचिमाली-सूर्य और चन्द्रमा।
मरीज़-(अ०वि०) रोग ग्रस्त,रोगी,बीमार।
मरीना-(हिं०पु०) एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी पतला कपड़ा जो मेरीनो नामक भेड़ के ऊन से तैयार किया जाता है।
मरु-(सं० पु०) मरु भूमि, रेगिस्तान, निर्जल प्रदेश, मारवाड़ और उसके आसपास के देश का नाम, एक दैत्य का नाम।
मरुआ-(हि० पु०) वन तुलसी या ममरी की जाति का एक पौधा जो बागों में बोया जाता है, इसमें सफेद फूल लगते हैं, पत्थर या लकड़ी का छोटा खंभा, बड़ेर, हिंडोला लटकाने की लकड़ी।
मरुकान्तर-(स०पु०) बालू का मैदान, रेगिस्तान।
मरुज-(स० वि०) रेगिस्तान में होने वाला।
मरुजाता-(स० पु०) केवाच, कौंछ।
मरुटा-(स०स्त्री०) ऊँचे ललाट की स्त्री।
मरुत्-(स०पु०) वायु, हवा, एक देवगण का नाम, प्राण, सुवर्ण, सोना, एक देवता विशेष, मरुत् कर्म-पेट फूलना, हवा निकलना, मरुत् क्रिया-अधो वायु का निकलना, पादना।
मरुतवान-(हि० पु०) देखो मरुत्वान्।
मरुत्पति-(स०पु०) इन्द्र।
मरुत्पथ-(स०पु०) आकाश।
मरुत्पाल-(स०पु०) इन्द्र।
मरुत्पुत्र-(स०पु०) भीमसेन।
मरुत्सहाय-(स०पु०) अग्नि, आग।
मरुत्सुत-(स०पु०) हनूमान, भीम।
मरुत्वान्-(स० पु०) इन्द्र, हनुमान्, देवताओं का एक गण।
मरुथल-(स०पु०) देखो मरुस्थल।
मरुदेश-(स०पु०)मरुभूमि, मारवाड़ देश
मरुद्रुम-(स०पु०) बबूल का वृक्ष।
मरुद्वाह-(स०पु०) धूम्र, धुवा, अग्नि, आग।
मरुद्वीप-(स०पु०) मरुस्थल में का उपजाऊ हराभरा मैदान, अंग्रेज़ी में इसको 'ओसिस्'-कहते हैं।
मरुद्वेग-(स० पु०) वायु का वेग, एक दैत्य का नाम।
मरुधर-(स०पु०) मारवाड़ देश।
मरुप्रिय-(स०पु०) उष्ट्र, ऊंट।
मरुभूमि-(स०स्त्री०) पेड़ पौधे तथा जल रहित बालुमय विस्तृत भूमि भाग, रेगिस्तान।
मरुवक-(स०पु०) तुलसी का छोटा पत्ता, मरुए का फूल, व्याघ्र, राहु (वि०) भयकर, डरावना।
मरुरना-(हिं० क्रि०) ऐंठना, मरोड़ना।
मरुसा-(हिं०पु०) देखो मरसा।
मरुस्थल-(स० नपुं०) मरुभूमि, निर्जल बालू का मैदान, रेगिस्तान।
मरुस्थली-(स०स्त्री०) वर्तमान मारवाड़ प्रदेश का प्राचीन नाम।
मरू-(हिं०वि०) कठिन, कड़ा, मुश्किल; मरूकरि-किसी न किसी रीति से।
मरूक-(स०पु०) मयूर, मोर।
मरुद्भवा (स० स्त्री०) जवासा, धमासा।

मरूरा-(हि०पु०) देखो मरोड़।

मरोड़-(हि०पु०) मरोड़ने की क्रिया या भाव, वह पीड़ा जो उद्वेग आदि के कारण उत्पन्न होती है, ऐंठन, घुमाव, पेट की ऐंठन, गर्व, अहङ्कार, घमंड, क्रोध, रोष, **मरोड़ खाना**-चक्कर खाना, **मरोड की बात**-फेरफार की बातचीत, **मरोड़ खाना**- तरद्दुद में पड जाना।

मरोड़ना-(हि०क्रि०) ऐंठना, बल डालना, ऐंठकर नष्ट करना, पीड़ा उत्पन्न करना, मलना, मसलना, ऐंठकर मार डालना। **भौंह मरोड़ना**-भौंह चढाना, सैन करना, नाक भौंह सिकोड़ना, **हाथ मरोड़ना**-पछताना।

मरोडफली-(हि० स्त्री०) मुर्रा नामक फली।

मरोड़ा-(हि०पु०) ऐंठन, उमेठ, पेट की पीड़ा, जिनमें ऐंठन मालूम होती है।

मरोड़ी-(हि० स्त्री०) ऐंठन, घुमाव, गाठ गुत्थी, **मरोड़ी करना**-खींचा खींची करना।

मरोलि-(स०पु०) मगर की जाति का एक समुद्री जन्तु।

मर्क-(स० पु०) शरीर, देह वायु हवा बन्दर, शुक्राचार्य के एक पुत्र का नाम

मर्कक-(स० पु०) मकड़ा, हरगीला नामक पक्षी।

मर्कट-(स० पु०) बन्दर, मकड़ा, अजमोदा, एक प्रकार का पक्षी, दोहे का एक भेद, छप्पय छन्द का एक भेद, **मर्कटक**-मकड़ा, एक दैत्य का नाम, **मर्कटपाल**-बन्दरों का राजा सुग्रीव, **मर्कट**, पिप्पली-अपामार्ग, चिचिड़ा, **मर्कटप्रिय**-खिरनीका पेड़, **मर्कटवास**-मकड़ी का जाला।

मर्कटी-(स० स्त्री०) भूरी केंवाच, अपामार्ग, चिचिड़ा, अजमोदा, एक प्रकार का करज, मकड़ी, बदरिया, छन्द के नव प्रत्ययों में से अन्तिम प्रत्यय जिसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छन्द के लघु गुरु आदि का तथा वर्णों की संख्या का ज्ञान होता है।

मर्कत-(स० पु०) देखो मरकत।

मर्कर-(स० पु०) भृगराज, भगरैया।

मर्करा-(स० स्त्री०) तहखाना, सुरग, माण्ड, बरतन, बाझ स्त्री।

मर्जी-(हि० स्त्री०) देखो मरज़ी।

मर्तबा-(अ०पु०) पद, पदवी, बार, दफा।

मर्तबान-(हि० पु०) रौगन चढाया हुआ मिट्टी का बरतन जिसमें अचार, मुरब्बा आदि रक्खा जाता है, अमृतबान।

मर्त्य-(स०पु०) भूलोक, मनुष्य, शरीर, देह।

मर्त्यता-(स०स्त्री०) मर्त्यत्व, मनुष्य का भाव या धर्म।

मर्त्यत्व-(स० नपु०) देखो मर्त्यता, आदमीयत।

मर्त्यधर्म-(स०पु०) मनुष्य का धर्म।

मर्त्यभाव-(स०पु०) मनुष्य का स्वभाव, मनुष्यत्व।

मर्त्यभुवन-(स०नपु०) मनुष्य लोक।

मर्त्यलोक-(स०पु०) मनुष्य लोक, पृथ्वी।

मर्द-(स०पु०) मर्दन, कुचलना, वह जो कूचा जावे।

मर्द-(फा०पु०) मनुष्य, पुरुष, साहसी या पुरुषार्थी मनुष्य, वीर, योद्धा, नर, पति, भर्ता।

मर्दना-(हि०क्रि०) मलना, मालिश करना, रौंदना, कुचलना, नष्ट करना, उबटन तेल आदि की मालिश करना।

मर्दानगी-(हि०स्त्री०) देखो मरदानगी।

मर्दाना-(फा० वि०) पुरुष के समान, वीर, साहसी।

मर्दी-(फा०स्त्री०) देखो मरदानगी।

मर्दुम-(फा०पु०) मनुष्य, आदमी।

मर्दुमशुमारी-(फा०स्त्री०) मनुष्य गणना, जन सख्या, आबादी, किसी देश के रहने वालों की गणना।

मर्दुमी-(फा० स्त्री०) मर्दानगी पौरुष, साहस, वीरता।

मर्दन-(स०नपु०) शरीर में तेल उबटन आदि की मालिश, कुचलना, रौंदना, चूर्णन, ध्वस, मलना, घोटना, पीसना, कुश्ती में एक पहलवान का दूसरे पहलवान की गरदन पर हाथ से घस्सा देना, (वि०) नाश या सहार करने वाला।

मर्दल-(स०पु०) प्राचीन काल का मृदग की तरह का एक बाजा।

मर्दित-(स० वि०) नष्ट किया हुआ, चूर्ण किया हुआ, मला हुआ, मसला हुआ।

मर्म-(स० नपु०) स्वरूप, रहस्य, तत्व, शरीर का सन्धि स्थान, शरीर में का वह स्थान जहां पर आघात पड़ने पर बड़ी पीड़ा होती है और कभी कभी मृत्यु भी हो जाती है।

मर्मघ्न-(स० वि०) मर्म घातक।

मर्मच्छिद्-(स०वि०) मर्म भेदने वाला

मर्मज्ञ-(स०वि०) किसी बात का मर्म या गूढ रहस्य जानने वाला, तत्वज्ञ, भेद की बातों को जानने वाला।

मर्मपारग-(स० वि०) देखो मर्मज्ञ।

मर्मभेदक-(स०वि०) हृदय को अधिक कष्ट पहुँचाने वाला।

मर्मभेदन-(स०पु०) मर्म भेदक अस्त्र

मर्मभेदी(हि० वि०) हृदय पर आघात पहुँचाने वाला, हार्दिक कष्ट देने वाला

मर्ममय-(स०वि०) रहस्य पूर्ण।

मर्मर-(स०पु०) कपडे पत्ते इत्यादि का मरमर शब्द।

मर्मरीक-(स०वि०) दीन दुखिया।

मर्मवचन-(स०पु०) मर्मभेदी बात, वह बात जिसको सुनने से आन्तरिक कष्ट हो

मर्मवाक्य-(स०पु०) रहस्य की बात, भेद की अथवा गुप्त बात।

मर्मविद्-(स०वि०, मर्मज्ञ, मर्म जानने वाला।

मर्मस्थान-(स०पु०) देखो मर्म।

मर्मान्तिक-(स० पु०) मर्म को स्पर्श करने वाला, क्लेश, हृदय में चुभने वाला दुःख।

मर्मान्वेषी-(हि० वि०) गूढ रहस्य जानने वाला।

मर्मी-(स०वि०) मर्मविद्, मर्मज्ञ।

मर्या-(स० स्त्री०) सीमा, हद।

मर्याद-(हि०स्त्री०) देखो मर्यादा, रीति,

प्रथा चाल, विवाह में दिया जाने वाला एक भोज, विवाह में बढार की रस्म।
मर्यादक-(स॰वि॰) माननीय।
मर्यादा-(स॰स्त्री॰) न्याय पथ की स्थिति, धर्म, दो या अधिक मनुष्यों के बीच की प्रतिज्ञा, मान, गौरव, सम्मान, सदाचार, नियम, सीमा, नदी का किनारा, एकरार; **मर्यादा बन्ध**-अधिकार की रक्षा।
मर्षण-(स॰नपु॰) क्षमा, माफी, घर्षण, रगड़।
मर्षणीय-(स॰वि॰) क्षमा करने योग्य।
मर्षीका-(स॰स्त्री॰)एक प्रकार का छन्द।
मलग-(फा॰ पुं॰) एक प्रकार के मुसलमानी साधु।
मल-(स॰ नपु॰) पाप, विष्ठा, पुरीष, कीट, मैल, वात पित्त कफ, कपूर, प्रकृति का दोष, दूषण, विकार, शरीर के अगों से निकलने वाला मैल।
मलकना-(हि॰क्रि॰) हिलना, डोलना, इतराना।
मलकरन-(हिं॰ पु॰) नक्काशी करने का एक औज़ार।
मलका-(हिं॰स्त्री॰)बादशाह की पटरानी।
मलकाना-(हि॰क्रि॰) हिलाना, डोलाना, बना बना कर बातें करना।
मलखभ-(हिं॰पु॰) देखो मलखम।
मलखम-(हिं॰पुं॰) चार पाच हाथ लबा लकड़ी का मोटा डडा जो जमीन में गाड़ा रहता है अथवा छत में से लटकाया रहता है जिस पर अनेक प्रकार की कसरत की जाती है, इस पर जो कसरत की जाती है, लकड़ी का खूटा जो पत्थर के कोल्हू में लगा होता है।
मलखाना-(हि॰पु॰) सयुक्त प्रान्त के पश्चिम में रहने वाली एक राजपूत जाति जो मुसलमानी अमलदारी में मुसलमान थे परन्तु अब हिन्दू हो गये हैं (वि॰) मल खाने वाला।
मलगा-(स॰पु॰) रजक, धोबी।
मलगजा-(हि॰पु॰) बेसन में लपेट कर तेल या घी में लपेटे हुए बैंगन के पतले टुकडे।
मलगिरि-(हि॰ पु॰) एक प्रकार का हलका कत्थई रँग।
मलघन-(हिं॰पु॰)एक प्रकार का कचनार
मलघ्न-(स॰ पु॰) सेमल का मुसरा (वि॰) मल नाशक।
मलघ्नी-(स॰स्त्री॰) नागदौना।
मलज-(स॰ वि॰) मल से उत्पन्न, (नपु॰) पीब।
मलझन-(हिं॰पु॰) एक प्रकार की लता।
मलट- (अ॰पु॰ "मैलेट") काठ का बना हुआ हथौड़ा।
मलत्व-(स॰नपु॰) मलता, मल का भाव या धर्म।
मलदूषित-(स॰ वि॰) मलिन, मैला।
मलद्वार-(स॰पु॰) शरीर की वे इन्द्रिया जिनमें से मल निकलते हैं, गुदा।
मलधात्री-(स॰स्त्री॰) बच्चों का मलमूत्र धोने वाली धाय।
मलन-(स॰नपु॰) पोतना, लगाना, तबू।
मलना-(हिं॰ क्रि॰) हाथ या अन्य वस्तु से किसी चीज़ को रगड़ना, ऐंठना, मरोड़ना, मालिश करना, दबाना, मसलना, मीजना, हाथसे बारबार दबाना, **हाथ मलना**-पछताना।
मलनी-(हि॰ स्त्री॰) कुम्हार का बरतन चिकनाने का एक औज़ार।
मलवा-(हि॰पु॰) कतवार, कूड़ा कर्कट, गिरी या गिराई हुई इमारत की ईंट, पत्थर, चूना आदि।
मलभुज-(स॰पु॰)मल खाने वाला जन्तु।
मलमल-(हिं॰स्त्री॰) बारीक सूत से बुना हुआ एक प्रकार का पतला कपड़ा।
मलमला-(हि॰ पुं॰) कुलफे का साग।
मलमलाना-(हिं॰ क्रि॰) बारबार स्पर्श करना, खोलना मू दना, बारबार आलिंगन करना, पछतावा करना।
मलमा-(हि॰ पुं॰) देखो मलवा।
मलमास-(स॰पु॰) अधिक मास जो प्रति तीसरे वर्ष होता है, पुरुषोत्तम मास।
मलय-(स॰पु॰) मलाबार प्रदेश, सफ़ेद चन्दन, छप्पय का एक भेद, नन्दनवन, गरुड़ के एक पुत्र का नाम, मलय देश का रहने वाला मनुष्य।
मलयगन्धिनी-(स॰ स्त्री॰) उमा की एक सखी का नाम।
मलयगिरि-(स॰ पु॰) मलयाचल पर्वत जो भारत के दक्षिण में है, मलयगिरि में उत्पन्न चन्दन, हिमालय पर्वत के पूर्व का भाग जहा आसाम है।
मलयज-(स॰ पु॰) चन्दन, राहु, (वि॰) वह जो मलयगिरि पर होता हो।
मलयागिरि-(स॰पु॰) देखो मलयगिरि।
मलयाचल-(स॰ पु॰) मलयपर्वत।
मलयानिल-(स॰ पुं॰) मलय पर्वत से आने वाली वायु, सुगन्धित वायु, वसन्त काल की हवा।
मलयाली-(हिं॰वि॰)मलाबार देश सबधी, मलाबार देश में उत्पन्न, (स्त्री॰)मलाबार देश की भाषा।
मलयुग-(स॰पु॰) कलियुग।
मलरुचि-(स॰ वि॰) पापमय चित्त का, पापी।
मलरोधक-(स॰ वि॰) कब्जियत करने वाला।
मलवा-(हि॰ पु॰) बरमा देश में होने वाला एक वृक्ष।
मलवाना-(हि॰ क्रि॰) मलने का काम दूसरे से कराना।
मलवेग-(स॰ पु॰) अतीसार रोग।
मलशुद्धि-(स॰स्त्री॰) पेट साफ करना।
मलसा-(हिं॰ पु॰) घी रखने का चमड़े का कुप्पा।
मलसी-(हि॰ स्त्री॰) मुसलमानों का खाना पकाने का मिट्टी का बरतन।
मलसूत-(अ॰ पु॰) वह यत्र जिससे भारी बोझ उठा कर नाव या गाड़ी पर लादा जाता है।
मलहम-(अ॰ पु॰) देखो मरहम।
मलहारक-(स॰वि॰) पाप हरने वाला।
मला-(सं॰ स्त्री॰) भुई आमला, आमाहल्दी, चमड़ा, कसकुट, बिच्छू का डक।

मलाई-(हिं०स्त्री०) दूध की साढी, सार, तत्त्व, रस, हलका बादामी रंग, मलने की क्रिया या भाव, मलने की मजदूरी।
मलाका-(सं०स्त्री०) कामिनी स्त्री, वेश्या।
मलाट-(हिं०पु०) एक प्रकार का खाकी रंग का बढ़िया मोटा कागज जो बंडल आदि के बांधने के काम में आता है।
मलान-(हिं०वि०) देखो म्लान।
मलानि-(हिं०स्त्री०) देखो म्लानि।
मलापह-(सं०वि०)मल को दूर करने वाला
मलामत-(अ० स्त्री०) लानत, दुतकार, डाट फटकार, किसी पदार्थ में का खराब अंश, गन्दगी।
मलामती-(फा०वि०) दुतकारने या फटकारने योग्य, घृणित, कुत्सित।
मलायन-(सं०नपुं०) मलद्वार, गुदा।
मलार-(हिं० पु०) एक राग जो बरसात में गाया जाता है, मलार गाना-खुश होकर कुछ कहना।
मलारी-(हिं० स्त्री०) वसन्त राग की एक रागिणी।
मलाल-(अं०पुं०) दुःख, उदासीनता।
मलाशय-(सं०पु०) मलस्थान, उदर।
मलाह-(हिं० पु०) देखो मल्लाह।
मलिंद-(हिं० पु०) देखो मलिंद, भौंरा।
मलिक-(अ०पु०) अधीश्वर, राजा।
मलिका-(अ०स्त्री०) पटरानी, अधीश्वरी।
मलिछ,मलिच्छ-(हिं०वि०)देखो म्लेच्छ।
मलित-(हिं० पुं०) सोनार की गहना साफ करने की कूची।
मलिन-(सं० नपुं०) मैली वस्तु, एक प्रकार के साधु जो मैला कुचैला वस्त्र पहनते हैं, दोष, पाप, मट्ठा, सोहागा, काला अगर, रंग की चमक या रंग का फीका होना, (वि०) मैला, मटमैला, धीमा, फीका, उदासीन।
मलिनता-(सं०स्त्री०) मलिन होने का भाव मैलापन।
मलिनत्व-(सं०नपुं०) देखो मलिनता।
मलिनमुख-(सं०पुं०) अग्नि, प्रेत, बैल की पूँछ (वि०) क्रूर, जिसका मुख उदास हो।
मलिना-(सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री, लाल खाँड़।
मलिनाई-(हिं०स्त्री०) मलिनता, मैलापन।
मलिनाना-(हिं०क्रि०) मैला होना।
मलिनाम्बु-(सं०नपुं०) गदला पानी।
मलिनीकरण-(सं०नपुं०) निर्मल वस्तु को मैला करना।
मलिया-(हिं०स्त्री०) छोटे मुख का मिट्टी का पात्र, चक्कर, घेरा।
मलियामेट-(हिं० पु०) सत्यानाश, तहसनहस।
मलिस-(हिं० स्त्री०) सोनारों का छेनी की तरह का एक औज़ार।
मलीदा-(फा० पु०) एक प्रकार का मुलायम ऊनी वस्त्र,चूरमा।
मलीन-(हिं०वि०)मैला कुचैला, उदास।
मलीनता-(हिं०स्त्री०) देखो मलिनता।
मलीमस-(सं०नपुं०) पाप, दोष, (वि०) पापयुक्त, मैला, मलिन।
मलुक-(हिं० स्त्री०) उदर, पेट, एक प्रकार का पशु।
मलू-(हिं०स्त्री०) मलघन नामक वृक्ष।
मलूक-(सं०पु०) एक प्रकार का कीड़ा, एक प्रकार का पक्षी, (हिं० वि०) मनोहर, सुन्दर।
मलेछ,मलेच्छ-(हिं०वि०) देखो म्लेच्छ।
मलेरिया-(अ०पु०) वर्षा ऋतु में फैलने वाला एक प्रकार का ज्वर जो मच्छड़ों के काटने से उत्पन्न होता है।
मलोला-(अ० पु०) मानसिक व्यथा या कष्ट, दुःख, मानसिक व्याकुलता उत्पन्न करने की प्रेरणा, अरमान, मलोला आना-पश्चात्ताप होना, मलोले खाना-मानसिक चिन्ता होना।
मल्ल-(सं०पु०) एक प्राचीन जाति का नाम, इस जाति के लोग कुश्ती लड़ने में बड़े कुशल होते थे, इसी कारण से कुश्ती को'मल्ल युद्ध'कहते हैं,पहलवान, पात्र, बरतन,दीपक,एक वर्णसंकर जाति।
मल्लक-(सं० पु०) दन्त, दाँत।
मल्लक्रीडा-(सं०स्त्री०) मल्लयुद्ध,कुश्ती।
मल्लखम्भ-(हिं० पु०) देखो मलखम।
मल्लतरु-(सं० पु०) पियाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड़।
मल्लताल-(सं० पु०) संगीत में एक ताल का नाम।
मल्लभू-मल्लभूमि-(सं०स्त्री०) कुश्ती लड़ने का स्थान, अखाड़ा।
मल्लयुद्ध-(सं०नपुं०) मल्लों का आपस में युद्ध, कुश्ती।
मल्लवाह-(सं० पु०) लाल रंग की एक घास।
मल्लविद्या-(सं० स्त्री०) कुश्ती लड़ने की विद्या।
मल्लशाला-(सं० स्त्री०) मल्लभूमि, अखाड़ा।
मल्ला-(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री, चमेली, (हिं०पु०) जुलाहों का एक औजार।
मल्लार-(सं० पु०) संगीत शास्त्र के अनुसार एक राग का नाम।
मल्लारी-(सं०स्त्री०) वसन्त राग की एक रागिणी।
मल्लासुर-(सं०पु०) एक असुर जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
मल्लाह-(अ०पु०) एक अन्त्यज जाति, इस जाति के लोग नाव चलाते हैं और मछली मार कर अपना निर्वाह करते हैं, धीवर, माझी।
मल्लाही-(फा० वि०) मल्लाह सम्बन्धी, मल्लाह का काम या पद।
मल्लिक-(सं०पु०) जमींदारों की एक उपाधि, माघ का महीना, जुलाहों की ढरकी।
मल्लिका-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का बेला, जिसको मोतिया भी कहते हैं, एक प्रकार का मिट्टी का बरतन, आठ अक्षरों का एक वर्णिक छन्द, सुमुखी वृत्ति का एक नाम, यूथिका, जूही।
मल्लिकाक्ष-(सं०पु०)एक प्रकारका हंस।
मल्लिकामोद-(सं०पु०) संगीत में एक ताल का नाम।
मल्लिगन्धि-(सं०नपुं०) अगुरु, अगर।
मल्लिनी-(सं०स्त्री०) माधवी लता।

मल्ली-(स० स्त्री०) सुन्दरी वृत्ति का एक नाम।

मल्लीकर-(स० त्रि०) चोरी करने वाला, चोर।

मल्लु-(स०पु०) भालू, बन्दर।

मल्लू-(हि०पु०) बन्दर।

मल्व-(स०पु०) शत्रु, दुश्मन।

मल्हनी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की नाव जिसका अगला भाग अधिक चौड़ा होता है।

मल्हराना,मल्हाना-(हि०क्रि०) चुमकारना, पुचकारना।

मल्हार-(हि०पु०) देखो मल्लार।

मवक्किल-(अ० पु०) मुकदमे में अपनी ओर से न्यायालय में काम करने के लिये वकील या प्रतिनिधि नियुक्त करने वाला पुरुष, किसीको अपना काम सपुर्द करने वाला, असामी।

मुवर्रिखा-(अ०वि०)लिखित,लिखा हुआ

मवाजिब-(अ०पु०) नियमित मात्रा में नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ।

मवाज़ी-(अ०वि०)अनुमान किया हुआ।

मवाद-(अ०पु०)पूय, पीब, दुर्ग, किला।

मवास-(हि० पु०) आश्रय, शरण, रक्षा स्थान,दुर्ग, किला,मवास करना-रहना।

मवासी-(हि०स्त्री०) छोटा किला,गढ़ी, (पु०) गढ़पति, किलेदार, प्रधान पुरुष, मुखिया।

मवेशी-(अ० पु०) चौपाया, पशु, मवेशीख़ाना-पशुओं को रखने का स्थान।

मश-(स०पु०) क्रोध, गुस्सा मच्छड़।

मशक-(स०पु०) मच्छड़, मसा नाम का चर्म रोग (फा०स्त्री०) चमड़े का बना हुआ थैला जिसमें पानी भरकर लेजातेहैं।

मशहरी-(सं०स्त्री०) मसहरी।

मशक्कत-(अ० स्त्री०) मेहनत, परिश्रम, वह परिश्रम जो कैदियों को जेलखाने में करना पड़ता है।

मशगूल-(अ० वि०) प्रवृत्त, काम में लगा हुआ।

मशरू-(अ०पु०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

मशविरा-(अ०वि०) परामर्श, सलाह।

मशहरी-(स०स्त्री०) मशकहरी, मसहरी।

मशहूर-(अ० वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।

मशान-(हि०पु०) देखो मसान, मरघट।

मशाल-(अ०पु०) एक प्रकार की मोटी बत्ती जिसको पकड़ने के लिये काठ का दस्ता लगा हो और जलते रहने के लिये इसके मुह पर बार बार तेल की धार डाली जाती है।

मशालची-(फा०पु०) हाथ में मशाल लेकर रोशनी दिखलाने वाला।

मशीन-(अ० स्त्री०) कोई यन्त्र जिसकी सहायता से कोई चीज़ बनाई जाती है।

मशीर-(अ० पु०) सलाह देने वाला।

मश्क़-(अ०पु०) किसी काम को अच्छी तरह करने का अभ्यास।

मश्शाक़-(अ० वि०) काम करने में जिसको अच्छा अभ्यास हो, अभ्यस्त।

मष-(हि०पु०) देखो मख।

मषि-(स०स्त्री०) काजल, सुरमा, स्याही।

मष्ट-(हि० वि०) जो भूल गया हो, उदासीन, मौन, चुप रहने वाला, मष्ट रहना-मौन धारण करना।

मस-(हिं०स्त्री०) देखो मसि, रोशनाई, मोछ निकलने के पहिले ओंठ पर का कालापन,मस भींजना-मोछ निकलना आरंभ होना,

मसक-(स०पु०) देखो मशक (हिं०पु०) मसा, मच्छड़, मसकने की क्रिया।

मसकत-(हि०स्त्री०) देखो मशक्कत।

मसकना-(हिं० क्रि०) खिंचाव या दबाव पड़कर कपड़े का इस प्रकार फटना कि उसके बुनावट के सूत टूट कर अलग हो जावें, किसी चीज में दरार पड़ जाना ज़ोर से दबाना या मलना, चिन्तित होना, दुःख के कारण मन धँसना।

मसकरा-(हि०पु०) देखो मसखरा।

मसक़ला-(अ० पु०) सिकलीगरों का एक औज़ार जिसको रगड़ने से धातु की बनी चीज़ों पर चमक आ जाती है, सिकली करने का काम।

मसकली-(हि०स्त्री०) देखो मसकला।

मसका-(फा० पु०) नवनीत, मक्खन, ताज़ा घी, दही का पानी, बुताए हुए चूने की बुकनी, मिस्सी।

मसकीन-(हिं० वि०) दरिद्र, गरीब, सुशील, भोला भाला।

मसखरा-(अ०पु०) बहुत हँसी दिल्लगी करने वाला, ठट्ठेबाज,हँसोड़,विदूषक।

मसखरापन-(अ०पु०)हँसीठट्ठा,दिल्लगी।

मसखरी-(फा०स्त्री०) हँसी, दिल्लगी।

मसखवा-(हि० पु०) मासाहारी, मास खाने वाला।

मसजिद-(फा० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर मुसलमान लोग इकट्ठा होकर नमाज़ पढ़ते हैं और ईश्वर की वन्दना करते हैं।

मसड़ी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की चिड़िया।

मसनद-(हि०स्त्री०) देखो मसनद।

मसन-(हि०पु०) ऊन बटने का टेकुआ।

मसनद-(अ०स्त्री०) बड़ी तकिया, गावतकिया, अमीरों के बैठने की गद्दी, मसनद नशीन-मसनद पर बैठने वाला अमीर।

मसना-(हि०क्रि०) मसलना, गूँधना।

मसयारा-(हि०पु०) मशालची।

मसरफ़-(अ० पु०) व्यवहार या काम में आना।

मसरूक़ा-(अ०वि०) चुराया हुआ।

मसरूफ़-(अ०वि०) काम में लगा हुआ, काम करता हुआ।

मसल-(अ० स्त्री०) लोकोक्ति, कहावत।

मसलन्-(अ० वि०) उदाहरण के रूप में, यथा।

मसलना-(हि०क्रि०) हाथ से दबाते हुए रगड़ना, मलना, आटा गूधना, जोर से दबाना।

मसलहत-(अ० स्त्री०) ऐसी छिपी हुई भलाई जो एकाएक न जानी जा सके।

मसला-(अ० पु०) लोकोक्ति, कहावत।

मसलिन्-(अ० स्त्री०) बारीक मुलायम -

सूती वस्त्र ।
मसवई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बबूल की गोंद ।
मसवारा-(हिं०पु०) प्रसूता स्त्री का प्रसव के एक महीने का बाद का स्नान ।
मसवासी-(हिं०पु०) वह साधू वैरागी जो एक महीने से अधिक एक स्थान में न रहे वह स्त्री जो एक महीने से अधिक किसी पुरुप के पास न रहे, गणिका, वेश्या।
मसविदा-(अ० पु०) किसी लेख का खाका, मसौदा, युक्ति, उपाय ।
मसहरी-(हिं०स्त्री०) वह जालीदार कपडे का बना हुआ परदा जो मच्छड़ों से बचने के लिये पलग के चारों ओर लटकाया जाता है, ऐसा पलग जिसमें ऐसा जालीदार परदा लटकाने के लिये ऊचे छड़ लगे हों ।
मसहार-(हिं० पु०) मासाहारी, मास खाने वाला ।
मसा-(हिं०पु०) शरीर के किसी भाग में काले रग का उभड़ा हुआ मास का छोटा दाना, बवासीर रोग में गुदा के भीतर या मुह पर का मास का दाना, (हिं० पु०) मच्छड़, मस ।
मसान-(हिं०पु०) मुरदों को जलाने का स्थान, मरघट, रणभूमि, भूत प्रेत पिशाच आदि, मसान जगाना-तन्त्रोक्त विधि से मरघट में बैठकर मत्र सिद्ध करना ।
मसाना-(अ० पु०) मूत्राशय, पेट में की वह थैली जिसमें पेशाव इकट्ठा होता है, मसान ।
मसानी-(हिं०स्त्री०) मरघट में रहने वाली डाकिनी पिशाचिनी आदि ।
मसार-(स० पु०) नीलमणि, नीलम (हिं०वि०) स्निग्ध, गीला ।
मसाल, मसालची-(हिं०) देखो मशाल, मशालची ।
मसाला-(हिं० पु०) किसी पदार्थ को तैयार करने के लिये आवश्यक सामग्री, अतिशबाजी, तेल, साधन, औषधियों का अथवा रसायनिक द्रव्यों का समूह ।
मसाली-(अ०स्त्री०) रस्सी, डोरी ।
मसालेदार-(अ० वि०) जिसमें किसी प्रकार का मसाला मिला हो ।
मसिंदर-(अ०पु०) जहाज का वह बड़ा रस्सा जिसमें लगर बँधा रहता है ।
मसि-(स० पु०) लिखने की स्याही, रोशनाई, काजल, कालिख ।
मसिक-(स०पु०) सर्प की बिल ।
मसिदानी, मसिधानी-(हिं०स्त्री०) दावात ।
मसिपात्र-(स०पु०) देखो मसिदानी, दावात
मसिबन्दा-(हिं०पु०) रोशनाई का बूद ।
मसिमुख-(स०वि०) जिसके मुह में स्याही लगी हो, पापी, कुकर्मी ।
मसियाना-(हिं०क्रि०) पूरा हो जाना ।
मसियर-(हिं०पु०) मशाल ।
मसियारा-(हिं०पु०) मशालची ।
मसिबिन्दु-(स० पु०) काजल का बुदा जो नजर से बचने के लिये बच्चों के माथे में लगाया जाता है, दिठौना ।
मसिल -(हिं०पु०) देखो मैनसिल ।
मसी-(स० स्त्री०) काली स्याही या रोशनाई ।
मसीका-(हिं०पु०) एक माशे का मान ।
मसीत, मसीद-(हिं०पु०) मसजिद ।
मसीना-(स०स्त्री०) तीसी ।
मसीह-(अं० पु०) ईसाइयों के धर्म गुरु का नाम ।
मसुर-स०पु०) मसूर, मसुरी ।
मसू-(हिं०स्त्री०) कठिनता, कठिनाई ।
मसूड़ा-(हिं०पु०) मुख के भीतर का वह मास जिसमें से दाँत निकले रहते हैं ।
मसूर-(स०पु०) एक प्रकार का चिपटा अन्न जिसकी दाल गुलाबी रग की होती है ।
मसूरा-(स०स्त्री०) वेश्या, रडी, मसूर की दाल, मसूर की बनी हुई बरी, देखो मसूढ़ा ।
मसूरिका-(स० स्त्री०) कुटनी, शीतला रोग, चेचक ।
मसूरी-(स०स्त्री०) मसूरिका, चेचक ।
मसूल-(हिं०पु०) देखो महसूल ।
मसूला-(हिं०पु०) एक प्रकार की पतली लम्बी नाव ।
मसूस, मसूसन -(हिं० स्त्री०) मन मसूसने का भाव, आन्तरिक व्यथा, मन में कष्ट होना ।
मसूसना-(हिं०क्रि०) निचोड़ना, ऐंठना, बल देना, चित्त के किसी उद्वेग को रोकना, मनही मन कुढना ।
मसृण-(स०क्रि०) चिकना और मुलायम।
मसेवरा-(हिं०वि०) मास का बना हुआ खाने का पदार्थ ।
मसोढा-(हिं०पु०) सोना चादी आदि गलाने की घरिया ।
मसोसना-(हिं०क्रि०) देखो मसूसना ।
मसौदा-(अ० पु०) पहिली बार लिखा हुआ लेख जो दोहराने और काट छाट करने के बाद साफ किया जाता है, मसविदा, युक्ति, उपाय, मसौदा बाँधना-किसी काम करने के लिये युक्ति निकालना, मसौदेबाज-अच्छी युक्ति सोचने वाला, धूर्त, चालाक ।
मस्करा-(हिं० पु०) देखो मसखरा ।
मस्करी-(हिं०स्त्री०) देखो मसखरी ।
मस्खरा-(हिं० पु०) देखो मसखरा ।
मस्जिद-(हिं०स्त्री०) देखो मसजिद ।
मस्त-(फा० वि०) जो नशे में मत्त हो, मतवाला, सर्वदा निश्चिन्त और प्रसन्न रहने वाला, मदपूर्ण, अभिमानी, घमडी, यौवन के मद में भरा हुआ, आनदित, अति प्रसन्न ।
मस्तक-(स० पु०) मुण्ड, शिर, सिर ।
मस्तगी-(अं०स्त्री०) एक प्रकार की गोद जो एक प्रकार के सदाबहार वृक्ष के तनो को पाछ कर निकाली जाती है ।
मस्तरी-(हिं०स्त्री०) धातु गलाने की भट्ठी।
मस्ताना-(फा०वि०) मस्तो की तरह का, मस्त, (क्रि०) मस्ती पर आना, मस्त होना या करना ।
मस्तिष्क-(सं० नपु०) मस्तक के भीतर का गूदा, भेजा, मग्ज़, दिमाग ।
मस्ती-(फा०स्त्री०) मस्त होने की क्रिया या भाव, मत्तता, मतवालापन, स्त्री प्रसङ्ग की तीव्र अभिलाषा, वह स्राव

जो कुछ विशिष्ट वृक्षों या पत्थरों में से विशिष्ट समय पर होता है, वह स्राव जो मस्त होने पर विशिष्ट पशुओं के आख, कान, मस्तक आदि के पास से निकलता है ।

मस्तूरी–(हि०स्त्री०)धातु गलाने की भट्ठी।

मस्तूल–(पुर्त०पु०) बड़ी नाव या जहाज़ के बीच में खड़ा किया हुआ डण्डा जिसमें पाल बाँधी जाती है ।

मस्सा–(हि०पुं०) देखो मसा ।

महँ–(हिं० अव्य०) में ।

महँई–(हिं० वि०) देखो महान्, भारी, (अव्य०) देखे महँ ।

महँक, महँकना–देखो महक, महकना।

महँगा–(हि० वि०) अधिक मूल्य पर विकने वाला, जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो ।

महँगाई–(हि० स्त्री०) देखो मँहगी ।

महँगी–(हि०स्त्री०) महँगा होने का भाव, महँगापन, महँगा होने की अवस्था, अकाल, दुर्भिक्ष ।

महँड़ा–(हिं०स्त्री०) भूने हुए चने ।

महन्त–(हिं० पु०) किसी मठ का अधिष्ठाता, साधुओं का मुखिया (वि०) श्रेष्ठ, प्रधान,।

महन्ती–(हिं० स्त्री०) महन्त का भाव या पद ।

महँदी–(हिं०स्त्री०) देखे मेंहदी ।

मह–(हि०अव्य०) देखो महँ, (स० पु०) उत्सव, यज्ञ, भैंस (वि०) महत्, बड़ा, अधिक ।

महक–(हिं०स्त्री०)गन्ध, वास,बू, **महकदार**–जिसमें महक हो, महकने वाला ।

महकना–(हिं० क्रि०) गन्ध निकलना, वास होना ।

महकमा–(अ०पु०) किसी विशिष्ट कार्य के लिये अलग किया हुआ विभाग, सरिश्ता ।

महकान–(हि०स्त्री०) देखो महक ।

महकाली–(हिं०स्त्री०) पार्वती ।

महकीला–(हि०वि०)सुगन्धित, महकदार।

महचक्र–(हिं० पुं०) सूर्य ।

महज़–(अ० वि०) विशुद्ध, खालिस, केवल, सिर्फ़, मात्र ।

महजित–(हिं० स्त्री०) देखो मसजिद ।

महण–(हिं० पु०) समुद्र ।

महत्–(स०वि०) बृहत्, विपुल, विस्तीर्ण, सर्वश्रेष्ठ (पु०) दर्शन के अनुसार प्रकृति का पहला विकार जिससे जगत् की उत्पत्ति हुई है, राज्य, ब्रह्म, जल ।

महत–(हिं० पु०) देखो महत्व ।

महतवान–(हि०पु०) करगह के पीछे की ओर लगी हुई खूटी ।

महता–(हिं० पु०) सरदार, गाव का मुखिया, लेखक, मुंशी (स्त्री०) गर्व, अभिमान ।

महताब–फ़ा० स्त्री०) चादनी, चन्द्रिका, एक प्रकार की आतिशबाज़ी, जहाज पर की सकेत की रौशनी (पु०) चन्द्रमा, एक प्रकार का जगली कौवा ।

महताबी–(फ़ा० स्त्री०) मोमबत्ती के आकार की बनी हुई एक प्रकार की आतिशबाज़ी, एक प्रकार का बड़ा नींबू, चकोतरा, किसी महल के आगे या बगीचे के बीच में बना हुआ बड़ा चबूतरा ।

महतारी–(हिं० पु०) माता, मा ।

महती–(स० स्त्री०) एक प्रकार की बीन, नारद की वीणा का नाम, महत्त्व, महिमा, योनि का एक रोग, वैश्यों की एक जाति , **महती द्वादशी**–भाद्रपद शुक्ला द्वादशी यदि उस दिन श्रवण नक्षत्र पड़ता हो ।

महतु–(हि० पुं०) देखो महत्व ।

महतो–(हिं० स्त्री०) गयावाल पडों की एक उपाधि, सरदार, चौधरी ।

महत्कथ–(स० वि०) चापलूस ।

महत्तत्व–(स०नपु) साख्य के अनुसार चौबीस तत्वों में से दूसरा तत्व, बुद्धि तत्व, जीवात्मा ।

महत्तम–(स०वि०) सबसे बड़ा या श्रेष्ठ ।

महत्तर–(स० वि०) दो पदार्थों में बड़ा या श्रेष्ठ ।

महत्व–(स० नपु०) श्रेष्ठता, उत्तमता, अधिकता, बड़प्पन ।

महदाशा–(स०स्त्री०) ऊंची आकाक्षा ।

महदूद–(अ०वि०) सीमाबद्ध, जिसकी हद बँधी हो ।

महद्गत–(स०वि०) जिसने श्रेष्ठ पुरुष का आश्रय लिया हो ।

महद्भय–(सं०नपु०)अधिक भय,बड़ी डर।

महन–(हिं० पुं०) देखो मथन ।

महना–(हिं०क्रि०) दही दूध आदि को मथना, (पु०) मथानी, रई ।

महनिया–(हि० पुं०) मथने वाला ।

महनु–(हिं० पु०) नाश करने वाला, मथन करने वाला ।

महफ़िल–(अ०स्त्री०) नाच गाना होने का स्थान, सभा, मजलिस ।

महफ़ूज़–(अ० वि०) सुरक्षित, जिसकी हिफाज़त की गई हो ।

महबूब–(अ०पुं०)जिससे प्रेम किया जावे, जिससे दिल लगाया जाय ।

महबूबा–(अ०स्त्री०) प्रेमिका, माशूका ।

महमद–देखो महम्मद ।

महमदी–(हिं०वि०) मुहम्मद के मत का अनुयायी, मुसलमान ।

महमंत–(हिं०वि०) मदोन्मत्त, मस्त ।

महमह–(हिं०क्रि०वि०) सुगन्ध के साथ ।

महमहण–(हिं०पु०) विष्णु ।

महमहा–(हि०वि०) सुगन्धित,खुशबूदार

महमहाना–(हिं०क्रि०)सुगन्ध देना,महँकना

महमा–(हिं०स्त्री०) देखो महिमा ।

महमानी–(फा०स्त्री०) देखो मेहमानी ।

महमाय–(हि०स्त्री०) पार्वती ।

महमूदी–(फा०स्त्री०) सल्लम की तरह की मोटा देशी कपड़ा, एक प्रकार का पुराने समय का छोटा सिक्का ।

महमेज़–(फा० स्त्री०) जूते के पीछे की ओर जड़ने की एक प्रकार की लोहे की नाल जिससे सवार घोडे को एँड़ लगाता है ।

महम्मद–देखो मुहम्मद ।

महर–(हिं० पु०) एक आदर सूचक शब्द जो व्रज में बोला जाता है, इसका व्यवहार विशेष करके ज़मीदारों और

वैश्यों के लिये किया जाता है, एक प्रकार की चिड़िया, (वि०) सुगन्धित, देखो महरा।
महरवान-(हिं०पु०) देखो मेहरवान।
महरम-(अ०पु०) मुसलमानी धर्म के अनुसार किसी स्त्री का सवधी जिससे उसका विवाह न हो सकता हो, रहस्य का जानने वाला, (स्त्री०) अगिया, अगिया की कटोरी।
महरा-(हिं० पु०) कहार, सरदार, श्वसुर के लिये आदर सूचक शब्द, (वि०) श्रेष्ठ, वड़ा।
महराई-(हिं०स्त्री०) श्रेष्ठता, प्रधानता।
महराज-(हि० पु०) देखो महाराज।
महराजा-(हि०पु०) देखो महाराज।
महराना-(हिं० पु०) महरों के रहने का स्थान।
महराव-(हि० स्त्री०) देखो मेहराव।
महरि-(हिं० स्त्री०) व्रज मे प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिये व्यवहार किया जाने का आदर सूचक शब्द, घर की मालकिन, एक प्रकार का पक्षी।
महरी-(हि०स्त्री०)ग्वालिन नामक चिड़िया।
महरू-(हिं० पु०) चड्डू पीने की नली, एक प्रकार का वृक्ष।
महरूम-(अ० वि०) वचित, जिसको प्राप्त न हो।
महरेटा-(हिं०पु०) श्रीकृष्ण,महर का वेटा।
महरेटी-(हि०स्त्री०,राधिका महरकी लड़की
महर्घता-(सं० स्त्री०) मँहगा होने का भाव, मँहगी।
महर्लोक-(स०पुं०) पुराण के अनुसार चौदह लोकों में से एक लोक।
महर्षभ-(स०पु०) वड़ा साड़ (वि०) अति श्रेष्ठ।
महर्षि-(स०पु०)अति श्रेष्ठ ऋषि,ऋषीश्वर, सगीत मे एक राग का नाम।
महल-(अ० पु०) प्रासाद, वहुत वड़ा और सुन्दर मकान जिसमें राजा या रईस रहते हैं, अन्तःपुर, रनिवास, अवसर, मौका, महलसरा-अन्तःपुर, निवास, जनानखाना।

महल्ल-(स०पु०) वृद्ध मनुष्य, खोजा।
महल्लक-(स०पु०) अन्तःपुर का रक्षक।
महल्ला-(अ० पु०) नगर का एक विभाग जिसमें वहुत से घर होते हैं।
महस-(स० नपु०) यज्ञ, आनन्द, जल (वि०) पूज्यमान, वड़ा, महत्।
महसिल-(अ० पु०) तहसील वसूल करने वाला।
महसूल-(अ० पु०) वह धन जो कोई राजा का अधिकारी किसी विशेष कार्य के लिये जनता से ले, किराया, भाड़ा, लगान, मालगुजारी।
महाँ-(हिं०अव्य०) देखो महँ।
महा-(स० वि०) अत्यन्त, वहुत, अधिक, सर्वश्रेष्ठ, सवसे वढ़कर, वहुत वड़ा, भारी (हिं०पु०) मठा, छाछ।
महा अरभ-(हि०पु०) वहुत शोर गुल।
महाई-(हि० स्त्री०) मथने का काम, मथने का भाव, मथने की मजदूरी।
महाउत-(हि०पु०) देखो महावत।
महाउर-(हिं०स्त्री०) देखो महावर।
महाकच्छ-(स०पु०) समुद्र,वरुण,पर्वत
महाकपाल-(स० पु०) शिव के एक अनुचर का नाम।
महाकपोल-(स० पुं०) शिव का एक अनुचर।
महाकम्वु-(स० पु०) शिव, महादेव।
महाकर-(सं०पु०) लवा हाथ, अधिक लगान, (वि०)वड़े हाथ वाला,महा रश्मि
महाकरुणा-(स० वि०) अति दयालु।
महाकर्ण-(सं० पु०) शिव, महादेव (वि०) जिसके वड़े वड़े कान हों।
महाकर्णा-(स० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
महाकल्प-(स० पु०) शिव, महादेव, उतना काल जितने में एक व्रह्मा की आयुष्य पूरी होती है।
महाकान्त-(स० वि०) वहुत सुन्दर।
महाकान्ता-(स० स्त्री०) पृथ्वी।
महाकाय-(स० पु०) शिव का द्वारपाल, नन्दी, हाथी, वड़ा शरीर (वि०) वड़े शरीर वाला।

महा कारण-(सं०पु०)सव कर्मोंका कारण, परमेश्वर।
महाकाल-(स० पु०) शिव, महादेव।
महाकाली-(स० स्त्री०) महाकाल की पत्नी, दुर्गा की एक मूर्ति का नाम, शक्ति की एक अनुचरी।
महाकाव्य-(स० नपु०) सर्गबद्ध वह वड़ा काव्य जिसमें आठ से अधिक सर्ग हों, जिसमें शृगार, वीर अथवा शान्त रस प्रधान हों तथा हास्य करुण, वीभत्स आदि रसों का अग भूत से वर्णन हो तथा इसमें ऐतिहासिक घटना अथवा किसी महात्मा का चरित्र तथा सामाजिक कृत्यो का और प्राकृतिक सौन्दर्य और ऋतुओं का वर्णन हो।
महाकुमार-(स०पु०) युवराज,शाहजादा।
महाकृच्छ्र-(स० पु०)विष्णु का एक नाम
महाकेतु, महाकेश-(स०पु०)शिव,महादेव
महाक्रतु-(स० पु०) राजसूय, अश्वमेध आदि वड़ा यज्ञ।
महाक्ष-(स०पु०) विष्णु, महादेव।
महाखर्व-(स० पु०) सौ खर्व की सख्या
महाखात-(स० नपु०) लवा चौड़ा गड्ढा
महा ख्यात-(स०वि०) अति प्रसिद्ध।
महागद-(स०पु०) कोई वड़ा रोग।
महागन्ध-(स० पु०) वोल, हरिचन्दन (वि०) खुशवूदार।
महागर्भ-(स० पु०) शिव, एक दानव का नाम।
महागव-(सं० पु०) गवय, गाय के समान एक पशु जिसके गले में झालर न हो।
महागुनी-(हि० पु०) देखो महोगनी।
महागौरी-(स०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम
महाग्रीव-(स० पु०) ऊट, शिव, महादेव।
महाघोर-(स० वि०) अति भयानक।
महाचक्र-(स०नपु०) वड़ा चक्र, भवचक्र
महाचण्ड-(स० पु०) शिव के एक अनुचर का नाम।
महाचपला-(स० स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।

महाचित्ता-(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम ।

महाजन-(स० पु०) साधु, श्रेष्ठ पुरुष, धनी, दौलतमन्द, रुपये पैसे का लेन देन करने वाला, भद्र पुरुष, भला आदमी, बनिया, कोठीवाल ।

महाजनी-(हिं० स्त्री०) रुपये के लेन देन का व्यवसाय, हुंडी पुरजे का काम, महाजनों के यहां बहीखाता लिखने की एक लिपि जिसमें मात्रायें आदि नहीं लगाये जाते, मुड़िया अक्षर ।

महाजम्भ-(स० पु०) शिव के एक अनुचर का नाम ।

महाजल-(स० पु०) समुद्र ।

महाजाति-(स० स्त्री०) श्रेष्ठ वर्ण ।

महाजानु-(स० पु०) शिव का एक अनुचर ।

महाजिह्व-(सं० पु०) एक असुर का नाम, शिव ।

महाज्ञान-(स०नपु०) परम ज्ञान ।

महाज्वाला-(स०स्त्री०) महती ज्वाला, जिस अग्नि में बड़ी ज्वाला हो ।

महाढ्य-(स० वि०) अति धनवान्, बड़ा धनी ।

महातङ्क-(स०पु०) बड़ी व्याधि ।

महातत्व-(सं० नपु०) ज्ञान तत्व ।

महातत्वा-(स० स्त्री०) दुर्गा की एक अनुचरी ।

महातपन-(स०पुं०) एक नरक का नाम

महातप-(हिं० पु०) कठिन तपस्या (पु०) विष्णु ।

महातम-(हि०पु०) देखो माहात्म्य ।

महातल-(स० नपु०) चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का भुवन या तल।

महातिक्त-(सं० पु०) बकाइन का वृक्ष, चिरायता ।

महातीक्ष्ण-(स० वि०) बहुत तीखा या कड़वा ।

महातेजस्-(स० पु०) पारा (पुं०) अग्नि, शिव, कार्तिकेय (वि०) बड़ा प्रतापवान् ।

महात्मा-(हि०पु०) वह जिसकी आत्मा या आशय बहुत ऊंचा हो, महानुभाव, परमात्मा, शिव, महादेव, बहुत बड़ा साधु, सन्यासी या विरक्त ।

महात्यय-(स० पु०) घोर विपत्ति, बड़ा नाश ।

महात्यागी-(हि० वि०) जिसने ससार से माया मोह आदि बिलकुल छोड़ दिया है

महादण्ड-(स० पु०) यम के हाथ का बड़ा दण्ड,महा दण्डधारी-यमराज

महादन्त-(हि० वि०) हाथी का दाँत, शिव, महादेव ।

महादान-(स०नपु०) वे बड़े दान जिनके करने में अनन्त स्वर्ग की प्राप्ति होती है, प्रधान महादान-सोना, सोने का घोड़ा, तिल, गायें, दासी, रथ, पृथ्वी, घर, कन्या और कपिला गाय हैं ।

महादूत-(स० पु०) यमदूत ।

महादेव-(स० पु०) शिव, अष्टमूर्ति के अन्तर्गत यह सोम मूर्ति है तथा ब्रह्म स्वरूप हैं ।

महादेवी-(स०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम, राजा की प्रधान रानी या पटरानी ।

महाद्युति-(सं०स्त्री०) चमकीली रोशनी ।

महाद्रुम-(स०पु०) तालवृक्ष,ताड़ का पेड़

महाद्रोण-(स० पु०) शिव, महादेव, सुमेरु पर्वत ।

महाद्रोणा-(स०स्त्री०) द्रोणपुष्पी ।

महाद्वीप-(स०पु०) पृथ्वी का वह बड़ा भाग जो चारो ओर प्राकृतिक सीमाओं से घिरा हो, जिसमें अनेक देश हों और अनेक जातिया जिसमें वास करती हों ।

महाधन-(स०वि०) बहुमूल्य,बहुत धनी, (पु०)सुवर्ण सोना,खेती,सुगन्ध, धूप ।

महाध्वनि- (स०पु०)बडे जोर का शब्द

महान्-(स० वि०) विशाल, बहुत बड़ा ।

महानग्न-(स० वि०) जिसके शरीर पर वस्त्र न हो ।

महानट-(स०पु०) शिव, महादेव ।

महानन्द-(सं०पु०) मुक्ति, मोक्ष, अति प्रसन्नता, मगध देश के एक प्रतापी राजा का नाम, दस अगुल की बासुरी ।

महानन्दा-(स० स्त्री०) सुरा, शराब, माघ शुक्ला नवमी ।

महानरक-(स० नपु०) अत्यन्त कष्ट देने वाला नरक ।

महानल-(सं०नपु०) भयकर आग ।

महानवमी-(स० स्त्री०) आश्विन शुक्ला नवमी ।

महानाटक-(स० नपु०) दस अक का नाटक ।

महानाड़ी-(स० स्त्री०) मोटी नस ।

महानाद-(स० पु०) गज,हाथी,सिंह,शेर, ऊट, शख, बड़ा ढोल, शिव, महादेव, बरसने वाला बादल, बड़ा शब्द ।

महानाभ-(स० पु०) हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार का मन्त्र जिससे शत्रु के फेंके हुए शस्त्र व्यर्थ हो जाते हैं ।

महानारायण-(स० पु०) विष्णु ।

महानास-(स० पु०) शिव, महादेव (वि०) बड़ी नाक वाला ।

महानिद्रा-(स० स्त्री०) मृत्यु,मरण,मौत ।

महा निधान-(स०पु०) बुभुक्षित धातु भेदी पारा जिसको "बावन तोला पाव रत्ती" भी कहते हैं ।

महानिम्ब-(स० पु०) बकायन का वृक्ष ।

महानियम-(स०पु०) विष्णु ।

महानिरय-(स०पु०)एक नरक का नाम

महानिर्वाण-(स० नपु०) परि निर्वाण जिसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्ध गण माने जाते हैं ।

महानिशा (स० स्त्री०) रात्रि का मध्य भाग, आधी रात, प्रलय की रात्रि ।

महानील-(स०पु०) भृङ्गराज पक्षी, एक प्रकार का नीलम, एक प्रकार का सर्प, सबसे बड़ी सख्या ।

महानुभाव-(स० वि०) महाशय, कोई बड़ा आदरणीय व्यक्ति, बड़ा आदमी ।

महानुभावता-(स० स्त्री०) महानुभाव होने का भाव, बड़प्पन ।

महानुराग-(स० त्रि०) ऐकान्तिक प्रेम ।

महानेत्र-(स० पु०) शिव, महादेव ।

महानेमि-(सं० पु०) काक, कौवा ।

महान्तक-(स०पु०) मृत्यु,महादेव,शिव ।
महान्वय-(स० वि०) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो ।
महापक्षी-(स०स्त्री०) उल्लू, गरुड़ ।
महापत्र-(स०पु०) सागवान का वृक्ष ।
महापथ-(स० पु०) प्रधान पथ, राजपथ, बड़ा लंबा चौड़ा रास्ता, मृत्युपथ, परलोक मार्ग, शिव, महादेव, सुषुम्ना नाड़ी, एक नरक का नाम ।
महापद्म-(स० पु०) एक नाग का नाम, कुबेर की नव निधियों में से एक, सौ पद्म की संख्या, सफेद कमल, दक्षिण दिशा का दिग्गज, एक नरक का नाम, नन्द राजा के एक पुत्र का नाम ।
महापद्य-(स०पु०) महाकाव्य ।
महापवित्र-(स० वि०) अति पवित्र।
महापात-(स० पु०)तीर का दूर में गिरना
महापातक-(स०नपु०) पांच सबसे बड़े पाप यथा-ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय (चोरी), गुरुपत्नी के साथ व्यभिचार करना तथा इन पापचारियों के साथ संसर्ग ।
महापातकी-(हिं० पु०) महापातक करने वाला ।
महापात्र-(स० पु०) प्रधान मन्त्री, कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक कर्म का दान लेता है ।
महापाद-(स० पुं०) शिव, महादेव ।
महापाश-(स० पु०) यमदूत विशेष ।
महापुत्र-(स०पु०) पौत्र, पोता ।
महापुरुष-(सं०पु०) नारायण, भगवान्, महात्मा, महानुभाव, श्रेष्ठ मनुष्य ।
महापुष्प-(स० पु०) लाल कनेर, काला मूंग ।
महापूजा-(सं० स्त्री०) दुर्गा की नवरात्र की पूजा ।
महापूत-(स०वि०) अति पवित्र ।
महापृष्ठ-(स० पु०) उष्ट्र, ऊंट (वि०) चौड़ी पीठ का ।
महाप्रकाश-(स० पु०) अवतार आदि का अविर्भाव ।
महाप्रजापति-(सं० पु०) विष्णु ।

महाप्रताप-(सं० वि०) अत्यन्त प्रभावशाली ।
महा प्रभ-(स०वि०) जिसमें बहुत चमक हो
महा प्रभाव-(स०पु०) अति बलवान् ।
महा प्रभु-(स०पु०) परमेश्वर, चैतन्य, वल्लभाचार्य की पदवी, राजा, इन्द्र, शिव, विष्णु, सन्यासी या साधु, वैष्णव आचार्य चैतन्य की एक आदर सूचक पदवी ।
महा प्रलय-(स०पु०) त्रैलोक्य का नाश या संहार, जो ब्रह्मा के एक दिन बीतने पर होता है ।
महा प्रसाद-(स०पु०) विष्णु का नैवेद्य, जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ भात, मांस, अखाद्य पदार्थ, अधिक प्रसन्नता ।
महा प्रसूत-(स०पु०) एक बहुत बड़ी संख्या का नाम ।
महा प्रस्थान-(स०नपु०)शरीर त्यागने की इच्छा से हिमालय की ओर जाना, मृत्यु, मरण ।
महाप्राज्ञ-(स० पु०) बड़ा ज्ञानी ।
महाप्राण-(स० पु०) काला कौवा, व्याकरण में—ख, घ, छ, झ,ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष,स, और ह इन वर्णों का नाम, (वि०) बड़ा बलवान् ।
महाफल-(सं० पु०) बेल का वृक्ष, नारियल का पेड़, (नपुं०) बड़ा फल।
महाफला-(स० स्त्री०) इन्द्र वारुणी, बड़ा जामुन, नील का पौधा ।
महाबन्ध-(स०पु०) योग की एक क्रिया।
महाबल-(स०नपु०) सीसा धातु (पु०) पितरों के एक गण का नाम, वायु,शिव के एक अनुचर का नाम, (वि०) अत्यन्त बलवान् ।
महाबला-(स० स्त्री०) पीली सहदेइया, पीपल, नील का पौधा, धव का पेड़, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।
महाबली-(हिं० वि०) बहुत बड़ा बलवान्
महाबाहु-(स० वि०) लंबी भुजा वाला, बलवान् (पु०) विष्णु, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
महाबुद्धि-(स०वि०) तीव्र बुद्धि वाला ।

महा बोधि-(स० पु०) बुद्ध देव ।
महा ब्राह्मण-(स० पु०) देखो महापात्र, वह ब्राह्मण जो मृतक कृत्य का दान लेता हो ।
महा भट-(सं०पु०) बहुत बड़ा योद्धा ।
महा भाग-(स०वि०) बड़ा भाग्यवान्, सौभाग्य शाली, महात्मा ।
महा भागवत-(स०पु०) परम वैष्णव, एक उपपुराण का नाम, छब्बीस मात्रा का एक छन्द, बारह महा भक्त यथा-मनु, सनकादि, नारद, जनक, कपिल, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शम्भु ।
महाभागी-(हिं० वि०) भाग्यवान्, किस्मतवर ।
महा भार-(स० पु०)भारी बोझा ।
महाभारत-(स० नपु०) व्यास प्रणीत अठारह पर्वों का एक प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों के युद्ध का वर्णन है, कौरव पाण्डवों का युद्ध, कोई बड़ा युद्ध ।
महाभाष्य-(स० नपु०) पाणिनि व्याकरण के सूत्रों का विस्तृत भाष्य जिसको पतञ्जलि ने लिखा है ।
महाभासुर-(स०पु०) विष्णु, (वि०) खूब चमकने वाला ।
महाभिमान-(स०पु०) बहुत बड़ा घमंड
महाभीत-(स० वि०) बड़ा डरपोक ।
महाभीम-(स० पु०) राजा शान्तनु का एक नाम ।
महाभीरु-(स०वि०) अत्यन्त डरपोक ।
महाभुज-(स० वि०) जिसकी बांह लंबी हों ।
महाभूत-(सं० नपु०) पञ्चतत्व-यथा पृथ्वी जल, अग्नि, वायु और आकाश।
महाभूषण-(स० नपु०) मूल्यवान् अलंकार ।
महाभैरव-(सं० पु०) शरभ रूपी शिव ।
महाभैरवी-(स० स्त्री०) तान्त्रिकों के अनुसार एक विद्या का नाम ।
महाभोग-(स०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम ।
महाभोगी-(स०पु०)बड़े फन वाला सर्प ।

महाभ्र–(सं०नपु०) घनमेघ, गहरी घटा।
महामख–(सं० पुं०) कोई बड़ा यज्ञ।
महामणि–(सं० पुं०) मूल्यवान् रत्न।
महामति–(सं० वि०) अति बुद्धिमान्, चतुर, (पु०) गणेश, बृहस्पति, यक्षराज
महामद–(सं० पु०) मस्त हाथी (वि०) बहुत प्रसन्न।
महामन्त्र–(सं० पु०) बड़ा मन्त्र, इष्ट मन्त्र, बड़ा प्रभावशाली मन्त्र।
महामन्त्री–(सं० पु०) राजा का प्रधान मन्त्री।
महामति–(हिं०वि०) बड़ा बुद्धिमान्।
महामह–(सं० पु०) बड़ा उत्सव।
महामहोपाध्याय–(सं०पुं०) श्रेष्ठ पण्डित, गुरुओं का गुरु, एक उपाधि जो आजकल भारत सरकार की ओर से पण्डितों को दी जाती है।
महामांस–(सं०नपु०) मनुष्य के शरीर का मांस, गाय, हाथी, घोड़े, भैंस, वराह, ऊंट तथा उरग का मांस।
महामासी–(सं० स्त्री०) सजीवनी नाम का पौधा।
महामाई–(हिं०स्त्री०) दुर्गा, काली।
महामात्य–(सं०पु०) राजा का प्रधान या सबसे बड़ा मन्त्री।
महामात्र–(सं० वि०) प्रधान, श्रेष्ठ, सम्पन्न, धनवान्, अमीर (पु०) प्रधान मन्त्री।
महामानी–(हिं० वि०) बहुत बड़ा घमंडी।
महामाया–(सं० पु०) शिव, विष्णु, विद्याधर का एक भेद (स्त्री०) गंगा, बुद्धदेव की माता का नाम, दुर्गा, आर्या छन्द का एक भेद।
महामायाधर–(सं०पु०) विष्णु।
महामारी–(सं० स्त्री०) महाकाली, वह संक्रामक और भीषण रोग जिससे एक साथ बहुत से मनुष्यों की मृत्यु होती है।
महामाल–(सं०पु०) शिव, महादेव।
महामालिका–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं।
महामालिनी–(सं० स्त्री०) नाराच छन्द का एक नाम।
महामाष–(सं० पु०) राज माष, बड़ा उड़द।
महामुख–(सं०पु०) महादेव, नदी का मुहाना, (वि०) बड़े मुख वाला।
महामुनि–(सं० पु०) अगस्त्य मुनि, कृपाचार्य, बुद्ध, वेदव्यास।
महामूढ, महामूर्ख–(सं० वि०) बड़ा बेवकूफ।
महामूर्त–(सं० पु०) विष्णु।
महामृग–(सं० पु०) हाथी, बड़ा शेर।
महामृत्यु–(सं० पु०) यम, शिव।
महामृत्युञ्जय–(सं० पु०) शिव का एक मन्त्र विशेष।
महामेघ–(सं०पु०) शिव, काली घटा।
महामेद–(सं० पु०) अष्टवर्ग में से एक प्रसिद्ध औषधि।
महामेदा–(सं०स्त्री०) एक प्रकार का कन्द।
महामैत्री (सं०स्त्री०) गाढी मित्रता।
महामोदकारी–(सं० पु०) एक वर्णिक वृत्त, इसको क्रीडाचक्र भी कहते हैं।
महामोह–(सं० पुं०) सांसारिक सुखों का भोग।
महामोहा–(सं० स्त्री०) दुर्गा का एक नाम।
महाम्बुद–(सं०पु०) शिव, महादेव।
महाय–(हिं०वि०) देखो महान्, बहुत।
महायक्ष–(सं० पु०) यक्षपति, एक प्रकार के बौद्ध देवता।
महायज्ञ–(सं० पु०) विष्णु, वेदपाठ, हवन, अतिथि पूजा, तर्पण और बलि ये पांच महायज्ञ कहलाते हैं।
महायमक–(सं०नपु०) श्लोक का एक भेद जिसके प्रत्येक पाद में शब्दात्मक वर्णमाला दी जाती है परन्तु अर्थ में भेद रहता है।
महायशस्क–(सं०वि०) बड़ा यशस्वी।
महायात्रा–(सं० वि०) महातीर्थ यात्रा, मृत्यु।
महायान–(सं०नपु०) एक विद्याधर का नाम, बड़ी बैलगाड़ी।
महायान–(सं० पु०) बौद्धों का एक विशेष सम्प्रदाय।
महायुग–(सं०नपु०) सत्य, त्रेता, द्वापर तथा कलि इन चारो युगों का समूह।
महायुत–(सं०पुं०) सौ अयुत की एक सख्या का नाम।
महायुध–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
महायोगिन्–(सं०पु०) श्रेष्ठ योगी, विष्णु, शिव।
महायौगिक–(सं०पु०) उनतीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महार्घ्य–(सं०वि०) पूजने योग्य।
महारक्त–(सं०नपु०) प्रवाल, मूंगा।
महारजत–(सं० नपु०) सुवर्ण, सोना, धतूरा।
महारण–(सं० पु०) महायुद्ध, बड़ी लड़ाई।
महारण्य–(सं०नपु०) बड़ा जंगल।
महारत–(फा० स्त्री०) अभ्यास, मश्क।
महारथ–(सं०पुं०) शिव, बड़ा योद्धा।
महारथी–(सं०पु०) देखो महारथ।
महारव–(सं० पु०) भेक, मेढक।
महारस–(सं० पुं०) पारा, हिंगुल, अभ्रक, (वि०) जिसमें खूब रस हो।
महाराज–(सं० पु०) राजाओं में श्रेष्ठ, बहुत बड़ा राजा, ब्राह्मण, गुरु, आचार्य या किसी पूज्य के लिये सम्बोधन।
महाराजाधिराज–(सं० पु०) बहुत बड़ा राजा, अनेक राजाओं में श्रेष्ठ।
महाराज्ञी–(सं० स्त्री०) दुर्गा, महारानी।
महाराज्य–(सं०नपु०) बहुत बड़ा राज्य।
महाराणा–(सं० पु०) उदयपूर या चित्तौड़ के राजवंश की एक उपाधि।
महारात्रि–(सं० स्त्री०) महाप्रलय की रात्रि, जब ब्रह्मा का लय हो जाता है और दूसरा महाकल्प होता है, दुर्गा, तान्त्रिकों के अनुसार ठीक आधी रात बीतने पर दो मुहूर्तों का समय, आश्विन कृष्ण अष्टमी।
महारावण–(सं०पु०) पुराण के अनुसार वह रावण जिसके हजार मुख और दो हज़ार भुजायें थीं।

महारावल-(हिं० पु०) राजपुताना, जैसलपूर, और डूगरपूर वश की उपाधि।
महाराष्ट्र-(स० पु०) भारतवर्ष के दक्षिण का एक विस्तीर्ण जनपद, इस देश में रहने वाले, बड़ा राष्ट्र या राज्य।
महाराष्ट्री-(स० स्त्री०) जलपिप्पली, एक प्रकार का शाक, अठारह प्रकार की प्राकृत भाषा में से एक, आधुनिक महाराष्ट्र देश की भाषा।
महारुज-(सं०स्त्री०) बड़ी पीडा या दुःख।
महारुद्र-(स० पु०) महादेव।
महारूप-(स० पु०) महादेव (वि०) बड़ा रूपवान्।
महारोग-(स० पु०) बड़ी व्याधि या रोग।
महारौद्र-(स० पु०) शिव, महादेव, बाइस मात्राओं का एक छन्द।
महारौद्री-(सं०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम।
महारौरव-(स०पु०) एक नरक का नाम।
महार्घ-(स० वि०) बहुमूल्य, बेश-कीमती, महगा।
महार्घता-(स०स्त्री०) महा मूल्य का भाव या धर्म।
महार्णव-(स० पु०) बड़ा समुद्र, शिव, महादेव, एक दैत्य का नाम।
महार्थक-(स० वि०) बेशी दाम का।
महार्बुद-(स० नपु०) सौ करोड़ या दस अर्बुद की सख्या।
महार्ह-(स० वि०) महा पूज्य, योग्य।
महाल-(अ० पु०) वह स्थान जहा पर बहुत से बडे बडे मकान हों, मुहल्ला, बन्दोबस्त के लिये जमीन का किया हुआ विभाग जिसमें कई गाँव होते हैं, पट्टी, हिस्सा।
महालक्ष्मी-(सं० स्त्री०) नारायण की शक्ति, राधा एक वर्णित वृत्त का नाम।
महालय-(स०पु०) पितृपक्ष, आश्विन का कृष्ण पक्ष जिसमें पितरों के लिये तर्पण, श्राद्ध आदि किये जाते हैं, बड़ा मकान।
महालया-(स० स्त्री०) आश्विन कृष्ण अमावस्या जिस दिन पितरों के लिये पार्वण श्राद्ध किये जाते हैं।
महालस (स०पु०) बड़ा आलसी।
महालिङ्ग-(स०पु०) शिव, महादेव।
महालाभ-(स० पु०) काक, कौवा (वि०) बड़ा लालची।
महालोल-(स०वि०) अत्यन्त चचल।
महावट-(हिं०स्त्री०) माघ पूस की वर्षा।
महावत-(हिं०पु०) हाथी हाँकने वाला; फीलवान।
महावतारी-(स०पु०) पचीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महावन-(स०नपु०) घोर जगल।
महावर-(हिं०पु०) लाख से बना हुआ एक प्रकार का लाल रग जिससे सौभाग्यवती स्त्रिया अपने पैर को रगती हैं।
महावरा-(हिं०पु०) देखो मुहावरा।
महावरेदार-(हिं०वि०) देखो मुहावरेदार।
महावल्क-(स०पु०) जायफल का पेड़।
महावल्ली-(स० स्त्री०) माधवी लता।
महावसु-(स० वि०) बडा धनी या दौलत मन्द।
महावात-(स० पु०) ज़ोर की हवा, तूफान।
महावायु-(स०पु०) देखो महावात।
महावारुणी-(स० स्त्री०) गगा स्नान का एक योग, चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन जब शनिवार और शतभिषा नक्षत्र रहता है तब यह योग होता है।
महावाहन-(स०नपु०) एक बहुत बड़ी सख्या का नाम।
महाविक्रम-(स०वि०) बड़ा प्रतापवान्।
महाविज्ञ-(स० वि०) बड़ा ज्ञानवान्।
महाविद्या-(स० स्त्री०) तन्त्र में मानी हुई दस देविया जिनके नाम-काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातगी और कमलात्मिका हैं; ये सिद्ध विद्या भी कहलाती हैं।
महाविपुला-(स० स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।
महाविभूत-(स०पु०) एक बहुत बड़ी सख्या का नाम।
महाविराज-(स० पु०) महाविष्णु।
महाविशिष्ट-(सं०।वि०) अति प्रसिद्ध, बड़ा नामी।
महाविहङ्ग-(स० पु०) गरुड।
महावीचि-(स०पुं०)एक नरक का नाम।
महावीज-(स०पु०) चिरौंजी का वृक्ष।
महावीर-(स० पु०) गरुड सिंह, गौतम बुद्ध का एक नाम, वज्र, कोकिल, कोयल कनेर का वृक्ष, हनुमानजी।
महावीर्य-(स० पु०) ब्रह्मा, बुद्धदेव (वि०) बड़ा बलवान्।
महावृक्ष-(स० पु०) ताड का पेड, करज वृक्ष।
महावेग-(स० पु०) शिव, महादेव, गरुड बदर।
महावैर-(स०नपु०) बड़ी शत्रुता।
महाव्याहृति-(स० स्त्री०) प्रणव और स्वाहा युक्त तीन व्याहृतिया यथा-"ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा।
महाव्रत-(स० नपु०) बारह वर्ष तक चलने वाला व्रत, आश्विन की दुर्गा पूजा।
महाव्रीहि-(स०पु०) साठी धान।
महाशक्ति-(स०पु०) कार्तिकेय, शिव, महादेव, बड़ी शक्ति, (वि०) बडा बलवान्।
महाशंख-(स० पु०) एक बहुत बड़ी सख्या जो दस शख की होती है, कुबेर की नव निधियों में से एक।
महाशठ-(स०वि०) बडा दुष्ट, बडा धूर्त।
महाशब्द-(स०पु०) भयानक शब्द।
महाशय-(स० वि०) महानुभाव, उच्च आशय वाला, महात्मा, सज्जन, (पु०) समुद्र।
महाशय्या-(स० स्त्री०) राजाओं की शय्या या सिंहासन।
महाशान्ति-(स० स्त्री०) विघ्न बाधाओं को दूर करने के लिये मन्त्र का अनुष्ठान।
महाशालि-(स०पु०) मोटा धान।
महाशालीन-(स०वि०) अति विनीत, बड़ा नम्र।

महाशिला-(सं० स्त्री०) एक हथियार का नाम।
महाशीर्ष-(सं०पु०) शिव का एक अनुचर।
महाशुक्ति-(सं० स्त्री०) बड़ी सीप, वह सीप जिसमें से मोती निकलता है।
महाशुक्ला-(सं० स्त्री०) सरस्वती।
महाशून्य-(सं० नपु०) आकाश।
महाश्रय-(सं०पु०) अखरोट का पेड़।
महाश्व- सं०पु०)बड़ा तथा सुन्दर घोड़ा
महाश्वेता-(सं०स्त्री०) सरस्वती दुर्गा।
महाषष्ठी-(सं० स्त्री०) दुर्गा जो बालक की रक्षा करती है।
महाष्टमी-(सं०स्त्री०) आश्विन शुक्ला अष्टमी
महासंस्कारी-(सं०स्त्री०) सोलह मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महासतोमुखा-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
महासत्व-(सं०पु०) एक बोधिसत्व का नाम, शाक्य मुनि।
महासत्य-(सं० पु०) यमराज।
महासम्मत-(सं०वि०) अति आदरणीय।
महासर्ग-(सं० पु०) महा प्रलय के बाद की ससार की रचना।
महासर्ज-(सं०पु०) कटहल का पेड़।
महासहा-(सं०स्त्री०) इमली का वृक्ष।
महासिद्ध-(सं०वि०) जिन्होने योग द्वारा सिद्धि प्राप्त की है।
महासिद्धि-(सं० स्त्री०) आठ सिद्धियों में से एक।
महासुख-(सं०नपु०) अति आनन्द।
महासुर-(सं०पु०) एक दानाव का नाम।
महासूत-(सं०पु०) युद्ध क्षेत्र में बजाने का एक प्रकार का वाजा।
महासेन-(सं०पु०)शिव,महादेव,कार्तिकेय।
महास्कन्धा-(सं०स्त्री०) जामुन का वृक्ष।
महास्थली-(सं० स्त्री०) बहुत सुन्दर स्थान, पृथ्वी।
महास्पद-(सं०वि०) बड़ा प्रभावशाली।
महास्वन-(सं०पु०)ज़ोर का शब्द, लड़ाई का डका, एक प्रकार के असुर।
महास्वर-(सं०पु०)उच्च स्वर, ज़ोर का शब्द
महाहनु-(सं०पु०)शिव, महा देव।
महाहव-(सं०पु०) घमासान युद्ध।
महाहस्त-(सं०पु०) शिव, महादेव।
महाहास-(सं०पु०) ठहाके की हँसी।
महाहि-(सं०पु०) वासुकि नाग।
महिँ-(हि०अव्य०) देखो महँ।
महि-(सं०पु०) पृथ्वी।
महिका-(सं०स्त्री०) हिम, बरफ।
महिख-(हि० पु०) देखो महिप।
महिखरी-(हि० स्त्री०) अट्ठाईस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
महित-(सं०वि०) पूजित,पूजा किया हुआ।
महिता-(सं०स्त्री०) महत्व, महिमा।
महित्व-(सं०नपु०) महत्व, प्रभुता।
महिदेव-(सं०पु०) ब्राह्मण।
महिधरा (सं०पु०) देखो महीधर।
महिन्धक-(सं०पु०) चूहा, नेवला।
महिपाल-(सं०पु०) देखो महीपाल।
महिमा-(सं०स्त्री०) महत्त्व, आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, प्रभाव, प्रताप।
महिम्न-(सं०पु०) शिव के एक प्रसिद्ध स्तोत्र का नाम।
महिया-(हि०अव्य०) मे।
महिया-(हि०पु०) ईख के रस का फेन जो इसके उबलने पर निकलता है।
महियाउर-(हि०पु०) मठे में पका हुआ चावल।
महिरावण-(सं० पु०) एक राक्षस का नाम जो रावण का पुत्र था और पाताल में रहता था।
महिला-(सं०स्त्री०) स्त्री, प्रियगु लता।
महिष-(सं०पु०) भैंस, एक प्राचीन देश का नाम, एक असुर जिसको दुर्गा देवी ने मारा था, एक अग्नि का नाम, वह राजा जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो, महिषघ्नी-दुर्गा देवी, महिषध्वज-, यमराज, महिषमर्दिनी-दुर्गा देवी, महिषवाहन-यमराज।
महिषासुर-(सं० पु०) रंभासुर का पुत्र जिसको दुर्गा देवी ने मारा था।
महिषी-(सं०स्त्री०) भैंस, पटरानी, जिस पत्नी के साथ राजा का अभिषेक हुआ हो
महिषेश-(सं०पु०) महिषासुर, यमराज।
महिष्ठ-(सं०वि०) विशाल, बहुत ब
महिसुर-(हि०पु०) देखो महीसुर, मैसूर।
मही-(सं०स्त्री०) पृथ्वी,गाय,लोक,मिट्टी, स्थान, समूह,सेना,छुड,एक की सख्या, एक छन्द का नाम (हि०पु०)मठा,छाछ।
महीकम्प-(सं०पु०) भूडोल।
मही खड़ी-(हि०स्त्री०) सिकलीगरों का एक औज़ार।
महीचर-(सं०वि०) पृथ्वी पर घूमने वाला।
महीचारी-(सं०पु०) महादेव (वि०) पृथ्वी पर चलने वाला।
महीज-(सं०पु०) अदरक, मगल ग्रह।
महीतल-(सं०नपु०) भूतल, पृथ्वी।
महीदेव-(सं०पु०) देखो भूदेव ब्राह्मण।
महीधर-(सं०पु०) विष्णु,पर्वत,शेष नाग, एक वर्णिक वृत्त का नाम।
महीन-(हि०वि०) जिसकी मोटाई या घेरा बहुत कम हो, बारीक, कोमल, पतला, धीमा, जो बहुत कम ऊचा या तेज हो, मन्द स्वर।
महीना-(हि०पु०) काल का वह परिमाण जो वर्ष के बारहवें अश के बराबर होता है, मासिक वेतन, स्त्रियों का मासिक धर्म, ऋतुकाल।
महीनाथ-(सं०पु०) पृथ्वीपति, राजा।
महीप-(सं०पु०) पृथ्वीपति, राजा।
महीपतन-(सं० नपु०) साष्टाङ्ग प्रणाम करना।
महीपति-(सं०पु०) पृथ्वीपति, राजा।
महीपाल-(सं०पु०) देखो महीपति।
महीपुत्र-(सं०पु०) मगल ग्रह।
महीप्रकम्प-(सं०पु०) भूमिकम्प,भूडोल।
महीभुज्-(सं०पु०) राजा।
महीभृत्-(सं०पु०) पर्वत, राजा।
महीमण्डल-(सं०नपु०) भूमण्डल।
महीम-(हि० पु०) एक प्रकार का मोटा गन्ना।
महीमय-(सं०वि०)मिट्टी का बना हुआ।
महीयत्व-(सं०नपु०) प्रभुता, श्रेष्ठता।
महीर-(हि० स्त्री०) वह तलछट जो मक्खन को तपाने से नीचे बैठ जाता है।

महीरुह-(स०पु०) वृक्ष, पादप, पेड़।
महीलता-(स०स्त्री०) केंचुआ।
महीशासक-(सं०पु०) भूपाल, राजा।
महीसुत-(स० पु०) पृथ्वी का पुत्र, मगल ग्रह।
महीसुर-(स०पु०) ब्राह्मण।
महु-(हिं०अव्य०) देखो मह।
महुअर-(हि०स्त्री०) महुआ मिलाकर पकाई हुई रोटी, एक प्रकार का बाजा जिसको सवेरे बजाते हैं, तुमड़ी, तुम्बी, महुअर बजाकर खेला जाने वाला एक इन्द्रजाल का खेल।
महुअरी-(हिं०स्त्री०) आटे में महुआ मिलाकर बनाई हुई रोटी।
महुआ-(हिं०पु०) एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जिसके छोटे मीठे फलों से एक प्रकार की मदिरा बनती है।
महुआरी-(हिं०स्त्री०) महुए का जगल।
महुछी-(हि०पु०)महोत्सव, बड़ा उत्सव।
महुला-(हि० वि०) महुए के रग का।
महुवरि-(हि० स्त्री०) महुअर नाम का बाजा, तुबड़ी।
महुवा-(हि०पु०) देखो महुआ।
महूख-(हिं०पु०) महुआ,जेठीमद,मुलेठी।
महूरत-(हि०स्त्री०) देखो मुहूर्त।
महेन्द्र-(स० पु०) विष्णु इन्द्र, भारतवर्ष के एक पर्वत का नाम, बौद्ध सम्राट् अशोक के पुत्र का नाम, महेन्द्रचाप-इन्द्रधनुष, महेन्द्रनगरी-अमरावती, महेन्द्रमन्त्री-बृहस्पति,महेन्द्रवारुणी-बड़ा इद्रायण।
महेर-(हिं०पु०) झगड़ा, बखेड़ा, देखो महेरा।
महेरा-(हि०पु०) एक प्रकार का व्यजन जो दही में चावल पका कर बनाया जाता है।
महेरी-(हि०स्त्री०) जल में उबाली हुई ज्वार जो नमक मिर्च मिलाकर खाई जाती है (वि०) बखेड़ा खड़ा करने वाला।
महेला-(हिं०स्त्री०) देखो महिला, स्त्री, पशुओं को खिलाने का एक पौष्टिक पदार्थ।
महेलिका-(स० स्त्री०) महिला, नारी, बड़ी इलायची।
महेश-(स०पु०) शिव, महादेव, ईश्वर।
महेशबन्धु-(स०पु०)श्रीफल,बेल का फल
महेशानी-(स०स्त्री०) दुर्गा देवी।
महेश्वर-(स० पु०) शिव, महादेव, परमेश्वर।
महेश्वरी-(हि० पु०) पश्चिम भारत के बनियों की एक शाखा।
महेषु-(स०पु०) बड़ा तीर या बाण।
महेस-(हिं०पु०) देखो महेश।
महेसिया-(हि० पु०) एक प्रकार का बढ़िया धान।
महैला-(स० स्त्री०) बड़ी इलायची।
महैश्वर्य-(स०नपु०)महा शक्ति,बड़ा बल
महोक, महोख-(हि० पु०) देखो महोखा
महोखा-(हिं०पु०) एक प्रकार का भूरे रग का कौवे के आकार का पक्षी जो तेजी से दौड़ सकता है पर दूर तक उड़ नहीं सकता।
महोगनी-(अ०पु०) एक प्रकार का बड़ा सदाबहार वृक्ष, इसकी लकड़ी बहुत पुष्ट टिकाऊ और कीमती होती है।
महोच्छव, महोछा-(हि० पु०) देखो महोत्सव।
महोती-(हिं०स्त्री०) महुए का फल।
महोत्पल-(स०नपु०) पद्म, सारस पक्षी।
महोत्सव-(स०पु०) कोई बड़ा उत्सव।
महोत्साह-(स०पु०) विष्णु,कठिन उद्यम।
महोदधि-(स०पु०) सागर, समुद्र।
महोदय-(स० पु०) कान्यकुब्ज देश, आधिपत्य, स्वामी, महाशय, बड़ों के लिये आदर सूचक शब्द।
महोदया-(स०स्त्री०) महाशया,नागबला।
महोदर-(स०वि०) जिसका पेट बड़ा हो, शिव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
महोद्यम, महोद्योग-(स० पु०) बड़ा उद्योग या यत्न।
महोना-(हि०पु०) पशुओं का एक रोग।
महोन्नत-(स०वि०) जिसकी बड़ी उन्नति हुई हो,(पु०)तालवृक्ष,नारियल का पेड़।
महोन्नति-(स०स्त्री०) बड़ी उन्नति।
महोन्मद-(सं० वि०) अति उन्मत्त, बड़ा पागल।
महोबा-(हि० पु०) सयुक्त प्रदेश के हमीरपुर जिले का एक विभाग।
महोबिया, महोबिहा-(हि० वि०) महोबे का।
महोला-(अ०पु०) बहाना,धोखा,छल,कपट
महोष्ठ-(स० वि०) जिसका ओठ लबा और मोटा हो।
महौघ-(सं०पु०) समुद्र की बाढ,तूफान
महौजस्-(स०वि०) बड़ा तेजस्वी।
महौषध-(स० नपु०) लहसुन, सोंठ, बाराही कन्द, अतीस, बछनाग, पीपल।
महौषधि (स०स्त्री०) श्रेष्ठ औषधि,अच्छी दवा, देवी को स्नान कराने में सर्वौषधि और महौषधि का उपयोग होता है, बहेड़ा, व्याघ्री, बला,अतिबला,शखपुष्पी, बृहती, क्षीरककोली और सुवर्चला का चूर्ण।
माँ-(हि० स्त्री०) जन्म देने वाली माता (अव्य०) में। माजाया-सहोदर भ्राता, सगा भाई।
माँकड़ी-(हिं०स्त्री०)देखो मकड़ी,कमखाब बुनने वालों का एक औजार।
माँखन-(हिं०पु०) मक्खन, नवनीत।
माँखना-(हिं०क्रि०)क्रुद्ध होना,क्रोध करना
माँखी-(हि०स्त्री०) मक्खी।
माँग-(हि० स्त्री०) मागने की क्रिया या भाव, आवश्यकता, ज़रूरत सिर के बाल के बीच में की रेखा जो बालों को विभक्त करने के लिये बनाई जाती है, नाव का गावदुम भाग, सिल के ऊपर का भाग जो कूटा नहीं रहता, किसी वस्तु का ऊपरी भाग,सिरा, माँग कोख से सुखी रहना-स्त्रियों का सौभाग्यवती तथा सन्तान युक्त होना, माँग टीका-स्त्रियों का वह गहना जिसको वे माँग पर पहनती हैं।
माँगन-(हिं०पु०) मांगने की क्रिया या भाव, याचक, भिखमगा।
माँगना-(हिं०क्रि०) याचना करना कुछ प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करना,

आकाक्षा पूर्ति के लिये कहना।
माँगफूल–(हिं० पु०) देखो माँग, टीका।
माँगल गीत–(हिं०पु०) विवाह आदि मगल अवसरों पर गाई जाने वाली गीत।
माँगी–(हि० स्त्री०) धुनकी पर की वह लकड़ी जिसपर तात कसी रहती है।
माँच–(हि० पु०) पाल के कोने पर बधा हुआ रस्सा जिससे पाल आगे या पीछे हटाई जाती है
मोचना–(हि० क्रि०) आरभ होना, प्रसिद्ध होना।
मोंचा–(हि० पु०) मचान, खाट, पलग, मझा, छोटी पीढ़ी।
माची–(हि० स्त्री०) बैलगाड़ी आदि मे गाड़ीवान के बैठने की जगह लगी हुई जालीदार झोली।
माँछ–(हि०पु०) मछली।
मोंछना–(हिं०क्रि०) घुसना, बैठना।
मोंछर, माँछली–(हिं०स्त्री०) मछली।
मोंछी–(हि०स्त्री०) देखो मछली।
मोंजना–(हि० क्रि०) ज़ोर से मलकर साफ करना, किसी वस्तु को रगड़ कर मैल छुड़ाना, पतग की डोर पर माझा देना, तानी के सूत को रगना, अभ्यास करना, मश्क करना कण्ठस्थ करना।
मोंजर–(हिं०स्त्री०) अस्थिपंजर, ठठरी।
मांजा–(हिं०पु०) पहली वर्षा का फेन।
मोंझ–(हिं०अव्य०) मे, बीचमे, अन्दर, (पु०) अन्तर, फर्क, नदी के बीच मे पड़ी हुई रेतीली भूमि।
मोंझा–(हिं० पु०) नदी के बीच का टापू, पगड़ी पर पहरने का एक आभूषण, वृक्ष का तना, पीले वस्त्र जो विवाह के समय वर और कन्या को पहराये जाते हैं, पतग के डोरे पर सरेस और शीशे की बुकनी का कलफ, मझा।
मोंझिल–(हि० वि०) बीच का।
माँझी–(हि० पुं०) नाव खेने वाला मल्लाह, केवट, झगड़ा तय करने वाला पच।
मॉट–(हिं०पु०) मिट्टी का बड़ा बरतन, मटका, घर का ऊपरी भाग, अटारी।
माँठ–(हि०पु०) मटका, कुडा।
मोंठी–(हि० स्त्री०) देखो मठिया, मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।
माँड–(हि०पु०) पकाये हुए चावल से निकाला हुआ पानी, भात का पसेव, एक प्रकार का राग।
माँडना–(हिं०क्रि०) मसलना, सानना, लगाना, पोतना, गूँथना, रचना, बनाना, किसी अन्न की बाल मे से दाने झड़ना, मचाना, ठानना।
माँड़नी–(हि०स्त्री०) मगजी, गोठ, सजाफ।
माँड़यो–(हि० पु०) पाहुन के ठहरने का स्थान, अतिथि शाला, विवाह मण्डव, मड़वा,
माँड़व–(हि० पु०) विवाह आदि अथवा दूसरे शुभ कृत्यों के लिये छाया हुआ मण्डप।
माँड़ा–(हि०पु०) घी मे पकाई हुई मैदे की पतली रोटी, लूची, पराठा, उलटा, आख का एक रोग जिसमे आख के भीतर एक पतली झिल्ली पड़ जाती है, मँड़वा, देखो मण्डप।
माँडी–(हि०स्त्री०) भात का पसेव, माँड़, आटे, मैदे, चावल के पसेव आदि से तैयार की हुई लेई जिससे कपड़ों में कलफ दी जाती है,
माँड़ौ–(हि०पुं०) विवाह का मण्डप
माँढा–(हि०पु०) देखो माँढव।
माँत–(हि०वि०) उन्मत्त, बेसुध, पागल, बावला, उदास, हारा हुआ, पराजित।
मातना–(हिं० क्रि०) उन्मत्त होना, पागल होना।
माँता–(हि०वि०) उन्मत्त, मतवाला।
माँथा–(हि० पु०) मस्तक, सिर।
माँथबधन–(हिं० पु०) सूत या ऊनकी डोरी जिससे स्त्रिया सिरके बाल बाधती हैं, परान्दा, सिरमें लपेटने का कपड़ा, साफा।
माँद–(हि० स्त्री०) हिंसक पशुओं के रहने का विवर, खोह, गोबर का वह ढेर जो पड़े पड़े सूख जाता है (वि०) पराजित, हारा हुआ, खराब, हलका, बदरग, उदास।
माँदगी–(फ़ा०स्त्री०) बीमारी,रोग,थकावट
माँदर–(हिं०पुं०) एक प्रकार का मृदग।
माँदा–(फ़ा० वि०) थका हुआ, अवशिष्ट, बाकी, रोगी, बीमार।
माँपना–(हिं०क्रि०) उन्मत्त होना, नशे में चूर होना।
माय–(हिं०अव्य०) में, बीच, मध्यमें।
मास–(स०नपु०) शरीर का रक्त जात धातु विशेष, कुछ पशुओं के शरीर का वह अश जो खाया जाता है, गोश्त।
मासकच्छप–(स० पु०) तालु में होने वाला एक रोग।
मासकीलक–(स०पु०) बवासीर का मसा
मासखण्ड–(स० नपु०) मास का टुकड़ा
मासखोर–(फा०वि०) मासहारी, मास खाने वाला।
मासज–(स० नपुं०) मास से उत्पन्न शरीर की चर्बी।
मांसजाल–(स० नपुं०) मास की झिल्ली
मासपिण्ड–(स०नपु०) शरीर, देह।
मासपित्त–(स० नपु०) अस्थि, हड्डी।
मांसपेशी–(स०स्त्री०) शरीर के भीतर का मास पिंड, मास का पठ्ठा।
मासफल–(स० पु०) तरबूज।
मासभक्षी, मासभोजी–(स० पु०) गोश्त खाने वाला।
मासमण्ड–(स० पु०) मास का झोल, शोरबा।
मांसरस–(स० स्त्री०) देखो मासमण्ड।
मासल–(स० नपु०) उड़द, काव्य में गौडी रीति का एक गुण (वि०) मास युक्त, मास से भरा हुआ, स्थूल, मोटा ताजा, पुष्ट, बलवान्, मज़बूत।
मासलता–(स०स्त्री०) स्थूलता, पुष्टि।
मासलफला–(स० स्त्री०) तरबूज़, भिंडी।
मासवारुणी–(स०स्त्री०) हरिन आदि के मासके बनाई हुई एक प्रकारकी मदिरा।
मासवृद्धि–(स० स्त्री०) गलगण्ड, घेघा, श्लीपद, फीलपाव, अण्ड वृद्धि का रोग।
मांससमुद्भवा–(स०स्त्री०) वसा, चर्बी।
मांसस्नेह–(स०पु०) वसा, चर्बी।

मांसाशन-(सं० नपुं०) मांस भक्षण, मांस खाना।

मांसाशी-(सं० पु०) राक्षस।

मांसाहारी-(सं० पु०) मांस भक्षी, मांस खाने वाला।

मांसिनी-(सं०स्त्री०) जटामांसी।

मांसी-(सं० स्त्री०) अट्ठसा, इलायची, सञ्जीवनी।

मांसु-(हिं०पु०) देखो मांस।

मांसोपजीवी-(सं० पु०) मांस बेचने वाला मनुष्य।

माह-(हि० अव्य०) बीच, अन्दर।

माइ,माई-(हिं०स्त्री०) पुत्री, लडकी, मामा की स्त्री, मामी, एक प्रकार का छोटा पूआ जिससे विवाह में मातृ पूजा की जाती है।

माइ-(हिं० स्त्री०) देखो माई।

माइका-(हिं० पुं०) स्त्री के माता पिता का घर नइहर।

माई-(हिं०स्त्री०) माता, मां,बड़ी, बूढ़ी स्त्री के लिये सम्बोधन का शब्द, माई का लाल-शूर वीर व्यक्ति, अधिक चतुर मनुष्य।

माउल्लहम-(अ० पु०) मांस का बना हुआ एक पुष्टि कारक अर्क जिसको हकीम लोग बनाते हैं।

माकन्द-(सं० पु०) आमका वृक्ष।

माकूल-(अ०वि०) उचित,वाजिब,योग्य, लायक,यथेष्ट, अच्छा, पूरा, जिसने वादा विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो, जो निरुत्तर हो गया हो।

माक्षु-(सं० पु०) स्पृहा, देखो माख।

माक्षिक-(सं०नपु०) मधु, शहद, सोना-मक्खी नामक धातु।

माख-(हिं० पु०) अभिमान, घमण्ड, अप्रसन्नता, नाराजगी, पश्चाताप, पछतावा, अपने दोष को ढापना।

माखन-(हि०पु०) मक्खन, नवनीत।

माखना-(हिं० क्रि०) अप्रसन्न होना, नाखुश होना, क्रुद्ध होना।

माखी-(हिं०स्त्री०) मक्खी, सोनामक्खी नामक धातु।

मागध-(सं० पु०) वंश परम्परा क्रम से राजाओं की स्तुति करनेवाला, स्तुति पाठक, वन्दी, भाट, जरासन्ध का एक नाम, सफेद जीरा, (वि०) मगध देश का।

मागधिक-(सं० वि०) मगध देश का।

मागधी-(सं०स्त्री०) जूही, छोटी पीपल, छोटी इलायची, साठी धान, जीरा, मगध देश की प्राचीन भाषा, मागधी जटा-पिपला मूल।

माघ-(सं०पु०) भारत के एक प्राचीन कवि जिन्होंने शिशुपालवध नामक काव्य लिखा है, इस काव्य का नाम, पौष के बाद तथा फाल्गुन के पहिले का चान्द्रमास, माघवती-पूर्व दिशा।

माघवन-(सं० वि०) इन्द्र संबंधी।

माघी-(सं०स्त्री०) माघ मास की पूर्णिमा जिस दिन मघा नक्षत्र का योग होता है।

माघोनी-(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा जिसके अधिपति इन्द्र हैं।

माङ्गलिक-(सं० पु०) नाटक का वह पात्र जो मङ्गल पाठ करता है (वि०) मंगल प्रकट करने वाला।

माङ्गल्य-(सं० वि०) शुभ जनक, मंगलकारी (पु०) मंगल का भाव, माङ्गल्यागीत-वह गीत जो विवाहादि शुभ अवसर पर गाई जाती है।

माङ्गल्या-(सं०स्त्री०) शमी का वृक्ष।

माच-(सं०पु०) पथ, रास्ता (हिं०पु०) मचान।

माचना-(हि० क्रि०) देखो मचना।

माचल-(सं० पु०) ग्रह, रोग, वन्दी, कैदी, चोर (हिं०वि०) जिद्दी, मचलने वाला।

माचा-(हि० पु०) खाट की तरह बीनी हुई बैठने की पीढ़ी, मचिया।

माची-(सं०स्त्री०) काकमाची, मकोय।

माची-(हि० स्त्री०) वह जुआ जो हल जोतने के समय बैलों के कन्धे पर रक्खा जाता है, देखो मचिया।

माछ-(हि०पु०) बड़ी मछली, मछली।

माछर-(हिं० पु०) मछली, मच्छड़।

माछी-(हि० स्त्री०) मक्खी, मछली।

माजरा-(अ०पु०) वृत्तान्त, घटना, हाल।

माजल-(सं०पु०) चातक पक्षी, चकवा।

माजू-(फा० पु०) सरो की तरह का एक वृक्ष।

माजून-(अ० स्त्री०) औषधि मिलाया हुआ कोई मीठा अवलेह, भांग मिली हुई बरफी।

माजूफल-(फा० पु०) माजू नामक वृक्ष का फल जिससे रंग बनते हैं।

माट-(हिं० पु०) मिट्टी का बड़ा बरतन जिसमें रंगरेज रंग बनाते हैं, बड़ी मटकी जिसमें दही रक्खा जाता है।

माटा-(हि० पु०) लाल रंग का च्यूंटा जिसके झुंड के झुंड आम के पेड़पर रहते हैं।

माटी-(हिं० स्त्री०) मृत शरीर, लाश, पृथ्वी नामक तत्व शरीर, देह, मिट्टी, धूल, रज, किसी खेत की साल भर की जोताई।

माठ-(हिं० पु०) एक प्रकार की मिठाई, मठरी, टिकिया, मिट्टी का पात्र, मटकी।

माठा-(हि० पु०) देखो मठा, मट्ठा, कृपण, कञ्जूस।

माठी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कपास।

माड़-(हि० पु०) देखो मॉड़।

माड़ना-(हिं० क्रि०) ठानना, करना, मंडित करना, विभूषित करना, आदर करना, धारण करना, पहनना, हाथ या पैर से मसलना, घूमना फिरना।

माड़व-(हिं०पुं०) देखो माड़ी, मण्डप।

माढ़ा-(हिं०पु०) अटारी पर का चौबारा।

माढी-(सं०स्त्री०) पत्तों की नस, दाँतों का जड़।

माढी-(हिं०स्त्री०) देखो मढी।

माण, माणक-(सं० पु०) एक प्रकार का कन्द।

माणवक-(सं०पु०) सोलह वर्ष तक की आयु का मनुष्य, बालक, मूढ़, विद्यार्थी, नीच मनुष्य।

माणवकक्रीड़ा-(सं०नपु०) एक वर्णवृत्त का नाम।

माणव्य–(स॰नपु॰) बालकों का समुदाय

माणिक–(हि॰पु॰)देखो माणिक्य,मानिक

माणिक्य–(स॰नपु॰) लाल रग का एक रत्न, मानिक, लाल, पद्मराग (वि॰) आदरणीय, शिरोमणि, अति श्रेष्ठ।

माण्डप–(स॰वि॰) मण्डप सबधी।

माण्डलिक–(स॰ पु॰) किसी प्रान्त का शासक, वह छोटा राजा जो किसी सार्वभौम राजा के अधीन हो।

माण्डवी–(स॰ स्त्री॰) राजा जनक की भतीजी जो भरत को व्याही थी।

माण्डयूक्य–(स॰वि॰) मण्डूक संबधी।

मात–(हि॰ स्त्री॰) माता, (अ॰स्त्री॰) पराजय, हार, (वि॰) हारा हुआ, मतवाला।

मातङ्ग–(स॰पु॰) हस्ती, हाथी, पीपल का वृक्ष, ऋष्यमूक पर्वत पर रहने वाले एक मुनि का नाम, एक नाग का नाम, ज्योतिष के अनुसार एक योग, सवर्तक मेघ का एक नाम, किरात जाति, चाण्डाल, मातङ्गज–हाथी का बच्चा, मातङ्ग मकर–एक प्रकार की बड़ी मछली।

मातङ्गी–(स॰ स्त्री॰) दश महाविद्या के अन्तर्गत एक महाविद्या।

मातदिल–(अ॰वि॰) मध्यम प्रकृति का, जो गुण मे न बहुत ठढा हो न बहुत गरम हो।

मातना–(हि॰ क्रि॰) मस्त होना, नशे में हो जाना।

मातबर–(अ॰वि॰) विश्वसनीय, विश्वास करने योग्य।

मातबरी–(अ॰ स्त्री॰) मातबर होने का भाव, विश्वसनीयता।

मातम–(अ॰ पु॰) मृतक का शोक, किसी दुःखदायिनी घटना के कारण उत्पन्न शोक।

मातमपुर्सी–(फा॰ स्त्री॰) जिसके घर कोई मर गया हो उसके यहाँ जाकर उसको ढाढस देने का काम।

मातमी–(फा॰ वि॰) मातम सबधी, शोक सूचक।

मातमुख–(हि॰ वि॰) मूर्ख, बेवकूफ।

मातलि–(स॰ पु॰) इन्द्र के सारथी का नाम, मातलिसूत–इन्द्र।

मातहत–(अ॰पु॰) अधीनस्थ कर्मचारी, किसी की अधीनता में काम करने वाला

मातहती–(अ॰स्त्री॰) मातहत या अधीनता में होने का काम या भाव।

माता–(स॰स्त्री॰) जन्म देने वाली स्त्री, जननी, किसी आदरणीय स्त्री के लिये सबोधन का शब्द, गाय, भूमि, लक्ष्मी, शीतला रोग, (अ॰वि॰) मतवाला।

मातमाह–(स॰पु॰) माता का पिता, नाना।

मातामही–(स॰स्त्री॰,माता की माता,नानी

मातु–(हि॰स्त्री॰) माता, मा।

मातुल–(स॰पु॰) माता का भाई,मामा, एक प्रकार का धान, मदन वृक्ष, धतूरा, मटर।

मातुलक–(स॰पु॰) मातुल, मामा।

मातुला–(स॰ स्त्री॰) मातुल की पत्नी, मामी, भाग, मटर, सन,प्रियगु का वृक्ष।

मातुलानी–(स॰स्त्री॰) मामी।

मातुली–(स॰स्त्री॰) देखो मातुला।

मातुलेय–(स॰पु॰) मातुलपुत्र,ममेरा भाई

मातुलेयी–(स॰ स्त्री॰) ममेरी बहिन।

मातुल्य–(स॰नपु॰) मामा का घर।

मातृ–(स॰ स्त्री॰) जननी, माता, गाय, भूमि, ऐश्वर्य, लक्ष्मी (वि॰) बनाने वाला

मातृक–(स॰वि॰) माता सबधी।

मातृका–(स॰ स्त्री॰) दूध पीलाने वाली धाय,जननी,माता,उपमाता,सौतेली मां, कारण, वर्णमाला की बारह खड़ी, काम क्रोध आदि आठ विकारो की आठ अधिष्ठात्री देवी यथा–काम की योगेश्वरी, क्रोध की माहेश्वरी, लोभ की वैष्णवी, मद की ब्राह्मणी, मोह की कौमारी, मात्सर्य की ऐन्द्राणी, पशुन्य की दण्ड धारिणी तथा असूया की वाराही—ये अष्ट मातृका कहलाती हैं।

मातृगण–(स॰पु॰) शिव के परिवार।

मातृ घाती–(हि॰वि॰) माता की हत्या करने वाला।

मातृ तीर्थ–(स॰ नपु॰) कानी अगुली का सबसे नीचे का स्थान।

मातृ नन्दन–(स॰पु॰) कार्तिकेय।

मातृ निन्दक–(स॰ वि॰) माता की निन्दा करने वाला।

मातृ पूजन–(स॰नपु॰) माता की पूजा।

मातृ पूजा–(स॰स्त्री॰) विवाह की एक रीति जिसमें विवाह के एक दिन पहले पितरों का पूजन किया जाता है।

मातृ भाषा–(स॰स्त्री॰)वह भाषा जिसको बोलना बालक माता की गोद मे रहते हुए सीखता है।

मातृ वत्–(स॰वि॰) माता के समान।

मातृ वत्सल–(स॰ वि॰) माता के प्रति भक्ति करने वाला, (पु॰) कार्तिकेय।

मातृष्वसा–(स॰स्त्री॰)माता की बहन,मौसी

मातृष्वसेय–(स॰पु॰) मौसेरा भाई।

मातृसपत्नी–(स॰ स्त्री॰) विमाता, सौतेली माता।

मात्र–(स॰अव्य॰) केवल,सिर्फ,निश्चय।

मात्रा–(स॰ स्त्री॰) परिमाण, मिकदार, एक बार खाने योग्य औषधि, किसी वस्तु का नियमित अल्प भाग, अवयव, शक्ति, रूप, इन्द्रिय, वित्त, सम्पत्ति, स्वर सूचक रेखा जो अक्षर में लगाई जाती है, एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण करने में जितना समय लगता है, छन्द का ह्रस्व, दीर्घ आदि भेद।

मात्रा पताका–(स॰स्त्री॰) छन्द ग्रन्थ के अनुसार मात्रा का लघु गुरु ज्ञान करने का पताका यन्त्र।

मात्रा वृत्त–(स॰ नपु॰) आर्या आदि छन्दो का भेद।

मात्रा समक–(स॰ नपु॰) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ होती हैं और अन्त में एक गुरु वर्ण होता है।

मात्रिक–(स॰वि॰) मात्रा सबधी,मात्राओं के हिसाब वाला, जिसमे मात्राओ की गणना की जाय।

मात्सर्य–(स॰पु॰) ईर्ष्या, डाह।

माथ–(हि॰पु॰) देखो माथा।

माथा–(हि॰पु॰) सिर का ऊपरी भाग,

मस्तक, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, माथा ठनकना-किसी दुर्घटना की पहिले से आशंका होना, माथे चढाना - शिरोधार्य करना, माथापच्ची-अधिक दिमाग लगाना।

माथुर-(स० पु०) वह जो मथुरा से आया हो, मथुरा निवासी, कायस्थ तथा वैश्यों की एक जाति, ब्राह्मणो की चौबे जाति।

माथुरक-(स०पु०) मथुरा में रहने वाला।

माथे-(हि०क्रि०वि०) माथे पर, सरपर, सहारे, भरोसे, पर।

माद-(स० पु०) हर्ष, प्रसन्नता, मस्ती।

मादक-(स०वि०) नशा उत्पन्न, करने वाला, जिससे नशा हो, नशीला, (पु०) एक प्रकार का हरिण, एक प्रकार का अस्त्र।

मादकता (स० स्त्री०) मादक होने का भाव, नशीलापन।

मादन-(स० पु०) लवंग, कामदेव, धतूरे का वृक्ष (वि०) हर्षोत्पादक।

मादनी-(सं० स्त्री०) विजया, भाग।

मादयिष्णु-(स० वि०) आनन्द बढाने वाला।

मादर-(फा० स्त्री०) मा, माता।

मादरजाद-(फा०वि०) जन्म का, पैदाइशी, एक माता से उत्पन्न, सगा भाई, जैसा माता के पेट से निकला हो, बिलकुल नंगा।

मादा-(फा०स्त्री०) स्त्री जाति का प्राणी, इस शब्द का व्यवहार जीव जन्तु के लिये किया जाता है।

मादिनी-(स०स्त्री०) विजया, भाग।

माद्रवती-(स० स्त्री०) राजा परीक्षित की स्त्री का नाम।

माद्दा-(अ० पु०) मूल तत्व, योग्यता, लियाकत, पीब, मवाद।

माद्री-(स० स्त्री०) मद्रराज की कन्या जो पाण्डु राजा को व्याही थी, इनके पुत्र नकुल और सहदेव थे।

माद्रीपति-(स०पु०) राजा पाण्डु।

माद्रेय-(स०पु०) नकुल और सहदेव।

माधव-(स० पु०) विष्णु, नारायण, वसन्त ऋतु, महुए का पेड़, काला उड़द एक प्रकार का संकर राग, एक वृत्त का नाम जिसको मुक्तहरा भी कहतेहैं।

माधवक-(स०पु०) महुए की शराब।

माधवद्रुम-(स०पु०) आमका वृक्ष।

माधवप्रिय-(स०नपु०) पीला चन्दन।

माधवश्री-(स०स्त्री०) वसन्त ऋतु की शोभा

माधवी-(सं० स्त्री०) इस नाम की लता जिसमें चमेली के समान सुगन्धित फूल लगते हैं, मदिरा, शहद से बनाई हुई चीनी, तुलसी, दुर्गा, सवैया छन्द का एक भेद, एक रागिणी का नाम।

माधवीय-(स०वि०) वसन्त सम्बन्धी।

माधवोद्भव-(स० पु०) खिरनी का पेड़।

माधी-(हि०पु०) एक राग का नाम।

माधुकर-(स० पु०) महुए की शराब।

माधुर-(स० वि०) मीठा (नपु०) चमेली का फूल।

माधुरई-(हि० स्त्री०) मधुरता, मिठास।

माधुरता-(हिं० स्त्री०) देखो मधुरता।

माधुरिया-(हिं०स्त्री०) देखो माधुरी।

माधुरी-(स०स्त्री०) मद्य, शराब, सौन्दर्य, शोभा, मधुरता, मिठास।

माधुर्य-(स० नपु०) मधुर होने का भाव, मधुरता, सुन्दरता, मिठास, मीठापन, साहित्य में वह रचना जिससे चित्त द्रवीभूत होता है और अत्यन्त प्रसन्नता आती है, वाक्य का श्लेष अर्थात् किसी वाक्य में एक से अधिक अर्थ का होना।

माधैया-(हिं०पु०) देखो माधव।

माधो-(हिं० पु०) माधव, श्रीकृष्ण, श्री रामचन्द्र।

माधौ- (हिं०पु०) देखो माधव।

माध्यन्दिन-(स०स्त्री०) दिन का मध्य भाग, दोपहर।

माध्यन्दिनी-(सं०स्त्री०) शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम

माध्यम-(स०वि०) मध्य का, बीच का।

माध्यमिक-(स० पु०) मध्यदेश का निवासी, बौद्धों का एक दार्शनिक मतभेद।

माध्यस्थ-(सं० पुं०) झगड़ा निबटाने वाला पंच, विवाह कराने वाला ब्राह्मण, कुटना, दलाल।

माध्याकर्षण-(स० नपु०) पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सर्वदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है।

माध्याह्निक-(स० वि०) मध्याह्न के समय किया जाने वाला कार्य।

माध्व-(स०पु०) मध्वाचार्य का चलाया हुआ वैष्णव धर्म का एक सम्प्रदाय।

माध्वक-(स०नपु०) महुए की शराब।

माध्विक-(स० पु०) मधु इकट्ठा करने वाला मनुष्य।

माध्वी-(सं०स्त्री०) मद्य, शराब, महुए की बनी हुई शराब।

मान-(स०नपु०) परिमाण, तौल, संगीत शास्त्र के अनुसार वह स्थान जहा ताल का विराम होता है, धन, अभिमान आदि के कारण मन में यह विचार होना कि मेरे सदृश दूसरा कोई नहीं है, सामर्थ्य, शक्ति, प्रतिष्ठा, इज्जत, अनुरक्त दम्पति का भाव विशेष ग्रह, मन्त्र, सम्मान, मानमथना-अभिमान नष्ट करना, मानरखना-प्रतिष्ठा करना, मानमनाना-जो रूठ गया हो उसको प्रसन्न करना, मानमोड़ना-अभिमान त्याग देना।

मानकच्चू-(हि० पु०) एक प्रकार का मोटा कन्द, सालन मिश्री।

मानककन्द-(हिं०पुं०) देखो मानकच्चू।

मानकलह-(स०पु०) ईर्षा, डाह।

मानक्रीडा-(स०स्त्री०)एक छन्द का नाम

मानक्षति-(स० स्त्री०) मानहानि।

मानगृह-(स० पु०) कोपभवन।

मानचित्र-(स० पु०) किसी स्थान या देश का नकशा।

मानज-(स०पु०) क्रोध, गुस्सा।

मानता-(हिं०स्त्री०) मनौती, मन्नत।

मानद-(स०वि०) बड़ाई करने वाला (पु०) विष्णु।

मानदण्ड-(स०पु०) वह डडा या लकड़ी जिससे कोई चीज़ नापी जावे।
मानधन-(स०वि०) बड़ा प्रतिष्ठित।
मानना-(हिं० क्रि०) स्वीकार करना, अगीकार करना, कल्पना करना, समझना, मान लेना, ध्यान में लाना, समझना, स्वीकार करके अनुकूल कार्य करना, किसी से बहुत प्रेम करना, धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना, चतुर या प्रवीण समझना, मन्नत करना, आदर करना मंजूर करना, ठीक मार्ग पर आना।
माननीय-(स०वि०) आदर करने योग्य, पूजनीय।
मानभङ्ग-(स०पुं०) मानहानि, बेइज्जती
मानभाव-(स०पु०) नखरा, चोचला।
मानमनौती-(हि०स्त्री०) मानता, मन्नत, रुठने और मान जाने की क्रिया, परस्पर का प्रेम।
मानमन्दिर-(स०|पु०) ग्रहों की गति आदि देखने के लिये वैज्ञानिक यन्त्रों से सुसज्जित स्थान, वेध शाला, वह एकान्त स्थान जहा पर स्त्रिया रूठकर बैठती हैं।
मानमय-(स०वि०) गर्व युक्त, घमडी।
मानमरोर-(हिं० स्त्री०) मन मुटाव।
मानमान्यता-(स०स्त्री०) प्रतिष्ठा, इज्जत
मानमोचन-(स० पु०) साहित्य के अनुसार रूठे हुए प्रिय को मनाना।
माननितव्य-(स० वि०) सम्मान करने योग्य।
मानव-(स०पु०)मनु की सन्तान, मनुष्य, आदमी।
मानवक-(स०पु०) छोटे कद का आदमी, बौना, तुच्छ आदमी।
मानवतत्व-(स० नपु०) मानव जाति का प्राकृतिक इतिहास।
मानवपति-(स० पु०) राजा।
मानवर्जित-(स०वि०)मानरहित,मानहीन।
मानवशास्त्र-(स० पु०) मानव जाति की उत्पत्ति तथा विकास का शास्त्र जिसके अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि ससार के भिन्न भिन्न भागो मे मनुष्य की कितनी जातियाँ हैं, सृष्टि के अन्यान्य जीवो में मनुष्य का क्या स्थान है मनुष्यों की सृष्टि कब और कैसे हुई और इनकी सभ्यता का विकास कैसे हुआ।
मानवास्त्र-(स०पु०) प्राचीन काल का एक अस्त्र।
मानवी-(स० स्त्री०) नारी, स्त्री, औरत (वि०) मनुष्य सबधी।
मानवीय-(स०वि०) मनुष्य सबन्धी।
मानवेन्द्र-(स०पु०) राजा।
मानस-(स० नपु०) मन, हृदय,मनुष्य, आदमी, सकल्प विकल्प, पुष्कर द्वीप के एक पर्वत का नाम, एक नाग का नाम, कामदेव, दूत, मानसरोवर, (वि०) मन से उत्पन्न,मनोभाव, मन में विचारा हुआ (क्रि०वि०) मन के द्वारा।
मानसजप-(सं० पु०) मन में ही (विना उच्चारण किये) जप करने की विधि।
मानसपुत्र-(स० पु०) पुराण के अनुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छामात्र से हुई हो।
मानसपूजा-(स० स्त्री०) किसी देवता की मन में पूजा करना जिसमें बाह्य द्रव्यों की आवश्यकता नहीं होती।
मानसर-(स०पु०) देखो मानसरोवर।
मानसरुज-(स०स्त्री०)चित्त में व्यथा होना
मानसरोवर-(हि० पु०) एक प्रसिद्ध बड़ी झील जो हिमालय पर्वत के उत्तर मे है।
मानसवेग-(स० पु०)मन का वेग,चिन्ता
मानसशास्त्र-(स० पु०) मनोविज्ञान, वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि मन किस प्रकार कार्य करता है और उसकी वृत्तिया किस प्रकार उत्पन्न होती हैं।
मानससन्ताप-(स० पु०)आन्तरिक दुःख
मानससर-(स० पु०) मानसरोवर।
मानसहस-(स० पु०) एक वृत्त का नाम जिसको रणहस भी कहते हैं।
मानसाङ्क-(स० नपु०) केवल मन मे विना लिखे पढ़े गणित करने की विधि।
मानसिक-(स० वि०) वह जो मन की कल्पना से उत्पन्न हो, मन सबन्धी (पु०) विष्णु।
मानसी-(स० स्त्री०) पुराण के अनुसार एक विद्या देवी का नाम, वह पूजा जो मन मे ही की जावे, (वि०) मन से उत्पन्न, मानसी गगा-गोवर्धन पर्वत के पास के एक सरोवर का नाम, मानसी व्यथा-मानसिक कष्ट,
मानसूत्र-कटिसूत्र, करधनी।
मानसून-(अं०पु०) भारतीय महासागर मे बहने वाली एक वायु जिसके बहने पर भारतवर्ष में वर्षा होती है।
मानहस-(स० पु०) एक वृत्त का नाम जिसको मनहस, रणहस या मानसहस कहते हैं।
मानहन्-(स०वि०) अप्रतिष्ठा करने वाला
मानहानि-(स०स्त्री०) अप्रतिष्ठा, बेइज्जती
मानहीन-(स०वि०) जिसकी अप्रतिष्ठा हुई हो।
मानहुं-(हिं०अव्य०) मानों।
माना-(हिं०पुं०)एक प्रकार का मीठा रस जो कई जाति के वृक्षों के रस से बनाया जाता है और औषधियों में प्रयोग होता है, अन्न आदि नापने का एक पात्र (क्रि०) नापना, तौलना, जाच करना, परीक्षा करना (क्रि० वि०) मानलो कि।
मानिंद-(फा० वि) तुल्य, समान।
मानिक-(हिं० पु०) माणिक्य, लाल रग का एक रत्न, पद्मराग।
मानिक खम्भ-(हि० पु०) मालखम, मलखम, विवाह में मण्डप के बीच में गाड़ने का खभा।
मानिकचदी-(हिं० स्त्री०) साधारण छोटी सुपारी।
मानिकजोड़-(हिं०पु०) एक प्रकार का बड़ा बगला।
मानिकरेत-(हि० स्त्री०) मनिक का चूरा जिससे सोनार गहना साफ करते हैं।
मानिटर-(अं० पु०) पाठशाला की कक्षा का एक प्रधान छात्र जिसको अन्य

छात्रों पर कुछ विशिष्ट अधिकार रहता है।
मानित-(स०वि०) सम्मानित, पूजित।
मानिनी-(स० स्त्री०) अभिमान युक्त स्त्री, गर्ववती स्त्री, रुष्टा स्त्री, साहित्य में वह नायिका जो अपने प्रेमी के दोष को देखकर रूठ जाती हो।
मानी-(स० वि०) अभिमानी, गर्वी, घमंडी, अहङ्कारी, सम्मानित, मनोयोगी (पु०) सिंह, शेर, साहित्य में वह नायक जो नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो (स्त्री०) घड़ा, प्राचीन काल का एक मानपात्र, कुदाल बसूला आदि का वह छेद जिसमें बेंट लगाई जाती है, चक्की के ऊपर के पाट में लगाई हुई एक लकड़ी, जिसके बीच के छेद में कीली रहती है (अ० पु० स्त्री०) अर्थ, तात्पर्य रहस्य,प्रयोजन,हेतु,कारण।
मानुख-(हिं० पु०) देखो मनुष्य।
मानुष-(स० पु०) मनुष्य, मानव, (वि०) मनुष्य का।
मानुषता-(स० स्त्री०) मनुष्य का भाव या धर्म, आदमियत।
मानुषराक्षस-(स०पु०) राक्षसी प्रकृति वाला मनुष्य, मनुष्य का शत्रु।
मानुषिक-(सं० वि०) मनुष्य सम्बन्धी, मनुष्य का।
मानुषी-(स०वि०) मनुष्य सम्बन्धी।
मानुष्य-(स०नपु०) मनुष्यत्व,आदमीयत
मानुस-(हिं०पु०) मनुष्य, आदमी।
माने-(अ० पु०) अर्थ, आशय, मतलब
मानेमाने-अप्रगट रूपसे, छिपे हुए।
मानो-(हिं०अव्य०) जैसे, गोया।
मान्थर्य-(स०नपु०) दुर्बलता, कमज़ोरी।
मान्द्य-(सं०नपु०) मन्दता, आलस्य,रोग
मान्य-(स० वि०) पूजनीय, सम्मान के योग्य प्रार्थना करने योग्य (पुं०) विष्णु, शिव, महादेव, मान्यत्व-सम्मान या पूजा।
मान्यमान-अधिक सम्मान योग्य।
मान्यवती-(स० स्त्री०) माननीया, वह स्त्री जो समझाने के योग्य हो।
मान्या-(स० स्त्री०) पूजनीया, आदर करने योग्य।
माप-(हि० स्त्री०) मापने की क्रिया या भाव, परिमाण, वह माप जिससे कोई पदार्थ मापा जावे, मान।
मापक-(स०पु०) मान, माप, वह जो मापता हो, वह जिससे कोई पदार्थ मापा जाय, पैमाना।
मापन-(स०पु०) परिमाण,तौलना,नाप।
मापना-(हि० क्रि०) किसी नियत माप से किसी पदार्थ के विस्तार, घनत्व आदि को नापना, किसी पदार्थ के परिमाण को जानने के लिये कोई क्रिया करना, नापना, मतवाला होना।
माफ़-(अ०वि०)क्षमित, क्षमा किया हुआ।
माफ़िक़त-(अ० स्त्री०) मेल, मैत्री, अनुकूलता।
माफल-(हि० पु०) एक प्रकार का खट्टा नीबू।
माफ़िक-(अ०वि०) अनुकूल, अनुसार, योग्य, लायक।
माफ़ी-(अ० स्त्री०) क्षमा, वह भूमि जिसका कर सरकार को न देना पड़े, माफ़ीदार-वह जिसको अपनी भूमि का कर नहीं देना पड़ता।
माम-(स० पुं०) मातुल, मामा, कृपण, कंजूस, (वि०) मेरा।
माम-(हिं० पुं०) अहङ्कार, ममता, अधिकार, शक्ति।
मामक-(स० वि०) ममता युक्त, मेरा (पु०) मामा।
मामकीन-(स० वि०) मेरा।
ममता-(हिं०स्त्री०) आत्मीयता, अपनापन, प्रेम, मुहब्बत।
मामरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष।
मामलत, मामलति-(अ०स्त्री०) व्यवहार की वार्ता, मामला, विवाद का विषय।
मामला-(हि० पु०) व्यापार, उद्यम, काम धंधा, परस्पर का व्यवहार, यथा लेनदेन, बेचा बिक्री आदि, व्यापारिक या व्यवहारिक विषय झगड़ा, विवाद, प्रधान विषय, स्त्रीप्रसंग, मुकदमा, तय की हुई बात, सुन्दर स्त्री, कौल-क़रार, मुक़दमा।
मामा-(हि० पु०) माता का भाई (फा० स्त्री०) माता, मा, बुढ़िया, नौकरनी, दाई, रोटी पकाने वाली स्त्री।
मामिला-(हि०पु०) देखो मामला।
मामी-(हि० स्त्री०) मामा की स्त्री, मा की भौजाई। (स० स्त्री०) अपने दोष पर ध्यान न देना।
मामूँ-(हिं०पु०) माता का भाई, मामा।
मामूल-(अ० पु०) टेव, लत, परिपाटी, रीति, रेवाज, वह धन जो किसी के रीति रेवाज के कारण दिया जाता हो।
मामूली-(अ०वि०) सामान्य, साधारण, नियमित।
माय-(हिं० स्त्री०) जननी, माता, माँ, किसी वृद्ध स्त्री के लिये सम्बोधन का शब्द, देखो, माया (अव्य०) देखो माहि।
मायक-(स० पु०) माया करने वाला, मायावी।
मायका-(हि० पु०) नैहर, पीहर।
मायन-(हि० पु०) वह दिन या तिथि जिसमें मातृकापूजन और पितृ-निमन्त्रण होता है, इस दिन का कृत्य, मातृका पूजन आदि।
मायनी-(अ०स्त्री०) अर्थ, मतलब, देखो मायाविनी।
मायल-(फा०वि०) प्रवृत्त, झुका हुआ, मिश्रित, मिला हुआ।
माया-(स० स्त्री०) छल पूर्ण रचना, इन्द्रजाल आदि, जादू, दया, कृपा, चालबाजी, धूर्तता, शठता, बदमाशी, प्रज्ञा, ज्ञान, लक्ष्मी, धन, सम्पत्ति, प्रकृति, अज्ञान, अविद्या, भ्रम, गौतम बुद्ध की माता का नाम मय दानव की कन्या का नाम जिसके गर्भ से त्रिशिरा, सूर्पनखा, खर और दूषण उत्पन्न हुए थे, इन्द्रवज्रा नामक वर्णवृत्त का एक भेद, कोई आदरणीय स्त्री, ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उनकी आज्ञा से सब कार्य करती है, किसी देवता को लीला शक्ति, इच्छा

या प्रेरणा (हिं० स्त्री०) ममता, दया, कृपा।

मायाकार–(स० पु०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर।

मायाचार–(स० वि०) मायावी।

मायाजीवी–(स० पु०) जादूगरी से जीविका निर्वाह करने वाला।

मायाद–(सं० पु०) कुम्भीर, मगर।

मायादेवी–(स० स्त्री०) बुद्धदेव की माता का नाम।

मायाधर–(सं० स्त्री०) मायावी, ऐन्द्रजालिक, जादूगर, भ्रान्तिजनक, राक्षस।

मायापटु–(स०पु०) मायावी मनुष्य।

मायायन्त्र–(सं०नपु०) किसी को मोहने की विद्या।

मायारवि–(सं० पु०) सपूर्ण जाति का एक राग।

मायावति–(स० स्त्री०) कामदेव की स्त्री, रति।

मायावाद–(स० पु०) वेदान्त का वह सिद्धान्त जो ईश्वर के सिवाय संपूर्ण संसार को असत्य और अनित्य तथा असार मानता है।

मायावादी–(स०पु०) ईश्वर के सिवाय प्रत्येक वस्तु को अनित्य मानने वाला, वह जो सम्पूर्ण सृष्टि को माया या भ्रम समझता है।

मायाविनी–(स० स्त्री०) छल कपट करने वाली स्त्री, ठगिनी।

मायावी–(स० वि०) बड़ा चालाक या धोखेबाज़, ऐन्द्रजालिक(पु०) बिल्ली, एक दानव का नाम जिसका पुत्र मय था, जादूगर, परमात्मा।

मायावीज–(स०पु०) ह्रीं नामक तान्त्रिक मन्त्र।

मायास्त्र–(सं० पु०) एक प्रकार का कल्पित अस्त्र।

मायिक–(स०नपु०) मायाफल, माजूफल, (पु०) ऐन्द्रजालिक (वि०) माया से बना हुआ, जाली, मायावी, बनावटी।

मायी–(हिं० स्त्री०) देखो माई।

मायुराज–(स० पु०) कुवेर के एक पुत्र का नाम।

मायूर–(स०वि०) मयूर सबधी, मोर का।

मायूरिक–(स० पु०) मोर पकड़ कर बेंचने वाला।

मायूस–(फा०वि०) निराश, नाउम्मेद।

मायूसी–(फा०स्त्री०) निराशा, नाउम्मेदी।

मार–(स० पुं०) मरण, कामदेव, मारने की क्रिया या भाव, मारण, विघ्न, धतूरा, आघात, मारपीट, (हिं०अव्य०) अत्यन्त, वहुत (हिं०स्त्री०) देखो माला।

मारकंडे–(हिं० पु०) देखो मार्कण्डेय।

मारक–(सं०वि०) सहारक, हत्या करने वाला, किसी वस्तु के प्रभाव को नष्ट करने वाला, (पु०) वाज़ पक्षी।

मारका–(अ० पुं०) चिह्न, निशान, कोई विशेषता दिखलाने वाला चिह्न, युद्ध, लड़ाई, कोई महत्व पूर्ण घटना।

मारकाट–(हिं० स्त्री०) मारने काटने का भाव या कार्य, युद्ध, लड़ाई।

मारकीन–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।

मारखोर–(फा० पुं०) एक प्रकार की पहाड़ी बकरी या भेंड़।

मारग–(हिं० पु०) देखो मार्ग, रास्ता, मारग मारना–रास्ते में यात्री को लूट लेना, मारग लगना–रास्ता पकड़ना।

मारगन–(हिं० पुं०) देखो मार्गण, वाण, तीर, भिखमगा।

मारजन–(हिं०पु०) देखो मार्जन।

मारजनी–(हिं०स्त्री०) देखो मार्ज़नी।

मारजातक–(स०पु०) मार्जार, बिल्ली।

मारजार–(हिं० पु०) देखो मार्जार, बिल्ली।

मारजित्–(स०पु०) वह जिसने कामदेव को जीत लिया हो, बुद्धदेव का एक नाम।

मारट–(सं० नपु०) ऊख की जड़।

मारण–(स० नपुं०) वध, हत्या करना, जान से मार डालना, वह तान्त्रिक क्रिया जिसके द्वारा मृत्यु व्याधि आदि अनिष्ट उत्पन्न होता है, आयुर्वेद में किसी धातु या रत्न को भस्म करने की क्रिया।

मारतंड–(हिं० पु०) देखो मार्तण्ड।

मारतौल–(हिं० पु०) एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।

मारना–(हिं० क्रि०) वध करना, हत्या करना, प्राण लेना, आघात पहुचाना, दुःख देना, सताना, शस्त्र आदि फेंकना, धातु आदि को जलाकर भस्म करना, अनुचित रीति से किसी की वस्तु को ले लेना, वल या प्रभाव कम करना, निर्जीव कर देना, विजय प्राप्त करना, जीतना, लगाना, देना, सभोग करना, डसना, काटना, बिना परिश्रम के प्राप्त करना, गुप्त रखना, छिपाना, किसी आवेग को रोकना, नष्ट करना, अन्त करना, शिकार करना, आखेट करना, बन्द करना, कुश्ती में विपक्षी को हराना, ठोंकना, पीटना, टकराना, गोली मारना–बदूक से गोली चलाकर किसी जीव को मारना, जादू मारना–जादू का प्रयोग करना।

मारपेच–(हिं० पु०) वह युक्ति जो किसी को धोखे में रख कर उसकी हानि के लिये की जावे, धोखेबाज़ी।

मारफ़त–(अ०अव्य०) द्वारा, जरिये से।

मारवा–(हिं०पु०) एक सकर राग का नाम, मारवाड़–राजपूताने का सबसे बड़ा सामन्त राज्य, मेवाड़।

मारवाड़ी–(हिं०पु०) मारवाड़ देश में रहने वाला (वि०) मारवाड़ देश सबधी (स्त्री०) इस देश की भाषा।

मारवी–(स०स्त्री०) सगीत की एक मात्रा।

मारवीज–(स० नपु०) एक प्रकार का मन्त्र।

मारात्मक–(स० वि०) सघाती, प्राणनाशक।

मारा–(हिं०वि०) निहत, मारा हुआ। मारा फिरना–बिना काम के इधर उधर भटकते रहना।

मारामार–(हिं० क्रि० वि०) बहुत तेज़ी से, वड़ी जल्दी, देखो मारपीट।

मारिच–(हिं०पु०) देखो मारीच।
मारित–(सं०वि०)जो मार डाला गया हो
मारिष–(सं०पु०) नाटक का सूत्रधार
मारिषा–(सं०स्त्री०)दक्ष की माता का नाम
मारी–(सं०स्त्री०) चण्डी, माहेश्वरी शक्ति, ऐसा सक्रामक रोग जिसके कारण से बहुत से लोग एक साथ मरें, मरी रोग।
मारीच–(सं०पु०) रामायण के अनुसार रावण का भेजा हुआ वह राक्षस जिसने सोने का मृग बन कर श्रीरामचन्द्रको धोखा दिया था, कश्यप, याजक ब्राह्मण।
मारीची–(सं० स्त्री०) माया देवी का एक नाम।
मारीमृत–(सं० वि०) जिसकी मृत्यु महामारी में हुई हो।
मारीष–(सं० पु०) मरसे का साग।
मारुण्ड–(सं० पु०) सर्प का अडा, गोबर का घेरा।
मारुत–(सं० पु०) वायु, हवा, वायु का अधिपति देवता, मारुतसुत–हनुमान्, भीम।
मारुताशन–(सं०पु०) सर्प, कार्तिकेय, (वि०) केवल हवा पीकर रहने वाला।
मारुताश्व–(सं० पु०) हवा के समान तेज चलने वाला घोड़ा।
मारुति–(सं० पु०) हनुमान्, भीम।
मारू–(हिं० पुं०) वह राग जो युद्ध के समय गाया बजाया जाता है, बड़ा नगाड़ा, जगी धौंसा (वि०) हृदय विदारक, कष्ट देने वाला, मारने वाला, (हिं० पु०) मरुदेश का रहने वाला।
मारूत–(सं० पु०) हनुमान् (हिं०स्त्री०) घोड़े के पिछले पैर की एक भौंरी।
मारे–(हिं०अव्य०) कारण से, वजह से।
मार्क–(अं० पु०) चिह्न, निशान।
मार्कट–(सं० वि०) मर्कट सम्बन्धी।
मार्कण्डेय–(सं० पु०) मृकण्डु ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से मृत्यु को परास्त करके चिरजीवी हुए हैं, जन्मतिथि तथा सस्कारादि कार्य में इनकी पूजा की जाती है।
मार्का–(अं० पु०) सकेत, कोई अक या चिह्न जो किसी विशेष बात का सूचक हो।
मार्केट–(अं०पुं०) हाट, बाजार।
मार्ग–(सं० पु०) पथ, रास्ता, मृगमद, कस्तूरी अगहन का महीना, मृगशिरा नक्षत्र, अन्वेषण, खोज विष्णु।
मार्गक–(सं० पु०) अगहन का महीना।
मार्गण–(सं० नपु०) अन्वेषण, ढूँढना, परीक्षा करना, प्रार्थना, (पु०) भिखमगा, शर बाण।
मार्गणता–(सं०स्त्री०) याचकता।
मार्गतोरण–(सं०नपु०) बाहरी फाटक।
मार्गधेनु–(सं० पु०) एक योजन का परिमाण।
मार्गन–(हिं०पुं०) देखो मार्गण।
मार्गपाली–(सं० स्त्री०) स्तम्भ, खभा।
मार्गबन्धन–(सं०नपु०) रास्ता रोकना।
मार्गरक्षक–(सं०पु०) पथरक्षक, पहरेदार।
मार्गशाखी–(सं०पु०) रास्ते पर लगाये हुए वृक्ष।
मार्गशीर्ष–(सं०पु०) अगहन का महीना
मार्गिक–(सं०पु०) पथिक, यात्री।
मार्गित–(सं०वि०) अन्वेषित, खोजा हुआ
मार्गितव्य–(सं० वि०) अन्वेषण करने के योग्य।
मार्गिन्–(सं० पु०) मार्ग पर चलने वाला, यात्री।
मार्गी–(सं०पुं०) सगीत में एक मूर्छना का नाम।
मार्गेश–(सं०पुं०) मार्गपति।
मार्ग्य–(सं० वि०) मार्जनीय, मार्जन करने योग्य।
मार्च–(अं०पु०) अंग्रेजी वर्ष का तीसरा महीना जिसमें ३१ दिन होते हैं।
मार्जक–(सं० वि०) साफ करने वाला (पु०) रजक, धोबी।
मार्जन–(सं० नपु०) साफ करने का काम, वैदिक सन्ध्या करती समय मन्त्र पढ़कर जल छिड़कना।
मार्जना–(सं०स्त्री०) मार्जन, सफाई, मृदग की बोल, क्षमा, माफी।
मार्जनी–(सं०स्त्री०) झाड़ू।
मार्जनीय–(सं०वि०)परिष्कार करने योग्य
मार्जार–(सं० पु०) बिडाल, बिल्ली, अहकार के लिये जप करने वाले को मार्जार तपस्वी कहते हैं।
मार्जारक–(सं०पु०) मयूर, मोर, बिल्ली।
मार्जारी टोड़ी–(हिं०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति का एक रागिणी।
मार्जित–(सं०वि०) मार्जन किया हुआ, साफ किया हुआ।
मार्तण्ड–(सं० पु०) शूकर, सुवर्णमाक्षिक, सूर्य, मार्तण्डमूल–अश्ववन की जड़।
मार्त्य–सं०वि०) शरीर का मैल।
मार्दङ्ग–(सं०पु०) मृदग बजाने वाला।
मार्दव–(सं० नपु०) दूसरे को दुःखी देखकर स्वय दुःखी होना, अहकाररहित होना, सरलता।
मार्दवीकृत–(सं०वि०)मुलायम किया हुआ
मार्फत–(अ०अव्य०) द्वारा, जरिये से।
मार्मिक–(सं०वि०) विशेष प्रभावशाली, मर्म स्थान पर प्रभाव डालने वाला।
मार्मिकता–(सं० स्त्री०) मार्मिक होने का भाव, किसी वस्तु को मर्म तक पहुँचाने का भाव।
माल–(सं० नपुं०) वन, जगल, क्षेत्र, कपट, हरताल, जनलोक, विष्णु।
माल–(हिं० स्त्री०) माला, हार, पक्ति, (फा०पु०) चरखे के टेकुए को घुमाने की रस्सी, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बनी हो, युवती स्त्री, गणित में वर्ग का घात, स्वादिष्ट भोजन, फस्ल की उपज, धन, सपत्ति, सामग्री, सामान, क्रय विक्रय पदार्थ, मालगुजारी, (हिं०पु०) देखो मल्ल, पहलवान, माल चीरना–दूसरे का धन हरण करना, माल टाल–धन दौलत।
मालकगनी–(हिं० स्त्री०) वृक्षों पर फैलने वाली एक पहाड़ी लता जिसके बीजों का तेल निकाला जाता है।
मालका–(सं० स्त्री०) माला।
मालकुण्डा–(हिं० पुं०) नील रखने का मटका।

मालकोश-(सं० पु०) सम्पूर्ण जाति का एक राग, जिसको कौशिक राग भी कहते हैं।

मालमोस-(हिं० पु०) देखो मालकोश।

मालखाना-(फा० पु०) माल असबाब रखने का स्थान, तोशकखाना।

मालगाड़ी-(हिं० पु०) रेल की वह गाड़ी जिसमें केवल माल असबाब भर कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है।

मालगुजार-(फा० पु०) मालगुजारी देने वाला पुरुष।

मालगुजारी-(फा० स्त्री०) वह भूमि कर जो जमीदार से सरकार वसूल करती है, लगान।

मालगुर्जरी-(सं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।

मालगोदाम-(हिं० पु०) वह स्थान जहाँ पर व्यापार का माल जमा रहता है, रेल के स्टेशनों पर वह स्थान जहाँ मालगाड़ी से भेजा जाने वाला अथवा आया हुआ माल रहता है।

मालटा-(अं० स्त्री०) एक प्रकार की लाल रंग की नारंगी जो बड़ी स्वादिष्ट होती है।

मालतिका-(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक अनुचरी।

मालती-(सं० स्त्री०) वृक्षों पर घनी फैलने वाली एक लता जिसमें सुगंधित सफेद फूल होते हैं,युवती, बारह अक्षरों के एक वर्णिक वृत्त का नाम, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छ अक्षर होते हैं, रात्रि, चाँदनी, पाठा, जायफल का वृक्ष।

मालतीटोड़ी-(हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।

मालतीपत्रिका-(सं० स्त्री०) जावित्री।

मालतीफल-(सं० नपुं०) जातीफल, जायफल।

मालदह-(हिं० पु०) एक प्रकार का आम जो विहार प्रान्त में विशेष करके होता है।

मालदही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का रेशमी डोरिये का कपड़ा, एक प्रकार की छप्पर लगी हुई नाव।

मालदार-(फा० पु०) धनवान, धनी, अमीर।

मालद्वीप-(हिं० पु०) भारत सागर के अन्तर्गत सिंहल के समीप एक द्वीपपुञ्ज।

मालपूआ-(हिं० पु०) एक प्रकार का मीठा पकवान जो पूरी की तरह का होता है।

मालपूवा-(हिं० पु०) देखो मालपूआ।

मालबरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की ईख।

मालभंडारी-(हिं० पु०) जहाज।

मालय-(सं० पुं०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम, व्यापारियों का झुंड, वह स्थान जहाँ कोई प्रेमी अपनी नायिका से मिलता है, पद्मकाष्ठ, श्रीखण्ड चंदन, (वि०) मलयगिरि सम्बन्धी।

मालव-(सं० पु०) अवन्ति देश, मालवा देश, एक राग का नाम जिसको भैरव भी कहते हैं, मालवा देश निवासी।

मालवक-(सं० वि०) मालवा का रहने वाला

मालवगौड़-(सं० पु०) एक संकर राग का नाम।

मालवश्री-(सं० स्त्री०) श्रीराग की एक रागिणी का नाम।

मालवा-(हिं० पु०) मध्य भारत का एक प्रदेश।

मालवी-(सं० स्त्री०) श्रीराग की एक रागिणी।

मालवीय-(सं० वि०) मालवा देश सम्बन्धी, मालवा देश का रहने वाला।

मालसी-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।

माला-(सं० स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, अवलि, गले में पहरने का फूलों का हार, गजरा, जप करने की माला, एक प्रकार की दूब, भुईं आमला, उपजाति छन्द का एक भेद, **माला फेरना**-जप करना, **उलटी माला फेरना**-किसी का अहित चाहना।

मालाकार-(सं० पु०) माला बनाने वाला, माली।

मालागुण-(सं० पु०) माला गूथने का सूत, गले में पहरने का गहना।

मालादीपक-(सं० नपुं०) एक अर्थालंकार जिसमें पूर्व कथित वस्तु को उत्तरोत्तर वस्तु के उत्कर्ष का हेतु बतलाया जाता है।

मालाधार-(सं० वि०) माला धारण करने वाला, (पु०) सत्रह अक्षरों के एक वर्णिक वृत्त का नाम।

मालाफल, मालामणि-(सं० पु०) रुद्राक्ष।

मालामाल-(फा० वि०) धन धान्य से परिपूर्ण, सपन्न।

मालावती-(सं० स्त्री०) एक संकर रागिणी का नाम।

मालिक-(अ० पु०) ईश्वर, अधिपति, स्वामी, पति, शौहर।

मालिका-(सं० स्त्री०) पंक्ति, माला, चमेली, अंगूर की शराब, मालिन।

मालिकाना-(फा० पु०) मालिक का अधिकार।

मिलकियत-(क्रि० वि०) मालिक की तरह।

मालिकी-(फा० स्त्री०) मालिक होने का भाव, मालिक का स्वत्व।

मालिनी-(सं० स्त्री०) मालिन, गौरी, गंगा, चम्पा नगरी का एक नाम, एक मातृका का नाम, जवासा का पौधा, स्कन्द की सात माताओं में से एक, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं, द्रौपदी का एक नाम, मदिरा नाम की वृत्ति।

मालिन्य-(सं० नपुं०) मलिनता, मैलापन, अन्धकार, अंधेरा, पाप, बुरी वृत्ति।

मालियत-(अ० स्त्री०) मूल्य, कीमत, धन, सम्पत्ति, मूल्यवान पदार्थ।

मालिया-(हिं० पुं०) मोटे रस्सों में दी जाने वाली एक प्रकार की गाठ।

मलिवान-(हिं० पु०) देखो माल्यवान्।

मालिश-(फा० स्त्री०) मर्दन, मलने की क्रिया मलाई।

माली-(हिं० पु०) फूल बेंचने वाली जाति विशेष, वह पुरुष जो बगीचों में पेड़ पौधे लगाने और सींचने का काम करता है, (वि०) माला पहिरे हुए, वाल्मीकीय रामायण के अनुसार सुकेश

राक्षस के पुत्र का नाम, एक छन्द जिसका दूसरा नाम राजीवगण है, (फा० वि०) आर्थिक, धन सबधी।

मालीदा–(फा० पु०) एक प्रकार का बहुत कोमल ऊनी वस्त्र, मलीदा, चूरमा।

मालीय–(स०वि०) माली सबंधी, माली का

मालु–(स० पु०) वृक्ष में लपटने वाली एक लता का नाम।

मालुक–(स० पु०) श्यामा तुलसी।

मालूम–(अ० वि०) ज्ञात, जाना हुआ।

मालूर–(स० पु०) कैथ का वृक्ष, बेल का पेड़।

मालैया–(स० स्त्री०) बड़ी इलायची।

मालोपमा–(स०स्त्री०) उपमा अलकार का एक भेद जिसमें एक उपमेय के अनेक उपमान होते हैं तथा प्रत्येक उपमान के धर्म भिन्न होते हैं।

माल्य–(स०नपु०) पुष्प, फूल, सिर पर धारण करने की माला।

माल्यजीवक–(सं०पु०) मालाकार, माली।

माल्यवती–(स०वि०) माला पहिरे हुए।

माल्यवन्त–(स०पु०) देखो माल्यवान्।

माल्यवान्–(सं०पु०) पुराणों के अनुसार एक पर्वत का नाम, सुकेश के पुत्र का नाम जो एक राक्षस था, यह माली और सुमाली का भाई था।

माल्ला–(स० पु०) देखो मल्लाह, धीवर जाति।

मावत–(हि० पु०) देखो महावत।

मावली–(हि० पु०) दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति, शिवाजी की सेना में इस जाति के अधिक सिपाही थे।

मावा–(हिं० पु०) पीच, माड़, सत्व, प्रकृति, खोया, अडे के भीतर का रस, ज़र्दी, मसाला, सामान, खमीर।

माश–(हि०पु०) देखो माष।

माशा–(हिं०पु०) एक तोले का बारहवा भाग, आठ रत्ती का एक मान या बाँट।

माशी–(हि०पुं०) एक प्रकार का रग जो कालापन लिये हरा होता है।

माशूक–(अ०पु०) प्रेमपात्र, वह जिसके साथ प्रेम किया जाय।

माशूकी–(फा० स्त्री०) प्रेमपात्रता।

माष–(सं० पु०) उड़द, परिमाण विशेष, माशा, शरीर पर का मसा जो काले रग का होता है।

माषक–(सं० पुं०) पाच रत्ती का परिमाण, उड़द।

माषपर्णी–(स० स्त्री०) वनमाष, जगली उड़द।

माषवटी–(स०स्त्री०) उड़द की बड़ी।

माषाद–(स० पु०) कच्छप, कछुआ।

मास–(स०पु०) वर्ष का बारहवा भाग, महीना, जितने दिनों तक सूर्य एक राशि में रहते हैं वह सौरमास कहलाता है, तिथि घटित मास को चान्द्रमास कहते हैं, **मासजात**–जिसको उत्पन्न हुए केवल एक महीना हुआ हो, **मासताला**–करताल, **मासपूर्व**–एक महीना पहले, **मासप्रवेश**–महीने का आरम होना।

मासना–(हि० क्रि०) मिलना, मिलाना।

मासवृद्धि–(स० स्त्री०) अण्ड वृद्धि का रोग, गलगण्ड, घेघा।

मासल–(सं०वि०) देखो मासल, हृष्टपुष्ट

मासा–(हिं० पु०) देखो माशा।

मासान्त–(स० पुं०) एक महीने का अन्त, अमावास्या, सक्रान्ति दिन।

मासिक–(स०वि०) मास संबधी, महीने का, महीने में एक बार होने वाला, (पु०) मासिक वेतन।

मासी–(हिं०स्त्री०) मा की बहन, मौसी

मासुरी–(स० स्त्री०) मासी, मौसी। चीरफाड़ का एक प्राचीन अस्त्र।

मासोपवास–(स० पु०) एक महीने तक अनशन व्रत।

मास्टर–(अ० पु०) स्वामी, मालिक, शिक्षक, गुरु, उस्ताद, किसी विषय में प्रवीण, बालकों के लिये व्यवहार किया जाने वाला शब्द।

मास्टरी–(अ०स्त्री०) मास्टर का कार्य, प्रवीणता, अध्यापकी।

माह–(स० पुं०) माष, उड़द (फा०पु०) महीना।

माहत–(स० नपु०) महत्व, बड़ाई।

माहताब–(फा० पुं०) चन्द्रमा।

माहताबी–(फा०स्त्री०) देखो महताबी, एक प्रकार का कपड़ा जिसपर सोने या चादी के बादले से सूर्य चन्द्रमा की आकृति बनी रहती है, तरबूज़, चकोतरा नीबू, घरके आगन के बीच का ऊचा चबूतरा।

माहन–(स० पु०) ब्राह्मण।

माहना–(हि० क्रि०) देखो उमाहना।

माहनीय–(स० वि०) पूजनीय, श्रेष्ठ।

माहर–(हि० वि०) देखो माहिर।

माहली–(हि० पु०) वह पुरुष जो अन्तःपुर (जनानखाने) में आता जाता हो, ख्वाजा, सेवक, दास।

माहवार–(फा० पु०) महीने का वेतन (वि०) प्रति मास, महीने महीने, हर महीने का।

माहवारी–(फा० वि०) हर महीने का, मासिक।

माहाँ–(हि०अव्य०) देखो महँ।

माहाकुल–(स०वि०) जिसका जन्म उच कुल में हुआ हो।

माहात्मिक–(स०वि०) माहात्म्य सबधी।

माहात्म्य–(स० नपु०) महिमा, बड़ाई, महत्व, गौरव, आदर, सम्मान।

माहाराज्य–(स०नपु०) महाराज का पद या मर्यादा।

माहाराष्ट्र–(स०वि०) महाराष्ट्र सबधी।

माहिं–(हि०अव्य०) भीतर, अन्दर, में, पर।

माहिन–(सं० वि०) पूजनीय, खूब बढ़ा हुआ।

माहियत–(अ०स्त्री०) तत्व, भेद, प्रकृति, विवरण।

माहियाना–(फा०वि०) माहवार (पु०) मासिक, वेतन।

माहिर–(अ०वि०) तत्वज्ञ, जानकार।

माहिला–(हि० पु०) मल्लाह, माझी।

माहिष–(स०वि०) भैंस सबधी।

माहिषिक–(स०पुं०) व्यभिचारिणी स्त्री का पति।

माहिष्मती–(स०स्त्री०) भारतवर्ष की एक

अति प्राचीन नगरी का नाम जो दक्षिण देश मे थी ।
माहीं-(हि०अव्य०) देखो माहि ।
माही-(फा० स्त्री०) मत्स्य, मछली, माहीगीर-मछली पकड़ने वाला, मछुआ, माही पुरत-मछली की पीठ की तरह बीच में उभड़ा हुआ, माही मरातिव-राजाओ के आगे हाथी पर चलने वाले सात झडे जिन पर अलग अलग सातो ग्रहो आदि की आकृतिया कारचोबी पर बनी रहती हैं
माहुर-०(हि०पु०) विष, ज़हर ।
माहेन्द्र-(स०वि०,जिसका देवता इन्द्र हो, इन्द्र सबन्धी, एक अस्त्र का नाम ।
महेन्द्री-(स० स्त्री०) इन्द्राणी, इन्द्र की शक्ति, गाय, सात मातृकाओं मे से एक।
माहेय-(स०वि०) मिट्टी का बना हुआ (पु०) मगल ग्रह, विद्रुम, मू गा ।
माहेश-(स०वि०) महेश सबन्धी ।
माहेशी-(स०स्त्री०) दुर्गा ।
माहेश्वर-(स०वि०) महेश्वर संबन्धी, एक यज्ञ का नाम, एक उपपुराण का नाम, शैव सम्प्रदाय का एक भेद,एक अस्त्र का नाम ,पाणिनि के अइउण्, ऋलृक् आदि चौदह सूत्र जिन मे स्वर और व्यञ्जन वर्णो का सग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है
माहेश्वरी-(स० स्त्री०) दुर्गा, एक मातृका का नाम, वैश्यों की एक जाति ।
मिं-चीन देश की एक जाति का नाम ।
मिंगनी-(हि०स्त्री०) देखो मेंगनी ।
मिंगी-(हि०स्त्री०) देखो मींगी ।
मिंट-(अं० पु०) वह स्थान जहाँ सिक्के ढलते हैं, टकसाल, टकसाली सोना ।
मिंड़ाई-(हिं०स्त्री०) मीड़ने या मींजने की क्रिया या भाव, मींड़ने की मज़दूरी, देशी छींट की छपाई में एक क्रिया जो कपडे को छापने के बाद और धोने के पहले की जाती है ।
महदी-(हि०स्त्री०) देखो मेंहदी ।
मिआद-(अ०स्त्री०) देखो मीआद ।
मिआदी-(हि०वि०) देखो मीयादी ।
मिआन-(फा०वि०) देखो मिआना ।

मिक़द-(फा०स्त्री०) मलद्वार, गुदा ।
मिक़दार-(अ०स्त्री०) परिमाण, मात्रा ।
मिकनातीस-(फा० पु०) चुम्बक पत्थर ।
मिकाडो-जापान के सम्राट् की उपाधि ।
मिचकना-(हि०क्रि०) पलकों का झपकना या बन्द होना ।
मिचकाना-(हिं०क्रि०) बार बार आँखें खोलना या बन्द करना,आँखें मिचकाना
मिंचना- (हिं०क्रि०) आखें बन्द होना ।
मिचना-(हि०क्रि०)आँखों का बन्द होना।
मिचलाना-(हिं०क्रि०) उबकाई आना, मतली आना ।
मिचवाना-(हि० क्रि०) दूसरे से आख बद कराना ।
मिचोलना-(हि०क्रि०) देखो मीचना ।
मिछा-(हि०वि०) देखो मिथ्या ।
मिज़राव-(अ०स्त्री०) तार का बना हुआ एक प्रकार का छल्ला जिसको अगुली में पहन कर सितार बजाया जाता है ।
मिज़ाज-(अ० पु०) किसी पदार्थ का मूल गुण, तासीर, शरीर या मन की दशा, तबीयत, स्वभाव, अभिमान, शेखी, घमड , मिज़ाज खराब होना-अस्वस्थ होना , मिज़ाज बिगाड़ना-क्रुद्ध होना , मिज़ाज पाना-किसी के स्वभाव से परिचित होना , मिज़ाज पूछना-क्षेम कुशल पूछना , मिज़ाज न मिलना-अभिमान के कारण किसी से न बोलना ।
मिज़ाज आली-(अ० स्त्री०) एक वाक्याश जिसका व्यवहार किसी का कुशल क्षेम पूछने के समय किया जाता है ।
मिज़ाजदार-(अ० वि०) अभिमानी, घमडी ।
मिज़ाजपीटा-(हिं०वि०) बड़ा अभिमानी।
मिज़ाज पुरसी-(फा० स्त्री०) किसी से उसकी तबियत का हाल पूछना ।
मिज़ाज शरीफ़-(अ०पु०) वह वाक्याश जिसका व्यवहार किसी के शरीर का कुशल क्षेम पूछने के लिये किया जाता है ।

मिझोना-(हि०पुं०) हल में खडे बल में लगी हुई लकड़ी ।
मिटका-(हि०पु०) देखो मटका ।
मिटना-(हिं० क्रि०) किसी अंकित चिह्न आदि का लुप्त हो जाना, नष्ट होना, खराब होना, रद्द होना, न रह जाना ।
मिटाना-(हि० क्रि०) रेखा, चिह्न आदि को पोछ देना या हटाना, नष्ट कर देना, रद्द करना, रहने न देना, खराब करना, बरबाद करना ।
मिटिया-(हि० स्त्री०) मिट्टी का छोटा बरतन, मटकी (वि०) मिट्टी का बना हुआ ।
मिटियाना-(हि० क्रि०) मिट्टी लगाकर साफ करना, रगड़ना या चिकनाना ।
मिटियाफूस-(हिं०वि०) जो दृढ न हो, बहुत कमज़ोर ।
मिटियामहल-(हिं० पु०) मिट्टी का मकान झोपड़ी ।
मिट्टी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, ज़मीन, राख, भस्म, धूल, शरीर, देह, शव, लाश, शरीर की बनावट, चन्दन का तेल या इत्र जिसपर दूसरे इत्र बनाये जाते हैं , मिट्टी करना-नष्ट करना, खराब करना , मिट्टी के मोल-बहुत सस्ते दाम पर , मिट्टी डालना-किसी ऐब को छिपा देना , मिट्टी देना-कब्र में मुरदा रखने के बाद उसमें लोगो का तीन तीन मुट्ठी मिट्टी डालना , कब्र में गाड़ना , मिट्टी में मिलजाना-अच्छी तरह से नष्ट भ्रष्ट हो जाना , मिट्टी का पुतला-मनुष्य का शरीर, मिट्टी की खराबी-दुर्दशा, नाश , मिटी पलीद करना-दुर्दशा या खराबी करना ।
मिट्टी का तेल-(हिं० पु०) एक तरल खनिज पदार्थ जो दीपक जलाने आदि के काम मे आता है ।
मिट्टी का फूल-(हिं०पु०)भूमि पर जमने वाला एक प्रकार का क्षार, रेह ।
मिट्टीखरिया-(हि०स्त्री०) देखो खड़िया ।

मिट्ठा-(हिं० वि०) देखो मीठा ।
मिट्ठी-(हिं०स्त्री०) चुम्बन, चूमा, बोसा ।
मिट्ठू-(हिं० वि०) मीठा बोलने वाला, (वि०) चुप रहने वाला, न बोलने वाला, मधुरभाषी, (पु०) तोता ।
मिठ-(हिं० वि०) "मीठा" शब्द का संक्षिप्त रूप, इसका व्यवहार प्रायः यौगिक शब्द बनाने के लिये होता है और यह किसी शब्द के पहले जोड़ा जाता है ।
मिठबोलना, मिठबोला-(हिं० वि०) मधुरभाषी, मीठा बोलने वाला ।
मिठलोना-(हिं०वि०)थोडे नमक वाला ।
मिठाई-(हिं० स्त्री०) मीठा होने का भाव, मिठास, कोई मीठी खाने की चीज़, कोई अच्छा पदार्थ ।
मिठास-(हिं० स्त्री०) मीठा होने का भाव, माधुर्य, मीठापन ।
मिठौरी-(हिं० स्त्री०) पीसे हुए उड़द या चने की बनी हुई बरी ।
मिड़ाई-(हिं० स्त्री०) देखो मिंड़ाई ।
मिडिल-(अं० वि०) किसी पदार्थ का मध्य, बीच (पु०) शिक्षा क्रम में एक छोटी कक्षा । मिडिलची-वह जो मिडिल परीक्षा पास हो, मिडिल स्कूल-वह विद्यालय जिसमें केवल मिडिल तक की पढाई होती हो।
मितंग-(हिं० पु०) हस्ती, हाथी ।
मित-(स०वि०) परिमित, जो सीमा के भीतर हो, कम,थोड़ा, क्षिप्त फेंका हुआ।
मितभाषी-(स०वि०) स्वल्प भाषी, थोड़ा बोलने वाला ।
मितभुक्त-(स०वि०) थोड़ा खाने वाला ।
मितमति-(स०वि०) अल्पमति, थोड़ी बुद्धि वाला ।
मितव्यय-(स०पु०) कम खर्च करना, किफायत ,
मितव्ययता-(स० स्त्री०) कम खर्चा, किफायतशारी ।
मितव्ययी-(स० वि०) परिमित व्यय करने वाला, किफायत करने वाला ।
मितशायी-(स० वि०) बहुत कम सोने वाला ।
मिताई-(हिं० स्त्री०) मित्रता, दोस्ती ।
मिताक्षरा-(स० स्त्री०) याज्ञवल्क्य स्मृति की टीका जिसको ज्ञानेश्वर ने बनाया था ।
मिताचार-(स०पु०) परिमित आचार
मितार्थ-(सं० पुं०) परिमित अर्थ, वह दूत जो थोड़ी बातें कह कर अपना कार्य सम्पन्न करता , मितार्थक-कम अर्थ का ।
मिताशन-(स० वि०) कम भोजन करने वाला ।
मिताहार-(स० पु०) थोड़ा भोजन ।
मिति-(स०स्त्री०) मान, परिमाण, सीमा, विभाग ।
मिती-(हि० स्त्री०) महीने की तिथि या तारीख, जब तक ब्याज देना हो , मिती पूजना-हुंडी देने का नियत काल बीतना ।
मित्र-(स० पु०) पुराण के अनुसार बारह आदित्यों में से एक, आर्य जाति के एक प्राचीन देवता, मरुद्गण में से एक, सखा, दोस्त , मित्रकरण-दोस्ती करना , मित्रघ्न-मित्र की हत्या करने वाला, विश्वास घातक ।
मित्रता-(स० स्त्री०) मित्र होने का भाव, दोस्ती ।
मित्रत्व-(स०नपु०) सौहार्द, दोस्ती ।
मित्रद्रोह-(स०पु०)बन्धु से शत्रुता करना
मित्रपति-(स०पु०) वह जो दोस्त की परवरिश करता हो ।
मित्रबाहु-(स० पु०) श्रीकृष्ण के पुत्र का नाम ।
मित्रभाव-(स० पु०)मित्रका धर्म, मित्रता
मित्रभेद-(स० पु०) वह जो मित्रों में वैमनस्य उत्पन्न कराता हो ।
मित्रलाभ-(स०पु०) दोस्तोंका मिलना
मित्रवती-(स०स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक कन्या का नाम ।
मित्रवाह-(स० पु०) बारहवें मनुके एक पुत्र का नाम ।
मित्रसप्तमी-(स० स्त्री०) मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी ।
मित्रसेन-(स० पु०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
मित्रहिंसक-(स० वि०) मित्र की हत्या करने वाला ।
मित्रा-(स०स्त्री०) मित्रदेव की स्त्री का नाम, शत्रुघ्न की माता सुमित्रा, एक अप्सरा का नाम ।
मित्राई-(हि० स्त्री०) देखो मित्रता ।
मित्राक्षर-(स०नपु०) छन्द के रूप में बना हुआ पद ।
मित्रामित्रद्रोह-(सं० पु०) मित्र से वैर करने वाला ।
मित्रावरुण-(स० पु०) मित्र और वरुण नाम के देवता ।
मित्री-(स० स्त्री०) दशरथ के पत्नी सुमित्रा जो लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता थीं ।
मिथनी, मिथिनी-(स०स्त्री०) मेथी ।
मिथिल-(स० स्त्री०) राजर्षि जनक का एक नाम ।
मिथिला-(स०स्त्री०) राजर्षि जनक की नगरी जिसका वर्तमान नाम तिरहुत है ।
मिथुन-(स० नपु०) स्त्री और पुरुष का युग्म या जोड़ा, द्वन्द्व, युगल, संयोग, समागम, मेषादि बारह राशियों में से तीसरी राशि ।
मिथुनत्व-(स०नपु०) मिथुन का भाव ।
मिथोयोध-(स० पु०) आपस में लड़ने वाला ।
मिथ्या-(स०वि०) असत्य, अनृत, झूठ , मिथ्याचर्या-कपट व्यवहार , मिथ्याचार-दाम्भिक, कपटी , मिथ्याज्ञान-भ्रांति ।
मिथ्यात्व-(स० नपु०) मिथ्या होने का भाव, माया ।
मिथ्यादर्शन-(स० नपु०) वह दर्शन जिसमें झूठी बातें लिखी गई हों ।
मिथ्याध्यवसिति-(सं० स्त्री०) झूठा उत्साह, एक अर्थालंकार जिसमें किसी झूठी बात को स्थिर करने के लिये दूसरी बात कही जाती है ।

मिथ्यानिरसन-(स० नपु०) कसम खाकर किसी सच्ची बात को अस्वीकार करना।
मिथ्या पण्डित-(स० पु०) वह जो झूठमूठ का पंडित बना हो।
मिथ्यापुरुष-(स०पु०) छाया पुरुष।
मिथ्या प्रतिज्ञ-(स० वि०) झूठी कसम खाने वाला।
मिथ्याभिधान-(स०नपु०) झूठ कहना।
मिथ्याभियोग-(स० नपु०) किसी पर झूठी तोहमत लगाना।
मिथ्याभिशाप-(स०पु०) झूठा कलंक।
मिथ्यामति-(स०स्त्री०) भ्रान्ति, भूल।
मिथ्यायोग-(सं० पु०) आयुर्वेद के अनुसार वह कार्य जो रूप, रस, प्रकृति आदि के विरुद्ध हो जैसे मलमूत्र आदि का वेग रोकना शरीर का मिथ्या योग है
मिथ्यावाद-(स० पु०) झूठी बात।
मिथ्यावादी-(हिं० वि०) झूठ बोलने वाला, झूठा।
मिथ्या विहार-(स०नपु०)-झूठमूठ इधर उधर घूमना।
मिथ्या बाहार-(स०पु०) किसी विषय को न जानते हुए उसमें दखल देना।
मिथ्या साक्षी-(स०वि०) झूठी गवाही देने वाला।
मिथ्याहार-(स०पु०) प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।
मिद्ध- स०नपु०)जड़ता,मूर्खता,निद्रालुता
मिनती-(अ० स्त्री०) देखो विनति, (हि० पु०) नाक से निकला हुआ मन्द शब्द।
मिनमिन-(हि० स्त्री०) मक्खी के भनभनाने के समान मन्द शब्द।
मिनमिना-(हि०वि०) नाक से बोलने वाला, थोड़ी सी बात पर कुढ़ने वाला, सुस्त, मट्ठर।
मिनमिनाना-(हिं० क्रि०) नाक से बोलना, कोई काम बड़ी सुस्ती से करना
मिनवाल-(अं० पुं०) करघे का कपड़ा लपेटने का बेलन।
मिनहा-(अं०वि०) घटाया हुआ, मुजरा किया हुआ।
मिनजानिब-(अ० क्रि०वि०) ओर से, तरफ से।
मिनजुमला-(अ० क्रि०वि०) कुल में से, सब में से।
मिन्नत-(अ० स्त्री०) निवेदन, प्रार्थना, दीनता, कृतज्ञता, एहसान।
मिमिक्ष-(स०वि०) पानी से सींचा हुआ।
मिमियाई-(हि० स्त्री०) देखो मोमियाई।
मिमियाना-(हिं० क्रि०) बकरी या भेंड़ का बोलना।
मियां-(फा० पुं०) स्वामी, मालिक, पति, मुसलमान, शिक्षक, बड़ों के लिये एक प्रकार का सम्बोधन, महाशय, बच्चों के लिये एक प्रकारका सम्बोधन।
मियांमिट्ठू-(हि०पुं०) मधुरभाषी,मीठी बोली बोलने वाला, मूर्ख, बेवकूफ, तोता, **अपने मुंह मियां मिट्ठू होना**-अपनी तारीफ अपने मुँह से करना।
मियान-(फा०स्त्री०) देखो म्यान (पु०) बिचला हिस्सा।
मियानतह-(हिं० स्त्री०) किसी अच्छे कपड़े के नीचे दिया हुआ अस्तर का कपड़ा।
मियाना-(फा० वि०) मध्यम आकार का (पु०) गाँव के बीच का खेत, गाड़ी का बम, एक प्रकार की पालकी, कच्ची चीनी।
मियानी-(फा० स्त्री०) पायजामे में का वह कपड़ा जो दोनों पायचों के बीच में पड़ता है।
मियार-(हि०पु०) कुए के खंभों पर रक्खी हुई लकड़ी।
मियाल-(हि० पु०) देखो मियार।
मिरगा-(फा० पु०) प्रवाल, मूंगा।
मिरकी-(हि० स्त्री०) चौपायों के मुख का एक रोग।
मिरखम-(हि० पु०) कोल्हू की वह लकड़ी जिस पर हांकने वाला बैठता है।
मिरग-(हि० पु०) देखो मृग।
मिरगया-(हि० पु०) वह जिसको मिरगी का रोग हो।
मिरगी-(हिं० स्त्री०) देखो मृगी, अपस्मार रोग जिसमें रोगी मूर्छित होकर गिर पड़ता है।
मिरचा-(हि० पु०) लाल मिर्च।
मिरचाई-(हि० स्त्री०) देखो मिरच।
मिरजई-(फा०स्त्री०) पूरी बाँह का एक प्रकार का कमर तक का बन्ददार अंग।
मिरजा-(फा० पु०) मीर या अमीर का पुत्र, मीरज़ादा, राजकुमार, कुंवर, तैमूर वंश के शाहज़ादों की उपाधि, मुगलों की उपाधि (वि०) कोमल, नाजुक।
मिरज़ाई-(फा० स्त्री०) मिरजा का भाव या पद, सरदारी अभिमान, घमंड।
मिरजान-(फा० पु०) प्रवाल, मूंगा।
मिरजा मिजाज-(फा० वि०) नाजुक दिमाग का।
मिरदंग-(हि० पु०) देखो मृदङ्ग।
मिरदंगी-(हिं०पु०) मृदङ्ग बजाने वाला, पखावजी।
मिरिका-(स० स्त्री०) एक प्रकार की लता
मिरिच-(हिं० स्त्री०) देखो मरिच।
मिर्च-(हि० स्त्री०) कुछ तीते फलों और फलियों का वर्ग जिसके अन्तर्गत लाल तथा काली मिर्च है।
मिर्चिया-(हि० स्त्री०) रोहिस घास।
मिल-(अं०स्त्री०) चक्की, कल, यन्त्र।
मिलक-(अ० स्त्री०) ज़मीन, सम्पत्ति, जायदाद, मिलकियत, जागीर।
मिलकी-(हि० स्त्री०) जिसके पास ज़मीन जायदाद हो, ज़मींदार, जिसके पास धन सम्पत्ति हो, अमीर, दौलतमंद।
मिलन-(स० नपु०) समागम, भेंट, मुलाक़ात, मिश्रण, मिलावट।
मिलनसार-(हिं० वि०) जो सबसे प्रेम पूर्वक मिलता हो, सबसे हेलमेल रखने वाला।
मिलनसारी-(हिं० स्त्री०) सुशीलता, सबसे प्रेम पूर्वक मिलने का गुण।
मिलनस्थान-(स०स्त्री०) मिलने की जगह।
मिलना-(हिं० क्रि०) दो भिन्न भिन्न

पदार्थों का एक होना, मिश्रित होना, सम्मिलित होना, आलिंगन करना, छाती से लगाना, किसी पक्ष में होना, सम्भोग करना, बाजों का बजने के पहले सुर ठीक होना, मेल मिलाप होना, गुण आकृति आदि के समान होना, सटना, चिपकना, लाभ होना, सामने आना, भेंट मुलाकात होना, प्राप्त होना, मिला-जुला-मिश्रित।

मिलनी-(हिं० स्त्री०) विवाह की एक रस्म जिसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगों से गले गले मिलते हैं और उनको कुछ नगद रुपये देते हैं।

मिलवाई-(हिं० स्त्री०) मिलवाने की क्रिया या भाव।

मिलवाना-(हिं० क्रि०) मिलने या मिलाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को मिलने में प्रवृत्त करना, भेंट या परिचय कराना, मेल कराना, सम्भोग कराना।

मिलाई-(हि० स्त्री०) मिलने की क्रिया या भाव, मिलने की मजदूरी, जाति से बहिष्कृत व्यक्ति को जाति में मिलाने का काम, देखो मिलनी।

मिलान-(हिं० पु०) मिलने की क्रिया या भाव, ठीक होने की जाँच, तुलना, मुकाबला।

मिलाना-(हिं० क्रि०) मिश्रण करना, एक पदार्थ में दूसरा पदार्थ डालना, भिन्न भिन्न पदार्थों को एक में करना, सन्धि या सुलह करना, किसी को अपने पक्ष में करना, परिचय या भेंट करना, सम्भोग करना, बजने के पहले बाजों का सुर ठीक करना, सटाना, चिपकाना, एक करना, तुलाना या मुकाबला करना, यह देखना कि प्रतिलिपि मूल के अनुसार है या नहीं, अपना साथी या भेदिया बनाना।

मिलाप-(हि० पु०) मिलने की क्रिया या भाव, मित्रता, सम्भोग, भेंट, मुलाकात, देखो मिलाई।

मिलाव-(हिं० पु०) मिलाने की क्रिया या भाव, मिलाप, मिलावट।

मिलावट-(हिं० स्त्री०) मिलाये जाने का भाव, किसी अच्छी चीज़ में घटिया चीज का मेल।

मिलिक-(अ० स्त्री०) जमींदारी, मिलकियत, जागीर।

मिलित-(स०वि०) सटा हुआ, मिला हुआ।

मिलिन्दक-(स०पु०) एक प्रकारका सर्प।

मिलेठी-(हिं० स्त्री०) देखो मुलेठी।

मिलोना-(हि० क्रि०) देखो मिलोना, गाय का दूध दुहना, (पु०) बालू मिली हुई एक प्रकार की अच्छी जमीन।

मिलौनी-(हिं० स्त्री०) मुसलमानों में विवाह की एक प्रथा, मिलाने की क्रिया या भाव, मिलावट।

मिल्क-(अ०पु०) जमीदारी, जागीर, धन, सम्पत्ति, अधिकार।

मिल्कियत-(अ०स्त्री०) जागीर, जमींदारी, जायदाद, धन, सम्पत्ति, वह सम्पत्ति, जिस पर मालिक का पूर्ण अधिकार हो।

मिल्की-(अ०पु०) जमीदार, जागीरदार, माफीदार।

मिल्लत-(हि०स्त्री०) घनिष्टता, मेल जोल, मिलनसारी, समूह, मण्डली (अ० स्त्री०) सम्प्रदाय, धर्म, मजहब।

मिशन-(अ०पु०) वह व्यक्ति या मण्डली जो किसी विशेष कार्य के निमित्त कहीं पर भेजा जाय, उद्देश्य, मतलब, ईसाइयों की धर्म स्थापन करने की संस्था, दूत मण्डल जो राज नैतिक उद्देश्य से कहीं पर भेजा गया हो।

मिशनरी-(अ० पु०) ईसाई धर्म का प्रधान पादड़ी, ईसाइयों का पुरोहित।

मिशि-(स०स्त्री०) मधुरिका, सौंफ, मेथी, जटामासी, बालछड़।

मिश्र-(स० पु०) रक्त, लोहू, सन्निपात, ज्योतिष के अनुसार एक गण का नाम, ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि जो कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा सारस्वत ब्राह्मणों में होती है (वि०) मिश्रित, मिला हुआ, श्रेष्ठ, बड़ा, गणित में भिन्न प्रकार की संख्या संबंधी।

मिश्रक-(स० नपु०) जसद, जस्ता, खारी नमक, मूली।

मिश्रकेशी-(स०स्त्री०) एक अप्सरा जो मेनका की सखी थी।

मिश्रज-(स०पु०) वह जो भिन्न जाति के मिश्रण से उत्पन्न हो, खच्चर।

मिश्र जाति-(स०स्त्री०) वर्णसंकर, दोगला

मिश्रण-(स० नपु०) दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया, जोड़ करने की क्रिया, मिलावट, संयोजन।

मिश्रणीय-(स०वि०) मिलाने योग्य।

मिश्र व्यवहार-(स० पु०) गणित की एक क्रिया।

मिश्रित-(स०वि०)सम्मिलित, मिलाया हुआ।

मिश्री-(हि०स्त्री०) देखो मिसरी।

मिश्री करण-(स०नपु०)मिलाने की क्रिया।

मिश्री भूत-(स० वि०) एक में एक मिलाया हुआ।

मिश्रोदन-(स०नपु०)खेचरिका, खिचड़ी।

मिष-(स० नपु०) छल, कपट, बहाना, हीला, ईर्षा, डाह, स्पर्धा, होड़।

मिषिका-(स०स्त्री०) मधुरिका, सौंफ।

मिष्ट-(स०नपु०) मीठा रस (वि०) मधुर, मीठा, मिष्ट पाक-मिष्टान्न, मुरब्बा, मिष्टपाचक-अच्छा भोजन बनाने वाला मिष्ट भाषी-मधुर बोलने वाला।

मिष्टान्न-(स०पु०) मिष्ट द्रव्य, मिठाई।

मिस-(हिं०पु०)बहाना, हीला, पाखंड, नकल (फ़ा०पु०) ताम्र, ताँबा।

मिसकीन-(अ०वि०)जिसमें कोई सामर्थ्य या बल न हो, निर्धन, गरीब, बेचारा, सीधा सादा।

मिसकीनता-(अ०स्त्री०) गरीबी, निर्धनता

मिसकीनी-(अ०स्त्री०) दरिद्रता।

मिसन-(हिं०स्त्री०) बालू मिली हुई मिट्टी

मिसनी-(हिं०पु०) देखो मिशनरी।

मिसना-(हिं०क्रि०) मिश्रित होना, मला जाना, माँजा जाना, देखो मिलना।

मिसरा-(अ०पु०) उर्दू फारसी कविता का एक पद।

मिसरा बहर-पूर्ति के लिये दी हुई समस्या।

मिसरी-(हिं० स्त्री०) मिस्र देश का निवासी, मिस्र देश की भाषा, साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार सफेद चीनी ।
मिसल-(अ०स्त्री०) सिक्ख धर्म संघ ।
मिसाल-(अ० स्त्री०) उपमा, उदाहरण, नमूना, लोकोक्ति, मसल, कहावत ।
मिसि-(स०स्त्री०) सौंफ, जटामासी,खस
मिसिरी-(हिं०स्त्री०) देखो मिसरी ।
मिसिल-(अ०वि०) देखो मिस्ल, तुल्य, समान, (स्त्री०) किसी एक मुकदमें अथवा विषय से संबंध रखने वाले कागज़ात, किसी पुस्तक के अलग अलग छपे हुए फार्म जो सिलाई आदि के लिये क्रम में रक्खे गये हों ।
मिसिली-(हिं० वि०) जिसके विषय में अदालत में कोई मिसिल बनचुकी हो, जिसको अदालत से दण्ड मिल चुका हो।
मिस्कला-(अ०पु०) सिकली करने का औज़ार।
मिस्कीन-(अ०पु०) देखो मिसकीन ।
मिस्कोट-(अ० पु०) एक साथ बैठ कर खाने पीने वालों का समूह, गुप्त परामर्श
मिस्टर-(अ०पु०) महोदय, महाशय ।
मिस्तर-(हिं०पु० लकड़ी का वह औज़ार जिससे राज लोग पलस्तर आदि पीटते हैं ।
मिस्तर-(अ०पु०) दफ्ती का वह बड़ा टुकड़ा जिस में समानान्तर पर डोरे लपेटे या सिले हुए होते हैं, लिखने के समय लकीरें सीधी रखने के लिये यह लिखे जाने वाले कागज़ के नीचे रख लिया जाता है ।
मिस्तरी-(अ० पु०) हाथ का अच्छा कारीगर, चतुर शिल्पकार, मिस्तरी-खाना-वह स्थान जहां पर लोहार बढ़ई आदि बैठ कर काम करते हैं ।
मिस्ता-(हिं०पु०) बलर ज़मीन, अन्न को दाबने के लिये बनाई हुई ज़मीन ।
मिस्र-(हि० पु०) अफ्रीका के पूर्वोत्तर भाग का एक प्रसिद्ध देश ।
मिस्री-(हिं० स्त्री०) देखो मिसरी ।
मिस्ल-(हि० पु०) सामान्य, तुल्य ।
मिस्सा-(हिं०पु०) मूंग मोठ आदि का भूसा, कई तरह की दालो को पीस कर बनाया हुआ आटा ।
मिस्सी-(फा० स्त्री०) एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जिसको सधवा स्त्रिया दांतों में लगाती हैं ।
मिहतर-(फा० पु०) देखो मेहतर ।
मिहदार-(फा० पु०) वह मज़दूर जिसको नकद मज़दूरी दी जाती है ।
मिहनत-(अ० स्त्री०) मेहनत ।
मिहनताना-(अ०पु०) देखो मेहनताना
मिहनती-(अ० वि०) देखो मेहनती ।
मिहमान-(फा० पु०) देखो मेहमान ।
मिहमानदारी-(फा० स्त्री०) देखो मेहमानदारी ।
मिहमानी-(फा०स्त्री०) देखो मेहमानी ।
मिहरबान-(फा०पु०) देखो मेहरबान ।
मिहरबानी-(फा०स्त्री०) देखो मेहरबानी
मिहराब-(फा०स्त्री०) देखो मेहराब ।
मिहर-(स० पु०) विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, मेघ, बादल, तांबा, अर्क वृक्ष ।
मिहिरकुल-(स०पु०) शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध राजा तोरमाण के पुत्र का नाम।
मिह्री-(हिं०स्त्री०) मध्य प्रदेश में होने वाली एक प्रकार की छोटी अरहर ।
मींगी-(हिं० स्त्री०) गूदा, गिरी ।
मींजना-(हि० क्रि०) हाथों से मलना, मसलना, मर्दन करना ।
मींड़-(हि०स्त्री०) संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस खूबी से बजाना या गाना जिसमें दोनो स्वरों के बीच का संबंध स्पष्ट हो जाय और यह न जान पड़े कि गाने वाला एक स्वर के कूदकर दूसरे स्वर पर चला गया है, गमक ।
मीड़ना-(हिं० क्रि०) हाथों से मलना, मसलना ।
मीआद-(अ० स्त्री०) किसी कार्य की समाप्ति के लिये निर्धारित समय, अवधि, कैद की अवधि ।
मीआदी-(हिं०वि०) जिसके लिये कोई समय या अवधि निर्धारित हो ।
मिआदी हुंडी-(हिं० स्त्री०) वह हुंडी जिसका रुपया निर्धारित अवधि पर देना पड़े ।
मीचना-(हि० क्रि०) आंख बंद करना या मूंदना ।
मीचु-(हि० स्त्री०) मृत्यु, मौत ।
मीजा-(हि० स्त्री०) अनुकूलता, स्वभाव, सम्मति, राय ।
मीज़ान-(अ० स्त्री०) तुला, तराजू, कुल संख्या का योग, जोड़ ।
मीटना-(हि० क्रि०) देखो मीचना ।
मीटिंग-(अ०स्त्री०) अनेक मनुष्यों का किसी परामर्श के लिये एकत्रित होना, अधिवेशन, सभा ।
मीठा-(हिं० वि०) जो स्वाद में मधुर और प्रिय हो, मध्यम श्रेणी का, मामूली, हलका, धीमा, सुस्त, बहुत सीधा, किसी का अनिष्ट न करने वाला, प्रिय, रुचिकर, स्वादिष्ट ज़ायकेदार, नपुसक (पु०) मीठा खाद्य, मिठाई, गुड़, हलुआ, मीठा नीबू, मुसलमानों के पहरने का एक प्रकार का कपड़ा जिसको शीरी बाफ भी कहते हैं, मीठाअलू-शकरकन्द, मीठा कद्दू-कुम्हड़ा मीठा चावल-मीठा भात, मीठा जीरा-सौंफ, मीठा ठग-झूठा और कपटी मित्र, मीठा तेल-तिल या पोस्ते के दानेका तेल, मीठापानी-शकर तथा नीबू का सत्त मिला हुआ पानी लेमनेड, मीठा प्रमेह-मधुमेह, मीठी छुरी-कपटी मित्र मीठी मार-भीतरी मार जिसमें बाहर से चोट के चिह्न न देख पड़े, मीठी लकड़ी-मुलेठी
मीडम-(सं० नपु०) विवाद, झगड़ा ।
मीन-(स०पुं०) मत्स्य, मछली, मेषादि राशियों में बारहवीं या अन्तिम राशि, मीनकाक्ष-सफेद कनेर, मीनकेतन-कन्दर्प, कामदेव, मानघाती-बगुला, मछली खाने वाला ।

मीमर-(सं० पु०) सिरोहा नामक वृक्ष।
मीनरङ्क-(सं० पु०) जल कौवा, मुरगावी।
मीना-(सं० स्त्री०) ऊषा की कन्या का नाम जिसका विवाह कश्यप से हुआ था (पु०) राजपूताना की एक वीर जाति का नाम, (फ़ा० पु०) रंग बिरंगा शीशा, एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, शराब रखने का सुराही, रंग बिरंगा काम जो सोने चांदी के गहने आदि पर होता है।
मीनाका-(फा०पु०) मीना करने वाला।
मीनाकारी-(फ़ा० स्त्री०) सोने या चांदी पर होने वाला रंगीन काम, वह बारीकी जो किसी काम में निकाली जाय।
मीनाक्ष-(सं० वि०) मछली के सामान सुन्दर आंखों वाली (स्त्री०) कुबेर की एक कन्या का नाम, ब्राह्मी बूटी।
मीनाण्ड (सं०अपुं०) मछली का अंडा।
मीनार-(अ० स्त्री०) स्तम्भ, ईंट पत्थर आदि की वह इमारत जो गोलाकार बहुत ऊंची बनी होती है।
मीनालय-(सं० पु०) सागर, समुद्र।
मीमांसक-(सं० पु०) मीमांसा शास्त्र को जानेने वाला, किसी प्रश्न की मीमांसा या निर्णय करने वाला मनुष्य।
मीमांसा-(सं० स्त्री०) विचार पूर्वक तत्व निर्णय, षट् दर्शन में से एक जिसके दो विभाग हैं, जैमिनि ऋषिकृत पूर्व मीमांसा तथा उत्तर मीमांसा जो वेदान्त के नाम से प्रसिद्ध है।
मीमांसित-(सं० वि०) विचार पूर्वक स्थिर किया हुआ।
मीमांस्य-(सं० वि०) जिसकी मीमांसा करना हो।
मीर-(फा०पु०) प्रधान, नेता, धार्मिक आचार्य, सैयद जाति की एक उपाधि, किसी बड़े सरदार या रईस का पुत्र, ताश या गंजीफे का सबसे बड़ा पत्ता, किसी कार्य में नियुक्त मनुष्यों में से वह जो सबसे पहले कार्य को पूरा कर दे, वह जो खेल में औरों से पहले त कर या अपना दाँव खेल कर अलग हो गया हो।
मीरजा-(फा० पु०) अमीर या सरदार का पुत्र, अमीरज़ादा, मुगल शाहज़ादों की एक उपाधि।
मीरजाई-(फा० स्त्री०) सरदारी, अमीरी, अभिमान, घमंड।
मीरफ़र्श-(फा० पु०) वे गोल चिकने भारी पत्थर जो बड़े बड़े फर्शों के कोनों पर इस लिये रख दिये जीते हैं कि हवा से फर्श या चादनी उड़ न जावे।
मीरबक्सी-(फा० पु०) मुसलमानी अमलदारी का वह प्रधान कर्मचारी जो वेतन बाटता था।
मीरबहरी-(फा० पु०) मुसलमानी अमलदारी में जलसेना के प्रधान अधिकारी का नाम।
मीरबार-(फा० पु०) मुसलमानी अमलदारी का वह अधिकारी जो सरदार या बादशाह से मिलने का हुक्म लोगों को देता था।
मीरमंजिल-(फ़ा० पु०) वह कर्मचारी जो बादशाह या लश्कर पहुंचने से पहले पड़ाव पर पहुंच कर सब प्रबन्ध कर रखता था।
मीरमजलिस-(फ़ा०पु०) किसी सभा का प्रधान अधिकारी, सभापति।
मीरमहल्ला-(अ० पु०) किसी महल्ले का प्रधान सरदार।
मीरमुंशी-(अ०पु०) सबसे बड़ा मुंशी।
मीरशिकार-(फ़ा० पु०) अमीर या बादशाह के शिकार का प्रबंध करने वाला।
मीरसामान-(फ़ा० पु०) अमीर या बादशाह के पाकशाला का प्रबंध करने वाला कर्मचारी।
मीराबाई-(हि० स्त्री०) मेवाड़ के एक अधिपति महाराणा कुम्भ की स्त्री का नाम जो विष्णु की बड़ी उपासिका थी।
मीरास-(अ० स्त्री०) वह सम्पत्ति जो किसी के मरने पर उसके उत्तराधिकारी को मिलती है, बपौती।
मीरासी-(हि० पु०) एक प्रकार के मुसलमान जो पहले डोम थे बाद में मुसलमान बनाये गये, गाना बजाना इनका जातीय व्यवसाय है।
मील-(अ० पु०-माइल्) दूरी की एक नाप जो १७६० गज अथवा आध कोस की होती है।
मीलन-(सं० नपुं०) आंख बंद करना, संकुचित करना, सिकोड़ना।
मीलित-(सं० वि०) बन्द किया हुआ, सिकोड़ा हुआ, (पु०) वह अलंकार जिसमें एक होने के कारण दो वस्तुओं में भेद नहीं जान पड़ता, वे एक में मिली जान पड़ती हैं।
मीवर-(सं० वि०) पूज्य, माननीय।
मुंगना-(हि०पु०) ढहिजन का वृक्ष।
मुंगरा-(हि०पु०) काठ का बड़ा हथौड़ा, नमकीन बुंदिया।
मुंगिया-(हिं० पु०) एक प्रकार का धारीदार या चारखाने का कपड़ा।
मुंगौरी-(हिं०पु०) मूंग की बनी हुई बरी
मुंज-(हिं० पु०) देखो मूंज।
मुंड-(हिं०पु०) देखो मुण्ड, सिर।
मुंडकरी-(हिं०स्त्री०) घुटने में सिर धर कर बैठना।
मुंडचिरा-(हिं०पु०) एक प्रकारके फकीर जो अपना सिर, आँख, कान नाक, आदि किसी नुकीले हथियार से घायल करके भीख मांगते हैं और जब कोई जल्दी से भीख नहीं देता तो वे अड़ जाते हैं और अपने अंगों को और भी घायल करते हैं।
मुंडचिरायन-(हि० पु०) लेन देन में बड़ी हुज्जत और हठ।
मुंडन-(हि० सं०) देखो मुण्डन, सिरके बालों का मूड़ा जाना।
मुंडना-(हिं० क्रि०) सिर के बालों का मुड़ा जाना, लुटना, ठगा जाना, धोखे में आना, हानि उठाना।
मुंडमाला मुण्डमालिनी-(हिं०) देखो मुण्डमाला, मुण्डमालिनी।
मुंडा-(हिं०पु०) वह जिसके सरपर बाल न हो या मुड़े हुये हों, वह जो सिर के

बाल मुड़वा कर किसी साधु या योगी का चेला बन गया हो, वह पशु जिसको सींघ न हो, बिना मात्रा की एक प्रकार की लिपि जिसका महाजन लोग व्यवहार करते हैं, मुड़िया अक्षर, बिना नोक का जूता, वह जिसके ऊपरी या इधर उधर फैलने वाले अग न हों, छोटा नागपुर में रहने वाली एक असभ्य जाति का नाम।

मुंड़ाई-(हिं० स्त्री०) मूडने या मुड़ाने की क्रिया या भाव, मुडने या मुडाने की मजदूरी।

मुड़ासा-(हिं० पु०) सिर पर बाँधने का साफा या मुरेठा, मुड़ासाबन्द-पगड़ी बाँधने वाला, दस्तारबन्द।

मुड़िया-(हिं० वि०) वह जो सिर मुड़ाकर किसी साधु सन्यासी का चेला बन गया हो, सन्यासी।

मुडी-(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका सिर मुड़ा गया हो, विधवा, राड़, बिना नोक की एक प्रकार की जूती, देखो मुण्डी।

मुंडेर-(हिं० स्त्री०) देखो मुडेरा, खेत की सीमा पर बधा हुआ मेड़।

मुंडेरा-(हिं० पु०) सबसे ऊपर की छत पर चारो ओर बना हुआ दीवार का उभड़ा हुआ भाग, पुश्ता।

मुंडेरी-(हिं० स्त्री०) देखो मुडेर।

मुडो-(हिं० स्त्री०) सिर मुडी हुई स्त्री, विधवा, राड।

मुतकिल-(अ० वि०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर गया हुआ।

तजिम-(अ० पुं०) प्रबंधकर्ता, इन्तज़ाम करने वाला।

मुंतजिर-(अ० वि०) प्रतीक्षा (इन्तजार) करने वाला।

मुंदना-(हिं० क्रि०) खुली हुई वस्तु का ढप जाना या बद होना, छेद बिल आदि का बन्द होना, लुप्त होना,छिपना।

मुदरा-(हिं० पु०) योगियों का कान में पहरने का एक प्रकार का कुडल, कान में पहरने का एक प्रकार का आभूषण।

मुंदरी-(हिं० स्त्री०)अगुलियों में पहरने का सादा (बिना नग का) छल्ला,अगूठी।

मुशियाना-(हिं० वि०) मुशियों की तरह का।

मुशी-(अ० पुं०) लेख निबध आदि का लेखक, लिखा पढ़ी का काम अथवा प्रतिलिपि लिखने वाला, मुहर्रिर, वह जो उर्दू फारसी के सुन्दर अक्षर लिखता है।

मुशीखाना-वह स्थान जहाँ पर मुहर्रिर लोग बैठकर काम करते हैं, दफ्तर।

मुंशीगिरी-मुशी का काम या पद।

मुसरिम-(अ० पु०) प्रबन्ध या व्यवस्था करने वाला, इतज़ाम करने वाला, कचहरी के दफ्तर का प्रधान कर्मचारी जिसकी सपुर्दगी में मोकदमों की मिसिल आदि रहती हैं।

मुसलिक-(अ० वि०) साथ में बधा हुआ।

मुसिफ-(अ० पु०) न्याय या इनसाफ करने वाला अधिकारी, दीवानी विभाग का सबजज से छोटा न्यायाधीश।

मुसिफी-(अ० स्त्री०) न्याय करने का काम, मुसिफ का काम या पद, मुसिफ की कचहरी।

मुंह-(हिं० पु०) किसी प्राणी का वह अग जिससे वह भोजन करता या बोलता है, मुख, मनुष्य या अन्य प्राणी के सिर का अगला भाग जिसमें आँख, नाक, कान, आदि अग होते हैं, चेहरा, सामर्थ्य, योग्यता, साहस, छिद्र, किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का छिद्र, ऊपरी भाग या किनारा, मुलाहजा, लिहाज़, मुरौवत, अपना सा मुंह लेकर रह जाना-बहुत लजा जाना, अपना मुह काला करना-अपना अपमान कर लेना, व्यभिचार करना, किसी का मुंह काला करना-किसी की उपेक्षा करना, मुंह की खाना-अपमानित होना, मुह के बल गिरना-ठोंकर खाकर इस प्रकार गिरना कि मुह में चोट लगजावे, मुह छिपाना-लजावश सिर नीचा कर लेना, मुंह ताकना-किसीके मुख की ओर देखना, स्तब्ध होकर मुह निहारना, चुपचाप बैठ रहना, मुंह दिखाना-सामने आ जाना, मुह देख कर बात कहना-खुशामद करते हुए कुछ कहना, किसीका मुह देखना-सामने आ जाना, मुह पर-प्रत्यक्ष में, सामने की ओर, मुह पर बरसना-आकृति से मन का भाव प्रकट होना, मुंह फुलाना-असन्तोष दिखलाना, मुह फूकना-मुह झुलसाना, किसीके मुंह लगना-किसीसे उद्दण्डता दिखलाते हुए वादाविवाद करना, मुंह लगाना-सिर चढ़ाना, मुंह सूखना-डर से या लज्जा से चेहरे की रौनक बिगड़ जाना, चेहरा उतर जाना, मुह देखे का-दिखौवा, बनावटी, मुंह रखना-मुरव्वत करना, मुंह तक आना-किसी पात्र का ऊपर तक भर जाना।

मुंह अखरी-(हिं० वि०)मौखिक,ज़बानी

मुंह काला-(हिं० पु०) अप्रतिष्ठा,बेइज्जती, बदनामी, एक प्रकार की गाली।

मुह चटौवल-(हिं० स्त्री०) चुम्बन, बकवाद।

मुंह चोर-(हिं०पु०) वह जो लोगों के सामने जाने में सकोच करता हो।

मुह छुआई-(हिं० स्त्री०) केवल ऊपरी मन से कुछ कहना।

मुह छुट-(हिं०वि०) जिसका मुह तुच्छ बातें कहने में या गाली देने में खुला रहे, मुहफट।

मुंह जोर-(हिं० वि०) अधिक बोलने वाला, बड़बड़िया, तेज़, उद्दण्ड।

मुंह जोरी-(हिं०स्त्री०) उद्दण्डता, तेज़ी।

मुह दिखलाई,मुंह दिखाई-(हिं० स्त्री०) नई वधू का मुख देखने की रस्म, मुंह देखनी, वह धन, आभूषण आदि जो मुह देखने पर वधू को दिया जाता है।

मुंह देखा-(हिं० वि०) जो हार्दिक या आन्तरिक न हो, जो किसीको प्रसन्न करने के लिये हो, सर्वदा आज्ञा की प्रतीक्षा में रहने वाला।

मुहनाल-(हिं० स्त्री०) धातु की बनी हुई

वह छोटी नली जो हुक्के की सटक के अगले भाग में लगी रहती है जिसको मुह में रख कर धुवा खींचा जाता है, तलवार की म्यान के सिरे पर लगी हुई धातु की सामी।

मुंहपड़ा-(हिं० वि०) प्रसिद्ध, आख्यात, मशहूर।

मुंहफट-(हिं० वि०) जिसकी वाणी सयत न हो, बदजबान।

मुंहबन्द-(हिं० वि०) जिसका मुह बन्द हो, खुला न हो।

मुंहबंधा-(हिं० पु०) जैन साधु जो मुख पर कपड़ा बाँधे रहते हैं।

मुंह बोला-(हिं० वि०) जो वास्तव में न हो केवल मुख से कहकर बनाया गया हो

मुंह भराई-(हिं०स्त्री०) मुंह भरने की क्रिया या भाव, वह धन जो किसी का मुह बन्द करने के लिये उसको कुछ कहने या करने से रोकने के लिये दिया जावे, उत्कोच, घूस।

मुंह माँगा-(हिं०वि०)मनोनुकूल, अपनी माँग के अनुसार।

मुंहामुंह- (हिं०क्रि०वि०) मुंह तक,भरपूर

मुंहासा-(हिं० पुं०) युवावस्था में मुख पर निकलने वाले दाने या फुंसियाँ जो बीस पचीस वर्ष तक की अवस्था तक निकलती हैं।

मुअज्जन-(अ०पु०) नमाज के लिये सब लोगों को पुकारने वाला।

मुअत्तल-(अ० वि०) जिसके पास कुछ काम न हो, खाली, जो अपने काम से कुछ समय के लिये दण्ड स्वरूप अलग कर दिया गया हो।

मुअत्तली-(अ० स्त्री०) मुअत्तल होने का भाव, बेकारी, काम से कुछ दिन के लिये अलग किया जाना।

मुअम्मा-(अ०पु०) रहस्य, भेद, पहेली, पेचीली बात जो जल्दी से समझ में न आवे।

मुअल्लिम-(अ०पुं०) शिक्षा देने वाला।

मुआफ-(अ० वि०) देखो माफ।

मुआफकत-(अ० स्त्री०) अनुकूल होने का भाव, मित्रता, दोस्ती, हेलमेल।

मुआफिक-(अ० वि०) अनुकूल, जो विरुद्ध न हो, मनोनुकूल, इच्छानुसार, ठीकठीक, बराबर।

मुआफिकत-(अ० स्त्री०) अनुरूपता, मित्रता, दोस्ती।

मुआफी-(अ० स्त्री०) देखो माफी।

मुआमला-(अ० पु०) देखो मामला।

मुआयना-(अ० पु०) निरीक्षण, जाँच पड़ताल।

मुआलिज-(अ० पुं०) इलाज करने वाला, चिकित्सक।

मुआलिजा-(अ०पु०) चिकित्सा, इलाज।

मुआवजा-(अ० पु०) बदला, पलटा, किसी कार्य या किसी हानि के बदले में दिया जाने वाला धन।

मुआहिदा-(अ०पु०) दृढ निश्चय, करार।

मुकन्द-(स० पु०) कुदरू, प्याज़, साठी धान।

मुकट-(हिं० पु०) देखो मुकुट।

मुकटा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की रेशमी धोती जो पूजन, भोजन आदि के समय पहरी जाती है।

मुकता-(हिं० पु०) देखो मुक्ता, मोती (वि०) यथेष्ट, पर्याप्त, बहुत अधिक।

मुकत्ता-(अ०वि०) काट छाट कर दुरुस्त किया हुआ, ठीक तरह से बनाया हुआ, सभ्य।

मुकदमा-(अ० पु०) अधिकार आदि के सबध का कोई झगड़ा अथवा किसी अपराध का मामला जो विचार या निर्णय के लिये न्यायालय में जाय, अभियोग, नालिश, दावा।

मुकदमेबाज-(फ़ा०पु०) वह जो प्रायः मुकदमे लड़ता हो।

मुकदमेबाजी-(फा० स्त्री०) मुकदमा लड़ने का काम।

मुकद्दम-(अ० वि०) प्राचीन, पुराना, सर्वश्रेष्ठ, आवश्यक, जरूरी, (पु०) नेता, मुखिया।

मुकद्दर-(अ० पु०) प्रारब्ध, भाग्य।

मुकद्दस-(अ०वि०) पवित्र, शुद्ध, पाक।

मुकना-(हिं० पुं०) देखो मकुना, (हि० क्रि०) मुक्त होना, छुटकारा पाना, समाप्त होना।

मुकम्मल-(अ० वि०) पूरा किया हुआ, सब तरह से तैयार।

मुकरना-(हि० क्रि०) कोई बात कहकर उससे फिर जाना, नटना (पु०) वह जो बात कहकर मुकर जाता हो।

मुकरनी-(हिं० स्त्री०) कहमुकरी नामक कविता।

मुकराना-(हिं० क्रि०) दूसरे को झूठा बनाना।

मुकरी-(हि० स्त्री०) चार चरणों की एक कविता इसके प्रथम तीन चरण ऐसे होते हैं जिसका आशय दो जगह घट सकता है तथा चौथे चरण में किसी पदार्थ का नाम लेकर उससे इनकार किया जाता है।

मुकर्रर-(अ०क्रि०वि०) दुबारा, फिरसे।

मुकर्ररी-(अ० स्त्री०) मुकर्रर होने की क्रिया या भाव, नियत राजकर, नियत वेतन या वृत्ति आदि।

मुकल-(स०पु०) अमलतास, गुग्गुल।

मुकव्वी-(अ० वि०) बलवर्धक, पुष्टिकारक।

मुकाबला-(अ०पुं०) समानता, बराबरी, तुलना, लड़ाई, विरोध, मिलान, मुठभेड़, आमना सामना।

मुकाबिल-(अ० क्रि० वि०) सम्मुख, सामने (वि०) सामने वाला, समान, बराबर का (पु०) शत्रु, दुश्मन।

मुकाम-(अ० पु०) ठहरने का स्थान, टिकान, पड़ाव, विराम, ठहरने की क्रिया, ठहरने का स्थान, घर, अवसर, मौका, सरोद का परदा।

मुकियल-(हिं०पु०) एक प्रकार का बास

मुकियाना-(हिं०क्रि०) किसी के शरीर में मुकियों से बार बार आघात करना, आटा गूधने के बाद उसको नरम करने के लिये उसको बार बार मुकियों से दबाना, घूसे लगाना, मुक्का मारना।

मुकिर-(अ० वि०) प्रतिज्ञा करने वाला,

किसी दस्तावेज़ आदि का लिखने वाला।

मुकुट-(सं० नपु०) एक प्रकार का शिर का आभूषण, किरीट, अवतस, प्राचीन काल के राजा मुकुट धारण करते थे।

मुकुटी-(स० स्त्री०) अगुली मटकाना।

मुकुन्द-(स० पुं०) विष्णु, एक प्रकार का रत्न, पारा, सफेद कनेर, पोई का साग।

मुकुर-(स० पु०) दर्पण, आइना, मौलसिरी का वृक्ष, कुम्हार का डडा जिससे वह चाक चलता है, बेर का पेड़, एक प्रकार का केला, कोरक, कली।

मुकुरित-(स० वि०) खिला हुआ।

मुकुल-(स० पु०) शरीर, आत्मा, भूमि, पृथ्वी, गुग्गुल, जमालगोटा, एक प्रकार का छन्द।

मुकुलाग्र-(सं० नपु०) प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

मुकुलित-(स० वि०) जिसमें कलिया आगई हों, कुछ खिली हुई (कली) आधा खुला और आधा वन्द, झप-कता हुआ।

मुकुली-(स०पुं०) वह जिसमें कलिया आगई हों।

मुकुष्ठ-(सं० पु०) बन मूग, मोट।

मुक्का-(हिं० पुं०) बधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय।

मुक्की-(हिं० स्त्री०) मुक्का, घूंसा, मुक्कों की मार, आटा गूधने के बाद उसको मुलायम करने के लिये मुट्ठी से बार बार दबाना, किसी के शरीर पर मुट्ठी बाध कर धीरे धीरे आघात पहुचाना जिससे शरीर की पीड़ा दूर हो।

मुक्केबाजी-(हिं० स्त्री०) घूसेबाज़ी, मुक्कों की लड़ाई।

मुक्कैश-(अ० पु०) सोने चादी का बादला, इससे बुना हुआ कपड़ा।

मुक्कैशी गोखरू-(हि० पु०) बादले को मोड़ कर बनाया हुआ महीन गोखरू।

मुक्खी-(हि०पु०) एक प्रकार का कबूतर।

मुक्त-(स० वि०) जिसको मोक्ष प्राप्त हो गया हो, बधन से छूटा हुआ, जो दबाव से अलग हुआ हो, फेंका हुआ।

मुक्तक-(स० नपु०) प्राचीन काल का एक प्रकार का फेंक कर मारने का अस्त्र, फुटकर कविता।

मुक्तकञ्चुक-(सं० पु०) जिस सर्प ने हाल में केचुली छोड़ी हो।

मुक्तकण्ठ-(स० वि०) चिल्ला कर बोलने वाला, बेधड़क बोलने वाला।

मुक्तकेश-(सं० वि०) जिसका जूड़ा खुला हो।

मुक्तकेशी-(स० स्त्री०) काली देवी का एक नाम।

मुक्तचक्षु-(स० पु०) सिंह, शेर, (वि०) जिसकी आखें खुली हों।

मुक्तचेता-(स० पु०) जिसमें मोक्ष पाने की बुद्धि आगई हो।

मुक्तता-(स० स्त्री०) मुक्त होने का भाव, मुक्तत्व, छुटकारा।

मुक्तनिद्र-(स०वि०) जाग्रत, जगा हुआ।

मुक्तमातृ-(सं० स्त्री०) शुक्ति, सीप।

मुक्तरस-(सं० वि०) जिसका रस बह गया हो।

मुक्तरोष-(स०वि०) जिसको क्रोध न हो।

मुक्तलज्ज-(स० वि०) निर्लज्ज, बेहया।

मुक्तवसन-(स० वि०) जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, नग्न, नगा।

मुक्तवास-(स०पु०) शुक्ति, सीप।

मुक्तवेणी-(सं०स्त्री०) द्रौपदी का एक नाम

मुक्तव्यापार-(सं०वि०) जिसने कारबार छोड़ दिया हो, संसार त्यागी।

मुक्तसशय-(स०वि०) जिसका सन्देह दूर हो गया हो।

मुक्तसार-(सं० पुं०) कदली वृक्ष, केले का पेड़।

मुक्तहस्त-(स०वि०) वह जो बड़ा दानी हो

मुक्ता-(स० स्त्री०) मौक्तिक, मोती, मुक्ताकलाप-मोती की माला, मुक्ता-गार-मोती की सीप।

मुक्तात्मा-(सं०पु०) मुक्त पुरुष जो माया के बधनों से छूट कर मुक्त हुए हों।

मुक्तापत-(हिं० पुं०) एक प्रकार की झाड़ी जिसके डंठलों से चटाई बनती है।

मुक्तापुष्प-(स० पु०) कुन्द का पौधा या फूल।

मुक्ताफल-(स० नपु०) मोती, कपूर, हरफा रेवड़ी, एक प्रकार का छोटा लिसोड़ा।

मुक्तामोदक-(स०पुं०) मोतीचूर का लड्डू।

मुक्ताम्बर-(स०वि०) नग्न, नगा।

मुक्तासन-(स०नपु०) योग प्रक्रिया का एक आसन, सिद्धासन।

मुक्ति-(स०स्त्री०) मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण।

मुक्तिका-(स० स्त्री०) एक उपनिषद् जिसमें मुक्ति के विषय में मीमासा की गई है।

मुक्तिक्षेत्र-(स०नपु०) मुक्तिप्रद स्थान, काशी

मुख-(स०नपु०) मुह, आनन, घर का दरवाजा, नाटक में एक प्रकार की सन्धि, शब्द, आवाज़, नाटक, वेद, पक्षी की चोंच, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग, नाटक का पहला शब्द, आरम्भ, जीरा, किसी से पहिले आने की वस्तु, (वि०) मुख्य, प्रधान।

मुखखुर-(स० पु०) दॉत।

मुखचन्द्र-(स०पु०) चन्द्रमा के समान मुख की शोभा।

मुखचपल-(स०वि०) जो बढ बढ कर बोलता हो।

मुखचपलता-(स०स्त्री०) बहुत अधिक बढ बढ़ कर बोलना।

मुखचपला-(स० स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।

मुखचपेटिका-(स० स्त्री०) गाल पर तमाचा मारना।

मुखज-(स० पु०) ब्राह्मण (वि०) मुख से उत्पन्न।

मुखड़ा-(हिं० पु०) मुख, चेहरा,-इस शब्द का प्रयोग सुन्दर मुख के लिये होता है।

मुख़तार-(अ० पु०) कानूनी सलाहकार जो छोटी अदालतों में फौजदारी या माल के मुकदमों में काम करते हैं,

मुख़्तार आम-प्रतिनिधि बनाकर जिसको कोई काम करने का अधिकार दिया गया हो, मुख़्तारकार-वह जो किसी काम की देख रेख के लिये नियुक्त किया गया हो, मुख़्तारख़ास-वह जो किसी विशिष्ट कार्य या मुक़दमे की पैरवी के लिये नियुक्त किया गया हो।

मुख़्तारनामा-(फा०पु०) वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने के लिये नियुक्त किया गया हो, मुख़्तारनामा आम-वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई मुख़्तार आम नियुक्त किया गया हो, मुख़्तारनामा ख़ास-वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई मुख़्तार ख़ास नियुक्त किया गया हो।

मुख़्तारी-(फा० स्त्री०) मुख़्तार बनकर किसी दूसरे के मोकदमे की पैरवी करना, मुख़्तार का पेशा, प्रतिनिधि का पद।

मुखताल-(हिं० पुं०) किसी गीत का पहला पद, टेक।

मुखदूषण-(सं०पु०) पलाण्डु, प्याज।

मुखदूषिका-(सं०स्त्री०) मुहासा रोग।

मुखधावन-(सं०नपु०) दतवन करना।

मुख़न्नस-(अ०वि०) नपुंसक।

मुखपट-(सं० पु०) मुख ढांपने का कपड़ा, नकाब, घूंघट।

मुखपाक-(सं० पुं०) मनुष्यों के मुख का एक रोग।

मुखपान-(हिं० पु०) पान के आकार का किसी धातु का कटा हुआ टुकड़ा।

मुखपूरण-(सं०नपु०) मुह में कुल्ली करने के लिये लिया हुआ पानी।

मुखप्रक्षालन-(सं० नपु०) मुखधावन, मुह धोना।

मुखप्रिय-(सं० पु०) नारंगी, ककड़ी।

मुख़फ़्फ़फ़-(अ० वि०) जो घटकर कम किया गया हो (पु०) किसी पदार्थ का सक्षिप्त रूप।

मुखबन्ध-(सं० पु०) अनुक्रमणिका, प्रस्तावना।

मुख़बिर-(अ० पुं०) भेदिया, जासूस।

मुख़बिरी-(हिं०स्त्री०) जासूसी का काम।

मुखभूषण-(सं०नपु०) ताम्बूल, पान।

मुखमण्डल-(सं० नपुं०) चेहरा।

मुख़मसा-(अ० पु०) झमेला, बखेड़ा।

मुख़म्मस-(अ० वि०) पांच कोने का (पु०) उर्दू या फारसी की एक प्रकार की कविता।

मुखर-(सं० वि०) अप्रियवादी कडुवा बोलने वाला, बकवादी, प्रधान, (पु०) कौवा, शख।

मुख़लिसी-(अ० स्त्री०) छुटकारा, रिहाई।

मुखवल्लभ-(सं० पु०) अनार का पेड़ (वि०) जो खाने में अच्छा लगे।

मुखवाद्य-(सं० नपु०) मुह से फूक कर बजाने का बाजा।

मुखवासिनी-(सं०स्त्री०) सरस्वती देवी

मुखविपुला-(सं० स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।

मुखशफ-(सं० पु०) दुर्मुख, वह जो कटु वचन बोलता हो।

मुखशुद्धि-(सं०स्त्री०) मजन या दतुअन आदि की सहायता से मुह साफ करना, भोजन के उपरान्त पान सुपारी आदि खाकर मुख की शुद्ध करना।

मुखशोष-(सं० पु०) प्यास या गरमी के कारण मुह सूखना।

मुखसम्भव-(सं० पु०) ब्राह्मण, पुष्करमूल।

मुखस्थ-(सं० वि०) कण्ठस्थ, जबानी, मुह में का।

मुखस्राव-(सं० पु०) थूक, लार।

मुखाकार-(सं० पु०) मुख सदृश।

मुखाग्र-(सं० नपु०) किसी पदार्थ का अगला भाग, ओंठ (वि०) कण्ठस्थ, जो जबानी याद हो।

मुख़ातिब-(अ०वि०) जिससे बात की जाय

मुखापेक्षक-(सं० वि०) दूसरे का मुह ताकने वाला।

मुखापेक्षा-(सं०स्त्री०) दूसरे के आश्रित रहना, दूसरे का मुह ताकना।

मुखापेक्षी-(सं० पु०) वह जो दूसरे की कृपा दृष्टि के भरोसे रहता हो।

मुखामृत-(सं०नपु०) मुख की शोभा, छोटे बच्चों के मुह की लार।

मुख़ालिफ़-(अ० वि०) विपरीत, विरोधी, खिलाफ, प्रतिद्वन्द्वी शत्रु दुश्मन।

मुख़ालिफ़त-(अ०पु०) शत्रुता दुश्मनी।

मुखास्त्र-(सं० पु०) कर्कट, केकड़ा।

मुखिया-(हिं० पु०) नेता, सरदार, किसी काम को सबसे पहले करने वाला, अग्रसर, अगुआ, वल्लभ सम्प्रदाय के मन्दिरों का प्रधान कर्मचारी जो मूर्ति की पूजा करता और नैवेद्य लगाता है।

मुख़्तलिफ़-(अ० वि०) विविध प्रकार का, तरह तरह का, भिन्न, अलग।

मुख़्तसर-(अ० वि०) सक्षिप्त, जो थोड़े में हो, अल्प, थोड़ा, छोटा।

मुख़्तार-(अ०पु०) देखो मुख़तार।

मुख्य-(सं० वि०) प्रधान, सबसे बड़ा, श्रेष्ठ।

मुख्यतः-(सं० अव्य०) श्रेष्ठ रूप से, अच्छी तरह से।

मुख्यता-(सं०स्त्री०) मुख्य होने का भाव, श्रेष्ठता।

मुगदर-(हिं० पु०) एक प्रकार की गावदुम लकड़ी की मुगरी जो व्यायाम में उपयोग की जाती है, जोड़ी।

मुंगरैला-(हिं०पु०) कलौंजी या मँगरैला नाम का दाना।

मुगल-मध्य एशिया के तातार नाम के देश का निवासी, मुसलमानों को चार प्रधान वर्गों में से एक वर्ग।

मुगलई-(फा०वि०) मुगलों की तरह का।

मुगलपठान-(फा०पु०) सोलह ककड़ियों से खेला जाने वाला एक हार जीत का खेल।

मुगलाई-(फा०स्त्री०) मुगलपन।

मुगलानी-(हिं० स्त्री०) मुगल जाति की स्त्री, कपड़ा सीने वाली स्त्री, दासी, मजदूरनी।

मुगवन-(हिं०पु०) वनमूग, मोठ।

मुग़ालता-(अ०पु०) छल, कपट, धोखा।
मुग्धम-(हिं० वि०) खोलकर न कही हुई, संकेत में कही हुई।
मुग्ध-(सं०वि०) मोह या भ्रम में पड़ा हुआ, सुन्दर, मनोहर, मूढ़, आसक्त, मोहित, नवीन नया।
मुग्धता-(सं० स्त्री०) मुग्धत्व, मूढ़ता, सुन्दरता, मोहित या आसक्त होने का भाव।
मुग्धबुद्धि-(सं०वि०) भ्रान्तबुद्धि, बेवकूफ
मुग्धभाव-(सं० पु०) बुद्धिहीनता, सरलता।
मुग्धा-(सं० स्त्री०) साहित्य के अनुसार वह नायिका जो युवावस्था को प्राप्त हुई हो परन्तु उसमें काम की चेष्टा न हो
मुचगड़-(हिं०वि०) मोटा और भद्दा।
मुचक-(सं० पु०) लाक्षा, लोह।
मुचकुन्द-(सं० पु०) इस नाम का एक फूल का वृक्ष।
मुचलका-(तु० पुं०) वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित कार्य न करने के लिये तथा किसी खास शर्त पर कचहरी में उपस्थित होने के लिये प्रतिज्ञा की जाती है।
मुचिर-(सं० वि०) उदार, दाता।
मुचुक-(सं० पु०) मैनफल।
मुचुकुन्द-(सं० पु०) देखो मुचकुन्द।
मुचुटी-(सं०स्त्री०) उँगली मटकाना।
मुछन्दर-(हिं०पु०) जिसकी दाढ़ी मूछ बड़ी बड़ी हों, भद्दा, मूर्ख मनुष्य, चूहा।
मुछियल-(हिं०पुं०) बड़ी बड़ी मूछ वाला
मुजक्कर-(फ़ा०पु०) पुल्लिङ्ग।
मुजम्मा-(अ०पुं०) चमड़े या रस्सी का फेरा जो घोड़े की दुमची की रस्सी मे बँधा रहता है, (क्रि०) बाधना, लगाना।
मुजरा-(अ० पु०) वह जो जारी किया गया हो, वह रकम जो किसी रकम में से काट ली गई हो, अभिवादन, किसी रईस के सामने जाकर उसको सलाम करना, रंडीका वह गाना जो बैठकर हो
मुजर्रद-(अ० वि०) अकेला, जिसके साथ कोई दूसरा मनुष्य न हो, अविवाहित, क्वारा, वह जिसने संसार का त्याग किया हो।
मुजर्रब-(अ० वि०) परीक्षित, आजमाया हुआ।
मुजराई-(हिं०स्त्री०) काटने या घटाने की क्रिया, काटी हुई रकम, वह जो अमीर को सलाम करता हो।
मुजरिम-(अ०पु०)वह जिस पर अभियोग लगाया गया हो, अभियुक्त।
मुजल्लद-(अ०वि०) जिल्ददार, जिसकी जिल्द बँधी हो।
मुजस्सिम-(अ० वि०) प्रत्यक्ष।
मुजारिया-(अ० वि०) जो जारी किया या कराया गया हो।
मुजावर-(अ०पु०) वह मुसलमान जो किसी पीर की दरगाह या रौजे पर वहाँ का कार्य करता हो और चढ़ावा आदि लेता हो।
मुजिर-(अ० वि०) हानिकारक, नुकसान पहुचाने वाला।
मुझ-(हिं०सर्व०) "मैं" का वह रूप जो उसको कर्ता और सम्बन्ध कारक को छोड़कर अन्य कारकों में विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है यथा, मुझको, मुझसे, मुझपर।
मुझे-(हिं० सर्व०) एक पुरुष वाचक सर्वनाम यह उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है जो पुल्लिंग और स्त्री लिंग दोनों में व्यवहार किया जाता है।
मुञ्चन-(सं० नपु०) मोचन, परित्याग।
मुञ्ज-(सं० पु०) मूज नामक घास, मुञ्जकेश - शिव, महादेव, विष्णु, मुञ्जमणि-पुखराज।
मुञ्जर-(सं०नपु०) मृणाल, कमल की जड़।
मुटकनी-(हिं० वि०) जो आकार में छोटा परन्तु सुन्दर हो।
मुटका-(हिं० पु०) एक प्रकार की रेशमी धोती, देखो मुकटा।
मुटमुरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का धान।
मुटाई-(हिं० स्त्री०) स्थूलता, मोटापन, पुष्टि, अभिमान, घमंड, शेखी।
मुटाना-(हिं० क्रि०) मोटा हो जाना, अभिमानी होना।
मुटासा-(हिं० वि०) वह जो कुछ धन कमा लेने से लापरवाह और घमंडी हो गया हो।
मुटिया-(हिं० पु०) वह मजदूर जो बोझ ढोता हो।
मुट्ठा-(हिं० पु०) चंगुल भर वस्तु, घास फूस तृण आदि का उतना पूला जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके, औज़ार आदि की मूठ, पुलिन्दा बधा हुआ समूह जो मुट्ठी में आसके, दस्ता, धुनियें का तात पर चोट लगाने का बेलन।
मुट्ठी-(हिं०स्त्री०) बंधी हुई हथेली, हाथ की वह मुद्रा जो अंगुलियों को मोड़कर हथेली पर दबा लेनेसे बनती है, उतनी वस्तु जितनी इस मुद्रा में अट सके, बधी हथेली के बराबर का विस्तार, अंगों की मालिश, मुट्ठी में-अधिकार या कब्जे में, मुट्ठी गरम करना-घूस देना।
मुठभेड़-(हिं० स्त्री०) लड़ाई, टक्कर, सामना, भेंट।
मुठिका-(हिं०स्त्री०) मुट्ठी घूसा, मुक्का।
मुठिया-(हिं० स्त्री०) किसी औज़ार की बेंट या दस्ता, धुनियो का वह डंडा जिससे वे तात पर चोट लगाते हैं, किसी वस्तु का वह भाग जो हाथ में पकड़ा जाता है।
मुठी-(हिं० स्त्री०) देखो मुट्ठी।
मुड़क-(हिं० स्त्री०) देखो मुरक।
मुड़कना-(हिं०क्रि०) देखो मुरकना।
मुड़ना-(हिं०क्रि०) दबाव या आघात से झुक जाना, टेढ़ा होकर भिन्न दिशा में प्रवृत्त होना, सीधा जाकर किसी ओर झुकना, किसी धारदार किनारे या नोक का एक ओर झुक जाना, घूमकर पीछे की ओर मुड़ पड़ना, लौटना, पलटना, चलते चलते किसी ओर फिर जाना।
मुड़ला-(हिं०वि०) मुंडा, बिना बाल का।
मुड़वाना-(हिं० क्रि०) किसी को मूड़ने

के काम में प्रवृत्त करना, घूमने या मुड़ने में प्रवृत्त करना।
मुड़वारी–(हि० स्त्री०) अटारी की दीवार का शिखर, मुडेरा, जिस ओर किसी पदार्थ का सिरा या ऊपरी भाग हो, चारपाई का सिरहाना।
मुड़हर–(हि० पु०) स्त्रियो की साड़ी का वह भाग जो ठीक सर पर रहता है।
मुड़ाना–(हि०क्रि०)मुडन कराना, मुडाना
मुड़िया–(हि० पु०) वह जिसका मस्तक मूडा गया हो।
मुड़ेरा–(हि० पु०) देखो मुँडेरा।
मुण्ड–(स० पु०) शुम्भ का सेनापति एक दैत्य जिसको भगवती दुर्गा ने मारा था, वृक्ष का ठूठ, गरदन के ऊपर का अग जिसमें आख, नाक मुह आदि रहते हैं, मस्तक, सिर, कटा हुआ सिर, एक उपनिषद् का नाम, (वि०) मुडा हुआ, अधम नीच।
मुण्डन–(स०नपु०) सिर को उस्तरे से मूडने की क्रिया, द्विजातियों के सोलह सस्कारो में से एक जिसमें बालक का सिर मूड़ा जाता है।
मुण्डफल–(स० पु०) नारियल का फल।
मुण्डमण्डली–(स०पु०) अशिक्षित सेना।
मुण्डमाला–(स०स्त्री०) कटे हुए सिरो की माला जो शिव या काली के गले में सुशोभित है।
मुण्डमालिनी–(स०स्त्री०) दुर्गा, काली।
मुण्डमाली–(स० पु०) शिव, महादेव।
मुण्डशालि–(स० पु०) बोरो धान।
मुण्डा–(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसके सर पर के बाल मूड़ दिये गये हों।
मुण्डासन–(स० नपु०) योग का एक आसन।
मुण्डित–(स० वि०) मुड़ा हुआ।
मुण्डिनी–(स० स्त्री०) कस्तूरी मृग।
मुण्डी–(स० स्त्री०) गोरख मुडी।
मुतअल्लिक–(अ० वि०) सबध रखने वाला,सम्मिलित,मिला हुआ (क्रि०वि०) सम्बन्ध में, विषय में।
मुतक्का–(हि०पु०) वह पटिया या नीची दीवार जो छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के किनारे पर खड़ी की जाती है, खभा, लाट, मीनार।
मुतदायरा–(अ० वि०) जो दायर किया गया हो।
मुतफन्नी–(अ०वि०) बड़ा धूर्त, धोखेबाज
मुतफर्रिक–(अ०वि०) भिन्न भिन्न, अलग अलग, विविध, कई प्रकार का।
मुतबन्ना–(अ० पु०) दत्तक पुत्र गोद लिया हुआ लड़का।
मुतमौवल–(अ०वि०) धनवान्, दौलतमन्द
मुतरज्जिम–(अ०पु०) अनुवाद करने वाला
मुतलक–(अ०क्रि०वि०) जरा भी, तनिक भी, (वि०) बिलकुल, निरा।
मुतवफा–(अ० वि०) परलोक वासी, स्वर्गीय।
मुतवल्ली–(अ० पु०) किसी नाबालिग और उसकी सम्पत्ति का सरक्षक।
मुतवातिर–(अ०क्रि०वि०) निरन्तर,लगातार
मुतसद्दी–(अ० पु०) लेखक, मुशी, उत्तरदायी, जिम्मेवार, मुनीम, प्रबध-कर्ता, जमा खर्च लिखने वाला।
मुतसिरी–(हि० स्त्री०) गले में पहनने की मोती की कठी।
मुताबिक–(अ० क्रि० वि०) अनुसार, अनुकूल, बमोजिब।
मुतालबा–(अ०पु०) प्राप्य धन, जितना धन पाना वाजिब हो।
मुताह–(हि० पु०) मुसलमानो मे एक प्रकार का अस्थायी रूप का विवाह।
मुतिलाडू–(हि०पु०) मोतीचूर का लड्डू।
मुतेहरा–(हि० पु०) ककण की आकृति का एक प्रकार का आभूषण।
मुत्तफिक–(अ० वि०) सहमत, इत्तफाक राय का।
मुत्तसिल–(अ० वि०) निकट, पास, (क्रि०वि०) निरन्तर, लगातार।
मुद–(स० स्त्री०) हर्ष, आनन्द।
मुदगर–(हि० पु०) देखो मुगदर।
मुदरा–(हि० पु०) एक प्रकार का मादक पदार्थ।
मुदर्रिस–(अ० पु०) अध्यापक, शिक्षक।
मुदा–(अ० अव्य०) तात्पर्य यह है कि, मगर, लेकिन।
मुदाम–(फा० क्रि० वि०) सदा, सर्वदा, हमेशा, निरन्तर, लगातार, ठीक ठीक।
मुदामी–(फा० वि०) जो सर्वदा होता रहे।
मुदित–(स०वि०)आनन्दित,प्रसन्न, खुश।
मुदिता–(स०स्त्री०) हर्ष, आनन्द, साहित्य में वह परकीया नायिका जो परपुरुष की प्रीति सम्बन्धी कामना की आकस्मिक प्राप्ति से प्रसन्न होती है।
मुदिर–(स० पु०) मेघ, बादल, कामुक, जिसको कामवासना बहुत हो, मेढक।
मुद्ग–(स० पु०) जलवायस, मूँग नामक अन्न।
मुद्गपर्णी–(स० स्त्री०) वनमूँग, मोठ।
मुद्गर–(स० नपु०) काठ का बना हुआ एक प्रकार का गावदुम दण्ड जिसकी पेंदी भारी होती है इसको हाथ में लेकर हिलाते हुए पहलवान लोग कई प्रकार का व्यायाम करते हैं, एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।
मुद्गल–(स० नपु०) रोहित नाम की घास, गोत्र कारक एक ऋषि का नाम।
मुद्गवटक–(सं० पु०) मूँग का बड़ा।
मुद्दआ–(अ० पु०) अभिप्राय, तात्पर्य।
मुद्दइया–(अ० स्त्री०) देखो मुद्दई।
मुद्दई–(अ० पु०) दावा करनेवाला, वादी, शत्रु, वैरी।
मुद्दत–(अ० स्त्री०) अवधि, बहुत दिन, अरसा।
मुद्दती–(अ० वि०) वह जिसमें कोई अवधि हो।
मुद्दाअलेह, मुद्दालेह–(अ० पु०) वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय या मुकदमा चलाया जाय, प्रतिवादी।
मुद्ध–(हि० वि०) देखो मुग्ध।
मुद्रक–(स०पु०) छापने वाला।
मुद्रण–(स० पु०) किसी वस्तु पर अक्षर आदि छापना, छपाई का काम, ठीक तरह से काम चलाने के नियम आदि बनाना, ठप्पे आदि की सहायता से

छापकर मुद्रा तैयार करना।

मुद्रणा–(स० स्त्री०) अगूठी।

मुद्रणालय–(स० पु०) मुद्रण करने का स्थान, छापाखाना।

मुद्रा–(स० स्त्री०) किसी नाम की छाप, मुहर, अगूठी, सोने चाँदी का सिक्का, चिह्न, निशान, पाँच प्रकार की लिपियों में से एक, टाइप से छपे हुये अक्षर, तान्त्रिकों के अनुसार कोई भूना हुआ अन्न, कान का एक आभूषण जिसको गोरखपथी साधु पहनते हैं, अगस्त्य ऋषि की पत्नी का नाम, वह अलकार जिसमें प्रकृत अर्थ के सिवाय पद्य में और भी साभिप्राय अर्थ निकलते हों, विष्णु के आयुधों के चित्र जिसको वैष्णव लोग अपने शरीर पर अकित करते हैं अथवा गरम लोहे से दगवा लेते हैं, किसी देवता को प्रसन्न करने के लिये हाथ, पाँव, अगुली आदि की विशिष्ट स्थिति, मुख की आकृति, खडे होने बैठने या लेटने का कोई ढग, हठयोग में विशेष अग विन्यास जो पाँच प्रकार का होता है यथा-खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी।

मुद्राकर–(स० पु०) राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके अधिकार में राजा की मुहर रहती है, वह जो किसी प्रकार की मुद्रा तैयार करता हो।

मुद्राकान्हाड़ा–(स० पु०) एक प्रकार का राग।

मुद्राक्षर–(स० नपु०) सीसे के ढले हुये अक्षर जो छापने के काम में आते हैं, टाइप।

मुद्राङ्कण–(स० नपु०) मुद्रा की सहायता से छापने का काम, छपाई।

मुद्राङ्कित–(स० वि०) मोहर किया हुआ, जिसके शरीर पर विष्णु के आयुध के चिह्न गरम लोहे से दाग कर बनाये गये हों।

मुद्राटोरी–(स० स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी।

मुद्रातत्व, मुद्राविद्या–(स०) वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्के आदि की सहायता से उपदेश की ऐतिहासिक बातों का अन्वेषण किया जाता है।

मुद्रामार्ग–(स० पु०) ब्रह्मरन्ध्र, मस्तक के भीतर का वह स्थान जहा प्राण वायु चढती है।

मुद्रायन्त्र–(स० नपुं०) वह यन्त्र जिसके द्वारा कागज आदि पर लकड़ी या सीसे के ढले हुए टाइप से छापा जाता है, छापे आदि की कल।

मुद्राविज्ञान, मुद्राशास्त्र–(स०) देखो मुद्रातत्व।

मुद्रिक–(स० स्त्री०) देखो मुद्रिका।

मुद्रिका–(स० स्त्री०) सोने चादी की मुद्रा, सिक्का, रुपया, अगूठी, कुश की बनी हुई वह अगूठी जो पितृकार्य में अनामिका में पहरी जाती है, पवित्री।

मुद्रित–(स० वि०) मुद्रण किया हुआ, छपा हुआ, मुदा हुआ, परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

मुधा–(सं० अव्य०) व्यर्थ, वेफायदा, वृथा, निष्फल, निरर्थक (वि०) निष्प्रयोजन, मिथ्या।

मुनक्का–(अ० पु०) एक प्रकार की बड़ी किशमिश या सूखा हुआ अगूर।

मुनमुना–(हि० पु०) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।

मुनरा–(हिं० पु०) कान में पहरने का एक प्रकार का गहना।

मुनादी–(अ० स्त्री०) किसी बात की घोषणा जो कोई मनुष्य डुग्गी या ढोल पीटते हुए सारे शहर में करता है, ढिंढोरा, डुग्गी।

मुनाफ़ा–(अ० पु०) किसी व्यापार आदि में प्राप्त वह धन जो मूलधन के अतिरिक्त होता है, लाभ, नफा।

मुनारा (हिं० पु०) देखो मीनार।

मुनासिब–(अ० वि०) उचित, वाजिब।

मुनि–(सं० पु०) मौन व्रती, महात्मा, व्रती, तपस्वी, त्यागी, भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने मुनि की परिभाषा अर्जुन से इस प्रकार कहा है-जो दुःख में नहीं घबड़ाते, सुख में जिनको स्पृहा नहीं रहती, तथा जिनको अनुराग, भय अथवा क्रोध का लेशमात्र नहीं रहता, दमनक, दौना, सात की संख्या, कुरु के एक पुत्र का नाम।

मुनिधान्य–(स० नपुं०) तिन्नी का चावल।

मुनिपुङ्गव–(स० पु०) मुनिश्रेष्ठ।

मुनिपुष्प–(स० पु०) विजयसार का फूल।

मुनिप्रिया–(स० स्त्री०) एक प्रकार का सुगन्धित धान।

मुनिभक्त, मुनिभोजन–(स० नपु०) तिन्नी का चावल।

मुनियां–(हि० स्त्री०) लाल नामक पक्षी की मादा, (पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।

मुनीन्द्र–(सं० पु०) ऋषिश्रेष्ठ, बुद्धदेव।

मुनीम, मुनीब–(अ० पु०) सहायक, नायब, वह जो साहूकारों का हिसाब किताब लिखता हो।

मुनीश–(स० पु०) मुनिश्रेष्ठ, वाल्मीकि, बुद्धदेव।

मुनीश्वर–(स० पु०) मुनियों में श्रेष्ठ, विष्णु, बुद्धदेव।

मुन्ना–(हि० पु०) छोटे बच्चे के लिये प्रेमसूचक शब्द, प्यारा, तारकशी के कारखाने में वे दोनों खूटे जिनमें जन्ता लगा रहता है।

मुन्नू–(हि० पु०) देखो मुन्ना।

मुफ़लिस–(अ० वि०) दरिद्र, धनहीन, ग़रीब।

मुफ़लिसी–(अ० स्त्री०) निर्धनता, गरीबी।

मुफ़सिद–(अ० पु०) वह मनुष्य जो झगड़ा फसाद करता हो।

मुफ़स्सल–(अ० वि०) वह जिसकी तफसील की गई हो, ब्योरेवार (पु०) किसी बडे नगर के चारो ओर के कुछ दूर के स्थान।

मुफ़ीद–(अ० वि०) लाभ दायक, फायदेमन्द।

मुफ़्त–(अ० वि०) जिसमें कुछ मूल्य न लगे, सेंत का, बिना दाम का, मुफ़्तख़ोर

दूसरे के धन पर सुख भोगने वाला, मुफ्तमें-वे फायदा।
मुफ्ती-(अ०वि०)मुफ्त का, जो विना दाम दिये मिला हो (पु०) मुसलमानी धर्मशास्त्री।
मुबतिला-(अ०वि०) गृहीत, पकड़ा हुआ।
मुबादिला-(अ० पु०) बदला, पलटा।
मुबारक-(अ० वि०) मंगलप्रद, शुभ, जिसके कारण से वरकत हो।
मुबारकबाद-(फा० पु०) धन्यवाद, बधाई।
मुबारकवादी-(फा०स्त्री०) बधाई, शुभ अवसरो पर बधाई देने के लिये गाई जाने वाली गीत।
मुबारकी-(हिं०स्त्री०) देखो मुबारकबाद।
मुबालिगा-(अ० पुं०) अत्युक्ति, बहुत बढा कर कही हुई वात।
मुबाहिसा-(अ०पुं०) वादाविवाद, बहस
मुमकिन-(अ० वि०) सभव, जो हो सकता हो।
मुमतहिन-(अ०पु०) परीक्षा या इम्तहान लेने वाला।
मुमुक्षा-(स०स्त्री०) मुक्ति की अभिलाषा।
मुमुक्षु-(स० पु०) वह जो मुक्ति की कामना करता हो।
मुमुक्षुता-(स० स्त्री०) मुमुक्ष का भाव या धर्म।
मुमूर्षा-(स०स्त्री०) मरने की अभिलाषा
मुमूर्षु-(स०वि०)जो मर रहा हो,मरणासन्न।
मुयस्सर-(अ०वि०) देखो मयस्सर।
मुरंडा-(हिं० पु०) वह लड्डू जो भूने हुए गरम गरम गेंहूँ में गुड़ मिला कर बनाया जाता है, गुड़धानी (वि०) शुष्क, सूखा हुआ।
मुर-(सं०पु०) एक दैत्य जिसको विष्णु ने मारा था (नपु०) वेष्टन, वेठन, (हिं० अव्य०) दुवारा, फिर से।
मुरई-(हि० स्त्री०) देखो मूली।
मुरक-(हिं०स्त्री०) मुड़नेकी क्रिया या भाव
मुरकना-(हिं० क्रि०) लचक कर एक ओर मुड़ना या झुकना, फिरना, घूम जाना, हिचकना रुकना, लौटाना, वापस होना, नष्ट होना, चौपट होना, किसी अंग का ऐसा मुड़ जाना कि जल्दी से सीधा न हो सके, मोच खाना।
मुरका-(हिं० पु०) वडे वडे दाँतो का सुन्दर हाथी।
मुरकाना-(हिं० क्रि०) घुमाना, फेरना, लौटाना शरीर के किसी अंग में मोच आना, नष्ट करना, वापस करना।
मुरकी-(हि० स्त्री०) कान मे पहरने की छोटी वाली।
मुरकुल-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की पहाडी लता।
मुरगण्ड-(स०पु०) मुहासा नामक रोग।
मुरखाई-(हिं० स्त्री०) देखो मूर्खता।
मुरगा-(फा० पु०) इस नाम का एक प्रसिद्ध पक्षी, कुक्कुट।
मुरगाबी-(फा०स्त्री०) मुरगे की जाति का एक पक्षी।
मुरङ्गी-(सं०स्त्री०) लाल फूल का सहिजन
मुरचंग-(हिं०पु०) लोहे का बना हुआ एक बाजा जो मुह से बजाया जाताहै।
मुरचा-(हिं०पु०) देखो मोरचा।
मुरछना-(हि० क्रि०) शिथिल होना, अचेत या वेहोश होना।
मुरछल-(हिं० पु०) देखो मोरछल।
मुरछा-(हिं०स्त्री०) देखो मूर्छा।
मुरछावत-(हि०वि०)देखो मूर्छित, वेहोश
मुरछित-(हिं० वि०) देखो मूर्छित।
मुरज-(स० पु०) मृदङ्ग, पखावज।
मुरझपल-(स० पु०) कटहल का पेड़।
मुरझाना-(हिं०क्रि०) फूल पत्ती आदि का कुम्हलाना, सुस्त हो जाना, उदास होना
मुरड़-(हिं० पु०) अभिमान, अहकार।
मुरतंगा-(हि० पु०) एक प्रकार का ऊचा वृक्ष।
मुरतहिन-(अं० पुं०) वह जिसके पास कोई वस्तु गिरवीं रक्खी जाय,रेहनदार-
मुरदर-(स० पु०) मुरारि, श्रीकृष्ण।
मुरदा-(फा० पु०) मृतक, वह जो मरा हो (वि०) मृतक, मरा हुआ, अति दुर्बल, कुम्हलाया या मुरझाया हुआ।
मुरदार-(फा० वि०) मृत, मरा हुआ, वेदम, वेजान, अपवित्र (पु०) वह पशु जो अपनी मौत से मरा हो जिसका मास न खाया जा सकता हो।
मुरदारी-(फा० पु०) अपनी मौत से मरे हुए पशु का चमड़ा।
मुरदासंख-(फा० पु०) एक औषधि जो फूके हुए सीसे और सिन्दूर से बनती है।
मुरदासन-(हि० पु०) देखो मुरदासख।
मुरधर-(हि० पु०) मारवाड़ देश का प्राचीन नाम।
मुरना-(हि०क्रि०) देखो मुड़ना।
मुरपरैना-(हि० पु०) वह बगुचा जिसमें सौदा रख कर फेरी करने वाला वेंचते हैं।
मुरब्बा-(अ० पु०) फल मेवे आदि का पाक जो चीनी या मिश्री की चाशनी में सुरक्षित किया जाता है।
मुरब्बी-(अ० पु०) आश्रय देने वाला, रक्षक, सहायक, मददगार।
मुरमर्दन-(स० पु०) मुरारि, विष्णु।
मुरमुराना-(हिं०क्रि०) चूरचूर होना।
मुररिपु-(स०पु०) मुरारि, विष्णु।
मुरल-(स० पु०) प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।
मुरला-(स० स्त्री०) नर्मदा नदी।
मुरलिका-(सं० स्त्री०) मुरली, वासुरी।
मुरलिया-(हिं० स्त्री०) मुरली, वासुरी।
मुरली-(स० स्त्री०) मुह से बजाने का वासुरी नामक बाजा, वसी, एक प्रकार का आसामी चावल।
मुरलीधर-(स० पु०) श्रीकृष्ण।
मुरलीमनोहर-(स०पु०) श्रीकृष्ण।
मुरलीवाला-(हिं० पु०) श्रीकृष्ण।
मुरवा-(हिं० पु०) पैर का गट्टा, एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारो ओर का घेरा, एक प्रकार की कपास।
मुरवी-(हिं०स्त्री०) मौर्वी, धनुष की डोरी, चिल्ला।
मुरवैरी-(सं०पु०) मुरारि, श्रीकृष्ण।
मुरव्वत-(अ०स्त्री०) देखो मुरौवत।
मुरशिद-(अ०पु०) पथदर्शक, गुरु, पूज्य, माननीय, धूर्त, चालाक।
मुरसुत-(स० पु०) मुर दैत्य का पुत्र

वत्सासुर ।

मुरस्सा-(अ० वि०) जड़ित, जड़ा हुआ, मुरस्साकार-गहनों में नग जड़ने वाला, जड़िया ।

मुरहा-(स० पु०) विष्णु, कृष्ण, (हि०पु०) वह बालक जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो, अनाथ बालक, उपद्रवी, नटखट ।

मुरहारी-(स०पु०) मुर दैत्य को मारने वाले विष्णु ।

मुरा-(स० स्त्री०) एक प्रसिद्ध गन्धद्रव्य जिसको मुरामासी भी कहते हैं, उस नाइन का नाम जिसके गर्भ से महानन्द के पुत्र चन्द्रगुप्त उत्पन्न हुए थे ।

मुराड़ा-(हि० पु०) जलती हुई लकड़ी, लुआठी ।

मुराद-(अ० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, आशय, अभिप्राय, मुराद पाना-अभिलाषा पूर्ण होना, मागी मुराद-इच्छित वस्तु की प्राप्ति ।

मुरादी-(फा० पु०) आकांक्षी, वह जो किसी प्रकार की अभिलाषा रखता हो ।

मुराना-(हि० क्रि०) मुह में डाल कर किसी वस्तु को मृदु करना, चुभलाना। देखो मोड़ना ।

मुराफ़ा-(फा० पु०) छोटी अदालत में हार जाने पर बड़ी अदालत में फिर से दावा पेश करना, अपील ।

मुरार-(हि०पु०) कमल की जड़, मसीड़ देखो मुरारि ।

मुरारि-(स० पुं०) श्रीकृष्ण ।

मुरारी-(हि० पु०) देखो मुरारि ।

मुरारे-(स० पुं०) हे मुरारि-सम्बोधन का रूप ।

मुरासा-(हि० पु०) कर्णफूल, तरकी ।

मुरीद-(अ० पु०) शिष्य, चेला, वह जो किसी का अनुकरण करता हो, अनुयायी।

मुरु- हि० पु०) देखो मुर (स०पु०) एक प्रकार की झाड़ी ।

मुरुआ-(हिं० पु०) एड़ी के ऊपर का घेरा, पैर का गट्ठा ।

मुरुकुटिया-(हि० वि०) देखो मरकट ।

मुरुख-(हि० वि०) देखो मूर्ख ।

मुरुछना-(हि० क्रि०) देखो मुरझना, (स्त्री०) देखो मूर्छना ।

मुरझना-(हि० क्रि०) देखो मुरझाना ।

मुरेठा-(हि० पु०) पगड़ी, साफा ।

मुरेर-(हि० स्त्री०) देखो मरोड़ ।

मुरेरना-(हिं० क्रि०) देखो मरोड़ना ।

मुरेरा-(हि० पु०) मुडेरा, देखो मरोड़ ।

मुरौअत, मुरौवत-(फा०स्त्री०) शील, सकोच, लिहाज, भलमनसी, आदमियत ।

मुर्ग-(फा० पु०) देखो मुरगा, मुर्गकेश-जटाधारी का पौधा, मुर्गखाना-मुर्गे रहने का दरबा ।

मुर्गाबी-(फा० पु०) देखो मुरगाबी ।

मुर्चा-(फा० पु०) देखो मोरचा ।

मुर्तकिब-(अ० वि०) अपराध करने वाला, कसूरवार ।

मुर्दनी-(फा० स्त्री०) शव के साथ उसके जलाने या गाड़ने के स्थान तक जाना, मृत्यु के चिह्न जो मुख पर प्रगट हो, अन्त्येष्टि क्रिया के लिये जाने वालों का समूह ।

मुर्दा-(फा० पु०) देखो मुरदा ।

मुर्दावली-(फा० स्त्री०) देखो मुर्दनी, (वि०) मृतक के सबध का, मुरदे का ।

मुर्दासिंगी-(फा० पु०) देखो मुरदासख ।

मुर्मुर-(स० पु०) मन्मथ, कामदेव, सूर्य के रथ के घोड़े,

मुर्रा-(हि० पु०) मरोड़ फली नाम की औषधि, (स्त्री०) एक प्रकार की भैंस जिसकी सींघ भीतर की ओर मुड़ी रहती है, (पु०) पेट में मरोड़ होकर वारवार दस्त आना ।

मुर्री-(हि० स्त्री०) डोरी या रस्सी के दो सिरों को आपस में जोड़ने की क्रिया जिसमें गाठ नहीं दी जाती, कपड़े आदि में ऐंठन या मरोड़, कपड़े आदि को मरोड़ कर बनी हुई बत्ती, चिकन या कसीदे की कढ़ाई की एक विधि, मुर्रीदार-ऐंठनदार ।

मुर्वा-(स० पु०) एक प्रकार का जगली पौधा ।

मुर्शिद-(अ० पु०) मार्ग दर्शक, गुरु, श्रेष्ठ, चतुर ।

मुलकना-(हिं० क्रि०) पुलकित होना, आखों पर हँसी देख पड़ना ।

मुलकित-(हि० वि०) मन्दहास युक्त, मुस्कराता हुआ ।

मुलकी-(अ० वि०) देखो मुल्की, देशी, शासन सम्बन्धी ।

मुलज़िम-(अ० वि०) अभियुक्त, जिसपर कोई अपराध लगाया गया हो ।

मुलतवी-(फा० वि०) स्थगित, जो कुछ समय के लिये रोक या टाले दिया गया हो ।

मुलतानी- (हि० वि०) मुलतान सम्बन्धी, (स्त्री०) एक रागिणी का नाम, एक प्रकार की बहुत कोमल चिकनी मिट्टी ।

मुलना-(अ० पु०) मौलवी, मुल्ला ।

मुलमची-(हिं० पु०) सोने चाँदी के पत्रों पर मुलम्मा करने वाला, गिलट करने वाला ।

मुलम्मा-(अ० वि०) सोना या चाँदी चढाया हुआ, चमकाया हुआ, (पु०) सोने या चादी के पत्तर को पारे बिजली आदि की सहायता से किसी धातु पर चढ़ाया जाता है, गिलेट, कलई, ऊपरी तड़क-भड़क, मुलम्मासाज़-मुलम्मा चढाने वाला ।

मुलहठी-(हिं० स्त्री०) देखो मुलेठी ।

मुलहा-(हिं० वि०) मूले नक्षत्र में उत्पन्न, उपद्रवी ।

मुलां-(अ० पु०) मौलवी, मुल्ला ।

मुलाक़ात-(अ० स्त्री०) आपस में मिलना, एक दूसरे का मिलाप, भेंट, मेलमिलाप, हेलमेल ।

मुलाक़ाती-(अ० पु०) परिचित व्यक्ति, जिससे जान पहचान हो ।

मुलाज़िम-(अ०पु०) पास रहने वाला, सेवक, नौकर ।

मुलाज़िमत-(अ० स्त्री०) सेवा, नौकरी ।

मुलायम-(अ० वि०) जो कड़ा न हो, नरम, हलका, सुकुमार, नाजुक, जिसमें किसी प्रकार का खिचाव न हो, मुलायम चारा-वह जो सहज में मिल सके, दूसरे की बातों में आने वाला ।

मुलायमियत-(अं० स्त्री०) मुलायम होने का भाव, सुकुमारता, कोमलता।
मुलायमी-(हि० स्त्री०) देखो मुलायमियत
मुलाहज़ा-(अ० पु०) निरीक्षण, देखभाल, सकोच, रिआयत।
मुलुक-(हि० पु०) देखो मुल्क।
मुलेठी-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसकी जड़ औषधि में प्रयोग होती है, जेठीमद।
मुल्क-(अ० पु०) देश, सूबा, प्रात,ससार।
मुल्कगीरी-(अ० स्त्री०) देश पर अधिकार प्राप्त करना, देश को जीत लेना।
मुल्की-(अ० वि०) देश सम्बन्धी, शासन या व्यवस्था सम्बन्धी।
मुल्तवी-(अ० वि०) रोका हुआ, स्थगित, जिसका समय आगे बढा दिया गया हो।
मुल्ला-(अ० पु०) मुसलमानों का पुरोहित, मौलवी।
मुवक्किल-(अ० पु०) वह जो अपने अदालती काम के लिये कोई वकील नियुक्त करे।
मुवना-(हिं० क्रि०) मरना।
मुवाना-(हिं०क्रि०)हत्या करना,मार डालना
मुशज्जर-(अ० पु०) एक प्रकार का छपा कपड़ा।
मुशफ्फ़िक़-(अ० वि०) दयालु, दयावान्, मित्र।
मुशल-(स० पु०) मूसल।
मुशलिका-(स० स्त्री०) तालमूली।
मुशली-(स० पुं०) बलदेव का एक नाम।
मुश्क-(फा० पु०) मृगनाभि, कस्तूरी, गन्ध, बू, (स्त्री०) कधे और केहुनी के बीच का भाग, भुजा।
मुश्कदाना-(फा० पु०) एक प्रकार की लता का बीज जो इलायची के दाने के समान होता है इसको तोड़ने पर कस्तूरी के समान गन्ध निकलती है।
मुश्कनाफा-(फा० पु०) मृग की नाभि जिसके भीतर से कस्तूरी निकलती है।
मुश्कनाभ-(फा० पु०) कस्तूरी मृग।
मुश्कबिलाई-(फा० स्त्री०) गन्धमार्जार, एक प्रकार का बिलाव जिसके अण्डकोष के पसाने में सुगध होती है।
मुश्क मेहदी-(फा०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पौधा।
मुश्किल-(अ०वि०) दुस्साध्य, कठिन, (स्त्री०) विपत्ति, मुसीबत,कठिनता, दिक्कत
मुश्की-(फा० वि०) कस्तूरी के रग का काला, जिसमें कस्तूरी पड़ी हो (पु०) काले रग का घोड़ा।
मुश्त-(फ़ा०पु०)मुट्ठी, एक मुश्त-एक ही बार, एक साथ (अलग अलग नहीं)
मुश्तहिर-(अ०वि०) जिसका इश्तहार दिया गया हो, जो प्रसिद्ध किया गया हो
मुश्ताक-(अ०वि०) इच्छा रखने वाला, चाहने वाला, प्रेमी, आसक्त।
मुषक-(स०पु०) मूसा, चूहा।
मुषल-(स०पु०) मूसल, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
मुषली-(स०स्त्री०) छिपकली, बिसतुइया।
मुषा-(स०स्त्री०) सोना चादी गलाने की घरिया।
मुषित-(स०वि०)चुराया हुआ,ठगा हुआ
मुष्क-(स०पुं०) अण्डकोष, तस्कर, चोर, ढेर (वि०) मासल, मास से भरा हुआ।
मुष्क शून्य-(स०वि०)बाधिया किया हुआ
मुष्ट-(स०वि०)नष्ट किया हुआ, मसला हुआ
मुष्टि-(स०पु०) एक प्रकार का प्राचीन परिमाण, मुट्ठी, मुक्का, घूसा, चोरी, दुर्भिक्ष, कस के दरबार का एक पहलवान, छुरे तलवार आदि की मूठ, मोखा नामक वृक्ष, ऋद्धि नामक औषधि, चार अगुल की नाप,सोनार।
मुष्टिका-(स०स्त्री०) मुक्का,घूसा, मुट्ठी।
मुष्टि कान्तक-(स०पु०) मुष्टिक नाम के पहलवान को मारने वाले बलदेव।
मुष्टिवेश-(स० पुं०) धनुष का वह भाग जो मुट्ठी से पकड़ा जाता है।
मुष्टि मेय-(स०वि०) मुट्ठी भर, बहुत थोड़ा सा।
मुष्टि युद्ध-(स०नपु०) घूसेबाजी, मुक्कों की लड़ाई।
मुष्टि योग-(स० पु०) कुछ हठयोग की क्रियायें जिनके करने से रोग हटता है, तथा शरीर में बल आता है, किसी बात का कोई सरल उपाय।
मुसक-(हिं०पु०) देखो मुश्क।
मुसकनि-(हिं०स्त्री०) मुसकराहट।
मुसकनिया-(हिं०स्त्री०) मुसकान।
मुसकराना-(हिं० क्रि०) मृदु हास, बहुत मन्द रूप मे हँसना।
मुसकराहट-(हिं०स्त्री०) मुसकराने की क्रिया या भाव, थोड़ी हँसी।
मुसका-(हिं०पु०) रस्सी की बनी हुई जाली जो बैलों के मुह पर बाधी जाती है
मुसकान-(हि०पु०) देखो मुसकराहट।
मुसकाना-(हि०क्रि०) देखो मुसकराना।
मुसकानि-(हिं०स्त्री०) मुसकराहट।
मुसकिराना-(हिं०क्रि०)देखो मुसकराना
मुसकिराहट-(हि०स्त्री०)देखो मुसकराहट
मुसकुराना-(हि०क्रि०) देखो मुसकराना
मुसकुराहट-(हि०स्त्री०) देखो मुसकराहट
मुसक्यान-(हि०पु०) देखो मुसकान।
मुसखोरी-(हिं०स्त्री०) खेत मे चूहों की अधिकता।
मुसजर-(अ०पु०) एक प्रकार का छपा कपड़ा।
मुसटी-(हि०स्त्री०) चुहिया, एक प्रकार का धान।
मुसद्दी-(हिं०स्त्री०)मिठाई बनाने का साचा
मुसद्दिका-(अ०वि०)परीक्षित,जाचा हुआ
मुसना-(हि०क्रि०) अपहृत, लूटा जाना, धन आदि का चुराया जाना।
मुसन्ना-(अ०पु०) किसी असल कागज की दूसरी नकल जो मिलान आदि के वास्ते रक्खी जाती है, रसीद आदि का वह भाग जो रसीद देने वाले के पास रह जाता है।
मुसन्निफ-(अ० पु०) ग्रन्थ कर्ता, पुस्तक बनाने वाला।
मुसब्बर-(अ०पु०) कुछ विशिष्ट क्रियाओं से सुखाया और जमाया हुआ घिकुआर का रस जो औषधियो में प्रयोग किया जाता है।
मुसमर, मुसमरवा-(हि० पुं०) चूहा खाने वाला एक पक्षी।

मुसमुद, मुसमुध–(हिं० पुं०) नाश किया हुआ, (पु०) नाश, बरबादी।
मुसम्मा–(अ० वि०) नामधारी, जिसका नाम रक्खा गया हो।
मुसम्मात–(अ० वि०) नाम धारिणी (स्त्री०) स्त्री, औरत।
मुसम्मी–(हिं० पु०) मीठा नीबू।
मुसरा–(हिं० पु०) पेड़ की वह जड़ जिसमें एकही मोटा पिण्ड धरती के भीतर दूर तक चला गया हो, उसमें शाखायें न हों।
मुसरिया–(हिं० स्त्री०) काच की चूड़ी बनाने का साचा, चूहे का बच्चा मुसरी।
मुसल–(स० पु०) धान कूटने का एक औज़ार, मूसल।
मुसलधार–(हिं० क्रि०, वि०) देखो मूसलधार।
मुसलमान–(फ़ा० पु०) अरब देशवासी इस्लाम धर्मावलम्बी जाति।
मुसलमानी–(फ़ा० वि०) मुसलमान सबधी, (स्त्री०) मुसलमानोंमें छोटे बालक के लिंगेन्द्रिय का अगला चमड़ा काटने का रस्म, सुन्नत।
मुसली–(हिं० पु०) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ दवाओं में प्रयोग होती है।
मुसल्ला–(अ० पु०) नमाज पढ़ने की दरी या चटाई, एक प्रकार का बरतन जिसमें मुहर्रम में चढ़ौवा चढ़ाया जाता है।
मुसवाना–(हिं० क्रि०) लुटवाना, चोरी कराना।
मुसव्विर–(अ० पु०) चित्रकार।
मुसव्विरी–(अ० स्त्री०) चित्रकारी का काम।
मुसहर–(हिं० पु०) एक अन्त्यज जगली जाति जो जगल से जड़ी बूटी लाकर बेंचते हैं।
मुसहिल–(अ० वि०) रेचक, दस्तावर (दवा)।
मुसाफ़िर–(अ० पु०) यात्री, पथिक, राहगीर।
मुसाफ़िरख़ाना–(अ० पु०) यात्रियों के ठहरने का स्थान, धर्मशाला, सराय।
मुसाफ़िरत–(अ० स्त्री०) मुसाफिर होने की दशा, मुसाफिरी।
मुसाफ़िरी–(अ० स्त्री०) यात्रा, प्रवास, मुसाफिर होने की दशा।
मुसाहब–(अ० पु०) किसी अमीर या राजा के समीप रहने वाला मनुष्य, पार्श्वचर।
मुसाहबत–(अ० पु०) मुसाहब का पद या काम।
मुसाहबी–(अ० स्त्री०) देखो मुसाहबत।
मुसीबत–(अ० स्त्री०) विपत्ति, सकट, कष्ट, तकलीफ।
मुस्क्यान–(हिं० स्त्री०) देखो मुसकराहट।
मुस्किल–(अ० स्त्री०) देखो मुश्किल।
मुस्की–(हिं० स्त्री०) देखो मुसकराहट।
मुस्टडा–(हिं० वि०) हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा, गुडा, बदमाश।
मुस्त–(स० पु०) मुस्तक, नागर मोथा।
मुस्तक–(स० पु०) नागर मोथा।
मुस्तक़िल–(अ० वि०) स्थिर, पक्का, दृढ, मज़बूत।
मुस्तग़ीस–(अ० पुं०) वह जो किसी प्रकार की इस्तग़ासा करे, प्रार्थी, फरियादी, मुद्दई।
मुस्तनद–(अ० वि०) विश्वसनीय, प्रामाणिक।
मुस्तराना–(अ० वि०) अलग किया हुआ, बरी किया हुआ।
मुस्तहक़–(अ० वि०) हकदार, अधिकारी योग्य।
मुस्ता–(स० स्त्री०) मुस्तक, मोथा।
मुसाद–(स० पु०) जगली सुअर।
मुस्तैद–(अ० वि०) सन्नद्ध, जो किसी काम करने में तत्पर हो, चुस्त, चालाक।
मुस्तैदी–(अ० स्त्री०) तत्परता, उत्साह, फुर्ती
मुस्तौफ़ी–(अ० पु०) वह पदाधिकारी जो अपने अधीन कर्मचारियों के काम की जाच करता हो।
मुहकम–(अ० वि०) दृढ, पक्का।
मुहकमा–(अ० पु०) विभाग, सरिश्ता।
मुहतमिम–(अ० पु०) व्यवस्थापक, प्रबध करने वाला।
मुहतरका–(अ० पु०) वाणिज्य व्यापार पर लगाया जाने वाला कर।
मुहताज–(अ० वि०) जिसको किसी ऐसे पदार्थ की आवश्यकता हो जो उसके पास न हो, आकाक्षी, चाहने वाला, निर्भर, अश्रित, दरिद्र, गरीब।
मुहवनी–(हिं० स्त्री०) नारगी की तरह का एक प्रकार का फल।
मुहब्बत–(अ० स्त्री०) प्रेम, प्रीति, मित्रता, दोस्ती, इश्क, लगन।
मुहम्मद–(अ० पु०) अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जिन्होंने इस्लाम या मुसलमानी धर्म चलाया था।
मुहम्मदी–(अ० पु०) मुहम्मद साहब का अनुयायी, मुसलमान।
मुहर–(फा० स्त्री०) देखो मोहर।
मुहरा–(हिं० पु०) सामने का भाग, अगला हिस्सा, मुख की आकृति, निशाना, शतरज आदि की कोई गोटी पत्नी घोटने का शीशा, घोडे का वह साज जो उसके मुख पर पहराया जाता है, मुहरा लेना–मुकाबला करना।
मुहरी–(हिं० स्त्री०) देखो मोरी, मोहरी।
मुहर्रम–(अ० पु०) अरबी वर्ष का पहला महीना, इसी महीने में इमाम हुसैन शहीद हुए थे।
मुहर्रमी–(अ० वि०) मुहर्रम सबधी, शोकजनक, मनहूस।
मुहर्रिर–(अ० पु०) लेखक, मुशी।
मुहर्रिरी–(अ० स्त्री०) मुहर्रिर का काम, लिखने का काम।
मुहलत–(अ० स्त्री०) देखो मोहलत।
मुहलैठी–(हिं० स्त्री०) देखो मुलेठी।
मुहसिन–(अ० वि०) अनुग्रह करने वाला एहसान करने वाला।
मुहसिल–(अ० वि०) तहसील वसूल करने वाला, फेरीदार।
मुहाफ़िज़–(अ० वि०) सरक्षक, हिफाजत करने वाला। मुहाफ़िज़ख़ाना–कचहरी में वह स्थान जहा पर सब प्रकार की

मिस्लें आदि रक्खी रहती हैं, मुहाफ़िज़ दफ्तर–मुहाफिजखाने का अधिकारी।
मुहाल–(अ० वि०) असम्भव, कठिन, दुष्कर, दुःसाध्य, नामुमकिन, (पु०) महाल, महल्ला।
मुहाला–(हिं० पु०) पीतल की चूड़ी जो शोभा के लिये हाथी के दाँत पर चढ़ाई रहती है।
मुहावरा–(अ० पु०) किसी भाषा में प्रचलित वाक्य का वह प्रयोग जिसका अर्थ विशिष्ट होता है, यह विलक्षण अर्थ लक्षणा या व्यंजना द्वारा लाया जाता है जैसे गुल खिलना, लाठी खाना आदि, अभ्यास, आदत, बोल चाल।
मुहासिब–(अ० पु०) गणितज्ञ, हिसाब जानने वाला, हिसाब लेने वाला।
मुहासिरा–(अ० पु०) शत्रु की सेना या किले को चारो ओर से घेरना।
मुहासिल–(अ० पु०) आय, आमदनी, लाभ, नफा, मुनाफा, बिक्री आदि से होने वाली आय।
मुहिं–(हिं० सर्व०) देखो मोहि।
मुहिम–(अ० स्त्री०) कठिन कार्य, मारके का काम, युद्ध, लड़ाई, चढ़ाई, आक्रमण धावा।
मुहीम–(हिं० स्त्री०) देखो मुहिम।
मुहुः–(सं० अव्य०) बार बार, फिर फिर।
मुहुक–(सं० नपु०) मोहक, मोहने वाला।
मुहूपुची–(हिं० पु०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
मुहुर्भुज–(सं० पु०) अश्व, घोड़ा।
मुहुर्मुहु–(सं० अव्य०) बारबार, फिरफिर।
मुहूर्त–(सं० पुं०) दिन रात का तीसवा भाग, कला का दसवा भाग, निर्दिष्ट क्षण या काल, फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ वह काल जिसमें शुभ कार्य आदि किया जाय, ज्योतिर्विद, ज्योतिषी, मुहूर्तक–एक मुहूर्त।
मुहूर्ता–(सं० स्त्री०) दक्षकी एक कन्या का नाम।
मूंग–(हिं० पु०) एक अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।
मूंगफली–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा जिसमें अरहर के समान फूल लगते हैं जो झुककर भूमि में घुस जाते हैं वहीं पर फल लगते हैं, चिनिया बादाम
मूंगा–(हिं० पु०) समुद्र में रहने वाले एक प्रकार के कीड़ों की लाल ठठरी जिसकी गुरिया बना कर पहनी जाती हैं, इसकी गणना रत्न में हैं, विद्रुम, प्रवाल, एक प्रकार का रेशम का कीड़ा, एक प्रकार का गन्ना।
मूंगिया–(हिं० वि०) हरे रंग का (पु०) एक प्रकार का हरा रंग, एक प्रकार का धारीदार चारखाना।
मूंछ–(हिं० स्त्री०) ऊपर के ओठ पर के कड़े बाल जो केवल मनुष्यों को होते हैं, मूंछ उखाड़ना–किसी का अभिमान नष्ट करना, मूंछपर ताव देना–गर्व से मूंछके बालों में ऐंठन देना, मूंछें नीची होना–अभिमान हट जाना
मूंछी–(हिं० स्त्री०) बेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी।
मूंज–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का तृण जिसमें पतली पतली लम्बी पत्तियाँ होती हैं टहनियाँ नहीं होतीं।
मूंड–(हिं० पु०) कपाल, सिर, मूंड मारना–कठिन परिश्रम करना, मूंड मुड़ाना–साधु वैरागी बन जाना, मूंड कटा–दूसरे को हानि पहुँचाने वाला।
मूंड़न–(हिं० पु०) मुडन, चूड़ाकरण संस्कार
मूंड़ना–(हिं० क्रि०) सिर के बाल बनाना, हजामत करना, धोखा देकर किसी का धन हर लेना, ठगना, चेला बनाना, मेंड का ऊन कतरना।
मूंड़ी–(हिं० स्त्री०) मस्तक, सिर, किसी पदार्थ का सिर का भाग, मूंड़ीबंध–कुश्ती का एक पेंच।
मूंदना–(हिं० क्रि०) ऊपर से कोई वस्तु डाल या फैलाकर किसी वस्तु को छिपाना, आच्छादित करना, छिद्र, द्वार, मुख आदि पर कोई वस्तु फैलाकर या रखकर उसको बन्द करना, खुला न रहने देना।
मूक–(सं० वि०) वाक्य रहित, गूँगा, दीन, विवश, लाचार।
मूकता–(सं० स्त्री०) मूकत्व, गूँगापन।
मूका–(हिं० पु०) किसी दीवार के आर पार बना हुआ छेद, छोटा गोल झरोखा, मोखा, बँधी हुई मुट्ठी का प्रहार, घूँसा।
मूखना–(हिं० क्रि०) देखो मूसना।
मूचना–(हिं० क्रि०) देखो मोचना।
मूजी–(अ० पु०) खल, दुष्ट, पाजी।
मूठ–(हिं० स्त्री०) मुष्टि, मुट्ठी, उतनी वस्तु जितनी मुट्ठी में आ सके, किसी हथियार की मूठ या दस्ता, मंत्र तंत्र का प्रयोग, जादू टोना, कौड़ी से खेलने का एक प्रकार का जुआ, मूठ मारना–जादू टोना करना, मूठ लगना–जादू का प्रभाव होना।
मूठना–(हिं० क्रि०) नष्ट होना, मर मिटना।
मूठा–(हिं० पु०) रस्सी के बँधे हुए घास फूस के पूले जो खपरैल के नीचे छाजन में लगाये जाते हैं, मुट्ठा।
मूठाली–(हिं० स्त्री०) तलवार।
मूठी–(हिं० स्त्री०) देखो मुट्ठी।
मूड़–(हिं० पु०) देखो मूंड़।
मूढ–(सं० वि०) मूर्ख, बेवकूफ, निश्चेष्ट, स्तब्ध, जिसको आगा पीछा न सूझता हो, (नपु०) मूर्छा, मूढ़ गर्भ–गर्भस्राव आदि रोग।
मूढ चेतन–(सं० वि०) निर्बोध, बेवकूफ, व्याकुल चित्त, सरल।
मूढता–(सं० स्त्री०) मूढत्व, बेवकूफी।
मूढधी–(सं० वि०) मन्दबुद्धि, जड़।
मूढमति–(सं० स्त्री०) मन्दबुद्धि, मूर्ख।
मूढात्मा–(सं० वि०) देखो मूढधी।
मूत्र–(हिं० पुं०) प्राणियों के उपस्थ मार्ग से निकलने वाला जल, मूत।
मूतना–(हिं० क्रि०) पेशाब करना, मूत्र निकालना।
मूतरी–(हिं० पु०) एक प्रकार का जंगली कौवा।

मूत्र-(स०नपु०) वह जल जो शरीर के विषैले पदार्थों को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलता है, मूत, पेशाब ।
मूत्रकृच्छ्र-(स० नपुं०) पेशाब का वह रोग जिसमें बड़े कष्ट से रुकरुक कर मूत्र निकलता है ।
मूत्रकोश-(स०पु०) मूत्राशय ।
मूत्रदोष-(स० पु०) मूत्रकृच्छ्र रोग ।
मूत्रनिरोध-(स० पु०) पेशाब का रुक जाना ।
मूत्र विज्ञान-(स०नपु०)मूत्र के भेद तथा दोषादोष जानने की विद्या ।
मूत्रवृद्धि-(स०स्त्री०) अधिक पेशाब होना
मूत्रशूल-(स०पु०) पेशाब करती समय पीड़ा होना।
मूत्राघात-(स०पुं०) पेशाब बन्द होने का रोग ।
मूत्राशय-(स०पु०) नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र सचित होता है, मसाना ।
मूना-(हि० पु०) पीतल या लोहे की अँकुसी जो टेकुवे पर जड़ी रहती है ।
मूर-(स०पु०) मूर्ख मनुष्य (वि०) मारक
मूर-(हि० पुं०) मूल, जड़, मूल धन, मूल नक्षत्र ।
मूरचा-(हि०पु०) देखो मोरचा ।
मूरख-(हि०वि०) देखो मूर्ख ।
मूरखताई-(हि०स्त्री०) देखो मूर्खता ।
मूरछना-(हि०स्त्री०) देखो मूर्छना, (क्रि०) मूर्छित या वेहोश होना ।
मूरछा-(हिं०स्त्री०) देखो मूर्छा ।
मूरत-(हि०स्त्री०) देखो मूर्ति ।
मूरतिवत-(हि०,वि०) मूर्तिमान्, शरीरधारी ।
मूरध-(हि०पु०) देखो मूर्धा ।
मूरि,मूरी-(हि०वि०) मूल, जड़,जड़ी,बूटी
मूरुख-(हि०वि०) देखो मूर्ख ।
मूर्ख-(स०वि०) मूढ, अज्ञ, वेवकूफ, वह जो गायत्री नहीं जानता ।
मूर्खता-(स०स्त्री०) मूढता, वेवकूफी ।
मूर्खत्व-(स० पु०) अज्ञता, नादानी ।
मूर्खिनी-(हिं०स्त्री०) वेवकूफ औरत ।
मूर्खिमा-(स० स्त्री०) मूर्खता, वेवकूफी ।
मूर्छन-(स० पु०) सज्ञा नष्ट होना या करना, वेहोश करना, मूर्छित करने का मन्त्र, कामदेव के एक बाण का नाम ।
मूर्छना-(स० स्त्री०) सगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक आरोह-आवरोह, ग्राम के सातवें भाग का नाम ।
मूर्छा-(स० स्त्री०) किसी प्राणि का निश्चेष्ट पडे रहने की अवस्था, अचेत स्थिति,वेहोशी,देखो मूर्छना, मूर्छागत-वेहोश ।
मूर्छित-(स० वि०) मूर्छायुक्त, वेहोश, मारा हुआ (पारा), वृद्ध, बूढ़ा, मूढ, वेवकूफ, व्याप्त, फैला हुआ ।
मूर्त-(स० वि०) मूर्छित, अचेत, जिसका कुछ रुप या आकार हो, साकार, नैयायिकों के मत से पञ्चतत्व, ठोस ।
मूर्तता-(स० स्त्री०) मूर्त होने का भाव या धर्म ।
मूर्ति-(स० स्त्री०) काठिन्य, कठिनता, शरीर, देह, प्रतिमा, किसी के रूप या आकृति के समान बनाई हुई वस्तु, आकृति, स्वरूप, रग या रेखा द्वारा बनाई हुई आकृति, चित्र, तसवीर, प्रतिमा ।
मूर्तिकार-(स०पुं०) मूर्ति बनाने वाला, चित्रकार, मुसौवर ।
मूर्तित्व-(स०नपु०)मूर्ति का भाव या धर्म
मूर्तिधर-(स०पु०) मूर्ति धारण करने वाला
मूर्तिपूजक-(स० पु०) मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करने वाला ।
मूर्तिपूजा-(स० स्त्री०) किसी देवी देवता की भावना करके उसकी मूर्ति या प्रतिमा को पूजना ।
मूर्तिमत्-(स० नपु०) शरीर, देह (वि०) जो शरीर धारण किये हो, साक्षात्, गोचर, प्रत्यक्ष, सशरीर ।
मूर्तिमय-(स० वि०) मूर्तिस्वरूप ।
मूर्तिमान्-(सं० वि०) देखो मूर्तिमत् ।
मूर्तिविद्या-(स० स्त्री०) मूर्ति गढने की विद्या, चित्रकारी ।
मूर्ध-(हि०पु०) मस्तक, शिर ।
मूर्धक-(स० पु०) क्षत्रिय ।
मूर्धकर्णी-(स० स्त्री०) वह वस्तु जो आतप तथा वर्षा से बचने के लिये सिर पर रक्खी जावे, छाता ।
मूर्धकर्परी-(स० स्त्री०) टोकरा ।
मूर्धज-(स० पु०) केश बाल (वि०) शिर से उत्पन्न होने वाला ।
मूर्धज्योतिस-(स० नपु०) ब्रह्मरन्ध्र ।
मूर्धन्य-(स० वि०) मूर्धा सवंधी, मस्तक, या सिर में स्थित, मूर्धन्य वर्ण-वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्धा से होता है यथा-ऋ, ॠ, ट,ठ,ड,ढ ण, र और ष।
मूर्धन्वान्-(स०पु०)एक गन्धर्व का नाम ।
मूर्धपुष्प-(स० पु०) शिरीष पुष्प ।
मूर्धरस-(स० पु०) भात का फेन ।
मूर्धवेष्टन-(स०नपु०) उष्णीश, पगड़ी ।
मूर्धा-(हि०पु०) सिर, मूर्धाभिषेक-शिर पर अभिषेक या जल सिंचन होना।
मूर्वा-(सं०स्त्री०) मरोड़ फली नामक लता
मूल-(स० नपु०) वृक्ष का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है, जड़, आदि, आरम, पास, समीप, असल जमा या धन जो किसी व्यापार में लगाया जाता है, पूजी, आदि कारण, नीव, बुनियाद, ग्रन्थकार का लिखा हुआ ग्रन्थ जिस पर टीका की जाती है, खाने योग्य जड़,कन्द, सूरन,पिपलामूल,। अश्विनी आदि नक्षत्रों में से उन्नीसवां नक्षत्र,देवताओं का आदि मन्त्र या बीज (वि०) मुख्य, प्रधान ।
मूलक-(स० पु०) मूली, मुरई, मूल स्वरूप, एल स्थावर विष (वि०) उत्पन करने वाला, जनक ।
मूलकर्म-(स०नपु०) प्रधान कर्म ।
मूलकारण-(स० नपुं०) प्रधान हेतु ।
मूल कारिका-(स०स्त्री०) चण्डी ।
मूल ग्रन्थ-(स०पु०)असल ग्रन्थ जिसका अनुवाद, टीका आदि की गई हो ।
मूलच्छेद-(स०पु०) किसी पदार्थ का जड़ से नाश ।
मूल जाति-(स०स्त्री०) प्रधान वश ।
मूलत्व-(सं०नपु०)मूल का भाव या धर्म

मूलद्रव्य-(स०पु०) मूल धन, पूजी।
मूलद्वार-(स० नपुं०) सदर फाटक।
मूलधन-(स०नपु०) मूल द्रव्य पूजी।
मूल पुरुष-(स०पु०) बीज पुरुष, किसी वश का आदि पुरुष या पुरखा।
मूलपोती-(स०स्त्री०)छोटी पोय का सागँ।
मूलप्रकृति-(स०स्त्री०) आद्या शक्ति।
मूल बन्ध-(स०पु०)हठयोग की एक क्रिया
मूलभद्र-(स०पु०) कसराज।
मूलभव-(स०वि०)जो मूल से उत्पन्न हो
मूलमन्त्र-(स०पु०) बीज मन्त्र।
मूलवित्त- (स०नपु०) मूल धन, पूजी।
मूलविद्या-(स०स्त्री०) बारह अक्षर का एक मन्त्र।
मूलस्थली-(स०स्त्री०) आलवाल थाला।
मूलस्थान-(स० नपु०) प्रधान स्थान, भीत, दीवार, आदि स्थान, बाप दादा की जगह।
मूलस्थायी-(स०पु०) शिव, महादेव।
मूलहर-(स०वि०) मूलनाशक।
मूला-(स०स्त्री०) शतावर, मूल नक्षत्र।
मूलाधार-(स० पु०) योग के अनुसार मनुष्य के शरीर के भीतर का वह स्थान जो गुदा और लिंग के बीच में स्थित है
मूलाशी-(स० वि०) कन्द मूल खाकर रहने वाला।
मूलिका-(स०स्त्री०)औषधियों की जड़, जड़ी
मूली-(हि० स्त्री०) एक पौधा जिसकी जड़ खाने में तीक्ष्ण तथा मीठी होती है, मुरई, किसीको गाजर मूली समझना-अति तुच्छ जानना।
मूलोच्छेद-(स०पु०) जड़ से नाश।
मूलोत्पाटन-(स०नपु०) जड़ से उखाड़ना
मूल्य-(स०नपु०) किसी वस्तु के बदले में मिलने वाला धन, कीमत, दाम, मूल्यकरण-मूल्य निरूपण, दाम ठीक करना, मूल्यवान्-अधिक दाम का, कीमती।
मूष-(स०पु०) मूसा, चूहा, सोना चादी गलाने की घरिया।
मूषक-(स०पु०) इन्दुर, चूहा।
मूषा-(स० स्त्री०) गवाक्ष, झरोखा, गोखरू का पौधा।
मूषीकरण-(स० नपु०) घरिये में धातु गलाने की क्रिया।
मूस-(हिं०पु०) चूहा, मूसदानी-चूहा फँसाने का पिंजड़ा।
मूसना-(हि०क्रि०)चुराकर उठा ले जाना
मूसर-(हि०पु०) धान कूटने का लकड़ी का मोटा डडा, मूसल, असभ्य पुरुष।
मूसरचद-(हि० पु०) अपढ, गँवार, हट्टाकट्टा परन्तु निकम्मा।
मूसल-(हि०पु०) धान कूटने का लबा मोटा डडा, एक अस्त्र जिसको बलराम धारण करते थे।
मूसलधार-(हि०क्रि०वि०) वृष्टि जो मूसल के समान मोटी धार में हो।
मूसला-(हिं०पु०) देखो मुसरा।
मूसली-(हि०पु०) हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ औषधियों में काम आती है।
मूसा-(हिं०पु०) चूहा, यहूदियों के एक पैगम्बर का नाम।
मूसाकानी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसके पत्ते चूहे के कान के आकार के होते हैं, यह औषधियों में प्रयोग होती है।
मूसाफाहा-(अ०पु०) अरबी मुसलमानों के अभिनन्दन की एक रीति।
मृकण्डु-(स०पु०)मार्कण्डेय ऋषि के पिता
मृग-(स० पु०) पशु मात्र विशेष कर जगली पशु, हाथी की एक जाति, मृगशिरा नक्षत्र, अन्वेषण, खोज, प्रार्थना,अगहन का महीना,मकर राशि, मृगनाभि, हरिन, कामशास्त्र के अनुसार पुरुषों के चार भेदो में से एक, तलाश करने वाला, वैष्णवो के तिलक का एक भेद, मृगकानन-मृगया का उपयुक्त वन, मृगक्षीर-हरनी का दूध।
मृगगामिनी-(स०स्त्री०) मृग के समान चलने वाली।
मृगचर्म-(स०पु०) हरिन का चमड़ा जो बहुत पवित्र माना जाता है।
मृगछाला-(हि०स्त्री०)हरिन का चमड़ा।
मृगजल-(स०पु०) मृगतृष्णा की लहरें।
मृगजहु-(स०पु०) हरिन का बच्चा।
मृगजीवन-(स०पु०) व्याध, बहेलिया।
मृगणा-(स०स्त्री०)खोई हुई वस्तु की खोज
मृगतृषा, मृगतृष्णा-(स०स्त्री०) जल की लहरो का आभास जो रेगिस्तान में कड़ी धूप के कारण देख पड़ता है, मृगजल, मरीचिका।
मृगत्व-(स०नपु०) मृग का भाव या धर्म
मृगदश, मृगदशक-(स०पु०) कुत्ता।
मृगदाव-(स०पु०) मृगकानन, काशी के पास का सारनाथ नामक एक स्थान।
मृगदृश्-(स०वि०) मृगलोचन, हरिन के समान आख वाला।
मृगधर-(स०पु०) चन्द्रमा।
मृगधूर्त-(स०पु०) शृगाल, सियार।
मृगनाथ-(स०पु०) सिंह, शेर।
मृगनाभि-(स०पु०) कस्तूरी।
मृगनेत्रा-(स०वि०) मृग तुल्य नेत्र वाली।
मृगपति, मृगप्रभु-(स०पु०) सिंह,शेर।
मृगभद्र-(स०पु०) हाथियों की एक जाति
मृगमद-(स०पु०) कस्तूरी।
मृगमरीचिका-(स०स्त्री०) देखो मृगतृष्णा
मृगमित्र-(स०पु०) चन्द्रमा।
मृगमेद-(स०पु०) कस्तूरी।
मृगया-(स० स्त्री०) शिकार, आखेट, मृगया वन-आखेट करने का जगल।
मृगराज-(स०पु०) सिंह, व्याघ्र।
मृगरोग-(स० पु०) घोडे का एक घातक रोग।
मृगरोचन-(स०पु०) कस्तूरी, मुश्क।
मृगलाञ्छन-(स०पु०) चन्द्रमा।
मृग लेखा-(स०स्त्री०)चन्द्रमा में का कलङ्क
मृगलोचना-(स०स्त्री०) हरिण के समान नेत्र वाली स्त्री (वि०) हरिण के समान नेत्र वाली।
मृगलोचनी-(स०स्त्री०)देखो मृगलोचना
मृगवन-(स० नपु०) आखेट का जगल।
मृगवारि-(स०पु०) मृगतृष्णा का जल।
मृगव्याध-(स०पु०) मृगों को खोजने वाला बहेलिया,एक नक्षत्र,शिव,महादेव।
मृगशाव-(स०पु०) हरिण का बच्चा।

मृगशिरा-(स० स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पांचवा नक्षत्र।
मृगशीर्ष-(स० पु०) मृगशिरा नक्षत्र।
मृगश्रेष्ठ-(स०नपु०) व्याघ्र, बाघ।
मृगहन्-(स०स्त्री०) व्याघ, बहेलिया।
मृगाक्षी-(स०स्त्री०) देखो मृगनयना।
मृगाङ्क-(स० पु०) चन्द्रमा, कपूर, वायु, वैद्यक के एक रस का नाम।
मृगाङ्गना-(स०स्त्री०) हरिणी, हरनी।
मृगाङ्गजा-(स०स्त्री०) कस्तूरी।
मृगाधिप-(स० पुं०) सिंह, शेर।
मृगाधिराज-(स०पु०) देखो मृगाधिप।
मृगारि-(स०पु०) सिंह, व्याघ्र, बाघ।
मृगाश, मृगाशन-(स०पु०) सिंह, शेर।
मृगित-(स०वि०) अन्वेषित, खोजा हुआ
मृगिनी-(हि०स्त्री०) हरनी।
मृगी-(स०स्त्री०) हरनी, कश्यप ऋषि की एक कन्या का नाम, तीन अक्षर का एक छन्द, पीले रंग की एक प्रकार की कौड़ी, कस्तूरी, अपस्मार रोग।
मृगीपति-(स० पु०) श्रीकृष्ण।
मृगीलोचना-(स०स्त्री०) देखो मृगनयना
मृगेक्षण-(सं० वि०) मृग के समान आँख वाला।
मृगेक्षणा-(सं०स्त्री०) देखो मृगनयनी।
मृगेन्द्र-(स०पु०) सिंह, शेर, एक छन्द का नाम, मृगेन्द्रचटक-बाज़ पक्षी।
मृगेन्द्रमुख-(स०नपु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं।
मृगेश, मृगेश्वर-(स० पु०) सिंह, शेर।
मृग्य-(स०वि०) खोजने लायक़।
मृज-(स० पुं०) मुरज नाम का बाजा।
मृज्य-(स०वि०) मार्जन करने योग्य।
मृड़-(स० पु०) शिव, महादेव।
मृड़न-(स० नपु०) आनन्दित करना।
मृडा-(स० स्त्री०) दुर्गा।
मृडानी-(स०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम।
मृणाल-(स० पु०) कमल की डंडी, कमलनाल, उशीर, खस, कमल की जड़, मुरार, भसींड़।
मृणालक-(स०पु०) कमल नाल।
मृणालिनी-(स०स्त्री०) पद्मिनी, कमलिनी, पद्मसमूह, वह स्थान जहां कमल हो।
मृणाली-(स०स्त्री०) देखो मृणाल।
मृत-(स०वि०) गतप्राण, मरा हुआ।
मृतक-(स०नपु०) शव, मुर्दा।
मृतककर्म-(स० पु०) वह कृत्य जो मृतक पुरुष की शुद्ध गति के लिये किया जाता है, प्रेतकर्म।
मृतकधूम-(स०पु०) भस्म, राख।
मृतकल्प-(स० वि०) मृतप्राय, मरे के समान।
मृतगृह-(स०नपु०) समाधि स्थान, कब्र।
मृतजीव-(स०पु०) मरा हुआ प्राणी।
मृतजीवनी-(स० स्त्री०) मुर्दे को जिलाने की विद्या।
मृतप-(सं०पु०) शव की रक्षा करने वाला
मृतमत्त-(स० पु०) शृगाल, सियार।
मृतवत्सा-(स०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सन्तति मर मर जाती हो।
मृतसंस्कार-(स०पु०) अन्त्येष्टि क्रिया।
मृतसञ्जीवनी-(स० स्त्री०) मुर्दे को जिलाने की बूटी, दुधिया घास।
मृतसूत-(स०पु०) रससिन्दूर।
मृतस्नान-(स०नपु०) सजाति या बन्धु के मरने पर उसके उद्देश्य से किया जाने वाला स्नान।
मृतहार-(स०पु०) मुरदा ढोने वाला।
मृताङ्ग-(स०पु०) शव, लाश।
मृताङ्गार-((स०पु०) मुरदे की भस्म।
मृतालक-(स०नपु०) अरहर, गोपीचन्दन
मृताशन-(स०वि०) मुरदा खाने वाला।
मृताशौच-(स०नपु०) वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।
मृति-(स० स्त्री०) मरण, मृत्यु।
मृतोद्भव-(स०पु०) समुद्र, महासागर।
मृत्कपाल-(स० नपु०) खपड़ा, जली मिट्टी।
मृत्कर-(स० पु०) कुम्भकार, कोंहार।
मृत्किरा-(स०स्त्री०) घुघरू।
मृत्तिका-(स० स्त्री०) मिट्टी, मृत्तिका लवण-मिट्टी का नोना।
मृत्पाण्डु-(स० नपु०) पाण्डुरोग जो मिट्टी खाने से उत्पन्न होता है।
मृत्पात्र-(स०नपु०) मिट्टी का बरतन।
मृत्यु-(स० पु०) यम, कंस, मौत, निधन, प्राण छूटना, शरीर में से प्राणों का अलग होना।
मृत्युकन्या-यम की लड़की।
मृत्युञ्जय-(स० पु०) शिव, महादेव (वि०) जिसने मृत्यु को जीत लिया हो।
मृत्युदूत-(स०पु०) यम के दूत।
मृत्युद्वार-(स०नपु०) शरीर के नव छिद्र जिसमेंसे होकर प्राण वायु निकलती है।
मृत्युपाश-(स०पु०) यम का बन्धन।
मृत्युबीज-(स० पु०) मृत्यु का कारण, जन्म।
मृत्युभय-(स० पु०) मरने का डर।
मृत्युराज-(स० पु०) यमराज।
मृत्युरूपी-(स० वि०) मृत्यु के समान आकार वाला।
मृत्युलोक-(स० पु०) मर्त्यलोक, यमलोक।
मृत्युसुत-(स० पु०) केतु ग्रह।
मृत्स-(सं० वि०) चिपचिपा।
मृत्स्ना-(स०स्त्री०) पवित्र मिट्टी, गोपीचन्दन।
मृथा-(हि० क्रि० वि०) मृषा, वृथा।
मृदङ्ग-(स० पु०) ढोलक के आकार का उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का बाजा।
मृदङ्गक-(स० पु०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं।
मृदङ्गफल-(स०पु०) पनसफल, कटहल।
मृदङ्गी-(स० स्त्री०) कपोतकी, तरोई।
मृदर-(स० पु०) व्याधि, रोग।
मृदा-(स० स्त्री०) मृत्तिका, मिट्टी, मृदकर-वज्र।
मृदित-(स०वि०) चूर्ण किया हुआ।
मृदु-(स० वि०) कोमल, मुलायम, सुकुमार, नाजुक, जो सुनने में कर्कश न हो, मन्द, धीमा (स्त्री०) घृतकुमारी, घिकुआर, मृदुकर्म-मुलायम करने का काम, मृदुगमना-धीमी चाल से चलने वाली, मृदुच्छद-मोचपत्र

का वृक्ष।

मृदुता-(स० स्त्री०) कोमलता, मन्दता, धीमापन, मुलायमियत।

मृदुपर्ण-(स०पु०) कोमल पत्ता, नरकट, भोजपत्र का वृक्ष।

मृदुपूर्व-(स०क्रि०वि०) विनय पूर्वक।

मृदुल-(स० नपु०) जल, पानी (वि०) कोमल, मुलायम, सुकुमार, दयालु हृदय का।

मृदुलता-(स०स्त्री०)सुकुमारता, कोमलता।

मृदुलोमक-(स० पु०) शशक, खरहा।

मृदुवात-(स० पु०) मन्द मन्द चलने वाला पवन।

मृदुहृदय-(स०वि०) दयालु, कृपालु।

मृदङ्ग-(स०नपु०) कोमल शरीर।

मृध-(स०नपु०) युद्ध, लड़ाई।

मृधा-(स०अव्य०) मृषा, झूठमूठ।

मृनाल-(हिं०पु०) देखो मृणाल।

मृन्मय-(स०वि०) मिट्टी का बना हुआ।

मृषा-(स०अव्य०) मिथ्या, झूठमूठ (वि०) असत्य, झूठ, मृषाज्ञान-झूठी समझ।

मृषात्व-(स०नपु०) असत्यता।

मृषादृष्टि-(स०स्त्री०) भूल देखना।

मृषाभाषी-(स० वि०) असत्य वक्ता, झूठ बोलने वाला।

मृषावाद-(स० पु०) मिथ्या वाक्य, असत्य वचन।

मृषावादी-(स०वि०) झूठ बोलने वाला।

मृष्ट-(स०वि०)शोधित, साफ किया हुआ।

मृष्टि-(स०स्त्री०) परिशुद्धि, शोधन।

में-(हिं० अव्य०) अधिकरण कारक का चिह्न जिसको किसी शब्द के आगे लगाने से 'भीतर, बीच का, या चारो तरफ होना' बतलाया जाता है, यह आधार या अवस्थान सूचिक करता है।

मेंगनी-(हिं०स्त्री०) पशुओं की गोलियों के रूप में विष्टा, यथा ऊंट या बकरी की विष्टा, लेंड़ी।

मेंबर-(अं० पु०) किसी सभा या गोष्ठी का सभासद, सदस्य।

मेक-(स० पु०) छाग, बकरी।

मेकदार-(अ०पु०) परिमाण, अन्दाज।

मेकल-(स०पु०) विन्ध्य पर्वत का एक भाग जो रीवा राज्य के अन्तर्गत है।

मेकलसुता-नर्मदा नदी।

मेक्षण-(स० नपु०) चम्मच के आकार का एक यज्ञ पात्र।

मेख-(हिं० पु०) देखो मेष, (स्त्री०) भूमि में गाड़ने के लिये नुकीली गढ़ी हुई लकड़ी, खूटा, कील, काटा, लकड़ी का पच्चड़।

मेखड़ा-(हिं० स्त्री०) घास की फट्टी का घेरा।

मेखल-(हिं०स्त्री०) किंकिणी, करधनी।

मेखला-(स० स्त्री०) करधनी, कमरबन्द जिसमें तलवार लटकाई जाती है, मण्डलाकार वस्तु, गोल घेरा, पर्वत का मध्य भाग, बन्द, सामी, मिट्टी का घेरा जो होमकुण्ड के चारो ओर बना रहता है, साधु की कफनी।

मेखलाल-(स० पु०) शिव, महादेव।

मेखली-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पहनावा जिसको गले में डालने से पेट और पीठ ढकी रहती है तथा दोनों हाथ खुले रहते हैं, कटिबन्ध, करधनी।

मेगजीन-(अं० पु०) वह स्थान जहां सेना के लिये बारूद रक्खी जाती है, बारूदखाना, कोई सामयिक पत्र जिसमें लेख छपते हैं।

मेघ-(स० पु०) मोथा, राक्षस, आकाश में एकत्रित घनीभूत जल वाष्प जिससे वर्षा होती है, पयोधर, पर्जन्य, बादल, संगीत के प्रधान छः रागों में से एक, मेघकाल-वर्षाकाल, मेघगर्जन-बादलों की गड़गड़ाहट, मेघचिन्तक-मेघ को चाहने वाला, चातक, चकवा, मेघजाल-बिजली, मेघजीवन-चकवा पक्षी, मेघडम्बर-मेघ की गर्जना, मेघतिमिर-बदली का दिन, मेघदीप-बिजली, मेघदुन्दुभि-बादल की गरज।

मेघदूत-(स० पु०) महाकवि कालिदास प्रणीत एक खण्ड काव्य।

मेघनाथ-(स०पु०) एक राग का नाम।

मेघनाथ-(स० पु०) इन्द्र।

मेघनाद-(स० पु०) रावण के पुत्र का नाम, बादल की गरज, मोर, बिल्ली, बकरा, वरुण वृक्ष।

मेघनिर्घोष-(स०पु०) बादल की गरज।

मेघपुष्प-(स० पु०) इन्द्र का घोड़ा, श्रीकृष्ण के रथ के चार घोड़ों में से एक, जल, पानी, मोथा, नदी का पानी, बकरे की सींग।

मेघभूति-(स० पु०) वज्र, बिजली।

मेघमण्डल-(स० नपु०) आकाश।

मेघमल्लार-(स० पु०) सपूर्ण जाति का एक राग।

मेघमाला-(स०स्त्री०) बादलों की घटा, स्कन्द की एक अनुचरी का नाम।

मेघमाली-(स०पु०)एक असुर का नाम, स्कन्द के एक अनुचर का नाम।

मेघयोनि-(स० पु०) धुवा, कुहरा।

मेघरवा-(स० स्त्री०) स्कन्द की एक मातृका का नाम।

मेघराग-(स० पु०) संगीत में छ प्रकार के रागों में से एक।

मेघराज-(स० पु०) इन्द्र।

मेघराजि, मेघलेखा-(स०स्त्री०) बादलों की घटा।

मेघवर्णा-(स०स्त्री०) नील का पौधा।

मेघवर्त-(स०पु०) प्रलय काल के मेघों में से एक का नाम।

मेघवर्त्म-(स० नपु०) आकाश।

मेघवह्नि-(स०पु०) वज्र, बिजली।

मेघवाई-(हिं० स्त्री०) मेघों की घटा।

मेघवाहन-(स०पु०) इन्द्र।

मेघवितान-(स०नपु०) एक छन्द का नाम, मेघ समूह।

मेघविस्फूर्जिता-(स०स्त्री०) एक वर्ण-वृत्त का नाम।

मेघवेश्म-(स० नपु०) आकाश।

मेघश्याम-(स० वि०) मेघ के समान काला (पु०) श्रीकृष्ण।

मेघसार-(स० पु०) चीनिया कपूर।

मेघसुहृद-(स०पु०) मयूर, मोर।

मेघस्वन, मेघह्राद-(स० पु०) मेघ

की गर्जना।
मेघा-(हि॰ पु॰) मण्डूक, मेढक।
मेघागम-(सं॰ पु॰) वर्षाकाल।
मेघाच्छन्न-(सं॰ वि॰) बादलों से ढपा हुआ।
मेघाच्छादित-(सं॰ वि॰) देखो मेघाच्छन्न।
मेघाडम्बर-(सं॰पु॰) मेघों का विस्तार।
मेघानन्द-(सं॰ पु॰) मयूर, मोर।
मेघान्त-(सं॰ पु॰) शरत् काल।
मेघाभा-(सं॰ पु॰) वन जामुन।
मेघारि-(सं॰ पु॰) वायु, हवा।
मेघावरि-(हिं॰ पु॰) मेघावलि, बादलों की घटा।
मेच-(हि॰ स्त्री॰) पलंग, बेंत की बीनी हुई खाट।
मेचक-(सं॰नपु॰) अन्धकार, अंधेरा, धुवा बादल, एक प्रकार का छोटा विच्छू (वि॰) श्यामल, काला।
मेचकता-(सं॰ स्त्री॰) श्यामता, कालापन।
मेचकताई-(हि॰स्त्री॰) देखो मेचकता।
मेज-(फा॰ स्त्री॰) टेबुल, ऊंची चौकी जो खाना खाने या लिखने पढने के लिये रक्खी जाती है, मेजपोश-मेज़ पर बिछाने का कपड़ा।
मेजवान-(फा॰ पु॰) आतिथ्य सत्कार करने वाला, मेहमानदार।
मेजर-(अं॰पु॰) सेना का एक अफसर।
मेजा-(हिं॰पुं॰) मण्डूक, मेढक।
मेट-(अं॰ पु॰) मजदूरों का नायक, सरदार, जमादार।
मेटक-(हि॰ वि॰) नाश करने वाला, मिटाने वाला।
मेटनहार-(हि॰ पुं॰) मिटने या दूर करने वाला।
मेटना-(हिं॰क्रि॰) घिसकर साफ करना, मिटाना नष्ट करना, दूर करना।
मेटिया-(हिं॰ स्त्री॰) मिट्टी का घड़े से छोटा पात्र।
मेटी, मेटुवा-(हिं॰ स्त्री॰) देखो मेटिया।
मेटुवा-(हि॰ वि॰) उपकार न मानने वाला, कृतघ्न।
मेड़-(हिं॰पु॰) खेत या जमीन का मिट्टी डाल कर बनाया हुआ घेरा, दो खेतों के बीच की सीमा, ऊँची लहर, मेड़ बंदी-मेड बनाने की क्रिया।
मेड़क-(हिं॰ पुं॰) मण्डूक, मेढक।
मेड़रा-(हिं॰ पु॰) किसी वस्तु का मण्डलाकार टांचा, उभड़ा हुआ गोल किनारा।
मेड़राना-(हिं॰ क्रि॰) देखो मँड़राना।
मेड़िया-(हि॰ स्त्री॰) मढी।
मेडल-(अं॰पु॰) सोने चादी की बनी हुई मुद्रा जो किसी विशेष कार्य करने के लिये अथवा विशेष निपुणता दिखलाने से लिये किसी को दी जाती है, पदक।
मेढक-(हिं॰पु॰) एक जल स्थल चारी जन्तु, मण्डूक, दुर्दुर, मेघा।
मेढा-(हिं॰पु॰) सींग वाला एक चौपाया जिसके शरीर पर घने रोवें होते हैं, इसको लोग लड़ाने के लिये पालते हैं।
मेढासिंगी-(हि॰ स्त्री॰) एक झाड़ी-दार लता जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।
मेढी-(हि॰ स्त्री॰) तीन लड़ियों में गूथी हुई चोटी।
मेढ्र-(सं॰ पु॰) शिश्न, लिङ्ग।
मेथि-(सं॰ पु॰) पशुओं को बांधने का खूटा।
मेथी-(सं॰ स्त्री॰) एक पौधा जिसकी फलिया मसाले और औषधियों में प्रयोग की जाती हैं।
मेथौरी-(हिं॰ स्त्री॰) उर्द की बरी जो मेथी का साग मिलाकर बनाई जाती है।
मेद-(सं॰ पु॰) वसा, चरबी, शरीर में चरबी बढ़ने का रोग, कस्तूरी, एक अन्त्यज जाति, मेदज-चरबी से उत्पन्न, मेदपुच्छ-एड़क, दुम्बा मेढा, मेदस्वी-चरबी के कारण जिसका शरीर मोटा हो गया हो।
मेदा-(सं॰ स्त्री॰) अष्टवर्ग में से एक प्रसिद्ध औषधि, (अं॰पुं॰) पक्वाशय, पेट।
मेदिनी-(सं॰ स्त्री॰) पृथ्वी, धरती, मेदा।
मेदिनीज-(सं॰पु॰) मंगल ग्रह।
मेदनीपति-(सं॰ पु॰) पृथिवी पति।
मेदुर-(सं॰ वि॰) स्निग्ध, चिकना।
मेदोज-(सं॰ पु॰) अस्थि, हड्डी।
मेध-(सं॰ पु॰) यज्ञ, यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु, मेधज-विष्णु।
मेधा-(सं॰ स्त्री॰) धारणवती बुद्धि, मन की स्मरण रखने की शक्ति, धन, सम्पत्ति, सोलह मातृकाओं में से एक, छप्पय छन्द का एक भेद, दक्ष प्रजापति की एक कन्या।
मेधातिथि-(सं॰पु॰) कण्व मुनि के पिता
मेधावती-(सं॰ स्त्री॰) वह स्त्री जिसकी धारणा शक्ति तीव्र हो।
मेधाविनी-(सं॰ स्त्री॰) ब्रह्मा की पत्नी।
मेधावी-(सं॰ वि॰) जिसकी धारणा शक्ति तीव्र हो, पंडित, विद्वान, चतुर, (पु॰) तोता, मदिरा, शराब।
मेध्य-(सं॰ वि॰) पवित्र, बुद्धि बढ़ाने वाला, छाग, बकरा।
मेध्या-(सं॰ स्त्री॰) लाल कमल, गोरोचन, ब्राह्मी बूटी, ईख।
मेनका-(सं॰स्त्री॰) एक अप्सरा का नाम, पार्वती की माता का नाम।
मेनकात्मजा-(सं॰ स्त्री॰) दुर्गा, शकुन्तला
मेना-(सं॰स्त्री॰) देखो मेनका (हि॰क्रि॰) किसी पकवान में मोयन डालना।
मेन्धिका-(अ॰ स्त्री॰) मेंहदी।
मेम-(अं॰ स्त्री॰) युरोप या अमेरिका आदि देश की स्त्री, ताश का एक पत्ता, बीवी, रानी।
मेमना-(हि॰ पु॰) भेड़ी का बच्चा, घोड़े की एक जाति।
मेमार-(अ॰ पु॰) मकान बनाने वाला शिल्पी, स्थापित, थवई, राजगीर।
मेमिष-(सं॰ वि॰) जिसकी आखों पर पलक न हों।
मेमोरियल-(अं॰पुं॰) वह प्राचीन पत्र जो किसी बड़े अधिकारी के पास विचारार्थ भेजा जाय स्मारक चिह्न, यादगार।
मेय-(सं॰ वि॰) जो नापा जा सके।
मेर-(हि॰ पु॰) देखो मेल।

मेरक-(स० पु०) एक असुर जिसको विष्णु ने मारा था।
मेरवना-(हिं०क्रि०)संयोग करना,मिलाना
मेरा-(हिं० सर्व०) 'मैं' शब्द का सम्बन्ध कारक का रूप,मुझसे सम्बन्ध रखने वाला
मेराउ, मेराव-(हिं० पु०) मिलाप, समागम, (स्त्री०) गर्व, घमंड।
मेरी-(हिं० सर्व०) 'मेरा' का स्त्रीलिंग का रूप।
मेरु-(स०पु०) एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है, सुमेरु, जपमाला के बीच का सबसे बड़ा दाना जो सब दानों के ऊपर होता है, वीणा का एक अंग, एक विशेष बनावट का देवमन्दिर, पिंगल शास्त्र की एक गणना जिससे यह पता लगता है कि कितने लघु गुरु वर्ण से कितने छन्द हो सकते हैं।
मेरुक-(स०पु०) धूना।
मेरुग्रन्थि-(स०पु०) वृक्क, गुरदा।
मेरुदण्ड-(सं० पु०) पीठ के बीच की हड्डी,रीढ़, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच में गई है।
मेरुधामा-(स०पु०) शिव, महादेव।
मेरुपृष्ठ-(स०पु०) आकाश, स्वर्ग।
मेरुमूल-(स०नपु०)पहाड़ का निचला भाग
मेरुयन्त्र-(स०नपुं०) बीजगणित में एक प्रकार का चक्र, चरखा।
मेरुशिखर-(स० पु०) हठयोग के अनुसार मस्तक के छ चक्रों में से सबसे ऊपर का चक्र।
मेरे-(हिं० सर्व०) 'मेरा' का बहुवचन, 'मेरा' का वह रूप जो सम्बन्धवान् शब्द के आगे विभक्ति लगाने पर प्राप्त होता है।
मेल-(स० पु०) मिलाने की क्रिया या भाव, संयोग, परस्पर का घनिष्ट व्यवहार, मित्रता, दोस्ती, अनुकूलता, अनुरूपता, ढंग, प्रकार, मिश्रण, मिलावट, समता, एक साथ प्रीति पूर्वक रहने का भाव, सङ्गति, एकता, बराबरी, मेल खाना-ठीक होना, अनुकूल होना
मेलक-(स०पु०) समागम, मिलन, मेला सहवास।
मेलन-(स० नपु०) मिलने की क्रिया या भाव, एक साथ होना, इकट्ठा होना।
मेलना-(हिं०क्रि०)मिलाना, इकट्ठा होना
मेलमल्लार-(स० पु०) एक रागिणी का नाम।
मेला-(हिं०पु०) बहुत से लोगों का जमावड़ा, भीड़भाड़, उत्सव, खेल, तमाशे आदि के लिये बहुत से लोगों की इकट्ठा होना।
मेलाठेला-(हिं० पु०) भीड़भाड़,जमावड़ा
मेलाना-(हिं०क्रि०) देखो मिलाना।
मेलानी-(हिं० क्रि०) रेहन रक्खी हुई वस्तु को रुपया देकर छुड़ाना।
मेली-(हिं० पु०) मुलाकाती, संगी, हेलमेल रखने वाला।
मेल्हना-(हिं० क्रि०) बेचैन होना, छटपटाना, टाल मटोल करना।
मेव-(हिं० पु०) राजपूताने के तरफ की एक लुटेरी जाति।
मेवड़ी-(हिं०स्त्री०) निर्गुण्डी, सम्हालू।
मेवा-(फा०पु०) खाने का उत्तम फल, किशमिश, मुनक्का, बादाम आदि सूखे फल।
मेवाटी-(फा० वि०) एक प्रकार का पक्वान जिसके भीतर मेवे भरे रहते हैं।
मेवाड़-(हिं० पु०) दक्षिण राजपूताने के अन्तर्गत एक विस्तीर्ण प्रदेश।
मेवाड़ी-(हिं०पुं०) मेवाड़ प्रदेश निवासी
मेवात-(हिं०पु०) दिल्ली राजधानी का दक्षिण विभाग।
मेवाती-(हिं०पुं०) मेवात प्रदेश में रहने वाली एक जाति।
मेवाफरोश-(फा० पु०) फल या मेवे बेचने वाला।
मेवास-(हिं० पु०) दुर्ग, किला, सुरक्षित स्थान।
मेवासी-(हिं०पु०) किले में रहने वाला, घर का मालिक, सुरक्षित तथा प्रबल।
मेशिका-(स०स्त्री०) मजीठ नामक औषधि
मेष-(स०पु०) मेढ़ा, प्रथम राशि का नाम, वैशाख मास में सूर्य इस राशि उगते हैं, मेषपाल-गड़ेरिया, मेषपुष्पा-मेढा सिंगी, मेषवृषण-इन्द्र।
मेष संक्रान्ति-(स०स्त्री०) मेषराशि में सूर्य के आने का योग, इस दिन सतुआ दान करने का माहात्म्य है, इसी से इस पर्व को सतुआ सक्रान्ति भी कहते हैं।
मेषहृत्-(स० पु०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।
मेषा-(स० स्त्री०) गुजराती इलायची।
मेषी-(स०स्त्री०) मेंढी, शीशम की जाति का एक वृक्ष, जटामासी।
मेहँदी-(हिं० स्त्री०) एक पौधा जिसकी पत्तियों को पीस कर स्त्रियां हाथ पैर में लगाती हैं जिससे लाल रंग हो जाता है।
मेह-(स० पु०) प्रमेह रोग, मेष, मेंढा, मूत्र, (हिं० पु०) मेघ, बादल, वर्षा।
मेहतर-(फा०पु०) बुजुर्ग, सबसे बड़ा, एक नीच मुसलमान जाति, यह झाड़ू देने और गन्दगी उठाने का काम करते हैं।
मेहन-(सं०नपु०) शिश्न, लिंग, मूत्र।
मेहनत-(अ०स्त्री०) परिश्रम, प्रयास, श्रम
मेहनताना-(फा० पु०) किसी काम की मजदूरी, परिश्रम का मूल्य।
मेहनती-(अ० वि०) परिश्रमी, मेहनत करने वाला।
मेहना-(हिं०पु०) उलहना, दोष कथन।
मेहमान-(फा०पु०) अतिथि, पाहुन।
मेहमानदारी-(फा०स्त्री०)आतिथ्य सत्कार
मेहमानी-(फा० स्त्री०) अतिथि का सत्कार, पहुनई, पाहुन की तरह रहने का भाव।
मेहर-(फा०स्त्री०) मेहरबानी,कृपा, दया, (हिं०स्त्री०) देखो मेहरी, पत्नी, जोरू।
मेहरबान-(फा०वि०) कृपालु, अनुग्रह करने वाला।
मेहरबानगी, मेहरबानी-(फा० स्त्री०) कृपा, दया।
मेहरा-(हिं०पु०) स्त्रियों के समान चेष्टा या प्रकृति वाला, जनखा, जुलाहों की

चरखी का घेरा,खत्रियों की एक शाखा

मेहराब-(अ० स्त्री०) दरवाजे के ऊपर का गोल किया हुआ भाग, **मेहराब दार**-ऊपर की ओर गोल कटा हुआ।

मेहरारू-(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।

मेहरी-(हिं०स्त्री०) स्त्री,औरत,पत्नी,जोरू

मैं-(हि०सर्व०) स्वय,खुद, सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्ता के एकवचन का रूप (अव्य०), में।

मै-(हि० अव्य०) देखो मय, साथ। मिला कर।

मैका-(हि०पु०) देखो मायका।

मैगल-(स०पु०) मस्त हाथी (वि०) मत्त, मस्त।

मैच्-(अ० पु०) किसी प्रकार के गेंद के खेल आदि की बाजी।

मैत्र-(स०नपु०) अनुराधा नक्षत्र, सूर्य लोक (वि०) मित्र सबधी, दयालु।

मैत्रता-(स० पु०) बन्धुत्व, मित्रता

मैत्राक्ष-(स० पु०) एक प्रकार का प्रेत।

मैत्रायणि-(सं० स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम।

मैत्रिक-(स०वि०) मित्र सबधी, दोस्ताना।

मैत्री-(स० स्त्री०) मित्र का भाव, मित्रता, दोस्ती।

मैत्रेय-(स०पु०) पाराशर मुनि के एक शिष्य जिन्होंने विष्णु पुराण कहा था, सूर्य।

मैत्रेयी-(स० स्त्री०) योगिराज याज्ञ-वल्क्य की स्त्री का नाम।

मैथिल-(स० पु०) मिथिला देशवासी (वि०) मिथिला सबधी।

मैथिली-(स० स्त्री०) मिथिला देश के राजा की कन्या, सीता।

मैथुन-(स०नपु०) स्त्री के साथ पुरुष का समागम, रति क्रीड़ा,

मैदा-(फा० पु०) गेंहू का बहुत महीन आटा

मैदान-(फा०पु०) धरती का लबा चौड़ा दूर तक फैला हुआ समतल विभाग, चौरस या सपाट भूमि, वह लबी चौड़ी भूमि जिसपर किसी प्रकार का खेल खेला जाय अथवा दूसरा कोई प्रति योगिता या प्रतिद्वन्दिता का काम हो, युद्धक्षेत्र, किसी पदार्थ का विस्तार, **मैदान में आना**-सन्मुख होना, **मैदान साफ होना**-रास्ते मे कोई बाधा न होना, **मैदान मारना**-बाज़ी जीतना।

मैदानी-(हि० वि०) मैदे का बना हुआ।

मैन-(हिं० पुं०) मोम, कामदेव, राल मे मिला या हुआ मोम जो मूर्ति आदि के नमूने बनाने के काम में आता है।

मैनफल-(हिं० पु०) मझोले आकार का एक काटेदार वृक्ष जिसके गोल फल औषधियों मे प्रयोग होते हैं।

मैनसिल-(हिं०पु०) मनःशिला, एक प्रकार की धातु जो मिट्टी की तरह पीली होती है।

मैना-(हि० स्त्री०) काले रग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखलाने पर मनुष्य की तरह बोली बोल सकता है, राज-पूताने की मीना नामक जाति।

मैनाक-(स० पु०) पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम जो हिमालय का पुत्र माना जाता है, हिमालय की एक ऊची चोटी का नाम।

मैनाल-(स०पु०) धीवर, मछुवा।

मैनावली-(स० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम।

मैन्द-(स०पु०) एक असुर जो कसका अनुचर था,

मैमत-(हिं०वि०) मदोन्मत्त, मतवाला, अभिमानी

मैया-(हिं०स्त्री०) माता, माँ।

मैर-(हि० पु०) सुनारों की एक जाति (स्त्री०) साप के विष की लहर।

मैरा-(हिं० पु०) वह मचान जिसपर बैठकर किसान अपने खेत की रख-वाली करते हैं।

मैल-(हिं० वि०) मालिन, मैला (स्त्री०) गर्द, धूल, किट्ट आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक नष्ट हो जाती है, मैली करने की वस्तु, दोप,विकार, **हाथ पैर की मैल**-अति-तुच्छ वस्तु।

मैलखोरा-(हिं० वि०) मैल को छिपाने वाला, जिस पर पड़ी हुई मैल जल्दी देख न पड़े (पु०) काठी के नीचे का नमदा, साबुन।

मैलन्द-,स० पुं०) भ्रमर, भौंरा।

मैला-(हि० पुं०) विष्ठा, कूड़ा करकट (वि०) दूषित, विकार युक्त, दुर्गन्धी, जिस पर मैल जमी हो, जिस पर गर्द, धूल कीट आदि जमी हो।

मैलाकुचैला-(हिं० वि०) बहुत मैला, गन्दा, वह जो बहुत मैले कपड़े पहनता हो।

मैलापन-(हि०पु०) मैला होने का भाव, गदापन।

मैहिक-(स०वि०) जिसको प्रमेह का रोग हुआ हो।

मों-(हिं० अव्य०) मे, (सर्व०) मों।

मोंगरा-(हिं० पु०) मेख ठोंकने का हथौड़ा, एक प्रकार की केशर।

मोंछ-(हि० स्त्री०) देखो मूछ।

मोंढा-(हि० पुं०) बास, सरकडे या बेंत का बना हुआ एक प्रकार का गोल ऊचा आसन, कन्धा।

मो-(हि० सर्व०) मेरा, "मैं" का वह रूप जो बृज भाषा में कर्ता कारक के सिवाय अन्य कारकों में इसके चिह्न लगाने के पूर्व व्यवहार किया जाता है।

मोई-(हि०स्त्री०) घी मे सना हुआ आटा।

मोक-(स०नपु०) किसी पशु का चमड़ा।

मोकना-(हिं० क्रि०) त्यागना, छोड़ना फेंकना।

मोकल-(हिं० वि०) मुक्त, छोड़ा हुआ, स्वतन्त्र।

मोकला-(हि० वि०) अधिक चौड़ा।

मोका-(हि० पु०) एक प्रकार का जगली वृक्ष।

मोक्ष-(स० पु०) मुक्ति, किसी प्रकार के बधन से छूट जाना, छुटकारा, मृत्यु, मौत, पतन, शास्त्रो तथा पुराणो के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बधन से छूटना।

मोक्षक-(स०वि०) मोक्ष देने वाला।
मोक्षण-(स० पु०) मोक्ष देनेकी क्रिया
मोक्षद-(स० वि०) मोक्ष दाता, मोक्ष देने वाला।
मोक्षदा-(स० स्त्री०) अगहन सुदी एकादशी का नाम।
मोक्षद्वार-(स०पु०) मोक्षका उपाय,सूर्य।
मोक्षपति-(स० पु०) ताल के मुख्य आठ भेदों में से एक।
मोक्षपुरी-(स० स्त्री०) काशी आदि सात पुरी।
मोक्षविद्या-(स० स्त्री०) वेदान्त शास्त्र।
मोख-(हिं० पु०) देखो मोक्ष।
मोखा-(हिं० पु०) दीवार आदि में बना हुआ छिद्र, झरोखा।
मोग-(स० पु०) चेचक रोग।
मोगरा-(हिं० पु०) एक प्रकार का बड़ा बेले का फूल।
मोगल-(हिं० पु०) देखो मुगल।
मोगली-(हि० स्त्री०) एक प्रकार का जगली वृक्ष।
मोघ-(स०वि०)निरर्थक, निष्फल, हीन।
मोघता-(सं० स्त्री०) निष्फलता।
मोघिया-(हिं० स्त्री०) चौड़ी मोटी नरिया जो खपरैलकी छावन में लगाई जाती है।
मोच-(स० नपु०) केला, सेमल का वृक्ष (स्त्री०) अग के किसी जोड़ पर की नस का अपने स्थान से हट जाना जो बहुत पीडाकर होता है।
मोचक-(स० वि०) मुक्ति कारक, छुड़ाने वाला।
मोचन-(स०नपु०) मोक्ष, मुक्ति करना कापना, गठता, बधन आदि खोलना, दूर करना, हटाना, ले लेना, (वि०) छुड़ाने वाला।
मोचना-(हिं० क्रि०) छुड़ाना, गिराना बहाना, मुक्त करना, (पु०) हज्जामों की बाल उखाड़ने की चिमटी।
मोचनी-(स० स्त्री०) भटकटैया।
मोचनीय-(स०वि०) मुक्त करने योग्य
मोचरस-(सं० पु०) सेमर का गोंद।
मोचसार-(स०पु०) देखो मोचरस।
मोचा-(स० स्त्री०) सेमर का वृक्ष, केले का वृक्ष सलई का वृक्ष, नील का पौधा।
मोचिनी-(स० स्त्री०) पोई का साग।
मोची-(हिं० पु०) चर्मकार श्रेणी की एक जाति, ये लोग जूता बनाते और इनकी मरम्मत करते हैं, (वि०) हटाने या दूर करने वाला।
मोच्य-(स० वि०) छोड़े देने योग्य।
मोच्छ-(हि० पु०) देखो मोक्ष।
मोछ-(हि० स्त्री०) देखो मूछ, देखो मोक्ष
मोजरा-(हि० पु०) देखो मुजरा।
मोजा-(फा० पु०) एक प्रकार का बुना हुआ पैर के पजे मे पहरने का वस्त्र, पायताबा, पैर में का पिंडली के नीचे का भाग, कुश्ती का एक पेंच।
मोट-(हि० स्त्री०) गठरी मोटरी, चमड़े बड़ा थैला जिसके द्वारा खेत सींचने के लिये कुवें से पानी निकाला जाता है, चरसा (वि०) मोटा, साधारण, कम मूल्य का।
मोटक-(स० नपु०) श्राद्धादि कार्य में इसका प्रयोग किया जाता है यह तीन कुश मे गाठ देकर बनाया जाता है।
मोटकी-(स०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
मोटन-(स०नपु०) पीसना, आक्षेप,वायु,।
मोटनक-(स० नपु०) एक वर्णवृत्त का नाम।
मोटर-(अ० पु०) एक प्रकार का यन्त्र जिससे दूसरा यन्त्र चलाया जाता है, यन्त्र की सहायता से चलने वाली गाड़ी
मोटरी-(हिं० स्त्री०) गठरी।
मोटा-(हि० वि०) जिसकी शरीर में आवश्यकता से अधिक मास हो, जिसका घेरा साधारण से अधिक हो, जो अच्छी तरह से पीसा न हो,दरदरा, बेडौल, भद्दा,अहकारी, घमडी, कठिन, भारी, घटिया, स्थूल शरीर का,मनुष्य, **मोटा असामी**-धनवान् मनुष्य, **मोटा भाग्य**-सौभाग्यवान्, **मोटी बात**-सामान्य वार्ता, **मोटा दिखाई देना**-कम सूझना।
मोटाई-(हि०स्त्री०) मोटा होने का भाव, स्थूलता, पाजीपन, दुष्टता।
मोटाना-(हि० क्रि०) स्थूलकाय होना, मोटा होना, अमीर होना, अभिमानी होना, अहकारी, होना, मोटा करना।
मोटाई-(हि० पु०) स्थूलता, मोटापन।
मोटापा-(हिं०पु०) मोटा होने का भाव, स्थूलता।
मोटिया-(हिं० पु०) रूक्ष मोटा देशी कपड़ा, खद्दड़, बोझ ढोने वाला कुली, मजदूर।
मोट्टायित-(स० नपु०) स्त्रियों के स्वाभाविक दस प्रकार के अलकारों में से एक, अलकार में वह भाव जिसमे नायिका अपने आन्तरिक प्रेम को छिपाने का प्रयत्न करने पर भी छिपा नहीं सकती।
मोठ-(हि० स्त्री०) मूग की की तरह का एक प्रकार का मोटा अन्न।
मोठस-(हि० वि०) मौन, चुप।
मोड़-(हिं० स्त्री०) रास्ते में वह स्थान जहा से मुड़ा जाता है, घुमाव या मुड़ने का भाव, घुमान।
मोडना-(हि० क्रि०) फेरना, लौटाना, किसी काम के करने में आगा पीछा करना, विमुख होना, किसी फैली वस्तु की तह करना, धार भुथरी करना, मुंह मोड़ना-पराङ्मुख हो जाना।
मोड़ा-(हि० पु०) बालक, लड़का।
मोड़ी-(हि०स्त्री०) घसीट लिखने की एक प्रकार की लिपि जिसमें प्रायः मराठी भाषा लिखी जाती है।
मोतदिल-(अ०वि०) देखो मातदिल।
मोतबर-(अ०वि०)विश्वास पात्र, विश्वास करके योग्य।
मोतिय दाम-(हि० पु०) एक प्रकार का वर्णवृत्त।
मोतिया-(हि० पु०) एक प्रकार का बेला (फूल) जिसकी कली मोती के समान गोल होती है एक प्रकार का सलमा (वि०) मोती संबधी, गोल छोटे दाने का
मोतियाबिन्द-(हि० पु०) आख का

एक रोग जिसमें उसके परदे में गोल झिल्ली सी पड़ जाती हैं जिसके कारण आँख से देख नहीं पड़ता।
मोती–(हिं० पु०) एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में अथवा रेतीले तटों के पास सीप में निकलता है, मुक्ता, कसेरों का नक्काशी करने का एक औजार, वह थाली जिसमें बड़े बड़े मोती पड़े रहते हैं, मोती गरजना–मोती का चिटक जाना, मोतियों से मुँह भरना–बहुत अधिक धन दौलत देना।
मोतीचूर–(हिं०पु०) छोटी बुंदियों का लड्डू, एक प्रकार का धान, कुश्ती की एक पेंच।
मोतीझिरा–(हिं० स्त्री०) छोटी शीतला का रोग, मोतिया माता।
मोती बेल–(हिं० स्त्री०) मोतिया बेले का फूल।
मोती भात–(हिं० पु०) एक विशेष प्रकार का भात।
मोती सिरी–(हिं०स्त्री०) मोतियों की कंठी या माला।
मोथा–(स० पु०) नागरमोथा नामक घास, इसकी जड़ औषधियों में प्रयोग होती है।
मोद–(स०पु०) हर्ष, आनन्द, सुगन्ध, खुशबू, एक वर्णवृत्त का नाम।
मोदक–(स० पु०) एक खाद्य पदार्थ, लड्डू, औषध आदि का बना हुआ लड्डू, एक वर्णवृत्त का नाम (वि०) आनन्द देने वाला।
मोदकर–(स०वि०) आनन्द देने वाला
मोदकार–(स०पु०)मिठाई बनाने वाला, हलवाई।
मोदकी–(स०स्त्री०)चमेली के फूल का पौधा (वि०) आनन्द देने वाली।
मोदन–(सं०नपु०) हर्ष, आनन्द,सुगन्ध।
मोदना–(हिं०क्रि०)प्रसन्न होना,खुश होना, प्रसन्न करना, सुगन्ध फैलाना।
मोदनी–(स०स्त्री०) सफेद जूही।
मोदनीय–(स०वि०) आनन्द करने योग्य
मोदाढ्या–(स०स्त्री०)प्रसन्न रहने वाली स्त्री
मोदित–(स०वि०) आनन्दित, हर्ष युक्त।
मोदिनी–(स० स्त्री०) अजमोदा, जूही, कस्तूरी।
मोदी–(हिं०पु०) आटा, चावल, दाल बेंचने वाला बनिया, मोदीखाना–अन्नादि रखने का स्थान, गोदाम।
मोधुक–(सं०पु०)मछली पकड़ने वाला धीवर।
मोधू–(हिं० वि०) मूर्ख, बेवकूफ।
मोन–(हिं०पु०) देखो मोना।
मोना–(हिं०क्रि०) तर करना, भिगाना, बाँस मूँज आदि का ढपनेदार पिटारा।
मोनिया–(हिं०स्त्री०) छोटा मोना।
मोपला–(हिं०पु०) मुसलमानों की एक जाति जो मद्रास प्रान्त में पाई जाती है
मोम–(फा०पु०)वह चिकना नरम पदार्थ जिससे मधुमक्खियाँ अपना छत्ता बनाती हैं।
मोमजामा–(फा०पु०) वह कपड़ा जिसपर मोमका रोगन चढ़ाया रहता है, ऐसे कपड़े पर पड़ा हुआ पानी आरपार नहीं होता, मोमदिल–बहुत कोमल हृदय वाला।
मोमना–(हिं० वि०) बहुत कोमल।
मोमबत्ती–(हिं० स्त्री०) मोम या चरबी को साँचे में ढालकर बनाई हुई बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।
मोमियाई–(फा०स्त्री०) बनावटी शिलाजीत
मोमी–(हिं० वि०) मोम के समान, मोम का बना हुआ।
मोयन–(हिं० पु०) माड़े हुए आटे में घी मिलाना, ऐसा करने से पकवान मुलायम बनते हैं।
मोरंग–(हिं०पु०) नेपाल का पूर्वी भाग।
मोर–(हिं०पु०) एक सुन्दर बड़ा पक्षी, नीलम की आभा जो मोर के पर के समान होती है, सेना की अगली पंक्ति, (सर्व०) मेरा।
मोरचंग–देखो मुरचग।
मोरचन्द्र–(हिं०पु०) देखो मोर चन्द्रिका
मोरचा–(फा० पु०) लोहे के ऊपरी तल पर चढ जाने वाली लाल तह जो वायु और तरी से उत्पन्न होती है, ज़ंग, दर्पण पर जमी हुई मैल, वह गड्ढा जो किले के चारो ओर रक्षा के लिये खोदकर बनाया जाता है, वह स्थान जहा से सेना किले या शहर की रक्षा करती है, वह स्थान जहा से शत्रु की सेना से लड़ाई की जाती है, वह सेना जो किले में रह कर शत्रु से लड़ती है, मोरचाबन्दी करना–किले के चारो ओर फौज नियुक्त करना, मोरचा मारना–शत्रु के किले आदि पर अधिकार कर लेना, मोरचा बांधना–मोरचा बन्दी करना, मोरचा लेना–युद्ध करना।
मोरछल–(हिं० पु०) मोर की पूछ के परों को इकट्ठा बाध कर बना हुआ चँवर जो देवताओं तथा राजाओं के मस्तक पर डुलाया जाता है।
मोरछली–(हिं० पु०) देखो मौलसिरी (वि०) मोरछल हिलाने वाला।
मोरछांह–(हिं०पु०) देखो मोरछल।
मोरजुटना–(हिं० पु०) एक प्रकार का सुवर्ण का आभूषण जिसमें रत्न जड़े होते हैं।
मोरट–(स० नपुं०) ऊख की जड़, एक प्रकार की लता।
मोरन–(हिं०स्त्री०) मोड़ने की क्रिया या भाव, श्रीखण्ड (सिखरन) नामक दही का बना हुआ खाद्य पदार्थ।
मोरना–(हिं० क्रि०) देखो मोड़ना, दही को मथकर मक्खन निकालना।
मोरनी–(हिं०स्त्री०) मोर पक्षी की मादा, छोटा टिकड़ा जो नथ में पिरोया जाता है।
मोरपंख–(हिं०पु०) मोर का पर।
मोरपखी–(हिं० स्त्री०) वह नाव जिसका अगला भाग मोर की तरह बना और रगा रहता है मलखम की एक कसरत, (पु०) एक प्रकार का चमकीला गहरा नीला रग (वि०) गहरा चमकीला नीला
मोरपंखा–(हिं०पु०) मोर का पर, मोर

के पख की बनी हुई कलगी।
मोरमुकुट-(हिं०पु०) मोर के पख का बना हुआ मुकुट।
मोरवा-(हिं०पु०) देखो मोर, नाव की किलवारी में बाधने की रस्सी।
मोरशिखा (हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जडी जिसकी पत्तिया मोर की कलगी के आकार की होती हैं।
मेरा-(हिं०सर्व०) मेरा (पु०) अकीक नामक रत्न का एक भेद।
मोराना-(हिं० क्रि०) चारो ओर घुमाना फिराना, ईख पेरने में ऊख की अगारी को कोल्हू में दबाना।
मोरिया-(हिं० स्त्री०) कोल्हू की कतरी की बास की शाखा।
मोरी-(हिं० स्त्री०) मैला गन्दा पानी बहने की नाली, परनाली, मोहरी, क्षत्रियो की एक जाति।
मोर्चा-(हिं०पु०) देखो मोरचा।
मोल-(हिं० पु०) मूल्य, कीमत, दाम, मोल करना-व्यापारी का किसी वस्तु का दाम बढा कर कहना, मोलचाल-किसी वस्तु का दाम घटा बढा कर सौदा तय करना।
मोलना-(हिं० पुं०) मौलाना, मौलवी।
मोलाना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु का दाम पूछना अथवा मूल्य स्थिर करना।
मोवना-(हिं० क्रि०) देखो मोना।
मोष-(सं० पु०) चोरी, लूट, ठगी, (हिं० पु०) देखो मोक्ष।
मोषक-(सं० पुं०) तस्कर, चोर।
मोषण-(सं०पु०) लूटना, चोरी करना, वध करना।
मोह-(सं०पु०) अविद्या, मूर्छा, बेहोशी, अज्ञान, दुःख, कष्ट, भ्रान्ति, प्रेम, प्यार, साहित्य के ३३ सचारी भावों में से एक भाव, चित्त की वह विकलता जो भय, दुःख, चिन्ता आदि से उत्पन्न होती है।
मोहक-(सं० वि०) मोह उत्पन्न करने वाला, मनको आकर्षण करने या लुभाने वाला।
मोहकर-(हिं० पु०) घडे का मोहडा।
मोहठा-(सं० पु०) दश अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।
मोहडा-(हिं० पुं०) किसी बरतन का मुख या खुला भाग, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी हिस्सा, मुह, मुख।
मोहजनक-(सं० वि०) मोह उत्पन्न करने वाला।
मोहताज-(अ० वि०) वह जिसको किसी वस्तु की अपेक्षा हो, धनहीन, गरीब।
मोहताजी-(हिं० स्त्री०) मोहताज होने का भाव।
मोहन-(सं० पु०) धतूरे का पौधा, मोह लेने वाला व्यक्ति, जिसको देखकर मन लुभा जावे, श्री कृष्ण, एक प्रकार का वर्णवृत्त, एक प्रकार का तान्त्रिक प्रयोग जिससे किसी को मूर्छित करते हैं, शत्रु को मूर्छित करने का एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, कोल्हू मे का वह स्थान जहा पर दबाने के लिये ऊख लगाई जाती है, बारह मात्राओं का एक ताल, कामदेव के पाच बाणों में से एक (हिं० वि०) मोह उत्पन्न करने वाला।
मोहनभोग-(सं० पु०) एक प्रकार का हलुआ, एक प्रकार का केला, एक प्रकार का आम।
मोहनमाला-(सं०स्त्री०) सोने के दानों की बनी हुई माला।
मोहना-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की चमेली (हिं०क्रि०) किसी पर अनुरक्त होना या रीझना, मूर्छित होना, बेहोश होना, मोहित करना, लुभाना, धोखा देना, भ्रममें डालना।
मोहनास्त्र-(सं०पु०) प्राचीन काल का शत्रु को मूर्छित करने का एक अस्त्र।
मोहनिद्रा-(सं०स्त्री०) मोह रूपी निद्रा।
मोहनी-(सं० स्त्री०) पोई का साग, वट पत्री, पथरफोड, माया, वैशाख सुदी एकादशी, एक प्रकार का लबा कीडा, वह स्त्री रूप जो भगवान् ने समुद्र मथन के बाद अमृत बाँटते समय धारण किया था, एक वर्णवृत्त का नाम, वशीकरण का मन्त्र, (वि०) चित्त को लुभाने वाली, मोहनी डालना-अपने वश में कर लेना, मोहनी लगाना-वश में करना।
मोहनीय-(सं०वि०)मोहित करने योग्य।
मोहफिल-(हिं० स्त्री०) देखो महफिल।
मोहब्बत-(हिं० स्त्री०) देखो मुहब्बत।
मोहमन्द-(सं० पु०) मोह उत्पन्न करने का मन्त्र।
मोहयिता-(सं० वि०) मोहकारक।
मोहर-(फ़ा० स्त्री०) किसी ऐसी वस्तु पर खुदा हुआ नाम, चिह्न आदि जो कागज कपडे आदि पर छापा जा सके, ठप्पा, कागज कपडे आदि पर ऐसे छाप, सुवर्ण मुद्रा, अशरफी।
मोहरा-(हिं० पु०) किसी पात्र का मुख या खुला हुआ भाग, सेना की अगली पक्ति जो चढाई करती है, सेना की गति, किसी पदार्थ का उपरी या अगला भाग, एक प्रकार की जाली जो बैल के मुह में बाँधी जाती है, चोली आदि का वन्द, कोई छेद जिसमें से कोई वस्तु निकले, (फा०पु०) शतरज की गोटी, रेशमी वस्त्र घोटने का एक औजार, कड़ा आदि ढालने का मिट्टी का साँचा, नक्काशी करने का एक औजार, ज़हरमोहरा, सींधिया विष।
मोहरात्रि-(सं०स्त्री०) वह प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है, जन्माष्टमी की रात्रि।
मोहराना-(फा०पु०) वह वेतन जो किसी कर्मचारी को मोहर करने के लिये दिया जावे।
मोहरी-(हिं०स्त्री०) किसी पात्र का छोटा मुख अथवा खुला भाग, पायजामे का वह भाग जिसमे टागें रहती हैं, एक प्रकार की मधुमक्खी, देखो-मोरी।
मोहर्रिर-(अ० पु०) लेखक, मुशी।

मोहलत–(अ०स्त्री०) अवकाश, फ़ुरसत, किसी काम को करने की अवधि,छुट्टी।
मोहल्ला–(हिं० पु०) देखो महल्ला।
मोहशास्त्र–(स० नपु०) अविद्याजनक ग्रन्थ।
मोहार–(हिं० पुं०) द्वार, दरवाज़ा, मुहड़ा, अगला भाग, मधुमक्खी का छत्ता, भौंरा।
मोहारनो–(हिं० स्त्री०) पाठशाले में बालकों का एक साथ खडे होकर पहाडे पढना।
मोहाल–(अ०पु०) किसी एक अथवा अनेक गावों का बन्दोबस्त जो किसी नम्बरदार के साथ किया गया हो। (हिं० पु०) मधुमक्खी का छत्ता।
मोंहि–(हिं०सर्व०) मुझे, मुझको।
मोहित–(स० वि०) मुग्ध, भ्रम में पड़ा हुआ, आसक्त, मोहा हुआ।
मोहिनी–(स० वि०) मोहने वाली (स्त्री०) वेले का फूल, पत्थरफोड़, विष्णु के एक अवतार का नाम, जादू, माया, वैशाख शुक्ल एकादशी का नाम, एक अर्धसम वृत्ति का नाम, पद्रह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
मोही–(हिं० वि०) मोहित करने वाला, प्रेम करने वाला, अज्ञानी, भ्रम या अविद्या में पड़ा हुआ, लोभी, लालची।
मोहुक–(स० वि०) मोह करने वाला।
मोहेला–(हिं० पु०) एक प्रकार का चलता गाना।
मोहेली–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मछली।
मोहोपमा–(स०स्त्री०) उपमा अलकार का एक भेद।
मौंगी–(हिं० स्त्री०) मौन, चुप।
मौंडा–(अ० पु०) बालक, लड़का।
मौका–(अ० वि०) घटना स्थल, वह स्थान जहा पर कोई घटना हो, अवसर, समय, देश, स्थान, वारदात की जगह।
मौकूफ़–(अ० वि०) रोका हुआ, बन्द किया हुआ, रद्द किया हुआ, मनसूख किया हुआ, नौकरी से बर्खास्त किया हुआ, अधिष्ठित।
मौकूफ़ी–(फ़ा० स्त्री०) प्रतिबन्ध, रुकावट, बर्खास्तगी।
मौक्तिक–(स० नपुं०) मुक्ता, मोती।
मौक्तिकतण्डुल–(स० पु०) बड़ी ज्वार।
मौक्तिकदाम–(स० पु०) एक वर्णिक वृत्त का नाम।
मौक्तिकमाला–(स०स्त्री०) एक वर्णिक-वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
मौक्तिकशुक्ति–(स०स्त्री०) मोती की सीप।
मौक्तिकवलि–(स० पु०) मोती की माला
मौख–(स० नपुं०) वह पाप जो अभक्ष्य भक्षण से होता है एक प्रकार का मसाला (वि०) मुख संबधी।
मौखर–(स० नपु०) बहुत बढ़ बढ़कर बातें करना।
मौखरी–(स० पु०) उत्तर भारत का प्राचीन राजवंश।
मौखर्य–(सं० नपु०) बहुत अधिक बढ बढ कर बोलना।
मौखिक–(स०वि०) मुख सम्बधी, मुख का, ज़बानी।
मौख्य–(स० नपु०) प्रधानता।
मौगा–(हिं०) निर्बुद्धि, जनखा, हिजड़ा।
मौगी–(हिं० स्त्री०) स्त्री, औरत।
मौज–(अ० स्त्री०) मन की उमग, जोश, विभव, सुख, मज़ा, तरग, लहर, धुन।
मौज़ा–(अ० पु०) ग्राम, गाव।
मौजी–(हि० वि०) मनमाना काम करने वाला, आनन्दी, सर्वदा प्रसन्न रहने वाला, जो जी में आवे वही करने वाला।
मौजूद–(अ० वि०) प्रस्तुत, तैयार, उपस्थित, विद्यमान, हाज़िर।
मौजूदगी–(फ़ा० स्त्री०) सामने रहने का भाव, उपस्थिति।
मौजूदा–(अ०वि०) वर्तमान काल का, जो इस समय मौजूदा हो।
मौञ्ज–(स० वि०) मूज का बना हुआ।
मौञ्जी–(हिं० वि०) मूज की बनी हुई मेखला।
मौञ्जिबन्धन–(स० पु०) यज्ञोपवीत सस्कार।
मौढा–(हिं० पु०) देखो मौढ़ा।
मौत–(अ०स्त्री०) मृत्यु, मरण, मरने का समय, आपत्ति, अत्यन्त कष्ट, मौत का सिरपर होना–मृत्यु समीप होना।
मौताद–(अ० स्त्री०) मात्रा।
मौदक–(स० वि०) मोदक सबधी।
मौद्गल–(स०पु०)मुद्गल ऋषि के गोत्र में उत्पन्न।
मौद्गलि–(स० पुं०) काक, कौवा।
मौन–(सं० नपु०) न बोलने की क्रिया या भाव, चुप्पी, मुनियों का एक व्रत, फाल्गुन महीने का पहला पक्ष (वि०) चुप, जो न बोले (हि० पुं०) मूज का बना पिटारा, डब्बा, पात्र, बरतन, मौन ग्रहण करना–चुप रहना, न बोलना, मौन तजना–बोलने लगना, मौन त्यागना, मौन साधना–गूगा बन जाना, मौनव्रत–चुप रहने का व्रत।
मौनता–(स०स्त्री०) चुप रहने का व्रत।
मौना–(हिं० पु०) घी या तेल रखने का पात्र, मूज की बनी हुई पिटारी या टोकरी।
मौनी–(हिं० वि०) मौन व्रत धारण करने वाला, चुप रहने वाला।
मौनित्व–(स० नपु०) मौनी का भाव मौन।
मौर–(हिं० पु०) ताड़पत्र या खुखड़ी का बना हुआ एक प्रकार का शिरोभूषण जो विवाह के समय पहराया जाता है, शिरोमणि, प्रधान, सरदार, गरदन का पिछला भाग, मजरी, बौर।
मौरना–(हि० क्रि०) वृक्षों पर मजरी लगना, देखो बौरना।
मौरसिरी–(हिं०स्त्री०) देखो मौलसिरी
मौरी–(हि० स्त्री०) वधू के सिर पर रखने का छोटा मौर।
मौरूसी–(अ० वि०) पैतृक, बाप दादा के समय से चला आता हुआ।
मौर्ख्य–(स० नपु०) मूर्खता का भाव, बेवकूफी।
मौर्य–(स० पु०) मुरा का अपत्य, चन्द्रगुप्त, भारत का एक क्षत्रिय प्राचीन

राजवश।
मौलवी-(अ० पु०) अरबी भाषा का पण्डित, मुसलमानी धर्म का आचार्य, जो अरबी फारसी भाषा का पंडित हो।
मौलेसिरी-(हि० स्त्री०) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसमें छोटे छोटे सुगन्धित फूल होते हैं।
मौलि-(स०पु०) मस्तक, सिर, किरीट, जूड़ा, प्रधान व्यक्ति, सरदार, भूमि, अशोक वृक्ष, **मौलिक**-मूल सम्बन्धी, **मौलिमण्डन**-एक प्रकार का शिरोभूषण
मौल्य-(स०वि०) मूल्य सम्बन्धी।
मौसम-(अ०पु०) देखो मौसिम।
मौसर-(अ० वि०) उपलब्ध, प्राप्त, जो सुगमता से मिल सके।
मौसा-(हिं०पु०)माता की बहिन का पति।
मौसिम-(अ०पु०) उपयुक्त समय, ऋतु।
मौसिमी-(फ़ा०वि०) ऋतु सबधी।
मौसियाउत, मौसियायत-(हिं०वि०) मौसेरा।
मौसी-(हि०स्त्री०) माता की बहिन,मासी।
मौसेरा-हि० वि०) मौसी के सबध का।
मौहूर्त-(स०वि०) मुहूर्त सबधी।
म्यॉव-(हि० स्त्री०) बिल्ली की बोली, **म्याव म्याव करना**-डरकर धीमी बोली बोलना।
म्यान-(हि०पु०) तलवार कटार आदि के फल को सुरक्षित रखने का खाना।
म्याना-(हिं० क्रि०) म्यान में रखना।
म्यानी-(फ़ा० स्त्री०) पायजामे में का वह टुकड़ा जो रान के बीच में जोड़ा जाता है
म्युनिसिपैल्टी-(अ० स्त्री०) किसी नगर के नागरिकों की वह प्रतिनिधि सभा जो नगर के स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि का प्रबध करती है।
म्यूज़ियम-(अ० पुं०) अजायबघर।
म्यो-(हि०स्त्री०) बिल्ली की बोली।
म्योंड़ी-(हि० स्त्री०) एक सदाबहार वृक्ष, निर्गुण्डी।
म्रियमाण-(स०वि०) मृतकल्प, मृतप्राय
म्लान-(स० वि०) कुम्हलाया हुआ, मलिन, दुर्बल, (पु०) ग्लानि, शोक। **म्लानता**-मलिनता।
म्लिष्ट-(स०वि०) जो स्पष्ट न बोलता हो
म्लेच्छ-(स०पु०) वर्णाश्रम हीन जाति (वि०) पामर नीच, सर्वदा पाप करने वाला, **म्लेच्छ कन्द**-लहसुन।
म्हा-(हि०सर्व०) देखो मुझ।
म्हारा-(हिं०सर्व०) हमारा।

य

य-हिन्दी वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर इसका उच्चारण स्थान तालू है, यह स्पर्श वर्ण और ऊष्म वर्ण के बीच का वर्ण है इसलिये इसको अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं।
य-(सं०पु०) यश, योग, यान, सवारी, सयम, सारथी, प्रकाश, त्याग, जव, छन्द शास्त्र में यगण का सक्षिप्त रूप।
यकअंगी-(हिं० वि०) एक अग वाला, एकही के आश्रित, देखो एकाङ्गी।
यककलम-(फ़ा० वि०) एकही बार लिखकर, एकाएक।
यकता-(फ़ा० वि०) अद्वितीय, जिसके मोकाबले का दूसरा कोई न हो।
यकताई-(फ़ा०स्त्री०) अद्वितीयता।
यकन्-(स० पु०) देखो यकृत्।
यकपरा-(फ़ा० पु०) एक प्रकार का कबूतर।
यकबयक-(फ़ा० क्रि० वि०) अचानक, सहसा, एकबारगी, एक दम से।
यकबारगी-(फ़ा० क्रि० वि०) एकाएक, एकदम से।
यकसा-(फ़ा०वि०) एक समान, बराबर।
यकायक-(फ़ा०क्रि०वि०) एकबारगी।
यकार-(स०नपुं०) 'य' स्वरूप वर्ण।
यकीन-(अ०पु०)प्रतीति,विश्वास,एतबार।
यकीनन्-(अ०क्रि० वि०) अवश्य, बेशक।
यकृत्-(स० स्त्री०) पेट की दाहिनी ओर की एक थैली जिसमें पाचन रस रहता है और जिसकी क्रिया से भोजन पचता है, जिगर, वह रोग जिसमें यकृत फूल जाता है तथा बढ़ जाता है।
यकृदात्मिका-(स० स्त्री०) झींगुर।
यकोला-(हिं०पु०)एक प्रकार का मझोले आकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और मजबूत होती है।
यक्ष-(स०पु०) देवयोनि विशेष, कुबेर का अनुचर, धनरक्षक।
यक्षकर्दम-(स० पु०) एक प्रकार का अग लेप।
यक्षण-(स० नपु०) भोजन करना, पूजन करना।
यक्षतरु-(स० पु०) वर का पेड़।
यक्षता-(स०स्त्री०) यक्ष का भाव या धर्म।
यक्षत्व-(स०पु०) यक्ष का भाव या धर्म।
यक्षनायक-(स० पु०) यक्षों के स्वामी, कुबेर।
यक्षप-(स०पु०) देखो यक्षपति।
यक्षपति-(स०पु०) कुबेर।
यक्षपुर-(स० पु०) अलकापुरी।
यक्षभृत्-(स०वि०)जिसकी पूजा की गई हो
यक्षरस-(स०पु०)फूलों से बनाई हुई शराब
यक्षराज-(स०पु०) यक्षों के राजा कुबेर।
यक्षरात्रि-(स०स्त्री०)कार्तिकमासकी पूर्णिमा
यक्षलोक-(स० पु०) वह लोक जिसमें यक्षों का वास माना जाता है।
यक्षवित्त-(स०वि०) जो धन का व्यय न करे, कृपण, कजूस, (नपु०) यक्ष का धन
यक्षसाधन-(स० नपुं०)यक्ष की उपासना
यक्षाधिप, यक्षाधिपति-(स० पु०) यक्षपति, कुबेर।
यक्षामलक-(स० नपु०) पिण्डखजूर।
यक्षावास-(स०पु०) बरगद का वृक्ष।
यक्षिणी-(स० स्त्री०) यक्ष की पत्नी, कुबेर की स्त्री, दुर्गा की एक अनुचरी।
यक्षी-(स०स्त्री०) यक्ष की पत्नी (पु०) वह

जो यक्ष की उपासना करता हो या उसको साधता हो।
यक्षेन्द्र, यक्षेश्वर-(सं० पु०) यक्षों के स्वामी, कुवेर।
यक्ष्म-(सं० पु०) क्षय नामक रोग।
यक्ष्मा-(सं०पु०)क्षयी नामक रोग,तपेदिक
यखनी-(फा०स्त्री०) उबले हुए मास का रसा, तरकारी आदि का रसा, शोरवा।
यगण-(सं० पु०) छन्द शास्त्र के आठ गणो में से एक जिसमें पहिला वर्ण लघु तथा बाद के दो वर्ण गुरु होते हैं।
यगाना-(फ़ा० वि०) नातेदार, अकेला, (पु०) भाई बन्द।
यगूर- (हि०पु०) एक प्रकार का बहुत ऊंचा पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी काले रंग की होती है।
यग्य-(हि०पु०) देखो यज्ञ।
यच्छ-(हिं०पु०) देखो यक्ष।
यच्छत्- (सं० वि०) दान देने वाला, चित्त हटाने वाला।
यच्छिनी-(हि० स्त्री०) देखो यक्षिणी।
यज-(सं०पुं०) यज्ञ, अग्नि।
यजत-(सं० पु०) ऋत्विक्।
यजति-(सं० पु०) यज्ञ, याग।
यजत्र-(सं०पु०)यज्ञ करनेवाला,अग्निहोत्री
यजन-(सं०नपु०) यज्ञ करना।
यजनकर्ता-(सं० पु०) हवन अथवा यज्ञ करने वाला।
यजनीय-(सं०वि०) यजन करने योग्य।
यजमान-(सं०पु०) वह जो यज्ञ करता हो, ब्राह्मणों को दान देने वाला, शिव की आठ मूर्तियों में से एक मूर्ति।
यजमानत्व-(सं० नपु०) यजमान का भाव या धर्म।
यजमानी-(हि० स्त्री०) यजमान का भाव या धर्म, पुरोहित की वृत्ति, वह स्थान जहाँ किसी विशेष पुरोहित के यजमान रहते हों।
यजाक-(सं०वि०) दान देने वाला।
यजिष्णु-(सं०वि०) यज्ञ करने वाला।
यजु-(हि० पु०) देखो यजुस्, यजुर्वेद।
यजुर्वेद-(सं० पुं०) चार प्रसिद्ध वेदो में से एक जिसमें विशेष करके यज्ञ कर्म का विस्तृत वर्णन है।
यजुर्वेदी-(हिं०वि०) यजुर्वेद का जानने वाला, यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करने वाला।
यजुश्श्रुति-(सं०पु०) यजुर्वेद।
यजुष्पति- (सं०पु०) विष्णु।
यजुष्य-(सं० वि०) यज्ञ सबंधी।
यजुस्-(सं० नपु०) यजुर्वेद।
यज्ञ-(सं० पु०) याग, इष्टि, मख, वह वैदिक कार्य जिसमें सभी देवताओं का पूजन तथा घृतादि द्वारा हवन होता है।
यज्ञक,यज्ञकर्ता-(सं०पु०)यज्ञ करने वाला
यज्ञकल्प-(सं० पु०) विष्णु।
यज्ञकाम-(सं० वि०) यज्ञ की इच्छा करने वाला।
यज्ञकाल-(सं०पु०) पौर्णमासी, पूर्णिमा।
यज्ञकीलक-(सं० पु०) लकड़ी का वह खूंटा जिसमें यज्ञ के लिये बलि दिया जाने वाला पशु बाधा जाता है।
यज्ञकुण्ड-(सं० नपु०) वह कुण्ड या वेदी जिसमें हवन किया जाता है।
यज्ञकृत्-(सं०वि०) यज्ञ करने वाला।
यज्ञकेतु-(सं०पु०) एक राक्षस का नाम।
यज्ञक्रतु-(सं० पु०) सपूर्ण याग, विष्णु।
यज्ञक्रिया-(सं०स्त्री०)यज्ञ के काम,कर्मकाण्ड
यज्ञगिरि-(सं०पुं०) पुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम।
यज्ञगुप्त-(सं०पु०)एक प्रसिद्ध जैन का नाम
यज्ञघ्न-(सं०वि०) यज्ञ का नाश करने वाला, राक्षस।
यज्ञछाग (सं० पु०) यज्ञ में बलि देने का बकरा।
यज्ञत्राता-(सं० पु०) यज्ञ की रक्षा करने वाले विष्णु।
यज्ञदक्षिणा-(सं०स्त्री०) वह दक्षिणा जो यज्ञ समाप्त हो जाने पर यज्ञ कराने वाले पुरोहित को दी जाती है।
यज्ञदीक्षा-(सं०स्त्री०) यज्ञ विषयक दीक्षा
यज्ञधर-(सं०पु०) विष्णु।
यज्ञधूप-(सं०पु०) धूना का वृक्ष।
यज्ञनेमि-(सं० पु०) श्रीकृष्ण।
यज्ञपति-(सं० पु०) यजमान, वह जो यज्ञ करता हो, विष्णु।
यज्ञपत्नी-(सं०स्त्री०)यज्ञ की पत्नी,दक्षिणा
यज्ञपथ-(सं०पु०) यज्ञ की प्रणाली।
यज्ञपशु-(सं० पु०) वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय,बकरा,घोड़ा
यज्ञपात्र-(सं० नपुं०) काठ के बने हुए पात्र जो यज्ञ में काम आते हैं।
यज्ञपादप-(सं०पु०) कटकी नामक वृक्ष।
यज्ञपाल-(सं०पु०) यज्ञ का संरक्षक।
यज्ञपुच्छ-(सं० नपु०) यज्ञ का शेष।
यज्ञपुरुष-(सं०पु०)यज्ञरूपी पुरुष,विष्णु।
यज्ञफलद-(सं० पु०) विष्णु।
यज्ञबन्धु-(सं०पु०)यज्ञ कर्म के सहकारी।
यज्ञबाहु-(सं०पु०) अग्नि का एक नाम।
यज्ञभाग-(सं० पु०) यज्ञ का अंश जो देवताओं को दिया जाता है, वे देवता जिनको यज्ञ का भाग मिलता है।
यज्ञभाजन, यज्ञभाण्ड-(सं० नपु०) यज्ञपात्र।
यज्ञभावन-(सं० स्त्री०) विष्णु।
यज्ञभूमि-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर यज्ञ होता है, यज्ञ स्थान।
यज्ञभूषण-(सं० पु०) कुश।
यज्ञभृत्, यज्ञभोक्ता-(सं०पु०)विष्णु।
यज्ञमण्डप-(सं० पु०) यज्ञ करने के लिये जो मण्डप बनाया गया हो, यज्ञवेदी।
यज्ञमण्डल-(सं० नपु०) वह स्थान जो यज्ञ करने के लिये घेरा गया हो।
यज्ञमन्दिर-(सं० पु०) यज्ञशाला।
यज्ञमय-(सं०पु०) यज्ञस्वरूप, विष्णु।
यज्ञमहोत्सव-(सं०पु०) यज्ञ के निमित्त कोई बड़ा उत्सव।
यज्ञमित्र-(सं० पु०) एक प्रसिद्ध जैन साधु का नाम।
यज्ञमुख-(सं०नपु०) यज्ञ का आरम्भ।
यज्ञमेनि-(सं० नपु०) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।
यज्ञयूप-(सं० पु०) वह खंभा जिसमें यज्ञ का बलि पशु बाधा जाता है।
यज्ञयोग-(सं०पु०) गूलर का पेड़।

यज्ञरस-(सं०पु०) सोम ।
यज्ञराज-(सं० पु०) चन्द्रमा ।
यज्ञलिङ्ग-(स० पु०) श्रीकृष्ण का एक नाम ।
यज्ञवर्धन-(स०वि०) यज्ञ को बढाने वाला ।
यज्ञवराह-(स० पु०) विष्णु ।
यज्ञवल्क-(स० पु०) याज्ञवल्क्य के पिता ।
यज्ञवल्ली-(स०स्त्री०) सोमलता ।
यज्ञवाट-(स० पु०) यज्ञशाला ।
यज्ञवाहन-(स०पु०) शिव,विष्णु,ब्राह्मण ।
यज्ञवाही-(स० वि०) यज्ञ का काम करने वाला ।
यज्ञवीर्य-(स० पु०) विष्णु ।
यज्ञवृक्ष-(स० पु०) कण्टकी का पेड़ ।
यज्ञव्रत-(स० स्त्री०) यज्ञ करने वाला ।
यज्ञशत्रु-(स०पु०) राक्षस ।
यज्ञशाला-(स० स्त्री०) यज्ञगृह, यज्ञ करने का स्थान ।
यज्ञशास्त्र-(सं०नपु०) वह शास्त्र जिसमें यज्ञों और उनके कृत्यों का विवेचन रहता है ।
यज्ञशील-(स०वि०) यज्ञ करने वाला ।
यज्ञशेष-(स०पु०) यज्ञ का अवशिष्ट या शेष भाग ।
यज्ञश्री-(स० स्त्री०) यज्ञ का धन ।
यज्ञश्रेष्ठा-(स० स्त्री०) सोमलता ।
यज्ञसंस्तर-(स० पु०) यज्ञभूमि, सफ़ेद कुशा ।
यज्ञसस्था-(स०स्त्री०) यज्ञ का आकार ।
यज्ञसदन-(स०नपु०) यज्ञ स्थान ।
यज्ञसाधन-(स० वि०) यज्ञ की रक्षा करने वाला (पु०) विष्णु ।
यज्ञसाधनी-(स० स्त्री०) सोमलता ।
यज्ञसार-(स०पु०) गूलर का पेड़ ।
यज्ञसिद्धि-(स०स्त्री०) यज्ञ की समाप्ति ।
यज्ञसूत्र-(स०नपु०) यज्ञोपवीत, जनेऊ ।
यज्ञसेन-(सं० पु०) विदर्भ के एक राजा का नाम ।
यज्ञस्तम्भ, यज्ञस्थाणु-(स०पु०) देखो यज्ञयूप ।
यज्ञस्थाणु-(स० पु०) वह खमा जिसमें यज्ञ का बलि देने का पशु बाँधा जाता है ।
यज्ञस्थान-(स० नपु०) वह स्थान जहा पर यज्ञ किया जाता है ।
यज्ञहन्-(स० वि०) यज्ञ में विघ्न करने वाला राक्षस ।
यज्ञहृदय-(स० पु०) विष्णु ।
यज्ञहोता-(स०पु०) यज्ञ में देवताओं का आवाहन करने वाला ।
यज्ञांश-(सं०पु०) यज्ञ का अश या भाग ।
यज्ञांशभुज्-(स० पु०) देवता गण ।
यज्ञागार-(स० पु०) यज्ञशाला ।
यज्ञाङ्ग-(स०पु०) खैर का वृक्ष, गूलर का पेड़, यज्ञ का अवयव या अग ।
यज्ञाङ्गा-(स० स्त्री०) सोमलता ।
यज्ञात्मा-(स० पु०) विष्णु ।
यज्ञाधिपति-(स० पु०) यज्ञ के स्वामि विष्णु ।
यज्ञारि-(स० पु०) शिव, राक्षस ।
यज्ञार्थ-(स०अव्य०) यज्ञ के निमित्त ।
यज्ञाशन-(स०पु०) देवता ।
यज्ञेश्वर-(स० पु०) यज्ञेश, विष्णु ।
यज्ञोपकरण-(स० नपु०) वह वस्तु जो यज्ञ के काम में आती है ।
यज्ञोपवीत-(स०नपु०) ब्रह्मसूत्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य का एक सस्करण, उपनयन, व्रतबन्ध, जनेऊ ।
यज्ञोपासक-(स० पु०) वह जो यज्ञ करता हो ।
यज्य-(स०वि०) यजन करने योग्य ।
यज्वा-(स०पु०) यज्ञ करने वाला ।
यडर-(हि०पु०) एक प्रकार का पक्षी ।
यत-(स०वि०) शासित, दमन किया हुआ ।
यतन-(हि० पु०) देखो यत्न ।
यतनीय-(स० वि०) यत्न करने योग्य ।
यतमान-(स०वि०) यत्न करता हुआ ।
यतव्य-(स० वि०) प्रयत्न करने वाला ।
यतव्रत-(स० त्रि०) बडे सयम से रहने वाला ।
यतात्मन्-(स० त्रि०) सयमी ।
यति-(स० पु०) भिक्षुक, सन्यासी, योगी, ब्रह्मचारी, त्यागी, जिसने कर्म का त्याग किया है, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, छप्पय छन्द का एक भेद (स्त्री०) पढते पढते जहा पर विश्राम किया जाता है, विरति, विराम, यमन, प्रतिबन्ध ।
यतित्व-(स० नपु०) यति का कर्म या भाव ।
यतिधर्म-(स० पु०) सन्यास ।
यतिनी-(स०स्त्री०) सन्यासिनी, विधवा ।
यतिभङ्ग-(स०पु०) काव्य का वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर आगे या पीछे पड़ती है जिसमें पढने से छन्द का लय बिगड़ जाता है ।
यतिभ्रष्ट-(सं० पु०) यतिभङ्ग दोष से युक्त छन्द ।
यतिसन्तापन-(स० नपु०) एक प्रकार का चान्द्रायण व्रत ।
यती-(स०स्त्री०) देखो यति, जितेन्द्रिय ।
यतीम-(अ०पु०) अनाथ, कोई अनुपम या अद्वितीय रत्न ।
यतीमख़ाना-(फ़ा०पु०) अनाथालय ।
यतूका-(स०स्त्री०) चकवड़ का पौधा ।
यतोद्भव-(स० वि०) जिससे उत्पन्न ।
यत्किञ्चित्-(स० वि०) थोड़ासा, बहुत कम ।
यत्न-(स० पु०) रूप आदि चौबीस गुणों के अन्तर्गत एक गुण, उद्योग, उपाय, कोशिश, तदबीर, उपचार, रोग शान्ति का उपाय ।
यत्नवान्-(स० वि०) यत्न करने वाला ।
यत्नाक्षेप-(स०पु०) अलकार शास्त्रोक्त आक्षेप का एक भेद ।
यत्र-(स०क्रि०वि०) जहा, जिस जगह ।
यत्रतत्र-(स० अव्य०) जहा तहा, जगह जगह, कई स्थानों में ।
यत्रस्थ-(स०वि०) जहा तहा रहने वाला ।
यथर्य-(स० अव्य०) यथा समय ।
यथा-(स०अव्य०) जैसे, ज्यों ।
यथाकर्तव्य-(स०वि०) कर्तव्य के अनुरूप, जैसा करना चाहिये ।
यथाकर्म-(सं०अव्य०) कर्म के अनुसार ।
यथाकल्प-(स०अव्य०) शास्त्र के अनुसार ।
यथाकाम-(सं० त्रि०) इच्छानुसार ।

यथाकामी-(स० वि०) स्वेच्छाचारी।
यथाकाम्य-(स० नपु०) यथेष्ट।
यथाकार-(स०अव्य०) जिस प्रकार से।
यथाकाय-(स०अव्य०)आकृति के समान।
यथाकार्य-(स०त्रि०) जैसा करने योग्य।
यथाकाल-(स० पुं०) उपयुक्त समय में।
यथाकुल-(स०अव्य०)कुलधर्म के अनुसार।
यथाकुलधर्म-(स०अव्य०) जिस कुल का जैसा नियम हो उसी के अनुसार।
यथाकृत-(स०अव्य०) रीति के अनुसार।
यथाक्रम-(स०अव्य०)क्रमानुसार, क्रमशः।
यथाक्षम-(स० अव्य०) यथाशक्ति।
यथाख्यान-(स०अव्य०) आख्यान या कथा के अनुसार।
यथागत-(स०त्रि०) जैसा आया है वैसा।
यथागम-(स०अव्य०) शास्त्र के अनुरूप
यथागात्र-(स० अव्य०) देह देह में, प्रत्येक शरीर में।
यथागुण-(स०अव्य०) गुण के अनुरूप।
यथागृह-(स०अव्य०) घर के समान।
यथाग्नि-(स०अव्य०) अग्नि के सदृश।
यथाचार-(स०अव्य०) रीति के अनुसार।
यथाचारी-(स० त्रि०) पूर्व आचार के अनुसार चलने वाला।
यथाचिन्तित-(स०वि०) चिन्तानुसार।
यथाजात-(स०वि०) मूर्ख, नीच।
यथाजाति-(स०अव्य०) जाति के अनुसार।
यथाज्ञप्त-(स०त्रि०) जैसी आज्ञा दिया गया हो।
यथाज्ञान-(स०अव्य०)ज्ञान के अनुसार।
यथातत्व-(स०अव्य०) यथार्थ।
यथातथ-(स०अव्य०) यथार्थ, उचित।
यथातथ्य-(स०अव्य०) जैसे का तैसा, ज्यों का त्यों।
यथात्मक-(स०त्रि०) प्रकृति के अनुसार।
यथादत्त-(स०वि०) जैसा दिया गया हो।
यथादर्शन-(स०अव्य०)देखने के मुताबिक।
यथादिष्ट-(स०त्रि०) जैसा कहा गया हो।
यथादीक्षा-(स०अव्य०)दीक्षा के अनुसार।
यथादृष्ट-(स०अव्य०)जैसा देखा गया हो।
यथाधर्म-(स०अव्य०) धर्म के अनुसार।
यथानियम-(स० अव्य०) नियमानुसार।
यथान्याय-(स०अव्य०) यथोचित, न्याय के अनुसार,
यथापराध-(स० अव्य०) अपराध के अनुसार।
यथाप्रदिष्ट-(स० वि०) जैसी आज्ञा दी गई हो।
यथाप्रदेश-(स० अव्य०) उपदेश के अनुसार, ठीक ठीक तरह से।
यथापूर्व-(स०अव्य०) पहिले के समान, ज्यों का त्यों।
यथाप्राण-(स०अव्य०) शक्ति के अनुसार
यथाप्रार्थित-(स०अव्य०) जैसी प्रार्थना की गई हो।
यथाप्रीति-(स०अव्य०)प्रेम के अनुसार।
यथाबल-(स० अव्य०) यथाशक्ति, बल के अनुसार।
यथाबुद्धि-(स०अव्य) बुद्धि के अनुसार।
यथाभक्ति-(स०अव्य०) भक्ति के अनुसार
यथाभक्षित-(स० वि०) जिस तरह खाया गया हो।
यथाभाग-(स०अव्य०)हिस्से के मुताबिक, यथोचित।
यथाभाजन-(स०अव्य०) पात्र के समान
यथाभिकाम-(स०अव्य०)रुचि के अनुसार
यथाभिरुचित-(स०अव्य०) इच्छानुसार
यथाभिलिखित-(स०अव्य०) लिखे के अनुसार।
यथाभिलषित (स०वि०) इच्छानुसार।
यथामति-(स०अव्य०) बुद्धि के अनुसार
यथामुख्य-(स०अव्य०) प्रधानता से।
यथाम्नाय-(स०अव्य०) वेदों के अनुसार
यथायथ-(स० अव्य०) तुल्य, समान।
यथायुक्ति-(स०अव्य०) युक्ति के अनुसार
यथायुक्त-(स०अव्य०) यथोचित।
यथायोग्य-(स०अव्य०) योग्यतानुसार।
यथारम्भ-(स०अव्य०) जिस प्रकार आरम्भ किया गया हो।
यथारुचि-(स०अव्य०)पसंद के मुताबिक।
यथारूप-(स०अव्य०) रूप के समान।
यथार्थ-(स०अव्य०) यथारूप, ठीक जैसा होना चाहिये वैसा, जैसा का तैसा, ठीक, वाजिब।
यथार्थता-(स०स्त्री०) यथार्थ होने का भाव, सत्यता।
यथार्हण-(स०अव्य०) योग्यतानुसार।
यथालब्ध-(स० वि०) जितना प्राप्त हो सके उसके अनुसार।
यथालाभ-(स० वि०) जो कुछ मिले उसके अनुसार।
यथावकाश-(स०अव्य०) छुट्टी के मुताबिक
यथावत्-(स०अव्य०) पूर्ववत्, जैसे का तैसा,जैसा चाहिये वैसा, अच्छी तरह से।
यथावस्थित-(स०अव्य) सत्य, ठीक,स्थिर
यथाविध-(स०अव्य०) जिस प्रकार से।
यथाविधि-(स०अव्य०) विधिपूर्वक।
यथाविहित-(स० अव्य०) विधि के अनुसार।
यथाशक्य-(स० अव्य०) सामर्थ्य भर।
यथाशक्ति-(स० अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, जितना हो सके।
यथाशास्त्र, यथाश्रुत-(स० अव्य०) शास्त्र के अनुसार।
यथाश्रय-(स० अव्य०) आश्रय स्थान के अनुरूप।
यथाश्रुत-(स०वि०) शास्त्र के अनुकूल।
यथाश्रुति-(स० अव्य०) देखो यथाश्रुत।
यथासदिष्ट-(स० अव्य०) जैसा कहा गया हो।
यथासपद-(स०अव्य०)शक्ति के अनुसार
यथासहित-(स०अव्य०,सहिताके अनुसार
यथासङ्कल्पित-(स०वि०)जैसा मन में दृढ किया गया हो।
यथासंख्य-(स०अव्य०) मित्रता भाव से।
यथासन्धि-(स०अव्य०) ठीक जगह पर।
यथासमय-(स० अव्य०) समय के अनुसार, जैसा समय हो वैसा।
यथासम्भव-(स०अव्य०)जहातक होसके।
यथासाध्य-(स० अव्य०) यथाशक्ति, जहा तक होसके।
यथास्तुत-(स० अव्य०) जैसी स्तुति की गई हो।
यथास्थान-(स०अव्य०) ठीक जगह पर।
यथास्थित-(सं० अव्य०) सत्य।
यथास्मृति-(स० अव्य०) स्मृति के प्रमाण

के अनुसार।
यथास्व–(स० अव्य०) इच्छानुसार।
यथास्वैर–(स०अव्य०)चित्त के अनुसार।
यथाहार–(स०अव्य०) भोजन के अनुसार
यथेच्छ–(स०अव्य०)इच्छानुसार,मनमाना
यथेच्छक–(स० वि०) मनमाना काम करने वाला।
यथेच्छाचार–(स०पु०) उचित अनुचित का ध्यान न करके इच्छानुसार करना।
यथेच्छा–(स०स्त्री०) इच्छानुसार,मनमाना।
यथेच्छाचार–(स० पु०) जो मन में आवे सो करना।
यथेच्छाचारी–(स० वि०) मनमौजी।
यथेप्सित–(स०अव्य०) जैसी इच्छा हो वैसा।
यथेष्ट–(स०अव्य०) जितना चाहिये उतना
यथेष्टचारी–(स० वि०) इच्छानुसार घूमने वाला।
यथोक्त–(स०वि०) जैसा कहा गया हो।
यथोक्तकारी–(स०वि०) आज्ञाकारी।
यथोक्तवादी–(स०वि०)उचित बोलने वाला
यथोचित–(स० अव्य०) यथा योग्य,जैसा चाहिये वैसा, ठीक, मुनासिब।
यथोत्तर–(स०अव्य०) उत्तर के अनुसार।
यथोत्साह–(स० अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार।
यथोदित–(स०अव्य०)कहने के मुताबिक।
यथोद्दिष्ट–(सं०वि०) जैसा कहा गया हो
यथोद्देश–(स० अव्य०) अभिप्राय के अनुसार।
यथोपदिष्ट–(स० वि०) जैसा उपदेश दिया गया हो।
यथोपदेश–(स० अव्य०) उपदेश के अनुसार।
यथोपपन्न–(स० अव्य०) जिस प्रकार प्राप्त हुआ हो।
यथोपपाद–(स० अव्य०) यथासम्भव।
यथोपयोग–(सं०अव्य०) उपयुक्त प्रयोग।
यथोपाधि–(स० अव्य०) उपाधि के अनुसार।
यदपि–(हिं० अव्य०) देखो यद्यपि।
यदर्थ–(स० वि०) जिस कारण से।
यदा–(स०अव्य०) जिस समय, जब,जहां।
यदाकदा–(स०अव्य०)जब तक, कभी कभी
यदि–(स०अव्य०) अगर, जो-संशय या अपेक्षा सूचित करने के लिये वाक्य के आरभ में प्रयोग होता है।
यदिच,यदिचेत्–(स० अव्य०) यद्यपि अगरचे।
यदिच्छा–(स० स्त्री०) जैसी इच्छा।
यदु–(सं० पु०) ययाति के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जो देवयानीके गर्भ से उत्पन्नथे, इन्होने अपना अलग वंश चलाया था।
यदुनन्दन–(स०पु०) श्रीकृष्ण, यदुनाथ, (स०पु०) यदुवंश के स्वामी श्रीकृष्ण।
यदुपति–(स०पु०) श्री कृष्ण, यदुभूप, यदुराई–(स०पु०) श्रीकृष्ण।
यदुराज–(स० पु०) यदुकुल के राजा श्री कृष्ण।
यदुवंश–(स०पु०) राजा यदु का कुल, यादव, ग्वाल, आभीर, गोप।
यदुवंशमणि–(स० पु०) श्रीकृष्ण।
यदुवंशी–(स० वि०) यदुकुल में उत्पन्न, यादव, अहीर।
यदुवर, यदुवीर, यदूत्तम–(सं० पु०) श्रीकृष्ण।
यद्यपि–(स० अव्य०) अगर, अगरचे।
यदृच्छया–(स० क्रि० वि०) अकस्मात् अचानक, दैव योग से, बिना किसी नियम या कारण से।
यदृच्छा–(स० स्त्री०) केवल इच्छा के अनुसार व्यवहार, आकस्मिक सयोग इत्तेफाक।
यद्भविष्य–(स० पु०) अदृष्ट वादी।
यद्वातद्वा–(स० अव्य०) कभी कभी।
यन्त–(स० पु०) सारथी, फीलवान।
यन्तव्य–(स० वि०) दमन करने योग्य
यन्ता–(स० पु०) सारथी।
यन्त्र–(स० नपुं०) नियन्त्रण, किसी विशेष कार्य के लिये तैयार किया हुआ उपकरण, अग्नियन्त्र, तोप या बदूक, कोई कल या औज़ार, वाद्य, बाजा, ताला, तन्त्र के अनुसार विशिष्ट प्रकार से बने हुए कोष्ठक आदि, जतर,तावीज।
यन्त्रगृह–(स० नपु०) वेधशाला।
यन्त्रण–(स०नपु०) रक्षण, रक्षा करना, बधन बाधना, नियम।
यन्त्रणा–(स० स्त्री०) वेदना, यातना, कष्ट, तकलीफ।
यन्त्रनाल–(स०नपु०) कुएँ में से पानी निकालने की कल।
यन्त्रपेषिणी–(स०स्त्री०) पीसने की चक्की
यन्त्रप्रवाह–(स०पु०) पानी फेंकने का यन्त्र, दमकल।
यन्त्रमन्त्र–(स० पु०) जादूटोना।
यन्त्रराज–(स०पु०) ग्रहों तथा तारों की गति जानने का यन्त्र।
यन्त्रविद्या–(स० स्त्री०) कलों के बनाने और चलाने की विद्या।
यन्त्रशाला–(स०स्त्री०) वेधशाला।
यन्त्रसूत्र–(स० पु०) वह सूत जिसकी सहायता से कठपुतली नचाई जाती है।
यन्त्रालय–(स०पु०) मुद्रालय, छापाखाना
यन्त्राश–(स०पु०) एक राग का नाम।
यन्त्रिका–(स० स्त्री०) छोटी ताली, छोटा ताला।
यन्त्रित–(स० वि०) जो यन्त्र द्वारा बद किया या रोका गया हो, ताला लगा हुआ।
यन्त्री–(हि०पु०) यन्त्र मन्त्र करने वाला, तान्त्रिक, बाजा बजाने वाला।
यन्त्रोपल–(स०पु०) चक्की का पत्थर।
यन्द–(हि० पु०) स्वामी, मालिक।
यन्निमित्त–(स०अव्य०) जिस कारण से।
यम–(स०पु०) दक्षिण दिशा के दिक्पाल, मृत्यु के देवता, यमराज, सयम, मन तथा इन्द्रियों को वश में करना, विष्णु, शनि, कौवा, वायु, दो की सख्या, यमज, जोड़ा।
यमक–(स० नपु०) एक शब्दालकार जिसमें किसी कविता में एक ही शब्दभिन्न अर्थों में कई बार प्रयोग किया जाता है।
यमकात, यमकातर–(हिं०पु०) यम का छुरा, एक प्रकार की तलवार।
यमकिङ्कर–(सं० पु०) यमदूत।
यमकीट–(स० पुं०) केंचुवा।

यमकील–(स० पु०) विष्णु ।
यमक्षय–(स० पु०) मृत्यु ।
यमघण्ट–(स० पु०) फलित ज्योतिष के अनुसार एक दुष्ट योग जिसमें शुभ कार्य करना मना है, कार्तिक शुक्ला प्रतिपद, दीवाली के बाद का दिन ।
यमचक्र–(स० पु०) यम का शस्त्र ।
यमज–(सं० वि०) एक गर्भ से एक साथ उत्पन्न होने वाली दो सन्तान, जुड़वा, अश्विनीकुमार ।
यमजातना–(हिं० स्त्री०) देखो यमयातना ।
यमजित्–(स० पु०) मृत्युञ्जय ।
यमदंष्ट्र–(स० स्त्री०) वैद्यक के अनुसार आश्विन, कार्तिक और अगहन के लगभग का कुछ विशिष्ट काल जिसमें रोग तथा मृत्यु का अधिक भय होता है ।
यमदग्नि–(स०पु०) परशुराम के पिता ।
यमदण्ड–(स० पु०) यमराज का डंडा, कालदण्ड ।
यमदुतिया–(हि०स्त्री०) देखो यमद्वितीया
यमदूत–(स० पु०) यम के दूत, कौवा, नव समाधियों में से एक ।
यमदूतिका–स० स्त्री०) इमली का पेड़ ।
यमदेवता–(स०स्त्री०) भरणी नक्षत्र ।
यमद्रुम–(स०पु०) सेमर का पेड़ ।
यमद्वितीया–(स०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला द्वितीया, भाईदूज ।
यमन–(स०नपु०) रोकना, बन्द करना, बाधना, ठहराना, (पु०) यम ।
यमनगर–,स०नपु०) यमपुरी ।
यमनाह–(हि०पु०) धर्मराज ।
यमनिका–(स० स्त्री०) यवनिका, नाटक का परदा ।
यमनी–(अ०स्त्री०) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर ।
यमपुर–(स०पु०) यमलोक ।
यमपुरी–(सं०स्त्री०) यमपुर, यमलोक ।
यमभगिनी–(स० स्त्री०) यमुना नदी ।
यममार्ग–(सं०पु०) मृत्युपथ ।
यमयातना–(स०स्त्री०) यम के दूतों की दी हुई पीड़ा, मृत्यु समय का कष्ट ।
यमरथ–(स०पु०) यम का वाहन, भैंसा ।
यमराज–(स०पु०) यमों के राजा धर्मराज जो मृत्यु के बाद प्राणी के कर्मों का विचार करते हैं ।
यमराष्ट्र–(स०नपु०) यमलोक ।
यमल–(स०नपु०) युग्म, जोड़ा, यमज ।
यमलपत्रक–स०पु०) कचनार का पेड़ ।
यमलच्छद–,स०पु०)कचनार का वृक्ष ।
यमला–(स०स्त्री०)एक प्रकार का हिचकी का रोग ।
यमलार्जुन–(स०पु०)नलकूबर और मणिग्रीव नाम के कुवेर के दो पुत्र जो नारद के शाप से अर्जुन वृक्ष हो गये थे, श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था ।
यमली–(स० स्त्री०) स्त्रियों का घाघरा और चोली ।
यमलोक–(स०पु०) वह लोक जहा पर मृत्यु के बाद मनुष्य जाते हैं, यमपुरी ।
यमवाहन–(स०पु०)यम का वाहन, भैंसा
यमवृक्ष–(स० पु०) सेमल का पेड़ ।
यमव्रत–(स०नपु०) राजा का निष्पक्षपात शासन ।
यमसदन–(स०नपु०) यमलोक ।
यमस्तोम–(स०पु०) एक दिन में होने वाला एक यज्ञ ।
यमस्वसा–(स०स्त्री०) यमुना, दुर्गा ।
यमहन्ता–(स० पु०) काल का नाश करने वाला ।
यमानिका, यमानी–(स०स्त्री०) अजवाइन
यमानुग–(स०पु०) यम का अनुचर ।
यमानुजा–(स०स्त्री०) यमुना नदी ।
यमान्तक–(स०पु०) शिव ।
यमारि–(स०पु०) विष्णु ।
यमालय–(स०पु०) यमपुर ।
यमी–(स०स्त्री०) यमुना, (पु०) संयमी ।
यमुना–(सं० स्त्री०) भारत के उत्तर पश्चिम भाग में बहने वाली एक नदी, यम की बहिन, कालिन्दी, दुर्गा ।
यमेश–(स०नपु०) भरणी नक्षत्र ।
यमेश्वर–(स०पु०) शिव ।
ययाति–(स० पु०) नहुष राजा के एक पुत्र का नाम जिनका विवाह शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के साथ हुआ था ।
ययातीश्वर–(स०पु०) शिव ।
ययी–,स०पु०,शिव,महादेव, मार्ग, घोड़ा
यव–(स०पु०) जव नामका अन्न, चार धान या छ सरसो की तौल का मान, इन्द्रजव, सामुद्रिक के अनुसार अगुली में की जव की आकृति की रेखा जो शुभ मानी जाती है ।
यवकण्टक–,स०पु०) खेतगाखड़ा ।
यवक्षार–(स० पु०) जव के पौधों की जला कर निकाला हुआ क्षार, जवाखार
यवतिक्ता–(स० स्त्री०) शखिनी नाम की लता, चौलाई या मरसे का साग ।
यवद्वीप–(स० पु०) जावा नामक टापू का प्राचीन नाम ।
यवन–(स०पु०) यूनान देश का निवासी, मुसलमान कालयवन नामक असुर, तेज घोड़ा (वि०) वेगवान् ।
यवनप्रिय-(स०नपु०) मिरचा ।
यवनानी–,स० स्त्री०) यूनान की लिपि, यूनान की भाषा, (वि०) यवन सम्बन्धी ।
यवनाल–स० पु०) जुआर का पौधा, जव की टाट ।
यवनालज–(स० पु०) यवक्षार, जवाखार
यवनिका–(स० स्त्री०) नाटक का परदा
यवनी–(सं० स्त्री०) यवन जाति की स्त्री ।
यवनेष्ट–(स०नपु०) लहसुन, प्याज़, शलगम ।
यवपल्ल–(स०पु०) जौ का सूखा डंठल ।
यवपिष्ट–(स०नपु०) जौका आटा ।
यवफल–(स० पु०) बास, जटामासी, प्याज, इन्द्रजव, पाकड़ का पेड़ ।
यवबुस–(स०पु०) जवका भूसा ।
यवमती–(स०स्त्री०)एक वर्णवृत्त का नाम ।
यवमद्य–(स०नपु०) जव की शराब ।
यवमध्य–(स०नपु०) एक प्रकार का चान्द्रायण व्रत ।
यवमन्थ–(स०पु०) जवका सत्त ।
यवलास–(स०पु०) यवक्षार, जवाखार ।
यवशक्तु–(स० पु०) जवका सत्तू ।
यवशूक–(स० पु०) यवक्षार, जवाखार ।
यवासुर–(स०नपु०) जौकी शराब ।

यवसौवीर-(सं०नपु०) जौ का माड़।
यवागू-(सं०स्त्री०) जव या चावल का माड़ जो सड़ाकर खट्टा कर दिया गया हो।
यवानी-(सं० स्त्री०) अजवायन।
यवास-(सं० पु०) जवासा नामक कांटेदार पौधा।
यविष्ठ-(सं०वि०) बड़ा जवान (पु०) छोटा भाई, अग्नि।
यवीयुध-(सं० वि०) रणप्रिय।
यवोदर-(सं० नपु०) जौ का मध्य भाग।
यवोद्भव-(सं० पु०) जवाखार।
यश-(हिं० पु०) प्रशंसा, ख्याति, कीर्ति, सुनाम, बड़ाई, नेक नामी, यश गाना-प्रशंसा करना, यश मानना-कृतज्ञ होना।
यशद-(सं०नपु०) एक धातु विशेष, जस्ता,
यशव, यशम-(अ० पु०) एक प्रकार का हरा पत्थर।
यशःशेष-(सं० पु०) मृत्यु (वि०) मृत, मरा हुआ।
यशस्कर-(सं०वि०) कीर्ति कारक।
यशस्करी-(सं० स्त्री०) यश बढाने वाली विद्या
यशस्काम-(सं० वि०) यश की कामना करने वाला।
यशस्कृत्-(सं०वि०) बड़ाई करने वाला।
यशस्यु-(सं०वि०) यश चाहने वाला।
यशस्वत्-(सं०वि०) यशस्वी।
यशस्वी-(हिं०वि०) कीर्तिमान्, जिसका बहुत यश हो।
यशस्विनी-(सं० स्त्री०) कीर्तिमती, सत्यव्रत की पत्नी।
यशी-(सं० वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशील-(हिं०वि०) देखो यशी।
यशुमति-(हिं० स्त्री०) देखो यशोदा।
यशोघ्न-(सं० वि०) यश का नाश करने वाला।
यशोद-(सं० वि०) यश देने वाला (पुं०) पारा
यशोद-(सं० वि०) यश देने वाला।
यशोदा-(सं० स्त्री०) नन्द की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था, दिलीप की माता का नाम, एक वर्णवृत्त का नाम।
यशोधन-(सं० वि०) यश ही जिसका एक मात्र धन है।
यशोधर-(सं०वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशोधरा-(सं० स्त्री०) बुद्ध देव की पत्नी और राहुल की माता।
यशोधा-(सं०वि०)कीर्तिमान्, यशस्वी।
यशोधारा-(सं० स्त्री०) सहिष्णु की स्त्री और कामदेव की माता।
यशोभाग्य-(सं० वि०) यशोभागी, कीर्तिमान्।
यशोभृत्-(सं० वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्
यशोमती-(सं०स्त्री०) यशस्विनी, यशोदा।
यशोवर-(सं० पु०) रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
यष्टव्य-(सं०वि०) यज्ञ के योग्य।
यष्टि-(सं० पु०) ध्वजदण्ड, लाठी, छड़ी (स्त्री०) शाखा, टहनी, मोतियों का हार, मुलेठी, बाहु, बाह।
यष्टिक-(सं० पु०) तीतर पक्षी, दण्ड, डंडा, मजीठ।
यष्टिका-(सं० स्त्री०) गले मे पहरने का हार, हाथमे रखने की छड़ी या लाठी, बावली।
यष्टिमधु-(सं०नपु०) मुलेठी।
यष्टियन्त्र-(सं०नपु०) एक प्रकार की धूपघड़ी
यष्टाकर्ण-(सं० पु०) कान मे पहरने का एक प्रकार का आभूषण।
यह-(हिं०सर्व०) निकट की वस्तु का निर्देश करने वाला एक सर्वनाम जो वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त जीवों या पदार्थों के लिये प्रयोग किया जाता है।
यहा-(हि० क्रि० वि०) इस स्थान मे, इस जगह
यहि-(हि०वि०सर्व०) "यह" का वह रूप जो प्राचीन हिन्दी मे किसी विभक्ति लगाने के पूर्व प्रयोग होता था, 'ए' का विभक्ति युक्त रूप, इसको।
यही-(हि०अव्य०) निश्चित रूप से, यह यह ही।
यहूद-(हिं० पु०) वह देश जहा हजरत ईसा उत्पन्न हुए थे।
यहूदी-(हिं०पु०) पश्चिम एशिया वासी एक प्राचीन जाति, इस जाति की भाषा हीब्रू थी।
या-(हिं०क्रि०वि०) यहा।
याचना-(हिं०क्रि०) देखो याचना।
या-(फा०अव्य०) विकल्प सूचक शब्द, अथवा (सर्व०) व्रजभाषा में कारक का चिह्न लगाने के पहले का 'यह' का रूप।
याक-(हिं० पु०) हिमालय पर्वत का एक जगली बैल, जिसकी पूँछ का चमर बनता है (हि०वि०) एक।
याकूत-(अ० पु०) लाल रग का एक बहुमूल्य पत्थर।
याग-(सं०पु०) यज्ञ।
यागकर्म-(सं०नपु०) यज्ञ का कार्य।
यागकाल-(सं० पु०) यज्ञ करने का उपयुक्त समय।
यागमण्डप-(सं०नपु०) यज्ञशाला।
यागसन्तान-(सं० पु०) इन्द्र के पुत्र जयन्त का नाम।
यागसिद्ध-(सं०वि०) यज्ञ द्वारा सिद्धि प्राप्त
यागसूत्र-(सं०नपुं०) यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत।
याचक-(सं०वि०) माँगने वाला, भिक्षुक भिखमगा।
याचन-(सं०नपु०) याञ्चा, प्रार्थना।
याचनक-(सं० वि०) विवाह के लिये कन्या की प्रार्थना करने वाला।
याचना-(सं०स्त्री०) प्रार्थना, (हि०क्रि०) मागना।
याचनीय-(सं०वि०) माँगने योग्य।
याचमान-(सं०वि०) माँगने वाला।
याचित-(सं० वि०) माँगी हुई वस्तु।
याचितक-(सं०नपु०) माँगी हुई वस्तु।
याचितव्य-(सं०वि०) माँगने लायक।
याची-(सं०वि०) भिक्षुक, भिखमगा।
याचिष्णु-(सं० वि०) माँगने वाला।
याच्य-(सं०वि०) याचना करने योग्य।
याजक-(सं० पु०) याज्ञिक, यज्ञ करने वाला, मस्त हाथी।

याजन-(सं०नपु०) यज्ञ की क्रिया।
याजनीय-(सं० वि०) यज्ञ करने योग्य।
याजमान-(सं० नपु०) यज्ञ में यजमान का किया हुआ काम।
याजयिता-(सं०त्रि०) यज्ञ कराने वाला, पुरोहित।
याजिका-(सं० स्त्री०) पूजा के समय दिया जाने वाला उपहार।
याजी-(हिं०वि०) यज्ञ करने वाला।
याजुष-(सं० वि०) यजुर्वेद सबन्धी।
याज्य-(सं०वि०) यज्ञ करने योग्य।
याज्ञ-(सं० वि०) यज्ञ सम्बन्धी।
याज्ञवल्क्य-(सं०पु०) धर्मशास्त्र प्रयोजक एक प्रसिद्ध ऋषि, यह वैशम्पायन के शिष्य थे, वाजसनेयी संहिता के आचार्य, राजा जनक के दरबार के एक ऋषि।
याज्ञसेनी-(सं० स्त्री०) द्रौपदी।
याज्ञिक-(सं० पु०) यज्ञ करने या कराने वाला।
याज्ञिय-(सं० वि०) यज्ञ सबंधी।
याज्य-(सं० वि०) यज्ञ करने योग्य।
याज्या-(सं० स्त्री०) गंगा।
यात-(सं० वि०) लब्ध, पाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ।
यातन-(सं०नपु०) पारितोषिक, इनाम।
यातना-(सं० स्त्री०) बहुत अधिक कष्ट या वेदना, वह पीड़ा जो यमलोक में भोगना पड़ता है।
यातयाम-(सं० वि०) जीर्ण, पुराना, जिसका भोग किया जा चुका हो, परित्यक्त, उच्छिष्ट।
यातव्य-(सं०वि०) आक्रमण करने योग्य।
याता-(हिं० स्त्री०) पति के भाई की स्त्री, जेठानी या देवरानी।
यातायात-(सं० नपु०) आना जाना, आमदरफ्त।
यातिक-(सं०पु०) पथिक, यात्री।
यातु-(सं० पु०) रास्ता चलने वाला, (पु०) राक्षस।
यातुधान-(सं० पु०) राक्षस।
यातुमत्-(सं०वि०) हिंसायुक्त।
यातुविद्-(सं०स्त्री०)ऐन्द्रजालिक, जादूगर
यातुहन्-(सं०वि०) इन्द्रजाल को नष्ट करने वाला।
यातृक-(सं०पु०) पथिक, बटोही।
यातोपयात-(सं०नपु०) आना जाना।
यात्रा-(सं० स्त्री०) एक स्थान से दूसरे स्थान को गमन करने की क्रिया, प्रस्थान, प्रयाण, सफर, तीर्थाटन, देवस्थान के दर्शन को जाना।
यात्राकार-(सं०पु०) यात्रा करने वाला।
यात्रावाल-(हिं०पु०) यात्रियों को दर्शन आदि कराने वाला पंडा।
यात्रिक-(सं०वि०) यात्रा सबन्धी, रीत्यानुसार जीवन धारण करने के उपयुक्त, (पु०) यात्री, पथिक, यात्री की सामग्री।
यात्री-(सं० वि०) यात्रा करने वाला, तीर्थाटन के लिये जाने वाला।
याथाकामी-(सं० स्त्री०) इच्छानुसार काम करने वाला।
याथाकाम्य-(सं०नपुं०) इच्छानुसार।
याथातथ्य-(सं० पुं०) यथार्थता।
याथात्म्य-(सं० नपु०) आत्मानुरूपता।
याथार्थ्य-(सं०नपु०) यथार्थता।
याद-(फा० स्त्री०) मेधाशक्ति,स्मरणशक्ति, स्मरण करने की क्रिया,(पु०) जलजन्तु।
यादईश-(सं०पु०) समुद्र, वरुण।
यादःपति-(सं० पु०) समुद्र।
यादगार-(फा० स्त्री०) स्मृतिरूप पदार्थ, स्मारक।
याददाश्त-(फा० स्त्री०) स्मरण शक्ति, स्मरण रखने के लिये लिखी हुई कोई बात।
यादव-(सं०पुं०) यदु के वंशज, श्रीकृष्ण, (वि०) यदुसबन्धी।
यादवक-(सं०पु०) यदु के वंशज।
यादवी-(सं०स्त्री०)यदुकुल की स्त्री,दुर्गा।
यादवेन्द्र-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
यादुविद्या-(सं०स्त्री०) भौतिक विद्या।
यादुर-(सं० वि०) वीर्यवान्।
यादृश-(सं०वि०)जिस प्रकार का, जैसा।
यादृशी-(सं०वि०स्त्री०) जिस प्रकार की।
यान-(सं०नपुं०) घोड़ा हाथी रथ आदि सवारी, विमान, वाहन, राजाओं के सन्धि आदि छ गुणों में से एक, शत्रु पर आक्रमण करना, गति।
यानपात्र-(सं०नपु०) जहाज़।
यानभंग-(सं०पु०)जहाज़ का नष्ट होना।
यानवाह-(सं०पुं०) रथ हाकने वाला।
यानशाला-रथ गाड़ी आदि रखने का घर
यानी, याने-(अ०अव्य०) तात्पर्य यह है कि, अर्थात्।
यापक-(सं०वि०) प्राप्त करने वाला।
यापन-(सं० नपु०) चलाना, समय बिताना, छोड़ाना, मिटाना, निबटाना, बिताना।
यापना-(सं०स्त्री०) कालक्षेप, व्यवहार।
यापनीय-(सं०वि०) प्राप्त करने योग्य
याप्य-(सं०वि०) निन्दनीय, रक्षणीय, छिपाने योग्य।
याप्ययान-(सं०नपु०) पालकी।
याबू-(फा०पुं०) छोटा घोड़ा, टट्टू।
याभ-(सं० पु०) स्त्रीप्रसंग, मैथुन।
याम-(सं० पु०) तीन घंटे का समय। प्रहर, काल, समय, गमन, जाना, एक प्रकार के देवगण(हिं०स्त्री०)रात्रि, रात।
यामक-(सं० पुं०) पुनर्वसु नक्षत्र।
यामकिनी-(सं०स्त्री०) पुत्रवधू, बहिन।
यामघोष-(सं० पु०) कुक्कुट, मुर्गा।
यामघोषा-(सं०स्त्री०) समय की सूचना देने के लिये बजाने की घटी।
यामतूर्य-(सं० नपु०) समय बतलाने के लिये बजाई जाने वाली तुरही।
यामदुन्दुभि-(सं०पु०) नगाड़ा।
यामन-(सं० वि०) गति, गमन।
यामनाली-(सं० स्त्री०) समय बतलाने वाली घड़ी।
यामनेमि-(सं०पु०) इन्द्र।
यामल-(सं० नपु०) यमज सन्तान, जडुवाँ लड़के, एक तन्त्र ग्रन्थ।
यामवती-(सं० स्त्री०) निशा, रात्रि।
यामश्रुत-(सं०वि०) जो जल्दी से सुना गया हो।
यामार्ध-(सं०नपुं०) आधा पहर।
यामिक-(सं० पु०) पहरा देने वाला,

चौकीदार।

यामिका, यामिनी–(स०स्त्री०)रात्रि, रात।

यामिनीचर–(स०पु०) उल्लू पक्षी।

यामिनीपति–(स०पु०) चन्द्रमा।

याम्य–(स० पु०) शिव, विष्णु, (वि०) यम सबधी, दक्षिण का।

याम्यद्रुम–(स० पु०) सेमल का वृक्ष।

याम्या–(स० स्त्री०) भरणी नक्षत्र, दक्षिण दिशा।

याम्योत्तरदिगंश–(स० पु०) भूगोल में लम्बाश या दिगश।

याम्योत्तररेखा–(स०स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारो ओर जाती है।

यायावर–(स०पु०) अश्वमेध का घोड़ा।

यायी–(स० वि०) गमनशील, जाने वाला (पुं०) अभियोग चलाने वाला।

यार–(फ़ा०पु०)मित्र, दोस्त, उपपति,जार।

याराना–(फा० पु०) मित्र के सदृश, पुरुष और स्त्री का अनुचित सबन्ध।

यारी–(फ़ा०स्त्री०) मैत्री, मित्रता, स्त्री पुरुष का अनुचित प्रेम या सम्बन्ध।

याल–(फा०स्त्री०) देखो अयाल।

याव–(स०वि०) जौ का बना हुआ।

यावक–(स०पुं०) बोरो धान, कुलथी, उड़द, जव।

यावच्छक्य–(स०अव्य०) यथाशक्ति।

यावच्छस्त्र–(स०अव्य०) जहा तक शस्त्र जा सके।

यावच्छेष–(स० अव्य०) जितना बच गया हो।

यावच्छ्रेष्ठ–(स० वि०) बहुत बढ़िया।

यावज्जन्म–(स०अव्य०) जिन्दगी भर।

यावत्–(स०अव्य०)जब तक,अवधि,मर्यादा।

यावत्काम–(स० अव्य०) इच्छा के अनुसार।

यावत्सत्त्व–(स०अव्य०) यथाबल।

यावत्प्रमाण–(स०अव्य०) जहा तक।

यावदन्त–(स०अव्य०) शेष तक।

यावदर्थ–(स० वि०) आवश्यकता के अनुसार।

यावदायुस्–(स०अव्य०) आजीवन।

यावदीप्सित–(स० अव्य०) जितनी इच्छा हो।

यावदुक्त, यावद्भाषित–(स० अव्य०) कहे मुताबिक।

यावदुत्तम–(स०अव्य०) शेष सीमा तक।

यावद्गम–(स० अव्य०) जितना शीघ्र जाना सभव हो।

यावद्बल–(स०अव्य०) शक्ति के अनुसार।

यावद्भाषित–(स० वि०) जितना कहा गया हो।

यावद्वेद–(स० अव्य०) जहा तक जाना गया हो।

यावद्व्याप्ति–(स० अव्य०) अन्त तक।

यावन,यावनी–(स०वि०) यवन सबधी।

यावनाल–(स० पु०) जुआर।

यावनाली–(स० स्त्री०) ज्वारकी शक्कर

यावनी–(स० स्त्री०) ईख (वि०) यवन सबधी।

यावन्मात्र–(स० अव्य०) थोड़ा थोड़ा।

यावर–(फा०वि०) सहाय, मददगार।

यावरी–(फ़ा० स्त्री०) मित्रता।

यावस–(स०वि०) जवासे की शराब।

याविक–(स०पु०) मक्का नामक अन्न।

याव्य–(स०पु०) जवाखार।

याष्टीक–(स० पुं०) लाठी बाँधने वाला योद्धा।

यासा–(स० स्त्री०) कोकिल, कोयल।

यासु–(हि० सर्व०) देखो जासु।

यास्क–(स० पु०) वेद के निरुक्त ग्रन्थ के रचयिता।

याहि–(हिं० सर्व०) इसको, इसे।

यियक्षु–(स०वि०) यज्ञ करने का इच्छुक।

यियासु–(स० वि०) जाने की इच्छा करने वाला।

युक्त–(स० वि०) न्याय्य, उचित ठीक, सम्मिलित, मिला हुआ, जुटा हुआ, सयुक्त, व्यापृत, फैला हुआ, अवशिष्ट, बाकी (पु०) योग का अभ्यास किया हुआ योगी।

युक्तकारी–(सं०वि०) ठीक काम करनेवाला।

युक्तदण्ड–(स०पु०) ठीक सजा।

युक्तरूप–(स०अव्य०) ठीक।

युक्ता–(स० स्त्री०) एक वृक्ष का नाम।

युक्ति–(स०स्त्री०) न्याय, नीति, उपाय, ढग, चातुरी, तर्क, अनुमान, रीति, प्रथा, कारण, हेतु, नाटक का एक अलकार जिसमें अर्थयुक्त वाक्य का निश्चय होता है, केशव के अनुसार स्वभावोक्ति।

युक्तिकर–(स० पु०) वह जो तर्क के अनुसार ठीक हो।

युक्तिज्ञ–(स०अव्य) ठीक तर्क करनेवाला।

युक्तियुक्त–(स० अव्य०) उपयुक्त तर्क के अनुसार।

युक्तिशास्त्र–(स०नपु०) प्रमाण शास्त्र।

युग–(स० नपु०) युग्म, जोड़ा, जुआ, ऋद्धि और सिद्धि नामक दो औषधियां, समय, काल चार हाथ का मान, पासे के खेल की गोटिया, पुरुष, पीढ़ी, पासे के खेल मे दो गोटियों का एक घर में बैठना, पुराण के अनुसार काल का वह दीर्घ परिमाण जो सख्या मे चार माना गया है यथा-सत्य, द्वापर, त्रेता और कलियुग।

युगयुग–(स०अव्य०) अनन्त काल तक।

युगकीलक–(स० नपुं०) बम या जुए के छेद में डालने का डडा।

युगन्धर–(स०पु०) गाड़ी का बम।

युगक्षय–(स०पु०) युग का नाश।

युगति–(हि०स्त्री०) देखो युक्ति।

युगप–(स० पु०) गन्धर्व।

युगपत्–(स० अव्य०) एक ही समय में

युगबाहु–(स० वि०) जिसके हाथ बहुत लबे हों।

युगम–(हि०पुं०) देखो युग्म।

युगल–(स०पु०) युग्म, जोड़ा।

युगादि–(स०पु०) सृष्टि का आरम्भ।

युगाद्या–(स० स्त्री०) वह तिथि जिसमें कोई युग आरम्भ हुआ था, यथा-वैशाख शुक्ला तृतीया में सतयुग, कार्तिक शुक्ला नवमी को त्रेता, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को द्वापर तथा पौष मास की पूर्णिमा को कलियुग का आरम्भ माना जाता है।

युगाध्यक्ष-(स०पुं०) प्रजापति, शिव।
युगान्त-(स० पुं०) युग का अन्तिम समय, प्रलय।
युगान्तक-(स०पु०) प्रलय काल।
युगान्तर-(सं०नपु०) दूसरा युग, दूसरा ज़माना।
युग्म-(स० पु०) युगल, द्वन्द्व, जोड़ा, युग, मिथुन राशि।
युग्मक-(स० वि०) युग्म, जोड़ा।
युग्मकण्टक-(स०स्त्री०) बेर का वृक्ष।
युग्मज-(स०पु०) जुड़वा लड़के।
युग्मधर्म-(स०पु०) मिलनशील, मैथुन।
युग्मपत्र-(स०नपु०) भोजपत्र का वृक्ष।
युग्मपत्रिका-(सं०स्त्री०) शीशम का पेड़।
युग्मपत्र-(स० पुं०) कचनार का वृक्ष।
युग्मविपुला-(स० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
युग्यवाह-(सं० पुं०) गाड़ी हाकने वाला।
युज्य-(स०वि०) सयुक्त, मिला हुआ।
युञ्जान-(स० पु०) सारथी विप्र।
युत-(स०पु०) चार हाथ की नाप (वि०) युक्त, सहित, मिलित मिला हुआ।
युतक-(स०नपुं०) सशय, सन्देह, अचल, दामन, मैत्री करण।
युति-(स०स्त्री०) योग, मिलन।
युत्कार-(स० वि०) लड़ाई करने वाला।
युद्ध-(स०नपु०) रण, समर, सग्राम, लड़ाई।
युद्धक-(स०नपु०) युद्ध, सग्राम।
युद्धकारी-(स०त्रि०) समर करने वाला।
युद्धकीत-(स० पु०) शकराचार्य के एक शिष्य का नाम।
युद्धप्राप्त-(स०पु०) लड़ाई में पकड़ा हुआ।
युद्धभू-(स०स्त्री०) सग्राम के योग्य भूमि।
युद्धमय-(स० वि०) रण सवन्धी।
युद्धमेदिनी-(स०स्त्री०) रणभूमि।
युद्धरङ्ग-(स० पु०) लड़ाई का मैदान।
युद्धविद्या-(स० स्त्री०) लड़ाई की विद्या।
युद्धवीर-(स०पु०) रण करने में निपुण।
युद्धशाली-(सं० वि०) साहसी, वीर।
युद्धसार-(स०पु०) घोड़ा।
युद्धस्थल-(स० नपु०) रणभूमि।
युद्धाध्वन-(स० पु०) युद्ध का मार्ग।
युद्धावसान-(सं० नपुं०) युद्ध का शेष।
युद्धोन्मत्त-(स० त्रि०) युद्ध करने के लिये उतावला।
युद्धोपकरण-(स०नपु०) युद्ध की सामग्री।
युद्धभू-(सं०स्त्री०) लड़ाई का मैदान।
युद्धजित्-(स०पुं०) केकय राजा का पुत्र जो भरत का मामा था।
युधिष्ठिर-(स०पु०) पाचों पाण्डवों में से सबसे बड़े भाई का नाम।
युध्म-(स०पु०) सग्राम युद्ध।
युनिवर्सिटी-(अ०स्त्री०) देखो यूनिवर्सिटी।
युयुक्षमान-(स० वि०) ईश्वर में लीन होने का कामुक।
युयुत्सा-(स० स्त्री०) युद्ध करने की लालसा, विरोध, शत्रुता।
युयुत्सु-(स० वि०) लड़ने की इच्छा करने वाला (पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
युयुधान-(स०पु०)इन्द्र,क्षत्रिय(वि०) योद्धा।
युरेशियन्-(अ०पु०) देखो यूरेशियन्।
युरोप-(अ०पु०) देखो युरोप।
युरोपियन्-(अ० वि०) देखो यूरोपियन्।
युवक-(स०पु०) सोलह वर्ष से पैंतीस वर्ष के वय का मनुष्य, जवान।
युवगन्ड-(स०पु०) मु हासा।
युवति, युवती-(स० स्त्री०) प्राप्तयौवना, जवान औरत।
युवनाश्व-(स०पु०) सूर्यवंशी एक राजा जो प्रसेनजित् के औरस गौरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
युवपलित-(स० वि०) जवानी में जिसके बाल पक गये हों।
युवराई-(हि० स्त्री०) युवराज का पद।
युवराज-(स०पु०) राजा का वह राजकुमार जो राज्य का उत्तराधिकारी होता है।
युवराजत्व-(स० नपु०) युवराज का भाव या धर्म।
युवराजी-(हिं०स्त्री०) युवराज का पद।
युवा-(हि० वि०) जवान, युवक।
युवान पिड़िका-)(स०स्त्री०) मुहाँसा।
यूं-(हिं० अव्य०) यों, इस प्रकार से।
यूक, यूका-(स० पु० स्त्री०) बालों में पड़ने वाला। कीड़ा, जुवा, ढील।
यूकाण्ड-(स०पु०) चीलर, लीख।
यूत-(स०पु०) मिश्रण, मिलावट।
यूथ-(स०नपु०) एक ही जाति के अनेक जीवों का समूह,झुंड, दल, सेना,फौज।
यूथनाथ-(स०पु०) सेनापति, सरदार।
यूथपति-(स० पु०) सेना नायक।
यूथहृत-(स०त्रि०)अपने दल से अलग।
यूथिका-(सं० स्त्री०) पाठा, जूही नामक पुष्प।
यूथिकापत्र-(स०पुं०) तालीश पत्र।
यून-(स०नपु०) रस्सी, डोरी।
यूनाइटेड्-(अ०वि०) सयुक्त, मिला हुआ।
यूनान-(हिं० पु०) एशिया के सबसे पास का यूरोप का प्रदेश जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, शिल्पकला, साहित्य और दर्शन के लिये प्रसिद्ध था।
यूनानी-(हि०वि०) यूनान देशका, (स्त्री०) यूनान देश की भाषा, यूनान देश का निवासी, यूनान देश की चिकित्सा प्रणाली, हकीमी।
यूनिवर्सिटी-(अ० स्त्री०) वह सस्था जो लोगों को सब प्रकार की उच्च कोटि की शिक्षा देती, परिक्षायें लेती और उपाधिया देती है।
यूप-(स०पु०) यज्ञ में वह खम्भा जिसमें बलि का पशु बाधा जाता है।
यूपक-(स० पुं०) पाकर का वृक्ष।
यूपदारु-(सं०नपु०) गूलर की लकड़ी।
यूपद्रु-(स०पुं०) खैर का वृक्ष।
यूपध्वज-(स०पु०) यज्ञ।
यूपवाह-(स० पुं०) यूप को ढोने वाला।
यूपा-(हि०पुं०) द्यूत, जूआ।
यूरप-(अ०पु०) देखो यूरोप।
यूराल-(यु० पु०) युरोप तथा एशिया के बीच का एक बड़ा पर्वत।
यूरेशियन्-(अ० पु०) वह जिसके माता पिता में से एक यूरोप का तथा दूसरा एशिया वासी हो।
यूरोप-(अ०पु०) एक महाद्वीप का नाम।

यूरोपियन–(अं० पु०) यूरोप सम्बन्धी, यूरोप महाद्वीप का निवासी ।
यूरोपीय–(हिं०वि०) यूरोप सम्बन्धी ।
यूष–(सं० पु०) मूंग आदि का जूस ।
यूह–(हिं०पु०) यूथ, झुण्ड, समूह ।
ये–(हिं० सर्व०) 'यह' का बहुवचन का रूप, यह सब ।
येई–(हिं० सर्व०) देखो यही ।
येऊ–हिं०सर्व०) यह भी ।
येतो–(हिं० वि०) देखो एतो ।
येहू–(हिं०अव्य०) यह भी ।
यों–(हिं०अव्य०) इस तरह, इस प्रकार से ।
योंही–(हिं०अव्य०) ऐसे ही, इसी प्रकार से, व्यर्थ ही, विना काम के, विना किसी विशेष प्रयोजन के, केवल मन की प्रवृत्ति से ।
योग–(सं० पु०) सयोग, मेल, उपाय, तदबीर, युक्ति, प्रेम, सगति, ध्यान, गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़, एक प्रकार का छन्द, तप और ध्यान, वैराग्य, मेलमिलाप, सबध, सद्भाव, साम, दाम, दण्ड भेद ये चार उपाय, धन प्राप्त करना और बढ़ाना, औषधि, छल, धोखा, फायदा, विश्वासघाती, शुभ अवसर, दूत, चतुराई, परिणाम, नतीजा, बैलगाड़ी, नाम, मुक्ति या मोक्ष का उपाय, प्रयोग, नियम, चित्त की चचलता को रोकना, षड् दर्शनों में से एक, फलित ज्योतिष के अनुसार वह विशिष्ट काल जो सूर्य और चन्द्रमा के कुछ विशिष्ट स्थानो में आने के कारण होते हैं, ये सख्या में सत्ताईस हैं ।
योगकन्या–(स०स्त्री०) यशोदा के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या जिसको कस ने मार डाला था ।
योगक्षेम–(स० नपुं०) जो वस्तु अपने पास न हो उसको प्राप्त करना और जो मिल चुकी हो उसकी रक्षा करना, जीवन निर्वाह, कुशल मगल, लाभ, मुनाफा, राष्ट्र का अच्छा प्रबंध ।
योगचर–(स०पु०) हनुमान ।
योगजफल–(स० पु०) दो या अधिक अंकों का जोड़ ।
योगतत्त्व–(स० नपु०) एक उपनिषद् का नाम ।
योगतल्प–(स०पु०) योगनिद्रा ।
योगतारा–(स०स्त्री०) एक दूसरे में मिले हुए तारे ।
योगदर्शन–(स०पु०) महर्षि पातञ्जलि कृत योगसूत्र ।
योगदा–आसाम की एक नदी ।
योगदान–(स०नपुं०) योग की दीक्षा ।
योगनाथ–(स०पु०) शिव, महादेव ।
योगनिद्रा–(स०स्त्री०) विष्णु की युग के अन्त की निद्रा, योगरूप निद्रा, निद्रारूपी दुर्गा ।
योगनिलय–(स०पु०) शिव, महादेव ।
योगपति–(स०पु०) शिव,महादेव, विष्णु ।
योगपथ–(स०नपु०) योगमार्ग ।
योगपारङ्ग–(स० पु०) पूर्ण योगी ।
योगपीठ–(स० नपु०) देवताओं का योगासन ।
योगप्राप्त–(स०वि०) योग से पाया हुआ ।
योगफल–(स० पु०) दो या अधिक सख्याओं का जोड़ ।
योगबल–स०पु०) योग की साधना से प्राप्त बल, तपोबल ।
योगभावना–(स०स्त्री०) योग की चिन्ता, बीज गणित के अनुसार अक प्रकरण का भेद ।
योगभ्रष्ट–(सं० वि०) जिसकी योग की साधना पूरी न हुई हो ।
योगमय–(सं० वि०) योगस्वरूप (पुं०) विष्णु ।
योग माता–(स०स्त्री०) दुर्गा ।
योगमाया–(स० स्त्री०) विष्णुमाया, भगवती, वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी जिसको कस ने मार डाला था ।
योगमूर्तिधर–(स०पु०) शिव, महादेव ।
योगयात्रा–(स० स्त्री०) यात्रा के लिये शुभ मुहूर्त ।
योगयुक्त–(स०वि०) योग से युक्त ।
योगयोगी–(स० त्रि०) योग के आसन पर बैठा हुआ योगी ।
योगरङ्ग–(सं०पु०) नारगी ।
योगरत्न–(स०नपु०) जादूगरी से तैयार किया हुआ रत्न ।
योगरथ–(स० पु०) योग की प्राप्ति का साधन ।
योगरूढि–(सं०स्त्री०) दो शब्दो के योग से बना हुआ वह शब्द जिसका विशेष अर्थ होता है, यथा 'मण्डप' शब्द का अर्थ "माड़ पीने वाला" नही होता, परन्तु 'गृह' का बोधक है ।
योगवह–(स०वि०) मिलावट से तैयार किया हुआ ।
योगवासिष्ठ–(स०पु०) देवर्षि वसिष्ठ का बनाया हुआ एक ग्रन्थ जिसमें वेदान्त तत्व का वर्णन है ।
योगवाही–(स०स्त्री०)पारद,पारा,सज्जीखार
योगविद्–(स०पुं०) महादेव, बाजीगर ।
योगशक्ति–(स०स्त्री०) तपोबल ।
योगशब्द–(स०पु०) वह यौगिक शब्द जो योगरूढि न हो परन्तु धातु के अर्थ का बोधक हो ।
योग शास्त्र–(स० नपु०) पातञ्जलि शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें चित्तवृत्ति के रोकने के उपाय बतलाये गये हैं ।
योग शिक्षा–(सं०स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम, योगाभ्यास ।
योग सार–(स०पु०) वह उपाय जिससे मनुष्य सदा के लिये रोगमुक्त हो जाय ।
योग सिद्ध–(स०पु०) वह जिसने योग की सिद्धि प्राप्त कर ली हो ।
योग सूत्र–(स० नपु०) महर्षि पातञ्जलि के बनाये योग सबधी सूत्रों का सग्रह ।
योगाकर्षण (स० नपु०) वह आकर्षण शक्ति जिसके कारण परमाणु आपस में मिले रहते हैं अलग नहीं होते ।
योगागम–(स० पु०) योगशास्त्र ।
योगाङ्ग–(स०नपु०)पातञ्जलि के अनुसार योग के आठ अङ्ग यथा–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।

योगाचार-(सं० पु०) योग का आचरण।
योगाचार्य-(सं०पु०) इन्द्रजाल शिक्षक।
योगाञ्जन-(सं०नपु०) सिद्धाञ्जन, वह अञ्जन जिसके लगाने से पृथ्वी के भीतर की वस्तु देख पड़ती है।
योगात्मा-(सं०पु०) योगी।
योगानन्द-(सं०पु०) वह जिसको योगावलम्बन से आनन्द हो।
योगानुशासन-(सं०नपु०) योगशास्त्र।
योगान्तर-(सं०नपु०) भिन्न भिन्न वस्तुओं का संयोग।
योगान्तराय-(सं०नपु०) योग में विघ्न डालने वाली बातें।
योगाभ्यास-(सं०पु०) योग का साधन।
योगाभ्यासी-(सं० पु०) योग की साधना करने वाला।
योगासन-(सं०नपु०) जिस आसन पर बैठकर योगाभ्यास किया जाता है, योग के बत्तीस प्रकार के आसन।
योगित-(सं० वि०) जो मन्त्र आदि की सहायता से वश में कर लिया गया हो।
योगित्व-(सं०पु०)योगी का भाव या धर्म
योगिनी-(सं० स्त्री०) योगाभ्यासिनी, रणपिशाचिनी, योगमाया, देवी, काली की एक सहचरी का नाम, आषाढ कृष्ण एकादशी,आवरण देवता,कालिका पुराण में चौंसठ योगनियों का नाम लिखा है।
योगिनी चक्र-(सं०नपु०) तान्त्रिकों का वह चक्र जिससे वे योगिनियों का साधन करते हैं।
योगिया-(हिं०पु०)सपूर्ण जाति का एकराग।
योगिराज-(सं०पु०) बहुत बड़ा योगी।
योगी-(सं०पु०) शिव,महादेव,आत्मज्ञानी।
योगीन्द्र-(सं० पु०) योगीश्वर, बहुत बड़ा योगी।
योगीनाथ-(सं० पु०) शिव, महादेव।
योगीश-(सं० पु०) याज्ञवल्क्य ऋषि का एक नाम, योगीन्द्र।
योगीश्वर-(सं०पु०) देखो योगीश।
योगीश्वरी-(सं०स्त्री०) दुर्गा।
योगेन्द्र-(सं०पु०) योगियों में श्रेष्ठ।
योगेश-(सं०पु०) याज्ञवल्क्य मुनि।
योगेश्वर-(सं०पु०) शिव, श्रीकृष्ण, बहुत बड़ा योगी।
योगेश्वरी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, नागदौना।
योगैश्वर्य-(सं०नपु०) योग का ऐश्वर्य।
योग्य-(सं०वि०) प्रवीण, चालाक, श्रेष्ठ, उपयुक्त, आदरणीय, उचित, सुन्दर, उपाय लगाने वाला, मुनासिब, ठीक।
योग्यता-(सं० स्त्री०) क्षमता, सामर्थ्य, बड़ाई, अनुकूलता, गुण, बुद्धिमानी, उपयुक्तता।
योग्यत्व-(सं० नपु०) योग्यता, प्रवीणता।
योग्या-(सं०स्त्री०)सुश्रुत के अनुसार चीर फाड़ का अभ्यास, युवती,जवान स्त्री।
योजक-(सं०वि०) संयोजकारक,मिलाने वाला, (पु०) भूडमरुमध्य।
योजन-(सं०नपु०) एक में मिलाने की क्रिया या भाव, योग, परमात्मा,संयोग, मिलान, चार कोस की दूरी, लीलावती के अनुसार बत्तीस हज़ार हाथ की दूरी,
योजनगन्धा-(सं० स्त्री०) व्यास की माता का नाम, सीता, कस्तूरी।
योजनवल्ली-(सं० स्त्री०) मजीठ।
योजना-(सं०स्त्री०) किसी काम में लगाने की क्रिया या भाव, जोड़, मिलान, स्थिति, घटना, प्रयोग, व्यवस्था, रचना, बनावट, आयोजन, नियुक्ति, व्यवहार।
योजित-(सं०वि०) रचा हुआ, बनाया हुआ, नियमबद्ध किया हुआ, मिलाया हुआ।
योज्य-(सं०वि०) व्यवहार करने योग्य, (पु०) जोड़ी जाने वाली सख्यायें।
योत्र-(सं० नपु०) वह बधन जो जुए को बैलों की गरदन में जोड़ता है,जोत
योद्धा-(हिं०पु०) युद्ध करनेवाला सिपाही।
योधन-(सं०नपु०) युद्ध की सामग्री।
योधा-(हिं०पुं०) देखो योद्धा।
योध्य-(सं०वि०) युद्ध करने योग्य।
योनि-(सं०पु०स्त्री०) आकर, खान, जल, उत्पादक, कारण, प्राणियों का उत्पत्ति स्थान, स्त्रियों की जननेन्द्रिय, भग, शरीर, देह, पुराण के अनुसार चौरासी लाख योनि हैं जिसके अण्डज, स्वेदज, उद्भिज और जरायुज ये चार भेद हैं।
योनिज-(सं० पु०) जरायुज, जिसकी उत्पत्ति योनि से हो।
योनिदेवता-(सं०स्त्री०)पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र
योनियुक्त-(सं०वि०) मोक्ष प्राप्त।
योनिसङ्कर-(सं०पु०) वर्णसंकर, दोगला।
योम-(अ०पु०) दिन, रोज़, तारीख।
योरोप,योरोपियन-देखो यूरोप,युरोपियन
योषणा-(सं०स्त्री०) असती स्त्री।
योषा-(सं० स्त्री०) नारी, स्त्री।
योषित्प्रिया-(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।
योषिता-(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री।
यों-(हिं०अव्य०) देखो यो।
यो-(हिं०सर्व०) यह।
यौक्तिक-(सं० वि०) जो युक्ति के अनुसार ठीक हो।
यौगपद, यौगपद्य-(सं०नपु०,समकालीन
यौगिक-(सं०वि०) मिश्रित, मिला हुआ, प्रकृति प्रत्ययादि से बना हुआ शब्द, वह शब्द जो दो शब्दो से मिलकर बना हो,अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द।
यौतक-(सं०स्त्री०) यौतुक, दहेज।
यौतुक-(सं० नपु०) विवाह काल में वर और कन्या को दिया हुआ धन।
यौध-(सं०वि०) युद्धप्रिय, योद्धा।
यौधेय-(सं०पु०) योद्धा,युधिष्ठिर का पुत्र
यौन-(सं०वि०) योनि सम्बन्धी।
यौवत-(सं०नपु०) वह नाच जिसमें बहुत सी नटिया मिलकर नाचती हैं।
यौवन-(सं०नपु०) युवा होने का भाव, जवानी जोवन।
यौवनकण्टक-(सं०पु०) मुहासा।
यौवनमत्ता (सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।
यौवराज्य-(सं०नपु०) युवराज का पद।
यौवराज्याभिषेक-(सं० पु०) युवराज बनाये जाने के समय का अभिषेक और उत्सव।

र

र—हिन्दी वर्णमाला का सत्ताइसवा व्यंजन वर्ण इसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्धा के साथ कुछ स्पर्श करने से होता है यह स्पर्श वर्ण और उष्म वर्ण के मध्य का वर्ण है।

र–(स०पु०) अग्नि, आँच, ताप, कामाग्नि, जलना, झुलसना, सितार का एक बोल (वि०) तीक्ष्ण, तीखा।

रंक–(हिं०वि०) देखो रङ्क, धनहीन, गरीब

रंग–(हिं० पु०) देखो रङ्ग, राग, नृत्य, रणक्षेत्र।

रंग–(हिं० पु०) दृश्य पदार्थ का वह गुण जो केवल आँखों से जाना जाता है यथा, लाल, काला, पीला, रगने के लिये व्यवहार में आने वाला पदार्थ, वर्ण, चेहरे की रगत, मन की तरग, आनन्द, मजा, मौज, भाति, प्रकार, तरह, चालढाल, तर्ज, तरीका, प्रेम, प्रसन्नता, दया, कृपा, अनुराग, कोई विचित्र व्यापार, दृश्य, युवावस्था, जवानी, प्रभाव, शोभा, सुन्दरता, महत्व का प्रभाव, आनन्द का उत्सव, क्रीड़ा, कौतुक, युद्ध, लड़ाई, **चेहरे का रग उतर जाना**–चेहरे में कान्ति न रह जाना, **रंग निखरना**–चेहरा चमकीला हो जाना, **रंग बदलना**–गुस्सा होना, **रंग टपकना**–जवानी उमड़ना, **रग जमना**–प्रभाव पड़ना, **रग लाना**–प्रभाव दिखलाना, **रंगमे भंग होना**–आनन्द में विघ्न पड़ना, **रग मचाना**–युद्ध करना, **रग जमना**–मज़ा आना, **रंग मचाना**–धूमधाम मचाना, **रंग रचना**–उत्सव होना, **रगढग**–स्थिति, अवस्था, **रंग मारना**–बाज़ी जीतना।

रंगई–(हिं० पु०) कपड़ा छापने वालों की एक जाति।

रगक्षेत्र–(स०पु०) देखो रङ्गभूमि।

रगत–(हिं० स्त्री०) आनन्द, मज़ा, दशा, हालत।

रंगतरा–(हिं०पु०) एक प्रकार की बड़ी मीठी नारगी, सगतरा।

रगन–(हिं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी मजबूत होती है।

रंगना–(हिं० क्रि०) किसी वस्तु पर रग चढाना, किसी को अपने अनुकूल करना, किसी पर अपना प्रभाव डालना, अपने प्रेम में किसी को फँसाना, किसी के प्रेम में लिप्त होना।

रंग बदल–(हिं० पु०) हल्दी।

रंगबिरग, रंगबिरंगा–(हिं० वि०) कई रगोंका, तरह तरह का, अनेक प्रकार का

रंगभरिया–(हिं०वि०) रगसाज़, चित्रकार

रंगभवन–(हिं० पु०) देखो रगमहल।

रंगभूमि–(हिं० स्त्री०) देखो रङ्गभूमि।

रंगमहल–(हिं० पु०) भोग विलास का स्थान।

रंगमार–(हिं०पु०) ताश का एक खेल।

रगरली–(हिं० स्त्री०) आमोद प्रमोद, आनन्द, मौज।

रंगरस–(हिं० पु०) आनन्द मगल।

रंगरसिया–(हिं० पु०) भोग विलास करने वाला मनुष्य, विलासी मनुष्य।

रगराता–(हिं०वि०) अनुराग पूर्ण।

रंगरूट–(हिं० पुं०–अग्रेजी रिक्रूट का अपभ्रंश) वह सिपाही जो पुलीस या सेना में नया भरती हुआ हो, वह मनुष्य जो किसी काम के सीखने में लगा हो।

रंगरेज–(हिं० पु०) कपड़ा रगने का काम करने वाला।

रंगरेली–(हिं०स्त्री०) देखो रगरली।

रंगवाई–(हिं०स्त्री०) रगने का काम।

रंगवाना–(हिं० क्रि०) दूसरे से रगने का काम कराना।

रंगशाला–(हिं०स्त्री०) देखो रङ्गशाला, नाटक घर।

रंगसाज़–(फ़ा० पु०) वह जो लकड़ी के सामान या दीवार पर रग चढाता है, वह जो इस काम के लिये रग बनाता हो।

रंगसाज़ी–(फ़ा०स्त्री०) रग बनाने का काम

रंगाई–(हिं०स्त्री०) रगने का काम, रगने की क्रिया या मजदूरी, रगने का भाव।

रगाना–(हिं० क्रि०) रगने का काम दूसरे से कराना।

रंगावट–(हिं० स्त्री०) रगने का भाव, रगाई।

रंगिया–(हिं० पु०) रगरेज, रगसाज।

रगी–(हिं० वि०) आनन्दी, मौजी।

रगीन–(फ़ा० वि०) जिस पर कोई रग चढा हो, रगा हुआ, जिसमे कुछ अनोखापन हो, मजेदार, आमोदप्रिय, विलासपूर्ण।

रंगीनी–(फ़ा० स्त्री०) सजावट, शृंगार, रसिकता।

रगीरेटा–(हिं० पु०) एक प्रकार का जगली वृक्ष।

रगीला–(हिं० वि०) आनन्दी, मनमौजी, प्रेमी, अनुरागी, सुन्दर, खूबसूरत, मनोहर

रगीलीटोड़ी–(हिं०स्त्री०) संपूर्ण जाति की एक रागिणी।

रगैया–(हिं०पु०) रगने वाला।

रच–(हिं०वि०) अल्प, थोड़ा।

रज–(फ़ा० पु०) शोक, खेद, दुःख, अफ़सोस।

रंजक–(हिं० वि०) देखो रञ्जक, प्रसन्न करने वाला।

रजक–(हिं०स्त्री०) बत्ती लगाने के लिये बदूक की प्याली में रक्खी जाने वाली थोड़ी सी बारूद, किसी को उत्तेजित करने के लिये कही हुई बात।

रंजन–(हिं०पु०) देखो रञ्जन।

रजना–(हिं० क्रि०) आनन्दित करना, प्रसन्न करना, रगना, स्मरण करना, भजना।

रंजित–(हिं०वि०) देखो रञ्जित।

रंजिश–(फ़ा०स्त्री०) रज होने का भाव, वैमनस्य, शत्रुता, अनबन, मन मुटाव।

रंजीदगी–(फा०स्त्री०) रजीदा होने का भाव, रंजिश।
रंजीदा–(फा० वि०) जिसको रंज हो, दुःखित, अप्रसन्न, नाराज़।
रंडापा–(हि०पु०) वैधव्य, वेवापन, विधवा होने की दशा।
रंडी–(हि० स्त्री०) नाचने गाने वाली तथा धन लेकर मैथुन कराने वाली स्त्री, वेश्या।
रंडीबाज़–(फा० पु०) वेश्यागामी, वह जो रंडियों के साथ संभोग करता हो।
रंडीबाज़ी–(फा० स्त्री०) वेश्या गमन।
रंडुआ, रंडुवा–(हिं० पु०) वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो।
रंत–(हिं०वि०) रत, अनुरक्त।
रंद–(हि०पु०) मकान की दीवारों में का वह छिद्र जो प्रकाश और हवा आने के लिये रक्खा जाता है, रौशनदान, किले की दीवारों में का वह मोखा जिसमें से बाहर की ओर तोप या बंदूक चलाई जाती है।
रंदना–(हि०क्रि०) लकड़ी की सतह को रंदे से छील कर चिकना करना।
रंदा–(हि० पु०) बढई का वह औज़ार जिससे वह लकडी की सतह को छील कर चिकनी करता है।
रंधन–(हि० पु०) देखो रन्धन, रसोई बनाना।
रंध्र–(हिं०पु०) देखो रन्ध्र, छिद्र।
रंबा–(हि० पु०) देखो रम्भा, जुलाहों का एक औजार।
रंभ–(हिं० पुं०) देखो रम्भ, बांस।
रंभा–(हि०पु०) देखो रम्भा, केला।
रंभाना–(हि०क्रि०)गाय का शब्द करना, गाय का बोलना।
रॅहचटा–(हि० पु०) किसी मनोरथ की सिद्धि के लिये लालसा, लालच।
रंहस्–(स०नपु०)वेग, गति, विष्णु, शिव।
रअय्यत–(अ० स्त्री०) प्रजा, रिआया, काश्तकार।
रइअत–(हि०स्त्री०) देखो रअय्यत।
रइको–(हिं० क्रि० वि०) कुछ भी, थोड़ा भी, जरा भी।
रइनि–(हिं० स्त्री०) रजनी, रात्रि, रात।
रई–(हि०स्त्री०) दही मथने की लकड़ी, मथानी, गेंहू का मोटा दरदरा आटा, सूजी, चूर्णमात्र (वि०) युक्त, मिली हुई, डूबी हुई, पगी हुई, अनुरक्त।
रईस–(अ०पु०) वह जिसके पास रियासत हो, भूस्वामी, ताल्लुकेदार, प्रतिष्ठित और धनवान् पुरुष, अमीर, धनी।
रउताई–(हिं०स्त्री०) स्वामी या मालिक होने का भाव, स्वामित्व।
रउरे (हि०सर्व०)मध्यम पुरुष का आदर सूचक शब्द, आप, जनाब।
रऐयत–(अ०स्त्री०) प्रजा, रिआया।
रकछ–(हिं० पु०) पत्तों की बनी हुई पकौड़ी।
रकत–(हि० पु०) देखो रक्त, रुधिर, लोहू (वि०) लाल रंग का।
रकतकन्द–(हिं० पु०) देखो रक्तकन्द।
रकताक–(हिं० पु०) देखो रक्ताङ्क।
रकलाक–(हिं० पुं०) कुकुम, केसर, लाल चन्दन।
रक़बा–(अ० पु०) क्षेत्र फल।
रकबाहा–(हि०पु०) घोड़ों का एक भेद।
रकमजनी–(हि० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा।
रक़म–(अ० स्त्री०) लिखने की क्रिया या भाव, नियत संख्या का धन, सम्पत्ति, मोहर, छाप, धनवान्, मालदार, प्रकार, तरह, धूर्त, चालाक, गहना, जेवर, प्रकार, तरह, लगान की दर सुन्दर स्त्री।
रकमी–(अ० पु०) वह काश्तकार जिसके साथ कोई खास रिआयत की गई हो।
रकाब–(फ़ा० स्त्री०) घोडे की जीन का पावदान जिस पर सवार पैर रखता है, रकाब में पैर रखना–चलने को तैयार हो जाना।
रकाबदार–(फ़ा० पु०) मुरब्बा मिठाई आदि बनाने वाला, हलवाई, साईस, खानसामा।
रकाबा–(फ़ा०पु०) बड़ी थाली, परात।
रकाबी–(फ़ा० स्त्री०) छोटी छिछली थाली, तश्तरी।
रकार (स० पु०) "र" वर्ण का बोधक वर्ण।
रक़ीक़–(अ० वि०) कोमल, मुलायम।
रक़ीब–(अ० पु०) किसी प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।
रक्खना–(हिं० क्रि०) देखो रखना।
रक्त–(स०नपु०) कुकुम, केसर, ताम्रा, लाल कमल, सिन्दूर, सिंगरिफ, शरीर के सात धातुओं में से एक जो लाल रंग का होता है और शरीर की नसों में से चलता रहता है, रुधिर, खून (वि०) लाल रंग का, सुर्ख, अनुरक्त, रंजित, रंगा हुआ, ऐयाश।
रक्तक–(स० पु०) गुलदुपहरिया का पौधा, लाल कपड़ा, लाल रंग का घोड़ा, केसर, कुकुम।
रक्तकाष्ठ–(स० पु०) कोकिल, कोयल (वि०)मीठे स्वर का, (पु०) बैंगन, भंटा।
रक्तकदली–(स०स्त्री०) चम्पा, केला।
रक्तकन्द–(स० पुं०) विद्रुम, मूंगा, प्याज़, रतालू।
रक्तकन्दल–(स०पु०) विद्रुम, मूंगा।
रक्तकमल–(स० नपु०) लाल रंग का कमल।
रक्तकम्बल–(स० नपु०) लाल कमल, कुई।
रक्तकाञ्चन–(स०पु०) कचनार का वृक्ष।
रक्तकान्ता–(स० स्त्री०) लाल गदहपूरना।
रक्तकाश–(स० पुं०) एक रोग जिसमें श्वास नाली और फुस्फुस में से सफेद खून निकलता है।
रक्तकाष्ठ–(स० नपु०) लाल रंग की लकड़ी, पतंग की लकड़ी।
रक्तकुमुद–(स० नपु०) लाल कोई का फूल।
रक्तकुरण्डक–(स०पु०)लाल कटसरैया।
रक्तकुष्ठ–(स०पुं०) विसर्प नामक रोग।
रक्तकुसुम–(स०पु०) कचनार, मदार।

रक्तकुसुमा-(सं०स्त्री०) अनार का वृक्ष।
रक्तकुमिला-(सं०स्त्री०) लाक्षा, लाह।
रक्तकेशर-(सं०पुं०) फरहद का पेड़।
रक्तकेशा-(सं०वि०) जिसके बाल लाल रंग के हों।
रक्तकैरव-(सं० नपुं०) लाल कुमुद।
रक्तकोप-(सं०पुं०) रुधिर का विकार।
रक्तक्षय-(सं० पुं०) रुधिर का स्राव।
रक्तगन्धक-(सं० नपुं०) बोल नामक गन्धद्रव्य।
रक्तगन्धा-(सं० स्त्री०) अश्वगन्धा, असगन्ध।
रक्तगर्भा-(सं०स्त्री०) मेंहदी का पेड़।
रक्तग्रीव-(सं० पुं०) राक्षस।
रक्तचञ्चु-(सं० पुं०) शुक, तोता।
रक्तचन्दन-(सं० पुं०) लाल चन्दन।
रक्तचूर्ण-(सं० नपुं०) सिन्दूर, सेंदुर।
रक्तज-(सं० वि०) रक्त से उत्पन्न होने वाला।
रक्तजिह्व-(सं०पुं०) सिंह, शेर (वि०) लाल जीभ वाला।
रक्तता-(सं० स्त्री०) लालिमा, ललाई।
रक्ततुण्ड-(सं०पुं०) शुक, तोता (वि०) लाल मुख वाला।
रक्ततुण्डक-(सं०पुं०) सीसा नामक धातु।
रक्तदन्तिका-(सं०स्त्री०) चण्डिका देवी।
रक्तदला-(सं०स्त्री०) नलिका नाम का गन्ध द्रव्य।
रक्तदूषण-(सं० वि०) रुधिर को दूषित करने वाला।
रक्तदृश्-(सं० पुं०) कपोत, कबूतर।
रक्तधरा-(सं० स्त्री०) मांस के भीतर की झिल्ली जिसमें रुधिर रहता है।
रक्तधातु-(सं० पुं०) गैरिक, गेरू।
रक्तनयन-(सं० पुं० नपुं०) कबूतर, चकोर।
रक्तनासिक-(सं० पुं०) उल्लू पक्षी।
रक्तनील-(सं० पुं०) एक प्रकार का जहरीला बिच्छू।
रक्तनेत्र-(सं० पुं०) सारस, कबूतर, (वि०) लाल आँखों वाला।
रक्तप-(सं० पुं०) राक्षस (वि०) रुधिर पीने वाला।
रक्तपक्ष-(सं० पुं०) गरुड़।
रक्तपट-(सं० वि०) लाल रंग के वस्त्र पहिरने वाला।
रक्तपत्र-(सं० पुं०) पिण्डालू।
रक्तपत्रिका-(सं० स्त्री०) लाल पत्ता।
रक्तपद्म-(सं० पुं०) लाल कमल।
रक्तपर्ण, रक्तपल्लव-(सं० पुं०) लाल पत्ता।
रक्तपा-(सं० स्त्री०) जोंक, डाइन (वि०) रुधिर पीने वाली।
रक्तपात-(सं० पुं०) रक्तस्राव, रुधिर का बहना, खूनखराबी।
रक्तपाता-(सं० स्त्री०) जोंक।
रक्तपायी-(सं० पुं०) मत्कुण, खटमल, (वि०) रुधिर पीने वाला।
रक्तपाषाण-(सं० पुं०) गेरू, लाल पत्थर।
रक्तपिण्डक-(सं०पुं०) रतालू, अड़हुल का वृक्ष।
रक्तपिटिका-(सं०स्त्री०) लाल फोड़ा।
रक्तपित्त-(सं नपुं०) वह रोग जिसमें मुंह नाक आदि से रुधिर निकलता है।
रक्तपुष्प-(सं० पुं०) करवीर, कनेर, अनार का वृक्ष, गुलदुपहरिया, (नपुं०) लाल फूल।
रक्तपुष्पक-(सं०पुं०) परास का पेड़।
रक्तपुष्पा-(सं० स्त्री०) सेमर का वृक्ष, नागदौना।
रक्तपूय-(सं० नपुं०) लोहू और पीब।
रक्तपूरक-(सं०नपुं०) इमली।
रक्तपोस्त-(सं० पुं०) लाल पोस्ता।
रक्तप्रदर-(सं०पुं०) स्त्रियों की योनि से रुधिर बहने का प्रदर रोग।
रक्तबीज-(सं० पुं०) दाडिम, अनार, शुम्भ और निशुम्भ का एक सेनापति जिसको दुर्गा ने मारा था।
रक्तबीजा-(सं०पुं०) सिन्दुर पुष्पी।
रक्तभव-(सं०नपुं०) मांस।
रक्तमञ्जरी-(सं०स्त्री०) लाल कनेर।
रक्तमण्डल-(सं० पुं०) लाल कमल।
रक्तमस्तक-(सं० पुं०) लाल सिर वाला सारस पक्षी।
रक्तमुख-(सं० पुं०) साठी धान।
रक्तमूला-(सं०स्त्री०) लज्जालू।
रक्तमेह-(सं०पुं०) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें खून के रंग का पेशाब होता है।
रक्तमोक्षण-(सं०नपुं०) रुधिर का स्राव।
रक्तमोचन-(सं०पुं०) शरीर में से रुधिर निकलना।
रक्तयष्टि-(सं० स्त्री०) मजीठ।
रक्तरङ्गा-(सं० स्त्री०) मेंहदी।
रक्तला-(सं० स्त्री०) गुञ्जा, कौवाठोंठी।
रक्तलोचन-(सं० पुं०) कपोत, कबूतर, (वि०) लाल नेत्र वाला।
रक्तवटी-(सं०स्त्री०) मसूरिका, शीतला रोग।
रक्तवर्ण-(सं०पुं०) प्रवाल, मूंगा बीरबहूटी (वि०) लाल रंग का।
रक्तवर्तक-(सं० पुं०) लाल बटेर।
रक्तवर्त्म-(सं०पुं०) कुक्कुर, मुरगा।
रक्तवर्धन-(सं०पुं०) बैंगन (वि०) रुधिर बढ़ाने वाला।
रक्तवल्ली-(सं०स्त्री०) मजीठ।
रक्तवसन-(सं० पुं०) सन्यासी, लाल कपड़ा।
रक्तवारिज-(सं० नपुं०) लाल कमल।
रक्तवासस-(सं० वि०) लाल कपड़ा पहरने वाला।
रक्तवृष्टि-(सं० स्त्री०) आकाश से लाल रंग के जल की वृष्टि।
रक्तशाली-(सं० पुं०) एक प्रकार का लाल रंग का धान।
रक्तशालुक-(सं०पुं०) कमल की जड़।
रक्तशासन-(सं० नपुं०) सिन्दुर।
रक्तशिम्बी-(सं० स्त्री०) लाल सेम।
रक्तशीर्षक-(सं० पुं०) सारस पक्षी।
रक्तशेखर-(सं०पुं०) पुन्नाग।
रक्तश्याम-(सं०वि०) तेज लाल रंग का।
रक्तसरोरुह-(सं०नपुं०) लाल कमल।
रक्तसार-(सं० नपुं०) लाल चन्दन, अमलबेंत।
रक्तस्राव-(सं० पुं०) शरीर के किसी अंग से रुधिर का बहना।

रक्तहंसा-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी।
रक्तहर-(सं०पु०) भल्लातक, भिलावा।
रक्ता-(सं०स्त्री०) लाक्षा, घुमची, बच।
रक्ताकार-(सं०पु०) प्रवाल, मूंगा।
रक्ताक्त-(सं०नपु०) लाल चन्दन।
रक्ताक्ष-(सं०पु०) भैंस, कबूतर, चकोर।
रक्ताङ्ग-(सं० पु०) मंगल ग्रह, प्रवाल, मूंगा खटमल, कुंकुम, केसर।
रक्तातिसार-(सं० पु०) एक प्रकार का रोग जिसमें दस्त के साथ रुधिर निकलता है।
रक्ताधरा-(सं० स्त्री०) किन्नरी।
रक्ताधार-(सं०पु०) चर्म, चमड़ा।
रक्ताब्ज-(सं० नपु०) लाल कमल।
रक्ताभ-(सं० पु०) इन्द्रगोप, वीरबहूटी।
रक्ताम्बर-(सं०नपु०) लाल वस्त्र (पु०) गेरुआ वस्त्र पहने हुआ सन्यासी।
रक्तारुण-(सं० पु०) रुधिर के समान लाल।
रक्तार्क-(सं० पु०) लाल चन्दन।
रक्तालता-(सं० स्त्री०) मजीठ।
रक्तालु-(सं०पु०) रतालू नामक कन्द।
रक्ताश्वारि-(सं० पु०) लाल कनेर का फूल।
रक्तास्राव-(सं० पु०) नाक से लाल लोहू बहना।
रक्तार्श-(सं० नपुं०) खूनी बवासीर।
रक्ति-(सं० स्त्री०) अनुराग, प्रेम, एक रत्ती का परिमाण।
रक्तिका-(सं०स्त्री०) गुंजा, घुघची, रत्ती।
रक्तिमा-(सं० स्त्री०) ललाई, सुर्खी।
रक्तोत्पल-(सं० नपु०) लाल कमल।
रक्तोत्पलाभ-(सं०पु०) लाल रंग।
रक्तोदर-(सं० पु०) रोहू मछली, एक प्रकार का बहुत विषैला बिच्छू।
रक्तोपल-(सं०नपु०) लाल मिट्टी, गेरू।
रक्तौदन-(सं० नपु०) लाल चावल का भात।
रक्ष-(सं०त्रि०) रक्षा करने वाला, रक्षा, लाह, राक्षस, छप्पय का एक भेद।
रक्षईश-(सं०पु०) रावण।
रक्षक-(सं०पु०) रक्षा करने वाला, बचाने वाला, पहरेदार।
रक्षण-(सं० नपुं०) रक्षा करना, पालन पोषण करना।
रक्षणकर्ता-(सं०पु०) रक्षा करने वाला।
रक्षणीय-(सं०वि०) रक्षा करने योग्य।
रक्षन-(हिं० पु०) देखो रक्षण।
रक्षना-(हिं०क्रि०) रक्षा करना।
रक्षपाल-(सं० पु०) रक्षा करने वाला।
रक्षमाण-(सं०वि०) देखो रक्ष्यमाण।
रक्षस-(हिं०पु०) राक्षस, दानव।
रक्षा-(सं०स्त्री०) कष्ट नाश या आपत्ति से बचाना, गोंद, राख, भस्म, अनिष्ट निवारण के लिये हाथ में बांधा हुआ सूत्र।
रक्षागृह-(सं० नपुं०) सूतिकागृह, जच्चाखाना।
रक्षातिक्रम-(सं०पु०) नियमभंग, कायदा कानून तोड़ना।
रक्षापति-(सं० पु०) रक्षापुरुष, नगर वासियों की रक्षा करने वाला।
रक्षापत्र-(सं०पु०) भोजपत्र, सफेद सरसों।
रक्षापुरुष-(सं०पु०) पहरेदार।
रक्षापेक्षक-(सं० पु०) जनानखाने का पहरा देने वाला, नट।
रक्षाप्रदीप (सं० पु०) भूत प्रेत आदि की बाधा से रक्षा करने के लिये जलाया हुआ दीपक।
रक्षाबन्धन-(सं० पु०) श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होने वाला हिन्दुओं का एक त्योहार जिसमें हाथ की कलाई पर रक्षासूत्र बांधा जाता है।
रक्षाभूषण-(सं० नपु०) कवचादि युक्त अलंकार।
रक्षामंगल-(सं०नपु०) वह अनुष्ठान या धार्मिक क्रिया जो भूत प्रेत की बाधा से रक्षित होने के लिये की जाय।
रक्षामणि-(सं० पु०) वह रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से बचने के लिये पहना जाय।
रक्षिक-(सं०पु०) रक्षक, पहरेदार।
रक्षित-(सं० वि०) रक्षा किया हुआ, पाला पोसा हुआ, रक्खा हुआ।
रक्षितव्य-(सं०वि०) रक्षा करने योग्य।
रक्षिता-(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम
रक्षी-(हिं० पु०) राक्षपूजक, देखो रक्षक।
रक्षोगण-(सं०पु०) राक्षसों का समूह।
रक्षोघ्न-(सं०नपु०) हींग, सफेद सरसों, भिलावें का वृक्ष।
रक्षोजननी-(सं०स्त्री०) राक्षस की माता, रात्रि, रात।
रक्षोहन्-(सं०वि०)राक्षस को मारने वाला
रक्ष्य-(सं०वि०) रक्षणीय, रक्षा करने योग्य
रक्खेताऊस-(फ़ा०पु०) एक प्रकार का चक्कर देते हुए नाचना।
रख-(हिं० स्त्री०) पशुओं के चरने की भूमि।
रखटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की ईख।
रखना-(हिं०क्रि०) ठहराना, रक्षा करना, निर्वाह करना, सौंपना, रेहन करना, संग्रह करना, नियुक्त करना, अपने अधिकार में लेना, रोक लेना, आश्रित रखना, डेरा डालना, गर्भ धारण करना, पक्षियों का अण्डा देना, बचाना, सम्भोग करना, उपपत्नी बनाना, मन में धारण करना, चोट पहुँचाना, व्यवहार करना, स्थगित करना मुलतवी करना, ऋणी होना, मुकर्रर करना, सुपुर्द करना।
रखनी-(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिससे विवाह न हुआ हो और यों ही घर में रख ली गई हो, रखेली, सुरैतिन।
रखया-(हिं०वि०) रक्षा करने वाली।
रखवाई-(हिं०स्त्री०) खेतों की रखवाली, रखवाली करने की क्रिया या भाव, रखने की क्रिया या ढंग, रखने की मजदूरी, चौकीदारी।
रखवाना-(हिं० क्रि०) रखने की क्रिया दूसरे से कराना।
रखवार-(हिं०पु०)रखवाला, चौकीदार।
रखवारी-(हिं०स्त्री०) देखो रखवाली।
रखवाला-(हिं०पु०)चौकीदार, पहरेदार।
रखवाली-(हिं० स्त्री०) रक्षा करने की क्रिया या भाव, हिफ़ाजत।

रखाई-(हिं०स्त्री०) देखो रखवाली ।
रखान-(हिं०स्त्री०) चराई की भूमि ।
रखाना-(हिं०क्रि०) रखने का काम दूसरे से कराना, रखवाली करना, नष्ट होने से बचाना ।
रखिया-(हिं०पु०) रखने वाला, गाव के पास का वह वृक्ष जो पूजा के लिये सुरक्षित रहता है ।
रखियाना-(हिं० क्रि०) बरतन को राख से माजना ।
रखी-(हिं० पु०) देखो ऋषि, मुनि ।
रखेली-(हिं० स्त्री०) रखनी, सुरैतिन ।
रखैया-(हिं०पु०) देखो रक्षक ।
रखौंत-(हिं० पुं०) पशुओं के चरने के लिये छोड़ी हुई जमीन ।
रगंड-(हिं० पु०) हाथी का कपोल ।
रग-(फा० स्त्री०) शरीर में की नस या नाड़ी, पत्तों में की नसें, रगरग फड़कना-अति आवेग आना, रगरग में-सम्पूर्ण शरीर में ।
रगड़-(हिं० स्त्री०) रगड़ने की क्रिया या भाव, घर्षण, रगड़ने से उत्पन्न चिह्न, बड़ी मेहनत, भारी श्रम, हुज्जत, झगड़ा ।
रगड़ना-(हिं०क्रि०) घर्षण करना, घसना, पीसना, जल्दी से तथा बड़े परिश्रम से कोई काम करना, अभ्यास करने के लिये कोई काम बारबार करना, स्त्री प्रसङ्ग करना, तकलीफ देना, दिक करना ।
रगड़वाना-(हिं०क्रि०) दूसरे को रगड़ने में प्रवृत्त करना ।
रगड़ा-(हिं० पुं०) रगड़ने की क्रिया या भाव, घर्षण, रगड़, अत्यन्त परिश्रम, वह झगड़ा जो जल्दी से समाप्त न हो ।
रगड़ान-(हिं० स्त्री०) रगड़ने की क्रिया या भाव ।
रगण-(स० पु०) छन्द शास्त्र में तीन वर्णों का समूह जिसमें बिचला वर्ण लघु तथा आदि अन्त के वर्ण गुरु होते हैं ।
रगत-(हिं०पु०) देखो रक्त, रुधिर, खून
रगपट्ठा-(हिं०पु०) शरीर के भीतर के भिन्न भिन्न अश, किसी विषय की सूक्ष्म बातें ।
रगबत-(अ०स्त्री०) इच्छा, चाह, प्रवृत्ति ।
रगर-(हिं० स्त्री०) देखो रगड ।
रगरा-(हिं०पु०) देखो रगडा ।
रगरेशा-(फा० पुं०) पत्तियों की नसें, शरीर के भीतर का अङ्ग प्रत्यङ्ग, किसी विषय की भीतरी सूक्ष्म बातें ।
रगवाना-(हिं० क्रि०) शान्त कराना, चुप कराना ।
रगा-(हिं०पु०) मोर ।
रगाना-(हिं०क्रि०) शात होना या करना
रगी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा अन्न, देखो रगी ।
रगीला-(हिं० पु०) हठी, जिद्दी, दुष्ट ।
रगेद-(हिं० स्त्री०) दौडने या भागने की क्रिया ।
रगेदना-(हिं०क्रि०) भगा देना, खदेडना
रग्गी-(हिं०स्त्री०) अधिक वर्षा के बाद होने वाली धूप ।
रघु-(स० पुं०) सूर्य वंशीय राजा दिलीप के पुत्र जो श्रीरामचन्द्र के प्रपितामह थे।
रघुकुल-(सं०पु०) राजा रघु का वंश ।
रघुनन्दन-(स०पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुनाथ-(स० पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुनायक-(स०पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुपति-(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुराई-(हिं०पुं०) श्रीराचन्द्र ।
रघुराज-(स०पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुवंश-(सं०पु०) महाराज रघु का वंश जिसमें श्रीरामचन्द्र उत्पन्न हुए थे, कालिदास कवि के एक महाकाव्य का नाम ।
रघुवश कुमार-(स०पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुवश तिलक-(स०पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुवशी-(स०वि०) जिसका जन्म रघु के वंश में हुआ हो, उत्तर भारत वासी क्षत्रियों के अन्तर्गत एक जाति ।
रघुवर-(स०पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुवीर-(स०पु०) श्रीरामचन्द्र ।
रघूत्तम-(स० पु०) रघुकुल में श्रेष्ठ, श्रीरामचन्द्र ।
रघूद्वह-(स०पु०) देखो रघूत्तम ।
रङ्क-(स०पु०) कृपण, कजूस, मन्द, सुस्त, धनहीन, गरीब ।
रङ्कुमाली-(स० पु०) एक प्रकार के विद्याधर ।
रङ्ग-(स० नपु०) धातु विशेष रागा, नृत्य, नाच, रगने की वस्तु नाटकघर, सुहागा, वर्ण, रगने की वस्तु, प्रभाव, प्रेम, ढग, अद्भुत व्यापार, शोभा, सौन्दर्य, दशा, स्थिति, आनन्द, मन की तरग, युवावस्था, प्रभाव, चेहरे की रगत, उमग ।
रङ्गकार-(स० पु०) चित्रकार ।
रङ्ग क्षेत्र-(स० नपु०) नाटक घर ।
रङ्ग गृह-(स०नपु०) रङ्ग भूमि ।
रङ्ग चर-(स० पु०) पहलवान ।
रङ्गज-(सं०नपु०) सिन्दूर ।
रङ्ग जीवक-(स० पु०) नाट्यकार, चित्रकार ।
रङ्गण-(स०नपु०) नृत्य, नाच ।
रङ्गज-(सं०पु०) सोहागा ।
रङ्ग दलिका-(स० स्त्री०) नागवेल ।
रङ्गदा-(स० स्त्री०) फिटकरी ।
रङ्ग देवता-(स० स्त्री०) एक कल्पित देवता जो रगभूमि के अधिष्ठाता माने जाते है ।
रङ्ग द्वार-(स० नपु०) प्रवेश द्वार ।
रङ्ग प्रवेश-(स०पु०) अभिनय के लिये किसी पात्र का रगभूमि में प्रवेश करना
रङ्ग भवन-(स०नपु०) रग महल ।
रङ्ग भूति-(सं० स्त्री०) आश्विन मास की पूर्णिमा ।
रङ्ग भूमि-(स० स्त्री०) अखाड़ा ।
रङ्ग मङ्गल-(स० नपु०) रगमच पर मिलकर उत्सव करना ।
रङ्ग मण्डप-(स०नपु०) देखो रगभूमि ।
रङ्ग मध्य-(स०पु०) रङ्ग स्थल ।
रङ्ग मल्ली-(स०स्त्री०) वीणा, बीन ।
रङ्ग महल-(हिं०पु०) दिल्ली का प्रसिद्ध महल जहा मुगल बादशाह आमोद प्रमोद किया करते थे, भोग विलास का स्थान ।

रङ्ग माणिक्य-(स०नपु०) मानिक रत्न।
रङ्ग माता-(स० स्त्री०) लाक्षा, कुटनी।
रङ्गराज-(स० पु०) ताल का एक भेद।
रङ्गरेज-(फा० पु०) देखो रगरेज।
रङ्ग वाराङ्गना-(स०स्त्री०) नाच गाना करने वाली वेश्या।
रङ्ग विद्याधर-(स०पु०) सगीत में ताल के साठ मुख्य भेदो में से एक, (वि०) नाचने निपुण।
रङ्गबीज-(स०नपु०) रुपा, चादी।
रङ्गशाला-(स० स्त्री०) नाट्यगृह।
रङ्गाङ्गण-(स०पु०) नाट्य शाला।
रङ्गारि-(स०पु०) करवीर, कनेर।
रङ्गा भरण-(स०पु०) सगीत में ताल का एक भेद।
रङ्गालय-(स० पु०) रगक्षेत्र, नाटक घर।
रङ्गावतरण-(स०नपु०) अभिनय करने वाला नट।
रङ्गी-(स०स्त्री०) रगा हुआ।
रचक-(स० पु०) रचना करने वाला, रचयिता।
रचन-(स०नपु०) निर्माण, रचना।
रचना-(स०स्त्री०)फूलों से गुच्छे या माला बनाना, बाल गूथना, यथा क्रम रखना, स्थापित करना,वाक्य विन्यास,चमत्कार युक्त गद्य या पद्य, विश्वकर्मा की स्त्री का नाम।
रचना-(हि० क्रि०) हाथों से बनाकर तैयार करना, ग्रन्थ आदि लिखना, रगा जाना, सजाना, अनुरक्त होना, पैदा करना, उत्पन्न करना, कल्पना करना, ठानना, तदबीर लगाना, निश्चित करना, क्रम में रखना।
रचनीय-(स०वि०) रचना करने योग्य।
रचयिता-(स०वि०) निर्माता, रचने वाला
रचवाना-(हिं०क्रि०)रचने का काम दूसरे से कराना, मेंहदी या महावर लगवाना
रचाना-(हि०क्रि०) बनाना, रचवाना, मेंहदी या महावर लगवाना।
रचित-(स०वि०) रचा हुआ, गूथा हुआ, शोभित, परिष्कार किया हुआ।
रचितव्य-(स०वि०) रचना करने योग्य।
रच्छस-(हिं०पुं०) देखो राक्षस।
रच्छा-(हि०स्त्री०) देखो रक्षा।
रज-(स०स्त्री०) स्त्री का आर्तव स्त्री कुसुम, (पु०) पराग, रजोगुण, स्कन्द की सेना का नाम, वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम, जल, पानी, धूल, गर्द (हिं०पु०) चादी, रात्रि, ज्योति, प्रकाश, भुवन, लोक।
रज सार-(स०नपु०) कर्पूर, कपूर।
रजक-(स०पु०) धावक, धोबी।
रजगुण-(हिं०पु०) देखो रजोगुण।
रजतत-(हि०स्त्री०) शूरता, वीरता।
रजत-(स० नपु०) चादी, हाथीदात, रुधर, लोहू, हृद, तालाब (वि०) सफेद रग का, शुक्ल, लाल, सुर्ख।
रजत कुम्भ-(स०पुं०) सोने या चादी का कलश।
रजतगिरि-(स०पु०) कैलास पर्वत।
रजतद्युति-(स० पु०) हनुमान्।
रजत पात्र-(स०नपु०)चादी का बरतन।
रजत प्रतिमा-(स० स्त्री०) सोने या चादी की बनी हुई प्रतिमा।
रजत भाजन-(स० नपु०) चादी का बना हुआ पात्र।
रजतमय-(स०वि०) चादी का बना हुआ
रजताई-(हिं० स्त्री०) सफेदी।
रजताकर-(स० नपुं०) चादी की खान।
रजताचल-(स०पु०) चादी का पहाड़।
रजताद्रि-(सं० पु०) कैलास पर्वत।
रजतोपमा-(स०वि०) चादी के सदृश।
रजन्-(अ० स्त्री०) राल।
रजनि-(स०स्त्री०) रात्रि, रात, हल्दी।
रजधानी-(हिं०स्त्री०) देखो राजधानी।
रजना-(हिं०क्रि०) रगना, रगा जाना।
रजनी-(स० स्त्री०) रात्रि, रात, हल्दी, वैवस्वत की पत्नी का नाम।
रजनीकर-(स० पु०) चन्द्रमा।
रजनी गन्धा-(स० स्त्री०) गुलचेरी का फल।
रजनीचर-(स० पु०) चन्द्रमा, राक्षस, चोर, रात में चलने वाला।
रजनीजल-(स०नपु०) कुहिरा।
रजनीपति-(स० पु०) चन्द्रमा।
रजनीमुख-(स० नपु०) सन्ध्या।
रजनीरमण-(स०पु०) चन्द्रमा।
रजनीश-(स०पु०) चद्रमा।
रजपूत-(हि०पु०) देखो राजपूत।
रजपूती-(हिं० स्त्री०) क्षत्रिय होने का भाव, शूरता, वीरता।
रजवली-(हिं० पु०) भूपति, राजा।
रजवाही-(हिं० पु०) नदी या नहर से निकाला हुआ वह बड़ा नल जिसमें से और भी अनेक छोटे छोटे नल निकलते हैं।
रजवलाह-(हि० पु०) मेघ, बादल।
रजवंती-(हि०वि०) रजस्वला स्त्री।
रजवट-(हि०स्त्री०) क्षत्रियत्व, वीरता।
रजवाड़ा-(हि० पु०) देशी रियासत, राज्य।
रजवार-(हिं०पु०) राजा का दरबार।
रजस-(स०वि०) अपवित्र, मैला, गन्दा।
रजस्तोक-(स०पु०) लोभ, लालच।
रजस्वला-(स०स्त्री०) वह स्त्री जिसको मासिक धर्म होता हो, ऋतुमती।
रजा-(अ०स्त्री०) इच्छा, मरजी, अनुमति, स्वीकृति, रुखसत, छुट्टी, आज्ञा।
रजाई-(हि०स्त्री०) देखो रजा।
रजाई-(हि०स्त्री०) जाडे में ओढने का दोहरा कपडा जिसमें रूई भरी होती है, लिहाफ, राजा होने का भाव, राजापन।
रजाना-(हिं० क्रि०) राज्य सुख का भोग करना, बहुत अधिक सुख देना, अच्छी तरह से रखना।
रजामद-(फा०वि०) जो किसी बात पर सहमत या राजी हो गया हो।
रजामंदी-(फा० स्त्री०) सहमति।
रजायस-(हिं०स्त्री०) आज्ञा,हुक्म,इच्छा।
रजिया-(हिं० स्त्री०) अन्न नापने का प्रायः डेढ सेर का मान।
रजिस्ट्रार-(अ०पु०) वह अधिकारी जो लोगों के प्रतिज्ञापत्र या दस्तावेज़ों को रजिस्ट्री करता अर्थात् उन्हें सरकारी रजिस्टर में दर्ज करता है, किसी विश्वविद्यालय का मत्री का काम करने वाला।

रजिस्टर–(अ०पुं०) वह पुस्तक जिसमें किसी विषय का विस्तृत वर्णन लिखा रहता है।
रजिस्ट्री–(अ०स्त्री०)किसी लिखित प्रतिज्ञा-पत्र को सरकारी रजिस्टर में दर्ज करने का काम।
रजीडंट–(हिं०पु०) देखो रेज़िडेन्ट।
रजील–(अ०वि०) छोटी जात का, नीच।
रजोकुल–(हि० पु०) देखो राजकुल।
रजोगुण–(स० नपु०) जीवधारियों की प्रकृति का वह स्वभाव जिससे उनमें भोग विलास तथा दिखावटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है।
रजोदर्शन–(स० नपु०) स्त्रियों का रजस्वला होना।
रजोधर्म–(स०पु०)स्त्रियों का मासिक धर्म।
रजोवल–(स० नपु०) अन्धकार।
रजोमेघ–(स०पु०) धूलि का मेघ।
रजोरस–(स०नपु०) अन्धकार, अन्धेरा।
रजोहर–(स०पु०) रजक, धोबी।
रज्जु–(स०स्त्री०) रस्सी, जेंवर, घोडे की लगाम,बागडोर,स्त्रियोंके सिरकी चोटी।
रञ्जक–(स० नपुं०) हिंगुल, ईंगुर (पु०) रगरेज।
रञ्जन–(स०नपु०) लाल चदन, हिंगुल, प्रसन्न करने की क्रिया,(पु०) मूग,सोना, रगने की क्रिया, छप्पय का एक भेद।
रञ्जनक–(स०पुं०) कटहल का फल।
रञ्जनी–(स० स्त्री०) मजीठ, निर्गुण्डी, हरिद्रा, हलदी।
रञ्जनीय–(स० वि०) आनन्ददायक, चित्त को प्रसन्न करने वाला।
रञ्जित–(स० वि०) आनन्दित, प्रसन्न, रगा हुआ।
रट–(हि० स्त्री०) वारवार किसी शब्द को उच्चारण करने की क्रिया।
रटन–(स०नपु०)कथन, कहना (हिं०स्त्री०) रटने की क्रिया या भाव।
रटना–(हि० क्रि०) किसी शब्द को वारवार कहना, कण्ठस्थ करने के लिये वारवार दोहराना।
रटन्त–(हि०स्त्री०) रटने की क्रिया या भाव
रटित–(स०वि०) कथित, कहा हुआ।
रठ–(हि० वि०) शुष्क, सूखा।
रढना–(हि० क्रि०) देखो रटना।
रण–(स० पु०) युद्ध, लड़ाई, (पु०) शब्द, गति।
रणकुशल–(सं० वि०) बड़ा योद्धा।
रणकारी–(स०वि०) युद्ध करने वाला।
रणकृत्–(स०वि०) लड़ाई करने वाला।
रणक्षिति–(स० स्त्री०) युद्धभूमि।
रणक्षेत्र–(सं०पु०) लड़ाई का मैदान।
रणछोड़–(हि०पु०) श्रीकृष्ण का एक नाम
रणञ्जय–(स०पु०) युद्ध में जीतने वाला।
रणतूर्य–(स०नपु०) लड़ाई का डका।
रणत्कार–(स०पु०)झन् झन् शब्द करना
रणदुन्दुभि–(सं०पु०) युद्ध का नगाड़ा।
रणन–(स०नपु०) शब्द करना।
रणप्रिय–(स०नपु०) उशीर, खस (पु०) विष्णु, बाज़ पक्षी।
रणभूमि–(स०स्त्री०)लड़ाई का मैदान।
रणमडा–(हि०स्त्री०) पृथ्वी।
रणमत्त–(स०पु०) हाथी, युद्ध में मत्त।
रणमुख–(स०नपु०) सेना का अग्र भाग।
रणमुष्टि–(स०पु०) कुचिला।
रणमूर्धजा–(स० स्त्री०) काकड़ासिंघी।
रणरङ्क–(स०पु०) हाथी के दोनों दाँतों के बीच का स्थान।
रणरङ्ग–(स० पु०) युद्ध का उत्साह, युद्ध क्षेत्र।
रणरण–(सं०नपु०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
रणरणक–(स०पु०) कामदेव, व्यग्रता, घबड़ाहट, उत्कंठा।
रणलक्ष्मी–(स० स्त्री०) विजयलक्ष्मी, युद्ध की देवी जो विजय करने वाली मानी जाती है।
रणवृत्ति–(सं०पु०) सैनिक, सिपाही।
रणशिक्षा–(स०स्त्री०) युद्धाभ्यास।
रणशूर–(स०पु०) वह जो युद्ध में वीरता दिखलाता हो।
रणसिंघा–(हि०पु०) नरसिंघा, तुरही।
रणसिंहा–(हि०पु०) देखो रणसिंघा।
रणस्तम्भ–(स० पु०) वह स्तभ जो युद्ध में विजय प्राप्त करने पर स्मारक में बन वाया जाता है, विजय का स्मारक
रणस्थल–(स०पु०) रणभूमि, लड़ाई का मैदान।
रणस्थान–(स०नपु०) लड़ाई का मैदान।
रणस्वामी–(स०पु०) शिव, महादेव।
रणहंस–(स०पु०) एक वर्णवृत्त का नाम।
रणाग्र–(स०नपु०) युद्ध का आरम्भ।
रणाङ्गण–(स०नपु०) लड़ाई का मैदान।
रणाजिर–(स० नपु०) युद्ध क्षेत्र।
रणातोद्य–(स०नपु०) लड़ाई का डका।
रणान्तकृत्–(स०पु०) विष्णु।
रणायेत–(स०वि०)रणक्षेत्र से भागने वाला
रणाभियोग–(स० पु०) युद्ध करना, लड़ना।
रणावनि–(स० स्त्री०) रणभूमि।
रणेचर–(स०वि०) युद्ध क्षेत्र में विचरने वाला (पु०) विष्णु।
रणेश–(स०पु०) विष्णु शिव, महादेव।
रण्ड–(स०वि०) धूर्त, चालाक।
रण्डा–(स० स्त्री०) विधवा, राड़।
रण्य–(स०वि०) रमणीय।
रणित–(सं० वि०) शब्द किया हुआ
रत–(स०नपुं०) मैथुन, स्त्री प्रसग, योनि, लिङ्ग, प्रेम, प्रीति (वि०) अनुरक्त, प्रेम में पड़ा हुआ, कार्य में लगा हुआ, लिप्त (हि०पु०) देखो रक्त, रुधिर,खून
रतकील–(स०पु०) कुत्ता,
रतगुरु–(स०पु०) पति, स्वामी, खसम।
रतजगा (हि० पु०) किसी उत्सव या विहार आदि के उपलक्ष में सारी रात जाग कर बिताना, रातभर होने वाला आनन्दोत्सव।
रतज्वर–(स०पु०) काक, कौवा।
रतताली–(स०स्त्री०) कुटनी।
रतन–(स०पु०) देखो रत्न।
रतनजोत–(हि० स्त्री०) एक प्रकार का रत्न, एक प्रकार का पहाड़ी पौधा जिसकी जड़में से लाल रग निकलता है
रतनाकर–(हि० पुं०) देखो रत्नाकर।
रतनागर–(हि०पु०) समुद्र।
रतनागरभ–(हिं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
रतनार, रतनारा–(हि०वि०)कुछ लाल-

इस शब्द का प्रयोग आखों के लिये किया जाता है।

रतनारी-(हिं० स्त्री०) लाली, लालिमा (पु०) एक प्रकार का धान।

रतनारीच-(स० पु०) कुत्ता, लम्पट, व्यसनी पुरुष।

रतनिधि-(स०पु०) खजन पक्षी।

रतनालिया-(हिं०वि०) देखो रतनार।

रतनावली-(हि०स्त्री०) देखो रत्नावली।

रतमुहाँ-(हि०वि०) लाल मुख वाला।

रताञ्जली-(स०पु०) लाल चन्दन।

रतायनी-(सं० स्त्री०) वेश्या, रडी।

रताना-(हिं० क्रि०) रत होना, लीन करना।

रतालू-(हिं० पु०) पिण्डालू, बाराही कन्द।

रति-(स० स्त्री०) कामदेव की स्त्री, अनुराग, प्रेम, काम क्रीड़ा, सभोग, सौभाग्य, छवि शोभा, साहित्य में शृंगार रसका स्थायी भाव, नायक नायिका के मनमें एक दूसरे के प्रति आकर्षण, (हि० स्त्री०) रात्रि, रात, रैन।

रतिकर-(स० वि०) आनन्द दायक।

रतिकर्म-(स० नपु०) मैथुन।

रतिकलह-(सं०पु०) संभोग, मैथुन।

रतिकान्त-(स० पु०) कामदेव।

रतिकुहर-(स० नपु०) योनि, भग।

रतिकेलि-(स०स्त्री०) भोग विलास।

रतिक्रिया-(स० स्त्री०) मैथुन, सभोग।

रतिगृह-(स०नपु०) रमण मन्दिर, योनि।

रतिजनक-(स० वि०) प्रीति उत्पन्न करने वाला।

रतिज्ञ-(स० वि०) जो रति क्रिया में चतुर हो।

रतितस्कर-(सं० पु०) वह जो स्त्रियों को सभोग करने के लिये प्रवृत्त करता हो।

रतिताल-(स० पु०) ताल का एक भेद

रतिदान-(स० पु०) मैथुन, सभोग।

रतिदेव-(स०पु०) विष्णु, कुत्ता।

रतिधन-(स० पु०) दूसरे के अस्त्रों को नाश करने वाला अस्त्र।

रतिनाथ-(स० पु०) कामदेव।

रतिनायक-(स० पु०) कामदेव।

रतिपति-(स० पु०) कामदेव।

रतिनाह-(हि० पु०) कामदेव।

रतिपद-(स० पु०) एक वर्णवृत्त का नाम।

रतिप्रिय-(स०पु०)सुरत प्रिय, कामदेव।

रतिप्रिया-(स०स्त्री०) वह स्त्री जिसको मैथुन बहुत प्रिय हो।

रतिबन्ध-(स० पु०) मैथुन या सभोग करने का प्रकार।

रतिभवन-(स० नपु०) वह स्थान जहा प्रेमी और प्रेमिका रति क्रीड़ा करते हों।

रतिभाव-(स० पु०) प्रीति, मुहब्बत।

रतिभौन-(हिं० पु०) रति भवन।

रतिमदा-(स० स्त्री०) अप्सरा।

रतिमन्दिर-(स० नपु०) योनि, भग, मैथुन गृह।

रतियाना-(हिं०क्रि०) प्रेम करना।

रतिरमण-(स० पु०) कामदेव, मैथुन

रतिरस-(स०पु०) सहवास का सुख।

रतिराज-(स० पु०) कामदेव।

रतिलम्पट-(स०वि०) सभोग प्रिय।

रतिवत-(हिं० वि०) सुन्दर, खूबसूरत।

रतिवर्धन-(स० पु०) कामदेव।

रतिवाहो-(स० पु०) एक प्रकार का राग।

रतिशक्ति-(स० स्त्री०) रमण करने का बल।

रतिशास्त्र-(स० पु०) कोकशास्त्र, वह शास्त्र जिसमें रति की क्रियाओं का वर्णन हो।

रतिसजोग-(स०पु०) स्त्री प्रसग, मैथुन।

रतिसहति-(स० स्त्री०) रमण करने की योग्यता।

रतिसमर-(स० पु०) सभोग, मैथुन।

रतिसाधन-(स० नपु०) शिश्न, लिङ्ग।

रतिसुन्दर-(स० पुं०) काम शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रति बन्ध।

रती-(स०स्त्री०) लाल घुमची (हिं० स्त्री०) आठ चावल का मान, रत्ती, देखो रति, (वि०) थोड़ा, कम (क्रि०वि०) ज़रासा, रत्ती भर।

रतुआ-(हिं०पु०) एक प्रकार की घास

रतून-(हि० पु०) पेड़ी की ईख, एक बार काट लेने पर फिर उसी जड़ से निकलने वाला ऊख का पौधा।

रतोद्वह-(स० पु०) कोकिल, कोयल।

रतोपल-(हि०पु०) लाल सुरमा, लाल खड़िया गेरू।

रतौंधी-(हिं० स्त्री०) आख का वह रोग जिसमें रोगी को रातके समूह कुछ देख नहीं पड़ता।

रत्त-(हि० वि० पु०) देखो रक्त।

रत्ती-(हि० स्त्री०) आठ चावल का मान या बाट, गुजा, घुमची का दाना (वि०) बहुत थोड़ा (हि० स्त्री०) देखो रति, शोभा।

रत्थी-(हि० स्त्री०) लकड़ी या बास का ढाचा अथवा सदूक जिसमें शवको रख कर अन्तिम सस्कार के लिये ले जाते हैं, टिकठी।

रत्न-(स० नपु०) कुछ विशिष्ठ छोटे चमकीले बहुमूल्य पदार्थ विशेषतः खनिज पदार्थ या पत्थर जो आभूषणों में जडे जाते हैं, मणि, जवाहिर,नगीना, वह जो अपने वर्ग या जाति में श्रेष्ठहो।

रत्नकर-(स० पु०) कुवेर।

रत्नकन्दल-(स०पु०) प्रवाल, मूगा।

रत्नकर्णिका-(स०स्त्री०) करनफूल।

रत्नकलश-(स०नपुं०) रत्न का बना हुआ कलसा।

रत्नकीत-(स०पु०) एक बुद्ध का नाम।

रत्नकूट-(स० पु०) एक पर्वत का नाम।

रत्नकोटि-(स०पु०) असख्य रत्न।

रत्नखानि-(स०स्त्री०)रत्न की खान,समुद्र।

रत्नगर्भ-(सं०पु०) कुवेर, समुद्र।

रत्नगर्भा-(स०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

रत्नदाम-(स०स्त्री०) रत्नों की माला।

रत्नदीप-(स० पु०) रत्न का दीपक।

रत्नद्रुम-(स०पुं०) प्रवाल, मूगा।

रत्नधर-(स०पु०) धनवान्, अमीर।

रत्ननाभ-(सं०पु०) विष्णु।
रत्ननिधि-(सं० पु०) समुद्र।
रत्नपरीक्षक-(सं० पु०) रत्नों की परीक्षा करनेवाला, जौहरी।
रत्नपारखी-(सं०पु०) जौहरी।
रत्नप्रभा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
रत्नबाहु-(सं०पु०) विष्णु।
रत्नमञ्जरी-(सं० स्त्री०) विद्याधरी का एक भेद।
रत्नमाला-(सं०स्त्री०) मणियों की माला या हार।
रत्नमालिका-(सं० स्त्री०) मणियों की छोटी माला।
रत्नमाली-(सं० वि०) रत्नों की माला पहरने वाला।
रत्नमुख्य-(सं०नपु०) हीरा।
रत्नराजि-(सं० स्त्री०) रत्नों का समूह।
रत्नराशि-(सं०पु०) समुद्र।
रत्नवती-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।
रत्नवृक्ष-(सं०पु०) मूंगा।
रत्नशाला-(सं० स्त्री०) जड़ाऊ महल।
रत्नशिला-(सं०स्त्री०) वह शिला जिस में अनेक रत्न जड़े हों।
रत्नसंग्रह-(सं०पु०) रत्नों का समुदाय।
रत्नसम्भव-(सं० पु०) एक बोधिसत्व का नाम।
रत्नसानु-(सं०पुं०) सुमेरु पर्वत का नाम
रत्नसू-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।
रत्नसूति-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
रत्नाकर-(सं० पु०) रत्नों का समूह, समुद्र, बुद्धदेव, वाल्मीकि मुनि का पहला नाम।
रत्नाङ्क-(सं०पु०) विष्णु का रथ।
रत्नाधिपति-(सं०पु०) कुबेर।
रत्नाभरण-(सं०नपु०) रत्न का गहना।
रत्नाभूषण-(सं०नपु०) जड़ाऊ गहना।
रत्नालोक-(सं०पु०) रत्न की ज्योति।
रत्नालङ्कार-(सं०नपु०) रत्न का गहना।
रत्नावली-(सं०स्त्री०) मोती की माला, मणियों की माला, एक रागिणी का नाम, एक अर्थालङ्कार जिसमें प्रस्तुत अर्थ निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से पढ़ने पर वस्तु समूह के नाम भी निकलते हैं।
रत्नासन-(सं०नपु०) रत्न का आसन।
रत्नेन्द्र-(सं०पु०) श्रेष्ठ रत्न।
रत्नोत्तमा-(सं०स्त्री०) तान्त्रिकों की एक देवी का नाम।
रथ-(सं०पु०) काय, शरीर, चरण, पैर, बेत, प्राचीन काल की एक प्रकार की सवारी जिसमें दो या अधिक पहिया होती थीं, गाड़ी, क्रीड़ा स्थान, शतरञ्ज का एक मोहरा, ऊंट।
रथकर-(सं०पु०) रथ बनाने वाला बढ़ई
रथकार-(सं०पु०) रथ बनाने वाला।
रथकारक-(सं०पु०) बढ़ई।
रथकारत्व-(सं०नपु०) बढ़ई का काम।
रथकुटुम्बिक-(सं० पु०) रथ हाँकने वाला।
रथकेतु-(सं०पु०) रथ में लगी हुई ध्वजा
रथक्षोभ-(सं०पु०) रथ का हिलना डोलना
रथगर्भक-(सं० पु०) शिविर, पालकी आदि सवारी जो कन्धों पर उठाकर ले चलते हैं।
रथघोष-(सं०पु०) रथ का शब्द।
रथचक्र-(सं०नपु०) रथ का पहिया।
रथचरण-(सं०पु०) चकवा पक्षी।
रथचर्या-(सं०स्त्री०) रथ का चलना।
रथजङ्घा-(सं०स्त्री०) रथ का पिछला भाग
रथज्ञान-(सं० नपु०) रथ हाँकने की निपुणता।
रथदारु-(सं०नपु०) वह लकड़ी जिससे रथ बनाया जाता है।
रथधूर-(सं०स्त्री०) रथ की पहिया।
रथपति-(सं०पु०) रथ का सारथी।
रथपथ-(सं० पु०) जिस मार्ग पर रथ चल सके।
रथबन्ध-(सं०पु०) रथ बाधने की रस्सी।
रथयात्रा-(सं० स्त्री०) देव देवी को रथ पर बिठा कर रथ खींचने का उत्सव, एक पर्व जो आषाढ शुक्ल द्वितीया को होता है।
रथयुद्ध-(सं० नपु०) रथ पर चढकर युद्ध करना।
रथयूथ-(सं०पु०) रथों का ढेर।
रथयोजक-(सं० पुं०) सारथी।
रथवर-(सं०पु०) उत्तम रथ।
रथवान्-(सं०पु०) रथ हाँकने वाला।
रथवाह-(सं० वि०) सारथी, घोड़ा।
रथवाहक-(सं०पु०) रथ हाँकने वाला।
रथविद्या-(सं०स्त्री०) रथ हाँकने की विद्या
रथवीति-(सं०स्त्री०) तपस्या करने वाला
रथवेग-(सं०पु०) रथ चलने की गति।
रथव्रज-(सं० पु०) रथों का समूह।
रथशाला-(सं० स्त्री०) रथों के रखने का स्थान।
रथशिक्षा-(सं० स्त्री०) रथ चलाने का कौशल।
रथसप्तमी-(सं०स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी।
रथसूत्र-(सं०नपु०) रथ बनाने के नियम
रथस्थ-(सं०वि०) रथ पर बैठा हुआ।
रथस्वन-(सं० पु०) रथ का शब्द।
रथाग्र-(सं० पु०) श्रेष्ठ योद्धा।
रथाङ्गधर-(सं०पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु।
रथाङ्गपाणि-(सं० पु०) विष्णु।
रथाभ्र-(सं० पुं०) वेतस बेंत।
रथारथि-(सं०अव्य०) परस्पर, रथ द्वारा युद्ध करना।
रथारूढ़-(सं०वि०) रथ पर बैठा हुआ।
रथारोह-(सं०वि०) रथपर बैठ कर युद्ध करने वाला।
रथारोही-(सं०वि०) देखो रथारोह।
रथार्भक-(सं० पु०) छोटा रथ।
रथाश्व-(सं०पु०) रथ में जोतने का घोड़ा
रथिक-(सं०पु०) रथ पर सवार होने वाला
रथी-(सं०वि०) रथ पर चढ़कर लड़ने वाला योद्धा, रथ पर चढा हुआ (हिं० स्त्री०) अरथी, शव को ले जाने का ढाँचा।
रथोत्सव-(सं० पु०) रथयात्रा नामक उत्सव।
रथोद्धता-(सं०स्त्री०) ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
रथौघ-(सं० पुं०) रथ का वेग।
रथ्या-(सं० स्त्री०) रथ का मार्ग या लकीर, रास्ता, सड़क, नाली, आँगन।

रद-(सं० पु०) दन्त, दाँत, (अ०वि०) नष्ट, खराब, तुच्छ, निरर्थक।
रदच्छद-(स० पु०) ओष्ठ, ओठ, (हिं०पु०) रति के समय दांतों के लगने का चिह्न।
रददान-(स०पु०) रति के समय दांतों को ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाय।
रदन-(सं० पु०) दन्त, दाँत।
रदनच्छद-(स०पु०) ओठ।
रदनी-(हि० वि०) दांत वाला।
रदपट-(स० पु०) ओष्ठ, ओठ।
रदबदल-(फा०क्रि०वि०) उलटफेर, हेरफेर
रदीफ-(अ०स्त्री०) घोड़े की पीठ पर सवार के पीछे बैठने वाला व्यक्ति, पीछे की ओर की सेना।
रदीफवार-(अ०क्रि० वि०) वर्णमाला के क्रम से।
रद्द-(अ०स्त्री०) जो काट छाट दिया गया हो, जो तोड़ या बदल दिया गया हो, जो खराब हो गया हो, (स्त्री०) वमन, उल्टी, कै।
रद्दा-(हिं०पु०) दीवार की पूरी लम्बाई में एक बार रक्खी हुई ईंटों की जोड़ाई, मिट्टी की दीवार उठाने में उतना अंश जितना चारों ओर एक बार में उठाया जाता है, चमड़े की मोहरी जो भाटू के मुंह पर बांधी जाती है, थाली में मिठाइयों की एक पर एक रक्खी हुई तह, वस्तुओं की एक के ऊपर एक रक्खी हुई तह, कुश्ती की एक पेंच।
रद्दी-(हिं०वि०) वह जो काम में न आवे, खराब, (स्त्री०) कागज़ आदि जो काम में न आने के कारण फेंक दिये गये हों।
रद्दीखाना-(फा० पु०) वह स्थान जहां खराब चीजें फेंक दी जाती हैं।
रधार-(हिं०स्त्री०) ओढ़ने का वस्त्र, दोहर।
रन-(हिं०पु०) रण, युद्ध, लड़ाई, वन, जंगल, समुद्र का छोटा अंश, ताल, झील।
रनकना-(हिं० क्रि०) घुंघरू आदि का धीमा शब्द होना।
रनना-(हिं० क्रि०) बजना।
रनछोर-(हिं०पु०) देखो रणछोर।
रनना-(हिं०क्रि०) बजना, झनकार होना।
रनबरिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी भेंड़।
रनबंका, रनबांकुरा-(हिं०पु०) योद्धा, शूरवीर।
रनलपिका-(हिं० स्त्री०) गौ, गाय।
रनवादी-(हिं०वि०) शूर, योद्धा।
रनवास-(हिं०पु०) महल में रानियों के रहने का स्थान, अन्तःपुर, ज़नानखाना
रनित-(हिं०वि०) रणित, झन् झन् शब्द करता हुआ।
रनित-(हिं०क्रि०वि०) शब्द करता हुआ।
रनिवास-(हिं०पु०) देखो रनवास।
रनी-(हिं०पु०) योद्धा, लड़ने वाला।
रनेत-(हिं०पु०) भाला, बरछा।
रन्तव्य-(स०वि०) रमण करने योग्य।
रन्ति-(सं०स्त्री०) केलि, क्रीड़ा।
रन्तिदेव-(सं०पु०) विष्णु।
रन्धक-(स०पु०) रसोई बनाने वाला, (वि०) नष्ट करने वाला।
रन्धन-(स०पु०) रसोई बनाने की क्रिया
रन्ध्र-(स०पु०) दूषण, छिद्र।
रन्ध्रपत्र-(स०पु०) नरकट।
रपट-(हिं० स्त्री०) अभ्यास, आदत, रपटने की क्रिया या भाव, फिसलाहट, उतार, दौड़, सूचना, इत्तला।
रपटना-(हिं०क्रि०) जम न सकने के कारण किसी की ओर सरकना जल्दी चलना, झपटना, किसी काम को झटपट पूरा करना, मैथुन करना।
रपटाना-(हिं०क्रि०) सरकाना फिसलाना।
रपट्टा-(हिं० पु०) फिसलने की क्रिया या भाव, फिसलाव, झपट्टा, चपेट, दौड़धूप।
रपाती-(हिं०स्त्री०) तलवार।
रपुर-(हिं०स्त्री०) स्वर्ग।
रफू-(अ०वि०) जो साफ और ठीक न हो, खुरखुरा।
रफ्ते रफ्ते-(फा०क्रि०वि०) धीरे धीरे।
रफल-(हिं० स्त्री० -अंग्रेजी राईफल् का अपभ्रंश) एक प्रकार की बंदूक, (हिं०पु०) ऊनी चादर जो जाड़ों में ओढ़ी जाती है।
रफा-(अ०वि०) दूर किया हुआ, मिटाया हुआ, निवृत्त, शान्त।
रफा दफा-(अ०क्रि०वि०) मिटाया हुआ।
रफीदा-(अ० पु०) वह गद्दी जिसके ऊपर जीन कसी जाती है, गोल पगड़ी।
रफू-(अ० पु०) फटे कपड़े के छेद में तागे भर कर मरम्मत करना।
रफूगर-(फा०पु०) रफू बनाने वाला।
रफूगरी-(फा०पु०) रफू करने का काम।
रफूचक्कर-(हिं० वि०) गायब, चम्पत।
रफ्त, रफ्तनी-(फा० स्त्री०) जाने की क्रिया, माल का बाहर भेजा जाना।
रफ्तार-(फा०स्त्री०) चलने का ढंग, गति।
रफ्ता रफ्ता-(फा०क्रि०वि०) धीरे धीरे, क्रम से।
रब-(अ० पु०) ईश्वर, परमेश्वर।
रबड़-(अ० पु०) एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों से निकलते हुए दूध से बनाया जाता है, एक बरगद के समान वृक्ष जिसमें के दूध से यह लचीला पदार्थ बनता है, (हिं० स्त्री०) देखो रगड़।
रबड़ना-(हिं०क्रि०) घुमाना, चलाना, फेरना।
रबड़ी-(हिं०स्त्री०) औटाकर गाढा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिलाई रहती है, बसौंधी।
रबदा-(हिं० पु०) पैदल चलने से होने वाली थकावट, कीचड़।
रबर-(अ०पु०) देखो रबड़।
रबरी-(हिं० स्त्री०) देखो रबड़ी।
रबाना-(हिं० पु०) एक प्रकार का छोटा डफ जिसमें मजीरे लगे होते हैं।
रबाब-(अ० पु०) एक प्रकार का सारंगी की तरह का बाजा।
रबाबिया-(हिं०पु०) रबाब बजाने वाला।
रबी-(हिं०स्त्री०) वसन्त ऋतु, वसन्त ऋतु में काटी जाने वाली फसल।
रबील-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया।
रब्त-(अ०पु०) अभ्यास, मुहावरा, मश्क,

सबध, मेल, रब्त जप्त-मेल जोल।
रब्ध-(सं०वि०) ग्रहण किया हुआ, आरम्भ किया हुआ।
रब्ब-(अ०पु०) देखो रब।
रब्बा-(अ० पु०) तोप लादने की गाड़ी
रभस-(सं०पु०) वेग, हर्ष, उत्सुकता।
रभसान-(सं०वि०) जल्दी करने वाला।
रभस्वत्-(सं०वि०) वेगयुक्त।
रभीयस्-(सं०वि०) बड़े वेग वाला।
रभोदा-(सं०वि०) बल देने वाला।
रम-सं०पु०) कामदेव, प्रेमी, (वि०) प्रिय, सुन्दर, आनन्ददायक।
रम्-(अ०पु०) जव से बनाई हुई शराब।
रमक-(सं० पु०) उपपति, जार, (हि०स्त्री०) झूले की पेंग, तरग, झकोरा। (अ०स्त्री०) मरने के समय की अन्तिम श्वास, नशे का थोड़ा प्रभाव, अल्प प्रभाव, (वि०) बहुत थोड़ा।
रमकलरा-(हिं०पु०)एक प्रकार का धान
रमकना-(हि० क्रि०) हिंडोले पर पेंग मारना इतराते हुए चलना।
रमचकरा-(हि०पु०)बेसन की मोटी रोटी
रमजान-(अ०पु०) एक अरबी महीने का नाम जिसमें मुसलमान लोग रोजा रखते हैं।
रमझोला-(हि०पु०) पैर में पहरने का घुंघरू, नूपुर।
रमठ-(सं०नपु०) हींग।
रमण-(सं० नपु०) रति, सुरत, मैथुन, क्रीड़ा, विलास, कामदेव पति, अण्ड-कोष, सूर्य का सारथी घूमना फिरना, एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तीन अक्षर होते हैं (वि०) सुन्दर, मनोहर, रमनेवाला, आनन्द देने वाला
रमण गमना-(सं० स्त्री०) वह नायिका जो यह समझ कर दुःखी होती है कि संकेत स्थान पर नायक आया होगा परन्तु मैं उस स्थान पर उपस्थित न थी।
रमणा, रमणी-(सं० स्त्री०) नारी, स्त्री सुन्दर स्त्री, सुगन्धवाला नामक गन्ध द्रव्य।
रमणीक-(सं० वि०) सुन्दर, मनोहर।
रमणीय-(सं० वि०) रमणीक, सुन्दर।
रमणीयता-(सं० स्त्री०) सुन्दरता, साहित्य दर्पण के अनुसार वह माधुर्य जो सब अवस्थाओं में बना रहे अथवा क्षण क्षण में नया नया रूप धारण करे।
रमता-(हि० वि०) एक ही स्थान पर जमकर रहने वाला, घूमता फिरता।
रमदो-(हिं० पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।
रमन-(हिं० पु०) देखो रमण।
रमनक (हिं० पु०) देखो रमणक।
रमना-(हि० क्रि०) सुख प्राप्ति या भोग विलास के निमित्त कहीं पर ठहरना, आनन्द करना, घेरा, हाता, वह सुरक्षित स्थान जहां पशु शिकार के लिये छोड़े जाते हैं, कोई सुन्दर या रमणीक स्थान चरागाह, विहार करना, व्याप्त होना, इधर उधर घूमना, अनुरक्त होना, चैन करना।
रमनी-(हिं० स्त्री०) देखो रमणी।
रमनीक-(हिं० वि०) देखो रमणीक।
रमल-(अ० पु०) मुसलमानी फलित ज्योतिष का एक भेद जिसमें पासे फेंक कर शुभाशुभ फल निकाला जाता है
रमा-(सं० स्त्री०) लक्ष्मी।
रमाकान्त-(सं० पु०) विष्णु।
रमाधव-(सं० पु०) विष्णु।
रमाधिप-(सं० पु०) रमापति, विष्णु।
रमानरेश-(सं० पुं०) विष्णु।
रमाना-(हिं० क्रि०) अनुरञ्जित करना, मोहित करना, सयुक्त करना जोड़ना, रोक रखना, ठहराना, अपने अनुकूल बनाना।
रमानाथ-(सं० पुं०) विष्णु।
रमानिवास-(सं० पु०) लक्ष्मीपति, विष्णु।
रमापति-(सं० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।
रमाप्रिय-(सं०पु०) पद्म, कमल, विष्णु।
रमारमण-(सं० पु०) लक्ष्मीपति, विष्णु।
रमाली-(हिं० पु०) एक प्रकार का महीन धान।
रमाश्रय-(सं० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।
रमित-(हि० वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ।
रमी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की घास।
रमूज-(अ० स्त्री०) कटाक्ष, सैन, इशारा पहेली, गूढार्थ वाक्य, श्लेष, भेद, गुप्त बात।
रमेश, रमेश्वर-(सं० पु०) विष्णु।
रमैती-(हिं० स्त्री०) आवश्यकता पड़ने पर दूसरे के खेत में काम करने वाला किसान जिसके बदले में वह किसान भी उसके खेत में काम कर देता है, पैंठी
रमैनी-(हि० स्त्री०) कबीरदास के बीजक का एक भाग जिसमें दोहे और चौपाइयाँ हैं।
रमैया-(हिं० पु०) राम, ईश्वर।
रम्भा-(सं० स्त्री०) कदली, केला, एक अप्सरा का नाम, गौरी वेश्या, उत्तर दिशा (हि० पु०) मेमराज का लोहे का मोटा डंडा।
रम्भाना-(हि०क्रि०)गाय का शब्द करना।
रम्भापति-(सं० पु०) इन्द्र।
रम्भाफल-(सं० पु०) कदलीफल, केला।
रम्भित-(सं० वि०) शब्द किया हुआ, बजाया हुआ।
रम्भिनी-(सं०स्त्री०)एक रागिणी का नाम।
रम्भोरू-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जांघ केले के खंभे के समान हो।
रम्माल-(अ०पु०) रमल फेंक कर फलित कहने वाला।
रम्य-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर रमणीय, (पु०) चम्पक वृक्ष वायु का एक भेद।
रम्यता-(सं०स्त्री०) सौन्दर्य।
रम्यश्री-(सं०पु०) विष्णु।
रम्या-(सं० स्त्री०) स्थलपद्मिनी, रात्रि, एक रागिणी का नाम।
रम्हाना-(हिं०क्रि०) गाय का बोलना।
रय-(सं०पु०)वेग, तेजी, प्रवाह धूल, गर्द।
रयणपत-(हि०पु०) चन्द्रमा।
रयन-(हिं०स्त्री०) रात्रि, रात।
रयना-(हि०क्रि०)उच्चरित करना, बोलना, सयुक्त करना, मिलाना, रंगना।
रयासत-(हि०स्त्री०) देखो रियासत।
रयि-(सं० पु०) धन, दौलत।
रयिन्दम-(सं०पु०) बड़ा अमीर।

रयिपति-(स०पु०) कुबेर।
रयिमत्-स०वि०) धनवान्, अमीर।
रयियन्-(स० वि०) धन की इच्छा करने वाला।
रयिवृध्-(स० वि०) बड़ा धनी।
रयिष्ठ-(स०नपुं०) कुबेर, अग्नि।
रय्यत-(हि० स्त्री०) रैयत, प्रजा।
ररंकार-(हि०पु०) रकार की ध्वनि।
रर-(हि०स्त्री०) वह दीवार जो बड़े बड़े पत्थरों के ढोको को एक के ऊपर एक रख कर बनाई गई हो, चूने गारे आदि से जोड़ी न गई हो, रट, रटन।
ररकना-(हि०क्रि०)कष्ट देना,पीडा देना, कसकना।
ररना-(हि०वि०) बारबार एक ही बात को रटना।
रराट-(स०नपु०) देखो ललाट।
ररिहा-(हि०पु०) रटने वाला, भिखमगा, रल्ला नामक पक्षी।
ररी-(हि०वि०) झगड़ालू अधम, नीच, बहुत गिड़गिड़ा कर मागने वाला,
रलना-(हि०क्रि०)एक में एक मिल जाना
रलाना-(हि०क्रि०) एक में एक मिलाना
रली-(हिं० स्त्री०) आनन्द, प्रसन्नता, क्रीडा, विहार, चेना नामक अन्न।
रल्ल-(हि० पु०) शोरगुल, हल्ला।
रव-(सं०पु०) शब्द, आवाज, ध्वनि, गुजार, शोरगुल (हिं०पु०) देखो रवि, सूर्य, जहाज की चाल, रूम।
रवक-(हि०पु०) रेंड़ का पेड़।
रवकना-(हि०क्रि०) जल्दी से आगे बढ़ना, लपकना, उछलना।
रवण-(स०नपुं०) कासा नामक धातु, कोयल, रव, शब्द, भाड़ (वि०) चचल, गरम।
रवताई-(हिं० स्त्री०) राजा होने का भाव, प्रभुत्व।
रवन-(हिं० पु०) स्वामी, पति, क्रीड़ा करने वाला।
रवना-(हि०क्रि०) क्रीड़ा करना, शब्द करना,(हिं०पु०) देखो रावण।
रवनि, रवनी-(हि० स्त्री०) रमणी, सुन्दरी भार्या।
रवन्ना-(हि०पु०) स्त्रियों का काम काज करने वाला नौकर, चुगी आदि की वह रसीद जो किसी जाने वाली चीज के साथ रहती है, जिस पर रवाना किये हुए माल का ब्योरा रहता है।
रवाँ-(फा०वि०) बहता हुआ,छोटा हुआ, चलता हुआ, चोखा।
रवा-(हिं०पु०) किसी चीज का बहुत छोटा टुकड़ा, कण सूजी, बारुद का दाना, वे छर्रे जो घुघुरू के भीतर भरे रहते हैं (फ़ा० वि०) उचित, वाजिब, प्रचलित।
रवाज-(फ़ा०स्त्री०)परिपाटी,प्रथा,चलन।
रवादार-(फ़ा० वि०) सबध रखने वाला, शुभचिन्तक, हितैषी, जिसमें कण या दाने हों।
रवानगी-(फ़ा० स्त्री०) रवाना होने की क्रिया या भाव, प्रस्थान।
रवाना-(फा० वि०) जिसने कहीं से प्रस्थान किया हो, जो कहीं से चल पड़ा हो, भेजा हुआ।
रवानी फ़ा०स्त्री०) विदाई, रुखसती।
रवाविया-(हि०पु०) लाल बलुआ पत्थर
रवायत-(अ० स्त्री०) किस्सा कहानी, कहावत।
रवारवी-(फ़ा०स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी, भागाभाग, दौड़ादौड़।
रवि-(स० पु०) सूर्य, मदार का पेड़, नायक, सरदार, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, अग्नि।
रविकर-(स०पु०) सूर्य की किरण।
रविकान्त-(स० पु०) सूर्यकान्तमणि।
रविकीर्ण-(सं०पु०) आक का वृक्ष।
रविकुल-(स०पु०) सूर्यवश।
रविज-(स०पु०) शनैश्चर।
रविजा-(सं०स्त्री०) कालिन्दी, यमुना।
रवितनय-(स० पु०) यमराज, शनैश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार।
रवितनया-(स० स्त्री०) यमुना।
रवितनुजा-(स० स्त्री०) यमुना नदी।
रवितेजस्-(स०नपुं०) सूर्य की किरण।
रविदिन-(स०नपु०) एतवार।
रविदुग्ध-(सं० नपु०) आक के पौधे का दूध।
रविद्रुम-(स० पु०) देखो रविकीर्ण।
रविनन्दन-(स०पुं०) शनि, यम, कर्ण, सुग्रीव, अश्विनीकुमार।
रविनन्दिनी-(स०स्त्री०) यमुना।
रविनाथ-(स० पु०) पद्म, कमल।
रविनामक-(स०नपु०) ताम्र ताबा।
रविन्द-(स० नपु०) पद्म, कमल।
रविपत्र-(स० पु०) मदार का पौधा।
रविपुत्र-(स० पु०) रविनन्दन।
रविप्रिय-(स०पु०) लाल कमल, ताबा, लाल कनेर।
रविबिम्ब-(स०नपु०) सूर्य का मण्डल, मानिक।
रविमण्डल-(स० नपु०) वह लाल मण्डल जो सूर्य के चारो ओर देख पड़ता है।
रविमणि-(स०नपु०) सूर्यकान्त मणि।
रविरत्न-(स०नपु०) सूर्यकान्त मणि।
रविरत्नक-(स०नपु०) मानिक मणि।
रविमूल-(स० नपु०) आक की जड़।
रविलोचन-(स० पु०) विष्णु।
रविवंश-(स० पु०) सूर्यकुल।
रविवाण-(स० पु०) वह बाण जिसके चलाने से सूर्य के समान प्रकाश होता है
रविवार-(स०पु०) आदित्यवार, एतवार
रविवासर-(स० पु०) रविवार, एतवार।
रविश-(फ़ा० स्त्री०) तौर, ढग, तरीका, गति, चाल, वह छोटा मार्ग जो क्यारियों के बीच में चलने के लिये बना रहता है।
रविसंक्रान्ति-(स०स्त्री०) सूर्य का एक राशि में से दूसरी राशि में जाना।
रविसारथि-(स० पु०) अरुण।
रविसुअन-(हिं० पु०) सूर्य के पुत्र अश्विनीकुमार।
रविसूनु-(स०पु०) देखो रविनन्दन।
रवीन्द्र-(स० नपु०) पद्म, कमल।
रवैया-(हिं० पु०) चालचलन, ढग, तरीका।

रशना-(स० स्त्री०) करधनी, जीभ, रस्सी, अँगुली।
रश्क-(फ़ा० पुं०) ईर्ष्या, कुढ़न, डाह, लज्जा, शर्म।
रश्मि-(स० पु०) किरण, घोड़े की लगाम, पलक के रोवें।
रश्मिकलाप-(स० पु०) एक प्रकार का मोतियों का हार।
रश्मिकेतु-(स० पु०) एक राक्षस का नाम, एक प्रकार का पुच्छल तारा।
रश्मिपति-(स० पु०) रविपुत्र, मदार का पौधा।
रश्मिपवित्र-(स०वि०) सूर्य की किरण द्वारा पवित्र किया हुआ।
रश्मिमण्डल-(स० पु०) किरणमाला।
रश्मिमान्-(स० पु०) सूर्य।
रस-(स० पु०) किसी चीज के खाने का स्वाद जो छः प्रकार का होता है यथा-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय, शरीरस्थ धातु विशेष, हिंगुल, पारद, पारा, कोई तरल पदार्थ, जल वीर्य, गुण, राग, परब्रह्म, साहित्य में नव प्रकार का स्थायी भाव यथा-शृंगार, हास्य करुण, रौद्र, वीर, भयानक, अद्भुत, वीभत्स और शान्त, किसी पदार्थ का सार, विहार, आनन्द, प्रेम, गुण, उमंग, जोश, वनस्पति फल आदि का जलीय अंश, जूस, शरबत, लुआब, लासा, धातुओं को फूककर बनाया हुआ भस्म, मन की तरंग, नव की अथवा छ की संख्या, वह आनन्द जो काव्य पढ़ने या नाटक देखने से होता है प्रीति, प्रेम, भांति, तरह, प्रकार, रस भीनना-युवावस्था का आरंभ होना, रसरंग-विहार।
रसकपूर-(स०नपु०) एक सफेद उपधातु जिसका प्रयोग औषधियों में होता है।
रसकेलि-(स० स्त्री०) क्रीडा, विहार, हँसीदिल्लगी।
रसकेशर-(स० नपु०) कपूर।
रसकोरा-(हि० पु०) रसगुल्ला नाम की मिठाई।

रसखीर-(हि० स्त्री०) ऊख के रस में पकाया हुआ चावल, मीठा भात।
रसगन्ध-(स०पु०) रसाञ्जन।
रसगर्भ-(स०नपु०) रसवत, हिंगुल।
रसगुनी-(हिं० पु०) काव्य या सङ्गीत शास्त्र का जानने वाला।
रसगुल्ला-(हिं०पु०) एक प्रकार की छेने की मिठाई।
रसग्रह-(स० स्त्री०) जिह्वा, जीभ।
रसघन-(स०वि०) अधिक स्वादिष्ट।
रसघ्न-(स० पु०) सोहागा।
रसछन्ना-(हि०पु०) ऊख का रस छानने की चलनी।
रसज-(स०पु०) शराब की तलछट, (वि०) रस से उत्पन्न।
रसज्ञ-(स०वि०) काव्य के रस को जानने वाला, निपुण, कुशल, रसायनी।
रसज्ञता-(स० स्त्री०) रसज्ञ का भाव या धर्म।
रसज्ञा-(स० स्त्री०) जिह्वा, जीभ, गंगा।
रसज्ञान-(स० नपु०) रस का बोध।
रसडली-(हि०स्त्री० एक प्रकार का गन्ना।
रसतम-(स० पुं०) उत्कृष्ट रस।
रसता-(सं०स्त्री०) रस का भाव या धर्म।
रसत्व-(स०नपु०) देखो रसता।
रसद-(स० त्रि०) स्वादिष्ट, मजेदार सुखद।
रसद-(फ़ा० स्त्री०) वह जो बाटने पर हिस्से के अनुसार मिले, सेना का वह खाद्य पदार्थ जो उसके साथ रहता है, भोजन के लिये अन्न आदि, बाट, बखरा।
रसदार-(हिं० वि०) जिसमें किसी प्रकार का रस हो, स्वादिष्ट, मजेदार।
रसधातु-(स० पु०) पारद, पारा, शरीर की रस नामक धातु।
रसन-(सं०नपु०, स्वाद लेना, चखना, जीभ, ध्वनि, (वि०) पसीना लाने वाला।
रसना-(स० स्त्री०) जिह्वा, जीभ, वह स्वाद जिसका अनुभव जीभ से होता है, मेखला, करधनी, लगाम, रस्सी, चन्द्रहार।

रसना-(हिं०क्रि०) धीरे धीरे बहना, टपकना, धीरे धीरे द्रव पदार्थ छोड़ना, रस में मग्न होना, रस से पूर्ण होना, स्वाद लेना प्रेम में अनुरक्त होना, तन्मय होना, परिपूर्ण होना।
रसनाथ-(स० पु०) पारद, पारा।
रसनायक-(स०पु०) महादेव पारद, पारा
रसनारव-(स०पु०) पक्षी जिनको बोलने के लिये केवल जीभ होती है, दाँत नहीं रहते।
रसनालिह्-(स०पु०) कुत्ता।
रसनिर्यास-(स० पु०) शालवृक्ष।
रसनिवृत्ति-(स० स्त्री०) स्वाद लेने की शक्ति का अभाव।
रसनीय-(स० वि०) चखने लायक, स्वादिष्ट।
रसनेन्द्रिय-(स०स्त्री० रसना, जिह्वा, जीभ।
रसनोपमा-(स०स्त्री०) एक प्रकार की उपमा जिसमें उपमाओं की एक शृंखला बँधी होती है और पहले कहा हुआ उपमेय आगे चलकर उपमान हो जाता है, इसको गमनोपमा भी कहते हैं।
रसपति-(स०पु०) चन्द्रमा, पारद, पारा, पृथ्वीपति, राजा, शृंगार रस।
रसपाकज-(स०पु०) शक्कर, चीनी, गुड़।
रसपाचक-(स०पु०)भोजन बनाने वाला
रसपूर्तिका-(स०स्त्री०) शतावर।
रसप्रबन्ध-स०पु०) वह कविता जिसमें एक ही विषय अनेक परस्पर सम्बद्ध पद्यों में कहा गया हो।
रसफल-(सं०पु०) आमले का वृक्ष।
रसबत्ती-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पलीता जिसका व्यवहार पुराने ढंग की तोपों और बन्दूकों में किया जाता था।
रसभरी-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का बसंत ऋतु में होने वाला मीठा फल।
रसभव-(स०नपु०) रक्त रुधिर।
रसभस्म-(स०नपु०) पारे का भस्म।
रसभीना-(हिं०वि०) आर्द्र, तर, आनंद में मग्न।
रसभोजन-(स०पु०) तरल द्रव्य पीना।

रसमे-(हि० स्त्री०) देखो रस्म; प्रथा, चाल।
रसमसा-(हि०वि०) आनन्द में मग्न, रग में मस्त, तर, गीला, श्रान्त, पसीने में भरा हुआ।
रसमातृका-(स०स्त्री०) जिह्वा, जीभ।
रसमि-(हि० स्त्री०) देखो रश्मि, किरण, प्रकाश।
रसमुंडी-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की बगला मिठाई।
रसमूर्छन-(स० नपुं०) पारे को मूर्छित करने की विधि।
रसमूला-(स० स्त्री०) प्राकृत छद का एक भेद।
रसमैत्री-(स० स्त्री०) दो रसों का इस प्रकार मिलना जिसमें स्वाद बढ जावे।
रसयति-(स०स्त्री०) आस्वादन, चखना।
रसयिता-(स० वि०) चखने वाला।
रसराज-(स० पु०) पारद, पारा, रसाञ्जन, रसौत, शृगार रस।
रसलेह-(स०पु०) पारद, पारा।
रसराय-(हि० पु०) देखो रसराज।
रसरी-(हिं०स्त्री०) देखो रस्सी।
रसल-(हि०वि०) रसयुक्त, रसीला।
रसवत-(हि० वि०) रसीला (पु०) रसिक, प्रेमी।
रसवती-(हि०स्त्री०) रसाञ्जन, रसवत।
रसवट-(हिं० पु०) नाव के छेदों में भरने का मसाला।
रसवत्-(स०वि०) जिसमें रस हो (पु०) वह अलकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस या भाव का अग होकर वर्णित हो।
रसवत-(हि०स्त्री०) रसौत, दारुहल्दी।
रसवती-(स० स्त्री०) सपूर्ण जाति की एक रागिणी।
रसवत्ता-(स०स्त्री०) सुन्दरता, मधुरता।
रसवन्त-(स० वि०) जिसमें रस भरा हुआ हो।
रसवली-(हिं०स्त्री०) देखो रसउली।
रसवाद-(स० पु०) प्रेम या आनन्द की वार्ता, वह कहासुनी जो मनोरजन के लिये की गई हो, छेड़छाड़, बकवाद।
रसविक्रय-(स०पु०) शराब बेंचना।
रसवास-(स० पु०) ढगण के पहले भेद का नाम।
रसविरोध-(स०पु०) साहित्य में एक ही पद्य में दो प्रतिकूल रसों का होना।
रसशास्त्र-(स०नपु०) रसायन शास्त्र।
रससम्भव-(स०नपुं०) रुधिर, लोहू।
रससार-(स०पु०) मधु, शहद, विष, जहर
रसा-(स० स्त्री०) पृथ्वी, रसना, जीभ, द्राक्षा, रसातल, आम, शिलारस, लोह-बान (हिं०पु०) रसदार तरकारी, शोरबा।
रसाइन-(हिं०पु०) देखो रसायन।
रसाइनी-(हि० पुं०) रसायन विद्या जानने वाला, रसायन बनाने वाला, कीमियागर।
रसाई-(फ़ा० स्त्री०) पहुँचने की क्रिया या भाव, पहुँच।
रसाखन-(स०नपु०) कुक्कुट, मुर्गा।
रसाग्रज, रसाञ्जन-(स०नपु०) रसौत।
रसातल-(स०नपु०) पुराण के अनुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से छठाँ लोक, रसातल में पहुँचना-पूरी तरह से नष्ट करना।
रसादार-(हिं० वि०) शोरवेदार।
रसाधार-(सं० पु०) सूर्य।
रसाधिक-(स० पु०) अधिक रस।
रसाधिका-(स०स्त्री०) किशमिश।
रसान्तर-(स०नपु०) भिन्न रस।
रसाप्रति-(स०पुं०) नृप, राजा।
रसापायी-(हि० पु०) वह जन्तु जो जीभ से पानी पीता है, कुत्ता।
रसाभास-(स०पु०) साहित्य में किसी रस का अनुपयुक्त स्थान में प्रयोग, वह अलकार जहाँ पर ऐसा प्रयोग देख पड़ता है।
रसाम्ल-(सं० पु०) अमलवेत।
रसायन-(स० नपु०) तक्र, मठा, वह औषध जिसके सेवन से सब रोग हट जाते हैं और बुढ़ापा दूर होती है, शुक्र की वृद्धि होती है और शरीर पुष्ट होता है, गरुड़, विष, हरताल, पदार्थों के तत्वों का ज्ञान, धातु विद्या जिसमें धातुओं को भस्म करने या एक धातु को दूसरे में बदलने आदि की क्रिया का वर्णन रहता है।
रसायनज्ञ-(स० वि०) रसायन विद्या जानने वाला।
रसायनफला-(सं०स्त्री०) हरीतकी, हर्रे।
रसायनवर-(स० पु०) लहसुन।
रसायनवरा-(स०स्त्री०) काकजघा।
रसायनविज्ञान-(स० पु०) वैज्ञानिक उपाय से तत्वों का ज्ञान।
रसायनशास्त्र-(स०नपु०) देखो रसायन विज्ञान।
रसायनिक-(स०वि०) देखो रासायनिक
रसायनी-(सं० स्त्री०) वह औषधि जो बुढापे को रोकती या दूर करती है।
रसार्णव-(स०त्रि०) रस का सागर।
रसाल-(स० नपु०) बोल नामक गन्ध द्रव्य (पु०) ऊख, आम, कटहल, गेंहू, अमलवेत (त्रि०) रसीला, मीठा, स्वादिष्ट, सुन्दर, मनोहर, शुद्ध (स०पु०) राजस्व, खेराज।
रसालय-(सं०पु०) वह स्थान जहा पर अनेक प्रकार के रस बनाये जाते हों, आमोद प्रमोद का स्थान।
रसालस-(स०पु०) कौतुक, लीला।
रसालसा-(स०स्त्री०) गन्ना, गेंहू।
रसाला-(स०स्त्री०) रसना, जीभ, दाख।
रसालिका-(स० स्त्री०) मधुर, सरस, छोटा आम।
रसालेक्षु-(स०पु०) गन्ना, पौंढा।
रसाव-(हि० पु०) रसने की क्रिया या भाव।
रसावर, रसावल-(हि० पु०) देखो रसौर।
रसावा-(हिं०पु०) ऊख के रस को रखने का मिट्टी का बरतन।
रसाश-(स०पु०) मद्यपान, शराब पीना।
रसिआउर-(हि०पु०) ऊख के रस या गुड़ के शर्बत में पका हुआ चावल, एक प्रकार की गीत जो विवाह की एक रीति में गाई जाती है।

रसिक-(सं० पु०) सारस पक्षी, घोड़ा, हाथी, एक प्रकार का छन्द (वि०) जो रस का स्वाद लेता हो, जिसको रस संबंधी बातों में विशेष आनन्द आता हो, काव्यमर्मज्ञ, आनन्दी, प्रेमी, रसिया, सहृदय भक्त, भावुक।

रसिकता-(सं० स्त्री०) रसिक होने का भाव या धर्म, परिहास, हँसीठट्ठा।

रसिक विहारी-(सं० पु०) श्रीकृष्ण का एक नाम।

रसिका-(सं०स्त्री०) ईख का रस, जीभ, मैना पक्षी, दही का सिखरन।

रसिकाई-(हिं०स्त्री०) देखो रसिकता।

रसिकेश्वर-(सं० पु०) श्रीकृष्ण।

रसित-(सं० वि०) ध्वनि करता हुआ, रस युक्त, टपकता हुआ, मुलम्मा चढ़ा हुआ, (पु०) ध्वनि, शब्द, अंगूर की शराब।

रसिया-(हिं०पु०) रस लेने वाला, रसिक, एक प्रकार का गाना।

रसियाव-(हिं०पु०) ऊख के रस में पका हुआ चावल।

रसी-(हिं०पु०) देखो रसिक।

रसीद-(फा०स्त्री०) किसी वस्तु के प्राप्त होने या पहुचने की क्रिया प्राप्ति, वह प्रमाण रूप पत्र जिसमें किसी द्रव्य या वस्तु के मिलने की पहुच लिखी होती है।

रसील, रसीला-(हिं० वि०) रसयुक्त, रस भरा हुआ, भोग विलास का प्रेमी, व्यसनी, स्वादिष्ट, आनन्द लेने वाला, बांका, छबीला।

रसीलापन-(हिं०पुं०) रसीला होने का भाव या धर्म।

रसूम-(अ० पुं०) "रस्म" शब्द का बहुवचन, कानून, नियम, वह धन जो राज्य को कोई काम करने के बदले राजकीय नियमों के अनुसार दिया जाता है, वह नजराना जो किसान ज़मीदार को देता है, नेग, भेंट।

रसूल-(अ०पु०) ईश्वर का दूत, पैगम्बर।

रसूली-(अ०वि०) रसूल संबंधी।

रसेन्द्र-(सं०पु०) पारद, पारा।

रसेन्द्रवेधक-(सं० नपु०) सुवर्ण, सोना।

रसेस-(हिं०पु०) पारद, पारा, श्रीकृष्ण।

रसेश्वर दर्शन-(सं०नपु०) एक दर्शन शास्त्र जो प्रसिद्ध षड्दर्शन के अन्तर्गत नहीं है।

रसोइया-(हिं०पु०) रसोई बनाने वाला।

रसोई, रसौंई-(हिं०पु०) पकाया हुआ खाद्य पदार्थ, पाकशाला।

रसोईखाना, रसोईघर-(हिं० पुं०) वह स्थान जहां भोजन पकाया जाता है, पाकशाला।

रसोईदार-(हिं०पु०) रसोई बनाने वाला।

रसोईदारी-(हिं० स्त्री०) भोजन बनाने का काम।

रसोत-(हिं०स्त्री०) देखो रसौत।

रसोत्तम-(सं० पु०) श्रेष्ठ रस, पारा (नपु०) घी।

रसोत्पत्ति-(सं० पु०) शरीर मे रसों की वृद्धि।

रसोदर-(सं० नपु०) हिंगुल।

रसोद्भव-(सं०नपुं०) सिंगरिफ़, रसौत, (वि०) रस से उत्पन्न।

रसोन-(सं० पुं०) लशुन, लहसुन।

रसोपल-(सं०नपुं०) मौक्तिक, मोती।

रसोय-(हिं०स्त्री०) देखो रसोई।

रसोल्लास-(सं० पुं०) कामोद्दीपन, आठ सिद्धियों मे से एक।

रसौत-(हिं०स्त्री०) एक औषधि जो दारु-हल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी मे औटा कर तथा इसमे से निकले हुए रस को गाढा करके बनती है।

रसौती-(हिं० स्त्री०) एक विशेष प्रकार की धान की बोवाई।

रसौर-(हिं०पुं०) ऊख के रस में पकाया हुआ चावल।

रसौल-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की कटीली लता।

रसौली-(हिं० स्त्री०) वह रोग जिसमें आखों के ऊपर भौंवों के पास गिल्टी निकल आती है।

रस्ता-(हिं०पु०) देखो रास्ता।

रस्तवगी, रस्तोगी-(हिं० पु०) भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में रहने वाली बनिया जाति की एक शाखा।

रस्म-(अ० स्त्री०) रीत, रिवाज, परिपाटी, मेलजोल, चाल, राहरस्म-मेलजोल।

रस्मि-(हिं० स्त्री०) देखो रश्मि किरण।

रस्सा-(हिं० पु०) कई एक रस्सियों को एक मे बटकर बनी हुई मोटी रस्सी।

रस्सी-(हिं० स्त्री०) रज्जु, डोरी।

रस्सीबाट-(हिं०पु०) रस्सी बनाने वाला।

रहँकला-(हिं० पु०) एक प्रकार की हलकी गाड़ी, तोप लादने की गाड़ी, इस गाड़ी पर लदी हुई तोप।

रहँचटा-(हिं०पु०) मनोरथ सिद्धि की अभिलाषा, चसका।

रहँट-(हिं० पु०) कुए से पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र।

रहँटा-(हिं०स्त्री०) सूत कातने का चरखा।

रहँटी-(हिं० स्त्री०) कपास ओटने की चरखी।

रहचह-(हिं०स्त्री०) चिड़ियों का बोलना

रहठा-(हिं० पु०) रहर के पौधे का सूखा डठल।

रहण-(सं०नपु०) फेंकना, साथ छोड़ना।

रहन-(हिं० स्त्री०) रहने की क्रिया या भाव, रहने का ढग, व्यवहार।

रहन सहन-(हिं०स्त्री०) जीवन निर्वाह का एक ढग, चालचलन।

रहना-(हिं० क्रि०) स्थित होना, ठहरना, प्रस्थान न करना, रुकना, स्थापित होना, जीवित रहना, बचना, छूट जाना, निवास करना, बसना, कामकाज करना, मैथुन करना, नौकरी करना, चुपचाप समय बिताना, अस्थायी रूप मे रहना, टिकना, कोई काम करना बन्द करना, उपस्थित होना, थमना, छूट जाना, रह जाना रुक जाना, सफल न होना, रहा सहा-अवशिष्ट, बचा हुआ, रह-जाना-पीछे छूट जाना।

रहनि-(हिं०स्त्री०) आचरण, चाल ढाल, प्रेम, देखो रहन।

रहम-(अ० पुं०) अनुग्रह, दया, कृपा,

करुणा, गर्भाशय रहमदिल-दयालु।
रहमत-(अ०स्त्री०) कृपा, मेहरबानी।
रहमान-(अ०वि०) बड़ा दयालु (पु०) परमात्मा।
रहरू-(हि० स्त्री०) खाद ढोने की देहाती गाड़ी।
रहरेठा-(हि०पु०)देखो रहठा, कड़िया।
रहल-(अ०स्त्री०) एक विशेष प्रकार की छोटी चौकी जिसपर पढने के समय पुस्तक रक्खी जाती है खुलने पर इसका आकार होता है तथा बन्द होने पर चिपटी हो जाती है।
रहलू-हि०स्त्री०) देखो रहरू।
रहवाल-(फा०स्त्री०) घोड़े की एक चाल।
रहस-(हि०पु०) निर्जन स्थान, गुप्त भेद, छिपी बात, आनन्द, सुख, गूढ तत्व, योग, तन्त्र आदि की गुप्त बात, (स०पु०) समुद्र, स्वर्ग।
रहसना-(हि० क्रि०) आनन्दित होना, प्रसन्न होना।
रसबधावा-(हि०पु०) विवाह की एक रीति जिसमें नव विवाहिता बधू के बर के साथ घर आने पर गुरुजन उसका मुख देखते हैं और वस्त्र आभूषण आदि उपहार देते हैं।
रहसि-(हि० स्त्री०) एकान्त स्थान, गुप्त स्थान।
रहसू-(सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री।
रहस्य-(स० नपु०) गूढ तत्व, गुप्त भेद, मर्म की बात, भीतर की छिपी बात, हँसी मज़ाक, ठट्ठा।
रहाई-(हि० स्त्री०) रहने की क्रिया या भाव, चैन, आराम।
रहाऊ-(हि० स्त्री०) गीत में का टेक।
रहाना-(हि०क्रि०) रहना, होना।
रहावन-(हि० स्त्री०) वह स्थान जहा पर गाव भर के पशु इकट्ठा खड़े हों।
रहासहा-(हि० वि०) बचा हुआ।
रहित-(स०वि०) वर्जित, बिना, बगैर।
रहिला-(हि०पु०) चना।
रहीम-(अ० वि०) रहम करने वाला, कृपालु, दयालु, (पु०) ईश्वर का एक नाम, इस नाम का एक प्रसिद्ध कवि जिसके दोहे बड़े प्रसिद्ध हैं।
रहोगत-(स०वि०) निर्जन स्थान में स्थित
रांक-(हि०वि०) देखो रङ्क।
रांकड़-(हि०स्त्री०) ककरीली भूमि जिसमें बहुत कम अन्न पैदा होता है।
रांगड़ी-(हि०पु०)एक प्रकार का चावल।
रांगा-(हि० पु०) एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम होता है, इसका रङ्ग सफेद होता है।
रांच-(हि०अव्य०) देखो रञ्च।
रांचना-(हि०क्रि०) चाहना, प्रेम करना, रङ्ग चढ़ाना।
रांजना-(हि० क्रि०) आखों में काजल लगाना, रगना।
रांटा-(हि पु०) टिटिहरी नामक पक्षी।
रांड़-(हि० वि० स्त्री०) विधवा स्त्री, वेश्या, रण्डी।
रांढ-(हि०पु०) एक प्रकार का चावल।
रांढना-(हि०क्रि०) रोना।
राता-(वि० हि०) रागे का बना हुआ।
राध-(हि०पु०) निकट, पास, पड़ोस।
राधना-(हि०क्रि०)भोजन आदि पकाना।
रांधी-(हि० स्त्री०) मोचियों का एक औज़ार जो पतली खुरपी के आकार का होता है।
रांभना (हि०क्रि०) गाय का बोलना, रभाना।
रा-(स० स्त्री०) विभ्रम, दान, (पु०) शब्द, धन।
राआ-(हि०पु०) राजा।
राइ-(हि०पु०) छोटा राजा, राय,सरदार।
राइता-(हि०पु०) देखो रायता।
राइफल-(अ० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी बन्दूक।
राई-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों, बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण, (पु०) सर्वश्रेष्ठ, राजा, **राई नोन उतारना**-जिस बच्चे को नज़र लगी हो उसके ऊपर से राई नमक उतार कर अग्नि में डालना, **राई से पर्वत करना**-थोड़ी सी बात को बहुत बढा देना।
राउ-(हि० पु०) राजा, नृप।
राउत-(हि० पु०) राजवश का कोई पुरुष, वीर पुरुष, क्षत्रिय।
राउन्ड टेबुल कान्फरेन्स-(अ०स्त्री०) एक सभा जो गोलमेज के चारो ओर बैठ कर किसी महत्व के विषय पर विचार करती है।
राउर-(हि० पु०) अन्तःपुर, ज़नानखाना, (वि०) आपका, श्रीमान् का।
राउल-(हि०पु०) देखो राउत, राजा।
राकस-(हि०पु०) देखो राक्षस।
राकसिनी-(हि०स्त्री०) राक्षसी, निशाचरी
राका-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसको पहले पहल रजोदर्शन हुआ हो, पूर्णिमा की रात चन्द्रमा, शूर्पणखा की माता जो राक्षसी थी।
राकाचन्द्र-(सं०पु०) पूर्णिमा का चन्द्रमा
राकारमण-(स० पु०) पूर्ण चन्द्रमा।
राकिणी-(स० स्त्री०) देवी की एक शक्ति जो चौसठ योगिनी के अन्तर्गत है
राकेश-(सं० पु०) पूर्ण चन्द्रमा।
राक्षस-(सं०पु०) दैत्य, असुर, निशाचर, (नपु०) साठ सवत्सरों में उनचासवा सवत्, कुबेर के खज़ाने के रक्षक, कोई दुष्ट प्राणी, वह विवाह जिसमें युद्ध करके कन्या हरण की जाती है।
राक्षसग्रह-(सं० पु०) उन्माद रोग।
राक्षसता-(स० स्त्री०) राक्षस का भाव या धर्म।
राक्षसी-(स० स्त्री०) असुर की स्त्री, सन्ध्या काल।
रक्षासेन्द्र-(स०पु०) रावण।
राक्षा-(स० स्त्री०) लाक्षा, लाह।
राख-(हि०स्त्री०) भस्म, राख।
राखना-(हि०क्रि०) रक्षा करना बचाना, रखवाली करना, जाने न देना, रोक रखना, कपट करना, छिपाना, आरोप करना, बताना, देखो रखना।
राखी-(हि०स्त्री०) हाथ की कलाई पर बाधने का मगल सूत्र, रक्षाबन्धन का डोरा, देखो राख।

राग-(सं०पु०) अनुराग, मोह, चन्द्रमा, सूर्य, नाच, मात्सर्य, प्रीति, प्रेम, अभिमत विषय की अभिलाषा, सासारिक सुखों की अभिलाषा, ईर्ष्या, द्वेष कष्ट, पीड़ा, अनुराग, सिन्दूर, आलता, सगीत शास्त्र का राग, सुगन्धित लेप जो शरीर में लगायाजाता है, रग-विशेष कर लाल रंग, एक वर्णवृत्त का नाम **अपना राग अलापना**- अपने ही विषय की बातें करना।

रागद-(सं० वि०) राग देने वाला, क्रोध दिलाने वाला।

रागदालि-(स०पु०) मसूर।

रागना-(हि० क्रि०) अलापना, गाना गाना, रग जाना, अनुरक्त होना, प्रेम करना।

रागिनी-(हि०स्त्री०) सगीत में किसी राग की पत्नी।

रागपट्ट-(स० नपु०) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

रागपुष्प-(स०पु०) गुलदुपहरिया।

रागप्रसव-(स० पु०) गुल दुपहरिया।

रागबन्ध-(स०पु०) अनुराग का चिह्न।

रागमञ्जन-(स०पु०) एक विद्याधर का नाम।

रागमाला-(स०स्त्री०) रागों का समूह।

रागयुज-(स० पुं०) माणिक्य, मानिक।

रागलता-(स० स्त्री०) कामदेव की स्त्री रति।

रागलेखा-(सं० स्त्री०) चन्दन आदि का चिह्न।

रागविवाद-(स० पु०) गाली गलौज।

रागवृन्त-(स० पु०) कामदेव।

रागसारा-(स०स्त्री०) मैनसिल।

रागाङ्गी-(स० स्त्री०) मजीठ।

रागान्ध-(स०वि०) अति क्रोधी।

रागान्वित-(स०वि०) क्रोधी, जिसको राग या प्रेम हो।

रागी-(हि०स्त्री०) अनुरक्त, विषय वासना में फँसा हुआ, अनुरागी, प्रेमी, एक छन्द का नाम (वि०) रगने वाला, सुर्ख, रगा हुआ, (पु०) मड़ुवा नामक कदन्न (स्त्री०) देखो रानी।

रागिणी-(स० स्त्री०) सगीत में किसी राग की पत्नी, विदग्धा स्त्री, जय श्री, मेनका की बड़ी कन्या का नाम।

राघव-(स० पु०) रघु के वश मे उत्पन्न कोई व्यक्ति,श्रीरामचन्द्र, अज,दशरथ, समुद्र में रहने वाली एक बहुत बड़ी मछली।

राङ्कल-(स०पु०) वृक्ष या पौधे का काँटा

राचना-(हिं० क्रि०) रचना, बनाना, रचा जाना, बनना, रगा जाना, लीन या मग्न होना, शोभा देना, अच्छा जान पड़ना, प्रसन्न होना, सोच में पड़ना,अनुरक्त होना रजित होना,डूबना

राछ-(हि०पु०) जुलाहे के करघे का वह औजार जो ताने के तागे को उठाता और गिराता हैं, जलूस, बरात, लोहार का बड़ा हथौड़ा, चक्की के बीच का खूटा, लक्ड़ी के भीतर की हीर।

राछ बंधिया-(हि० पु०) राछ बाधने वाला मनुष्य।

राछस-(हिं०पुं०) देखो राक्षस।

राज-(हि०पु०) देश का अधिकार या प्रबन्ध, प्रजा पालन की व्यवस्था शासन, हुकूमत, पूर्ण अधिकार, अधिकार का काल, देश, जनपद, उतना भूमि भाग जितना एक राजा द्वारा शासित हो, राजा, मकान आदि बनाने वाला कारीगर, राजगीर, थवई, **राज काज**- राज्य का प्रबन्ध, **राज पर बैठना**- राज सिंहासन पर बैठना, **राज रजना**- बडे आनन्द से रहना, **राजपाट**- शासन व्यवस्था।

राज-(फ़ा०पु०) भेद,रहस्य, गुप्त बात।

राजक-(स०पु०)राजा(वि०)चमकानेवाला।

राज कथा-(स० स्त्री०) राजाओं का इतिहास।

राजकन्या-(स०स्त्री०) राजा की पुत्री।

राजकर-(स०पुं०) वह कर जो प्रजा से राजा को मिलता है।

राज करण-(स०पु०)न्यायालय,राजनीति

राजकर्ण-(स० पु०) हाथी का सूड़।

राज कर्ता-(स० पु०) वह पुरुष जो दूसरे को राजसिंहासन पर बैठता है।

राज कर्म-(स०पु०) राजा का कार्य।

राज कला-(स०स्त्री०)चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक।

राज कशेरु-(स० पु०) नागरमोथा।

राज कार्य-(स०नपु०) राजा का काम

राज कार्श-(स०नपु०) शाल वृक्ष।

राज काष्ठ-(स०नपु०)बक्कम की लकड़ी

राजकीय-(स० वि०) राजा सबधी, राज्य सबधी।

राजकुअर-(हि० पु०) राजकुमार।

राज कुमार-(स० पु०) राजा का पुत्र।

राज कुमारिका-(स०स्त्री०)राजा की पुत्री

राजकुल-(स०स्त्री०) राजवश, राजाओं का खानदान।

राज कुलक-(स०पु०) परवल की लता का नाम।

राजकृत-(स०वि०)राजा द्वारा किया हुआ

राज कृत्य-(स०नपु०) राजा का काम।

राज कोलाहल-(स० पु०) सगीत में एक ताल का नाम।

राजक्रिया-(स०स्त्री०) राज कार्य।

राजगद्दी-(हिं० स्त्री०) राजा के बैठने का आसन, राजसिंहासन, राज्याभिषेक

राज गवी-(स० स्त्री०) गाय की जाति का एक पशु।

राजगिरि-(स०पु०) मगध देश के एक पर्वत का नाम, देखो राजगृह।

राजगीर-(हिं०पु०) मकान बनाने वाला कारीगर, राज, थवई, **राजगीरी**- राजगीर का कार्य या पद।

राजगुरु-(स०पु०) राजा का गुरु या उपदेशक।

राज गृह-(स०पुं०) राज भवन, राजा का महल, बिहार प्रान्त के एक प्राचीन नगर का नाम, गिरि व्रज की प्राचीन राजधानी।

राज गेह-(स०नपु०)देखो राज भवन

राज चूडामणि-(स०पु०) सगीत में एक ताल का नाम।

राज तनय-(स०पु०) राजपुत्र।

राजतरङ्गिणी-(स० स्त्री०) कह्लण कवि कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध इतिहास जो संस्कृत में लिखा है।

राजतरु-(स०पु०) अमलतास।

राजतरुणी-(स०स्त्री०) एक प्रकार का सफेद गुलाब।

राजता-(स० स्त्री०) राजा होने का भाव, राजत्व, राजा का पद।

राजताल-(स० पु०) सुपारी का पेड़।

राजतिमिश-(स०पु०) तरबूज।

राजतिलक-(हिं० पु०) किसी नये राजा के राजसिंहासन पर बैठने का सस्कार, राज्याभिषेक।

राजत्व-(स० नपु०) राजता, राजा का पद, राजा का भाव या कर्म।

राजदण्ड-(स० पु०) राजशासन, वह दण्ड जो राजा की आज्ञा के अनुसार दिया जाय।

राजदन्त-(स० पु०) दातों की पक्ति के बीच का वह दात जो और दातों से बड़ा और चौड़ा होता है।

राजदर्शन-(स० नपु०) राजा का दर्शन।

राजदुहिता-(स०स्त्री०) राजा की कन्या।

राजदूत-(स० पु०) वह पुरुष जो एक राज्य की ओर से अन्य राज्य में किसी प्रकार का सदेश लेकर भेजा जाता है।

राजद्रुम-(सं० पुं०) अमलतास।

राजद्रोह-(सं० नपु०) राजा अथवा राज्य के प्रति किया हुआ द्रोह।

राजद्रोही-(स०वि०) बागी।

राजद्वार-(स० नपु०) राजा का द्वार, राजा की ड्योढी, विचारालय,न्यायालय।

राजधर्म-(स० पु०) राजा का कर्तव्य, राजा का धर्म।

राजधानी-(स० स्त्री०) वह प्रधान नगर जहा किसी देश का राजा या शासक रहता है, शासनकेन्द्र।

राजधुर-(स० पु०) शासन का भार।

राजनय-(सं० पु०) राजनीति।

राजना-(हिं०क्रि०) विराजना, उपस्थित होना, शोभित होना, सोहना।

राजनीति-(स० स्त्री०) वह नीति जिसके अनुसार राजा अपने राज्य का शासन तथा प्रजा की रक्षा करता है।

राजनीतिक-(स०वि०) राजनीति सबधी।

राजनील-(सं०नपु०) मरकतमणि,पन्ना।

राजन्य-(स० पु०) क्षत्रिय, राजपुत्र, अग्नि, खिरनी का वृक्ष।

राजन्यक-(स०नपु०) क्षत्रियों का समूह।

राजन्यत्व-(स० नपु०) क्षत्रिय का भाव या धर्म।

राजन्यबन्धु-(स० पु०) क्षत्रिय।

राजपंखी-(हि० पु०) राजहस।

राजपथ-(हिं० पु०) देखो राजपथ।

राजपट्ट-(स० पु०) चुम्बक पत्थर।

राजपति-(स०पु०) राजाधिराज,सम्राट्।

राजपत्नी-(स०स्त्री०) राजा की पत्नी।

राजपथ-(सं० पु०) वह चौड़ा मार्ग जिसपर हाथी घोडे रथ आदि सुगमता से चल सकते हों, राजमार्ग।

राजपद्धति-(स० स्त्री०) राजनीति।

राजपाल-(स० पु०) वह जिससे राजा या राज्य की रक्षा होती हो।

राजपुत्र-(स० पु०) राजा का पुत्र, युवराज, एक वर्णसकर जाति का नाम बुध ग्रह, बडे आम का एक भेद, खिरनी का पेड़।

राजपुत्रा-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पुत्र राजा हो।

राजपुत्री-(स० स्त्री०) राजकन्या, जूही का फूल, मालती।

राजपुरुष-(स० पु०) राज्य का कोई अफसर।

राजपुष्प-(स० पु०) कनकचम्पा।

राजपुष्पी-(स० स्त्री०) वनमल्लिका, जातीपुष्प।

राजपूजित-(स० पु०) राजा की ओर से जिसका सत्कार होता हो।

राजपूज्य-(स०वि०) राजा का पूजनीय।

राजपूत-(हि० पु०) राजपूताना निवासी क्षत्रिय वर्णात्मक जाति विशेष।

राजप्रकृति-(स०स्त्री०)राजा का स्वभाव।

राजप्रिय-(स०पु०) राजा का प्रिय पात्र।

राजप्रिया-(स० स्त्री०) लाल रग का एक प्रकार का धान।

राजफल-(स० नपु०) एक प्रकार का बड़ा आम।

राजफला-(स० स्त्री०) जबू, जामुन।

राजबदर-(स० नपु०) लाल आमला।

राजबाड़ी-(हि० स्त्री०) राजमहल।

राजबाहा-(हि० पु०) प्रधान या बड़ी नहर जिससे अनेक छोटी छोटी नहरें खेतो को सींचने के लिये निकाली जाती हैं।

राजभक्त-(स० वि०) राजा का भक्त, जिसमे राजा या राज्यके प्रति भक्ति हो।

राजभक्ति-(स० स्त्री०) राजा या राज्य के प्रति भक्ति।

राजभट-(स० पु०) राजसैनिक।

राजभद्रक-(स० पु०) फरहदक का वृक्ष, कुदरू, नीम।

राजभय-(स०पु०)राजा का भय या डर।

राजभवन-(स०नपु०) राजा का महल।

राजभाण्डार-(स०पु०)राजा का खजाना।

राजभूय-(स०नपु०) राजत्व, राज्य।

राजभृत-(स० पु०) राजा का वेतन भोगी नौकर।

राजभृत्य-(स०पुं०) राजा का नौकर।

राजभोग-(सं० पु०) एक प्रकार का महीन धान, जिन उत्तम वस्तुओं का उपभोग राजा करते हैं।

राजभोगी-(स० वि०) उत्तम भोजन करने वाला।

राजभोग्य-(१, स० वि०) राजा के भोजन योग्य, (पु०) एक प्रकार का धान, चिरौंजी।

राजभोजन-(स०नपु०) राजा का भोजन।

राजभ्रातृ-(स०पु०) राजा का भाई।

राजमण्डल-(सं० पु०) किसी बडे राज्य के आसपास का राज्य।

राजमण्डूक-(स० पु०) एक प्रकार का बड़ा मेढक।

राजमणि-(स० पु०) बहुमूल्य रत्न।

राजमन्दिर-(स० नपु०) राजभवन।

राजमराल-(स० पुं०) राजहस।

राजमहल-(हिं०पु०) राजा का महल।
राजमाता-(सं०स्त्री०) राजा की माता।
राजमानुष-(सं० पु०) वह मनुष्य जो राजा के अधीन हो।
राजमार्ग-(सं०पु०)राजपथ, चौड़ी सड़क
राजमाष-(सं० पु०) बड़ा उड़द।
राजमुनि-(सं०पु०) राजर्षि।
राजयक्ष्मा-(हिं०पु०) क्षयरोग, तपेदिक।
राजयज्ञ-(सं० पु०) राजा का किया हुआ यज्ञ।
राजयान-(सं० नपुं०) वह सवारी जो राजा के लिये हो, राजा का जलूस।
राजयोग-(सं०पु०) ज्योतिष के अनुसार वह योग जिसके रहने से मनुष्य राजा के समान धनवान् और प्रतापी होता है, योग शास्त्र में बतलाया हुआ योग के विषय का उपदेश।
राजयोग्य-(सं०वि०) राजा के योग्य।
राजरङ्ग-(सं०नपुं०) रजत, चाँदी।
राजरथ-(सं० पु०) राजा का रथ।
राजराज-(सं० पु०) अधिराज, राजाओं का राजा, चन्द्रमा, कुबेर।
राजराजेश्वर-(सं० पु०) अधिराज, राजाओं का राजा।
राजराजेश्वरी-(सं० स्त्री०) महाराज्ञी, दश महाविद्याओं में से एक का नाम, भुवनेश्वरी।
राजराजता-(सं०स्त्री०) राजा का पद, साम्राज्य।
राजरानी-(हिं०स्त्री०) राजमहिषी, राज्ञी।
राजरोग-(हिं०पु०) राजयक्ष्मा, क्षयरोग।
राजर्षि-(सं०पु०) वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो।
राजल-(हिं० पु०) एक प्रकार का अगहनियाँ धान।
राजलक्षण-(सं० नपुं०) सामुद्रिक के अनुसार वे लक्षण जो मनुष्य का राजा होना सूचित करते हैं।
राजलक्ष्म-(सं०पु०)राजचिह्न, युधिष्ठिर।
राजलक्ष्मी-(सं० स्त्री०) राजश्री, राज वैभव, राजा की शोभा।
राजलिङ्ग-(सं०नपुं०) राजचिह्न।

राजवंत-(हिं०वि०)राजा के कर्म से संयुक्त।
राजवंश-(सं० पु०) राजा का कुल, राजा का वंश।
राजवंश्य-(सं० वि०) राजा के वंश में उत्पन्न।
राजवत्-(सं०अव्य०) राजा के समान।
राजवर्त्म-(सं०नपुं०) राजपथ, चौड़ी सड़क।
राजवल्लभ-(सं० वि०) राजप्रिय।
राजवल्ली-(सं०स्त्री०) करैले की लता।
राजवसति-(सं० स्त्री०) राजभवन।
राजवार-(हिं० पुं०) राजद्वार।
राजवारुणी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की मदिरा।
राजवाह-(सं० पुं०) घोड़ा।
राजवाह्य-(सं० पु०) राजा की सवारी का हाथी।
राजविजय-(सं०पु०) संपूर्ण जाति का एक राग।
राजविद्या-(सं० स्त्री०) राजनीति।
राजविद्रोह-(सं०पु०)राजविप्लव, बलवा।
राजविद्रोही-(सं० पु०) राजा से विद्रोह करने वाला।
राजविनोद-(सं०पु०) संगीत के अनुसार एक ताल का नाम।
राजवीथी-(सं०स्त्री०) चौड़ी सड़क।
राजवृक्ष-(सं० पु०) पियाल का पेड़।
राजवृत्त-(सं०नपुं०) राजा का चरित्र।
राजवेश्म-(सं०नपुं०) राजा का भवन।
राजवेष-(सं०पु०) राजा का पोशाक।
राजशाक-(सं० पु०) बथुआ का साग।
राजशालि-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का धान।
राजशासन-(सं०नपुं०) राजा का शासन।
राजशास्त्र-(सं० नपुं०) नीतिशास्त्र।
राजशुक-(सं०पु०) लाल रंग का बड़ा तोता, नूरी।
राजश्री-(सं० स्त्री०) राजा का ऐश्वर्य, राजलक्ष्मी, राजा की शोभा।
राजस-(सं०वि०) वह शक्ति जो गुण से उत्पन्न हो, आवेश, क्रोध।
राजसत्ता-(सं०स्त्री०) राजशक्ति, राज्य की सत्ता।

राजसत्व-(सं०नपुं०) राजसत्ता, राजशक्ति
राजसदन, राजसद्म-(सं० नपुं०) राजा का घर।
राजसभा-(सं०स्त्री०) वह सभा जिसमें अनेक राजे बैठे हों, राजदरबार।
राजसमाज-(सं० पु०) राजमण्डली, राजाओं का दरबार।
राजसर्प-(सं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा सर्प।
राजसात्-(सं० अव्य०) राजा के अधिकार में।
राजसारस-(सं०पु०) मयूर, मोर।
राजसिंहासन-(सं०पुं०) राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी।
राजसिक-(सं० वि०) रजोगुण से उत्पन्न, राजस।
राजसिरी-(हिं०स्त्री०) देखो राजश्री।
राजसी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, (वि०) राजा के योग्य, ठाटदार, भड़कीला, जिसमें रजोगुण की अधिकता हो।
राजसुत-(सं० पु०) राजा का लड़का, राजपुत्र।
राजसुता-(सं० स्त्री०) राजकन्या, राजा की लड़की।
राजसूनु-(सं० पु०) देखो राजपुत्र।
राजसूय-(सं० पु०) वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राट् को होता है।
राजसेवक-(सं० पु०) राजा की सेवा करने वाला भृत्य।
राजसेवा-(सं०स्त्री०) राजा की सेवा।
राजस्कन्ध-(सं०पु०) घोड़ा।
राजस्त्री-(सं० स्त्री०) राजमहिषी, रानी।
राजस्थान-(सं०पु०) राजपूताना।
राजस्व-(सं०पु०) भूमि आदि का वह कर जो राजा को दिया जाता है, मालगुजारी।
राजस्वामिन्-(सं० पु०) विष्णु।
राजहंस-(सं०नपुं०) एक प्रकार का हंस जिसको सोना पक्षी भी कहते हैं।
राजहर्म्य-(सं०पु०) राजा का महल।
राजा-(सं० पु०) नरपति, अधिपति,

बादशाह, मालिक, स्वामी, प्रेमपात्र, प्रिय व्यक्ति, एक उपाधि जो अंग्रेज़ सरकारकी ओर से रईस को दी जाती है।
राजाग्नि-(सं०पु०) राजा का कोप।
राजाङ्गन-(सं० नपु०) राजमहल का आंगन।
राजाज्ञा-(सं० स्त्री०) राजा की आज्ञा
राजादनी-(सं०स्त्री०) खिरनी का पेड़।
राजाद्रि-(सं०पु०)एक प्रकार का अदरख।
राजाधिकारी-(सं०पुं०) न्यायालय में बैठकर विचार करने वाला।
राजाधिकृत (सं०पु०)देखो राजाधिकारी।
राजाधिराज-(सं०पु०) अधिराज, राजाओं का राजा।
राजाधिष्ठान-(सं०पु०) किसी राजा की राजधानी।
राजाध्वन्-(सं० पुं०) राजमार्ग, चौड़ी सड़क।
राजानक-(सं०पु०) छोटा राजा।
राजाजीविन्-(सं०वि०) राजकार्य कर के अपनी जीविका चलाने वाला।
राजाभियोग-(सं०पु०)राजा का प्रजा से ज़बरदस्ती कोई काम कराना।
राजाभिषेक-(सं०पु०)राजा का अभिषेक जिसके होने पर वह राजदण्ड ग्रहण करता है।
राजाम्र-(सं०पु०)उत्तम जाति का आम।
राजाम्ल-(सं० पु०) अमलवेत।
राजार्ह-(सं० पु०) अगर, कपूर, जामुन का वृक्ष।
राजार्हण-(सं०नपु०) राजा का दान।
राजालुक-(सं०पुं०) मूली, मुरई।
राजावर्त-(सं०पु०) लाजवर्त नामक रत्न।
राजासन-(सं०नपु०) राजाओं के बैठने का आसन।
राजि-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, लकीर, कतार, सर्षप, राई।
राजिका-(सं०स्त्री०) पंक्ति, लकीर, राई, क्यारी, रेखा, लकीर।
राजिकाफल-(सं० पु०) लाल सरसों।
राजित-(सं० वि०) शोभा देता हुआ, विराजमान, मौजूद।
राजिव-(हि०पु०) देखो राजीव, कमल।
राजी-(सं०स्त्री०) निश्छिद्र पंक्ति, राई।
राजी-(अ०वि०) अनुकूल, बात मानने को तैयार, प्रसन्न, खुश, सुखी,आरोग्य, चंगा, (स्त्री०) अनुकूलता, रज़ामन्दी।
राजीखुशी-आरोग्य और सुखी।
राजीनामा-(फा०पुं०) स्वीकार पत्र, वह लिखित पत्र जिसके द्वारा वादी प्रतिवादी आपस में मेल या सुलह कर लेते हैं।
राजीफल--(सं०पु०) परवल।
राजीव-(सं० नपु०) पद्म, कमल, नील कमल, हाथी।
राजीवगण-(सं० पु०) एक प्रकार का मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह मात्रायें होती हैं, इसका दूसरा नाम माला है।
राजीवलोचन-(सं० वि०) कमल की तरह आंखों वाला।
राजीविनी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का कमल।
राजुक-(सं०पु०) मौर्य काल का एक कर्मचारी कायस्थ।
राजेन्द्र-(सं०पु०) राजश्रेष्ठ, राजाओं का राजा, सामन्त।
राजेय-(सं०पु०) परवल।
राजेश्वर-(सं०पु०) राजाओं में श्रेष्ठ।
राजेष्ट-(सं०पु०) लाल रंग का प्याज़।
राजेष्टा-(सं०स्त्री०) पिंडखजूर।
राजोपकरण-(सं० नपुं०) राजाओं के लक्षण।
राजोपजीवी-(सं० पुं०) राजकर्मचारी, जिसकी जीविका राजा की सेवा से चलती हो।
राजोपसेवी-(सं०पु०) राजा का सेवक।
राजोपसेवा-(सं०स्त्री०) राजा की सेवा।
राज्ञी-(सं०स्त्री०) राजपत्नी, रानी, कांसा, नील का पेड़।
राज्य-(सं० नपु०) राजत्व, राजा का काम, राष्ट्र, जनपद, बादशाहत।
राज्यकर-(सं०पुं०) राज्यशासन।
राज्यकर्ता-(सं०पु०) राज्य के शासन विभाग का कर्मचारी।
राज्यकृत्-(सं०पु०) राज्य का शासक।
राज्यच्युत-(सं० वि०) राजसिंहासन से उतारा हुआ।
राज्यच्युति-(सं०स्त्री०)राजा का राजगद्दी से उतार दिया जाना।
राज्यतन्त्र-(सं०नपु०) राज्य की शासन प्रणाली।
राज्यदेवी-(सं०स्त्री०) राजकुल देवी।
राज्यद्रव्य-(सं० नपु०) राजतिलक की सामग्री।
राज्यधर-(सं० पु०) राज्यपालक।
राज्यपरिभ्रष्ट-(सं०वि०) राज्यच्युत।
राज्यपाल-(सं०पु०) राजा।
राज्यप्रद-(सं०वि०) राज्य देने वाला।
राज्यभङ्ग-(सं०पु०) राज्य का नाश।
राज्यभार-(सं०पु०) राज्य के शासन का भार।
राज्यभेदकर-(सं०वि०) राज्य का नाश करने वाला।
राज्यभोग-(सं०पु०) राज्यशासन।
राज्यभ्रंश-(सं०पु०) राज्य का नाश।
राज्यभ्रष्ट-(सं०पु०) देखो राज्यच्युत।
राज्यरक्षा-(सं०स्त्री०) राज्य की रक्षा का कार्य।
राज्यलक्ष्मी-(सं०स्त्री०) विजय, कीर्ति।
राज्यलीला-(सं०स्त्री०) राजा का खेल।
राज्यलोभ-(सं०पु०) राज्य प्राप्त करने की आकांक्षा।
राज्यवर्धन-(सं०पुं०) राज्य की वृद्धि करने वाला राजा।
राज्यव्यवस्था-(सं० स्त्री०) राज्य का शासन करने का नियम।
राज्यव्यवहार-(सं०पु०) राजकार्य।
राज्यश्री-(सं०स्त्री०) राजलक्ष्मी।
राज्यसभा-(सं० स्त्री०) राज्य की व्यवस्थापक सभा।
राज्य सुख-(सं० नपु०) राजत्व का आनन्द।
राज्यस्थ-(सं०वि०) राज्य में स्थित।
राज्यस्थायी-(सं० वि०) शासन करने वाला।

राज्यस्थिति-(सं० स्त्री०) राज्य का शासन हाथ में लेना।

राज्यहार-(सं०वि०) राज्य का नाश करने वाला।

राज्याङ्ग-(सं०नपुं०) राज्य के सूचक आठ अंग यथा-स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, बल और सुहृद।

राज्याधिकार-(सं० पुं०) राज्य का अधिकार।

राज्याधिपति-(सं०पुं०) राज्य का अधिपति, राजा।

राज्याभिषिक्त-(सं० वि०) जिसका राज्याभिषेक हुआ हो।

राज्याभिषेक-(सं० पुं०) किसी नये राजा का राजसिंहासन पर बैठाया जाना, राजगद्दी।

राज्येश्वर-(सं० पुं०) राज्याधिपति।

राज्यैश्वर्य-(सं०नपुं०)राज्य रूप ऐश्वर्य।

राज्योपकरण-(सं० नपुं०) राजचिह्न।

राट्-(सं० पुं०) राजा, बादशाह, सरदार, श्रेष्ठ पुरुष।

राटुल-(हिं०पुं०) लोहा लकड़ी आदि तौलने का बड़ा तराज़ू।

राठ-(सं० पुं०) मदन वृक्ष, (हिं०पुं०) राज्य, राजा।

राठवर-(हिं०पुं०) देखो राठोर।

राठोर-(हिं० पुं०) मारवाड़ वासी राजपूतों की एक शाखा।

राढ़-(हिं०वि०) नीच, निकम्मा।

राढ़-(हिं०स्त्री०)झगड़ा, तकरार,(वि०)नीच।

राढा-(सं०स्त्री०)शोभा, कान्ति, (हिं०पुं०) बंग देश के उत्तरी भाग का पुराना नाम।

राढीय-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मोटी घास।

राणा-(हिं०पुं०) राजा, इस शब्द का प्रयोग राजपूताना के कुछ रियासतों तथा नैपाल के सरदारों के लिये प्रयोग होता है।

राणिका-(सं० स्त्री०) घोडे की लगाम।

रातंग-(हिं०पु०) गृध्र, गीध।

रात-(हिं० स्त्री०) रात्रि, रजनी, निशा, सन्ध्या से प्रातःकाल का समय,

रातदिन-सर्वदा।

रातना-(हिं० क्रि०) अनुरक्त होना, रंगा जाना।

राता-(हिं० वि०) रंगा हुआ, लाल रङ्ग का।

रातिचर-(हिं०पुं०)-निशाचर, राक्षस।

रातिब-(अ० पुं०) पशुओं का दैनिक भोजन।

रातुल-(सं०पुं०) शुद्धोदन के एक पुत्र का नाम।

रांगा-(हिं०वि०) लाल रङ्ग का।

रातेल-(हिं० पुं०) लाल रङ्ग का एक छोटा कीड़ा।

रात्र-(सं०नपुं०)रात्रि,रात, निशा,रजनी।

रात्रि-(सं०पुं०) हल्दी, रजनी, रात।

रात्रिक-(सं०पुं०)एक प्रकार का बिच्छू।

रात्रिकर-(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर।

रात्रिकाल-(सं० पुं०) रजनी, रात।

रात्रिकृत्य-(सं०त्रि०) रात में किया जाने वाला कार्य।

रात्रिचर-(सं०पुं०) राक्षस।

रात्रिचर्या-(सं० स्त्री०) रात में करने का कर्तव्य।

रात्रिचारी-(सं० पुं०) रात को विचारने वाला।

रात्रिज-(सं० नपुं०) नक्षत्र, तारे आदि।

रात्रिजल-(सं०नपुं०) कुहरा।

रात्रि जागरण-(सं०नपुं०) रतजगा।

रात्रिजागरद-(सं०पुं०) मशक, मच्छड़।

रात्रिञ्चर-(सं० पुं०) निशाचर, राक्षस।

रात्रिञ्चरी-(सं० स्त्री०) राक्षसी।

रात्रितरा-(सं० स्त्री०) गहरी रात।

रात्रितिथि-(सं० स्त्री०) शुक्ल पक्ष की रात।

रात्रिदोष-(सं०पुं०) रात में होने वाला अपराध।

रात्रिनाशन-(सं०पुं०) सूर्य।

रात्रिन्दिव-(सं०नपुं०) दिन और रात।

रात्रिपुष्प-(सं०नपुं०) कमल।

रात्रिपूजा-(सं० स्त्री०) रात में करने का पूजन।

रात्रिबल-(सं०पुं०) राक्षस, (वि०) रात में बलवान्।

रात्रिभोजन-(सं०पुं०) रात में खाना।

रात्रिभट-(सं०पुं०) राक्षस, (वि०) रात में विचरने वाला।

रात्रिमणि-(सं०पुं०) चन्द्रमा, निशाकर।

रात्रिम्मन्य-(सं०वि०) रात्रि का ज्ञान।

रात्रियोग-(सं०पुं०) रात्रि का आगमन।

रात्रिरक्षक-(सं० पुं०) रात का पहरा।

रात्रिराग-(सं०पुं०) अन्धकार, अन्धेरा।

रात्रिवासस्-(सं०नपुं०) देखो रात्रिराग।

रात्रिविगम-(सं०पुं०) प्रभात, सवेरा।

रात्रिवेद-(सं०पुं०) कुक्कुट, मुर्गा।

रात्रिहास-(सं०पुं०) कुमुदिनी, कोईं।

रात्रिहिण्डक-(सं० पुं०) राजाओं के जनानखाने का रक्षक, (पहरेदार)।

रात्री-(सं०स्त्री०) रात, हलदी।

रात्र्यट-(सं०पुं०) राक्षस, (वि०) रात में घूमने वाला।

रात्र्यन्ध-(सं०वि०) जिसको रात में देख न पड़ता हो, रात्रिरक्षक-रात का पहरा।

रात्र्यन्धता-((सं०स्त्री०)रतौंधी का रोग।

राद्ध-(सं० वि०) पकाया हुआ, ठीक किया हुआ।

राध-(हिं० स्त्री०) पीब, मवाद।

राधन-(सं० नपुं०) साधने की क्रिया, सन्तोष, तुष्टि, प्राप्ति, साधन।

राधना-(हिं० क्रि०) सिद्ध करना, पूरा करना, साधना, काम निकालना,आराधना करना, पूजा करना।

राधरङ्क-(सं० पुं०) थोड़ी वृष्टि होना, पाला गिरना।

राधा-(सं०स्त्री०)विशाखा नक्षत्र,बिजली। वैशाख की पूर्णिमा, प्रीति, श्रीराधिका, वृषभानु गोप की कन्या, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तेरह अक्षर होते हैं।

राधाकान्त-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।

राधाकृष्ण-(सं०पुं०) राधा और कृष्ण।

राधातनय-(सं० पुं०) कर्ण।

राधा मोहन-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।

राधारमण-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।

राधावल्लभ-(स०पु०) श्रीकृष्ण ।
राधावल्लभी-(स०पु०) वैष्णवों का एक सम्प्रदाय ।
राधा विनोद-(स०पु०) श्रीकृष्ण ।
राधासुत-(स०पु०) कर्ण ।
राधिक-(स० पु०) राजा जयसेन का पुत्र ।
राधिका-(स०स्त्री०) श्रीकृष्ण की प्रेमिका, वृषभानु गोप की कन्या, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बाईस मात्राएँ होती हैं ।
राधेय-(स० पु०) कर्ण ।
राधेश, राधेश्वर-(स० पु०) श्रीकृष्ण ।
राध्य-(स०वि०)-स्तुति करने योग्य ।
रान-(फा०स्त्री०) जघा, जाँघ ।
रानतुरई-(हि० स्त्री०) कडुई तरोई ।
राना-(हि० पु०) देखो राणा (क्रि०) अनुरक्त होना ।
रानापति-(हि० पु०) सूर्य ।
रानी-(हि० स्त्री०) राजा की पत्नी, राजा की स्त्री, स्वामिनी, मालकिन, स्त्रियों के लिये आदर सूचक शब्द ,
रानीकाजर-(हि०पु०)एक प्रकार का धान
रापी-(हि०स्त्री०)चमारों का चमड़ा साफ करने का एक औजार ।
राब-(हि०स्त्री०) आच सर औटा कर खूब गाढा किया हुआ गन्ने का रस ।
राबड़ी-(हि० स्त्री०) औटा कर तथा चीनी मिला कर गाढा किया हुआ दूध, बसौंधी ।
राबना-(हि०क्रि०) खेत में खाद देने की एक विशेष विधि ।
राभस्य-(स०नपु०) आग्रह, हठ, आनन्द
राम-(स० वि०) सुन्दर, सफेद (पु०) परशुराम, सूर्यवंशीय राजा दशरथ के पुत्र जो अवतार माने जाते हैं, कृष्ण के बडे भाई बलराम, अशोक वृक्ष, वरुण, घोड़ा, तीन की संख्या, एक मात्रिक छन्द , राम राम करना-अभिवादन या प्रणाम करना, राम नाम जपना , राम राम करके-किसी न किसी प्रकार से, बड़ी कठिनाई से, रामराम होना-मर जाना ।
रामकजरा-(हि० पु०) एक प्रकार का धान ।
रामकली-(स० स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।
रामकोटा-(हि० पु०) एक प्रकार का बबूल ।
रामकिरि-(स० स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।
रामकुमार-(स० पु०) लव और कुश ।
रामकृष्ण-(सं० पु०) बलराम और श्रीकृष्ण ।
रामकेला-(हि० पु०) एक प्रकार का बढिया केला, एक प्रकार का बढिया आम ।
रामगीती-(स०पु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में छब्बीस मात्रायें होती हैं
रामचक्र-(स० नपु०) पीठी का वरा, लिट्टी ।
रामचन्द्र-(स० पु०) अयोध्या के राजा इक्ष्वाकुवंशीय महाराज दशरथ के पुत्र जो विष्णु के एक अवतार माने जाते हैं।
रामचर-(स० पु०) बलराम ।
रामचरित-(स० नपु०) दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र की जीवनी ।
रामचिड़िया-(स० स्त्री०) मछरगा नामक पक्षी ।
रामज-(स० पु०) राम के पुत्र ।
रामजननी-(स० स्त्री०) बलदेव जी की माता, रामचन्द्रकी माता कौशल्या।
रामजना-(हि० पु०) एक सकर जाति जिसकी कन्यायें वेश्या वृत्ति करती हैं , वर्णसंकर ।
रामजनी-(हि० स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
रामजमानी-(हि० पु०) एक प्रकार का बहुत बारीक चावल ।
रामजौ-(हि० पु०) एक प्रकार की जई ।
रामझोल-(हि० स्त्री०) पैर में पहरने की पाजेब ।
रामटोडी-(स० स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।
रामठ-(स०नपु०) अखरोट का वृक्ष ।
रामठी-(स० स्त्री०) हींग ।
रामण-(स०पु०) तेंदू का वृक्ष ।
रामणीयक-(स० नपु०) रमणीयता, मनोहरता (वि०) सुन्दर, रमणीक ।
रामतरुणी-(स०स्त्री०)रामकी पत्नी सीता
रामतरोई-(हि० स्त्री०) भिंडी नामकी तरकारी ।
रामता-(स० स्त्री०) राम का गुण ।
रामतारक-(स०पुं०) 'रां रामाय नमः" मन्त्र जिसको रामके उपासक जपते हैं ।
रामत्व-(स० नपु०) देखो रामता ।
रामति-(हि०स्त्री०) भिक्षार्थ भ्रमण ।
रामदल-(स० पु०) श्रीरामचन्द्र की बन्दरों की सेना , ऐसी प्रबल सेना जिसको हराना कठिन हो ।
रामदाना-(हि० पु०) मरसे या चौराई की जाति का एक पौधा जिसमें बहुत छोटे सफेद दाने लगते हैं ।
रामदास-(स० पु०) हनुमान् , एक प्रकार का धान, शिवाजी के गुरु जो एक बडे महात्मा थे ।
रामदूत-(स०पु०) हनुमान जी ।
रामदूती-(स० स्त्री०) एक प्रकार की तुलसी ।
रामदेव-(स०पु०) रामचन्द्र ।
रामद्वादशी-(स०स्त्री०) जेठसुदी द्वादशी
रामधाम-(स०पु०) साकेत लोक जहा भगवान् नित्य रामरूप में विराजमान माने जाते हैं ।
रामनतुआ-(हि० पु०) घीया, कद्दू ।
रामनवमी-(स० स्त्री०) चैत्र शुक्ला नवमी जिस दिन रामचन्द्र का जन्म हुआ था ।
रामना-(हिं०क्रि०) देखो रमना ।
रामनामी-(हि० पु०) वह चादर या दुपट्टा जिसपर 'राम राम' छपा रहता है, एक प्रकार का गले का हार जिसके बीच के पान में 'राम' अकित रहता है
रामनौमी-(हि०स्त्री०) देखो रामनवमी ।
रामपात-(हि०पुं०) नील की जाति का एक पौधा ।
रामग-(सं०पु०) चिकनी सुपाड़ी ।

रामफल-(हि० पु०) सीताफल, शरीफा।
राम घॅटाई-(हि० स्त्री०) आधे आध का विभाग।
रामबास-(हि० पु०) एक प्रकार का मोटा बास जो पालकी के डडे बनाने के काम में आता है, केवडे की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियों के रेशे से रस्से बनाये जाते हैं।
रामविलास-(हि०पु०) एक प्रकार का धान
रामभक्त-(स० पु०) रामचन्द्र का उपासक, हनुमान्।
रामभद्र-(स० पु०) श्रीरामचन्द्र।
रामभोग-(हि० पु०) एक प्रकार का चावल, एक प्रकार का आम।
रामरक्षा-(स०पु०) रामजी का एक स्तोत्र
रामरज-(स०स्त्री०) एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं
रामरतन-(हि०पु०) चन्द्रमा।
रामरस-(हि०नपु०) नमक, पीसी हुई भाग
रामराज्य-(स० पु०) रामचन्द्र का शासन जो प्रजा के लिये "अत्यन्त सुखदायक था।
रामराम-(हि० पु०) प्रणाम, नमस्कार, भेंट, मुलाकात।
रामल-(सं०वि०) रमल सबधी।
रामलक्ख-(स० नपु०) साम्हर नोन।
रामलीला-(स०स्त्री०) रामजी के जीवन काल के किसी कृत्य का अभिनय या नाटक, एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्रायें होती हैं
रामवाण-(हि० पु०) एक प्रकार की ऊख (वि०) जो तुरत उपयोगी सिद्ध हो, तुरत प्रभाव दिखलाने वाली (औषधि)
रामशर-(स० पु०) एक प्रकार का सरकडा जो ऊख के खेत में आप से आप उगता है।
रामशिला-(स० स्त्री०) गया की एक पहाड़ी जिसको लोग तीर्थ मानते हैं।
रामश्री-(स० पु०) एक राग का नाम।
रामसंठा-(हि० पु०) एक प्रकार की घास
रामसखा-(स० पु०) सुग्रीव।
रामसनेही-(हि० पु०) एक वैष्णव सम्प्रदाय, (वि०) रामभ ।
रामसुंदर-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की नाव
रामसेतु-(स० पु०) दक्षिण भारत की अन्तिम सीमा पर रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।
रामसेनक-(स० पु०) कटहल।
रामसेवक-(स० पु०) रामचन्द्र का उपासक।
रामा-(स० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, अच्छा गाना गाने वाली स्त्री, हींग, ईंगुर, सफेद भटकटैया, आर्या छन्द का एक भेद, कातिक बदी एकादशी, उपजाति वृत्त का एक भेद, शीतला, गोरोचन, घीकुआर, अशोक, गेरू, तमाखू, सीता, रुक्मिणी, लक्ष्मी, राधा, आठ अक्षरों का एक वृत्त।
रामातुलसी-(स० स्त्री०) एक प्रकार की तुलसी।
रामानन्द-(स० पु०) एक वैष्णव धर्म प्रचारक साधु, रामानन्दी-इस सम्प्रदाय का अनुयायी।
रामानुज-(स०पु०) रामचन्द्र जी के छोटे भाई लक्ष्मण, वैष्णव सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध आचार्य, इनका सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत वेदान्त कहलाता है।
रामायण-(स०नपु०) वाल्मीकि ऋषि का संस्कृत में रचा हुआ भारत वर्ष का आदि काव्य।
रामायणीय-(स०वि०) रामायण की कथा कहने वाला।
रामायन-(हि०पु०) देखो रामायण।
रामावत-(स०पु०) रामानन्द का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय।
रामिल-(स०पु०) रमण, कामदेव, पति।
रामेश्वर-(स०पु०) दक्षिण भारत के समुद्र तट पर का एक स्थान जहा पर श्रीरामचन्द्र का स्थापित एक शिवलिङ्ग है।
राय-(स०पु०) छोटा राजा या सरदार, वन्दीजन, भाट, गन्धर्वों की एक उपाधि, (फा०स्त्री०) सम्मति, सलाह।
रायज-(अ०वि०) जो व्यवहार में आ रहा हो, प्रचलित, चलनसार।
रायण-(स०नपु०) क्रन्दन, रोना, चीत्कार।
रायता-(हि०पु०) दही में मिलाया हुआ साग, कुम्हड़ा, लौवा, बु दिया आदि जिसमें नमक मिर्च आदि मिलाया रहता है।
रायबहादुर-(फा० पु०) एक उपाधि जो रईसों जमींदारों या सरकारी कर्मचारियों को भारत सरकार की ओर से दी जाती है।
रायबेल-(हिं०स्त्री०) सुगन्धित फूलों की एक प्रकार की लता।
रायभोग-(हिं० पु०) देखो राजभोग, एक प्रकार का धान।
रायमुनी-(हि०स्त्री०) लाल नामक पक्षी की मादा, सदिया।
रायरायान-(फा०पु०) राज्याधिराज।
रायरासि-(हि०स्त्री०) राजा का कोष।
रायल-(अ०वि०) राजकीय, शाही, कागज की एक नाप जो २६ इञ्च लबा और २० इञ्च चौड़ा होता है।
रायवाघिनी-(स०स्त्री०) प्रचण्डा, कलहप्रिया रमणी।
रायसा-(हिं०पु०) वह काव्य जिसमें किसी राजा का जीवन चरित्र वर्णित हो, रासो।
रायसाहब-(फा०पु०) रईसों, जमींदारों तथा सरकारी कर्मचारियों को भारत सरकार की ओरसे दी हुई एक उपाधि, जो 'रायबहादुर' से छोटी होती है।
रायस्काम-(स० वि०) धन की इच्छा करने वाला।
रायस्पोष-(स०वि०) धनवान्, अमीर।
रार-(हिं०पु०) झगड़ा, हुज्जत, तकरार।
रारा-(स०पु०) ज्योति, प्रकाश।
राल-(स०पु०) धूनाका वृक्ष, वह तरल गोंद जो इस वृक्ष से निकाला जाता है, (हि०पु०) एक प्रकार का कबल (स्त्री०) पतला लसदार थूक, लार।
राली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बाजरा।
राव-(स०पु०) ध्वनि, शब्द (हिं०पु०) राजा, सरदार, श्रीमान्, धनिक, भाट, राजपूताना के कुछ राजाओं की पदवी।
रावचाव-नाच गीत का उत्सव, रागरग।
रावट-(हिं० पु०) राजभवन, महल।

रावरी–(हिं०स्त्री०) कपड़े का बना हुआ एक प्रकारका घर,छोलदारी, बारहदरी।

रावण–(सं०पु०) लंकाधिपति, दशकन्धर, लंकेश, दशानन।

रावणारि–(सं० पु०) रावण को मारने वाले श्रीरामचन्द्र।

रावत–(हिं०पु०) छोटा राजा, सरदार, शूरवीर, सेनापति, बड़ा योद्धा।

रावन–(हिं० पु०) देखो रावण, रावन गढ़-लंका।

राव बहादुर–(फा० पु०) एक उपाधि जो भारत सरकार प्रायः दक्षिण भारत के रईसों आदि को देती है।

रावना–(हिं० क्रि०) रुलाना।

रावर–(हिं० वि०) भवदीय, आपका, (पु०) अन्तःपुर, रनिवास।

रावरखा–(हिं० पु०) एक प्रकार का पहाड़ी ऊँचा वृक्ष।

रावल–(हिं०पु०) अन्तःपुर, राजमहल, राजा, प्रधान, सरदार, एक प्रकार का आदर सूचक संबोधन का शब्द, राजपूत सामन्तों की एक उपाधि।

रावसाहब–(फा० पु०) एक उपाधि जो भारत सरकार की ओर से दक्षिण भारत के रईसों आदि को दीजाती है।

राशि–(सं०पु०) धान्य आदि का समूह, पुंज, समुच्चय, ढेर, राशिचक्र का बारहवाँ भाग, ये बारह राशि–मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक,धन, मकर, कुम्भ और मीन हैं।

राशिचक्र–(सं० नपु०) ग्रहों के चलने का मार्ग या वृत्त, भचक्र, ज्योतिषचक्र।

राशिनाम–(सं० नपु०) किसी बालक का वह नाम जो नामकरण के समय राशि के अनुसार रक्खा जाता है।

राशिभोग–(सं० पु०) उतना समय जितना किसी ग्रहों का किसी राशि में रहने में लगता है।

राशी–(अ० वि०) रिश्वत लेने वाला, घूसखोर।

राशीकरण–(सं०नपु०) इकट्ठा करना, जमा करना।

राशीकृत–(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ।

राष्ट्र–(सं०पु०) राज्य, देश, मुल्क, प्रजा, वह बाधा जो संपूर्ण देश में उपस्थित हो, वह जनसमूह जो एक देश या राज्य में बसता हो।

राष्ट्रक–(सं०पु०) राज्य, देश।

राष्ट्रकर्षण–(सं० नपु०) राजा का प्रजा पर अत्याचार करना।

राष्ट्रकाम–(सं० वि०) राज्य पाने की इच्छा करने वाला।

राष्ट्रकूट–(सं० नपु०) दाक्षिणात्य का क्षत्रिय राजवंश।

राष्ट्रगुप्ति–(सं०पु०) राज्य की रक्षा।

राष्ट्रगोप–(सं० पु०) राजा का रक्षा करने वाला।

राष्ट्रतन्त्र–(सं०नपु०) राज्य का शासन करने की प्रणाली।

राष्ट्रदा–(सं० स्त्री०) राज्य देने वाली।

राष्ट्रदिप्सु–(सं० वि०) राज्य का नाश करने वाला।

राष्ट्रनिवासी–(सं०पु०) जनपद, देश।

राष्ट्रपति–(सं० पु०) किसी राष्ट्र का स्वामी, आधुनिक प्रजातन्त्र शासन प्रणाली में बहुमत से चुना हुआ शासक।

राष्ट्रपाल–(सं० पु०) राष्ट्रपति।

राष्ट्रभङ्ग–(सं०पु०) राज्य का नाश।

राष्ट्रभय–(सं० नपुं०) राज्य के ऊपर शत्रु के आक्रमण का भय।

राष्ट्रभृत्–(सं० पुं०) राजा, शासक।

राष्ट्रभृति–(सं० स्त्री०) राज्य का पालन करने की विधि।

राष्ट्रभृत्य–(सं० पु०) राज्य का शासन करने वाला।

राष्ट्रभेद–(सं०पु०) राज्य का विभाग।

राष्ट्रवर्धन–(सं०पु०) राज्य की वृद्धि।

राष्ट्रवासी–(सं०पु०)राष्ट्र में रहने वाला।

राष्ट्रविप्लव–(सं० पु०) विद्रोह, बलवा।

राष्ट्रान्तपाल–(सं०पु०) सीमान्त राज्य।

राष्ट्रान्तपालक–(सं० वि०) राज्य की सीमा का रक्षक।

राष्ट्रि–(सं० स्त्री०) राजेश्वरी, रानी।

राष्ट्रिक–(सं० वि०) राष्ट्र संबंधी।

राष्ट्रीय–(सं०वि०) राष्ट्र संबंधी, राष्ट्र का।

रास–(सं० पु०) कोलाहल, ध्वनि, गूँज, गोपियों की एक क्रीड़ा जिसमें वे श्रीकृष्ण के साथ घेरा बाँधकर नाचती थीं, वह नाटक जिसमें श्रीकृष्ण की इस लीला का अभिनय होता है (हिं० स्त्री०) ढेर, समूह, जोड़, चौपायों का झुंड, सूद, व्याज, ज्योतिष की राशि, गोद, एक प्रकार का अगहनियाँ धान, एक प्रकार का छन्द, (अ० स्त्री०) घोड़े की लगाम, बागडोर, (वि०) अनुकूल।

रासक–(सं०पुं०) हास्य रस प्रधान एक नाटक जिसमें केवल एक अंक होता है।

रासचक्र–(हिं० पु०) देखो राशिचक्र।

रासताल–(सं०पु०) तेरह मात्राओं के एक ताल का नाम।

रासधारी–(सं० पु०) वह मण्डली या व्यक्ति जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।

रासन–(सं० पु०) स्वाद लेना।

रासनशील–(फा० वि०) गोद बैठाया हुआ, दत्तक।

रासना–(हिं० पुं०) देखो रास्ना।

रासनृत्य–(सं०पु०) गति के अनुसार नाच का एक भेद।

रासभ–(सं० पु०) गर्दभ, वैशाखनन्दन, गदहा, अश्वतर, खच्चर।

रासभी–(सं०स्त्री०) गदही।

रासभूमि–(सं० स्त्री०) रासक्रीड़ा का स्थान।

रासमण्डल–(सं० नपु०) रासक्रीड़ा करने का स्थान, रासलीला करने वालों का समूह, वह अभिनय जो रासधारी करते हैं।

रासमण्डली–(सं०स्त्री०) रासधारियों का समाज।

रासयात्रा–(सं०स्त्री०) कार्तिकी पूर्णिमा को होने वाला एक उत्सव।

रासलीला–(सं०स्त्री०) वह क्रीड़ा या नृत्य जो कृष्णने गोपियों के साथ

शरदपूर्णिमा को आधीरात के समय किया था।
रासविहारी-(सं० पु०) श्रीकृष्ण।
रासायनिक-(सं०वि०) रसायन शास्त्र संबंधी, रसायन शास्त्र का जानकार।
रासि-(हि०स्त्री०) देखो राशि।
रासी-(हि०स्त्री०) सज्जी (वि०) नकली, खराब, छोटे नाप की।
रासेरस-(सं० पु०) शृंगार, रासलीला, उत्सव, हंसी दिल्लगी।
रासु-(हिं० वि०) सरल, सीधा।
रासेश्वरी-(सं०स्त्री०) राधा।
रासो-(हि०पु०) किसी राजा का पद्यमय जीवन चरित्र जिसमें विशेष करके उसके युद्धों और वीरता के कार्यों का वर्णन होता है।
रास्त-(फा०वि०) सीधा, सरल, अनुकूल, मुताबिक, सही, दुरुस्त, वाजिब।
रास्तगी-(फा० स्त्री०) भलमनसी, सभ्यता, शिष्टता।
रास्तबाज़-(फा०वि०) सच्चा।
रास्तबाज़ी-(फा०स्त्री०) सचाई।
रास्ता-(फा० पु०) मार्ग, राह, उपाय, तरकीब, ढंग, प्रथा, चाल, रास्ता देखना-प्रतीक्षा करना, रास्ता पकड़ना-चले जाना, रास्ता बतलाना-उपाय बतलाना, टालना।
रास्ना-(स० स्त्री०) सर्पगन्धा नामक औषधि।
रास्य-(स० वि०) रास के योग्य (पु०) श्रीकृष्ण।
राह-(स० पु०) देखो राहु, (फा०स्त्री०) मार्ग, रास्ता, नियम, कायदा, प्रथा, रीति, राह देखना-आसरे में रहना, राह पड़ना-डाका पड़ना।
राह खर्च-(फ़ा० पुं०) मार्गव्यय, मार्ग में होने वाला व्यय।
राहगीर-(फा० पु०) मुसाफिर, पथिक।
राह चलता-(हि० पु०) रास्ता चलने वाला, पथिक, बटोही, अपरिचित व्यक्ति
राह चौरंगी-(हि० पु०) चौराहा।
राहज़न-(फा० पु०) डाकू, लुटेरा।
राहज़नी-(फ़ा०स्त्री०) डकैती, लूट।
राहड़ी-(हिं०पु०) एक प्रकार का घटिया कम्बल।
राहत-(अ०स्त्री०) सुख, आनन्द, आराम
राहदारी-(फ़ा० स्त्री०) सड़क का कर, राह पर चलने का महसूल, चुंगी।
राहरीति-(हि० स्त्री०) जान पहचान, परिचय।
राहना-(हि०क्रि०) देखो रहना, मोटी रेती से रगड़ कर चिकना करना।
राहा-(हि० पु०) चक्की के नीचे का मिट्टी का चबूतरा।
राहिन-(अ० पु०) रेहन या बंधक रखने वाला।
राही-(फा० पु०) राहगीर, मुसाफिर।
राहु-(स० पु०) पुराणों के अनुसार नवग्रहों में से एक ग्रह, (हि० पु०) रोहू मछली।
राहुग्रहण-(स० नपु०) राहु द्वारा ग्रस्त।
राहुभेदी-(स०पु०) विष्णु।
राहुरत्न-(स० नपु०) गोमेदक मणि।
राहुल-(हि० पु०) गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।
राहुसंस्पर्श-(स० पु०) सूर्य या चन्द्र ग्रहण।
राहुसूतक-(स०नपु०) ग्रहण।
राहुस्पर्श-(स० पु०) सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण।
राहुहन्-(स० पु०) विष्णु।
राहूच्छिष्ट-(स०पु०) लहसुन।
राहेल-(य० पु०) यहूदियों की एक उपजाति का नाम।
रिंग-(अ० स्त्री०) अंगूठी, छल्ला, चूड़ी, घेर, मण्डल।
रिंगन-(हि०स्त्री०) घुटनों के बल चलना।
रिंगना-(हि० क्रि०) रेंगना, घुमाना फिराना, दौड़ना, धीरे धीरे चलना।
रिंगल-(हि० पु०) एक प्रकार का पहाड़ी बांस।
रिंगिङ्-(अ० स्त्री०) जहाज़ के मस्तूल आदि में बांधने के रस्से।
रिंद-(फ़ा० पु०) वह व्यक्ति जो धर्म विषय में बहुत स्वच्छन्द और उदार विचार रखता है, मनमौजी आदमी (वि०) मस्त, मतवाला।
रिंदा-(फा०वि०) उद्दण्ड, निरंकुश।
रिआयत-(अ० स्त्री०) अनुग्रह पूर्ण व्यवहार, कोमल तथा दयापूर्ण आचरण, न्यूनता, कमी, विचार, ध्यान, ख्याल।
रिआया-(अ०स्त्री०) प्रजा।
रिकवँछ-(हिं० स्त्री०) उड़द की पीठी तथा अरुई के पत्तों से बना हुआ एक खाद्य पदार्थ।
रिकशा-(अं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी गाड़ी जिस पर एक या दो आदमी बैठते हैं जिसको आदमी खींचते हैं।
रिकाब-(हिं० स्त्री०) देखो रेकाब।
रिकाबी-(हिं०स्त्री०) देखो रेकाबी।
रिक्त-(स०नपु०) वन, जंगल (वि०) शून्य, खाली, निर्धन, गरीब।
रिक्तक-(स०वि०) खाली।
रिक्तकुंभ-(स० नपु०) ऐसी बोली जो समझ में न आवे।
रिक्तकृत-(स०वि०) खाली किया हुआ।
रिक्तता-(स०स्त्री०) शून्यता।
रिक्तपाणि-(सं० वि०) खाली हाथ।
रिक्तभाण्ड-(स०नपु०) बुद्धिहीन।
रिक्तमति-(स० वि०) शून्यचित्त।
रिक्तहस्त-(स०वि०) जिसके पास एक पैसा भी न हो।
रिक्ता-(स०स्त्री०) चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथि।
रिक्तार्क-(स० पुं०) रविवार को पड़ने वाली रिक्ता तिथि।
रिक्थ-(स०नपु०) वरासत में मिला हुआ धन या सम्पत्ति।
रिक्थग्राह-(स० वि०) धन लेने वाला।
रिक्थजात(स० नपु०) मृत व्यक्ति की सब सम्पत्ति।
रिक्थभागी-(स०वि०) धनभागी।
रिक्थहर-(स०पु०) धनभागी।
रिक्थहार-(स०पु०) वह जो धन का अधिकारी हो।

रिक्थहारी-(सं० वि०) जिसको उत्तराधिकार मे धन या सम्पत्ति मिले।
रिक्थी-सं० वि०) देखो रिक्थाहारी।
रिक्ष-(हि०पु०) देखो ऋक्ष, रीछ, भालू
रिक्षा-(सं०स्त्री०) लीख
रिङ्गण-(सं०नपु०) रेंगना, फिसलना।
रिचा-(हि० स्त्री०) देखो ऋचा।
रिच्छ-(हिं०पु०) भालू।
रिज़क-(अ० पु०) रोजी, जीविका।
रिजर्व-(अं० वि०) वह जो किसी विशेष कार्य के लिये निश्चित या सुरक्षित किया हो
रिजर्विस्ट्-(अं०पु०) वे सैनिक जो आपत्काल के लिये रक्खे जाते हैं।
रिजल्ट-(अं०पु०) परीक्षा फल, इम्तेहान का नतीजा।
रिज़ाली-(फा०स्त्री०) निर्लज्जता, वेहयाई
रिजु-(हि०वि०) देखो ऋजु।
रिझकवार, रिझवार-(हि० पु०) किसी बात पर प्रसन्न होने वाला, अनुराग करने वाला, प्रेमी, गुण ग्राहक।
रिझाना-(हि० क्रि०) अपने ऊपर किसी को प्रसन्न कर लेना, लुभाना,किसी को अपना प्रेमी बना लेना।
रिझायल-(हि० वि०) रीझने वाला।
रिझाव-(हिं० पु०) किसी को अपने ऊपर प्रसन्न होने का भाव।
रिझावना-(हिं०क्रि०) देखो रिझाना।
रिटर्निंड् अफसर-(अं०पु०) वह अधिकारी जो निर्वाचन के समय वोटों या मतों की गणना करता है।
रिटायर-(अं० वि०) जिसने काम से अवसर ग्रहण कर लिया हो, जिसने पेनशन् ले ली हो।
रित, रितु-(हि० स्त्री०) देखो ऋतु।
रितवना-(हि०क्रि०) खाली करना।
रितुवंती-(हिं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री।
रिद्ध-(सं०वि०) पका या रींधा हुआ।
रिद्धि-(हि० स्त्री०) देखो ऋद्धि।
रिधम-(सं०पु०) कामदेव, वसन्त।
रिन-हिं०पु०) देखो ऋण।
रिनबधी-हिं०पु०) ऋणी, कर्ज़दार।
रिनिआ-(हिं०वि०) कर्ज़दार, ऋणी।
रिनी-(हिं०वि०) देखो ऋणी।
रिपु-(सं०पु०) शत्रु, वैरी, दुश्मन।
रिपुघाती-(सं०वि०) शत्रुओं का नाश करने वाला।
रिपुता-(सं०स्त्री०) शत्रुता, दुश्मनी।
रिपोर्ट-(अं०स्त्री०) किसी को सूचना देने के लिये किसी घटना का सविस्तर वर्णन, किसी संस्था आदि की कार्यवाही का विस्तृत वर्णन।
रिपोर्टर-(अं०पु०) किसी समाचार पत्र में घटनाओं का वर्णन भेजने वाला, वह जो किसी सभा के व्याख्यानों का विवरण लिखता हो।
रिफार्म-(अं० पु०) दोषों या त्रुटियों का दूर किया जाना, संशोधन।
रिफार्मर-(अं०पु०) सामाजिक या धार्मिक सुधार करने वाला।
रिफार्मेटरी-(अं०स्त्री०) वह संस्था जहां बालक कैदी रक्खे जाते हैं और उनको औद्योगिक शिक्षा दी जाती है।
रिम-(हि० पु०) रिपु, शत्रु।
रिमझिम-(हिं० स्त्री०) छोटी छोटी जल की बूंदों का लगातार गिरना, फूही पड़ना।
रिमहर-(हिं० पु०) शत्रु।
रिमिका-(हिं०स्त्री०)काली मिर्च की लता।
रियासत-(अं०स्त्री०) राज्य, रईस होने का भाव, अमीरी, विभव।
रिरंसा-(सं०स्त्री०)रमण करने की इच्छा।
रिरंसु-(सं० वि०) रमण की इच्छा करने वाला।
रिरक्षा-(सं०स्त्री०)रक्षा करने की इच्छा।
रिर-(हिं०पुं०) हठ, जिद।
रिरना-(हिं० क्रि०) जिद करना, हठ करना।
रिरहा-दीनता पूर्वक भिक्षा मागने वाला।
रिरी-(सं० स्त्री०) पित्तल, पीतल।
रिलीफ-(अं०पु०) दीन दुखियों को दी जाने वाली सहायता।
रिवाज-(अ० पु०) प्रथा, रस्म, रीति।
रिवाल्वर-(अं० पु०) एक प्रकार का तमंचा जिसमें अनेक गोलियां भरी रहती हैं।
रिव्यू-(अं०स्त्री०) किसी नवीन प्रकाशित पुस्तक की आलोचना, किसी निर्णय का पुनर्विचार, सामयिक पत्रिका जिसमें सामाजिक, धार्मिक आदि विषयों पर आलोचना रहती है।
रिश्ता-(फा०पुं०) सम्बन्ध, नाता।
रिश्तेदार-(फा०पु०) संबंधी, नातेदार।
रिश्तेदारी-(फा०स्त्री०) संबंध, रिश्ता।
रिश्वत-(अं०स्त्री०) उत्कोच, घूस।
रिश्वतख़ोर-(फा० पु०) घूस लेने वाला।
रिश्वतख़ोरी-(फा० स्त्री०) घूस लेने का काम।
रिषभ-(हिं०पु०) देखो ऋषभ।
रिषीक-(सं० वि०) नुकसान पहुंचाने वाला (पु०) शिव, महादेव।
रिषोकार-(सं० नपु०) क्षेम, कल्याण।
रिष्ट-(सं० वि०) प्रसन्न, हृष्ट पुष्ट, मोटा ताजा।
रिष्टि-(सं०पु०) खड्ग, तलवार (स्त्री०) अशुभ, अमंगल।
रिष्यमूक-(हिं० पुं०) देखो ऋष्यमूक।
रिस-(हि० स्त्री०) क्रोध, गुस्सा।
रिस मारना-गुस्सा रोकना।
रिसना-(हि०क्रि०) देखो रसना, छनकर बाहर टपकना।
रिसवाना-(हिं०क्रि०) क्रोध दिलाना।
रिसहा-(हि०वि०) क्रोधी, गुसवर।
रिसहाया-(हिं०वि०)क्रुद्ध,खफा, नाराज़।
रिसान-(हि० पु०) ताने के सूतों को फैलाकर साफ करने का काम।
रिसाना-(हि०क्रि०) किसी पर क्रुद्ध होना
रिसाल-(फा० पु०) राज्यकर।
रिसालदार-(फा०पु०) सेना का अफसर
रिसाला-(फा० पु०) अश्वारोही (घुड़सवारों की) सेना।
रिसि-(हिं०स्त्री०) देखो रिस, क्रोध।
रिसिआना, रिसियाना-(हिं० क्रि०) कुपित होना, क्रोध करना।
रिसिक-(हि०स्त्री०) खड्ग, तलवार।
रिसौहां-(हि०वि०) क्रोध से भरा हुआ।
रिस्क्-(अं० स्त्री०) उत्तरदायित्व,

जवाबदेही।
रिस्टवाच्-(अं०स्त्री०) कलाई पर बांधने की छोटी घड़ी।
रिहननामा-(फ़ा०पु०) वह लेख जिसमें किसी पदार्थ के रेहन रक्खे जाने के शर्तों का उल्लेख हो।
रिहर्सल्-(अं० पु०) नाटक के अभिनय का अभ्यास।
रिहल-(अ०स्त्री०)काठ की बनी हुई कैंची-नुमा चौकी जिसपर रखकर पुस्तक पढ़ी जाती है।
रिहा-(फ़ा०वि०) बन्धन आदि से मुक्त, छूटा हुआ, किसी बाधा या संकट से निर्मुक्त।
रिहाई-(फ़ा०स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा।
रिहाण-(सं०पु०) सेवा करना।
रिहायस-(सं०पुं०) चोर, ठग।
रींधना-(हिं० क्रि०) खाद्य पदार्थ को उबालना, तलना या पकाना।
री-(सं० स्त्री०) गति, शब्द, वध, हत्या, (हि०अव्य०) सखिया के लिये संबोधन का शब्द, अरी।
रीगन-(हिं०पु०)एक प्रकार का धान जो कुआर में तैयार होता है।
रीछ-(हि० पु०) भालू।
रीछराज-(हि०पु०) जामवन्त।
रीजेन्ट्-(अं० पु०) किसी राजा की नाबालगी में अथवा अनुपस्थिति में राज्य का प्रबंध करने वाला।
रीजेन्सी-(अं०स्त्री०) रीजेन्ट् का शासन या अधिकार।
रीझ-(हि० स्त्री०) रीझने की क्रिया या भाव, किसी बात पर प्रसन्न होना, किसी के गुण रूप आदि पर मोहित होने का भाव।
रीझना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना, मोहित या मुग्ध होना।
रीठ-(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार, युद्ध (वि०) अशुभ, खराब।
रीठा-(हिं०पु०) एक बड़ा वृक्ष जिसका बेर के बराबर फल सुखा लिया जाता है, बाद में पानी में भिगोकर मलने से इसमें से फेन निकलता है जिससे कपड़े साफ किये जाते हैं।
रीठी-(हिं०स्त्री०) छोटा रीठा।
रीडर-(अं० पु०) पढ़ने वाला, किसी विद्यालय का अध्यापक या व्याख्यान देने वाला, (स्त्री०) पाठय पुस्तक।
रीडिङ्ग् रूम्-(अं०पु०) वाचनालय।
रीढ़-(हिं०स्त्री०) पीठ के बीचोबीच की लम्बी हड्डी जो गरदन से कमर तक जाती है जिसमें पसलिया मिली होती हैं, मेरुदण्ड, पृष्ठवंश।
रीढ़ा-(सं० स्त्री०) अवज्ञा, अपमान।
रीत-(हिं०स्त्री०) देखो रीति।
रीतना-(हि०क्रि०) रिक्त होना, खाली होना, रिक्त या खाली करना।
रीता-(हि०वि०) जिसके भीतर कुछ न हो, खाली।
रीति-(सं० स्त्री०)कोई काम करने का ढग, परिपाटी, रिवाज, नियम, कायदा, प्रकार, तरह, ढंग, गति, स्वभाव, प्रकृति, स्तुति, प्रशंसा, काव्य की आत्मा अर्थात् वाक्य की ऐसी रचना जिससे ओज, प्रसाद, तथा माधुर्य गुण आ जावे।
रीतिका-(सं०स्त्री०) जस्ते का भस्म।
रीति पुष्प-(सं०नपु०) जस्ते का भस्म।
रीम्-(अं०स्त्री०) कागज की वह गड्डी जिसमें बीस दस्ते हों, पीव, मवाद।
रीस-(हिं०स्त्री०) स्पर्धा, डाह, ईर्ष्या।
रीसना-(हि०क्रि०)क्रुद्ध होना,खफा होना
रीसा-(हिं०स्त्री०)वनकटोरा नाम की झाड़ी
रुंज-(हि०पु०) एक प्रकार का बाजा।
रुंड-(हिं०पु०) देखो रुण्ड।
रुंदवाना-(हिं०क्रि०) पैर से कुचलवाना।
रुंधती-(हिं०स्त्री०) देखो अरुन्धती।
रुंधना-(हिं०क्रि०) मार्ग न मिलने के कारण अटकना, उलझना, रुकना, फँस जाना, घेरा जाना, किसी कार्य में लीन हो जाना।
रु-(हि०अव्य०) देखो अरु, और।
रुआंली-(हिं०स्त्री०) रूई की पौनी।
रुआं-(हिं०पु०) देखो रोआं, रोम।
रुआं घास-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की सुगन्धित घास।
रुआब-(अ०पु०) रोब, धाक, भय, डर।
रुई-(हिं०स्त्री०) देखो रूई।
रुई दस्त-(फ़ा०पु०) कुश्ती की एक पेंच
रुईदार-(हि०वि०) रूई भरा हुआ।
रुकना-(हि०क्रि०) आगे न बढ़ सकना, ठहर जाना, किसी कार्य का बीच में ही बन्द हो जाना, वीर्य का स्खलित होना, आगा पीछा करना, अटकना, किसी सिलसिले का आगे को न चलना।
रुक मंजनी-(हि०स्त्री०)एक प्रकार का पौधा जो बागों मे सजावट के लिये लगाया जाता है।
रुकमगद-(हि०पु०) देखो रुक्माङ्गद।
रुकमिनी-(हिं०स्त्री०) देखो रुक्मिणी।
रुकवाना-(हि०क्रि०) दूसरे को रोकने में प्रवृत्त करना।
रुकाव-(हिं०पु०) रुकने का भाव,रुकावट
रुकुम-(हिं०पु०) देखो रुक्म।
रुकुमी-(हि०पु०) देखो रुक्मी।
रुक्का-(अ० पु०) छोटी चिठ्ठी या पत्र, पुरजा, वह लेख जो हुंडी या कर्ज लेने वाला लिख कर महाजन को रुपया लेती समय दे देता है।
रुक्ख-(हिं०पु०) देखो वृक्ष, पेड़।
रुक्म-(सं०नपु०) सुवर्ण, सोना, धतूरा, लोहा, नागकेसर, रुक्मिणी के एक भाई का नाम, (वि०) दीप्तिमान्।
रुक्म कारक-(सं०पु०) स्वर्णकार,सोनार
रुक्म मय-(सं०वि०)सोने का बना हुआ
रुक्म माली-(सं० पु०) भीष्म के एक पुत्र का नाम।
रुक्मरथ-(सं० पु०) सोने का बना हुआ रथ।
रुक्मवत्-(सं०वि०) सुवर्ण युक्त।
रुक्मवती-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम जिसको रूपवती या चंपकमाला भी कहते हैं।
रुक्मवाहन-(सं०पुं०) द्रोणाचार्य।
रुक्मसेन-(सं० पु०) रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मस्तेय-(स०नपु०) सोना चुराने वाला
रुक्मिणी-(स० स्त्री०) श्रीकृष्ण की बड़ी पटरानी जो विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री थी।
रुक्मिन्-(स०पु०) विदर्भ देश के राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र।
रुक्ष-(स० वि०) बिना प्रेम का, जिसमें चिकनाहट न हो, रूखा, नीरस, सूखा, (पु०) नरकट, वृक्ष।
रुक्षता-(स० स्त्री०) रुखाई, रूखापन।
रुख-(फा० पु०) कपोल, गाल, मुह, चेहरा, शतरंज का एक मोहरा, चेष्टा से प्रगट होने वाली मुख की आकृति, इच्छा, मरज़ी, कृपादृष्टि, आगे या सामने का भाग।
रुख़दार-(फा० पु०) जो घट रहा हो।
रुख़सत-(अ०स्त्री०)आज्ञा, कूच, रवानगी बिदाई, अनकाश, काम से छुट्टी, (वि०) जिसने प्रसथा किया हो।
रुख़सताना-(फा० पु०) बिदा होने के समय दिया जाने वाला धन, बिदाई
रुख़सती-(अ० वि०) जिसको छुट्टी मिली हो, (वि०) बिदाई, दुलहिन की विदाई, विदाई के समय दिया जाने वाला धन।
रुख़सार-(फा० पु०) कपोल, गाल।
रुखाई-(हिं०स्त्री०) रूखा होने का भाव, रूखापन, शुष्कता, खुश्की, व्यवहार की कठोरता, शील का परित्याग।
रुखाना-(हिं०क्रि०) रूखा होना,सूखना।
रुखानी-(हिं०स्त्री०) बढइयों का लकड़ी का दस्ता लगा हुआ एक धारदार औज़ार।
रुखावट, रुखाहट-(हिं० स्त्री०) रूखापन, रुखाई।
रुखिता-(हि० स्त्री०) वह नायिका जो रोष या क्रोध कर रही हो।
रुखुरी-(हि०स्त्री०) बहुत छोटा पौधा।
रुखौंहां-(हि०वि०) रुखाई लिये हुए।
रुगन्वित-(स० वि०) पीड़ा युक्त।
रुग्भेषज-(स०नपु०) रोग की औषधि।
रुग्न-(हिं०वि०) रुग्ण, रोगग्रस्त, झुका हुआ, बिगड़ा हुआ।
रुग्नता-(स०स्त्री०) रोगी होने का भाव, बीमारी।
रुच-(स० वि०) उज्वल (हि० स्त्री०) देखो रुचि।
रुचक-(स०नपु०) सज्जीखार, घोड़े का साज, लवण, नमक, (पु०) दाँत, कबूतर, बिजौरा नीबू।
रुचना-(हिं० क्रि०) अनुकूल होना,
रुचा-(स०स्त्री०) दीप्ति, प्रकाश,शोभा, इच्छा, पक्षियों का बोलना।
रुचि-(सं० स्त्री०) अनुराग, प्रेम, आसक्ति, प्रवृत्ति, तबीयत, किरण, शोभा, छवि, खाने की इच्छा, सुन्दरता, भूख, स्वाद, एक अप्सरा का नाम, (वि०) शोभा के अनुकूल, योग्य।
रुचिकर-(स०वि०) अच्छा लगने वाला।
रुचिकारक-(स० वि०) अच्छे स्वाद वाला, स्वादिष्ट।
रुचिकारी-(स० वि०) मनोहर।
रुचित-(स० वि०) अभिलषित, जिसको जी चाहता हो।
रुचिता-(स० स्त्री०) अनुराग, प्रेम, सुन्दरता, अतिजगती वृत्त का एक भेद
रुचिधामन्-(सं० पु०) सूर्य।
रुचिप्रदा-(स० स्त्री०) कुदरू।
रुचिदन्त-(स०वि०) सुन्दर दांतों वाला।
रुचिफल-(स०नपु०) नाशपाती।
रुचिमती-(स०स्त्री०) उग्रसेन की रानी का नाम।
रुचिर-(स० नपु०) कुंकुम, केशर, लवग चांदी (स्त्री०) सुन्दर, अच्छा, मीठा।
रुचिर वदन-(स०वि०)सुन्दर मुख वाला।
रुचिरवृत्ति-(स० पु०) अस्त्र के प्रहार का सहार।
रुचिरा-(स०स्त्री०) एक वृत्त का नाम, कुकुम, केसर, लवग, मूली।
रुचिराई-(हि० स्त्री०) मनोहरता, सुन्दरता।
रुचिरापाङ्गी-(स० स्त्री०) जिसकी आंखें बड़ी सुन्दर हों।
रुचिराश्व-(स०पु०) सुन्दर घोड़ा।
रुचिवर्धक-(स०वि०) रुचि उत्पन्न करने वाला, भूख बढाने वाला।
रुचिष्य-(स०वि०) चाहा हुआ, इच्छा किया हुआ।
रुची-(हिं०स्त्री०) देखो रुचि।
रुच्छ-(हिं०वि०) देखो रूक्ष, रूखा।
रुच्यकन्द-(स० पु०) सूरण।
रुच्यवाहन-(स० पु०) अग्नि।
रुच्य-(स० वि०) रुचिकर, सुन्दर, खूबसूरत।
रुज-(स०नपु०) क्षत, घाव, वेदना, भग, कष्ट (नपु०) ढोलक के समान एक प्रकार का प्राचीन बाजा।
रुजग्रस्त-(स० वि०) रोगग्रस्त।
रुजस्कर-(स०वि०) पीड़ा देने वाला।
रुजा-(स०स्त्री०) रोग, बीमारी, पीड़ा।
रुजाकर-(स० स्त्री०) रोग उत्पन्न करने वाला।
रुजापह-(स० वि०) पीड़ा या रोगको दूर करने वाला।
रुजाली-(स० स्त्री०) रोगों या कष्टों का समूह।
रुजावी-(स० वि०) पीडायुक्त, पीड़ित।
रुजासह-(स०पु०) धामिन का वृक्ष।
रुजी-(हिं०वि०) अस्वस्थ, बीमार।
रुजू-(अ०वि०) किसी ओर प्रवृत्त, चित्त का किसी ओर झुका होना, ध्यान दिया हुआ।
रुझना-(हि० क्रि०) घाव आदि का पूजना, देखो उझलना।
रुझनी-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
रुठ-(हि० पु०) क्रोध, गुस्सा।
रुठना-(हि० क्रि०) क्रुद्ध होना।
रुठाना-(हि० क्रि०) रूठने में प्रवृत्त करना, नाराज़ करना।
रुणित-(सं० वि०) शब्द करता हुआ, झनकारता हुआ।
रुण्ड-(स०पु०) कबन्ध, जिसका हाथ पैर छिन्न हो।
रुण्डिका-(स० स्त्री०) युद्धभूमि, ड्योढी,

बहुतायत।
रुत-(स० नपु०) पक्षियों का कलरव, शब्द, ध्वनि , (हि०स्त्री०) देखो ऋतु।
रुतबा-(अ० पु०) दरजा, मर्तबा, प्रतिष्ठा, इज्जत ।
रुदन-(स०नपुं०) क्रन्दन,रोने की क्रिया।
रुदराछ-(हि०पु०) देखो रुद्राक्ष।
रुदित-(स० वि०) रोता हुआ।
रुदिन-(हिं०वि०) रोता हुआ।
रुद्ध-(स० वि०)आवृत्त, वेष्टित, घिरा हुआ, फँसा हुआ, मूँदा हुआ, जिसकी गति रोकी गई हो।
रुद्धकण्ठ-(स०वि०) जिसका गला भर आया हो, जो बोल न सकता हो।
रुद्र-(स० पु०) एक प्रकार के गण देवता जो सख्या में ग्यारह हैं यथा-अज, एकपात, अहिब्रघ्न, पिनाकी, अपराजित, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृषाकपि, शभु, हरण और ईश्वर, रौद्ररस, शिव का एक रूप, (वि०) भयकर, डरावना।
रुद्रक-(सं०पु०) बड़ा अगस्त का वृक्ष।
रुद्रकमल-(स० पु०) रुद्राक्ष।
रुद्रकाली-(स० स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम , रुद्रकाली-उमा का नामान्तर।
रुद्रकोटि-(स० स्त्री०) एक प्राचीन तीर्थ का नाम।
रुद्रगण-(स० पु०) पुराण के अनुसार शिव के परिषद्।
रुद्रगर्भ-(स०पु०) अग्नि।
रुद्रज-(स० पु०) पारद, पारा।
रुद्रजटा-(स० स्त्री०) तीन चार हाथ ऊँचा एक पौधा।
रुद्रट-(स० पु०) साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य का नाम।
रुद्रताल-(स०पु०) मृदग का एक ताल।
रुद्रतेज-(स० पु०) स्वामि कार्तिकेय।
रुद्रपति-(स०पु०) शिव, महादेव।
रुद्रपत्नी-(स० स्त्री०) दुर्गा।
रुद्रप्रिया-(स० स्त्री०) पार्वती।
रुद्रभू-(स० स्त्री०) श्मशान, मरघट।
रुद्रभूमि-(स०स्त्री०) मरघट।

रुद्रभैरवी-(स० स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम।
रुद्रमाल्य-(स० पु०) वेल का पेड़।
रुद्रयामल-(स० नपु०) तान्त्रिकों का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।
रुद्ररेता-(स०पु०) पारद, पारा।
रुद्ररोदन-(स०नपु०) सोना।
रुद्ररोमा-(स० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
रुद्रलता-(सं०स्त्री०) रुद्रजटा।
रुद्रलोक-(स० पु०) शिवलोक।
रुद्रवदन-(स० पु०) महादेव के पाँच मुख, पाँच की सख्या।
रुद्रवन्ती-(स०स्त्री०) एक प्रसिद्ध वनौषधि
रुद्रविंशति-(स० स्त्री०) प्रभव आदि साठ सवत्सरो में से अन्तिम बीस वर्षों का समूह।
रुद्रवीणा-(स०स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा।
रुद्रसुन्दरी-(स०स्त्री०) देवीकी एक मूर्ति।
रुद्रहृदय-(स०पु०) एक प्रचीन उपनिषद्
रुद्रा-(स०स्त्री०) रुद्रजटा नामक पौधा।
रुद्राक्रीड़ा-(स० पु०) श्मशान, मरघट।
रुद्राक्ष-(स० नपु०) एक बड़ा वृक्ष, इसका गोल फल,जिसकी माला बनाकर शैव लोग पहनते और जप के व्यवहार में लाते हैं।
रुद्राणी-(स०स्त्री०) रुद्रकी पत्नी, पार्वती, रुद्रजटा नाम की लता।
रुद्रारि-(स० पु०) कामदेव।
रुद्रिय-(स० वि०) आनन्द दायक, बड़ाई करने वाला।
रुद्री-(सं०स्त्री०) वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तिया।
रुधिर-(स०नपु०) रक्त, लोहू, असृक्, शोणित, खून।
रुधिपायी-(हिं०पु०) लोहू पीने वाला राक्षस।
रुधिर पित्त-(स०नपु०) नकसीर रोग
रुधिर प्रदिग्ध-(सं०वि०)लोहू लगा हुआ
रुधिर प्लावित-(स०वि०)रुधिर लगा हुआ
रुधिररूषित-(स०वि०)रुधिर से भरा हुआ

रुधिर लेश-(स०पु०) लोहू का चिह्न।
रुधिर विन्दु-(स०पु०) लोहू का बूँद।
रुधिराक्त-(स०वि०)रुधिर से भीगा हुआ
रुधिरान्ध-(स०पु०)एक नरक का नाम
रुधिराशन-(स०वि०) रक्त पान करके जीने वाला, (पु०) खर का सेनापति जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा था,राक्षस
रुधिराशी-(स०वि०) लहू पीने वाला
रुनझुन-(हिं०स्त्री०) नूपुर,मजीर,झनकार
रुनित-(हि०वि०) बजता हुआ।
रुनी-(हिं०पु०) घोडे की एक जाति।
रुनुक झुनुक- (हि०स्त्री०) नूपुर आदि का शब्द रुनझुन।
रुमुल-(हिं०पु०)एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष
रुपना-(हिं० क्रि०) रोपा जाना, भूमि में गाड़ा जाना, अड़ना।
रुपया-(हि०पुं०)चादी का सबसे बड़ा सिक्का जो भारतवर्ष में प्रचलित है, यह तौल में दस माशे होता है, धन, सम्पत्ति, दौलत।
रुपहला-(हि०वि०) चादी के रग का।
रुपिका-(स०स्त्री०) आक, मदार।
रुबाई-(अ० स्त्री०) एक प्रकार का चलता गाना।
रुबाई एमन-(अ०पु०) एक राग जिसके साथ कौवाली का ठेका बजाया जाता है
रुमच-(हिं०पु०) देखो रोमाच।
रुमाल-(फा०पु०) देखो रूमाल।
रुमाली-(फा०स्त्री०)एक प्रकार की लगोट
रुमन्वत्-(स०पु०) एक ऋषि का नाम।
रुमावली-(हि०स्त्री०) देखो रोमावली
रुराई-(हि०स्त्री०) सुन्दरता।
रुरु-(स०पु०) काला मृग, कस्तूरी मृग, एक दैत्य जिसको दुर्गा ने मारा था, एक भैरव का नाम।
रुरुआ-(हिं०पु०) एक बड़ी जाति का उल्लू जिसकी बोली बड़ी कर्कश होती है
रुरुक्षु-(स० वि०) रूक्ष, रूखा।
रुरुत्सु-(स०वि०) विघ्न करने वाला।
रुरुभैरव-(स०पु०) तान्त्रिकों के अनुसार एक भैरव का नाम।
रुलना-(हिं०क्रि०) बेकाम मारे फिरना।

रुलाई-(हिं० स्त्री०) रोने की क्रिया या भाव
रुलाना-(हिं० क्रि०) रोने मे दूसरे को प्रवृत्त करना, नष्ट करना, खराब करना।
रुल्ला-(हिं० स्त्री०) वह भूमि जिसकी उपजाऊ शक्ति कम हो गई हो।
रुवा-(हिं०पु०) सेमल के फूल का घूहा।
रुवाई-(हिं०स्त्री०) देखो रुलाइ।
रुवु-(स०पु०) लाल रेंडी।
रुष-(स० पु०) क्रोध, गुस्सा, देखो रुख
रुषा-(स० स्त्री०) कोप, क्रोध।
रुषित, रुष्ट-(स० वि०) रोषयुक्त, क्रुद्ध।
रुष्टता-(स० स्त्री०) रुष्ट होने का भाव, अप्रसन्नता।
रुष्टपुष्ट-(हिं० वि०) देखो हृष्ट पुष्ट।
रुसवा-(फा०वि०) अपमानित, निन्दित।
रुष्टि-(स०स्त्री०) क्रोध, गुस्सा।
रुसवाई-(फा० स्त्री०) अपमान और दुर्गति।
रुसित-(हिं०वि०) रुष्ट, अप्रसन्न।
रुसा-(हिं०स्त्री०) देखो अडूसा।
रुसूम-(हिं० पु०) देखो रसूम।
रुस्तम-(अ०पु०) फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन योद्धा, बड़ा वीर पुरुष, छिपा रुस्तम-वह जो देखने मे सीधा जान पडे परन्तु सचमुच बड़ा वीर हो।
रुह-(स०वि०) आरूढ, चढा हुआ।
रुहक-(स० नपु०) छिद्र, छेद।
रुहा-(स०स्त्री०) दूब, लजालु।
रुहठि-(हिं०स्त्री०) रूठने का भाव।
रुहिर-(हिं०पु०) देखो रुधिर।
रुहेलखण्ड-(हि० पु०) अवध के पश्चिमोत्तर भाग का एक प्रदेश।
रुहेला-(हि०पु०) रोहिलखण्ड में बसने वाली पठानों की एक जाति।
रूख-(हि० पु०) देखो रुख।
रूंखड़-(हि०पु०) एक प्रकार के भिक्षुक।
रूंगटा-(हिं०पु०) देखो रोंगटा।
रूंदना-(हिं०क्रि०) देखो रौंदना।
रूंध-(हिं०वि०) अवरुद्ध, रुका हुआ।
रूंधना-(हिं० क्रि०) किसी स्थान या वस्तु को कटीले झाड आदि से घेरना, आने जाने का मार्ग बन्द करना, रोकना, छेंकना।
रू-(फा०पु०) मुख, चेहरा,द्वार, कारण, ऊपरी भाग, सिरा, सामना, आशा।
रूई-(हि०स्त्री०) कपास के कोष या डोडे के भीतर का घूआ जिसको कात कर सूत बनता है जिससे कपडे बुने जाते हैं, किसी चीज के ऊपर का रोवा।
रूईदार-(हि० वि०) वह वस्त्र जिसके भीतर रूई भरी हो।
रूक-(हिं० स्त्री०) तलवार (पु०) धलुआ।
रूक्ष-(स०वि०) जो चिकना और कोमल न हो, रूखा (पु०) वृक्ष पेड़, घास।
रूक्षगन्धक-(स० पु०) गुग्गुल।
रूक्षण-(स०वि०) शुष्क करना, सुखाना।
रूक्षता-(स० स्त्री०) रूखापन।
रूख-(हि० पु०) वृक्ष, पेड़ (वि०) रूखा।
रूखरा-(हिं० पु०) देखो रूखड़ा।
रूखना-(हिं० क्रि०) रुठना।
रूखा-(हिं० वि०) परुष, कठोर, स्नेह रहित, जिसमें प्रेम न हो, विरक्त, उदासीन, खुदखुदा, जो समतल न हो, जो खाने में स्वादिष्ट न हो, नीरस, उदासीन, सूखा, अस्निग्ध, जो चिकना न हो, रूखा होना-उदासीनता प्रगट करना, क्रुद्ध होना।
रूखापन-(हिं० पु०) रूखा होने का भाव, रुखाई, कठोरता, उदासीनता, नीरसता।
रूचना-(हि० क्रि०) रुचना, अच्छा लगना।
रूज-(अ० पु०) एक प्रकार की लाल बुकनी जिससे सोना चादी पर चमक लाई जाती है।
रूझना-(हि०क्रि०) देखो उझलना।
रूठ, रूठन-(हि०स्त्री०) रूठने की क्रिया या भाव, नाराज़गी।
रूठना-(हिं०क्रि०) नाराज होना।
रूठनि-(हि० स्त्री०) देखो रुठन।
रूड-(अं०पु०) लम्बाई नापने का एक मान जो पाच गज का होता है।
रूड़, रूड़ा-(हि०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
रूढ-(स०वि०) जात, उत्पन्न, प्रचलित, प्रसिद्ध, आरूढ, चढ़ा हुआ, जिसका विभाग न किया गया हो, कठोर, कठिन, गवार, उजड्ड (पु०) वह शब्द जो प्रकृति और प्रत्यय की किसी प्रकार की अपेक्षा न करके अर्थ का बोध करता हो।
रूढप्रणय-(स०त्रि०) अतिशय प्रेम।
रूढयौवन-(स० स्त्री०) देखो आरूढ यौवन।
रूढवश-(स०त्रि०) प्रसिद्ध वंश।
रूढा-(स० स्त्री०) वह लक्षणा जो प्रचलित हो, जिसका व्यवहार किसी भिन्न अभिप्राय को सूचित करता हो।
रूढि-(स० स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति, वृद्धि, प्रसिद्धि, चढाई, प्रथा, विचार, निश्चय, उभाड़, प्रादुर्भाव, रूढ शब्द की वह शक्ति जो यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ को बतलाती है।
रूदाद-(फा०स्त्री०) वृत्तान्त, समाचार, विवरण, कैफियत, दशा, अवस्था, व्यवस्था, अदालती कार्रवाई, मुकदमे का ढग।
रूप-(स०नपु०) स्वभाव,प्रकृति,सुन्दरता, दशा, चादी, रुपा अवस्था, वेष, भेस, शरीर, देह, तुल्य, समान, भेद, चिह्न, रूपक,शब्द या वर्ण का वह रूपान्तर जो उसमें विभक्ति प्रत्यय आदि लगाने से बनता है, रूपरेखा-आकृति, सूरत, रूप हरना-लजाना, रूप लेना-आकृति धारण करना, रूप भरना-वेष बनाना।
रूपक-(स० नपु०) वह काव्य जो पात्रों द्वारा खेला जाता है, दृश्य काव्य, जिसके दश भेद हैं, मूर्ति, प्रतिकृति, वह अलकार जिसमें प्रकृत विषय को न छिपाकर उपमेय में उपमान का आरोप होता है, एक परिमाण का नाम, उपमान, चादी, रुपया, मुद्रा, सगीत में दोताला ताल।
रूपकताल-(स०पु०)संगीत मे एक ताल का नाम।

रूपकरण-(सं०पु०) एक प्रकार का घोड़ा।
रूपकर्ता-(सं०पु०) विश्वकर्मा।
रूपकातिशयोक्ति-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की अतिशयोक्ति जिसमें केवल उपमान का उल्लेख करके उपमेयों का अर्थ समझाया जाता है।
रूपकार-(सं०पु०) मूर्ति बनाने वाला।
रूपकृत्-(सं० वि०) रूप बनाने वाला (पु०) विश्वकर्मा।
रूपक्रान्ता-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।
रूपगर्विता-(सं० स्त्री०) वह नायिका जिसको अपनी सुन्दरता का बड़ा अभिमान हो।
रूपग्रह-(सं० वि०) जिसका रूप रंग सुन्दर हो।
रूप घनाक्षरी-(सं०स्त्री०) दण्डक छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस अक्षर होते हैं।
रूपघात-(सं०पु०) सूरत बिगाड़ने का अपराध।
रूप चतुर्दशी-(सं० स्त्री०) कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी।
रूपज-(सं०वि०) रूप से उत्पन्न।
रूपजीवनी-(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रूपण-(सं० नपुं०) आरोप्य, परीक्षा, प्रमाण।
रूपतत्व-(सं० नपुं०) शील, स्वभाव।
रूपतम-(सं० वि०) बड़ा सुन्दर।
रूपता-(सं०स्त्री०) सुन्दरता, खूबसूरती।
रूपदर्शक-(सं० वि०) प्राचीन काल का सिक्कों की परीक्षा करने वाला।
रूपधर-(सं० वि०) सुन्दर, खूबसूरत।
रूपधारी-(हिं० वि०) बहुरूपिया, रूप धारण करने वाला।
रूपनाशन-(सं०पु०) पचक, उल्लू।
रूपपति-(सं०वि०) विश्वकर्मा।
रूपभेद-(सं०पुं०) भिन्न रूप।
रूपमञ्जरी-(सं० स्त्री०) राधिका की एक सखी का नाम, एक प्रकार का फूल।
रूपमनी-(हिं०वि०) रूपवती, सुन्दर।
रूपमय-(हिं०वि०) बहुत सुन्दर।
रूपमान्-(हिं०वि०) देखो रूपवान्।
रूपमाला-(सं०स्त्री०) एक मात्रिक छन्द का नाम, इसका दूसरा नाम मदन है।
रूपमाली-(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तीन मगण और नव दीर्घ वर्ण होते हैं।
रूपया-(हिं० पु०) देखो रुपया।
रूपयौवन-(सं०नपुं०) रूप और जवानी।
रूपरूपक-(सं० पु०) रूपक अलंकार का एक भेद।
रूपवती-(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम जिसको गौरी भी कहते हैं, चम्पकमाला वृत्त का नाम, रुक्मवती (वि०) सुन्दरी स्त्री।
रूपवन्त-(सं०वि०) रूपवान्, सुन्दर।
रूपवान्-(सं०वि०) सुन्दर, खूबसूरत।
रूपविपर्यय-(सं०पु०) रूप के विपरीत।
रूपश्री-(सं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिणी।
रूपसंपद-(सं०स्त्री०) उत्तम रूप, सुन्दरता
रूपसमृद्ध-(सं०वि०) रूपशाली, रूपवान्।
रूपसमृद्धि-(सं० स्त्री०) जो देखने में बड़ा सुन्दर हो।
रूपसम्पत्ति-(सं०स्त्री०) रूप और सम्पत्ति।
रूपसी-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
रूपस्थ-(सं०वि०) रूपवान्, सुन्दर।
रूपहानि-(सं० स्त्री०) रूप का नाश।
रूपा-(हिं० पुं०) चांदी, घटिया चांदी जिसमें कुछ मिलावट हो, सफेद रंग का घोड़ा, सफेद रंग का बैल।
रूपाजीवा-(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रूपाधिबोध-(सं० पु०) इन्द्रियों द्वारा बाह्य वस्तु का ज्ञान।
रूपावली-(सं०स्त्री०) शब्द की विभक्तियों का वर्णन।
रूपाश्रय-(सं०पु०) सुन्दर मनुष्य।
रूपास्त्र-(सं०पु०) कन्दर्प, कामदेव।
रूपित-(सं० पु०) एक प्रकार का उपन्यास जिसमें ज्ञान, वैराग्य आदि पात्र बनाये जाते हैं।
रूपी-(हिं० वि०) रूपयुक्त, रूपवाला, तुल्य, सदृश, सुन्दर, खूबसूरत।
रूपोपजीवी-(हिं० वि०) बहुरूपिया।
रूपोपजीविनी-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रूपोश-(फा० वि०) छिपा हुआ, गुप्त, जो दण्ड से बचने के लिये भाग गया हो।
रूपोशी-(फा० स्त्री०) मुंह छिपाने की क्रिया।
रूप्य-(सं०वि०) सुन्दर, खूबसूरत।
रूप्यक-(सं०पु०) रुपया, रूप्याध्यक्ष-टकसाल का प्रधान अधिकारी।
रूबकार-(फा० पु०) पेशी, आज्ञापत्र, हुक्मनामा, अदालत का हुक्म।
रूबकारी-(सं० स्त्री०) मुकदमे की पेशी।
रूबरू-(फा०क्रि०वि०) सन्मुख, सामने।
रूबल-(रूसी०पु०) रूस का चांदी का एक सिक्का।
रूम-(फा० पु०) टर्की या तुर्की देश का नाम।
रूमना-(हिं०क्रि०) झूलना, झूमना।
रूमाल-(फा०पु०) कपड़े का वह छोटा चौकोर टुकड़ा जो हाथ मुंह पोछने के काम में लाया जाता है, चौकोर शाल या चिकन का कपड़ा।
रूमाली-(हिं०स्त्री०) देखो रुमाली।
रूमी-(फा० वि०) रूम देश का, रूम सबधी, रूम देश का निवासी।
रूर-(सं०वि०) उत्तप्त, जला हुआ।
रूरना-(हिं० क्रि०) चिल्लाना, शोर करना।
रूरा-(हिं० वि०) श्रेष्ठ, बड़ा, सुन्दर, मनोहर।
रूल्-(अं०पु०) नियम, कायदा, लकीर खींचने का डंडा, कागज पर खींची हुई लकीर।
रूलर-(अं०पु०) लकीर खींचने का डंडा, शासक।
रूष-(हिं० पु०) देखो रूप।
रूषित-(सं० वि०) टूटा हुआ।
रूस-(फा० स्त्री०) चाल।
रूसना-(हिं०क्रि०) रूठना, नाराज होना।
रूसा-(हिं० पु०) अरूसा, अडूसा, (पु०) एक सुगन्धित घास का नाम।

रूसी–(हिं० वि०) रूस देश का रहने वाला, रूस संबंधी, (स्त्री०) रूस देश की भाषा , सिर पर जमने वाला भूसी के समान छिलका ।
रूह–(अ० स्त्री०) आत्मा, जीवात्मा, सत्व, सार ।
रूहड़–(हिं०स्त्री०) पुरानी रूई जो एक बार कपड़े आदि में भरी जा चुकी हो ।
रूहना–(हिं० क्रि०) आवेष्टित करना, घेरना ।
रूही–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष ।
रेंकना–(हिं०क्रि०) गदहे का बोलना, बुरी तरह से गाना ।
रेंगटा–(हिं०पुं०) गदहे का बच्चा ।
रेंगना–(हिं० क्रि०) कीड़े या चींटी का चलना, धीरे धीरे चलना ।
रेंगनी–(हिं० स्त्री०) भटकटैया ।
रेंट–(हिं०पु०) नाक का मल, नकटी ।
रेंटा–(हिं०पुं०) लिसोड़े का फल ।
रेंड़–(हिं०पु०) एक पौधा जिसके बीज का तेल गाढा और दस्तावर होता है ।
रेंड़मेवा–(हिं० पुं०) पपीता ।
रेंडा–(हिं०पु०) एक प्रकार का धान ।
रेंड़ी–(हिं०स्त्री०)अरंडी या रेंड़ के बीज।
रेंदी–(हिं०स्त्री०) ककड़ी या खरबूजे का छोटा फल ।
रेंरें–(हिं०पु०) बच्चों के रोने का शब्द ।
रे–(सं० अव्य०) एक संबोधन जिससे आदर का अभाव सूचित होता है, तू, (पु०) संगीत में ऋषभ स्वर ।
रेउता–(हिं०पु०) व्यजन, बेना, पंखा ।
रेउती–(हिं०स्त्री०) देखो रेवती ।
रेक–(सं०पु०) भेक, मेढक ।
रेका–(सं०स्त्री०) शंका, सन्देह ।
रेकान–(हिं०पु०) वह भूमि जो नदी के पानी की पहुँच के बराबर हो ।
रेकार्ड–(अं०पु०) किसी सरकारी संस्था के कागज़ पत्र, तवे के आकार की चूड़ी जो ग्रामोफोन बाजे पर रख कर बनाई जाती है ।
रेक्टर–(अं० पु०) किसी शिक्षा संस्था आदि का प्रधान ।
रेख–(हिं० स्त्री०) रेखा, लकीर, चिह्न, निशान, गिनती, हिसाब, नई निकलती हुई मूछें, रेख काढ़ना–लकीर खींचना, रूपरेखा–सूरत शकल, रेखा भींगना–मूछ निकलती हुई देख पड़ना ।
रेखता–(फा०पु०) एक प्रकार का गाना या गजल, गारे चूने का मसाला।
रेखना–(हिं० क्रि०) लकीर खींचना, खरोंचना, छेदना ।
रेखांश–(सं० पुं०) याम्योत्तर वृत्त का एक अंश ।
रेखा–(सं०स्त्री०) छद्म, कपट, उल्लेख, लकीर, गणना, गिनती, आकृति, आकार, सूरत ।
रेखाकार–(सं० वि०) डंडी की तरह के आकार वाला ।
रेखागणित–(सं० पु०) गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये गये हैं ।
रेखाभूमि–(सं० स्त्री०) लंका और सुमेरु के बीच का देश ।
रेखित–(सं०वि०)जिस पर रेखा पड़ी हो, लकीर पड़ा हुआ, फटा हुआ ।
रेग–(फा०स्त्री०) बालू ।
रेगिस्तान–(फा०पुं०) बालू का मैदान, मरुदेश ।
रेग्युलेटर–(अं० पु०) किसी यन्त्र का वह भाग जो इसकी गति को नियन्त्रित करता है ।
रेग्युलेशन्–(अं०पु०) विधान, कायदा, कानून जो राजपुरुष आधीन देश के शासन के लिये बनाते हैं ।
रेच–(हिं०पु०) ऐंठन, ऐब, दोष ।
रेचक–(सं० पु०) प्राणायाम में खींची हुई सांस को पुनः विधि पूर्वक बाहर निकालने का काम, (वि०) कोष्ठशुद्धि करने वाला, जिसके खाने से दस्त आवे ।
रेचन–(सं० नपु०) मलभेदन, कोष्ठ शुद्धि, जुल्लाब ।
रेचना–(हिं० क्रि०) अधोवायु या मल को बाहर निकालना ।
रेचनीय–(सं०वि०) दस्त लाने वाला ।
रेचित–(सं०वि०)परित्यक्त, छोड़ा हुआ ।
रेज़गारी, रेजगी–(हिं० क्रि०) रुपये से छोटे सिक्के यथा एकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी, अठन्नी , किसी वस्तु के छोटे खण्ड या टुकड़े ।
रेज़ा–(फा०पु०) किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा, सुनारों की सोना चांदी ढालने की नाली, परघनी, नग, धान, अंगिया, सीनाबन्द, राजगीरों के साथ काम करने वाला लड़का ।
रेज़िश–(फा०स्त्री०) जुकाम ।
रेज़िडेन्ट्–(अं० पु०) वह अंगरेजी राज कर्मचारी जो किसी देशी राज्य में अंगरेज़ी राज्य का प्रतिनिधि बन कर काम करता है ।
रेजिमेन्ट्–(अं० स्त्री०) सेना का एक भाग ।
रेजू–(फा०पु०) एक प्रकार का रेशा जो ब्रश बनाने के काम में लाया जाता है ।
रेज़्योलूशन्–(अं०पु०) वह प्रस्ताव जो किसी सभा में स्वीकृत किये जाने के लिये उपस्थित किया जाता है, किसी सभा का निर्णय ।
रेट्–(अं०पु०) भाव, निर्ख़, गति, चाल ।
रेटपेयर्–(अं०पु०) वह जो म्युनिसिपिल्टी में कर या टिकस देता हो ।
रेडियम्–(अं० पु०) एक बहुमूल्य धातु जिसमें से बिजली के कणों की सूक्ष्म धारा सर्वदा निकलती रहती है ।
रेणु–(सं० पु०) धूल, बालू , कणिका, अत्यन्त लघु परिमाण,(स्त्री०) विश्वामित्र की एक पत्नी का नाम, पृथ्वी, सभालू का बीज ।
रेणुका–(सं० स्त्री०) पृथ्वी, रज, धूल, बालू , परशुराम की माता का नाम जो विदर्भराज की कन्या और जमदग्नि की स्त्री थी ।
रेणुकासुत–(सं० पु०) परशुराम ।
रेणुगर्भ–(सं० पु०) ज्योतिषोक्त होरा निर्णायक यन्त्र ।
रेणुत्व–(सं०नपु०) रेणु का भाव या धर्म ।

रेणुपदवी-(सं०स्त्री०) धूलि से भरा हुआ रास्ता।
रेणुमत्-(सं० पु०) रेणुका के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
रेणुरूपित-(सं०पु०) गर्दभ, गदहा।
रेणुवास-(सं० पु०) भ्रमर, भौंरा।
रेणुसार-(सं० पु०) कर्पूर, कपूर।
रेत-(हि०पु०) शुक्र, वीर्य, जल, पारा, लोहा, रेतने का एक औजार, (स्त्री०) बालू, मरुस्थल, रेगिस्तान।
रेतज-(सं० पु०) पुत्र, लड़का।
रेतन-(सं० नपु०) शुक्र, वीर्य।
रेतना-(हि०क्रि०) रेती के द्वारा किसी वस्तु को रगड़ कर उसमें से महीन कण गिराना, औजार को रगड़ कर धीरे धीरे काटना, किसी औजार की धार रगड़ना।
रेतल-(हि०पु०) भूरे रग का एक पक्षी।
रेतला-(हि०वि०) रेतीला।
रेतस्-(सं०पु०) शुक्र, वीर्य।
रेतिया-(हिं० पु०) रेतने वाला।
रेती-(हि० स्त्री०) लोहा लकड़ी आदि रेतने का लोहे का एक औजार, नदी या समुद्र के किनारे की बलुई जमीन, बलुआ किनारा।
रेतीला-(हिं० वि०) वालुकामय, बलुआ।
रेतोधा-(सं०वि०) गर्भिणी, गर्भवती।
रेतोमार्ग-(सं०पु०) शुक्र निकलने का छिद्र
रेजी-(हिं० स्त्री०) वह वस्तु जिसमें से रग निकलता हो।
रेनु-(हिं० पु०) देखो रेणु।
रेप-(सं०वि०) कृपण, क्रूर, निन्दित।
रेफ-(सं०पु०) रकार, रवर्ण, रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने से उस अक्षर में माथे पर रक्खा जाता है "ˆ", राग, शब्द।
रेफरी-(अं०पु०) झगड़ा निपटाने वाला पच
रेफविपुला-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
रेफ्यूज्-(अं० पुं०) वह सस्था जिसमें अनाथों और निराश्रयों को अस्थायी रूप से आश्रय मिलता है।
रेभ-(सं०वि०) कठोर वचन बोलनेवाला।
रेभण-(सं० नपु०) गाय का बोलना।
रेमि-(सं०वि०) रमण करने वाला।
रेरिह्-(सं०त्रि०) जीभ से वारवार चाटना।
रेरिहाण-(सं०पु०) शिव, महादेव।
रेरुआ-(हिं० पु०) बड़ा उल्लू पक्षी, ररुआ।
रेल-(अं० स्त्री०) लोहे की वह पटरी जिस पर रेलगाड़ी चलती है, भाफ की शक्ति से चलने वाली रेलगाड़ी (हि० स्त्री०) बहाव, धारा, अधिकता, भरमार।
रेलहेल-(हि० स्त्री०) देखो रेलपेल।
रेलना-(हि० क्रि०) आगे की ओर झोंकना या ढकेलना, अधिक भरा होना, ठूँस ठूँस कर भोजन करना।
रेलपेल-(हि० स्त्री०) वह भीड़ जिसमें लोग एक दूसरे को धक्का देते हैं, भरमार।
रेलवे-(अं० पु०) रेलपथ, लोहे की पटरियाँ जिन पर रेलगाड़ी चलती है।
रेला-(हि०पु०) तलवे पर महीन और सुन्दर बोलों को बजाने की गति, पक्ति, समूह, धक्का मुक्का, अधिकायत, जल का प्रवाह, बहाव, समूह में चढाई, धावा, आक्रमण।
रेवंछा-(हिं० पु०) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल खाई जाती है।
रेवंद-(फ़ा० पु०) एक पहाड़ी वृक्ष जिसकी जड़ और लकड़ी औषधियों में प्रयोग होती है, रेवदचीनी।
रेवड़-(हि०पु०) भेड़ बकरी का झुड।
रेवड़ी-(हि०स्त्री०) पगी हुई चीनी का टुकड़ा जिसपर सफेद तिल चपकाई होती है।
रेवत-(सं० पु०) जंभीरी नीबू, बलराम के श्वशुर का नाम।
रेवतक(सं० नपु०) कबूतर।
रेवती-(सं० स्त्री०) अश्विनी आदि नक्षत्रों में से सत्ताईसवां नक्षत्र जो बत्तीस तारों का समुदाय है, बलराम की पत्नी का नाम, दुर्गा, गाय।
रेवतीभव-(सं० पु०) शनि।
रेवतीरमण-(सं०पु०) बलराम, विष्णु।
रेवतीश-(सं०पु०) बलराम।
रेवन्त-(सं० पु०) सूर्य के पुत्र।
रेवरेन्ड्-(अं०पु०) पादड़ियों की एक सम्मान सूचक उपाधि।
रेवा-(सं०स्त्री०) नर्मदा नदी, कामदेव की पत्नी, रति, दुर्गा, नील का पौधा, दीपक राग की एक रागिणी।
रेवेन्यू-(अं० पु०) किसी राज्य की वार्षिक आय जो मालगुज़ारी, आबकारी, इन्कम् टेक्स, कस्टम, ड्यूटी, आदि से उपलब्ध होती है।
रेवेन्यूबोर्ड्-(अं०पु०) बड़े बड़े अफ़सरों की वह समिति जिसके आधीन राजस्व का प्रबन्ध और नियन्त्रण रहता है।
रेवोल्यूशन-(अं० पु०) राज्यविप्लव, उलटफेर, परिवर्तन।
रेवोल्यूशनरी-(अं० वि०) राज्यक्रान्तकारी, विप्लवपथी।
रेशम-(फ़ा० पु०) एक प्रकार का चमकीला महीन तन्तु जो पुष्ट होता है जिसके वस्त्र बुने जाते हैं, इस तन्तु को कोश में रहने वाले एक प्रकार के कीडे तैयार करते हैं जो कई प्रकार के होते हैं-ये शहतूत के पत्ते खाते हैं।
रेशमी-(फ़ा०वि०) रेशम का बना हुआ।
रेशा-(फ़ा० पुं०) तन्तु या महीन सूत, जो पौधों की छाल आदि से निकाला जाता है।
रेष-(सं० पु०) क्षति, नुकसान।
रेषण-(सं०नपु०) घोड़े का हिनहिनाना।
रेषा-(सं०स्त्री०) देखो रेषण।
रेष्मन्-(सं० पु०) प्रलय काल।
रेस-(अं०स्त्री०) दौड़ की प्रतियोगिता, घुड़दौड़।
रेसकोर्स्-(अं०पु०) घुड़दौड़ का मैदान।
रेसमान-(फ़ा० पु०) सुतली, डोरी।
रेह-(हिं०स्त्री०) खार मिली हुई मिट्टी जो ऊसर में पाई जाती है।
रेहन-(फ़ा० पु०) रुपया देने वाले के पास कोई माल या सम्पत्ति इस शर्त

पर रखना कि रुपया अदा हो जाने पर वह माल या सम्पत्ति वापस कर दे, वधक, गिरवीं।
रेहनदार–(फ़ा०पु०) वह जिसके पास बन्धक रक्खा जावे।
रेहननामा–(फ़ा० पु०) वह कागज़ जिसपर रेहन की शर्तें लिखी हो।
रेहल–(अ० स्त्री०) देखो रिहल।
रेहुआ–(हि०वि०) जिसमें रेह वहुत हो।
रैङ्गलर–(अ० पु०) इङ्गलैन्ड की सर्वोच्च गणित परीक्षा मे उत्तीर्ण।
रैअति–(हि०पु०) देखो रैयत।
रैक–(अ० पु०) अलमारी के ढग का पुस्तक आदि रखने का लकड़ी का ढाँचा।
रैकेट–(अ० पु०) टेनिस के खेल में गेंद मारने का तात से बिना हुआ डडा।
रैतुआ–(हि० पु०) देखो रायता।
रैदास–(हि०पु०) एक प्रसिद्ध भक्त जो जाति का चमार था यह रामानन्द का शिष्य था, चमार।
रैदासो–(हि०पु०)रैदास भक्त के सम्प्रदाय का, एक प्रकार का मोटा धान।
रैन, रैनि–(हिं० स्त्री०) रात्रि, रात।
रैनिचर–(हिं०पु०) राक्षस।
रैनी–(हि० स्त्री०) चादी या सोने की वह गुल्ली जो तार खींचने के लिये बनाई जाती है।
रैमुनिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की थरहर।
रैयत–(अ०स्त्री०) प्रजा, रिआया।
रैयाराव–(हि० पु०) छोटा राजा, सरदार।
रैवत–(हि० पु०) घोड़ा।
रैवत–(स०पु०) शकर, महादेव।
रैवतक–(स०पु०) गुजरात का एक पर्वत जो जूनागढ के पास है, इसको आज कल गिरनार कहते हैं।
रैहर–(हि०पु०) झगड़ा, लड़ाई।
रैहा–(अ०पु०) एक प्रकार की वनस्पति।
रोंग–(हिं० पु०) लोम, रोवा।
रोंगटा–(हि० पु०) सपूर्ण शरीर पर के रोवें,रोंगटे खड़े होना–रोमाचित होना।
रोंगटी–(हिं० स्त्री०) खेल में बेइमानी करना।
रोंठा–(हिं०पु०) कच्चे आम की सुखाई हुई फाक।
रोंव–(हि०पु०) रोआ, लोम।
रोआ–(हि०पु०) रोवा, लाम।
रोआव–(हि०पु०) देखो रोब।
रोइसा–(हि०पु०) रूसा घास।
रोईंया–(हि०पु०) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिस पर रखकर ऊख के टुकडे काटे जाते हैं।
रोउं–(हिं०पु०) देखो रोवाँ।
रोक–(स० पु०) नकद रुपया, रोकड़, नकद व्यवहार का सौदा (नपु०) छेद, नाव (हि०स्त्री०) किसी काम में वाधा, रोकने वाली वस्तु, वाधा, अटकाव, निषेध, मनाही, रोकझोंक।
रोकटोक–(हिं० स्त्री०) प्रतिबन्ध, बाधा, निषेध, मनाही।
रोकड़–(हि० स्त्री०) नकद रुपया पैसा, मूल धन, पूजी, जमा।
रोकड़वही–(हि०स्त्री०) वह किताब या बही जिसमें नकद रुपये के लेन देन का हिसाब लिखा जाता है।
रोकड़विक्री–(हि० स्त्री०) नकद दाम पर विक्री।
रोकड़िया–(हि०पु०) रोकड़ रखने वाला, खज़ानची।
रोकना–(हि० क्रि०) गति वा अवरोध करना, बाधा डालना, बाज़ रखना, मना करना, रास्ता छेंकना,वशमें लाना, काबू में करना, ऊपर लेना, जारी न रखना, स्थगित करना, अड़चन या बाधा डालना, जाने न देना।
रोख–(हि०पु०) देखो रोष।
रोग–(स०पु०) व्याधि, बीमारी, मर्ज़।
रोगकारक–(स० वि०) बीमारी पैदा करनेवाला।
रोगग्रस्त–(स०वि०) रोग से पीड़ित।
रोगघ्न–(स० नपु०) औषधि, दवा, (वि०) रोग को हटाने वाला।
रोगज्ञ–(स० पु०) वैद्य, रोगद–दुःख देने वाला।
रोगद–(सं०वि०) दुःख देने वाला।
रोगदई, रोगदैया–(हि० स्त्री०) खेल में वेइमानी।
रोग़न–(फ़ा०पु०) तेल, चिकनाई चमक लाने के लिये किसी वस्तु पर चढ़ाने वाला लेप, पालिश, पतला लेप जिसको किसी वस्तु पर पोतने से चिकनाहट और चमक आती है।
रोगनदार–(फ़ा० वि०) जिस पर रोग़न चढ़ाया गया हो।
रोगनाशक–(अ० वि०) बीमारी दूर करने वाला।
रोगनिदान–(स० नपु०) रोग के लक्षण और उत्पत्ति के कारण आदि की पहचान।
रोगनी–(फ़ा० वि०) रोग़न किया हुआ, रोगनदार।
रोगपति–(स०पु०) ज्वर, बोखार।
रोगप्रद–(सं० वि०) रोग उत्पन्न करने वाला।
रोगभाज–(स०वि०) रोगयुक्त, रोगी
रोगभू–(स० स्त्री०) शरीर, देह।
रोगमुक्त–(स० वि०) रोग से छुटकारा पाया हुआ।
रोगराज–(स० पु०) राजयक्ष्मा रोग।
रोगलक्षण–(स०नपु०) रोग का निदान
रोगविज्ञान–(स० नपु०) रोग पहचानने के नियम आदि।
रोगविनिश्चय–(स० पु०) रोग का निर्णय करना।
रोगशान्ति–(स० स्त्री०) रोग मुक्ति।
रोगशिला–(स० स्त्री०) मनः शिला, मैनसिल।
रोगह–(स०नपु०) औषधि, दवा
रोगहारी–(स० पु०) चिकित्सक, वैद्य
रोगहृत्–(स०वि०) रोग नाशक।
रोगहेतु–(स०पु०) रोगका कारण।
रोगाक्रान्त–(स० वि०) व्याधि ग्रस्त।
रोगातुर–(सं० वि०) व्याधित, पीड़ित।
रोगिणी–(स०वि०स्त्री०) रोगी स्त्री।
रोगित–(स० वि०) रोग से पीड़ित।

रोगिया-(हिं० पु०) रोगी, बीमार ।
रोगी-(हिं० वि०) व्याधि ग्रस्त, बीमार ।
रोचक-(सं०पु०) भूख, केला (वि०) रुचि कारक, अच्छा लगने वाला, मनोरंजक ।
रोचकता-(सं० स्त्री०) मनोहरता ।
रोचकी-(सं० वि०) इच्छा करने वाला ।
रोचन-(सं० पु०) अम्लतास, सफेद सहिजन, प्याज, अनार, काला सेमर, कामदेव के पांच बाणों में से एक, रोली, गोरोचन, (वि०) रुचने वाला, शोभा देने वाला, प्रिय लगने वाला, सुहाने वाला
रोचनक-(सं० पु०) व्यग्रोचन
रोचनफला-(सं०स्त्री०) ककड़ी ।
रोचना-(सं०स्त्री०) लाल कमल, आकाश, स्वर्ग, गोरोचन, वसुदेव की स्त्री का नाम ।
रोचनी-(सं०स्त्री०) गोरोचन, मैनसिल ।
रोचि-(सं०स्त्री०) प्रभा, दीप्ति, किरण ।
रोचित-(सं०वि०) सुशोभित ।
रोचिष्णु-(सं० वि०) रोचक, चमकदार ।
रोज-(फा० पु०) दिवस, दिन (अव्य०) प्रति दिन, नित्य ।
रोचिस्-(सं०नपुं०) प्रभा, कान्ति ।
रोजगार-(फा०पुं०) जीविका या धन संचय करने के लिये हाथ में लिया हुआ काम व्यवसाय, धन्धा, व्यापार, तिजारत, पेशा ।
रोजगारी-(फा०पुं०) व्यापारी, सौदागर ।
रोजनामचा-(फा० पु०) दिनचर्या की पुस्तक, प्रतिदिन का जमाखर्च लिखने की बही, वह किताब जिसपर प्रतिदिन का काम लिखा जाता है ।
रोजमर्रा-(फा०अव्य०) प्रतिदिन, हर रोज, नित्य व्यवहार की भाषा, बोलचाल ।
रोजा-(फा०पु०) व्रत, उपवास, वह व्रत, जो मुसलमान लोग रमजान के महीने भर तक रखते हैं, जिसका अन्त ईद पर होता है ।
रोजाना-(फा०क्रि०वि०) प्रतिदिन का ।

रोजी-(फा० स्त्री०) नित्य का भोजन, जीविका, वह जिसके सहारे किसी को भोजन वस्त्र प्राप्त हो
रोजीदार-(फा०पु०) जिसको रोजाना खर्च के लिये कुछ मिलता हो ।
रोजीना-(फा० पु०) प्रति दिन की मजदूरी ।
रोजीबिगाड़-(फा० पु०) किसी की लगी हुई रोजी को बिगाड़ने वाला
रोझ-(हिं०स्त्री०) नीलगाय ।
रोट-(हिं०पु०) गेहूं के आटे की बहुत मोटी रोटी लिट्टी
रोटका-(हिं०पु०) बजरा ।
रोटा-(हिं०वि०) पिसा हुआ ।
रोटिहा-(हिं० पु०) वह नौकर जो केवल भोजन पर काम करता है ।
रोटी-(हिं० स्त्री०) गुंधे हुए आटे की टिकिया जो आंच पर सेकी गई हो, फुलका, खोई, रोटी कपड़ा-भोजन और वस्त्र, किसी बात की रोटी खाना-जीविका निर्वाह करना, किसी की रोटी तोड़ना-किसी के आश्रित रहना, रोटी दाल-जीविका निर्वाह करना ।
रोटीफल-(हिं० पु०) एक प्रकार का फल जो खाने में स्वादिष्ट होता है ।
रोठा-(हिं० पु०) एक प्रकार का बजरा।
रोड़ा-(हिं० पु०) बड़ा कंकड़ ईंट या पत्थर का टेला, एक प्रकार का मोटा धान ।
रोद-(सं० पु०) क्रन्दन, रोना दुःख प्रकट करना ।
रोदन-(सं० नपुं०) क्रन्दन, रोना ।
रोदस-(सं० नपुं०) स्वर्ग, भूमि ।
रोदा-(हिं० पु०) कमान की डोरी, पतली तांत जिससे सितार के परदे बांधे जाते हैं ।
रोध-(सं० पु०) किनारा, तट, रुकावट ।
रोधक-(सं० वि०) रोकने वाला ।
रोधन-(सं० वि०) रोकने वाला (नपुं०) अवरोध, रुकावट ।
रोधना-(हिं० क्रि०) रुकावट करना, रोकना ।

रोधस्वती-(सं० स्त्री०) नदी ।
रोधी-(सं० वि०) रोकने वाला ।
रोध्य-(सं०वि०) रोकने लायक ।
रोध्र-(सं० नपुं०) लोध्र, लोध ।
रोना-(हिं० क्रि०) पीड़ा, दुःख आदि से व्याकुल होकर मुंह से विशेष प्रकार का स्वर निकलना तथा नेत्रों से जल छोड़ना, दुःख करना, पछताना, बुरा मानना, चिढ़ना, (पु०) दुःख, रंज (वि०) रोने वाला, थोड़ीसी बात पर दुःख मानने वाला, बात बात पर बुरा मानने वाला, चिड़चिड़ा, रोना पीटना-अति विलाप करना, रोकर-बड़ी कठिनाई और परिश्रम से, रोना गाना-विनती करना ।
रोप-(हिं०पु०) हल में की वह लकड़ी जो हरिस के छोर पर लगी रहती है ।
रोपक-(सं० वि०) वृक्ष लगाने वाला, स्थापित करने वाला, उठाने वाला ।
रोपण-(सं० नपुं०) प्रादुर्भाव मोहित करना, स्थापित करना, ऊपर रखना, खड़ा करना, (पु०) पारद, पारा, घाव पर लेप लगाना ।
रोपणीय-(सं० वि०) रोपने योग्य ।
रोपना-(हिं०क्रि०) जमाना, लगाना, ठहराना, अड़ाना, किसी वस्तु को लेने के लिये हथेली या कोई पात्र आगे करना, पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में लगाना, बीज बोना, रोकना ।
रोपनी-(हिं० स्त्री०) धान आदि के पौधों को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में लगाना, रोपाई का काम ।
रोपित-(सं० वि०) जमाया हुआ, लगाया हुआ, स्थापित, रक्खा हुआ, मोहित किया हुआ ।
रोप्य-(सं० वि०) रोपने योग्य ।
रोब-(अ० पु०) बड़प्पन की धाक, दबदबा, रोब जमाना-प्रताप दिखलाना, रोबमें आना-किसी के प्रभाव के कारण अनिच्छित कार्य कर डालना ।

रोबदार-(अ० वि०) जिसकी चेष्टा से प्रताप और तेज प्रकट हो, प्रभावशाली।
रोम-(सं०नपुं०) लोम, शरीर के बाल, रोया, छिद्र, सूराख, जल, पानी, भेड़ आदि का ऊन, रोम रोम में-सम्पूर्ण शरीर में, रोमरोमसे-सहृदय।
रोमक-(स०नपुं०) चुम्बक, रोम नगर, इस देश का निवासी।
रोमकूप-(स०पु०) शरीर के वे महीन छिद्र जिनमें रोवें निकले होते हैं।
रोमकेशर-(स० पु०) चामर, चँवर।
रोमगर्त-(सं० पु०) देखो रोमकूप।
रोमगुच्छ-(स०पु०) चामर, चॅवर।
रोमतक्षरी-(स०स्त्री०) बिना रोवें की स्त्री।
रोमद्वार-(स०पु०)देखो रोमकूप।
रोमन्-(अ०वि०) रोम नगर वासी।
रोमन्कैथोलिक्-(अ० वि०) ईसाइयों का प्राचीन धर्म, सप्रदाय।
रोमन्थ-(स० पु०) पागुर करना।
रोमपाट-(सं० पु०) ऊनी वस्त्र, दुशाला।
रोमपाद-(स०पु०) अग देश के एक प्राचीन राजा का नाम।
रोम पुलक-(स०पु०) रोमाञ्च।
रोमफला-(सं० स्त्री०) तितिंश, डेंड़सी।
रोमवद्ध-(स० वि०) रोवें से बधा हुआ।
रोमभूमि-(स०स्त्री०) चर्म, चमड़ा।
रोमरन्ध्र-(स०नपु०) देखो रोमकूप।
रोमराजि-(सं०स्त्री०) रोमावलि, रोयों की पक्ति।
रोमलता-(स० स्त्री०) देखो रोमराजि।
रोमवल्ली-(स०स्त्री०) कपिकच्छु, केवाच।
रोमविकार-(स० पु०) रोमाञ्च।
रोमश-(स०पुं०) मेष, भेड़ा, सुअर, एक ऋषि का नाम।
रोमशमूलिका-(स०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।
रोमशा-(स०स्त्री०) बृहस्पति की कन्या का नाम।
रोमशातन-(स०नपु०) बालों को काटना।
रोमहरण-(स० नपु०) हरताल।
रोमहर्ष, रोमहर्षण-(स० पु०, नपु०) रोमाच।
रोवा खड़ा होना, (वि०) भयकर।
रोमहर्षित-(स०वि०) पुलकित।
रोमाञ्च-(स० पु०) रोमहर्षण, आनन्द या भय से रोंगटे खड़े होना, पुलक।
रोमाञ्चित-(स० वि०) जिसके रोंगटे खड़े हों।
रोमाग्र-(स०पु०) रोवें की नोक।
रोमाली-(स०स्त्री०) देखो रोमावली।
रोमावलि, रोमावली-(स० स्त्री०) रोयों की पक्ति जो पेट के बीच में नाभि के ऊपर होती है।
रोमोद्गति- (स०स्त्री०) रोमाञ्च, पुलक।
रोमोद्गम-(स०पु०) रोवें का खड़ा होना।
रोयाँ-(हिं० पु०) शरीर पर के लोम, शरीर पर के बाल, रोयां खड़ा होना-रोमाञ्चित होना, रोयां पसीजना-दया उत्पन्न होना।
रोर-(स० स्त्री०) कलकल, कोलाहल, शोरगुल, हलचल, घमासान, चिल्लाहट का शब्द, (वि०) प्रचण्ड, उपद्रवी, अत्याचारी।
रोरा-(हि०पु०, चूर गाजा।
रोरी-(हिं० स्त्री०) हलदी चूने से बनी हुई लाल रग की बुकनी जिसका तिलक लगाया जाता है, धूमधाम, चहल पहल, (वि०) सुन्दर (पुं०) लहसुनिया नामक रत्न।
रोल-(हि०पु०) पानी का तोड़, बहाव, नक्काशी करने का एक औजार, (स्त्री०) कोलाहल, शब्द, ध्वनि।
रोलम्ब-(स० पु०) भ्रमर, भौंरा।
रोलर-(अ० पु०) कोई ढुलकने वाली वस्तु, बेलन।
रोला-(स०पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस मात्रायें होती हैं, (हि० पु०) शोरगुल, घमासान युद्ध, चौका बरतन करने का काम।
रोली-(हिं० स्त्री०) देखो रोरी।
रोवनहार-(हिं०पु०) रोने वाला, वह कुटुबी जो किसी के मर जाने पर विलाप करता है।
रोवना-(हिं० वि०) देखो रोना (वि०) बहुत जल्दी बुरा मानने वाला, हसी या खेल में बुरा मानने वाला, चिढ़ने वाला।
रोवनिहारा-(हि०वि०) देखो रोवनहारा।
रोवनी धोवनी-(हि०स्त्री०) रोने धोने का काम।
रोवासा-(हिं०वि०) जो रोने पर तैयार हो, जो रो देना चाहता हो।
रोशन-(फा० वि०) प्रकाशमान्, चमकदार, प्रदीप्त, जलता हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात, प्रकट, ज़ाहिर।
रोशनचौकी-(फा०स्त्री०) फूक कर बजाने का एक प्रकार का बाजा, शहनाई।
रोशनदान-(फा०पु०) दीवार में प्रकाश आनेके लिये बना हुआ छिद्र, गवाक्ष, मोखा, झरोखा।
रोशनाई-(फा०स्त्री०) लिखने की स्याही, मसि, प्रकाश, रोशनी।
रोशनी-(फा० स्त्री०) उजाला, प्रकाश, दीपकों की पक्ति का प्रकाश, दीपक, चिराग, ज्ञान या शिक्षा का प्रकाश।
रोष-(स० पु०) क्रोध, गुस्सा, उमग, जोश, कुढ़न, विरोध, बैर।
रोषण-(स० वि०) क्रोध करने वाला।
रोषणता-(स०स्त्री०) क्रोध, गुस्सा, रोष।
रोषित, रोषी-(सं०वि०) क्रोधी, गुस्सवर।
रोस-(हि०पु०) देखो रोष, क्रोध।
रोसनाई-(हिं०स्त्री०) देखो रोशनाई।
रोसनी-(हि०स्त्री०) देखो रोशनी।
रोह-(स०वि०) चढ़ने योग्य, (हि०पु०) नील गाय।
रोहण-(स०नपु०) चढ़ना, चढाई, अकुरित होना, ऊपर को बढ़ना।
रोहज-(हिं०पु०) नेत्र, आख।
रोहना-(हि०क्रि०) चढना, ऊपर करना, या जाना, अपने ऊपर रखना, धारण करना, चढ़ाना, सवार कराना।
रोहा-(हिं० पुं०) आख के पलक की भीतर दाने पड़जाने का रोग।
रोहिणिका-(स०स्त्री०)क्रोध से लाल स्त्री।
रोहिणी-(स०स्त्री०) स्त्री, गाय, बिजली,

सफेद कौवाठोंठी, मजीठ, वासुदेव की स्त्री जो बलराम की माता थीं, पांच वर्ष की कुमारी, अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से चौथा नक्षत्र।

रोहिणीकान्त-(सं० पुं०) चन्द्रमा।

रोहिणीपति-(सं०पुं०) वासुदेव।

रोहित-(सं०पुं०) सूर्य, रोहू मछली,(स्त्री०) लाल रंग की घोड़ी, (वि०) लाल रंग (सं०नपुं०) कुकुम, केसर, लोहू, इन्द्र धनुष, (पुं०) राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम, एक प्रकार का मृग।

रोहितवाह-(सं० पुं०) अग्नि।

रोहिताक्ष-(सं०पुं०) लाल आंख।

रोहिताश्व-(सं०पुं०) अग्नि, राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम।

रोही-(हिं०वि०) चढ़ने वाला, (पुं०) पीपल का पेड़, एक प्रकार का मृग, रोहिष घास, एक प्रकार का हथियार।

रोहुन-(हिं०पुं०) रोहन नाम का वृक्ष।

रोहू-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बडी मछली।

रौंद-(हिं० स्त्री०) रौंदने की क्रिया या भाव, चक्कर।

रौंदन-(हिं०पुं०) रौंदने की क्रिया, मर्दन।

रौंदना-(हिं० क्रि०) पैरों से कुचलना, लातों से मारना, खूब पीटना।

रौंसा-(हिं०पुं०) केंवाच का बीज।

रौ-(फ़ा० स्त्री०) गति, चाल, ढंग, धुन, वेग, झोंक, पानी का बहाव, तोड़, किसी बात की धुन, (हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष।

रौक्ष्य-(सं०नपुं०) रूक्षता, रूखापन।

रौगन-(अ०पुं०) तेल, लाख आदि का बना हुआ पक्का रंग जो चमक लाने के लिये चीजों पर चढाया जाता है।

रौगनी-(अ० वि०) तेल का रौगन फेरा हुआ।

रौजन-(फ़ा०वि०) छिद्र, सूराख, दरार, मोखा।

रौजा-(अ०पुं०) बाग, बगीचा, वह इमारत जो बादशाह, सरदार आदि के कब्र पर बनी होती है।

रौताइन-(हिं० स्त्री०) राव या रावत की स्त्री, ठकुराइन, स्त्रियों के लिये आदर सूचक शब्द।

रौताई-(हिं०स्त्री०) राव या रावत होने का भाव, ठकुराई, सरदारी।

रौद्र-(सं०नपुं०) शृंगारादि रस के अन्तर्गत एक रस, जिसको उग्र भी कहते हैं, इसमें क्रोध सूचक शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन रहता है, आर्द्रा नक्षत्र, यम, कार्तिकेय, हेमन्त ऋतु, एक प्रकार का अस्त्र, ग्यारह मात्राओं का एक छन्द, (वि०) रुद्र सम्बन्धी, तीव्र, भयानक, भयङ्कर।

रौद्रकर्म-(सं०पुं०) भयङ्कर काम।

रौद्रता-(सं०स्त्री०) प्रचण्डता, डरावनापन।

रौद्रार्क-(सं० पुं०) तेईस मात्राओं का एक छन्द।

रौद्री-(सं०स्त्री०) रुद्र की पत्नी, चण्डी।

रौन-(हिं० पुं०) देखो रमण।

रौनक़-(अ०स्त्री०) दीप्ति, चमक, शोभा, छटा, चहलपहल, प्रफुल्लता, सुहावनापन

रौना-(हिं० पुं०) देखो रोना।

रौनी-(हिं०स्त्री०) देखो रमणी।

रौप्य-(सं० नपुं०) चांदी, रुपा।

रौप्यमुद्रा-(सं०स्त्री०) चांदी का सिक्का।

रौरव-(सं० पुं०) एक नरक का नाम, (वि०) चंचल, धूर्त, बेइमान, घोर, भयङ्कर।

रौरा-(हिं०पुं०) हल्ला, शोरगुल, ऊधम, (सर्व०) आपका।

रौराना-(हिं० क्रि०) बकबक करना।

रौरे-(हिं०सर्व०) आप, सबोधन का शब्द।

रौला-(हिं०पुं०) हल्ला, शोरगुल, ऊधम।

रौलि-(हिं० स्त्री०) चपत, धौल।

रौशन-(फ़ा०वि०) देखो रोशन।

रौशनदान-(फ़ा०पुं०) देखो रोशनदान।

रौशनी-(फ़ा० स्त्री०) देखो रोशनी।

रौस-(फ़ा०स्त्री०) गति, चाल, रंगढंग, तौर तरीका, बाग की क्यारियों के बीच की पगडंडी, देखो रविश।

रौहल-(हिं० स्त्री०) घोडे की एक जाति, घोडे की एक चाल।

रौहित-(सं० पुं०) रोहित मनु के पुत्र का नाम, कृष्ण के एक पुत्र का नाम।

रौहिष-(सं०नपुं०) रोहिष नामक घास।

रौही-(सं० स्त्री०) मृगी, हरनी।

ल

ल—व्यंजन वर्ण का अट्ठाईसवा अक्षर इसका उच्चारण स्थान दन्त है।

ल—(सं० नपुं०) पृथ्वी का बीज, पृथ्वी, इन्द्र, छन्द शास्त्र में लघु नामक गण या वर्ण।

लकलाट—(अं० पुं० "लाङ्क्लाथ्" का अपभ्रंश) एक प्रकार का धुला हुआ चिकना मोटा कपड़ा।

लंकाल—(हिं० पुं०) सिंह, शेर।

लंग—(फा० स्त्री०) देखो लाग, (पुं०) लगड़ापन।

लगड़—(हिं० वि०) देखो लगर, लगड़ा।

लगड़ा—(हिं०वि०) जिसका पैर टूटा या वेकाम हो, जिसका एक पाया टूट गया हो, (पुं०) एक प्रकार का बहुत बढ़िया कलमी आम।

लगडाना—(हिं०क्रि०) लगड़ाते हुए या भचक कर चलना।

लंगड़ी—(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द (वि०) वह स्त्री जिसके पैर टूट गये हों।

लगर—(फा०पुं०) लोहे का बना हुआ एक प्रकार का बहुत बड़ा काटा जो जहाज़ या बड़ी नावों को एक स्थान पर ठहराने के लिये उपयोग किया जाता है, इसके कडे में मोटा रस्सा बाधकर पानी में फेंक देते हैं और इसकी नुकीली शाखा मिट्टी में धँस जाती है, रस्से का छोर नाव या जहाज़ में बाध दिया जाता है, रस्सी या तार में बँधी हुई तथा लटकती हुई कोई भारी वस्तु, आश्रयस्थान, आश्रय व्यक्ति वह स्थान जहा गरीबों को बाटने के लिये भोजन पकाया जाता है, पका हुआ भोजन जो गरीबों को बाटा जाता है, कपडे में दूर दूर लगाया हुआ टाका, वह स्थान जहा पर बहुत से लोगों का भोजन पकता है, किसी पदार्थ का नीचे का मोटा भारी भाग, अडकोश, पहलवानों की लगोट, लोहे की मोटी जंजीर, पैर में पहरने का चादी का तोड़ा, जहाज़ का मोटा रस्सा, हरहाई गाय के गले में बाधने का लकड़ी का मोटा कुन्दा, ठेंगुर, (वि०) अधिक भार का, ढीठ, नटखट।

लगरखाना—(फा० पुं०) वह स्थान जहाँ गरीबों को पकाया हुआ भोजन बाटा जाता है।

लंगरगाह—(फा०पुं०) समुद्र या नदी के किनारे पर का वह स्थान जहा पर लगर डाल कर जहाज़ ठहरते हैं।

लँगरई, लँगराई—(हिं०स्त्री०) उपद्रव ढिठाई

लँगूर—(हिं०पुं०) बन्दर, पूँछ, एक विशेष प्रकार का बन्दर जिसका मुँह काला तथा पूछ लबी होती।

लँगूरफल—(हिं०पुं०) नारियल।

लँगूरी—(हिं०स्त्री०) घोड़ों की एक चाल।

लँगूल—(हिं०पुं०) देखो लङ्गूल, पूछ, दुम।

लगोट—(हिं० पुं०) एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जो कमर में लपेटा जाता है जिससे केवल उपस्थ ढप जाता है, रुमाली, **लगोटबन्द**—वह जो ब्रह्मचर्य से रहता हो।

लंगोटा—(हिं०पुं०) देखो लगोट।

लगोटी—(हिं० स्त्री०) कौपीन, कछनी, **लगोटिया यार**—बाल्यावस्था का दोस्त, **लगोटी पर फाग खेलना**—धन की कमी रहते हुए अधिक खर्च करना।

लंघना—(हिं०क्रि०) देखो लाघना।

लठ—(हिं०वि०) मूर्ख, उद्दण्ड।

लड—(हिं०पुं०) पुरुष की मूत्रेन्द्रिय, शिश्न।

लडूरा—(हिं०वि०) बिना पूछ का, वह पक्षी जिसकी सारी पूछ कट गई हो।

लतरानी—(अ० स्त्री०) शेखी, व्यर्थ की बड़ी बड़ी बात।

लंबतडग—(हिं० वि०) लबे कद का, बहुत लबा।

लबर—(हिं०पुं०) देखो नबर।

लबरदार—(हिं०पुं०) देखो नबरदार।

लबा—(हिं०वि०) जिसके दोनो छोर एक दूसरे से बहुत दूरी पर हों, जिसकी ऊचाई अधिक हो, ऊपर की ओर दूर तक उठा हुआ, विशाल, अधिक विस्तार का, बड़ा दीर्घ, **लबा करना**—प्रस्थान कराना, चलता करना, पटक कर ज़मीन पर लेटा देना।

लबाई—(हिं०स्त्री०) लबापन, लबा होने का भाव।

लबान—(हिं०स्त्री०) लबाई।

लबित—(हिं०वि०) देखो लम्बित।

लबी—(हिं०वि०स्त्री०) 'लबा' शब्द का स्त्रीलिंग का रूप, **लबी तानना**—लेटकर सो जाना।

लंबोतरा—(हिं०वि०) लबे आकार का जो थोड़ा लबा हो।

लउटी—(हिं०स्त्री०) देखो लकुटी।

लकच—(सं०पुं०) बडहर का पेड़।

लकड़बग्घा—(हिं० पुं०) एक जगली मासाहारी पशु जो भेड़िये से कुछ बड़ा होता है, लग्घड़।

लकड़हारा—(हिं० पुं०) वह जो जगल से लकड़ी लाकर नगर में बेंचता हो।

लकड़ा—(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा कुन्दा, जुआर बाजरे आदि का सूखा डठल।

लकड़ी—(हिं० स्त्री०) वृक्ष का कोई मोटा भाग जो काट कर उससे अलग हो गया हो, काठ, इन्धन, जलावन, छड़ी, लाठी, **लकड़ी होना**—सूख कर कड़ा हो जाना, अति दुर्बल होना।

लकब—(अ०पुं०) उपाधि, खिताब।

लकलक—(अ०पुं०) लबी गरदन का एक जलपक्षी, ढेंक (वि०) अति दुर्बल, चमकीला।

लकवा—(अ०पुं०) एक वात रोग जिसमें शरीर का कोई अग ज्ञानशून्य हो जाता है, इस रोग में मुह टेढा हो जाता है, फालिज

लकसी—(हिं० स्त्री०) फल आदि तोड़ने की लग्गी जिसके सिरे पर लोहे का चन्द्राकार फल लगा होता है।

लकार—(सं० पुं०) 'ल' स्वरूप वर्ण।

लकीर—(हिं० स्त्री०) एक सीध में गई

हुई आकृति, रेखा, धारी, सतर, पंक्ति, रेखा के समान दूर तक का चिह्न, लकीर का फकीर–पुराने ढंग पर चलने वाला; लकीर पीटना–पुरानी प्रथा पर चलना।

लकुच–(सं०पुं०) बड़हर का वृक्ष।

लकुट–(हिं०पुं०) लकुड़, लाठी (हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसका जामुन के आकार का फल वर्षा ऋतु में पकता है।

लकुटी–(हिं०स्त्री०) छोटी लाठी, छड़ी।

लकोड़ा–(हिं०पुं०) एक प्रकार का पहाड़ी बकरा जिसके रोयें के दुशाले बनते हैं।

लक्कड़–(हिं०पुं०) काठ का बड़ा कुन्दा।

लक्का–(हिं०पु०) एक प्रकार का कबूतर जो छाती उभाड़ कर चलता है, इसकी पूछ फैली हुई रहती है।

लक्का कबूतर–(हिं० पु०) नाच की एक गत।

लक्खी–(हिं० वि०) लाख के रंग का (पुं०) घोड़े की एक जाति, लखपति, बड़ा धनी।

लक्त–(सं०वि०) लाल रंग।

लक्तक–(सं० पु०) अलक्तक, अलता, फटा पुराना कपड़ा, चिथड़ा।

लक्ष–(सं०नपुं०) ब्याज, बहाना, चिह्न, निशान, पाद, पैर (वि०) एक लाख, सौ हजार (नपुं०) अस्त्र का एक प्रकार का प्रहार।

लक्षक–(सं० वि०) वह जो लक्ष करता हो, बता देने वाला।

लक्षण–(सं०नपुं०) चिह्न, निशान, नाम, जिससे जाना या पहचाना जाय, शरीर में देख पड़ने वाले रोग के चिह्न, बच्चों के शरीर में होने वाला एक प्रकार का विशेष चिह्न, सारस पक्षी, दर्शन, लक्ष्मण, शरीर के कुछ चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार अशुभ माने जाते हैं, तरीका, चालढाल, लक्षणज्ञ–वह जो लक्षण को जाता हो।

लक्षणत्व–(सं० नपुं०) लक्षण का भाव या धर्म।

लक्षणलक्षणा–(सं०स्त्री०) लक्षणा का एक भेद।

लक्षणवत्–(सं०वि०) लक्षणयुक्त।

लक्षणा–(सं०स्त्री०) हंसी, सारसी, एक अप्सरा का नाम, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसके अभिप्राय का बोध होता है।

लक्षणी–(सं०वि०) जिसमें कोई लक्षण या चिह्न हो, लक्षण जानने वाला।

लक्षणीय–(सं० वि०) लक्षण द्वारा जाना हुआ।

लक्षना–(हिं०क्रि०) देखो लखना।

लक्षा–(सं०स्त्री०) एक लाख की संख्या

लक्षि–(सं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी।

लक्षित–(सं०वि०) आलोचित, विचारा हुआ, देखा हुआ, बतलाया हुआ, जिस पर कोई चिह्न बना हो, अनुमान से जाना हुआ, (पु०) शब्द का वह अर्थ जो लक्षणा शक्ति द्वारा जाना जाता है।

लक्षितव्य–(सं०वि०) बतलाया हुआ।

लक्षित लक्षणा–(सं०स्त्री०) वह अलंकार जहां लक्षित अर्थ में लक्षण देख पड़ता हो।

लक्षिता–(सं०स्त्री०) वह परकीया नायिका जिसका गुप्त प्रेम उसकी सखियों को मालूम हो जाय।

लक्ष्मी–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस अक्षर होते हैं, इस वृत्त को गंगोदक, गंगाधर या खजन भी कहते हैं।

लक्ष्म–(सं०नपुं०) चिह्न, निशान, प्रधान

लक्ष्मण–(सं०नपुं०) चिह्न, लक्षण, सारस (पु०) दुर्योधन के एक पुत्र का नाम, दशरथ के द्वितीय पुत्र जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे (वि०) शोभा और कान्ति युक्त।

लक्ष्मणा–(सं०स्त्री०) सफेद कण्टकारी का पौधा, दुर्योधन की बेटी का नाम, मुचुकुन्द का पेड़।

लक्ष्मी–(सं०स्त्री०) विष्णु की पत्नी, पद्मा कमला, धन की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा, शोभा, सौन्दर्य, सम्पत्ति, दौलत, सीता जी का एक नाम, स्थल कमल, हल्दी, मोती, पद्म, कमल, सफेद तुलसी, आर्या छन्द का एक भेद, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं।

लक्ष्मीक–(सं० पुं०) भाग्यवान्।

लक्ष्मीकान्त–(सं० पु०) नारायण।

लक्ष्मीगृह–(सं० नपुं०) लक्ष्मी का घर, लाल कमल।

लक्ष्मीरोड़ी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सकर रागिणी।

लक्ष्मीताल–(सं० पु०) संगीत में आठ मात्राओं का एक ताल।

लक्ष्मीत्व–(सं० नपुं०) लक्ष्मी का भाव या धर्म, ऐश्वर्य।

लक्ष्मीधर–(सं० पु०) विष्णु, स्रग्विणी छन्द का दूसरा नाम।

लक्ष्मीनाथ–(सं० पुं०) विष्णु।

लक्ष्मी नारायण–(सं० पु०) लक्ष्मी और नारायण, वह शालग्राम शिला जिस पर चक्र बना रहता है।

लक्ष्मीनिधि–(सं० पु०) राजा जनक के पुत्र का नाम।

लक्ष्मी निवास–(सं०पु०) लक्ष्मी का निवास स्थान।

लक्ष्मीपति–(सं० पु०) विष्णु, वासुदेव, राजा, सुपारी।

लक्ष्मीपुत्र–(सं० पु०) कामदेव, धनवान् पुरुष।

लक्ष्मीपुष्प–(सं० पु०) पद्मराग मणि।

लक्ष्मीफल–(सं० पु०) बेल।

लक्ष्मीरमण–(सं०पु०) नारायण, विष्णु।

लक्ष्मीवत्–(सं० पु०) कटहल का पेड़ (वि०) धनवान्, अमीर।

लक्ष्मीवसति–(सं० स्त्री०) कमल का फूल।

लक्ष्मीवहिष्कृत–(सं० वि०) धन हीन, गरीब।

लक्ष्मीश–(सं०पुं०) विष्णु, आम का वृक्ष

लक्ष्मीश्रेष्ठा–(सं० स्त्री०) स्थल पद्मिनी

लक्ष्मीसख–(सं० पु०) राजा या

धनवान् मनुष्य।
लक्ष्मीसनाथ-(स० स्त्री०) रूप और ऐश्वर्य युक्त।
लक्ष्मीसहज-(स० पु०) चन्द्रमा।
लक्ष्मीवल्लभ(स०पु०) विष्णु।
लक्ष्य-(सं० नपु०) निशाना लगाने का स्थान, जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय, अस्त्रों का एक प्रकार का सहार, उद्देश्य, वह अर्थ जो वाच्य, लक्ष्य, और व्यग इन तीनों शब्दों की लक्षण शक्ति से निकलता है।
लक्ष्यक्रम-(स० वि०) जिस अज्ञात विधि से उद्दिष्ट वस्तु का आकार और चेष्टा जानी जाय।
लक्ष्यज्ञत्व-(स० नपु०) वह ज्ञान जो चिह्न अथवा दृष्टान्त द्वारा उत्पन्न हो।
लक्ष्यता-(सं० स्त्री०) लक्ष्य का भाव या धर्म।
लक्ष्यभेद-(स० पु०) वह निशान जिससे चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदा जाता है।
लक्ष्यवीथी (स० स्त्री०) ब्रह्मलोक का मार्ग, वह विधि जिससे जीवन का उद्देश्य सिद्ध हो।
लक्ष्यवेधी-(स०वि०)लक्ष्य वेध करने वाला
लक्ष्यसुप्त-(स०वि०) नींद तोड़ने वाला।
लक्ष्यहन्-(स० वि०) लक्ष्य वेध करने वाला, ठीक निशाना लगाने वाला।
लक्ष्यार्थ-(स० पु०) लक्षणा से निकलने वाला अर्थ।
लखघर-(हि० पु०) देखो लाक्षा गृह।
लखन-(हिं० पु०) लक्ष्मण, (हि० स्त्री०) लखने या देखने की क्रिया या भाव।
लखना-(हि० क्रि०) लक्षण देखकर अनुमान कर लेना, देखना।
लखपती-(हि०पु०) जिसके पास लाखों रुपये की सम्पत्ति हो।
लखमीतात-(हि० पु०) समुद्र।
लखमीवर-(हिं०पु०) विष्णु।
लखर-(हि०पु०) काकड़ासिंघी का पेड़।
लखलखा-(फा०पु०) एक विशेष प्रकार का बना हुआ सुगन्धित द्रव्य जिसको सुघा कर मूर्छित आदमी होश में लाये जाते हैं।
लखलुट-(हि० वि०) धन लुटाने वाला, अपव्ययी।
लखाउ-(हि०पु०) चिह्न, लक्षण, स्मारक रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।
लखाना-(हि०क्रि०) दिखलाना, समझा देना, अनुमान करा देना।
लखाव-(हि०पु०) देखो लखाउ।
लखिमी-(हिं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी।
लखिया-(हि०वि०) लखने वाला, अनुमान करने वाला।
लखी-(हि०पु०)लाख के रङ्ग का घोड़ा।
लखेरा-(हि०पु०)लाख की चूड़ी खिलौने आदि बनाने वाली एक जाति।
लखोट-(हि० पु०) देखो लकुट।
लखौटा-(हि० पु०) स्त्रियों के हाथ में पहरने की लाख की चौड़ी चूड़ी।
लखौरी-(हिं०स्त्री०) भारतवर्ष की पुराने ढङ्ग की छोटी पतली ईंट, भौंरी का घर जो वे मिट्टी का बनाती हैं, किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियां या फल चढ़ाना।
लगत-(हिं०स्त्री०) लगने या स्त्री प्रसग करने की क्रिया या भाव, लगन होने की क्रिया।
लग-(हिं०क्रि०वि०) नज़दीक, पास पर्यन्त, तक, (स्त्री०) लगन, प्रेम (अव्य०) लिये वास्ते, साथ, सग।
लगढग-(हिं०क्रि०वि०) देखो लगभग।
लगदी-(हिं० स्त्री०) बच्चों के नीचे बिछाने का पोतरा,
लगन-(हिं० स्त्री०) लगने की क्रिया या भाव, लगाव, प्रवृत्ति का किसी ओर लगना, प्रेम मुहब्बत, लौ, सबध (पु०) विवाह आदि के लिये स्थिर किया हुआ शुभ मुहूर्त, देखो लग्न, (फा० पु०) आटा गूधने या मिठाई आदि रखने की बड़ी थाली, मुसलमानों में विवाह की रीति
लगनपत्री-(हि०स्त्री०) विवाह के मुहूर्त का पत्र जो कन्या का पिता वर के पिता के पास भेजता है।
लगनवट-लगन, प्रेम, मुहब्बत।
लगना-(हिं० क्रि०) दो पदार्थों के तल का परस्पर मिलना, सटना, सिल जाना, जड़ा या चिपकाया जाना, जमना, उगना, उत्पन्न होना, स्थापित होना, चोट पहुचना, सबध मे कोई होना, किनारे पर ठहरना या रुकना, खर्च होना, क्रम या सिलसिले मे रक्खा जाना, मालूम होना, जान पड़ना,आरभ होना, गड़ना, चुभना, पास पहुचना, किसी कार्य मे तत्पर होना, निश्चत होना, साथ होना, मुदना, चिह्नित होना, गाय भैंस आदिका दूध दुहा जाना, चपकना, सबद्ध होना, ठीक बैठना, छेड़छाड़ करन, आरोप होना, प्रज्वलित होना, जलना, हिसाब होना, मुजरा होना, जहाज़ या नाव का छिछले पानी में चले जाना, किसी स्थान में इकट्ठा होना, मूल्य निर्धारित होना, दाम आका जाना, होना, पाल को खींच कर चढ़ाना, बिछाना, फैलाना, किसी औज़ार की धार को तेज़ करना, परचना, सधना, ताक या घात में रहना, सभोग करना, निश्चित स्थान पर पहुँचना,जान पड़ना, आरभ होना,आवश्यक या ज़रूरी होना, प्रभाव पड़ना, सड़ना, गलना, टकराना, किसी वस्तु का शरीर पर जलन उत्पन्न करना, किसी पदार्थ का तल में बैठना, मला जाना, लीपा पोता जाना, रगड़ खाना दाव पर रक्खा जाना, समीप पहुँचना, लगती बात-मर्मवेधी बार्ता, (पु०) एक प्रकार का जगली हरना।
लगनि-(हि०स्त्री०) देखो लगन।
लगनी-(हिं०स्त्री०)छोटी थाली या तश्तरी
लगभग-(हि०क्रि०वि०)प्रायः,करीब करीब
लगमात-(हि०स्त्री०) स्वरों के वे चिह्न जो उच्चारण के लिये व्यजनों में जोड़े जाते हैं।
लगर-(हिं०पु०) लग्घड़ नाम का पक्षी।
लगार-(अ०वि०)अति दुर्बल,अति सुकुमार

लगव–(हिं० वि०) मिथ्या, झूठ, असत्य वृथा।

लगलग–(अ०वि०) बड़ा दुबला पतला, बड़ा सुकुमार।

लगवाना–(हिं० क्रि०) लगाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को लगाने में प्रवृत्त करना।

लगवार–(हिं०पु०)उपपति, आशना, यार

लगातार–(हिं०क्रि०वि०)एक के बाद एक, सिलसिलेवार।

लगान–(हिं० पु०) लाने या लगाने की क्रिया या भाव,वह स्थान जहाँ पर मज़दूरे अपने सिर पर का बोझ उतार कर सुस्ताते हैं, भूमि कर जो किसान ज़मीदार को देता है, राजस्व, पोत।

लगाना–(हिं० क्रि०) एक पदार्थ के तल पर दूसरे पदार्थ का तल मिलाना, रगड़ना, चिपकाना या गिराना, जोड़ना, काम में लाना, आरोपित करना, अभियोग लगाना, नियुक्त करना, प्रवृत्त करना, अनेक मनुष्यों को किसी काम मे सम्मिलित करना, सभोग करना, बिछाना, फैलाना, नाव या जहाज़ को छिछली ज़मीन या किनारे पर चढ़ाना, चिह्नित करना, पाल खींच कर चढ़ाना, सान धरना, बदले में देना, पास लाना, किसी के प्रति दुर्भाव उत्पन्न करना, छुआना, तत्पर करना, दाम आकना, अपने साथ ले चलना, गाड़ना, धँसाना, पहिरना, ओढ़ना, परचाना, गाय भैंस को दूहना, निश्चित स्थान पर पहुँचाना, प्रज्वलित करना, जलाना, क्रम में रखना, अनुभव करना, व्यय करना, सम्मिलित करना, ठीक स्थान पर बैठाना, चोट पहुँचाना, लेपना, पोतना, स्थापित करना, सड़ाना, गलाना, किसी बात का अभिमान करना, चुनना, वृक्ष जमाना, काम में लाना, चुगली खाना, दाँव पर रखना।

लगाम–(फा० स्त्री०) घोड़े के मुँह में रखने का लोहे का ढाचा जिसके दोनों ओर चमड़े का तस्मा या रस्सा बँधा रहता है जिसको सवार या हाकने वाला हाथमें थामता है, बाग, रास।

लगार–(हिं० स्त्री०) नियमित रूप से कोई काम करने या कोई चीज देने की क्रिया या भाव, बधेज, लगाव, जिससे घनिष्ठता का व्यवहार हो, मेली, लगने की क्रिया या भाव, लगनप्रीति, क्रम, सिलसिला, टिकान, भेद लेने के लिये भेजा हुआ मनुष्य, किसी मकान के ऊपरी भाग से मिला हुआ कोई ऐसा स्थान जहा से वहा कोई आ जा सकता है।

लगालगी–(हिं० स्त्री०) लाग, लगान, सबध, मेल जोल, प्रेम, स्नेह।

लगालिका–(स० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार अक्षर होते हैं।

लगाव–(हिं० पु०) लगे रहने का भाव, वास्ता।

लगावट–(हिं० स्त्री०) प्रीति, प्रेम, सबध, वास्ता।

लगावन–(हिं०पु०) देखो लगाव।

लगावना–(हिं० क्रि०) देखो लगाना।

लगि–(हिं० अव्य०) देखो लग, (स्त्री०) लग्गी।

लगित–(स० वि०) सयुक्त, मिला हुआ।

लगी–(हिं०स्त्री०) देखो लग्गी।

लगु–(हिं०अव्य०) लग।

लगुड़–(स० पु०) दण्ड, डंडा, लाठी।

लगुल–(हिं० पु०) शिश्न, लिंग।

लगूर–(हिं० स्त्री०) लाङ्गूल, पोंछ।

लगे–(हिं०अव्य०) देखो लग।

लगौंहा–(हिं०वि०) जिसको लगन लगाने की अभिलाषा हो, रिझावना।

लग्गा–(हिं० पु०) लबा बास, वह लबा बास जिसके आगे एक अँकुसी लगी रहती है जिससे वृक्षो के फल तोड़े जाते हैं, लकसी, किसी काम में हाथ लगाना, कार्य आरभ करना।

लग्गी–(हिं०स्त्री०) लबा बास।

लग्घड़–(हिं०पु०) श्येन पक्षी, बाज़, एक प्रकार का चीता, लकड़बग्घा।

लग्घा, लग्घी–(हिं०) देखो लग्गा,लग्गी

लग्न–(स०नपुं०) ज्योतिष के अनुसार दिन का उतना अंश जितने में एक राशि का उदय होता है, वह शुभ मुहूर्त जिसमें कोई शुभ कार्य किया जाता है, विवाह का समय, ब्याह, शादी, (वि०) लगा हुआ, मिला हुआ, आसक्त,लज्जित

लग्नक–(स०पु०,ज़ामिन, प्रतिभू,ज़मानत करने वाला, एक राग का नाम।

लग्नक–(स० पु०) प्रतिभू, जमानतदार, सगीत मे एक राग का नाम।

लग्नकङ्कण–(स० पु०) वह मगल सूत्र या कङ्कण जो विवाह के पहिले वर और कन्या के हाथ मे बाँधा जाता है।

लग्नकाल–(स०पु०) लग्न का समय।

लग्नकुण्डली–(स० स्त्री०) वह चक्र या कुण्डली जिससे यह पता चलता है कि जन्म के समय कौन कौन से ग्रह किस किस राशि में थे।

लग्नग्रह–(स०पु०) लग्न मे स्थित ग्रह

लग्नदण्ड–(स०पु०) सगीत मे स्वरों का परस्पर मिलाप।

लग्नदिन–(स०नपु०) विवाह का निश्चित दिन।

लग्नपत्र–(स० पु०), **लग्नपत्रिका**–(स०स्त्री०) वह पत्र जिसमें विवाह तथा इससे सम्बन्ध रखने वाले अन्य कृत्यों का ब्योरा लिखा रहता है।

लग्नवेला–(स०स्त्री०) लग्न का समय।

लग्नायु–(स० स्त्री०) लग्न के अनुसार स्थिर की हुई आयुष्य।

लग्नका–(स०स्त्री०) नगी औरत।

लग्नेश–(स० पु०) फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो लग्न का स्वामी हो।

लग्नोदय–(स० पु०) किसी लग्न के उदय होने का समय।

लघमोपुष्प–(हिं० पुं०) पद्मराग मणि, मानिक।

लघित्र–(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक प्रकार का धारदार अस्त्र।

लघिमा–(सं० स्त्री०) लघुत्व, छोटा होने का भाव, योग से प्राप्त वह शक्ति

जिससे योगी बहुत छोटा तथा हलका बन सकता है।
लघीयस्-(सं०वि०)बहुत छोटा या हलका।
लघु-(सं० नपुं०) शीघ्र, जल्दी, उशीर, खस, पन्द्रह क्षण का परिमाण, व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है यथा अ, इ, उ, ए, ओ, आदि, चादी, (वि०) हलका, छोटा, सुन्दर, बढिया, थोड़ा, कम, दुर्बल, निःसार।
लघुकरण-(सं० पुं०) सफेद जीरा।
लघुकाय-(सं० पुं०) नाटे कद का।
लघुक्रम-(सं०पुं०) जल्दी जल्दी चलने की क्रिया।
लघुक्रिया-(सं० स्त्री०) तुच्छ कार्य।
लघुगण-(सं०पुं०) अश्विनी, पुष्य, और हस्त नक्षत्रों का समूह।
लघुचन्दन-(सं० नपुं०) अगर नामक सुगन्धित लकड़ी।
लघुचित्त-(सं० वि०) क्षुद्रचित्त।
लघुचित्तता-(सं०स्त्री०) चित्त का अति चचल होना।
लघुचेतस्-(सं० वि०) क्षुद्र या नीच विचार वाला।
लघुजल-(सं० पुं०) लवा नामक पक्षी।
लघुजागल-(सं०पुं०) लवा नामक पक्षी।
लघुतर-(सं० वि०) बहुत छोटा।
लघुता-(सं० स्त्री०) तुच्छता, हलकापन।
लघुतुपक-(सं० स्त्री०) तमचा, पिस्तौल।
लघुत्तमापवर्तक-(सं० पुं०) वह सबसे छोटी सख्या जो दो या अधिक सख्याओं से विना शेष के विभाजित हो सके।
लघुत्व-(सं० पुं०) तुच्छता, छोटापन, हलकापन।
लघुदुन्दुभि-(सं०पुं०) डुगडुग्गी।
लघुद्राक्षा-(सं० स्त्री०) किशमिश।
लघुपत्रफला-(सं० स्त्री०) छोटा गूलर।
लघुपत्री-(सं०स्त्री०) पीपल का वृक्ष।
लघुपर्णी-(सं०स्त्री०) सतावर।
लघुपाक-(सं० पुं०) सहज में पचने वाला खाद्य।
लघुपाती-(सं०वि०) जल्दी गिरने वाला।
लघुपिच्छिल-(सं० पुं०) लिसोढ़ा।
लघुप्रयत्न-(सं० वि०) आलसी।
लघुफल-(सं०पुं०) छोटा गूलर।
लघुबदर-(सं०पुं०) छोटा बेर।
लघुभव-(सं०पुं०) निकृष्ट जन्म।
लघुभाव-(सं० पुं०) सहज में होने वाला कार्य।
लघुभोजन-(सं०नपुं०) हलका खाना।
लघुमति-(सं० वि०) छोटी बुद्धि वाला, मूर्ख।
लघुमास-(सं०पुं०) तीतर नामक पक्षी।
लघुमांसी-(सं० स्त्री०) छोटी जटामासी।
लघुमान-(सं० पुं०) नायिका का वह मान या अल्प रोष जो नायक को किसी अन्य स्त्री के साथ बात करते देखकर उत्पन्न होता है।
लघुराशि-(सं० स्त्री०) छोटी सख्या
लघुलता-(सं० स्त्री०) अनन्त मूल, करेले की लता।
लघुलय-(सं०नपुं०) उशीर, खस।
लघुवासस्-(सं० वि०) हलका पतला वस्त्र पहरने वाला।
लघुवृत्ति(सं०वि०)छोटा काम करने वाला
लघुवेधी-(सं०वि०) शीघ्र वेधने वाला।
लघुशङ्का-(सं०स्त्री०) मूत्रोत्सर्ग, पेशाब।
लघुशङ्ख-(सं० पुं०) घोघा।
लघुशिखर-(सं० पुं०) सगीत में एक प्रकार का ताल।
लघुशीत-(सं० पुं०) लिसोढ़ा।
लघुसत्त्व-(सं०वि०) क्षुद्र प्रकृति का।
लघुसार-(सं०वि०) जिसमें थोड़ा सार हो
लघुस्थानता-(सं०स्त्री०) चचलता।
लघुहस्त-(सं० पुं०) वह जो शीघ्र बाण चलाता हो।
लघुहस्तता-(सं० स्त्री०) जल्दी से बाण फेंकना।
लघुहृदय-(सं०वि०)चचल चित्त वाला।
लघूकरण-(सं०नपुं०) काटना, छाटना।
लघूक्ति-(सं०स्त्री०) कम बोलना।
लघ्वानन्द-(सं०वि०) कम आनन्द का।
लघ्वाशी-(सं०वि०) कम खाने वाला।
लघ्वाहार-(सं०पुं०) हलका भोजन।
लङ्क-(सं०स्त्री०) कटि, कमर।
लङ्कनाथ-(सं०पुं०) रावण, विभीषण।
लङ्का-(सं०स्त्री०) रावण का राज्य, कुलटा, व्यभिचारिणी, चुड़ैल।
लङ्कादाही-(सं०पुं) हनूमान्।
लङ्काधिपति-(सं० पुं०) रावण।
लङ्कानाथ-(सं० पुं०) लका द्वीप का राजा, रावण।
लङ्कापति-(सं०पुं०)रावण, विभीषण।
लङ्कारि-(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र।
लङ्किनी-(सं०स्त्री०) एक राक्षसी का नाम
लङ्केश, लङ्केश्वर-(सं०पुं०)रावण, विभीषण
लङ्गनी-(सं० स्त्री०) घोड़े की लगाम।
लङ्ग-(सं०पुं०) सग, साथ उपपति।
लङ्गक-(सं०पुं०) उपपति, यार।
लङ्गल-(सं०नपुं०) लाङ्गल, हल।
लङ्गूल-(सं०नपुं०) लाङ्गूल, पूछ।
लङ्घक-(सं०वि०) लाघने वाला, सीमा के बाहर जाने वाला।
लङ्घन-(सं०नपुं०)अनाहार,उपवास फाका
लङ्घना-(सं०स्त्री०) उपेक्षा, लापरवाही।
लङ्घनीय-(सं०वि०) लाघने योग्य।
लङ्घनीयता-(सं० स्त्री०) लाघने का भाव या धर्म।
लङ्घित-(सं०वि०) जो लाघा गया हो।
लचक-(हिं० स्त्री०) लचकने की क्रिया या भाव लचन, झुकाव, किसी वस्तु का वह गुण जिससे वह दबती या झुकती है।
लचकना-(हिं०क्रि०)दबाव पड़ने पर किसी लबे पदार्थ का झुकना, लचना, स्त्रियों का कोमलता या नखरे के कारण चलती समय रह रहकर झुकना।
लचकनि-(सं०स्त्री०) लचक, लचीलापन।
लचका-(हिं०पुं०)एक प्रकार का गोटा।
लचकाना-(हिं०क्रि०) झुकाना।
लचकीला-(हिं०वि०) लचकने योग्य।
लचन-(हिं०स्त्री०) देखो लचक।
लचना-(हिं०क्रि०) लचकना।
लचनि-(हिं०स्त्री०) लचक।
लचलचा-(हिं०वि०) लचीला।
लचलचापन-(हिं० पुं०) लचीला होने

का भाव।
लचादेदार-(हिं०वि०) स्वादिष्ट,मज़ेदार।
लचाना-(हिं०क्रि०) लचकाना,झुकाना।
लचार-(हिं०वि०) देखो लाचार।
लचारी-(हिं०स्त्री०) देखो लाचारी, भेंट, नज़र, एक प्रकार की गीत।
लच्छ-(हिं०पु०)लक्ष्य, निशाना, बहाना, सौ हज़ार की सख्या,लाख,(स्त्री०) लक्ष्मी।
लच्छण-(हिं०पु०) स्वभाव।
लच्छन-(हिं० पु०) देखो लक्षण।
लच्छना-(हिं०क्रि०) देखो लखना।
लच्छमण-(हिं०वि०) धनवान्, अमीर।
लच्छमी-(हिं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी।
लच्छा-(हिं० पु०) बहुत से तारो या डोरों का समूह, झुप्पा, गुच्छा, एक प्रकार की मैदे की बनी हुई मिठाई, एक प्रकार का घटिया केसर, सूत की तरह लबे पतले कटे हुए किसी पदार्थ के टुकडे, तारों की जजीरो का बना हुआ एक प्रकार का गहना।
लच्छा साख-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सकर रागिणी।
लच्छि-(हिं०पु०) एक लाख की सख्या (स्त्री०) लक्ष्मी।
लच्छिनाथ-(हिं० पु०) लक्ष्मी पति, विष्णु, लच्छित-निशान लगाया हुआ, देखा हुआ।
लच्छिनिवास-(हिं० पु०) विष्णु।
लच्छी-(हिं० पु०) एक प्रकार का घोड़ा (स्त्री०)लक्ष्मी,कलावत्तू सूत, रेशम आदि की लपेटी हुई गुच्छी, अटी।
लच्छेदार-(फा०वि०) जिसमे लच्छे हों, जिसका सिलसिला न टूटता हो, सुनने में मजेदार।
लछन-(हिं०पु०) लक्ष्मण, देखो लक्षण।
लछना-(हिं० क्रि०) देखो लखना।
लछमन-(अ०पु०) देखो लक्ष्मण।
लछमन झूला-(हि० पु०) बदरी नारायण के मार्ग में हृषीकेश के पास बना हुआ लोहे के रस्सों पर लटका हुआ पुल।
लछमना-(हिं०स्त्री०) देखो लक्ष्मणा।
लछमी-(हिं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी।
लज-(हिं०स्त्री०) देखो लाज, लज्जा।
लजना-(हिं०क्रि०) लजाना, शरमाना।
लजवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे को लज्जित करना।
लजाधुर-(हिं० पु०) लजालू नाम का पौधा (वि०) लज्जावान्, शरमीला।
लजाना-(हिं० क्रि०) लज्जित होना या करना, शरमाना।
लजारू, लजालू-(हिं० पु०) लजाधुर नाम का पौधा, जिसकी पत्तियां छूने से सिकुड़ जाती और बन्द हो जाती हैं।
लजावन-(हिं०क्रि०) लजाना।
लजियाना-(हिं०क्रि०) लजाना, शर्मिन्दा करना।
लजीज़-(अ०वि०) स्वादिष्ट, लज्जतदार।
लजीला-(हिं०वि०) लज्जायुक्त।
लजुरी-(हिं०स्त्री०) कुवें से पानी निकालने की रस्सी, लेजुर।
लजोर-(हिं०वि०) लज्जावान्, शरमीला
लजोहां, लजौहां-(हिं० वि०) लज्जावान्, लजीला, जिसमें शर्म हो, शरमीला।
लज्जका-(सं०स्त्री०) बनकपास।
लज्ज़त-(अ०स्त्री०) स्वाद, ज़ायका।
लज्जतदार-स्वादिष्ट, मज़ेदार।
लज्जा-(सं० स्त्री०) अतःकरण की वह स्थिति जिसके कारण दूसरे के सामने वृत्तियां सकुचित हो जाती हैं, लाज, शर्म, हया, मान मर्यादा, इज्जत।
लज्जाकर-(सं० वि०) लज्जा उत्पन्न करने वाला।
लज्जान्वित-(सं०वि०) लज्जा युक्त।
लज्जाप्रद-(सं०वि०) लज्जा उत्पन्न करने वाला।
लज्जाप्राया-(सं०स्त्री०) मुग्धा नायिका का एक भेद।
लज्जावत्-(सं०वि०) शरमीला।
लज्जावती-(सं०वि०) शरमीली।
लज्जावान्-(सं०वि०) शर्मदार।
लज्जाशील-(सं०वि०) जो बात बात में शरमाता हो।
लज्जाशून्य-(सं० वि०) निर्लज, बेहया
लज्जाहीन-(सं०वि०) निर्लज, बेहया।
लज्जित-(सं०वि०) शर्माया हुआ।
लञ्चा-(सं०स्त्री०) घूस, रिश्वत।
लञ्छन-(हिं०पु०) देखो लक्षण।
लञ्जिका-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
लटंग-(हिं०पु०) एक प्रकार का वास।
लट-(सं०पु०) पागल, चोर (हिं०स्त्री०) सिर के बालों का समूह जो नीचे तक लटका रहता है, बालों का गुच्छा, आपस में उलझे हुए बाल, महीन कीडे जो मनुष्य की आतों में पड़ जाते हैं, एक प्रकार की बेंत, लपट।
लटक-(हिं०स्त्री०) लटकने की क्रिया या भाव, झुकाव, लचक, ढालू जमीन।
लटकन-(हिं०पु०) नीचे की ओर लटकने की क्रिया या भाव, लुभाने वाली चाल, कलँगी में लगे हुए रत्नों का गुच्छा, मलखभ की एक कसरत, लटकने वाली वस्तु, नाक में पहरने का झुमका, एक वृक्ष जिसके फूलो से लाल रग निकलता है।
लटकना-(हिं० क्रि०) ऊँचे स्थान से किसी आधार पर नीचे की ओर झुका रहना, झूलना, टंगना, लचकना, किसी वस्तु का किसी ओर झुकना, दुबधा में पड़े रहना, किसी काम को बिना पूरा हुए पड़ा रहना, नम्र होना।
लटकवाना-(हिं०क्रि०) लटकाने का काम दूसरे से कराना।
लटका-(हिं० पु०) गति, चाल, किसी शब्द या वाक्य का बारबार प्रयोग करना, सखुनतकिया बनावटी चेष्टा, हाव भाव, मन्त्र तन्त्र की छोटी युक्ति, टोटका, एक प्रकार का चलता गाना, किसी रोग की शान्ति का छोटा नुस्खा, बात चीत करने का बनावटी ढँग।
लटकाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का एक छोर किसी ऊँचे स्थान में बांधकर नीचे का छोर निराधार रहने देना, आसरे में रखना, किसी काम को पूरा न करके डाल रखना, किसी वस्तु को लचकाना या झुकाना, लटकने का काम दूसरे से कराना।
लटकीला-(हिं० वि०) झूमता हुआ,

बल खाता हुआ, लचकदार।

लटकू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी जड़ से रग निकाला जाता है।

लटकौंवा-(हिं०वि०) लटकने वाला।

लटजीरा-(हिं०पु०) अपामार्ज, चिचिड़ा, एक प्रकार का महीन धान।

लटना-(हिं०क्रि०) थक कर गिर जाना, लड़खड़ाना, शक्ति तथा उत्साह से रहित होना, ढीला पड़ना, शिथिल होना, व्याकुल होना, दुर्बल होना, थक जाना, ललचाना, लुभाना, अनुरक्त होना, लीन होना।

लटपटा-(हिं० वि०) गिरता पड़ता, लड़खड़ाता हुआ, जो क्रम में न हो, टूटा फूटा, थककर गिरा हुआ, जिसमें शिकन पड़ी हो, लेई की तरह का, ढीलाढाला, अशक्त, अव्यवस्थित।

लटपटान-(हिं० स्त्री०) लटपटाने की क्रिया या भाव, लड़खड़ाहट, मनोहर गति, लचक।

लटपटाना-(हिं०क्रि०) सीधे न चलकर इधर उधर झुक पड़ना, लड़खड़ाना, अनुरक्त होना, लीन होना, लुभाना, मोहित करना, स्थिर न रहना, डिगना।

लटा-(हिं० वि०) लोलुप, लपट, बुरा, खराब, पतित, गिरा हुआ, नीच, हीन, तुच्छ।

लटापटी-(हिं०स्त्री०) लटपटाने की क्रिया या भाव, लड़ाई, झगड़ा।

लटापोट-(हिं०वि०) मुग्ध, मोहित।

लटिया-(हिं० स्त्री०) सूत आदि का लच्छा, आटी।

लटी-(हिं० स्त्री०) बुरी बात, असत्य वार्ता, वेश्या, रडी, भक्तिन।

लटुआ-(हिं०पु०) देखो लटट्टू।

लटुक-(हिं०पुं०) लकुट का वृक्ष और फल

लटुरी-(हिं०स्त्री०) देखो लटूरी।

लटू-(हिं०पु०) देखो लट्टू।

लटूरी-(हिं० स्त्री०) सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा, अलक, केश।

लटोरा-(हिं० पु०) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसके फलों में लसदार गूदा होता है।

लट्ट-(स० पु०) दुष्ट मनुष्य, लट्टपट्ट-देखो लयपथ।

लट्टू-(हिं० पु०) गोल बट्टे के आकार का एक खिलौना जिसमें सूत लपेट कर तथा फेंक कर ज़मीन पर नचाया जाता है, लट्टू के आकार की कोई वस्तु, किसी पर लट्टू होना-मुग्ध होना, फिदा होना, आसक्त होना।

लट्ठ-(हिं० पु०) बड़ी लाठी, सोंटा, बड़ा डडा।

लट्ठबाज-(हिं०वि०) लाठी लड़ने वाला, बड़ी लाठी बाँधने वाला।

लट्ठबाजी-(हिं०स्त्री०) लाठियों की लड़ाई

लट्ठमार-(हिं०वि०) लट्ठ मारने वाला, अप्रिय, कठोर, कर्कश।

लट्ठा-(हिं०पु०) लकड़ी का मोटा लबा टुकड़ा, शहतीर, खेत नापने का बास जो साढे पाच गज़ लम्बा होता है, लकड़ी का बल्ला, धरन, लकड़ी का खभा, मोटी मारकीन।

लट्ठबंदी-(हिं०स्त्री०) खेत की सामान्य नाप जो लट्ठे से की जाय।

लठ-(हिं० पु०) देखो लठ।

लठियल-(हिं०वि०) लाठी बाँधने वाला।

लठैत-(हिं०पु०) लाठी लड़ने वाला।

लड़ंत-(हिं० स्त्री०) लड़ाई, सामना, मुकाबला।

लड़-(हिं० स्त्री०) पक्ति, माला, रस्सी का एक तार, कतार, फूलों या मजरियों का गुच्छा।

लड़कई-(हिं०स्त्री०) बाल्यावस्था, लड़कपन

लड़कखेल-(हिं०पु०) बालकों का खेल, अति सहज कार्य।

लड़कपन-(हिं०पु०) बाल्यावस्था, लड़कों का चिलबिलापन, चचलता, चपलता।

लड़कबुद्धि-(हिं० स्त्री०) बालकों के समान बुद्धि, नासमझी।

लड़का-(हिं० पु०) अल्प अवस्था का मनुष्य, बालक, पुत्र, बेटा।

लड़का वाला-(हिं०पु०) परिवार, पुत्र कलत्र आदि, सन्तति, औलाद।

लड़की-(हिं० स्त्री०) छोटी अवस्था की स्त्री, कन्या, बालिका, बेटी।

लड़कीवाला-(हिं० पु०) कन्या का पिता या सबधी।

लड़कोरी-(हिं० वि०स्त्री०) जिस स्त्री के गोद में लड़का हो।

लड़खड़ाना-(हिं० क्रि०) न जमने या ठहरने के कारण इधर उधर हिलडोल जाना, डगमगा कर गिरना, झोंका खाकर नीचे आ जाना।

लड़खड़ी-(हिं०स्त्री०) डगमगाहट।

लड़न-(स० नपु०) हिलना डोलना।

लड़ना-(हिं०क्रि०) मारने वाले शत्रु पर आघात पहुँचाना, झगड़ा करना, भिड़ना, मल्लयुद्ध करना, हुज्जत करना, एक दूसरे को कठोर शब्द कहना, दो वस्तुओं को परस्पर टक्कर खाना, वादाविवाद करना, मेल में मेल मिल जाना, लक्ष्य पर पहुँचना, टकराना, एक दूसरे को गिराने का प्रयत्न करना, बिच्छू, भिड़ आदि का डक मारना।

लड़बड़ाना-(हिं० क्रि०) देखो लड़खड़ाना।

लड़बावरा-(हिं० वि०) नासमझ, मूर्खता से पूर्ण, गवार, अल्हड़, अनाड़ी।

लड़ाई-(हिं०स्त्री०) एक दूसरे पर चोट पहुँचाने की क्रिया या भाव, वादा विवाद, कुश्ती, सग्राम, युद्ध, परस्पर कठोर शब्दों का व्यवहार, कलह, झगड़ा, हुज्जत, तकरार, विरोध, अनबन, वैर, दुश्मनी, व्यवहार या मामले में सफलता प्राप्त करने के लिये एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न।

लड़ाका-(हिं०वि०) लड़ने वाला, योद्धा, सिपाही, झगड़ालू, फसादी।

लड़ाना-(हिं०क्रि०) दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना, लड़ने का काम दूसरे से कराना, कलह के लिये उद्यत करना, लक्ष्य पर पहुँचाना, किसी स्थान पर फेंकना, भिड़ाना, सफलता प्राप्त करने के लिये व्यवहार में लाना, लाड़ प्यार

या दुलार करना।
लड़ायता-(हि॰वि॰) लड़ाई करने वाला।
लड़ी-(हि॰स्त्री॰) देखो लड़, पंक्ति, कतार।
लड़ुआ, लड़ुवा-(हिं॰पु॰) मोदक, लड्डू
लड़ैता-(हि॰वि॰) प्रिय, प्यारा, लाड़ला, दुलारा,धृष्ट,शोख, लड़ने वाला, योद्धा।
लड्डू-(हि॰ पु॰) गेंद के आकार की मिठाई, मोदक, मनके लड्डू खाना-वृथा की कल्पना करना।
लड्याना-(हि॰क्रि॰) प्रेम करना, दुलार करना।
लढंत-(हि॰पु॰) कुश्ती की एक पेंच।
लढ़िया-(हि॰ स्त्री॰) बैलगाडी।
लण्ड-(सं॰नपुं॰) पुरीष, विष्ठा (हि॰पु॰) शिश्न।
लण्डन-(अ॰पु॰) इङ्गलैन्ड की राजधानी।
लत-(हि॰ स्त्री॰) किसी बुरी बात का अभ्यास, दुर्व्यसन, बुरी टेव।
लतखोर लतखोरा-(हिं॰वि॰) वह जो सर्वदा लात खाता हो, सर्वदा ऐसा काम करने वाला जिसके कारण मार खानी पडे या गाली सुनना पडे, नीच, दुष्ट, कमीना, दास, दरवाजे पर पड़ा हुआ पैर पोछने का टाट।
लतड़ी-(हि॰स्त्री॰) केसारी नामक अन्न, एक प्रकार की जूती जिसमें केवल तल्ला ही होता है।
लतपत-(हिं॰वि॰) देखो लथपथ।
लतमर्दन-(हि॰स्त्री॰) पैरों से रौंदने की क्रिया, लातो की मार।
लतर-(हिं॰स्त्री॰) बेल, वल्ली, लता।
लतरा-(हिं॰ पु॰) एक प्रकार का मोटा अन्न।
लतरी-(हि॰ स्त्री॰) एक प्रकार की घास या पौधा, इसकी फली, मोट, खेसारी, एक प्रकार की जूती।
लता-(सं॰स्त्री॰) वह पौधा जो सूत या डोरे के रूप मे जमीन पर फैलता है अथवा किसी वस्तु के साथ लिपट कर ऊपर को चढता है, वल्ली, बेल, कोमल शाखा, माधवी, सुन्दरी स्त्री, एक अप्सरा का नाम, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे अठारह अक्षर होते हैं।
लताकर-(सं॰पु॰) नाचने मे हाथ हिलाने का एक ढग।
लताकुञ्ज-(सं॰ पु॰) लताओं से छाया हुआ स्थान।
लतागृह-(सं॰नपुं॰) लता मण्डप।
लताजिह्व-(सं॰पु॰) सर्प, साँप।
लताड़ना-(हिं॰ क्रि॰) पैरों से कुचलना, लात मारना, थकाना, हैरान करना।
लतान्त-(सं॰नपु॰) लता की फुनगी।
लतापत्ता-(हि॰ पुं॰) पेड़ पौधों का समूह जड़ी बूटी।
लतापर्ण-(सं॰पु॰) विष्णु।
लतापर्णी-(सं॰ स्त्री॰) सौंफ।
लताफल-(सं॰नपु॰) पटोल, परवल।
लताभवन-(सं॰नपु॰) लताओ का कुज।
लतामणि-(सं॰पु॰) प्रवाल, मूंगा।
लतामण्डप-(सं॰पु॰) लताओ से बना हुआ घर।
लतामण्डल-(सं॰ पु॰) लताओ से घिरा हुआ स्थान।
लतामृग-(सं॰ पु॰) शाखा मृग बन्दर।
लताम्बुज-(सं॰नपु॰) खीरा।
लतायावक-(सं॰पु॰) प्रवाल, मूंगा।
लतारसन-(सं॰पु॰) सर्प, साप।
लतार्क-(सं॰ पु॰) प्याज का पौधा।
लतालक-(सं॰ पु॰) हस्ती, हाथी।
लतालय-(सं॰पु॰) देखो लतागृह।
लतावलय-(सं॰ पु॰) देखो लतालय।
लतावृक्ष-(सं॰पु॰) सलई का वृक्ष।
लतावेष्टन-(सं॰नपु॰) एक प्रकार का आलिंगन।
लतावेष्टित-(सं॰ पु॰) एक प्रकार का आलिंगन (वि॰) लता से घिरा हुआ।
लतिका-(सं॰स्त्री॰) छोटी लता, बेल।
लतियर, लतियल-(हिं॰वि॰) जो सर्वदा लात खाता हो, लतखोर।
लतियाना-(हि॰क्रि॰) पैरों से रौंदना, लात मारना।
लतिहर, लतिहल-(हि॰वि॰) लतखोर।
लतीफ-(अ॰ वि॰) स्वादिष्ट, ज़ायकेदार, बढ़िया।
लतीफा-(अ॰ पु॰) हास्य पूर्ण छोटी कहानी, चुटकुला, अनोखी बात, हँसी की बात।
लत्ता-(हि॰ पु॰) फटा पुराना वस्त्र, चियड़ा, कपडे का टुकड़ा, कपड़ा लत्ता-पहिरने के वस्त्र।
लत्ती-(हि॰स्त्री॰) पशुओं का लात मारना लात मारने की क्रिया, कपडे की लत्री धज्जी, पतग का पुछिल्ला।
लथपथ-(हि॰वि॰) जो भीगकर भारी हो गया हो, तराबोर।
लथाड़-(हि॰स्त्री॰) भूमि पर पटक कर घसीटने की क्रिया, चपेट, हानि, नुकसान।
लथाड़ना-(हि॰क्रि॰) देखो लथेड़ना।
लथेड़ना-(हिं॰ क्रि॰) कीचड़ आदि लपेट कर भारी करना, भूमि पर पटक कर घसीटना, मिट्टी कीचड़ आदि लपेट कर गन्दा करना, हराना, कुश्ती मे पछाड़ना, शिथिल करना, थकाना, झिड़कियाँ सुनाना, डाटना।
लदन-(हि॰ स्त्री॰) लदाव।
लदना-(हिं॰ क्रि॰) बोझ से भरना, परिपूर्ण होना, ऊपर तक भर जाना, बोझ से भरा जाना, सामान ढोने वाली गाड़ी का वस्तुओं से भरा जाना, बोझ का रक्खा जाना, कैद होना, परलोक सिधारना, मरजाना।
लदलद-(हि॰क्रि॰वि॰) किसी गीली वस्तु के गिरने के शब्द का अनुकरण।
लदवाना-(हिं॰क्रि॰) लदने का काम दूसरे से कराना।
लदाऊ-(हिं॰वि॰) देखो लदाव।
लदाना-(हिं॰ क्रि॰) लदने का काम दूसरे से कराना।
लदाफंदा-(हि॰वि॰)बोझ से भरा हुआ।
लदाव-(हिं॰ पु॰) लादने की क्रिया या भाव, भार, बोझ, वह छत या मेहराब जिसमे ईंटो की जोड़ाई बिना धरन या कड़ी के आधार पर हो।
लदुवा, लदू-(हि॰ वि॰) बोझ ढोने

वाला, जिस पर भार रक्खा जावे।

लद्धड़-(हि० वि०) जिसमें तेज़ी या फुर्ती न हो, सुस्त, आलसी।

लद्धड़पन-(हि० पु०) सुस्ती, काहिली

लद्धना-(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, पाना

लना-(हि० पु०) एक वृक्ष जिसमें से सज्जी निकाली जाती है।

लनी-(हिं०स्त्री०) पान की क्यारी।

लप-(हि०पु०) एक प्रकार की घास, अञ्जली, अञ्जली भर वस्तु, (स्त्री०) लचीली वस्तु को पकड़ कर हिलाने से उत्पन्न शब्द, तलवार छुरे आदि की चमक की गति।

लपक-(हि० स्त्री०) ज्वाला, लपट, लपट की तरह निकलने वाली तेज़ी, चमक, कान्ति चलने का वेग, फुर्ती।

लपकना-(हिं०क्रि०) तेज़ी से चलना, दौड़ पड़ना, झपटना, किसी वस्तु को लेने के लिये झट से हाथ फैलाना, लपककर-बड़ी तेज़ी के साथ।

लपकी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सीधी सिलाई।

लपझप-(हिं० वि०) चचल, चपल, फुरतीला, अधीर।

लपट-(हि० स्त्री०) अग्नि की ज्वाला, वायु में फैली हुई गरमी, गन्ध, महक, किसी प्रकार की गन्ध से भरा हुआ हवा का झोंका।

लपटना-(हिं० क्रि०) अगों से घेरना, आलिंगन करना, उलझना, फसना, सलग्न होना, घिरा जाना, लगा रहना

लपटा-(हिं० पुं०) कोई गाढी गीली वस्तु, कढी, लेई, लपसी।

लपटाना-(हिं० क्रि०) गले लगाना, आलिंगन करना, घेरना, लपेटना, सटना, उलझना।

लपटौवा-(हिं० पु०) एक प्रकार की घास जिसकी बाल कपड़ों में लिपट जाती है और कठिनाई से छूटती है (वि०) चिपटने वाला।

लपन-(सं०नपु०) मुख, भाषण, कथन।

लपना-(हिं० क्रि०) लचीली वस्तु का झुकना, झुकना, लचना, लपकना, ललचना, परेशान होना।

लपलपाना-(हि० क्रि०) झोक के साथ इधर उधर लचना, किसी कोमल वस्तु का हिलना, तलवार छुरी आदि का चमकना, झोंक के साथ इधर उधर लचाना, तलवार आदि को चमकाना

लपलपाहट-(हि० स्त्री०) लपलपाने की क्रिया या भाव, चमक, झलक।

लपसी-(हिं०स्त्री०) थोड़ा घी डाल कर बनाया हुआ हलवा, पानी में औटाया हुआ आटा, कोई गीली गाढी वस्तु।

लपहा-(हि० पु०) पान की लता में होने वाला एक रोग।

लपाना-(हिं० क्रि०) लचीली वस्तु को झोंक से इधर उधर फटकारना, आगे बढाना, नरम लबी वस्तु को डुलाना।

लपित-(स० वि०) कहा हुआ, कथित।

लपेट-(हिं० स्त्री०) लपेटने की क्रिया या भाव, बधी हुई गठरी में कपडे की तह की मोड़, बाधने में डोरी आदि का फेरा, ऐंठन, मरोड़, उलझन, फसाव, पकड़, बधन, कुश्ती की एक पेंच, जाल, चक्कर।

लपेटन-(हिं० स्त्री०) लपेटने की क्रिया या भाव, लपेट, ऐंठन, मरोड़, उलझन, फसाव, बाधने का कपड़ा, वेष्टन, वेठन, जुलाहे का कपड़ा, लपेटने का वेलन, पैरों में उलझने वाली वस्तु।

लपेटना-(हिं०क्रि०) किसी सूत, डोरी या कपडे के समान किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के चारो ओर घुमाकर बाधना, घुमाव या फेर के साथ चारो ओर फँसाना, फैली हुई वस्तु को गट्ठर के रूप में करना, परिवेष्टित करना, पकड़ में कर लेना, काबू में लाना, कपडे आदि के भीतर बाँधना, उलझन में डालना, फँसाना, लेप करना, पोतना, गति बन्द करना।

लपेटनी-(हि० स्त्री०) जुलाहे की तूर।

लपेटवाँ-(हिं० वि०) लपेटा हुआ, जो लपेटा जा सके, जिसमें सोने चाँदी के तार लपेटे हो, लपेट कर बनाया हुआ, घुमाव फिराव का, गूढ अर्थ का।

लप्पा-(हि० पु०) छत की धरन में लगाई हुई लकड़ी।

लप्सिका-(स० स्त्री०) लपसी।

लफंगा-(फा० वि०) लपट, व्यभिचारी दुश्चरित्र, कुमार्गी, आवारा।

लफटट-(अ०पु०) सेना का एक अफसर।

लफटट गवर्नर-(अ० पु०) किसी प्रान्त का शासक।

लफना-(हिं०क्रि०) देखो लपना।

लफलफा-(हिं०स्त्री०) देखो लपलपाना।

लफाना-(हि० क्रि०) देखो लपाना।

लफ़ज़-(अ० पु०) शब्द, वात, बोल।

लबझना-(हि०क्रि०) उझलना।

लब-(फा० पु०) ओष्ठ, ओंठ।

लबड़धोंधों-(हि० स्त्री०) झूठमूठ का शोरगुल, व्यर्थ का हल्ला, क्रम और व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी, अन्याय, अनीति, बेइमानी की चाल, बातो का मुकाबला।

लबड़ना-(हिं० क्रि०) झूठ बोलना, शेखी हाकना।

लबदा-(हि०पु०) मोटा बेडौल डडा।

लबदी-(हिं० स्त्री०) छोटी पतली छड़ी।

लबनी-(हि० स्त्री०) मिट्टी की लंबी हाँडी जो ताड़ी निकालने के लिये ताड़ के पेड़ में बाँधी जाती है।

लबरा-(हि० वि०) झूठ बोलने वाला, गप हाकने वाला।

लबरी-(हिं०वि०स्त्री०) झूठ बोलने वाली।

लबलबी-(फ़ा० स्त्री०) बदूक के घोडे की कमानी।

लबादा-(फा० पु०) अँगरखे आदि के ऊपर पहरने का चोगा।

लबार-(हि० वि०) मिथ्यावादी, झूठ बोलने वाला, गप्पी।

लबारी-(हि० स्त्री०) झूठ बोलने का काम, (वि०) झूठा, चुगलखोर।

लबालब-(फा० क्रि० वि०) मुख तक, किनारे तक, छलकता हुआ।

लबी-(हि०स्त्री०) ऊख का पका हुआ

गाढ़ा रस, राब।
लवेद–(हिं०पु०) वेद के विरुद्ध वचन, दन्तकथा, लोकाचार।
लवेदा–(हिं०पु०) मोटा बड़ा डंडा।
लवेदी–(हिं०स्त्री०) मोटा छोटा डंडा, लाठी
लब्ध–(सं० वि०) प्राप्त, पाया हुआ, उपार्जित, कमाया हुआ, गणित में भाग करने से आया हुआ फल।
लब्धकाम–(सं० वि०) जिसकी मनोकामना पूरी हो गई हो।
लब्धकीर्ति–(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।
लब्धचेतन–(सं० वि०) जिसने पुनः ज्ञान प्राप्त किया हो।
लब्धजन्म–(सं० वि०) जिसने जन्म लिया हो।
लब्धधन–(सं०वि०) धनवान्, अमीर।
लब्धनाम–(सं० वि०) प्रसिद्ध, नामवर।
लब्धनाश–(सं०पु०,पूर्व धन का नाश।
लब्धप्रतिष्ठ–(सं०वि०) प्रतिष्ठित।
लब्धलक्ष–(सं०वि०) जिसका निशाना ठीक लगे।
लब्धवर–(सं० वि०) जिसने वर प्राप्त किया हो।
लब्धवर्ण–(सं०वि०) विद्वान्, पण्डित।
लब्धविद्य–(सं० वि०) पण्डित।
लब्धव्य–(सं० वि०) प्राप्त करने योग्य।
लब्धशब्द–(सं० वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।
लब्धसिद्धि–(सं०वि०)जिसने सिद्धि पाई हो
लब्धा–(सं०स्त्री०) विप्रलब्धा नायिका।
लब्धाङ्क–(सं० पु०) गणित करने पर जो अंक प्राप्त हो, जवाब।
लब्धावकाश–(सं० वि०) जिसने छुट्टी पाई हो।
लब्धावसर–(सं०वि०)पेन्शन् पाने वाला।
लब्धि–(सं०स्त्री०) लाभ, प्राप्ति, हिसाब का जवाब।
लब्धोदय–सं०वि०)उत्पन्न, सौभाग्य प्राप्त
लभन–(सं०नपु०) प्राप्ति।
लभस–(सं० पु०) घोड़ा बाँधनेकी रस्सी।
लभ्य–(सं० वि०) न्याय युक्त, उचित, पाने योग्य।
लमक–(सं० पु०) उपपति, जार,लम्पट
लमकना–(हिं० क्रि०) उत्कंठित होना, लपकना।
लमगजा–(हिं० पु०) इकतारा।
लमचिचा–(हिं० वि०)लम्बी गरदन वाला।
लमचा–(हिं० पु०) एक प्रकार की बरसाती घास।
लमछड़ (हिं० वि०) लम्बा और पतला (पु०) पुरानी चाल की लम्बी बन्दूक।
लमछुआ–(हिं० वि०) वह जो आकार में कुछ लम्बा हो।
लमजक–(हिं० पु०) ज्वरांकुश नाम की घास।
लमटगा–(हिं०वि०) लम्बी टाँगों वाला (पु०) सारस पक्षी।
लमतड़ंग–(हिं० वि०) बहुत लम्बा तथा ऊंचा।
लमधी–(हिं०पु०) समधी का पिता।
लमाना–(हिं०क्रि०) दूर चले जाना, लम्बा होना, आगे दूर तक बढ़ जाना।
लम्प–(अं० पु०) दीपक, चिराग।
लम्पट–(सं० वि०) व्यभिचारी, कामुक, (पु०) उपपति, जार।
लम्पटता–(सं० स्त्री०) लम्पट होने का भाव।
लंम्पाक–(सं०पु०) लपट,।
लमाटह–(सं० पु०) नगाड़ा,
लम्फ–(सं०पु०) उछाल।
लम्फन–(सं० नपु०) उछाल।
लम्ब–(सं० पु०) नर्तक, नाचने वाला, पति, उत्कोच, घूस, शुद्ध राग का एक भेद, एक असुर का नाम,विषुव रेखा के समानान्तर रेखा, (वि०) दीर्घ, लम्बा।
लम्बकर्ण–(सं० पु०) जिसके कान लम्बे हों, राक्षस, हाथी, खरहा, बकरा।
लम्बग्रीव–(सं०पु०) ऊंट।
लम्बजठर–(सं० वि०) लम्बे पेट वाला
लम्बजिह्व–(सं० पु०) एक राक्षस का नाम।
लम्बज्या–(सं० स्त्री०) ज्योतिष में ज्या रेखा का एक भेद।
लम्बतड़ंग–(हिं० वि०) ताड़ के समान लम्बा।
लम्बदन्ता–(सं० वि०) लम्बे दाँत वाला।
लम्बन–(सं० नपु०) आश्रय, झूलने की क्रिया।
लम्बपयोधरा–(सं०स्त्री०) जिस स्त्री के स्तन लम्बे हों।
लम्बमान–(सं०वि०) लम्बायमान पदार्थ।
लम्बा–(सं० स्त्री०) दक्ष की कन्या का नाम।
लम्बिका–(सं० स्त्री०) गले के भीतर की घंटी।
लम्बित–(सं० वि०) लम्बा।
लम्बोदर–(सं०पु०) गणेश जी।
लम्बोष्ठ–(सं० पु०) ऊंट (वि०) लम्बे ओष्ठ वाला।
लम्भ–(सं०पु०) लाभ, फायदा।
लम्भक–(सं०वि०) लाभ करने वाला।
लम्भन–(सं०नपुं०) प्रतिलम्भ, फायदा
लय–(सं०पु०) विनाश, लोप, प्रलय, सन्तोष संश्लेष, एक वस्तु का दूसरे में मिल जाना, संगीत में नाच गाने, और बजाने का मेल, एक पदार्थ का दूसरे में घुसना या मिलना, गाने का ढंग या तर्ज़, वह स्वर जो किसी स्वर के निकलने में लगता है, विश्राम, स्थिरता, मूर्छा, गूढ़ अनुराग, लगन, चित्तकी वृत्तियों का सब ओर से हट कर एक ओर लगना, तद्रूप होना।
लयन–(सं० नपु०) विश्राम, शान्ति।
लर–(हिं०स्त्री०) देखो लड़ा।
लरकई–(हिं० स्त्री०) लड़कपन।
लरकना–(हिं०क्रि०) देखो लटकना।
लरकिनी–(हिं०स्त्री०) देखो लड़की।
लरखराना–(हिं० क्रि०) लड़खड़ाना।
लरजना–(हिं० क्रि०) हिलना, काँपना, भयभीत होना, दहल जाना।
लरजा–(फ़ा० पु०) कम्प, थरथराहट, भूकम्प।
लरझर–(हिं०वि०) प्रचुर, बहुत ज़्यादा।
लरना–(हिं०क्रि०) देखो लड़ना।
लरनि–(हिं० स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा।
लराई–(हिं० स्त्री०) लड़ाई।

लरिकई-(हिं०स्त्री०) लड़कपन ।
लरिका-(हिं०पु०) देखो लड़का ।
लरिकाई-(हिं०स्त्री०) लड़कपन ।
लरी-(हिं०स्त्री०) देखो लड़ी ।
लर्ज-(हिं०पु०) सितार में के पीतल के तारका नाम ।
ललक-(हिं० स्त्री०) प्रबल इच्छा, गहरी चाह ।
ललकना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को प्राप्त करने की गहरी चाह होना, ललचना, उमग से भरना ।
ललकार-(हिं० स्त्री०) युद्ध के लिये उच्च स्वर से पुकारना, लड़ने के लिये बढ़ावा ।
ललकारना-(हिं०क्रि०) युद्ध के लिये प्रतिद्वंद्वी को उच्च स्वर से आह्वान करना, हाक लगाना, लड़ने के लिये बढ़ावा देना, उत्साहित करना ।
ललचना-(हिं०क्रि०) लालच करना,किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिये प्रबल इच्छा करना, लालसा करना, लुब्ध या मोहित होना,लालच से अधीर होना
ललचाना-(हिं०क्रि०) किसी के मन में लालसा उत्पन्न करना, लुभाना, मोहित करना, किसी वस्तु को दिखाकर उसके पाने के लिये अधीर करना ।
ललचौंहां-(हिं०वि०)लालच से भरा हुआ
ललजिह्व-(स० पु०) ऊंट, कुत्ता (वि०) जीभ लपलपाता हुआ, भयकर ।
ललदेया-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान
ललन-(स०नपु०) केलि, क्रीड़ा, चलाने की क्रिया (पुं०) प्यारा लड़का, दुलारा लड़का, बालक, नायक के लिये प्यार का शब्द ।
ललना-(स० स्त्री०) कामिनी, स्त्री, जीभ, एक वर्णवृत्त का नाम ।
ललनाप्रिय-(सं०पुं०) स्त्रियों का प्रिय ।
ललनिका-(स० स्त्री०) ललना, स्त्री ।
लला-(हिं० पु०) प्यारा पुत्र, दुलारा लड़का, बच्चो के लिये प्यार का शब्द, नायक या पति के लिये प्यार का शब्द
ललाई-(हिं० स्त्री०) लालिमा, सुर्खी ।
ललाक-(स० पु०) शिश्न, लिंगेन्द्रिय
ललाट-(स० नपुं०) मस्तक, माथा, भाग्य का लेख, किस्मत का लिखा ।
ललाटक-(स०नपु०) चौड़ा माथा ।
ललाटपटल-(स०नपु०) मस्तक का तल
ललाटरेखा-(स०स्त्री०) कपाल का लेख, भाग्य लेख ।
ललाटाक्ष-(स०पु०) शिव, महादेव ।
ललाटाक्षी-(स०स्त्री०) दुर्गा ।
ललाटिका-(स० स्त्री०) मस्तक पर का टीक, माथे पर बाँधने का एक आभूषण
ललाटूल-(स० वि०) जिसका ललाट ऊँचा हो ।
ललाना-(हिं०क्रि०) ललचाना ।
ललाम-(स०वि०) सुन्दर, मनोहर, लाल, प्रधान, श्रेष्ठ (स० नपु०) चिह्न, निशान, सींग, अलकार, गहना, घोड़े या शेर के गरदन पर के बाल, अयाल, घोड़ा, प्रभाव, रत्न ।
ललामक-(स०नपु०) मस्तक में लपेटने की माला ।
ललामगु-(स० पुं०) शिश्न, लिंगेन्द्रिय ।
ललामन्-(स०नपु०) ललाम, पुरुष ।
ललामी-(सं० स्त्री०) कान में पहरने का एक आभूषण सुन्दरता, शोभा, लालिमा
ललित-(स०नपुं०) शृगार रस में एक अग चेष्टा जिसमें सुकुमारता(नज़ाकत) के साथ हाथ, पैर, भौं, आख आदि अग हिलाये जाते हैं, एक विषम वर्णवृत्त का नाम (वि०) मनोहर, सुन्दर, मनचाहा, चलित, चलता हुआ ।
ललितकला-(स० स्त्री०) वे कला या विद्या जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौन्दर्य की अपेक्षा होती है ।
ललितकान्ता-(स० स्त्री०) मगल चण्डिका, दुर्गा ।
ललितचत्य-(स०पु०) एक प्रकार का सुन्दर मन्दिर ।
ललित ताल-(स०पु०) सगोत में एक प्रकार का ताल ।
ललितपद-(सं०पुं०) एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाईस मात्रायें होती हैं ।
ललितप्रहार-(स०पु०) अल्प प्रहार ।
ललितललित-(स०वि०) अति मनोहर ।
ललितलोचन-(स०त्रि०) सुन्दर नेत्र ।
ललितवनिता-(स०स्त्री०) सुन्दर स्त्री ।
ललिता-(स०स्त्री०) कस्तूरी, राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक, एक रागिणी का नाम एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं ।
ललिता पञ्चमी-(स० स्त्री०) आश्विन शुक्ला पचमी जिस दिन ललिता देवी (पार्वती) का पूजन होता है ।
ललितोपमा-(स०स्त्री०) एक अर्थालकार जिसमें उपमेय और उपमान की समता जताने के लिये,सम, समान, तुल्य आदि शब्दों का व्यवहार न करके ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जिनसे बराबरी, मित्रता निरादर आदि का भाव प्रगट हो
लली-(हिं०स्त्री०) लड़की या नायिका के लिये प्रेम का शब्द,प्रेमिका,दुलारी,लड़की
ललौंहां-(हिं०वि०) ललाई लिये हुए ।
लल्ला-(हि० पु०) देखो लला ।
लल्लो-(हिं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ, ज़बान ।
लल्लोचप्पो-(हि० स्त्री०) चिकनी चुपड़ी बातें जो केवल किसीको प्रसन्न करने के लिये कही जाय, ठकुरसुहाती ।
लल्लोपत्तो-(हि० स्त्री०) ठकुरसुहाती ।
लव-(सं०नपु०)लवङ्ग, बहुत छोटा मात्रा, (पुं०) लेश, विनाश, कटाई, छत्तीस निमेष का अल्प समय, पक्ष्म के शरीर पर के रोवें, सुरागाय के पूछ पर का बाल, (पुं०) श्री रामचन्द्र के दो यमज पुत्रों में से एक का नाम,(दूसरा कुश था)
लवङ्ग-(स० नपु०) एक वृक्ष जिसकी कली लौंग कहलाती है ।
लवङ्ग लता-(स०स्त्री०) राधिका की एक सखी का नाम, समोसे के आकार की एक बगला मिठाई ।
लवण-(स०नपु०) नमक, नोन, देखो लवणासुर ।
लवणक्षार-(स०पु०) खारी नलक ।
लवण खनि-(सं०स्त्री०) नमक की खान ।

लवण जल–(स०नपु०) खारा पानी, वह जल जिसमें नमक मिला हो।
लवण जलधि–(सं०पु०) लवण समुद्र।
लवणता–(सं० स्त्री०) नमकपन, लवण का भाव या धर्म।
लवण तृण– (सं०नपु०) लोनिया साग।
लवण तोय–(सं० पुं०) लवण समुद्र।
लवणत्व–(सं०नपु०) देखो लवणता।
लवण मद–(सं०पु०) खारी नमक।
लवण समुद्र–(सं०पु०) खारे पानी का समुद्र जो पुराणों के अनुसार सात समुद्रों में से एक था।
लवणा–(सं०स्त्री०) दीप्ति, आभा।
लवणाकर–(सं०पु०) नमक की खान।
लवणाब्धि–(सं०पु०)खारे पानी का समुद्र
लवणाम्भस्–(सं०पु०) समुद्र।
लवणारज– (सं० नपु०) खारी नमक।
लवणार्णव–(सं०पु०)खारे पानी का समुद्र
लवणासुर–(सं०पु०) मधु नामक दैत्य का पुत्र जिसको शत्रुघ्न ने मारा था।
लवन–(सं० नपु०)छेदन, काटन, खेत के फस्ल की कटाई, अन्न जो खेत की कटाई के लिये दिया जाय, लुनाई, लौनी।
लवना–(हिं० क्रि०) पके हुए अन्न के पौधों को खेत में से काटकर इकट्ठा करना, लुनना।
लवनी–(हिं० स्त्री०) लुनाई, फस्ल के अन्न काटने की मजदूरी (हिं० स्त्री०) मक्खन।
लवर–(हिं० स्त्री०) अग्नि की लपट, या ज्वाला।
लवलासी–(हिं० स्त्री०) प्रेम का लगाव।
लवली–(सं० स्त्री०) हरफारेवड़ी नामक वृक्ष और उसके फल, एक विषम वर्ण-वृत्त का नाम।
लवलीन–(हिं०वि०) तन्मय, निमग्न।
लवलेश–(सं०पु०) अत्यन्त थोड़ा मात्रा, जरासा लगाव, थोड़ा सा संसर्ग।
लवा–(हिं० पु०) तीतर की जातिका एक पक्षी, देखो लवा।
लवाई–(हिं० वि०) वह गाय जिसका बछवा अभी बहुत छोटा हो, (स्त्री०) खेत की फस्ल की कटाई, लुनाई, लवने की मजदूरी।
लवाजमा–(अ०पु०) साथ में रहने वाली की भीड़ भाड़, आवश्यक सामग्री जो किसी विशेष अवसर के लिये इकट्ठा की गई हो।
लवाजमात–(अ० पु०) उपकरण, सामग्री।
लवारा–(हिं०पु०) गाय का बछवा।
लवासी–(हिं० वि०) बकवादी, गप्प हाँकने वाला।
लवित्र–(सं०नपु०) हँसिया, हँसुआ।
लव्य–(सं०वि०) काटने योग्य।
लशकर–(फा०पु०) सेना, फौज, मनुष्यों का समूह, भीड़भाड, जहाजी आदमियों का दल, सेना के ठहरने का स्थान, छावनी।
लशकरी-(फा० वि०)सेना सबधी,फौज का, जहाज, जहाज पर काम करने वाला, खलासी (पु०) सैनिक, जहाजी आदमी, खलासियों की भाषा।
लशकारना–(हिं०क्रि०) शिकारी कुत्तों को ललकारना।
लशुन–(सं०नपु०) लहसुन।
लषण–(सं०नपु०) वान्छन, चाह।
लषना–(हिं०क्रि०) देखो लखना।
लस–(सं०पु०) चिपकने या चिपकाने का गुण चिपकाने वाली वस्तु, लासा, चित्ताकर्षण।
लसक–(सं०पु०) नर्तक, नाचने वाला।
लसदार–(फा०वि० जिससे लस हो,लसीला
लसना–(हिं० क्रि०) चिपकाना, सटाना, शोभित होना, छाजना।
लसनि–(हिं० स्त्री०) स्थिति, शोभा, छटा, सुन्दरता।
लसम–(हिं०वि०) जो खरा न हो दूषित।
लसलसा–(हिं०वि०) लसदार, चिपचिपा।
लसलसाना–(हिं० क्रि०) चिपकना, चिपचिपाना।
लसलसाहट–(हिं०स्त्री०) लसदार होने का भाव।
लसा–(सं०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी
लसिका–(सं०स्त्री०) लार, थूक।
लसी–(हिं०स्त्री०) लस, लसाहट, आकर्षण सम्बंध, लगाव, लाभ, मुनाफा, दही और पानी मिला हुआ शर्बत।
लसीका–(सं०स्त्री०) ईख का रस, मांस चमड़े के बीच का रस या पानी।
लसीला–(हिं० वि०) लसदार, चिपचिपा, सुन्दर।
लसुन–(हिं०पु०) देखो लशुन।
लसुनिया–(हिं० पु०) देखो लहसुनिया।
लसोड़ा–(हिं० पु०) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसमें बेर के समान गोल फल होते हैं, जो औषधियों में प्रयोग होते हैं।
लसौटा–(हिं०पु०) बहेलियों का लासा रखने का बास का चोंगा।
लस्टम पस्टम–(हिं० क्रि० वि०) किसी न किसी प्रकार से।
लस्त–(सं० वि०) क्रीड़ा किया हुआ, सजावट से भरा हुआ (हिं० वि०) अशक्त, शिथिल, थका हुआ, साहसहीन
लस्सी–(हिं०स्त्री०) लस, चिपचिपाहट, छाछ, मठा।
लहँगा–(हिं० पु०) स्त्रियों का कमर के नीचे का भाग ढापने का घेरेदार, पहरावा।
लहक–(हिं० स्त्री०) लहकने की क्रिया या भाव, चमक, आग की लपट, छवि, शोभा।
लहकना–(हिं० क्रि०) आग का दहकना, झोंके से लहराना, वायु का बहना, उत्कंठित होना, चाहसे आगे को बढना।
लहकाना–(हिं० क्रि०) हवा में इधर उधर हिलाना डोलाना, झोंका देना, उत्साह दिला कर आगे बढाना, भडकाना, ताव दिलाना, लपकाना।
लहकारना–(हिं०क्रि०) किसी के विरुद्ध कुछ करने के लिये ताव दिलाना, ललकारना।
लहकौर, लहकौरि–(हिं० स्त्री०) विवाह की वह रीति जिसमें दुलहा दुलहिन एक दूसरे के मुह में कौर डालते हैं।
लहजा–(हिं०पु०) गाने या बोलने का

ढग, स्वर (अ०पु०) पल, क्षण।
लहन–(हि०पु०) कजा नाम की झाड़ी।
लहनदार–(फा०पु०) वह मनुष्य जिसका कुछ लहना किसी पर बाकी हो,महाजन।
लहना–(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, पाना, (पु०) उधार दिया हुआ धन, किसी कारण मिलने वाला धन, भाग्य,किस्मत
लहनी–(हिं० स्त्री०) प्राप्ति, फल भोग, ठठेरों का बरतन छीलने का औज़ार।
लहबर–(हिं० पु०) एक प्रकार का बहुत लम्बा ढीला ढाला पहरावा, चोगा, झडा, निशान, लम्बी गरदन का एक प्रकार का तोता।
लहमा–(फ़ा०पु०) निमेष, पल।
लहर–(हिं० स्त्री०) हवा के झोंक से उठने वाली जल की बड़ी राशि, बड़ा हिलोरा, उमग, जोश, टेढ़ी मेढ़ी रेखा, गन्ध युक्त वायु, मँहक, वायु में उत्पन्न होने वाली आवाज की गृज, वक्र गति, मन की मौज, शरीर में रह रह उठने वाली पीड़ा, आनन्द की उमँग, सांप के काटने की लहर–बेहोशी के बीच बीच में जान जाने की अवस्था।
लहरदार–(फ़ा०वि०)टेढा मेढा गया हुआ
लहरना–(हिं० क्रि०) देखो लहराना।
लहर पटोर–(हि०पु०) पुरानी चाल का एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।
लहरा–(हिं० पु०) लहर, तरग, मौज, मज़ा, गाने के पहले ताल और स्वरों का मिलाना।
लहराना–(हिं० क्रि०) वायु के वेग से इधर उधर हिलना, बारबार हिलाना डुलाना, वक्रगति से ले जाना, झोंका खाते चलना, विराजना, शोभित होना, उत्कठित होना, हलोरा मारना, लहरें खाना, मन में उमँग होना, आग का लपकना, भड़कना।
लहरिया–(हि०वि०) ऐसी समानान्तर रेखाओं का समूह जो सीधी न जाकर क्रम से मुड़ती हुई जाती हैं, एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रग विरगी टेढीमेढी रेखाएँ बनी रहती हैं, ऐसे वस्त्र की बनी हुई साड़ी, देखो लहर।
लहरियादार–(फ़ा०वि०) जिसमें बहुतसी टेढी मेढी रेखा बनी हों।
लहरी–(सं० स्त्री०) लहर, तरग, (वि०) तरगी, मनमौजी।
लहल–(हि०पु०) एक प्रकार का राग।
लहलह–(हि० वि०) लहलहाता हुआ, आनन्द से फूला हुआ।
लहलहा–(हिं०वि०) लहलहाता हुआ, आनन्दी, हृष्टपुष्टता से परिपूर्ण।
लहलहाना–(हि०क्रि०) लहराने वाली पत्तियों से भरा होना, हरा भरा होना, दुर्बल शरीर का फिर से पनपना, प्रफुल्ल होना, खुशी से भरना, सूखे पेड़ पौधों में नई पत्तियाँ निकलना।
लहसुन–(हि०पुं०) एक पौधा जिसकी जड़ में गोल गाठ होती है।
लहसुनिया–(हिं०पु०) धूमिल रग का एक बहुमूल्य रत्न, रुद्राक्ष।
लहसुनिया हींग–एक प्रकार की बनावटी हींग।
लहा–(हि०पु०) देखो लाह।
लहाछेह–(हिं०पुं०)नाच की एक गति, नाच में तेजी और झपट्टा।
लहालह–(हिं०वि०) देखो लहलहा।
लहालोट–(हि० वि०) हँसी से लोटता हुआ, हँसी से मग्न, प्रेम में मग्न, मोहित, आनन्द के मारे उछलता हुआ।
लहासी–(हि० स्त्री०) नाव या जहाज बांधने की मोटी रस्सी, रास्ते में निकली हुई जड़।
लहि–(हि०अव्य०) पर्यन्त, तक।
लहु–(हि० अव्य०) देखो लौ।
लहुरा–(हिं०वि०) उम्र में छोटा।
लहू–(हिं० पु०) लोहू, रुधिर, खून, लहूलुहान होना–रुधिर से भर जाना
लहेरा–(हि० पु०) छोटे कद का एक सदाबहार वृक्ष, लाह की चूड़ी बनाकर बेंचने वाला।
लॉक–(हि०पु०) कटि, कमर।
लॉ–(अ० पु०) राजनियम, कानून, व्यवहार शास्त्र, धर्मशास्त्र।
लॉग–(हि० स्त्री०) धोती का वह भाग जो कमर में पीछे की ओर खोंसा जाता है, काछ।
लागल–(हि० पु०) खेत जोतने का हल, पूछ, देखो लाङ्गल।
लाघना–(हिं० क्रि०) किसी चीज़ के इस पार से उस पार जाना, किसी वस्तु को उछल कर पार करना, डाँकना
लांघनी छड़ी–(हिं० स्त्री०) मलखम की एक कसरत।
लाच–(हि० स्त्री०) उत्कोच, रिशवत।
लाछन–(हि०पुं०) देखो लाञ्छन, चिह्न
लाछनित–(हि०वि०) देखो लाञ्छित।
लाबा–(हि० वि०) देखो लम्बा।
लाइ–(हि० पु०) लुक, अग्नि।
लाइक–(हिं० वि०) देखो लायक।
लाइची–(हि० स्त्री०) देखो इलायची।
लाइट् हाउस्–(अ० पु०) वह स्तम्भ या मीनार जिसके सिर पर बहुत तेज रोशनी रहती है, यह जहाजों को दुर्घटना से बचाने के लिये बनाया जाता है, प्रकाशस्तम्भ।
लाइन्–(अ० वि०) कतार, पक्ति, रेल की सड़क, रेखा, लकीर।
लाइन् क्लियर्–(अ०पु०) रेलगाड़ी के हाकने वाले को दिया जाने वाला वह पत्र या सकेत जो यह सूचित करने के लिये दिया जाता है कि लाइन् साफ है, तुम रेलगाड़ी को आगे ले जा सकते हो
लाइफ् बॉय्–(अ०पु०) एक प्रकार का यत्र जो पानी में नहीं डूबता, पानी में गिरे हुए आदमी इसको पकड़ कर बच जाते हैं।
लाइफ् बोट्–(अ० स्त्री०) एक प्रकार की नाव जो समुद्र में लोगों की जान बचाने के काम में लाई जाती है।
लाइब्रेरी–(अ० स्त्री०) पुस्तकालय।
लाइसेंस–(अ०पु०) देखो लैसंस।
लाई–(हि०स्त्री०) धान का लावा, लाजा, शिकायत, चुगली, लाई लुतरी–चुगलखोरी (फ़ा०स्त्री०) ऊनी चादर, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, शराब।

की तलछट।
लाऊ-(हिं०पु०) लौकी, घिआ।
लॉक-अप्-(अं० पु०) हवालात।
लाकडी-(हिं० स्त्री०) देखो लकड़ी।
लाकेट्-(अं० पु०) किसी जंजीर में लगाया हुआ लटकन।
लाकिनी-(सं०स्त्री०) तन्त्र के अनुसार एक योगिनी का नाम।
लाक्षकी-(सं०स्त्री०)सीता का एक नाम।
लाक्षण-(सं०वि०) लक्षण जानने वाला
लाक्षणिक-(सं० पु०) वह जो लक्षणो को जानता हो, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बत्तीस मात्राएँ होती हैं (वि०) लक्षण सबधी।
लाक्षण्य-(सं० वि०) लक्षण जानने वाला
लाक्षा-(सं० स्त्री०) लाख, लाह।
लाक्षागृह-(सं०पु०) लाख का वह घर जिसको दुर्योधन ने पाण्डवो को जला देने की इच्छा से बनवाया था।
लाक्षातरु-(सं० पु०) पलास का वृक्ष।
लाक्षारस-(सं० पु०) महावर।
लाक्षावृक्ष-(सं०पु०) पलास का वृक्ष।
लाक्षिक-(सं०पु०) लाख का बना हुआ
लाक्ष्मण-(सं० पु०) लक्ष्मण के गोत्र का सन्तान।
लाख-(हिं० वि०) सौ हज़ार, बहुत ज़्यादा (पु०) सौ हजार की सख्या, देखो लाक्षा।
लाखना-(हिं० क्रि०) लाह लगाकर किसी वस्तु का छेद बन्द करना।
लाखपति-(हिं०पु०) देखो लखपती।
लाखा-(हिं०पु०) लाख का बना हुआ रग, गेंहू के पौधों में लगने वाला एक रोग।
लाखागृह-(हिं० पु०) देखो लाक्षागृह
लाखिराज-(हिं० वि०) वह भूमि जिसकी लगान न देना पड़ता हो।
लाखी-(हिं० वि०) लाह के रग का, मटमैला लाल (पु०) लाख के रग का घोड़ा।
लाग-(हिं०स्त्री०) सम्पर्क, लगाव, युक्ति, उपाय, प्रेम, उपराचढी, जादू, टोना, विशेष कौशल की स्वाग जिसकी रचना जल्दी समझ में न आवे, ब्राह्मण, भाट, नाई आदि को शुभ अवसर पर देने का नियत धन, रसद, जिस चेप से चेचक आदि का टीका लगाया जाता है, भूमिकर, लगान, एक प्रकार का नाच, धातु को फूँक कर बनाया हुआ भस्म, वैर,दुश्मनी (क्रि०वि०) पर्यन्त,तक
लागडाँट-(हिं० स्त्री०) प्रतिस्पर्धा, शत्रुता, नाचने की एक क्रिया।
लागत-(हिं०स्त्री०) वह खर्च जो किसी वस्तु के तैयार करने में लगे।
लागना-(हिं० क्रि०) देखो लगना।
लागि-(हिं०अव्य०) निमित्त, वास्ते, लिये, हेतु से, (क्रि०वि०) पर्यन्त, तक।
लागुडिक-(सं० वि०) जिसके हाथ में लाठी हो, पहरा देने वाला।
लागू-(हिं० वि०) लगने या प्रयोग में आने योग्य।
लागे-(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।
लाघव-(सं०नपु०) लघु होने का भाव, अल्पत्व, कमी, लघुता, अल्पता, हाथ की सफाई, फुर्ती, आरोग्यता, तन्दुरुस्ती (अव्य०) सहजमें, जल्दी से।
लाघविक-(सं०वि०) सक्षिप्त, थोड़ा।
लाघवी-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी।
लाङ्ग-(सं०स्त्री०) लाग, काछ।
लाङ्गल-(सं०पु०) खेत जोतने का हल, शिश्न, ताल का वृक्ष, एक प्रकार का फूल।
लाङ्गलकी-(सं०स्त्री०) कलियारी नामक विषैला पौधा।
लाङ्गलग्रह-(सं०पु०) किसान, खेतिहर।
लाङ्गलग्रहण-(सं०नपु०) हल पकड़ना।
लाङ्गलचक्र-(सं० नपु०) फलित ज्योतिष का एक प्रकार का चक्र।
लाङ्गलदण्ड-(सं० पु०) हरीस।
लाङ्गलध्वज-(सं०पुं०) बलराम।
लाङ्गलपद्धति-(सं० स्त्री०) सीता।
लाङ्गलि-(सं०पु०) मजीठ, गजपीपल, केंवाच, चव्य, चाव।
लाङ्गलिक-(सं० पु०) एक प्रकार का स्थावर विष।
लाङ्गलिकी-(सं० स्त्री०) कलियारी नामक पौधा।
लाङ्गली-(सं० पु०) बलराम, नारियल (स्त्री०) मजीठ, गजपीपल।
लाङ्गुल, लाङ्गूल-(सं०नपु०) पूछ, शिश्न
लाङ्गुली-(सं० पु०) बन्दर, केंवाच।
लाचार-(फा० वि०) विवश, मजबूर (क्रि०वि०) विवश होकर, मजबूरी से।
लाचारी-(फा०स्त्री०) लाचार होने का भाव, मजबूरी।
लाची-(हिं०स्त्री०) इलायची।
लाचीदाना-(हिं०पु०) इलायची दाना।
लाछन-(हिं०पु०) देखो लाञ्छन।
लाज-(हिं०स्त्री०) लज्जा, शर्म, हया।
लाजक-(सं० पु०) धान का लावा।
लाजना-(हिं० क्रि०) लज्जित होना, शरमाना।
लाजपेया-(सं०स्त्री०) लावे का माड़।
लाजभक्त-(सं० पु०) लावे का भात।
लाजमण्ड-(सं०पु०) लावा पका कर इसमें से निकाला हुआ माड़।
लाजवंत-(हिं०वि०) जिसको लज्जा हो।
लाजवती-(हिं० स्त्री०) लजालू नाम का पौधा।
लाजवर्णी-(सं० स्त्री०) वह फुसी जो मकड़ी के मूतने से निकल आती है।
लाजवर्द-(फा० पु०) राजवर्तक, एक प्रकार का जंगाली रग का बहुमूल्य पत्थर जिसके ऊपर सुनहले छींटे होते हैं।
लाजवर्दी-(फा०वि०) हलके नीले रग का
लाजवाब-(फा०वि०) निरुत्तर, जो कुछ जवाब न दे सके, अनुपम, बेजोड़।
लाजशक्तु-(सं० पु०) लावे का सत्तू।
लाजा-(सं० स्त्री०) भूना हुआ धान, लावा, चावल (पु०) भूमि।
लाज़िम-(अ० वि०) जिसका करना आवश्यक हो, उचित, मुनासिब।
लाज़िमी-(अ०वि०) आवश्यक, ज़रूरी।
लाञ्छन-(सं० नपु०) चिह्न, निशान, दाग, दोष, कलक।

लाञ्छनी-(स०स्त्री०) देखो लाञ्छन।
लाट-(हिं०स्त्री०) मोटा ऊंचा खमा, वर्तमान गुजरात प्रदेश का प्रान्त भाग, इस स्थान के अधिवासी (पु०) अंग्रेजी 'लॉर्ड' शब्द का अपभ्रंश।
लाटपत्र, लाटपर्ण-(स०पु०) दारचीनी।
लाटरी-(अं०स्त्री०) एक प्रकार की योजना जिसके निमित्त टिकट बेंचकर धन एकत्रित किया जाता है तथा जिनके नाम की चिट्ठी पहले निकलती है उनको निश्चित धन यथाक्रम बांटा जाता है।
लाटानुप्रास-(स० पु०) वह शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है परन्तु अन्वय के उलट फेर से भिन्न अर्थ निकलता है।
लाटिका-(स० स्त्री०) रचनापद्धति की वह रीति जिसमें मृदु पदविन्यास होता है और अधिक संयुक्त पद और बड़े बड़े समास नहीं होते।
लाटी-(हिं०स्त्री०) ओंठों तथा मुख का सूख जाना।
लाठ-(हिं०पु०) देखो लाट।
लाठी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी, डंडा, लाठी चलाना-लाठी से मारपीट करना।
लाड़-(हिं०पु०) बच्चों का प्यार या दुलार।
लाड़लड़ा-(हिं० पु०) वृक्षों पर रहने वाला एक प्रकार का सर्प।
लाड़लड़ैता-(हिं० वि०) अधिक प्यारा,
लाड़ला-(हिं० वि०) जिसका लाड़ किया जाय, दुलारा।
लाड़ली-(हिं०वि०स्त्री०) दुलारी।
लाडू-(हिं०पु०) लड्डू, मोदक।
लाढ़िया-(हिं० वि०) वह दलाल जो दुकानदारों से मिला रहता है और गाहकों को धोखा देकर उस दुकानदार का माल बिकवाता है।
लाढ़ियापन-(हिं०पु०) धूर्तता, चालाकी
लाण्ठणी-(स०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री।
लात-(हिं०स्त्री०) पैर, पाव, पैर का आघात, लात मारना-तुच्छ जानकर छोड़ देना।
लाद-(हिं०स्त्री०) लादने की क्रिया, ढेंकुल के दूसरे छोर पर रक्खा हुआ बोझ, पेट, उदर, आँत, अँतड़ी।
लादना-(हिं०क्रि०) किसी चीज़ पर बहुत सी वस्तुओं को रखना, गाड़ी या पशु के पीठपर भार रखना, पीठपर उठा लेना, किसी पर किसी बात का भार रखना।
ला-दावा-(अ०वि०) जिसका कोई दावा न रह गया हो।
लादिया-(हिं०पु०) किसी चीज़ पर बोझ लादने वाला।
लादी-(हिं०स्त्री०) कपड़ों की गठरी जो पशु की पीठपर लादी जाती है।
लाधना-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, पाना।
लानंग-(हिं०पु०) एक प्रकार का अंगूर।
लॉन्-(अं० पु०) घास का बड़ा मैदान जिसपर गेंद आदि का खेल होता है।
लॉन्टेनिस्-(अं० पु०) गेंद का एक प्रकार का खेल जो छोटे से मैदान में खेला जाता है।
लानत-(अ० स्त्री०) भर्त्सना, धिक्कार।
लानती-(हिं०पु०) वह जो सर्वदा फटकार सुनता है।
लाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को उठाकर अपने साथ लेकर आना, प्रत्यक्ष करना, सामने रखना, उत्पन्न करना, जलाना, आग लगाना।
लाने-(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।
लाप-(सं०पु०) कथन, वार्ता।
लापता-(हिं०वि०) जिसका पता न हो, खोया हुआ, गुप्त, गायब।
लापरवा, लापरवाह-(फ़ा०वि०) असावधान, बेफिक्र।
लापरवाही-(फा० स्त्री०) प्रमाद, असावधानी, बेफिक्री।
लापसी-(हिं० स्त्री०) देखो लपसी।
लापी-(स०वि०) कहनेवाला।
लाप्य-(स०त्रि०) कहने योग्य।
लाबर-(हिं०वि०) देखो लबार।
लाभ-(स०पु०) प्राप्ति, मिलना, फायदा, मुनाफा, उपकार, भलाई।
लाभकारक-(सं० वि०) लाभदायक, फायदेमन्द।
लाभकारी-(स०वि०) फायदा करने वाला
लाभदायक-(स०वि०) गुणकारी।
लाभमद-(स० पु०) वह मद जिससे मनुष्य अपने को श्रेष्ठ और दूसरों को हीन समझता है।
लाभलिप्सा-(स० स्त्री०) प्राप्त करने की इच्छा।
लाभलिप्सु-(स० वि०) पाने की इच्छा करने वाला।
लाभ्य-(स०नपु०) लाभ, फायदा।
लाम-(हिं० पु०) सेना, फौज, बहुत से मनुष्यों का समूह।
लामज-(हिं० पु०) खस की तरह की एक घास।
लामय-(हिं०पु०) एक प्रकार की घास।
लामा-(हिं० पु०) तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य, (हिं०पु०) ऊंट की तरह का एक पशु, (वि०) लम्बा।
लामी-(हिं० पु०) एक प्रकार का लम्बा फल जिसकी तरकारी बनती है।
लामे-(हिं०क्रि०वि०) दूर पर।
लाय-(हिं० स्त्री०) आग की ज्वाला या लपट।
लायक़-(अ०वि०) उपयुक्त, उचित, ठीक, वाजिब, समर्थ, गुणवान्, सुयोग्य।
लायक़ी-(अ०स्त्री०) सुयोग्यता, काबलियत।
लायची-(हिं०स्त्री०) देखो इलायची।
लायल-(अं०वि०) राजभक्त।
लायल्टी-(अं०स्त्री०) राजभक्ति।
लार-(हिं०स्त्री०) वह पतला लसदार थूक जो मुह में से तार के रूप में निकलता है, पंक्ति, कतार, लासा, लुआब, (क्रि०वि०) पीछे, साथ, लार लगाना-फँसाना।
लार्ड-(अं० पु०) ईश्वर, मालिक, स्वामी, जमीदार, इङ्गलैंड के बड़े बड़े जमीदारों और रईसों की एक उपाधि।
लार्डसभा-(हिं० स्त्री०) ब्रिटिश् पार्लमेन्ट की वह सभा जिसमें बड़े बड़े ताल्लुकेदारों और अमीरों के प्रतिनिधि होते हैं।
लाल-(हिं० पु०) छोटा प्रिय बालक, प्यारा बच्चा, पुत्र, बेटा, श्रीकृष्ण का

एक नाम, दुलार, प्यार, लार, लाल रङ्ग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया, (फा०पु०) मानिक नाम का रत्न, (वि०) लाल रङ्ग का, सुर्ख, अति क्रुद्ध, वह जो खेल में सबसे पहले जीत गया हो, लाल पड़ना या होना-अति क्रुद्ध होना, लाल पीले होना-क्रोध करना।

लाल अम्बारी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार का पटुवा।

लाल अगिन-(हिं०पु०) एक प्रकार का पक्षी।

लाल आलू-(हि०पु०) रतालू, शरूई।

लालक-(स०वि०) प्यार करने वाला।

लाल चन्दन-(हि०पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी कुछ कालापन लिये लाल होती है, देवीचन्दन।

लालच-(हि० पु०) किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र लालसा, लोलुपता, लोभ।

लाल चोंच-(हिं०पु०) शुक, तोता।

लालची-(हि०वि०) अति लोभी, जिसको बहुत लालच हो।

लालचीनी-(हि० पु०) एक प्रकार ा कबूतर।

लालटेन-(हि० स्त्री०) प्रकाश करने का एक यन्त्र जिसमें तेल भरने के लिये एक डब्बा होता है तथा जलाने के लिये बत्ती लगी रहती है जो ऊपर नीचे हो सकती है, हवा से न बुझने के लिये इसमें शीशे का पारदर्शक कुप्पा लगा रहता है, कन्दील।

लालड़ी-(हिं० पु०) लाल रग का एक प्रकार का नगीना।

लालन-(स० नपु०) प्रेम पूर्वक बालको का आदर, लाड़, प्यार (हि०पु०) प्रिय बालक, कुमार, बालक, प्यारा बच्चा (स्त्री०) चिरौंजी।

लालन पालन-(स०नपु०) भरण पोषण।

लालना-(हिं० क्रि०) लाड़ करना, प्यार करना।

लालनीय-(स० वि०) दुलार या प्यार करने योग्य।

लालपानी-(हिं०पु०) मद्य, शराब।

लाल बुझक्कड़-(हि० पु०) वह जो कोई बात जानता न हो केवल अटकल पच्चू मतलब लगाता हो।

लालबेग-(हिं० पु०) लाल रग का एक प्रकार का परदार कीड़ा।

लालमन-(हि०पु०) श्रीकृष्ण, एक प्रकार का लाल तोता जिसका शरीर लाल, डैने हरे, चोंच गुलाबी और दुम काली होती है।

लालमिर्च-(हि० स्त्री०) मिरचा, मरचा।

लालमी-(हिं०पु०) खरबूजा।

लालमुँहा-(हिं० पु०) एक प्रकार का लाल निनावा जो मुख के भीतर हो जाता है।

लालमूली-(हि० स्त्री०) शलजम।

लालयितव्य-(स० वि०) लालन पालन करने योग्य।

लालरी-(हि० स्त्री०) देखो लालड़ी।

लालस-(स० पु०) लालसा, चाह।

लालसफरी-(हि० पु०) अमरूद।

लालसमुद्र-(हिं० पु०) लाल सागर।

लालसर-(हि० पु०) एक प्रकार का पक्षी।

लालसा-(स० स्त्री०) किसी पदार्थ को प्राप्त करने की अधिक अभिलाषा, उत्सुकता, गर्भावस्था में उत्पन्न होने वाली अभिलाषा, दोहद।

लाल सागर-(हिं०पु०) भारतीय महासागर का वह अंश जो अरब और अफ्रीका के मध्य में पड़ता है और स्वेज़ की नहर तक फैला है।

लालसिखी-(हि० पु०) मुरगा।

लालसिरा-(हि० स्त्री०) एक प्रकार का बत्तक जिसका सिर लाल होता है।

लालसी-(हि० वि०) अभिलाषी, उत्सुक।

लाला-(स० स्त्री०) मुख से निकलने वाली लार, थूक। (हिं० पुं०) आदर सूचक एक सम्बोधन का शब्द, महाशय, इस शब्द का व्यवहार पजाब में अधिकतर होता है, कायस्थ जाति सूचक शब्द, छोटे प्रिय बच्चे के लिये सबोधन (वि०)।

लालरंगका-(फा०पु०) पोस्ते का लाल रंग का फूल।

ललाट-(स० वि०) ललाट सबधी।

लालामिक-(सं०वि०) सौन्दर्य लेने वाला

लालायित-(स० वि०) जिसके मुख में लालच के कारण पानी भर आया हो, ललचाया हुआ।

लालासव-(हि० पु०) लूता, मकड़ी।

लालित-(स० वि०) पाला पोसा हुआ, प्यारा, दुलारा।

लालित्य-(स० नपु०) ललित होने का भाव, मनोहरता, सुन्दरता।

लालिमा-(स०स्त्री०) अरुणता, ललाई।

लाली-(हि० स्त्री०) लाल होने का भाव, ललाई, सुर्खी, इज्ज़त, आबरू।

लालुका-(स० स्त्री०) गले में पहरने का एक प्रकार का हार।

लाले-(हिं० पु०) लालसा, अभिलाषा, किसी वस्तु के लिये लाले पड़ना-किसी वस्तु के लिये बहुत तरसना।

लाल्य-(स० वि०) लालन करने योग्य, दुलार करने लायक।

लाल्हा-(हि० पु०) मरसे का साग।

लाव-(स० पु०) लवा नामक पक्षी (हि०स्त्री०) मोटी डोरी, रस्सा, उतनी भूमि जितनी एक दिनमें सींची जा सके, (पु०) वह ऋण जो किसी की वस्तु को अपने पास रखकर दिया जावे।

लावक-(हि० पु०) लवा पक्षी।

लावज-(स०पु०) ढोल के आकार का एक प्राचीन बाजा।

लावण-,स०वि०) लवण सबधी, नमकीन।

लावण्य-(स० नपु०) लवणत्व, लवण का भाव, नमकपन, अत्यन्त सुन्दरता, शील की उत्तमता।

लावण्या-(स०स्त्री०) ब्राह्मी बूटी।

लावदार-(फा०वि०) तोप में बत्ती लगाने वाला, तोप छोड़ने वाला।

लावनता-(हिं०स्त्री०) देखो लावण्य।

लावना-(हि०क्रि०) लगाना, स्पर्श करना, जलाना, आग जलाना, देखो लाना।

लावनि-(सं० स्त्री०) सौन्दर्य, लावण्य।
लावनी-(हिं० स्त्री०) गाने का एक प्रकार का छन्द, इसको ख्याल भी कहते हैं।
लावबाली-(अ० वि०) लापरवाह, बेफिक्र, अवारा, वह जिसके विचार धार्मिक दृष्टि से स्वतन्त्र हों।
लावल्द-(फ़ा०वि०) जिसके बाल बच्चे न हों, निःसन्तान।
लावल्दी-(फ़ा० स्त्री०) निःसन्तान होने का भाव।
लावा-(सं० पु०) लवा नामक पक्षी, (हिं० पु०) भूना हुआ धान, ज्वार, बाजरा, रामदाना आदि, खील, लाई।
लावा-(अं० पु०) राख, पत्थर, धातु आदि मिला हुआ वह द्रव पदार्थ जो ज्वाला मुखी पर्वत में से विस्फोट के समय निकलता है।
लावापरछन-(हिं०पु०) विवाह के समय की एक रीति।
लावारिस-(अ०पु०) वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या वारिस न हो।
लावारिसी-(अ० वि०) जिसका कोई अधिकारी न हो।
लाविका-(सं०स्त्री०) लवा नामक पक्षी।
लाश-(फा० स्त्री०) किसी प्राणी का मृतक शरीर, शव।
लाष-(हिं० पु०) देखो लाख।
लषना-(हिं०क्रि०) देखो लखना।
लास-(सं० पु०) एक प्रकार का नाच, मटक, जूस, शोरवा।
लासक-(सं० पु०) नाचने वाला, मोर।
लासकी-(सं० स्त्री०) नाचने वाली स्त्री।
लासन-(हिं० पु०) जहाज बाधने का मोटा रस्सा।
लासा-(हिं० पु०) कोई लसदार या चिपचिपी वस्तु, वह चिपचिपा पदार्थ जिससे बहेलिये चिड़ियों को फँसाते हैं।
लासानी-(अ०वि०) अनुपम, अद्वितीय।
लासि-(हिं० पु०) देखो लास्य।
लासिका-(सं० स्त्री०) नर्तकी, नाचने वाली स्त्री।
लासिनी-(सं०स्त्री०) नाचने वाली स्त्री।
लासी-(हिं० स्त्री०) गेहूँ की फस्ल को हानि पहुँचाने वाला एक महीन कीड़ा।
लास्य-(सं० नपु०) भाव और ताल सहित नाच जिसमें शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता है, स्त्रियों का नाच।
लास्यक-(सं० नपु०) नृत्य, नाच।
लास्या-(सं०स्त्री०) नाचने वाली स्त्री।
लाह-(हिं०स्त्री०) लाख, चपड़ा, चमक, आभा (पु०) लाभ, मुनाफा, फायदा।
लाहन-(हिं०पु०) वह महुआ जो मद्य खीचने के बाद बच जाता है जो पशुओं को खिलाया जाता है, खमीर जिससे मद्य बनता है।
लाहल-(हिं०पु०) देखो लाहौल।
लाही-(हिं० स्त्री०) लाल रंग का वह छोटा कीड़ा जो वृक्षों पर लाह उत्पन्न करता है, इसी प्रकार का कीड़ा जो फस्ल को बहुत हानि पहुँचाता है, लावा, सरसों (वि०) लोहे के रंग का, मटमैले लाल रंग का।
लाहु-(हिं०पु०) लाभ, नफा।
लाहौल-(अ०पु०) एक अरबी वाक्य का पहिला शब्द (पूरा वाक्य-लाहौल बिला कूवत है) जो भूतप्रेत हटाने तथा घृणा प्रगट करने में व्यवहार किया जाता है।
लिंग-(हिं०पु०) देखो लिङ्ग।
लिंटू-(अं० पु०) तूतिये में रंगा हुआ मुलायम कपड़ा जो घाव पर बाधा जाता है।
लिम्फ-(अं० पु०) शीतला का चेप जो टीका लगाने के काम में लाया जाता है
लि-(सं०पु०) शान्ति, नाश, शेष, अन्त, हाथ में पहरने का एक आभूषण।
लिए-(हिं०) हिन्दी के कारक का एक चिह्न जो सम्प्रदान में प्रयोग किया जाता है, जिस शब्द के साथ यह लगाया जाता है उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित होता है, यथा-मैं तुम्हारे लिए पुस्तक लाया हूँ।
लिकिन-(हिं०पु०) मटमैले रंग की एक बड़ी चिड़िया।
लिकुच-(सं० नपु०) बड़हर का वृक्ष।
लिक्षा-(सं०स्त्री०) जू का अंडा, लीख।
लक्खाड़-(हिं०पु०) बहुत लिखने वाला, बड़ा भारी लेखक।
लिक्विडेटर-(अं० पु०) वह अफसर जो किसी कारबार के उठाने, उसकी ओर से मामला मोकदमा लड़ने आदि आवश्यक काम करने के लिये नियुक्त किया जाता है।
लिक्विडेशन-(अं०पु०) किसी कंपनी के कारबार बंद होने पर उसकी सम्पत्ति से लेहनदारों को बची हुई रकम हिस्से रसदी बाटने का काम।
लिक्षा-(सं० स्त्री०) जू का अंडा, लीख, एक सूक्ष्म परिमाण।
लिखत-(हिं० स्त्री०) लिखी हुई बात, दस्तावेज।
लिखन-(सं०नपु०) लिपि, लिखावट।
लिखना-(हिं०क्रि०) किसी नुकीली वस्तु से रेखा रूप में चिह्नित करना, अंकित करना, स्याही में डुबा कर कलम से आकृति बनाना, लेख आदि की रचना करना, तसवीर बनाना।
लिखवाई-(हिं०स्त्री०) देखो लिखाई।
लिखवाना-(हिं०क्रि०) लिखने का काम दूसरे से कराना।
लिखाई-(हिं०स्त्री०) लिखने का कार्य, लेख, लिपि, लिखने का ढंग, लिखावट, लिखने की मजदूरी।
लिखाना-(हिं० क्रि०) अंकित कराना, दूसरे से लिखने का काम कराना।
लिखापढ़ी-(हिं०स्त्री०) चिट्ठियों का आना जाना, पत्र व्यवहार, किसी विषय को कागज पर लिखकर पक्का करना।
लिखावट-(हिं० स्त्री०) लिखे हुए अक्षर आदि, लिखने का ढंग, लेख प्रणाली, लेख।
लिखित-(सं० वि०) अंकित, लिखा हुआ, (पु०) लिपि, लेख, प्रमाणपत्र।

लिखितक-(हिं० पु०) एक प्रकार के प्राचीन चौखूटे अक्षर जो मध्य एशिया के शिलालेखों में पाये गये हैं।
लिखेरा-(हिं० पु०) लिखने वाला, लेखक
लिख्या-(स० स्त्री०) लीख, एक परिमाण।
लिच्छवि-(स० पु०) एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश।
लिङ्ग-(स०नपु०) चिह्न, लक्षण, साधक, हेतु, साख्य के अनुसार मूल प्रकृति, व्याकरण में वह भेद जिससे स्त्री पुरुष का पता लगता है, मीमासा के छ लक्षण, सामर्थ्य, पुरुष की गुप्त इन्द्रिय, शिश्न।
लिङ्गक-(स० पु०) कैथ का पेड़।
लिङ्गदेह-(स० पु०) वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी अपने किये हुए कर्मों का फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है।
लिङ्गधारण-(स०नपु०) वंश या सम्प्रदाय के चिह्न धारण करना।
लिङ्गधारी-(स० वि०) शिव का लिङ्ग धारण करने वाला, चिह्नधारी।
लिङ्गपीठ-(स०नपु०) मन्दिर की वह चौकी जिस पर देव लिंग स्थापित रहता है।
लिङ्गमूर्ति-(स० पु०) शिव।
लिङ्गशरीर-सूक्ष्म शरीर।
लिङ्गरोग-(स० पु०) शिश्न का एक रोग, गरमी।
लिङ्गवत्-(स० वि०) चिह्न युक्त।
लिङ्गवर्ध-(स०पु०) कैथ का पेड़।
लिङ्गवर्धन-(स० पु०) शिश्न की वृद्धि
लिङ्गवर्धी-(स० वि०) शिश्न की वृद्धि करने वाला।
लङ्गवर्धिनी-(स० स्त्री०) अपामार्ग चिचिडा।
लिङ्गविपर्यय-(स० पु०) व्याकरण में लिङ्ग का परिवर्तन।
लिङ्गवेदी-(स० स्त्री०) वह चौकी जिस पर कोई देवमूर्ति स्थापित की जाती है।
लिङ्गस्थ-(स० पु०) ब्रह्मचारी।
लिङ्गाग्र-(स० पु०) शिश्न का अग्र भाग
लिङ्गानुशासन-(सं० नपु०) व्याकरण में शब्दों के लिंग निरूपण करने के नियम।
लिङ्गार्चन-(स०न पु०) शिव लिंग का पूजन।
लिङ्गालिका-(स०स्त्री०) छोटी चुहिया, मुसरी।
लिङ्गी-(स०पु०) हाथी (वि०) चिह्न या निशान वाला।
लिचेन-(हिं०पु०) एक प्रकार की घास।
लिच्छवि-(स० पु०) भारत का एक प्राचीन राजवंश।
लिटरेचर-(अ०पुं०) साहित्य।
लिटरेरी-(अ० वि०) साहित्य सम्बन्धी, साहित्यिक।
लिटाना-(हिं० क्रि०) लेटने की क्रिया कराना।
लिट्ट-(हिं० पु०) रोटी जो बिना तवे के आग पर ही सेंकी जावे, बाटी।
लिठोर-(हिं० पु०) एक प्रकार का नमकीन पकवान।
लिडार-(हिं० वि०) डरपोक, कायर।
लिपटना-(हिं० क्रि०) चिपटना, खूब सटजाना, तन्मय होकर किसी कार्य में प्रवृत्त होना, गले लगाना, आलिंगन करना।
लिपटाना-(हिं० क्रि०) एक वस्तु को दूसरी वस्तु से सटाना, चिमटाना, गले लगाना, आलिंगन करना।
लिपड़ा-(हिं०पु०) लुगड़ा, कपड़ा, (वि०) लेई की तरह गीला और चिपचिपा।
लिपना-(हिं० क्रि०) किसी रंग या गीली वस्तु से पोता जाना, किसी गीली वस्तु का फैल जाना।
लिपवाना-(हिं० क्रि०) लीपने पोतने का काम दूसरे से कराना।
लिपाई-(हिं० स्त्री०) लीपने पोतने की क्रिया या भाव, लीपने की मजदूरी।
लिपाना-(हिं०क्रि०) रंग अथवा किसी गीली वस्तु की तह चढवाना, पुताना, घुली हुई मिट्टी गोबर आदि का लेप कराना।
लिपि-(स० स्त्री०) वर्ण या अक्षर के अंकित चिह्न, लिखावट, वर्ण अंकित करने की पद्धति, लिखे हुए अक्षर।
लिपिकर-(स०पु०) लेखक, लिखने वाला
लिपिकार-(स०पु०) लेखक।
लिपिज्ञ-(स०वि०) सुन्दर लिखने वाला।
लिपिन्यास-(स०पु०) पत्र आदि की लिखावट।
लिपिफलक-(स० पु०) पत्थर धातु आदि की पटिया जिस पर अक्षर खोदे जाते हैं।
लिपिबद्ध-(स०वि०) लिखित लिखा हुआ
लिपिशाला-(स०स्त्री०) पाठशाला।
लिप्त-(स० वि०) भक्षित, खाया हुआ, पोता हुआ, मिला हुआ, अनुरक्त, तत्पर, सलग्न, पतली तह चढाया हुआ
लिप्तहस्त-(स०वि०) जिसका हाथ रुधिर से लथपथ हो।
लिप्ता-(स०स्त्री०) काल का एक परिमाण जो प्रायः एक मिनट के बराबर माना जाता है।
लिप्ताङ्ग-(स० वि०) जिसका शरीर सुगन्धित द्रव्यों से लेपा गया हो।
लिप्सा-(स० स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा, लालच।
लिप्सु-(सं० वि०) लाभ की इच्छा करने वाला।
लिप्सुता-(सं०स्त्री०) पाने की इच्छा।
लिफाफा-(अ० पु०) कागज की बनी हुई खोली या थैली जिसके भीतर पत्र रखकर भेजा जाता है, दिखौवा वस्तु, ऊपरी आडंबर, तड़क भड़क, ऊपरी आच्छादन, मुलम्मा, कलई, शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु।
लिबड़ी-(हिं० स्त्री०) कपड़ा लत्ता।
लिबरल-(अ० वि०) उदार नीति वाला, (पु०) इङ्गलैंड का एक राजनैतिक दल जिसकी नीति अधीन देशों की व्यवस्था में उदार रहती है।

लिबास-(फा० पु०) पहनने का कपड़ा, पोशाक ।
लिबि, लिबिकर-(स०) देखो लिपि लिपिकर ।
लिबी-(स०स्त्री०) लिपि, लिखावट ।
लिम्पट-(स०नपु०) लम्पट ।
लियाक़त(अ०स्त्री०) योग्यता, गुण, हुनर, सामर्थ्य, शील, शिष्टता, भद्रता ।
लिलाट, लिलार-(हि०पु०) देखो ललाट
लिलाही-(हिं०पु०) हाथ का बटा हुआ देशी सूत ।
लिवाना-(हिं० क्रि०) लेने का काम दूसरे से कराना, थमाना ।
लिवाल-(हि०पु०)खरीदने या लेने वाला।
लिवैया-(हिं० पु०) लेने वाला ।
लिसोड़ा-(हि० पु०) एक मझोले कद का वृक्ष, वेर के बराबर इसके फल गुच्छों में लगते हैं ।
लिस्ट्-(अ० स्त्री०) तालिका, फेहरिस्त ।
लिहाज़-(अ० पुं०) व्यवहार में किसी बात का ध्यान होना, कृपा दृष्टि, मुला-हजा, मुहब्बत, लज्जा, शर्म, हया, पक्ष-पात, तरफदारी ।
लिहाड़ा-(हि०वि०)नीच, खराब, निकम्मा
लिहाड़ी-(हिं०स्त्री०) उपहास, निन्दा ।
लिहाफ़-(अ०पु०) रूईदार मोटा वस्त्र जो रात में ओढ़ा जाता है, रजाई ।
लिहित-(हि०वि०) चाटता हुआ ।
लीक-(हि० स्त्री०) चिह्न, लकीर, रेखा, गाड़ी के पहिये से पड़ी हुई लकीर, रास्ते का निशान, दुरी, गिनती के लिए लगाया हुआ चिह्न, बंधी हुई मर्यादा, यश, प्रतिष्ठा, हद, प्रतिबन्ध, दस्तूर, बदनामी, भूरे रंग की एक चिड़िया, रीति, प्रथा, चाल, लीक करके-लकीर खींचकर, लीक खींचना-किसी विषय में दृढ़ होना, लोक पीटना-प्रचलित प्रथा के अनुसार चलना ।
लीक्षा-(स०स्त्री०) लिक्षा, लीख ।
लीख-(हिं० स्त्री०) जू का अण्डा, एक छोटा परिमाण ।
लीग्-(अ०स्त्री०) संघ, सभा ।
लीगल्-(अ० वि०) अदालती ।
लीगल् रिमेम्ब्रान्सर-(अ० पु०) वह अधिकारी जो सरकार के कानूनी कागज पत्र रखता है ।
लीचड़-(हि० वि०) जल्दी से न छोड़ने वाला, सिमटने वाला, सुस्त, काहिल ।
लीची-(हि० स्त्री०) एक सदाबहार वृक्ष जिसका फल खाने में मीठा होता है ।
लीझी-(हिं०स्त्री०) देह में मले हुए उब-टन के साथ छूटी हुई मैल की बत्ती, सीठी जो रस चूस लेने पर बची हो, (वि०) नीरस, निःसार ।
लीडर-(अ०पु०) मुखिया, नेता, किसी समाचार पत्र का सम्पादकीय अग्रलेख ।
लिडिङ् आर्टिकल्-(अ०पु०) सम्पाद-कीय अग्रलेख ।
लीथो-(अ०पु०) पत्थर का छापा जिस-पर हाथ से लिख कर अक्षर या चित्र छापे जाते हैं ।
लीथोग्राफर-(अ० पुं०) लीथो का काम करने वाला ।
लीथोग्राफी-(अ०स्त्री०)लीथो की छपाई ।
लीद-(हि० स्त्री०) घोड़े, गधे, ऊट, हाथी आदि पशुओं का मल ।
लीन-(स०वि०) तन्मय, मग्न, विचार में डूबा हुआ, तत्पर ।
लीनता-(स०स्त्री०) तत्परता ।
लीनो टाइप्-(अ० स्त्री०) एक प्रकार का छापे का यन्त्र जिसमें लाइन की लाइन एक साथ ढल जाती है ।
लीपना-(हिं०क्रि०) मिट्टी गोबर आदि की पतली तह चढाना, पोतना, लीप पोतकर बराबर करना-बिल-कुल नष्ट करना ।
लीफ्लेट्-(अ०पु०) छोटी पुस्तक, परचा
लीम-(हिं० पु०) एक प्रकार का चीड़ का पेड़ ।
लील-(हिं० वि०) नीला, नीले रंग का (पु०) नील ।
लीलना-(हि० क्रि०) पेट में उतारना, निगलना ।
लीलया-(स०क्रि०वि०) खेल में, सहज में, बिना परिश्रम के ।
लीला-(स०स्त्री०) क्रीड़ा, खेल विचित्र कार्य, प्रेम विनोद, नायिका का एक भाव, केवल मनोरंजन के लिये किया हुआ कार्य, कोई विचित्र कार्य, अव-तारों का अभिनय, चौबीस मात्राओं का एक छन्द बारह मात्राओं का एक छन्द, (हि०पु०) काले रंग का घोड़ा ।
लीला कमल-(स०नपु०) क्रीड़ा के लिये हाथ में लिया हुआ कमल ।
लीलाकर-(स०पुं०) एक प्रकार का छन्द
लीला कलह-(स०पु०) लीला का भाव ।
लीलाखेल-(स०वि०) खेलने वाला ।
लीलाखेली-(स० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं ।
लीलागार-(स० नपु०) खेल का घर ।
लीलागृह-(स० नपु०) खेल का घर ।
लीलागेह-(स० नपु०) क्रीड़ागार ।
लीलाङ्ग-(स०वि०) अति चंचल, सर्वदा खेलने वाला ।
लीलातनु-(स० स्त्री०) वह स्वांग जो खेल दिखलाने के लिये धारण की जाती है ।
लीला तामरस-(स० नपु०) देखो लीला कमल ।
लीलादग्ध-(स० वि०) जो अपनी इच्छा से भस्म हो गया हो ।
लीलाद्रि-(स० पु०) लीलाचल ।
लीलानटन-(स०नपु०) कौतुक का नाच ।
लीलापद्म-(स०नपु०) क्रीड़ा कमल ।
लीलापर्वत-(स० पु०) लीलाचल ।
लीला पुरुषोत्तम-(स०पु०) श्रीकृष्ण ।
लीलाब्ज-(स० नपु०) लीला कमल ।
लीलावधूत-(स० वि०) स्वच्छन्द विचरने वाला ।
लीलावापी-(स० स्त्री०) वह बावली जिसमें क्रीड़ा की जाय ।
लीला भरण-(स० नपु०) पद्म की माला से बना हुआ गहना ।
लीलामय-(स०वि०) क्रीड़ा के भावों से परिपूर्ण ।

लीलामात्र-(सं० अव्य०) खेलते खेलते।
लीलाम्बुज-(सं०नपुं०) लाल कमल।
लीलारविन्द-(सं० नपुं०) क्रीड़ा, खेल, लाल कमल।
लीलावज्र-(सं० नपुं०) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।
लीलावतार-(सं० पुं०) वह अवतार जिसमें विष्णु ने लीला दिखलाई थी।
लीला मनुष्य-(सं०पुं०) छद्मवेशी मनुष्य
लीलावती-(सं० स्त्री०) विलासवती, (स्त्री०) प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी का नाम जिन्होंने गणित की एक पुस्तक लिखी थी।
लीलावेश्म-(सं० नपुं०) लीलागृह।
लीलासाध्य-(सं० वि०) सहज में होने वाला।
लीलास्थल-(सं० पुं०) क्रीड़ा करने का स्थान।
लीली-(हिं० वि०) देखो नीली।
लीलोद्यान-(सं०नपुं०) देववन।
लीलोपवती-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह गुरु वर्ण होते हैं।
लीव्-(अं० स्त्री०) अवकाश, छुट्टी।
लीवर-(अं०पुं०) यकृत्, जिगर।
लीस्-(अं०पुं०) किसी जमीन या अन्य स्थावर सम्पत्ति का पट्टा।
लुंगाड़ा-(हिं०पुं०) नीच, लुच्चा।
लुंगी-(हिं० स्त्री०) कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा, तहमत (स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।
लुंज-(हिं० वि०) बिना हाथ पैर का, लगड़ा लूला, बिना पत्ते का वृक्ष, ठूंठ
लुंड, लुंडमुंड-(हिं०पुं०) बिना सिर का धड़, कबंध।
लुंडा-(हिं०वि०) जिसकी पूछ और पर झड़गये हो या उखाड़ लिये गये हैं, जिसकी पूछ पर बाल न हो (पुं०) लपेटे हुए सूत की पिंडी।
लुआठा-(हिं०पुं०) वह लकड़ी जिसका एक छोर जलता हो।
लुआठी-(हिं०स्त्री०) सुलगती हुई लकड़ी।
लुआब-(अं०पुं०) लसदार गूदा, लासा।
लुआबदार-(फा०वि०) लसदार, चिपचिपा
लुकंजन-(हिं०पुं०) देखो लोपाञ्जन।
लुक-(हिं०पुं०) कोई चमकदार रोगन, वार्निश, आग की लपट, लौ।
लुकठी-(हिं०स्त्री०) देखो लुआठी।
लुकना-(हिं०क्रि०) आड़ में छिप जाना।
लुकमा-(अं०पुं०) ग्रास, कौर।
लुकसाज-(फा० पुं०) सिझाया हुआ चमकीला चमड़ा।
लुकाट-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके आमड़े के बराबर खटमीठे फल होते हैं।
लुकाना-(हिं० क्रि०) आड़ में रखना, छिपाना।
लुकविद्या-(सं०स्त्री०) गुप्त विद्या।
लुक्कायित-(सं० वि०) लुकाया हुआ, छिपाया हुआ।
लुकेठा-(हिं०पुं०) देखो लुआठा।
लुख-(हिं० स्त्री०) सरपत की तरह की एक प्रकार की घास।
लुखिया-(हिं०स्त्री०) धूर्त स्त्री, वेश्या, रंडी।
लुगड़ा-(हिं०पुं०) देखो लूगड़ा।
लुगड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो लूगड़ी।
लुगदा-(हिं० पुं०) किसी गिली वस्तु का लोंदा
लुगदी-(हिं० स्त्री०) गीली वस्तु का छोटा गोला।
लुगरा-(हिं० पुं०) वस्त्र, कपड़ा, फटा पुराना वस्त्र, लत्ता।
लुगरी-(हिं०स्त्री०) फटी पुरानी धोती।
लुगाई-(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।
लुगी-(हिं० स्त्री०) पुराना वस्त्र।
लुग्गा-(हिं०पुं०) देखो लूगा, वस्त्र।
लुङ्ग-(सं०पुं०) बिजौरा नीबू का पेड़।
लुचकना-(हिं०क्रि०) झटके से खींचना।
लुचवाना-(हिं० क्रि०) नोचवाना, उखड़वाना।
लुचुई-(हिं० स्त्री०) मैदे के पतली पूरी, लूची।
लुच्चा-(हिं० वि०) दुराचारी, कुचाली खोटा, चाई, बदमाश, कमीना, नीच।
लुच्ची-(हिं०वि०स्त्री०) खोटी, बदमाश।
लुञ्चन-(सं०पुं०) उखाड़ना, नोचना, काटना, तराशना, चुटकी से पकड़ कर खींचना।
लुञ्चित-(सं० वि०) नोचा हुआ।
लुटत-(हिं० स्त्री०) लूट।
लुटकना-(हिं०क्रि०) देखो लटकना।
लुटना-(हिं० क्रि०) दूसरे से लूटा जाना, डाकुओं के हाथ धन खोना, सर्वस्व नाश होना।
लुटाना-(हिं० क्रि०) दूसरे को लूटने देना, डाकुओं को छीनने देना, बिना मूल्य के देना, नष्ट करना, बरबाद करना, व्यर्थ फेंकना या व्यय करना, बहुतायत से बांटना, अति दान करना।
लुटावना-(हिं०क्रि०) देखो लुटाना।
लुटिया-(हिं० स्त्री०) धातु का छोटा बरतन, छोटा लोटा।
लुटेरा-(हिं० पुं०) जबरदस्ती छीनने-वाला, डाकू।
लुट्टर-(हिं० स्त्री०) कान कटी हुई भेड़।
लुठन-(सं०नपुं०) घोड़े का भूमि पर लोटना।
लुठना-(हिं० क्रि०) भूमि पर लोटना, लुढ़कना।
लुठाना-(हिं०क्रि०) भूमि पर लोटना।
लुठित-(सं० वि०) भूमि पर बारबार लेटता हुआ।
लुडकना-(हिं०क्रि०) देखो लुढ़कना।
लुड़काना-(हिं० क्रि०) देखो लुढ़काना।
लुडकी-(हिं०स्त्री०) देखो लुढ़की।
लुड़खुड़ाना-(हिं० क्रि०) देखो लड़-खड़ाना।
लुढ़कना-(हिं०क्रि०) गेंद की तरह भूमि पर चक्कर खाना, ढुलकना, गिरकर नीचे ऊपर होते हुए गमन करना।
लुढ़काना-(हिं० क्रि०) भूमि पर इस प्रकार चलाना कि नीचे ऊपर होता हुआ कुछ दूर तक बढ़ता जाय।
लुढ़ना-(हिं० क्रि०) देखो लुढ़कना।
लुढ़ाना-(हिं०क्रि०) देखो लुढ़काना।
लुढ़ियाना-(हिं० क्रि०) गोल बत्ती की

तरह की सिलाई करना।
लुण्टक-(स०पु०) एक प्रकार का साग।
लुण्टा-(स०स्त्री०) लूटना, चुराना।
लुण्टाक-(स०पु०) तस्कर, चोर।
लुण्टाकी-(स०स्त्री०) चोर स्त्री।
लुण्टक-(सं०स्त्री०) लुटेरा।
लुण्ठन-(स०नपु०) लूटना, चुराना।
लुण्ठा-(स०स्त्री०) लूटना।
लुण्ठाक-(स० पु०) चोर, ठग, कौवा
लुण्ठि-(स०स्त्री०) लूटपाट, चोरी।
लुण्ड-(स० पुं०) चोर,
लुण्ड मुण्ड-(स०वि०) बिना हाथ पैर का लगड़ा।
लुण्डिका-(सं० स्त्री०) लपेटे हुए सूत की पिंडी या गोली।
लुण्डी-(स० स्त्री०) लपेटे हुए सूत की गोली
लुतरा-(हि० वि०) चुगलखोर, नटखट,
लुतरी-(हिं०वि० स्त्री०) चुगलखोर स्त्री।
लुत्थ-(हिं०स्त्री०) देखो लोथ।
लुत्फ़-(अ० पु०) कृपा, मेहरबानी, उत्तमता, खूबी, रोचकता, आनन्द, मज़ा, स्वाद, जायका।
लुदरा-(हि० पु०) एक प्रकार का धान।
लुनना-(हिं० क्रि०) खेत की तैयार फस्ल को काटना, हटाना, दूर करना।
लुनाई-(हिं०स्त्री०) लावण्य, खूबसूरती
लुनेरा-(हिं० पु०) खेत की फस्ल काटने वाला।
लुपना-(हि० क्रि०) छिपाना।
लुप्त-(स०वि०) अन्तर्हित, छिपा हुआ, अदृश्य, गायब, नष्ट।
लुप्तोपम-(स० वि०) उपमाशून्य, जिसमें उपमा न हो।
लुप्तोपमा-(स०स्त्री०) वह उपमा अलकार जिसमें कोई अग लुप्त हो।
लुबरी-(हि०स्त्री०) किसी तरल पदार्थ के नीचे की बैठी हुई मैल, तलछट।
लुबुध-(हि०वि०) देखो लुब्ध।
लुबुधना-(हि० क्रि०) लुब्ध होना या करना।
लुबुधा-(हिं० वि०) लोभी, लालची।
लुब्ध-(स०वि०) आकाक्षा युक्त, लोभ युक्त, मोहित, तन मन की सुध भूला हुआ (पु०) व्याध, बहेलिया।
लुब्धक-(स० पु०) व्याध, बहेलिया, लम्पट, उत्तरी गोलार्ध का एक बहुत चमकीला तारा।
लुब्धता-(स० स्त्री०) लुब्ध का भाव या धर्म, लोभ।
लुब्धना-(हिं०क्रि०) देखो लुबुधना।
लुब्धापति-(स०स्त्री०) वह प्रौढा नायिका जो पति तथा कुल के बडे लोगों से लज्जा करती हो।
लुब्बलुबाब-(अ०पु०) तत्व,सार, साराश
लुभाना-(हिं०क्रि०) लुब्ध होना, मोह में पड़ना, तन मन की सुध भूलना, लालच में पड़ना, मोहित करना, मोह में डालना, ललचाना, रिझाना।
लुभित-(स०त्रि०)विमोहित,लुभाया हुआ
लुम्बिका-(स०स्त्री०)एक प्रकार का बाजा
लुम्बिनी (स० स्त्री०) कपिलवस्तु के पास का एक उपवन जहा पर गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।
लुरकी, लुरकी-(हिं० स्त्री०) कान में पहरने की छोटी बाली, मुरकी।
लुरना-(हिं०क्रि०) लहराना, झूलना, झुक पड़ना, प्रवृत्त होना।
लुरी-(हिं०स्त्री०)हाल की ब्याई हुई गाय
लुलन-(सं०पु०) आन्दोलित होना,झूलना
लुलना-(हिं०क्रि०) देखो लुरना।
लुलाप-(स०पु०) महिष, भैंसा।
लुलित-(स०वि०)लटकता या झूलता हुआ
लुवार-(हि०पु०) तेज़ गरम हवा, लू।
लुशई-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की चाय
लुहना-(हि०क्रि०) देखो लुभाना।
लुहार-(हि० पु०) लोहे का काम करने वाला, लोहे की चीज़ बनाने वाला, वह जाति जो लोहे की चीज़ बनाती है
लुहारिन्-(हि० स्त्री०) लुहार की स्त्री, लोहाइन।
लुहारी-(हिं०स्त्री०) लुहार जाति की स्त्री, लोहे की वस्तु बनाने का काम।
लू-(हिं०स्त्री०) ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा, गरम हवा का झोंका, लू लगना या मारना-ऐसी गरम हवा लगने से ज्वर उत्पन्न होना।
लूक-(हिं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला, आग की लपट, लुआठी, लुत्ती, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा, उल्का, टूटता तारा, लूक लगाना-आग लगाना।
लूकना-(हिं० क्रि०) आग लगाना, जलाना।
लूका-(हि०पु०) अग्नि की ज्वाला या लपट, लुआठी, मछली फसाने की एक प्रकार की चाल।
लूकी-(हिं०स्त्री०) स्फुलिंग, चिनगारी।
लूक्ष-(स०वि०) रूक्ष, रूखा।
लूखा-(हिं० वि०) रूखा, रूक्ष।
लूगा-(हि० पु०) वस्त्र, कपड़ा, धोती।
लूट-(हिं० स्त्री०) किसी का धन जबरदस्ती छिना जाना, डकैती, लूटने से मिला हुआ माल।
लूटक-(हि० पु०) लूटने वाला, डाकू, लुटेरा, शोभा में बढ जाने वाला।
लूटखूट-(हिं० स्त्री०) डाका, लूटमार।
लूटना-(हिं०क्रि०) ज़बरदस्ती छीनना, नष्ट करना, बरबाद करना, धोखे से या अन्याय पूर्वक किसी धन हर लेना, बहुत अधिक मूल्य लेना, ठगना, मोहित करना।
लूटमार, लूटपाट-(हि० पु०) मारपीट कर किसी का धन छीन लेना।
लूटि-(हि० स्त्री०) देखो लूट।
लूता-(स० स्त्री०) मकड़ी (हि० पुं०) लुआठा।
लूतातन्तु-(हि०पु०) मकडे का जाला
लूतामर्कट-(स० पु०) एक प्रकार का बन्दर।
लूतिका-(स० स्त्री०) मकड़ी।
लूती-(स०स्त्री०) लुआठी।
लूनना-(हि०क्रि०) देखो लुनना।
लूम-(हिं०पु०,सपूर्ण जाति का एक राग। (अ० पु०) कपड़ा बुनने का करघा।
लूमना-(हिं० क्रि०) लटकना।
लूमर-(हिं०वि०) युवा, जवान, सयाना।

लूमविष–(सं० पु०) बिच्छू।
लूरना–(हिं० क्रि०) देखो लुरना।
लूला–(हिं० वि०) जिसका हाथ कट गया हो या बेकाम हो गया हो, लुञ्जा।
लूलू–(हिं०स्त्री०) मूर्ख, बेवकूफ।
लूसन–(हिं० पु०) एक प्रकार का फलदार वृक्ष।
लेंड़–(हिं०पु०) बधी हुई मल की बत्ती, बंधा हुआ मल।
लेंड़ी–(हिं०स्त्री०) बकरी, ऊट आदि की मेंगनी।
लेंडौरी–(हिं० स्त्री०) चौपायों को दाना खिलाने का बरतन।
लेंस्–(अ०पु०) शीशे का पारदर्शक ताल
लेंहड़, लेंहड़ा–(हिं०पु०)भेड़ आदि का झुड
ले–(हिं० अव्य०) आरंभ होकर, शुरू होकर, तक, पर्यन्त।
लेई–(हिं० स्त्री०) अवलेह, गाढा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ, लपसी, पानी में घोलकर औटाया हुआ मैदा जो कागज आदि को चिपकाने के काम में आता है, सुरखी चूना मिलाकर गाढा साना हुआ मसाला जिससे ईंट जोड़ी जाती है।
लेक्चर–(अ०पु०) व्याख्यान, वक्तृता
लेक्चरबाजी–(फ़ा० स्त्री०) खूब व्याख्यान देने की क्रिया।
लेक्चरर्–(अ० पु०) व्याख्यानदाता।
लेख–(सं०पु०) लिपि, लिखे हुए अक्षर, लिखी हुई बात, लिखाई, लिखावट, लेखा, हिसाब किताब, (पु०) देवता। (हिं०स्त्री०) पक्की बात, लकीर।
लेखक–(सं० पु०) लेखनकर्ता, लिखने वाला, ग्रन्थकार, किसी विषय पर अपना विचार प्रकट करने वाला।
लेखन–(सं० नपु०) लिखने का कार्य, लिखने की कला या विद्या, चित्र बनाना, हिसाब करना (पु०) काश,खासी
लेखना–(हिं० क्रि०) लिखना, गिनना, चित्र बनाना, विचार करना, सोचना समझना, लेखना जोखना–ठीक अन्दाज़ लगाना।
लेखनी–(सं०स्त्री०) लिखने का साधन, कलम।
लेखनीय–(सं० वि०) लिखने योग्य।
लेखनपत्र–(सं० नपु०) लिखा हुआ कागज, दस्तावेज।
लेखपत्रिका–(सं० स्त्री०) लिखे हुए आवश्यक कागज पत्र।
लेखप्रणाली–(सं० स्त्री०) लिखने का ढंग।
लेखर्षण–(सं० पु०) देवताओं में श्रेष्ठ इन्द्र।
लेखशैली–(सं० स्त्री०) देखो लेखप्रणाली
लेखहार–(सं० पु०) पत्रवाहक, चिट्ठीपत्री लेजाने वाला।
लेखहारक, लेखहारी–(सं०पु०) चिट्ठी ले जाने वाला।
लेखा–(सं०स्त्री०) लिखावट, रेखा, लकीर (हिं० पु०) गणना, हिसाब, किताब, गिनती, ठीक अन्दाज़, कूत, अनुमान, विचार, आय व्यय आदि का विवरण, **लेखा डेवढ करना**–हिसाब बन्द करना या चुकती लिखना।
लेखा बही–(हिं० स्त्री०) वह बही जिसमें रोकड के लेन देन का हिसाब लिखा जाता है।
लेखिका–(सं०स्त्री०) पुस्तक लिखने वाली
लेखित–(सं० वि०) लिखा या लिखवाया हुआ।
लेख्य–(सं० वि०) लेखनीय, लिखने लायक, लिखा जाने योग्य, (पु०) लेख
लेख्यगत–(सं०वि०) लिखा हुआ, चिह्न किया हुआ, चित्र खींचा हुआ।
लेख्यपत्र–(सं० पु०) ताल वृक्ष, ताड़ का पेड़ (नपु०) लेखनीय पत्र।
लेख्यमय–(सं०वि०) लिखा हुआ।
लेख्यस्थान–(सं० नपु०) वह स्थान जहाँ पर लिखने पढ़ने का काम होता है, आफिस।
लेख्यारूढ़–(सं० वि०) जिसके विषय में लिखा पढी होती हो, दस्तावेज़ी।
लेज़म–(फ़ा० स्त्री०) एक प्रकार की कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास किया जाता है, लोहे की जंजीर लगी हुई कमान जिससे अनेक प्रकार की कसरत की जाती है।
लेजिस्लेटिव्–(अ० वि०) व्यवस्था या कानून संबंधी।
लेजिस् लेटिव् असेम्बली–(अ०स्त्री०) व्यवस्थापक परिषद्।
लेजिस्लेटिव् काउन्सिल्–(अ०स्त्री०) व्यवस्थापक सभा।
लेजुर, लेजुरी–(हिं० स्त्री०) डोरी, रस्सी, कुँवें से पानी खींचने की रस्सी।
लेट्–(हिं० स्त्री०) सुरखी, चूना और कंकड़ पीटी हुई छत (अं० वि०)-ठीक समय के बाद का, जिसको देर हुई हो।
लेटना–(हिं० क्रि०) हाथ पैर तथा सपूर्ण शरीर भूमि या बिस्तर पर पड़ा रखना, पौढ़ना, किसी वस्तु का बगल की ओर झुक कर भूमि पर गिर जाना, मर जाना।
लेट् फ़ी–(अ०स्त्री०)वह फीस जो निश्चित समय के बाद डाकखाने में किसी चीज को दाखिल करने में देनी पड़ती है।
लेटर–(अ०पु०) पत्र, चिट्ठी।
लेटर पेटेन्ट–(अ० पु०) वह राजकीय आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी को पद सत्व आदि देने या कोई संस्था स्थापित करने की आज्ञा मिलती है।
लेटर बाक्स्–(अ० पु०) डाकखाने की वह संदूक जिसमें कहीं भेजने के लिये चिट्ठियाँ आदि छोड़ी जाती हैं।
लेटा–(हिं०पु०) गल्ले की बाज़ार, मंडी
लेटाना–(हिं० क्री०) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।
लेड्–(अ०पु०) सीसा नामक धातु छापेखाने की अक्षरों की पंक्तियों के बीच में रखने की पटरी।
लेडी–(अ० स्त्री०) भले घर की स्त्री, महिला लार्ड या सरदार की पत्नि।
लेथो–(हिं०पु०) देखो लीथो।
लेद–(हिं०पु०) फागुन में गाये जाने की एक प्रकार की गीत, (अ०पु०) लोहा

खरादने या पेंच आदि बनाने का यन्त्र

लेदी-(हिं० स्त्री०) जलाशय के किनारे रहने वाली एक प्रकार की चिड़िया।

लेन-(हिं०पु०) लेने की क्रिया या भाव, लहना।

लेनदार-(फा० पु०) जिसका कुछ बाकी हो, महाजन।

लेनदेन-(हिं० पु०) लेने और देने का व्यवहार, महाजनी।

लेनहार-(हिं० वि०) लेने वाला, लहनेदार।

लेना-(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, ग्रहण करना, थामना, काट कर अलगाना, धारण करना, स्वीकार करना, सभोग करना, सचय करना, सेवन करना, लज्जित करना, थामना, किसी कार्य का भार ग्रहण करना, पहुँचना, अगवानी करना, कर्ज़ लेना, जीतना, भागते हुए को पकड़ना, मोल लेना, कार्य समाप्त करना, अपने अधिकार में करना आड़े हाथ लेना-मर्मवेधी बात कह कर लज्जित करना, लेने के देने पड़ना-लाभ के बदले हानि होना, ले डालना-हराना,, ले दे करना-हुज्जत तकरार करना, लेना एक न देना दो-किसी प्रकार का ससर्ग न रखना, ले मरना-अपने साथ दूसरे को नाश करना

लेप-(स० पु०) लेई के समान कोई गाढ़ी वस्तु जो किसी वस्तु के ऊपर फैला कर चढाई जाती है, उबटन।

लेपक-(स०वि०)लीपने पोतने वाला।

लेपना-(हिं०क्रि०) किसी गाढ़ी गीली वस्तु की तरह चढ़ाना, फैलाकर पोतना

लेपालक-(हिं० पुं०) दत्तक पुत्र, गोद लिया हुआ पुत्र।

लेपी-(स० पु०) देखो लेपक।

लेप्य-(सं० वि०) लेपनीय, लीपने पोतने योग्य।

लेप्यनारी-(स० स्त्री०) पत्थर का मिट्टी की बनी हुई स्त्री की मूर्ति।

लेप्यमयी-(स० स्त्री०) कठपुतली।

लेप्य स्त्री-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसके अग पर चन्दन आदि का लेप लगा हो

लेफ्टिनेन्ट्-(अ० पु०) सेना का एक अध्यक्ष जो कप्तान के आधीन होता है, कोई सहायक कर्मचारी।

लेबरना-(हिं० क्रि०) ताने में माड़ी लगाना।

लेबुल्-(अ० पु०) नाम पता विधि दाम आदि की सूचक चिट जो वस्तुओं पर चिपका दी जाती है।

लेबोरेटरी-(अ० स्त्री०) प्रयोगशाला, रसायनिक पदार्थ आदि निर्माण करने का स्थान।

लेमनेड्-(अ० पु०) गेस मिला हुआ नीबू का शर्बत।

लेर-(हिं० स्त्री०) लहर।

लेरुवा-(हिं० पु०) गाय का बछड़ा।

लेलिहान-(स० पु०) शिव, महादेव, सर्प, (वि०) वारबार चाटने वाला।

लेव-(हिं० पु०) लेप, कहगिल, आच पर चढ़ाने के पहले पात्रों की पेंदी में मिट्टी का लेप करना, लेवा।

लेवा-(हिं० पु०) मिट्टी का गिलावा, कहगिल, लेप, गाय भैंस का थन (वि०) लेने वाला।

लेवार-(हिं०पु०) लेव, गिलावा।

लेवाल-(हिं०पु०) लेने या खरीदने वाला

लेश-(स० पु०) कण, अणु, सूक्ष्मता, छोटाई, चिह्न, निशान, ससर्ग, लगाव, वह अलकार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन में एक ही अश में रोचकता आती है, एक प्रकार का गाना (वि०) अल्प, थोड़ा।

लेश्या-(स०स्त्री०) आलोक, दीप्ति, जैन धर्म के अनुसार जीव की वह अवस्था जिसके कारण से कर्म जीव को बाँधता है।

लेषना-(हिं०क्रि०) देखो लखना, लिखना

लेस्-(अ० स्त्री०) कलाबत्तू की किनारी, गोटा, बेल, दीवार पर चढाने का मिट्टी का गिलावा, चेप।

लेसना-(हिं०क्रि०) जलाना, दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना, चिपकाना, सटाना, लेस लगाना, पोतना, चुगली खाना, विवाद उत्पन्न करने के लिये किसीको उत्तेजित करना।

लेह-(स० पु०) आहार, भोजन, रस, अवलेह।

लेहन-(स०नपु०) जिह्वा से स्वाद लेना, चाटना।

लेहना-(हिं० पु०) खेत में कटी हुई फस्ल का वह अश जो मजदूरों को दिया जाता है, देखो लहना।

लेहसुर-(हिं० पु०) कुम्हारों का मिट्टी मलने का यन्त्र।

लेहाज़ा-(अ०क्रि०वि०) इस कारण से, इस लिये।

लेहाड़ा-(हिं०वि०) देखो लिहाड़ा।

लेहाड़ापन-(हिं०पु०) देखो लिहाड़ापन

लेहाड़ी-(हिं०स्त्री०) अप्रतिष्ठा, अपमान।

लेहाफ-(अ०पु०) देखो लिहाफ।

लेह्य-(स० नपु०) अमृत, चाटने का पदार्थ (वि०) चाटने के योग्य।

लैंडो-(अ०स्त्री०) एक प्रकार की टपदार घोड़ागाड़ी।

लैंप-(अ०पु०) दीपक, चिराग।

लै-(हिं० अव्य०) पर्यन्त, तक।

लैङ्गिक-(स० वि०) लिंग या प्रतिमूर्ति बनाने वाला (पु०) वैशेषिक दर्शन के अनुसार अनुमान प्रमाण।

लैटिन्-इटली देश की प्राचीन भाषा।

लैन्-(अ० स्त्री०) सीधी लकीर, पक्ति, कतार, सीमा की लकीर, पैदल सिपाहियो की सेना, सिपाहियों के रहने का स्थान।

लैया-(हिं० पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।

लैवेन्डर्-(अ० पु०) एक सुगन्धित तरल पदार्थ।

लैसस्-(अ० पु०) वह प्रमाणपत्र जिसके द्वारा किसी मनुष्य को कोई विशेष अधिकार दिया जाता है, सनद।

लैस-(अ०वि०) हथियार वर्दी आदि से सुसज्जित (पु०) एक प्रकार का वाण।

कपड़े पर लगाने का फीता।

लो-(हि० अव्य०) तक।

लोड़ी-(हिं० स्त्री०) कान का लोलक।

लोदा-(हिं० पु०) किसी गीले पदार्थ का बँधा हुआ गोला।

लो-(हि० अव्य०) इसका प्रयोग श्रोता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिये होता है।

लोइ-(हि०पु०) लोग, जन, दीप्ति, प्रभा।

लोई-(हि० स्त्री०) गूँधे हुए आटे की गोली जिसको वेल कर रोटी बनाई जाती है, एक प्रकार का कम्बल।

लोइन-(हि० पु०) लावण्य।

लोकंजन-(हिं० पु०) लोपाञ्जन।

लोकंदा-(हि० पु०)-विवाह के बाद कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना।

लोकंदी-(हि० स्त्री०) कन्या के पहले पहल ससुराल जाते समय भेजी हुई दासी

लोक-(स० पु०) भुवन, पुराण के अनुसार लोक सात हैं यथा-सत्‌लोक, भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक, और सत्य लोक, वैद्यक के अनुसार लोक के दो भेद हैं-स्थावर और जंगम-वृक्ष, लता, तृण आदि स्थावर तथा पशु, पक्षी, कीट तथा मनुष्य आदि जंगम हैं, प्राणी, जन, आदमी, प्रदेश, दिशा, यश, कीर्ति, निवास स्थान, संसार।

लोक कण्टक-(स० पु०) दुष्ट मनुष्य।

लोक कथा-(सं० स्त्री०) जनश्रुति, अफवाह।

लोक कर्ता-(स० पु०, शिव, विष्णु।

लोक कम्प-(स० त्रि०) मनुष्यों को डराने वाला।

लोक कल्प-(स० त्रि०) संसार की स्थिति के सदृश।

लोक कान्त-(स०वि०) लोक प्रिय।

लोककार-(स०पु०) लोक कर्ता।

लोककृत्-(स० वि०) सृष्टिकारी।

लोककृत्नु-(स० वि०) लोक कृत्।

लोकक्षित्-(स०वि०) आकाश गामी।

लोक गति-(स०स्त्री०) जीवन यात्रा।

लोक गाथा-(स० स्त्री०) जनश्रुति, अफवाह।

लोक गुरु-(स०पु०) जगद्‌गुरु।

लोक चक्षु-(स० नपु०) लोगों के चक्षु, सूर्य।

लोक चर-(स०त्रि०) संसार में घूमने वाला।

लोक चरित्र-(स० नपु०) मनुष्य के जीवन का इतिहास।

लोक जननी-(स०स्त्री०) लक्ष्मी।

लोक जित्-(स० वि०) संसार को जीतने वाले।

लोकज्ञ-(स० वि०) मानव तत्वदर्शी।

लोक ज्येष्ठ-(सं०पु०) बुद्ध देव।

लोक तत्व-(स०नपु०) मानव तत्व।

लोक तन्त्र-(स० नपुं०) संसार का इतिहास।

लोकतः-(स० अव्य०) पहले के समान

लोक तुषार-(स०पु०) कर्पूर, कपूर।

लोकत्रय-(स० नपु०) तीनों लोक यथा-स्वर्ग, मर्त्य और रसातल।

लोक दम्भक-(स०पुं०) ठक, वञ्चक।

लोक द्वार-(स०नपु०) स्वर्ग का द्वार।

लोक धाता-(स०पु०) शिव, महादेव।

लोक धारिणी-(स० स्त्री०) पृथ्वी।

लोक धुनि-(स०स्त्री०) जनश्रुति, अफवाह

लोकना-(हिं० क्रि०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथ से पकड़ लेना, रास्ते में ही ले लेना।

लोक नाथ-(स०पु०) विष्णु, शिव, पारा

लोक नेता-(स०पु०) समाज पति, शिव।

लोकप-(स०पु०) देखो लोकपति।

लोकप-(स०पु०) लोकपाल, ब्रह्मा, राजा।

लोकपति-(स०पु०) विष्णु, लोकपाल।

लोकपथ-(स० पु०) साधारण पथ या उपाय।

लोक पद्धति-(स०स्त्री०) सामान्य रीति।

लोकपाल-(स०पु०) दिक्‌पाल, पुराण के अनुसार आठ दिशाओं के आठ लोक पाल हैं यथा पूर्व दिशाका इन्द्र, दक्षिण पूर्व का अग्नि, दक्षिण का यम, दक्षिण पश्चिम का सूर्य, पश्चिमका वरुण, उत्तर पश्चिमका वायु, उत्तर का कुबेर तथा उत्तरपूर्वका सोम है, शिव, विष्णु, राजा।

लोकपालता-(स० स्त्री०) लोकपाल का धर्म।

लोकपितामह-(स० पु०) ब्रह्मा।

लोकपूजित-(स०वि०) जन समाजमें मान्य।

लोकप्रकाशन, लोकप्रकाशक-(स० पु०) सूर्य।

लोकप्रत्यय-(स० पु०) जो संसार में सर्वत्र मिलता हो।

लोकप्रसिद्ध-(सं० स्त्री०) यश, ख्याति।

लोकप्रवाद-(स० पु०) जनप्रवाद, जनश्रुति।

लोकबन्धु-(स०स्त्री०) शिव, सूर्य।

लोकबान्धव-(स०पु०) सबका मित्र, सूर्य।

लोकभर्ता-(स०पु०) जन साधारण का अन्नदाता।

लोकभाज्-(स०वि०) स्थानाधिकारी।

लोकभावन-(स० वि०) संसार का कल्याण करने वाला।

लोकमय-(स० त्रि०) जगदाधार।

लोकमर्यादा-(सं०स्त्री०) किसी व्यक्ति का विशेष सम्मान।

लोकमाता-(स० स्त्री०) लोक की जननी, लक्ष्मी।

लोकमार्ग-(स० पु०) प्रचलित रीति, साधारण पन्थ।

लोकयात्रा-(स० स्त्री०) संसारयात्रा, व्यापार।

लोकरक्षक-(स०पु०) नृप, राजा।

लोकरञ्जन-(स० नपु०) जनता को प्रसन्न करने वाला।

लोकरव-(स०पु०) जनश्रुति, अफवाह।

लोकरा-(हिं०पु०) चिथड़ा।

लोकल्-(अ०वि०) प्रान्तिक, प्रादेशिक, स्थानीय।

लोकलीक-(हि० स्त्री०) लोक मर्यादा।

लोकलोचन-(स० पु०) सूर्य।

लोकवचन-(स० नपु०) जनप्रवाद, अफवाह।

लोकवत्-(स०वि०) लोक सदृश।

लोकवर्तन-(सं०नपु०) मनुष्य चरित्र।
लोकवाद-(सं०पु०) जनश्रुति, अफवाह।
लोकवार्ता-(सं०स्त्री०) जनरव, अफवाह।
लोकवाह्य-(सं० वि०) लोकनिन्दित, आचार भ्रष्ट।
लोकविक्रुष्ट-(सं० वि०) लोक निन्दित।
लोकविज्ञात-(सं०वि०) प्रसिद्ध, विख्यात
लोक विधि(सं०पु०) सृष्टिकर्ता।
लोकविन्दु-(सं०वि०) मुक्ति या स्वाधीनता प्राप्त।
लोकविश्रुत-(सं० वि०) संसार भर में विख्यात।
लोकविश्रुति-(सं० स्त्री०) जनश्रुति, अफवाह।
लोकविसर्ग-(सं० पु०) जगत् सृष्टि।
लोकविस्तार-(सं० पु०)संसार में प्रसिद्ध।
लोकवृत्त-(सं० नपुं०) लौकिक आचार, थोड़ी बात चीत।
लोकवृत्तान्त-(सं० पु०) मनुष्य चरित्र, इतिहास।
लोकव्यवहार-(सं० पु०) सर्व साधारण में प्रचलित रीति।
लोकव्रत-(सं० नपु०) मनुष्य समाज की प्रचलित रीति।
लोकश्रुति-(सं० स्त्री० जनश्रुति, अफवाह
लोकसंक्षय-(सं०पु०) संसार का नाश।
लोकसंसृति-(सं० स्त्री०) अभाग्य।
लोकसंकर-(सं० पुं०) समाज में झूठा व्यवहार करने वाला।
लोकसंग्रह-(सं० पुं०) मनुष्यों की भीड़, सम्पूर्ण संसार।
लोकसाक्षी-(सं० पुं०) ब्रह्म, अग्नि,सूर्य।
लोकसात्-(सं० अव्य०) सर्व सामान्य की भलाई के वास्ते।
लोकसात्कृत-(सं०वि०) जनता के कल्याण के लिये किया हुआ।
लोकसाधक-(सं० वि०) संसार की सृष्टि करने वाला।
लोकसिद्ध-(सं०वि०) प्रचलित, प्रसिद्ध।
लोकसुन्दर-(सं० वि०) जिसको सामान्य लोग अच्छा कहते हों।
लोकस्कन्द-(सं०पु०) तमालवृक्ष।
लोकस्थल-(सं०नपु०) दैनिक घटना।
लोकस्थिति-(सं०स्त्री०) प्रचलित नियम।
लोकहॅंदी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की हल्दी।
लोकहार-(हिं० वि०) संसार को नष्ट करने वाला।
लोकहित-(सं०नपु०)संसार की भलाई।
लोकहिता-(सं०स्त्री०) कुलथी।
लोकाकाश-(सं०पु०)शून्य स्थान,आकाश।
लोकाचार-(सं०पु०) लोक व्यवहार, जन समूह का आचार।
लोकाट-(हिं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके बेर के बराबर मीठे फल होते हैं।
लोकातिग-(सं०वि०)अद्भुत,असामान्य।
लोकातिशय-(सं० पु०) दैनिक प्रथा के बाहर।
लोकात्मा-(सं० पु०) जगत् के आत्मा, विष्णु।
लोकादि-(सं० पु०) संसार के आदि कर्ता, ब्रह्मा।
लोकाधिप-(सं०पुं०) लोकपाल, नरपति।
लोकाधिपति-(सं०पु०)लोकपाल, देवता।
लोकान्त-(हिं०क्रि०) फेंकना, उछालना।
लोकानुग्रह-(सं०पुं०) संसार की भलाई।
लोकानुराग-(सं०पुं०) संसार का प्रेम।
लोकान्तर-(सं०नपु०) परलोक।
लोकापवाद-(सं० पु०) लोकनिन्दा जनापवाद।
लोकाभ्युदय-(सं०पु०)जनता की उन्नति।
लोकायत-(सं०नपु०) चार्वाक शास्त्र, वह मनुष्य जो इस लोक के अतिरिक्त दूसरे लोक को न मानता हो, एक छन्द का नाम जिसको दुर्मिल भी कहते हैं।
लोकावेक्षण-(सं०नपु०)संसार की भलाई चाहना।
लोकेश-(सं० पुं०) ब्रह्मा, लोकपाल, इन्द्र, पारा।
लोकेश्वर-(सं०पु०) लोकपाल।
लोकैषणा-(सं०स्त्री०) स्वर्ग प्राप्त करने की इच्छा।
लोकोक्ति-(सं०स्त्री०) कहावत, मसल, वह अलंकार जिसमें किसी लोकोक्ति का प्रयोग कर के कुछ चमत्कार दिखलाया जाता है।
लोकोत्तर-(सं०वि०) अद्भुत, विलक्षण।
लोखर-(हिं० पु०) नाई, बढ़ई लोहार आदि के औजार।
लोग-(हिं०पु०) जन, मनुष्य, आदमी।
लोगाई-(हिं०स्त्री०) देखो लुगाई, स्त्री।
लोच-(सं०नपु०) अश्रु, आंसू, (हिं०पु०) लचक, कोमलता, अभिलाषा, अच्छा ढंग।
लोचक-(सं० पु०) मांसपिण्ड, आँख की पुतली, काजल, केला, माथे पर पहरने का एक आभूषण, निर्मोक, केंचुली।
लोचन-(सं० नपु०) आंख, नेत्र, जीरा, झरोखा।
लोचन पथ-(सं०पु०) दृष्टि मार्ग।
लोचनहित-(सं० वि०) नेत्रों के लिये लाभदायक।
लोचनहिता-(सं० स्त्री०) तूतिया।
लोचना-(हिं० क्रि०) प्रकाशित करना, अभिलाषा करना, शोभित होना, रुचि उत्पन्न करना, ललचना, तरसना।
लोचशिर-(सं० नपु०) अजमोदा।
लोचून-(हिं०पु०) लोहे का चूर।
लोजग-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की नाव।
लोट-(हिं० स्त्री०) लोटने की क्रिया या भाव, (पु०) उतार, घाट, देखो नोट।
लोटन-(हिं० पु०) एक प्रकार का हल, एक प्रकार का लोटने वाला कबूतर, छोटी छोटी कँकड़िया जो हवा के चलने से इधर उधर लुढ़कती हैं।
लोटना-(हिं० क्रि०) लुढ़कना, विश्राम करना, लेटना, चकित होना, कष्ट से करवट बदलना, तड़पना,लोट जाना-मूर्छित होना।
लोटपटा-(हिं०पुं०) विवाह में वर और वधू के पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति, उलट फेर, दाँव का इधर से उधर हो जाना।
लोटा-(हिं०पु०) पानी आदि रखने का धातु का बना हुआ छोटा पात्र।
लोटिया-(हिं०स्त्री०) छोटा लोटा।

लोटी-(हिं० स्त्री०) छोटा लोटा।
लोड़न-(सं० नपुं०) इधर उधर चलना, लुढ़कना।
लोड़ना-(हिं० क्रि०) आवश्यकता होना, जरूरत होना।
लोढना-(हिं० क्रि०) तोड़ना, चुनना।
लोढा-(हिं० पुं०) सिल पर किसी वस्तु को पीसने का पत्थर का गोल लम्बोतरा टुकड़ा, बट्टा, लोढा डालना-बराबर करना।
लोढिया-(हिं० स्त्री०) छोटा लोढा, बट्टा।
लोत-(सं० पुं०) चोरी का धन, चिह्न, अश्रु, आंसू।
लोत्र-(सं० नपुं०) नेत्रजल, आंसू।
लोथ-(हिं० स्त्री०) मृत शरीर, लाश, लोथ गिरना-मारा जाना, लोथ डालना-हत्या करना।
लोथड़ा-(हिं० पुं०) मांस का बड़ा पिण्ड जिसमें हड्डी न हो।
लोदी-दिल्ली के एक मुसलमान राजवंश का नाम।
लोध-(सं० पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और लकड़ी औषधियों में प्रयोग होती है।
लोधरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का तांबा जो जापान से आता है।
लोध्र-(सं० पुं०) देखो लोध।
लोध्रतिलक-(सं० पुं०) एक अलंकार जो उपमा का एक भेद है।
लोध्रपुष्प-(सं० पुं०) महुए का वृक्ष।
लोध्रपुष्पिणी-(सं० स्त्री०) छोटे धव का फूल।
लोन-(हिं० पुं०) लवण, नमक, लावण्य, सुन्दरता, किसी का लोन खाना-किसी के दिये हुए अन्न पर निर्वाह करना, किसी का लोन निकलना-विश्वासघात का फल भोगना, लोन न मानना-उपकार न मानना, जले या कटे पर लोन लगाना-कष्ट पर कष्ट देना, लोन सलगना-अप्रिय मालूम होना।
लोना-(हिं० वि०) नमकीन, सुन्दर, सलोना (पुं०) एक प्रकार का रोग जो ईंट, पत्थर तथा मिट्टी की दीवारों में लग जाता है जिसमें इनका ऊपरी तल झड़ने लगता है, नमकीन मिट्टी जिससे शोरा बनाया जाता है, वह धूल या मिट्टी जो लोना लगने पर दीवार से गिरती है, पौधे की जाति का एक कीड़ा, जादू टोना करने वाली एक चमाइन का नाम (क्रि०) फसल काटना।
लोनाई-(हिं० स्त्री०) लावण्य, सुन्दरता।
लोनार-(हिं० स्त्री०) नमक बनाने का स्थान
लोनिका-(हिं० स्त्री०) लोनी नामक साग।
लोनिया-(हिं० पुं०) एक जाति का नाम, इन लोगों का व्यवसाय नमक बनाने का है, लोनी नामक साग।
लोनी-(हिं० स्त्री०) कुलफे की जाति का एक प्रकार का साग, एक प्रकार की क्षार युक्त मिट्टी, वह क्षार जो चने आदि की पत्तियों पर बैठता है।
लोप-(सं० पुं०) विच्छेद, क्षय, नाश, अभाव, अदर्शन, अन्तर्धान होना, छिपना, व्याकरण का वह नियम जिसके अनुसार शब्द साधन में कोई वर्ण हटा दिया जाता है।
लोपक-(सं० वि०) विघ्न या बाधा डालने वाला।
लोपन-(सं० नपुं०) नाश करना, लुप्त करना, हटाना।
लोपना-(हिं० क्रि०) लुप्त होना, छिपना, मिटाना।
लोपाञ्जन-(सं० पुं०) वह कल्पित अंजन जिसके लगाने में मनुष्य अदृश्य हो जाता है।
लोपापाक-(सं० पुं०) शृगाल, सियार।
लोपापिका-(सं० स्त्री०) सियारिन।
लोपामुद्रा-(सं० स्त्री०) अगस्त्य मुनि की पत्नी।
लोपायक-(सं० पुं०) शृगाल, सियार।
लोपाश, लोपाशक-(सं० पुं०) शृगाल।
लोपाशिका-(सं० स्त्री०) सियारिन।
लोपी-(सं० वि०) क्षति पहुँचाने वाला।
लोप्ता-(सं० वि०) नियम भंग करने वाला, हानि पहुँचाने वाला।
लोप्त्र-(सं० नपुं०) चोरी का माल।
लोप्य-(सं० वि०) नाश करने योग्य।
लोवा-(हिं० स्त्री०) लोमड़ी।
लोबान-(अ० पुं०) एक वृक्ष का सुगन्धित गोंद।
लोबिया-(हिं० पुं०) एक प्रकार का सफेद बड़े आकार का बोड़ा।
लोभ-(सं० पुं०) दूसरे के पदार्थ को लेने की कामना, लालच, आकांक्षा, लिप्सा, वांछा, कृपणता, कंजूसी।
लोभन (सं० पुं०) लोभ, लालच।
लोभना-(हिं० क्रि०) मुग्ध करना, लुभाना।
लोभनीय-(सं० वि०) लोभ के योग्य।
लोभयान-(सं० वि०) लालच बढ़ाने वाला।
लोभविजयी-(सं० पुं०) वह राजा जो धन चाहता हो युद्ध न करना चाहता हो।
लोभाना-(हिं० क्रि०) मुग्ध होना, मोहित होना।
लोभित-(सं० वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ।
लोभी-(सं० वि०) अधिक लोभ करने वाला, लालची, लुब्ध, लिप्सु, लुभाया हुआ।
लोभ्य-(सं० वि०) लालच करने योग्य।
लोम-(सं० नपुं०) शरीर के रोवें, रोयाँ, बाल, (हिं० पुं०) लोमड़ी।
लोमक-(सं० वि०) रोमयुक्त।
लोमकर्ण-(सं० पुं०) खरगोश, खरहा।
लोमकीट-(सं० पुं०) जूं।
लोमकूप-(सं० पुं०) शरीर में के रोम के जड़ में का छिद्र, देखो रोमकूप।
लोमगर्त-(सं० पुं०) देखो लोमकूप।
लोमघ्न-(सं० वि०) लोमनाशक।
लोमड़ी-(हिं० स्त्री०) कुत्ते या गीदड़ की जाति का एक वन्य पशु।
लोमपाद-(सं० पुं०) अङ्ग देशीय एक राजा जो राजा दशरथ के पुत्र थे।
लोमप्रवाही-(सं० वि०) लोममुक्त।
लोममणि-(सं० पुं०) लोम निर्मित कवच।

लोमयुक-(स०पु०) ऊनी वस्त्र काटने वाला कीड़ा।
लोमवत्-(स०वि०) लोम के सदृश।
लोमवाहन-(स०वि०) लोम युक्त।
लोमविवर-(स०नपु०) रोमकूप।
लोमफल-(स०नपु०) कमरख।
लोमश-(स० पुं०) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जिनको पुराणों ने अमर माना है (वि०) बड़े बड़े रोवें वाला।
लोमशकर्ण-(सं० पु०) खरगोश, खरहा।
लोमशा-(स० स्त्री०) केवाच, सौंफ, काकजघा।
लोमशी-(स० स्त्री०) ककड़ी।
लोमस्य-(स०नपु०) रोवें की अधिकता।
लोमसहर्षण-(स० नपु०) रोमाच।
लोमसार-(स०पु०) मरतक मणि।
लोमसिक-(स० स्त्री०) सियारिन।
लोमहर्ष-(स० पुं०) रोमाञ्च, पुलक, एक राक्षस का नाम।
लोमहर्षण-(स० नपुं०) अति भयकर, ऐसा भयकर जिससे रोंगटे खड़े हो जावे।
लोमहृत्-(स० पु०) हरताल।
लोमाश-(स०पु०) शृगाल, गीदड़।
लोय-(हि० पु०) लोग, नयन, आख (स्त्री०) आग की लौ, लपट (अव्य०) देखो लौं।
लोर-(हि० पु०) कान का कुण्डल, लटकन, आसू (वि०) उत्सुक, चचल।
लोरना-(हि०क्रि०) चचल होना, लोटना, झुकना, लिपटना।
लोरी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की गीत, बच्चों को सुलाने के लिये स्त्रिया यह गीत गाती हैं।
लोल-(स० वि०) चचल, कम्पायमान, हिलता डोलता हुआ, क्षण में नष्ट होने वाला, अति उत्सुक, क्षणिक (पु०) लिङ्गेन्द्रिय।
लोलक-(स० नपु०) बाली में पहरने का लटकन, कान की लव, घंटी में का लटकन।
लोलकी-(हि० स्त्री०) कान का नीचे का लटकता हुआ भाग।
लोलदिनेश-(स०पु०) लोलार्क नामक सूर्य।
लोलना-(हि०क्रि०) हिलना।
लोला-(स०स्त्री०) जिह्वा, जीभ, लक्ष्मी, चचला स्त्री, एक योगिनी का नाम, मधु नामक दैत्य की माता, एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं (हि० पु०) लड़कों का एक प्रकार का खिलौना।
लोलाक्षिका-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसकी आखें नाचती हों।
लोलार्क-(स०पु०) सूर्य, काशी के एक तीर्थ का नाम।
लोलित-(स०वि०) शिथिल, ढीला।
लोलिनी-(स० स्त्री०) चचल प्रकृति की स्त्री।
लोलुप-(स० वि०) बड़ा लोभी, लालची, चटोर, परम उत्सुक।
लोलुपता-(स० स्त्री०) लालच।
लोलुभ-(स० वि०) देखो लोलुप, लालची।
लोलुव-(स०वि०) बारबार काटने वाला।
लोलोर-(स०नपु०) एक नरक का नाम।
लोवा-(हि०स्त्री०) लोमड़ी (पु०) तीतर जाति का एक पक्षी, गुरगा, लवा।
लोशन्-(अ० पु०) अधिक जल में घोली हुई कोई औषधि।
लोष्ट्र-(स० पु०) ढेला लोष्ट।
लोष्ट-(स० पु०) ईंट या पत्थर का टुकड़ा, ढेला।
लोष्टघ्न-(स० पु०) किसान का खेत में के ढेले तोड़ने का औज़ार।
लोष्टमय-(स०वि०) ढेले के समान।
लोहँड़ा-(हि० पु०) लोहे की छोटी कड़ाही, तसला।
लोह-(सं० पु०) लोहा नामक धातु।
लोहकान्त-(स० नपु०) चुम्बक।
लोहकार-(सं० पुं०) लोहार।
लोहकिट्ट-(स० नपु०) लोहे की मैल।
लोहगिरि-(स०पु०) एक पर्वत का नाम।
लोहघातक-(सं० पु०) लोहार।
लोहचोलिका-(स०स्त्री०) लोहे का बख्तर
लोहचूर्ण-(स० नपु०) लोहे का बुरादा।
लोहज-(स० नपु०) मण्डूर, कासा।
लोहजाल-(स०नपु०) वर्म, बख्तर।
लोहजित्-(स०पु०) हीरक, हीरा।
लोहदारक-(स०पु०) एक नरक का नाम
लोहनाल-(स० पु०) नाराच नाम का अस्त्र।
लोहपञ्चक-(स० नपुं०) वैद्यक के अनुसार सोना, चादी, ताबा रागा और सीसा ये पाच धातु।
लोहपाश-(स०पु०) लोहे की जजीर।
लोहप्रतिमा-(स०स्त्री०) लोहे की बनी हुई मूर्ति।
लोहमय-(स०वि०) लोहे का बना हुआ।
लोहमुक्तिका-(स० स्त्री०) लाल रग का मोती।
लोहमेखल-(स० वि०) लोहे की मेखला पहने हुए।
लोहलगर-(हि० पुं०) जहाज़ का लगर।
लोहल-(स०वि०) अव्यक्त बातचीत।
लोहवत्-(स०वि०) लोहे के सामान।
लोहवर-(स० नपु०) सुवर्ण, सोना।
लोहवर्म-(स० नपु०) लोहे का बख्तर।
लोहशङ्कु-(स०पु०) लोहे का खूँटा।
लोहश्लेषण-(स० पु०) सोहागा।
लोहसार-(स०पु०) फौलाद।
लोहाँगी-(हि०स्त्री०) वह छड़ी जिसके किनारे पर लोहा लगा रहता है।
लोहा-(हि०पु०) लोहा नामक प्रसिद्ध धातु, अस्त्र, हथियार, लोहे की बनी वस्तु, लाल रग का बैल (वि०) लाल, बहुत कड़ा, लोहे के चने चबाना-बड़ा कठिन कार्य करना, लोहा गहना-युद्ध करने के लिये हथियार उठाना, लोहा बजना-युद्ध होना, किसी का लोहा मानना-आधिपत्य स्वीकार करना, हार जाना, लोहा लेना-युद्ध करना, लड़ना।
लोहाकर-(स० नपु०) लोहे की खान।
लोहाकर्ण-(स० वि०) लाल कान वाला।
लोहाना-(हि० स्त्री०) लोहे की वस्तु में

खाद्य पदार्थ रखने से लोहे का रग या स्वाद आ जाना।
लोहार-(हिं०पु०) एक जाति जो लोहे की चीजें बनाती है।
लोहारी-(हिं०स्त्री०) लोहार का काम।
लोहिका-(स०स्त्री०) लोहे का बरतन।
लोहित-(स० नपुं०) कुकुंम, केशर, लाल चन्दन, पीतल, रुधिर, लोहू, युद्ध, (पु०) एक प्रकार की मछली, मसुरी, (वि०) लाल रग का।
लोहितक-(स० नपुं०) कास्य, कासा, (पु०) एक प्रकार का धान।
लोहित कल्माप-(स०वि०) चितकबरा।
लोहित कृष्ण-(स०वि०) गाढा लाल।
लोहितक्षय-(स०पु०) रुधिर का नाश।
लोहितग्रीव-(स० पु०) अग्नि।
लोहितचन्दन-(स०नपु०) लाल चन्दन।
लोहितत्व-(स० नपु०) लाल रग।
लोहितपुष्पक-(स०पु०) अनार का वृक्ष।
लोहित मृत्तिका-(स०स्त्री०) लाल मिट्टी, गैरिक, गेरू।
लोहितराग-(स० पु०) लाल रग।
लोहितवासस्-(स० वि०) लाल वस्त्र धारण किये हुए।
लोहित शतपत्र-(स०नपु०) लाल कमल
लोहितशवल-(स० वि०) चितकबरा।
लोहिता-(स०स्त्री०) वह स्त्री जो क्रोध से लाल हो गई हो।
लोहिताक्ष-(स० पुं०) विष्णु, कोकिल, कोयल, (वि०) जिसकी आखें लाल हों।
लोहिताक्षी-(स० स्त्री०) रक्त लोचन, वह स्त्री जिसकी आखें लाल हों।
लोहिताङ्ग-(स०पु०) मगल ग्रह।
लोहितानन-(स० पु०) लाल मुख वाला, नेवला।
लोहितायस-(स० नपु०) ताबा।
लोहितार्ण-(स० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
लोहितार्द्र-(स०वि०) रुधिर से तराबोर।
लोहितास्य-(स० वि०) लाल मुँह वाला, मुख में रुधिर लगा हुआ।
लोहिताहि-(स०पु०) लाल रग का सर्प।
लोहितिका-(स०स्त्री०) रक्तवाहिनी नाड़ी
लोहितीभूत-(स० वि०) जो लाल हो गया हो।
लोहितेक्षण-(स०स्त्री०) लाल आखें।
लोहितोत्पल-(स० नपु०) लाल कमल।
लोहितोद-(स०पु०) एक नरक का नाम।
लोहितोर्ण-(सं० वि०) जिसके ऊन लाल रग के हों।
लोहित्य-(स० पु०) एक प्रकार का धान, ब्रह्मपुत्र नदी, एक समुद्र का नाम।
लोहित्या-(स० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
लोहिनिका-(स०स्त्री०) लाल रगकी स्त्री।
लोहिया-(हि० पु०) लोहे की चीजों का व्यापार करने वाला, धनियो तथा मारवाड़ियों की एक जाति, लाल रग का बैल, लोहे की बनी हुई गोली।
लोहू-(हि० पु०) रक्त, रुधिर, खून।
लौं-(हि०अव्य०) पर्यन्त, तक, तुल्य, समान
लौंकना-(हि०क्रि०) चमकना, देख पड़ना
लौंग-(हि० पु०) एक वृक्ष की कली जो खिलने के पहले ही तोड़ ली जाती है, लौंग के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं।
लौंगचिड़ा-(हिं० पु०) एक प्रकार का कबाब।
लौंगमुश्क-(हिं०पु०) एक प्रकार का फूल।
लौंगिया मिर्च-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बहुत कड़वी मिर्च।
लौंडा-(हिं०पु०) छोकरा, बालक, खूबसूरत लड़का, (वि०) अबोध, छिछोरा।
लौंडापन-(हिं०पु०) लड़कपन, छिछोरपन
लौंडी-(हिं०स्त्री०) दासी, मजदूरनी।
लौंडेबाज-(हिं० वि०) वह जो सुन्दर बालक से प्रेम रखता हो और उसके साथ गुदा मैथुन करता हो।
लौंद-(हिं०पु०) अधिमास, मलमास।
लौंदरा-(हि०पु०) वर्षा ऋतु के आरम होने से पहले जो पानी वरसता है, दौंगारा।
लौंदा-(हिं० पु०) देखो लौंदा।
लौंदी-(हि०स्त्री०) पाक चलाने की करछी।
लौंन-(हि०पु०) देखो लवन।
लौ-(हिं०स्त्री०) आग की लपट, ज्वाला, दीपक की टेम, दीपशिखा, चित्त की वृत्ति, आशा कामना, चाह, लौलीन-ध्यान में मग्न।
लौआ-(हि०पु०) कद्दू, घीआ।
लौका-(हिं०पु०) कद्दू।
लौकना-(हिं०क्रि०) दूर से देख पड़ना।
लौकिक-(स०वि०) व्यवहारिक, सासारिक, लोक सबधी, सात मात्राओं के एक छन्द का नाम।
लौकिक ज्ञान-(स० नपु०) शास्त्रादि का ज्ञान।
लौकिकता-(स० स्त्री०) लोकव्यवहार, शिष्टता।
लौकिकत्व-(स०नपु०) देखो लौकिकता।
लौकिक न्याय-(स०पु०)साधारण नियम
लौकिकाचार-(स० नपु०) लोकाचार, कुलाचार।
लौकिकी-(स०स्त्री०) ख्याति, प्रसिद्धि।
लौकिकी यात्रा-(स०स्त्री०)लोकव्यवहार।
लौकी-(हि०स्त्री०) कद्दू, घीया, भभके में लगाने की काठ या बास की नली।
लौक्य-(सं०वि०) लोक संबधी, साधारण, सामान्य।
लौज-(अ०पु०) बादाम, एक प्रकार की तिकोनी मिठाई जिसमें बादाम पीस कर पड़ता है।
लौचोरा-(हिं०पु०) धातु गलाने वाला कारीगर।
लौट-(हिं० स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव।
लौटना-(हिं०क्रि०) कहीं पर जाकर फिर से वापस आना, पलटना, पीछे की ओर मुड़ना, उलटना, पुलटना।
लौटपौट-(हि० स्त्री०) उलटने पुलटने की क्रिया।
लौटफेर-(हि० पु०) इधर उधर हो जाना, उलट फेर, बड़ा परिवर्तन।
लौटान-(हि० स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव।

टाना-(हि०क्रि०) फेरना, पलटाना, वापस करना, ऊपर नीचे करना।
लौटानी-(हि०क्रि०वि०) लौटती समय।
लौड़ा-(हि० पु०) शिश्न, लिङ्ग, पुरुष की मूत्रेन्द्रिय।
लौनहार-हि०पु०) खेत की लवन करने वाला, खेत काटने वाला।
लौद्-(हि०पु०) अरहर की नरम डाली।
लौन-(हि०पु०) लवण, नमक।
लौनहार-(हि०पु०) लवन करने वाला, फस्ल काटने वाला।
लौना-(हि०पु०) वह रस्सी जिसके पशु के पिछले पैर बाध दिये जाते हैं, फस्ल काटने का काम, इन्धन।
लौनी-(हि०स्त्री०) फस्ल की कटाई,लहना
लौम-(स०वि०) लोम सबधी।
लौल्य-(सं०नपु०) चचलता, अस्थिरता।
लौल्यता-(स० स्त्री०) चचलता, अधिक या उत्कट इच्छा।
लौल्यवत्-(स० वि०) इच्छुक, अर्थ-लोलुप।
लौह-(सं० पु०) लोहा नामक धातु।
लौहकान्तक-(स०नपु०) कान्त लोहा।
लौहकार-(स० पु०) लोहार।
लौहकिट्ट-(स०नपु०) मण्डूर।
लौहंज-(सं०नपु०) लोहे की मैल, मण्डूर।
लौहबन्ध-(स०पु०) लोहे की जजीर।
लौहभाण्ड-(स०पु०) लोहे का बरतन।
लौहमय-(सं० वि०) लोहे का बना हुआ।
लौहमल-(स०नपु०) मण्डूर।
लौहयन्त्र-(स०पु०) लोहे की कल।
लौहशंकु-(स०पु०) लोहे की कील।
लौहसार-(स० पु०) एक प्रकार का नमक जो लोहे से बनाया जाता है।
लौहा-(स०स्त्री०) लोहे का बना हुआ कडाहा।
लौहात्मा-(स० स्त्री०) देखो लौहा।
लौहित-(सं०पु०) शिव का त्रिशूल।
लौहित्य-(स०पु०) एक सागर का नाम, लाल सागर, ब्रह्मपुत्र नदी।
लौहेष-(स० पु०) लोहे का बना हुआ हल।
ल्याना-(हि०क्रि०) देखो लाना।
ल्यारी-(हि० पु०) मेडिया।
ल्याव-(हि० पु०) देखो लुआब।
ल्यावना-(हि०क्रि०) देखो लाना।
ल्वारि-(हि०स्त्री०) देखो लू, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा।
ल्वाब-(हि०पु०) देखो लबाब।

व

व-हिन्दी या सस्कृत वर्णमाला का उनतीसवा व्यञ्जन वर्ण, यह वर्ण उकार का विकार तथा अन्तस्थ अर्ध व्यञ्जन माना जाता है, इसका उच्चारण स्थान दन्त्य अथवा दन्त्योष्ठ माना जाता है।
व-(सं० पु०) वायु, वरुण, बाहु, वस्त्र, समुद्र, बस्ती, बाण, अस्त्र, मद्य, वृक्ष, कलश से उत्पन्न ध्वनि (वि०) बलवान् (अव्य०) ऐसा (स०नपु०) वरुणबीज (फा०उभ्य०) और।
वक, वंकट-(हि० वि०) वक्र, टेढा, कुटिल, दुर्गत।
वंकनाली-(हि०स्त्री०) सुषुम्ना नामक नाड़ी
वकिम-(हि०वि०) झुका हुआ, टेढा।
वक्षु-(स० स्त्री०) मध्य एशिया की सबसे बड़ी नदी जो अक्सस् नाम से प्रसिद्ध है।
वंग-(हि० पु०) देखो वङ्ग, रागा।
वंश-(स० पु०) सन्तति, गोत्र, कुल, सन्तान, जाति, पीठ की रीढ, वर्ग, बासुरी तलवार के बीच का भाग, जन सख्या, अतिथि, हाथ या पैर की बड़ी हड्डी, नाक के ऊपर की हड्डी, वशलोचन, बास,
वशक-(स०नपु०) छोटी जाति का बास,
वंशकठिन-(स०पु०) बास का जगल,
वशकर-(स०पु०) वह पुरुष जिससे किसी वश का आरम होता है।
वंशकर्पूर-(स०पु०) वशलोचन।
वशकीर्ति-(स०स्त्री०) वश का गौरव।
वंशक्षय-(स०पु०) वश का नाश।
वंशचरित्र-(सं०नपु०) वंश का आख्यान या इतिहास।
वशचिन्तक-(स०पु०) वह जो अपने वश का परिचय देने मे असमर्थ हो।
वंशछेत्ता-(स० पुं०) वढई (वि०) जिसके श का गौरव नष्ट हो गया हो
वशज-(स०पु०) जिसका जन्म उच्च कुल मे हुआ हो, अगर, पुत्र, बास का चावल, वशलोचन।
वंशजा-(स०स्त्री०) कन्या, वशलोचन।
वंशतण्डुल-(स०पु०)वास मे का चावल।
वशतिलक-(स०पु०)एक छन्द का नाम।
वशदा-(स० स्त्री०) राजा पुरु की एक पत्नी का नाम।
वंशधर-(स० स्त्री०) वश की मर्यादा रखने वाला, सन्तति, सन्तान।
वशधान्य-(स०नपु०) वास मे का चावल।
वशधारा-(स०स्त्री०) कुलपद्धति।
वंशधारी-(स० स्त्री०) वश की रक्षा करने वाला।
वंशनर्तिन्-(स०पु०) भाड़।
वशनाडिका-(स० स्त्री०) बासुरी,
वशनाश-(स०नपु०) वश का लोप।
वंशनेत्र-(सं०नपु०) गन्ने की आँख जिसको भूमि में गाड़ने से पौधा उत्पन्न होता है।
वंशपत्र-(स०पु०) एक छन्द का नाम,
वशपत्रक-(स०नपु०) हरताल।
वंशपत्रपातित-(स० नपु०) एक छन्द का नाम।

ंशपत्री-(स०स्त्री०) एक प्रकार की हींग
वंशपरंपरा-(स० स्त्री०) सन्तति क्रम,
वंशपुष्पा-(स०स्त्री०) सहदेवी लता,
वंशपीत-(स०पु०) गुग्गुल ।
वंशपूरक-(स०नपु०) ईख की आँख ।
वंशबीज-(स० नपु०) बास का चावल ।
वंशभृत्-(स०पु०) वह जो वंश का परिपालन करता हो ।
वंशमय-(स०त्रि०) बास का बना हुआ।
वंशमर्यादा-(स० स्त्री०) वंश परपरा से प्राप्त गौरव ।
वंशयव-(स०पु०) बास का चावल ः
वंशराज-(स०पु०) सब से बड़ा बास ।
वंशलोचन-(सं० पु०) बसलोचन तवाशीर ः
वंशवर्धन-(स० वि०) कुल का गौरव बढाने वाला ।
वंशवितति-(स० स्त्री०) बास का जगल ।
वंशविदल-(स० पु०) बास की बनी हुई चिमटी ।
वंशविस्तार-(स० पु०) वंश परपरा ।
वंशवृद्धि-(स० स्त्री०) वंश का विस्तार
वंशशर्करा-(स० स्त्री०) बसलोचन ।
वंशशलाका-(स० स्त्री०) बीन सितार आदि बाजों का डडा ।
वंशस्थ-(स०पु०) बारह वर्णों का एक वर्णवृत्त ।
वंशस्थिति-(स०स्त्री०) वंश की मर्यादा ।
वंशागत-(स० वि०) वंश परपरा से आया हुआ ।
वंशहीन-(स०वि०) निः सन्तान ।
वंशाग्र-(स०नपु०) बास का कोपल ।
वंशानुक्रम-(स०पु०) वंश परम्परा ः
वंशावली-(स० स्त्री०) पूर्व पुरुषों की नामावली ।
वंशिका-(स० स्त्री०) वंश, बासुरी, पिप्पली ।
वंशी-(स०स्त्री०) मुरली, बासुरी ।
वंशीधर-(स०पु०) बासुरी बजाने वाला, श्रीकृष्ण ।
वंशीवट-(स० नपु०) वृन्दावन में वह बरगद का वृक्ष जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी बजाया करते थे ।
वंशोद्भव-(स०वि०) कुल में उत्पन्न ।
वक-(स० पु०) बगला नामक पक्षी एक दैत्य का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था में मारा था , अगस्त का वृक्ष या फल, कुबेर ।
वकत्व-(स० नपु०) कुटिलता ।
वकपञ्चक-(स० नपु०) कार्तिक शुक्ल एकादशी से पुणिमा तक की पाच तिथियां ।
वकयन्त्र-(स०नपु०) अर्क उतारने का भभका ।
वकवृत्ति-(स० पु०) अपना काम निकालने के लिये घात में रहना ।
वकव्रत-(स०नपु०) कपटी मनुष्य ।
वकालत-(अ०स्त्री०) दूसरे के स्थानापन्न हो कर काम करना, दूत कर्म, कचहरी में किसी मामले में वादी या प्रतिवादी की ओर से बहस करने का पेशा ।
वकालतन-(अ० पु०) वह अधिकार पत्र जिसके द्वारा कोई मनुष्य किसी वकील को अपनी ओर से किसी मुकदमें बहस करने के लिये नियुक्त करता है ।
वकासुर-(स०पु०) एक दैत्य जो पूतना का भाई और कस का अनुचर था ।
वकील-(अ० पु०) दूसरे के काम को उसकी ओर से करने का भार लेने वाला, राजदूत, एलची, दूत, दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बात करने वाला, प्रतिनिधि, वह जिसने कानून की परीक्षा पास की हो जिसको हाइकोर्ट की ओर से अदालत में मुद्दई या मुद्दालैह की ओर से बहस करने का अधिकार प्राप्त हो ।
वकुल-(स०पु०) अगस्त का वृक्ष या फूल, मौलसिरी ।
वकुली-(स०स्त्री०) मौलसिरी ।
वक़ूअ-(अ०पु०) घटित होना,प्रकट होना
वकूफ़-(अ० पु०) ज्ञान, जानकारी ।
वक्त-(अ० पुं०) समय, काल, अवसर, मौका, अवकाश, फुरसत, मृत्युकाल ।
वक्तन् फवक्तन्-(अ० क्रि०वि०) यथासमय, कभी कभी ।
वक्तव्य-(स० वि०) वाच्य, कहने योग्य, कुत्सित, कुछ कहने सुनने योग्य, (नपु०) वचन, कथन, निन्दा शिकायत
वक्तव्यता-(स०स्त्री०) कथन योग्यता ।
वक्ता-(स० वि०) बोलने वाला, बोलने में निपुण, वाग्मी, बहुभाषी, पण्डित , (पुं०) कथा कहने वाला व्यास ।
वक्तुकाम-(स० वि०) बोलने का अभिलाषी ।
वक्तृक-(स० वि०) सच बोलने वाला ।
वक्तृता-(स०स्त्री०) व्याख्यान, कथन ।
वक्तृत्व-(स०नपु०) व्याख्यान, कथन ।
वक्त्र-(स० नपु०) मुख, आनन, काम का आरभ, बीजगणित में प्रथम गृहीत सख्या, अनुष्टुप् के अनुरूप एक प्रकार का छन्द ।
वक्त्रज-(स० पु०) मुखसे उत्पन्न, ब्राह्मण ।
वक्त्रतुण्ड-(स० पु०) गणेश ।
वक्त्रदंष्ट्र-(स० त्रि०) शुकर, सूअर ।
वक्त्रदल-(स०नपु०) तालु ।
वक्त्रद्वार-(स० नपु०) मुख विवर ।
वक्त्रपट्ट-(स० पुं०) वह पात्र जिसमें घोड़ा चना खाता है, तोबड़ा ।
वक्त्रबाहु-(स० पु०) बाराही कन्द ।
वक्त्रभेदी-(सं० वि०) तीता, मुख फाड़ने वाला ।
वक्त्ररन्ध्र-(स०नपु०) देखो वक्त्रद्वार
वक्त्ररुह-(स० वि०) मुख से उत्पन्न होने वाला ।
वक्त्ररोग-(स०पु०) मुंह की बीमारी ।
वक्त्रवास-(स० पु०) नारगी ।
वक्त्रशल्या-(स० स्त्री०) गुंजा, घुघची ।
वक्त्रशोधन-(सं० नपु०) नीबू, कमरख
वक्त्राधिवास-(स०पु०) नारगीका वृक्ष
वक्त्रासव-(स०पु०) लाला, थूक ।
वक्त्री-(स०स्त्री०) स्त्री वक्ता ।
वक्फ़-(अ०पु०) धर्मार्थ दान की हुई भूमि या सम्पत्ति, धर्मार्थ दान ।

वक्फ़नामा-(फ़ा०पु०) दान पत्र।
वक्फ़ा-(अ०पु०) अवकाश, मोहलत।
वक्र-(स० नपु०) नदी का मोड़, वङ्क, (पु०) मगल ग्रह, शनैश्चर, (वि०) टेढा, बाका, तिरछा, (पु०) एक राक्षस जिसको भीम ने मारा था।
वक्रकण्टक-(स०पु०) बेर का पेड़।
वक्रगति-(स० स्त्री०) टेढी चाल का।
वक्रगामी-(सं०त्रि०) कुटिल, धोखेबाज।
वक्रगुल्फ,वक्रग्रीव-(स०पु०) ऊट।
वक्रचञ्चु-(स० पु०) सुग्गा, तोता।
वक्रता-(स०स्त्री०) क्रूरता।
वक्रतुण्ड-(स०पु०) गणेश, जिसके ओंठ टेढे हों।
वक्रदंष्ट्र-(स०पु०) शूकर, सुअर।
वक्रदृष्टि-(स०स्त्री०) क्रोध की दृष्टि।
वक्रधर-(सं०पुं०) शिव।
वक्रनाल-(स०नपुं०) मुख से बजाने का एक प्रकार का बाजा।
वक्रनास-(स०वि०)जिसकी नाक टेढी हो
वक्रनासिक-(स०पु०)पेचक, उल्लू पक्षी।
वक्रपाद-(सं०वि०) लगड़ा।
वक्रपुच्छ-(स०पु०) कुत्ता।
वक्रपुष्प-(स०पु०) परास का पेड़।
वक्रभाव-(सं०पु०) कुटिलता।
वक्रय-(स०पु०) मूल्य, दाम।
वक्ररेखा-(स०स्त्री०) टेढ़ी रेखा।
वक्रलंगल-(स०पु०) कुत्ता, (वि०) जिसकी पूछ टेढी हो।
वक्रवक्त्र-(स०पु०) शूकर, सुअर।
वक्रशृंग-(स०वि०) जिसकी सींग टेढी हो
वक्राङ्ग-(सं०नपु०) हस, सर्प, टेढा अग, (वि०) जिसका अग टेढ़ा हो।
वक्रित-(स०वि०) जो टेढा हो गया हो।
वक्री-(हि०पु०) वह जिसके अग जन्म से ही टेडे हों, (वि०) अपने मार्ग को छोड़ कर पीछे हटने वाला।
वक्रीकृत-(स०वि०) टेढा किया हुआ।
वक्रीभाव-(स०पु०)टेढापन, धोखेबाजी।
वक्रोक्ति-(स० स्त्री०) काकूक्ति, व्यग वचन, काव्य का वह शब्दालकार जिसमें श्लेष वाक्य के प्रयोग रहते हैं।
वक्ष-(हि० पु०) वक्षःस्थल, हृदय, छाती, बैल।
वक्षःस्थल-(स० पु०) देखो वक्ष।
वक्षोज, वक्षोरुह-(स०नपुं०) स्तन,कुच
वक्ष्यमाण-(स० वि०) वाच्य, वक्तव्य, कहने योग्य।
वगलामुखी-(स० स्त्री०) दश महाविद्या के अन्तर्गत एक देवी विशेष।
वगाह-स०पु०)जल में हल कर स्नान।
वगैरह-(अ०अव्य०) आदि, इत्यादि।
वङ्क-(स० पु०) नदी का मोड़।
वङ्किम-(स०वि०)कुछ टेढा झुका हुआ।
वङ्ग-(स० नपु०) रागा नामक धातु।
वङ्गज-(सं० नपु०) सिन्दूर, पीतल, (वि०) वग देश में उत्पन्न।
वङ्गन-(स० पु०) बैगन।
वङ्गसेन-(स० पु०) लाल फूल का अगस्त।
वङ्गीय-(स०वि०) वग देश का।
वङ्गुला-(स०स्त्री०)एक रागिणी का नाम।
वङ्गद-(सं० पु०) एक असुर का नाम जिसको इन्द्र ने मारा था।
वच-(सं०पु०) शुक, तोता, सूर्य, वचन।
वचन-(स० नपु०) मुख से निकला हुआ सार्थक शब्द,वाक्य, वाणी, भाषा, भाषित, उक्ति, व्याकरण में शब्द का वह विधान जिससे एक या अनेक का बोध होता है, हिन्दी में एक वचन तथा बहु वचन होते हैं परन्तु सस्कृत में द्विवचन को भी रूप होता है।
वचनकर-(सं० वि०) वह जो अपने वचन पर दृढ रहे।
वचनकारी-(स०त्रि०) आज्ञाकारी।
वचनगोचर-(स० वि०) जो वचन से प्रत्यक्ष हुआ हो।
वचनग्राही-(स० वि०) वचन के अनुसार काम करने वाला।
वचनपटु-(सं०वि०) बोलने में प्रवीण
वचनलक्षिता-(स० स्त्री०) वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसके उपपति को उसका प्रेम प्रकट होता है।
वचनविदग्धा-(स० स्त्री०) वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से अपने उपपति का प्रेम साध लेती है।
वचनविरुद्ध-(स० वि०) शास्त्रविरुद्ध
वचनविरोध-(स० त्रि०) शास्त्र वाक्य जो प्रमाण के विरुद्ध हो।
वचनव्यक्ति-(स० त्रि०) मौलिक कथा।
वचनशत-(स० त्रि०) बहु वाक्य।
वचनसहाय-(स० पु०) बातचीत करने वाला साथी।
वचनानुग-(स०वि०) वचन के अनुसार चलने वाला।
वचनीकृत-(सं० वि०) तिरस्कार किया हुआ।
वचनीयता-(स०स्त्री०) लोकापवाद।
वचनेस्थित-(स० वि०) जो अपने वचन पर दृढ हो।
वचनोपक्रम-(स०पु०) वाक्यारम्भ।
वचर-(स०पु०) कुक्कुट, मुरगा।
वचस्कर-(स०वि०) वचन के अनुसार काम करने वाला।
वचस्य-(सं० वि०) प्रख्यात, मशहूर।
वचा-(स०स्त्री०) वच नाम की औषधि
वचि-(स० पु०) वचन, नाम।
वच्छ-(हि०पुं०) देखो वक्ष, छाती।
वज़न-(अ० पु०) भार, बोझ, तौल, मान, मर्यादा।
वज़नी-(अ०वि०) जिसका बोझ अधिक हो, भारी, मानने लायक।
वजह-(अ०स्त्री०) कारण, हेतु, प्रकृति।
वज़ा-(अ०स्त्री०)सघटन, रचना, आकृति, रूप, अवस्था, सजधज, चालढाल, रीति, मुजरा।
वज़ादार-(फ़ा०वि०) दर्शनीय, जिसकी सुन्दर बनावट हो।
वज़ादारी-(फ़ा० स्त्री०) सजावट का उत्तम ढग।
वज़ारत-(अ० स्त्री०) मन्त्री का पद या कार्य, वज़ीर का दफ्तर।
वज़ीफ़ा-(अ०पु०) वह वृत्ति या, आर्थिक सहायता जो विद्वानों,छात्रों, दीन लोगों तथा बिगडे हुए रईसों को दी जाती है, वह जप या पाठ जो मुसलमान लोग

प्रतिदिन करते हैं ।
वज़ीर-(अ० पु०) मन्त्री, दीवान, शतरञ्ज की वह गोटी जो बादशाह से छोटी तथा अन्य मोहरों से बड़ी होती है
वज़ीरी-(अ०स्त्री०) दीवान का पद या कार्य (पु०) घोड़े की एक जाति ।
वज़ू-(अ० पु०) नमाज पढ़ने के पहले हाथ पाव धोने का कार्य ।
वजूद-(अ० पुं०) सत्ता, अस्तित्व, शरीर, देह ।
वजूहात-(अ०स्त्री०) कारणों का समूह ।
वज्र-(स० पु० नपु०) इन्द्र का अस्त्र विशेष, हीरा, बिजली, फौलाद, बरछा, भाला, थूहर का पेड़, विष्णु के चरण का चिह्न, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से पद्रहवा योग (वि०) बहुत कड़ा या मजबूत, घोर, भयकर ।
वज्रकण्टक-(स० पु०) हनुमान् का एक नाम ।
वज्रकन्द-(स० पुं०) सकरकन्द ।
वज्रगोप-(स० पु०) वीरबहूटी ।
वज्रघोष-(स०त्रि०) बिजली की कड़क
वज्रचर्मा-(स०पु०) गैंड़ा ।
वज्रचञ्चु-(स० पु०) गीध ।
वज्रजित्-(स० पु०) गरुड़ का एक नाम
वज्रज्वलन-(स० पु०) विद्युत्, बिजली ।
वज्रतुण्ड-(स० पु०) गरुड़, गणेश ।
वज्रदंष्ट्र-(स०पु०) एक राक्षस । का नाम ।
वज्रदण्ड-(स०पु०) एक अस्त्र जिसको इन्द्र ने अर्जुन को दिया था ।
वज्रदन्त-(स०पु०) शूकर, चूहा ।
वज्रदन्ती-(हि० स्त्री०) एक प्रकार का पौधा ।
वज्रदेह-(स० पु०) बलराम ।
वज्रधर-(स० पु०) इन्द्र ।
वज्रनख-(स०पु०) नृसिंह ।
वज्रपाणि-(सं०पु०) इन्द्र ।
वज्रमणि-(स०पु०) हीरक, हीरा ।
वज्रमय-(स०वि०) वज्र के समान ।
वज्रमुष्टि-(स० पु०) इन्द्र, एक राक्षस का नाम ।
वज्रमूली-(स०स्त्री०) जगली उड़द ।
वज्रयोगिनी-(स० स्त्री०) तन्त्रोक्त एक देवी का नाम ।
वज्ररथ-(स०पु०) क्षत्रिय ।
वज्ररद-(स० पु०) शूकर, सुअर ।
वज्ररूप-(स० वि०) वज्र के समान आकृति का ।
वज्रलेप-(स० पु०) वह मसाला या पलस्तर जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि बहुत मजबूत हो जाती है ।
वज्रलोह-(स०पु०) चुबक ।
वज्रवीर-(स० पु०) महाकाल रुद्र का नाम ।
वज्रवृक्ष-(स० पु०) थूहर ।
वज्रसार-(स० पु०) हीरा ।
वज्रहस्त-(स०पु०) शिव ।
वज्रा-(स०स्त्री०) थूहर, गुरुच, दुर्गा ।
वज्राकर-(स० पु०) हीरे की खान ।
वज्राघात-(स०पु०) आकस्मिक दुर्घटना
वज्रांग-(स० पु०) सर्प, साप, हनुमान्
वज्राभ-(स० वि०) हीरे के समान चमक वाला ।
वज्राभ्यास-(स० पु०) गणित में गुणा करने की एक विधि ।
वज्रायुध-(स० पु०) इन्द्र ।
वज्रासन-(स० नपुं०) हठ योग का एक आसन ।
वज्री-(स० पु०) वज्रधारी इन्द्र, थूहड़ का वृक्ष ।
वज्रोदरी-(स० स्त्री०) एक राक्षसी का नाम ।
वज्रोली-(हिं० स्त्री०) हठ योग की एक मुद्रा ।
वञ्चक-(स० पु०) सियार, चोर, ठग, धूर्त ।
वञ्चन-(स०नपु०) धोखा देना या खाना
वञ्चना-(सं०स्त्री०) धोखा, छल ।
वञ्चनीय-(स०वि०) ठगने योग्य ।
वञ्चित-(स० त्रि०) धोखे में आया हुआ, विमुख ।
वञ्चुक-(सं०पु०) ठग, धूर्त ।
वट-(स०पु०) बरगद का पेड़ ।
वटक-(स० पु०) बड़ा पकौड़ा, बड़ी टिकिया या गोला ।
वटर-(स०पु०) मथानी, पगड़ी ।
वटवासी-(स० वि०) बरगद के वृक्ष पर रहने वाला (पु०) यक्ष ।
वटसावित्री-(स० स्त्री०) एक व्रत जिसमें स्त्रिया वट का पूजन करती हैं ।
वटिका,वटी-(स० स्त्री०) वटी, गोली, टिकिया ।
वटु-(स० पु०) ब्रह्मचारी बालक ।
वटुक-(स० पु०) बालक, ब्रह्मचारी, बटुक भैरव ।
वड़भी-(स० स्त्री०) धौरहरा ।
वड़व-(स०पु०) घोटक, घोड़ा ।
वड़वा-(स० स्त्री०) घोड़ी, अश्विनी नक्षत्र, वडवाग्नि, दासी ।
वड़वाग्नि-(स०पु०) बड़वानल ।
वडवानल-(स० पु०) बड़वानल ।
वड़वामुख-(स०पु०) शिव का एक नाम, शिव का मुख ।
वड़वावक्त्र-(स०नपु०) वडवानल ।
वडवासुत-(स० पुं०) अश्विनीकुमार ।
वड़ा-(स० स्त्री०) वटक, बड़ा ।
वणिक-(स०पु०)व्यवसायी, बनिया, वैश्य
वणिक्पथ-(स०पु०)वाणिज्य, व्यवसाय ।
वणिकजन-(सं० पु०) बनिया ।
वणिग्बन्धु-(स० पु०) नील का पौधा
वणिग्वह-(स०पु०) उष्ट्र, ऊँट ।
वणिज-(स०पु०) ज्योतिष में एक करण का नाम ।
वण्ट-(स० पु०) भाग बाट ।
वण्ठ-(स०पु०) वामन बौना ।
वण्ढा-(स०स्त्री०) पुंश्चली, छिनाल ।
वत्-(स०अव्य०) यथा, तथा ।
वतस-(हि०पु०)देखो अवतस,शिरोभूषण।
वतन-(अ०पु०) वासस्थान, जन्मभूमि।
वतायन-(स० पु०) वातायन, झरोखा ।
वतीरा-(अ० पुं०) ढग, रीति, चाल ढाल, लत ।
वत्-(स०पुं०) समान, तुल्य, ।
वत्स-(स० पु०) वत्सर, शिशु,

, बालक, कंस का एक अनुचर जिसको कृष्ण ने मारा था (नपु०) वक्ष, छाती।
वत्सकामा–(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसको पुत्र की कामना हो।
वत्सतन्त्री–(सं० स्त्री०) बछवा बाधने की रस्सी।
वत्सतरी–(स० स्त्री०) तीन साल की बछिया, कलोर।
वत्सनाभ–(स०पु०) बछनाग नामक विष।
वत्सपाल–(स० पु०) बचा पालने वाला, श्रीकृष्ण।
वत्सर–(स० पु०) वर्ष, साल, ध्रुव के एक पुत्र का नाम।
वत्सल–(स० वि०) सन्तान के लिये प्रेम पूर्ण, छोटे के लिये स्नेहवान् या कृपालु, साहित्य में वह रस जिसमें माता पिता अपनी सन्तति के लिये प्रेम दिखलाता है।
वत्सा–(स० स्त्री०) बछिया।
वत्सादन–(स०पु०) वृक, भेडिया।
वत्सादनी–(स०स्त्री०) गुडुच, गिलोय।
वत्सासुर–(स० पु०) एक असुर जो कंस का अनुचर था जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
वदतोव्याघात–(स० पु०) कथन का वह दोष जिसमें एक बात कहकर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।
वदन–(स०नपु०) मुख, अगला हिस्सा, कथन, बात कहना।
वदनरोग–(सं० पु०) मुख का रोग।
वदन्य–(स०वि०) देखो वदान्य, उदार।
वदान्य–(स० वि०) उदार, मधुर बोलने वाला।
वदाम–(स० नपु०) बादाम का फल।
वदि–(हि० पुं०) कृष्ण पक्ष।
वदितव्य–(स० वि०) कहने योग्य।
वध–(स०पु०) हत्या, उत्पात, मारण, हनन
वधक–(स० वि०) हिंसक, वध करने वाला, मृत्यु, मरण।
वधदण्ड–(स० पु०) प्राणदण्ड।
वधत्र–(स०नपु०) इन्द्र का वज्र।
वधार्ह–(स०वि०) वध करने योग्य।
वधुका–(स० स्त्री०) पुत्र की स्त्री, पतहू, दुलहिन।
वधुटी–(स० स्त्री०) अविवाहिता कन्या।
वधू–(स० स्त्री०) नारी, स्त्री, पुत्रवधू, पतोहू, नवविवाहिता स्त्री, भार्या, पत्नी।
वधूटी–(स० स्त्री०) पुत्रवधू, पतोहू, दुलहिन, भार्या।
वधूवस्त्र–(स० नपु०) वह वस्त्र जो कन्या को विवाह के समय पहराया जाता है।
वध्य–(स० वि०) वध करने योग्य।
वध्यता–(स०स्त्री०) मारने का भाव।
वध्र, वध्रक–(स०पु०) सीसक, सीसा।
वन–(सं०नपु०) जंगल, राशि, किरण, फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, कुसुम, फूल, जल, पानी, आलय, घर, शंकराचार्य के एक विशेष शिष्यों की उपाधि।
वनकन्द–(स०पु०) जंगली सूरन।
वनकर्णिका–(स०स्त्री०) सलाई का पेड़।
वनकाम–(स०वि०) जंगल में घूमने वाला
वनकुक्कुट–(स०पु०) जंगली मुर्गा।
वनकुञ्जर–(स० पु०) जंगली हाथी।
वनकुण्डली–(स० पु०) जंगली सूरन।
वनकोकिलक–(स० नपु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।
वनक्रीड़ा–(स० स्त्री०) वह खेल जो जंगल में किया जाता है।
वनग–(स०वि०) जंगल में जाने वाला।
वनगज–(स० पु०) जंगली हाथी।
वनगव–(सं० पु०) जंगली गाय।
वनगहन–(स० नपुं०) घना जंगल।
वनगुप्त–(स०पु०) गुप्तचर, भेदिया।
वनगुल्म–(स० पु०) जंगली लता।
वनगो–(स० स्त्री०) नील गाय।
वनगोचर–(सं० पुं०) व्याध।
वनचर–(स०वि०) जंगल में घूमने वाला।
वनज–(स०वि०) जो वन में उत्पन्न हो। (नपु०) अम्बुज, कमल।
वनजीवी–(स०पु०) लकड़हारा।
वनद–(स० पु०) मेघ, बादल।
वनदमन–(सं० पु०) जंगली दौना।
वनदाह–(स०पु०) अग्निसे जंगल जलना।
वनदुर्गा–(स०स्त्री०) तन्त्रोक्त देवी मूर्ति।
वनदेव–(स०पु०) वन का अधिष्ठाता, देवता।
वनद्विप–(स० पु०) जंगली हाथी।
वनाधिपति–(स० स्त्री०) मेघमाला।
वनधेनु–(सं० पुं०) नीलं गाय।
वननीय–(स० वि०) अभिलषित, इच्छा के योग्य।
वनप–(सं०पु०) वनवासी, लकड़हारा।
वनपन्नग–(सं०पु०) जंगली सर्प।
वनपांशुल–(स०पु०) व्याध, शिकारी।
वनपादप–(स० पु०) जंगली वृक्ष।
वनपार्श्व–(स० पु०) जंगल के आस पास का स्थान।
वनपाल–(स०वि०) जंगल का रक्षक।
वनप्रिय–(स० नपुं०) कोकिल, कोयल।
वनबर्हिण–(स० पु०) जंगली मोर।
वनमल्लिका–(स०स्त्री०) सेवती का फूल।
वनमानुष–(हि० पु०) विना पूँछ का बड़ा बन्दर जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता है।
वनमाला–(स०स्त्री०) जंगली फूलों की माला, सब ऋतुओं में होने वाले अनेक प्रकार के फूलों से बनी हुई माला जो श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय है, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं।
वनमालिका–(स०स्त्री०) चमेली का फूल।
वनमाली–(स० पु०) श्रीकृष्ण।
वनराज–(स० पु०) सिंह, शेर।
वनराजी–(स०स्त्री०) वनसमूह।
वनरुह–(स०नपु०) पद्म, कमल।
वनलक्ष्मी–(स०स्त्री०) जंगल की शोभा।
वनवह्नि–दावानल।
वनवास–(स०पु०) जंगल में निवास।
वनवासी–(सं० वि०) बस्ती छोड़कर वन में रहने वाला।
वनस्थ–(स० वि०) वनवासी।
वनस्थली–(सं० स्त्री०) वनभूमि, जंगली प्रदेश।
वनस्पति–(सं० पु०) वह वृक्ष जिसमें फूल न हो केवल फल ही हो, वृक्ष

मात्र, पेड़ पौधे ।
वनस्पतिशास्त्र-(स० पु०) वह शास्त्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि पौधों तथा वृक्षो आदि के क्या क्या रूप और कौन कौन सी जातियाँ हैं।
वनहरि-(स० पु०) सिंह, शेर ।
वनहास-(स० पु०) कुन्द का फूल ।
वनहुताशन-(स०पु०) वनाग्नि ।
वनाखु-(स० पु०) शशक, खरगोश ।
वनाटन-(सं०नपु०) जगल में घूमना ।
वनान्त-(स०पुं०) जगल में का मैदान ।
वनान्तर-(स०नपु०) दूसरा जगल ।
वनाब्जिनी-(स०स्त्री०) बलपद्म ।
वनालक्त-(सं०नपु०) गैरिक, गेरू ।
वनालय-(स०पु०) जगल में का रहने का घर ।
वनाश्रमी-(स० वि०) वानप्रस्थ धर्मा वलम्बी ।
वनाश्रित-(स० वि०) जिसने वानप्रस्थ आश्रम धारण किया हो ।
वनित-(स०वि०) याचित, मागा हुआ ।
वनिता-(स० स्त्री०) प्रियतमा, अनुरक्त स्त्री, औरत, छ वर्णों की एक वृत्ति जिसको तिलका या डिल्ला भी कहते हैं।
वनिताद्विष्-(स०पु०) स्त्रियों से ईर्ष्या करने वाला मनुष्य ।
वनिताभोजी-(स० स्त्री०) नागकन्या ।
वनितामुख-(स० पु०) स्त्री का मुख मण्डल ।
वनिताविलास-(स० पु०) स्त्री सभोग की इच्छा ।
वनिन-(स०वि०) वनवासी, जंगल मे रहने वाला ।
वनी-(स०स्त्री०) वनस्थली, छोटा वन ।
वनीयक-(स०त्रि०) भिक्षुक, मागने वाला ।
वनेचर-(स०वि०)वन मे घूमने वाला ।
वनोद्देश-(स० पु०) वन के बीच का स्थान ।
वनोद्भव-(स०वि०) वन मे उत्पन्न ।
वनोद्भवा-(स० स्त्री०) जगली कपास ।
वनौकस्-(स० पु०) बन्दर, केवाँच ।
वनौघ-(स०पु०) वन समूह ।
वनौषध-(स०स्त्री०) जगली जड़ी बूटी ।
वन्दक-(स०वि०) स्तुति करने वाला ।
वन्दन-(स०नपु०) प्रणाम, स्तुति ।
वन्दनमाला-(स० स्त्री०) तोरण, वन्दनवार ।
वन्दनमालिका-(स०स्त्री०) वह माला जो सजावट के लिये घरो के द्वार पर या मण्डप के चारो ओर बाधी जाती है ।
वन्दनवार-(हिं० स्त्री०) देखो वन्दन मालिका ।
वन्दना-(स०स्त्री०) स्तुति, प्रणाम ।
वन्दनीय-(स०वि०) आदर करने योग्य ।
वन्दी-(हिं० पु०) स्तुति पाठक, मागध, भाट ।
वन्दीपाल-(स० पु०) कारागृह का रक्षक ।
वन्द्य-(स० वि०) वन्दना करने योग्य ।
वन्य-(स० वि०) जगल में उत्पन्न होने वाला, जगली ।
वन्यदमन-(स०नपु०) जगली दौने का फूल ।
वन्यद्वीप-(सं०पु०) जगली हाथी ।
वन्यधान्य-(स०नपु०) तिन्नी का चावल ।
वन्यपक्षी-(सं०पु०) जगली चिड़िया ।
वन्यवृक्ष-(स० पु०) पीपल का पेड़ ।
वन्याशन-(स० त्रि०) जगली फल खाने वाला ।
वन्याश्रम-(स०पु०) देखो वनाश्रम ।
वपन-(स०नपु०) सिर मूड़ना, बीज बोना ।
वपनी-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहा जुलाहे कपड़ा बुनते हैं ।
वपनीय-(स०वि०) बोने योग्य ।
वपा-(स०स्त्री०) छिद्र, छेद, चरबी, बाबी ।
वपु-(हि०पु०) शरीर, देह ।
वपुष्टमा-(स० स्त्री०) काशी राज की कन्या जिसका विवाह परीक्षित के पुत्र जनमेजय से हुआ था ।
वपोदर-(स० वि०) पीवरोदर, तोंद ।
वप्तव्य-(स०वि०) वपनीय, बोने योग्य ।
वप्ता-(स० वि०) बीज बोने वाला ।
वफा-(अ० स्त्री०) निर्वाह, पूर्णता, बात निबाहना, वादा पूरा करना, सुशीलता।
वफात-(अ०स्त्री०) मरण मृत्यु ।
वफादार-(अ०वि०) इमान दारी से काम करने वाला, सच्चा ।
वव-(स० पु०) ज्योतिष में ग्यारह करण के अन्तर्गत प्रथम करण ।
वबा-(अ०स्त्री०) महामारी, छूत का रोग
वबाल-(अ०पु०) बोझ, भार, घोर विपत्ति कठिनाई, पापका फल, ईश्वरीय कोप ।
वभ्रु-(स०पु०) एक यदुवशीय योद्धा का नाम ।
वम, वमन-(स० पु०) उल्टी, कै ।
वमनी-(स०स्त्री०) जलौका, जोंक ।
वमि-(स०स्त्री०) वमन का रोग, वमित-जिसको वमन कराया गया हो ।
वयःक्रम-(स०पु०) आयुष्य, उम्र ।
वयःसन्धि-(स० स्त्री०) बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का काल ।
वयःसम-(स० वि०) समान वय का ।
वय-(स० पु०) तन्तु वाय, जुलाहा, (हि० पु०) उम्र ।
वयन-(स०नपु०) बुनने की क्रिया या भाव ।
वयस-(स०पु०) जीवन काल, अवस्था ।
वयस्क-(स०वि०) अवस्था वाला, पूरी अवस्था को पहुचा हुआ ।
वयस्य-(स० पु०) समान वय का, हमजोली, मित्र ।
वयस्यक-(स०पु०) मित्र, बन्धु ।
वयस्यत्व-(स०नपु०) वयस्य का भाव या धर्म ।
वयस्यभाव-(स० पु०) बन्धुता, सख्यभाव।
वयस्या-(स०स्त्री०) सखी ।
वयःसन्धि-(स० पु०) चढती जवानी ।
वयःसम-(सं० वि०) समान वय वाला ।
वयोगत-(स०नपु०) बुढापा ।
वयोधा-(स० त्रि०) शक्ति, युवा, अन्नदाता ।
वयोवस्था-(स० स्त्री०) जीवन काल ।
वयोवृद्ध-(यशो ०वि०) जो अवस्था मे बड़ा हो ।
वरंडा-(हि० पु०) देखो बरामदा ।
वरंच-(हि०अव्य०) परन्तु, लेकिन, बल्कि ।

वर-(स०नपु०) कुंकुम, केसर, बालक, पति, जमाता (पु०) किसी देवी देवता से मागा हुआ मनोरथ, फल या सिद्धि, (वि०) श्रेष्ठ ।

वरक़-(अ०पु०) पुस्तक का पन्ना, पत्रा, सोने चादी के बहुत महीन पत्तर ।

वरकन्दा-(स०स्त्री०) खिरनी का वृक्ष ।

वरज-(स० वि०) ज्येष्ठ, बड़ा ।

वरजिश-(फा०स्त्री०) व्यायाम, कसरत ।

वरट-(स० पु०) हस, भिड़, वरें ।

वरण-(स० नपु०) किसी काम के लिये किसी व्यक्ति को नियुक्त करना, मगल कार्य के विधान में होता आदि कार्य कर्ताओं को नियुक्त करके उनका सत्कार करना , विवाह में वर को अगीकार करने की विधि , पूजा, अर्चना, सत्कार ।

वरणी-(हिं० स्त्री०) देखो वरुण ।

वरणक-(स० वि०) वरण करने वाला ।

वरणमाल-(स० स्त्री०) विवाह के समय पहराने की माला ।

वरणीय-(स०वि०) प्रार्थनीय,श्रेष्ठ, बड़ा ।

वरण्ड-(स० पुं०) बरामदा, मु हासा, धार का गट्टर ।

वरण्डक-(सं० पु०) हाथी की पीठ पर कसने का हौदा ।

वरतनु-(सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं ।

वरद्-(स० वि०) वर देने वाला, प्रसन्न ।

वरदक्षिणा-(स० स्त्री०) वह धन जो विवाह के समय वर को कन्या के पिता से मिलता है, दहेज ।

वरदा-(सं० स्त्री०) कन्या (वि०) वर देने वाली ।

वरदा चतुर्थी-(स० स्त्री०) माघ शुक्ला चतुर्थी ।

वरदाता-(हि० वि०) वर देने वाला, अभीष्ट फल देने वाला ।

वरदान-(स० नपु०) किसी देवता आदि का प्रसन्न होकर मागी हुई वस्तु का देना , फलप्राप्ति ।

वरदानिक-(स०वि०) वरदान संबधी ।

वरदानी-(स० पु०) मनोरथ पूर्ण करने वाला ।

वरदी-(अ०स्त्री०) वह पहिरावा जो किसी विशेष विभाग के कर्मचारियों के लिये नियत हो ।

वरधर्म-(स०पु०) श्रेष्ठ कर्म, बड़ा काम ।

वरन्-(हि०अव्य०) ऐसा न हो कि, बल्कि ।

वरना-(अ० अव्य०) नहीं तो, ऐसा न हो तो ।

वरनारी-(स०स्त्री०) सुन्दर स्त्री ।

वरनिश्चय-(स० पु०) पति चुनना ।

वरपक्ष-(स०पु०) वरयात्रा, बारात ।

वरपक्षीय- (स०वि०) वर सम्बन्धी ।

वरपीत-(स० पुं०) हरताल ।

वरप्रद-(स०वि०) वर देने वाला ।

वरप्रदान-(स० नपुं०) मनोरथ सिद्ध करना ।

वरप्रभ-(स०वि०) बहुत चमकता हुआ ।

वरप्रस्थान-(स० नपु) वरयात्रा, बारात ।

वरफल-(स०नपु०) श्रेष्ठ फल, नारियल

वरम-(हिं०पु०) देखो वर्म ।

वरयात्रा-(स० स्त्री०) विवाह करने के लिये वर का गाजे बाजे के साथ कन्या के घर जाना, बारात ।

वरयोग्य-(स० वि०) आशीर्वाद दिया या उपहार पाने योग्य ।

वररुचि-(स०पु०) एक प्राचीन वैयाकरण और प्रसिद्ध कवि ।

वरवत्सला-(स० स्त्री०) सास ।

वरवर्ण-(स० पु०) सुवर्ण, सोना, श्रेष्ठ वर्ण, बढ़िया रग ।

वरवर्णिनी-(स० स्त्री०) अत्युत्तमा स्त्री, लाक्षा, लाख, हल्दी, गौरी, लक्ष्मी ।

वरवारण-(स०पु०) सुन्दर हाथी ।

वरसुन्दरी-(स०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं ।

वरही-(हिं०पु०) सोने की एक लबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है ।

वरा-(स०स्त्री०) श्रेष्ठा, हरिद्रा, हल्दी, मद्य ।

वराक-(स० वि०) शोचनीय, नीच ।

वराङ्गना-(स० स्त्री०) सर्वाङ्ग सुन्दर स्त्री ।

वराट-(स० पु०) कपर्दक, कौड़ी, रस्सी, पद्मबीज ।

वराटिका-(स० स्त्री०) कपर्दक, कौड़ी, तुच्छ वस्तु ।

वराड़ी-(स० स्त्री०) एक रागिणी का नाम ।

वरानना-(स०स्त्री०) सुन्दर स्त्री ।

वराम्ल-(स०पु०) करमर्द, करौंदा ।

वरारक-(स० नपु०) हीरक, हीरा ।

वरारोह-(स० पु०) विष्णु ।

वरासन-(स० नपु०) श्रेष्ठ आसन, सिंहासन ।

वरासी- स०स्त्री०) मैला वस्त्र ।

वराह-(स० पु०) विष्णु, एक पर्वत का नाम, शिशुमार, सूँस, अठारह द्वीपों में से एक ।

वराहकन्द-(सं० पु०) वाराहीकन्द ।

वाराहकर्ण-(स०पु०) एक यक्षका नाम ।

वराहकर्णी-(स० स्त्री०) असगन्ध ।

वराहकाली-(स० स्त्री०) हुरहुर का वृक्ष ।

वराहक्रान्ता-(स०स्त्री०) लज्जालु, शूकरी ।

वराह मिहिर-(सं० पु०) ज्योतिष के प्रधान आचार्य, लोगों का विश्वास है कि यह राजा विक्रमादित्य के नव रत्न में से एक थे ।

वराह व्यूह-(स० पु०) प्राचीन काल का एक प्रकार की सेना की रचना ।

वराह शृङ्ग-(स०पु०) शिव, महादेव ।

वराहिका-(स० स्त्री०) केंवाच ।

वराही-(स० स्त्री०) वाराहीकन्द, शूकरी ।

वरिशी-(स०स्त्री०) कँटिया ।

वरिष-(स० नपु०) वत्सर, वर्ष ।

वरिषा-(स०स्त्री०) वर्षा ।

वरिषा प्रिय-(स०पु०) चातक पक्षी ।

वरिष्ठ-(स०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम,विस्तीर्ण ।

वरीधरा-(स०स्त्री०) एक छन्द जिसके पहले दूसरे तथा चौथे चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं ।

वरीषु-(स०पु०) कन्दर्प, कामदेव ।

वरुण-(स०पुं०) एक देवता जो कश्यप के पुत्र थे यह अदिति के गर्भ से उत्पन्न

हुए थे. यह देवताओ के रक्षक तथा जल के अधिपति माने जाते हैं, जल, पानी, सूर्य, एक ग्रह का नाम।
वरुण ग्रस्त–(स०वि०) जल में डूबा हुआ
वरुण ग्रह–(स०पु०) घोड़ों का एक रोग
वरुण देव–(स०पु०) शतभिषा नक्षत्र।
वरुण पाश–(स०पु०) वरुण का अस्त्र, पाश का फन्दा।
वरुण मण्डल–(स० पु०) नक्षत्रो का मण्डल जिसमें रेवती, पूर्वाषाढा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, उत्तरा भाद्रपद और शतभिषा हैं।
वरुणात्मजा–(सं०स्त्री०) वारुणी, मदिरा।
वरुणानी–(स०स्त्री०) वरुण की पत्नी।
वरुणालय, वरुणावास–(स० पु०) समुद्र
वरुणोद–(स०नपु०) सागर, समुद्र।
वरुणेश–(स०पु०) शतभिषा नक्षत्र।
वरूथ–(स०नपु०) तनुत्राण, वख्तर, चर्म, ढाल, फौज, सेना।
वरूथाधिप, वरूथाधिपति–(सं०पु०) सेनापति।
वरूथिनी–(स०स्त्री०) सेना, फौज।
वरेण्य–(स० पु०) शिव, महादेव, (वि०) मुख्य, प्रधान, पूजनीय।
वरेन्द्र–(स०पु०) इन्द्र, राजा।
वरेय–(स०पु०) सूर्य।
वरेयु–(स०वि०) विवाह के लिये कन्या मागने वाला।
वरेश–(स०पु०) सर्वेश्वर, भगवान्।
वरेश्वर–(स०पु०) शिव।
वरोट–(स० नपु०) महुवा।
वरोरु–(स० वि०) सुन्दर जाघवाली स्त्री।
वराह शाखी–(स०पु०) पाकर का वृक्ष।
वर्कट–(सं०पु०) कील, काँटा, अर्गला।
वर्कर–(स०पु०) भेढ का बच्चा, मेमना।
वर्किङ्ग कमिटी–(अ०स्त्री०) कार्य कारिणी समिति।
वर्करीट–(स० पु०) कटाक्ष, दो पहर की गरमी।
वर्ग–(स०पु०) एक तरह के अनेक पदार्थो का समूह, समान धर्म वाले पदार्थो का समूह, व्याकरण में एक ही स्थान से उच्चारण होने वाले व्यञ्जन वर्णों का समूह, प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद, जाति, श्रेणी, दो समान अक या राशियों का गुणन फल, रेखागणित में वह क्षेत्र जिसकी लबाई चौड़ाइ बराबर हो तथा जिसके चारो कोण समकोण हों।
वर्गघन–(स०नपु०) किसी वर्ग राशि का घन फल।
वर्गणा–(स०स्त्री०) गुणन।
वर्गपद–(स०नपु०) वर्ग मूल।
वर्गफल–(स० नपु०) वह अक जो किसी अक को उसी अक के साथ गुणा करने से प्राप्त हो।
वर्गमूल–(स० नपु०) किसी वर्गांक का वह अक जिसको यदि उसीसे गुणा करें तो गुणनफल वही वर्गाङ्क हो।
वर्गलाना–(फ़ा०क्रि०) उसकाना, बहकाना
वर्ग वर्ग–(स० पु०) वर्ग का वर्गफल।
वर्गीय–(स०वि०) वर्ग सबधी।
वर्चटी–(स०स्त्री०) वेश्या, रडी।
वर्चस्–(स०नपु०) तेज, अन्न।
वर्चस्क–(स०नपु०) दीप्ति, तेज।
वर्चस्वी–(स० पु०) चन्द्रमा (वि०) दीप्तियुक्त।
वर्जक–(स०वि०) त्याग करने वाला।
वर्जन–(स० नपु०) त्याग, छोड़ना, मारण, मनाही।
वर्जनीय–(स० वि०) त्याज्य, छोड़ने योग्य, निषिद्ध, मना किया हुआ।
वर्जित–(स० वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
वर्ज्य–(स०वि०) छोड़ने लायक।
वर्ण–(स०पु०) जाति, यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, पदार्थों के लाल, काले, पीले आदि का भेद, रग, भेद, प्रकार, यश, कीर्ति, गुण, स्तुति, गीतक्रम, चित्र, तलवार, रूप, अक्षर, व्याकरण के अनुसार आकारादि शब्दो के चिह्न या सकेत।
वर्णकण्ट–(स० नपु०) तुत्थ, तूतिया।
वर्णकदण्डक–(स० पु०) चित्रकार की कूँची, एक प्रकार का छन्द।
वर्णक्रम–(सं० पुं०) जाति परपरा, अक्षर श्रेणी।
वर्णखण्डमेरु–(स० पु०) छन्द शास्त्र की वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि इतने वर्णों से कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त में कितने गुरु और कितने लघु वर्ण होंगे।
वर्णगत–(स० वि०) वर्ण सम्बन्धी।
वर्णचारक–(स० त्रि०) चित्रकार।
वर्णज–(स०वि०) वर्णोद्भव, जाति।
वर्णज्येष्ठ–(स० पु०) ब्राह्मण।
वर्णता–(स० स्त्री०) वर्णका भाव या धर्म।
वर्णतूलि–(स०स्त्री०) चित्रकार की कूँची।
वर्णत्व–(स०नपु०) वर्ण का भाव या धर्म।
वर्णद–(स०वि०) रग देने वाला।
वर्णदाता–(स०वि०) वर्णदायक।
वर्णदात्री–(स० स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।
वर्णदूषक–(स० त्रि०) जाति का नष्ट करने वाला।
वर्णधर्म–(स० पु०) वर्णाश्रम धर्म।
वर्णन–(स० नपु०) गुणकीर्तन, चित्रण, रगना, विस्तार सहित किसी बात को कहना।
वर्णनष्ट–(स० पु०) पिंगल शास्त्र के अनुसार वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के अमुक सख्यक भेद का रूप लघु गुरु वर्ण के अनुसार किस प्रकार का होगा।
वर्णना–(स०स्त्री०) गुणकथन, स्तुति, प्रशसा
वर्णनीय–(स०वि०) वर्णन करने योग्य।
वर्णपताका–(स०स्त्री०) पिंगल शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों में से कौन सा ऐसा भेद है जिसमें इतने गुरु तथा इतने लघु वर्ण होंगे।
वर्णपाताल–(स०पु०) पिंगल शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णों के कुल कितने वृत्त हो सकते हैं और उनमें से कितने लघ्वादि कितने

लघ्वान्त, कितने गुर्वादि, कितने गुर्वान्त तथा कितने सर्वगुरु और कितने सर्वलघु होंगे ।
वर्णपात्र-(स॰नपु॰) चित्रकार का रग रखने का पात्र ।
वर्णप्रत्यय-(स॰पु॰) पिंगल शास्त्र की वह क्रियायें जिनके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णवृत्तो के कितने भेद हो सकते हैं, उनके स्वरूप क्या होंगे आदि ।
वर्णप्रस्तार-(स॰ पु॰) पिंगल शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्ण के वृत्तो के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे ।
वर्णभेद-(स॰पु॰) रग का भेद ।
वर्णमात्रिका-(स॰ स्त्री॰) सरस्वती ।
वर्णमाला-(स॰स्त्री॰) वर्ण, श्रेणी, किसी भाषा के क्रम से लिखे हुए अक्षर ।
वर्णयितव्य-(स॰ वि॰) वर्णन करने योग्य ।
वर्णराशि-(सं॰पु॰) वर्णसमूह ।
वर्णरेखा-(स॰स्त्री॰) खड़िया ।
वर्णलिपि-(स॰ स्त्री॰) अक्षर प्रकाशक लेखन प्रणाली ।
वर्णवती-(स॰स्त्री॰) हरिद्रा, हल्दी ।
वर्णवर्ति-(स॰स्त्री॰) लेखनी, कलम ।
वर्णवादी-(स॰वि॰) प्रशसा करने वाला ।
वर्णविकार-(स॰पु॰) निरुक्त के अनुसार शब्दो में एक वर्ण का बिगड़ कर दूसरा वर्ण हो जाना ।
वर्णविचार-(स॰पु॰) नवीन व्याकरण का वह विभाग जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और सन्धि आदि के नियमों का वर्णन रहता है, प्राचीन वेदाङ्ग में यह विषय "शिक्षा" कहलाता था, और व्याकरण से स्वतन्त्र माना जाता था ।
वर्णविपर्यय-(सं॰ पु॰) निरुक्त के अनुसार शब्दो के वर्णों का उलट फेर होना ।
वर्णविलोडक-(स॰ पु॰) वह जो दूसरे के लिखे हुए लेख को अपना बतलाता हो ।
वर्णवृत्त-(स॰ नपु॰) वह पद्य जिसके चरणों मे वर्णों की सख्या तथा लघुगुरु के क्रमों में समानता हो ।
वर्णश्रेष्ठ-(स॰ पु॰) चारो वर्णों में श्रेष्ठ ब्राह्मण ।
वर्णसंघाट-(स॰ पु॰) वर्णमाला ।
वर्णसघात-(स॰ पु॰) वर्णसमूह ।
वर्णसंयोग-(स॰पु॰) सवर्ण विवाह ।
वर्णसंसर्ग-(स॰ पु॰) असवर्ण विवाह ।
वर्णसङ्कर-(स॰ पु॰) ब्राह्मणादि वर्ण के अनुलोम या प्रतिलोम से उत्पन्न जाति, व्यभिचार से उत्पन्न जाति, दोगला ।
वर्णसूची-(स॰ स्त्री॰) छन्द शास्त्र की वह क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तो की सख्या की शुद्धता तथा उनके भेदो में आदि अन्त लघु, और आदि अन्त गुरु की सख्या जानी जाती है ।
वर्णस्थान-(स॰ नपु॰) वर्ण या शब्द आदि का उच्चारण स्थान ।
वर्णा-(स॰ स्त्री॰) आढकी, अरहर ।
वर्णाङ्का-(स॰स्त्री॰) लेखनी, कलम ।
वर्णाट-(स॰पु॰) चित्रकार, गवैया ।
वर्णाश्रम-(स॰पु॰)चारो वर्ण का आश्रम
वर्णाश्रमधर्म-(स॰ पु॰) ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चारो वर्ण आश्रम में रहकर जिस कर्म द्वारा ऐहिक और पारलौकिक कल्याण प्राप्त करते हैं ।
वर्णिक-(स॰ पु॰) लेखक ।
वर्णिक वृत्त-(स॰पु॰) वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में वर्णों की सख्या तथा गुरु लघु के स्थान समान हों ।
वर्णित-(स॰वि॰) वर्णन किया हुआ, कहा हुआ ।
वर्णी-(हिं॰ पु॰) लेखक, चित्रकार, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण ।
वर्ण्य-(सं॰ वि॰) वर्णन करने योग्य, (पु॰) प्रस्तुत विषय ।
वर्तक-(स॰ नपुं॰) बटुआ ।
वर्तका-(स॰ स्त्री॰) वर्तक पक्षी, बटेर ।
वर्तन-(स॰ नपु॰) व्यवसाय, रोज़गार, जीवन वृत्ति, परिवर्तन, उलटफेर, स्थिति, ठहराव, स्थापन, रखना, व्यवहार, बरताव, पात्र, बरतन, सिल बट्टे पर पीसना ।
वर्तना-(हि॰क्रि॰) देखो बरतना ।
वर्तनि-(स॰पु॰)शुद्ध राग का एक भेद ।
वर्तनी-(स॰स्त्री॰)बटने की क्रिया, पिसाई ।
वर्तमान-(स॰पु॰) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया अभी चली जाती है समाप्त नहीं हुई है, वृत्तान्त, समाचार, चलता व्यवहार (वि॰) जो चल रहा हो, आधुनिक, विद्यमान, उपस्थित, हाल का, मौजूद, साक्षात् ।
वर्तमानता-(स॰स्त्री॰) मौजूदगी ।
वर्ति-(स॰ स्त्री॰) दीपशिखा, बत्ती, अजन, उबटन, गोली दीप, दीया, बटी ।
वर्तिक-(स॰पु॰) बटेर पक्षी ।
वर्तिका-(स॰ स्त्री॰) बटेर, बत्ती, शलाका, सलाई ।
वर्तित-(स॰वि॰) सम्पादित, चलाया हुआ, किया हुआ, जारी किया हुआ, दुरुस्त किया हुआ ।
वर्तितव्य-(स॰वि॰) स्थिति के योग्य ।
वर्ती-(हि॰ वि॰) बरतने योग्य, स्थिर रहने वाला ।
वर्तिष्णु-(स॰वि॰) बरतने योग्य ।
वर्तुल-(स॰वि॰) वृत्ताकार, गोल, (नपु॰) मटर, गाजर, सोहागा ।
वर्त्म-(स॰ पु॰) मार्ग, पथ, गाड़ी के पहिये की लकीर, आधार, आख की पलक, किनारा, बारी ।
वर्दी-(हिं॰ स्त्री॰) देखो वरदी ।
वर्धक-(स॰वि॰) पूरक, बढाने वाला, काटने वाला ।
वर्धकि, वर्धकी-(स॰पु॰) त्वष्टा, रथकार, बढ़ई ।
वर्धन-(स॰वि॰) बढाने वाला (नपु॰) वृद्धि, उन्नति, (पु॰) बढाना, छीलना, पूर्ति ।
वर्धनी-(स॰ स्त्री॰) सम्मार्जनी, झाड़ू, कमण्डलु ।
वर्धनीय (स॰ वि॰) बढाने योग्य ।
वर्धापक-(स॰वि॰) कर्णवेध की क्रिया करने वाला ।

वर्धापन-(सं०नपु०) कर्णवेध, कनछेदन।
वर्धमान-(सं० वि०) बढने वाला, बढता हुआ, (पु०) विष्णु, रेंड़ी का पेड़, एक वर्णवृत्त का नाम।
वर्धित-(सं० वि०) वृद्धिप्राप्त, बढ़ा हुआ कटा हुआ, पूर्ण, प्रसुत, उत्पादक
वर्धिष्णु-(सं०वि०) बढने वाला।
वर्धी-(सं०स्त्री०) चमडे की रस्सी, बद्धी नामक आभूषण।
वर्ध्म-(सं० पु०) आत उतरने का रोग।
वर्म-(सं०पु०) तनुत्राण, कवच, बख्तर।
वर्मकण्टक-(सं० पु०) पित्तपापड़ा।
वर्मवत्-(सं०वि०) बख्तर पहरे हुए।
वर्महर-(सं०वि०) कवचधारी।
वर्मा-(सं०पु०) क्षत्रियों की उपाधि जो नाम के अन्त में लगाई जाती है।
वर्मिक-(सं०वि०) कवचधारी।
वर्मित-(सं०वि०) कवचधारी।
वर्य-(सं०वि०) प्रधान, श्रेष्ठ।
वर्या-(सं०स्त्री०) कन्या।
वर्वर-(सं० नपु०) पीत चन्दन, बोल, घुंघराले बाल, एक देश का नाम, (वि०) दुष्ट, नीच।
वर्वरा-(सं०स्त्री०)एक प्रकार की मक्खी।
वर्ष-(सं० पु०) किसी द्वीप का प्रधान भाग, वृष्टि वर्षा, मेघ, बादल, संवत्सर, साल, बारह महीने का काल।
वर्षकर-(सं० पु०) मेघ, बादल।
वर्षकरी-(सं० स्त्री०) झींगुर।
वर्षकाम-(सं० पु०) वृष्टि की कामना करने वाला।
वर्षकामेष्टि-(सं० पु०) वर्षा होने के लिये किया जाने वाला यज्ञ।
वर्षकाली-(सं०स्त्री०) जीरक, जीरा।
वर्षकेतु-(सं० पु०) लाल पुनर्नवा।
वर्षकोष-(सं० पु०) देवज्ञ, ज्योतिषी।
वर्षगाँठ-(हि०पुं०) जन्म दिन का उत्सव।
वर्षघ्न-(सं० पु०) पवन।
वर्षज-(सं०वि०) वृष्टि से उत्पन्न।
वर्षण (सं०नपु०) वृष्टि, पानी का बरसना।
वर्षधर-(सं० पु०) मेघ, बादल।

वर्षपति-(सं०पु०) संवत्सर का अधिपति।
वर्षप्रिय-(सं०पु०)चातक पक्षी, पपीहा।
वर्षफल-(सं०नपु०) फलित ज्योतिष में जातक के अनुसार वह कुण्डली जिसमें किसी वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण रहता है।
वर्षवृद्ध-(सं०वि०) जो उम्र में बड़ा हो।
वर्षवृद्धि-(सं०स्त्री०) वय की वृद्धि।
वर्षशत-(सं०नपु०) सौ वर्ष।
वर्षसहस्र-सं०त्रि०) हजार वर्ष।
वर्षा-(सं०स्त्री०) पानी बरसने का मौसम, पानी बरसने की क्रिया, वर्षा होना- किसी वस्तु का अधिक परिमाण से प्राप्त होना।
वर्षाकाल-(सं० पु०) बरसात।
वर्षाकालीन-(सं० वि०) बरसाती।
वर्षागम-(सं०पु०) वर्षा ऋतु का आगमन।
वर्षाङ्ग-सं०पु०) मास, महीना।
वर्षाचर-(सं०वि०) वर्षा में घूमने वाला।
वर्षाधृत-(सं०वि०) वर्षा काल मे प्राप्त।
वर्षाप्रिय-(सं० पुं०) पपीहा।
वर्षाबीज-(सं०नपु०) मेघ, बादल।
वर्षाभव-(सं०वि०) वर्षा में उत्पन्न।
वर्षाभू-(सं०पु०) इन्द्रगोप नामक कीड़ा (वि०) वर्षा मे उत्पन्न होने वाला।
वर्षामद-(सं०पुं०) मयूर, मोर।
वर्षाम्बु-(सं०नपु०) वर्षा का जल।
वर्षायस-(सं० वि०) अति वृद्ध।
वर्षारात्र-(सं० पु०) वर्षाकाल की रात।
वर्षार्चि-(सं० पु०) मंगल ग्रह।
वर्षाल-(सं० पु०) फतिंगा।
वर्षावत्-(सं०वि०) वर्षा के समान।
वर्षावसान-(सं०पु०) शरद ऋतु।
वर्षासमय-(सं०पु०) वर्षाकाल।
वर्षाहिक-(सं० पु०) बरसाती साप।
वर्षिक-सं० वि०) वर्ष संबधी।
वर्षिता-(सं०स्त्री०) बरसने वाला।
वर्षिष्ठ-(सं० वि०) बड़ा बूढा, अत्यन्त बलवान्।
वर्षीका-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का छन्द।
वर्षीय-(सं०वि०) वर्ष सम्बधी।
वर्षुक-(सं० वि०) बरसने वाला।

वर्षेश-(सं०पु०) वर्ष का स्वामी।
वर्ष्म-(सं०नपु०) शरीर, प्रमाण।
वर्ष्मवत्-(सं०वि०) शरीर के समान।
वर्ष्मवीर्य-(सं०नपु०) शारीरिक बल।
वर्ह-(सं०नपु०) मोर का पख, मोर।
वर्हण-(सं०नपु०) पत्ता।
वर्हिण-(सं०पु०) मयूर, मोर।
वर्हिणवाहन-(सं० पु०) कार्तिकेय।
वर्ही (हि०स्त्री०) मयूर, मोर।
वल-(सं०पु०) मेघ, एक असुर का नाम जो बृहस्पति के हाथ से मारा गया था।
वलती-(सं०स्त्री०) वह मण्डप जो घर के शिखर पर बना हो, रावटी।
वलद्विष्-(सं०पु०) इन्द्र।
वलन-(सं०नपु०) ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, नक्षत्र आदि का सत्यनाश से हटकर चलना या विचलन।
वलनांश-(सं०नपु०) ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह का अयनाश से हट कर चलने की अथवा वक्र गति की दूरी का अश।
वलनाशन,वलनिसूदन-(सं०पु०)इन्द्र।
वलन्तिका-(सं०स्त्री०) सगीत शास्त्रोक्त स्वर क्रम का भेद।
वलभी-(सं० स्त्री०) घर की चोटी, घर के शिखर पर का मण्डप, एक प्राचीन राजवंश का नाम।
वलम्ब-(सं०पु०) सीधी रेखा के ऊपर खड़ी हुई लब रेखा।
वलय-(सं० पु० नपु०) मण्डल, वेष्टन, कंकण, चूड़ी।
वलयित-(सं०वि०) घिरा हुआ।
वलवला-(अ० पु०) उमंग, आवेश।
वलसूदन-(सं० पु०) इन्द्र।
वलाट-(सं०पु०) मुद्ग, मूग।
वलाहक-(सं०पु०) मेघ, बादल, पर्वत, एक दैत्य का नाम।
वलि-(सं०पु०) रेखा, लकीर, पेट में पड़ी हुई सिकुड़न, देवी देवता को अर्पण करने की वस्तु एक प्रकार का बाजा, श्रेणी, पक्ति,राजकर, छाजन की ओलती, एक दैत्य जो प्रह्लाद का

पौत्र था जिसको विष्णु ने वामन का अवतार लेकर छला था।
वलिक-(स०पु०) ओरी, ओलती।
वलित-(स० वि०) बल खाया हुआ, लचका हुआ, झुकाया या मोड़ा हुआ, आवेष्टित, लिपटा हुआ, सिकुड़ा हुआ, ढपा हुआ, युक्त।
वलिमुख-(सं०पु०) वानर, बन्दर।
वली-(स० स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, रेखा, लकीर, झुर्री, शिकन, (अ०पु०) स्वामी, मालिक, अधिपति,शासक,साधू,फकीर।
वलीअहद-(अ०पु०) युवराज।
वलीमुख-(स०पु०) बन्दर।
वल्क-(सं० पु०) वल्कल, छाल।
वल्कतरु-(स०पु०) सुपारी का वृक्ष।
वल्कद्रुम-(स० पु०) भोजपत्र का पेड़।
वल्कल-(स० नपु०) वृक्ष की छाल, इसका बना हुआ वस्त्र।
वल्कली-(सं० वि०) वल्कलधारी, छाल का वस्त्र पहरने वाला।
वल्गन-(स०नपु०)घोड़े की दुलकी चाल।
वल्गु, वल्गुज-(स०पु०) छाग, बकरी।
वल्गुपत्र-(स० पु०) वनमूंग।
वल्गुल-(स० पु०) शृगाल, सियार।
वल्गुली-(स०स्त्री०) चमगादड़, पिटारा।
वल्द-(अ०पु०) पुत्र, बेटा, किसी मनुष्य के परिचय के लिये उसके नाम के आगे यह शब्द लगाया जाता है।
वल्दियत-(अं०स्त्री०)पिता के नाम का परिचय।
वल्मीक-(स०पु०) दीमक का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर, बाबी (पुं०) वल्मीकि ऋषि।
वल्मीकि-(स०पु०) देखो वल्मीक।
वल्लक-(स०पु०) एक प्रकार का समुद्री जन्तु।
वल्लकी-(स०स्त्री०) वीणा, बीन।
वल्लभ-(स०वि०) प्रिय, प्यारा, (पु०) मालिक, अध्यक्ष, अति प्रिय व्यक्ति, प्यारा मित्र, नायक, पति, वल्लभ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध अध्यक्ष।
वल्लभा-(स०स्त्री०) प्यारी स्त्री, (वि०) प्रियतमा, प्यारी।
वल्लभाचार्य-(स० पु०) वल्लभाचारी वैष्णव सम्प्रदाय के प्रतिष्ठाता एक आचार्य।
वल्लभी-(स०पु०) देखो वलभी।
वल्लर-(स० नपु०) मजरी, कुज।
वल्लरि वल्लरी-(सं० स्त्री०) वल्ली, मजरी, लता, एक प्रकार का बाजा।
वल्लव-(स०पु०) अज्ञातवास के समय भीमसेन ने यह नाम अपना रक्खा था।
वल्लाह-(अ० अव्य०) ईश्वर की शपथ, खुदा की कसम, सचमुच।
वल्लि-(स०स्त्री०) लता, पृथ्वी।
वल्लिका-(स०स्त्री०) पोई का साग।
वल्ली-(स०स्त्री०) लता, अजमोदा।
वल्लुर-(स० नपु०) निर्जन या दुर्गम स्थान।
वल्लूर-(स०नपु०) सूखा मास, सुअर का मास, ऊसर भूमि, उजाड़ जगह, जगल।
वल्वज-(स०पु०) उलूखल, ओखली।
वल्वल-(स० पु०) एक दैत्य जिसको बलरामजी ने मारा था।
वव-(सं० पु०) फलित ज्योतिष के अनुसार ग्यारह करणों में से एक।
वव्र-(स०वि०) वेष्टित, घेरा हुआ।
वशंवद-(स० वि०) वशीभूत (पु०) दास, आज्ञाकारी।
वश-(स०पुं०) इच्छा, चाह, एक व्यक्ति का दूसरे पर प्रभाव, इख्तियार, काबू, अधिकार, शक्ति की पहुँच, वेश्याओं के रहने का स्थान।
वशकर-(स०वि०) वशीभूत।
वशका-(सं०स्त्री०)वश में लाई हुई स्त्री।
वशक्रिया-(स०स्त्री०) वशीकरण।
वशग-(स०वि०) वशीभूत।
वशगत्व-(स० नपु०) देखो वशता।
वशगमन-(स०नपु०) वशीभूत होना।
वशगा-(सं० स्त्री०) वशीभूत स्त्री।
वशगामी-(सं०वि०) वश में लाया हुआ।
वशता-(स०स्त्री०)वश का भाव या धर्म।
वशनीय-(स०वि०)वश में करने योग्य।
वशवर्ती-(स०वि०) वशीभूत, जो दूसरे के वश में हो।
वशा-(स० स्त्री०) बाझ स्त्री, पत्नी, पति की बहन, ननद, वशीभूता।
वशानुग-(स०वि०)वशीभूत,आज्ञाकारी।
वशिता-(स०स्त्री०) अधीनता, तावेदारी, मोहने की क्रिया या भाव, मोहन।
वशित्व-(सं०नपु०) योग के आठ ऐश्वर्यों में से एक जिसके सिद्ध होने पर साधक सबको अपने वश में कर लेता है।
वशिनी-(स० स्त्री०) शमी का वृक्ष।
वशिमा-(सं० स्त्री०) योग की आठ सिद्धियों में से एक।
वशिष्ठ (स०पु०) देखो वसिष्ठ।
वशी-(स० वि०) जितेन्द्रिय, अपने को वश में करने वाला, अधीन, वश में लाया हुआ।
वशीकरण-(स०नपु०) मणि, मन्त्र या औषध द्वारा किसीको अपने वश में करने का प्रयोग।
वशीकृत-(स० वि०) मोहित, मुग्ध।
वशीभूत-(स०वि०) वश में लाया हुआ, अधीन।
वश्य-(स० वि०) किसी की इच्छा के अधीन, (पु०) दास, सेवक।
वश्यता-(स०स्त्री०)वश में होनेकी अवस्था।
वश्यत्व-(सं० नपु०) देखो वश्यता।
वश्या-(सं० स्त्री०) वशीभूत स्त्री, गोरोचना।
वषट्-(स०अव्य०) इस शब्द का उच्चारण अग्नि में आहुति देते समय होता है।
वषट्कार-(सं० पु०) देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ।
वष्कयणी-(स०स्त्री०) बकेना गाय।
वसता-(हि० पु०) हरे रग की एक चिड़िया।
वसंती-(हिं० पु०) सरसों के फूल का रग।
वसअत-(अ० स्त्री०) विस्तार, फैलाव। समाई, सामर्थ्य, शक्ति, चौड़ाई।
वसती-(स० स्त्री०) निकेतन, घर, बस्ती आबादी।
वसन-(स०नपु०) वस्त्र, आवरण, ढापने

की वस्तु, निवास, स्त्रियों की कमर का एक आभूषण।
वसनार्णवा-(सं० स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
वसन्त-(सं० पु०) चैत्र और वैशाख का महीना, एक राग का नाम, एक ताल का नाम, फूलों का गुच्छा, मसूरिका रोग, चेचक।
वसन्तजा-(सं० स्त्री०) सफेद जूही।
वसन्ततिलक-(सं० नपु०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
वसन्ततिलका-(सं० स्त्री०) एक वर्ण-वृत्त का नाम।
वसन्तदूत-(सं० पु०) चैत्र मास, कोयल, आम का वृक्ष।
वसन्तदूती-(सं० स्त्री०) पाटली वृक्ष, माधवी लता, कोयल।
वसन्त पञ्चमी-(सं० स्त्री०) माघ शुक्ला पचमी, श्री पचमी।
वसन्तबन्धु-(सं० पु०) कामदेव।
वसन्तभैरवी-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
वसन्तमारू-(सं० पु०) सपूर्ण जाति का एक राग।
वसन्तमालिका-(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम।
वसन्तरोग-(सं० पु०) मसूरिका, चेचक।
वसन्तललना-(सं० स्त्री०) सफेद जूही।
वसन्तवाक्-(सं० पु०) चौदह तालों में से एक ताल का नाम।
वसन्तवितल-(सं० पु०) विष्णु की एक मूर्ति।
वसन्तव्रण-(सं० नपु०) मसूरिका रोग।
वसणतव्रत-(सं० पु०) कोकिल, कोयल।
वसन्तशेखर-(सं० पु०) किन्नर का एक भेद।
वसन्तसख-(सं० पु०) कामदेव।
वसन्तोत्सव-(सं० नपु०) फाल्गुन का उत्सव, होली का उत्सव, एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसन्त पचमी के दूसरे दिन होता था।
वसमा-(अ० पु०) नील का पत्ता, उबटन, खिजाब, एक प्रकार का छपा कपड़ा जो चादी के वर्क लगा कर छापा जाता है।
वसवास-(अ० पु०) भ्रम, सन्देह, भुलावा
वसवासी-(अ० वि०) संशयात्मक, विश्वास न करने वाला।
वसा-(सं० स्त्री०) मेदा धातु, चरबी-
वहस-(हिं० पु०) वृषभ, बैल।
बसादनी-पीला शीशम।
वसामेह-(सं० पुं०) एक प्रकार का मूत्र रोग जिसमें पेशाब के साथ चरबी गिरती है।
वसारोह-(सं० पु०) छत्रक, कुकुरमुत्ता
वसि-(सं० पु०) वसन, वस्त्र।
वसिक-(सं० वि०) शून्य।
वसितव्य-(सं० वि०) पहरने लायक।
वसिष्ठ-(सं० पु०) एक प्रसिद्ध मन्त्र द्रष्टा ऋषि, सप्तर्षि मण्डल को एक तारा
वसिष्ठपुराण-(सं० पु०) एक उपपुराण का नाम।
वसिष्ठसंहिता-(सं० स्त्री०) एक स्मृति का नाम।
वसीक़ा-(अ० पु०) वह धन जो सरकारी खज़ाने में इस उद्देश्य से जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करने वाले के सम्बन्धियों को मिला करे अथवा धर्मार्थ कार्य में लगाया जावे।
वसीयत-(अ० स्त्री०) वह व्यवस्था जो मरने के समय मनुष्य अपनी सम्पत्ति के विभाग प्रबंध आदि के विषय में लिख देता हो, विल्।
वसीयतनामा-(अ० पु०) मृत्यु लेख, विल्।
वसीला-(अ० पु०) सबध, रिया, द्वारा, आश्रय, सहारा।
वसुधरा-(हिं० स्त्री०)देखो वसुन्धरा, पृथ्वी।
वसु-(सं० पु०) अगस्त्य का वृक्ष, अग्नि, किरण, देवताओं का एक गण जिसके अन्तर्गत आठ देवता हैं यथा- धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास, कुवेर, शिव, सूर्य, वृक्ष, साधुपुरुष, सज्जन, कुलीन कायस्थ की एक पद्धति विशेष, छप्पय का एक भेद, रत्न, धन, सुवर्ण, जल, (स्त्री०) दक्षप्रजापति की एक कन्या का नाम (वि०) मधुर। (पु०) आठ की सख्या।
वसुक-(सं० नपु०) वास्तूक, बथुआ, बड़ी मौलसिरी।
वसुचरण-(सं० पु०) डगण के चौथे भेद का नाम जिसके आदि में गुरु तथा बाद में दो लघु वर्ण होते हैं।
वसुचारुक-(सं० नपु०) सुवर्ण, सोना।
वसुत्व-(सं० नपु०) वसु का भाव या धर्म
वसुद-(सं० पु०) कुवेर।
वसुदा-(सं० स्त्री०) माली राक्षस की पत्नी का नाम, पृथ्वी।
वसुदान-(सं० नपु०) धनदान।
वसुदेव-(सं० पु०) श्रीकृष्ण के पिता का नाम।
वसुदेवता-(सं० स्त्री०) धनिष्ठा नक्षत्र।
वसुदेवात्मज-(सं० पु०) श्रीकृष्ण।
वसुधर्मिका-(सं० स्त्री०) स्फटिक, बिल्लौर।
वसुधा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी,(वि०) धनदाता।
वसुधाधर-(सं० पु०) पर्वत, विष्णु।
वसुधाधिप-(सं० पु०) राजा, पृथ्वीपति।
वसुधान-(सं० पु०) पृथ्वी।
वसुधारा-(सं० स्त्री०) कुबेर की पुरी, अलका, जैन शक्ति भेद।
वसुधारी-(सं० वि०) सम्पत्तिशाली।
वसुधासुत-(सं० पु०) नरकासुर।
वसुनीत-(सं० पु०) ब्रह्मा।
वसुनीथ-(सं० पु०) अग्नि।
वसुन्धरा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
वसुन्धराधर-(सं० पु०) पर्वत।
वसुन्धरेश-(सं० पु०) पृथ्वीपति।
वसुन्धरेशा-(सं० स्त्री०) श्रीराधा।
वसुपति-(सं० पु०) धन पालक।
वसुपाल-(सं० पु०) पृथ्वीपति, राजा।
वसुप्रद-(सं० पु०) कुवेर, शिव, स्कन्द के एक अनुचर का नाम।
वसुप्रभा-(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम।
वसुप्राण-(सं० पु०) अग्नि।

वसुभ–(सं० नपुं०) धनिष्ठा नक्षत्र।
वसुभरित–(सं० वि०) धनपूर्ण।
वसुमती–(सं०स्त्री०) पृथ्वी, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ वर्ण होते हैं
वसुरुचि–(सं०पुं०) एक गन्धर्व का नाम
वसुरूप–(सं०पुं०) शिव, महादेव।
वसुरेता–(हिं०पुं०) शिव, महादेव, अग्नि
वसुवाह–(सं० पुं०) धनी।
वसुश्री–(सं०स्त्री०) स्कन्द की एक मातृका का नाम, वसुसारा।
वसुस्थली–(सं०स्त्री०) कुबेर की नगरी, अलका पुरी।
वसुहंस–(सं० पुं०) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।
वसूक–(सं०पुं०) अगस्त्य का वृक्ष।
वसूत्तम–(सं०त्रि०) बहुत बड़ा अमीर।
वसूमती–(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
वसूया–(सं०स्त्री०) धन की कामना।
वसूल–(अ० वि०) लब्ध, प्राप्त, जो मिला हो, चुकाया हुआ, देखो उसूल।
वसूली–(अ० स्त्री०) दूसरे से धन चुकता कराने की क्रिया, प्राप्ति।
वस्त–(हिं०पुं०) देखो वस्तु, चीज।
वस्तव्य–(सं० वि०) वास के योग्य।
वस्तव्यता–(सं० स्त्री०) वस्तव्य का भाव या धर्म।
वस्ति–(सं०स्त्री०) पेट का नाभी के नीचे का भाग, पेड़ू, मूत्राशय, पिचकारी।
वस्तिकर्म–(सं०पुं०) गुदा, योनि अथवा लिंगेन्द्रिय मार्गों से पिचकारी द्वारा औषधि का जल चढाने की क्रिया।
वस्तिवात–(सं०पुं०) एक मूत्र रोग।
वस्तु–(सं०नपुं०, वह जिसकी सत्ता या अस्तित्व हो, जो सचमुच हो, गोचर पदार्थ, चीज़, वृत्तान्त, कथा वस्तु, नाटक का आख्यान।
वस्तुकी–(सं०नपुं०) बथुआ का साग।
वस्तुज्ञान–किसी वस्तु का ज्ञान, तत्वज्ञान
वस्तुतः–(सं०अव्य०) यथार्थ में, सचमुच
वस्तुनिर्देश–(सं०पुं०) नाटक के मंगला चरण का एक भेद जिसमें उसकी कथा की कुछ झलक दिखलाई जाती है।

वस्तुबल–(सं० नपुं०) किसी पदार्थ का गुण।
वस्तुभाव–(सं०पुं०) वस्तु का धर्म या गुण
वस्तुभेद–(सं० पुं०) वस्तु का प्रकार।
वस्तुवाद–(सं० पुं०) वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार संसार की सत्ता उसी रूप में मानी जाती है जैसी सामान्य मनुष्य को दृष्टिगोचर हो, यह सिद्धान्त अद्वैतवाद से विपरीत है।
वस्तुविचार–(सं० पुं०) वस्तु का गुण, निर्धारण।
वस्तुशासन–(सं०नपुं०) वस्तुनिर्णय।
वस्तुशून्य–(सं० वि०) द्रव्यहीन।
वस्तूपमा–(सं०स्त्री०) उपमा अलंकार का एक भेद।
वस्त्र–(सं० नपुं०) कपड़ा।
वस्त्रकुट्टिम–(सं० नपुं०) खेमा।
वस्त्रगृह–(सं० नपुं०) खेमा, छोलदारी।
वस्त्रग्रन्थि–(सं० पुं०) इजारबन्द।
वस्त्रघर्घरी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का बाजा।
वस्त्रद–(सं० वि०) वस्त्र देने वाला।
वस्त्रपरिधान–(सं०नपुं०) कपड़ा पहनना
वस्त्रपुत्रिका–(सं०स्त्री०) कपड़े की गुड़िया
वस्त्रभूषणा–(सं० स्त्री०) मजीठ।
वस्त्रयुग्म–(सं०नपुं०) कपड़े का जोड़ा
वस्त्ररञ्जक–(सं०पुं०) कुसुम का वृक्ष।
वस्त्रविलास–(सं० पुं०) अच्छा कपड़ा पहन कर गर्व करना।
वस्त्रवेश–(सं०पुं०) कपड़े का बना हुआ घर, खेमा।
वस्त्रवेष्टित–(सं०वि०) कपड़ा लपेटा हुआ
वस्त्रागार–(सं०पुं०) कपड़े की दूकान।
वस्त्राञ्चल–(सं०नपुं०) कपड़े का छोर।
वस्त्रापहारक–(सं०पुं०) कपड़ा बुननेवाला
वस्त्री–(सं०त्रि०) कपड़ा पहने हुए।
वस्त्रपूत–(सं०वि०) कपड़े से छाना हुआ
वस्त्रभवन–(सं०पुं०) खेमा, रावटी।
वस्न–(सं०पुं०) वल्कल, छाल, द्रव्य।
वस्फ–(अं० पुं०) प्रशंसा, स्तुति, विशेषता, गुण।
वस्ल–(अं०पुं०) संयोग, मेल, मिलाप।

वह–(हिं०सर्व०) इस शब्द से किसी तीसरे मनुष्य का संकेत होता है, कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम का एक वचन (बहुवचन–'वे') इस शब्द से दूर या परोक्ष की वस्तु का निर्देश होता है, (सं० वि०) वाहक, ले जाने वाला (सं०पुं०) घोड़ा, वायु, मार्ग।
वहन–(सं० नपुं०) बेड़ा, भार ले जाने का कार्य अपने ऊपर लेना, उठाना, किसी वस्तु को सिर कन्धे आदि पर लाद कर कहीं ले जाना।
वहनीय–(सं०वि०) ले जाने योग्य।
वहन्त–(सं० पुं०) वायु, बालक।
वहम–(अ० पुं०) भ्रम, मिथ्या धारणा, झूठा सन्देह, झूठी शंका,।
वहमी–(अ० वि०) भ्रम में पड़ा हुआ, वृथा के सन्देह में पड़ा हुआ।
वहल–(सं० पुं०) नौका, नाव (वि०) पुष्ट दृढ।
वहला–(सं० स्त्री०) बड़ी इलायची, एक रागिणी का नाम।
वहशत–(अ०स्त्री०) असभ्यता, जंगलीपन, विकलता, घबड़ाहट, पागलपन, डरावनापन, अधीरता।
वहशी–(अं० वि०) असभ्य, जंगली, जो पालतू न हो।
वहाँ–(हिं० अव्य०) उस स्थान या जगह पर।
वहाबी–(अ०पुं०) मुसलमानों का एक सम्प्रदाय जिसको अब्दुल वहाब नज्दी ने चलाया था, इस संप्रदाय का अनुयायी।
वहिः–(सं०अव्य०) बाहर, जो भीतर न हो।
वहित–(सं०वि०) प्रसिद्ध, मशहूर, प्राप्त।
वहित्र–(सं० नपुं०) नौका, नाव।
वहित्री–(सं० स्त्री०) नौका, नाव।
वहिरङ्ग–(सं० नपुं०) शरीर का बाहरी भाग, ऊपरी हिस्सा, बाहरी मनुष्य, वह मनुष्य जो अपने मण्डल का न हो, यज्ञ आदि में पहले किया जाने वाला कृत्य (वि०) ऊपरी, बाहरी।
वहिरिन्द्रिय–(सं०स्त्री०) कर्मेन्द्रिय।

वहिर्गत–(स०वि०) बाहर किया हुआ, निकाला हुआ।
वहिर्गमन–(स० नपु०) किसी काम से घर के बाहर जाना।
वहिर्देश–(सं०पु०) विदेश, परदेश।
वहिर्द्वार–(स० नपु०) मकान का बाहरी या सदर फाटक, तोरण।
वहिर्ध्वजा–(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
वहिर्भव–(स० वि०) बाह्य प्रकृति।
वहिर्भवन–(स०नपु०) बाहर का घर।
वहिर्भाव–(स०पु०) बाह्य भाव।
वहिर्भूत–(स० वि०) वहिर्गत, बाहर किया हुआ।
वहिर्मनस–(स० त्रि०) मन के बाहर।
वहिर्मुख–(स०वि०) बाहरी, विमुख।
वहिर्योग–(स० पु०) हठ योग।
वहिर्लम्ब–(सं० पु०) रेखा गणित में वह लम्ब जो किसी क्षेत्रके बाहर गिरता हो।
वहिर्लापिका–(स० स्त्री०) प्रहेलिका, पहेली जिसके उत्तर का पूरा शब्द पहेली में नहीं होता।
वहिश्चर–(स० पु०) कर्कट, केकड़ा।
वहिष्करण–स०नपु०) पाच वाह्येन्द्रियाँ
वहिष्कार–स० पु०) दूर करना।
वहिष्कार्य–स०वि०) छोड़ने योग्य।
वहिष्कृत–स० वि०) बाहर किया हुआ, त्यागा हुआ, निकाला हुआ।
वहिष्कृति–सं० स्त्री०) बहिष्कार।
वहिष्ठ–(स० वि०) अधिक भार उठाने वाला।
वहिष्प्राण–(स०पुं०) श्वास वायु, प्राण तुल्य प्रिय वस्तु।
वहीं–(हिं०अव्य०) उसी स्थान पर।
वही–(हिं० सर्व०) पूर्वोक्त व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसके सबध में कुछ कहा जा चुका हो, निर्दिष्ट व्यक्ति।
वहेलिया–(हि० पु०) एक व्याध जाति।
वह्नि–(स० पु०) अग्नि, आग, मित्रविन्दा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, तीन की सख्या, रामजी की सेना का एक सेनापति जो वानर था, भिलावा।
वह्निकर–(स० नपु०) बिजली, जठराग्नि।
वह्निकरी–(स० स्त्री०) धव का फूल।
वह्निकुण्ड–(स० पु०) अग्नि कुण्ड।
वह्निकोण–(स०पु०) दक्षिण पूर्वका कोना।
वह्निगर्भ–(स० पु०) बास।
वह्निगृह–(स०नपु०) अग्निशाला।
वह्निचूड़–(स०नपु०) आग की लपट।
वह्निजाया–(स०स्त्री०) स्वाहा देवी।
वह्नितम–(स० त्रि०) अधिक सफेद।
वह्निद–(स०वि०) अग्निदायक।
वह्निदग्ध–(स०वि०) आगसे जला हुआ।
वह्निनाम–(स० पु०) चीते का वृक्ष, भिलावा।
वह्निनाशक–(स० वि०) अग्नि का प्रकोप दूर करने वाला।
वह्निनेत्र–(स० पु०) क्रोध से आँखें लाल होना।
वह्निपुराण–(स० नपुं०) अग्निपुराण।
वह्निपुष्पा–(स०स्त्री०) धव का फूल।
वह्निबीज–(स०स्त्री०) सुवर्ण, सोना।
वह्निभोग्य–(स०नपु०) घृत, घी।
वह्निमित्र–(स० पु०) वायु, हवा।
वह्निमय–(स० त्रि०) अग्नि स्वरूप।
वह्निरस–(स० पु०) अग्नि की ज्वाला।
वह्निलोह–(स०नपु०) ताम्र, तावा।
वह्निलोहक–(स०नपु०) कास्य, कासा।
वह्निवर्ण (स०वि०) लाल रग का।
वह्निशाला–(स० स्त्री०) अग्निशाला।
वह्निशिखा–(स० स्त्री०) धव का वृक्ष, गजपीपल।
वह्निशुद्ध–(सं० त्रि०) अग्नि द्वारा शुद्ध किया हुआ।
वह्निश्वरी–(स० स्त्री०) स्वाहा, लक्ष्मी।
वह्निसस्कार–(स०पुं०) अग्नि सस्कार।
वह्निमुख–(स० पु०) देवता।
वह्य–(सं०पु०) वाहन, यान, गाड़ी।
वह्यक–(स० त्रि०) वाहक, ढोने वाला।
वाँ–(हि०अव्य०) वहाँ, उस जगह।
वा–(स० अव्य०) या, अथवा, (हिं०सर्व०) व्रज भाषा में प्रथम पुरुष के एक वचन का वह रूप जिसमें कारक के चिह्न लगाये जाते हैं।
वाइ–(हिं० सर्व०) देखो वाहि।
वाइदा–(अ० पु०) देखो वादा।
वाइन् (अ० स्त्री०) मद्य, शराब।
वाइस्–(अ० विं०) सहायक।
वाइस् चान्सेलर्–(अ०पु०)विश्वविद्यालय का वह बड़ा अधिकारी जो चान्सेलर की सहायता करता है।
वाइसराय–(अ०पु०) बड़ा लाट।
वाक् (स० पु०) वाणी, वाक्य, बोलने की इन्द्रिय, सरस्वती।
वाकई–(अ०वि०) यथार्थ, ठीक, (अव्य०) वास्तव में, सचमुच।
वाक़िया–(अ० पु०) घटना, समाचार, वृत्तान्त।
वाका–(अ०पु०) होने वाला, स्थित।
वाकिनी–(स०स्त्री०) एक तान्त्रिक देवी का नाम।
वाक़िफ़–(अ० वि०) ज्ञाता, जानकार, अनुभवी।
वाक़िफ़कार–(स० विं०) काम का जानकार।
वाकोवाक्–(स० नपु०) बात चीत
वाकोवाक्य–स०नपु०)परस्पर वार्त्तालाप।
वाकलह–(स०पु०) बातों का झगड़ा।
वाक्केलि– स०स्त्री०) बात की क्रीडा।
वाक्चपल–(सं०वि०)वाचाल, बकवादी।
वाक्छल–(स० नपु०) न्याय शास्त्र के अनुसार वह कथन जिसका भिन्न अर्थ सुनने वाले को चक्कर में डालने के लिये किया जावे।
वाक्पटु–(स०वि०) बोल चाल में चतुर।
वाक्पटुता–(स० स्त्री०) बात करने में चातुरी।
वाक्पति–(स० पु०) विष्णु, बृहस्पति, चतुर वाक्य।
वाक़्फ़ियत–(स०स्त्री०)परिज्ञान,जानकारी।
वाक्य–(स० नपु०) पदों का वह समूह जिससे श्रोता को वक्ता का अभिप्राय मालूम हो जाता है जिसमें उद्देश्य का होना आवश्यक होता है।
वाक्यकर–(स० पु०) बातें बनाने वाला।
वाक्यकार–(स० पु०) रचनाकार।

वाक्य गर्भित-(स० वि०) सुन्दर पदों से युक्त।
वाक्यता-(स० स्त्री०) वाक्य का भाव या धर्म।
वाक्य पूरण-(स० नपु०) वाक्य की समाप्ति।
वाक्य प्रलाप-(स०पु०) असबद्ध वार्ता।
वाक्य प्रसारी-(स०वि० बात बढ़ाने वाला।
वाक्य माला-(स०स्त्री०) वाक्य समूह।
वाक्य शेष-(स०पु०) वाक्य का अन्त।
वाक्य संयोग-(स०पु०)बातों की मिलान
वाक्य स्वर-(स०पु०)बोलने का शब्द।
वाक्यालङ्कार-(स० पु०)वाक्य की शोभा
वाक्सिद्धि- स०पु०) वाणी की सिद्धि, ऐसी सिद्धि या शक्ति आ जाना कि जो बात मुख से निकले वह सच्ची घट जावे।
वागतीत-(स०पु०) बीती हुई बात।
वागन्त-(स० पु०) वाक्य का शेष।
वागर-(स०पु०) पडित निर्भीक,निर्णय।
वागा-(स०स्त्री०) लगाम।
वागाश-(स०पु०) आशा देकर निराश करने वाला।
वागीश-(स० पु०) वृहस्पति, ब्रह्मा, कवि (वि०) अच्छा बोलने वाला।
वागीशा-(स०स्त्री०) सरस्वती।
वागीश्वर-(सं०पु०) देखो वागीश।
वागीश्वरी-(स०स्त्री०) सरस्वती देवी।
वागुण-(स०पु०) कमरख, मठा, बैगन।
वागुरा-(स०स्त्री०) हरिन फँसाने की जाल
वागुरिक-(स०पु०) डिब्बा।
वागुलिक-(स०पु०) राजा का खवास।
वाग्जाल-(स०नपु०) बातो की फेरबट, लपेट की बात, बातो का आडम्बर।
वाग्डम्बर-(स०पु०) बातों की लपेट।
वाग्दण्ड-(स०नपु०) झटकार, डाट डपट
वाग्दत्त-(स०वि०) किसी वस्तु को देने के लिये वचन दिया हुआ या कहा हुआ
वाग्दत्ता-(सं० स्त्री०) वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी से निश्चित हो चुकी हो परन्तु विवाह सस्कार होना बाकी हो।
वाग् दरिद्र-(स०वि०) मितभाषी, कम बोलने वाला।
वाग्दान-(सं०नपु०) कन्या के पिता का किसी से यह कहना कि मैं तुम्हें अपनी कन्या व्याह दूगा।
वाग्देवता-(स० स्त्री०) वाणी, सरस्वती।
वाग्देवी-(स०स्त्री०) देखो वाग्देवता।
वाग्दोष-(स०पु०) व्याकरण सबधी दोष या त्रुटि, निन्दा।
वाग्भट्ट-(स०पु०)सिंहगुप्त के पुत्र जिन्होंने वैद्यक के निघटु, अष्टाङ्गहृदय, भावप्रकाश आदि अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे हैं।
वाग्मी -(स०पु०) वाचाल, अच्छा बोलने वाला, पण्डित, वृहस्पति।
वाग्वज्र-(सं०पु०) कठोर वाक्य, शाप।
वाग्वादिनी-(सं० स्त्री०) सरस्वती।
वाग्विदग्ध-(स० वि०) बोल चाल में प्रवीण।
वाग्विदग्धा-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो बात चीत करने में बड़ी चतुर हो।
वाग्विलास-(स० पु०) आनन्द पूर्वक आपस मे वार्तालाप।
वाग्विसर्ग-(स० पु०) बात बन्द करना।
वाग्वैदग्ध्य-(स०नपु०) बात करने में निपुणता।
वाङ्मय-(स० वि०) वचन सबन्धी, वचन से किया हुआ, पढने लिखने के विषय का (पु०) साहित्य।
वाङ्मयी-(स० स्त्री०) सरस्वती।
वाङ्मुख-(स०पु०) उपन्यास।
वाचयम-(स०वि०) मौन व्रत धारण करने वाला।
वाच्-(स० स्त्री०) वाणी, वाक्य।
वाच्-(अ०स्त्री०)जेबी घड़ी, रिस्ट् वॉच-कलाई पर बाधने की घड़ी।
वाचक-(स० वि०) सूचक, द्योतक, बोधक, बतलाने वाला।
वाचकता-(स० स्त्री०) वाचक का भाव या धर्म।
वाचकत्व-(स०नपु०) देखो वाचकता।
वाचकधर्मलुप्ता-(स०स्त्री०) वह उपमा जिसमे वाचक शब्द का प्रयोग न हुआ हो।
वाचकलुप्ता-(स० स्त्री०) वह उपमा जिसमे उपमान वाचक शब्द का प्रयोग नहीं होता।
वाचकोपमानधर्मलुप्ता-(स०स्त्री०) वह उपमा अलकार जिसमे वाचक शब्द, उपमान तथा धर्म तीनो ही प्रगट नहीं किये होते।
वाचकोपमानलुप्ता-(स० स्त्री०) वह उपमा लकार जिसमे वाचक तथा उपमान का लोप रहता है।
वाचकोपमेयलुप्ता-(स० स्त्री०) वह उपमा लकार जिसमे वाचक और उपमेय का लोप होता है।
वाचक्नवी-(स०स्त्री०) गार्गी।
वाचन-(स०नपु०)उच्चारण करना, पढना वाचना, कहना, बतलाना।
वाचनक-(स०नपु०) पहेली।
वाचनालय-(स०पु०) पुस्तक, समाचारपत्र आदि पढने का स्थान।
वाचसाम्पति-(स० पु०) वृहस्पति।
वाचस्पति-(स० पु०) वृहस्पति।
वाचा-(स० स्त्री०) वाणी, वचन, शब्द।
वाचाट-(स० वि०) बक्की, बकवादी।
वाचापत्र-(सं०नपु०) प्रतिज्ञा पत्र।
वाचाबन्धन-(स०पु०)प्रतिज्ञा बद्ध होना।
वाचाबद्ध-(स०वि०) वचन देनेसे विवश।
वाचाल-(स० वि०) बोलने मे चतुर, बकवादी।
वाचालता-(स० स्त्री०) वाक् पटुता, बात करने में निपुणता।
वाचावृद्ध-(स०वि०) बातचीत करने मे निपुणता।
वाचास्तेन-(स०वि०) झूठ बोलने वाला।
वाचिक-(स०वि०) वाणी सबधी, सकेत द्वारा सूचित (पु०) एक प्रकार का अभिनय जिसमे केवल वाक्य द्वारा ही अभिनय दिखलाया जाता है।
वाची-(हि० वि०) बोध करने वाला, सूचक, यह शब्द समस्त पद के अन्त मे प्रयोग होता है।
वाच्य-(स०वि०) कहने योग्य, जिसका

बोध संकेत से हो, अभिधेय, कुत्सित।

वाच्यता-(सं० स्त्री०) वाच्य का भाव या धर्म।

वाच्यार्थ-(सं० पु०) वह तात्पर्य जो शब्दों के स्थिर या नियत अर्थ से सूचित हो, मूल शब्दार्थ।

वाच्यावाच्य-(सं०पु०) भली बुरी बात।

वाज़-(अ० पु०) शिक्षा, धार्मिक उपदेश या व्याख्यान, कथा।

वाजपेई-(हि०पु०) देखो वाजपेयी।

वाजपेय-(सं० पु०) एक श्रौत यज्ञ का नाम।

वाजपेयी-(सं०पुं०) वह जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो, कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि, अत्यन्त कुलीन ब्राह्मण।

वाजबी-(हि० वि०) देखो वाजबी।

वाजसनि-(सं० पु०) सूर्य।

वाजसनेय-(सं०पु०) शुक्ल यजुर्वेद की संहिता का नाम, याज्ञवल्क्य ऋषि।

वाजि-(हि० पु०) घोड़ा।

वाजिगन्धा-(सं० स्त्री०) असगन्ध।

वाजिदन्त-(सं० पु०) अड़ूसा।

वाजिब-(अ०वि०) उचित, योग्य, ठीक।

वाजिबी-(अ०वि०) उचित, मुनासिब, सच्चा।

वाजिबुलअदा-(अ०वि०) जिस धन के देने का समय आगया हो।

वाजिबुलअर्ज़-(अ०पु०) वह शर्त जो कानूनी बन्दोबस्त के समय गाव के रिवाज आदि के विषय में लिखी गई हो।

वाजिबुल् वसूल-(अ०वि०) जिस धन के वसूल करने का समय आ गया हो।

वाजिभोजन-(सं०पु०) चना, मूंग।

वाजिमत्-(सं० पु०) पटोल, परवल।

वाजिमेध-(सं० पु०) अश्वमेध।

वाजिराज-(सं०पु०) उच्चैः श्रवा।

वाजिवाहन-(सं० नपु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तेइस अक्षर होते हैं।

वाजिशत्रु-(सं०पु०) कनेर का वृक्ष।

वाजिशाला-(सं० स्त्री०) अश्वशाला, अस्तबल।

वाजी-(हि०पु०) घोड़ा, अड़ूसा, हवि, फटे दूध का पानी।

वाजीकरण-(सं० नपु०) मनुष्य का वीर्य और पुंसत्व बढ़ाने की आयुर्वेदोक्त औषधि।

वाञ्छनीय-(सं० वि०) चाहने योग्य, जिस वस्तु की इच्छा हो।

वाञ्छा-(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा चाह।

वाञ्छित-(सं० वि०) अभिलषित, चाहा हुआ।

वाट-(सं० पु०) मार्ग, रास्ता, मण्डप

वाटधान-(सं० पु०) एक वर्णसंकर जाति का नाम।

वाटर्-(अ० पु०) जल, पानी।

वाटरप्रूफ्-(अ० वि०) वह वस्त्र आदि जिस पर जल का प्रभाव न पड़े।

वाटर्वर्क्स्-(अ० पु०) नगर में सर्वत्र जल पहुँचाने का कार्यालय।

वाटर्शूट्-(अ० स्त्री०) तैरने या जल में क्रीड़ा करने की कला।

वाटिका-(सं० स्त्री०) बाग, बगीचा, इमारत।

वाटी-(सं० स्त्री०) इमारत, घर।

वाटुक-(सं० नपु०) भूना हुआ जव, बहुरी।

वाड़वाग्नि-(सं०पु०) समुद्र के भीतर की अग्नि, बड़वानल।

वाढम्-(सं० अव्य०) पर्याप्त, बस, काफी है।

वाण-(सं०पुं०) धनुष पर छोड़ने की तीर

वाणवली-(सं० स्त्री०) तीरों की पंक्ति, तीरों की लगातार वर्षा, श्लोकों का पञ्चक।

वाणजित्-(सं० पु०) विष्णु।

वाणतूण-(सं० पु०) तरकश।

वाणयोजन-(सं०नपु०) धनुष पर तीर रख कर चलना।

वाणलिङ्ग-(सं० नपु०) शिवलिङ्ग जो नर्मदा नदी में पाये जाते हैं।

वाणहन्-(सं० पु०) विष्णु।

वाणावली-(सं० स्त्री०) तीरों की वर्षा, एक साथ बने हुए पाँच श्लोक।

वाणिज्य-(सं०नपुं०) देखो वाणिज्य।

वाणिनी-(सं० स्त्री०) नर्तकी, नाचने वाली स्त्री, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सोलह अक्षर होते हैं।

वाणी-(सं० स्त्री०) वचन, सरस्वती, जीभ, स्वर, वाक्शक्ति, वाणी फुरना-मुखसे शब्द निकलना।

वात-(सं० पु०) वायु, हवा, वैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर पक्वाशय में रहने वाली वह वायु जो शरीर के सब धातुओं को गति युक्त करता है जिसके कुपित होने पर शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

वातकेतु-(सं० पु०) धूल, गर्द।

वातगामी-(सं०पु०) पक्षी, चिड़िया।

वातघ्नी-(सं० वि०) असगन्ध।

वातचक्र-(सं० नपु०) एक प्रकार का वायु का रोग।

वातचटक-(सं०पु०) तीतर पक्षी।

वातज-(सं०वि०) वायु से उत्पन्न।

वातजात-(सं० पु०) हनुमान्।

वातध्वज-(सं० पुं०) मेघ।

वातपुत्र-(सं० पु०) हनुमान, भीम।

वातप्रकृति-(सं० वि०) वायु प्रधान प्रकृति।

वायुप्रकोप-(सं० पु०) शरीर में वायु का अधिक हो जाना।

वातमृग-(सं० पु०) हवा के रुख पर दौड़ने वाला मृग।

वातरथ-(सं०पु०) मेघ।

वातरुष-(सं० पु०) इन्द्रधनुष।

वातल-(सं० पु०) चणक, चना।

वातव्याधि-(सं० पुं०) गठिया रोग।

वातसख-(सं०पु०) अग्नि।

वातसार-(सं० पु०) बेल।

वातसारथि-(सं० पु०) अग्नि।

वातस्कन्ध-(सं०पु०) आकाश का वह भाग जहां वायु चलती है।

वातस्वन-(सं०त्रि०) अग्नि।

वाताट-(सं०पु०) सूर्य का घोड़ा, हरिण।

वाताद-(सं०पु०) बादाम का फल।

वातापि-(सं० पु०) एक असुर जो अगस्त्य ऋषि से मारा गया था।
वाताम-(सं०नपु०) बादाम।
वातायन-(सं०नपु०) गवाक्ष, झरोखा, छोटी खिड़की, घोड़ा, एक प्राचीन जनपद का नाम।
वातारि-(सं० पु०) रेंड़, अजवाइन, थूहर, सूरन, भिलावा, सतावर।
वातुल-(सं०वि०) वायु प्रधान, उन्मत्त, पागल।
वातोर्मी-(सं०पु०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
वात्सरिक-(सं०पु०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
वात्सल्य-(सं० नपु०) प्रेम, स्नेह, माता पिता का अपनी सन्तति पर प्रेम।
वात्सायन-(सं०पु०) एक ऋषि का नाम, न्याय शास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार, काम सूत्र के प्रणेता एक ऋषि का नाम।
वाद-(सं०पु०) तत्व के निर्णय के लिये बातचीत, तर्क, शास्त्रार्थ, दलील, बहस, झगड़ा, निश्चित सिद्धान्त, उसूल।
वादक-(सं० पु०) बाजा बजाने वाला, वक्ता, शास्त्रार्थ करने वाला।
वाददण्ड-(सं० पु०) सारंगी बजाने की कमानी।
वादन-(सं०नपु०) बाजा, बाजा बजाना।
वादप्रतिवाद-(सं० पुं०) शास्त्रीय विषयों में वार्तालाप, बहस।
वादयुद्ध-(सं०पुं०) शास्त्रीय झगड़ा।
वादर-(सं०पु०)सूती कपड़ा, बेर का पेड़।
वादरायण-(सं०पु०) वेदव्यास।
वादरायणि-(सं० पु०) व्यास के पुत्र शुकदेव।
वादविवाद-(सं०पु०) झगड़ा, बहस।
वादा-(अ०पु०) नियत समय, प्रतिज्ञा, वचन, वादा पूरा करना-प्रतिज्ञा पूर्ण करना, वादा टालना-प्रतिज्ञा भंग करना, वादा खिलाफी-बात पूरी न करना, वादा रखना-वचन देना।
वादानुवाद-(सं०पु०)तर्क वितर्क, शास्त्रार्थ।
वादिक-(सं०पु०) तार्किक, शास्त्रार्थ करने वाला।

वादित-(सं०वि०) बजाया हुआ।
वादित्र-(सं०नपु०) वाद्य, बाजा।
वादी-(सं०पु०) वक्ता, बोलने वाला, मुकदमा दायर करने वाला, मुद्दई, अभियोग चलाने वाला।
वादूलि-(सं०पु०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
वाद्य-(सं०पु०) बजाना, बाजा।
वाद्यक-(सं०पु०) बाजा बजाने वाला।
वान-(हि०पु०) देखो वाण।
वानप्रस्थ-(सं० नपु०) महुए का वृक्ष, पलाश वृक्ष, आर्यों की प्राचीन पद्धति के अनुसार मनुष्य के जीवन का तीसरा आश्रम।
वानर-(सं० पु०) बन्दर, दोहे का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में दस गुरु और अट्ठाईस लघु वर्ण होते हैं।
वानरकेतन, वानरकेतु-(सं०पुं०)अर्जुन।
वानरप्रिय-(सं० पुं०) खिरनी।
वानरी-(सं०स्त्री०) बदरिया, केवाच बीज।
वानरेन्द्र-(सं० पु०) सुग्रीव।
वानरीबीज-(सं०नपु०) केवाच का बिया।
वानल-(सं० पु०) काली तुलसी।
वानवासिका-(सं० स्त्री०) सोलह मात्राओं के छन्दों का एक भेद, चौपाई का एक भेद जिसमें नवीं और बारहवीं मात्राएँ लघु होती हैं।
वानस्पत्य-(सं०वि०) वनस्पति संबंधी।
वानीर-(सं०नपु०) बेंत, पाकड़ का वृक्ष।
वानीरक-(सं० पु०) मूँज।
वान्त-(सं० पु०) वमन, कय, उलटी।
वान्ताद-(सं० पु०) कुक्कुर, कुत्ता।
वान्ति-(सं० स्त्री०) वमन, उलटी, कै।
वाप-(सं०पु०) वपन, बोना, मुण्डन, क्षेत्र।
वापक-(सं० वि०) बीज बोने वाला।
वापन-(सं० नपु०) बीज बोना।
वापस-(फा० वि०) फिरा हुआ, लौटाया हुआ, वापस आना-लौट आना, वापस करना-लौटाना।
वापसी-(फा०वि०) वापस किया हुआ, लौटाया हुआ, फेरा हुआ (स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव।

वापिका-(सं० स्त्री०) वापी, बावली।
वापित-(सं०वि०) मूड़ा हुआ, बोया हुआ।
वापी-(सं०स्त्री०) छोटा जलाशय, बावली।
वाम-(सं०वि०) बायाँ, प्रतिकूल, विरुद्ध, खोटा, दुष्ट, नीच, टेढा, कुटिल, बुरा (पु०) कामदेव, वरुण, कृष्ण के एक पुत्र का नाम, धन, कुच, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस अक्षर होते हैं जिसको मकरन्द, माधवी या मंजरी भी कहते हैं, एक रुद्र का नाम।
वामदेव-(सं०पु०) शिव, महादेव, राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम।
वामदेवी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, सावित्री।
वामन-(सं०वि०) छोटे डील डौल का, नाटा, बौना, (पु०) विष्णु का पांचवां अवतार जो बलि को छलने के लिये अदिति के गर्भ से हुआ था, एक पुराण का नाम, विष्णु, शिव, एक दिग्गज का नाम।
वामनद्वादशी-(सं०स्त्री०) श्रावण शुक्ल द्वादशी।
वामना-(सं०स्त्री०)एक अप्सरा का नाम।
वामनिका-(सं०स्त्री०) बौनी स्त्री, स्कन्द की एक मातृका का नाम।
वामनी-(सं०स्त्री०) बौनी औरत, घोड़ी।
वामनीकृत-(सं० वि०) मल कर छोटा किया हुआ।
वामनेत्र-(सं०नपु०) बाईं आँख।
वामनेत्रा-(सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वाममार्ग-(सं० पुं०) एक तान्त्रिक मत जिसमें मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा देवी की पूजा की जाती है।
वामलोचना-(सं० स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।
वामा-(सं०स्त्री०) दुर्गा, स्त्री, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
वामाक्षी-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वामावर्त-(सं०पु०) किसी देव प्रतिमा की बाईं ओर से आरम्भ करके प्रदक्षिणा।
वामल-(सं०वि०) पाखण्डी, दम्भी।
वामी-(सं०स्त्री०) श्रृगाली, घोड़ी।

वामेतर-(सं० वि०) बायें का उलटा, दहिना।
वामोरु-(सं०वि०) सुन्दर जांघ।
वामोरू-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वायक-(सं०पु०) जुलाहा, बुनने वाला।
वायदण्ड-(सं० पु०) जुलाहे की ढरकी।
वायन-(सं० स्त्री०) विवाहादि के लिये बनाया हुआ पकवान।
वायवी-(सं०स्त्री०) उत्तर पश्चिम का कोण।
वायव्य-(सं०वि०) वायु सम्बन्धी (पु०) पश्चिमोत्तर दिशा जिसका अधिपति वायु है, वायु पुराण, एक अस्त्र का नाम।
वायस (सं० पु०) अगर का वृक्ष, काक, कौवा।
वायसी-(सं० स्त्री०) सफेद घुमची, कौवाठोंठी छोटी मकोय।
वायसतन्तु-(सं० पु०) कौवाठोंठी।
वायसान्तक-(सं०पु०) पेचक, उल्लू।
वायु-(सं०पु०) हवा, वात।
वायुकोण-(सं०पु०) पश्चिमोत्तर दिशा।
वायुगुल्म-(सं०पु०) चक्रवात, बवंडर।
वायुपुत्र-(सं० पु०) भीम, हनुमान।
वायुमण्डल-(सं० पु०) आकाश।
वायुलोक-(सं० पु०) पुराण के अनुसार एक लोक का नाम, आकाश।
वायुवाह-(सं० पु०) धुवां।
वायुसख-(सं० पु०) अग्नि।
वायुसखि-(सं० पु०) अग्नि, आग।
वायुसूनु-(सं० पु०) हनुमान्।
वारंट्-(अं०पु०) अदालत का आज्ञापत्र।
वारंट् गिरफ्तारी-(अं०पु०) किसी पुरुष को पकड़ कर अदालत में उपस्थित करने का आज्ञापत्र।
वारंट् तलाशी-(अं०पु०) किसी स्थान में जाकर तलाशी लेने का आज्ञापत्र।
वारंट् रिहाई-(अं०पु०) किसी व्यक्ति को जो हवालात या गिरफ्तारी में हो छोड़ देने अथवा कुर्क की हुई जायदाद को छोड़ देने का आज्ञापत्र।
वारंवार-(हिं०अव्य०) देखो बारबार।
वार-(सं०पु०)द्वार, अवरोध, रुकावट, आवरण, ढांपने की वस्तु, क्षण, अवसर, मौका, सप्ताह का कोई दिन, बाण, समुद्र या नदी का तट, मद्य पीने का प्याला, दांव, बारी (हिं०पु०) आक्रमण, आघात,चोट प्रहार, वार खाली जाना-युक्ति विफल होना।
वारक-(सं०वि०) निषेध करने वाला।
वारकन्या-(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारङ्क-(सं०पु०) पक्षी, चिड़िया।
वारङ्ग-(सं०पु०) अंकुरे के आकार का एक शस्त्र।
वारटा-(सं०स्त्री०) हंसी।
वारण-(सं० नपुं०) निषेध, रुकावट, बाधा, हाथी, अंकुश कवच, हरताल, छप्पय छन्द का एक भेद।
वारणवत-(सं०पु०) गंगा के किनारे का एक प्राचीन जनपद जहां पर पाण्डवों को जलाने के लिये दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था।
वारणीय-(सं०वि०) निषेध करने योग्य।
वारणेन्द्र-(सं०पु०) सुन्दर हाथी।
वारतिय-(हिं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारद-(हिं०पु०) मेघ, बादल।
वारदात-(अ० स्त्री०) दुर्घटना, मारकाट, झगड़ा फसाद, किसी घटना का समाचार।
वारन-(हिं०स्त्री०) निछावर, बलि (पु०) बंदनवार, तोरण।
वारना-(हिं० क्रि०) उत्सर्ग करना निछावर करना, वारने जाना-निछावर होना।
वारनारी-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारपार-(हिं० पु०) नदी झील आदि के दोनों किनारे; पूरा विस्तार, इधर उधर का छोर, (अव्य०) इस किनारे से उस किनारे तक, पूरी चौड़ाई या मोटाई तक।
वारफेर-(हिं०स्त्री०) निछावर, बलि, वह रुपया पैसा जो वर तथा वधू के सिर पर से घुमाकर परजुनियों को बांटा जाता है
वारमुखी-(सं०स्त्री०) वेश्या रंडी।
वारमुख्या-(सं० स्त्री०) श्रेष्ठ वाराङ्गना।
वारम्वार-(सं० अव्य०) फिर फिर।
वारयितव्य-(सं० वि०) निवारण करने योग्य।
वारयिता-(सं० पु०) पति, स्वामी।
वारयुवती-(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारवधू-(सं० पु०) वेश्या, रंडी।
वारवाण-(सं० पु०) बंसी बजाने वाला, न्यायाधीश।
वारविलासिनी-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वार सुन्दरी-(सं०स्त्री०) वेश्या।
वारस्त्री-(सं० स्त्री०) देखो वारसुन्दरी।
वारनिधि-(सं०पु०) समुद्र।
वारा-(हिं०पु०) लाभ, फायदा, खर्च की बचत, (वि०) उत्सर्ग या निछावर किया हुआ, सस्ता।
वाराङ्गना-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारानिधि-(सं०पु०) समुद्र।
वाराणसी-(सं०स्त्री०) काशी का प्राचीन नाम।
वारान्यारा-(हिं० पु०) फैसला, किसी झगड़े का निपटारा, मामले की समाप्ति
वारालिका-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी।
वाराह-(सं०पु०) शूकर, सुअर, देखो वराह।
वराहपत्री-(सं० स्त्री०) असगन्ध।
वाराही-(सं०स्त्री०)एक मातृका का नाम, एक योगिनी, वाराहीकन्द, गेंगनी।
वाराहीकन्द-(सं० पु०) एक प्रकार का बड़ा कन्द, गेंठी।
वारि-(सं० पु०) जल, पानी, कोई तरल पदार्थ (स्त्री०) वाणी, सरस्वती, छोटी गगरी।
वारिकुब्ज-(सं० पु०) सिंघाड़ा।
वारिकोल-(सं० पु०) कछुआ।
वारिगर्भोदर-(सं० पु०) मेघ, बादल।
वारिचत्वर-(सं०पु०)कुम्भिका,सिंघाड़ा।
वारिचर-(सं०पु०) मछली, शंख।
वारिचामर-(सं० नपुं०) शैवाल,सेवार।
वारिजात-(सं० वि०) जल में उत्पन्न।
वारिज-(सं०नपुं०) कमल, मछली, शंख, कौड़ी।
वारित-(सं०वि०) निवारित, रोका हुआ।
वारितस्कर-(सं० पु०) मेघ, बादल।

वारिद्-(स०पु०)मेघ,बादल,नागरमोथा।
वारिद्र-(स०पु०) चातक, पपीहा ।
वारिधर-(स० पु०) देखो वारिद ।
वारिधार-(स०पु०) मेघ, बादल ।
वारिधारा-(स० स्त्री०) जल की धारा।
वारिधि, वारिनाथ, वारिनिधि-(स०) समुद्र ।
वारियन्त्र-(स०नपुं०) जलयन्त्र, फौवारा।
वारियाँ-(हि० स्त्री०) निछावर, बलि । वारियाँ जाऊँ-तेरे ऊपर निछावर हूँ।
वारिराशि-(स० पु०) समुद्र ।
वारिरुह्-(स०पु०) कमल ।
वारिवर्त-(हि०पु०) एक मेघ का नाम।
वारिवाह्-(स०पु०) मेघ, मोथा ।
वारिश-(स०पु०) विष्णु ।
वारिस-(अ० पुं०) उत्तराधिकारी, दायभागी पुरुष, दायाद।
वारी-(स०स्त्री०) हाथी बाधने की जजीर, छोटा गगरा ।
वारीट-(स० पुं०) हस्ती, हाथी ।
वारीन्द्र-(स०पु०) समुद्र ।
वारीफेरी-(हि० स्त्री०) देखो वारफेर, निछावर ।
वारीश-(स० पु०) समुद्र ।
वारुण-(स०पु०) शतभिषा नक्षत्र, जल, हरताल, एक अस्त्र का नाम ।
वारुणकर्म-(स० नपुं०) जलाशय बनाने का काम ।
वारुणी-(स० स्त्री०) मदिरा, शराब, वरुण की स्त्री, कदब के फलों से बनाया हुआ मद्य, एक पर्व का नाम, भूमि आमला, शतभिषा नक्षत्र, उपनिषद विद्या, पश्चिम दिशा ।
वारुण्य-(स०वि०) वरुण सबधी।
वार्क्ष्य-(स० वि०) वृक्ष सबधी ।
वार्ड-(अ० पु०) रक्षा, नगर का भाग, कोई अलग किया हुआ विभाग ।
वार्डर-(अ०पु०) रक्षक पहरेदार ।
वार्णक-(स० पु०) लेखक ।
वार्तक-(स०पु०) बटेर नामक पक्षी ।
वार्ता-(स०स्त्री०) किंवदन्ती, अफवाह, वृत्तान्त, समाचार, प्रसग, विषय, वार्ता, बातचीत ।
वार्तायन-(स० पु०) दूत, एलची ।
वार्तालाप-(स० पु०) बातचीत ।
वार्तावह्-(स० पु०) समाचार ले जाने वाला दूत ।
वार्तिक-(स० पुं०) दूत, चर, वृत्ति का अध्ययन करने वाला, किसी ग्रन्थ के अर्थों को स्पष्ट करने वाले वाक्य ।
वार्दर-(स० पु०) रेशम, जल, आम की गुठली ।
वार्धक्य-(स०नपु०) वृद्धि, बढती, बुढापा ।
वार्भट-(स०पु०) घड़ियाल ।
वार्वट-(स०नपुं०)नौका, नाव का बेड़ा।
वार्षभ-(स०वि०) वृषभ सबधी ।
वार्षिक-(स० वि०) वर्ष सबधी, प्रति वर्ष होने वाला, सालाना, वर्षा ऋतु का ।
वार्षिकी-(स० स्त्री०) बेले का फूल ।
वार्ष्ण, वार्ष्णेय-(स०पु०) श्रीकृष्ण ।
वालटियर्-(अ० पु०) स्वयसेवक, स्वेच्छासेवक, वल्लभटेर ।
वाल-(स० पु०) केश, बालक ।
वालक-(स०पु०) कङ्कण, अगूठी, शिशु, बालक, केश, बाल ।
वालदैन-(अ०पु०) माता पिता, माँ बाप ।
वालव-(स० पु०) ज्योतिष में एक करण का नाम ।
वाला-(स०स्त्री०) इन्द्रवज्रा और उपेन्द्र वज्रा के मेल से बने हुए उपजाति छन्द का एक भेद ।
वालिका-(स० स्त्री०) कान मे पहरने का एक गहना, बाली ।
वालिद्-(अं० पु०) पिता, बाप ।
वालिदा-(अ०स्त्री०) माता, जननी, माँ ।
वाली-(स० पु०) बन्दरों का राजा जो सुग्रीव का बड़ा भाई था ।
वालुका-(स०स्त्री०) रेती, बालू, कपूर ।
वालुकाप्रभा-(स० स्त्री०) एक नरक का नाम ।
वालुकायन्त्र-(स०पुं०) औषधि बनाने का एक यन्त्र ।
वालेय-(स०पुं०) गर्दभ, गदहा, पुत्र ।
वाल्कली-(स० स्त्री०) मदिरा, शराब ।
वाल्मीकि-(स० पु०) संस्कृत के आदि कवि जिनकी बनाई हुई रामायण अति प्रसिद्ध है ।
वाल्मीकीय-(सं०वि०) बाल्मीकि सबधी ।
वावदूक-(स० वि०) वाग्मी, अच्छा बोलने वाला ।
वावैला-(अ०पु०) विलाप, रोना पीटना, शोरगुल, चिल्लाहट ।
वाशन-(स०नपु०) पक्षियों का बोलना (वि०) चहचहाने वाला ।
वाशिता-(स०स्त्री०) हथिनी, मादा हाथी ।
वाशिष्ठ-(स०वि०) वशिष्ठ सबधी (पु०) एक उपपुराण का नाम ।
वाशिष्ठी-(स०स्त्री०) गोमती नदी ।
वाश्र-(स०पु०) मन्दिर, चौरहा ।
वाष्प-(स०पु०)अश्रु, आसू, लोहा,भाफ।
वास-(स० पु०) अवस्थान, रहना, घर, मकान ।
वासक-(स० नपु०) वासर, दिन, शालक राग का एक भेद, अडूसा ।
वासकसज्जा-(स० स्त्री०) वह नायिका जो अपने प्रियतम से मिलने के लिये शृंगार करके उसकी बाट देखती हो ।
वासकेट-(अ० पुं०) बिना अस्तीन की एक प्रकार की कमर तक की कुरती ।
वासगृह-(स०नपु०) शयनागार, सोने का कमरा, अन्तःपुर, ज़नानखाना ।
वासगेह्-(स०नपु०) देखो वासगृह ।
वासतेय-(स० वि०) बसने योग्य ।
वासन-(स० नपु०) धूप आदि से सुगन्धित करना, वस्त्र, ज्ञान ।
वासना-(स० स्त्री०) ज्ञान, सस्कार, कामना, इच्छा, अर्क की पत्नी का नाम, दुर्गा (हिं०क्रि०) देखो वासना ।
वासन्त-(स०पु०) ऊँट, कोयल, मूँग ।
वासन्तक-(स०वि०) वसन्त ऋतु सबधी ।
वासन्तिक-(स० पु०) भाड़, विदूषक, नाचने वाला ।
वासन्ती-(स०स्त्री०) माधवी लता, जूही, मदनोत्सव, दुर्गा, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण होते हैं ।
वासप्रासाद-(सं० पु०) रहने लायक

महल ।
वासभवन-(स०नपु०) वासगृह ।
वासभूमि-(स० स्त्री०) वासस्थान ।
वासर-(स०नपु०) दिवस, दिन ।
वासरकन्यका-(स०स्त्री०) रात्रि, रात ।
वासरकृत-(स० पु०) सूर्य ।
वासरमणि-(स०पु०) सूर्य ।
वासरसङ्ग-(स० पु०) प्रातःकाल ।
वासराधीश-(स० पु०) सूर्य ।
वासरेश-(स० पु०) सूर्य ।
वासव-(स० पु०) धनिष्ठा नक्षत्र, इन्द्र ।
वासवज-(सं० पुं०) वासवपुत्र, अर्जुन ।
वासवि-(सं०पु०) इन्द्र का पुत्र अर्जुन ।
वासवी-(स० स्त्री०) इन्द्र की माता सत्यवती ।
वासवेश्म-(स०नपु०) रहने का घर ।
वासा-(स०स्त्री०) माधवी लता, अडूसा ।
वासि-(स० पु०) कुठार, बसूला ।
वासित-(स०वि०) सुगन्धित किया हुआ, वस्त्र से ढपा हुआ, बासी, जो ताजा न हो ।
वासिता-(स० स्त्री०) हाथिनी, स्त्री, आर्या छन्द का एक भेद ।
वासिल-(अ०वि०) प्राप्त, मिला हुआ, जो वसूल हुआ हो, वासिलबाकी-वसूल तथा बाकी रकम ।
वासिलात-(अ० वि०) कुल धन जो वसूल हुआ हो ।
वासिष्ठ-(स०वि०) वसिष्ठ सबधी, (पु०) रुधिर ।
वासी-(हिं० वि०) बसने वाला, रहने वाला, (स्त्री०) बढई का बसूला ।
वासु-(स० पु०) विष्णु, पुनर्वसु नक्षत्र ।
वासुकी-(स० पु०) एक नागराज का नाम ।
वासुदेव-(सं०पु०) श्रीकृष्ण, अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष ।
वासुभद्र-(स० पु०) देखो वासुदेव ।
वासुरा-(स०स्त्री०) हाथी, रात्रि, भूमि ।
वास्तव-(स०त्रि०) सत्य, यथार्थ, वास्तव में, सचमुच ।
वास्तविक-(स०वि०) प्राकृत, यथार्थ, सत्य, ठीक ।
वास्तव्य-(स० वि०) बसने या रहने योग्य, बसने वाला(पु०) बस्ती, आबादी ।
वास्ता-(अ०पु०) सबध, लगाव, मित्रता ।
वास्तु-(स० पु०) वह स्थान जिस पर मकान बनाया जाता है, घर, इमारत ।
वास्तुपरीक्षा-(स०स्त्री०) वस्तु का शुभाशुभ विचार ।
वास्तुपति-(स०पु०) वास्तु का अधिष्ठाता देवता ।
वास्तुपूजा-(स० स्त्री०) वास्तु पुरुष की पूजा जो नये बने हुए घर में प्रवेश करने पर की जाती है ।
वास्तुयाग-(स० पु०) गृह प्रवेश के समय किया जाने वाला याग ।
वास्तुविद्या-(स० स्त्री०) गृह निर्माण की कला ।
वास्तुशान्ति-(स०स्त्री०) गृह प्रवेश के समय किया जाने वाला शान्तिकर्म ।
वास्तुशास्त्र-(स० नपु०) गृहनिर्माण विद्या ।
वास्तूक-(स०नपु०) बथुआ का साग ।
वास्ते-(अ०अव्य०)निमित्त, लिये, हेतु से ।
वास्प-(स०पु०) गरमी, भाफ ।
वाह-(स० पु०) वाहन, सवारी, बैल, भैंसा, वायु (फा०अव्य) एक आश्चर्य सूचक शब्द, यह शब्द प्रशसा और तिरस्कार द्योतक भी है ।
वाहक-(स० पु०) बोझ ढोने या ले जाने वाला, सारथी ।
वाहन-(स०नपुं०) सवारी ।
वाहनता-(स० स्त्री०) वाहन का कार्य या धर्म ।
वाहनप-(स०पु०) वाहनपति ।
वाहनिक-(स०त्रि०) बोझ ढोकर जीविका निर्वाह करने वाला ।
वाहनीय-(स० वि०) वहन करने योग्य ।
वाहरिपु-(सं०पु०) महिष, भैंसा ।
वाहवाही-(हि० स्त्री०) स्तुति, प्रशसा, वाहवाही लेना-लोगो की प्रशसा प्राप्त करना ।
वाहिक-(स० पु०) गाड़ी, छकड़ा ।
वाहित-(स० वि०) चलाया हुआ ।
वाहिनी-(सं० स्त्री०) सेना, सेना का एक भेद जिसमे ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ अश्व, तथा ४०५ पैदल सिपाही होते थे ।
वाहिनीपति-(स०पु०) सेनापति ।
वाहियात-(हिं० वि०) व्यर्थ, फजूल, खराब ।
वाही-(अ० वि०) मूर्ख, बुद्धिहीन, सुस्त, बेहूदा, आवारा, निकम्मा ।
वाहीतवाही-(अ० वि०) आवारा, बेहूदा ।
वाहु-(स० स्त्री०) भुजदण्ड, रेखागणित में क्षेत्र के किनारे की रेखा, भुजा, वाहुमूल-कांख ।
वाहुल-(स० नपु०) कार्तिक मास ।
वाहुल्य-(स०नपुं०) अधिकता, आधिक्य ।
वाह्य-(स० पु०) सारथी, (क्रि०वि०) बाहर, अलग, पृथक् ।
वाह्यक-(स०नपु०) वाहक, गाड़ी, छकड़ा
वाह्यत्व-(स०नपु०)वाह्य का भाव या धर्म
वाह्यान्तर-(स० वि०) भीतर और बाहर का ।
वाह्येन्द्रिय-(स०नपु०) शरीर की पाचों इन्द्रियाँ यथा- आख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ।
वाह्लीक-(स०पु०) भारत के पश्चिमोत्तर सीमा पर का एक प्राचीन जनपद, इस देश का घोड़ा, कुकुम, केसर, एक गन्धर्व का नाम ।
विंदुर-(हि० पु०) छोटे चिह्न, बुंदकी ।
विंश-(स०वि०) बीसवा, विंशत्-बीस ।
विंशति-(स०स्त्री०) बीस की सख्या ।
विंशतिवाहु-(स० पु०) रावण ।
विंशतीश-(सं० पु०) बीस गाँवों का स्वामी ।
विंशोत्तरी-(स०स्त्री०) फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के शुभाशुभ जानने की एक रीति ।
विःक्रन्धिका-(स० स्त्री०) मेढक की टर टर बोली ।
वि-(स० उप०) यह शब्द विशेष, निषेध तथा वैरूप्य अर्थ में शब्दों में लगाया जाता है (पु०) आकाश, नेत्र, अन्न ।
विकङ्कत-(स० पु०) एक जगली

वृक्ष, कटकारी।
विक-(स० नपु०) तुरत की व्याई हुई गाय का दूध, पीयूष फेंवस।
विकट-(स० वि०) विकराल, भयकर, विशाल, टेढा, दुर्गम, दु साध्य, वक्र, टेढा, कठिन।
विकटत्व-(स० नपु०) विकटता।
विकटमूर्ति-(स० वि०) भयकर आकृति वाला।
विकटवदन-(स० पु०) भयकर मुख।
विकटविषाण-(स० पु०) सम्बर मृग।
विकटाक्ष-(स० पु०) विकराल मूर्ति।
विकटानन-(स०पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
विकत्थन-(स०नपु०) झूठी प्रशसा।
विकत्थना-(स० स्त्री०) आत्मश्लाघा, अपनी बड़ाई।
विकथा-(स०स्त्री०) आत्मप्रशसा।
विकथा-(स० स्त्री०) बुरी कथा।
विकम्पन-(स० पु०) बड़ी कँपकपी।
विकम्पित-(स० वि०) अति चचल।
विकर-(स०पु०) व्याधि, रोग, बीमारी, तलवार के बत्तीस हाथों में से एक।
विकरार-(हि०वि०) विकराल, भयकर, भीषण, डरावना (फा० वि०) व्याकुल, बेचैन।
विकराल-(स०वि०) भयकर, डरावनापन।
विकरालता-(स०स्त्री०) डरावनापन।
विकीर्ण-(सं०पु०) दुर्योधन के एक भाई का नाम।
विकर्णक-(स० पुं०) शिव के एक गण का नाम।
विकर्तन-(स०पु०) सूर्य, मदार का वृक्ष।
विकर्म-(स०नपु०) निषिद्ध कर्म, दुराचरण।
विकर्षण-(स०नपु०) आकर्षण, खींचना, भाग, हिस्सा, वह शास्त्र जिसमें आकर्षण की विधि का वर्णन है।
विकल-(स० वि०) व्याकुल, बेचैन, असमर्थ, खडित, टूटा फूटा।
विकलता-(स० स्त्री०) बेचैनी।
विकलाङ्ग-(स०वि०) जिसका कोई अग टूटा या खराब हो।
विकला-(स० स्त्री०) कला का साठवा भाग, अति सूक्ष्म काल, वह स्त्री जिसका ऋतुमती होना बद हो गया हो।
विकलाना-(हि०क्रि०) व्याकुल होना, बेचैन होना।
विकलास-(स० पु०) एक प्रकार का प्राचीन बाजा।
विकलित-(स० वि०) व्यग्र, व्याकुल, बेचैन।
विकली-(स०स्त्री०) ऋतुहीना स्त्री।
विकलेन्द्रिय-(स०त्रि०) जिसकी इन्द्रिया उसके वश में न हों।
विकल्प-(सं० पु०) भ्रान्ति, धोखा, भ्रम, चित्त में किसी बात को स्थिर करके उसके विरुद्ध सोचना, विरुद्ध कल्पना, अनेक विधियों का सम्मिलित होना, योग के अनुसार एक प्रकार की चित्तवृत्ति, वह काव्यालकार जिसमें दो विरुद्ध बातों में से एक का होना कहा जाता है, विचित्रता, व्याकरण में किसी नियम के दो या अधिक भेदों में से इच्छानुसार किसी एक का ग्रहण।
विकल्पित-(स० वि०) अनियमित, सन्दिग्ध।
विकल्पी-(स० वि०) विकल्प युक्त।
विकल्मष-(सं०वि०) पाप रहित।
विकवच-(स०वि०) कवच रहित।
विकश्वर-(स०त्रि०) खिलने वाला।
विकस-(स०पु०) चन्द्रमा।
विकसन-(स०नपु०) फूटना, खिलना।
विकसना-(हि०क्रि०) देखो विकसना।
विकसित-(स०वि०)फुल्ल, खिला हुआ।
विकस्वर-(स० त्रि०) विकास होने या खिलने वाला, (पु०) वह काव्यालकार जिसमें पहले कोई बात कही जाती है, बाद में किसी सामान्य बात से उसकी पुष्टि की जाती है।
विकार-(स०पु०) किसी वस्तु के रूप, रग आदि में उलट पलट होना, दोष की प्राप्ति, खराबी, बुराई, दोष, चित्त की प्रवृत्ति, वासना, परिणाम, अवगुण, बिगड़ना।
विकारी-(हिं० वि०) विकार युक्त, बुरी वासना वाला, जिसमें उलट फेर हुआ हो, एक सवत्सर का नाम।
विकाल-(स०नपु०) अतिकाल, देर।
विकाश-(स० पु०) विस्तार, बढती, प्रकाश, फैलाव, आकाश, खिलना, किसी वस्तु की वृद्धि के लिये उसके रूप आकार आदि में धीरे धीरे परिवर्तन होना, (वि०) निर्जन।
विकाशक-(स०वि०) देखो प्रकाशक।
विकाशन-(सं० नपु०) प्रकाश, खिलना।
विकाशी-(सं०पुं०) खिलने वाला।
विकास-(स० नपु०) विस्तार, फैलाव, पुष्प आदि का खिलना, क्रम से उन्नति को प्राप्त करना, (स्त्री०) एक प्रकार की घास।
विकासन-(स०नपु०) प्रकाशन।
विकासना-(हि०क्रि०) प्रकट करना, विकसित करना, निकालना, खिलना।
विकिर-(स०नपु०) पक्षी, चिड़िया, कुवॉं।
विकीर्ण-(स० वि०) प्रसिद्ध, चारो ओर फैला हुआ, (पु०) स्वर के उच्चारण का एक दोष।
विकुण्ठ-(हि० पुं०) देखो वैकुठ, स्वर्ग।
विकुण्ठन-(स०नपु०) दुर्बलता, कमज़ोरी।
विकुण्डल-(स०वि०) कुण्डल रहित।
विकुत्सा-(स०स्त्री०) विशेष निन्दा।
विकुर्वित-(स०त्रि०) विस्मय जनक व्यापार।
विकूजन-(स०नपु०) वेग से शब्द करना।
विकूवर-(स०वि०) सुन्दर, मनोहर।
विकृत-(स० वि०) बिगड़ा हुआ, कुरूप, भद्दा, जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो, अपूर्ण, अधूरा, असाधारण, विचित्र, रोगी, विद्रोही, (पु०) एक सवत्सर का नाम।
विकृतदृष्टि-(स० पु०) तिरछी नजर का, ऐंचा।
विकृतस्वर-(स०पु०) सगीत में वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हट कर दूसरी जगह पड़ता हो।
विकृति-(स० पु०) विकार, बिगाड़, खराबी, मन का क्षोभ, शत्रुता, परि-

वर्तन, उन्नति, तेईस वर्ण के एक वृत्त का नाम।
विकृष्ट-(सं०वि०) आकृष्ट, खिंचा हुआ।
विकेट् डोर-(अं०पु०) एक प्रकार का छोटा चक्करदार दरवाजा।
विकेशी-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, पूतना नामक राक्षसी।
विक्टोरिया-(अं० स्त्री०) फिटिन के आकार की एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।
विक्रम-(सं० पु०) विष्णु, बल या शक्ति की अधिकता, पराक्रम, गति, ढग, एक सवत्सर का नाम, राजा विक्रमादित्य।
विक्रमण-(सं०नपु०) पादविक्षेप, चलना।
विक्रमाजीत-(हि० पु०) देखो विक्रमादित्य।
विक्रमादित्य-(सं० पु०) उज्जयिनी के एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा का नाम, ये बड़े विद्याप्रेमी, उदार और गुण ग्राहक थे, कहा जाता है कि विक्रम सम्वत् इनकी ही चलाई हुई है।
विक्रमाब्द-(सं० पु०) विक्रमादित्य का चलाया हुआ सम्वत्।
विक्रमी-(हिं० वि०) बड़ा पराक्रमी, (पु०) विष्णु, सिंह।
विक्रय-(सं०पु०) बेंचने का कार्य, बिक्री
विक्रयक-(सं०पु०) विक्रेता, बेंचने वाला।
विक्रयण-(सं०नपु०) बिक्री।
विक्रयपत्र-(सं०नपु०) बिक्री का परचा।
विक्रयी-(सं०पु०) बेंचने वाला।
विक्रान्त-(सं०वि०) शूर वीर, (पु०) चलने का ढङ्ग, साहस, एक प्रजापति का नाम, हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम, (वि०) तेजस्वी, प्रतापी, जिसकी कान्ति नष्ट हो गई हो।
विक्रान्ता-(सं० स्त्री०) हसपदी लता, अड़हुल।
विक्रान्ति-(सं०पु०) शूरता, वीरता, घोड़े की एक चाल।
विक्रायक-(सं०वि०) बेंचने वाला, विक्रेता
विक्रियोपमा-(सं०स्त्री०) वह उपमालकार जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया का वर्णन होता है।
विक्री-(हि० स्त्री०) बेंचने की क्रिया या भाव,
विक्रीत-(सं०वि०) बेंचा हुआ।
विक्रेता-(सं०पु०) बेंचने या बिक्री करनेवाला
विक्रेय-(सं० वि०) बिकने वाला।
विक्लिष्ट-(सं०वि०) बहुत थका हुआ।
विक्लेद-(सं० पु०) आर्द्रता, गीलापन।
विक्लेश-(सं० पु०) बड़ा कष्ट।
विक्षत-(सं० वि०) बुरी तरह से घायल।
विक्षाव-(सं० पु०) शब्द, आवाज़।
विक्षिप्त-(सं० वि०) फेंका हुआ, छितराया हुआ, व्याकुल, घबड़ाया हुआ, पागल।
विक्षिप्तता-(सं० स्त्री०) पागलपन।
विक्षुब्ध-(सं०वि०) जिसका मन चचल हो।
विक्षेप-(सं० पु०) इधर उधर फेंकना या छितराना, चित्त को इधर उधर भटकाना, एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, बाधा, विघ्न, एक प्रकार का रोग, धनुष की डोरी चढ़ाना।
विक्षेपण-(सं० नपु०) इधर उधर फेंकने का काम।
विक्षोभ-(सं०पु०) चित्त की उद्विग्नता।
विक्षोभण-(सं० नपु०) विदारण, फाड़ना।
विक्षोभी-(सं० वि०) दुःख उत्पन्न करने वाला।
विख-(हिं० पु०) देखो विष, ज़हर।
विखण्डी-(सं०वि०) दो टुकड़े करने वाला
विखनन-(सं० नपु०) खोदने का काम।
विखनस्-(सं० पु०) ब्रह्मा।
विखहा-(सं० पु०) गरुड़।
विखादित-(सं० वि०) पशुओं से खाया हुआ (शव)।
विखान-(हि० पु०) देखो विषाण, सींग।
विखाना-(सं० स्त्री०) जिह्वा, जीभ।
विखानस-(हि० पु०) देखो वैखानस।
विखायँध-(हि० स्त्री०) कड़वी गन्ध।
विख्यात-(सं० वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।
विख्याति-(सं० स्त्री०) विख्यात होने का भाव, प्रसिद्धि।
विगणन-(सं० नपु०) हिसाब करना, लेखा करना।
विगत-(सं० वि०) जो बीत गया हो, पहले का, जो चला गया हो, बिना प्रभा का, रहित।
विगतश्रीक-(सं० वि०) श्रीरहित।
विगतभय-(सं० वि०) निर्भीक, निडर।
विगतशोक-(सं० वि०) शोकरहित।
विगतस्पृह-(सं०वि०) देखो निःस्पृह।
विगता-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो पर पुरुष से प्रेम करती हो।
विगति-(सं० पु०) दुर्गति, दुर्दशा।
विगन्ध-(सं० वि०) दुर्गन्धी, गन्धहीन।
विगम-(सं० पु०) अन्त, शान्ति।
विगर्भा-(सं० स्त्री०) जिसका गर्भपात हुआ हो।
विगर्ह-(सं० पु०) निन्दा, शिकायत।
विगर्हणा-(सं०नपु०) डाँट डपट, धिक्कार।
विगर्हणा-(सं०स्त्री०) डाट डपट, फटकार।
विगर्हित-(सं० वि०) निन्दनीय, जिसको डाट फटकार बतलाई गई हो।
विगर्ही-(सं० वि०) निन्दा कारक।
विगलित-(सं०वि०) जो गिर गया हो, जो ढीला पड़ गया हो, बिगड़ा हुआ, शिथिल।
विगाथा-(सं०स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद इसका दूसरा नाम उद्गीति है।
विगुण-(सं० वि०) गुण रहित, जिसमें गुण न हो।
विग्गाहा-(हि० स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद।
विगन्ध-(सं० वि०) जिसमें किसी प्रकार की गन्ध न हो, बदबूदार।
विगाह-(सं०नपु०) अवगाहन, स्नान।
विगाहन-(सं०पु०) देखो विगाह।
विगाहमान-(सं०वि०) स्नान करनेवाला।
विगीत-(सं०वि०) गर्हित, निन्दित।
विगीत्ति-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
विगुण-(सं०वि०) विकृत, खराब, गुणहीन।
विगुणता-(सं०स्त्री०) गुणहीनता।
विगूढ-(सं०वि०) निन्दित, गुप्त।
विगृह्य-(सं० वि०) अलग किया हुआ।
विग्रह-(सं० पु०) विभाग, दूर करना, व्याकरण में यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों को अलग करना, युद्ध,

कलह, झगड़ा, आकृति, मूर्ति, शरीर, शृंगार, सजावट।
विग्रहण-(सं०नपु०) रूप धारण करना।
विग्रही-(हिं०वि०) युद्ध करने वाला, लड़ाई झगड़ा करने वाला।
विघटन-(सं० नपु०) तोड़ना, फोड़ना, अलगाना।
विघटित-(सं० वि०) तोड़ा फोड़ा हुआ नष्ट किया हुआ।
विघन-(हिं०पु०) देखो विघ्न, (सं०पु०) एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।
विघट्टन-(सं० नपु०) रगड़ान, हिलाना, डुलाना।
विघात-(सं०पुं०) आघात, प्रहार, चोट, नाश।
विघातक-(सं०वि०) नाश करने वाला।
विघातन-(सं०नपु०) हत्या।
विघाती-(हिं० वि०) हत्या करने वाला, हत्यारा।
विघूर्णन-(सं०नपु०) चारो ओर घुमाना, चक्कर देना।
विघ्न-(सं०पु०) बाधा, रुकावट, अड़चन, अन्तराय।
विघ्नक, विघ्नकर-(सं० वि०) बाधा डालने वाला।
विघ्नकारी-(सं० वि०)विघ्न करने वाला
विघ्ननायक-(सं० पु०) गणेश।
विघ्ननाशक-(सं० पु०) गणेशजी।
विघ्नेश-(सं०पु०) गणेश।
विघ्नेशवाहन-(सं० पु०) मूषक, चूहा।
विघ्नेश्वर-(सं०पु०) गणेश।
विचकित-(सं०वि०) घबड़ाया हुआ।
विचकिल-(सं०पु०)दौने का पौधा, एक प्रकार की चमेली।
विचक्षण-(सं० वि०) चमकता हुआ, निपुण, चतुर, बुद्धिमान्, पंडित, जो स्पष्ट देख पड़ता हो।
विचच्छन-(हिं०पु०) देखो विचक्षण।
विचक्षु-(सं० वि०) जिसकी आँख नष्ट हो गई हो।
विचन्द्र-(सं०वि०) चन्द्र रहित।
विचन्द्रा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
विचय-(सं० पु०) एकत्र करना, परीक्षा करना।
विचयन-(सं० नपु०) इकट्ठा करना।
विचरण-(सं० पुं०) घूमना फिरना, चलना।
विचरन-(हिं० पु०) देखो विचरण।
विचरना-(हिं०क्रि०) घूमना, चलना फिरना।
विचरनि-(हिं० स्त्री०) चलने फिरने की क्रिया।
विचल-(सं० वि०) अस्थिर, हिलता डोलता हुआ, डिगा हुआ, हटा हुआ।
विचलता-(सं० स्त्री०) अस्थिरता, चचलता।
विचलना-(हिं० क्रि०) अपने स्थान से हट जाना, अधीर होना, प्रतिज्ञा पर स्थिर न रहना।
विचलाना-(हिं०क्रि०) इधर उधर हटाना।
विचलित-(सं० वि०) अस्थिर, चञ्चल, डिगा हुआ, अपनी प्रतिज्ञा छोड़ा हुआ।
विचार-(सं० पु०) मनमें उत्पन्न होने वाली बात, भावना, ख्याल, न्यायालय का वादी प्रतिवादी के विषय में निश्चय, मुकदमें की सुनवाई या फैसला।
विचारक-(सं० पु०) विचार करने वाला, न्यायाधीश, नेता, जासूस।
विचारज्ञ-(सं० पु०) निर्णय करने वाला।
विचारण-(सं०नपु०) विचार, मीमांसा।
विचारणा-(सं० स्त्री०) विचार करने की क्रिया या भाव।
विचारणीय-(सं०वि०) विचार करने योग्य।
विचारना-(हिं० क्रि०) सोचना, समझना, ढूंढना, पता लगाना।
विचारपति-(सं० पु०) न्यायाधीश, फैसला करने वाला।
विचारवान्-(सं० पु०) वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो।
विचारशक्ति-(सं० स्त्री०) भला बुरा पहिचानने या विचारने की शक्ति।
विचारशास्त्र-(सं०) मीमांसा शास्त्र।
विचारशील-(सं०वि०) देखो विचारवान्।
विचारशीलता-(सं० स्त्री०) बुद्धिमानी, अक्लमन्दी।
विचारस्थल-(सं० नपु०) न्यायालय, अदालत।
विचाराध्यक्ष-(सं०पु०) न्यायाधीश।
विचारालय-(सं०पु०)देखो विचारस्थल।
विचारित-(सं०वि०) सोचा विचारा हुआ।
विचारी-(हिं०पुं०) विचरण करने वाला, इधर उधर घूमने वाला, विचार करने वाला, कवध के एक पुत्र का नाम।
विचार्य-(सं० वि०) विचारणीय, विचार करने योग्य।
विचार्यमाण-(सं० वि०) विचार करने योग्य।
विचालन-(सं० नपु०) अच्छी तरह हटाना या चलाना।
विचित-(सं०वि०) निश्चय किया हुआ।
विचिति-(सं० स्त्री०) अनुसन्धान।
विचिन्तन-(सं० नपु०) चिन्ता करना, सोचना, विचिन्तनीय-सोचने योग्य।
विचिकित्सा-(सं० स्त्री०) अनिश्चय, सन्देह।
विचित्ति-(सं० पु०) चित्त ठिकाने न रहने की अवस्था वेहोशी।
विचित्र-(सं० वि०) अनेक रंग का, विलक्षण, असाधारण, चकित करने वाला, रमणीय, सुन्दर, वह अलंकार जिसमें किसी फल की सिद्धि के लिये किसी विपरीत प्रयत्न का वर्णन रहता है।
विचित्रता-(सं० स्त्री०) विलक्षणता, अद्भुत होने का भाव।
विचित्रदेह-(सं०पु०) मेघ, बादल।
विचित्रवीर्य-(सं० पु०) चन्द्रवंशी राजा शान्तनु के पुत्र का नाम।
विचित्रशाला-(सं०स्त्री०) अजायब घर।
विचित्रा-(सं०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
विचित्रित-(सं० वि०) रंग विरंगा।
विचिन्ता-(सं०स्त्री०) सोच विचार।
विचिन्तित-(सं०वि०)सोचा विचारा हुआ
विचिन्त्य-(सं० वि०) जिसमें किसी प्रकार का सन्देह न हो।
विचिन्त्यमान-(सं० वि०) विचार किया हुआ।

विचूर्णन-(सं०नपुं०) बुकनी करना।
विचूर्णित-(सं० वि०) अच्छी तरह से चूर्ण किया हुआ।
विचेतन-(सं० वि०) अचेत, बेहोश।
विचेता-(सं०वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
विचेष्टन-(सं०नपुं०) इधर उधर लोटना, तड़पना।
विचेष्टा-(सं०स्त्री०) मुँह बनाना।
विचेष्टित-(सं०वि०) विशेष चेष्टा युक्त, (नपुं०) क्रिया, व्यापार।
विच्छन्द-(सं० पुं०) देवालय, मन्दिर।
विच्छित्ति-(सं०स्त्री०) काट कर टुकड़े अलगाना, त्रुटि, कमी, अलगाव, एक प्रकार का हार, साहित्य में वह हाव जिसमें नायिका थोड़े ही शृंगार से पुरुष को मोहित करने का प्रयत्न करती है।
विच्छिन्न-(सं०वि०) विभक्त, काट कर अलगाया हुआ, पृथक्, अलग, जिसका अन्त हुआ हो।
विच्छेद-(सं० पुं०) विरह, वियोग, नाश, काटने या अलगाने की क्रिया, क्रम का बीच में खण्डित होना, टुकड़े टुकड़े करना, बीच में पड़ने वाला खाली स्थान, कविता में यति।
विच्छेदक-(सं० पुं०) काट कर अलग करने वाला, विभाजक।
विच्छेदन-(सं० नपुं०) अलग करने की क्रिया, नाश, बरबादी।
विच्छेदनीय-(सं० वि०) काटकर अलगाने योग्य।
विच्छेदी-(सं०वि०) काटने वाला।
विच्युत-(सं० वि०) अपने स्थान से गिरा या हटा हुआ।
विछलना-(हिं०क्रि०) विचलित होना, फिसलना।
विछेद-(हिं०पुं०) वियोग, विछोह, प्रिय से अलग होना।
विछोई-(हिं०पुं०) जिसका अपने प्रिय से वियोग हुआ हो, वियोगी।
विछोह-(हिं० पुं०) वियोग, प्रिय से अलग होना।
विजंघ-(हिं०वि०) बिना जाँघ का।
विजई-(हिं० पुं०) देखो विजयी।
विजन-(सं० वि०) जनशून्य, एकान्त, बीजन, पंखा, बेना।
विजनता-(सं०स्त्री०) एकान्तता।
विजनन-(सं० नपुं०) जनन करने की क्रिया, प्रसव।
विजना-(हिं० पुं०) पंखा, बेना।
विजन्मा-(हिं० पुं०) किसी स्त्री का उसके उपपति से जन्मा हुआ पुत्र, जारज, दोगला।
विजय-(सं० पुं०) जय, जीत, सवैया छन्द का एक भेद।
विजयक-(सं०वि०)सर्वदा जीतने वाला।
विजयकण्टक-(सं० पुं०) विजय में विघ्न डालने वाला।
विजयकुञ्जर-(सं०पुं०) राजा की सवारी की हाथी।
विजयकेतु-(सं०पुं०) विजयपताका।
विजयडिंडिम-(सं० पुं०) लड़ाई में बजाने का नगाड़ा।
विजयन्तिका-(सं०स्त्री०) एक योगिनी का नाम।
विजयन्ती-(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
विजयपताका-(सं० स्त्री०) वह झंडा जो सेना के विजय प्राप्त करने पर फहराया जाता है।
विजयपूर्णिमा-(सं०स्त्री०) आश्विन की पूर्णिमा।
विजययात्रा-(सं०स्त्री०) वह यात्रा जो विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जावे।
विजयलक्ष्मी-(सं० स्त्री०) विजय की अधिष्ठात्री देवी।
विजयश्री-(सं०स्त्री०) देखो विजयलक्ष्मी।
विजयसार-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी अनेक कामों में लाई जाती है।
विजया-(सं०स्त्री०) दुर्गा, यम की भार्या का नाम, भांग, वच, मजीठ, श्रीकृष्ण की माला का नाम, एक योगिनी का नाम, एक मातृक छन्द का नाम।
विजया एकादशी-(सं०स्त्री०) आश्विन शुक्ल एकादशी।
विजया दशमी-(सं०स्त्री०)आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्योहार होता है।
विजयानन्द-(सं०पुं०) संगीत के एक ताल का नाम।
विजयी-(हिं० पुं०) वह जिसने विजय प्राप्त की हो, जीतने वाली, अर्जुन का एक नाम।
विजयेश-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
विजयोत्सव-(सं० पुं०) विजया दशमी को होने वाला उत्सव।
विजर-(सं० वि०) जरा रहित, जिसको बुढ़ापा न हो।
विजर्जर-(सं० वि०) अत्यन्त जर्जर।
विजल-(सं० नपुं०) वर्षा न होना, सूखा पड़ना।
विजल्प-(सं० पुं०) व्यर्थ की बहुत सी बकवाद।
विजाग-(हिं०पुं०)देखो वियोग,विमोह।
विजागी-(हिं० पुं०) देखो वियोगी।
विजात-(सं० वि०) वर्णसकर, दोगला।
विजाता-(सं०स्त्री०) जिस स्त्री को हाल में बच्चा हुआ हो।
विजाति-(सं०वि०) भिन्न जाति का।
विजातीय-(सं० वि०) जो अपनी जाति से भिन्न हो।
विजानु-(सं० पुं०) तलवार चलाने के बत्तीस हाथों में से एक।
विजार-(हिं० पुं०) एक प्रकार की मटियार भूमि।
विजारत-(अ० स्त्री०) वजीर का पद या धर्म।
विजिगीषा-(सं०स्त्री०) विजय प्राप्त करने की अभिलाषा, उत्कर्ष, उन्नति।
विजिट्-(अं० स्त्री०) भेंट, मुलाकात, डाक्टर का रोगी को देखने के लिये किसी के घर जाना।
विजिटिङ् कार्ड-(अं०पुं०) एक प्रकार का छोटा कार्ड जिस पर लोग अपना

नाम पता आदि छपवा लेते हैं और जब किसीसे भेंट करने जाते हैं तो अपने आगमन की सूचना देनेके लिये इसको उसके पास भेज देते हैं।
विजित-(स० वि०) जीता हुआ, (पु०) जीता हुआ प्रदेश।
विजितात्मा-(स०पु०) शिव, महादेव।
विजिताश्व-(स०पु०) राजा पृथु के एक पुत्र का नाम।
विजिति-(स०स्त्री०) विजय जीत।
विजित्वर-(स० पु०) जीतने वाला।
विजिहीर्षा-(स० स्त्री०) विहार करने की इच्छा।
विजिह्म-(स० वि०) वक्र, कुटिल।
विजीष-(स०वि०) जिसको विजय प्राप्त करने की अभिलाषा हो।
विजृम्भण-(स० नपु०) जभाई लेना, भौंह सिकोड़ना।
विजृम्भा-(स० स्त्री०) जभाई।
विजृम्भित-(स०वि०) व्याप्त, विकसित।
विजेतव्य-(सं०वि०) जो जीतने योग्य हो।
विजेता-(हि०पु०) विजय करने वाला, जीतने वाला।
विजेय-(स०वि०) जीता जाने योग्य।
विजै-(हि० पुं०) देखो विजय।
विजैसार-(हिं० पु०) देखो विजयसार।
विजोर-(हिं० वि०) निर्बल, कमज़ोर।
विजोहा-(हिं० पु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं, इसको जोहा या विमोहा भी कहते हैं।
विज्जु-(हि० स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
विज्जुल-(हि० पु०) त्वचा, छिलका।
विज्जुलता-(हिं०स्त्री०)विद्युल्लता,बिजली।
विज्जोहा-(हिं०पु०) देखो विजोहा।
विज्ञ-(स० पुं०) बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान्।
विज्ञता-(स०स्त्री०) पाण्डित्य, बुद्धिमानी।
विज्ञप्त-(स० वि०) सूचित किया हुआ, बतलाया हुआ।
विज्ञप्ति-(स०स्त्री०) विज्ञापन, इश्तहार।
विज्ञात-(सं०वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।
विज्ञातव्य-(स०वि०) जानने योग्य।
विज्ञाता-(हि०पु०) जानने वाला।
विज्ञान-(स० नपु०) ज्ञान, जानकारी, किसी विषय के सिद्धान्तों का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह किया गया हो, किसी विषय का अच्छा ज्ञान, कार्य की कुशलता, माया या अविद्या नाम की वृत्ति, ब्रह्म, आत्मा, आकाश, मोक्ष, निश्चयात्मक बुद्धि।
विज्ञान कोश-(स० पु०) वेदान्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रिया और बुद्धि।
विज्ञानता-(स०स्त्री०) विज्ञान का भाव या धर्म।
विज्ञानपति-(स०पुं०) परम ज्ञानी।
विज्ञानपाद-(स० पु०) वेदव्यास का एक नाम।
विज्ञानमय कोष-(स०पु०) बुद्धि तथा ज्ञानेन्द्रियों का समूह।
विज्ञानवाद (स० पुं०) वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म और आत्मा की एकता दिखलाई जाती है।
विज्ञानवादी-(स० पु०) योगमार्ग का अनुयायी।
विज्ञानिक-(स०पु०) देखो वैज्ञानिक।
विज्ञानी-(हिं०पु०) वह जिसको किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक।
विज्ञापक-(स०पु०) समझाने या बतलाने वाला।
विज्ञापन-(स० नपु०) किसी बात को जताने की क्रिया, सूचना देना, वह पत्र जिसके द्वारा कोई बात बतलाई जाती है, इश्तहार।
विज्ञापनीय-(स० वि०) सूचित करने योग्य।
विज्ञापित-(स०वि०) सूचना या इश्तहार दिया हुआ।
विज्ञेय-(सं० वि०) जानने या समझने योग्य।
विट-(सं० पु०) लम्पट, कामुक, धूर्त, चतुर, वह व्यक्ति जो अपनी संपूर्ण सम्पत्ति भोग विलास में नष्ट कर चुका हो, जो बड़ा धूर्त हो और बात बनाने में बड़ा निपुण हो, चूहा, नारंगी का वृक्ष, सोंचर लवण, मल, विष्ठा।
विटङ्क-(सं०पुं०) कबूतर का दरबा,(वि०) सुन्दर।
विटप-(स० पु०) वृक्ष या लता की नई शाखा, झाड़ी, कोंपल, वृक्ष, पादप,पेड़
विटपी-(हिं०पु०) वृक्ष, पेड़।
विटपीमृग-(स०पु०) बंदर।
विटलवण-(सं०नपु०) सोंचर नमक।
विट्ठल-(हिं० पु०) दक्षिण भारत की विष्णु की एक मूर्ति का नाम।
विडम्बक-(सं०पुं०) ठीक ठीक अनुकरण करने वाला, चिढ़ाने वाला।
विडम्बन-(स० नपु०) नकल करना, निन्दा या उपहास करना।
विडम्बना-(स० स्त्री०) अनुकरण करना, हँसी उड़ाना, दिल्लगी करना, डाट डपट करना।
विडम्बनीय-(स० वि०) अनुकरण करने योग्य, चिढाने लायक।
विडम्बित-(स० विं०) नकल किया हुआ, ठगा हुआ।
विडम्बी-(स०नपुं०)अनुकरण करने वाला
विड़रना-(हि० क्रि०) इधर ,उधर या तितर बितर होना, दौड़ना, भागना।
विडराना-(हिं० क्रि०) देखो विडारना।
विडारना-(हि० क्रि०) छितराना, इधर उधर करना, नष्ट करना,दौड़ना,भागना
विडाल-(स० पु०) आख का पिण्ड, मार्जार, बिल्ली, हरताल।
विडौजा-(स०पु०) इन्द्र का एक नाम।
विड्ग्रह, विड्बन्ध-(स०) मल का अवरोध, कब्ज़ियत।
विड्ज-(स० त्रि०) विष्ठा आदि में से उत्पन्न होने वाले कीडे।
विड्बन्ध-(स० पु०) मल का। अवरोध, कब्ज़ियत।
विड्भङ्ग-(स०पु०) बहुत दस्त होना।
विड्भेदी-(स०त्रि०) विरेचक औषधि, दस्तावर दवा।
वितण्ड-(स०पु०) गज हाथी।
वितण्डा-(स०स्त्री०)दूसरेके पक्ष को दबा

कर अपने पक्ष का स्थापन, व्यर्थ की लड़ाई झगड़ा।
वितत-(हिं० पु०)एक प्रकार का तार का बाजा।
वित-(हिं० पु०) चतुर, ज्ञाता, निपुण, जानने वाला।
वितत-(स० वि०) विस्तृत, फैला हुआ।
वितताना-(हिं० क्रि०) व्याकुल होना।
वितति-(स० स्त्री०) विस्तार, फैलाव।
वितथ-(स०वि०) मिथ्या, झूठ, निरर्थक
वितद्रु-(स० पु०) पञ्जाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।
वितनु-(स०वि०) अति सूक्ष्म।
वितपन्न-(हिं०वि०) देखो व्युत्पन्न, दक्ष, प्रवीण।
वितरक-(हिं०वि०) बाटने वाला।
वितरण-(स०नपु०) अर्पण करना, देना, बाटना।
वितरन-(हिं० पु०) देखो वितरण।
वितरना-(हिं० क्रि०) वितरण करना,
वितरिक्त-(हिं०अव्य०) व्यतिरिक्त, अतिरिक्त, सिवाय।
वितरित-(स० वि०) बाटा हुआ।
वितरेक-(हिं०क्रि०वि०) व्यतिरिक्त, छोड़ कर, सिवा।
वितर्क-(स० पु०) एक तर्क के बाद दूसरा तर्क, सन्देह, अनुमान, वह अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के सन्देह का उल्लेख रहता है जिसका निर्णय कुछ नहीं होता।
वितर्क्य-(स०वि०) अति विलक्षण।
वितल-(स०वि०) सात पातालों में से तीसरा पाताल।
वितस्ता-(स०स्त्री०)पञ्जाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।
वितस्ति-(स०पु०) बालिश्त, बित्ता,बारह अंगुल का परिमाण।
वितान-(स०नपु०) विस्तार, फैलाव,बड़ा चदवा या खेमा, समूह, अवकाश, घृणा, खाली जगह, एक प्रकार का छन्द, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं।

वितानक-(स०पु०)बड़ा चदवा या खेमा, समूह, जमघट।
वितानना-(हिं० क्रि०) शामियाना आदि तानना।
वितामस-(स०पु०) प्रकाश, उजाला।
वितिक्रम-(हिं०पु०) देखो व्यतिक्रम।
वितिमिर-(स०वि०) अन्धकार शून्य।
वितीत-(हिं० वि०) देखो व्यतीत, बीता हुआ।
वितीपात-(हिं०पु०) देखो व्यतीपात।
वितीपाती-(हिं०वि०) उपद्रवी, शरारती।
वितुंड-(हिं०पु०) गज, हाथी।
वितु-(हिं० पु०) वित्त, धन, सम्पत्ति।
वितुष्ट-(स० वि०) असन्तुष्ट।
वितृण-(स०वि०) तृण हीन।
वितृप्त-(स०वि०) जो तृप्त न हो।
वितृष-(स०वि०) तृष्णा से रहित।
वितृष्ण-(स०वि०) तृषा के रहित।
वितृष्णता-(स०स्त्री०) निस्पृहता।
वितृष्णा-(स०स्त्री०) तृष्णा का अभाव।
वितोय-(स० वि०) जल हीन।
वित्त-(स०नपु०) सम्पत्ति, धन दौलत, (वि०) जाना हुआ, समझा हुआ, विख्यात, प्रसिद्ध, मशहूर।
वित्तकोश-(स०नपु०) रुपया पैसा रखने की थैली।
वित्तदा-(स० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
वित्तपति-(स० पु०) कुबेर।
वित्तपुरी-(स०स्त्री०) कुबेर की नगरी।
वित्तहीन-(स०वि०) धनहीन, दरिद्र।
वित्तेश, वित्तेश्वर-(स० पु०) कुबेर।
वित्रप-(स०वि०) निर्लज्ज, बेहया।
वित्रस्त-(स०वि०) बहुत डरा हुआ।
वित्रास-(स०पु०) भय, डर।
विथकना-(हिं० क्रि०) शिथिल होना, मोहित होकर चुप हो जाना।
विथकित-(हिं० वि०) शिथिल, थका हुआ, जो आश्चर्य या मोह वश चुप हो गया हो।
विथराना-(हिं० क्रि०) इधर उधर छितराना।

विथा-(हिं०स्त्री०) व्यथा, पीडा, तकलीफ, रोग, बीमारी।
विथारना-(हिं०क्रि०)छितराना, फैलाना।
विथित-(हिं०वि०) व्यथित, पीडा युक्त, दुखी।
विथुरा-(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका उसके स्वामी से वियोग हुआ हो।
विथ्या-(स० स्त्री०) गोभी।
विदक्षिण-(स० वि०) दक्षिणा रहित।
विदग्ध-(स०पु०) रसिक मनुष्य, विद्वान् पण्डित, चतुर, (वि०) जला हुआ।
विदग्धता-(स०स्त्री०) पाण्डित्य, चतुराई।
विदग्धा-(स० स्त्री०) वह परकीया नायिका जो बड़ी चतुराई से परपुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करती है।
विदमान-(हिं०अव्य०)विद्यमान, सम्मुख, सामने।
विदरण-(स० नपु०) विदारण करना, फाड़ना।
विदरना-(हिं० क्रि०) विदीर्ण होना, फटना।
विदर्भ-(स०पु०) बरार देश का प्राचीन नाम, एक प्राचीन राजा का नाम जिसके नाम पर इस देश का नाम पड़ा था, मसूढ़ा फूलने का रोग।
विदर्भजा-(स० स्त्री०) दमयन्ती।
विदर्भराज-(स०पु०) दमयन्ती के पिता भीष्म जो विदर्भ के राजा थे।
विदल-(स०नपु०) सुवर्ण, सोना, अनार का दाना, बांस का बना हुआ कोई पात्र, (वि०) जिसमें दल न हों, बिना दल का।
विदलन-(स० नपु०) मलने दलने की क्रिया, टुकडे करना, फाड़ना।
विदलना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना,फाड़ना।
विदलित-(स०वि०) फाड़ा हुआ, टुकडे किया हुआ, रौंदा हुआ, मला हुआ।
विदा-(हिं० पु०) प्रस्थान, रवाना होना, कहीं जाने की आज्ञा।
विदाई-(हिं० स्त्री०) प्रस्थान, रुखसती विदा होने की अनुमति।
विदाय-(हिं०पु०) विसर्जन, प्रस्थान।

विदार–(सं० पु०) समर, युद्ध।
विदारक–(सं० पु०) जल के बीच का वृक्ष या पर्वत, (वि०) फाड़ डालने वाला।
विदारण–(सं० नपु०) मार डालना, हत्या करना, समर, युद्ध, लड़ाई।
विदारना–(हिं० क्रि०) फाड़ना, अलग अलग टुकड़े करना।
विदारित–(सं०वि०)विदीर्ण फाड़ा हुआ।
विदारी–(हिं०वि०) विदीर्ण करने वाला, फाड़ने वाला।
विदारीकन्द–(सं०पुं०) भूमि कुम्हड़ा।
विदारु–(सं०पु०) कृकलास, गिरगिट।
विदाह–(सं०पु०) हाथ पैर में होने वाली जलन।
विदाही–(हिं०पु०) दाह उत्पन्न करने वाला पदार्थ।
विदित–(सं०वि०) ज्ञात, जाना हुआ।
विदिथ–(हिं०पु०)पण्डित,विद्वान्, योगी।
विदिशा–(सं० स्त्री०) वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम, देखो विदिश्।
विदिश्–(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच का कोण।
विदीधिति–(सं०वि०) किरण हीन।
विदीर्ण–(सं०वि०) बीच से फाड़ा हुआ, टूटा फूटा, निहत।
विदुर–(सं०पु०) पण्डित, ज्ञानी, जानकार, कौरवों के प्रसिद्ध मन्त्री जो नीति में बड़े चतुर थे।
विदुल–(सं०नपु०) जलबेंत, बोल नामक गन्ध द्रव्य।
विदुष–(सं०पु०) विद्वान् पण्डित।
विदुषी–(सं०स्त्री०) विद्या पढ़ी हुई स्त्री, विद्वान् स्त्री।
विदूर–(सं०वि०) जो बहुत दूर हो, देखो वैदूर्य मणि।
विदूरत्व–(सं०नपु०) बहुत दूर होना।
विदूषक–(सं० पु०) कामुक, लम्पट, बातचीत करके दूसरों को हँसाने वाला, मसखरा, भाड़, दूसरों की निन्दा करने वाला, खल, दुष्ट, वह नायक जो अपने परिहास तथा कौतुक आदि के कारण कामकेलि में सहायक होता है।
विदूषण–(सं०नपु०)दोष लगाने का कार्य।
विदूषना–(हिं०क्रि०) कष्ट देना, सताना, दोषी ठहराना, दुःखी होना।
विदेव–(सं०पु०) राक्षस, यक्ष।
विदेश–(सं०पु०) अपने देश से अतिरिक्त दूसरा देश, परदेश।
विदेह–(सं० पुं०) वह जो शरीर रहित हो, राजा जनक का एक नाम, विदेहत्व–शरीर का नाश, मृत्यु।
विदेहपुर–(सं० नपुं०) राजा जनक की राजधानी, जनकपुर।
विदोष–(सं०वि०) दोष रहित, बेऐब।
विद्र–(सं०पु०)विद्वान्, पण्डित,जानकार।
विद्ध–(सं०वि०) छेदा हुआ, फेंका हुआ, बाधा पड़ा हुआ, तुल्य, समान, वक्र, टेढ़ा, मिला हुआ।
विद्यमान–(सं०वि०) वर्तमान, उपस्थित।
विद्यमानता–(सं०स्त्री०)उपस्थिति,मौजूदगी।
विद्या (सं० स्त्री०) शिक्षा आदि द्वारा उपार्जित ज्ञान, किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान, दुर्गा, सीता की एक सखी का नाम, आर्या छन्द का एक भेद।
विद्यागम–(सं०पु०) विद्यालाभ।
विद्यागुरु–(सं० पु०) पढ़ाने वाला, शिक्षक।
विद्यागृह–(सं० पु०) विद्यालय,पाठशाला
विद्यादाता–(सं० वि०) विद्या पढ़ाने वाला गुरु।
विद्यादान–(सं० नपु०) विद्या पढ़ाना, शिक्षा देना।
विद्यादेवी–(सं० स्त्री०) सरस्वती।
विद्याधन–(सं० नपु०) विद्यारूपी धन।
विद्याधर–(सं० पु०) एक प्रकार की देवयोनि जिसके अन्तर्गत गन्धर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं, वैद्यक का एक प्रकार का यन्त्र।
विद्याधरी–(सं०स्त्री०) विद्याधर की स्त्री, किन्नरी।
विद्याधार–(सं०पु०) विद्वान्, पण्डित।
विद्याधारी–(हिं० स्त्री०) एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं।
विद्याधिप–(सं० पु०) गुरु, शिक्षक, विद्वान्।
विद्यारम्भ–(सं०पु०) बालकों को विद्या पढ़ाना प्रारम्भ करने का संस्कार।
विद्याभृत्–(सं० पु०) विद्वान्।
विद्यामणि–(सं०पु०) विद्या रूपी रत्न।
विद्यामार्ग–(सं० पु०) श्रेष्ठ मार्ग।
विद्याराशि–(सं० पु०) शिव, महादेव।
विद्यार्थी–(हिं०पु०) विद्या पढ़ने वाला, छात्र, शिष्य।
विद्यालय–(सं०पु०) वह स्थान जहां पर विद्या पढ़ाई जाती है, पाठशाला।
विद्यावान्–(सं० पु०) विद्वान् पण्डित।
विद्याविद्–(सं० पु०) विद्वान्, पण्डित।
विद्याविरुद्ध–(सं०वि०) ज्ञान के विपरीत।
विद्यावेश्म–(सं०नपु०) विद्यालय।
विद्यासागर–(सं० वि०) सब शास्त्रों को जानने वाला।
विद्युता–(सं० स्त्री०) विद्युत् बिजली, एक अप्सरा का नाम।
विद्युताक्ष–(सं० पु०) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
विद्युत्–(सं० स्त्री०) सन्ध्या, बिजली।
विद्युत्केश–(सं०पु०) हेति नामक राक्षस का पुत्र।
विद्युत्पात–(सं० पु०) वज्रपात, बिजली का गिरना।
विद्युत्पुञ्ज–(सं० पु०) विद्युन्माला।
विद्युत्प्रभ–(सं० वि०) बिजली के समान चमक वाला।
विद्युत्प्रिय–(सं० वि०) काँसे का पात्र।
विद्युत्गौरी–(सं० स्त्री०) शक्ति की एक मूर्ति का नाम।
विद्युत्मापक–(सं० पु०) वह यन्त्र जिसके द्वारा बिजली के बल, प्रवाह आदि के विषय में जाना जाता है।
विद्युन्माला–(सं० स्त्री०) बिजली का समूह, एक यक्षिणी का नाम, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ गुरु वर्ण होते हैं।
विद्युन्माली–(हिं० पु०) पुराणानुसार एक राक्षस का नाम।

विद्युल्लता-(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
विद्युल्लेखा-(सं० स्त्री०) एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं इसका दूसरा नाम शेषराज है।
विद्येश-(सं० पु०) शिव, महादेव।
विद्योत्-(सं०स्त्री०) बिजली।
विद्योतन-(सं०वि०) दीप्ति युक्त।
विद्योती-(सं० वि०) प्रभावशाली।
विद्रघ-(सं० वि०) स्थूल, मोटा, पक्का।
विद्रथ-(सं० वि०) मोटा ताज़ा, पुष्ट, मजबूत।
विद्रधि-(सं०पुं०) एक प्रकार का पेट के भीतर का फोड़ा।
विद्राव-(सं०नपु०) बहना, पिघलना।
विद्रावण-(सं० पु०) पिघलना, भीगना, गलना, उड़ना, एक दानव का नाम।
विद्रावणी-(सं०स्त्री०) कौवाठोंठी।
विद्रावित-(सं० वि०) भागा हुआ, पिघला हुआ।
विद्रावी-(सं० वि०) भागने वाला, गलने वाला।
विद्रुत-(सं०वि०) गला हुआ, भागा हुआ।
विद्रुम-(सं० नपु०) प्रवाल, मूंगा।
विद्रोह-(सं०पुं०) द्वेष, राज्य को हानि पहुंचाने वाला, उपद्रव, बलवा, बगावत।
विद्रोही-(सं० वि०) द्वेष करने वाला, राज्य को हानि पहुंचाने वाला, बागी।
विद्वत्तम-(सं० वि०) विद्वानों में श्रेष्ठ।
विद्वत्ता-(सं० स्त्री०) पाण्डित्य, पंडिताई।
विद्वत्व-(सं० नपु०) देखो विद्वत्ता; पाण्डित्य।
विद्वान्-(सं०पु०) वह जो आत्मा के स्वरूप को समझता हो, वह जिसने बहुत विद्या पढी हो, पण्डित, सर्वज्ञ।
विद्विप-(सं० पु०) शत्रु, वैरी।
विद्विष्ट-(सं०वि०) जिसके साथ शत्रुता की जावे।
विद्वेष-(सं०वि०) शत्रु, दुश्मन।
विद्वेषण-(सं०नपु०)शत्रुता, वैर, दुश्मनी।
विद्वेषिता-(सं० स्त्री०) शत्रुता, दुश्मनी।
विद्वेषी-(हिं० पु०) शत्रुता करने वाला, वैरी।
विधंस-(हिं० पु०) विध्वंस, नाश, विध्वंसना-नाश करना।
विध-(हिं०पु०) विधि, ब्रह्मा।
विधत्री-(सं० स्त्री०) ब्रह्मा की शक्ति।
विधन-(सं० वि०) निर्धनता, गरीबी।
विधनता-(सं०स्त्री०) निर्धनता, गरीबी।
विधना-(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, अपने ऊपर लेना, (हिं०स्त्री०) भवितव्यता, होने वाली बात, (हिं०पुं०) विधि,ब्रह्मा।
विधर-(हिं० क्रि०वि०) देखो उधर, उस ओर।
विधरण-(सं० नपु०) रोकना, पकड़ना।
विधर्म-(सं० पु०) वह धर्म जो अपना न हो पराये का धर्म, (वि०) गुणहीन।
विधर्मिक विधर्मी-(हिं० पु०) वह जो किसी दूसरे के धर्म का अनुयायी है।
विधवा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, रांड़, बेवा।
विधवापन-(हिं०पु०) रंडापा, वैधव्य।
विधवाश्रम-(सं०पु०) वह स्थान जहा निराश्रय विधवाओं के पालन पोषण आदि का प्रबन्ध रहता है।
विधांसना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, इधर उधर करना।
विधातव्य-(सं०वि०)कर्तव्य, करने योग्य।
विधाता-(हिं०पु०) रचने वाला, बनाने वाला, व्यवस्था करने वाला, प्रबन्ध करने वाला, जगत् की रचना करने वाला
विधात्री-(सं०स्त्री०) विधान करने वाली
विधान-(सं० नपु०) किसी कार्य का आयोजन, अनुष्ठान, विन्यास, प्रबन्ध, विधि, पद्धति, प्रणाली, ढग, उपाय, पूजा, प्रेरणा, व्यवस्था, रचना, नाटक में वह स्थान जहा पर किसी वाक्य से सुख दुःख दोनों दरसाया जाता है।
विधानक-(सं० वि०) विधि या रीति जानने वाला।
विधान सप्तमी-(सं०स्त्री०) माघ शुक्ला सप्तमी।
विधानी-(हिं०पु०) विधि पूर्वक कार्य करने वाला।
विधायक-(सं० पु०) बनाने या रचने वाला, प्रबन्ध करने वाला।
विधारण-(सं० नपु०) विशेष रूप से धारण करना।
विधारा-(सं० स्त्री०) एक लता जो औषधियों में प्रयोग होती है।
विधि-(सं० स्त्री०) कार्यक्रम, काम करने की रीति, ढङ्ग, नियम, व्यवस्था, योजना, प्रकार, किस्म, सिलसिला, चालढाल, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे कोई आज्ञा दी जाती है, वह अर्थालंकार जिसमें किसी विषय का दुबारा विधान किया जाता है, विधि बैठना-मेल होना,अनुकूलता होना
विधिज्ञ-(सं०वि०) शास्त्रोक्त विधान को जानने वाला।
विधित्व-(सं० नपु०) विधि का भाव या या धर्म।
विधित्सा-(सं० स्त्री०) विधान करने की इच्छा।
विधित्सु-(सं०वि०) इच्छा करने वाला।
विधिदृष्ट-(सं० वि०) शास्त्रविहित।
विधिना-(हिं०पु०) विधि, ब्रह्मा।
विधिपुत्र-(सं०पु०) नारद।
विधिपुर-(सं०पु०) ब्रह्मलोक।
विधिपूर्वक-(सं०वि०) नियम के अनुसार
विधिबोधित-(सं० वि०) शास्त्र सम्मत।
विधिरानी-(हिं०स्त्री०) सरस्वती।
विधिलोक-(सं०पु०) ब्रह्मलोक।
विधिवत्-(सं०अव्य०) विधि पूर्वक, पद्धति के अनुसार।
विधिबद्ध-(सं०वि०) नियमबद्ध।
विधिवधू-(सं०स्त्री०) सरस्वती।
विधिवाहन-(सं०पु०) हंस।
विधिशास्त्र-(सं० नपु०) व्यवहारशास्त्र, स्मृतिशास्त्र।
विधुन्तुद-(हिं०पु०) चन्द्रमा को कष्ट देने वाला राहु।
विधु-(सं० पु०) चन्द्रमा, वायु, कपूर, विष्णु, ब्रह्मा, आयुध।
विधुकान्त-(सं०पु०)संगीत का एक ताल
विधुदार-(सं० पु०) चन्द्रमा की स्त्री

, रोहिणी।
विधुप्रिया-(सं०स्त्री०) कुमुदिनी।
विधुबन्धु-(सं०पु०) कुमुद का फूल।
विधुवैनी-(हिं०स्त्री०)चन्द्रमुखी,सुन्दर स्त्री।
विधुर-(सं० वि०) व्यग्र, व्याकुल, घबड़ाया हुआ, दुःखी, असमर्थ, परित्यक्त, छोड़ा हुआ (पु०) वियोग, जुदाई, मोक्ष।
विधुवदनी-(सं०स्त्री०) चन्द्रमा के समान मुख वाली स्त्री, सुन्दर स्त्री।
विधूत-(सं०वि०) कम्पित, काँपता हुआ, हटाया हुआ, दूर किया हुआ।
विधूम-(सं० वि०) धूम्र रहित, बिना धुवें का।
विधेय-(सं० वि०) कर्तव्य, जिस कार्य का करना उचित हो, होने वाला, अधीन, वशीभूत, व्याकरण में वह वाक्य जिसके द्वारा किसी के विषय में कुछ कहा जाय, नियम या विधि द्वारा जानने योग्य, जिसका विधान होने वाला हो।
विधेयता-(सं०स्त्री०) अधीनता।
विधेयात्मा-(सं०पु०) विष्णु।
विधेयाविमर्श-(सं०पु०) साहित्य में वह वाक्य दोष जो विधेय अंश को वाक्य में अप्रधान स्थान में रखने पर होता है।
विध्यपाश्रय-(सं०पु०) विधि का आश्रय करने वाला मनुष्य।
विध्याभास-(सं०पु०) वह अर्थालंकार जिसमें किसी अनिष्ट या आपत्ति की सम्भावना होते हुए विवश होकर किसी बात की सम्मति दी जाती है।
विध्वंस-(सं०पु०) नाश, बरबादी, अनादर, वैर।
विध्वंसक-(सं०त्रि०) नाश करने वाला
विध्वंसित-(सं०वि०) नाश किया हुआ
विध्वंसी-(हिं०वि०) नाश करने वाला।
विध्वस्त-(सं०वि०) नाश किया हुआ।
विन-(हिं०सर्व०) उस, (अव्य०) विना।
विनत-(सं० वि०) विनीत, नम्र, शिष्ट झुका हुआ, सिकुड़ा हुआ, (पु०) शिव, महादेव, सुग्रीव की सेना के एक बन्दर का नाम।
विनतड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो विनति।
विनता-(सं० स्त्री०) दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो गरुड़ की माता थी।
विनतासूनु-(सं०पु०) गरुड़।
विनति-(सं०स्त्री०) विनती,नम्रता, शिष्टता, सुशीलता, प्रार्थना, झुकाव, शासन, दण्ड, निवारण, रोक।
विनती-(हिं०स्त्री०) देखो विनति।
विनिमन-(सं०नपु०) झुकाना, नवाना।
विनम्र-(सं०वि०) अति विनीत, सुशील
विनय-(सं० स्त्री०) नम्रता, प्रार्थना, विनती, नीति, शासन,(पु०) जितेन्द्रिय, संयमी।
विनयकर्म-(सं० नपु०) विनयविद्या, शिक्षा ज्ञान।
विनयग्राही-(सं०त्रि०) वश्य।
विनयता-(सं०स्त्री०) विनय का भाव या धर्म।
विनयधर-(सं० पु०) पुरोहित।
विनयपत्र-(सं०नपु०) दरखास्त।
विनयपिटक-बौद्धों का एक आदि ग्रन्थ जो पाली भाषा में लिखा है।
विनयवान्-(सं०वि०) नम्र, शिष्ट।
विनयशील-(सं० वि०) विनय युक्त, सुशील।
विनयस्थ-(सं०वि०) आज्ञाकारी।
विनयिता-(सं०पु०) विष्णु।
विनयी-(हिं० वि०) विनय युक्त, विनीत, नम्र।
विनशन-(सं०नपु०) नाश, बरबादी।
विनशना, विनशाना-(हिं० क्रि०) देखो विनसना, विनसाना।
विनश्वर-(सं० वि०) अनित्य, नष्ट होने वाला।
विनश्वरता-(सं० स्त्री०) अनित्यता।
विनष्ट-(सं०वि०) जो नष्ट हो गया हो, ध्वस्त, मरा हुआ, बुरे आचरण का, पतित।
विनस-(सं०वि०) विना नाक का।
विनसना-(हिं० क्रि०) लुप्त होना, नष्ट होना।
विनसाना-(हिं० क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना।
विना-(सं०अव्य०) अभाव में, बगैर।
विनती-(सं० स्त्री०) विनय, प्रार्थना।
विनाथ-(सं० वि०) विना रक्षक का, अनाथ।
विनाम-(सं० पु०) झुकाव, टेढ़ापन।
विनायक-(सं०पु०) गणनायक, गणेश, गरुड़, विघ्न, बाधा।
विनायककेतु-(सं० पु०) श्रीकृष्ण।
विनायक चतुर्थी-(सं०स्त्री०)माघ सुदी चौथ
विनाश-(सं०पु०) ध्वंस, नाश, बरबादी, लोप, हानि, तबाही, खराबी।
विनाशक-(सं०वि०) नाश करने वाला।
विनाशन-(सं०पु०) संहार,नाश, बरबादी
विनाशित-(सं०वि०) नाश किया हुआ, बिगाड़ा हुआ।
विनास-(हिं०पु०) देखो विनाश।
विनासक-(सं० वि०) विना नाक का, नकटा।
विनासन-(हिं० पु०) देखो विनाशन।
विनासना-(हिं० क्रि०) संहार करना, नष्ट करना, बिगाड़ना।
विनाह-(सं०पु०) कुँवे पर का ढपना।
विनिःसृत-(सं०वि०,बाहर निकाला हुआ
विनिकार-(सं०पु०) अपराध, क्षति।
विनिक्षिप्त-(सं० वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
विनिग्रह-(सं०पु०) प्रतिबन्ध, वधेज।
विनिघ्न-(सं०वि०) गुणा किया हुआ।
विनिद्र-(सं०वि०) निद्रा रहित।
विनिद्रक-(सं०वि०) नींद खुली हुई।
विनिद्रत्व-(सं०नपु०) जागरण।
विनिध्वस्त-(सं०वि०) ध्वंस प्राप्त, नष्ट।
विनिन्दक-(सं० पु०) अत्यन्त निन्दा करने वाला।
विनिन्दित-(सं० वि०) बहुत निन्दा किया हुआ।
विनिपात-(सं०पु०) ध्वंस, वध, हत्या, अपमान।
विनिपातक-(सं० वि०) संहार या अपमान करने वाला।
विनिमय-(सं० पु०) परिवर्तन, अदल

बदल, बंधक, गिरवी ।
विनिपातित-(सं०वि०) फेंका हुआ ।
विनियुक्त-(सं०वि०) नियोजित, किसी काम में लगाया हुआ ।
विनियोग-(सं० पु०) किसी फल की आकांक्षा से किसी वस्तु का उपयोग, प्रयोग, वैदिक कृत्य में किसी मन्त्र का प्रयोग, प्रवेश ।
विनियोजित-(सं०वि०) प्रेरित, नियुक्त, लगाया हुआ, अर्पित ।
विनिर्गत-(सं० वि०) निकाला हुआ, बीता हुआ ।
विनिर्गम-(सं० पु०) बाहर होना, निकलना, प्रस्थान ।
विनिर्घोष-(सं०पु०) घोर शब्द ।
विनिर्जय-(सं०पु०) पूर्ण रूप से विजय ।
विनिर्जित-(सं०वि०) पराभूत, पराजित ।
विनिर्भय-(सं०वि०) भय रहित ।
विनिर्मल-(सं०वि०) अति निर्मल ।
विनिर्माण-(सं० नपुं०) अच्छी तरह बनाना ।
विनिर्मित-(सं० वि०) अच्छी तरह से बनाया हुआ ।
विनिर्मुक्त-(सं० वि०) बंधन से रहित, छुटकारा पाया हुआ ।
विनिर्मुक्ति-(सं० स्त्री०) मोक्ष, उद्धार ।
विनिर्मोक-(सं० वि०) वस्त्र रहित ।
विनिर्यान-(सं० नपुं०) गमन, जाना ।
विनिर्वृत्त-(सं० वि०) सम्पन्न, समाप्त ।
विनिवर्तन-(सं०नपुं०) लौटना ।
विनिवर्तित-(सं०वि०) लौटा हुआ ।
विनिवारण-(सं० नपुं०) विशेष प्रकार से निषेध ।
विनिवृत्त-(सं० वि०) लौटा हुआ ।
विनिवेदन-(सं० नपुं०) विशेष रूप से निवेदन ।
विनिवेश-(सं०पु०) प्रवेश, घुसना ।
विनिवेशन-(सं०नपुं०) स्थिति, वास ।
विनिवेशित-(सं०वि०) स्थापित, ठहरा हुआ, बसा हुआ ।
विनिवेशी-(सं०वि०) प्रवेश करने वाला ।
विनिश्चय-(सं० पु०) विशेष प्रकार से निर्णय करना ।
विनिश्चल-(सं०वि०) विशेष रूप से स्थिर ।
विनिष्कम्प-(सं० वि०) कम्प रहित ।
विनिष्पात-(सं० पु०) आघात, चोट ।
विनिष्पेष-(सं० पु०) पीसना, घिसना ।
विनिहत-(सं० वि०) आहत, चोट खाया हुआ ।
विनीत-(सं०वि०) सुशील, शिष्ट, नम्र, संयमी, सिखलाया हुआ, शासित, धार्मिक, (पु०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम ।
विनीतता-(सं० स्त्री०) नम्रता ।
विनीति-(सं०स्त्री०) सुशीलता, सम्मान ।
विनु-(हिं०अव्य०) देखो बिना ।
विनूठा-(हिं०वि०) अपूर्व, अनूठा, सुन्दर ।
विनेता-(सं० पु०) शिक्षक, शासनकर्ता ।
विनेत्र-(सं०पु०) शिक्षक ।
विनेयकार्य-(सं०नपुं०) दण्डकार्य ।
विनोक्ति-(सं० स्त्री०) वह अलंकार जिसमें किसी वस्तु की श्रेष्ठता या हीनता का वर्णन रहता है ।
विनोद-(सं० पु०) मनोरंजक व्यापार, कौतूहल, तमाशा, खेलकूद, क्रीड़ा, हँसी दिल्लगी, प्रसन्नता, आनन्द ।
विनोदन-(सं० नपुं०) खेल कूद, हँसी दिल्लगी ।
विनोदित-(सं०वि०) हर्षित, प्रसन्न ।
विनोदी-(हिं० वि०) क्रीड़ा करने वाला, खेल कूद करने वाला, हँसी दिल्लगी करने वाला, आनन्दी, चुहलबाज ।
विन्द-(सं० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, प्राप्ति, लाभ, (हिं० पुं०) देखो विन्दु ।
विन्दक-(सं० पु०) ज्ञाता, जानकार, प्राप्त करने वाला ।
विन्दु-(सं०पु०) जलकण, बूँद, बुदकी, अनुस्वार, शून्य, कण, कनी, छोटा टुकड़ा
विन्दुचित्रक-(सं० पु०) सफेद चित्तियों का हरिन ।
विन्दुतन्त्र-(सं० पु०) चौपड़ आदि की बिसात ।
विन्दुपत्र-(सं० पु०) भोजपत्र ।
विन्दुमाधव-(सं०पु०) काशी के एक प्रसिद्ध विष्णु मूर्ति का नाम ।
विन्दुर-(हिं०पु०) छोटी बिन्दी, बुनकी ।
विन्दुल-(सं० पु०) एक कीड़ा जिसके स्पर्श से शरीर पर फफोले पड़ जाते हैं, अगिया ।
विन्दुसार-(सं० पु०) चन्द्रगुप्त के एक पुत्र का नाम, सम्राट् अशोक इन्हीं के पुत्र थे ।
विन्ध-(हिं० पु०) देखो विन्ध्य ।
विन्ध्य-(सं०नपुं०) भारत मे आर्यावर्त की दक्षिण दिशा की सीमा पर का एक प्रसिद्ध पर्वत ।
विन्ध्यकूट-(सं० पु०) अगस्त्य मुनि का एक नाम ।
विन्ध्यवासिनी-(सं० स्त्री०) देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिर्जापुर के पास अवस्थित है ।
विन्ध्याचल-(हिं० पु०) विन्ध्य पर्वत ।
विन्ध्यावली-(सं० स्त्री०) राजा बलि की स्त्री का नाम ।
विन्यस्त-(सं०वि०) स्थापित, रक्खा हुआ
विन्यास-(सं० पु०) ठीक स्थान पर रखना या बैठाना, जड़ना ।
विपंची-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की वीणा।
विपक्व-(सं०वि०) अच्छी तरह पका हुआ ।
विपक्ष-(सं०पु०) विरुद्ध पक्ष, विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु, विरोध, खण्डन, व्याकरण में बाधक नियम या अपवाद (वि०) विरुद्ध, प्रतिकूल, बिना पक्ष या डैने का ।
विपक्षता-(सं० स्त्री०) विपक्ष होने की क्रिया या भाव ।
विपक्षी-(सं०वि०) विरुद्ध पक्ष का, शत्रु, प्रतिवादी बिना पर का ।
विपक्षीय-सं०वि०) शत्रु के पक्ष का ।
विपञ्चिका-(सं०स्त्री०) वीणा, बीन ।
विपञ्ची-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की बीन, क्रीड़ा, खेल ।
विपणी-(सं०स्त्री०) हाट, बाजार ।
विपताक-(सं० वि०) पताका रहित, बिना झंडे का ।

विपत्ति-(सं० पु०) आपत्ति, आफत, क्लेश, संकट की अवस्था, कठिनाई, विपत्ति झेलना-कष्ट सहना, विपत्ति भुगतना-दुख सहना, विपत्ति मोल लेना-झझट में पड़ना।
विपथ-(सं० पु०) कुमार्ग, बुरा रास्ता।
विपद्-(सं० स्त्री०) आपत्ति, संकट।
विपदा-(हि०स्त्री०) विपत्ति, संकट,दुःख।
विपन्न-(सं०वि०) आपत्ति में पड़ा हुआ, दुःखी भ्रम में पड़ा हुआ।
विपन्नता-(सं० स्त्री०) विपत्ति।
विपराक्रम-(सं० वि०) पराक्रम रहित।
विपरिणाम-(सं०पु०)विशेषरूप परिणाम।
विपरिधान-(सं० नपु०) परिधान का अभाव।
विपरिभ्रंश-(सं० पु०) विनाश।
विपरिवर्तन-(सं० नपु०) खूब घुमाना फिराना।
विपरीत-(सं० वि०) विरुद्ध, खिलाफ, रुष्ट, दुःखद, अनुपयुक्त, वह अर्थालंकार जिसमें स्वयं साधक ही किसी कार्य की सिद्धि का बाधक दिखलाया जाता है।
विपरीतता-(सं०स्त्री०) विपरीत होनेका भाव
विपरीतार्थ-(सं० वि०) जिसका अर्थ उलटा हो।
विपरीतोपमा-(सं० स्त्री०) वह उपमा जिसमें किसी भाग्यशाली व्यक्ति की हीनता का वर्णन किया गया हो।
विपर्णक-(सं० वि०) बिना पत्ते का।
विपर्यय-(सं०पु०)व्यतिक्रम, मिथ्या ज्ञान, उलटफेर, अव्यवस्था, भ्रम, गलती, नाश, गड़बड़ी।
विपर्यस्त-(सं० वि०) उलटा-पुलटा हुआ, गड़बड़।
विपर्यास-(सं० पु०) व्यतिक्रम, मिथ्याज्ञान, उलटफेर।
विपल-(सं० नपु०) समय का अति सूक्ष्म विभाग जो पल का साठवां भाग होता है
विपलायिन्-(सं०वि०) भागने वाला।
विपलाश-(सं० वि०) बिना पत्ते का।
विपवन-(सं० पु०) शुद्ध हवा।
विपशु-(सं० वि०) पशु रहित।
विपश्चित्-(सं०पु०) सूक्ष्मदर्शी, विद्वान्, पण्डित।
विपाक-(सं०पु०) पूर्ण दशा को पहुँचना, कर्म का फल, परिणाम, खाये हुए भोजन का पेट में पचना, स्वाद, दुर्दशा, दुर्गति।
विपाटन-(सं०नपु०) उखाड़ना, खोदना।
विपाटल-(सं० वि०) जिसका रंग थोड़ा लाल हो।
विपाटित-(सं० वि०) उखाड़ा हुआ।
विपाण्डु-(सं० पु०) जंगल की लकड़ी।
विपात-(सं० नपु०) नाश, बरबादी।
विपातक-(सं० वि०) नाश करनेवाला।
विपादन-(सं० नपु०) वध, हत्या।
विपादिका-(सं० स्त्री०) प्रहेलिका,पहेली।
विपादित-सं० वि०) नष्ट किया हुआ।
विपाप-(सं० वि०) पाप रहित।
विपाल-(सं० वि०) जिसका पालने वाला कोई न हो।
विपाश-(सं० वि०) पाश रहित।
विपाशा-(सं० स्त्री०) पंजाब की व्यास नदी का प्राचीन नाम।
विपिन-(सं०नपु०)उपवन, वाटिका,जंगल
विपिनचर-(सं० वि०) वन में रहनेवाला मनुष्य या पशु।
विपिनतिलका-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरणमें पन्द्रह अक्षर होतेहैं
विपिनपति-(सं० पु०) सिंह, शेर।
विपिनविहारी-(सं० वि०) जंगल में विहार करनेवाला, श्रीकृष्ण का एक नाम
विपुंसक-(सं० वि०) पुरुषत्व से हीन।
विपुंसी-(सं० स्त्री०) पुरुष के समान चेष्टा और प्रकृति वाली स्त्री।
विपुत्र-(सं० वि०) पुत्रहीन, पुत्ररहित।
विपुत्रा-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके कोई पुत्र न हो।
विपुरुष-(सं० वि०) पुरुषहीन।
विपुल-(सं० वि०) वृहत्, अगाध, संख्या या परिमाण में अधिक, (पु०) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।
विपुलता-(सं० स्त्री०) अधिकता बहुतायत
विपुलमति-(सं० पु०) बहुत बुद्धिमान्।
विपुलस्कन्ध-(सं०पु०) अर्जुन का एक नाम
विपुला-(सं० स्त्री०) वसुन्धरा, पृथ्वी, आर्या छन्द का एक भेद, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं।
विपुलाई-(हि०स्त्री०) विपुलता, अधिकता
विपुष्ट-(सं० वि०) बड़ा पुष्ट या दृढ़।
विपुष्प-(सं० वि०) बिना फूल का।
विपुष्पित-(सं० वि०) प्रफुल्लित।
विपोहना-(हि० क्रि०) लीपना, पोतना, नाश करना।
विप्र-(सं० पु०) ब्राह्मण, पुरोहित।
विप्रकर्ष-(सं० पु०) दूर से खींच लेना।
विप्रकर्षण-(सं० नपु०) दूर से खींचने की क्रिया।
विप्रकर्षणशक्ति-(सं० स्त्री०) वह शक्ति जिससे परिमाणु हटे रहते हैं।
विप्रकार-(सं० पु०) तिरस्कार,अपमान।
विप्रकीर्ण-(सं० वि०) अव्यवस्थित, छितराया हुआ, बिखरा हुआ।
विप्रकृत-(सं०वि०)तिरस्कार किया हुआ।
विप्रकृष्ट-(सं० वि०) खींचकर दूर किया हुआ।
विप्रचरण-(सं० नपु०) विष्णु के हृदय पर का भृगु मुनि के लात का चिह्न।
विप्रचित्ति-(सं० स्त्री०) एक दानव जिसके पुत्र का नाम राहु था।
विप्रजन-(सं० पु०) ब्राह्मण, पुरोहित।
विप्रतारक-(सं०वि०) धोखा देने वाला।
विप्रतिपत्ति-(सं०पु०) मेल का न होना, विरोध।
विप्रतिसार-(सं०पु०) प्रसिद्ध, मशहूर।
विप्रतीप-(सं० वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध।
विप्रथित-(सं० पुं०) प्रसिद्ध, मशहूर।
विप्रदुष्ट-(सं०वि०) कामुक, लम्पट।
विप्रदेव-(सं०पुं०) ब्राह्मण।
विप्रधावन-(सं०नपु०) इधर उधर तेज़ी से भागे फिरना।
विप्रनष्ट-(सं० वि०) विशेष रूप से नष्ट।
विप्रपद-(सं०पु०) भृगु मुनि के लात का चिह्न जो विष्णु की छाती पर माना जाता है।

विप्रपात–(सं०पु०) विशेष रूप से गिरना, ऊंचा ढालुआँ टीला।
विप्रबुद्ध–(सं०वि०) जागा हुआ।
विप्रबोधित–(सं० वि०) अच्छी तरह से समझाया हुआ।
विप्रमत्त–(सं० वि०) अति प्रमत्त।
विप्रमाथी–(सं० वि०) अच्छी तरह से मथने वाला।
विप्रमादी–(सं०वि०) देखो विप्रमत्त।
विप्रमोक्ष–(सं०पु०) विमोचन, मुक्ति।
विप्रमोह–(सं०पु०) चमत्कार।
विप्रयाण–(सं०नपु०) पलायन, भागना।
विप्रबन्धु–(सं०पु०)नीच ब्राह्मण।
विप्रयुक्त–(सं०वि०)अलग,बिछुड़ा हुआ।
विप्रयोग–(सं० पु०) वियोग, जुदाई।
विप्रराम–(सं० पु०) परशुराम।
विप्रलब्ध–(सं० वि०) प्रतारित, धोखा दिया हुआ, वंचित, रहित।
विप्रलब्धा–(सं० स्त्री०) वह नायिका जो संकेत स्थान में प्रिय को न पाकर निराश होती है।
विप्रलम्भ–(सं०पु०) चाही हुई या प्रिय वस्तु का न मिलना, विरह, जुदाई, शृंगार रस का वह भेद जिसमें नायक नायिका के विरहजन्य सन्ताप का वर्णन रहता है।
विप्रलम्भक–(सं०वि०) धोखेबाज़, धूर्त।
विप्रलाप–(सं० पु०) व्यर्थ की बकवाद।
विप्रलीन–(सं० वि०) चारो ओर बिखरा हुआ।
विप्रलुप्त–(सं० वि०) चुराया हुआ, लुप्त हुआ, उड़ा दिया गया हुआ।
विप्रलुब्धक–(सं०वि०) बड़ा लालची।
विप्रलोप–(सं० पु०) पूर्ण लोप, नाश।
विप्रलोभी–(सं०वि०)बड़ा लालची,ठग।
विप्रवसित–(सं०वि०) परदेश गया हुआ।
विप्रवाद–(सं०पु०) लड़ाई झगड़ा, कलह।
विप्रवास–(सं०पु०) परदेश में रहना।
विप्रवीर–(सं०वि०) बड़ा पराक्रमी।
विप्रव्रजनी–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो दो पुरुषों से सम्बन्ध रखती हो।
विप्रश्न–(सं०पु०)वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष से मिले।
विप्रश्निक–(सं०पु०) दैवज्ञ, ज्योतिषी।
विप्रसारण–(सं०नपु०)विस्तार, फैलाव।
विप्रेक्षण–(सं०नपु०)अच्छी तरह देखना।
विप्रेक्षित–(सं० वि०) देखा हुआ।
विप्रेत–(सं०वि०) जो बीत गया हो।
विप्रेषित–(सं०वि०) बाहर भेजा हुआ।
विप्लव–(सं० पु०) उपद्रव, हलचल, बलवा, विपत्ति, अव्यवस्था, विनाश, डाट डपट, जल की बाढ़, नाव का डूबना, घोड़े की सरपट चाल।
विप्लाव–(सं० पु०) जल की बाढ़।
विप्लावक–(सं० पु०) राज्यद्रोही, बलवाई।
विप्लावी–(हिं०वि०)उपद्रव करने वाला।
विप्लुत–(सं० वि०) आकुल, घबड़ाया हुआ, छितराया हुआ, बिखरा हुआ।
विप्लुति–(सं० स्त्री०) उपद्रव, विप्लव।
विफल–(सं० वि०) फल रहित, परिणाम हीन, व्यर्थ, निष्फल, हताश, निराश।
विफाण्ट–(हिं०वि०) काढ़ा बनाया हुआ।
विबन्ध–(सं० पु०) आलिंगन।
विबन्धु–(हिं० वि०) बन्धु रहित।
विबल–(सं०वि०) दुर्बल, अशक्त।
विबुद्ध–(सं०वि०) जागृत, जागता हुआ, विकसित, खिला हुआ।
विबुध–(सं० पु०) बुद्धिमान्, पण्डित, चन्द्रमा, देवता, शिव, महादेव।
विबुधतरु–(सं० पु०) कल्पवृक्ष।
विबुधधेनु–(सं० स्त्री०) कामधेनु।
विबुधपति–(सं० पु०) इन्द्र।
विबुध विलासिनी–(सं० पु०) देवता की स्त्री, अप्सरा।
विबुधवेलि–(सं० स्त्री०) कल्प लता।
विबुधवैद्य–(सं० पु०) अश्विनीकुमार।
विबुध वन–सं० पु०) नन्दन वन।
विबुधाधिप, विबुधाधिपति–(हिं०पु०) इन्द्र।
विबुधान–(सं० पु०) आचार्य, देवता।
विबुधानगा–(सं०स्त्री०) आकाश गंगा
विबुधावास–(सं०पु०) देव मन्दिर, स्वर्ग
विबुधेतर–(सं० पु०) असुर, दैत्य।
विबोध–(सं० पु०) जागरण, जागना, अच्छा ज्ञान, सचेत होना,होश में आना।
विबोधन–(सं० पु०) समझाना, बुझाना, ढाढ़स देना।
विबोधित–(सं० वि०) जताया या बतलाया हुआ।
विभङ्ग–(सं० पु०) विभाग, क्रम का न टूटना, मुख का भाव, भ्रूभङ्ग।
विभञ्ज–(हिं० पु०) टूटना, नाश, ध्वस।
विभक्त–(सं० वि०) अलग किया हुआ, बाटा हुआ।
विभक्ति–(सं०स्त्री०)अलग होने की क्रिया या भाव, विभाग, बाट, व्याकरण में शब्दमें लगाया हुआ वह प्रत्यय जिससे उस पद का क्रियापद से सबंध सूचित होता है।
विभग्न–(सं०वि०) टूटा फूटा हुआ।
विभव–(सं० पु०) ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति मोक्ष, बहुतायत, साठ सवत्सरों में से एक का नाम।
विभवमद–(सं० पु०) धन का अहंकार।
विभववान्–(सं०वि०) शक्तिशाली।
विभवशाली–(सं० वि०) ऐश्वर्य युक्त।
विभाण्डक–(सं० पु०) एक मुनि जो ऋष्यशृंग के पिता थे।
विभाँति–(हिं०स्त्री०) प्रकार, भेद,किस्म।
विभा–(सं०स्त्री०) प्रभा, कान्ति, शोभा।
विभाकर–(सं०पु०) सूर्य, अग्नि, राजा, अर्क वृक्ष।
विभाग–(सं० पु०) बाँटने की क्रिया या भाव, बँटवारा, हिस्सा बखरा, अध्याय, प्रकरण।
विभागक–(सं०वि०)विभाग करने वाला, बाँटने वाला।
विभाग भिन्न–(सं० नपु०) तक्र, मठा।
विभागवत्–(सं०वि०) विभाग के तुल्य।
विभागी–(हिं०पु०) विभाग करने वाला, हिस्सा पाने वाला।
विभाजक–(सं० पु०) विभाग करनेवाला, हिस्सा बाटने वाला, गणित में वह सख्या जिससे किसी दूसरी सख्या भाग दी जाती है, भाजक।

विभाजन-(स० नपु०) भाग करने या बाटने की क्रिया, पात्र, बरतन।
विभाजित-(स०वि०) भाग किया हुआ, बाटा हुआ, खण्ड किया हुआ।
विभाज्य-(स० वि०) विभाग करने योग्य।
विभात-(स० नपु०) प्रभात, सवेरा।
विभाति-(हि० पु०) शोभा, सुन्दरता।
विभाना-(हि० क्रि०) चमकना, सुशोभित होना।
विभारना-(हि० क्रि०) चमकना।
विभाव-(स० पु०) अलकार शास्त्र में वह वस्तु जो रति आदि भावों को आश्रय में उत्पन्न करती या उत्तेजित करने वाली होती है।
विभावन-(स० नपु०) विशेष रूप से चिन्तन।
विभावना-(स० स्त्री०) वह अर्थालकार जिसमें कारण के बिना कार्य का होना, अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति, अवरोध होते हुए भी कार्य की सिद्धि अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य की सिद्धि दिखलाई जाती है।
विभावनीय-(स० वि०) चिन्तित करने योग्य।
विभावरी-(स० स्त्री०) रात्रि, वह रात जिसमें तारे चमकते हों, हल्दी, धूर्त स्त्री, कुटनी, बहुत बकवाद करने वाली स्त्री।
विभावरीश-(स०पु०) चन्द्रमा।
विभावसु-(स० वि०) अधिक प्रभाव वाला (पु०) एक वसु का नाम, सूर्य, अग्नि, मदार का वृक्ष, एक प्रकार का हार, चन्द्रमा, एक ऋषि का नाम।
विभावित-(स० वि०) चिन्तित, सोचा हुआ।
विभास-(स० पु०) चमक, एक राग का नाम।
विभासक-(स०पु०) चमकाने वाला।
विभासना-(हि० क्रि०) चमकना।
विभासित-(स०वि०) प्रकाशित, प्रकट।
विभिन्न-(स० वि०) काटकर अलग किया हुआ, पृथक्, अलग, अनेक प्रकार का, उलटा।
विभिन्नता-(स०स्त्री०) भेद, फर्क।
विभीत-(स०वि०) डरा हुआ।
विभीतक-(स०पु०) बहेडे का वृक्ष।
विभीति-(स० स्त्री०) भय, डर शका, सन्देह।
विभीषक-(स० वि०) डराने वाला।
विभीषण-(स० वि०) बड़ा भयकर या डरावना (पु०) रावण का भाई जो राक्षस था।
विभीषिका-(स० स्त्री०) भय प्रदर्शन, डर दिखलाना।
विभु-(स० पु०) वह जो सर्वत्र वर्तमान हो, जो सर्वव्यापक हो, सर्वत्र पहुचने वाला, महान्, बहुत बड़ा, नित्य, अचल, दृढ, शक्तिमान, (पु०) ब्रह्म, आत्मा, ईश्वर, स्वामी, शिव, विष्णु।
विभुक्रतु-(स०क्रि०) शत्रु को हराने वाला
विभुग्न-(स०वि०) कुछ टूटा हुआ।
विभुता-(स०पु०) ऐश्वर्य, प्रभुता, शक्ति।
विभूति-(स०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, ऐश्वर्य, विभव, धन, सम्पत्ति, अलौकिक शक्ति, शिवजी के अग में लगाने की राख, प्रभुत्व, बड़ाई, सृष्टि, लक्ष्मी, एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था, विष्णु का नित्य और स्थायी ऐश्वर्य, वह अलौकिक शक्ति जिसके अन्तर्गत आठ सिद्धिया हैं। यथा-अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व,
विभूतिमत्-(स० वि०) धनवान्।
विभूद्न्-(स० स्त्री०) शक्तिशाली ऐश्वर्यवान्।
विभूतिमान्-(स० पु०) ऐश्वर्यशाली, धनवान्।
विभूषण-(स० नपु०) अलकार, जेवर, गहना।
विभूषणा-(स० स्त्री०) शोभा।
विभूषना-(हि०क्रि०) अलकृत, सजाया हुआ।
विभूषित-(स० वि०) सुशोभित, अलकारों से सजाया हुआ, गुणों से युक्त।
विभुष्णु-(स०पु०) शिव, महादेव।
विभूषा-(स०स्त्री०) अलकार, गहना।
विभेटन-(हि०पु०) गले लगाना, भेंट करना।
विभेतव्य-(स०वि०) डरने लायक।
विभेत्ता-(स०वि०) डराने वाला।
विभेद-(स० पु०) विभाग, विभिन्नता, अनेक भेद कई प्रकार अन्तर, फरक, धँसना, प्रवेश करना, कटाव।
विभेदक-(स० वि०) काटने वाला, धँसने वाला।
विभेदकारी-(स०वि०) दो व्यक्तियों में फूट उत्पन्न करने वाला।
विभेदन-(स०पु०) छेदना, तोड़ना।
विभेदना-(हि० क्रि०) छेदना, काटना प्रवेश करना।
विभेदी-(हि०वि०) छेद कर घुसने वाला, काटने वाला।
विभो-(हि० पु०) हे प्रभु!
विभौ-(हि० पु०) देखो विभव।
विभ्रंश-(स०पु०) पतन, नाश, अवनति।
विभ्रंशित-(स० वि०) पतित, विलुप्त।
विभ्रंशित ज्ञान-(स०वि०) ज्ञानशून्य, बेहोश।
विभ्रम-(स० पु०) भ्रमण, चक्कर, भ्रम, धोखा, सशय, सन्देह, भूल, व्यग्रता, घबड़ाहट, स्त्रियों का वह भाव जिसमें वे भ्रम में पड़कर अनेक भाव प्रकट करती हैं।
विभ्रमा-(स०स्त्री०) वार्धक्य, बुढापा।
विभ्रमी-(स०वि०) विभ्रम युक्त।
विभ्रान्त-(स०वि०) भ्रम मे पड़ा हुआ, चक्कर खाता हुआ।
विभ्रान्ति-(स०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट
विभ्राट्-स०पु० विपत्ति, उपद्रव, सकट।
विमण्डन-(स० नपु०) शृंगार करना, सजाना, आभूषण, गहना।
विमण्डित-(स० वि०) सुशोभित, सजा हुआ।
विमत-(स० नपु०) विरुद्ध मत या सिद्धान्त।
विमति-(स०पु०) दुर्बुद्धि बुरा विचार

कुमति।
विमत्सर-(स०पु०) अधिक अहंकार, बड़ा घमंड।
विमद-(स० वि०) उन्माद हीन, मद रहित।
विमन, विमनस्क-(स० वि०) उदास, खिन्न।
विमन्यु-(स०वि०) क्रोध रहित।
विमर्द-(स०पु०) पीसना, मथना,लड़ाई झगड़ा, विनाश, युद्ध।
विमर्दक-(स०वि०) नाश करने वाला, चूर चूर करने वाला, पीसने वाला।
विमर्दन-(स० नपु०) कुचलना, पीसना, नष्ट करना, मार डालना।
विमर्दित-(स०वि०) कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ।
विमर्दी-(हिं० पु०) नष्ट करने वाला, वध करने वाला।
विमर्श-(स०पु०) समालोचना, परामर्श, सलाह, परीक्षा, किसी बात का अच्छी तरह विचार, असन्तोष।
विमर्ष-(स० पु०) देखो विमर्श, नाटक का एक अंग जिसके अन्तर्गत अपवाद, खेद, संकट, व्यवसाय, विरोध आदि का वर्णन रहता है।
विमल-(स०वि०)निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष, शुद्ध, सुन्दर, मनोहर, (नपु०) चांदी, रजत।
विमलक-(स० पु०) एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।
विमलता-(स०स्त्री०) शुद्धता, पवित्रता, मनोहरता।
विमलत्व-(स०स्त्री०) मनोहरता,स्वच्छता, पवित्रता, निर्मलता।
विमलदान-(स० पु०) केवल ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये दिया हुआ दान।
विमलध्वनि-(स० पु०) ६ चरणों का एक छन्द जो दोहा और सवैया से मिला कर बनता है।
विमला-(स० वि०) निर्मल, स्वच्छ, (स० स्त्री०) सरस्वती देवी।
विमलात्मा-(स० वि०) शुद्ध अन्तः-करण वाला।
विमलापति-(स०पु०) विष्णु।
विमलादित्य-(स०पु०) सूर्य।
विमलार्थक-(स०वि०) स्वच्छ, साफ।
विमलीकरण-(स०पु०) विमल या शुद्ध करने की क्रिया।
विमाता-(स०स्त्री०) सौतेली मा।
विमातृज-(स०पु०) सौतेला भाई।
विमान-(स० नपु०) वायुयान, हवाई जहाज़, आकाश मार्ग, सजधज कर निकाली हुई वृद्ध पुरुष की अरथी,रथ, घोड़ा, सात खंड का मकान, अनादर।
विमानना-(हिं०स्त्री०) अपमान, तिरस्कार
विमानपोत-(स०नपु०) हवाई जहाज़।
विमानयितव्य-(स० वि०) तिरस्कार करने योग्य।
विमाय-(स०वि०) माया हीन।
विमार्ग-(स० पु०) बुरा रास्ता, कुचाल।
विमिश्र, विमिश्रित-(स०वि०) मिश्रित, मिला हुआ।
विमुक्त-(स०वि०) भली भाँति मुक्त, वह जो बन्धन से अलग हुआ हो, स्वतन्त्र, फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ।
विमुक्तता-(स०स्त्री०) विमोचन।
विमुक्ति-(स०स्त्री०)मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा
विमुख-(स० वि०) मुख रहित, निवृत्त, उदासीन लापरवाह, विरुद्ध, खिलाफ, निराश।
विमुखता-(स०स्त्री०)विरोध,अप्रसन्नता।
विमुग्ध-(स० वि०) मोहित, भ्रान्त, भ्रम में पड़ा हुआ, व्यग्र, घबड़ाया हुआ, उन्मत्त, पागल, भूला हुआ।
विमुग्धकारी-(स० पु०) मोहित करने वाला, भ्रम में डालने वाला।
विमुद-(स० वि०) आनन्द रहित, उदास, खिन्न।
विमूढ-(स० वि०) मोह प्राप्त, भ्रम में पड़ा हुआ, वेसुध, अचेत, ज्ञान रहित, जड़बुद्धि, वेवकूफ, अत्यन्त विमोहित।
विमूढ गर्भ-(स०पु०) वह गर्भ जिसमें बच्चा मरा या वेहोश हो।
विमूल-(स०वि०) निर्मूल, बिना जड़ का
विमूलन-(स० नपु०) नाश, ध्वंस।
विमृग्य-(स०वि०)तलाश करने लायक।
विमृत्यु-(स० वि०) मृत्यु रहित, अमर।
विमृश-(स०पु०) आलोचना।
विमृष्ट-(स० वि०) जिसपर तर्क वितर्क किया गया हो।
विमोक-(स०पु०) मुक्ति, छुटकारा।
विमोक्ता-(स० पु०) मुक्त करने वाला।
विमोक्ष-(स०पु०) मुक्ति, छुटकारा।
विमोक्षक-(स० पु०) मुक्ति देने वाला।
विमोक्षण-(स०नपु०) विमोचन, मुक्ति।
विमोक्ता-(हि० पु०) मुक्त करने वाला।
विमोचक-(स०वि०)बन्धन खोलने वाला
विमोचन(सं० नपु०) बन्धन खोलना, मुक्त करना, वाहर करना, निकालना, फेंकना, गिराना।
विमोचना-(हि० क्रि०) मुक्त करना, छुटकारा देना, गिराना, टपकाना।
विमोचित-(स०वि०) मुक्त किया हुआ, खुला हुआ।
विमोह-(स० पु०) भ्रम, अज्ञान, अचेत या वेसुध होना, वेहोशी, एक नरक का नाम।
विमोहक-(स० पु०) चित्त को लुभाने वाला।
विमोहन-(स० नपु०) मुग्ध करना, चित्त लुभाना, कामदेव के एक बाण का नाम।
विमोहना-(हि०क्रि०) मोहित होना या करना, वेसुध होना या करना, धोखे में डालना।
विमोहा-(हि०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं इसका दूसरा नाम जोहा या विजोहा है
विमोहित-(स० वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ, मूर्छित, भ्रम में डाला हुआ।
विमोही-(स० स्त्री०) मोहित करने वाला, लुभाने वाला।
विमौट-(हि०पु०) दीमक का उठाया हुआ मिट्टी का ढेर, बाबी।
विमौन-(स०वि०) मौन रहित।

विमौली-(स०वि०) शिरोभूषा रहित ।
विम्बक-(स०नपु०) सूर्य चन्द्र मण्डल ।
विम्बित-(स० वि०) प्रतिबिम्बित ।
वियग-(हिं०पु०) दो अग वाले, अर्ध नारीश्वर शिव, महादेव ।
विय-(हिं०वि०) दो, जोड़ा ।
वियत्-(स०पु०)आकाश, वायुमण्डल ।
वियत् पताक-(हि०स्त्री०)विद्युत्, बिजली
वियद्ग-(स०वि०) आकाश गामी ।
वियद्गङ्गा-(स०स्त्री०) मन्दाकिनी ।
वियद्भूत्ति-(स०स्त्री०) अन्धकार ।
वियन्मणि-(स०पु०) सूर्य ।
वियम-(स०पु०) सयम, दुःख, क्लेश ।
वियुत-(स०वि०) रहित, अलग, हीन ।
वियुक्त-(स०वि०) वियोग प्राप्त, बिछुड़ा हुआ, रहित, हीन ।
वियो-(हि०वि०) अन्य, दूसरा ।
वियोग-(स० पु०) अलग होने का भाव, विच्छेद, विरह, अलगाव, जुदाई ।
वियोगान्त-(स० वि०) ऐसे नाटक या उपन्यास सबधी जिसकी कथा का अन्त दुःख पूर्ण हो ।
वियोगिन-(हि०स्त्री०) देखो वियोगिनी ।
वियोगिनी-(स० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतम से बिछुड़ी हो।
वियोगी-(हि०पु०वि०) विरही पुरुष, वह जो अपनी प्रियतमा से बिछुड़ा हो
वियोजक-(स०पु०) पृथक् करने वाला, गणित में वह सख्या जो किसी बड़ी सख्या में से घटाई जाने वाली हो ।
वियोजन-(स०नपु०) जुदा करना, बाकी निकालना ।
वियोजनीय-(स० वि०) विश्लिष्ट, जुदा किया हुआ ।
वियोजित-(स०वि०) अलगाया हुआ ।
विरंग-(हिं० वि०) बदरग, बुरे रग का, अनेक रग का ।
विरंचि-(स० पु०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा, विधाता ।
विरंचि सुत-(स०पु०) नारद ऋषि ।
विरक्त-(स० वि०) विमुख, अप्रसन्न, उदासीन ।

विरक्तता-(स०स्त्री०)उदासीनता ।
विरक्ति-(स०स्त्री०) विमुखता,अप्रसन्नता ।
विरचन-(स०नपु०) निर्माण, बनाना ।
विरचना-(हिं० क्रि०) निर्माण करना, बनाना, सजाना, जी उचटना ।
विरचयिता-(स० पु०) निर्माण करने वाला, बनाने वाला ।
विरचित-(स० वि०) निर्मित, बनाया हुआ, लिखित, लिखा हुआ ।
विरज-(हि० वि०) स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष ।
विरजस्क-(स० वि०) जिस स्त्री का रजोधर्म बन्द हो गया हो ।
विरजा-(स० स्त्री०) कैथ का पेड़ ।
विरञ्च-(स० पु०) ब्रह्मा ।
विरञ्चि-(स०पु०) सृष्टि रचने वाले ब्रह्मा ।
विरञ्चिसुत-(स०पु०) ब्रह्मा के पुत्र,नारद ।
विरत-(स०वि०) विमुख, जो तत्पर न हो, विरक्त, वैरागी, अति लीन ।
विरति-(स० पु०) चाह न होना, उदासीनता, वैराग्य ।
विरथ-(स० वि०) बिना रथ का, पैदल, रथ से गिरा हुआ ।
विरद-(हि० पु०) प्रसिद्धि, यश, कीर्ति (वि०) बिना दाँत का
विरदावली-(स०स्त्री०) यश की कथा ।
विरदैत-(हिं०वि०) यशस्वी, नामवर ।
विरमण-(स० नपु०) सभोग, विलास, त्याग ।
विरमना-(हि० क्रि०) विराम करना, ठहरना, रम जाना, वेग का कम होना।
विरमाना-(हिं० क्रि०) अनुरक्त करना, फसाना, किसी कार्य में व्यापृत करना, भुलावे में रखना ।
विरल-(स० वि०) जो घना न हो । जो दूर दूर पर हो, पतला, दुर्लभ, निर्जन, अल्प, थोड़ा ।
विरलता-(हि० स्त्री०) पतलापन ।
विरव-(स० वि०) शब्द रहित ।
विरश्मि-(स० वि०) बिना करण का ।
विरस-(स० वि०) नीरस, फीका, बिना स्वाद का, अरुचिकर, अप्रिय, रसहीन (काव्य) ।
विरसता-(स०स्त्री०) फीकापन, नीरसता ।
विरह-(स० पु०) किसी वस्तु से रहित होने का भाव, किसी वस्तु का अभाव, वियोग, जुदाई (वि०) रहित, बिना ।
विरहा-(हिं० पु०) एक प्रकार की गीत जिसको अहीर गडेरिये गाते हैं ।
विरहिणी-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम से वियोग हुआ हो, जो विरह के कारण दुःखी हो ।
विरहित-(स०वि०) रहित, शून्य, बिना ।
विरही-(हिं० पु०) जिसका प्रियतमा से वियोग हुआ हो, वह जो इस वियोग से दुःखी हो ।
विरहोत्कण्ठिता-(स०स्त्री०) वह नायिका जिसको दृढ विश्वास हो कि उसका पति या प्रियतम अमुक समय में आवेगा परन्तु कारण वश वह न आवे ।
विराग-(स० पु०) लगन या इच्छा का न होना, उदासीन भाव, वैराग्य, सगीत में एक में मिले हुए दो राग ।
विरागित-(स०वि०) विराग युक्त ।
विरागी-(हिं० वि०) विरक्त, ससार-त्यागी, उदासीन ।
विराजना-(हिं० क्रि०) उपस्थित रहना, शोभित होना, सोहना, बैठना ।
विराजित-(स० वि०) बैठा हुआ, विद्यमान, उपस्थित, चमकता हुआ ।
विराजिन्-(स०वि०) सुशोभित, उपस्थित ।
विराट्-(स० पु०) ब्रह्म का स्थूल रूप जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व है, कान्ति, दीप्ति, (वि०) बहुत बड़ा या भारी ।
विराट-(स० पु०) मत्स्य देश, इस देश के राजा जिन के यहा अज्ञात वास के समय पाण्डव लोग नौकरी करते थे, सगीत में एक ताल का नाम ।
विरातक-(स०पु०) अर्जुन वृक्ष ।
विराध-(स० पु०) क्लेश, पीड़ा, कष्ट देने वाला, एक राक्षस जिसको लक्ष्मण ने दण्डकारण्य में मारा था ।
विराधन-(स०नपु०) पीड़ा देना,सताना ।

विराम–(सं० नपुं०) रुकना, ठहराव, विश्राम, सुस्ताना, बोलती समय वाक्य में वह स्थान जहा ठहर न पड़ता हो, छन्द के चरण में पढते समय ठहरने का स्थान, यति।

विरामब्रह्म–(सं० पुं०) संगीत में एक ताल का नाम।

विराल–(सं० पुं०) बिडाल, बिल्ली।

विराव–(सं०पुं०) शब्द, बोली, शोरगुल।

विरावी–(हिं०वि०) शोरगुल करने वाला, चिल्लाने वाला।

विरास, विरासी–(हिं०) देखो विलास, विलासी।

विरिंच–(हिं०पुं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु।

विरुज–(सं० वि०) रोग रहित, नीरोग।

विरुझना–(हिं०क्रि०) उलझना।

विरुत–(सं०वि०) कूजित, गूंजता हुआ।

विरुद–(सं० पुं०) यश, कीर्ति, गुण, प्रताप आदि का वर्णन।

विरुदावली–(सं०स्त्री०) किसी के प्रताप, पराक्रम आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन

विरुद्ध–(सं० वि०) प्रतिकूल, खिलाफ, विपरीत, अप्रसन्न, अनुचित।

विरुद्धकर्मा–(सं०पुं०) विपरीत आचरण वाला मनुष्य, साहित्य में श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें किसी एक क्रिया के अनेक विरुद्ध फल दिखलाये जाते हैं।

विरुद्धता–(सं० स्त्री०) प्रतिकूलता, उलटापन।

विरुद्धरूपक–(सं० पुं०) रूपक अलंकार का वह भेद जिसमें कही हुई कोई बात देखने में असम्बद्ध जान पड़ती है परन्तु विचार करने पर संगत ठहरती है।

विरुद्धार्थदीपक–(सं० नपुं०) दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें किसी एक कथन से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखलाया जाता है।

विरुधिर–(सं० वि०) रक्तहीन, जिसमें रुधिर न हो।

विरूक्ष–(सं०वि०) जो रूखा न हो।

विरूढ–(सं०वि०) आरूढ, चढा हुआ, उत्पन्न।

विरूथिनी–(सं० स्त्री०) वैशाख कृष्ण एकादशी।

विरूप–(सं०वि०) कुरूप, बदसूरत, भद्दा, अनेक रूपरंग का, शोभा रहित, बदला हुआ, विरुद्ध, भिन्न, उलटा।

विरूपता–(सं०स्त्री०) कुरूपता, भद्दापन।

विरूपा–(सं० स्त्री०) यम की पत्नी का नाम, (वि०) कुरूप, बदसूरत।

विरूपाक्ष–(सं०वि०) डरावने नेत्र वाला, (सं०पुं०) शिव, महादेव, एक दिग्गज का नाम, रावण के एक सेनापति का नाम।

विरूपिका–(सं० स्त्री०) बदसूरत औरत।

विरूपी–(हिं०वि०) कुरूप, बदसूरत।

विरेचक–(सं० वि०) दस्तावर, दस्त लाने वाला।

विरेचन–(सं०नपुं०) दस्त लाने वाली दवा, जुल्लाब।

विरेफ–(सं० वि०) रेफ शून्य।

विरोक–(सं०पुं०) सूर्य, किरण, दीप्ति, चमक।

विरोचन–(सं० नपुं०) प्रकाशमान सूर्य की किरण, चन्द्रमा, विष्णु, मदार का पौधा।

विरोचनसुत–(सं०पुं०) राजा बलि।

विरोध–(सं०पुं०) विपरीत भाव, वैर, शत्रुता, अनबन, उलटी स्थिति, व्याघात, नाश, मेल का न होना, वह अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया अथवा द्रव्य में से किसी एक का दूसरे जाति, गुण, क्रिया या द्रव्य में से किसी एक के साथ विपरीत भाव देख पड़ता हो, नाटक का एक अंग जिसमें कोई वर्णन करती समय कोई आपत्ति का आभास दिखलाया जाता है।

विरोधक–(सं०वि०) विरोध करने वाला

विरोधन–(सं०नपुं०) नाश, नाटक में विमर्श का एक अंग जो उस समय होता है जब किसी कारण से कोई कार्य नाश होता हुआ दिखलाया जाता है।

विरोधना–(हिं०क्रि०) विरोध करना, शत्रुता करना।

विरोधाचरण–(सं०नपुं०) शत्रुता का व्यवहार।

विरोधाभास–(सं०पुं०) वह अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया अथवा द्रव्य का विरोध देख पड़ता है।

विरोधित–(सं० वि०) जिसका विरोध किया हुआ हो।

विरोधिता–(सं० स्त्री०) शत्रुता, वैर, दुश्मनी।

विरोधिनी–(सं०स्त्री०) विरोध करने वाली

विरोधी–(हिं० वि०) विरोध करने वाला, प्रतिद्वन्द्वी, विपक्षी, शत्रु, साठ संवत्सरों में से पचीसवा संवत्सर।

विरोधीश्लेष–(सं०पुं०) श्लेष अलंकार का वह भेद जिसमें श्लिष्ट शब्दों के द्वारा दो पदार्थों में भेद, कमी बेशी या विरोध दिखलाया जाता है।

विरोधोक्ति–(सं०स्त्री०) परस्पर विरोधी वचन।

विरोधोपमा–(सं०स्त्री०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें दो विरोधी पदार्थों से किसी वस्तु की उपमा दी जाती है।

विरोध्य–(सं०वि०) विरोध के योग्य।

विरोपण–(सं० नपुं०) लीपना, पोतना, भूमि में पौधा लगाना।

विरोम–(सं० वि०) रोम रहित, बिना रोवें का।

विरोष–(सं० वि०) क्रोध रहित, बिना क्रोध का।

विरोहण–(सं० नपुं०) एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में लगाना।

विरोही–(हिं०पुं०) पौधा लगाने वाला।

विर्त–(हिं० पुं०) देखो वृत्ति।

विलंघनीय–(सं० वि०) लांघने योग्य।

विल–(सं०नपुं०) छिद्र, कन्दरा।

विलक्ष–(सं०वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ, आश्चर्य में पड़ा हुआ।

विलक्षण-(स० नपु०) अपूर्व, अद्भुत अनूठा।
विलक्षणता-(सं० स्त्री०) अनोखापन।
विलखना-(हि० क्रि०) दुःखी होना, बिलखना।
विलखाना-(हि० क्रि०) विकल करना, घबड़ाना।
विलग-(स०वि०) अलग, पृथक् (पु०) भेद।
विलगाना-(हि० क्रि०) अलग होना या करना, अलग देख पड़ना।
विलग्न-(स०वि०) सलग्न, लगा हुआ।
विलङ्घन-(सं० नपु०) लघन करना, उपवास करना, कूद या लाघ कर पार करना।
विलङ्घना-(सं०स्त्री०) बाधा दूर करना।
विलङ्घनीय-(स०वि०) पार करने योग्य।
विलङ्घित-(स० वि०) विफल, पराजय किया हुआ।
विलङ्घी-(स०वि०) नियम का उल्लघन करने वाला।
विलच्छन-(हिं०वि०) देखो विलक्षण।
विलज्ज-(स०वि०) लज्जा रहित, वेहया।
विलपन-(स०नपु०) विलाप, वार्तालाप।
विलपना-(हिं० क्रि०) विलाप करना, रोना।
विलपाना-(हिं०क्रि०) रुलाना, किसी को विलाप करने में प्रवृत्त करना।
विलब्ध-(स०वि०) अलग किया हुआ।
विलम्ब-(स० पु०) अति काल, देर।
विलम्बन-(स०नपु०) देर करना, विलब करना, सहारा लेना।
विलम्बना-(हिं० क्रि०) देर करना, सहारा लेना, मनमें बसना।
विलम्बित-(स० वि०) लटकता हुआ, जिसको देर हुई हो।
विलम्बितगति-(स०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिस के प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर होते हैं।
विलम्बिता-(स०वि०) देर करने वाला।
विलम्बी-(स०वि०) देर करने वाला।
विलम्भ-(स०पु०) उदारता, उपहार।

विलय-(स० पु०) प्रलय, लोप, नाश, मृत्यु।
विलयन-(स०नपुं०)अलग करनेका कार्य।
विलसन-(स० नपु०) चमकने की क्रिया, आमोद प्रमोद, क्रीड़ा।
विलसना-(हि० क्रि०) विलास करना, क्रीड़ा करना, शोभा प्राप्त करना।
विलसाना-(हि०क्रि०) देखो विलसाना।
विलाप-(सं०पु०) क्रन्दन, विकल होकर रोने की क्रिया।
विलापना-(हिं० क्रि०) विलाप करना रोना, भूमि में पौधा रोपना।
विलायत-(अ० पु०) स्वदेश, अपना देश, आधुनिक बोलचाल में युरोप और अमेरिका के लिये प्रयोग किया जाता है।
विलायती-(अ० वि०) युरोप अथवा अमेरिका सबधी।
विलायन-(स०नपु०) प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।
विलावली-(हि० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
विलास-(स० पु०) हर्ष, आनन्द, सुख भोग, मनोरजन,हाव भाव, नाज़ नखरा किसी अग की मनोहर चेष्टा, किसी वस्तु का हिलना डोलना, अति सुख।
विलासभवन-(स० नपुं०) क्रीड़ागृह, नाचघर।
विलासमन्दिर-(स० नपु०) देखो विलासभवन।
विलासविपिन-(स० नपु०) क्रीड़ावन।
विलासवेश्म-(स० नपुं०) क्रीड़ागृह।
विलासशील-(स० वि०) विलास करने वाला।
विलासिका-(स० स्त्री०) अलकार में एक प्रकार का रूपक।
विलासिनी-(स० स्त्री०) सुन्दर जवान स्त्री, वेश्या, रडी, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।
विलासी-(हि०पु०)कामी पुरुष, आराम-तलब मनुष्य, आनन्द शील।
विलिखित-(सं० वि०) लिखा हुआ, खुदा हुआ।

विलिप्त-(स०वि०) लिपा पुता हुआ।
विलीक-(स० वि०) अनुचित, अयोग्य।
विलीन-(सं० वि०) लिप्त, छिपा हुआ, नष्ट।
विलुप्त-(स०वि०) जो देख न पड़ता हो।
विलुभित-(स० वि०) चचल।
विलुम्पक-(स० पुं०) चोर, ठग।
विलून-(स० वि०) कटा हुआ, अलग किया हुआ।
विलेप-(स०पु०) लेप, पलस्तर।
विलेपन-(स० नपु०) लेप करने की क्रिया, लगाने का पदार्थ।
विलेशय-(स० पु०) बिल में रहने वाला जीव, सर्प, साँप।
विलोक-(स० पुं०) दृष्टि।
विलोकना-(हि० क्रि०) अवलोकन करना, देखना।
विलोकनीय-(स०वि०) देखने योग्य।
विलोकित-(स०वि०) देखा हुआ।
विलोचन-(स० नपु०) नयन, नेत्र, आँख, एक नरक का नाम, आख फोड़ने की क्रिया।
विलोड़ना-(हि०क्रि०) देखो बिलोड़ना।
विलोप-(स० पु०) नाश, हानि, विघ्न, बाधा।
विलोपक-(स०वि०) नाश करने वाला।
विलोपना-(हि० क्रि०) लोप करना, बाधा डालना।
विलोपी-(स० वि०) नाश करने वाला।
विलोभ-(स०पु०) मोह, भ्रम, माया।
विलोभन-(स० नपुं०) मोहित करने का व्यापार।
विलोम-(स०वि०) प्रतिकूल, विपरीत, उलटा, सगीत में स्वर का अवरोह या उतार, (पु०) सर्प, कुत्ता।
विलोम क्रिया-(स०स्त्री०)अन्त से आदि की ओर जाने वाली क्रिया।
विलोमज-(स० वि०) विपरीत वर्ण से उत्पन्न, यथा शूद्र के औरस से ब्राह्मणी की सन्तति।
विलोमजिह्व-(स०पुं०) हस्ती, हाथी।

विलोमवर्ण-वर्णसङ्कर जाति।
विलोल-(सं०वि०) चंचल, चपल।
विलोलन-(सं०नपुं०) कम्पन, काँपना।
विल्व-(सं० पुं०) बेल का पेड़।
विल्वपत्र-(सं० नपुं०) बेल का पत्ता।
विल्वमङ्गल-(सं० पुं०) सूरदास का अन्धे होने के पहले का नाम।
विवंश-(सं०वि०) वंश रहित।
विव-(हिं० वि०) दो, दूसरा।
विवक्तृ-(सं०वि०) बहुत बोलने वाला।
विवचन-(सं० नपुं०) कथन।
विवदमान-(सं०वि०) झगड़ालू।
विवन्धन-(सं०नपुं०) रुकावट, बन्धन।
विवक्ता-(हिं०पुं०) कहने वाला, संशोधक
विवक्षा-(सं० स्त्री०) बोलने की इच्छा, आशय, तात्पर्य, अर्थ।
विवक्षित-(सं० वि०) अभिलषित, इच्छा किया हुआ।
विवदना-(हिं० क्रि०) शास्त्रार्थ करना, झगड़ना, विवाद करना।
विवर-(सं०नपुं०) बिल, छेद, गड्ढा, कन्दरा, गुफा।
विवरण-(सं० नपुं०) सविस्तार वर्णन, व्याख्या, भाष्य, टीका, वृत्तान्त, हाल।
विवर्जक-(सं०वि०) त्याग करने वाला।
विवर्जन-(सं०नपुं०) परित्याग, उपेक्षा
विवर्जनीय-(सं०वि०) त्याग करने योग्य
विवर्जित-(सं०वि०) निषिद्ध, उपेक्षित, रहित।
विवर्ण-(सं०वि०) बदरंग, रंग बदलने वाला, नीच, कान्ति हीन, साहित्य में भय, लज्जा मोह आदि के कारण नायक या नायिका के मुख का रंग फीका पड़ जाने का भाव।
विवर्त-(सं०पुं०) समूह, नृत्य, आकाश, रूपान्तर, भ्रम, भ्रान्ति।
विवर्तन-(सं०नपुं०) परिभ्रमण, घूमना फिरना।
विवर्तवाद-(सं० पुं०) वेदान्त का वह सिद्धान्त जिसके द्वारा संसार को माया तथा ब्रह्म को सृष्टि का उत्पत्ति स्थान मानते हैं।

विवर्तित-(सं० वि०) परिवर्तित, बदला हुआ, उखड़ा हुआ।
विवर्धन-(सं०नपुं०) वृद्धि, बढ़ती, उन्नति
विवर्धित-(सं०वि०) बढ़ा हुआ।
विवश-(सं० वि०) पराधीन, परवश, बेवस, लाचार, स्वाधीन।
विवशता-(सं० स्त्री०) पराधीनता।
विवशीकृत-(सं०वि०) विवश किया हुआ
विवस-(हिं०वि०) देखो विवश।
विवस्त्र-(सं०वि०) वस्त्र हीन, नंगा।
विवस्वत्-(सं०पुं०) सूर्य, अरुण, पन्द्रहवें प्रजापति का नाम।
विवाक्य-(सं०वि०) वाक्य हीन।
विवाद-(सं० पुं०) वाक् युद्ध झगड़ा, कलह, मतभेद, मुकदमेबाजी, विवाद उठाना-मतभेद प्रकट करना, झगड़ा आरम्भ करना।
विवादक-(सं० पुं०) झगड़ालू, विवाद करने वाला।
विवादास्पद-(सं०वि०) जिसपर विवाद या झगड़ा हो, विवाद योग्य।
विवादी-(हिं०पुं०) झगड़ा करने वाला, मुकदमा लड़ने वालों में से कोई एक पक्ष अर्थात् मुद्दई या मुद्दालेह, संगीत में वह स्वर जिसका व्यवहार किसी राग में बहुत कम होता है।
विवाधिक-(सं० पुं०) फेरीवाला, घूमघाम कर चीज बेंचने वाला।
विवास-(सं० पुं०) प्रवास, वास।
विवासन-(सं० नपुं०) वास करना।
विवाह-(सं० पुं०) वह संस्कार जिसमें पुरुष और स्त्री परस्पर सम्बद्ध किये जाते हैं, पाणिग्रहण, परिणय, ब्याह, शादी, दारकर्म।
विवाहना-ब्याह करना।
विवाहित-(सं० वि०) जिसका विवाह हो चुका हो।
विवाहिता-(सं०वि० स्त्री०) ब्याही हुई स्त्री
विवाही-(हिं० वि०) जिसका विवाह हो चुका हो।
विवाह्य-(सं० वि०) पाणिग्रहण करने योग्य
विवि-(हिं० वि०) दो, दूसरा।

विविक्त-(सं० वि०) पृथक् किया हुआ, बिखरा हुआ, पवित्र, निर्जन।
विविक्त चरित-(सं० वि०) शुद्ध आचरण वाला।
विविक्षु-(सं०वि०) आश्रय चाहने वाला
विविचार-(हिं वि०) विवेक या विचाररहित
विविचारी-(हिं० पुं०) दुराचारी दुश्चरित्र
विविदिषा-(सं० स्त्री०) जानने की इच्छा
विवित्सु-(सं० वि०) जानने के लिये उत्सुक
विविदिशा-(सं०स्त्री०) जानने की इच्छा
विविध-(सं० वि०) अनेक प्रकार का, बहुत तरह का।
विविर-(सं० नपुं०) खोह, गुहा, बिल।
विबुध-(सं० पुं०) देवता, ज्ञानी, पण्डित
विबुधपुर-(सं० पुं०) स्वर्ग।
विबुधप्रिया-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम।
विबुधवन-(सं० पुं०) नन्दन वन।
विबुधवैद्य-(सं० पुं०) अश्विनीकुमार।
विबुधेश-(सं० पुं०) देवताओं के राजा इन्द्र
विवृत-(सं० वि०) विस्तृत, फैला हुआ।
विवृत्त-(सं० वि०) घूमा हुआ।
विवृत्ति-(सं०स्त्री०) परिभ्रमण, भाष्य, टीका
विवृतोक्ति-(सं० स्त्री०) वह अलङ्कार जिसमें श्लेष का अर्थ कवि स्वयं प्रकट कर देता है।
विवेक-(सं० पुं०) भली बुरी वस्तु का ज्ञान, अच्छा बुरा जानने की शक्ति, बुद्धि, विचार, सत्य ज्ञान।
विवेकज्ञ-(सं० पुं०) वह जिसको भले बुरे का पूरा ज्ञान हो।
विवेकज्ञान-(सं० नपुं०) तत्वज्ञान, सच्चा ज्ञान।
विवेकता-(सं० स्त्री०) ज्ञान।
विवेकवान्-(सं० पुं०) बुद्धिमान्।
विवेकी-(हिं० पुं०) भले बुरे का ज्ञान रखने वाला, बुद्धिमान, ज्ञानी, समझदार न्यायाधीश।
विवेचन-(सं० नपुं०) परीक्षा, जाँच, निर्णय, अनुसन्धान, मीमांसा, व्याख्या।
विवेचना-(हिं० स्त्री०) देखो विवेचन।
विवेचनीय-(सं०वि०) मीमांसा करने योग्य

विवेचित-(सं० वि०) निश्चित, तय किया हुआ।
विव्वोक-(सं० पुं०) साहित्य के अनुसार वह हाव भाव जिससे स्त्रिया सयोग के समय नायक का अनादर करती हैं।
विश्-(सं० पुं०) वैश्य।
विशङ्क-(सं० वि०) निर्भय, निडर।
विशङ्कग्रीय-(सं० वि०) शका युक्त, डरपोक।
विशङ्का-(सं० स्त्री०) अविश्वास।
विशङ्की-(सं० वि०) जिसको किसी का भय हो।
विश-(सं० पुं०) मृणाल, कमल की डडी, मनुष्य, आदमी।
विशद-(सं० वि०) स्पष्ट, स्वच्छ, सफेद, सुन्दर, अनुकूल, प्रसन्न, (पुं०) सफेद रग।
विशब्द-(सं० वि०) शब्द रहित।
विशय-(सं० पुं०) सशय, सन्देह।
विशयी-(सं० वि०) सशय युक्त।
विशर, विशरण-(सं०) वध करना, मार डालना।
विशल्य-(सं० वि०) शल्य रहित, चिन्ता शून्य।
विशस-(सं० पुं०) वध, हत्या, तलवार।
विशस्ति-(सं० स्त्री०) वध, हत्या।
विशस्पति, विशाम्पति-(सं० पुं०) राजा
विशाख-(सं० पुं०) शिव, कार्तिकेय के छोटे भाई का नाम, याचक, मागने वाला
विशाखग्रह-(सं० पुं०) बेल का वृक्ष।
विशाखा-(सं० स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र।
विशाय-(सं० पुं०) पहरेदारों का पारी-पारी से सोना।
विशारद-(सं० पुं०) किसी विषय का अच्छा विद्वान्, दक्ष, कुशल, (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रसिद्ध, अभिमानी।
विशारदा-(सं० स्त्री०) केंवाच, धमासा।
विशाल-(सं० वि०) अति विस्तृत और बड़ा, लम्बा, चौड़ा, भव्य, प्रसिद्ध।
विशालक-(सं० पुं०) एक यक्ष का नाम, गरुड़, कपित्थ, कैथ।
विशालता-(सं० स्त्री०) विशाल होने का भाव।
विशाला-(सं० स्त्री०) दक्ष की एक कन्या का नाम, इद्रवारुणी लता।
विशालाक्ष-(सं० पुं०) विष्णु, शिव, महादेव, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
विशालाक्षी-(सं० स्त्री०) चौसठ योगिनियों में से एक का नाम, बड़ी बड़ी आख वाली स्त्री, पार्वती।
विशिका-(सं० स्त्री०) बालू, रेत।
विशिख-(सं० पुं०) बाण, एक प्रकार की घास।
विशिष्ट-(सं० वि०) विलक्षण, अद्भुत, अधिक शिष्ट, यशस्वी, कीर्तिवान्, विशेषता युक्त, मिला हुआ, प्रसिद्ध, मशहूर।
विशिष्टता-(सं० स्त्री०) विशेषता।
विशिष्टाद्वैत-(सं० नपुं०) वह दार्शनिक सिद्धात जिसके अनुसार जीवात्मा और ससार का ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वस्तुतः अभिन्न होना माना जाता है।
विशीर्ण-(सं० वि०) जीर्ण, बहुत पुराना, सूखा हुआ।
विशीर्णपर्ण-(सं० पुं०) नीम का वृक्ष।
विशीर्ष-(सं० वि०) बिना सिर का।
विशील-(सं० वि०) बुरे चरित्र का, दुष्ट।
विशुण्डि-(सं० पुं०) कश्यप के एक पुत्र का नाम।
विशुद्ध-(सं० वि०) अति शुद्ध, जिसमें किसी प्रकार की मिलावट न हो, सच्चा।
विशुद्धगणित-(सं० नपुं०) वह गणित जिसमें पदार्थ को कोई सम्बन्ध रखते हुए केवल राशि का विचार किया जाता है।
विशुद्ध चरित्र-(सं० पुं०) शुद्ध आचरण का।
विशुद्धता-(सं० स्त्री०) पवित्रता।
विशुद्धि-(सं० स्त्री०) विशुद्ध होने की क्रिया या भाव, पवित्रता।
विशूचिका-(सं० स्त्री०) देखो विसूचिका।
विशृंखल-(सं० वि०) शृंखला रहित, जिसमें किसी प्रकार की रुकावट न हो।
विशृंग-(सं० वि०) शृग रहित, बिना सींग का।
विशेष-(सं० पुं०) अन्तर, भेद, प्रकार, तारतम्य, समानता, विचित्रता, नियम, सार, तत्व, अधिकता, वस्तु, पदार्थ, चीज़, अवयव, अङ्ग, वैशेषिक दर्शन के अनुसार सात प्रकार के पदार्थों में से एक, साहित्य में वह अलकार जिसमें बिना किसी आधार के आधेय का वर्णन होता है या थोड़ा कार्य करने पर बहुत बड़ा लाभ होता है अथवा किसी एक वस्तु का अनेक स्थानों में होना वर्णन किया जाता है।
विशेषक-(सं० वि०) विशेषता उत्पन्न करने वाला, (पुं०) तिलक, साहित्य में वह पद्य जिसमें तीन श्लोकों या पदों की एक ही क्रिया होती है।
विशेषज्ञ-(सं० पुं०) किसी विषय का अच्छा जानकार।
विशेषण-(सं० नपुं०) वह जो किसी प्रकार की विशेषता दिखलाता हो, व्याकरण में वह शब्द जो किसी सज्ञा या क्रिया की विशेषता सूचित करता है, सज्ञा से सम्बन्ध रहने पर "विशेष्य विशेषण" तथा क्रिया से सम्बन्ध रहने पर "विधेय विशेषण" कहलाता है, विशेषण तीन प्रकार के होते हैं-गुणवाचक, सख्या वाचक, सख्या वाचक तथा सार्वनामिक
विशेषता-(सं० स्त्री०) विशेष का भाव या धर्म।
विशेषना-(हिं० क्रि०) निश्चय करना, निर्णय करना।
विशेषित-(सं० वि०) जो विशेष रूप से अलग किया हो।
विशेषोक्ति-(सं० स्त्री०) साहित्य में वह अलकार जिसमें पूर्ण कारक न रहने पर भी कार्य की सिद्धि का वर्णन किया जाता है।
विशेष्य-(सं० पुं०) व्याकरण में वह सज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा रहता है।
विशोक-(सं० वि०) शोक रहित (पुं०) युधिष्ठिर के एक अनुचर का नाम।

विशोकषष्ठी-(सं०स्त्री०) चैत्र शुक्ला षष्ठी
विशोध- (सं०वि०) विशुद्ध करने योग्य।
विशोधी-(सं०वि०) अच्छी तरह से शुद्ध करनेवाला।
विशोधिनी-(सं० स्त्री०) नागवन्ती लता।
विशोध्य-(सं०वि०)शोधन करने योग्य।
विशोष-(सं०नपुं०) शुष्कता, रूखापन।
विशोषण-(सं० नपुं०) अच्छी तरह सोखना।
विश्-(सं० स्त्री०) कन्या, लड़की।
विश्पति-(सं० पुं०) राजा, प्रमुख, मुखिया।
विश्रम्भ-(सं०पुं०) विश्वास, प्रेम, हत्या, इधर उधर आनन्द से घूमना, प्रेमी और प्रेमिका का रति समय का झगड़ा
विश्रब्ध-(सं० वि०) विश्वसनीय, शान्त, निर्भय, निडर।
विश्रब्ध नवोढा-(सं० स्त्री०) वह नवोढा नायिका जिसका अपने पति पर थोड़ा थोड़ा प्रेम और विश्वास होने लगा हो
विश्रम-(हिं०पुं०) देखो विश्राम।
विश्रयी-(सं०वि०) विशेष प्रकार से सेवा करने वाला।
विश्रवा-(हिं० पुं०) एक प्राचीन ऋषि जो पुलस्त्य मुनि के पुत्र थे।
विश्रान्त-(सं० वि०) जिसकी थकावट दूर हो गई हो।
विश्रान्ति-(सं०पुं०) विश्राम, आराम।
विश्राम-(सं० पुं०) थकावट दूर करना, श्रम मिटाना, आराम करना, सुख, चैन, आराम, ठहरने का स्थान।
विश्राव-(सं० पुं०) अधिक प्रसिद्धि।
विश्री-(सं०वि०) शोभाहीन, कुरूप, भद्दा
विश्रुत- (सं० वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।
विश्रुतात्मा-(सं०पुं०) विष्णु।
विश्रुति-(सं० स्त्री०) प्रसिद्धि।
विश्लिष्ट-(सं०वि०) अलग किया हुआ, प्रकाशित, विकसित, शिथिल, थका हुआ, मुक्त।
विश्लेष-(सं० नपुं०) पृथक् होना, शिथिलता, विकास, वियोग, विछोह।
विश्लेषण-(सं० नपुं०) किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को पृथक् करना।
विश्व-(सं० पुं०) समस्त ब्रह्माण्ड, चौदहो भुवनों का समूह, संसार, दुनिया, शिव, विष्णु, देह, शरीर, जीवात्मा, बोल नामक गन्ध, द्रव्य, देवताओं का एक गण जिसके अन्तर्गत दस देवता हैं, यथा—वसु, सत्य, ऋतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा और माद्रवा, (वि०) समस्त, बहुत, अधिक।
विश्वकथा-(सं०स्त्री०) संसार संबंधी कथा।
विश्वकद्रु-(सं०पुं०) शिकारी कुत्ता, शब्द।
विश्वकर्ता-(सं० पुं०) परमेश्वर।
विश्वकर्मजा-(सं० स्त्री०) सूर्य की पत्नी का नाम।
विश्वकर्मा-(सं० पुं०) संपूर्ण संसार की रचना करने वाला ईश्वर, ब्रह्मा, सूर्य, शिव, बढ़ई, मेमार, लोहार, एक देवता जो सब प्रकार के शिल्प शास्त्र के आविष्कर्ता माने जाते हैं।
विश्वकाय-(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वकाया-(सं०स्त्री०) दुर्गा।
विश्वकारक-(सं०पुं०)विश्व के कर्ता,शिव।
विश्वकारु-(सं० पुं०) विश्व कर्ता।
विश्वकूट-(सं० पुं०) हिमालय की एक चोटी का नाम।
विश्वकृत्-(सं०पुं०) देखो विश्वकर्मा।
विश्वकोश-(सं० पुं०) वह ग्रंथ जिसमें संसार के सब विषयों का विस्तृत वर्णन रहता है।
विश्वक्षय-(सं० पुं०) प्रलय।
विश्वग-(सं०पुं०) ब्रह्मा।
विश्वगत-(सं० वि०) विश्व व्याप्त।
विश्वगर्भ-(सं०पुं०) शिव, विष्णु।
विश्वगुरु-(सं० पुं०) विष्णु।
विश्वचक्षु-(सं० पुं०) ईश्वर।
विश्वजन्य-(सं० वि०) विश्व का हित करने वाला।
विश्वजयी-(सं०वि०)विश्वको जीतने वाला
विश्वजित्-(सं० पुं०) वह जिसने संपूर्ण विश्व पर विजय प्राप्त किया हो।
विश्वतनु-(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वतः-(सं०अव्य०) चारो ओर।
विश्वतृप्त-(सं० वि०) परमेश्वर, विष्णु।
विश्वतोबाहु-(सं०पुं०) देखो विश्वतृप्त।
विश्वतोमुख-(सं० पुं०) परमेश्वर।
विश्वदासा-(सं०स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम।
विश्वदृष्ट-(सं०वि०) जिसने संपूर्ण विश्व का दर्शन किया हो।
विश्वदेव-(सं०पुं०) वह देवता जिनकी पूजा नान्दी मुख श्राद्ध में होती है।
विश्वधर-(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वनाथ-(सं० पुं०) शिव, महादेव, काशी के एक प्रसिद्ध शिवलिंग का नाम।
विश्वनाभ-(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वबाहु-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
विश्वमाता-(सं०स्त्री०) दुर्गा।
विश्वमुखी-(सं०स्त्री०) पार्वती।
विश्वमोहन-(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वम्भर-(सं०पुं०) परमेश्वर।
विश्वम्भरा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
विश्वयोनि-(सं०पुं०) ब्रह्मा।
विश्वरुचि-(सं०स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
विश्वयोनि-(सं० पुं०) विश्व का कारण, ब्रह्मा।
विश्वरुची-(सं०स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम।
विश्वरूप-(सं० नपुं०) शिव, विष्णु, श्रीकृष्ण का वह रूप जो उन्होंने अर्जुन को गीता का उपदेश करती समय दिखलाया था।
विश्वरूपी-(सं०पुं०) विष्णु।
विश्वलोचन-(सं० नपुं०) सूर्य और चन्द्रमा।
विश्ववास-(सं०पुं०) संसार, दुनिया।
विश्वविद्-(सं०वि०) बहुत बड़ा पण्डित।
विश्वविद्यालय-(सं० पुं०) वह संस्था जिसमें सब प्रकार की विद्याओं की उच्चकोटि की शिक्षा दी जाती है।
विश्वविधाता-(सं० पुं०) सृष्टि कर्ता।
विश्वविभावन-(सं० पुं०) संसार का

प्रतिपाल्न।
विश्वविश्रुत-(सं० वि०) ससार भर में प्रसिद्ध।
विश्ववीश-(स०नपु०) ईश्वर।
विश्ववृक्ष-(स०पु०) विष्णु।
विश्वव्यापी-(स०वि०) जो सपूर्ण विश्व में व्याप्त हो।
विश्वश्रवा-(स० पु०) एक ऋषि जो कुबेर, रावण आदि के पिता थे।
विश्वसरन-(स०पु०)जगत् का हितकारी
विश्वसत्तम-(स०पु०) श्रीकृष्ण।
विश्वसन-(स०नपु०) विश्वास, एतबार।
विश्वसनीय-(स०वि०) विश्वास करने योग्य।
विश्वसू-(स०त्रि०) ईश्वर।
विश्वसृज्-(स०पु०) ब्रह्मा, जगदीश्वर।
विश्वसृष्टि-(स०स्त्री०) ससार की सृष्टि।
विश्वसित-(स० वि०) विश्वास करने योग्य।
विश्वस्त-(स०वि०) विश्वसनीय।
विश्वहेतु-(स०पु०) विष्णु।
विश्वा-(अ०स्त्री०)वीस पल का एक मान
विश्वात्मा-(हि०पु०) ब्रह्मा,विष्णु,शिव।
विश्वाधार, विश्वाधिप-(सं० पु०) परमेश्वर।
विश्वामित्र-(स० पु०) एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो वडे क्रोधी थे, इनका नाम गाधिज, गाधेय और कौशिक भी था।
विश्वामित्र-(स०त्रि०) विश्व का जीवन-दाता।
विश्वायन-(स०त्रि०) विश्वात्मा ब्रह्म।
विश्वावसु-(स० पु०) एक गन्धर्व का नाम, विष्णु, एक सवत्सर का नाम, (स्त्री०) रात।
विश्वास-(सं०पु०) एतबार, यकीन, मन का दृढ निश्चय।
विश्वासकारक-(स० वि०)मन में विश्वास उत्पन्न करने वाला।
विश्वासघात-(स० पु०) अपने ऊपर विश्वास करने वाले के साथ दगा करना।
विश्वासन-(सं०नपुं०) विश्वास,एतबार।
विश्वासपात्र-(स०पु०) जिस पर भरोसा किया जावे।
विश्वासस्थान-(स० नपु०) विश्वासपात्र।
विश्वासिक-(स०वि०) विश्वास का पात्र।
विश्वासी-(हि० वि०) विश्वास करने वाला,वह जिस पर विश्वास किया जाय।
विश्वेदेव-(स० पु०) अग्नि, देवताओं का एक गण जिसमें इन्द्रादि नव देवता माने जाते हैं।
विश्वेश-(स० पु०) शिव, विष्णु, उत्तरा-षाढा नक्षत्र।
विश्वेश्वर-(स० पु०) शिव की एक मूर्ति का नाम।
विषखण्ड-(स० पु०) मृणाल, कमल की नाल।
विष-(स०नपु०) वह पदार्थ जो प्राणी के शरीर में प्रवेश होने पर प्राण ले लेता है अथवा स्वास्थ्य नष्ट कर देता है, गरल, जहर, बछनाग, कलिहारी, विष की गाँठ-अनेक प्रकार के उपद्रव खड़ा करने वाला।
विषकण्ठ-(स०पु०) महादेव।
विषकन्या-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसके साथ सभोग करने पर मनुष्य मर जाता है।
विषकृत-(स०वि०) विष मिला हुआ।
विषक्त-(स०वि०) सलग्न, आसक्त।
विषघ्न-(स० वि०) विष नाश करने वाला।
विषघ्नी-(स० स्त्री०) वनतुलसी, भूमि आमला, हल्दी, अपामार्ग।
विषचक्र-(स०पु०) चकोर पक्षी।
विषजल-(स०नपु०) विषैला पानी।
विषजुष्ट-(स०वि०) विष मिला हुआ।
विषण्ण-(स०वि०) चिन्तित, दुःखी।
विषण्णता-(स०स्त्री०) मूर्खता।
विषतन्त्र (स०नपु०) सर्पादि का विष दूर करने की प्रक्रिया।
विषदन्त-(स०पु०) बिल्ली।
विषदन्तक-(सं०पु०) सर्प।
विषद्-(स०वि०) निर्मल, स्वच्छ, साफ।
विषदुष्ट-(स०वि०) विष मिश्रित।
विषद्रुम-(स०पु०) कुचले का वृक्ष।
विषधर-(स० पु०) सर्प, साप।
विषनाशक-(स० वि०) विष को दूर करने वाला।
विषपन्नग-(स०पु०) जहरीला साप।
विषपुच्छ-(स०पु०) बिच्छू।
विषपुष्प-(स०नपु०) जहरीला फूल।
विषपुष्पक-(स०पु०) मैनफल।
विषभिषज्-(स० पु०) विषवैद्य, विष उतारने वाला चिकित्सक।
विषभुजङ्ग-(स०पु०) ज़हरीला साप।
विषमन्त्र-(स०पु०) वह जो विष उतारने का मत्र जानता हो।
विषम-(स०वि०) जो समान या बराबर न हो, वह सख्या जो २ से बराबर विभाग न हो, ताल, बहुत तीव्र, अति कठिन, भयकर, (पु०) सगीत में एक प्रकार का ताल, सकट, विपत्ति, वह वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में बराबर बराबर अक्षर न हों, वह अर्थालकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का सबध वर्णन किया जाता है।
विषमक-(स० वि०) असमान, जो बरा-बर न हो।
विषमकर्ण-(स० पु०) समकोण चतुर्भुज में किसी दो बराबर के कोणों के सामने की रेखा।
विषमकर्म-(स० नपु०) असदृश कार्य।
विषमकोण-(स० नपु०) समकोण से भिन्न कोण।
विषमखात-(स० नपु०) वह गड्ढा जिसका चारों का किनारा बराबर न हो।
विषमचतुरस्र-(स० पु०) वह असमान बाहु का चतुष्कोण क्षेत्र जिसके आमने सामने की भुजा समानान्तर हों।
विषम चतुष्कोण-(स० पु०) विषमकोण वाला चतुष्कोण क्षेत्र।
विषम ज्वर-(स० पु०) वह ज्वर जो प्रतिदिन आता है परन्तु इसके आने का कोई नियत समय नहीं होता तथा तापमान भी प्रति दिन समान नहीं होता
विषमता-(स०स्त्री०) असमानता, द्रोह,वैर।

विषम त्रिभुज–(सं० पु०) वह त्रिभुज जिसकी तीनों भुजा समान न हों।
विषम दलक–(सं०पुं०) वह सीर्प जिसके दोनो दल समान न हों।
विषम नयन, विषम नेत्र–(सं० पुं०) शिव, महादेव।
विषमय–(सं० वि०) ज़हरीला।
विषम राशि–(सं०स्त्री०) अयुग्म राशि यथा–मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ।
विषमरूप–(सं० वि०) जो समरूप का न हो।
विषम वल्कल–(सं० पु०) नरंगी, नीवू।
विषम भाग–(सं०पु०) असमान अंश।
विषमवाण–(सं० पु०) कन्दर्प, कामदेव।
विषमवृत्त–(सं० पु०) वह छन्द जिसके चरण समान न हों।
विषमवेग–(सं० पु०) वेग जो न्यूनाधिक हो।
विषमशील–(सं०वि०) उद्धत, उद्दण्ड।
विषम साहस–(सं०वि०) वहुत साहस।
विषमाक्ष–(सं०पु०) शिव, महादेव।
विषमेक्षण–(सं० पु०) शिव, महादेव।
विषमेषु–(सं० पु०) पञ्चवाण, कामदेव।
विषय–(सं० पु०) वह जिस पर कुछ विचार किया जाय, सम्पत्ति, वड़ा प्रदेश या राज्य, स्त्री सम्भोग, मैथुन।
विषयक–(सं० वि०) विषय सवन्धी।
विषय कर्म–(सं०नपुं०) सासारिक कार्य।
विषयता–(सं० स्त्री०) विषय का भाव या धर्म।
विषयपति–(सं०पु०) राजा या शासक।
विषयत्व–(सं० नपु०) विषय का भाव या धर्म।
विषयवासी–(सं०वि०) जनपद वासी।
विषयात्मक–(सं०वि०) विषय स्वरूप।
विषयाधिप–(सं०पु०)शासन करने वाला।
विषयान्त–(सं०पु०) प्रान्त की सीमा।
विषयी–(हिं० पु०) कामदेव, विलासी, कामी, धनवान्, अमीर।
विषयेन्द्रिय–(सं०नपु०) शब्दादि ग्राहक इन्द्रिया।
विषविद्या–(सं० स्त्री०) मन्त्र आदि की सहायता से विष उतारने की विद्या।
विषवैद्य–(सं०पु०) वह जो मन्त्र तन्त्र की सहायता से विष उतारता हो।
विषहा–(सं०स्त्री०) देवदाली, वन्दाल।
विषाग्रज–(सं०पु०) तलवार।
विषाङ्कुर–(सं० पुं०) शल्य, तीर।
विषाङ्गना–(सं०स्त्री०) विष कन्या।
विषान्तक–(सं०पु०) शिव, महादेव।
विषा–(सं०स्त्री०)कलिहारी, कड़वी तरोई।
विषाक्त–(सं०वि०)विष युक्त, जहरीला।
विषाण–(सं० नपु०) हाथी का दाँत, पशु की सींग, सुअर का दाँत, इमली।
विषाद–(सं०पु०) दुःख, खेद, निश्चेष्ट होने का भाव, मूर्खता, वेवकूफी।
विषादी–(हिं०पु०)वह जिसको विषाद हो।
विषान्न–(सं० नपुं०) विष मिला हुआ भोजन।
विषापवादी–(सं०वि०) निन्दा वाक्य का प्रयोग करने वाला।
विषापह–(सं०वि०) विष नाशक।
विषायुध–(सं० पु०) जहर में वुझाया हुआ अस्त्र, सर्प, साप।
विषास्त्र–(सं०नपुं०) देखो विषायुध।
विषुव–(सं० पु०) ज्योतिष के अनुसार वह काल जव सूर्य विषुव रेखा पर पहुँचता है और दिन रात वरावर होते हैं, ऐसा समय वर्ष में दो वार आता है, २१ मार्च तथा २२ सितवर को दिन रात वरावर होते हैं।
विषुवरेखा–(हिं०स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम में चारो ओर जाती हुई मानी जाती है।
विषूचिका–(सं०स्त्री०) देखो विसूचिका।
विष्कम्भ–(सं० पुं०) फलित ज्योतिष के अनुसार सत्ताइस योगों में से पहला योग, विस्तार, विघ्न, नाटक का वह अंक जिसमें मध्यम पात्रों द्वारा पहिले की अथवा आने वाली कथा की सूचना दी जाती है, वृक्ष, अर्गला, व्योड़ा।
विष्कम्भक–(सं०नपु०) देखो विष्कम्भ।
विष्कम्भी–(सं०पु०) शिव, महादेव।
विष्कर–(सं०पु०)पक्षी, चिड़िया, अर्गला।
विष्कलन–(सं०नपु०) भोजन, आहार।
विष्टप्–(सं० नपु०) स्वर्गलोक।
विष्टम्भ–(सं०पु०) वाधा, रुकावट, आक्रमण, चढाई।
विष्टम्भन–(सं०नपु०) रोकने या सकुचित करने की क्रिया।
विष्टर–(सं० पु०) कुशा का वना हुआ आसन।
विष्टि–(सं० स्त्री०) विना पुरस्कार का काम, वेगार, वेतन, तनखाह।
विष्ठा–(सं०स्त्री०) मल, गुह, पायखाना,
विष्ठाभुक्–(सं०पु०) शूकर, सुअर।
विष्णु–(सं० पु०) हिन्दुओं के एक वहुत वडे प्रधान देवता जो सृष्टि के पालन पोषण करने वाले माने जाते हैं, अग्नि, वारह आदित्यों में से पहले आदित्य।
विष्णुकाञ्ची–(सं० स्त्री०) दक्षिण का एक प्राचीन तीर्थ।
विष्णुकान्ता–(सं० स्त्री०) नीली अपराजिता लता।
विष्णुक्रान्त–(सं० पु०) सगीत में एक प्रकार का ताल।
विष्णुगुप्त–(सं० पु०) प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का नाम, वड़ी मूली।
विष्णुचक्र–(सं० नपु०) सुदर्शन चक्र।
विष्णुतिथि–(सं० पु०) एकादशी और द्वादशी तिथिया।
विष्णुपत्नी–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी।
विष्णुपदी–(सं० स्त्री०) गगा नदी जो विष्णु के पैरो से निकली हुई मानी जाती है।
विष्णुपुरी–(सं० स्त्री०) वैकुण्ठ।
विष्णुप्रिया–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी।
विष्णुमाया–(सं० स्त्री०) दुर्गा।
विष्णुलोक–(सं० पु०) वैकुण्ठ।
विष्णुवाहन–(सं० नपु०) गरुड़।
विष्वक्–(सं०नपु०) वह जो सर्वदा इधर उधर घूमता हो।
विष्वक् सेन–(सं०पुं०) विष्णु का एक

नाम ।
विश्वगञ्जन-(सं० नपुं०) इधर उधर घूमने की क्रिया ।
विश्वग्वात-(सं०पुं०) सर्वगामी वायु ।
विसञ्ज्ञ-(सं० वि०) सञ्ज्ञा शून्य, बेहोश ।
विसंवाद-(सं०पुं०) विरोध, डांट डपट ।
विसंशय-(सं०वि०) संशय रहित ।
विसंस्थित-(सं०वि०) असमाप्त, अपूर्ण ।
विसज-(सं०नपुं०) पद्म, कमल ।
विसञ्चारी-(सं०वि०) विषय भोगी ।
विसदृश-(सं०वि०) विपरीत, विरुद्ध, अद्भुत ।
विसम-(हिं०वि०) देखो विषम ।
विसमता-(हिं० स्त्री०) देखो विषमता ।
विसरण-(सं०नपुं०) विस्तार, फैलाव ।
विसर्ग-(सं० पुं०) त्याग, दान, शौच, मोक्ष, दीप्ति, चमक, वियोग, व्याकरण में वह वर्ण (ः) जिसका उच्चारण आधे "ह्" के समान होता है, प्रलय ।
विसर्गिक-(सं० वि०) आकर्षण करने वाला, खींचने वाला ।
विसर्गी-(सं०वि०) खींचने वाला, दान देने वाला ।
विसर्जन-(सं० नपुं०) परित्याग, विदा होना, चले जाना, पूजन आदि में अन्तिम उपचार, समाप्ति ।
विसर्प-(सं० पुं०) एक रोग जिसमें ज्वर के साथ सारे शरीर में फुँसिया निकल आती हैं ।
विसर्पण-(सं०नपुं०) फैलना, फैकना ।
विसर्पी-(सं०वि०) फैलने वाला ।
विसल-(सं० नपुं०) वृक्ष का नया पत्ता ।
विसवासह-(सं०पुं०) जावित्री ।
विसवासा-(सं०स्त्री०) जावित्री ।
विसार-(सं०पुं०)विस्तार,फैलाव, प्रवाह ।
विसारित-(सं०वि०) फैलाया हुआ ।
विसूचिका-(सं०स्त्री०)हैज़ा नामक रोग ।
विसूरण-(सं०नपुं०) दुःख, चिन्ता ।
विसूर्य-(सं०वि०) सूर्य रहित ।
विसृत-(सं० वि०) विस्तृत, चौड़ा, निर्गत, निकाला हुआ, कहा हुआ ।
विसृष्ट-(सं०वि०)त्यागा हुआ,फेंका हुआ
विसौंटा-(हिं०पुं०) अडूसा ।
विसोम-(सं०वि०) चन्द्र शून्य ।
विसौरभ-(सं०त्रि०)दुर्गन्ध, गन्ध रहित ।
विस्तर-(हिं०पुं०) देखो विस्तार, आधार, समूह, आसन ।
विस्तरता-(सं० स्त्री०) अधिक होने का भाव ।
विस्तार-(सं०नपुं०) लंबे चौडे होने का भाव, फैलाव, पेड़ की शाखा, गुच्छा ।
विस्तारता-(सं० स्त्री०) फैलाव ।
विस्तारित-(सं० वि०) फैलाया हुआ ।
विस्तारी-(हिं०पुं०) बरगद का वृक्ष ।
विस्तीर्ण-(सं० वि०) विस्तृत, विशाल, विपुल, बहुत बड़ा ।
विस्तीर्णता-(सं०स्त्री०) विपुलता,फैलाव
विस्तृत-(सं० वि०) लंबा चौड़ा, विशाल, विस्तार वाला ।
विस्तृति-(सं० स्त्री०) विस्तार, फैलाव ।
विस्फार-(सं० नपुं०) धनुष की टकार, कम्प, विस्तार, फैलाव, स्फूर्ति, तेज़ी ।
विस्फुरित-(सं०वि०) अस्थिर, चचल ।
विस्फूर्जन-(सं० नपुं०) किसी पदार्थ का फैलना या बढना ।
विस्फुलिङ्ग-(सं०नपुं०)आग की चिनगारी
विस्फोट-(सं० पुं०) किसी पदार्थ का वेग से फूट पड़ना, ज़हरीला फोड़ा ।
विस्फोटक-(सं० पुं०) जहरबाद, शीतला रोग, चेचक ।
विस्फोटन-(सं०नपुं०) धड़ाके का शब्द ।
विस्मय-(सं० पुं०) आश्चर्य, ताज्जुब, अभिमान, गर्व, शेखी, साहित्य में अद्भुत रस का स्थायी भाव जो विलक्षण पदार्थ के वर्णन से चित्त में उत्पन्न होता है ।
विस्मयनीय-(सं०वि०) विस्मय के योग्य ।
विस्मयान्वित-(सं०वि०) आश्चर्य युक्त ।
विस्मरण-(सं० नपुं०) स्मरण न रखना, भूल जाना ।
विस्मारक-(सं०वि०) भुलाने वाला ।
विस्मित-(सं०वि०) आश्चर्ययुक्त, चकित ।
विस्मृत-(सं० वि०) जो याद न हो, भूला हुआ ।
विस्मृति-(सं०पुं०) विस्मरण, भूल जाना ।
विस्रम्भ-(सं०पुं०) विश्वास, एतबार ।
विस्रवण-(सं०नपुं०) क्षरण, बहना, झरना
विस्राव्य-(सं० वि०) गिराने लायक ।
विस्मर्त-(सं०वि०) विस्मृत, भूला हुआ ।
विस्वन-(सं०पुं०) शब्द, ध्वनि ।
विस्राम-(सं०पुं०) देखो विश्राम ।
विहत-(सं०वि०) विफल, टूटा हुआ ।
विहति-(सं०स्त्री०) नाश, बरबादी ।
विहनन-(सं०नपुं०) हिंसा, हत्या ।
विहन्ता-(सं० वि०) नाश करने वाला ।
विहङ्ग-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, बाण, तीर, मेघ, बादल, चन्द्रमा, सूर्य ।
विहङ्गम-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, सूर्य ।
विहङ्गमा-(सं० स्त्री०) सूर्य की एक किरण, बँहगी की लकड़ी ।
विहङ्गराज-(सं०पुं०) गरुड़ ।
विहङ्गिका-(सं० स्त्री०) बँहगी ।
विहग-(सं० पुं०) देखो विहङ्ग ।
विहर-(हिं०पुं०) देखो विहार, बिछोह ।
विहरण-(सं० नपुं०) घूमना फिरना, फैलना ।
विहसित-(सं० नपुं०) मन्द हास, मुसकुराहट ।
विहस्त-(सं० वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, बिना हाथ का ।
विहायस-(सं० पुं०) आकाश, पक्षी, चिड़िया ।
विहार-(सं०पुं०) रति, क्रीड़ा, सम्भोग, सम्भोग करने का स्थान, बौद्धों का मठ, दिलबहलाव के लिये इधर उधर घूमना ।
विहारक-(सं०वि०) विहार करने वाला ।
विहारण-(सं० नपुं०) विहार, क्रीड़ा ।
विहार स्थान-(सं०नपुं०) क्रीड़ाभूमि ।
विहारी-(हिं०पुं०) विहार करने वाला, श्रीकृष्ण का एक नाम ।
विहास-(सं०वि०) हास्य रहित ।
विहित-(सं० वि०) किया हुआ, दिया हुआ ।
विहिंसक-(सं०वि०) नाश करने वाला ।
विहीन-(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा

हुआ, रहित, बगैर।
विहीनता-(सं० स्त्री०) विहीन होने का भाव।
विहृति-(सं० स्त्री०) विहार, क्रीड़ा।
विह्वल-(सं० वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ।
विह्वलता-(सं० स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट।
विह्वली-(हिं० पु०) वह जो बहुत घबड़ा गया हो।
वीक्षण-(सं० नपु०) निरीक्षण, देखने की क्रिया।
वीक्षणीय-(सं० वि०) दर्शनीय, देखने योग्य।
वीक्षा-(सं०स्त्री०) देखने की क्रिया।
वीक्षित-(सं० वि०) अच्छी तरह देखा हुआ।
वीचि-(सं० स्त्री०) तरंग, लहर, दीप्ति, चमक।
वीचिमाली-(सं०पु०) सूर्य।
वीची-(सं०स्त्री०) तरंग, लहर।
वीज-(सं०पु०) शुक्र, वीर्य मूल कारण, तत्व, मूल, मज्जा, बिया, अंकुर, तेज, निधि, खजाना, फल, तन्त्र के अनुसार किसी मन्त्र का मूल तत्व।
वीजक-(हिं०पु०) देखो बीजक।
वीजका-(सं०स्त्री०) मुनक्का।
वीजकोश-(सं० पु०) कमलगट्टा, सिंघाड़ा, वह फल जिसमें बीज रहते हैं।
वीजगणित-(सं० नपु०) वह गणित जिसमें अज्ञात राशियों के लिये अक्षरों का प्रयोग होता है।
वीजगर्भ-(सं० पु०) परवल।
वीजधान्य-(सं०नपु०) धनियाँ।
वीजन-(सं० नपु०) व्यजन, पंखा।
वीजपुरुष-(सं० पु०) आदि पुरुष।
वीजवर-(सं० नपु०) उड़द, माष।
वीजवाहन-(सं०) शिव, महादेव।
वीजोदक-(सं०नपु०) आकाश से गिरने वाला ओला, बिनौरी।
वीटिका, वीटी-(सं०स्त्री०) लगाया हुआ पान का बीड़ा।
वीणा-(सं० स्त्री०) प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा, बीन।
वीणापाणि-(सं०स्त्री०) सरस्वती।
वीणावती-(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, सरस्वती।
वीणाहस्त-(सं० पु०) शिव, महादेव।
वीत-(सं० वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ, मुक्त, समाप्त, निवृत्त, सुन्दर, जो बीत गया हो।
वीतदम्भ-(सं० वि०) जिसने अहंकार त्याग दिया हो।
वीतभय-(सं० वि०) जिसका भय छूट गया हो।
वीतमल-(सं०वि०) पाप रहित, कलंक रहित, विमल।
वीतराग-(सं० वि०) निस्पृह, बुद्ध का एक नाम।
वीतशोक-(सं०वि०) जिसने शोक आदि का त्याग किया हो।
वीतसूत्र-(सं०नपु०) यज्ञोपवीत।
वीति-(सं० स्त्री०) गति, चाल, दीप्ति, चमक, गर्भ धारण करने की क्रिया।
वीतिहोत्र-(सं० पु०) अग्नि, सूर्य, यज्ञ करने वाला।
वीथिका, वीथी-(सं० स्त्री०) मार्ग, रास्ता, सड़क, रविमार्ग, जिस मार्ग से सूर्य आकाश मे चलता है, आकाश में नक्षत्रों का स्थान, दृश्यकाव्य अथवा रूपक का एक भेद जिसमें एक ही नायक होता है और जो एक ही अंक का होता है।
वीथ्यङ्ग-(सं० नपु०) रूपक में वीथी का एक अंग।
वीनाह-(सं० पुं०) कुएं के ऊपर का ढपना।
वीर-(सं०वि०) साहसी और बलवान्, शूर, सैनिक, चतुर, होशियार, यज्ञ की अग्नि, उशीर, खस, कांजी, कुशा, अर्जुन वृक्ष, कनेर, आलूबोखारा, तान्त्रिकों के अनुसार साधना के तीन भावों में से एक, पति, पुत्र, भाई, विष्णु, एक दैत्य का नाम, साहित्य में एक रस जिससे वीरता उत्साह आदि की पुष्टि होती है।
वीरकर्मा-(सं० पुं०) वीरोचित कार्य करनेवाला।
वीरकाम-(सं० वि०) पुत्र की कामना करने वाला।
वीरकुक्षि-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो वीर पुत्र जनती है।
वीरकेशरी-(सं०पु०) वीरों में अति श्रेष्ठ
वीरगति-(सं० स्त्री०) वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने पर प्राप्त होती है।
वीरतरु-(सं० पु०) अर्जुन वृक्ष।
वीरता-(सं०स्त्री०) शूरता, बहादुरी।
वीरधन्वा-(सं०पु०) कन्दर्प, कामदेव।
वीरप्रसु-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो वीर सन्तान उत्पन्न करती है।
वीरबाहु-(सं०पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
वीरभद्र-(सं०स्त्री०) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, शिव के एक प्रसिद्ध गण, उशीर, खस।
वीरभुक्ति-(सं० स्त्री०) वीरभूम का प्राचीन नाम।
वीरमर्दल-(सं० नपु०) प्राचीन काल का एक ढोल जो युद्ध में बजाया जाता था।
वीरमाता-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो वीर पुत्र जनमाती है।
वीरमार्ग-(सं०पु०) स्वर्ग, वीर राघव, श्रीरामचन्द्र।
वीररेणु-(सं० पु०) भीमसेन।
वीरललित-(सं० नपु०) वीर तथा कोमल स्वभाव का।
वीरलोक-(सं०पु०) स्वर्ग।
वीरवर-(सं०वि०) अति वीर।
वीरवृक्ष-(सं०पु०)भिलावा,अर्जुन वृक्ष।
वीरव्रत-(सं०वि०) दृढ संकल्प।
वीरशय्या-(सं०स्त्री०) रणभूमि।
वीरशैव-(सं० पु०) शिव के उपासकों का एक भेद।
वीरस्थान-(सं० नपु०) स्वर्गलोक।

वीरा-(सं० स्त्री०) सुरा, विदारीकन्द, वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हो।
वीराचारी-(सं० पु०) एक प्रकार के वाममार्गी जो वीर भाव से उपासना करते हैं।
वीरान्तक-(सं० वि०) वीरों का नाश करने वाला।
वीरान-(फा०वि०) उजड़ा हुआ, जिसकी आवादी नष्ट हो गई हो, श्रीहत।
वीराष्टक-(सं० पुं०) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम,
वीरासन-(सं०नपुं०) साधकों का एक विशिष्ट प्रकार का आसन।
वीरेश, वीरेश्वर-(सं० पु०) महादेव, वीरेश्वर।
वीर्य-(सं० नपुं०) शुक्र, बीज, रेत, इन्द्रिय, पराक्रम, बल, शक्ति।
वीर्यज-(सं० पु०) पुत्र।
वीर्यतम-(सं०वि०) अति पराक्रमी।
वीर्यहारी-(सं०पु०) एक यक्ष का नाम।
वीहार-(सं०पु०) देखो विहार।
वृंहण-(सं० वि०) पुष्टिकारक, (स्त्री०) मुनक्का।
वृंहित-(सं०नपुं०) हाथी का चिग्घाड़।
वृक-(सं० पु०) भेड़िया, हुंड़ार, सियार, चोर, वज्र, अगस्त का वृक्ष।
वृकदीप्ति-(सं०पु०) कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
वृकधूर्त-(सं०पु०) शृगाल, सियार।
वृकरथ-(सं० पु०) कर्ण के एक भाई का नाम।
वृकोदर-(सं० पु०) भीमसेन।
वृक्क-(सं०पु०) गुरदा, आगामी महीना।
वृक्कक-(सं० पु०) मूत्राशय।
वृक्का-(सं० स्त्री०) हृदय।
वृक्ष-(सं०पु०) पेड, वह पादप जिसका एक ही मोटा भारी तना हो तथा जो भूमि से प्रायः सीधा ऊपर जाता हो।
वृक्षक-(सं०पुं०) छोटा पेड़।
वृक्षचर-(सं०पुं०) बन्दर, वृक्षतक्षक, गिलहरी।
वृक्षनाथ-(सं० पु०) बरगद का पेड़।
वृक्षराज-(सं० पु०) पीपल का पेड़, परजाता।
वृक्षस्नेह-(सं०पु०) गोंद, लासा।
वृक्षायुर्वेद-(सं० पु०) वृक्षों का चिकित्सा शास्त्र।
वृज-(हि०पु०) देखो व्रज।
वृजन-(सं०नपु०) आकाश, सग्राम, पाप, बल, शक्ति (पु०) बाल।
वृजिन-(सं०नपु०) पाप, दुःख, कष्ट, (वि०) कुटिल, टेढा।
वृत-(सं० वि०) नियुक्त, आच्छादित, स्वीकृत।
वृत्त-(सं०नपु०) चरित्र, वार्ता, चाल-चलन, स्तन के आगे का भाग, (पु०) समाचार, वृत्तान्त, कछुआ, अजीर, प्रवृत्ति, एक वार्णिक छन्द जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की सख्या तथा गुरु लघु वर्णों के क्रम का नियम रहता है, गोल परिधिका क्षेत्र, मण्डल, (वि०) बीता हुआ, दृढ, पुष्ट, गोल, वर्तुल, मरा हुआ, ढँपा हुआ।
वृत्तकर्कटी-(सं० स्त्री०) खरबूजा।
वृत्तखण्ड-(सं० पु०) वृत्त का कोई खण्ड, मेहराब।
वृत्तचेष्टा-(सं०नपु०) स्वभाव, प्रकृति।
वृत्तपुष्प-मल्लिका (सं० स्त्री०) मोतिया।
वृत्तफल-(सं०नपुं०) कैथ।
वृत्तश्लाघी-(सं० वि०) जिसको अपने काम का गर्व हो।
वृत्तसादी-(सं०वि०) कुलनाशक।
वृत्तस्थ-(सं०वि०) सदाचारी।
वृत्तानुवर्ती-(सं०पु०) सदाचारी।
वृत्तान्त-(सं० पु०) समाचार, प्रस्ताव, किसी बीती हुई घटना का विवरण, हाल।
वृत्ति-(सं० स्त्री०) जीविका, रोजी, व्यवहार, चित्त की विशेष अवस्था, व्यापार, सहार करने का एक प्रकार का शास्त्र, कार्य, किसी दीन को या विद्यार्थी को उसकी सहायता के निमित्त दिया जाने वाला धन, अल्पाक्षरी सूत्रों की व्याख्या।
वृत्तिकार(सं०पु०) वह जिसने किसी सूत्र ग्रन्थ पर वृत्ति लिखी हो।
वृत्त्यनुप्रास-(सं० पु०) शब्दालकार का एक भेद जिसमें एक अथवा अनेक व्यजन वर्ण किसी न किसी रूप में बार-बार प्रयोग किये जाते हैं।
वृत्त्युपाय-(सं०पु०) अपनी शरीर अथवा कुटुम्ब के भरण पोषण का उपाय।
वृत्र-(सं०पु०)अन्धकार, शत्रु, एक दानव जिसको इन्द्र ने मारा था, इसीको मारने के लिये दधीचि ऋषि की हड्डियो का वज्र बनाया गया था, मेघ, बादल।
वृत्रत्व-(सं०नपु०) शत्रुता।
वृत्रनाशन-(सं० पु०) इन्द्र।
वृत्रासुर-(सं०पु०) देखो वृत्र।
वृथा-(सं०अव्य०) व्यर्थ, निरर्थक, निष्फल।
वृद्ध-(सं० वि०) जीर्ण, जर्जर, बुड्ढा, विद्वान्, पडित।
वृद्धकाल-(सं० पु०) बुढापा।
वृद्धता-(सं० स्त्री०) बुढापा।
वृद्धत्व-(सं०नपु०) बुढापा।
वृद्धनाभि-(सं०वि०) तोंदीला।
वृद्धयुवती-(सं०स्त्री०) कुटनी, धाय।
वृद्धश्रवा-(सं० पु०) इन्द्र।
वृद्धसूचक-(सं० पु०) कपास।
वृद्धा-(सं०स्त्री०) बुड्ढी स्त्री, ५५ वर्ष के बाद की स्त्रिया वृद्धा कहलाती हैं।
वृद्धि-(सं०स्त्री०) अष्टवर्ग के अन्तर्गत एक औषधि, अधिकता, बढती, ब्याज, सूद, समृद्धि, परिवार में सन्तान उत्पन्न होने पर अशौच।
वृद्धि जीवक-(सं०वि०) सूदखोर।
वृद्धिमत्-(सं०वि०) अकुरित, बढा हुआ।
वृद्धियोग-(सं० पु०) फलित ज्योतिष का एक योग।
वृन्त-(सं०नपु०) वह पेड़ जिसमें पत्ते तथा फल फूल हो।
वृन्द-(सं०नपु०) समूह, (पु०) सौ करोड़ की सख्या।
वृन्दा-(सं० स्त्री०) तुलसी, राधा का एक नाम।
वृन्दार-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
वृन्दावन-(सं०नपु०) श्रीकृष्ण की क्रीडा

भूमि का नाम।
वृश्चिक-(स० पु०) शुक्र कीट, बिच्छू, मेषादि बारह राशियों में से आठवीं राशि का नाम।
वृश्चिकाली-(सं०स्त्री०) एक लता जिस पर महीन रोंवें होते हैं, जिसके शरीर पर स्पर्श होने से बड़ी वेदना होती है।
वृष-(स०पु०)बैल, साड़, मेषादि राशियों में से दूसरी राशि, श्रीकृष्ण, काम शास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक, पति, गेहूँ, मोर का पख।
वृषकेतन-(स०पु०)वृषध्वज, शिव,गणेश।
वृषकेतु-(स० पु०) शिव, कर्ण के एक पुत्र का नाम।
वृषक्रतु-(स० पुं०) इन्द्र।
वृषण-(स०पु०) अण्डकोष, इन्द्र, कर्ण, साड़।
वृषदर्भ-(स०पु०)श्रीकृष्ण का एक नाम।
वृषध्वज-(स०पु०) शिव,महादेव, गणेश।
वृषन्-(स०पु०) इन्द्र, कर्ण, विष्णु।
वृषभ-(स० पु०) बलीवर्द, बैल, साड़, वीर, श्रेष्ठ, कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक, कान का छेद, विष्णु, साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद।
वृषभकेतु-(स०पु०) शिव।
विपभध्वज-(स०पु०) शिव, महादेव।
वृषभ पल्लव-(स० पु०) अडूसे का वृक्ष।
वृषभानु-(सं०पु०) सुरभानु के पुत्र जो श्रीराधिका के पिता थे।
वृभभेक्षण-(स०पु०) विष्णु।
वृषल-(स०पु०) शूद्र, घोड़ा, सम्राट् चन्द्रगुप्त का नाम,पाप कर्म करने वाला
वृषली-(स०स्त्री०) अविवाहिता कन्या जो रजस्वला हो गई हो, वह स्त्री जो अपने पति को त्याग कर पर पुरुष से प्रेम करती हो, शूद्रा, पपिष्ठा नीच की स्त्री, ऋतुमती स्त्री।
वृषवासी, वृषवाहन-(स०पु०) शिव, महादेव।
वृषा-(स० स्त्री०) मूसाकानी नाम की लता, गाय।

वृषाणक-(स० पु०) शिव के एक अनुचर का नाम।
वृषायण-(स०पु०) गौरैया चिड़िया।
वृषोत्सर्ग-(स० पु०) शास्त्रोक्त विधि पूर्वक साड़ को दाग कर छोड़ना।
वृष्टि-(स० स्त्री०) मेघो से जल का टपकना, वर्षण, वर्षा, बहुत सी वस्तुओं का ऊपर से गिराया जाना, किसी कार्य का निरन्तर कुछ समय तक होना।
वृष्टिजीवन-(स०पु०) चातक पक्षी।
वृष्टिभू-(स०पु०) मण्डूक, मेढक, वृष्टिमत्-वृष्टि युक्त।
वृष्टिमानयन्त्र-(स० नपु०) वह यन्त्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई।
वृष्णि-(स०पु०) मेघ, यादव, यदुवंश, श्रीकृष्ण, वायु, अग्नि, इन्द्र, गाय, (वि०) उग्र,प्रचण्ड।
वृष्णिगर्भ-(स०पु०) श्रीकृष्ण।
वृष्य-(स०नपु०) वे सब पदार्थ जिनके सेवन से वीर्य की वृद्धि होती है, चित्त को प्रसन्न करने वाली वस्तु।
वृष्या-(स० स्त्री०) सतावर, केंवाच, विदारो कन्द।
वृंह-(स०पु०) ध्वनि, हाथी की चिग्घाड़
वृहच्छद-(स० पु०) अखरोट।
वृहत्-(स० वि०) विपुल, बड़ा, महान्, भारी।
वृहती-(स०स्त्री०) उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा, वनभटा, वाक्य, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में नव मात्रायें होती हैं, महती।
वृहतीपति-(स०पु०) वृहस्पति।
वृहत्पाद-(स० पु०) बरगद का वृक्ष।
वृहत्फल-(स० नपु०) जामुन, कटहल।
वृहद्भानु-(स० पु०) सूर्य, अग्नि, सत्यभामा के एक पुत्र का नाम।
वृहद्रथ-(स० पु०) इन्द्र, यज्ञपात्र, मौर्य राज्यवंश के अन्तिम राजा का नाम।
वृहद्राव-(स०पु०) उलूक, उल्लू।
वृहन्नल-(स० पु०) बाहु, बाह, अर्जुन।

वृहन्नला-(स० स्त्री०) अर्जुन का उस समय का नाम जब वह वनवास के बाद अज्ञात वास के समय स्त्री वेश में रह कर राजा विराट् की कन्या को नाच गाना सिखाये थे।
वृहस्पति-(स०पु०) अगिरा के पुत्र जो देवताओं के गुरु हैं।
वे-(हिं०सर्व०)"वह" शब्द का बहुवचन।
वेक्षण-(स० नपु०) अच्छी तरह से खोजना या ढूढना।
वेग-(स० पु०) प्रवाह, धारा, शुक्र, बहाव, मूत्र विष्ठा आदि के निर्गम की, प्रवृत्ति, त्वरा, शीघ्रता, वृद्धि, उद्यम, प्रवृत्ति, प्रसन्नता, आनन्द।
वेगग-(स०वि०) तेजी से चलने वाला
वेगम-(हिं०स्त्री०) दखो बेगम।
वेगवान्-(स०वि०) तेज चलने वाला।
वेगवाहिनी-(स०स्त्री०) गगा।
वेगसार-(स०पु०) तेज़ चलने वाला घोड़ा।
वेगानिल-(स०पु०) प्रबल वायु, तूफान।
वेगी-(हिं० वि०) वेगवान्, जिसमें बहुत वेग हो।
वेङ्कट-(स० पु०) द्रविड़ देश के एक पर्वत का नाम।
वेड़-(स०नपु०) वृत्त की परिधि।
वेड़ा (स० स्त्री०) नौका, नाव, देखो बेड़ा।
वेण-(स० पुं०) गति, ज्ञान, चिन्ता, राजा पृथु के एक पुत्र का नाम।
वेणा-(स०स्त्री०) उशीर, खस।
वेणि-(स० स्त्री०) स्त्रियों के बालों की गुथी हुई चोटी, जन समूह, भीड़भाड़, वनदाल।
वेणिमाधव-(स०पुं०) प्रयाग की एक चतुर्भुज देवमूर्ति का नाम।
वेणी-(स० स्त्री०) बालों की गुथी हुई चोटी, कवरी।
वेणीर-(स०पु०) नीम का वृक्ष, रीठा।
वेणु-(स० पु०) वंश, बास, बास की बासुरी।
वेणुकार-(स०पु०) वंशी बनाने वाला।

वेणुहोत्र-(स० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
वेतण्ड-(स०पु०) हस्ती, हाथी ।
वेतन-(स० नपु०) वह धन जो किसी को काम करने के लिये दिया जाता है, तनखाह, जीवन का आश्रय, उजरत, महीना ।
वेतनभोगी-(स० वि०) तनखाह पर काम करने वाला ।
वेतस्-(स०पु०) बेंत ।
वेताल-(स० पु०) द्वारपाल, सन्तरी, वह शव जिसपर भूतों ने अधिकार कर लिया हो, शिव के एक गण, छप्पय का एक भेद
वेत्ता-(हिं० वि०) ज्ञाता, जानने वाला ।
वेत्र-(स०पु०) बेंत ।
वेत्रक-(स०पु०) सरपत ।
वेत्रकार-(स० पु०) बेंत की चीज बनाने वाला ।
वेत्रधर-(स०पु०) द्वारपाल, सन्तरी ।
वेत्रवती-(स०स्त्री०) वेत्वा नदी ।
वेत्रासन-(स० नपु०) बेंत का बना हुआ आसन ।
वेत्रासुर-(स० पु०) एक दानव का नाम जो इन्द्र से मारा गया था ।
वेद-(स०पु०) विष्णु, वित्त, श्रुति,निगम, धर्म ज्ञापक शास्त्र, ब्रह्म प्रतिपादक वाक्य, यज्ञाग, अम्नाय, वेदत्रय कहने से ऋक, यजुस् और साम का बोध होता है, अथर्व की गणना भी वेद में है, कुछ लोगों का कहना है कि वेद में गान, गद्य तथा पद्य हैं इसीसे ये "त्रयी" कहलाते हैं ।
वेदक-(सं०त्रि०) परिचय कराने वाला
वेदकर्ता-(स० पु०) विष्णु, शिव,सूर्य ।
वेदगर्भा-(सं०पु०) सरस्वती नदी ।
वेदगुह्य-(स०पुं०) विष्णु ।
वेदघोष-(सं० नपु०) वेदध्वनि ।
वेदचक्षु-(स०नपु०) ज्ञानचक्षु ।
वेद जननी-(स्त्री०) सावित्री ।
वेदज्ञ-(स०वि०) ब्रह्मज्ञानी ।
वेदतत्त्व-(स०नपु०) वेद का तत्व ।
वेदता-(स०वि०) स्तुति कारक ।
वेदत्व-(स०नपु०) वेद का भाव या धर्म
वेददर्शी-(स०वि०)वेदों को जानने वाला
वेद दान-(स०नपु०)वेद विषयक उपदेश
वेद धर्म-(स०पु०) वेदोक्त धर्म ।
वेदध्वनि-(सं० पु०) देखो वेदघोष ।
वेदना-(स०स्त्री०) व्यथा,तकलीफ,पीड़ा ।
वेद निन्दक-(स०पु०) वेदो की निन्दा करने वाला, नास्तिक ।
वेदनीय-(स०वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य
वेदपाठ-(स० पु०) वेदाध्ययन ।
वेदपारग-(स० पु०) वेदों का ज्ञाता ।
वेद पुण्य-(स०नपु०) वेद पढ़ने से होने वाला पुण्य ।
वेद पुरुष-(स०पु०) वेद रूप पुरुष ।
वेदफल-(स० नपु०) वह फल जो यज्ञ याग आदि करने से प्राप्त होता है ।
वेदबाहु-(स० पु०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम श्री, कृष्ण ।
वेदमन्त्र-(स०पु०)वेदों से आये हुए मन्त्र
वेदमाता-(स० स्त्री०) गायत्री, सावित्री, दुर्गा, सरस्वती ।
वेदमूर्ति-(स० पु०) सूर्य नारायण ।
वेदवती-(स० स्त्री०) कुशध्वज राजा की कन्या ।
वेदरहस्य-(स० नपु०) उपनिषद् ।
वेदवाक्य-(स०पु०) वेद का कोई वाक्य, वह बात जो सब तरह से प्रमाणित हो ।
वेदवाहन-(स० पु०) सूर्य देव ।
वेदविद्-(स० पु०) देखो वेदज्ञ ।
वेदव्यास-(स० पु०) कृष्णद्वैपायन नामक मुनि ।
वेदश्रुत-(स० पु०) वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम ।
वेदसम्मत-(स० वि०) वेदोक्त मत के अनुसार ।
वेद सम्मित-(स०पु०) विष्णु ।
वेदस्तुति-(स० स्त्री०) ब्रह्म स्तुति ।
वेदहीन-(स० वि०) जिसको वेद में अधिकार नहीं है ।
वेदाग्रणी-(स०स्त्री०) सरस्वती ।
वेदाङ्ग-(स०पु०) वेद के अंग या शास्त्र जो ६ हैं यथा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द, बारह आदित्यों में से एक ।
वेदात्मा-(स०पु०) विष्णु, सूर्य नारायण ।
वेदाधिप-(स० पु०) चारों वेदों के अधिपति ग्रह, यथा-ऋग्वेद के बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल तथा अथर्व वेद के अधिपति बुध हैं ।
वेदाध्यक्ष-(स० पु०) श्री कृष्ण ।
वेदान्त-(स०नपु०) वेद का अवशिष्ट अंश अर्थात् उपनिषद् और आरण्यक आदि जिनमें आत्मा, परमात्मा संसार आदि का निरूपण है, ब्रह्मविद्या, अध्यात्मविद्या, षट् दर्शनों में से एक दर्शन जिसमें ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता स्वीकार की गई है, उत्तर मीमांसा, अद्वैतवाद ।
वेदान्तसूत्र-(स० पु०) महर्षि बादरायण के बनाये हुए सूत्र जो वेदान्त शास्त्र के मूल माने जाते हैं ।
वेदान्ती-(स० पु०) वेदान्त शास्त्र को अच्छी तरह जानने वाला, ब्रह्मवादी ।
वेदार-(स०पु०) कृकलास, गिरगिट ।
वेदि-(स०स्त्री०) यज्ञ कार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि, नामांकित अंगूठी ।
वेदिजा-(स०स्त्री०) द्रौपदी ।
वेदित-(स०वि०) ज्ञापित, जाना हुआ ।
वेदितव्य-(स०वि०) ज्ञातव्य,जानने योग्य
वेदी-(स० स्त्री०) किसी शुभ कार्य के लिये तैयार की हुई भूमि ।
वेदीश-(स०पुं०) ब्रह्मा ।
वेदेश, वेदेश्वर-(सं०पु०) वेदधर, ब्रह्मा ।
वेदोक्त-(स०वि०) वेद में कहा हुआ ।
वेदोदित-(स० वि०) देखो वेदोक्त ।
वेद्य-(स०वि०) वेदितव्य, जानने योग्य ।
वेध-(स० पु०) छेदने की क्रिया, विद्ध करना, वेधना, यन्त्रादि की सहायता से ग्रह, नक्षत्र तथा तारों को देखना, ग्रहो को किसी ऐसे स्थान में पहुँचाना जहा से उनका किसी दूसरे ग्रह से सामना होता हो ।

वेधक–(स०वि०) वेध करने वाला।
वेधनी–(स० स्त्री०) अकुश।
वेधमुख्या–(स०स्त्री०) कस्तूरी।
वेधशाला–(स०स्त्री०) वह स्थान जहा पर नक्षत्रो और तारो आदि को देखने और उनकी दूरी गति आदि जानने के यन्त्र हो।
वेधा–(हि०पु०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य।
वेधालय–(स० पु०) देखो वेधशाला।
वेधित–(स० वि०) छिद्रित, छेदा हुआ।
वेधी–(हिं०वि०) वेधने वाला, छेदने वाला
वेध्य–(स०वि०) वेधनीय, छेदने योग्य।
वेन्य–(स० वि०) कमनीय, सुन्दर।
वेपथु–(स० पु०) कम्प, कँपकपी।
वेपन–(स०नपु०) कम्पन, काँपना।
वेपमान–(स० वि०) कम्पमान, काँपता हुआ।
वेर–(स०पु०) मिश्रित, मिलाहुआ, नीच।
वेल–(स० नपु०) उपवन, बाग।
वेलदार–(हिं०पु०) भूमि खोदने वाला।
वेला–(स० स्त्री०) समय, क्षण, काल, वख्त, अवसर, मर्यादा, समुद्र का किनारा, समुद्र की लहर, रोग, बीमारी, दिन रात का चौबीसवाँ भाग, वाणी, भोजन।
वेलावलि–(स० पु०) एक रागिणी का नाम।
वेल्लज–(स० नपु०) मिर्च, मरिच।
वेल्लि–(स०स्त्री०) लता, वेल, वेल्लित–(स० वि०) कँपा हुआ, लुटा हुआ।
वेल्ली–(स०स्त्री०) वेल, लता।
वेश–(स० पु०) वस्त्र आभूषण आदि से अपने को सजाना, वस्त्र आदि पहरने का ढग, पहरने के वस्त्र, पोशाक, वस्त्रगृह, वेश्या का घर, खेमा, तबू, वेश धारण करना–भेस बनाना।
वेशकुल–(स० नपु०) वेश्या, रडी।
वेशधर–(स० पु०) वह जो भेष बदले हुए हो।
वेषधारी–(स० त्रि०) वेश (भेस) धारण करने वाला।
वेशभाव–(स०पु०) वेशसज्जा की परिपाटी
वेषभूषा–(स० स्त्री०) पहरावा।
वेषयुवती–(स०स्त्री०) वेश्या, रडी।
वेषवनिता–(स०स्त्री०) वेश्या, रडी।
वेषर–(स० पु०) खच्चर, वेसवधू।
वेशवास–(स०पु०) रडी का घर।
वेशस्त्री–(स०स्त्री०) वेश्या, रडी।
वेशी–(हि०वि०) वेश धारण करने वाला।
वेश्म–(स० नपु०) गृह, घर।
वेश्मवास–(स०पु०) रहने का घर।
वेश्मस्त्री–(स०स्त्री०) वेश्या, रडी।
वेश्य–(स०वि०) प्रवेश करने योग्य।
वेश्या–(स०स्त्री०) गणिका, रडी, कसबी।
वेश्याङ्गना–(स०स्त्री०) कुलटा स्त्री।
वेष–(स० पु०) नेपथ्य, रगमच के पीछे का वह स्थान जहाँ पर नट लोग वस्त्र पहरते हैं, रडी का मकान।
वेषकार–(स० पु०) वेष्टन, वेठन।
वेष्टक–(स०पु०) प्राचीर, चहार दीवारी, (वि०) घेरने वाला।
वेष्टन–(स० नपु०) वलयन, घेरने या लपेटने की क्रिया, मुकुट, उष्णीश, पगड़ी, कान का छेद, गुग्गुल।
वेष्टित–(स० वि०) लपेटा हुआ, घिरा हुआ।
वेसन–(स०नपु०) देखो वेसन।
वेस्ट–(अ०पु०) पश्चिम दिशा।
वेस्टकोट–(अ० पु०) एक प्रकार की अग्रेजी ढगकी बिना बाह की कुरती।
वैकक्ष–(स०नपु०) जनेऊ की तरह पहरने का एक प्रकार का हार।
वैकटिक–(स०पु०) रत्न परीक्षक, जौहरी।
वैकटय–(स०नपु०) विकटता।
वैकतिक–(स०पु०) रत्न परीक्षक, जौहरी।
वैकल्प–(स०पु०) विकल्प का भाव।
वैकल्पिक–(स० वि०) सन्दिग्ध, जिसमें किसी प्रकार का सन्देह हो, एकागी, जो चुना न जा सके।
वैकल्य–(स०नपु०) विकलता, घबड़ाहट, अगहीनता, न्यूनता, कमी, ढेढापन।
वैकारिक–(स० वि०) विगड़ा हुआ।
वैकाल–(स० पु०) अपराह्ण, तीसरा पहर।
वैकालिक–(स० वि०) उपयुक्त समय पर न होने वाला।
वैकुण्ठ–(स०पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, स्वर्ग।
वैकृत–(स०नपु०) विकार, खराबी, दुर्लक्षण, वीभत्स रस का आलाम्बन, (वि०) दुःसाध्य, जो सहज में ठीक न हो, विकार से उत्पन्न।
वैकृत्य–(स० नपु०) वीभत्स रस, इस रस का अवलम्बन।
वैक्रमीय–(स० वि०) विक्रम सबन्धी।
वैक्रान्त–(स०नपु०)मणि विशेष, चुन्नी।
वैक्लव–(स०वि०) विक्लव सबधी।
वैक्लव्यता–(स०स्त्री०) जड़ता।
वैखरी–(स० स्त्री०) कण्ठ से उत्पन्न होने वाले स्वर का एक विशिष्ट प्रकार, ऐसा स्वर ऊचा और गभीर सुन पड़ता है।
वैखानस–(स०पु०) वानप्रस्थ, वनचारी, ब्रह्मचारी।
वैगुण्य–(स०नपु०) दोष, अपराध, नीचता।
वैघात्य–(स०पु०) मार डालने योग्य।
वैचित्र, वैचित्र्य–(स०नपु०) विचित्रता, विलक्षणता।
वैजयन्त–(स० पु०) इन्द्रपुरी, इन्द्र-गृह, अरणी।
वैजयन्तिक–(स०वि०)झडा उठाने वाला।
वैजयन्तिका–(स०स्त्री०) झडा, पताका।
वैजयन्ती–(स० स्त्री०) पताका, झडा, पाच रगों के फूलो को लबीमाला जो श्रीकृष्ण पहनते थे।
वैजयिक–(स०वि०) विजय सबधी।
वैजिक–(स० वि०) बीज सबधी, वीर्य सबधी।
वैज्ञानिक–(स० वि०) विज्ञान सबधी, निपुण, दक्ष (पु०) वह जो विज्ञान अच्छा जानता हो।
वैडालव्रत–(स०नपु०, पाप और कुकर्म करते हुए भी ऊपर से साधू बने रहना।
वैडूर्य–(स०पु०) वैदुर्य मणि।
वैणिक–(स०पु०) बीन बजाने वाला।

वैतंसिक–(सं०पु०) मास बेंचने वाला, कसाई।
वैतण्डिक–(सं०पु०) व्यर्थ का झगड़ा करने वाला।
वैतथ्य– (सं०नपु०) विफलता।
वैतनिक–(सं०पु०) तनखाह लेकर काम करने वाला।
वैतरणी–(सं० स्त्री०) यमद्वार पर की एक नदी का नाम।
वैतानिक–(सं० पु०) वह अग्नि जिससे अग्निहोत्र आदि कृत्य किये जाते हैं।
वैताल–(सं० पु०) स्तुतिपाठक।
वैतालिक–(सं०पुं०) प्राचीन काल का वह स्तुति पाठक जो राजाओं को प्रातः-काल स्तुति गाकर जगाता था।
वैतालीय–(सं० वि०) वेताल सबधी (पु०) एक वृत्त जिसके पहले और तीसरे पाद में चौदह तथा दूसरे और चौथे पाद में सोलह मात्रा रहते हैं।
वैतृष्ण्य–(सं०नपु०) लोभ से रहित होने का भाव।
वैदक–(हिं०पु०) देखो वैद्यक।
वैदग्ध–(सं०नपु०) पाण्डित्य, चतुराई, रसिकता, शोभा।
वैदम्भ–(सं०पु०) शिव का एक नाम।
वैदर्भ–(सं०पु०) विदर्भ देश के राजा, दमयन्ती के पिता भीमसेन, बातचीत करने में चतुराई, (वि०) विदर्भ देश सम्बन्धी।
वैदर्भी–(सं० स्त्री०) अगस्त्य ऋषि की स्त्री, दमयन्ती, रुक्मिणी, वाक्य की वह शैली जिसमें मधुर वर्णो द्वारा मधुर रचना की जाती है।
वैदर्य–(सं०नपु०) बालकों का खेल।
वैदल–(सं०नपु०)मिट्टी का बरतन जिसमें भिखमगे भीख मागते हैं।
वैदिक–(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जो वेद जानता हो, (वि०) वेद सम्बन्धी, वेदोक्त क्रिया काड का करने वाला।
वैदिश–(सं०पुं०) विदेश का निवासी।
वैदुष्य–(सं०नपुं०) विद्वत्ता, पाण्डित्य।
वैदूर्य–(सं० नपु०) लहसुनिया नाम का रत्न।
वैदेशिक–(सं० वि०) विदेश सम्बन्धी, परदेश से आया हुआ।
वैदेह–(सं० पु०) राजा निमि के पुत्र का नाम।
वैदेहिक–(सं०पु०) वणिक्, सौदागर।
वैदेही–(सं० स्त्री०) विदेह के राजा जनक की कन्या, सीता।
वैद्य–(सं० पु०) आयुर्वेद के अनुसार चिकित्सा करने वाला, आयुर्वेदी, विद्वान्, चिकित्सक, पण्डित।
वैद्यक–(सं० पु०) चिकित्सा शास्त्र, आयुर्वेद।
वैद्यनाथ–(सं० पु०) सन्थाल परगने का प्रसिद्ध शैवतीर्थ।
वैद्यबन्धु–(सं०पु०) अमलतास का वृक्ष।
वैद्युन–(सं०वि०,विद्युत सबन्धी,बिजली का
वैद्रुम–,सं०वि०) विद्रुम सबधी, मूगे का
वैध–(सं० वि०) विधि के अनुसार, कायदे कानून के माफिक।
वैधर्म्य–(सं० नपु०) विधर्मी होने का भाव, नास्तिकता।
वैधव–(सं०पुं०) चन्द्रमा के पुत्र बुध।
वैधवेय–(सं०पु०) विधवा का पुत्र।
वैधव्य–(सं० नपु०) विधवा होने का भाव, रड़ापा।
वैधात्र–(सं० पु०) विधाता के पुत्र सनत्कुमार।
वैधृत–(सं० पु०) ग्यारहवें मन्वन्तर के एक इन्द्र का नाम।
वैधृति–(सं० पु०) ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगों में से एक।
वैधेय–(सं०वि०) विधि सम्बन्धी, मूर्ख।
वैनतेय–(सं०पु०) विनता की सन्तान, गरुड़, अरुण।
वैनायक–(सं० वि०) विनायक या गणेश सम्बन्धी।
वैपरीत्य–(सं० नपु०) प्रतिकूलता, विपरीतता।
वैपार, वैपारी–(हिं०) देखो व्यापार, व्यापारी।
वैपित्र–(सं०पु०) वे भाई बहन जिनकी माता एक होकर पिता भिन्न हों।
वैपुल्य–(सं०नपु०) विपुलता, अधिकता।
वैफल्य–(सं०नपु०) विफल होने का भाव।
वैभव–(सं० नपु०) विभव, धन दौलत, महिमा, महत्व, विभुता, सामर्थ्य।
वैभवशाली–(सं० वि०) जिनके पास बहुत धन हो, मालदार।
वैभाषिक–(सं० वि०) विभाषा सम्बन्धी, वैकल्पिक।
वैभ्राज्य–(सं०नपु०)देवताओंका बगीचा।
वैमनस्य–(सं०नपु०) द्वेष,शत्रुता,दुश्मनी।
वैमल्य–(सं०नपु०) विमलता, स्वच्छता।
वैमात्र–(सं० वि०) विमाता से उत्पन्न, सौतेला।
वैमात्री–(सं०स्त्री०) विमातृ कन्या, सौतेली
वैमानिक–(सं० वि०) आकाश में उड़ने वाला, (पु०) देवयोनि विशेष।
वैमुख्य–(सं०नपु०) विमुखता,विपरीतता।
वैयग्र्य–(सं०नपु०) मानसिक चचलता।
वैयाकरण–(सं०पु०) वह जो व्याकरण शास्त्र अच्छी तरह से जानता हो।
वैयाघ्र–(सं०वि०) व्याघ्र सबन्धी।
वैयास–(सं०वि०) व्यास सबधी,व्यास का
वैयासिक–(सं०वि०)व्यास का बनाया हुआ
वैर–(सं० पु०) विरोध, द्वेष, शत्रुता,
वैरकर–शत्रुता करने वाला।
वैरकारिता–(सं०स्त्री०) दुश्मनी।
वैरता–(सं०स्त्री०) शत्रुता, दुश्मनी।
वैरभाव–(सं० नपु०) दुश्मनी।
वैरल्य–(सं०नपु०)विरल का भाव,विरलता
वैरशुद्धि–(सं०पु०)वैर का बदला चुकाना
वैराग–(हिं० पु०) देखो वैराग्य।
वैरागी–(हिं० पु०) जिसके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ हो, विरक्त, उदासीन वैष्णव सम्प्रदाय का एक भेद।
वैराग्य–(सं०नपु०) विरक्ति, चित्त की वह वृत्ति जिसके अनुसार ससार की विषयवासना तुच्छ जान पड़ती है और लोग ससार के प्रपच को त्याग कर एकान्त में जाकर ईश्वर का भजन करते हैं।
वैराज–(सं० पु०) एक मनु का नाम, सत्ताईसवें कल्प का नाम।

वैराज्य-(सं०पु०) प्राचीन काल की एक प्रकार की शासन प्रणाली जिसमें दो राजा एक ही देश में राज्य करते थे।
वैराट-(सं०वि०) विस्तृत, लम्बा चौड़ा, विराट देश का।
वैरिता-(सं०स्त्री०) शत्रुता, दुश्मनी।
वैरित्व-(सं०नपु०)शत्रुता, वैर, दुश्मनी।
वैरूप्य-(सं०नपु०) विरूपता कदर्यता।
वैलक्षण्य-(सं० नपु०) विलक्षणता, विभिन्नता।
वैलक्ष्य-(सं० पु०) लज्जा, विस्मय, आश्चर्य।
वैवर्ण-(सं० नपु०) मलिनता गन्दगी।
वैवर्त-(सं० नपु०) किसी पदार्थ का चक्कर खाते हुए घूमना।
वैवश्य-(सं०नपु०) विवशता, लाचारी।
वैवस्वत-(सं०पु०) सूर्य के पुत्र, शनि, सातवें मनु का नाम, एक रुद्र का नाम। आजकल का मन्वन्तर वैवस्वत मनु का है।
वैवाहिक-(सं०वि०) विवाह सम्बधी, (पु०) कन्या अथवा पुत्र का ससुर, समधी।
वैवाह्य-(सं०वि०) विवाह सम्बन्धी।
वैशद्य-(सं०नपु०) निर्मलता, स्वच्छता।
वैशम्पायन-(सं० पु०) एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।
वैशाख-(सं० नपु०) चैत्र के बाद का महीना जो जेठ के पहले होता है, वैसाख।
वैशाखी-(हिं०स्त्री०) वैसाख की पूर्णिमा।
वैशाली-(सं०वि०)विशाल देश सम्बन्धी।
वैशिक-(सं०पु०) अनेक वेश्याओं के साथ रमण करने वाला नायक।
वैशिष्ट-(सं० नपु०) असाधारणत्व, विशिष्टता।
वैशेषिक-(सं० पु०) कणाद मुनि कृत दर्शन शास्त्र को जानने वाला, औलूक्य, पदार्थ विद्या, (वि०) असाधारण।
वैश्मीय-(सं०वि०) वेश्म या गृह सम्बन्धी
वैश्य-(सं० पु०) भारतवर्ष की चार जातियों या वर्णों में से तृतीय वर्ण, वणिक्, बनिया।
वैश्यता, वैश्यत्व-(सं०) वैश्य का भाव या धर्म।
वैश्या-(सं० स्त्री०) वैश्य जाति की स्त्री, बनियाइन।
वैश्रवण-(सं०पु०) शिव, कुबेर।
वैश्व-(सं० पु०) उत्तराषाढा नक्षत्र।
वैश्वजनीय-(सं० वि०) विश्व भर के लोगों से सम्बन्ध रखने वाला, सम्पूर्ण संसार के लोगों का।
वैश्वदेव-(सं०पु०) विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ।
वैश्वदेवत-(सं०पु०) उत्तराषाढा नक्षत्र।
वैश्वरूप-(सं०वि०) विश्वरूप सम्बन्धी।
वैश्वानर-(सं० पु०) परमात्मा, अग्नि, पित्त, चेतन, चीता नाम का वृक्ष।
वैश्वासिक-(सं०पु०) जिस पर विश्वास किया गया हो, विश्वस्त।
वैषम, वैषम्य-(सं० नपु०) विषमता, विषम होने का भाव।
वैषयिक-(सं० पु०) वह जो सर्वदा विषय वासना में रहता हो, विषयी, लम्पट (वि०) विषय सम्बन्धी।
वैष्टुत-(सं० पु०) होम की भस्म।
वैष्णव-(सं० नपु०) यज्ञकुण्ड की भस्म, (वि०) विष्णु सम्बन्धी (पु०) विष्णु भक्त, विष्णु की पूजा करने वाला, एक प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय, इस सम्प्रदाय के लोग बडे आचार विचार से रहते हैं।
वैष्णवी-(सं०स्त्री०) विष्णु की शक्ति, दुर्गा, गंगा, तुलसी, पृथ्वी, श्रवणा नक्षत्र।
वैसर्गिक-(सं० वि०) त्याज्य, विसर्जन करने योग्य।
वैसा-(हिं० क्रि० वि०) उस प्रकार या तरह का।
वैसूचन-(सं०नपु०) नाटक में पुरुषों का स्त्री वेश धारण करना।
वैस्तारिक-(सं० वि०) विस्तार संबंधी।
वैहङ्ग-(सं० वि०) पक्षी सम्बधी।
वैहायस-(सं०वि०) आकाश सम्बधी।
वैहासिक-(सं०पु०) विदूषक, भाँड़।
वोट-(अं०पु०) किसी सार्वजनिक कार्य के निमित्त अथवा किसी को निर्वाचन करने के लिये दी हुई प्रत्येक व्यक्ति की राय।
वोट ऑव् सेन्शर्-(अं०पु०) निन्दात्मक प्रस्ताव, वोटर्-सम्मति देने वाला।
वोटर लिस्ट्-(अं० स्त्री०) वोट देने वालों की सूची।
वोढव्य-(सं०वि०) वाह्य, ढोने लायक।
वोल-(सं०नपु०) एक सुगन्धित गोंद।
वोल्लाह्-(सं०पु०) वह घोड़ा जिसकी दुम और कन्धे पर के बाल (अयाल) पीले हो।
वोहित्थ-(सं० नपु०) पोत, जहाज़।
वौषट्-(सं० अव्य०) देवताओं के उद्देश्य से अग्निमुख में घृतादि की आहुति देने का मन्त्र।
व्यंस-(सं०वि०) स्कन्धहीन छिन्नबाहु।
व्यंसक-(सं० पु०) धूर्त चालाक।
व्यंसित-(सं० वि०) धोखा दिया हुआ।
व्यक्त-(सं० वि०) स्पष्ट, प्रकट, स्थूल, बड़ा, प्रकाशित, देखा हुआ, अनुमान किया हुआ, सांख्य मत से प्रकृति का स्थूल परिमाण।
व्यक्तगणित-(सं०नपु०)अंकविद्या, हिसाब
व्यक्तगन्धा-(सं०स्त्री०)नीली अपराजिता, सोनजूही।
व्यक्तता-(सं०स्त्री०) व्यक्त होनेका भाव।
व्यक्तदृष्टार्थ-(सं० पु०) प्रत्यक्षदर्शी, देखी हुई बात को कहने वाला।
व्यक्तराशि-(सं० स्त्री०) गणित में ज्ञात राशि।
व्यक्तरूप-(सं० पु०) विष्णु।
व्यक्ति-(सं० स्त्री०) किसी शरीरधारी का सम्पूर्ण शरीर जिसकी सत्ता अलग मानी जाती है और जो किसी समाज का अंग समझा जाता है, स्पष्टता, मनुष्य, आदमी, जीव, शरीर, वस्तु, पदार्थ।
व्यक्तीकृत, व्यक्तीभूत-(सं०वि०) प्रकाशित प्रकट किया हुआ।
व्यक्तीभाव-(सं० पु०) प्रकाशीभाव, जो पहिले स्पष्ट न हुआ हो उसका व्यक्त होना।

व्यक्तीभूत–स०त्रि०) प्रकट किया हुआ।
व्यक्तोदित–(स० वि०) साफ साफ कहा हुआ।
व्यग्र–(स०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ, त्रस्त, डरा हुआ, उद्योगी, उत्साही, आसक्त, काम में लगा हुआ।
व्यग्रता–(स० स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट।
व्यङ्ग–(स०पु०) मेक, मेढक, वह जिसका कोई अंग टूटा फूटा हो, शब्द का वह गूढ़ अर्थ जो उसकी व्यञ्जना वृत्ति के द्वारा प्रकट होता है, ताना।
व्यङ्गित–(स०वि०) विकल, घबड़ाया हुआ।
व्यङ्गीकृत–(स०वि०) दण्ड किया हुआ।
व्यङ्ग्य–(स० पु०) वह लगती हुई बात जिसका कुछ गूढ़ अर्थ हो।
व्यजन–(स०नपु०) हवा करने का पखा, बेना।
व्यञ्जक–(स० वि०) प्रकाशक (पु०) हृदय के भावों को दिखलाने वाला अभिनय।
व्यञ्जन–(स०नपु०) तरकारी शाक आदि जो रोटी दाल चावल के साथ खाई जाती है, अवयव, शरीर, दिन, चिह्न, मूछ, पकाया हुआ भोजन, वर्णमाला के वे अक्षर जो बिना स्वर की सहायता से उच्चारण नहीं किये जा सकते।
व्यञ्जना–(स० स्त्री०) प्रकट करने की क्रिया, शब्द की वह वृत्ति या शक्ति जिसके द्वारा सामान्य अर्थ को छोड़ कर किसी विशेष अर्थ का बोध होता है।
व्यतिकर–(स०पु०) विनाश, बरबादी, व्याप्ति, समूह, व्यसन, सम्बन्ध, मिलावट।
व्यतिक्रम–(स० पु०) विपर्यय, उलट-फेर, विघ्न, बाधा।
व्यतिक्रमण–(स०नपु०) क्रम में उलट फेर होना।
व्यतिचार–(स०पु०) पापाचरण, ऐब।
व्यतिपात–(स०पु०)बड़ा उपद्रव,अपमान
व्यतिरिक्त–(स०वि०) विभिन्न, अलग, पृथक् किया हुआ,(क्रि०वि०) अतिरिक्त, अलावा।
व्यतिरिक्तता–(स०स्त्री०) विभिन्नता।
व्यतिरेक–(स०पु०) अभाव, भिन्नता, वृद्धि, बढ़ती, अतिक्रमण, वह अर्थालंकार जिसमें उपमान से उपमेय की अधिकता या न्यूनता वर्णन की जाती है।
व्यतिरेकव्याप्ति–(स० स्त्री०) जिसमें जो गुण नहीं है उसमें उसीको दिखलाना।
व्यतिरेकी–(हिं० पु०) वह जो किसी पदार्थ में विभिन्नता उत्पन्न करता हो।
व्यतिषक्त–(स०वि०)आसक्त, मिला हुआ।
व्यतिहार–(स० पु०) गालीगलौज, मारपीट।
व्यतीकार–(स०पु०) विनाश, बरबादी।
व्यतीत–(स०वि०) बीता हुआ।
व्यतीपात–(स० पु०) कोई अमगल सूचक उत्पात, अपमान, ज्योतिष के सत्ताईस योगोंके अन्तर्गत सत्रहवां योग।
व्यत्यय–(स० पु०) व्यतिक्रम, विपर्यय।
व्यथक–(स० वि०) पीड़ा देने वाला।
व्यथन–(स०नपु०) व्यथा, पीड़ा।
व्यथा–(स०स्त्री०) दुःख,पीड़ा,भय, क्लेश।
व्यथित–(स० वि०) दुःखित, पीड़ित, जिसको किसी प्रकार का कष्ट हो।
व्यधिक्षेप–(स० पु०) निन्दा, शिकायत।
व्यन्तर–(स० पु०) जैनों के अनुसार एक प्रकार के पिशाच और यक्ष।
व्यपदेश–(स०पु०) कपट, छल, नाम, कुल, वश, मुख्य व्यवहार, निन्दा।
व्यपनीत–(स०वि०) दूर किया हुआ।
व्यपेक्षा–(स०स्त्री०) देखो अपेक्षा।
व्यपोह–(स० पु०) विनाश, बरबादी।
व्यभिचार–(स० पु०) भ्रष्ट आचरण, कुक्रिया, बदचलनी, पुरुष का परस्त्री से अथवा स्त्री का पर पुरुष से अनुचित संबन्ध, छिनारा, न्याय में हेतुदोष।
व्यभिचारिता–(स० स्त्री०) व्यभिचारी का भाव या धर्म।
व्यभिचारिणी–(स० स्त्री०) पर पुरुष गामिनी स्त्री।
व्यभिचारी–(हिं०पु०) व्यभिचार करने वाला, वह जो अपने मार्ग से भ्रष्ट हुआ हो, पर स्त्री गामी, बदचलन, साहित्य में चौंतीस प्रकार के शृंगार भावों में से एक।
व्यय–(स० पुं०) खर्च, परित्याग, नाश, दान, ज्योतिषमें लग्न से बारहवें स्थान का नाम।
व्ययकर–(स०वि०) खर्च करने वाला।
व्ययशील–(स० वि०) बहुत व्यय करने वाला, खर्चीला।
व्यर्थ–(स०वि०) निरर्थक,बिना मतलब का, लाभशून्य, (क्रि०वि०) फजूल।
व्यर्थता–(सं०स्त्री०) विफलता निष्फलता
व्यलीक–(स० नपुं०) काम के आवेग के कारण किया जाने वाला अपराध, विलक्षणता,दुःख, कष्ट, डाट डपट(वि०) अद्भुत, कष्टकारक, अप्रिय, बिना काम का।
व्यवकलन–(सं०नपु०) गणित में किसी संख्या में दूसरी संख्या को घटाने का कार्य।
व्यवकलित–(सं० वि०) घटाया हुआ, बाकी निकाला हुआ।
व्यवकीर्ण–(स०वि०) मिश्रित, मिलाया हुआ।
व्यवच्छिन्न–(सं०वि०) विभक्त, विभाग करके अलगाया हुआ।
व्यवच्छेद–(स० नपु०) पृथक्त्व, अलगाव, विभाग, खण्ड, निवृत्ति, छुटकारा, विराम।
व्यवच्छेदक–(सं०वि०) अलगाने वाला।
व्यवधान–(सं० नपुं०) विभाग, खण्ड, भेद, समाप्ति, आच्छादन, आड़ करने वाली वस्तु।
व्यवधायक–(सं० वि०) छिपने वाला, आड़ करने या छिपाने वाला।
व्यवसाय–(स० पु०) उपजीविका, रोज़गार, कार्य, यत्न, उद्यम, व्यापार, अभिप्राय।
व्यवसायी–(हि० पु०) व्यवसाय करने वाला, रोज़गारी, किसी कार्य का अनुष्ठान करने वाला।
व्यवसित–(स०वि०) उद्यत, तत्पर।

व्यवस्था-(सं० स्त्री०) प्रबन्ध, नियम, स्थिति शास्त्र निरुपित विधि, पदार्थोंको सजाकर यथास्थान रखना, व्यवस्था देना-शास्त्र के अनुसार पण्डितों का किसी विषय में विधान बतलाना।
व्यवस्थाता-(सं० त्रि०) शास्त्रीय व्यवस्था देने वाला।
व्यवस्थापक-(सं० वि०) नियम पूर्वक किसी कार्य को चलाने वाला, प्रबन्ध करने वाला।
व्यवस्था पत्र-(सं०नपु०) वह पत्र जिसमें किसी शास्त्रीय व्यवस्था का विधान लिखा हो।
व्यवस्थापन-सं०नपु०)निर्धारण,निरूपण,
व्यवस्थापिका सभा-(सं० स्त्री०) कानून कायदे बनाने वाली सभा।
व्यवस्थापित-(सं० वि०) निर्धारित, नियमित।
व्यवस्थित-(सं०वि०) व्यवस्था या नियम के अनुसार, कायदे का।
व्यवस्थिति-(सं०स्त्री०) व्यवस्था, प्रबन्ध।
व्यवहरण-(सं०नपु०) मुकदमे की पेशी।
व्यवहर्ता-(सं०पुं०) न्यायकर्ता, जज।
व्यवहार-(सं०पु०)विवाद, न्याय,स्थिति, क्रिया, कार्य, मुकद्मा, झगड़ा, व्यापार, बरताव, रोज़गार, लेन देन का काम।
व्यवहारक-(सं० पु०) वकील, मुख्तार।
व्यवहार विधि-(सं०स्त्री०)वह शास्त्र जिसमें व्यवहार सबंधी बातों का उल्लेख हो।
व्यवहार शास्त्र-(सं०नपु०) धर्म शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें यह बतलाया गया है कि विवाद विषय में किस प्रकार न्याय करना चाहिये तथा अपराधी को कितना दण्ड देना चाहिये।
व्यवहारास्पद-(सं०पु०)नालिश,फिर्याद।
व्यवहारिक-(सं०पु०) जो व्यवहार के लिये उपयुक्त हो।
व्यवहारी-(हिं०वि०)व्यवहार करने वाला
व्यवहृत-(सं०वि०) जो काम में लाया गया हो, आचरित, विचारित।
व्यवहृति-(सं० स्त्री०) व्यापार में होने वाला लाभ।

व्युष्टका-(सं०स्त्री०)कृष्ण पक्षकी प्रतिपदा।
व्यष्टि-(सं०स्त्री०)समाज से अलग किया हुआ प्रत्येक व्यक्ति।
व्यसन-(सं०नपु०) आपत्ति, दुःख, कष्ट, पतन, विनाश, पाप, अमगल, निष्फल प्रयत्न,विषयवासना में अनुराग,दुर्भाग्य, अयोग्यता, काम और क्रोध जनित दोष, किसी बात का शौक।
व्यसनी-(हिं०वि०) जिसको किसी प्रकार का व्यसन या शौक हो, वेश्यागामी, रडीबाज।
व्यस्त-(सं० वि०) व्याप्त, फैला हुआ, व्याकुल, घबड़ाया हुआ, किसी काम में व्यग्र।
व्याकरण-(सं० नपुं०) वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूप तथा वाक्यों में इनके शुद्ध व्यवहार आदि के नियमो का वर्णन रहता है।
व्याकर्ता-(सं० पु०) सृष्टिकर्ता।
व्याकीर्ण-(सं० वि०) चारो ओर फैलाया हुआ।
व्याकुल-(सं० वि०) व्यग्र, विकल, घबड़ाया हुआ, कातर, उत्कण्ठित।
व्याकुलता-(सं०स्त्री०)विकलता,घबड़ाहट।
व्याकृति-(सं०स्त्री०) प्रकाशन,व्याख्यान।
व्याक्रोश-(सं०पुं०) तिरस्कार करते हुए कटूक्ति कहना, चिल्लाना।
व्याक्रोशक-(सं०वि०) चिल्लाने वाला।
व्याक्षेप-(सं०पु०)विलम्ब,देर,व्याकुलता।
व्याख्या-(सं०स्त्री०) वह वाक्य जो कठिन शब्दों के अर्थ सरल भाषा में स्पष्ट करता हो, व्याख्यान, टीका, वर्णन।
व्याख्यात-(सं०वि०) जिसकी व्याख्या की गई हो।
व्याख्याता-(सं० त्रि०) व्याख्या करने वाला, व्याख्यान देने वाला।
व्याख्यान-(सं०नपु०) किसी विषय की व्याख्या या टीका करने का काम, भाषण, वक्तृता।
व्याख्यानशाला-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहा पर व्याख्यान दिया जाता हो।
व्याख्येय-(सं०वि०) व्याख्यान देने या समझाने योग्य।

व्याघट्टन-(सं०नपुं०) अच्छी तरह रगड़ने का काम, मन्थन।
व्याघात-(सं०पु०) ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से तेरहवा योग जो अशुभ माना जाता है, अन्तराय, विघ्न, बाधा, प्रहार, मार, वह अलकार जिसमें एक ही साधन या उपाय से दो विरोधी कार्यों का होना कहा जाता है।
व्याघ्र-(सं० पु०) चित्रक, चीता, बाघ।
व्याघ्र घण्टा-(सं०स्त्री०) किंकिणी नाम की लता।
व्याघ्रचर्म-(सं० नपु०) बाघ की या शेर की खाल।
व्याघ्रनख-(सं० नपु०) शेर का नख, नख नामक गन्धद्रव्य।
व्याघ्रनायक-(सं०पु०) शृगाल, सियार।
व्याघ्रमुख-(सं० पु०) बिल्ली।
व्याघ्रवक्त्र-(सं०पु०) शिव, बिल्ली।
व्याज-(सं० पु०) कपट, छल, विघ्न, बाधा, विलम्ब, देर।
व्याजनिन्दा-(सं० स्त्री०) छल से या कपट से की हुई निन्दा, वह शब्दालकार जिसमें इस प्रकार की निन्दा की जाती है।
व्याजमय-(सं०वि०) कपट से भरा हुआ
व्याजस्तुति-(सं० स्त्री०) वह स्तुति जो किसी बहाने से की जाय, प्रत्यक्ष में स्तुति न जान पडे, वह शब्दालकार जिसमें इस प्रकार की स्तुति की जाती है।
व्याजी-(सं० स्त्री०) धब्बा।
व्याजोक्ति-(सं० स्त्री०) वह उक्ति जिसमें किसी प्रकार का कपट हो, वह अलकार जिसमें किसी बात को छिपाने के लिये कोई बहाना किया जाता है।
व्याडि-(सं० पु०) एक ऋषि जिन्होंने व्याकरण और कोष बनाया था।
व्यात्त-(सं० वि०) विस्तृत, लम्बा चौड़ा।
व्यादान-(सं०नपुं०) विस्तार, फैलाव।
व्यादीर्घ-(सं० वि०) अति दीर्घ, बहुत लम्बा।

व्याध-(स० पुं०) जगली पशुओं को मारकर निर्वाह करने वाला, शिकारी, लुब्ध, प्राचीन काल की शबर नाम की जाति (वि०) दुष्ट ।

व्याधि-(स०स्त्री०) रोग, पीड़ा, बीमारी, आपत्ति, विरह आदि के कारण शरीर में किसी प्रकार का रोग उत्पन्न होना।

व्याधित-(स० वि०) रोगी, बीमार ।

व्याधूत-(स०वि०) कम्पित, कँपा हुआ ।

व्यान-(स०पु०) शरीर में रहने वाली पाच वायु में से एक जो सम्पूर्ण शरीर में सचार करने वाली मानी जाती है ।

व्यापक-(स० वि०) चारो ओर फैला हुआ, आच्छादक, जो ऊपर से अथवा चारो ओर से घेरे हो ।

व्यापकन्यास-(स० पु०) किसी देवता के मूल मन्त्र से सिर से पैर तक सर्वाङ्ग न्यास करने का कार्य ।

व्यापत्ति-(स०स्त्री०) मृत्यु, मौत ।

व्यापना-(हि०क्रि०) व्याप्त होना, किसी वस्तु के भीतर फैलना ।

व्यापादित-(सं०वि०) मारा हुआ ।

व्यापार-(सं० पु०) कर्म, कार्य, काम, व्यवसाय, रोज़गार, बेंचाबिक्री, नैयायिक मत से वह पदार्थ जो करणजन्य क्रिया को करता है ।

व्यापारी-(हिं० पु०) व्यवसाय या रोज़गार करने वाला, रोज़गारी, व्यवसायी ।

व्यापित्व-(स० नपु०) व्यापक का भाव या धर्म ।

व्यापी-(हिं०वि०) जो व्याप्त हो, व्यापक ।

व्यापृत-(सं०वि०) किसी कार्यमें लीन ।

व्याप्त-(स० वि०) समाक्रान्त, सम्पूर्ण, परिपूरित, विस्तारित ।

व्याप्ति-(स०स्त्री०) रम्भन, सर्वत्र फैला होना, आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से सदा मिला होना ।

व्याप्तित्व-(स० नपु०) व्याप्ति ।

व्याप्तिमत्-(स०वि०) व्याप्ति युक्त ।

व्याप्य-(स० नपु०) साधन, हेतु, व्याप्त करने योग्य ।

व्यामिश्र-(स० वि०) सम्मिलित, मिला हुआ ।

व्यामोह-(स०पुं०) मोह, अज्ञान ।

व्यायत-(स०वि०) अतिशय, दीर्घ ।

व्यायाम-(स० पु०) शरीर पुष्ट करने के लिये किया हुआ शारीरिक श्रम, मेहनत, कसरत, युद्ध की तैयारी ।

व्यायामी-(हिं०वि०) कसरत करने वाला

व्यायुध-(स० वि०) निःशस्त्र ।

व्यायोग-(स०पु०) साहित्य में दश प्रकार के रूपक या दृश्य काव्यों में से एक ।

व्यारोष-(स०पु०) आक्रोप, क्रोध, गुस्सा ।

व्याल-(स० पुं०) सर्प, साप, व्याघ्र, शेर, दुष्ट हाथी, राजा, विष्णु, कोई हिंसक पशु, दण्डक छन्द का एक भेद ।

व्यालग्राह-(स० पु०) सँपेरा ।

व्यालमृग-(स० पु०) शेर ।

व्यालि-(स० पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

व्यालिक-(स० पु०) सँपेरा ।

व्यालू-(हिं० पु०) रात्रि का भोजन ।

व्यालोल-(स०वि०) थोड़ा हिलता हुआ।

व्यावर्तक-(स० वि०) पीछे की ओर लौटने वाला ।

व्यावर्त्य-(सं० वि०) त्यागने योग्य ।

व्यावहारिक-(स० वि०) व्यवहार शास्त्र सबधी, व्यवहार सबधी ।

व्यावृत्त-(स० वि०) निषिद्ध, खण्डित, बाटा हुआ ।

व्यावृत्ति-(स० स्त्री०) खण्डन, निषेध, निवृत्ति ।

व्यास-(स० पु०) विस्तार फैलाव, गोल वस्तु की मध्य रेखा, पुराणादि का पाठ करने वाला ब्राह्मण, देखो वेदव्यास ।

व्यासङ्ग-(स०नपु०) बहुत अधिक आसक्ति ।

व्यासार्ध-(स० पु०) किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग ।

व्याहत-(स०वि०) विशेष रूप से आहत, निषिद्ध ।

व्याहरण-(स०नपु०) कथन उक्ति ।

व्याहार-(स० पु०) वाक्य [illegible] ।

व्याहृत-(स० वि०) कथित, कहा हुआ ।

व्याहृति-(स० स्त्री०) कथन, उक्ति, मन्त्र विशेष "ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः" ।

व्युत्क्रम-(स० पुं०) क्रम में उलट-फेर होना ।

व्युत्पत्ति-(स० स्त्री०) किसी पदार्थ की विशिष्ट उत्पत्ति, ज्ञान विशेष किसी शब्द का वह मूल रूप जिससे वह निकला हो ।

व्युत्पन्न-(स०वि०) जिसका संस्कार हो चुका हो, किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता ।

व्युत्पादक-(स०वि०) उत्पन्न करने वाला

व्युत्पादन-(स०नपु०) व्युत्पत्ति ।

व्युत्पादित-(स०वि०) उत्पन्न किया हुआ

व्युदस्त-(स०वि०) परित्यक्त, निवारित, फेंका हुआ ।

व्युपदेश-(स०पु०) छल, वचना ।

व्युपशम-(स०पु०) अशान्ति ।

व्युष-(स० स्त्री०) प्रातःकाल, सवेरा ।

व्यूढ-(स० वि०) स्थूल, मोटा, तुल्य, समान, दृढ, मज़बूत ।

व्यूह-(स०पु०) समूह, निर्माण, रचना, शरीर, देह, सेना, परिणाम, चिह्न, लिंग, युद्ध करते समय सेना का विभाग करके दुर्लभ भाग में स्थापित किया जाना, व्यूह पृष्ठ-व्यूह का पिछला भाग ।

व्योम-(हिं०पु०) आकाश, बादल, जल, पानी ।

व्योमकेश-(स०पु०) शिव, महादेव ।

व्योमगङ्गा-(स०स्त्री०) मन्दाकिनी ।

व्योम गमनी-(स० स्त्री०) आकाश में उड़ने की विद्या ।

व्योमचर-(स० वि०) आकाश में भ्रमण करने वाला ।

व्योमचारी-(स० पु०) देवता पक्षी ।

व्योमधूम-(स० पु०) मेघ, बादल ।

व्योमपाद-(स० पु०) विष्णु ।

व्योममण्डल-(स०नपु०) आकाश ।

व्योमयान-(स०नपु०) हवाई जहाज़ ।

व्योमवल्लिका-(स०स्त्री०) अमरवेल।
व्योमसद्-(स० पु०) देवता, गन्धर्व।
व्योमसरित्-(स०स्त्री०) आकाश गंगा।
व्योमस्थली-(स०स्त्री०) पृथ्वी।
व्योमस्पृश्-(स०वि०) बहुत ऊँचा।
व्योमोदक-(स० नपु०) बरसाती पानी।
व्र-(स० पु०) आपस का प्रेम।
व्रज-(स०नपु०) व्रजन, गमन, जाना, चलना, समूह, झुड, गोष्ठ, मथुरा और वृन्दावन के आसपास का प्रान्त जो श्रीकृष्ण का लीला क्षेत्र था, इसी से वह अति पवित्र माना जाता है।
व्रजक-(स० पु०) तपस्वी।
व्रजकिशोर-(स०पु०) श्री कृष्ण।
व्रजन-(स०नपु०) गमन, चलना, जाना।
व्रजनाथ-(स० पु०) श्रीकृष्ण, व्रजभूमि के अधिपति।
व्रजभाषा-(स० स्त्री०) मथुरा, आगरा तथा इसके आसपास के प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा, भारत के अधिकांश कवियों ने यथा-सूर, तुलसी, बिहारी आदि ने व्रज भाषा में काव्य रचे हैं, किसी समय दिल्ली और आगरे ज़िले के मध्यवर्ती सभी प्रदेश व्रजभूमि कहलाते थे, इस राज्य की राजधानी मथुरा थी।
व्रजभू-(स० पु०) केलिकदम्ब, (वि०) व्रज में उत्पन्न।
व्रजमण्डल-(स० नपु०) व्रजभूमि, व्रज और इसके आस पास के प्रदेश।
व्रजमोहन-(स० पु०) श्रीकृष्ण।
व्रजराज-स०पु०) देखो व्रजमोहन।
व्रजलाल-(हि०पु०) नन्दलाल, श्रीकृष्ण
व्रजवर, व्रजवल्लभ-(स०पु०) श्रीकृष्ण।
व्रजाङ्गना-(स०स्त्री०) व्रज की स्त्री, गोपी।
व्रजिन-(स०नपु०) कल्मष, पाप।
व्रजेन्द्र, व्रजेश्वर-स०पु०) श्रीकृष्ण।
व्रज्या-(स० स्त्री०) पर्यटन, घूमना फिरना आक्रमण, चढ़ाई, गमन, दल, नाट्य शाला।
व्रण-(स०पु०नपु०) क्षत, फोड़ा।
व्रणजिता-(स०स्त्री०) गोरखमुन्डी।
व्रणस्राव-(स० पु०) घाव या फोडे में से पीब निकलना।
व्रणहा-(स०स्त्री०) गुरुच।
व्रणीय-(स० वि०) व्रण सम्बन्धी।
व्रत-,स०पु०नपु०) भक्षण, भोजन, किसी पुण्य तिथि में पुण्य प्राप्त करने के निमित्त उपवास करना सङ्कल्प।
व्रतचर्या-(स०स्त्री०) व्रत का अनुष्ठान।
व्रतचारी-(स०वि०) व्रत करने वाला।
व्रतधर-(स० वि०) व्रतधारी।
व्रतपक्ष-(स० नपु०) भाद्रपद मास का शुक्ल पक्ष।
व्रतपारण-(स० नपु०) व्रत के अन्त में किया जाने वाला पारण।
व्रतभिक्षा-(स० स्त्री०) उपनयन सस्कार के बाद की भिक्षा।
व्रतस्थ-(स० त्रि०) व्रतधारी।
व्रतादेश-(स०पु०) उपनयन सस्कार।
व्रती-(हि० पु०) यजमान, जिसने किसी प्रकार का व्रत किया हो, ब्रह्मचारी।
व्रतेश-(स० पु०) शिव, महादेव।
व्रश्चन-,स०पु०) कुठार, कुल्हाड़ी, छेनी।
व्रा-(स०स्त्री०) रात्रि, रात।
व्राचड़-(स० स्त्री०) अपभ्रंश भाषा का एक भेद जिसका प्रचार प्राचीन समय में सिन्ध देश में था, पैशाची भाषा का एक भेद।
व्राज-(स०पु०) दल, समूह।
व्राजपति-(स०पु०) दल या समूह का नायक।
व्रात-(स० नपु०) जीविका के लिये किया जाने वाला परिश्रम।
व्रात्य-(स० वि०) व्रत सम्बन्धी, दश सस्कार रहित, उपनयन सस्कार रहित, वर्णसङ्कर, दोगला।
व्रीड-(स० पु०) व्रीडन (स० नपु०) लज्जा, शर्म।
व्रीडा-(स० स्त्री०) लज्जा, शर्म।
व्रीहि-(स० पु०) धान का साधारण नाम
व्रीहिकाञ्चन-(स०पु०) मसूर।
व्रीहिमुख-(स० नपु०) एक प्रकार का शस्त्र।
व्रीहिवेला-(स०स्त्री०) शरत्काल।

श– हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवां वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है–इसी से यह "तालव्य श" कहलाता है, यह महाप्राण है और इसके उच्चारण में एक प्रकार का घर्षण होता है इसलिये यह उष्म वर्ण भी कहलाता है।

श–(सं० पुं०) शिव, महादेव, शास्त्र, हथियार (नपुं०) शुभ, कल्याण।

शं–(सं०पुं०) मंगल, कल्याण,शास्त्र, सुख, शान्ति।

शंकना–(हिं०क्रि०) शंका करना, सन्देह करना, डरना।

शंगर–(हिं० पुं०) एक प्रकार का बहुत ऊंचा वृक्ष।

शंजरफ–(हिं० पुं०) देखो शिंगरिफ।

शंतनु–(हिं०पुं०) देखो शान्तनु।

शंतनु सुत–(हिं०पुं०) भीष्म पितामह।

शंबर–(सं०नपुं०) जल, पानी।

शंबूक–(सं०पुं०) देखो शम्बूक, घोघा।

शंसन–(सं० नपुं०) कथन, प्रार्थना, हिंसन।

शंसनीय–(सं०वि०) हिंसनीय,प्रार्थनीय।

शंसित–(सं० वि०) निश्चित, सूचित, वांछित।

शंस्य–(सं० वि०) स्तुति करने योग्य।

शअवान–(अ०पुं०)अरबी आठवां महीना, इसकी चौदहवीं तारीख।

शऊर–(अ० पुं०) किसी काम करने की योग्यता या ढंग, बुद्धि, अक्ल।

शऊरदार–(फा० पुं०) काम करने की योग्यता वाला, हुनरमन्द।

शक–(सं० पुं०) एक प्राचीन जाति का नाम जिसकी गणना म्लेच्छों में होती है, वह राजा जिसके नाम से कोई संवत् चले, शालिवाहन राजा का चलाया हुआ संवत् जो ईसवी सन् से ७८ वर्ष बाद आरंभ हुआ था।

शक–(अ०पुं०) शंका, सन्देह, द्विविधा।

शक कारक–(सं० पुं०) कोई संवत् चलाने वाला।

शकट–(सं०पुं०नपुं०) बैलगाड़ी, छकड़ा, दो हजार पल का मान, धव का पेड़, रोहिणी नक्षत्र, एक असुर जिसको श्री कृष्ण ने वध किया था।

शकटधूम–(सं० पुं०) एक नक्षत्र का नाम।

शकट व्यूह–(सं० पुं०) सेना को इस प्रकार रखना कि आगे का भाग पतला तथा पीछे का चौड़ा हो।

शकटाक्ष–(सं० पुं०) गाड़ी का धुरा।

शकटार–(सं० पुं०) राजा महानन्द का प्रधान मन्त्री जिसने चाणक्य से मिल कर षड्यन्त्र रचा था और नन्दवंश का नाश किया था।

शकटारि–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।

शकटासुर–(सं० पुं०) एक दैत्य जिसको कंस ने कृष्ण को मारने के लिये भेजा था परन्तु वह स्वयं कृष्ण से मारा गया था।

शकटि–(सं०स्त्री०) छोटी गाड़ी।

शकटिक–(सं० वि०) शकट संबंधी।

शकटिका–(सं०स्त्री०) बच्चों के खेलने की गाड़ी।

शकटी–(सं० स्त्री०) छोटी गाड़ी।

शकठ–(सं०पुं०) मचान।

शकर–सं०नपुं०) शक्कर, कच्ची चीनी।

शकरकन्द–(हिं०पुं०) एक प्रकार का मीठा कन्द।

शकरखोरा–(फा० पुं०) एक प्रकार का छोटा सुन्दर पक्षी।

शकरपारा–(फा० पुं०) एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बड़ा होता है और खाने में खटमीठा होता है, बरफी की तरह चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का पक्वान।

शकरपाला–(फा० पुं०) देखो शकरपारा

शकरपीटन–(हिं० पुं०) एक प्रकार की पहाड़ी कटीली झाड़ी।

शकरबादाम–(फा० पुं०) खूबानी नामक फल।

शकरी–(फा०पुं०) फालसा नामक फल।

शकल–(सं०नपुं०) खण्ड, टुकड़ा, छाल, चमड़ा, शक्कर,कमलदण्ड, दालचीनी।

शकल–(अ० स्त्री०)-मुख की आकृति, चेहरा, चेष्टा, स्वरूप, गढन, ढाँचा, मूर्ति, उपाय, तरकीब।

शकलेन्दु–(सं०पुं०) अपूर्ण चन्द्रमा।

शकलोष्ठ–(सं०पुं०) गोबर का पिण्ड।

शकव–(सं०पुं०) राजहंस।

शकाकुल–(अ० पुं०) शतावर की जात की एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड़ कन्द रूप में होती है और शकाकुल मिश्री के नाम से बाजार में बिकती है।

शकादित्य–(सं०पुं०) शालिवाहन राजा।

शकान्तक–(सं०पुं०) विक्रमादित्य।

शकाब्द–(सं० पुं०) शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्।

शकार–(सं०पुं०) श स्वरूप वर्ण, संस्कृत के नाटकों में राजा के साले के लिये प्रयोग होता है।

शकारि–(सं०पुं०) विक्रमादित्य।

शकील–(फा०वि०) सुन्दर, खूबसूरत।

शकुन–(सं० नपुं०) शुभाशुभ सूचक लक्षण, वह चिह्न जो देखने में शुभ या अशुभ जान पड़े (पुं०) पक्षी, चिड़िया, गृध्र, मंगल गीत, शकुन विचारना–किसी कार्य के करने के पहले शुभाशुभ लक्षण देख कर यह स्थिर करना कि कार्य होगा या नहीं।

शकुनज्ञ–सं०वि०) शकुन का शुभाशुभ फल जानने वाला।

शकुन शास्त्र–(सं० नपुं०) वह शास्त्र जिसमें शकुनों के शुभाशुभ फलों का विवेचन रहता है।

शकुनि–(सं० पुं०) पक्षी, चिड़िया, गिद्ध, दुर्योधन के मामा का नाम जो इनका मन्त्री था, यही कौरवों के नाश का प्रधान कारण था।

शकुनिवाद–(सं० पुं०) प्रातःकाल के समय पक्षियों का शब्द करना।

शकुनी–(सं० स्त्री०) श्यामा पक्षी, मादा गौरैया, एक पूतना का नाम।

शकुनी–(हिं०पुं०) शकुनों का शुभाशुभ फल जानने वाला।

शकुनीश्वर–(सं०पुं०) गरुड़।

शकुनोपदेश–(सं० पु०) शकुन शास्त्र।
शकुन्त–(सं० पु०) पक्षी, चिड़िया, एक प्रकार का कौवा, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
शकुन्तला–(सं०स्त्री०) मेनका नाम की अप्सरा के गर्भ से तथा विश्वामित्र के औरस से उत्पन्न कन्या जो निर्जन वन में गृध्र द्वारा रक्षित हुई थी, इसका विवाह राजा दुष्यन्त से हुआ था, इनके गर्भ से भरत का जन्म हुआ था।
शकुन्तलात्मज–(सं०पु०) राजा भरत।
शकुन्तिका–(सं०स्त्री०) छोटी चिड़िया।
शकुन्द–(सं०पु०) सफेद कनेर।
शकृत्–(सं० नपुं०) विष्ठा, गोबर।
शकृत् द्वार–(सं० नपु०) गुदा।
शक्कर–(सं०पु०) वृष, बैल, (फ्रा०स्त्री०) चीनी, खाड़।
शक्करी–(सं० स्त्री०) वर्णवृत्त के अन्तर्गत चौदह अक्षर वाले छन्दों का नाम।
शक्की–(अ०वि०) जिसको सब बातों में सन्देह होता हो।
शक्त–(सं०वि०) समर्थ, ताकतवर।
शक्तव–(सं० पु०) भूने हुए अन्न का आटा, सत्तू।
शक्ति–(सं०स्त्री०) सामर्थ्य, बल, शौर्य, पराक्रम, वह कार्य जिसके द्वारा शत्रु पर विजय प्राप्त हो, देवीमूर्ति, लक्ष्मी, गौरी, प्रधान अष्ट शक्ति–इन्द्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, माहेश्वरी और भैरवी हैं, प्रकृति, माया, दुर्गा, तलवार, वह राज्य जिसमें अमोघ धन और सेना हो, दूसरे पर प्रभाव डालने वाला, बल, न्याय के अनुसार वह सबंध जो किसी पदार्थ तथा उसका बोध कराने वाले शब्द में होता है।
शक्तिकर–(सं०वि०) बल देने वाला।
शक्तिग्रह–(सं० पु०) शिव, महादेव, कार्तिकेय।
शक्तिज्ञ–(सं०वि०) शक्ति को जानने वाला।
शक्तितस्–(सं०अव्य०) शक्ति के अनुसार।
शक्तिता–(सं०स्त्री०) शक्तिका भाव या धर्म।
शक्तिधर–(सं० पु०) शक्तिधारक, कार्तिकेय।
शक्तिपाणि–(सं०पु०) स्कन्द, कार्तिकेय।
शक्तिपूजक–(सं० पु०) तान्त्रिक, वाममार्गी।
शक्तिपूर्व–(सं०पु०) पराशर।
शक्तिभृत्–(सं०पु०) कार्तिकेय।
शक्तिमत् (सं०वि०) ताकतवर।
शक्तिमत्ता–(सं०स्त्री०) शक्तिमान् होने का भाव या धर्म।
शक्तिमत्व–(सं०नपु०) देखो शक्तिमत्ता।
शक्तिमन्त्र–(सं०नपुं०) शक्ति के उपासकों का मन्त्र।
शक्तिमय–(सं०वि०) शक्ति पूर्ण।
शक्तिवादी–(सं०पु०) शक्ति की उपासना करने वाला।
शक्तिवीर–(सं०पु०) वाम मार्गी।
शक्तिवैकल्य–(सं० नपु०) असमर्थता, कमज़ोरी।
शक्तिहर–(सं० वि०) बलनाशक।
शक्तिहीन–(सं० वि०) निर्बल, नपुंसक, नामर्द।
शक्ती–(सं० पु०) एक प्रकार का मातृक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह मात्रायें होती हैं।
शक्तु–(सं०पु० नपु०) भुने हुए अन्न का आटा, सत्तू।
शक्त्रि–(सं० पु०) वसिष्ठ मुनिके ज्येष्ठ पुत्र का नाम।
शक्र,शक्नु–(सं०वि०) प्रियवादी।
शक्य–(सं० वि०) समर्थनीय, क्रियात्मक, किया जाने योग्य, शक्ति युक्त, सम्भव, वह जो शक्ति का आश्रय हो (पु०) वह अर्थ जो शब्द की शक्ति द्वारा प्रकट हो।
शक्यता–(सं० स्त्री०) शक्य होने का भाव या धर्म।
शक्र–(सं०पु०) दैत्यों के नाश करने वाले इन्द्र, अर्जुन वृक्ष, ज्येष्ठा नक्षत्र, रगण का चौथा भेद जिसमें ६ मात्रायें होती हैं।
शक्रकार्मुक–(सं०नपु०) इन्द्र धनुष।
शक्रकेतु–(सं०पु०) इन्द्रध्वज।
शक्रगोप–(सं०पु०) बीरबहूटी।
शक्रचाप–(सं० नपु०) इन्द्रधनुष।
शक्रजानु–(सं०पु०) रामायण के अनुसार एक वानर का नाम।
शक्रजित–(सं० पु०) मेघनाद।
शक्रतरु–(सं०पु०) भाग का पौधा।
शक्रदिश्–(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा।
शक्रद्रुम–(सं० पु०) बकुल, मौलसिरी का पेड़।
शक्रधनु–(सं० पु०) इन्द्र धनुष।
शक्रनन्दन–(सं०पु०) अर्जुन।
शक्रनेमी–(सं०पु०) देवदार का वृक्ष।
शक्रपादप–(सं०पु०) देखो शक्रनेमी।
शक्रपुष्पिका–(सं०स्त्री०) नागदौना।
शक्रपुर–(सं०नपु०) अमरावती।
शक्रप्रस्थ–(सं० नपु०) इन्द्रप्रस्थ जिसको पाण्डवोंने खाण्डववन जलाकर बसाया था।
शक्रबीज–(सं०नपु०) इन्द्रजव।
शक्रभवन–(सं० नपु०) स्वर्ग।
शक्रमाता–(सं० स्त्री०) भार्गी।
शक्रवाहन–(सं०पु०) मेघ, बादल।
शक्रबाणासन–(सं०नपु०) इन्द्रधनुष।
शक्रशरासन–(सं०नपुं०) इन्द्रधनुष।
शक्रशाला–(सं० स्त्री०) यज्ञ भूमि में वह स्थान जहा इन्द्र के उद्देश्य से बलि दी जाती है।
शक्रसारथि–(सं०पु०) मातलि।
शक्रसुत–(सं०पु०) इन्द्र का पुत्र बालि।
शक्राख्य–(सं० पु०) पेचक, उल्लू।
शक्राग्नी–(सं०पु०) विशाखा नक्षत्र।
शक्राणी–(सं०स्त्री०) इन्द्र की पत्नी, शची।
शक्रात्मज–(सं०पु०) अर्जुन।
शक्रायुध–(सं०नपु०) इन्द्रधनुष।
शक्रारि–(सं० पु०) इन्द्र का शत्रु।
शक्राशन–(सं०पु०) विजया, भाग।
शक्रासन–(सं०नपु०) इन्द्र का आसन।
शक्रेन्द्र–(सं०पु०) इन्द्रगोप, बीरबहूटी।
शक्ल–(हिं०स्त्री०) देखो शकल।
शक्वरी–(सं०स्त्री०) अंगुलि, मेखला, छन्द का एक भेद।
शख्स–(अ० पु०) व्यक्ति, जन, मनुष्य।

शख्सियत–(सं० स्त्री०) व्यक्तित्व, व्यक्तिता।
शख्सी–(अ० वि०) मनुष्य का, व्यक्तिगत।
शगल–(अ० पु०) व्यापार, कामधंधा, मनोविनोद।
शगुन–(हिं०पु०) देखो शकुन, नज़राना, भेंट, एक प्रकार की रस्म जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर की जाती है, टीका, तिलक।
शगुनियां–(हिं० पुं०) शुभाशुभ शगुनों का विचार करने वाला व्यक्ति।
शगून,शगूनियां–(हिं०पु०) देखो शगुन, शगुनिया।
शगूफा–(फा०पु०) फूल की कली, बिना खिला हुआ फूल, पुष्प, कोई नई अद्भुत घटना।
शङ्क–(सं०पु०) आशका, भय, डर।
शङ्कनीय–(सं०वि०) शका करने योग्य।
शङ्कर–(सं०पु०) शिव, महादेव, शकराचार्य, कबूतर, भीमसेनी कपूर, एक छन्द का नाम, एक सम्पूर्ण जाति का राग, (वि०) शुभ, कल्याण करनेवाला, लाभदायक।
शङ्करजटा–(सं० स्त्री०) जटाधारी।
शङ्करताल–(सं० पु०) संगीत में एक प्रकार का ताल जिसमें ग्यारह मात्रायें होती हैं।
शङ्करप्रिय–(सं०पु०) तीतर पक्षी, धतूरा।
शङ्करवाणी–(सं०स्त्री०) ब्रह्मवाक्य।
शङ्करशुक्र–(सं०नपु०) पारद, पारा।
शङ्करशैल–(सं०पु०) कैलास।
शङ्करा–(सं० स्त्री०) शिव की भार्या, भवानी, एक राग का नाम।
शङ्कराचारी–(सं० पु०) शकराचार्य के मत का अनुयायी।
शङ्कराचार्य–भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध अद्वैत वाद के प्रवर्तक।
शङ्कराभरण–(सं० पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक प्रकार का राग।
शङ्करालय–(सं० पु०) कैलास।
शङ्करावास–(सं० पु०) कैलास, भीमसेनी कपूर।
शङ्करी–(सं०स्त्री०) शिव की पत्नी, पार्वती, एक रागिणी का नाम।
शङ्करीय–(सं० वि०) शकर सबंधी।
शङ्कर्षण–(सं० पु०) विष्णु।
शङ्का–(सं० स्त्री०) मन में होने वाला अनिष्ट का भय, डर, खौफ, सशय, आशका, साहित्य में वह संचारी भाव जो अपने किये हुए किसी अनुचित व्यवहार पर अथवा किसी प्रकार से होने वाली इष्ट हानि पर उत्पन्न होता है।
शङ्कामय–(सं० वि०) शकायुक्त।
शङ्कित–(सं०वि०) अनिश्चित, सन्देहयुक्त, डरा हुआ।
शङ्कितव्य–(सं०वि०) शंका के योग्य।
शङ्कु–(सं० पुं०) कोई नुकीली वस्तु, बरछा, भाला, खूँटा, मेख, कील, शिव, कामदेव, राक्षस, विष, दश लाख की संख्या, प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा, पाप, उग्रसेन के एक पुत्र का नाम, पत्ते की नस, नखी नामक गन्धद्रव्य।
शङ्कुकण–(सं० पु०) गर्दभ, गदहा।
शङ्कुकर्णी–(सं०पु०) शिव, महादेव।
शङ्कुजिह्व–(सं० स्त्री०) ज्योतिष में एक गणित विधि।
शङ्कुपुच्छ–(सं० वि०) जिसकी पूँछ में डक न हो।
शङ्कुमुखी–(सं० स्त्री०) जोंक।
शङ्कुला–(सं० स्त्री०) सुपारी काटने का सरौता।
शङ्ख–(सं० पु०, नपुं०) एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है, कपाल की हड्डी, कुबेर की एक निधि।
शङ्खकन्द–(सं०पुं०) शखालु।
शङ्खचरी–(सं० स्त्री०) मस्तक पर चन्दन का तिलक।
शङ्खचूड–(सं०पु०) एक दैत्य का नाम।
शङ्खज–(सं०पु०) मोती।
शङ्खजीरा–(सं०पु०) सगराहत पत्थर।
शङ्खधर–(सं० पु०) विष्णु।
शङ्खधरा–(सं०स्त्री०) हुरहुर का साग।
शङ्खधवला–(सं० स्त्री०) सफेद जूही (वि०) शख के समान सफेद।
शङ्खनारी–(सं०स्त्री०) एक वृक्ष का नाम।
शङ्खपलीता–एक प्रकार का रेशेदार खनिज पदार्थ, अस् बेस्टास।
शङ्खपाणि–(सं०पु०) विष्णु।
शङ्खपाषाण–(सं०पु०) सखिया।
शङ्खपुष्पिका–(सं०स्त्री०) सफेद जूही।
शङ्खपुष्पी–(सं०स्त्री०) शखाहुली।
शङ्खप्रणाद–(सं० नपु०) शख का शब्द।
शङ्खप्रवर–(सं० वि०) बड़ा शख।
शङ्खप्रस्थ–(सं०पु०,चन्द्रमा में का कलंक।
शङ्खभस्म–(सं०पु०) एक प्रकार का चूना।
शङ्खभृत–(सं० पु०) शख धारण करने वाले विष्णु।
शङ्खमालिनी–(सं०स्त्री०) शखपुष्पी।
शङ्खमुख–(सं० पु०) घड़ियाल।
शङ्खमुद्रा–(सं० स्त्री०) अगुलियों को मोड़ कर शख की आकृति बनाने की मुद्रा।
शङ्खमूल–(सं०नपु०)शख का अग्र भाग।
शङ्खयूथिका–(सं०स्त्री०) सफेद जूही।
शङ्खलिखित–(सं० वि०) निर्दोष, बेऐब।
शङ्खवात–(सं०पु०) सिर की पीड़ा।
शङ्खालु–(सं०पु०) देखो शङ्खारु।
शङ्खालुक–(सं०पु०)सफेद शकरकन्द।
शङ्खास्थि–(सं० स्त्री०) सिर की हड्डी।
शङ्खाहुलि–(सं० स्त्री०) शखपुष्पी।
शङ्खाहोली–(हिं०स्त्री०) शखपुष्पी।
शङ्खिनी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार की वनौषधि, एक देवी का नाम, सीप, चार प्रकार की स्त्री जाति में से एक।
शचि, शची–(सं०स्त्री०) इन्द्र की पत्नी।
शचीपति–(सं० पु०) इन्द्र।
शचीश–(सं० पु०) इन्द्र।
शजर–(अ०पु०) वृक्ष, पेड़, दरख्त।
शजरा–(अ० पु०) वशवृक्ष, कुर्सीनामा, खेतों का पटवारी का बनाया हुआ नकशा।
शठ–(सं०पु०) धतूरे का पेड़, (वि०) धूर्त, चालाक, दुष्ट, वचक, बदमाश, मूर्ख, पाच प्रकार के नायकों में से

एक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर हो।
शठता-(सं० स्त्री०) बदमाशी, पाजीपन, धूर्तता।
शठत्व-(सं० नपु०) शठता।
शठी-(सं० स्त्री०) कपूर कचरी।
शठोदर-(सं० वि०) धूर्त, बदमाश।
शण-(सं० नपु०) सन नाम का पौधा।
शणई-(हिं० स्त्री०) देखो सनई।
शणालुक-(सं० पु०) अमलतास का वृक्ष।
शण्ड-(सं० पु०) नपुसक, हिजड़ा, पागल, साड़।
शण्डता-(सं० स्त्री०) हिजड़ापन।
शण्डा-(सं० पु०) फटा हुआ दूध।
शत-(सं० वि०) दस का दस गुना, सौ, (नपु०) सौ की सख्या।
शतक-(सं० पु०) एक ही प्रकार की सौ वस्तुओं का सग्रह, सौ वर्षो का समूह, शताब्दी।
शतकिरण-(सं० पु०) एक प्रकार की समाधि।
शतकुन्द-(सं० पु०) सफेद कनेर।
शतकुसुमा-(सं० स्त्री०) शतपुष्पा, सौंफ।
शतकोटि-(सं० पु०) सौ करोड़ की सख्या।
शतक्रतु-(सं० पु०) इन्द्र।
शतखण्ड-(सं० नपु०) सुवर्ण, सोना।
शतगु-(सं० पु०) सौ गौवों का स्वामी।
शतगुण-(सं० वि०) सौ गुना।
शतघ्नी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।
शतचण्डी-(सं० स्त्री०) सौ वार चण्डी पाठ।
शतच्छद-(सं० पु०) सौ पखड़ियो का कमल।
शतजटा-(सं० स्त्री०) शतमूली, सतावर।
शतजिह्व-(सं० पु०) शिव, महादेव।
शततारा-(सं० स्त्री०) शतभिषा नक्षत्र।
शतदल-(सं० नपु०) पद्म, कमल।
शतदला-(सं० स्त्री०) सेवती, गुलाब।
शतदा-(सं० वि०) सौ का दान करने वाला।
शतद्रु-(सं० स्त्री०) सतलज नदी का प्राचीन नाम।
शतधन्वा-(सं० पु०) एक योद्धा जिसको कृष्ण ने मारा था।
शतधा-(सं० अव्य०) सौ प्रकार से।
शतधाम-(सं० पु०) विष्णु।
शतधृति-(सं० पुं०) इन्द्र, ब्रह्मा, स्वर्ग।
शतधौत-(सं० वि०) सौ बार धोया हुआ।
शतपत्र-(सं० नपु०) कमल, पद्म, मयूर, मोर, कठफोड़वा पक्षी, (वि०) सौ पत्तों वाला, सौ पख वाला।
शतपत्र-(सं० स्त्री०) दूर्वा, दूब।
शतपत्री-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का गुलाब।
शतपथ-(सं० वि०) सैकड़ों मार्ग या शाखा वाला।
शतपथब्राह्मण-(सं० पु०) यजुर्वेद का एक ब्राह्मण जिसमें कर्मकाण्ड का विस्तृत वर्णन है।
शतपथीय-(सं० वि०) शतपथ ब्राह्मण सबधी।
शतपद-(सं० नपु०) कनखजूरा, गोजर, च्यूटी।
शतपदी-(सं० स्त्री०) कनखजूरा, गोजर, सतावर।
शतपाल-(सं० पु०) वह जो सौ मनुष्यो का पालन करने वाला।
शतपुत्री-(सं० स्त्री०) सतपुतिया, तरोई।
शतपुष्प-(सं० पु०) साठी धान।
शतपुष्पा (सं० स्त्री०) सोवे का साग।
शतपोर-(सं० पु०) पौंढा, गन्ना।
शतवलि-(सं० पु०) रामायण के अनुसार एक बन्दर का नाम।
शतबाहु-(सं० पु०) एक असुर का नाम (वि०) जिसको सौ भुजा हों।
शतबुद्धि-(सं० वि०) बड़ा बुद्धिमान्।
शतभिषा-(सं० स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से चौबीसवा नक्षत्र।
शतभीरु-(सं० स्त्री०) चमेली का पौधा।
शतमख-(सं० पु०) शतक्रतु, इन्द्र।
शतमन्यु-(सं० पु०) उलूक, उल्लू।
शतमयूख-(सं० पु०) चन्द्रमा।
शतमल्ल-(सं० पुं०) सखिया नामक विष।
शतमुख-(सं० पु०) एक असुर का नाम।
शतमुखी-(सं० स्त्री०) दुर्गा।
शतमूला-(सं० स्त्री०) बड़ी सतावर।
शतरज-(फा० पु०) एक प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है, यह खेल दो आदमी खेलते हैं और प्रत्येक के पास सोलह गोटिया रहती हैं।
शतरंजवाज-(फा० पु०) शतरज का खिलाड़ी।
शतरजवाजी-(फा० स्त्री०) शतरज खेलने का व्यसन।
शतरजी-(फा० स्त्री०) रग बिरंगे सूतों से बनी हुई दरी, शतरज का अच्छा खिलाड़ी, शतरज खेलने की बिसात, अनेक प्रकार के अन्नों से बनाई हुई रोटी
शतरुद्र-(सं० पु०) रुद्र का एक रूप जिसके सौ मुख माने जाते हैं।
शतरूपा-(सं० स्त्री०) ब्रह्मा की मानसी कन्या और पत्नी, इन्हीं के गर्भ से स्वयम्भुव मनु की उत्पत्ति हुई थी।
शतलक्ष-(सं० नपु०) सौ लाख, करोड़।
शतवार्षिक-(सं० वि०) प्रति सौ वर्ष पर होने वाला।
शतवाही-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो अपने पिता के घर से ससुराल में बहुत सा धन लाई हो।
शतवीर-(सं० पु०) विष्णु का एक नाम।
शतवीर्या-(सं० स्त्री०) शतावर, सफेद, मूसली।
शतशः-(सं० अव्य०) सौ बार, सौ दफे।
शतशीर्ष-(सं० पुं०) विष्णु का एक नाम
शत संवत्सर-(सं० पुं०) सौ वर्ष।
शतसहस्र-(सं० नपु०) एक लाख।
शतसहस्रांशु-(सं० पु०) चन्द्रमा।
शतांश-(सं० पु०) सवा भाग या हिस्सा।
शताक्षी-(सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, रात्रि, सौंफ।
शतानन-(सं० पु०) बिल्व, बेल।
शतानन्द-(सं० पु०) ब्रह्मा, विष्णु, देवकी-नन्दन।
शतानीक-(सं० पुं०) वृद्ध पुरुष एक मुनि जो व्यास के शिष्य थे, जनमेजय के पुत्र का नाम, नकुल का एक पुत्र

जो द्रौपदी से उत्पन्न हुआ था, एक असुर का नाम, सौ सिपाहियों का नायक।
शताब्दी-(सं०स्त्री०) सौ वर्ष का समय
शतायु-(सं० पु०) वह जिसकी आयुष्य सौ वर्ष की हो।
शतायुध-(सं० वि०) जो सौ अस्त्र धारण करता हो।
शतायुधा-(सं०स्त्री०)एक किन्नरीका नाम।
शतार-(सं०नपु०) वज्र, सुदर्शन चक्र।
शतार्घ-(सं० वि०) बहुमूल्य।
शतार्ध-(सं० नपु०) पचशत सख्या, पचास।
शतावधान-(सं० पु०) वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातों को सुनकर उनको क्रम से याद रखता हो, वह जो एक साथ अनेक काम करता हो।
शतावधानी-(सं० पु०) शतावधान का काम।
शतावर-(सं० पु०) सफेद मूसली।
शतावरी-(सं०स्त्री०) इन्द्र की भार्या।
शतावर्त-(सं०पु०) विष्णु, महादेव।
शताश्रि-(सं० पु०) वज्र।
शताष्टक-(सं०नपु०) एक सौ आठ।
शताह्वा-(सं०स्त्री०) सतावर।
शती-(हि० वि०) सौ की सख्या का।
शतेश-(सं० पु०) सौ गाव का अधिपति।
शतोदर-(सं० पु०) शिव, महादेव।
शत्रि-(सं०पु०) हस्ती, हाथी।
शत्रु-(सं० पु०) रिपु, वैरी, अरि, द्वेषी, दुश्मन।
शत्रुकण्टका-(सं०स्त्री०) सुपारी।
शत्रुघ-(सं० वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
शत्रुघाती-(सं० पु०) शत्रुघ्न के एक पुत्र का नाम।
शत्रुघ्न-(सं०पु०) रामचन्द्र के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।
शत्रुजित्-(सं०पुं०) शत्रु को जीतने वाला।
शत्रुता-(सं० स्त्री०) वैरभाव, दुश्मनी।
शत्रुत्व-(सं० नपु०) शत्रुता।
शत्रुताई-(हिं०स्त्री०) शत्रुता दुश्मनी।
शत्रुनिबर्हण-(सं०नपु०) शत्रु का नाश।
शत्रुनिलय-(सं०पु०) शत्रु के रहने का स्थान।
शत्रुन्तप-(सं०वि०)शत्रु को जीतने वाला।
शत्रुन्दम-(सं० पु०) शिव, महादेव, (वि०) शत्रु को दमन करने वाला।
शत्रुदमन-(सं० नपु०) शत्रुघ्न का एक नाम।
शत्रुबाधक-(सं० वि०) शत्रु को पीड़ा देने वाला।
शत्रुमर्दन-(सं० पु०) शत्रुओं का नाश करने वाला, शत्रुघ्न।
शत्रुवत्-(सं० अव्य०) शत्रु के समान।
शत्रुबल-(सं०नपु०) शत्रु को सेना।
शत्रु विनाशन-(सं०पु०) शिव,महादेव।
शत्रुसाल-(हि० वि०) शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करने वाला।
शत्रुहन्ता-(सं० वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
शत्वरी-(सं० स्त्री०) रात्रि, रात।
शदक-(सं० पु०) वह अन्न जिसकी भूसी न निकाली गई हो।
शदीद-(अ०वि०) बहुत ज्यादा, भारी।
शनाख्त-(अ०वि०) परिचय, पहचान।
शनै-(सं०अव्य०) थोड़ा थोड़ा,धीरे धीरे।
शनि-(सं०पु०) शनैश्चर ग्रह, यह सूर्य से अधिक दूरी पर है, सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इसको उनतीस वर्ष एक सौ सड़सठ दिन लगते हैं, इसका व्यास प्रायः सत्तर हजार मील है यह पृथ्वी से सात गुना बड़ा तथा नब्बे गुना भारी है, दुरबीन से देखने पर यह ज्योतिर्मय वलय से घिरा हुआ देख पड़ता है।
शनिप्रदोष-(सं० पु०) शनिवार के दिन होने वाला प्रदोष व्रत।
शनि प्रिय-(सं०नपु०)नीलमणि, नीलम।
शनिरुह-(सं०पु०) भैंसा।
शनिवार-(सं० पु०) वह बार जो शुक्रवार के बाद तथा रविवार के पहले पड़ता है।
शनैः-(सं०अव्य०)धीरे धीरे, आहिस्ता से।
शनैश्चर-(सं० पु०) शनि ग्रह।
शन्तनु-(सं०वि०) सुन्दर शरीर वाला (पु०) भीष्म के पिता का नाम।
शन्ताति-(सं०वि०) सुख करने वाला।
शन्तातीय-(सं०वि०) स्तोत्र सबधी।
शन्ध-(सं० पु०) षण्ड, हिजड़ा।
शपथ-(सं० पु०) कसम, सौगन्ध, दिव्य, कौल।
शपथपत्र-(सं० नपु०) हलफनामा।
शप्त-(सं० पु०) वह मनुष्य जिसको शाप दिया गया हो।
शप्ता-(हिं०वि०) शाप देने वाला।
शफ-(सं०नपु०)पशु का खुर,वृक्ष की जड़
शफक-(अ० स्त्री०) प्रातःकाल या सन्ध्या के समय आकाश में देख पड़ने वाली ललाई।
शफकत-(अ०स्त्री०) कृपा,दया,प्यार।
शफगोल-(फा० स्त्री०) देखो इसबगोल।
शफतालू-(फा० पु०) एक प्रकार का बड़ा आडू, सतालू।
शफरूक-(सं०पु०) सन्दूक, बक्स।
शफा-(अ०स्त्री०) नीरोगता, तन्दुरुस्ती।
शफाखाना-(फा० पु०) चिकित्सालय, हस्पताल।
शब-(फा०स्त्री०) निशा, रात्रि, रात।
शबनम-(फा० स्त्री०) तुषार, ओस, एक प्रकार का बहुत महीन वस्त्र।
शबनबी-(फा०स्त्री०) मसहरी, छपरखट।
शबर-(सं०वि०) चितकबरा।
शबलक-(सं०वि०)रगबिरगा,चितकबरा।
शबलता-(सं०स्त्री०) चितकबरापन।
शबला-(सं० स्त्री०) चितकबरी गाय, कामधेनु।
शबलित-(सं०वि०) चितकबरा।
शबाब-(अ० पु०) यौवनकाल, जवानी, अधिक सुन्दरता।
शबाहत-(अ०स्त्री०)अनुकूलता,समानता।
शबीह-(अ० स्त्री०) किसी व्यक्ति का अनुरूप चित्र, अनुरूपता, समानता।
शबोरोज-(फा०अव्य०)हरदम,रात दिन।
शब्द-(सं०पुं०) निःस्वन, ध्वनि, नाद, वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ

या भाव का बोध होता है।
शब्दकार-(सं० त्रि०) ध्वनिकारक।
शब्दकारी-(सं०वि०) शब्द करने वाला।
शब्दग-(सं०वि०) वायु।
शब्दग्रह-(सं०पु०) कर्ण, कान।
शब्दचातुर्य-(सं० पु०) बोल चाल की प्रवीणता।
शब्दचित्र-(सं० पु०) अनुप्रास नामक अलकार।
शब्दत्व-(सं० नपु०) शब्द का धर्म या भाव।
शब्दनिर्णय-(सं० पु०) शब्द निर्धारण
शब्दनृत्य-(सं० पु०) एक प्रकार का नाच
शब्दपति-(सं० पु०) नाम मात्र का नेता,
शब्दप्रभेद, शब्द की विभिन्नता,
शब्दप्रमाण-वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के आधार पर हो।
शब्दप्राश-(सं० पु०) शब्द के अर्थों का अनुसन्धान।
शब्दविरोध-(सं० पुं०) वह विरोध जो केवल शब्दो में जान पड़ता हो।
शब्दविशेषण-(सं० नपु०) विशेषण शब्द
शब्द बोध-(सं०पु०) वह ज्ञान जो ज़बानी गवाही से प्राप्त हो।
शब्दब्रह्म-(सं० नपु०) शब्दात्मक ब्रह्म, ॐकार, वेद, श्रुति।
शब्दभेदी-(सं० पु०) शब्दवेधी बाण।
शब्दमय-(सं० वि०) शब्द युक्त।
शब्दमहेश्वर-(सं० पु०) महादेव।
शब्दमात्र-(सं० नपु०) केवल शब्द।
शब्दमाल-(सं० पु०) पोला बास।
शब्दमाला-(सं० स्त्री०) शब्दसमूह।
शब्दयोनि-(सं० स्त्री०) शब्द की उत्पत्ति।
शब्दरहित-(सं० वि०) शब्द से रहित।
शब्दवत्-(सं० अव्य०) शब्द के समान।
शब्दवारिधि-(सं० पु०) शब्दों का समूह
शब्दविद्या-(सं० स्त्री०) व्याकरण।
शब्दविज्ञान-(सं० नपु०) वह वैज्ञानिक प्रक्रिया जिसके द्वारा शब्द विषयक तत्वज्ञान जाना जाता है।
शब्दविरोध-(सं० पु०) विरुद्ध शब्द का व्यवहार।

शब्दवेधी-(सं० पु०) वह मनुष्य जो आखों से बिना देखे हुए केवल शब्दसे दिशा का ज्ञान करके किसी व्यक्ति या वस्तु को बाणसे मारता है, अर्जुन, दशरथ,
शब्द शक्ति-शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है।
शब्दशासन-(सं० नपु०) व्याकरण के नियम।
शब्दशास्त्र-(सं०नपु०) व्याकरण।
शब्दश्लेष-(सं० पु०) वह अलकार जिसमें एक शब्द द्वारा शेषोक्ति प्रकाशित की जाती है।
शब्दसम्भव-(सं०पु०) वायु।
शब्दसाधन-(सं० पु०) व्याकरण का वह अग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, रुपान्तर आदि का विवेचन होता है।
शब्दसिद्धि-(सं० स्त्री०) शब्द का पूर्ण व्यवहार।
शब्दसौन्दर्य-(सं० पु०) शब्दों के उच्चारण की सुगमता।
शब्द सौष्ठव-(सं० पु०) लेखमें शब्दो की कोमलता।
शब्दस्मृति-(सं०स्त्री०) शब्द का स्मरण।
शब्दहीन-(सं०वि०) शब्द रहित।
शब्दाकर-(सं० पुं०) शब्दो का उत्पत्ति स्थान।
शब्दाक्षर-(सं० नपु०) शब्द ज्ञापक अक्षर, ॐ।
शब्दाडम्बर-(सं०पु०) बडे बडे शब्दो का ऐसा प्रयोग जिससे भाव कम निकलें, शब्दजाल।
शब्दातिग-(सं० पु०) विष्णु।
शब्दातीत-(सं०पु०) वह जो शब्द से परे हो, ईश्वर।
शब्दाधिष्ठान-(सं० नपु०) शब्द का आश्रय स्थान, कान।
शब्दाध्याहार-(सं० नपु०) वाक्य को पूर्ण करने के लिये अपने मनका शब्द जोड़ना।
शब्दानुकरण-(सं० नपुं०) शब्द की नकल।

शब्दानुशासन-(सं० नपु०) व्याकरण।
शब्दायमान-(सं०वि०) शब्द करता हुआ
शब्दार्थ-(सं० पु०) किसी शब्द का अर्थ।
शब्दालङ्कार-(सं० पु०) साहित्य में वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से भाषा में लालित्य उत्पन्न किया जाता है।
शब्दित-(सं० वि०) ध्वनित, शब्द किया हुआ।
शब्देन्द्रिय-(सं० नपुं) कर्ण, कान।
शम-(सं० पु०) शान्ति, मोक्ष, निवृत्ति, क्षमा, उपचार, अन्तःकरण अथवा बाह्य इन्द्रियों का निग्रह, साहित्य में शान्त रस का स्थायी भाव, सयम, तिरस्कार।
शमक-(सं० वि०) शान्ति कारक।
शमगिर-(सं० स्त्री०) शान्ति कथा।
शमता-(सं०स्त्री०) शान्ति, उपशमन।
शमन-(सं०नपु०) यज्ञ के लिये पशुओं का बलिदान, निवृत्ति, चित्तकी स्थिरता, शान्ति, हिंसा, प्रतिसहार, आघात, तिरस्कार।
शमनस्वसा-(सं० स्त्री०) यम की बहिन, यमुना।
शमनी-(सं० स्त्री०) रात्रि, रात।
शमनीय-(सं०वि०) शान्त करने योग्य।
शमल-(सं०नपु०) पाप, विष्ठा।
शमशेर-(फा०स्त्री०) खड्ग, तलवार।
शमा-(अ०स्त्री०) मोमबत्ती।
शमादान-(फा०पुं०) वह आधार जिसमें मोमबत्ती खोंसकर जलाई जाती है।
शमि-(सं० स्त्री०) शमी वृक्ष।
शमिक-(सं० पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
शमित-(सं०वि०) शान्त किया हुआ।
शमिता-(हिं०पु०) शान्ति कारक, यज्ञमें पशु का बलिदान करने वाला।
शमिष्ठ-(सं० वि०) अतिशान्त।
शमी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का काटेदार वृक्ष सरकण्ट वृक्ष, छिकुर (वि०) शान्त।
शमीक-(सं० पु०) एक प्रसिद्ध क्षमा

शील ऋषि, राजा परीक्षित ने इनके गले में एक बार मरा हुआ साप डाल दिया गया परन्तु इन्होंने कुछ न कहा।
शमीगर्भ-(सं० पु०) ब्राह्मण, अग्नि।
शमीर-(स० पु०) शमी वृक्ष।
शमीरकन्द-(स० पु०) वाराही कन्द।
शम्पा-(स० स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
शम्ब-(स०पु०) इन्द्र का वज्र।
शम्बर-(स०नपु०) जल, पानी, चित्र, बादल।
शम्बरकन्द-(स०पु०) वाराही कन्द।
शम्बरमाया-(स०स्त्री०) इन्द्रजाल।
शम्बर सूदन-(सं०पु०) कामदेव।
शम्बल-(स० पु०) तट, किनारा, ईर्ष्या, द्वेष।
शम्बली-(सं० स्त्री०) कुटनी।
शम्बसादन-(स०पु०) एक दैत्यका नाम
शम्बा-(अ०पुं०) शनिवार।
शम्बु-(स०पु०) घोंघा, सीप।
शम्बुक-(स० पु०) हाथी के सूंड़ का अगला भाग, शख, एक दैत्यका नाम।
शम्भु-(स० पु०) शिव, महादेव, ग्यारह रुद्रों में से एक, ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, पारद, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस वर्ण होते हैं (वि०) सुख तथा वृद्धि करने वाले।
शम्भुकान्त-(स०स्त्री०) पार्वती।
शम्भुतनय-(स० पु०) गणेश, कार्तिकेय
शम्भुनन्दन-(स० पु०) कार्तिकेय, गणेश।
शम्भुनाथ-(सं०पु०) शिव, महादेव।
शम्भुवीज-(स०पु०) पारद, पारा।
शम्भुभूषण-(स० पु०) चन्द्रमा।
शम्भुलोक-(सं०पु०) कैलास।
शम्भुवल्लभ-(स०नपुं०) सफेद कलम।
शम्भूनाथ-(हिं०पु०) देखो शम्भुनाथ।
शय-(अ० स्त्री०) वस्तु, पदार्थ, चीज़, भूत, प्रेत।
शय-(स०त्रि०) हाथ, शय्या, साप, नींद।
शयन्त-(सं० पु०) निद्रालु, जिसको नींद आई हो।
शयतान-(अ० पु०) देखो शैतान।
शयतानी-(अं०स्त्री०) देखो शैतानी।
शयथ-(स० पु०) अजगर, शूकर, मृत्यु, सर्प, मौत।
शयन-(स० नपु०) निद्रा, शय्या, स्त्री प्रसग, मैथुन।
शयन आरती-(स० स्त्री०) देवता की वह आरती जो रात्रि के समय की जाती है।
शयनकक्ष-(स०पु०) सोने का कमरा।
शयनगृह-(स०नपु०) सोने का कमरा या घर।
शयनप्रकोष्ठ-(स०पु०) देखो शयनगृह।
शयनबोधनी-(स० स्त्री०) अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।
शयनभूमि-(स०स्त्री०) सोने की जगह।
शयन मन्दिर-(स० नपु०) शयनागार, सोने का कमरा।
शयनमहल-(हि० पु०) शयन का कमरा
शयनस्थान-(स०नपु०) सोने की जगह।
शयनागार-(स० पु०) शयन गृह।
शयनास्पद-(स० नपु०) बिछौना।
शयनीय-(स० वि०) शयन के योग्य, सोने लायक।
शयनीय गृह-(स० नपु०) शयनागार।
शयनीय वास-(स० पु०) जो वस्त्र सोती समय पहरे जाते हैं।
शयनैकादशी-(स० स्त्री०) आषाढ शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णु के शयन का आरभ माना जाता है।
शयाण्डक-(स०पु०) गिरगिट।
शयान-(स० पु० नपु०) निद्रित, जो सोया हो।
शयालु-(सं०वि०) जिसको नींद आती हो
शयित-(सं०वि०) निद्रालु, सोया हुआ।
शयितव्य-(स० वि०) सोने लायक।
शय्या-(स०स्त्री०) खटिया, पलँग, खाट।
शय्यागत-(स० वि०) बिछौने पर सोने वाला।
शय्यादान-(सं०पुं०) मृतक के उद्देश्य से चारपाई बिछावन आदि का दान।
शय्यापाल-(स० पु०) राजाओं के शयनागार का प्रबन्ध करने वाला।
शय्यावेश्म-(स० नपु०) सोने का घर।
शर-(स० पुं०) बाण, तीर, सरकडा, नरकट, जल, पाच की सख्या, दूध की मलाई, उशीर, खस, माले का फल।
शरअ-(अ०स्त्री०) मुसलमानों का धर्मशास्त्र, वह सीधा रास्ता जो ईश्वर ने भक्तों के लिये बतलाया हो, दस्तूर, तरीका, कुरान में दी हुई आज्ञा, धर्म, दीन, मज़हब।
शरई-(अ० वि०) मुसलमानी धर्म के अनुसार (पु०) शरअ पर चलने वाला मनुष्य।
शरकाण्ड-(स०पु०) शरकडा, सरपत।
शरकार-(स०पु०) तीर बनाने वाला।
शरगुल्म-(स०पु०) सरकडा।
शरघात-(स० पु०) तीर की चोट।
शरच्चन्द्र-(स० पु०) शरद काल का चन्द्रमा।
शरच्छशी-(स० पु०) शरद काल का चन्द्रमा।
शराच्छखी-(स०पु०) मयूर, मोर।
शरज-(स०वि०) सरकंडे का बना हुआ।
शरज्योत्स्ना-(स० स्त्री०) शरद काल की चन्द्रिका।
शरट-(स०पु०) कृकलास, गिरगिट।
शरण-(स० स्त्री०) आश्रय, रक्षा, घर, आश्रय स्थान, (वि०) आधीन, मातहत।
शरणागत, शरणापन्न-(स० वि०) शरण में आया हुआ।
शरणार्थी-(सं०वि०) आश्रय चाहने वाला।
शरणालय-(सं०पु०) आश्रय स्थान।
शरणी-(स०स्त्री०) मार्ग, रास्ता (वि०) शरण देने वाली।
शरण्ड-(सं० पु०) पक्षी, कामुक, धूर्त, गिरगिट, छिपकिली।
शरण्य-(स० वि०) शरणागत की रक्षा करने वाला।
शरण्यता-(स०स्त्री०) शरण्य का भाव।
शरण्या-(स० स्त्री०) शरणागत की रक्षा करने वाली, दुर्गा।
शरत-(हिं०पु०) देखो शर्त, शरत्।
शरतिया-(अ०क्रि०वि०) देखो शर्तिया।

शरत्-(स० स्त्री०) वर्ष, साल, शरत् ऋतु जो कुवार और कातिक महीने में मानी जाती है।
शरत्काल-(स० पु०) शरत् ऋतु।
शरत्पर्व-(स०नपु०) आश्विन मास की पूर्णिमा।
शरत्समय-(स० पु०) शरत् काल।
शरद-(स० स्त्री०) शरत् ऋतु।
शरदई-(हि० स्त्री०) देखो सरदई।
शरदण्ड-(स०पु०) सरकंडा, चाबुक।
शरदन्त-(स० पु०) हेमन्त ऋतु।
शरद पूर्णिमा-(स०स्त्री०) आश्विन मास की पुनवासी।
शरदिज-(स० वि०) शरत् ऋतु में उत्पन्न होने वाला।
शरदिन्दु-(स० पु०) शरत् ऋतु का चन्द्रमा।
शरद्वत्-(स० पु०) एक प्राचीन ऋषि का नाम।
शरधि-(स०पु०) तूण, तरकश।
शरपट्टी (हि०पु०) एक प्रकार का शास्त्र।
शरपुङ्ख-(स० पु०) बाण में लगा हुआ पर, सरफोंका नामक क्षुप।
शरबत-(अ०पु०) पीने की कोई मीठी वस्तु रस, जलमें घोली हुई चीनी या खाड़, चीनी के साथ पका हुआ किसी औषधि का अर्क।
शरबत पिलाई-(हि० स्त्री०) वह धन जो कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष को शरबत पिला कर देते हैं।
शरबती-(हि०पु०) एक प्रकार का पीला रंग, एक प्रकार का अच्छा कपड़ा, मीठा नीबू या फालसा,(वि०) सरदार।
शरभ-(स० पु०) शेर, सिंह, हाथी का बच्चा, टिड्डी, राम की सेना का एक यूथपति बन्दर का नाम, ऊंट, विष्णु, एक प्रकार का पक्षी, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पद्रह अक्षर होते हैं इसको शशिकला या मणिगुण भी कहते हैं, दोहे का एक भेद, आठ पैर वाला एक बलिष्ठ मृग।
शरभङ्ग-(स०पु०) एक महर्षि का नाम, जिनका दर्शन करने के लिये रामचन्द्र वनवास के समय में गये थे।
शरभा-(स० स्त्री०) शुष्क अवयवों वाली विवाह के अयोग्य कन्या।
शरभू-(स० पु०) कार्तिकेय।
शरम-(हि०स्त्री०) लज्जा, हया, लिहाज, सकोच।
शरमसार-(अ० वि०) लज्जित, शरमिन्दा
शरमहुजूरी-(फ़ा० स्त्री०) मुंह देखने की लाज।
शरमसारी-(फ़ा०स्त्री०) लज्जा,शरमिन्दगी
शरमाऊ-(फ़ा०वि०) जिसको बहुत लज्जा लगती हो।
शरमाना-(अ० क्रि०) लज्जित होना, शरमिन्दा होना, लज्जित करना।
शरमा शरमी-(फ़ा०क्रि०वि०) लज्जा के कारण।
शरमिन्दगी-(फा० स्त्री०) शरमिंदा या लज्जित होने का भाव झेंप।
शरमिंदा-(फ़ा०वि०) जिसको शरम आई हो, लज्जित।
शरमीला-(फ़ा०वि०) शरम करने वाला, लज्जालु।
शरमुख-(स०नपु०) बाण का अग्र भाग।
शरयु-(स० स्त्री०) सरयू नदी।
शरल-(स०वि०) सरल, स्वच्छ हृदय।
शरवत्-(स० वि०) बाण के तुल्य।
शरवाणि-(स०स्त्री०) तीर का फल।
शरवारण-(स० नपु०) ढाल।
शरवृष्टि-(स०स्त्री०) बाणों की वर्षा।
शरशय्या-(स० स्त्री०) बाण की बनी हुई शय्या।
शरस-(स०नपु०) शर, बाण।
शरह-(अ० स्त्री०) दर, भाव, भाष्य, टीका, व्याख्या।
शरह लगान-(हि०स्त्री०)भूमिकर की दर।
शराकत-(फ़ा०स्त्री०) साझा, हिस्सेदारी।
शराघात-(स० पु०) बाण का आघात।
शराटि-(स०पु०) टिटिहरी नामक पक्षी
शरापना-(हि०क्रि०) कोसना, शाप देना
शराभ्यास-(स० पु०) बाणशिक्षा।
शराफ़-(अ०पु०) देखो सराफ।
शराफ़त-(अ०स्त्री०) सज्जनता, भलमनसी
शराफ़ा-(अ०पु०) देखो सराफा।
शराब-(अ०स्त्री०) मदिरा, मद्य, आसव।
शराबखाना-(फ़ा० पु०) शराब बनने तथा बिकने का स्थान।
शराबखोरी-(फ़ा० स्त्री०) मदिरापान का व्यसन।
शराबख्वार-(फ़ा० पु०) मदिरा पीने वाला, शराबी।
शराबी-(अ पु०) शराब पीने वाला।
शराबोर-(फ़ा० वि०) जल आदि से बिलकुल भीगा हुआ, तरबतर, लथपथ
शरारत-(अ०स्त्री०) पाजीपन, बदमाशी।
शरारोप-(स०पु०) धनुष, कमान।
शराव-(स०पु० नपु०) मिट्टी का पात्र, पुरवा, एक सेर का परिमाण।
शरावर-(स०नपु०) ढाल, कवच।
शरावरण-(स० नपु०) तीर का वार रोकने की ढाल।
शरावाप-(स०पु०) धनुष, कमान।
शराविका-(स० स्त्री०) एक प्रकार का कुष्ट रोग।
शराश्रय-(स०पु०) तूण, तरकश।
शरासन-(स० नपु०) धनुष, कमान, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
शरिष्ठ-(हि०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
शरीअत-(अ० स्त्री०) मुसल्मानों का धर्मशास्त्र।
शरीक-(अ०वि०) सम्मिलित,मिला हुआ, शामिल, (पु०) साथी, हिस्सेदार, पट्टीदार, सहायक, तवधी।
शरीफ़-(अ०पु०) कुलीन, सभ्य मनुष्य, भलामानुस मक्का के प्रधान अधिकारी की उपाधि, (वि०) पवित्र।
शरीफ-(अ० पु०) देखेशेरिफ्-कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में सरकार की ओर से शान्ति रक्षा आदि के लिये नियुक्त अवैतनिक अधिकारी।
शरीफा-(हि० पु०) मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जिसका फल बहुत मीठा होता है और कार्तिक में पकता है, सीताफल, श्रीफल।

शरीर-(सं०नपुं०) गात्र, कलेवर, देह, बदन, जिस्म।
शरीर-(अ०वि०) दुष्ट, नटखट, पाजी।
शरीरकर्ता-(सं० वि०) सृष्टिकर्ता।
शरीरज (सं० पु०) रोग, बीमारी, कामदेव शरीरजात।
शरीरत्याग-(सं० पु०) मृत्यु।
शरीरत्व-(सं० स्त्री०) शरीर का भाव या धर्म।
शरीरधातु-(सं० पुं०) रस, रक्त और मास।
शरीरपतन-(सं० नपु०) मृत्यु।
शरीरपात-(सं० पु०) शरीर का नाश।
शरीरप्रभ-(सं०पु०) शरीर से उत्पन्न।
शरीरबन्धक-(सं०पुं०) ज़मानतदार।
शरीरभाज्-(सं० वि०) शरीरधारी।
शरीरभृत्-(सं० वि०) देहधारी।
शरीररक्षक-(सं० पु०) वह मनुष्य जो राजा आदि की शरीररक्षा के लिये सर्वदा उनके साथ रहता है।
शरीरवृत्ति-(सं०स्त्री०) जीविका।
शरीर शास्त्र-(सं०पु०) शरीर विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें शरीर के सब अवयवों की रचना और इनके कार्य का विवेचन होता है।
शरीरशुश्रूषा-(सं० स्त्री०) देह की सेवा।
शरीरशोषण-(सं० नपु०) देह का क्षय।
शरीर संस्कार-(सं०पु०) गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के मनुष्य के सोलह संस्कार।
शरीरस्थ-(सं०वि०)जीवित, जीता हुआ।
शरीरान्त-(सं० पु०) मृत्यु, मौत।
शरीरार्पण-(सं० पु०) किसी कार्य में अपनी शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना
शरीरावरण-(सं० नपुं०)चर्म, चमड़ा, खाल।
शरीरी-(हि० पुं०) शरीरवान्, प्राणी, जन्तु, चेतन, जीवधारी।
शरेज-(सं० पुं०) कार्तिकेय।
शर्कर-(सं०पुं०) ककड़, बालू का कण,
शर्करक-(सं०पुं०) शरबती नीबू।
शर्करजा-(सं० स्त्री०) चीनी।
शर्करा-(सं०स्त्री०)शक्कर, खाड़, चीनी, उपला, कड़ा, ठीकरा, बालू का कण।
शर्करी-(सं०स्त्री०) वर्णवृत्त के अन्तर्गत चौदह अक्षरों की एक वृत्ति, लेखनी, मेखला, नदी।
शर्करीय-(सं० वि०) चीनी का।
शर्कोट-(सं० पु०) सर्प, साप।
शर्ट-(अं० स्त्री०) कमीज नाम का पहरने का कपड़ा।
शर्त-(अ०स्त्री०) वह बाजी जिसमें कोई हार जीत हो, दाव, प्रतिज्ञा, बदान, किसी कार्य की सिद्धि के लिये कोई आवश्यक बात।
शर्तिया-(अ० क्रि० वि०) शर्त बदकर, निश्चय से, दृढ़ता पूर्वक, (वि०) निश्चित, ठीक।
शर्बत-(अ०पु०) देखो शरबत।
शर्बती-(अ० पु०) देखो शरबती।
शर्म-(फा० स्त्री०) देखो शरम।
शर्मकृत्-(सं०वि०) मगलकारी।
शर्मण्य-(सं०वि०) सुख के योग्य।
शर्मद-(सं०वि०) आनन्द देने वाला।
शर्मन्-(सं० नपु०) सुख, आनन्द, (पु०) ब्राह्मणो की एक उपाधि।
शर्मरी-(सं० स्त्री०) दारुहल्दी।
शर्मा-(सं०पु०)ब्राह्मणों की एक उपाधि।
शर्माना-(अ०क्रि०वि०) देखो शरमाना।
शर्मिन्दा-(अ०वि०) देखो शरमिंदा।
शर्मिष्ठा-(सं० स्त्री०) वृषपर्वा नामक असुरराज की कन्या जो देवयानी की सहेली थी।
शर्मीला-(अ०वि०) देखो शरमीला।
शर्या-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
शर्व-(सं०पुं०) शिव, महादेव, विष्णु।
शर्वपत्नी-(सं० स्त्री०) पार्वती, लक्ष्मी।
शर्वपर्वत-(सं०पु०) कैलास।
शर्वर-(सं०नपु०) अन्धकार, अधेरा, कामदेव।
शर्वरी-(सं० स्त्री०) निशा, रात्रि, रात, हल्दी, सन्ध्या, शाम।
शर्वरीकर-(सं० पुं०) विष्णु।
शर्वरीदीपक-(सं० पुं०) चन्द्रमा।
शर्वरीश-(सं०पु०) चन्द्रमा।
शर्वाक्ष-(सं०पु०) रुद्राक्ष।
शर्वाचल-(सं०पु०) कैलास।
शर्वाणी-(सं०स्त्री०) पार्वती।
शर्शरीक-(सं० पु०) घोड़ा, अग्नि।
शर्षीका-(सं०स्त्री०)एक प्रकार का छन्द।
शल-(सं० नपु०) ताड़ का वृक्ष, ब्रह्मा, कंस का मंत्री, धृतराष्ट्र का पुत्र।
शलक-(सं० पु०) साही का काटा।
शलगम,शलजम-(फा० पु०) गाजर की तरह का एक प्रकार का कन्द।
शलभ-(सं० पु०) शरभ, टिड्डी, छप्पय छन्द का एक भेद।
शलल-(सं० नपु०) साही का काटा।
शललित-(सं० वि०) काँटेदार।
शलली-(सं० स्त्री०) शलाका।
शलाक-(सं० पु०) देखो सलाक, सलाई।
शलाकधूर्त-(सं०पु०) चिड़ीमार,बहेलिया
शलाका-(सं० स्त्री०) लोहे लकड़ी आदि की लम्बी सलाई, सींक, सलई, मैना पक्षी, छाते की कमानी, शर, बाण, चित्रकार की कूची जुआ खेलने का पासा, सुरमा लगाने की सलाई।
शलाख-(फा० पु०) देखो सलाख।
शलातुर-(सं० पु०) प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि की वास भूमि।
शलिता-(हि० पु०) देखो सलीता।
शलूका-(फा०पु०) स्त्रियों के पहने की आधी बाँह की कुरती।
शल्क-(सं०नपु०) वल्कल, छिलका।
शल्प-(हि० पु०) बाढ़, बौछार, धड़ाका।
शल्मलि-(सं० पु०) सेमल का वृक्ष।
शल्य-(सं० नपु०) बाण, भाले के आकार का एक अस्त्र, पाप, दुर्वाक्य, अस्थि, हड्डी छप्पय छन्द का एक भेद, अस्त्रचिकित्सा।
शल्यकण्ठ-(सं०पु०) साही नामक पशु।
शल्यकी-(सं० स्त्री०) साही नामक पशु।
शल्यक्रिया-(सं०स्त्री०) शस्त्रचिकित्सा, चीर फाड़ करने की विधि।
शल्यशास्त्र-(सं० पु०) चिकित्साशास्त्र

का वह अग जिसमे शरीर में गडे हुए काटे आदि के निकालने का विधान रहता है।
शल्यारि-(स० पु०) शल्य को मारने वाले युधिष्ठिर।
शल्योद्धार-(स० पु०) शरीर में धँसे हुए बाण या काटे आदि को निकालने की क्रिया।
शल्ल-(स० नपु०) त्वचा, चमड़ा, वृक्ष की छाल।
शल्लकी-(स०स्त्री०) साही नामक पशु।
शल्लिका-(स० स्त्री०) नौका, नाव।
शल्व-(स०पुं०) देखो शाल्व।
शव-(स०नपु०) मृत शरीर, लाश।
शवदाह-(सं० पु०) मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया।
शवभस्म-(स० पु०) चिता की भस्म, मरघट की राख।
शवमन्दिर-(स० नपु०) मरघट।
शवयान-(स० नपु०) शव ले जाने की अरथी।
शवरथ-(स०पु०) शवयान, अरथी।
शवरी-(स०स्त्री०) शवर जाति की स्त्री।
शवल-(स०वि०) चितकवरा।
शवला-(स० स्त्री०) चितकवरी गाय।
शवलित-(स०वि०)मिश्रित, मिलाया हुआ
शववाह-(स०पु०) शव को ढोने वाला
शवशयन-(स०नपु०) श्मशान, मरघट।
शवसाधन-(सं० नपु०) शव के ऊपर बैठ कर तन्त्रोक्त मन्त्र को सिद्ध करना
शवसान-(स०पु०) पथिक, यात्री।
शवाग्नि-(स०पु०) शवदाह की अग्नि।
शवोद्वह-(स० पु०) शव ढोने वाला।
शव्वाल-(अ०पु०) मुसलमानों का दसवा महीना।
शश-(स०पु०) खरगोश, खरहा, चन्द्रमा का लाछन या कलक, कामशास्त्र के अनुसार मनुष्यके चार भेदो मेंसे एक।
शशक-(स० पु०) खरगोश।
शशकविषाण-(स०नपुं०) असभव बात।
शशगानी-(फा० पु०) फीरोज शाह के राज्य का एक प्रचलित चादी का सिक्का।
शशघातक-(स० पुं०) बाज़ पक्षी।
शशधर-(स० पु०) चन्द्रमा, कपूर।
शशविन्दु-(स० पु०) विष्णु, चित्ररथ के एक पुत्र का नाम।
शशभृत्-(स०पु०) चन्द्रमा, कपूर।
शशमाही-(फा०वि०) हर छ माहीने पर होने वाला, अर्धवार्षिक।
शशमौलि-(स०पु०) शिव, महादेव।
शशलक्षण-(स०पु०) चन्द्रमा।
शशलाञ्छन-(स०पु०) चन्द्रमा।
शशशृङ्ग-(स० नपु०) कोई अनहोनी या असम्भव बात।
शशस्थली-(स० स्त्री०) गगा और यमुना के मध्य का प्रदेश।
शशाङ्क-(स०पु०) चन्द्रमा, कपूर।
शशाङ्कज-(स० पु०) बुध ग्रह।
शशाद-(स०पु०) श्येन पक्षी, बाज।
शशि-(हि० पु०) चन्द्रमा, छप्पय छन्द का एक भेद।
शशिकर-(सं० पु०) चन्द्रमा की किरण।
शशिकला-(स० स्त्री०) चन्द्रमा की कला, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पद्रह मात्राएँ होती हैं।
शशिकान्त-(स०नपु०) कुमुदिनी।
शशिकुल-(स०पु०) चन्द्रवश।
शशिखण्ड-(स० पुं०) चन्द्रमाकी कला।
शशिज-(स०पु०) बुध ग्रह।
शशितनय-(स० पु०) चन्द्रमा के पुत्र, बुध ग्रह।
शशितिथि-(स० स्त्री०) पूर्णमासी।
शशिधर-(स०पु०) महादेव।
शशिपर्ण-(स०पु०) परवल।
शशिपुत्र-(स० पु०) बुध ग्रह।
शशिपुष्प-(स०पु०) पद्म, कमल।
शशिपोषक-(सं०पु०) शुक्ल पक्ष।
शशिप्रभ-(स०नपु०) कुमुद, कोई, मोती (वि०) चन्द्रमा के समान प्रभा वाला।
शशिप्रभा-(स०स्त्री०) ज्योत्स्ना, चन्द्रिका
शशिप्रिय-(स०पु०) मुक्ता, मोती।
शशिप्रिया-(स०स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्र जो चन्द्रमा की पत्नियाँ मानी जाती हैं।
शशिभाल-(स०पु०) शिव, महादेव।
शशिभूषण-(स०पु०) महादेव।
शशिमणि-(स० पु०) चन्द्रकान्त मणि।
शशिमण्डल-(स० पु०) चन्द्रमण्डल।
शशिमुख-(स०वि०) अति मनोहर।
शशिमौलि-(स०पु०) शिव।
शशिरस-(स०पु०) अमृत।
शशिरेखा-(स० स्त्री०) चन्द्रमा की एक कला।
शशिलेखा-(स० स्त्री०) चन्द्रमा की कला, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पद्रह अक्षर होते हैं।
शशिवदन-(स०वि०) सुन्दर मुख वाला।
शशिवदना-(स० स्त्री०) चन्द्रमुखी, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं।
शशिविमल-(स० वि०) चन्द्रमा के समान स्वच्छ।
शशिशाला-(स० स्त्री०) शीश महल।
शशिशिखामणि-(स०पु०) शिव,महादेव
शशिशेखर-(स०पुं०) शिव, महादेव।
शशिशोषक-(स०पु०) कृष्ण पक्ष।
शशिसुत-(स० पु०) बुध ग्रह।
शशिहीरा-(हि० पु०) चन्द्रकान्त मणि।
शशीकर-(स०पु०) चन्द्रमा की किरण।
शशीश-(स० पु०) शिव, महादेव।
शश्वत्-(स० वि०) बहुत ज्यादा (अव्य०) बारबार।
शष्कुल-(स० पु०) करज।
शष्कुली-(स० स्त्री०) कर्णरन्ध्र, कान का छेद।
शष्प-(स०नपु०) नई घास, बाल तृण।
शस्त-(स०नपु०) कल्याण, भलाई (वि०) प्रशंसा किया हुआ, प्रशस्त, उत्तम।
शस्त-(फा० पु०) तीर चलाती समय अगूठे में पहरने का छल्ला, लक्ष्य, निशाना।
शस्तक-(स० नपु०) हाथ में पहरने का चमडे का दस्ताना।
शस्तता-(स०स्त्री०) प्रस्तार, फैलाव।
शस्ति-(स० स्त्री०) स्तुति, प्रशसा।

शस्त्र-(सं०नपुं०) लोहा, अस्त्र, हथियार, खड्ग, तलवार।
शस्त्रकर्म-(सं० नपुं०) घाव या फोड़े में नश्तर लगाना।
शस्त्रक्रिया-(सं० स्त्री०) नश्तर लगाने का काम।
शस्त्रगृह-(सं०पुं०) हथियार घर।
शस्त्रजीवी-(सं० त्रि०) सैनिक।
शस्त्रधर-(सं०पुं०) सिपाही योद्धा।
शस्त्रधारी-(सं०त्रि०) योद्धा सैनिक।
शस्त्रपाणि-(सं० पुं०) जिसके हाथ में शस्त्र हो।
शस्त्रप्रहार-(सं०पुं०) शस्त्र का आघात।
शस्त्रबन्ध-(सं०पुं०) शस्त्र द्वारा बन्धन।
शस्त्रभृत्-(सं० वि०) हथियारबन्द।
शस्त्रवत्-(सं० वि०) शस्त्र के समान।
शस्त्रविद्या-(सं०स्त्री०) हथियार चलाने की विद्या, धनुर्वेद।
शस्त्रवृत्ति-(सं०त्रि०) शस्त्र ही जिसकी जीविका हो।
शस्त्रशाला-(सं० स्त्री०) हथियारघर।
शस्त्रशास्त्र-(सं०पुं०) धनुर्वेद।
शस्त्रशिक्षा-(सं० स्त्री०) हथियार चलाने की विद्या।
शस्त्रहत-(सं० वि०) शस्त्र के आघात से मृत्यु प्राप्त।
शस्त्रहस्त-(सं० पुं०) अस्त्रधारी मनुष्य।
शस्त्रागार-(सं० पुं०) शस्त्रशाला, हथियारघर।
शस्त्राभ्यास-(सं० पुं०) अस्त्रशिक्षा।
शस्त्रायुध-(सं० वि०) शस्त्रधारी।
शस्त्री-(हिं०वि०) शस्त्र चलाने वाला।
शस्त्रोपजीवी-(सं० त्रि०) शस्त्र द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला।
शस्य-(सं०नपुं०) वृक्ष लता आदिका फल
शहंशाह-(फ़ा० पुं०) महाराजाधिराज।
शहंशाही-(फ़ा० वि०) राजसी, शाहंशाह का पद, लेनदेन में खरापन।
शह-(फ़ा० पुं०) बहुत बड़ा राजा, बादशाह, वर, दुलहा, (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम (स्त्री०) शतरंज में किश्त, गुप्त रूप से किसी को उभाड़ने का काम।
शहजादा-(फ़ा०पुं०) राजकुमार।
शहज़ोर-(फ़ा०वि०) बलवान्।
शहज़ोरी-(फ़ा० स्त्री०) ज़बरदस्ती।
शहत-(अ० पुं०) देखो शहद।
शहतीर-(फ़ा० पुं०) लकड़ी का चीरा हुआ बड़ा लट्ठा।
शहतूत-(फ़ा० पुं०) तूत नाम का फल।
शहद-(अ० पुं०) शीरे की तरह का एक मीठा, गाढ़ा पदार्थ जिसको मधु-मक्खियाँ फूलों के मकरन्द से संग्रह करके अपने छत्तों में इकट्ठा करती हैं, मधु, शहद लगाकर चाटना-किसी बेकार चीज़ को पड़ी रहने देना।
शहना-(अ०पुं०) खेत आदि की चौकसी करने के लिये नियुक्त पुरुष।
शहनाई-(फ़ा० स्त्री०) अलगोजे के आकार का मुँहसे बजाने का एक बाजा।
शहबाला-(फ़ा० पुं०) वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा घोड़े पर बैठ कर जाता है।
शहबुलबुल-(फ़ा० स्त्री०) एक प्रकार की बुलबुल।
शहमात-(फ़ा० स्त्री०) शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।
शहर-(फ़ा०पुं०) मनुष्यों की वह बड़ी बस्ती जो कसबे से बहुत बड़ी होती है।
शहरपनाह-(फ़ा०स्त्री०) नगर के चारो ओर बनी हुई पक्की दीवार।
शहरी-(फ़ा० वि०) नगरवासी, शहर में रहने वाला।
शहवत-(अ० स्त्री०) कामातुरता, काम का उद्वेग।
शहसवार-(फ़ा०पुं०) अच्छा घुड़सवार।
शहादत-(अ० स्त्री०) गवाही, साक्षी, प्रमाण, सबूत।
शहाना-(हिं०पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग (वि०) उत्तम, बढ़िया।
शहाब-(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का लाल गहरा रंग।
शहावा-(हिं०पुं०) देखो अगिया बैताल।
शहाबी-(हिं०वि०) गहरे लाल रंगका।
शहीद-(अ०पुं०) वह व्यक्ति जो किसी धर्म कार्य के लिये मारा गया हो, बलिदान होने वाला व्यक्ति।
शाइस्तगी-(फ़ा० स्त्री०) शिष्टता, सभ्यता भलमनसी।
शाइस्ता-(फ़ा०वि०) शिष्ट, सभ्य, विनीत, नम्र अदब कायदा जानने वाला।
शाक-(सं०पुं०)(नपुं०) भाजी, तरकारी, साग, शक्ति ताकत, (वि०) समर्थ, शक जाति सम्बधी।
शाक-(अ० वि०) भारी, कठिन, दुःखदायक।
शाकट-(सं०वि०) शकट सम्बधी (पुं०) गाड़ी का बैल, गाड़ी का बोझ।
शाकटायन-(सं०पुं०) एक प्राचीन वैयाकरण का नाम।
शाकटिक-(सं०पुं०) गाड़ीवान।
शाकद्वीप-(सं०पुं०) पुराण के अनुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप।
शाकद्वीपीय-(सं० वि०) शाकद्वीप का रहने वाला, ब्राह्मणों का एक भेद।
शाकभक्ष-(सं०वि०) शाकाहारी।
शाकम्भरी-(सं० स्त्री०) शक जाति की इष्ट देवी, भगवती दुर्गा।
शाकम्भरीय-(सं० वि०) साम्भर नमक।
शाकल-(सं०वि०) खण्ड सबंधी, (पुं०) खण्ड, टुकड़ा, हवन की सामग्री जिसमें जव, तिल, घृत, मधु, आदि मिला रहता है।
शाकल्य-(सं०पुं०) एक अति प्राचीन ऋषि का नाम।
शाकश्रेष्ठ-(सं० पुं०) बथुआ का शाक।
शाकाद-(सं० पुं०) शाकभोजी।
शाकान्न-(सं०नपुं०) साग मिला हुआ भात।
शाकाम्ल-(सं०नपुं०) इमली।
शाकारी-(सं०स्त्री०) प्राकृत का एक भेद।
शाकाहार-(सं०पुं०) अन्न, फल, फूल, पत्तों आदि का भोजन।
शाकाहारी-(सं०वि०) फल फूल तथा शाक खाने वाला।
शाकिनी-(सं०स्त्री०) एक पिशाची जो

दुर्गा के गुणो में समझी जाती है, डाइन, चुड़ैल।
शाकिर-(अ० वि०) सन्तोष रखने वाला, कृतज्ञ।
शाकुल-(सं०पु०) शकुन द्वारा मनुष्य का शुभाशुभ कहने वाला।
शाकुनि-(स०पु०) व्याध, बहेलिया।
शाकुन्तल-(स० पु०) शकुन्तला का पुत्र, भरत।
शाकेक्षु-(स०पु०) गन्ने का एक भेद।
शकेश्वर-(स० पुं०) वह राजा जिसके नाम पर संवत् चले।
शाकोल-(स०पुं०) एक प्रकार की लता।
शाक्कर-(स० पु०) वृषभ, बैल।
शाक्त-(स० पु०) शक्ति का उपासक, वह जो दुर्गा, काली, तारा आदि शक्तियों की उपासना करता हो।
शाक्य-(स० पु०) बुद्धदेव, एक प्राचीन क्षत्रिय जाति का नाम।
शाक्यपुङ्गव-(स० पु०) शाक्यमुनि।
शाक्यमुनि-(स० पुं०) बुद्धदेव।
शाक्यसिंह-(स० पु०) शाक्यमुनि।
शाक्र-(स० पु०) ज्येष्ठा नक्षत्र।
शाक्रीय-(स० वि०) शक्र सबंधी।
शाक्कर-(स०पु०) इन्द्र का वज्र, बैल, साड़।
शाख-(स०पु०)कार्तिकेय,कृत्तिका का पुत्र।
शाख-(फा० स्री०) टहनी, डाल, डाली, फाक।
शाखदार-(फा० वि०) सींगवाला, जिसमें बहुत सी शाखाये हो।
शाखा-(स०स्री०) डाल, टहनी, शरीर का अवयव, हाथ पैर, बाहु, अवयव, अगुली, किसी मूल वस्तु से निकले हुए भेद, विभाग, हिस्सा, किसी शास्त्र या विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद।
शाखाकण्ट-(स० पु०) थूहर।
शाखाकण्टक-(सं० पु०) थूहर।
शाखाङ्ग-(स०नपु०) शरीर का अवयव, हाथ पैर।
शाखाग्र-(स०नपु०) शाखा का अगला भाग, अगुली।
शाखाचङ्क्रमण-(स० पु०) एक डाल पर से दूसरी डाल पर कूदकर जाना।
शाखाचन्द्रन्याय-(स०पु०) वह कहावत जो ऐसे विषय में कही जाती है जो केवल देखने में जान पड़ती है वस्तुतः नहीं रहती।
शाखाद-(स०पु०) पेड़ों की डाल खाने वाला पशु।
शाखानगर-(स०नपु०) किसी नगर का प्रान्त भाग।
शाखामृग-(स०पु०) बन्दर, गिलहरी।
शाखापशु-(स० पु०) खूटे में बँधा हुआ पशु।
शाखाम्ला-(स० स्त्री०) इमली का पेड़।
शाखाशिफा-(स०स्री०) वह शाखा जो नीचे की ओर झुककर भूमि में जड़ पकड़ ले।
शाखास्थि-(स० नपु०) हाथ की हड्डी।
शाखी-(सं०पु०) वेद की किसी शाखा का अनुयायी।
शाखीय-(सं० वि०) शाखा सबधी।
शाखोच्चार-(स० पु०) विवाह के समय वंशावली का वर्णन।
शाखोट-(स०पु०) सिहोर का वृक्ष।
शागिर्द-(फा० पु०) शिष्य, चेला।
शागिर्दपेशा-(फा०पु०) खिदमदगार, सेवक।
शागिर्दी-(फा०स्री०) शिष्यता, सेवा,टहल
शाङ्कर-(स०नपु०) आर्द्रा नक्षत्र, एक छन्द का नाम, शंकराचार्य का अनुयायी, (वि०) शंकर सबधी।
शाङ्करभाष्य-(स० नपु०) एक प्रसिद्ध वेदान्त दर्शन।
शाङ्करी-(स० स्री०) शिवसूत्र।
शाङ्ख-(स०पु०) शख की ध्वनि।
शाङ्खिक-(स०पु०) शख बजाने वाला
शाट, शाटक-(स०पु०) पट, वस्त्र, कपडे का टुकड़ा।
शाटिका, शाटी-(स०स्री०)धोती,साड़ी।
शाठ्य-(स० नपु०) शठता, दुष्टता, बदमाशी।
शाड्वल-(स०पु०) देखो शाद्वल।
शाण-(स०नपु०) सन के रेशे का बना हुआ कपड़ा, हथियार तेज़ करने का पत्थर, सान।
शाणित-(स०वि०)सान पर रक्खा हुआ।
शाण्डिल्य-(स०पु०) शाण्डिल मुनि के कुल में उत्पन्न।
शातकुम्भ-(सं० पु०) धतूरे का पेड़ (पु०) सुवर्ण, सोना।
शातन-(स०नपु०) काटना, तराशना, चोखा करना, नष्ट करना।
शातपत्र-(स० नपु०) शतपत्र के तुल्य, कमल के समान।
शातपत्रक-(स०पु०) चन्द्रिका,चादनी।
शातवाहन-(स० पु०) देखो शालिवाहन
शातिर-(अ०वि०) निपुण,चतुर,होशियार
शातोदार-(स०वि०) क्षीण,दुबला पतला
शातोदरी-(स० स्री०) क्षीण, पतली।
शात्रव-(स० नपु०) शत्रुता, दुश्मनी।
शाद-(स० पु०) कर्दम, कीचड़, दूब, (फा०वि०)प्रसन्न,खुश,परिपूर्ण,भरा हुआ।
शादमान-(फा० वि०) प्रसन्न।
शादमानी-(फा०स्री०) प्रसन्नता।
शादाब-(फा०वि०) हरा भरा, सरसब्ज़।
शादियाना-(फा०पु०) आनन्द सूचक बाजा,बधाई, वह धन जो किसान लोग ज़मीदार को विवाह के अवसर पर देते हैं
शादी-(फा० स्री०) आनन्द, प्रसन्नता, खुशी, विवाह, ब्याह।
शाद्वल-(स०पु०) दूब, हरी घास।
शाद्वली-(हिं०वि०) हराभरा, सरसब्ज़।
शान-(अ०स्री०) सजावट, तड़क भड़क, चमत्कार,भव्यता, मान मर्यादा,प्रतिष्ठा, करामात।
शानदार-(फा०वि०) भड़कीला, तड़क भड़क का, ऐश्वर्य युक्त।
शानशौकत-(अ० स्री०) तड़क भड़क।
शाना-(फा०पु०) कघी, मोढा।
शानैश्चर-(सं०वि०) शनि ग्रह सबन्धी।
शान्त-(स०वि०) सौम्य, गभीर, मौन, चुप, जितेन्द्रिय, उत्साह रहित, शिथिल, श्रान्त, थका हुआ, स्थिर, मृत, मरा हुआ, विघ्न, बाधा रहित, दुर्बल, मनोविकार रहित, जो उद्दीप्त न हो,

(पु०) काव्य के नव रसों में से एक।
शान्तता-(सं०स्त्री०) रागादि का भाव, विराग।
शान्तनु-(सं०पु०) द्वापर युग के इक्कीसवें चन्द्रवंशी राजा का नाम।
शान्तप्रकृति-(सं०वि०) शान्त स्वभाव का
शान्तरूप-(सं०वि०) सरल स्वभाव का।
शान्ता-(सं० स्त्री०) राजा दशरथ की कन्या जो ऋष्यश्रृंग ऋषि को ब्याही थी, रेणुका, शमी, आवला, दूब।
शान्तात्मा-(सं०वि०) शान्त स्वभाव का, साधु प्रकृति का।
शान्ति-(सं०स्त्री०)चित्त का उपशमन,शमन, स्वस्थता, स्वस्थता, गम्भीरता, अमंगल दूर करने का उपचार, दुर्गा का एक नाम, षोडश मातृकाओं में से एक।
शान्तिकर-(सं०वि०) शान्ति करने वाला।
शान्तिकर्म-(सं० नपु०) बाधा, पाप आदि के निवारण का उपाय।
शान्तिकाम-(सं० वि०) शान्ति की कामना करने वाला।
शान्तिघट-(सं० पु०) वह जलपूर्ण घट जो देवादि की प्रतिमा के सामने रक्खा जाता है।
शान्तिद-(सं० पु०) विष्णु, (वि०) शान्ति देने वाला।
शान्तिदाता, शान्तिदायक-(सं०वि०) शान्ति देने वाला।
शान्तिप्रद-(सं० वि०) शान्ति देने वाला
शान्तिवाचन-(सं० नपु०) सब प्रकार की बाधा को दूर करने के लिये मन्त्र पाठ।
शान्तिहोम-(सं० पु०) शान्ति के लिये किया जाने वाला हवन।
शाप-(सं० पुं०) आक्रोश, बददुआ, धिक्कार, भर्त्सना, कोसना, फटकारना, ...री कसम।
...पग्रस्त-(सं० वि०) जिसको शाप दिया गया हो।
...ापमुक्त-(सं०वि०) जिसके ऊपर से शाप का प्रभाव हट गया हो।
...ापाम्बु-(सं० पु०) वह जल जिसको हाथ में लेकर शाप दिया जाय।
शापास्त्र-(सं०पु०) वह जिसका अस्त्र शाप ही हो।
शापित-(सं० वि०) जिसको शाप दिया गया हो।
शापोद्धार-(सं० पु०) शाप के प्रभाव से छुटकारा।
शाफरिक-(सं० पु०) मछुआ, धीवर।
शाबर-(सं० पु०) शिवकृत तन्त्रविशेष, पाप, अधिकार, दुःख, बुराई, शबर स्वामि कृत भाष्य।
शाबरी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की प्राकृत भाषा।
शाबल-(सं०नपु०) शङ्कर।
शाबाश (फा०अव्य०) एक प्रशंसा सूचक शब्द, वाह! वाह!
शाबाशी-(फा० स्त्री०) किसी कार्य के करने पर प्रशंसा।
शाब्द-(सं० वि०) शब्द संबंधी।
शाब्दिक-(सं० पु०) शब्दशास्त्रवेत्ता, वैयाकरण।
शाब्दी-(सं० वि०) शब्द संबंधी। (स्त्री०) सरस्वती।
शाब्दी व्यञ्जना-(सं०स्त्री०) साहित्य में वह व्यञ्जना जो शब्द विशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो।
शाम-(फा०स्त्री०)सूर्यास्त का समय, सन्ध्या, (हिं० पु०) एक प्रसिद्ध प्राचीन देश, देखो शामी।
शामकरण-(हिं० पु०) वह घोड़ा जिसके कान काले हों।
शामत-(अ० स्त्री०) विपत्ति, दुर्दशा, दुर्भाग्य, बदकिस्मती।
शामतजदा-(फा० वि०) अभागा, बदनसीब।
शामती-(अ०वि०)जिसकी शामत आई हो।
शामनी-(सं०स्त्री०)दक्षिण दिशा, शान्ति।
शामियाना-(फा०पु०) एक प्रकार का बड़ा तंबू।
शामिल-(फा० वि०) सम्मिलित, जो मिला हो।
शामिलहाल-(अ० पु०) साथी, शरीक।
शामिलात-(अ० स्त्री०) साझा, हिस्सेदारी।
शामी-(हिं०स्त्री०) लोहे पीतल आदि का छल्ला जो छड़ी छाते आदि के छोर पर लगाया जाता है।
शामूल-(सं०नपु०) ऊनी वस्त्र।
शाम्ब-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण के पौत्र का नाम।
शाम्बरिक-(सं०पु०) जादूगर।
शाम्बरी-(सं०स्त्री०) इन्द्रजाल।
शाम्बुक, शाम्बूक-(सं०पु०) घोंघा।
शाम्भव-(सं० वि०) शिव सम्बन्धी।
शाम्भवी-(सं० स्त्री०) दुर्गा देवी।
शायक-(सं० पु०) बाण, तीर, खड्ग (अ०वि०) इच्छुक, शौकीन।
शायद-(अ० अव्य०) कदाचित्, सम्भव है कि।
शायर-(अ०पु०) काव्य रचने वाला कवि
शायरा-(अ०स्त्री०) काव्य रचनेवाली स्त्री।
शायरी-(अ०स्त्री०) काव्य, कविता।
शाया-(अ० वि०) प्रकाशित, प्रकट।
शायित-(सं०वि०) पतित, लिटाया हुआ।
शायी-(हिं०वि०)शयनकारी, सोने वाला।
शार-(सं० वि०) चितकबरा, पीला।
शारङ्ग-(सं०पु०) चातक, हरिण, हाथी, मोर (वि०) चितकबरा।
शारङ्गक-(सं०पु०)एक प्रकार का पक्षी।
शारङ्गधनुष-(सं०पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।
शारङ्गपाणि-(सं० पु०) कृष्ण, राम।
शारङ्गपानि-(हिं० पु०) देखो शारङ्गपाणि।
शारङ्गभृत-(सं० पुं०) विष्णु, कृष्ण।
शारङ्गी-(सं० स्त्री०) सारंगी नाम का बाजा।
शारद-(सं०नपु०) सफेद कमल (पु०) मौलसिरी का वृक्ष, वर्ष, साल, मेघ, बादल, (वि०) शरत् काल का, नूतन, नया।
शारदा-(सं० स्त्री०) सरस्वती, दुर्गा।
शारदाम्बा-(सं०स्त्री०) सरस्वती।
शारदिक-(पु०) शरद ऋतु में होने वाला ज्वर।
शारदी-(सं० स्त्री०) जलपीपल, शरद

पूर्णिमा, (वि०) शरत् काल का।
शारदीय महापूजा-(सं० स्त्री०) शरत् काल के नवरात्र में की दुर्गापूजा।
शारि-(सं०पु०) पासा खेलने की गोटी।
शारिका-(सं०स्त्री०) मैना नामक पक्षी।
शारिका कवच-(सं० पु०) दुर्गा का एक कवच।
शारित-(सं० वि०) रंगबिरंगा।
शारिपट्ट-(सं० पु०) चौसर खेलने की बिसात।
शारिप्रस्तर-(सं०पु०) खेलने का पत्थर।
शारिफल-(सं०पु०) (नपु०) चौसर या शतरंज खेलने की बिसात।
शारिवा-(सं०स्त्री०) अनन्तमूल, सालसा।
शारिशृङ्ग-(सं० पु०) जुआ खेलने की गोटी।
शारी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का पक्षी, मूज।
शारीर-(सं०नपु०) वृष, बैल (वि०) शरीर से उत्पन्न, शरीर सबधी।
शारीरक-(सं०वि०) शरीर से उत्पन्न।
शारीरक भाष्य-(सं०पु०) शंकराचार्य कृत ब्रह्मसूत्र का भाष्य।
शारीरक मीमांसा-(सं०स्त्री०) वेदान्त सूत्र।
शारीरक सूत्र-(सं० पुं०) वेदान्तसूत्र।
शारीर विधान-(सं० नपु०) वह शास्त्र जिसमें जीव के उत्पन्न होने और बढने का विवेचन होता है।
शारीरिक-(सं०वि०) शरीर संबन्धी।
शार्कर-(सं०पु०) वह देश जहा चीनी बहुत होती है।
शार्ङ्ग-(सं०नपु०) धनुष, विष्णु का धनुष,
शार्ङ्गक-(सं० पु०) पक्षी, चिड़िया।
शार्ङ्गधर-(सं०पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।
शार्ङ्गष्टा-(सं० स्त्री०) घुमची।
शार्ङ्गायुध-(सं० पु०) श्रीकृष्ण।
शार्ङ्गी-(सं०पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण, धनुर्धारी
शार्दूल-(सं०पु०) व्याघ्र, बाघ, राक्षस, चीते का वृक्ष, दोहे का एक भेद, (वि०) सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।
शार्दूलकन्द-(सं०पु०) जगली प्याज।
शार्दूलललित-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं।
शार्दूलविक्रीडित-(सं० नपु०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
शार्वरी-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
शाल-(फा० स्त्री०) एक प्रकार की ऊनी चादर (सं० पु०) धूना, राल, साल का वृक्ष।
शालक-(सं०नपु०) मसखरा, दिल्लगीबाज
शालग्राम-(सं० पु०) गण्डकी नदी में उत्पन्न एक प्रकार की विष्णु की मूर्ति।
शालङ्की-(सं०पु०) गुड़िया, कठपुतली।
शालदोज-(फा० पुं०) शाल के किनारों पर बेलबूटे बनाने वाला कारीगर।
शालन-(सं० नपु०) साग सब्जी।
शालपर्णी-(सं०स्त्री०) सरिवन नामक वृक्ष
शालबाफ-(फा० पु०) शाल दुशाले बुनने वाला।
शालबाफी-(फा०स्त्री०) दुशाला बुनने का काम।
शालभ-(सं० नपु०) फतिंगों के समान।
शालभञ्जिका-(सं०स्त्री०) कठपुतली।
शालभञ्जी-(सं०स्त्री०) कठपुतली।
शालमर्कट-(सं० पुं०) अनार का पेड़।
शालरस-(सं०पु०) राल, धूना।
शालसार-(सं०पु०) हींग, राल, धूना।
शाला-(सं० स्त्री०) स्थान, गृह, जगह, घर, इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के योग से बनने वाला एक प्रकार का वृत्त।
शालाक्य-(सं० पु०) वह चिकित्सक जो आख, नाक, कान, मुख आदि के रोगों की चिकित्सा करता हो।
शालातुरीय-(सं०पु०) पाणिनि मुनि का एक नाम।
शालाद्वार-(सं०नपुं०) घर का दरवाज़ा।
शालापति-(सं०पुं०) घर का मालिक।
शालामुख-(सं० पु०) घर अगला भाग।
शालामृग-(सं०पु०) सियार, कुत्ता।
शालावृक-(सं० पु०) बन्दर, कुत्ता, सियार
शालार-(सं०नपु०) सोपान, सीढी।
शालि-(सं० पुं०) धान्य, धान, काला जीरा, पक्षी, एक यज्ञ का नाम।
शालिका-(सं०स्त्री०) देखो शारिका, मैना
शालिगोप-(सं०पु०) धान के खेत की रखवाली करने वाला।
शालिधान-(हि०पु०) बासमती चावल
शालिनी-(सं० स्त्री०) ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त।
शालिनीकरण-(सं० नपु०) तिरस्कार।
शालपर्णी-(सं०स्त्री०) सरिवन नामक वृक्ष।
शालिवाह-(सं०पु०) अन्न ढोने वाला बैल
शालिवाहन-(सं०पु०) शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा जिसने शक सवत् चलाया था।
शालिहोत्र-(सं० पु०) घोड़ा, नकुल का बनाया हुआ पशुओं के चिकित्सा का शास्त्र।
शालिहोत्री-(सं० पु०) पशुओं की चिकित्सा करने वाला वैद्य।
शाली-(सं० स्त्री०) काला जीरा, मेथी।
शालीन-(सं० वि०) विनीत, सदृश, समान, लज्जायुक्त, अच्छे आचार विचार का।
शालीनता-(सं०स्त्री०) विनय, नम्रता।
शालीनत्व-(सं०नपु०) शालीन होने का भाव या धर्म, अधृष्टता।
शालीना-(सं० स्त्री०) सौंफ का पौधा।
शालीय-(सं०वि०) शाल वृक्ष सबधी।
शालूक-(सं० नपु०) कमल की जड़, भसींड़।
शालूर-(सं०पु०) मेंढक, मेढक।
शालेममिश्री-देखो शालममिश्री।
शालेय-(सं० पु०) मधुरिका, सौंफ।
शाल्मक-(सं०पु०) सेमल का वृक्ष।
शाल्मलि-(सं०पु०स्त्री०) सेमल का वृक्ष। पुराण के अनुसार एक द्वीप का नाम।
शाल्व-(सं०पुं०) सौभ राज्य के अधिपति का नाम।
शाल्वण-(सं० पु०) फोड़ा पकाने का लेप, पुलटिस, भुरता।
शाव, शावक-(सं० पु०) शिशु, बच्चा, पशु आदि का बच्चा।
शावता-(सं० स्त्री०) बचपन।

शावर-(सं०पु०)मीमांसा भाष्य का नाम।
शावरी-(सं० स्त्री०) केवाँच।
शाशक-(सं० वि०) शशक संबंधी, खरहे का।
शश्वत्-(सं०पु०)नित्य, स्थायी, शाश्वत।
शाश्वती-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
शासक-(सं० पु०) शासन करने वाला, हाकिम।
शासन-(सं० नपुं०) आज्ञा, हुक्म, आदेश, शास्त्र, लिखित प्रतिज्ञा, दण्ड, सज़ा, हुकूमत, इन्द्रियों का निग्रह।
शासनधर-(सं०पु०) राजदूत, शासक।
शासनपत्र-(सं० नपुं०) वह शिला या ताम्रपत्र जिसपर किसी राजा की आज्ञा लिखी या खोदी हुई हो।
शासनवाहक-(सं०पु०) आज्ञावाहक, राजदूत, एलची।
शासनशिला-(सं० स्त्री०) वह शिला जिस पर राजा की कोई आज्ञा खोदी गई हो।
शासनहर-(सं० पु०) राजदूत।
शासनहारक-(सं० पु०) देखो शासनहर।
शासनी-(सं० स्त्री०) धर्म का उपदेश करने वाली स्त्री।
शासनीय-(सं०वि०) शासन करने योग्य
शासित-(सं० वि०) शासन किया हुआ, दण्ड दिया हुआ।
शासिता,शास्ता-(सं०पु०) शासन करने वाला, राजा।
शास्त्र-(सं० नपुं०) हिन्दुओं के ऋषि मुनियों के बनाये हुए वे प्राचीन ग्रन्थ जिनमें मनुष्यों के हित के लिये अनेक प्रकार के कर्तव्य बतलाये गये हैं, धर्म ग्रन्थों की संख्या अठारह है यथा—शिक्षा, कल्प,व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्व वेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थशास्त्र, किसी विशिष्ट विषय का क्रमबद्ध ज्ञान, विज्ञान।
शास्त्रकार-(सं० पु०) शास्त्र बनानेवाला।
शास्त्रचक्षु-(सं० पुं०) व्याकरण, ज्ञानी, पण्डित।
शास्त्रज्ञ-(सं० पु०) शास्त्र को जानने वाला।
शास्त्रत्व-(सं०नपु०)शास्त्र का भाव या धर्म
शास्त्रदर्शी-(सं०त्रि०) शास्त्रज्ञ।
शास्त्रवक्ता-(सं०वि०) शास्त्र का उपदेश देने वाला।
शास्त्रबुद्धि-(सं० त्रि०) शास्त्र समझने की बुद्धि।
शास्त्रवत्-(सं०अव्य०)शास्त्र के अनुसार।
शास्त्री-(सं०पु०) एक उपाधि जो इस नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय से दी जाती है, शास्त्रज्ञ, पण्डित।
शास्त्रीय-(सं०वि०) शास्त्र संबधी।
शास्त्रोक्त-(सं०वि०) शास्त्रों में कहा हुआ
शाहशाह-(फ़ा० पु०) राजाधिराज, बादशाहों का बादशाह।
शाहशाही-(फ़ा० स्त्री०) व्यवहार का खरापन।
शाह-(फ़ा०पु०) मुसलमान फकीरों की एक उपाधि, (वि०) बड़ा, भारी।
शाहजादा-(फ़ा०पुं०) बादशाह का बेटा, महाराज कुमार।
शाहजादी-(फ़ा०स्त्री०) राजकुमारी।
शाहबाला-(फ़ा०पुं०) देखो शहबाला।
शाहराह-(फ़ा०स्त्री०)बड़ी सड़क,राजमार्ग।
शाहाना-(फ़ा० वि०) बादशाहों के योग्य, राजसी, विवाह का जामा जो दूल्हे को पहराया जाता है।
शाहिद-(अ०पु०) साक्षी, गवाह, (वि०) सुन्दर।
शाही-(फ़ा०वि०)बादशाहों का, राजसी।
शाहीन-(फ़ा०पु०) तराजू की डंडी के मध्य भाग में लगी हुई सूई।
शिंगरिफ-(फ़ा०पु०) हिंगुल, ईंगुर।
शिंगरिफी-(फ़ा० वि०) सुर्ख रंग का।
शिंशपा-(सं० स्त्री०) शीशम का वृक्ष, अशोक वृक्ष।
शिंशुमार-(सं०पु०)सूंस नामक जल जन्तु
शिंहान-(सं०नपु०) कांच का बरतन।
शि-(सं०पु०)सौभाग्य, शान्ति, महादेव।
शिकंजा-(फ़ा० पुं०) कसने दबाने या निचोड़ने का एक यन्त्र, पेरने का एक यन्त्र, कोल्हू, रूई दबाने का यन्त्र, प्राचीन काल का एक यन्त्र जिसमें अपराधियों की टांगें कस दी जाती थीं जिल्दसाज का किताबों को दबाने का यन्त्र, शिकंजे में खिंचवाना-घोर कष्ट देना।
शिकन-(फ़ा०स्त्री०) वस्त्र में सिकुड़न से पड़ी हुई धारी, सिलवट।
शिकम-(फ़ा० पु०) उदर, पेट।
शिकमी-(फ़ा०वि०) पेट संबधी, निजका, अपना।
शिकमी काश्तकार-(फ़ा० पु०) वह काश्तकार जिसको दूसरे काश्तकार से खेत जोतने के लिये मिला हो।
शिकरा-(फ़ा० पु०) एक प्रकार का बाज़ पक्षी।
शिकवा-(अ०पु०) शिकायत, उलहना।
शिकस्त-(फ़ा० स्त्री०) पराजय, हार, मात, विफलता, असिद्धि, भंग।
शिकस्ता-(फ़ा०वि०) टूटा हुआ (स्त्री०) उर्दू या फ़ारसी की घसीट लिखावट।
शिकायत-(अ०स्त्री०) उपालंभ, उलहना, रोग, बीमारी, चुगली, शिकवा।
शिकार-(फ़ा० पु०) जंगली पशुओं के मारने का कार्य, आखेट, मृगया, मारा हुआ जानवर, आहार, ऐसा मनुष्य जिसको अपने वश में लाने पर लाभ होता हो, असामी, शिकार बनना-किसीसे मारा जाना।
शिकार गड़हा-(हिं०पु०)जंगली जानवरों को फँसाने के लिये खोदा हुआ गड्ढा
शिकारगाह-(फ़ा० स्त्री०) आखेट स्थान।
शिकारबन्द-(फ़ा०पु०) घोड़े के चारजामे के पीछे सामान बांधने का तस्मा।
शिकारी-(फ़ा० पु०) आखेट करने वाला, शिकार करने वाला।
शिकाल-(फ़ा०पु०) वह घोड़ा जिसका अगला दहिना पैर और पिछला बायां पैर सफेद हो,ऐसा घोड़ा ऐबी होता है।

शिक्य-(स० नपुं०) छत में लटकाने का छीका, सिकहर।
शिक्याकृत-(स०वि०) छीके की तरह बना हुआ।
शिक्वन्-(स०पु०) रज्जु, रस्सी।
शिक्षक-(स० पु०) शिक्षा देने वाला, गुरु, उस्ताद।
शिक्षण-(स०नपु०) शिक्षा, पढाने का काम, तालीम।
शिक्षणीय-(स०वि०) शिक्षा के उपयुक्त, सिखाने लायक।
शिक्षा-(स० स्त्री०) पढने पढाने की क्रिया, तालीम, छः वेदाङ्गों में से एक जिसमे वेदो के स्वर, वर्ण, मात्रा आदि का निरूपण रहता है, विद्या का अभ्यास, दक्षता, निपुणता, उपदेश, सबक, दण्ड, शासन।
शिक्षाकर-(स०पु०) सिखलाने वाला।
शिक्षाक्षेप-(स० पु०) काव्य में वह अलकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन स्वरूप कार्य रोका जाता है।
शिक्षागुरु-(स०पु०) दीक्षा गुरु, विद्या पढाने वाला गुरु।
शिक्षाग्राहक-(स०पु०) विद्यार्थी।
शिक्षादण्ड-(स०पु०) किसी चाल को छुड़ाने के लिये दिया जाने वाला दण्ड।
शिक्षानर-(स० पु०) इन्द्र।
शिक्षापत्र-(स०नपु०) वह पुस्तक जिससे विद्यालाभ होता है।
शिक्षापद-(स०पु०) उपदेश।
शिक्षापरिषद्-(सं०स्त्री०) शिक्षा प्रबन्ध करने वाली सभा।
शिक्षार्थी-(स० पु०) विद्यार्थी।
शिक्षालय-(स०पु०) पाठशाला, मदरसा।
शिक्षा विभाग-(स०पु०) वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा सार्वजनिक शिक्षा का प्रबन्ध होता है।
शिक्षाहीन-(स०वि०) अशिक्षित, वेपढा।
शिक्षित-(स०वि०) जिसने शिक्षा पाई हो, पढ़ा लिखा।
शिक्षितव्य-(स०वि०) शिक्षा के योग्य।
शिक्षिताक्षर-(स० पु०) वह जिसने शिक्षा पढी हो।
शिख-(हिं०पु०) देखो सिख, शिखच-लेखक, मुहर्रिर।
शिखण्ड-(स०पु०) मोर की पूँछ, शिखा, चोटी, काकपक्ष, काकुल।
शिखण्डिक-(स०पु०) कुक्कुट, मुरगा, एक प्रकार का मानिक।
शिखण्डिनी-(स०स्त्री०) मयूरी, मोरनी, द्रुपद राज की कन्या जो कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी।
शिखण्डी-(हि० पु०) मयूर, मोर, कुक्कुट, मुर्गा, बाण, तीर, घुमची, विष्णु, मोर की पूँछ, शिव, श्रीकृष्ण, बालो की चोटी।
शिखर-(स०पु० नपु०) सिरा, ऊपरी भाग, पहाड़ की चोटी, लवग, एक तान्त्रिक विद्या, एक अस्त्र का नाम, अग्र भाग, कगूरा, मण्डप, गुम्मद, काख, एक प्रकार का लाल रत्न।
शिखरन-(हिं० पु०) दही और चीनी से बनाया हुआ एक पेय जिसमें केशर, इलायची, मेवे आदि डाले जाते हैं।
शिखरवासिनी-(स०स्त्री०) शिखर पर बसने वाली, दुर्गा।
शिखरिणी-(स०स्त्री०) दही का पानी, स्त्रियों में श्रेष्ठ, वेलेका फूल, रोमावली, किशमिश, सत्रह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।
शिखरी-(हि०पु०) वृक्ष, पहाड़ी दुर्गा, कोट, एक प्रकार का मृग, वह गदा जो विश्वामित्र ने रामचन्द्र को दी थी।
शिखा-(स० स्त्री०) आग की लपट, चोटी, चुटैया, शाखा, डाली, पक्षियो के सिर पर की कलँगी, दिये की टेम, नोक, सिरा, ऊपर को उभड़ा हुआ भाग, स्तन का अग्रभाग, पेड़ की जड़, तुलसी, प्रकाश की किरण, एक वर्ण-वृत्त का नाम।
शिखाकन्द-(स०नपु०) शलजम।
शिखाचल-(स०पु०) मयूर, मोर।
शिखातरु-(स०पु०) दीवट।
शिखाधर-(स० पु०) मोर।
शिखाभरण-(स०नपु०) शिर का आभूषण
शिखामणि-(स०पु०) श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिखामूल-(स०नपु०) वह कन्द जिसके ऊपर पत्तियों का गुच्छा हो।
शिखाल-(स०पु०) मयूर, मोर।
शिखालु-(स०पु०) मयूर, शिखा।
शिखावत्-(स०वि०) शिखायुक्त (पु०) अग्नि, आग, मोर।
शिखावर-(स०पु०) कटहल का वृक्ष।
शिखावल-(स०पु०) मयूर, मोर।
शिखावृक्ष-(स० पु०) दीपवृक्ष, दीयट।
शिखावृद्धि-(स०स्त्री०) सूद दर सूद।
शिखि-(स०पु०) मयूर, मोर, कामदेव, अग्नि, तीन की सख्या।
शिखिकण्ठ-(स०नपु०) तुत्थ, तूतिया, (वि०) मोर के कंठ के समान।
शिखिकुन्द-(स०पु०) कुन्दरू।
शिखिग्रीव-(स० नपु०) एक प्रकार का नीला पत्थर।
शिखिध्वज-(सं० पु०) कार्तिकेय, धूम्र, धुवा।
शिखी-(स० पु०) मोर, अग्नि, इन्द्र, बगला पक्षी, एक नाग का नाम, एक प्रकार का विष, केवाच, पर्वत, मेथी, सतावर, घोड़ा, केतु ग्रह, वृक्ष, कुक्कुट, मुर्गा, बाण, तीर, साड़, पुच्छल तारा, तीन की सख्या।
शिखिनी-(स० स्त्री०) मोरनी, मुर्गी, जटाधारी।
शिखिवाहन-(स० पु०) कार्तिकेय।
शिगाफ-(फा०पु०) नश्तर, दरार, सूराख चिराव।
शिगूफा-(फा०पु०) बिना फूला हुआ फूल, कली, कोई अनोखी बात, चुटकुला।
शिङ्कित-(स०वि०) आघात, सूघा हुआ।
शिङ्घाण-(स० नपु०) काच का पात्र, नाक के भीतर का मल।
शिङ्घाणक-(स० नपु०) कफ, बलगम।
शिङ्घित-(स० वि०) सूघा हुआ।
शिञ्जित-(स०वि०) बजता हुआ।
शिञ्जिनी-(स० स्त्री०) धनुष की डोरी,

चिल्ला, करधनी के घुंघरू।
शित-(सं० वि०) कृश, दुर्बल, नुकीला, चोखा।
शितकर-(सं० पु०) कपूर।
शितकर्णा-(सं० स्त्री०) बासक, अडूसा।
शितछत्रा-(सं० स्त्री०) सौंफ।
शितता-(सं०स्त्री०) तीक्ष्णता, तीखापन।
शितपर्ण-(सं० पु०) मुस्तक, मोथा।
शितशिव-(सं०नपु०) सेंधा नमक।
शितशूक-(सं० पु०) जव, गेंहू।
शिताफल-(सं०पु०) सीताफल, शरीफा।
शिताब-(फा०क्रि० वि०) शीघ्र, जल्द।
शिताबी-(फा०स्त्री०) तेज़ी, शीघ्रता।
शितावर-(सं० पु०) देखो सतावर।
शिति-(सं० वि०) शुक्ल, सफेद, काला, (पु०) भोजपत्र का वृक्ष।
शितिकण्ठ-(सं० पु०) शिव, महादेव, मोर, चातक, पपीहा।
शितिकुम्भ-(सं०पु०) कनेर का वृक्ष।
शितिप्रभ-(सं०पु०) विष्णु।
शितिरत्न-(सं०पु०) नीलम।
शितिवासस-(सं० पु०) नीलाम्बर, बलदेव।
शिथिल-(सं० वि०) ढीला, श्रान्त, थका हुआ, मन्द, सुस्त, धीमा, आलस्य युक्त, अदृढ, अस्पष्ट।
शिथिलता-(सं० स्त्री०) ढिलाई, सुस्ती, थकावट, आलस्य, शक्ति की कमी, वाक्यों में अर्थ सबध न होना।
शिथिलाई-(हिं० स्त्री०) शिथिलता।
शिथिलाना-(हिं०क्रि०)थकना, सुस्त होना।
शिथिलित-(सं० वि०) वह जो ढीला हो गया हो।
शिथिलीकरण-(सं०नपु०) ढीला करना।
शिथिलीभूत-(सं०वि०)ढीला पड़ा हुआ।
शिद्दत-(अ०स्त्री०)प्रचण्डता,उग्रता,तेज़ी।
शिनाख्त-(फा०स्त्री०) स्वरूप या गुण का बोध, पहचान, परख।
शिपि-(सं०पुं०)किरण(स्त्री०)चमड़ा, खाल।
शिप्रा-(सं०स्त्री०) उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी का नाम।
शिकर-(हिं०पु०) ढाल।
शिफा-(सं०स्त्री०) कोड़े की फटकार।
शिफारुह-(सं०पु०) बरगद का वृक्ष।
शिमाल-(अ० स्त्री०) उत्तर दिशा।
शिमी-(सं०स्त्री०) शिम्बी, सेम।
शिम्बा-(सं०स्त्री०) छीमी, फली।
शिया-(अ० पु०) सहायक, मददगार, अनुयायी, मुसलमानों के दो परस्पर विरोधी सम्प्रदायों में से एक जो हज़रत अली को पैगंबर का ठीक उत्तराधिकारी मानते हैं।
शिरःकम्प-(सं०पु०) सिर का काँपना।
शिरःखण्ड-(सं०नपु०)माथे की हड्डी।
शिरःशूल-(सं०नपु०) सिर की पीड़ा।
शिर-(सं० पु०) मस्तक, माथा, सिर, खोपड़ी, शिखर, सबसे ऊँचा भाग, प्रधान, अगुआ, चोटी, सिरा।
शिरकत-(अ०स्त्री०) सम्मिलित अधिकार, साझा, हिस्सा, पट्टीदारी।
शिरखिस्त-(फा० पु०)एक वृक्ष का गोंद
शिरत्रान-(हिं०पु०) देखो शिरस्त्राण।
शिरनेत-(हिं०पुं०) गढ़वाल के आसपास का एक प्रदेश।
शिरपेंच-(हिं०पु०) देखो सिरपेंच।
शिरफूल-(हिं०पु०) स्त्रियों का सिर पर पहरने का एक आभूषण।
शिरमौर-(हिं०पु०) शिरोभूषण, मुकुट, प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरश्चन्द्र-(सं०पु०) शिव, महादेव।
शिरसिज-(सं०पुं०) केश, बाल।
शिरसिरुह-(सं०पु०) केश, बाल,
शिरस्क-(सं०वि०) मस्तक सबधी।
शिरस्त्र-(सं०नपु०)युद्ध के समय सिर पर पहरने की लोहे की टोपी।
शिरस्त्राण-(सं० नपु०) देखो शिरस्त्र।
शिरहन-(हिं० पु०) सिरहाना, तकिया।
शिरा-(सं० स्त्री०) शरीर में की रुधिर-वाहिनी नाड़ी, नस, जल की धारा या सोता।
शिराकत-(अ० स्त्री०) हिस्सेदारी, साझा, शिराकतनामा-वह कागज़ जिस पर साझे की शर्तें लिखी हों।
शिराफल-(सं०पु०) नारियल, अजीर।
शिरामूल-(सं०पु०) नाभि, ढोंढी।
शिराहर्ष-(सं०पु०) नसों का झनझनाना
शिरीष-(सं० पु०) सिरिस का पेड़।
शिरोगृह-(सं०नपु०) अट्टालिका, कोठा।
शिरोज-(सं०नपु०) केश, बाल।
शिरोधरा-(सं० स्त्री०) गरदन, ग्रीवा।
शिरोधाम-(सं० पु०) चारपाई का सिरहाना।
शिरोधार्य-(सं०वि०) आदर पूर्वक मानने योग्य, सिरपर धरने योग्य।
शिरोध्र-(सं० पु०) गरदन।
शिरोभाग-(सं०पु०) अग्र भाग, मस्तक का भाग।
शिरोभूषण-(सं०नपु०) सिर पर पहरने का गहना, मुकुट, चूड़ामणि।
शिरोमणि-(सं०पु०, स्त्री०) चूड़ामणि, शिरोरत्न, श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरोमाली-(हिं०पु०) शिव, महादेव।
शिरोमौलि-(सं०पु०) सिर का रत्न।
शिरोरुजा-(सं०स्त्री०) सिर की वेदना।
शिरोरुह-(सं० पु०) सिर के ऊपर के बाल।
शिरोवेष्टन-(सं०नपु०) पगड़ी, साफा, मुरेठा।
शिल-(हिं०पु०) उञ्छ, देखो शिला।
शिला-(सं०स्त्री०) पाषाण, पत्थर, पत्थर का बड़ा टुकड़ा, चट्टान, मैनसिल, कपूर, शिलाजीत, गेरू, गोरोचन, पत्थर की ककड़ी, हरीतकी, हर्रे।
शिलाकुसुम-(सं० नपु०) शिलाजीत।
शिलाक्षर-(सं०नपु०) शिला पर खुदा हुआ अक्षर।
शिलाक्षार-(सं०नपु०) चूना।
शिलागृह-(सं० नपु०) पत्थर का बना हुआ घर।
शिलाचक्र-(सं०नपु०) शालग्राम की मूर्ति
शिलाज, शिलाजतु-(सं०नपुं०) शिलाजीत-(हिं०स्त्री०) काले रग की एक प्रसिद्ध औषधि जो शिला का रस है।
शिलाटक-(सं०पु०) चौबारा।
शिलादित्य-(सं० पु०) मालव देश के राजा हर्षवर्धन।

शिलाधातु–(स० पु०) एक प्रकार का गेरू, खड़िया मिट्टी।
शिलानिचय–(स०पु०) पत्थर के ढोंको का ढेर।
शिलानिर्यास–(स०पु०) शिलाजीत।
शिलानीड–(स० पु०) गरुड़।
शिलापट्–(स०पु०) पत्थर की चट्टान, मसाला पीसने की सिल।
शिलापुष्प, शिलाप्रसून–(स० नपु०) छरीला नामक गन्ध द्रव्य।
शिलाबन्ध–(स० पु०) पत्थर के एक टुकडे का बना हुआ प्राचीर।
शिलाभाव–(स०पु०) पाषाणत्व।
शिलाभेद–(स० नपु०) पत्थर तोड़ने की छेनी।
शिलामय–(स०वि०)पत्थर का बना हुआ
शिलामल–(स० पु०) शिलाजीत।
शिलारस–(स० पु०) एक प्रकार का लोहबान की तरह का सुगन्धित गोंद।
शिलालेख–(स० पु०) पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख।
शिलावृष्टि–(स०स्त्री०) आकाश से ओले या पत्थर गिरना।
शिलावेश्म–(स० नपु०) पत्थर का बना हुआ मकान।
शिलाशस्त्र–(स०नपु०) पत्थर का बना हुआ हथियार।
शिलास्थि–(स० स्त्री०) गरदन में की वह हड्डी जिस पर कपाल स्थिर रहता है।
शिलास्तम्भ–(स०पु०) पत्थर का खमा।
शिलाहरि–(स०पु०) शालिग्राम की मूर्ति।
शिलि–(स० पु०) भोजपत्र, (स्त्री०) चौखट के नीचे की लकड़ी।
शिली–(स०स्त्री०) चौखट के नीचे की लकड़ी, डेहरी, भाला, बाण।
शिलीन्द्र–(स० नपु०) केले का फूल।
शिलीन्ध्रक–(स० नपु०) कुकुरमुत्ता।
शिलीपद–(स० पु०) फीलपाँव नामक रोग।
शिलीपृष्ठ–(स० नपु०) तलवार।
शिलीमुख–(स० पु०) भ्रमर, भौंरा, युद्ध, लड़ाई।
शिलेय–(स० पु०) शिलाजीत (वि०) शिला संबंधी।
शिल्प–(स०नपु०) दस्तकारी, कारीगरी, हुनर, कला संबंधी व्यवसाय।
शिल्पकला–(स० स्त्री०) दस्तकारी, कारीगरी।
शिल्पकार–(स०पु०) शिल्पी, कारीगर।
शिल्पकारी–,स०पु०) वह जो शिल्प का कार्य करता हो।
शिल्पगृह–(स० नपु०) शिल्पशाला, वह स्थान जहां पर बहुत से कारीगर मिलकर चीजें बनाते हों।
शिल्पजीवी–(स० पु०) दस्तकार।
शिल्पता–(स०स्त्री०) कारीगरी।
शिल्प प्रजापति–(स०पु०) विश्वकर्मा।
शिल्प विद्या–(स०स्त्री०) शिल्प विषयक विद्या।
शिल्प शाला–(स०स्त्री०) कारखाना।
शिल्प शास्त्र–(स० नपु०) वह शास्त्र जिसमें हाथ से चीजों के बनाने का वर्णन लिखा होता है,गृह निर्माण शास्त्र
शिल्पिक, शिल्पी–(स०पु०) शिल्पकार, कारीगर, राज, बढ़ई।
शिव–(स० नपु०) मंगल, सुख, कल्याण, जल पानी सेंधा नमक,फिटकरी,सोहागा, चांदी, चन्दन, लोहा मिर्च, (पुं०) महादेव, ईश्वर, महेश्वर, मोक्ष, पारा, वेद,वसु, ग्यारह मात्राओं का एक छन्द
शिवक–(स० नपु०) कांटा, खूंटा।
शिवकर्णी–(स० नपु०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
शिवकान्ता–(स० स्त्री०) दुर्गा।
शिवकारी–(स०वि०) कल्याण करने वाला
शिवकारिणी–(स०स्त्री०), शिवा, दुर्गा, (वि०) मंगल करने वाली।
शिवकिंकर–(स० पु०) शिव का गण या दूत।
शिव कीर्तन–(स० वि०) शिव का कीर्तन करने वाला, शैव।
शिवक्षेत्र–(स० नपु०) कैलास।
शिवगण–(स० पु०) शिव का अनुचर।
शिवङ्कर–,स०वि०,कल्याण करने वाला।
शिवता–(स० स्त्री०) शिव का भाव या धर्म, मोक्ष।
शिवतेज–(स० नपु०) पारद, पारा।
शिवदत्त–(स० नपु०) सुदर्शन चक्र।
शिवदूती–(स० स्त्री०) दुर्गा।
शिवद्रुम–(स०पु०) बेल का पेड़।
शिवद्विष्टा–(स०स्त्री०) केतकी, केवड़ा।
शिव धातु–(स० पु०) पारद, पारा।
शिव बीज–(स० नपु०) पारद, पारा।
शिवनंदन–(स०पु०) गणेशजी।
शिव निर्माल्य–(स० पु०) शिव को अर्पित की हुई वस्तु,परम त्याज्य वस्तु।
शिवनाथ–(स०पु०) महादेव।
शिव पुराण–(स०नपु०) अठारह पुराणों में से एक।
शिवपुरी–(स०स्त्री०) काशी।
शिवप्रिया–(स० स्त्री०) दुर्गा।
शिवभक्त–(स०पु०) शिव का भक्त,शैव।
शिवभक्ति–(स०पु०) शिव की भक्ति।
शिव भागवत–(स०पु०) शिवभक्त।
शिवमय–(स०वि०) शिव के समान।
शिवयोषित–(स०स्त्री०) शिव की पत्नी, दुर्गा।
शिवमल्ली–(स० स्त्री०) मौलसिरी।
शिवरात्रि–(स० स्त्री०) फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी।
शिवरानी–(हि०स्त्री०) पार्वती।
शिवलिंग–(स०पु०) महादेव जी का लिंग या पिण्ड जिसका पूजन होता है।
शिवलिंगी–(स० स्त्री०) एक प्रकार की प्रसिद्ध लता।
शिवलोक–(स०पु०) कैलास।
शिववल्लभा–(स०स्त्री०) पार्वती।
शिववाहन–(स० पु०) वृषभ, बैल।
शिव शक्ति–(स० स्त्री०) पार्वती।
शिव सायुज्य–(स० नपु०) वह मोक्ष जिसमें मनुष्य शिव रूप हो जाता है।
शिव सुन्दरी–(स० स्त्री०) दुर्गा।
शिवा–(स०स्त्री०,दुर्गा,पार्वती,मुक्ति,मोक्ष, अनन्तमूल, मेथी, दूब, गोरोचन, शमी वृक्ष, शृगाली, सियारिन।

शिवाक्ष-(स० नपु०) रुद्राक्ष ।
शिवानी-(स०स्त्री०) दुर्गा,जयन्ती वृक्ष ।
शिवारुत-(स० नपु०) सियार के बोलने का शब्द ।
शिवालय-(स०पु०) वह मन्दिर जिसमें शिव की मूर्ति या लिङ्ग स्थापित हो, कोई देव मन्दिर ।
शिवाला-(हि० पु०) शिवालय, शिव का मन्दिर ।
शिवालु-(स०पु०) शृगाल, सियार ।
शिवाह्लाद-(स०पु०) शिव का आनन्द
शिवाह्वय-(स०पु०) पारा, सफेद मदार ।
शिवि-(स०पु०) भूर्जपत्र का वृक्ष, राजा उशीनर के पुत्र जो बड़े धर्मात्मा और दानी थे ।
शिविका-(स०स्त्री०) पालकी, डोली ।
शिविर-(स० नपु०) डेरा, खेमा, किला, पड़ाव छावनी ।
शिशन-(हिं०पु०) देखो शिश्न ।
शिशिर-(स०पु०नपु०) शीतकाल,हिम, विष्णु, (वि०) शीतल, ठंढा ।
शिशिरकर-(स०पु०) चन्द्रमा ।
शिशिर किरण-(स०पु०) चन्द्रमा ।
शिशिरता-(स०स्त्री०) शैत्य, ठढापन ।
शिशिर दीधिति-(स०पु०) चन्द्रमा ।
शिशिर मयूख-(स०पु०) चन्द्रमा ।
शिशिरांशु-(स० पु०) चन्द्रमा ।
शिशु-(स० पु०) बालक, छोटा लड़का, विशेष करके आठ वर्ष तक का बालक
शिशुकाल-(स० पु०) बचपन ।
शिशुता-(स०स्त्री०) बचपन ।
शिशुताई-(हि० स्त्री०) शिशुता ।
शिशुत्व-(स० नपु०) शैशव बचपन ।
शिशुनाग-(स०पु०) एक राक्षस का नाम
शिशुपन-(हि० पु०) बालकपन ।
शिशुपाल-(स०पु०) चेदि वंश का एक राजा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ।
शिशुभाव-(स०पु०) लड़कपन ।
शिशुमार-(स० पु०) नक्षत्र मंडल, सूस नामक जलजन्तु, विष्णु कृष्ण ।
शिशुमारचक्र-(स० पु०) सौर जगत्, सब ग्रहों सहित सूर्य ।
शिशुमारमुखी-(स० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।
शिश्नवाहक-(स० पु०) जंगली बकरा ।
शिश्न-(स०पु०) उपस्थ, मेढ्र, लिङ्ग ।
शिष-(स०) वध, हिंसा, (हिं० स्त्री०) शिखा, चोटी, सीख, देखो शिष्य ।
शिषरी-(हि०वि०) शिखर वाला ।
शिष्ट-(स० वि०) शान्त, सुशील, अच्छे स्वभाव का, विनीत, शिक्षित, सज्जन, बुद्धिमान्, प्रधान, प्रसिद्ध, (पु०) मन्त्री, सभासद ।
शिष्टता-(स०स्त्री०) सज्जनता, उत्तमता, भलमंसी ।
शिष्टसभा-(स०स्त्री०) राजसभा ।
शिष्टसमाज-(स० पु०) शिष्ट जनों का समाज ।
शिष्टाचार-(स० पु०) भले आदमियों की तरह बरताव, विनय, आदर, नम्रता, सभ्य व्यवहार , शिष्टाचार के आठ लक्षण हैं यथा दान,सत्य, तपस्या, अलोभ, विद्या, इज्या, पूजा और दम ।
शिष्टि-(स० स्त्री०) आज्ञा, हुक्म, शासन, हुकूमत, दण्ड, सज़ा ।
शिष्य-(स० पु०) शिक्षा या उपदेश देने योग्य व्यक्ति, विद्यार्थी चेला, शागिर्द ।
शिष्यता-(स० स्त्री०) शिष्य होने का भाव या धर्म ।
शिष्यत्व-(स० नपु०) शिष्यता ।
शिष्या-(स० स्त्री०) एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु अक्षर होते हैं, इसका दूसरा नाम शीर्षरूपक है।
शिस्त-(फा० स्त्री०) मछली पकड़ने की बंसी, अंगूठा, लक्ष्य, निशाना, दुरबीन की तरह का एक प्रकार का यन्त्र ।
शिस्तबाज़-(फा०पु०) निशाना लगाने वाला
शीकर-(स०नपु०) तुषार, शीत, जाड़ा, पानी का बूंद, वर्षा की छोटी छोटी बूंद
शीघ्र-(क्रि० वि०) जल्द, तुरत, चटपट, (पु०) वायु, हवा ।
शीघ्रकारी-(स० वि०) जल्दी से काम करने वाला ।
शीघ्रकोपी-(स० वि०) जिसको जल्दी से क्रोध आता हो ।
शीघ्रग-(स० पु०) सूर्य, वायु, खरगोश ।
शीघ्रगामी-(स०त्रि०) तेज़ चलने वाला ।
शीघ्रता-(स०स्त्री०) जल्दी, फुर्ती ।
शीघ्रत्व-(स० नपु०) तेजी, फुर्ती ।
शीघ्रपतन-(स० पु०) मैथुन काल में वीर्य का शीघ्र स्खलित होना ।
शीघ्रपाणि-(स० पु०) वायु ।
शीघ्रपुष्प-(स०पु०) अगस्त्य का वृक्ष ।
शीघ्रयान (स०वि०) तेजी से जाने वाला
शीघ्रवह-(स०त्रि०) तेज़ी से ढोने वाला ।
शीघ्रवाही-(स० वि०) जल्दी से ले जाने वाला ।
शीघ्रवेधी-(स० पु०) जल्दी से बाण चलाने वाला ।
शीघ्रसंचारी-(हि०वि०) देखो शीघ्रगामी ।
शीत-(स० नपु०) जाड़ा, सरदी, तुषार, ओस, जाड़े का मौसम, हिम ऋतु (वि०) शीतल, ठंढा
शीतक-(स० त्रि०) दीर्घसूत्री, काम करने में विलम्ब करने वाला ।
शीत कटिबन्ध-(स० पु०) पृथ्वी के उत्तर तथा दक्षिण के भूमिखण्ड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३॥ अंश दक्षिण पर माने जाते हैं—इन भागों में जाड़ा बहुत पड़ता है ।
शीतकर-(स०पु०) चन्द्रमा, कपूर ।
शीतकाल-(स०पु०) हिम ऋतु, अगहन पूस का महीना ।
शीतक्षार-(स० नपु०) शुद्ध सोहागा ।
शीतगन्ध-(स० नपु०) सफेद चन्दन ।
शीतगात्र-(स० पु०) एक प्रकार का सन्निपात ज्वर ।
शीतगु-(स०पु०) चन्द्रमा, कपूर ।
शीतच्छाय-(स० पु०) बरगद का वृक्ष ।
शीतता-(स० पु०) ठढक ।
शीतदीधिति-(स०पु०) चन्द्रमा ।
शीतदीप्य-(स० नपु०) सफेद जीरा ।
शीतपूर्वा-(स० स्त्री०) सफेद दूब ।
शीतद्युति-(स० पु०) चन्द्रमा ।
शीतपुष्प-(स० नपु०) छड़ीला, सिरिस ।
शीतप्रभ-(स०पु०) कर्पूर, कपूर ।

शीतफल–(सं० पु०) गूलर, आमला ।
शीतभानु–(सं० पुं०) चन्द्रमा ।
शीतभीरु–(सं०वि०)ठंढक से डरने वाला ।
शीतमयूख–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर ।
शीतमरीचि–(सं० पुं०) देखो शीतमयूख
शीतमूलक–(सं० नपुं०) उशीर, खस ।
शीतरम्य–(सं०वि०) जो शीत काल में रमणीय हो ।
शीतरश्मि–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर ।
शीतल–(सं० वि०) ठंढा, सर्द शान्त, उद्वेग रहित (नपुं०) ठंढक, खस, हिम, चन्दन, कपूर ।
शीतलचीनी–(हिं०स्त्री०)देखो कबाबचीनी
शीतलता–(सं०स्त्री०)ठंढापन, सरदी, जड़ता
शीतलताई–(हिं०स्त्री०) ठंढापन, सरदी ।
शीतला–(सं० स्त्री०) वसन्त रोग, चेचक, इस रोग की अधिष्ठात्री देवी ।
शीतला अष्टमी–(सं०स्त्री०) चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि ।
शीतवासा–(सं० स्त्री०) यूथिका, जूही ।
शीतशैल–(सं०पुं०) हिमालय पर्वत ।
शीतांशु–(सं०पुं०) कपूर, चन्द्रमा ।
शीता–(सं० स्त्री०) शीरिणी, झिंगनी ।
शीताद्रि–(सं०पुं०) हिमालय पर्वत ।
शीताभ–(सं०पुं०नपुं०) कपूर, चन्द्रमा ।
शीताम्बु–(सं० पुं०) ठंढा जल ।
शीताश्म–(सं० पुं०) चन्द्रकान्त मणि ।
शीतेतर–(सं० वि०) उष्ण, गरम ।
शीतोदक–(सं०पुं०) एक नरक का नाम ।
शीतोष्ण–(सं० वि०) शीत और उष्ण, कुनकुना ।
शीत्कार–(सं० पुं०) स्त्रियों की रति काल की ध्वनि ।
शीया–(अ० पुं०) मुसल्मानों का एक सम्प्रदाय; देखो शिया ।
शीफर–(सं० वि०) सुन्दर, रम्य ।
शीभ्र–(सं०पुं०) शीकर, जलग्रह ।
शीम्य–(सं० पुं०) शिव, महादेव, वृषभ, बैल ।
शीमूल–(सं० पुं०) सेमल का वृक्ष ।
शीर–(फ़ा०पुं०) क्षीर, दूध ।
शीरखिश्त–(फ़ा०पु०) एक रेचक औषधि ।
शीरखोरी–(फ़ा०पुं०) दूध पीता बच्चा ।
शीरमाल–(फ़ा० पुं०) एक प्रकार की खमीरी रोटी ।
शीरा–(फ़ा० पु०) चीनी मिला हुआ पानी, चाशनी, शर्बत ।
शीराजा–(फ़ा० पु०) किताबों की जिल्द में सिलाई की छोर पर लगाया हुआ फ़ीता, प्रबंध, इन्तजाम ।
शीरीं–(फ़ा० वि०) मधुर, मीठा, प्रिय, प्यारा ।
शीरीनी–(फ़ा० स्त्री०) मिठास, मीठापन, मिठाई, बताशा ।
शीर्ण–(सं० वि०) दुबला पतला, टूटा फूटा हुआ, मुरझाया हुआ, गिरा हुआ, फटा पुराना, सिकुड़ा हुआ ।
शीर्णत्व–(सं० नपुं०) कृशता ।
शीर्णदल–(सं० पु०) नीम का पेड़ ।
शीर्ति–(सं० स्त्री०) तोड़ने या फोड़ने की क्रिया ।
शीर्य–(सं०वि०)भंगुर, टूटने फूटने योग्य
शीर्ष–(सं०नपुं०) मस्तक, माथा, कपाल, शिर, अग्र भाग, चोटी ।
शीर्षक–(सं०नपुं०) शिरा, चोटी, निर्णय, फैसला, वह वाक्य जो विषय परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर लिखा जाता है ।
शीर्षघाती–(सं०वि०)सिर काटने वाला ।
शीर्षच्छेद–(सं०पु०) सिर काटना ।
शीर्षच्छेदिक–(सं०वि०) वध करने योग्य
शीर्षत–(सं०अव्य०) मस्तक पर ।
शीर्षपट्टक–(सं० पुं०) मस्तक पर बाँधने की पट्टी ।
शीर्षबिन्दु–(सं० पुं०) शिर के ऊपर की ओर ऊँचाईमें सबसे ऊपर का स्थान ।
शीर्षभार–(सं०पुं०) माथे पर का बोझ ।
शीर्षरक्ष–(सं० नपुं०) शिरस्त्राण, टोप ।
शीर्षरक्षण–(सं०नपुं०) पगड़ी,साफ़ा ।
शील–(सं०नपुं०) चरित्र, आचरण,चाल, व्यवहार, स्वभाव, प्रवृत्ति, उत्तम आचरण ।
शीलता–(सं० स्त्री०) शीलत्व, चातुता ।
शीलत्याग–(सं० पु०) शीलता छोड़ना ।
शीलधर–(सं० वि०) सच्चरित्र ।
शीलन–(सं० नपुं०) अभ्यास ।
शीलभ्रंश–(सं० पु०) शीलता का परित्याग ।
शीलवान्–(हिं० वि०) कोमल स्वभाव का, मुरौवतदार ।
शीलविप्लव–(सं० पु०) शीलता का त्याग ।
शीलवृत्त–(सं०वि०) सुशील ।
शीलशाली–(सं०वि०)अच्छे स्वभाव का ।
शीली–(सं०वि०) शील युक्त ।
शीवल–(सं०नपुं०) शैवाल, सेवार ।
शीश–(हिं०पु०) देखो शीर्ष ।
शीशमहल–(अ०पु०) वह कमरा जिसकी दीवारों पर शीशे जड़े हों ।
शीशम–(फ़ा०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी ठोस और पुष्ट होती है।
शीशा–(फ़ा० पु०) एक पारदर्शक मिश्र-धातु, काच, दर्पण, आइना, आइ फ़ानूस ।
शीशी–(फ़ा० स्त्री०) शीशे का तेल इत्र इत्यादि रखने का छोटा पात्र, शीशी सुंघाना–दवा (क्लोरोफ़ार्म) सुंघाकर बेहोश करना ।
शुक–(सं०नपुं०) वस्त्र, कपड़ा, कपडे का अंचल, पगड़ी, साफा, सिरिस का पेड़ (पुं०) सुग्गा, तोता, व्यास के पुत्र शुकदेव ।
शुककीट–(सं० पु०) हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा ।
शुकतरु–(सं०पु०) सिरिस का पेड़ ।
शुकतुण्ड–(सं० पु०) तोते की चोंच ।
शुकदेव–(सं० पुं०) वेदव्यास के पुत्र का नाम ।
शुकनास–(सं० पु०) केंवाच ।
शुकप्रिय–(सं० पु०) कमरख ।
शुकराना–(अ०पु०) शुक्रिया, कृतज्ञता, धन्यवाद के रूप में दिया जाने वाला धन ।
शुकरूप–(सं० वि०) जिसका रंग शुक

के समान हो।
शुकवल्लभ-(स०पु०) दाड़िम, अनार।
शुकवाह-(स० पु०) कामदेव।
शुकवृक्ष-(स०पु०) सिरिस का पेड़।
शुकशिम्बा-(स०स्त्री०) केवाच।
शुकादन-(सं० पु०) दाड़िम, अनार।
शुकानन-(स०वि०) जिसका मुख सुग्गे के समान हो।
शुकी-(सं०स्त्री०) कश्यप की स्त्री,सुग्गी।
शुक्त-(स०वि०) निष्ठुर, कठोर, अम्ल, खट्टा, निर्जन, सनसान, खमीर उठाया हुआ।
शुक्ताम्ल-(स० नपु०) चुक का साग।
शुक्ति-(स० स्त्री०) सीप, सुतुही, शख, हड्डी, बवासीर का रोग।
शुक्तिज-(सं०नपु०) मोती।
शुक्तिपुटोपम-(स०नपु०) बदाम।
शुक्तिबीज-(स० नपु०) मुक्ता, मोती।
शुक्तिमणि-(स० पुं०) देखो शुक्तिबीज।
शुक्तिवधू-(स०स्त्री०) सीपी।
शुक्र-(स० नपु०) रेत, वीर्य, अग्नि, शक्ति, बल, सामर्थ्य, एक ग्रह का नाम बृहस्पतिवार के बाद का वार।
शुक्र-(अ० पुं०) कृतज्ञता, धन्यवाद।
शुक्रकर-(स०पु०) वीर्यकारक।
शुक्रगुजार-(फा०पु०) कृतज्ञ, एहसान मानने वाला।
शुक्रगुजारी-(फा० स्त्री०) एहसानमन्दी
शुक्रदोप-(स० पु०) नपुसकता।
शुक्रमेह-(स०पु०) प्रमेह रोग।
शुक्रवार-(स०पु०) सप्ताह का छठाँ दिन।
शुक्रशिष्य-(स० पु०) असुर, दैत्य।
शुक्रसुत-(स०पु०) केतु।
शुक्रा-(स०स्त्री०) वंशलोचन।
शुक्राङ्ग-(स० पुं०) मयूर, मोर।
शुक्राचार्य-(स० पु०)दैत्यों के गुरू जो महर्षि भृगु के पुत्र थे।
शुक्रिया-(फा०पु०) धन्यवाद, कृतज्ञता का प्रकाश।
शुक्ल-(स०पु०) श्वेत वर्ण, सफेदी (नपु०) चांदी, नवनीत, मक्खन, विष्णु का एक नाम, ब्राह्मणों की एक पदवी।
शुक्लता-(स०स्त्री०) श्वेतता, सफेदी।
शुक्लत्व-(स०नपु०) सफेदी।
शुक्ल पक्ष-(स०पु०) सितपक्ष, वह पक्ष जिसमें पन्द्रह दिन तक चन्द्रमा की वृद्धि होती है।
शुक्लपुष्प-(स० पु०) मैनफल।
शुक्ला-(स० स्त्री०) सरस्वती, चीनी, विदारीकन्द।
शुक्लाङ्गी-(स०स्त्री०) शेफालिका, निर्गुण्डी
शुक्लफल-(स० पुं०) आक, मदार।
शुक्लफला-(सं०स्त्री०) शमी वृक्ष।
शुक्लफेन-(स० पु०) समुद्रफेन।
शुक्लभण्डी-(स० स्त्री०) सफेद सरसों।
शुक्लमण्डल-(स० नपु०) आँखों में का पुतली के चारो ओर का सफेद भाग।
शुक्लवश-(स०पु०) सफेद बास।
शुक्लवृक्ष-(स०पु०) धव का पेड़।
शुक्लसारग-(स० पु०) सफेद रग का पपीहा।
शुक्लापाङ्ग-(स० पु०) मयूर, मोर।
शुक्लाम्ल-(स०नपुं०) चूक नाम का साग।
शुक्लार्क-(स० पु०) सफेद मदार।
शुक्लिमन्-(स०पु०) शुक्लता, सफेदी।
शुक्लोपल-(स०पु०) सफेद पत्थर।
शुक्लोदन-(सं०नपु०) अरवा चावल।
शुङ्ग-(स०पु०) बरगद, पाकर का पेड़।
शुङ्गवश-एक प्राचीन क्षत्रिय राजवश जो मौर्यों के बाद राजसिंहासन पर बैठा था।
शुचि-(स० पु०) अग्नि, ज्येष्ठ मास, शृगार रस, चन्द्रमा, शुक्र, ब्राह्मण, कार्तिकेय, पवित्रता, (वि०) स्वच्छ, साफ, निर्दोष, पापरहित।
शुचिकर्म-(स०वि०) पवित्र करने वाला।
शुचिता-(स० स्त्री०) पवित्रता।
शुचिद्रुम-(स० पुं०) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष।
शुजा-(अ० वि०) वीर, बहादुर, दिलेर।
शुजाअत-(अ० स्त्री०) बहादुरी।
शुण्ठी-(स० स्त्री०) सोंठ।
शुण्ड-(स०पु०) हाथी का सूड़।
शुण्डक-(स०पु०) एक प्रकार का नगाड़ा।
शुण्डादण्ड-(स०पु०) हाथी का सूँड़।
शुण्डापान-(स०नपु०) कलवरिया।
शुण्डार-(स० पु०) मद्य बनाने या बेंचने वाला।
शुण्डाल-(स० पु०) हस्ती, हाथी।
शुण्डा-(स०स्त्री०) वेश्या, रडी, शराब, हाथी का सूड।
शुण्डिक-(स० पु०) शराब बिकने का स्थान, कलवरिया।
शुण्डिक-(सं० स्त्री०) गले के भीतर की घंटी।
शुण्डिनी-(स० स्त्री०) छछूदरी।
शुतुर-(फा०पु०) पक्षी, चिड़िया।
शुतुरमुर्ग-(फा० पु०) एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी।
शुदनी-(फा०स्त्री०) होनी, होनहार।
शुद्ध-(स० वि०) दोष रहित, बेऐब, पवित्र, उज्वल, सफेद, सही, ठीक, खालिस, बिना मिलावट का।
शुद्धता-(स०स्त्री०) निर्दोषता।
शुद्ध पक्ष-(स० पु०) शुक्ल पक्ष।
शुद्ध बुद्धि-(स०वि०)विलक्षण बुद्धि वाला
शुद्धबोध-(स०वि०) ज्ञानयुक्त।
शुद्धभाव-(स०पु०) स्वच्छ भावना।
शुद्धमति-(स०वि०)विलक्षण बुद्धि वाला।
शुद्धरूपी-(स०वि०) उज्वल रूप वाला।
शुद्धवश्य-(स० वि०) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो।
शुद्धविराज-(स०स्त्री०) छन्द का एक भेद
शुद्धसाध्य वासना-(स०स्त्री०) शब्द की एक लक्षणा शक्ति।
शुद्धात्मा-(हिं०वि०) पवित्र स्वभाव का।
शुद्धान्त-(सं० पु०) अन्तःपुर, ज़नानखाना।
शुद्धापह्नुति-(स०स्त्री०) वह अलकार जिसमें उपमेय को असत्य ठहरा कर अथवा उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है।
शुद्धावास-(स०पु०) स्वर्ग।
शुद्धि-(स० स्त्री०) स्वच्छता, सफाई, दुर्गा
शुद्धिकृत्-(स०वि०) शुद्धिकारक।
शुद्धिपत्र-(स०पु०) वह पत्र जिसमें छापे

की अशुद्धियां बतलाई जाती हैं।
शुद्धोदन-(सं०पु०) एक शाक्य राजा जो बुद्धदेव के पिता थे।
शुद्धोदनि-(सं०पु०) विष्णु।
शुन फेन-(सं०पुं०) एक ऋषि का नाम।
शुन-(सं०पु०) कुक्कुर, कुत्ता, वायु।
शुनाशीर-(सं०पु०) इन्द्र और वायु।
शुनि-(सं०पु०) कुक्कुर, कुत्ता।
शुनी-(सं०स्त्री०) कुक्कुरी, कुतिया।
शुबहा-(अ० पु०) सन्देह, शक, धोखा।
शुभ-(सं०नपु०) मंगल, भलाई, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक, (वि०) कल्याणकारी, सुन्दर, उत्तम, सुखी।
शुभकर-(सं०वि०) मंगलजनक।
शुभकर्म-(सं० नपुं०) मंगलजनक कार्य।
शुभकृत-(सं०वि०) शुभजनक।
शुभकरी-(सं० स्त्री०) पार्वती।
शुभक्षण-(सं०नपु०) शुभ मुहूर्त।
शुभङ्कर-(सं० वि०) शुभ या मंगल करने वाला।
शुभङ्करी-(सं०स्त्री०) पार्वती, दुर्गा।
शुभचिन्तक-(सं०वि०) हितैषी, खैरख्वाह।
शुभद-(सं०वि०) शुभदायक।
शुभदर्शन-(सं०वि०) सुन्दर, खूबसूरत।
शुभदायी-(सं०वि०) शुभ करने वाला।
शुभपत्रिका-(सं० स्त्री०) मंगल पत्रिका।
शुभप्रद-(सं०वि०) मंगल करने वाला।
शुभभावना-(सं० स्त्री०) मंगल जनक भावना।
शुभमय-(सं०वि०) मंगलमय।
शुभवक्त्रा-(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
शुभस्थली-(सं० स्त्री०) यज्ञभूमि, पवित्र स्थान।
शुभा-(सं० स्त्री०) कान्ति, शोभा, इच्छा, चाह।
शुभाङ्गी-(सं० स्त्री०) कामदेव की पत्नी रति।
शुभाचार-(सं० स्त्री०) जिसका आचार बहुत अच्छा हो।
शुभाचारा-(सं० स्त्री०) पार्वती की एक सखी का नाम।
शुभान्वित-(सं० वि०) मंगलयुक्त।
शुभार्थी-(सं० वि०) शुभ कामना करने वाला।
शुभावह-(सं० वि०) मंगलजनक।
शुभाशय-(सं०वि०) धार्मिक।
शुभाशुभ-(सं०वि०) शुभ और अशुभ।
शुभ्र-(सं०वि०) उद्दीप्त, सफेद (नपु०) अभ्रक, चांदी, सेंधा नमक, खस।
शुभ्रता-(सं० स्त्री०) शुक्लता, सफेदी।
शुभ्ररश्मि-(सं० स्त्री०) चन्द्रमा।
शुभ्रांशु-(सं०पु०) चन्द्रमा, कपूर।
शुभ्रा-(सं० स्त्री०) फिटकरी, चीनी।
शुभ्रिका-(सं० स्त्री०) शहद से बनाई हुई चीनी।
शुम्बल-(सं०नपु०) जलती हुई लकड़ी, मसाल।
शुम्भ-(सं० पु०) एक दानव जिसको दुर्गा ने मारा था।
शुम्भघातिनी-(सं०स्त्री०) दुर्गा।
शुरवा-(फ़ा०पु०) देखो शोरवा।
शुरू-(अ०पु०) किसी कार्य का आरंभ, प्रारंभ।
शुल्क-(सं० पु०) घाट का महसूल, राजकर वह धन जो कन्या का विवाह करने के बदले में दिया जावे, दहेज, मूल, दाम, बाजी, शर्त, किसी कार्य के बदले में दिया जाने वाला धन।
शुल्कता-(सं० स्त्री०) शुभ्रता, सफेदी।
शुल्कत्व-(सं०नपु०) देखो शुल्कता।
शुल्कशाला-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहां पर महसूल या चुंगी चुकाई जाती है।
शुल्ल-(सं०नपु०) रज्जु, रस्सी।
शुश्रूषक-(सं० वि०) सेवा शुश्रूषा करने वाला।
शुश्रूषा-(सं० स्त्री०) उपासना, सेवा, परिचर्या, टहल, खुशामद।
शुश्रूषु-(सं०वि०) सेवा करने में अभिलाषी।
शुष्क-(सं० वि०) निस्नेह, सूखा, नीरस, रसहीन, स्नेह रहित, निर्मोही, निरर्थक, व्यर्थ।
शुष्ककण्ठ-(सं० वि०) प्यासा।
शुष्कता-(सं०स्त्री०) सूखापन।
शुष्कपत्र-(सं०नपु०) सूखा पत्ता।
शुष्कमुख-(सं० वि०) कृपण, कंजूस।
शुष्कली-(सं०वि०) मांस खाने वाला।
शुष्कार्द्र-(सं०नपु०) शुण्ठी, सोंठ।
शुष्ण-(सं०पु०) सूर्य, अग्नि।
शुष्म-(सं०नपु०) तेज, पराक्रम।
शूडल-(हिं० पु०) मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष।
शूक-(सं० पु०) अन्न की बाल, एक प्रकार का कीड़ा।
शूककीट-(सं०पु०) एक प्रकार का रोवेंदार कीड़ा।
शूकपिण्डी-(सं०स्त्री०) केंवाच।
शूकर-(सं०पु०) वराह, सुअर।
शूकरक्षेत्र-(सं० पु०) नैमिषारण्य के पास के एक तीर्थ का नाम।
शूकरशिम्बी-(सं० स्त्री०) सेमकी फली।
शूकल-(सं०पु०)जल्द भड़कने वाला घोड़ा।
शूका-(सं० स्त्री०) कपिकच्छु, केंवाच।
शूक्ष्म-(हिं० वि०) देखो सूक्ष्म।
शूची-(सं० स्त्री०) सुई।
शूद्र-(सं०पु०) आर्यों के चार वर्णों में से अन्तिम वर्ण, ब्रह्मा के पैर से इस वर्ण की उत्पत्ति मानी जाती है, अन्त्य वर्ण, शूद्र जाति का पुरुष।
शूद्रक-(सं०पुं०) शूद्र, विदिशा नगरी का एक राजा जिसका लिखा हुआ 'मृच्छकटिक' नाटक बहुत प्रसिद्ध है।
शूद्रता-(सं०स्त्री०) शूद्र का भाव या धर्म।
शूद्रत्व-(सं०नपु०) शूद्रता।
शूद्रद्युति-(सं० पु०) नीला रंग।
शूद्रप्रिय-(सं० पु०) प्याज।
शूद्रा, शूद्री-(सं० स्त्री०) शूद्र की स्त्री।
शूना-(सं० स्त्री०) गृहस्थ के घर में के वे स्थान जहां पर अनजान में अनेक जीवों की हत्या होती है यथा-चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, और जल रखने का स्थान।
शूनावत्-(सं० पु०) कसाई।
शून्य-(सं०नपु०) खाली जगह, आकाश,

बिन्दु, निर्जन स्थान, अभाव, स्वर्ग, (पु०) विष्णु (वि०) बहुत थोड़ा, असम्पूर्ण, खाली।
शून्यगर्भ-(स० वि०) मूर्ख, बेवकूफ।
शून्यता-(सं० स्त्री०) शून्य भाव।
शून्यपाल-(स० पु०) एवजी।
शून्यवाद-(स० पु०) बौद्धों का वह सिद्धान्त जिसमें वे जीव तथा ईश्वर को कुछ नहीं मानते।
शून्यवादी-(सं०पु०) बौद्ध, नास्तिक।
शून्या-स०स्त्री०,वन्ध्या स्त्री,बाझ औरत।
शून्यालय-(स० पु०) एकान्त स्थान।
शूप-(हिं० पु०) शूर्प, सूप।
शूपकार-(स० पु०) देखो सूपकार।
शूर-स०पु०)वीर,बहादुर,सिपाही,योद्धा, सूर्य, सिंह, बड़हर, मसूर, विष्णु, चीते का पेड़।
शूरता-(स०स्त्री०) वीरता, बहादुरी।
शूरताई-(हिं० स्त्री०) वीरता।
शूरण-(स० पु०) ज़मीकन्द, ओल।
शूरन-(हिं०पु०) देखो सूरन।
शूरभूमि-(स० स्त्री०) उग्रसेन की एक कन्या का नाम।
शूरविद्या-(स०स्त्री०,युद्ध करने की विद्या
शूरवीर-(स० पुं०) अतिशय योद्धा।
शूरवीरता-(हिं० स्त्री०) शौर्य, बहादुरी।
शूरसेन-(स०पु०)मथुरा के एक राजा, श्री कृष्ण के दादा (पितामह) थे।
शूरा-(हिं०पु०) सूर्य।
शूर्प-(स०पु०नपु०) गेंहू चावल आदि पछोड़ने का पात्र, सूप, बत्तीस सेर का एक प्राचीन परिमाण।
शूर्पकर्ण-(स०पु०) गणेश।
शूर्पणखा-(स० स्त्री०) रावण की बहिन एक राक्षसी।
शूर्पा-(हिं०पु०) बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।
शूर्म-(स०पुं०) लोहे की बनी हुई मूर्ति।
शूल-(स०पु०नपु०) प्राचीन समय का बरछा, मृत्यु, मौत, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से नवा योग, (वि०) तीक्ष्ण, बहुत तेज़ (नपु०) लोहे की कील, शूली जिस पर चढ़ा कर प्राचीन काल में प्राणदण्ड दिया जाता था, त्रिशूल, व्यथा, एक प्रकार की तीव्र वेदना जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है, टीस, पीड़ा, झंडा, पताका।
शूलग्रह-(स० पु०) शिव।
शूलघ्न-(स०वि०) शूल को हटाने वाला।
शूलधन्वा-(स०पु०) शिव, महादेव।
शूलधर, शूलधारी-(स० पु०) शिव।
शूलधरा-(स०स्त्री०) दुर्गा।
शूलधारी-(स०पु०) महादेव।
शूलना-(हि०पु०)शूल के समान कष्ट देना
शूलपाणि-(स० पु०) शिव, महादेव।
शूलप्रोत-(स० पु०) नरक के एक भाग का नाम।
शूलहस्त, शूलपानि-(हिं०पु०)महादेव।
शूलयोग-(स० पु०) फलित ज्योतिष में एक योग का नाम।
शूला-(सं०स्त्री०)वेश्या,रंडी,लोहे की छड़।
शूलाग्र-(स०नपु०) शूल का अग्र भाग।
शूलाङ्क-(स०पु०) शिव, महादेव।
शूलि-(स०पु०) शिव, महादेव।
शूलिक-(स०नपु०)शशक,खरगोश, खरहा
शूलिका-(स० स्त्री०) सीकचे में गोद कर भूना हुआ मास, कबाब।
शूलिनी-(स०स्त्री०) दुर्गा का एक नाम।
शूलिमुख-(स०पुं०) एक नरक का नाम।
शूली-(स०स्त्री०) देखो शूल।
शृगाल-(स०पु०) गीदड़, सियार, खल, भीरु, डरपोक।
शृगालघण्टी-(स०स्त्री०) तालमखाना।
शृगाल जम्बु-(स०पुं०) तरबूज़।
शृगालिका, शृगाली-(स०स्त्री०)सियारिन
शृङ्खल-(स०पु०) कमर में पहरने की मेखला, करधनी, कथकड़ी, बेड़ी, नियम, रीति।
शृङ्खलता-(स० स्त्री०) क्रम बद्ध होने का भाव।
शृङ्खला-(स०स्त्री०) क्रम, सिलसिला, मेखला, करधनी, तागड़ी, श्रेणी, कतार, नियम।
शृङ्खलाबद्ध-(स० वि०) सिलसिलेवार, सिकड़ी में बधा हुआ।
शृङ्खलित-(स० वि०) क्रमबद्ध, सिलसिलेवार, सिकड़ी में बधा हुआ।
शृङ्ग-(स०स्त्री०) पर्वत का शिखर, चोटी, कगूरा, गौ भैंस आदि पशुओं की सींग चिह्न, निशान, पानी का फौवारा, प्रमुख प्रधानता, कमल, सोंठ अदरख, स्तन, छाती (वि०) तीव्र, तेज़।
शृङ्गकन्द-(स० पु०) सिंघाड़ा।
शृङ्गकूट-(स०पु०) एक पर्वत का नाम।
शृङ्गपुर-(स० नपुं०) एक पर्वत का नाम।
शृगरुह-(स० पु०) सिंघाड़ा।
शृङ्गवेर-(स०नपु०) सोंठ, अदरख।
शृङ्गवेरपुर-(स०नपु०) गुहक चाण्डाल की पुरी का नाम।
शृङ्गाट, शृङ्गाटक-(स०नपु०) चतुष्पथ, चौरहा, चौमुहानी, सिंघाड़ा, गोखरू।
शृङ्गार-(स०नपु०) सिन्दूर, लवंग (पु०) रति मैथुन, नाटक आदि का प्रधान रस जिसका आविर्भाव स्त्री पुरुष के संभोग करने की कामना पर होता है, इसमें नायक नायिका परस्पर मिलने पर होने वाले सुख का निदर्शन रहता है, इसके सयोग और वियोग दो प्रधान भेद हैं, स्त्रियों का आभूषण, वस्त्र आदि से शरीर को सुशोभित करना, सजावट, शोभा देनेवाली वस्तु, भक्ति का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने इष्ट देवता को पति और अपने को पत्नी मानता है।
शृङ्गारक-(स० नपु०) सिन्दूर, सेंदुर।
शृङ्गारजन्म-(स० पु०) कामदेव।
शृङ्गारना-(हिं० क्रि०) शृंगार करना, सजाना।
शृङ्गार भूषण-(स० नपु०) सिन्दूर, हरताल।
शृङ्गार मण्डप-(स०नपु०) वह स्थान जहा पर नायक और नायिका काम क्रीड़ा करते हैं।
शृङ्गार योनि-(स०पु०) मदन, कामदेव।
शृङ्गारवेश-(स० पु०) सिंगार के लिये सजावट।

शृङ्गारहाट-(हि० स्त्री०) वेश्याओं के रहने का स्थान।
शृङ्गारिक-(स०वि०) शृङ्गार सम्बन्धी।
शृङ्गारिणी-(स० स्त्री०) शृगार करने वाली स्त्री, एक वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं, इसका दूसरा नाम स्रग्विणी, मोहन या लक्ष्मी धरा है।
शृङ्गारित-(स०वि०) शृगार किया हुआ, सवारा हुआ।
शृङ्गारिया-(हि० पु०) देवी देवता का शृगार करने वाला, बहुरूपिया।
शृङ्गारुहा-(स० स्त्री०) सिंघाड़ा।
शृङ्गालिका-(सं० स्त्री०) विदारी कन्द।
शृङ्गि-(स० पु०) सिंगी मछली।
शृङ्गिका-(सं० स्त्री०) मेढासिंघी, पीपल, अतीस।
शृङ्गी-(सं० स्त्री०) काकड़ासिंघी, अतीस, वरगद, मजीठ, आमला, शिव, महादेव, सींघ का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, पर्वत, वृक्ष, एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे।
शृङ्गीगिरि-(स०पु०) एक पर्वत का नाम।
शृङ्गीरि मठ-(स०पु०) शकराचार्य के एक प्रसिद्ध मठ का नाम।
शृत-(स० पु०) क्वाथ, काढा।
शृधू-(स० पु०) मलद्वार, गुदा, (वि०) खराब।
शृष्टि-(स०पु०) वसु के आठ भाइयों में से एक।
शेख़-(अ० पु०) मोहम्मद साहब के वशजो की उपाधि, मुसलमान उपदेशक, पीर, बड़ा बूढ़ा।
शेख़चिल्ली-(अ० पु०) एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके सबध में बहुत सी हँसाने वाली विलक्षण कहानिया कही जाती हैं, गप्प हाकने वाला मूर्ख।
शेखर-(स० पुं०) शिरो भूषण, किरीट, मुकुट, सिरा, चोटी, माथा, श्रेष्ठता वाचक शब्द, पिंगल मे टगण का एक भेद।
शेखरित-(स०वि०) मुकुट युक्त।
शेखरी-(स० स्त्री०) लवग, सहिजन की जड़।
शेखावत-(हि०पुं०) राजपूत क्षत्रियों का एक भेद।
शेखी-(फा०स्त्री०) अहकार, गर्व, घमड, शान, डींग, अभिमान भरी बात, शेखी मारना-बढबढ कर बातें करना।
शेखीबाज़-(फा० वि०) अभिमानी, घमडी।
शेफ-(स० सं०,नपु०) शिश्न, लिङ्ग।
शेयर्-(अ० पु०) हिस्सा, साझा, भाग, किसी व्यवसाय में लगी हुई पूजी का अलग हिस्सा।
शेर-(फा० पु०) व्याघ्र, बाघ, अत्यन्त वीर मनुष्य, (अ० पु०) फारसी या उर्दू कविता के दो चरण।
शेरगुलाबी-(फा०पु०) गहरा गुलाबी रग।
शेरदहां-(फा० पु०) पुराने ढग की एक प्रकार की बदूक।
शेरपंजा-(हि०पु०)बघनखा नामक अस्त्र
शेरबच्चा-(हिं० पु०) पराक्रमी पुरुष, एक प्रकार की छोटी बदूक।
शेरबबर-(फा०पु०) सिंह, केसरी।
शेरमर्द-(फा०वि०) वीर, बहादुर।
शेरमर्दी-(फा०स्त्री०) वीरता।
शेरवानी-(हिं० स्त्री०) घुटने तक का लबा एक प्रकार का अगा।
शेलक-(स० पु०) लिसोड़ा।
शेव-(स०पु०) मेढ्र, लिंग, सर्प, उन्नति, उचाई, (नपु०) सुख (अ०पु०) हजामत बनाने का काम।
शेष-(स०पु०) अनन्त, सर्पराज, अवशिष्टता, छप्पय छन्द का एक भेद, समाप्ति, अन्त, परिणाम, अवशिष्ट, बाकी, स्मारक वस्तु,वध, नाग, लक्ष्मण, दिग्गज, बलराम, परमेश्वर, घटाने से बची हुई सख्या, बाकी।
शेषता-(स०स्त्री०) शेषत्व, उपकारित्व।
शेषधर-(स०पु०) शिव, महादेव।
शेषनाग-(स०पु०) अनन्त।
शेष भाग-(स०पु०) बचा हुआ हिस्सा।
शेषभूषण-(स० पुं०) विष्णु।
शेषराज-(स० पु०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो यगण होते हैं।
शेषरात्रि-(स० स्त्री०) रात का पिछला पहर।
शेषवत्-(स०अव्य०) कार्य देखकर कारण का अनुमान।
शेषशायी-(स०पु०) शेष नाग पर शयन करने वाले विष्णु।
शेषांश-(स० पु०) बचा हुआ अश या भाग।
शेषा-(स०स्त्री०) देवता को चढा हुआ नैवेद्य जो प्रसाद रूपमें बाटा जाता है।
शेषोक्त-(स०वि०) अन्त में कहा हुआ।
शैक्य-(सं० नपु०) सिकहर, छीका (वि०) दृढ।
शैखरेय-(स०पु०) अपामार्ग, चिचिड़ा।
शैघ्र्य-(स० नपु०) शीघ्रता, जल्दी।
शैतान-(अ०पु०) ईश्वर के सन्मार्ग का विरोध करने वाली शक्ती या देवता, भूत, प्रेत, दुष्ट, शैतान की आँत-कोई बहुत लबी वस्तु।
शैतानी-(अ० स्त्री०) दुष्टता, पाजीपन, (वि०) शैतान सबधी, दुष्टता पूर्ण।
शैत्य-(स०नपु०) शीत, ठढक।
शैथिल्य-(स०नपु०) शिथिलता, ढिलाई, सुस्ती।
शैनेय-(स०पु०) श्रीकृष्ण के एक सारथी का नाम।
शैल-(स० नपु०) चट्टान, रसवत, शिलाजीत (पु०) पर्वत, पहाड़ (वि०) पथरीला, कठोर।
शैलकन्या-(स०स्त्री०) पार्वती।
शैलकुमारी-पार्वती।
शैलगगा-(स०स्त्री०) गोवर्धन पर्वत की एक नदी जिसमें श्री कृष्ण ने सब तीर्थों का आवाहन किया था।
शैलगुरु-(स०पु०) हिमालय पर्वत।
शैलजा-(स०स्त्री०) पार्वती, गजपिप्पली, दुर्गा।
शैलतटी-(स०स्त्री०) पहाड़ की तराई।
शैलतनया-(स०स्त्री०) पार्वती।
शैलदुहिता-(स०स्त्री०) पार्वती।

शैलधर-(सं०पु०) श्री कृष्ण ।
शैलनन्दिनी-(स०स्त्री०) पार्वती ।
शैलपति-(सं०पु०) हिमालय ।
शैलपथ-(सं०पु०) पहाड़ का रास्ता ।
शैलपुत्री-(सं० स्त्री०) पार्वती, गगा, नव दुर्गा में से एक ।
शैलबीज-(स०पु०) भिलावा ।
शैलरन्ध्र-(स०नपु०) पहाड़ी गुफा ।
शैलराज-(स०पु०) हिमालय पर्वत ।
शैलशिखा-(स० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते है ।
शैलशृंग-(स०पु०) पर्वत का शिखर ।
शैलसम्भव-(स०पु०) शिलाजीत ।
शैलसुता-(स०स्त्री०) पार्वती, दुर्गा ।
शैलसेतु-(स० पु०) पत्थर का पुल ।
शैलाग्र-(स०नपु०) पर्वत का शिखर ।
शैलाट-(सं०पु०) पहाड़ी आदमी ।
शैलादि-(सं०पुं०) शिव के गण ।
शैलाधिराज-(स०पुं०) हिमालय पर्वत ।
शैलासा-(स०स्त्री०) पार्वती ।
शैलाह्व-(स० नपु०) शिलाजीत ।
शैली-(स० स्त्री०) चाल ढाल, ढग, रीति, प्रथा, प्रणाली, परिपाटी, रस्म, रेवाज, वाक्य रचना का प्रकार, कड़ाई, सख्ती, पत्थर की मूर्ति ।
शलू-(हिं० पु०) लिसोढ़ा, एक प्रकार की चटाई ।
शैलूक-(स० पु०) कमलदण्ड, भसींड ।
शैलूष-(स०पु०) अभिनय करने वाला, नट, वेल का वृक्ष, धूर्त मनुष्य, गन्धर्वों के स्वामी ।
शैलूषिकी-(स०स्त्री०) नट जाति की स्त्री
शैलेन्द्र-(सं०पुं०) शैलराज, हिमालय ।
शैलेय-(स० नपु०) तालपर्णी, मुसली, सेंधा नमक (पु०) सिंह, भौरा, (वि०) पहाड़ी, पथरीला, पत्थर के समान ।
शैलेयी-(स० स्त्री०) पार्वती ।
शैलेश-(स० पु०) हिमालय पर्वत ।
शैलेश्वर-(स०पु०) शिव, महादेव ।
शैल्य-(स० वि०) पथरीला, कड़ा, कठोर ।
शैव-(स० नपु०) धतूरा (वि०) शिव सबधी, शिव का, (पु०) शिव का उपासक, पाशुपत अस्त्र ।
शैवपत्र-(स० नपु०) विल्वपत्र ।
शैवल-(स० नपु०) पदमाख (पुं०) सेवार, एक देश का नाम ।
शैवालिनी-(स०स्त्री०) नदी ।
शैवाल-(स० नपुं०) जलनील, सेवार ।
शैवी-(स० स्त्री०) पार्वती, मनसा नाम की देवी, मगल, कल्याण ।
शैव्य-(स०वि०) शिव सबधी, शिव का ।
शैव्या-(स० स्त्री०) राजा हरिश्चन्द्र की रानी का नाम ।
शैशव-(स०नपु०) बाल्यावस्था, बचपन लड़कपन (वि०) बचपन का ।
शैशिर-(स० वि०) शिशिर सबधी, शिशिर में उत्पन्न ।
शोक-(स० पु०) वह मनोविकार जो अनिष्ट प्राप्ति से अथवा इष्ट नाश से उत्पन्न होता है, शोच, खेद ।
शोककर-(स०वि०) शोक जनक ।
शोककारक-(स० वि०) शोक ।
शोकनाश-(सं० पुं०) शोक का नाश ।
शोकमय-(स०वि०) शक स्वरूप ।
शोकवत्-(स० वि०) शोकयुक्त, शोक उत्पन्न करने वाला ।
शोकहर-(स०पु०) एक छन्द का नाम ।
शोकहारी-(सं० वि०) शोक को दूर करने वाला ।
शोकाकुल-(स० वि०) शोक से व्याकुल ।
शोकातुर-(स० वि०) दुःख या शाक से व्याकुल ।
शोकार्त-(स० वि०) शोकाकुल ।
शोख-(फ़ा० वि०) धृष्ट, ढीठ, नटखट, चपल, चचल, गहरे रग का, चमकीला ।
शोखी-(फ़ा० स्त्री०) धृष्टता, चपलता ।
शोच-(हिं०पु०) चिन्ता, दुःख, अफसोस ।
शोचनीय-(स० वि०) शोक करने योग्य, बहुत दीन ।
शोचितव्य-(सं०वि०) शोक करने योग्य।
शोच्य-(स० वि०) चिन्ता करने योग्य ।
शोण-(स० नपुं०) सिन्दूर, रुधिर, अग्नि, लाल रग, ललाई, सोना, एक नदी का नाम, मगल ग्रह ।
शोणता-(स० स्त्री०) रक्तता, ललाई ।
शोणपुष्पक-(सं० पु०) कचनार ।
शोणभद्र-(स०पुं०) सोन नदी ।
शोणमणि-(स० स्त्री०) पद्मराग मणि, मानिक ।
शोणित-(स०नपु०) रक्त, लोहू, कुकुम, केसर, ईगुर (वि०) लाल रग का, लाल ।
शोणितोत्पल-(स०नपु०) लाल कमल।
शोणितोद-(सं०पु०) एक यक्ष का नाम ।
शोथ-(सं० पु०) किसी अग में फूलन होना, सूजन ।
शोथक-(स०पु०) शोथ रोग, मुरदासख ।
शोध-(स०पु०) दुरुस्ती, सफाई, परीक्षा, जाच अनुसन्धान, अदा या बेबाक होना, खोज, ढूँढ ।
शोधक-(स० वि०) खोजने या ढूंढने वाला, सुधारक (पु०) वह सख्या जिसके घटाने से वर्गमूल ठीक ठीक निकले ।
शोधन-(स० नपु०) शौच, शुद्धता, पवित्रता, प्रायश्चित्त, धातुओं का औषधि बनाने के लिये शुद्ध करना, घाव धोना, लिखे हुए कागजों को प्रमाणित करना, हटा कर साफ करना, आचरण सुधारने के लिये दण्ड देना, खोजना, ढूढना, शुद्ध करना, छान-बीन, जाच, शरीर की धातुओं को वमन, विरेचन आदि से शुद्ध करना ।
शोधना-(हिं०क्रि०) शुद्ध करना, साफ करना, औषधि बनाने के लिये धातु आदि का संस्कार करना, खोजना, ढूँढ़ना, सुधारना, ठीक करना ।
शोधनी-(स० स्त्री०) सम्मार्जिनी, झाड़ू, बोहारू ।
शोधनीय-(स०वि०) शुद्ध करने के योग्य ।
शोधवाना-(हिं०क्रि०) शोधने का काम दूसरेसे कराना, दुरुस्त करना, ढुंढवाना
शोधित-(स० वि०) परिष्कृत, साफ किया हुआ ।
शोधैया-(हि० वि०) शोधने वाला,

सुधारक।
शोफ-(सं०पु०) शोथ रोग, सूजन।
शोबदा-(अ०पु०) इन्द्रजाल, नजरबन्दी।
शोभ-(सं०पु०) शोभन, शोभा, (वि०) शोभा युक्त, सुन्दर।
शोभन-(सं० नपु०) शुभ, कल्याण, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक, धर्म, पुण्य, सौन्दर्य, एक मातृक छन्द का नाम, मालकेश राग का एक भेद, आभूषण, शिव का एक नाम (वि०) उत्तम, रमणीय, उचित, सुहावना।
शोभना-(सं० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी, गोरोचन, सुन्दर स्त्री, (हि० क्रि०) सुशोभित होना।
शोभनीय-(सं०वि०) शोभा के योग्य।
शोभा-(सं०स्त्री०) दीप्ति, चमक, कान्ति, द्युति, छवि, सुन्दरता, छटा, सजावट, बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त, हल्दी, गोरोचन, चमेली।
शोभाकर-(सं०वि०) शोभा करने वाला।
शोभाञ्जन-(सं० पु०) सहजन का वृक्ष।
शोभान्वित-(सं० वि०) शोभा युक्त।
शोभायमान-(सं० वि०) सुन्दर, सोहाता हुआ।
शोभावती-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
शोभित-(सं०वि०) शोभा युक्त, विभूषित।
शोर-(फा० पुं०) जोर की आवाज, गुलगपाड़ा।
शोरबा-(फा० पु०) किसी उबाली हुई वस्तु का पानी, झोल, जूस, पके हुए मांस का पानी।
शोरा-(फा०पु०) एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में से निकाला जाता है, क़लमी शोरा-साफ किया हुआ बढ़िया शोरा।
शोरापुश्त-(फा०वि०) लड़ाका, झगड़ालू।
शोरिश-(फा०स्त्री०) हलचल, बलवा, दगा
शोला-(हिं०पु०) एक प्रकार का छोटा वृक्ष, (अ०पुं०) आगकी लपट, ज्वाला।
शोशा-(फा० पु०) निकली हुई नोक, कोई अद्भुत बात।
शोष-(सं० पु०) सूखने का भाव, शोषण, यक्ष्मा, रोग, बच्चों का सुखण्डी का रोग।
शोषक-(सं० वि०) सोखने वाला, घुलने वाला, नाश करने वाला।
शोषण-(सं० नपु०) सोखना, सुखाना, खुश्क करना, घुलाना, क्षीण करना, नाश करना।
शोषणीय-(सं०वि०) सुखाने योग्य।
शोषित-(सं० वि०) सोखा हुआ, सुखाया हुआ।
शोहदा-(अ० पु०) व्यभिचारी, लम्पट, गुण्डा, बदमाश छैला।
शोहदापन-(अ०पु०) गुण्डापन, छैलापन
शोहरत-(अ०स्त्री०) प्रसिद्धि, नामवरी, खूब फैली हुई खबर।
शोहरा-(अ० पु०) प्रसिद्धि, धूमधाम।
शौक़-(अ०पु०) तीव्र अभिलाषा, प्रबल लालसा, आकांक्षा, प्रवृत्ति, व्यसन, चसका, चाट, शौक करना-किसी पदार्थ का उपभोग करना, शौकसे-आनन्द से।
शौक़त-(अ० स्त्री०) ठाटबाट, शान।
शौकिया-(अ०क्रि०वि०) शौक पूरा करने के लिये, प्रवृत्ति के वश में होकर।
शौक़ीन-(अ० पु०) शौक करने वाला, चाव रखने वाला, सर्वदा बनाठना रहने वाला, रंडीबाज, तमाशबीन।
शौक़ीनी-(अ०स्त्री०) ऐयाशी, रंडीबाज़ी, तमाशबीनी, शौकीन होने का भाव या काम।
शौक्तिक-(सं०नपु०) मुक्ता, मोती।
शौक्तिका-(सं० स्त्री०) सीप।
शौक्तेय-(सं०वि०) शुक्ति सबंधी।
शौङ्गेय-(सं० पु०) गरुड़- पक्षी, श्येन पक्षी, बाज़।
शौच-(सं० नपु०) शुचिता, पवित्रता, शास्त्र में जिन सब वस्तुओं का भोजन निषिद्ध बतलाया है उनका परित्याग, वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किये जाते हैं, पायखाना जाना।
शौचत्व-(सं० नपु०) शौच कार्य।
शौचविधि-(सं० स्त्री०) मलमूत्र आदि का त्याग करना।
शौचाचार-(सं०पु०) शुद्धिकर्म।
शौचेय-(सं०पु०) रजक, धोबी।
शौटीर-(सं०पु०) त्यागी, वीर, बहादुर
शौण्ड-(सं०वि०) मद्य पीकर मतवाला, प्रगल्भ।
शौण्डता-(सं० स्त्री०) मत्तता, मस्ती।
शौण्डी-(सं०स्त्री०) पिप्पली, मिर्च।
शौण्डीर-(सं०वि०) अहंकारी, घमंडी।
शौत-(हि०स्त्री०) देखो सौत।
शौन-(सं० नपु०) वह मांस जो बिक्री के लिये रक्खा हो।
शौनक-(सं० पु०) एक वैदिक आचार्य का नाम।
शौनिक-(सं०पु०) आखेट, मृगया।
शौरसेन-(सं० वि०) शूरसेन सबंधी।
शौरसेनी-(सं० स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा।
शौरि-(सं०पु०) विष्णु, शनि ग्रह, कृष्ण
शौरिप्रिय-(सं० पु०) हीरक, हीरा।
शौरिरत्न-(सं० पु०) नीलम।
शौर्य-(सं० नपुं०) शूरता, वीरता, बहादुरी।
शौल-(सं०पु०) लाङ्गल, हल की फार।
शौल्किक-(सं० पु०) शुल्क अर्थात् महसूल आदि वसूल करने वाला अफसर।
शौल्फ-(सं०नपु०) सौंफ सुलफे का साग
शौहर-(फा० पु०) स्त्री का पति, स्वामी, खाविन्द।
श्मन-(सं० नपु०) मुख, शव, मुरदा।
श्मशान-(सं० नपु०) मुर्दा जलाने का स्थान, मरघट।
श्मशानपति-(सं०पु०) शिव, महादेव।
श्मशानभैरवी-(सं० स्त्री०) दुर्गा।
श्मशानवासी-(सं०पु०) शिव, चाण्डाल
श्मशानवासिनी-(सं०स्त्री०) काली।
श्मश्रु-(सं० नपु०) मुख पर के बाल, दाढी, मूंछ।
श्मश्रुकर-(सं०पु०) हजाम।
श्मश्रुल-(सं० वि०) दाढी मूंछवाला।

श्मश्रुशेखर-(सं० पुं०) नारियल का पेड़
श्याम-(सं०वि०) काला, सावले रंग का, (पुं०) मेघ, बादल, कोयल, धतूरा, दौना, एक राग का नाम, श्रीकृष्ण का एक नाम।
श्यामक-(सं०वि०) काले रंग का।
श्यामकण्ठ-(सं० पुं०) नीलकण्ठ पक्षी, मोर, शिव, महादेव।
श्यामकर्ण-(सं० पुं०) वह सफेद घोड़ा जिसके कान काले होते हैं।
श्यामजीरा-(हिं० पुं०) काला जीरा, एक प्रकार का महीन धान।
श्यामटीका-(हिं० पुं०) काला टीका जो बच्चों को नज़र बचाने के लिये लगाया जाता है।
श्यामता-(सं०स्त्री०) कृष्णता, कालापन, मलिनता, उदासी।
श्यामपर्ण-(सं०पुं०) सिरिस का पेड़।
श्यामपूरबी-(हिं० पुं०) एक प्रकार का सकर राग।
श्याममञ्जरी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं।
श्याममृग-(सं० पुं०) काला हरिन।
श्यामल-(सं०वि०) काले रंग का, सावला (पुं०) एक प्रकार का बहुत ज़हरीला बिच्छू।
श्यामलता-(सं० स्त्री०) कालापन, सावलापन।
श्यामला-(सं० स्त्री०) पार्वती, जामुन, कस्तूरी।
श्यामसुन्दर-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
श्यामा-(सं०स्त्री०) बाझ स्त्री, राधा का एक नाम, एक गोपी का नाम, सोलह वर्ष की तरुणी, कालिका देवी, रात, छाया, यमुना, रात्रि, कोयल, सावाँ नामक अन्न, तुलसी, कमलगट्टा, कस्तूरी, हल्दी, हरीतकी, हर्रे।
श्यामाङ्ग-(सं०वि०) सावले रंग का।
श्याल, श्यालक-(सं० पुं०) पत्नी का भाई, साला, भगिनीपति, बहनोई, सियार, गीदड़।
श्यालिका-(सं०स्त्री०) पत्नी की बहिन, साली।
श्येन-(सं०पुं०) बाज नामक पक्षी।
श्येनगामी-(सं०वि०) तेज़ जाने वाला।
श्येनिका-(सं० स्त्री०) बाज पक्षी की मादा, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
श्येनी-(सं०स्त्री०) मादा बाज, कश्यप की एक कन्या का नाम।
श्योणाक, श्योनाक-(सं०पुं०) सोनापाठा नामक क्षुप, लोध।
श्रग-(हिं०पुं०) देखो श्रृङ्ग।
श्रृङ्ग-(सं०पुं०) गमन, जाना।
श्रद्धान-(सं०वि०) श्रद्धायुक्त, श्रद्धालु।
श्रद्धा-(सं०स्त्री०) बड़ों के प्रति पूज्यभाव, स्पृहा, आदर, आप्त पुरुषों तथा शास्त्रादि में दृढ़ निश्चय, बड़ों के वचनों में विश्वास, आस्था, चित्त की प्रसन्नता, भक्ति, कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि को ब्याही थी।
श्रद्धातव्य-(सं०वि०) श्रद्धा करने योग्य
श्रद्धादेय-(सं० वि०) श्रद्धा पूर्वक दिया जाने वाला।
श्रद्धामय-(सं०स्त्री०) श्रद्धा स्वरूप।
श्रद्धालु-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके मन में गर्भावस्था के कारण अनेक प्रकार की अभिलाषायें हों (वि०) श्रद्धायुक्त, श्रद्धावान्।
श्रद्धावान्-(हिं० पुं०) श्रद्धायुक्त, जिसके मन में श्रद्धा हो।
श्रद्धास्पद-(सं०वि०) श्रद्धापात्र, पूजनीय।
श्रद्धेय-(सं०वि०) श्रद्धा के योग्य।
श्रम-(सं०पुं०) प्रयास, अभ्यास, परिश्रम, मेहनत, थकावट, शास्त्रों का अभ्यास, तपस्या, चिकित्सा, व्यायाम, कसरत, स्वेद, पसीना, साहित्य के सचारी भावों में से एक।
श्रमकण-(सं०पुं०) पसीने का बूंद।
श्रमकर-(सं०वि०) परिश्रम करने वाला, मेहनती।
श्रमघ्न-(सं० वि०) श्रम को हटाने वाला
श्रमच्छिद्-(सं० वि०) श्रम को दूर करने वाला।
श्रमजल-(सं० नपुं०) पसीना।
श्रमजित-(सं०वि०) परिश्रम करने पर न थकने वाला।
श्रमजीवी-(सं० वि०) मेहनत करके पेट पालने वाला।
श्रमण-(सं०पुं०) बौद्ध सन्यासी, नीच कर्म करने वाला, नीच कर्म जीवी (वि०) घृणित
श्रमबिन्दु-(सं०पुं०) पसीने के बूंद।
श्रमवारि-(सं०नपुं०) स्वेद जल पसीना।
श्रमविनोद-(सं०पुं०) परिश्रम से होने वाला सुख।
श्रमविभाग-(सं० पुं०) परिश्रम या कार्य का विभाग।
श्रमशीकर-(सं० पुं०) श्रमकण, पसीना।
श्रमसाध्य-(सं० वि०) परिश्रम से करने योग्य।
श्रमसिद्ध-(सं०वि०) परिश्रम द्वारा प्राप्त
श्रमसीकर-(सं०पुं०) श्रमबिन्दु, पसीना
श्रमस्थान-(सं० नपुं०) कारखाना, कवायद करने का स्थान।
श्रमाम्बु-(सं०नपुं०) श्रमवारि, पसीना।
श्रमित-(सं० वि०) श्रान्त, शिथिल, थका हुआ।
श्रमी-(हिं०वि०) परिश्रमी, श्रमजीवी।
श्रयण-(सं० नपुं०) आश्रय।
श्रवण-(सं०नपुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान।
श्रवणगोचर-(सं०पुं०) कर्णगोचर।
श्रवणपथ-(सं०पुं०) कान।
श्रवणविद्या-(सं० स्त्री०) संगीत शास्त्र।
श्रवणविभ्रम-(सं० पुं०) सुनने की भूल।
श्रवणविषय-(सं० पुं०) देखो श्रवणगोचर
श्रवणव्याधि-(सं०स्त्री०) कान का रोग।
श्रवणहारी-(सं० वि०) जो सुनने में अच्छा जान पड़े।
श्रवणा-सं०स्त्री०) अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से बाईसवा नक्षत्र।
श्रवणीय-(सं०वि०) सुनने योग्य।
श्रवन्-(हिं०पुं०) श्रवण, कान।
श्रवना-(हिं०क्रि०) गिराना, बहाना।
श्रविष्ठा-(सं० स्त्री०) घनिष्ठा नक्षत्र।
श्रविष्ठारमण-(सं० पुं०) चन्द्रमा।

श्रव्य-(सं०वि०)श्रोतव्य, जो सुना जा सके
श्राद्ध-(सं० नपुं०) श्रद्धा पूर्वक किया हुआ कार्य, वह कर्म जो शास्त्र विधि के अनुसार पितरों के उद्देश से किया जाता है।
श्राद्धकर्ता-(सं० वि०) श्राद्ध करने का अधिकारी।
श्राद्धकर्म-(सं० नपुं०) श्राद्ध कार्य।
श्राद्धकाल-(सं० पुं०) अशौच के अन्त का दूसरा दिन।
श्राद्धत्व-(सं० नपुं०) श्राद्ध का भाव या धर्म।
श्राद्धपक्ष-(सं० पुं०) पितृपक्ष।
श्राद्धभोक्ता-(सं० पुं०) श्राद्ध में भोजन करने वाला ब्राह्मण।
श्राद्धिक-(सं०पुं०) श्राद्ध संबंधी द्रव्यादि
श्रान्त-(सं०पुं०) जितेन्द्रिय (वि०) खिन्न, दुःखी, थका हुआ, निवृत्त, श्रमयुक्त, क्लान्त।
श्रान्ति-(सं० स्त्री०) श्रम, मेहनत, खेद, दुःख।
श्राप-(हिं०पुं०) देखो शाप।
श्राम-(सं०पुं०) मण्डप, घर, काल, समय
श्राव-(सं०पुं०) श्रवण, कान।
श्रावक-(सं०पुं०) बौद्ध या जैन सन्यासी, नास्तिक, कौवा, शिष्य, दूर का शब्द।
श्रावग-(हिं० पुं०) देखो श्रावक।
श्रावगी-(हिं०पुं०) जैनमतानुयायी, जैनी
श्रावण-(सं०पुं०) कान से सुना हुआ शब्द, वर्ष का चौथा महीना जिसकी पूर्णिमा तिथि को श्रवण नक्षत्र रहता है
श्रावणा-(सं० स्त्री०) सुदर्शना नामक वृक्ष, भूकदम्ब।
श्रावणी-(सं० स्त्री०) श्रवण नक्षत्र युक्त पौर्णमासी, श्रावण मास की पूर्णिमा, इस दिन ब्राह्मणो का 'रक्षाबन्धन' या 'सलोनो' नामक त्योहार होता है।
श्रावयितव्य-(सं०वि०) सुनाने योग्य।
श्रावस्ती-(सं०स्त्री०) एक प्राचीन जनपद और उसकी राजधानी, इसको आज-कल सहेत महेत कहते हैं।
श्राविता-(हिं०वि०) श्रोता, सुनने वाला
श्राव्य-(सं०वि०) श्रोतव्य, सुनने लायक
श्रित-(सं० वि०) सेवित, आश्रित, पका हुआ।
श्रियमन्या-(सं० स्त्री०) अपने को लक्ष्मी समझने वाली।
श्रिय-(सं०स्त्री०) मंगल, कल्याण,शोभा।
श्रिया-(सं०स्त्री०) विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी
श्री-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, कमला, कीर्ति, यश, पद्म, कमल, वृद्धि, सिद्धि, बेल का वृक्ष, मति, ऐश्वर्य, अधिकार, उपकरण, धर्म अर्थ और काम, सरस्वती, प्रभा, शोभा, ऋद्धि और सिद्धि नामक औषधि, कान्ति, चमक, सफेद चन्दन, बिन्दी नामक स्त्रियों का आभूषण, एक आदर सूचक शब्द जो नाम के आगे लिखा जाता है, वैष्णवों का एक सम्प्रदाय, एक प्रकार का पद, चिह्न, (पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, कुबेर, एकाक्षर छन्द विशेष, एक राग का नाम।
श्रीकण्ठ-(सं० पुं०) शिव, महादेव, एक पक्षी का नाम।
श्रीकर-(सं०नपुं०) लाल कमल, विष्णु।
श्रीकरण-(सं०नपुं०) लेखनी, कलम, कायस्थों की एक शाखा।
श्रीकान्त-(सं० पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु।
श्रीकाम-(सं० वि०) धन धान्य की कामना करने वाला।
श्रीकीर्ति-(सं० पुं०) ताल का एक भेद
श्रीकृष्ण-(सं० पुं०) द्वारकानाथ, वासुदेव, कृष्ण।
श्रीक्षेत्र-(सं० पुं०) जगन्नाथ पुरी तथा उसके आस पास के प्रदेश।
श्रीखण्ड-(सं० नपुं०) हरिचन्दन।
श्रीखण्डशैल-(सं०पुं०) मलय पर्वत।
श्रीगदित-(सं० नपुं०) साहित्य में उपरूपक का एक भेद, इसका दूसरा नाम श्रीरसिका है।
श्रीगन्ध-(सं० नपुं०) सफेद चन्दन।
श्रीगर्भ-(सं०पुं०) विष्णु, खड्ग, तलवार
श्रीगेह-(सं०पुं०) पद्म, कमल।
श्रीचक्र-(सं० नपुं०) त्रिपुरासुन्दरी का पूजा यन्त्र विशेष, इन्द्र का रथचक्र।
श्रीटङ्क-(सं० पुं०) संगीत में एक प्रकार का राग।
श्रीतरु-(सं० पुं०) साल का पेड़,
श्रीताल-एक प्रकार का ताल वृक्ष।
श्रीदयित-(सं० पुं०) विष्णु।
श्रीदाम-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण के एक ग्वाल सखा का नाम।
श्रीधर-(सं०पुं०) शालग्राम चक्र, विष्णु (वि०) तेजस्वी, तेजवान्।
श्रीनाथ-(सं०पुं०) विष्णु।
श्रीनिकेत-(सं०पुं०) लाल कमल, सुवर्ण, सोना, वैकुण्ठ।
श्रीनिधि-(सं०पुं०) विष्णु।
श्रीनिकेतन-(सं०पुं०) विष्णु, वैकुण्ठ।
श्रीनिधि-(सं० पुं०) विष्णु।
श्रीनिवास-(सं० पुं०) लक्ष्मी का निवास, विष्णु।
श्रीपञ्चमी-(सं० स्त्री०) माघ शुक्ला पञ्चमी, वसन्तपचमी।
श्रीपति-(सं०पुं०) विष्णु, कृष्ण, कुबेर, राजा, नारायण।
श्रीपथ-(सं० पुं०) राजमार्ग, बड़ी और चौड़ी सड़क।
श्रीपर्ण-(सं० नपुं०) पद्म, कमल।
श्रीपाद-(सं० पुं०) पूज्यपाद, वह जो चरण पूजने योग्य हो।
श्रीपुट-(सं०पुं०) एक प्रकार का छन्द।
श्रीपुत्र-(सं०पुं०) कामदेव, घोड़ा।
श्रीप्रद-(सं०वि०) ऐश्वर्य देने वाला।
श्रीप्रदा-(सं० स्त्री०) राधा।
श्रीप्रसून-(सं०नपुं०) लवंग, लौंग।
श्रीप्रिय-(सं० नपुं०) हरताल।
श्रीफल-(सं०पुं०)बेल का वृक्ष, आँवला।
श्रीफला-(सं० स्त्री०) करेली, आमला।
श्रीबन्धु-(सं० पुं०) अमृत।
श्रीबीज-(सं० पुं०) ताड़ का वृक्ष।
श्रीभक्ष-(सं० पुं०) देवता के सामने रखने का मधुपर्क।
श्रीभानु-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
श्रीमञ्जरी-(सं० स्त्री०) तुलसी, सुरसा।

श्रीमत्-(स०वि०) ऐश्वर्यशाली, धनवान्, श्रीयुक्त, सुन्दर (पु०) तिल का पौधा, विष्णु, पीपल का पेड़, शिव, कुबेर।
श्रीमती-(स० स्त्री०) स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द, राधा, लक्ष्मी।
श्रीमन्त-(स० पु०) एक प्रकार का आभूषण, स्त्रियों के सिर के बीच की माग (वि०) धनवान्, धनाढ्य।
श्रीमय-(स० पु०) श्रीयुक्त, विष्णु।
श्रीमलापहा-(स०स्त्री०) तमाखू।
श्रीमहिमन्-(स० पु०) शिव, महादेव।
श्रीमान्-(हि०वि०) देखो श्रीमत्, धनवान्
श्रीमाल-(स० पु०) पश्चिम भारत के वैश्यों की एक जाति।
श्रीमाला-(स० स्त्री०) गले में पहरने का एक आभूषण।
श्रीमुख-(स० पु०) एक संवत्सर का नाम, (नपु०) सुन्दर मुख।
श्रीमूर्ति-(स०स्त्री०) विष्णु की प्रतिमा।
श्रीयुक्त-(स० वि०) श्रीमान्, शोभा सम्पन्न, एक आदर सूचक विशेषण जो बड़े आदमियों के नाम के पहले लगाया जाता है।
श्रीयुत-(स०वि०) देखो श्रीयुक्त।
श्रीरङ्ग-(स० नपु०) लक्ष्मीपति, विष्णु, ताल का एक भेद।
श्रीरमण-(स० पु०) विष्णु, संगीत में एक सकर राग का नाम।
श्रीराग-(स० पु०) संगीत के मुख्य ६ रागों में से एक राग।
श्रीरूपा-(स०स्त्री०) राधा।
श्रीलाभ-(स० पु०) लक्ष्मीलाभ, सौभाग्यवृद्धि।
श्रीवत्स-(स०पु०) विष्णु के वक्षस्थल पर का अंगुष्ठ प्रमाण चिह्न जो भृगु के चरण प्रहार का चिह्न माना जाता है।
श्रीवद-(स०वि०) भावी शुभ कहने वाला।
श्रीवन्त-(स०वि०) सम्पत्तिशाली, धनाढ्य
श्रीवर्धन-(सं० पु०) शिव, एक राग का नाम।
श्रीवल्ली-(स० स्त्री०) एक प्रकार की लता जिसका व्यवहार औषधियों में होता है।
श्रीवास, श्रीवासक-(स० पु०) तारपीन का तेल, पद्म, कमल, विष्णु, शिव, देवदारु, चन्दन, गुग्गुल, धूप।
श्रीविद्या-(स० स्त्री०) त्रिपुरसुन्दरी नाम की एक महाविद्या।
श्रीवृक्ष-(स० पु०) अश्वत्थ, पीपल, बिल्ववृक्ष।
श्रीवृद्धि-(स०स्त्री०) भाग्य की वृद्धि।
श्रीसहोदर-(स० पु०) चन्द्रमा।
श्रीस्वरूपिणी-(स०स्त्री०) राधा।
श्रीहत-(स० वि०) निस्तेज, शोभारहित।
श्रीहरा-(स०स्त्री०) राधा।
श्रीहर्ष-(स०पु०) विष्णु, नारायण, संस्कृत के नैषध चरित्र महाकाव्य के प्रणेता।
श्रुत-(स० पु०) कालिन्दी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम (वि०) सुना हुआ, ज्ञात, प्रसिद्ध।
श्रुतकीर्ति-(स० स्त्री०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम जो द्रौपदी से उत्पन्न थे, कीर्तियुक्त।
श्रुतदेव-(स०पु०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
श्रुतदेवी-(स०स्त्री०) वासुकी की बहिन का नाम।
श्रुतपूर्व-(स० वि०) जो पहले सुना गया हो।
श्रुतशील-(स० वि०) पण्डित और सदाचारी।
श्रुतसेन-(स० पु०) जनमेजय के पिता का नाम।
श्रुतसेना-(सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।
श्रुतार्थ-(स० पुं०) वह अर्थ जो सुनने के साथ ही समझ में आजावे।
श्रुति-(स०स्त्री०) वेद, कर्ण, कान, सुनी हुई बात, वार्ता, बात, श्रवणा नक्षत्र, जनश्रुति, शोहरत, ध्वनि, शब्द, आवाज, अनुप्रास का एक भेद, त्रिभुज के सम कोण के सामने की भुजा, अभिधान, नाम, विद्या, विद्वत्ता।
श्रुतिकट-(स०पु०) प्रायश्चित्त।
श्रुतिकटु-(स० पु०) कठोर या कर्कश शब्द, काव्य में ऐसे शब्दों का व्यवहार
श्रुतिकथित-(स० त्रि०) वेदोक्त।
श्रुतितत्पर-(स० वि०) वेदाभ्यास में लीन।
श्रुतिधर-(स० त्रि०) जिस मनुष्य को श्लोकादि सुनते ही स्मरण हो जाता हो।
श्रुतिपथ-(स० पु०) श्रवणेन्द्रिय, वेद रूप पथ।
श्रुतिमार्ग, श्रुतिमण्डल-(स० नपु०) कर्ण, कान।
श्रुतिमाला-(स०पु०) ब्रह्मा।
श्रुतिमुख-(स० पु०) ब्रह्मा।
श्रुतिवर्जित-(स०वि०) बधिर, बहिरा।
श्रुतिवेध-(स० पु०) कर्णवेध, कनछेदन।
श्रुतिसागर-(स०पु०) विष्णु।
श्रुत्यनुप्रास-(स० पु०) अलंकार का वह भेद जहा जहा एक ही स्थान पर उच्चारण होने वाले व्यंजन अक्षर अनेक बार प्रयोग किये जावें।
श्रूयमाण-(स०वि०) जो सुना जावे।
श्रुवा-(स०स्त्री०) देखो स्रुवा।
श्रेढी-(स०स्त्री०) एक प्रकार का पहाड़ा जिसका वर्णन लीलावती में लिखा है।
श्रेणि-(स०स्त्री०) पंक्ति, कतार, आवली, परम्परा, शृंखला, सिलसिला मण्डली, समूह दल, सेना, फौज जंजीर, सिकड़ी, पानी भरने का डोल, सीढ़ी, किसी वस्तु का ऊपरी भाग।
श्रेणिका-(स०वि०) तम्बू, खेमा।
श्रेणिबद्ध-(स०पुं०) कतार बांधे हुए।
श्रेणिमत्-(स० पु०) सेनापति।
श्रेणी-(स०स्त्री०) देखो श्रेणि।
श्रेणीकृत-(स०वि०) कतार में सजा हुआ
श्रेणीधर्म-(स० पुं०) पंचायत की रीति।
श्रेणीबद्ध-(स०वि०) कतार बांधे हुए।
श्रेय-(स० नपु०) सामवेद, (हि० वि०) धर्म, पुण्य, सदाचार, मुक्ति, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, कल्याण, (त्रि०) अधिक, अच्छा यश तथा कल्याण देने

वाला, श्रेष्ठ, उत्तम ।
श्रेयस-(स० नपु०) अतिशय मङ्गल ।
श्रेयस्कर-(सं०वि०) मगलकारी, शुभ करने वाला ।
श्रेयस्करी-(स०स्त्री०) हरीतकी, हरें ।
श्रेयस्काम-(स०पु०) मगल चाहने वाला
श्रेयोमय-(स०वि०) मगलमय, शुभमय ।
श्रेष्ठ-(स० नपु०) गाय का दूध, (पु०) कुवेर, राजा, ब्राह्मण, विष्णु, महादेव (वि०) प्रशस्त, उत्तम, ज्येष्ठ, बड़ा, वृद्ध, बूढ़ा, कल्याणपात्र, पूज्य, उत्कृष्ट, मुख्य ।
श्रेष्ठतम-(स०वि०) सबमें श्रेष्ठ ।
श्रेष्ठतर-(स०वि०) वह जो दो व्यक्ति या पदार्थों में प्रधान हो ।
श्रेष्ठतः-(स०अव्य०) विशेष करके ।
श्रेष्ठता-(स० स्त्री०) विशिष्ठता, प्रधानता, उत्तमता, बड़ाई ।
श्रेष्ठलवण-(स०नपु०) सेंधा नमक ।
श्रेष्ठवृक्ष-(स०पु०) अरुण वृक्ष ।
श्रेष्ठा-(स० स्त्री०) स्थलपद्मिनी, त्रिफला ।
श्रेष्ठी-(स० पु०) प्रतिष्ठित व्यवसायी, सेठ, साहूकार ।
श्रोण-(स० पु०) पगु, खञ्ज ।
श्रोणि-(स० स्त्री०) कटिदेश, कमर, नितम्ब, चूतड़, मार्ग, पथ ।
श्रोणिकपाल-(स०नपु०) जङ्घास्थि ।
श्रोणिबिम्ब-(स०स्त्री०) करधनी ।
श्रोणिसूत्र-(स०नपु०) तलवार लटकाने का परतला कमर की करधनी ।
श्रोणी-(स०स्त्री०) कटि, कमर, नितम्ब, चूतड़ ।
श्रोत-(हि० पु०) श्रवणेन्द्रिय, कान ।
श्रोतक-(स०वि०) सुनने योग्य ।
श्रोता-(हि० पु०) सुनने वाला, कथा आदि सुनने वाला ।
श्रोत्र-(स० नपु०) कर्ण, कान, वेदज्ञान ।
श्रोत्रज्ञ-(स० वि०) श्रवण पटु ।
श्रोत्रमूल-(स०नपु०) कर्णमूल ।
श्रोत्रहीन-(स० वि०) बहिरा ।
श्रोत्रिय-(स० पु०) वह ब्राह्मण जिसने वेद का अध्ययन किया हो ।
श्रोत्री-(हि०पु०) देखो श्रोत्रिय ।
श्रोन-(हि० पु०) देखो शोण ।
श्रोनित-(हि०वि०) देखो शोनित ।
श्रौत-(स० नपु०) श्रुति सबंधी, श्रवण सबधी, वह जो वेद के अनुसार हो, यज्ञ सबंधी, तीन प्रकार की अग्नि यथा गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण, वेद विहित धर्म यथा-दान, अग्निहोत्र और यज्ञ ।
श्रौतश्रव-(स० पुं०) शिशुपाल का एक नाम ।
श्रौतसूत्र-(स०नपु०) वे सूत्र जिनका विधान यज्ञादि में होता है ।
श्रौत्रजन्म-(स०पु०) द्विजों का उपनयन सस्कार ।
श्लक्ष्ण-(स०वि०) अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म, चिकना, मनोहर ।
श्लक्ष्णता-(स०स्त्री०) सूक्ष्मता, चिकनापन, सुन्दरता ।
श्लथ-(स०वि०) शिथिल, ढीला, दुर्बल, अशक्त, मन्द, धीमा, जो बधा न हो ।
श्लाघन-(स० वि०) अपनी प्रशसा करने वाला (नपु०) डींग हाकना ।
श्लाघनीय-(स० वि०) प्रशसनीय, श्रेष्ठ, उत्तम ।
श्लाघनीयता-(स० स्त्री०) श्लाघा, खुशामद ।
श्लाघा-(स०स्त्री०) प्रशसा, स्तुति, बड़ाई, खुशामद, चापलूसी ।
श्लाघित-(स०वि०) प्रशसित, खुशामद किया हुआ ।
श्लाघ्य-(स०वि०) श्लाघनीय, सराहने योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम ।
श्लाघ्यता-(सं० स्त्री०) श्लाघा ।
श्लिष्ट-(स०वि०) वह जिसका एक स्पष्ट तथा दूसरा अविस्पष्ट अर्थ हो, मिला हुआ, जुटा हुआ, चिपका हुआ, आलिंगित ।
श्लिष्टरूपक-(स० नपु०) वह अलकार जिसमें श्लिष्ट शब्द द्वारा रूपकालकार होता है ।
श्लिष्टाक्षेप-(स० पु०) वह अलकार जिसमें श्लिष्ट पद के प्रयोग से आक्षेप रहता है ।
श्लिष्टि-(स० स्त्री०) जोड़, मिलान, आलिंगन ।
श्लिष्टोक्ति-(स० स्त्री०) श्लेषयुक्त वाक्य कथन ।
श्लीपद-(स०नपु०)फीलपाँव नामक रोग
श्लील-(स० वि०) शुभ, मगलदायक, उत्तम ।
श्लेष-(स०पु०) सयोग मिलान, जोड़, आलिगन, वह अलकार जिसमें दो या अनेक अर्थ घटित पद हों अथवा अनेक अर्थों में प्रयुक्त हो सकते हों ।
श्लेषक-(स०वि०) जोड़ने वाला, मिलाने वाला ।
श्लेषण-(स० नपु०) सयुक्त करना, मिलाना, आलिंगन ।
श्लेषा-(स०स्त्री०) आलिंगन, भेंट ।
श्लेषोपमा-(स० स्त्री०) वह अलकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दो का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमान और उपमेय दोनों में लग सकते हैं ।
श्लेष्मा-(स०पु०) कफ, बलगम ।
श्लेष्मात-(स० पु०) लिसोड़ा ।
श्लैष्मिक-(स० वि०) कफ सम्बन्धी ।
श्लोक-(स०पु०) पद्य, कविता, अनुष्टुप् छन्द, यश, प्रसिद्धि, कीर्ति, शब्द, ध्वनि, स्तुति, प्रशसा, पुकार, आह्वान ।
श्लोककृत्-(स०वि०)श्लोक बनाने वाला
श्लोकत्व-(स०नपु०) श्लोक का भाव ।
श्वक-(स०पु०) वृक, भेड़िया ।
श्वक्रीडिन्-(स० वि०) कुत्तों के साथ खेलने वाला ।
श्वजीविका-(स०स्त्री०) दासत्व वृत्ति ।
श्वन्-(स०पु०) कुक्कुर, कुत्ता ।
श्वपच्-(स०पु०) चाण्डाल, डोम, कुत्ते का मास पकाकर खाने वाला ।
श्वपति-(सं०पु०) किरात वेषधारी रुद्र का अनुचर ।
श्वपाक-(सं०पु०) चाण्डाल, व्याध ।
श्वफल-(स० पु०) बिजौरा नीबू, चूना ।
श्वफल्क-(स० पु०) वृष्णिपुत्र, अक्रूर

के पिता।

श्वभीरु–(सं० पुं०) श्रृगाल, सियार।

श्वभ्र–(सं०नपुं०) एक नरक का नाम, दरार, छेद।

श्वशुर–(सं० पुं०) पति या पत्नी का पिता ससुर, पूज्य व्यक्ति।

श्वश्रू–(सं० स्त्री०) पति या पत्नी की माता, सास।

श्वसन–(सं०नपुं०) सास लेना, हाफना, आह भरना, (पुं०) मैनफल, एक वस्तु का नाम।

श्वसनाशन–(सं०पुं०) सर्प, साप।

श्वस्तनी–(सं० स्त्री०) आने वाला दूसरा दिन।

श्वान–(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता, छप्पय छन्द का एक भेद।

श्वास–(सं० पुं०) प्राणवायु, सास, दम, दमे का रोग जल्दी जल्दी सास लेना, हाफना श्वासकास–दमा और खासी,

श्वासरोध–दम घुटना।

श्वासा–(हि०स्त्री०) सास, दम, प्राण।

श्वासोच्छ्वास–(सं०पुं०) वेग से सास खींचना और बाहर निकालना।

श्वेत–(सं० नपुं०) चादी, सफेद रग, कौड़ी, शख, सफेद जीरा, सफेद घोड़ा, सफेद वराह, सफेद बादल (वि०) सफेद, धौला, (पुं०) एक द्वीप का नाम

श्वेतकन्द–(सं०पुं०) प्याज।

श्वेतकुञ्जर–(सं०पुं०)सफेद हाथी,ऐरावत

श्वेतकुष्ट–(सं० नपुं०) सफेद दाग वाला कोढ।

श्वेतकृष्ण–(सं०त्रि०) सफेद और काला, एक बात और दूसरी बात।

श्वेतकेतु–(सं०पुं०) उद्दालक ऋषि के पुत्र का नाम।

श्वेतकेश–(सं०पुं०) सफेद बाल।

श्वेत गज–(सं०पुं०) ऐरावत हाथी।

श्वेतगरुत्–(सं०पुं०) राजहस।

श्वेतछद–(सं०पुं०) वनतुलसी।

श्वेतता–(सं०स्त्री०) सफेदी।

श्वेतद्युति–(सं०पुं०) चन्द्रमा।

श्वेतद्वीप–(सं०पुं०) पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।

श्वेतधातु–(सं०पुं०) खड़िया।

श्वेतधामन्–(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर।

श्वेतनील–(सं०पुं०) बादल।

श्वेतपक्ष–(सं०पुं०) हँस।

श्वेतप्रदर–(सं० पुं०) वह रोग जिसमें स्त्रियों की योनि में से सफेद धातु गिरती है।

श्वेतफला–(सं०स्त्री०) सफेद भटा।

श्वेतभानु–(सं०पुं०) चन्द्रमा।

श्वेतमयूख–(सं०पुं०) चन्द्रमा।

श्वेतरत्न–(सं० नपुं०) स्फटिक।

श्वेतराशि–(सं०पुं०) चन्द्रमा।

श्वेतरस–(सं० नपुं०) मक्खन।

श्वेतवाराह–(सं० पुं०) ब्रह्मा की सृष्टि के आदि युग का प्रथम कल्प,

श्वेतवाहन–(सं०पुं०)चन्द्रमा, अर्जुन।

श्वेता–(सं० स्त्री०) कौड़ी, वशलोचन, फिटकिरी, चीनी, शक्कर, मिश्री, सफेद घुमची।

श्वेताद्रि–(सं०पुं०) कैलाश पर्वत।

श्वेताम्बर–(सं० पुं०) सफेद वस्त्र, जैनों के एक सम्प्रदाय का नाम।

श्वेताश्वतर–(सं० पुं०) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा।

ष

ष–संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला के व्यजन वर्णों में से इकतीसवा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है, इसीसे यह मूर्धन्य कहलाता है।

ष–(सं० पुं०) केश, ध्वस, नाश, अवशेष, बाकी, निर्वाण, मुक्ति, स्वर्ग, (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर।

षक्षन–(सं० पुं०) आलिंगन, समागम।

षक्–(सं० वि०) गिनती में ६ (पुं०) ६ की सख्या, षाडव जाति का एक राग।

षट्–(सं०वि०) गिनती में छः (पुं०) ६ की सख्या।

षट्क–छः वस्तुओं का समूह।

षट्कर्म–(सं० नपुं०) ६ प्रकार के कर्म यथा–यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह।

षट्कला–(सं०स्त्री०) सगीत में ब्रह्मताल के चार भेदों में से एक।

षट्कार–(सं० पुं०) षट् शब्द का उच्चारण।

षट्कोण–(सं० नपुं०) छः कोने की आकृति, वज्र, हीरा (वि०) छपहल का।

षट्चक्र–(सं० नपुं०) हठ योग के अनुसार कुण्डलिनी के ऊपर ६ चक्र, षड्यन्त्र।

षट्चरण–(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा, खटमल (वि०) छ पैर वाला।

षट्ताल–(सं० पुं०) मृदग का एक ताल जो आठ मात्राओं का होता है।

षट्तिला–(सं०स्त्री०) माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम।

षट्पद–(सं० वि०) छ पैर वाला।

षट्पदप्रिय–(सं०पुं०) पद्म, कमल।

षट्पदा–(सं० स्त्री०) छ भ्रामरी, भौंरी, खटमल।

षट्पदी–(सं० वि०) पैर वाली, (स्त्री०) भ्रामरी, भौंरी, छप्पय नामक छन्द।

षट्पाद–(सं० पुं०) छः पैर का एक प्रकार का कीड़ा।

षट्प्रज्ञ–(सं०पुं०) व्यभिचारी, लम्पट।

षट्मुख–(सं० पुं०) कार्तिकेय।

षट्रस–(सं० पुं०) छ प्रकार का रस या स्वाद देखो षड्रस।

षट्राग–(सं० पुं०) संगीत के छ राग

यथा भैरव, मल्लार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक।
षट्रिपु-(सं० पु०) देखो षड्रिपु।
षट्शास्त्र-(सं० पु०) हिन्दुओं के छ दर्शन, देखो षड्दर्शन।
षट्शास्त्री-(सं० पु०) छहो दर्शनो का ज्ञाता।
षट्वाङ्ग-(सं० पु०) खट्वाङ्ग नामक राजर्षि जिनको दो घड़ी की साधना से मुक्ति मिली थी।
षडंश-(सं० पु०) छ भागो में से एक भाग।
षडक्ष-(सं० वि०) छ आँख वाला।
षडक्षर-(सं०वि०) छ अक्षरों से युक्त।
षडङ्ग-(सं० नपु०) शरीर के छ अवयव यथा-दो जाघ, दो बाहु, मस्तक और छाती, वेद के अङ्ग भूत छ शास्त्र यथा-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त ज्योतिष और छन्द, तन्त्रानुसार हृदयादि षडवयव यथा-हृदय,मस्तक, शिखा, कवच, नेत्रत्रय और करतल पृष्ठ, छ प्रकार के योगाङ्ग यथा-प्रत्याहार, ध्यान प्राणायाम, धारणा, तर्क और समाधि।
षडङ्गी-(हिं०वि०) छ अग वाला।
षडग्नि-(सं० स्त्री०) कर्मकाण्ड के अनुसार छ प्रकार की अग्नि यथा-गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि,सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि।
षडश्व-(सं० वि०) छ घोडे की गाड़ी या रथ।
षडस्र-(सं०वि०) जिसमें छ कोने हों।
षडात्मन्-(सं०वि०) अग्नि।
षडानन-(सं०वि०) छ मुखवाला (पु०) कार्तिकेय।
षड्ग-(सं०पु०) देखो षड्ज।
षड्गुण-(सं०पु०) छ गुणों का समूह यथा-ऐश्वर्य, ज्ञान, यश, श्री, वैराग्य और धर्म, (वि०) जिसमें छ गुण हो।
षड्ज-(सं० पु०) सगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर जो मयूर के स्वर से मिलता जुलता माना जाता है।
षड्दर्शन-(सं० नपु०) हिन्दुओं के छ दर्शन शास्त्र यथा-न्याय, वैशेषिक, साङ्ख्य, वेदान्त, मीमासा और योग।
षड्दर्शनी-(हिं०पु०) दर्शनों को जानने वाला, ज्ञानी।
षड्भाव-(सं० पु०) दर्शन के अनुसार छ पदार्थ यथा-द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय, ज्योतिष मत से छ भाव यथा-लज्जित, गर्वित, क्षुधित, तृषित, मुदित और क्षोभित।
षड्भुजा-(सं० स्त्री०) खरबूजा। दुर्गा की मूर्ति का एक भेद।
षड्यन्त्र-(सं० पुं०) किसी मनुष्य के विरुद्ध गुप्त रीति से कोई कार्रवाई, भीतरी चाल,कपट पूर्ण आयोजन, चाल
षड्रस-(सं०पु०) छ प्रकार का स्वाद या रस यथा-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय।
षड्रिपु-(सं०पु०) काम, क्रोध आदि मनुष्य के छ विकार।
षड्वक्त्र-(सं०पु०) षडानन, कार्तिकेय।
षड्वर्ग-(सं० पु०) छ वस्तुओं का समूह।
षड्विकार-(सं० पु०) प्राणी के छ विकार यथा-उत्पत्ति, शरीर वृद्धि, बाल्यावस्था, प्रौढता, वृद्धता और मृत्यु
षड्विन्दु-(सं० पु०) एक प्रकार का कीड़ा जिसकी पीठ पर छ विन्दु होते हैं।
षण्ड-(सं० पु०) वृषभ, साड़, क्लीव, नपुसक, हिजड़ा, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
षण्डत्व-(सं०नपु०) नामर्दी,हिजड़ापन।
षण्डयोनि-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो पुरुष समागम के अयोग्य हो।
षण्डता-(सं०स्त्री०) नपुसकता,क्लीवता।
षण्मास-(सं० नपु०) छ महीना, आधा वर्ष।
षण्मासिक-(सं० वि०) छ मासमें होने वाला।
षण्मुख-(सं० पु०) षडानन, कार्तिकेय।
षत्व-(सं०नपु०) मूर्धन्य षकार का भाव, 'ष' होना।
षष्ट-(सं०वि०) साठ सख्या का।
षष्टि-(सं० स्त्री०) साठ की सख्या।
षष्टिक-(सं०पु०) साठी धान।
षष्टिका-(सं० स्त्री०) साठी धान।
षष्टितन्त्र-(सं० नपु०) साङ्ख्य शास्त्र जिसमें साठ पदार्थों का विचार किया गया है।
षष्टिविद्या-(सं०स्त्री०) साख्य विद्या।
षष्ठ-(सं० वि०) जिसका स्थान पाच के उपरान्त हो, छठा।
षष्ठक-(सं० वि०) छठा।
षष्ठांश-(सं० पुं०) छठा भाग।
षष्ठिका-(सं०स्त्री०) षष्ठी देवी।
षष्ठी-(सं०स्त्री०) किसी मास की शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि, कात्यायनी, सोलह मातृकाओं में से एक, जो छोटे छोटे बालकों का प्रतिपालन करती हैं, दुर्गा, व्याकरण में सबध कारक, षष्ठी विभक्ति।
षष्ठीप्रिय-(सं०पु०) स्कन्द, कार्तिकेय।
षाडव-(सं०पु०) एक राग का नाम।
षाण्मातुर-(सं०पु०) कार्तिकेय जिन्होने कृत्तिकादि छ स्त्रियो का स्तनपान करके जीवन धारण किया था।
षाण्मासिक-(सं० वि०) छ छ महीने पर होने वाला।
षाद्तर-(सं०पु०) सगीत में वह बनावटी सप्तक जो मन्द से भी कम होता है।
षाष्टिक-(सं० वि०) षष्टि सबधी।
षाष्ठ-(सं०वि०) षष्ठ, छठा।
षु, षू-(सं०) गर्भ विमोचन।
षोडश-(सं० वि०) सोलहवा, सोलह की सख्या।
षोडशकला-(सं० वि०) जिसमें सोलह अश या कला हों (पु०) चन्द्रमा, विष्णु की एक विराट मूर्ति।
षोडश गण-(सं० पु०) पाच ज्ञानेन्द्रिय, पाच कर्मेन्द्रिय, पञ्चभूत तथा मन का समूह।
षोडश दान-(सं० नपु०) श्राद्धादिके समय किये जाने वाले सोलह प्रकार के

दान यथा–भूमि, आसन, जल, वस्त्र, दीप, अन्न, ताम्बूल, छत्र, गन्ध, माला, फल, शय्या, खड़ाऊ, गाय, सोना और चादी।
षोडशपूजन–(स० पु०) सोलहो सामग्री से पूजन।
षोडशभुजा–(स० स्त्री०) सोलह हाथ वाली दुर्गा।
षोडशमातृका–(स०स्त्री०) एक प्रकार की देवियाँ जो सख्या मे सोलह मानी गई हैं यथा–गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, लक्ष्मी, शान्ति, पुष्टि, धृति, तुष्टि और आत्म देवता।
षोडशविध–(स०वि०) सोलह प्रकार का।
षोडशशृङ्गार–(स० पु०) पूर्ण शृगार जो सोलह प्रकार का है, देखो शृङ्गार।
षोडशसस्कार–(स० पु०) गर्भाधान से मृत कर्म तक के सोलह संस्कार जो द्विजातियों के लिये शास्त्र मे कहे गये हैं।
षोडशांशु–(स० पु०) शुक्र ग्रह।
षोडशार–(स० नपु०) वेदी के ऊपर बनाने का चक्र विशेष।
षोडशिका–(स० स्त्री०) एक प्राचीन परिमाण जो प्रायः सोलह माशे का होता था।
षोडशी–(स०वि०स्त्री०) सोलहवीं, सोलह वर्ष की स्त्री, नवयौवना स्त्री, दशमहाविद्याओं में से एक।
षोडशोपचार–(स०पु०) पूजन के पूर्ण अग जो सोलह हैं यथा–आसन, स्वागत पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, पुनराचमनीय, स्नान, वसन, आभरण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, चन्दन और नैवेद्य।
ष्ठीवन–(स०नपु०) थूकना।
ष्ठीवी–(स० वि०) थूक से भरा हुआ।
ष्ठ्यूत–(स०वि०) थूका हुआ।

स

स–हिन्दी वर्णमाला का बत्तीसवा व्यजन वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है।
स–(स०पु०) ईश्वर, शिव, विष्णु, सर्प, पक्षी, चन्द्रमा, वायु, जीवात्मा, कान्ति, (नपु०) ज्ञान, चिन्ता, सगीत में षड्ज स्वर का सूचक अक्षर, कुछ विशिष्ट अर्थ में उपसर्ग की तरह भी यह प्रयोग होता है।
सं–(स० अव्य०) एक अव्यय जिसका व्यवहार, सगति, समानता, शोभा आदि सूचित करने के लिये होता है यथा–सताप, सयोग आदि।
सँइतना–(हिं० क्रि०) लीपना पोतना, सचय करना, सहेजना।
सँउपना–(हिं०क्रि०) देखो सौंपना।
सक–(हिं०स्त्री०) देखो शका।
संकट–(हिं०वि०) तग, सकरा, देखो सकट
संकट चौथ–(हिं०स्त्री०) माघकृष्णा चतुर्थी
संकत–(हिं०पु०) देखो सकेत।
सकना–(हिं० क्रि०) शका करना, सन्देह करना।
संकर–(हिं० पु०) देखो शङ्कर, शिव।
सकर घरनी–(हिं०स्त्री०) पार्वती।
संकरा–(हिं०वि०) जो अधिक विस्तृत न हो, पतला और तग, (पु०) कष्ट, आपत्ति।
सकराना–(हिं०क्रि०) सकुचित करना, तग करना।
संकल–(हिं०स्त्री०) सिकड़ी, जजीर।
सकलपना–(हिं० क्रि०) किसी बात का दृढ निश्चय करना, धार्मिक उद्देश्य से कुछ दान देना, विचार करना।
संकल्पना–(हिं०क्रि०) देखो सकलपना।
सकाना–(हिं०क्रि०) शका करना, डरना।
सकार–(हिं० पु०) सकेत, इशारा।
संकारना–(हिं० क्रि०) सकेत या इशारा करना।
सकेतना–(हिं०क्रि०) संकट में डालना।
संकोचना–(हिं०क्रि०) सकुचित करना।
सकोची–(हिं० पु०) सकोच या शर्म करने वाला, सिकुड़ने वाला।
संकोपना–(हिं०क्रि०) क्रोध करना।
संक्रन्दन–(स०पु०) शक्र, इन्द्र।
संक्रम–(स० पु०) प्राप्ति, संक्रान्ति, कठिनता से आगे बढने की क्रिया, सेतु, पुल, उपाय।
सक्रमण–अतिक्रमण, गमन, घूमना, फिरना, सूर्यका एक राशि से निकल कर दूसरी राशि में प्रवेश करना।
संक्रमणिका–(स०स्त्री०) सीढियों की पक्ति
सक्रमित–(स०वि०) स्थापित, प्रतिबिंबित।
सक्रान्त–(स० वि०) युक्त, प्रविष्ट, सचारित, व्याप्त, प्रतिबिम्बित, सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।
संक्रान्ति–(स० स्त्री०) सचार, गमन, सूर्य का एक राशिमें से दूसरे में जाना, व्याप्ति।
सक्रामक–(स०वि०) ससर्ग या छूत से फैलने वाला (रोग यथा–प्लेग, महामारी आदि)।
संक्रोन–(हिं०स्त्री०) देखो सक्रान्ति।
सक्षिप्त–(स०वि०) अल्प, थोड़ा, खुलासा
सक्षिप्त लिपि–(हिं०स्त्री०) वह साकेतिक लेखन प्रणाली जिसमें थोडे स्थान में बहुत सी बातें लिखी जाती हैं।
संक्षेप–(स० पु०) थोडे में कोई बात कहना, कम करना, घटाना।
सक्षेपत–(स०अव्य०) सक्षेप में, थोडेमें।
संख–(हिं०पु०) देखो शङ्ख।
सखनारी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका छन्द
सखा–(हिं०पु०) चक्की के ऊपरी पाट में लगी हुई लकड़ी।
संखार–(हिं०पु०) एक प्रकार का पक्षी।
संखिया–(हिं० पु०) एक प्रकार का

बहुत विषैला उपधातु या पत्थर, इससे तैयार किया हुआ भस्म जो औषधियों में प्रयोग होता है।
संग–(फा० पु०) पाषाण, पत्थर, (वि०) पत्थर की तरह कड़ा।
संग अँगूर–(हि० पु०) शेफा, गिरि बूटी।
संग असवद–(अ० पु०) काले रंग का एक प्रसिद्ध पत्थर।
संगखारा–(फा० पु०) एक प्रकार का कड़ा नीला पत्थर, चकमक पत्थर।
संगजराहत–(अ० पु०) एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर।
संगठन–(हि०पु०) अलग अलग शक्तियों, लोगों या अंगों आदि को इस प्रकार एक में मिलाना कि उनमें नई शक्ति आ जावे, इस व्यवस्था से तैयार की हुई संस्था या संघ।
संगठित–(हि० वि०) भलीभांति व्यवस्था करके मिलाया हुआ।
संगत–(हि० स्त्री०) देखो सङ्गत।
संगतरा–(हिं० पु०) एक प्रकार की मीठी नारंगी, सन्तरा।
संगतराश–(फा० पु०) पत्थर काटने और गढ़ने वाली कारीगर।
संगति–(हिं० स्त्री०) देखो सङ्गति।
संगतिया–(हि० पु०) वह जो नाचने या गाने वाले के साथ रह कर तबला, सारंगी आदि बजाता हो।
संगती–(हि० पु०) देखो संगतिया।
संगदिल–(फा०वि०) कठोर हृदय, निर्दय।
संगदिली–(फा० स्त्री०) निर्दयता।
संगपुस्त–(फा० पु०) कच्छप, कछुआ।
संगबसरी–(फा० पु०) एक प्रकार कड़ी मिट्टी जो दवा के काम में आती है।
संगमर्मर–(अ० पु०) एक प्रकार का कड़ा सफेद बहुमूल्य पत्थर जो जयपुर में अधिक पाया जाता है, यह मूर्ति आदि बनाने के काम में आता है।
संगमूसा–(फा० पु०) एक प्रकार का बहुमूल्य कड़ा काला पत्थर।
संगयशब–(फ० पु०) एक प्रकार का कुछ हरे रंग का कीमती पत्थर।
संगर–(फा०पु०) धूस या दीवार, मोरचा।
संगरा–(फा०पु०) पत्थर आदि उठाने का मोटे बांस का छोटा टुकड़ा, सँगरा।
संगरासिख–(फा० पु०) तांबे की मैल जो खिजाब बनाने के काम में आती है।
संगरेजा–(फा० पु०) पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े।
संगल–(हि०पु०) एक प्रकार का रेशम।
संगसी–(हिं० स्त्री०) देखो सड़सी।
संग सुलेमानी–(अ० पु०) एक प्रकार का रंगीन पत्थर।
संगाती–(हि० पु०) साथी, संगी, मित्र, दोस्त।
संगी–(हि० स्त्री०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा (फा० वि०) संगीन, पत्थर का बना हुआ।
संगीन–(फा० पु०) लोहे का नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है, (वि०) पत्थर का बना हुआ, पायदार, पुष्ट, असाधारण।
संगृहीत–(स०वि०) इकट्ठा किया हुआ।
संगोतरा–(हिं० पु०) एक प्रकार की नारंगी, सन्तरा।
संगोपन–(स० नपु०) गुप्त रखना, छिपाना।
संगोपित–(स० वि०) छिपाया हुआ।
संघराना–(हि० क्रि०) गाय को परचाना।
संघाती–(हिं० पु०) साथी, मित्र (वि०) प्राण नाशक।
संघेरना–(हि० क्रि०) दो गौओं के पैर आपस में बांध देना जिसमें वे दूर न भाग जावें।
संजमनी–(हि०स्त्री०) यमराज की नगरी।
संजमनीपति–(हि० पु०) यमराज।
संजमी–(हि० पु०) देखो संयमी, नियम से रहने वाला।
संजाफ–(फा० स्त्री०) झालर, गोट, किनारा, मगजी, एक प्रकार का घोड़ा।
संजाफी–(फा०वि०) मालदार, किनारदार।
संजाब–(फा०पु०) चूहे के आकार का एक जन्तु।
संजीदगी–(फा०स्त्री०) विचार या व्यवहार की गम्भीरता।
संजीदा–(फा० वि०) शान्त, गम्भीर, बुद्धिमान्।
संजुता–(हि०स्त्री०) एक प्रकार का छंद।
संजोग–(हि०पु०) देखो संयोग।
संजोगी–(हिं० वि०) मिले हुए, भार्या सहित।
संजोना–(हिं० क्रि०) सुसज्जित करना, सजाना।
संजोह–(हिं०पु०) लकड़ी का वह चौखटा जिसको जुलाहे बुनते समय छत पर से लटका देते हैं।
संज्ञ–(स०वि०) वह जो सब विषयों को अच्छी तरह से जानता हो।
संज्ञा–(स० स्त्री०) चेतना, ज्ञान, बुद्धि, संकेत, इशारा, गायत्री, व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी वस्तु का बोध होता है, सूर्य की पत्नी का नाम।
संज्ञान–(स०नपु०) संकेत, इशारा।
संज्ञापन–(स० नपु०) विज्ञापन, कथन।
संज्ञापुत्री–(स०स्त्री०) यमुना नदी।
संज्ञाहीन–(स०वि०) बेसुध, बेहोश।
संज्वर–(स०पु०) अधिक ताप, तेज गरमी।
संझवाती–(हि०स्त्री०) संध्या की समय जलाने का दीपक, संध्या के समय गाने की गीत, (वि०) संध्या सम्बन्धी।
संझा (हि० स्त्री०) सन्ध्या, शाम, सूर्यास्त का समय।
संझिया–(हि०पु०) रात्रि का भोजन।
संठ–(हिं० पु०) शान्ति, खमोशी, शठ, धूर्त नीच।
संड–(हि०पु०) सांड़।
संडमुसंड–(हिं० वि०) हट्टा कट्टा, मोटा ताजा।
संडसा–(हिं० पु०) गरम लोहे को पकड़ने का लोहार का एक औजार।
संडसी–(हि०स्त्री०) छोटा सडसा, जंबूरी।
संडा–(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा।
संडास–(हि० पु०) कुएं की तरह का गहरा पायखाना, शौचकूप।
संतरा–(हि०पु०) बड़ी नारंगी।
संतरी–(हि० पु०) पहरा देने वाला

सिपाही, द्वारपाल, पहरेदार।
संतोष-(हि०क्रि०) देखो सन्तोष।
संतोषना-(हि० क्रि०) सन्तोष दिलाना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना।
संथा-(हि०पु०) पाठ, सबक।
संद-(हि०पु०) दरार, छेद, दबाव।
संदल-(फ़ा०पु०) श्रीखड चन्दन, चदन
सदली-(फ़ा०वि०) हलके पीले रग का, चन्दन का।
सदान-(फ़ा०पु०)एक प्रकार की निहाई, अरहन, घन, बाधने की सिकड़ी,डोरी।
संदि-(हिं०स्त्री०) सन्धि, मेल।
संदूक-(अ० पु०) लकड़ी, लोहे, चमड़े आदि का बना हुआ पिटारा, पेटी, बक्स।
संदूकिया-(अ०पु०) छोटी पेटी या सदूक
संदूख-(अ०पु०) देखो सन्दूक।
संदूर-(हिं०पु०) देखो सिंदूर।
सदसा-(हि० पु०) सन्देश, समाचार, खबर।
सनिधानी-(हि० वि०) काबू में रखने वाला, परहेजगार।
सयात-(सं०वि०) प्राप्त, पहुँचा हुआ।
सयान-(स०नपु०)यात्रा,प्रस्थान,रवानगी
संयुक्त-(स० वि०) लगा हुआ, मिला हुआ, सम्बन्ध।
सयुक्ता-(स०स्त्री०) आवर्तकी लता, एक प्रकार का छन्द।
संयुग-(सं० पु०) युद्ध, लड़ाई, सयोग, मिड़न्त।
संयुत-(स० वि०) सयुक्त, जड़ा हुआ, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
संयोग-(स० पु०) दो वस्तुओं को एक में मिलना, मिलान, मिलाप, समागम, शृगार रस का एक भेद, सम्बन्ध, स्त्री पुरुष का सहवास, विवाह सबन्ध, मत का एक होना, दो या अधिक व्यजन वर्णो का मेल, जोड़, मीज़ान।
संयोगमन्त्र-(स० नपु०) विवाह के समय पढा जाने वाला वेद मन्त्र।
संयोगित-(स० वि०) मेल किया हुआ।
संयोगी-(हि०वि०) सयोग करने वाला, मिलाने वाला, विवाह किया हुआ, वह जो अपनी प्रिया के साथ हो।
सयोगी-(हिं० पु०) वैष्णव सप्रदाय का एक भेद।
सयोजक-(स० वि०) मिलाने वाला, जोड़ने वाला, (पु०) व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है।
संयोजन-(स० नपुं०) स्त्रीप्रसग, मैथुन, जोड़ने या मिलाने की क्रिया, प्रबन्ध, इन्तज़ाम।
सयोजना-(स०स्त्री०) प्रबन्ध, व्यवस्था, प्रसग, सहवास, भवबन्धन का कारण।
सयोजित-(स० वि०) मिलाया हुआ।
संरक्त-(स०वि०) अनुरक्त,आसक्त,कुपित।
सरक्षक-(स० वि०) रक्षा करने वाला, पालन पोषण करने वाला, सहायक, आश्रय देने वाला।
संरक्षण-(स०नपु०) देखरेख, निगरानी, हिफाज़त, प्रतिबन्ध, रोक।
सरक्षणीय-(स०वि०) रक्षा करने योग्य।
सरक्षित-(स० वि०) भली भाति रक्षा किया हुआ।
संरब्ध-(स० वि०) खूब मिला हुआ, उत्तेजित, उद्विग्न, क्रुद्ध, फूला या सूजा हुआ।
संरम्भ-(स० पु०) क्रोध, उत्साह, उत्कण्ठा, आडम्बर, गर्व, आरम्भ, युद्ध, लड़ाई।
सपेरा-(हिं० पु०) सपेरा, मदारी।
संपोलिया-(हि०पु०) साप पकड़ने वाला।
संभलना-(हि०क्रि०) थाभा जाना, प्राप्त करना, गिरने पड़ने से रुकना, सचेत होना, बुरी अवस्था को सुधारना, चगा होना, स्वस्थता।
संभाल-(हि०स्त्री०) रक्षा, प्रबध, निगरानी, होश हवास, पोषण का भार।
संभालना-(हिं० क्रि०) रक्षा करना, गिरने से बचाना, निगहवानी करना, रोकना, थाभना, सहेजना, निर्वाह करना, दशा बिगड़ने से बचाना, प्रबध करना, पालन पोषण करना।
समत, समित-(हिं०) देखो सम्मत, सम्मित।
समान, संमित-(हि०) देखो सम्मान, सम्मित।
समेलन-(हिं०पु०) देखो सम्मेलन।
सयत्-(स०वि०) सबद्ध, लगा हुआ।
सयत-(स० वि०) बधा हुआ, जकड़ा हुआ, बन्द किया हुआ, व्यवस्थित, जिसने इन्द्रियों और मन को वश में किया हो, उद्यत, तैयार (पु०) कृत, सयम, सन्यासी।
सयताहार-(स०वि०) थोड़ा खाने वाला-
सयति-(स० स्त्री०) निरोध, वश में रखना।
सयन्त्रित-(स० वि०) बंधा हुआ, जकड़ा हुआ।
संयम-(स० पु०) बन्धन, वश में करने की क्रिया या भाव, हानिकारक वस्तुओं से बचना, परहेज़, उद्योग, प्रयत्न।
सयमन-(स० नपु०) आत्मनिग्रह, मन को वश में रखना, इन्द्रियों का दमन।
सयमनी-(स०स्त्री०) यम की नगरी।
संयमित-(स०वि०) दमन किया हुआ, बाधा हुआ, काबू में लाया हुआ, इन्द्रियनिग्रही।
सयमी-(हि० पु०) आत्म निग्रही, योगी।
सयुक्त-(स० वि०) जुटा हुआ, मिला हुआ, सम्बद्ध, सहित, साथ।
संयुक्ता-(स०स्त्री०) एक छन्द का नाम।
संरुद्ध-(स० वि०) अच्छी तरह भरा हुआ, आच्छादित, ढपा हुआ।
संरूढ-(स०वि०) अच्छी तरह लगा हुआ।
सरोध-(स० पु०) अवरोध, बाधा।
सरोधन-(स०नपु०) रुकावट डालना, हद बाँधना, बद करना।
सरोपित-(स० वि०) जमाया या लगाया हुआ।
संलक्षित-(स० वि०) लक्षणों से जाना हुआ, पहचाना हुआ।

संलक्ष्य-(सं० वि०) वह जो देखने में आ सके।
संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग-(सं० पु०) वह व्यञ्जना जिसमें वाच्यार्थ की प्राप्ति का क्रम जाना जाता है।
संलग्न-(सं० वि०) संयुक्त, मिला हुआ, जुड़ा हुआ।
संलपन-(सं०नपुं०) संलाप बातचीत।
संलयन-(सं०नपुं०, लीन होना नष्ट होना।
संलाप-(सं० पु०) आपस की बातचीत, नाटक में एक प्रकार का संवाद जिसमें धीरता रहती है।
संलापक-(सं० वि०) संलाप करने वाला।
संलिप्त-(सं०वि० अच्छी तरह लिपटा हुआ।
संलीन-(सं०वि०, खूब लीन, आच्छादित, सिकुड़ा हुआ।
संवत्-(सं० पु०) संवत्सर वर्ष, साल, वर्षविशेष जो किसी संख्या द्वारा सूचित किया जाता है, आज कल संवत् कहने से विक्रम संवत् का बोध होता है।
संवदना-(सं० स्त्री०) मन्त्र औषधि आदि से किसी को वश में करने की क्रिया।
सँवर-(हिं० स्त्री०) स्मृति स्मरण, याद समाचार।
संवरण-(सं० नपुं०) छिपाव, ढकना, परदा घेरा सेतु, पुल पसन्द करना, चुनना, (पु०) कुरु के पिता का नाम।
संवरणीय-(सं० वि०) निवारण करने योग्य छिपाने योग्य, विवाह करने योग्य।
सँवरना-(हिं० क्रि०) अलङ्कृत होना, सजना, दुरुस्त होना।
संवरित-(सं०वि०)गोपित, छिपाया हुआ।
सँवरिया-(हिं० वि०) देखो साँवला।
संवर्ग-(सं० पु०) एक वस्तु का दूसरे में लीन होना, खपत, गुणनफल।
संवर्जन-(सं० नपुं०) छीनना, खसोटना।
संवर्त्त-(सं० पु०) लपेटने की क्रिया या भाव, दुर्दिन, चक्कर, एक कल्प का नाम, घन राशि, ग्रहों का योग, बहेड़े का वृक्ष, संवर्तक-लपेटने वाला, नाश करने वाला।
संवर्तन-(सं० नपुं०) फेरा या चक्कर देना, लपेटना।
संवर्तनी-(सं० स्त्री०) प्रलय।
संवर्तिका (सं० स्त्री०) लपेटी हुई वस्तु, बलराम का अस्त्र।
संवर्धक-(सं० वि०) बढ़ाने वाला।
संवर्धन-(सं०नपुं०) बढ़ाना, पालना पोसना, उन्नत करना, खेलना।
संवर्धनीय-(सं० वि०) बढ़ाने या पालने पोसने योग्य।
संवर्धित-(सं० वि०) बढ़ाया हुआ, पाला पोसा हुआ।
संवलन-(सं० नपुं०) संयोग, मेल, मिलावट।
संवलित-(सं० वि०) मिलाया हुआ, घिरा हुआ।
संवहन-(सं०नपुं०) वहन करना, ले जाना।
संवाद-(सं० पु०) सन्देश, समाचार, बातचीत, वृत्तान्त, प्रसंग, चर्चा, सहमति, एकरार, नियुक्ति, व्यवहार, मुकदमा।
संवादक-(सं० वि०) भाषण करने वाला, स्वीकार करने वाला।
संवादन-(सं०नपुं०) भाषण, बातचीत।
संवादिका-(सं० स्त्री०) कीड़ा, च्यूटी।
संवादित-(सं०वि०) बोलने में प्रवृत्त किया हुआ, मनाया हुआ, राजी किया हुआ।
संवादिता-(सं०स्त्री०) सादृश्य, समानता।
संवादी-(सं०वि०) संवाद करने वाला, सहमत होने वाला, अनुकूल होने वाला (पु०) संगीत में वह स्वर जो बजाने वाले के साथ मिल जाता और सहायक होता है।
संवार-(सं०पु०) आच्छादन, ढाँपना, छिपाना, बाधा, अड़चन।
संवारण-(सं० नपुं०) निषेध, मना करना, छिपाना।
संवारणीय-(सं० वि०) छिपाने योग्य।
सँवारना-(हिं० क्रि०) अलङ्कृत करना, सजाना, क्रम से रखना, ठीक ठीक काम करना।
संवारित-(सं०वि०) रोका हुआ, मना किया हुआ।
संवार्य-(सं० वि०) रोकने योग्य, छिपाने योग्य।
संवास-(सं० पु०) सभा, समाज, परस्पर सम्बंध, सहवास, मैथुन, सार्वजनिक स्थान।
संवाह-(सं० पु०) ले जाना, ढोना, पैर दबाना।
संवाहक-(सं०वि०) ढोने वाला, बदन मलने वाला।
संवाहन-(सं० नपुं०) अंगमर्दन, हाथ पैर दबाना, ले जाना, पहुँचाना, ढोना।
संवाहित-(सं० वि०) पहुँचाया हुआ, ढोया हुआ।
संवाही-(हिं०वि०) हाथ पैर दबाने वाला, ढोने वाला पहुँचाने वाला।
संविग्न-(सं० वि०) घबड़ाया हुआ, डरा हुआ।
संवित्-(सं० स्त्री०) अंगीकार, युद्ध, लड़ाई, संकेत, ज्ञान, बुद्धि, नियम, प्राप्ति।
संविद्-(सं० वि०) चेतनायुक्त, (पु०) समझौता, वादा, इकरार।
संविदित-(सं० वि०) जाना बूझा, ढूंढा हुआ, वादा किया हुआ, समझाया बुझाया हुआ।
संविधा-(सं० स्त्री०) व्यवस्था, व्यवहार, विचित्रता, घटना, रहन सहन।
संविधान-(सं० नपुं०) व्यवस्था, रीति, दस्तूर, अनुष्ठान।
संविभजन-(सं० नपुं०) बाट, बटाई साझा।
संविभाग-(सं०पु०) बाट, बटाई हिस्सा।
संविष्ट-(सं०वि०) निविष्ट, बैठा हुआ, आगत, पहुंचा हुआ।
संवीक्षण-(सं०नपुं०) अन्वेषण, खोज, तलाश।
संवीत-(सं०वि०) आवृत, ढपा हुआ, (पु०) पहरावा, वस्त्र।
संवृत-(सं०वि०) आच्छादित, ढपा हुआ

रक्षित, लपेटा हुआ, रूधा हुआ।
संवृतकोष्ठ-(स० पु०) कब्जियत।
संवृत मन्त्र-(स० पु०) गुप्त मन्त्रणा।
संवृत्त-(स० वि०) उपस्थित, समागत, पहुंचा हुआ, उत्पन्न।
संवृद्ध-(स० वि०) बढ़ा हुआ, उन्नत।
संवेग-(स० पु०) आवेग, घबड़ाहट भय।
संवेजन-(स० नपु०) उद्विग्नता, घबड़ाहट।
संवेद-(स० पु०) अनुभव, वेदना, ज्ञान, बोध।
संवेदन-(स० पुं०) अनुभव करना, प्रकट करना, जताना।
संवेदनीय-(स० वि०) अनुभव योग्य, जताने लायक।
संवेदित-(स०वि०) अनुभव किया हुआ, प्रतीत किया हुआ, जताया हुआ।
संवेद्य-(स०वि०) अनुभव करने योग्य, प्रतीत करने योग्य, जताने लायक।
संवेश-(स०पु०) निन्द्रा, नींद, उपवेशन, आसन, शैय्या, प्रवेश, घुसना, उपभोग स्थान।
संवेशक-(स०त्रि०) तरकीब लगाने वाला।
संवेशन-(स० पु०) प्रवेश करना, घुसना, सोना।
संवेष्ट-(स० वि०) वेष्टित, घिरा हुआ।
संशप्त-(स० वि०) वाग्बद्ध, जिसने शपथ पूर्वक प्रतिज्ञा की हो।
संशब्द-(स० पु०) प्रशंसा, स्तुति, अलकार।
संशमन-(स०नपु०)शान्त करना, निवृत्ति करना, नष्ट करना, न रहने देना।
संशय-(स० पुं०) सन्देह, शक, शुबहा, आशंका, खतरा, सन्देह नामक काव्यालंकार।
संशयस्थ-(स०वि०) सन्देह युक्त।
संशयाक्षेप-(स०पु०) सन्देह का दूर होना।
संशयात्मक-(स० वि०) सन्देहजनक, शुबहे का।
संशयात्मा-(हि०वि०) विश्वासहीन।
संशयान-(स०वि०) संशय युक्त।
संशयालु-(स० वि०) बात बात में सन्देह करने वाला।
संशयित-(स० वि०) सन्दिग्ध, दुबधा में पड़ा हुआ, अनिश्चित
संशयी-(हिं० वि०) सन्देह करने वाला, शक्की।
संशयोपमा-(स०स्त्री०) वह उपमालंकार जिसमें कई वस्तुओं के साथ समानता संशय रूप में कही जाती है।
संशयोपेत-(स०वि०)सन्दिग्ध, अनिश्चित।
संशरण-(स० नपुं०) शरण में जाना, पनाह लेना।
संशासन-(स०नपु०) उत्तम राज्यप्रबन्ध।
संशित-(स०वि०) निर्णीत, स्थिर किया हुआ, दक्ष, निपुण, सम्पूर्ण, पूरा।
संशिष्ट-(स०वि०) बचा हुआ, बाकी का।
संशीत-(स०वि०) ठंढ से जमा हुआ।
संशुद्ध-(स० वि०) विशुद्ध, परीक्षित, अपराध से मुक्त किया हुआ।
संशुद्धि-(स०स्त्री०) पूरी शुद्धि या सफाई।
संशोधक-(स०वि०) शोधन करने वाला, संस्कार करने वाला, चुकाने वाला।
संशोधन-(स० नपु०) शुद्ध करना, त्रुटि या दोष दूर करना, दुरुस्त करना, ऋण आदि को बेबाक करना।
संशोधनीय-(स०वि०) साफ करने या सुधारने योग्य।
संशोधित-(स० वि०) परिष्कृत, साफ किया हुआ, सुधारा या ठीक किया हुआ।
संशोषण-(स०नपु०) सोखना, सुखाना।
संशोषित-(स० वि०) सोखा हुआ।
संश्रय-(स०पु०) आश्रय शरण, संयोग, समागम, अवलम्बन, सहारा, उद्देश्य, लक्ष्य, ठहरने का स्थान।
संश्रयण-(स० नपुं०) अवलम्ब, पनाह।
संश्रयणीय-(स०वि०)सहारा लेने योग्य।
संश्रयी-(स० त्रि०) सहारा लेने वाला, नौकर।
संश्रव-(स० पु०) अङ्गीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा।
संश्रवण-(स०नपु०) खूब कान लगाकर सुनना, अङ्गीकार।
संश्रान्त-(स०वि०)बिलकुल थका हुआ।
संश्रावक-(स०पु०) श्रोता, सुनने वाला, शिष्य।
संश्रित-(स०वि०) संयुक्त, जुटा हुआ, आलिंगन किया हुआ, टगा हुआ, ठहरा हुआ।
संश्रुत-(स० वि०) स्वीकृत, अंगीकार किया हुआ, अच्छी तरह से सुना हुआ।
संश्रुत्य-(सं० पु०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।
संश्लिष्ट-(स०वि०) आलिंगित, सम्मिलित, मिश्रित, मिला हुआ, (पु०) राशि, ढेर, एक प्रकार का मण्डप।
संश्लेष-(स०पु०) आलिंगन, परिरम्भण, मेल मिलाप।
संश्लेषण-(स० नपुं०) जुटना, सटना, मिलना।
संश्लेषित-(स० वि०) आलिंगन किया हुआ, सटाया हुआ।
संश्लेषी-(स०पु०)आलिंगन करने वाला।
संस, संसई-(हि०पु०) देखो संशय।
संसक्त-(स०वि०) संबद्ध, लगा हुआ, जड़ा हुआ, आसक्त, प्रेम में फसा हुआ, प्रवृत्त, लगा हुआ।
संसक्ति-(स० स्त्री०) आसक्ति, प्रवृत्ति, लगाव, परमाणुओं की परस्पर मिलने की शक्ति।
संसनाना-(हिं०क्रि०) देखो सनसनाना।
संसय-(हि०पु०) देखो संशय।
संसरण-(स०नपु०)गमन,चलना,राजपथ, चौड़ी सड़क, लड़ाई छिड़ना, संसार, जगत्, सराय, यात्रियो के ठहरने का स्थान, मुसाफिरखाना।
संसर्ग-(सं०पु०) सम्बन्ध, संपर्क, लगाव, न्याय के अनुसार समवायि संबंध, सहवास, समागम, परिचय, घनिष्ठता।
संसर्गदोष-(स० पु०) बुरी संगत से आया हुआ दोष।
संसर्गविद्या-(स० स्त्री०) व्यवहार-कुशलता।
संसर्गाभाव-(स०पु०) संबंध का न होना।
संसर्गी-(स० त्रि०) सहचर, मित्र, शुद्धि,

सफाई।
संसर्जन-(सं० पुं०) संयोग होना, मिलना, जुटना, त्याग करना, छोड़ना, हटाना।
संसर्पण-(सं० नपुं०) धीरे धीरे चलना, खिसकना, सरकना, एकाएक आक्रमण करना।
संसर्पी-(हिं० वि०) सरकने वाला, रेंगने वाला।
संसाद-(सं०पुं०) सभा, समाज।
संसादित-(सं०वि०) एकत्र किया हुआ, सजाया हुआ।
संसाधक-(सं०वि०) वश में करने वाला, सम्पादन करने वाला।
संसाधन-(सं०नपुं०) आयोजन, तैयारी।
संसार-(सं० पुं०) मर्त्यलोक, जगत्, दुनिया, सृष्टि, गृहस्थी, आवागमन, बारबार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना।
संसारगुरु-(सं०पुं०) जगद्गुरु, कामदेव।
संसारचक्र-(सं० पुं०) नाना योनि में भ्रमण, मायाजाल, प्रपंच, संसार का उलट फेर।
संसारतिलक-(सं० पुं०) एक प्रकार का उत्तम चावल।
संसारभावन-(सं०पुं०) संसार को दुःख-मय जानना।
संसारमण्डल-(सं० नपुं०) भूमण्डल।
संसारमार्ग-(सं० पुं०) स्त्रियों की जननेन्द्रिय।
संसारसागर-(सं० पुं०) संसाररूपी समुद्र।
संसारसारथि-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
संसारी-(हिं०वि०, संसार संबंधी, लौकिक, संसार में रहने वाला, बारबार जन्म लेने वाला, दुनियादार।
संसिक्त-(सं० वि०) अच्छी तरह से सींचा हुआ
संसिद्ध-(सं० वि०) प्रस्तुत, उद्यत, प्राप्त, अच्छी तरह से पका हुआ, निपुण, कुशल।
संसिद्धि-(सं०स्त्री०) किसी कार्य का पूरी तरह से होना, परिणाम, कामयाबी, पूर्णता, प्रकृति।
संसी-(हिं०स्त्री०) देखो सड़सी।
संसुप्त-(सं० वि०) अच्छी तरह से सोया हुआ।
संसूचक-(सं०वि०) प्रकट करने वाला, जताने वाला, भेद खोलने वाला।
संसूचित-(सं० वि०) प्रकट किया हुआ, जताया हुआ।
संसृज-(सं०स्त्री०) मिश्रण, संसर्ग।
संसृति-(सं०स्त्री०) बारबार जन्म लेने का परंपरा, आवागमन, भवचक्र, संसार।
संसृष्ट-(सं० वि०) एक साथ उत्पन्न, परस्पर मिला हुआ, अन्तर्गत, शामिल, संगृहीत, जुटाया हुआ, सम्पन्न किया हुआ, हिलामिला।
संसृष्टहोम-(सं० पुं०) सूर्य और अग्नि की एक ही में मिली हुई आहुति।
संसृष्टि-(सं०स्त्री०) एक साथ उत्पत्ति, परस्पर संबन्ध, लगाव, मिलावट, घनिष्टता, हेलमेल, दो या अधिक अलंकारों का एक में मिलना, एक ही श्लोक में दो या तीन अलंकारों का रहना।
संसेक-(सं० पुं०) अच्छी तरह पानी का छिड़काव।
संसेवन-(सं० नपुं०) उपयोग में लाना, व्यवहार करना, नौकरी बजाना।
संसेवित, संसेवी-(सं०वि०) अच्छी तरह सेवा करने वाला।
संस्करण-(सं० नपुं०) शुद्ध करना, सुधारना, सुन्दर रूप में लाना, दुरुस्त करना, पुस्तकों की एक बार की छपाई, आवृत्ति, द्विजातियों का विवाह संस्कार।
संस्कर्ता-(सं०वि०) संस्कार करने वाला।
संस्कार-(सं० पुं०) सुधार, दुरुस्ती, अनुभव, मनोवृत्ति या स्वभाव का शोधन, न्यायमत से गुणविशेष, वे कृत्य जो जन्मसे मरण पर्यन्त द्विजातियों के लिये आवश्यक होते हैं, ये दश हैं यथा-विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन, शुद्धि का निकल जाना, शुद्धि, पवित्र करना, धारणा, विश्वास, मन द्वारा कल्पित विषय, इन्द्रियों पर बाह्य विषयों से पड़ा हुआ प्रभाव, वैशेषिक मत से एक गुण, पूर्वजन्म की वासना, शिक्षा उपदेश संगत आदि से चित्त पर पड़ा हुआ प्रभाव, शौच, सफाई, भूषित करना, सजाना, जीर्णोद्धार, मरम्मत।
संस्कारक-(सं० वि०) संस्कार करने वाला, शुद्ध करने वाला।
संस्कारज-(सं०वि०) संस्कार से निष्पन्न।
संस्कार वर्जित-(सं० वि०) उपनयन संस्कार हीन।
संस्कारहीन-(सं० वि०) जिसका संस्कार न हुआ हो, व्रात्य।
संस्कारी-(हिं० वि०) संस्कार करने वाला, (पुं०) सोलह मात्राओं का एक छन्द।
संस्कृत-(सं०नपुं०) भारतवर्ष की प्राचीन पवित्र भाषा, देववाणी (वि०) संस्कार किया हुआ, जिसका उपनयन हुआ हो, मंत्र से पवित्र किया हुआ, आभूषित, सजाया हुआ, पकाया हुआ, शुद्ध किया हुआ।
संस्कृति-(सं० स्त्री०) संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सफाई, सजावट, सभ्यता, चौबीस वर्ण के वृत्तों की संज्ञा।
संस्क्रिया-(सं०स्त्री०) संस्कार, शोधन।
संस्खलन-सं०नपुं०) भूल करना, चूकना।
संस्खलित-(सं० वि०) गिरा हुआ, भूला हुआ।
संस्तम्भ-(सं०पुं०) शरीर की गति का एकाएक रुक जाना, लकवा।
संस्तर-(सं० पुं०) शय्या, विस्तर, तह, पहल।
संस्तव-(सं०पुं०) प्रशंसा, स्तुति, तारीफ।
संस्तीर्ण-(सं० वि०) छितराया या फैलाया हुआ।
संस्तुत-(सं०वि०) प्रशंसा किया हुआ।
संस्था-(सं० स्त्री०) व्यवस्था, नियम, कायदा, आकृति, गुण, अन्त, समाप्ति,

मृत्यु, नाश, प्रलय, हिंसा, वध, मर्यादा, व्यवसाय, जत्था, गरोह, मण्डल, समाज, सभा, समुदाय।

संस्थान-(स० नपुं०) स्थिति, ठहराव, प्रबन्ध, आयोजन, ढाँचा, चिह्न, निकटता, चौरहा, रचना, निर्माण, जीवन, पूरा अनुसरण, जनपद, बस्ती, सार्वजनिक स्थान, आकृति, रूप, प्रकृति, स्वभाव, रोग का लक्षण, नाश, मृत्यु, सर्वसाधारण के एकत्रित होने का स्थान।

संस्थापक-(स० वि०) प्रवर्तक, स्थापित करने वाला, किसी सभा समाज आदि का खोलने वाला, चित्र खिलौना आदि बनाने वाला।

संस्थापन-(स० नपु०) स्थिर करना, जमाना, बैठाना, कोई नई बात चलाना, नया काम जारी करना, रूप या आकार देना।

संस्थापित-(स०वि०) निर्मित, बैठाया हुआ, संचित।

संस्थित-(स० वि०) ठहराया हुआ, जमाया हुआ, बटोरा हुआ, ढेर लगाया हुआ।

संस्थिति-(स०स्त्री०) खड़े होने की क्रिया या भाव, अस्तित्व, प्रकृति, स्वभाव।

संस्पर्धा-(स०स्त्री०) ईर्ष्या, डाह।

संस्पृष्ट-(सं०वि०) जुटा हुआ, सटा हुआ, छुआ हुआ, परस्पर सम्बद्ध।

संस्मरण-(सं०नपु०) पूर्ण स्मरण, खूब याद, अच्छी तरह नाम लेना।

संस्मरणीय-(स०वि०) नाम जपने योग्य।

संस्मरित-(स०वि०) याद दिलाया हुआ।

संस्रव-(सं० पु०) एक साथ बहना, बहता हुआ जल, किसी वस्तु का नोचा हुआ अंश।

संस्रावित-(स० वि०) बहा हुआ, टपका हुआ।

संहत-(स० वि०) संयुक्त, एक में मिला हुआ, घना, गठा हुआ, दृढ़, मज़बूत, एकत्र, इकट्ठा, मिश्रित, चोट खाया हुआ।

संहताञ्जलि-(स० वि०) करबद्ध, हाथ जोड़े हुए।

संहति-(स० स्त्री०) समूह, झुंड, मेल, जुटाव, ढेर, राशि, घनत्व, ठोसपन, सन्धि, जोड़, परमाणुओं का परस्पर मेल।

संहनन-(स० नपु०) शरीर का मर्दन, मालिश, वध, मार डालना, संयोग, मेल, दृढ़ता।

संहरण-(स० नपु०) ज़बरदस्ती छीन लेना।

संहरना-(हि० क्रि०) संहार करना, नष्ट होना।

संहर्षण-(स०नपु०) पुलक, रोवें का खड़ा होना।

संहात-(स० पु०) समूह, जमावड़ा।

संहार-(स०पु०) इकट्ठा करना, बटोरना, समेटना, संग्रह, संचय, संक्षेप कथन, संकोच, सिकुड़ना, ध्वंस, नाश, निवारण, रोक, कौशल, निपुणता, समाप्ति, अन्त, प्रलय, संग्रह, संचय।

संहारक-(स० वि०) नाश करने वाला।

संहार काल-(स० पु०) विश्व के नाश का समय, प्रलय।

संहारना-(हि० क्रि०) ध्वंस करना, नाश करना, मार डालना।

संहारभैरव-(स० पु०) कालभैरव।

संहित-(स० वि०) एकत्र किया हुआ, बटोरा हुआ, मिलाया हुआ, संयुक्त, लगा हुआ।

संहिता-(स० स्त्री०) वह ग्रन्थ जिसमें पद पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो, संभोग, मेल, मिलावट, व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का परस्पर मिलकर एक होना, सन्धि, वेदों का मुख्य भाग।

संहृत-(सं०वि०) समेटा हुआ, जुटाया हुआ, नष्ट, संक्षिप्त।

संहृति-(स० स्त्री०) संग्रह, जुटाव, नाश।

सइ-(हिं०अव्य०) से, साथ, विभक्ति का एक चिह्न जो करण और अपादान कारक में प्रयोग होता है।

सइयो-(हिं०स्त्री०) देखो सखी।

सइल-(हिं०स्त्री०) वह लकड़ी की खूटी जो गाड़ी के कंधावर में लगाई जाती है, सैला।

सई-(हि० स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।

सईस-(हि० पु०) देखो साईस।

सऊर-(हिं० पु०) देखो शऊर।

सउँ-(हि०अव्य०) सो।

सऋक्ष-(स० वि०) नक्षत्र सहित।

सक-(हि० स्त्री०) शक्ति, सकत, (पु०) साका।

सकट-(स० पु०) शाखोट का वृक्ष, (हि० पु०) शकट, गाड़ी, सग्गड़।

सकटी-(हि०स्त्री०) छोटा सग्गड़ या गाड़ी।

सकड़ी-(हि०स्त्री०) देखो सिकड़ी।

सकण्टक-(स० वि०) कण्टक युक्त, रोमाञ्चित।

सकत-(हि०स्त्री०) शक्ति, बल, सामर्थ्य।

सकति-(हि० वि०) यथासंभव, भरसक।

सकता-(हि०पुं०) शक्ति, बल, सामर्थ्य (अ०पु०) बेहोशी की बीमारी, विराम, यति, सकता पड़ना-छन्द में यति भंग का दोष होना।

सकती-(हि० स्त्री०) शक्ति, ताकत, शक्ति नामक अस्त्र।

सकना-(हिं०क्रि०) किसी काम करने के योग्य होना, इस क्रिया या व्यवहार सर्वदा किसी दूसरी क्रिया के साथ ही किया जाता है।

सकपकाना-(हि० क्रि०) चपकाना, हिचकिचाना, आगा पीछा करना, लज्जित होना, शरमाना, प्रेम लज्जा या शंका के कारण व्यग्रता दिखलाना।

सकम्प-(स० वि०) कम्पायमान, काँपता हुआ।

सकरना-(हिं०क्रि०) सकरा जाना, मंजूर होना, माना जाना।

सकरपाला-(फा०पु०) शकरपारा नाम की मिठाई, एक प्रकार का काबुली नीबू, शकरपारे की आकृति की सिलाई।

सकरा-(हि०वि०) देखा सँकरा।

सकरिया-(फा० स्त्री०) लाल शकरकन्द, रतालू।

सकरुण-(स०वि०) दयाशील, दयायुक्त।

सकर्तृक-(स० वि०) जिसको कर्ता हो।

सकर्मक-(सं०पु० जिस धातु के कर्म हो, कर्मयुक्त धातु, (वि०) कर्मयुक्त।
सकर्मक क्रिया-(सं०स्त्री०) वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता हो।
सकल-(सं० वि०) समस्त, अखिल, कुल, (पु०) दर्शन शास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवों में से एक, पशु, निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति।
सकलकल-(सं०वि०) सोलहों कलाओं से युक्त।
सकलजननी-(सं० स्त्री०) प्रकृति,
सकलप्रिय-सबको अच्छा लगने वाला।
सकलसिद्धि-(सं०वि०) अणिमादि सकल सिद्धि युक्त।
सकलाव-(हि०पु०) ओढ़ने की रजाई भेंट, उपहार।
सकलाधार-(सं०पु०) शिव, महादेव।
सकलेन्द्र-(सं० पु०) पूर्णचन्द्र, पूर्णिमा का चन्द्रमा।
सकलेश्वर-(सं० पु०) विष्णु।
सकसकाना-(हिं०क्रि०) अत्यन्त भयभीत होना, डर के मारे कांपना।
सकसाना-(हिं० क्रि०) भयभीत होना, डर मानना।
सका-(अ०पु०) पानी भरने वाला, भिश्ती, घूम घूमकर मशक से पानी पिलाने वाला।
सकाकुल-(हिं० पु०) एक प्रकार का कन्द, अम्बर कन्द, एक प्रकार का शतावर।
सकाकुलमिश्री-(हिं०स्त्री०) अम्बर कन्द।
सकाना-(हिं०क्रि०) शंका करना, सन्देह करना, दुःखी होना, रंज करना, 'सकना' का प्रेरणार्थक रूप।
सकाम-(सं० वि०) लब्धकाम, जिसकी कामना पूरी हो गई हो, प्रेम करने वाला, कामी, फल की कामना से कोई काम करने वाला।
सकामा-(सं० स्त्री०) मैथुन की इच्छा रखने वाली स्त्री, कामवती।
सकामी-(हिं०वि०) कामनायुक्त, कामी, विषयी।
सकार-(सं०पु०) "स" अक्षर।
सकारण-(सं०वि०) हेतुयुक्त, हेतुसहित।
सकारना-(हिं० क्रि०) स्वीकार करना, मंजूर करना, महाजनों को हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुंडी देखकर उसपर हस्ताक्षर करना।
सकार विपुला-(सं० स्त्री०) एक छन्द का नाम।
सकार्श्त-(अ०स्त्री०) गुरुता, भारीपन।
सकाश-(सं०पु०) समीप, निकट।
सकिलना-(हिं०क्रि०, सरकना, फिसलना।
सकील-(अ०वि०) गुरुपाक, गरिष्ठ, जो जल्दी से हजम न हो, भारी, वजनी।
सकुच-(हिं०पु०स्त्री०) सकोच, लज्जा, शर्म।
सकुचना-(हिं० क्रि०) सकोच करना, लज्जा करना, शरमाना, फूलों का सम्पुटित होना।
सकुचाई-(हिं० स्त्री०) सकोच, लज्जा, शर्म।
सकुचाना-(हिं० क्रि०) सकोच करना, सिकोड़ना, लज्जित करना।
सकुची-(हिं० स्त्री०) कछुवे के आकार की एक प्रकार की मछली, यह मछली जल तथा थल पर रह सकती है।
सकुचीला-(हि० वि०) सकोच करने वाला, शरमीला।
सकुचौहाँ-(हिं०वि०) सकोच करने वाला।
सकुड़ना-(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सकुतूहल-(सं० वि०) कौतुक सहित।
सकुन-(हिं०पु०) शकुन पक्षी, चिड़िया।
सकुनी-(हिं० स्त्री०) पखेरू, चिड़िया।
सकुल्य-(सं० वि०) सगोत्र एक ही कुल का।
सकूनत-(अ० स्त्री०) रहने का स्थान, निवासस्थान।
सकृत्-(सं० अव्य०) एकबार, एक मरतबा, साथ, सदा।
सकृत्प्रजा-(सं० स्त्री०) बाझपन, शेरनी।
सकेत-(हिं० पु०) संकेत, इशारा, निर्दिष्ट स्थान, विपत्ति, कष्ट, दुःख, (वि०) संकीर्ण, संकुचित।
सकेतना-(हिं० क्रि०) सिकुड़ना, संकुचित होना।
सकेलना-(हिं० क्रि०) इकट्ठा करना, जमा करना।
सकेला-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की तलवार।
सकोच-(हिं०पु०) देखो सङ्कोच।
सकोचना-(हिं०क्रि०) देखो सिकोड़ना।
सकोड़ना-(हिं०क्रि०) देखो सिकोड़ना।
सकोप, सकोपित-(सं० वि०) क्रोध-युक्त, नाराज।
सकोपना-(हिं० क्रि०) क्रोध करना, गुस्सा करना।
सकोरा-(हिं० पु०) मिट्टी का छोटा प्याला, कसोरा।
सकौतुक-(सं०वि०) कौतुक युक्त।
सकरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।
सक्का-(अ० पु०) भिश्ती, मशक से पानी भरकर लोगों को पिलाने वाला।
सक्ति-(सं०स्त्री०) सङ्ग, संयोग (हिं०स्त्री०) देखो शक्ति।
सक्तु-(सं० पु०) भूने हुए अन्न को पीसकर तैयार किया हुआ आँटा, सत्तू।
सक्र-(हिं०पु०) शक्र, इन्द्र।
सक्रपति-(हिं०पु०) विष्णु।
सक्रारि-(हिं०पु०) मेघनाद।
सक्रोध-(सं०पु०) सकोप, नाराज।
सक्षण-(सं० वि०) पराभूत, हारा हुआ।
सक्षम-(सं० वि०) समर्थ, काम करने योग्य।
सक्षार-(सं०वि०) क्षारयुक्त, नमकीन।
सख-(हिं०पु०) सखा, मित्र, साथी।
सखत्व-(सं०नपु०) मित्रता।
सखरस-(हिं०पु०) मक्खन।
सखरा-(हिं०वि०) खारा, जल में पकाया हुआ भोजन, कच्ची रसोई।
सखरी-(हिं०स्त्री०) कच्ची रसोई, पहाड़ी।
सखा-(हिं० पु०) साथी, सगी, दोस्त, सहचर, साहित्य में वह व्यक्ति जो नायक के साथ सर्वदा रहता है।
सखावत-(अ०स्त्री०) उदारता, दानशीलता।
सखित्व-(सं०नपु०) बन्धुता, मित्रता, दोस्ती।
सखी-(सं० स्त्री०) सहचरी, सहेली, साहित्य में वह स्त्री जो नायिका के साथ सर्वदा रहती है, एक प्रकार का

छन्द (वि०) सुन्दर, मनोरम।
सखी–(अ०वि०) दाता, दानी।
सखीभाव–(हिं०पु०) वैष्णवों का भगवद् भजन का एक प्रकार जिसमें भक्त अपने आप को इष्टदेवता की पत्नी या सखी मानकर उपासना करता है।
सखुआ–(हिं०पु०) शालवृक्ष साखू।
सखुन–(फा० पु०) वार्तालाप, बातचीत, कविता, काव्य, कौल, वचन, कथन, उक्ति।
सखुनचीन–(फा०पुं०) चुगलखोर।
सखुनचीनी–(फा० स्त्री०) चुगलखोर।
सखुनतकिया–(फा० पु०) वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबानपर ऐसा चढ जाता है कि बातचीत करने में प्रायः मुख से निकला करता है, तकिया कलाम।
सखुनदाँ–(फा० पु०) काव्य का रसिक।
सखुनदानी–(फा० स्त्री०) काव्य की रसिकता।
सखुनपरवर–(फा० पु०) अपनी जबान या बात का धनी।
सखुनसाज–(फा०पु०) कवि, शायर।
सखुनसाजी–(फा०स्त्री०) कवि होने का भाव या काम।
सख्त–(फा०वि०) कठोर, कड़ा, मुश्किल।
सख्य–(स०नपु०) सखापन, सखा का भाव, मित्रता, दोस्ती, वैष्णवों के मत के अनुसार ईश्वर के प्रति वह भाव जिसमें भक्त इष्ट देवता को अपना सखा मानता है।
सख्यता–(स० स्त्री०) मैत्री, दोस्ती।
सगड़ी–(हि० स्त्री०) छोटा सग्गड़।
सगण–(स० पु०) छन्द शास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं।
सगद्गद्–(स०वि०) गद्गद् वाक्य युक्त।
सगन–(हि० पु०) देखो सगण।
सगन्ध–(स० वि०) गन्धयुक्त, महकदार।
सगपन–(हि०पु०) देखो सगापन।
सगपहती–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।
सगपिस्ताँ–(फा०पु०) लिसोढ़ा।
सगबग–(हि० वि०) तराबोर, लथपथ, परिपूर्ण, (क्रि०वि०) तेजी से, झटपट।
सगबगाना–(हिं०क्रि०) लथपथ होना, तराबोर होना, भयभीत होना, सकपकाना।
सगभत्ता–(हि०पु०) साग मिला हुआ भात
सगर–(स० पु०) एक सूर्यवंशी राजा जो बडे धर्मात्मा थे, इनके साठ हजार पुत्र थे, राजा भागीरथ इन्हीं के वंशज थे (हि० पु०) तालाब, झीलें।
सगरा–(हिं०वि०) सम्पूर्ण, कुल, तमाम।
सगल–(हिं०वि०) देखो सकल।
सगर्व–(स०वि०) अभिमानी, अहंकारी।
सगा–(हि०वि०) एक ही माता से उत्पन्न, सहोदर, निकट के सम्बन्ध का।
सगाई–(हिं०स्त्री०) विवाह के सम्बन्ध का निश्चय, मगनी, शूद्रों में स्त्री पुरुष का वह सम्बन्ध जो विवाह के तुल्य माना जाता है, सम्बन्ध, नाता, रिश्ता।
सगाना–(फा०पु०) खञ्जन पक्षी।
सगापन–(हिं०पु०) सगा होने का भाव, आत्मीयता।
सगाबी–(फा० स्त्री०) एक प्रकार का नेवला, ऊदबिलाव।
सगुण–(स० वि०) गुणयुक्त, गुणवान्, साकार ब्रह्म, वह सम्प्रदाय जिसमे ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।
सगुणता–(सं० स्त्री०) सगुण होने का भाव।
सगुन–(हिं०पु०) देखो शकुन, सगुन।
सगुनाना–(हिं० क्रि०) शकुन बतलाना।
सगुनिया–(हिं० पु०) शकुन विचारने या बतलाने वाला।
सगुनौती–(हि०स्त्री०) शकुन विचारने की क्रिया।
सगृह–(स० वि०) गृहयुक्त, घरवाला।
सगोती–(हिं०पु०) सगोत्र, एक खानदान का, रिश्ते नाते के लोग, भाई बन्धु।
सगौती–(हि०स्त्री०) खाने का मास, गोश्त।
सघन–(स० वि०) अविरल, घना, ठोस।
सघनता–(स० स्त्री०) सघन होने का भाव, ठोसपन।
सघृण–(स० वि०) घृणायुक्त।
सङ्कट–(स० वि०) सकीर्ण घनीभूत, एकत्रित, अभेद्य (नपु०) विपत्ति, दु:ख, कष्ट, तकलीफ।
सङ्कट चतुर्थी–(स०स्त्री०) श्रावण कृष्णा चतुर्थी।
सङ्कटा–(सं०स्त्री०) एक देवी का नाम, ज्योतिष के अनुसार एक योगिनी का नाम।
सङ्कर–(स०पु०) मिश्रित तत्व, मिश्रण, वर्णसङ्कर जाति।
सङ्करता–(स० स्त्री०) मिलावट।
सङ्कर्षण–(स०पु०) आकर्षण, खिंचाव।
सङ्कलन–(स०नपु०) सग्रह, ढेर, एकत्रीकरण, जोड़।
सङ्कलित–(स० वि०) एकत्रित किया हुआ, जोड़ लगाया हुआ।
सङ्कल्प–(स० पु०) विचार, इरादा, दानपुण्य अथवा देवकार्य आरम्भ करने से पहिले दृढ़ निश्चय या विचार का प्रगट करना, ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम।
सङ्कल्पना–(स०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा।
सङ्कार–(स० पु०) धूल आदि जो झाड़ू देने से उड़ती है, आग जलने का शब्द।
सङ्काश–(स०अव्य०) सदृश, समीप, निकट
सङ्कीर्ण–(स० पु०) भीड़भाड़, सकट, विपत्ति, वह राग या रागिणी जो दो दूसरे राग या रागिणियों को मिलाकर बने (वि०) अपवित्र, सकुचित, सँकरा, तुच्छ, नीच, क्षुद्र।
सङ्कीर्णता–(स०स्त्री०) क्षुद्रता, ओछापन।
सङ्कीर्तन–(स० नपुं०) गाते हुए भगवद् भजन।
सङ्कुचन–(स०नपु०) सिकुड़ना।
सङ्कुचित–(स० वि०) सिकुड़ा या सिमटा हुआ।
सङ्कुल–(सं० नपु०) युद्ध, लड़ाई, समूह, झुंड।
सङ्कुलित–(स०वि०) एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ।

सङ्केत-(सं०पु०) इङ्गित, इशारा, शृंगार, चेष्टा, चिह्न, निशान ।
सङ्कोच-(सं० पु०) खिंचाव, तनाव, लज्जा, शर्म, हिचकिचाहट, कमी ।
सङ्कोचन-(सं०नपु०) सिकुड़ने की क्रिया-
सङ्कोचित-(सं०वि०) लज्जित, शरमिन्दा-
सङ्क्रमण-(सं० पु०) गमन, चलना, सूर्य का एक राशि से निकल कर दूसरे में प्रवेश करना ।
सङ्क्रान्ति-(सं० स्त्री०) जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में जाते हैं तब उसको रवि की संक्रान्ति कहते हैं ।
सङ्क्रामक-(सं०वि०) संसर्ग या छूत से फैलने वाला, संक्रामकरोग-वह रोग जो छूत आदि के कारण एक से औरों में फैलता है ।
सङ्क्षय-(सं० पु०) नाश, ध्वंस, प्रलय ।
संक्षिप्त-(सं०वि०) संचित किया हुआ, छोड़ा हुआ, जो संक्षेप में कहा गया हो, खुलासा, संक्षिप्त लिपि-एक लेखन प्रणाली जिसमें संचित चिह्नों का प्रयोग होता है जिसके द्वारा थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं ।
सङ्क्षुब्ध-(सं० वि०) व्याकुल, घब-ड़ाया हुआ ।
सङ्क्षेप-(सं० पु०) थोड़े में कोई बात कहना ।
सङ्क्षेपण-(सं० नपु०) काट छांट करने की क्रिया ।
सङ्क्षेपत -(सं०अव्य०)संक्षेप में, थोड़े में ।
सङ्क्षोभ-(सं०पु०) चंचलता, गर्व, घमंड, कम्पन, काँपना ।
सङ्खनारी-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं ।
सङ्ख्या-(सं० स्त्री०) गणना, गिनती ।
सङ्ख्या लिपि-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की लेखनप्रणाली जिसमें वर्णों के स्थान में अङ्कों का प्रयोग होता है ।
सङ्ख्या विधान-(सं० नपुं०) गणना का नियम ।
सङ्ग-(सं० पु०) मिलने की क्रिया, संसर्ग, सहवास, सम्बन्ध, वासना, बन्धुत्व, दोस्ती ।
सङ्गत-(सं० नपु०) संगति, सोहबत, मैथुन, संसर्ग, वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले साधु रहते हैं ।
सङ्गति-(सं० स्त्री०) संगम, मेल, सम्बन्ध, सोहबत ।
सङ्गम-(सं०पुं०) दो नदियों के मिलने का स्थान, मिलाप, सम्मेलन ।
सङ्गिनी-(सं०स्त्री०) भार्या, पत्नी, जोरू ।
सङ्गीत-(सं० नपु०) वह कार्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हो ।
सङ्गीतवेश्म-(सं०स्त्री०) संगीतशाला ।
सङ्गीतशास्त्र-(सं० नपु०) वह शास्त्र जिसमें गाने, बजाने, नाचने आदि की कला का विवेचन हो ।
सङ्गृहीत-(सं०वि०) संग्रह किया हुआ, जमा किया हुआ ।
सङ्ग्रह-(सं०पु०)एकत्र करने की क्रिया, वह ग्रन्थ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों, संयम,जमघट, जमाव, सभा,स्वीकार, मंजूरी,शीघ्र ग, सूची, फिहरिस्त ।
सङ्ग्रहणी-(सं० स्त्री०) ग्रहणी रोग जिसमें भोजन किया हुआ पदार्थ पाचन नहीं होता मल द्वारा निकल जाता है ।
सङ्ग्रहीत-(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ ।
सङ्ग्राम-(सं०पु०) युद्ध, लड़ाई ।
सङ्ग्राही-(सं० पु०) कब्ज़ियत करने वाला पदार्थ ।
सङ्घ-(सं० पु०) समुदाय, दल, सभा, समाज ।
सङ्घटन-(सं०नपु०)संयोग,मेल,निर्माण, रचना ।
सङ्घटित-(सं०वि०) एकत्र किया हुआ, बनाया हुआ ।
सङ्घर्ष-(सं०पु०)रगड़,घिस्सा मर्दन, स्पर्धा ।
सङ्घात-(सं० पु०) समूह, जमाव, आघात, चोट, एक नरक का नाम ।
सङ्घातक-(सं०वि०) प्राण लेने वाला ।
सङ्घाती-(सं० पुं०) प्राणनाशक ।
सच-(हिं०वि०) यथार्थ,वास्तविक,सत्य ।
सचन-(सं०नपु०) सेवा करने की क्रिया या भाव ।
सचना-(हिं० क्रि०) एकत्रित करना, इकट्ठा करना, देखो सजना ।
सचमुच-(हिं०अव्य०)यथार्थ में,वास्तवमें, निःसन्देह, निश्चय करके ।
सचरना-(हिं० क्रि०) प्रचलित होना, फैलना, संचार करना ।
सचराचर-(सं० पु०) सब चर और अचर वस्तु ।
सचल-(सं० वि०) चर, चलायमान, चलने वाला ।
सचाई-(हिं०स्त्री०) सत्यता, सच्चापन ।
सचान-(सं०पु०) श्येन पक्षी, बाज ।
सचारना-(हिं० क्रि०) फैलाना ।
सचिन्त-(सं०वि०) चिन्तायुक्त,चिन्तित ।
सचिक्कण-(सं० वि०) बहुत चिकना ।
सचित्-(सं० वि०) जिसको ज्ञान या चेतना हो ।
सचित्त-(सं०वि०) जिसका ध्यान एक ओर लगा हो ।
सचित्र-सं०वि०) चित्रयुक्त,चित्रसहित।
सचिव-(सं०पु०) मन्त्री, वजीर,सहायक, मददगार, मित्र ।
सची-(सं०स्त्री०) शची, इन्द्राणी ।
सचीसुत-(हिं०पु०) जयन्त ।
सचु-(हिं०पु०) सुख, आनन्द, प्रसन्नता ।
सचेत-(हिं०वि०) चेतना युक्त, समझदार, सावधान, होशियार ।
सचेतन-(सं० त्रि०) चैतन्य, चतुर, सावधान, होशियार, चेतन प्राणी ।
सचेती-(हिं०स्त्री०)सावधानी,होशियारी ।
सचेष्ट-(सं०वि०) चेष्टायुक्त, उद्योगी।
सच्चरित-(सं०वि०) जिसकी चाल चलन अच्छी हो ।
सच्चा-(हिं०वि०) सत्यवादी, सच बोलने वाला, यथार्थ, वास्तविक, विशुद्ध, असली, ठीक ।
सच्चाई-(हिं०स्त्री०) सत्यता, सच्चापन ।
सच्चापन-(हिं०पु०) सत्यता, सचाई ।

सचाहट–(हि०पु०) सत्यता, सच्चापन।
सच्चित्–(स० नपु०) सत् और चित् से युक्त ब्रह्म।
सच्चिदानन्द–(स०पु०) नित्य ज्ञान सुख स्वरूप ब्रह्म।
सच्छत–हि०पु०) देखो अक्षत, चावल।
सच्छन्द–(हिं०वि०) देखो स्वच्छन्द।
सच्छाय–(स० वि०) छायायुक्त।
सच्छात्र–(स०नपु०) उत्तम विद्यार्थी।
सच्छी–(हि०पु०) देखो साक्षी, गवाह।
सज–(हिं०स्त्री०)सधने की क्रिया या भाव, रूप, शकल, शोभा, सौन्दर्य।
सजग–(हि० वि०) सतर्क, सावधान, होशियार।
सजदार–(हिं० वि०) अच्छी आकृति का, सुन्दर।
सजधज–(स०स्त्री०) शृंगार, सजावट।
सजन–(स० वि०) जनयुक्त, (पु०) भला आदमी, पति, प्रियतम, यार, आशिक।
सजना–(हि० क्रि०) शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, सुशोभित होना, (पु०) एक प्रकार का वृक्ष।
सजन्य–(स० वि०) सजातीय।
सजल–(स०वि०) जल से युक्त, अश्रुपूर्ण।
सजवल–(हि० पु०) तैयारी।
सजवाई–(हिं० स्त्री०) सजने या सजाने की क्रिया, सजाने की मज़दूरी।
सजवाना–(हिं०क्रि०) सजाने का काम दूसरे से कराना।
सज़ा–(फा० स्त्री०) अपराध के कारण होने वाला दण्ड, कारागृह में रखने का दण्ड।
सजाई–(हि० स्त्री०) सजाने की क्रिया या भाव, सजाने की मज़दूरी।
सजागर–(सं०वि०) जाग्रत, जागता हुआ।
सजाति–(स० पु०) समान श्रेणी, एक जाति, (वि०) एक जाति का।
सजातीय–(स० वि०) एक जाति या गोत्र का।
सजान–(हि०पु०) सज्ञान,जानकार, चतुर।
सजाना–(हिं० क्रि०) शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, भला जान पड़ना, उचित स्थान में वस्तुओं को रखना जिसमें सुन्दर जान पड़ें सजाना।
सजबज़–(हि०स्त्री०) देखो सजधज।
सज़ायाफ्ता–(फा०पु०) वह जो सजा भोग चुका हो।
सज़ायाब–(फा० वि०) दण्डनीय, जो सज़ा पाने के योग्य हो।
सजाव–(हि०पु०) एक प्रकार सुन्दर दही।
सजावट–(हिं० स्त्री०) शोभा, तैयारी।
सजावन–(हि० पुं०) सजाने का भाव या क्रिया।
सजावल–(फा० पु०) सरकारी कर वसूल करने वाला अधिकारी, तहसीलदार, जमादार।
सजीउ–(हिं० वि०) देखो सजीव।
सजीला–(हि० वि०) सजधज के साथ रहने वाला, मनोहर, सुन्दर, छैला, सुडौल।
सजीव–(सं० वि०) जीवित, जिसमें प्राण हो, तेज़, फुरतीला, ओजस्वी (पु०) जीवधारी।
सजीवन–(हि०पु०) सजीवनी नामक बूटी।
सजीवन बूटी–(हि०स्त्री०) रुद्रदन्ती, रुदन्ती।
सजीवनी मन्त्र–(स०पुं०) वह मन्त्र जिसके विषय में यह कहा जाता है कि यह मृत प्राणी को जिला देता है।
सजुग–(हि० वि०) सचेत, चैतन्य।
सजुता–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं।
सजूरी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।
सजोना–(हिं० क्रि०) देखो सजाना।
सज्ज–(स० वि०) सज्जित, सजा हुआ, कवचधारी।
सज्जता–(स० स्त्री०) सजावट।
सज्जन–(स०पु०) सत्पुरुष, भला आदमी, सभ्य पुरुष, अच्छे कुल का मनुष्य, प्रियतम, सजाने की क्रिया या भाव।
सज्जनता–(स०स्त्री०) भलमनसी।
सज्जनताई–(हिं० स्त्री०) भलमनसी।
सज्जा–(स०स्त्री०) वेषभूषा, सजावट, (हि० स्त्री०) सोने की चारपाई, शय्या, चारपाई।
सज्जादा–(अ०पु०) वह कपड़ा जिस पर मुसलमान लोग नमाज पढ़ते हैं, मुसल्ला, फकीरों की गद्दी।
सज्जादा नशीन–(अ०पु०) मुसलमान पीर या बड़ा फकीर।
सज्जित–(स० वि०) विभूषित, सजा हुआ, तैयार।
सज्जी–(हि०स्त्री०) एक प्रकार का क्षार जो भूरापन लिये सफेद होता है, इसको सजीखार भी कहते हैं।
सज्जी बूटी–(हिं०स्त्री०) एक वनस्पति जिसमें से सजी निकाली जाती है।
सज्जुता–(हि०स्त्री०) सयुता नामक छन्द।
सज्जुष्ट–(स०वि०) सुखदायक, आनन्द देने वाला।
सज्ञान–(स० वि०) ज्ञानयुक्त, चतुर, बुद्धिमान्।
सझ–(हि०स्त्री०) सजावट, तैयारी।
सझनी–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पक्षी।
सञ्चय–(स० पु०) सग्रह, समूह, ढेर, बहुतायत।
सञ्चयी–(हिं० वि०) सचय करने वाला, कृपण, कजूस।
सञ्चर, सञ्चरण–(स०) गमन, चलना, कम्पन।
सञ्चरित–(स०वि०) प्रस्थित, प्रचलित।
सञ्चल–(स०नपु०) साँभर नमक।
सञ्चलन–(स० नपु०) हिलना डोलना, चलना फिरना।
सञ्चार–(सं० पु०) गमन, चलना, विस्तार, फैलने की क्रिया या भाव, उत्तेजन, कष्ट, विपत्ति, ग्रहों या नक्षत्रों का एक राशि से दूसरी राशि में जाना।
सञ्चारक–(स०पु०) चलाने वाला।
सञ्चारण–(स०नपु०) प्रसारण, फैलाव।
सञ्चारणीय–(स०वि०) फैलाने योग्य।
सञ्चारिका–(स०स्त्री०)कुट्टनी,कुटनी,दूती।
सञ्चारित–(स० वि०) चलाया या

फैलाया हुआ।

सञ्चारी-(हिं० पु०) संगीत शास्त्र के अनुसार गीत के चार चरणों में से तीसरा चरण, वायु, हवा, साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि करते हैं।

सञ्चाल-(सं०पु०) चलन, चलना।

सञ्चालक-(सं० पु०) गति देने या चलाने वाला।

सञ्चालन-सं० न्पु०) प्रतिपादन, काम जारी रखना।

सञ्चित-(सं०वि०) संचय किया हुआ, ढेर लगाया हुआ।

सञ्जय-(सं० पु०) धृतराष्ट्र के एक मन्त्री का नाम।

सञ्जन-(सं०पु०) बन्धन, संघटन।

सञ्जय-(सं० वि०) अच्छी तरह जीतने वाला।

सञ्जल्प-(सं०पु०) कथावार्ता, बातचीत।

सञ्जात-(सं० वि०) प्राप्त, उत्पन्न।

सञ्जीव-(सं० वि०) मरे हुए को जिलाने वाला।

सञ्जीवनी-(सं०स्त्री०) जीवन दायिनी औषधि, मरे हुए लोगों को जिलाने की विद्या।

सटक-(हिं० स्त्री०) सटकने की क्रिया, खिसकने का व्यापार, तमाखू पीने का लंबा नैचा, पतली लचकने वाली छड़ी।

सटकना-(हिं० क्रि०) धीरे से भाग जाना, चम्पत होना, बालों में से अन्न के दाने निकालने के लिये उनको पीटने की क्रिया।

सटकाना-(हिं०क्रि०) किसी को कोड़े छड़ी आदि से मारना सटसट शब्द करते हुए हुक्का पीना।

सटकार-(हिं० स्त्री०) सटकाने की क्रिया या भाव।

सटकारना-(हिं०क्रि०) किसी लचीली वस्तु से किसी को मारना।

सटकारा-(हिं०वि०) चिकना और लम्बा।

सटकारी-(हिं०स्त्री०) लचकने वाली पतली छड़ी।

सटक्का-(हिं० पु०) देखो सटका, दौड़, झपट।

सटना-(हिं० क्रि०) दो वस्तुओं का एक में एक मिलना, चिपकना, साथ होना, मिलना, लाठी सोटे की मारपीट होना।

सटपट-(हिं०स्त्री०) सिटपिटाने की क्रिया, चकपकाहट, असमञ्जस, संकट, दुविधा।

सटपटाना-(हिं० क्रि०) सटपट की ध्वनि होना।

सटरपटर-(हिं०वि०) अत्यन्त साधारण, बहुत मामूली, तुच्छ, (स्त्री०) तुच्छ कार्य, उलझन का काम।

सटसट-(हिं०क्रि०वि०) सटसट शब्द के साथ, सटासट, अति शीघ्र, तुरत।

सटा-(सं०स्त्री०) जटा, शिखा, अयाल, केसर।

सटाक-(हिं० पु०) सट शब्द।

सटाकी-(हिं० स्त्री०) छड़ी में लगी हुई चमड़े की पट्टी।

सटान-(हिं०स्त्री०) सटने की क्रिया या भाव, मिलान।

सटाना-(हिं० क्रि०) मिलाना, जोड़ना, मारपीट करना, स्त्री पुरुष का संयोग होना।

सटिया-(हिं० स्त्री०) सोने या चांदी की एक प्रकार की चूड़ी।

सटीक-(सं० वि०) टीका या व्याख्या सहित, (हिं० वि०) ठीक ठीक जैसा चाहिये वैसा।

सट्टक-(सं०नपुं०) नाटक का एक भेद जिसमें प्रायः अद्भुत रस का वर्णन रहता है।

सट्टा-(हिं०पु०) किसी काम को निश्चित करने के लिये लिखा हुआ इकरारनामा, हाट, बजार।

सट्टाबट्टा-(हिं०पु०) हेलमेल, मेलमिलाप, चालबाजी।

सट्टी-(हिं०स्त्री०) वह बाजार जिसमें फल तरकारी आदि बिकती है, हाट।

सठ-(हिं०पु०) देखो शठ, दुष्ट, पाजी।

सठता-(हिं० स्त्री०) शठता, दुष्टता, बदमाशी।

सठियाना-(हिं०क्रि०) साठ वर्ष का होना, बुड्ढा होना, वृद्धावस्था के कारण विवेक तथा बुद्धि का कम होना।

सठेरा-(हिं०पु०) सटा, सरई।

सडक-(हिं०स्त्री०) राजमार्ग, मार्ग, रास्ता।

सड़न-(हिं० स्त्री०) सड़ने का भाव या क्रिया।

सड़ना-(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ में खमीर उठना या लाना, दुर्दशा में पड़ना, बुरी अवस्था में पहुँचना, किसी काम का न रह जाना।

सडसठ-(हिं०वि०) साठ और सात की संख्या का, (पु०) जो गिनती में साठ और सात हो ६७।

सडसठवाँ-(हिं०वि०) गिनती में सड़सठ के स्थान पर रहने वाला।

सड़सी-(हिं०स्त्री०) देखो सँड़सी।

सड़ा-(हिं०वि०) सड़ी हुई वस्तु सम्बन्धी।

सड़ाइन-(हिं० स्त्री०) सड़ाहट की दुर्गन्ध वास।

सडाक-(हिं०पु०) कोड़े आदि के पड़ने का शब्द, शीघ्रता।

सड़ान-(हिं०स्त्री०) सड़ने की क्रिया।

सडाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।

सडायध-(हिं०स्त्री०) सड़ी हुई वस्तु की गन्ध।

सडाव-(हिं० पु०) सड़ने की क्रिया या भाव।

सडासड-(हिं०क्रि०वि०) सड शब्द के साथ।

सड़ियल-(हिं०वि०) सड़ा गला हुआ, तुच्छ, नीच, निकम्मा।

सण्ड-(हिं०पु०) षण्ड, सांड़।

सत्-(सं० नपु०) ब्रह्म, (वि०) सत्य, उत्तम, विद्यमान, शुद्ध, पवित्र, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य विद्वान्, नित्य चिरस्थायी।

सत-(हिं०पु०) सत्व, किसी पदार्थ का मूल तत्व, सार भाग, शक्ति, ताकत, (वि०) सात का संक्षिप्त रूप।

सतकार-(हिं०पु०) देखो सत्कार।

सतकारना-(हिं०क्रि०) सम्मान करना।

सतगठिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई

जाती है।
सतगुरु–(हिं०पु०) अच्छा गुरु, परमात्मा।
सतजुग–(हिं०पु०) देखो सत्ययुग।
सतत–(स०अव्य०) सर्वदा, निरन्तर, हमेशा।
सततगति–(स०पु०) वायु, हवा।
सतदल–(हिं०पु०) कमल।
सतनजा–(हिं० पु०) सात प्रकार के अन्नों का मेल।
सतनी–(हिं०स्त्री०) सप्तपर्णा वृक्ष, सतिवन।
सतनु–(स०वि०) शरीर वाला।
सतपतिया–(हिं०स्त्री०) वह स्त्री जिसने सात पति किये हों, व्यभिचारिणी, छिनाल।
सतपदी–(हिं०स्त्री०) देखो सप्तपदी।
सतपुतिया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की तराई जो वर्षाऋतु में होती है।
सतपुरिया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जंगली मधुमक्खी।
सतफेरा–(हिं० पु०) विवाह के समय होने वाला सप्तपदी नामक कर्म।
सतभइया–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मैना।
सतभाव–(हिं०पु०, सद्भाव, सज्जनता सचाई
सतभौंरी–(हिं०स्त्री०) विवाह के समय वर और कन्या का सात बार अग्नि की प्रदक्षिणा करना।
सतमासा–(हिं० पु०) सात महीने पर उत्पन्न होने वाला बच्चा, वह रस्म जो शिशु के गर्भ आने पर सातवें महीने पर की जाती है।
सतमूली–(हिं० स्त्री०) शतावरी, सतावर।
सतयुग–(हिं० पु०) देखो सत्ययुग।
सतरंगा–(हिं०वि०) जिसमें सात रंग हों।
सतरंज–(हिं०स्त्री०) देखो शतरंज।
सतरंजी–(हिं०स्त्री०) देखो शतरंजी।
सतर–(अ०स्त्री०) लकीर, रेखा, पंक्ति, कतार, गुह्य इन्द्रिय, ओट, परदा (वि०) क्रुद्ध।
सतरह–(हिं०पु०) देखो सत्रह।
सतराना–(हिं०क्रि०) क्रोध करना, कुढ़ना।
सतरौंहा–(हिं०वि०) कुपित, क्रोधयुक्त।
सतर्क–(स० वि०) तर्कयुक्त, सावधान, होशियार।
सतर्कता–(स०स्त्री०) सावधानी, होशियारी।
सतर्पना–(हिं०क्रि०) भलीभांति सन्तुष्ट करना।
सतल–(स०वि०) तलयुक्त।
सतलज–(हिं० स्त्री०) पञ्जाब की पांच प्रसिद्ध नदियों में से एक, शतद्रु नदी।
सतलड़ा–(हिं०वि०) सात लड़ियों का हार।
सतवती–(हिं०स्त्री०) सती, पतिव्रता स्त्री।
सतसंग–(हिं०पु०) देखो सत्सङ्ग।
सतसंगी–(हिं०वि०) देखो सत्संगी।
सतसई–(हिं०स्त्री०) सात सौ पद्यों का समूह, वह ग्रन्थ जिसमें सात सौ पद्य हों।
सतह–(अ०स्त्री०) किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल, रेखा गणित के अनुसार वह विस्तार जिसमें लंबाई चौड़ाई हो परन्तु मोटाई न हो।
सतहत्तर–(हिं०वि०) सत्तर और सात की संख्या का (पु०) सत्तर और सात की संख्या ७७।
सतहत्तरवां–(हिं०वि०) वह जो क्रम से सतहत्तर के स्थान पर हो।
सतांग–(हिं० पुं०) रथ, यान।
सतानन्द–(स०पु०) गौतम ऋषि के पुत्र जो राजा जनक के पुरोहित थे।
सताना–(हिं० क्रि०) कष्ट या दुःख देना, हैरान करना।
सतार–(स०वि०) तार के सहित।
सतालू–(हिं०पु०) एक छोटा वृक्ष जिसके गोल फल खाये जाते हैं, शफ्ताल, आड़ू।
सतावर–(हिं०स्त्री०) एक झाड़दार बेल जिसकी जड़ औषधियों के काम में आती है।
सतासी–(हिं०वि०) अस्सी और सात की संख्या ८७।
सतासीवां–(हिं० वि०) जिसका स्थान अस्सी और सात पर पड़ता हो।
सति–(स०स्त्री०) दान।
सतिवन–(हिं० पु०) एक बड़ा सदाबहार वृक्ष जिसकी छाल दवाओं के काम में आती है।
सतिमिर–(स० वि०) अन्धकार युक्त।
सतिल–(स० वि०) तिलयुक्त, तिल के साथ।
सती–(स० स्त्री०) साध्वी स्त्री, पतिव्रता स्त्री, वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले, दक्ष की कन्या का नाम जो शिवको व्याही थी, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार अक्षर होते हैं विश्वामित्र की पत्नी का नाम।
सती चौरा–(हिं०पु०, वह वेदी या चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक में बनाया जाता है।
सतीत्व–(स०नपु०) सती होने का भाव।
सतीत्व हरण–(स०नपु०) परस्त्री के साथ बलात्कार।
सतीपन–(हिं०पु०) सती रहने का भाव।
सतुआ–(हिं० पु०) भूने हुए जव चने आदि का महीन आटा, सत्तू।
सतुआ सक्रान्ति–(हिं०पु०) मेष सक्रान्ति जिस दिन सत्तू दान किया जाता है।
सतुष–(स०वि०) भूसा सहित (अन्न)
सतून–(फा० पुं०) स्तम्भ, खंभा।
सतूना–(फा०पु०) बाज़ पक्षी की झपट।
सतृण–(स० वि०) तृण युक्त।
सतृष्ण–(स० वि०) पिपासित, प्यासा, अभिलाषी।
सतेज–(हिं० वि०) तेजस्वी, बलवान्।
सतेरो–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मधुमक्खी।
सतोगुण–(हिं० पु०) देखो सत्वगुण।
सतोगुणी–(हिं० पु०) सात्विक, उत्तम प्रकृति का।
सतौला–(हिं० पु०) प्रसूता स्त्री का विधि पूर्वक सातवें दिन का स्नान।
सत्कथा–(स०स्त्री०) विष्णु सबंधी कथा।
सत्करण–(स०नपु०) सत्कार करना, आदर करना।
सत्कर्म–(स० नपु०) अच्छा कार्य, पुण्य।
सत्कवि–(स०पु०) श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि।
सत्कार–(स०पु०) आदर, सम्मान, पूजा, आतिथ्य, मेहमानदारी, खातिरदारी।
सत्कार्य–(स० नपु०) सत्कर्म, अच्छा काम (वि०) सत्कार करने योग्य।
सत्कीर्ति–(स० स्त्री०) उत्तम कीर्ति, नेकनामी।
सत्कुल–(स०नपुं०) उत्तम कुल, अच्छा

खानदान (वि०) अच्छे कुल का, खानदानी ।
सत्कृत-(सं० वि०) जिसका सत्कार किया गया हो ।
सत्कृति-(सं०स्त्री०) सत्कार (पु०) विष्णु ।
सत्क्रिया-(सं० स्त्री०) शव की दाह-क्रिया, अच्छा व्यवहार, खातिरदारी, पुरस्कार ।
सत्त-(हिं०पु०) किसी पदार्थ का सार-भाग, तत्व, असली जुज ।
सत्तर-(हिं०वि०) साठ और दस की संख्या का (पु०) साठ और दस की संख्या ७० ।
सत्तरहवां-(हि० वि०) जो क्रम से सत्तर के स्थान पर हो ।
सत्तर्क-(सं० पु०) उत्तम तर्क ।
सत्ता-(सं०स्त्री०) विद्यमानता, अस्तित्व, उत्कर्ष, उत्पत्ति, प्रभुत्व शक्ति, गुण, द्रव्य तथा कर्म विशिष्ट जाति ।
सत्ता-(हिं०स्त्री०) ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियां हों ।
सत्ताईस-(हिं०वि०) बीस और सात की संख्या का (पु०) बीस और सात की संख्या २७ ।
सत्ताइसवां-(हिं० वि०) जो क्रम से सत्ताईस के स्थान पर पड़ता हो ।
सत्ताधारी-(सं०पु०)अधिकारी,अफसर ।
सत्तानवे-(हिं०वि०) नब्बे और सात की संख्या का (पु०) नब्बे और सात की संख्या ९७ ।
सत्तानवेवा-(हिं० वि०) जो क्रम से सत्तानवे स्थान पर पड़ता हो ।
सत्तावन-(हिं०वि०) पचास और सात की संख्या का, (पु०) पचास और सात की संख्या ५७ ।
सत्तावनवाँ-(हिं० वि०) जो क्रमसे सत्तावन के स्थान पर पड़ता हो ।
सत्ता शास्त्र-(सं०पु०) पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमें मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो ।
सत्तासी-(हिं०वि०) अस्सी और सात की संख्या का (पु०) अस्सी और सात की संख्या ८७ ।
सत्तासीवां-(हिं० वि०) जो क्रम से सत्तासी के स्थान पर हो ।
सत्तू-(हिं० पु०) जव चने आदि को भूनकर पीसा हुआ आटा, सतुआ ।
सत्पति-(सं०पु०) साधुओं का पालन करने वाला ।
सत्पत्र-(सं०नपु०) नये कमल का पत्ता ।
सत्पथ-(सं०पु०) उत्तम मार्ग, सम्प्रदाय या सिद्धान्त ।
सत्पशु-(सं०पु०) उत्तम पशु ।
सत्पात्र-(सं० नपु०) दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति, श्रेष्ठ, सदाचारी मनुष्य, अच्छा वर, उपयुक्त उपहार ।
सत्पुत्र-(सं०पु०) सुपुत्र, उत्तम सन्तान ।
सत्पुरुष-(सं० पु०) पूज्य पुरुष, भला आदमी ।
सत्पुष्प-(सं० नपु०) उत्तम या बढ़िया फूल ।
सत्फल-(सं० पु०) नारियल, अनार ।
सत्य-(सं० नपु०) सतयुग, कृतयुग, यथार्थ, ठीक बात, प्रतिज्ञा, शपथ, कसम, पातञ्जल दर्शन के अनुसार यथार्थ बात और मन, ब्रह्म, (पु०) विष्णु, पीपल का वृक्ष, नवें कल्प का नाम, उचित पक्ष, परमार्थिक सत्ता, ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं (वि०) वास्तविक, सच्चा, ठीक, सही ।
सत्यकर्मा-(सं०पु०)सत्कार्य करने वाला ।
सत्यकाम-(सं०पुं०) सत्य का प्रेमी ।
सत्यघ्न-(सं० वि०) सत्य का पालन न करने वाला ।
सत्यजित्-(सं० वि०) कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
सत्यज्ञ-(सं०त्रि०) सत्य को जानने वाला ।
सत्यतः-(सं० अव्य०) वास्तव में, यथार्थ में, सचमुच ।
सत्यता-(सं०स्त्री०) नित्यता, सचाई ।
सत्यधृति-(सं० पु०) सत्यशील ।
सत्यनारायण-(सं०पु०) सत्यदेव, विष्णु ।
सत्यपर-(सं०वि०) ईमानदार ।
सत्यपुरुष-(सं०पु०) परमात्मा ।
सत्यप्रतिज्ञ-(सं० वि०) सत्यवादी, वचन का सच्चा ।
सत्यफल-(सं० पु०) वेल का वृक्ष ,
सत्यभामा-श्रीकृष्ण की एक प्रधान महिषी का नाम ।
सत्यभारत-(सं०पु०) वेदव्यास ।
सत्यभाषण-(सं०नपु०) सच बात कहना ।
सत्ययुग-(सं० नपु०) चार युगों में से पहिले युग का नाम ।
सत्ययुगी-(सं० वि०) सच्चरित्र, अति प्राचीन ।
सत्यरूप-(सं०पु०) विष्णु ।
सत्यलोक-(सं०पु०) ब्रह्मलोक ।
सत्यवती-(सं० स्त्री०) वेदव्यास की माता का नाम ।
सत्यवाचक-(सं०वि०)सच बोलने वाला ।
सत्यवादी-(सं० त्रि०) यथार्थ वक्ता, प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहने वाला ।
सत्यवान्-(सं० पुं०) सावित्री के पति का नाम ।
सत्यवाहन-(सं० वि०) धर्म पर दृढ रहने वाला ।
सत्यविक्रम-(सं० त्रि०) सत्यवादी ।
सत्यव्रत-(सं०पु०) सच बोलने वाला, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।
सत्यशील-(सं० वि०) सच्चा ।
सत्यसङ्कल्प-(सं० वि०) विचारे हुए काम को पूरा करने वाला ।
सत्यसन्ध-(सं०त्रि०) सत्यवादी, विष्णु, रामचन्द्र ।
सत्या-(सं० स्त्री०) व्यास की माता सत्यवती, कृष्ण की पत्नी, सत्यभामा, दुर्गा
सत्याग्रह-(सं०पु०) किसी न्यायपूर्ण पक्ष के लिये निरन्तर शान्ति पूर्वक हठ करना ।
सत्यानास-(हिं० पु०) सर्वनाश, ध्वंस ।
सत्यानासी-(हिं० वि०) नाश करने वाला, चौपट करने वाला, अभागा, एक कँटीला पौधा ।
सत्यायु-(सं० पु०) उर्वशी के एक पुत्र का नाम ।

सत्येतर-(सं०वि०) सत्य से भिन्न, झूठा।
सत्र-(सं०नपुं०) यज्ञ, धन, घर, मकान, वह स्थान जहा पर अनाथों को भोजन दिया जाता है।
सत्रहन्-(सं०पुं०) शत्रुघ्न।
सत्व-(सं० पुं०) अस्तित्व, सत्ता, चित्त की प्रवृत्ति, तत्व, चैतन्य, प्राण, जीव, सत्वगुण, अच्छे काम करने का गुण।
सत्वधाम-(सं०पुं०) विष्णु का एक नाम।
सत्वर-(सं०अव्य०) शीघ्र, तुरत, झटपट।
सत्सङ्ग-(सं० पुं०) साधु सज्जन के साथ उठना बैठना।
सत्सङ्गति-(सं०स्त्री०) देखो सत्सङ्ग।
सत्सङ्गी-(सं०वि०) सत्सग करने वाला।
सत्समागम-(सं०पुं०) भले आदमियों का ससर्ग।
सथर-(हिं०पुं०) स्थल, स्थान, भूमि।
सथिया-(हिं० पुं०) स्वस्तिक, एक मगल सूचक चिह्न जो समकोण पर काटती हुई दो रेखाओं के रूप में बनता है, चीर फाड़ करने वाला, जर्राह।
सद-(हिं०अव्य०(स्त्री०) तुरत (वि०) नवीन, ताजा, (स्त्री०) प्रकृति, आदत।
सदई-(हिं०अव्य०) सर्वदा, हमेशा।
सदका-(अ० पुं०) ईश्वर के नाम पर दी जाने वाली वस्तु, दान, उतारा, निछावर।
सदक्ष-(सं० वि०) ज्ञानयुक्त, अक्लमन्द।
सदण्ड-(सं० वि०) दण्ड युक्त।
सदन-(सं० नपुं०) घर, मकान, जल, पानी, स्थिरता, विराम, थकावट।
सदना-(हिं०क्रि०)छेद में से रसना,चूना।
सदबर्ग-(फ़ा०पुं०) हजारा गेंदा।
सदमा-(अ०पुं०) मानसिक व्यथा, रज, बड़ी हानि।
सदय-(सं०वि०) दयालु, दया युक्त।
सदर-(अ०वि०) प्रधान, खास, वह स्थान जहा कोई बड़ा हाकिम रहता हो अथवा जहा बड़ी कचहरी हो।
सदर अदालत-(अ० स्त्री०) प्रधान विचारालय।
सदरआला-(अ०पुं०) वह बड़ा हाकिम जो जज से नीचे पद का हो, छोटा जज, सब् जज्।
सदर दरवाजा-(फ़ा०पुं०) मकान का खास दरवाजा।
सदर बाजार-(फ़ा०पुं०) बड़ा या खास बाज़ार।
सदर बोर्ड्-(अ०पुं०) माल की सबसे बड़ी अदालत।
सदरी-(अ० स्त्री०) बिना आस्तीन की कुरती या बंडी जो कपड़ों के ऊपर पहिनी जाती है।
सदर्थ-(सं० पुं०) मुख्य विषय, असल बात।
सदर्थना-(हिं० क्रि०) पुष्टि या समर्थन करना।
सदर्प-(सं० वि०) अभिमानी, घमडी।
सदसत्-(सं० वि०) सच और झूठ, अच्छा और बुरा।
सदसत् फल-(सं०नपुं०) भला और बुरा फल।
सदसत् विवेक-(सं० पुं०) अच्छे और बुरे की पहचान, भले बुरे का ज्ञान।
सदस्य-(सं० पुं०) याजक, यज्ञ करने वाला, किसी सभा या समाज का सभासद, मेम्बर।
सदहा-(हिं० पुं०) अनाज लादने की बड़ी बैलगाड़ी (हिं० वि०) सैकड़ों।
सदा-(सं०अव्य०) सर्वदा, हमेशा,निरन्तर।
सदाकत-(अ०स्त्री०) सत्यता, सचाई।
सदागति-(सं० पुं०) वायु, हवा, सूर्य, विष्णु, (वि०) सर्वदा चलने वाला,
सदागम-(सं० पुं०) अच्छा सिद्धान्त।
सदाचरण-(सं० नपुं०) अच्छी चाल चलन।
सदाचार-(सं०पुं०) सात्विक व्यवहार, साधुओं का आचरण, भलमनसी, रीति, रिवाज़।
सदाचारी-(सं०पुं०) धर्मात्मा, पुण्यात्मा, अच्छे आचरण वाला, सर्वदा घूमने वाला।
सदातन-(सं०पुं०) विष्णु (वि०) नित्य।
सदानन्द-(सं० वि०) सर्वदा प्रसन्न रहने वाला (पुं०) शिव।
सदाफल-(सं० पुं०) नारियल, गूलर, बेल, कटहल, एक प्रकार का नीबू।
सदावरत-(हिं०पुं०) देखो सदावर्त।
सदाबहार-(हिं०वि०) जो सर्वदा हरा बना रहे, वह वृक्ष जो सदा फूलता रहे।
सदाभव-(सं० वि०) चिरन्तन, सदा रहने वाला।
सदावर्त-(सं०पुं०) नित्य दीन दुखियो को अन्न बाटना, वह भोजन जो दीन दुखियों को प्रतिदिन बाँटा जाय।
सदाशय-(सं०वि०) उच्च विचार का, भलमानुस।
सदाशिव-(सं० वि०) सर्वदा कल्याण करने वाला, सदा कृपालु, (पुं०) शिव, महादेव।
सदासुख-(सं० वि०) सर्वदा सुखी।
सदा सुहागिन-(हिं०वि०) जो सर्वदा सुहागिन बनी रहे, कभी पतिहीन न हो, (स्त्री०) वेश्या, रंडी।
सदिया-(फ़ा० स्त्री०) लाल नामक पक्षी की मादा जो भूरे रग की होती है।
सदी-(अ०स्त्री०) सौ वर्षों का समूह, शताब्दी।
सदुक्ति-(सं०स्त्री०) साधु कथन।
सदुपदेश-(सं०पुं०) उत्तम शिक्षा,अच्छा उपदेश, अच्छी सलाह।
सदृश-(सं०वि०) तुल्य, बराबर, उचित, अनुरूप, समान।
सदृशता-(सं०स्त्री०) समानता, तुल्यता।
सदेश-(सं०क्रि०वि०) निकट, पास।
सदेह-(सं०क्रि०वि०) बिना शरीर त्यागे हुए, इसी शरीर से।
सदैव-(सं०अव्य०) सर्वदा, हमेशा।
सदोष-(सं० वि०) दोष सहित, अपराधी, दोषी।
सद्गति-(सं०स्त्री०) उत्तम गति, मुक्ति, निर्वाण सच्चरित्र, अच्छा व्यवहार।
सद्गुण-(सं०नपुं०) उत्तम गुण, दया आदि गुण।
सद्गुणी-(हिं०वि०) अच्छे गुण वाला।

सद्गुरु-(स०पु०) अच्छा गुरु, अच्छा शिक्षक, परमेश्वर।
सद्ग्रन्थ-(स०पुं०)अच्छा ग्रन्थ, सन्मार्ग बतलाने वाला ग्रंथ।
सद्ग्रह-(स० पु०) शुभ ग्रह, वृहस्पति और शुक्र ग्रह।
सद्-(हि० पु०) देखो शब्द, (अव्य०) सद्य, तुरत।
सद्धर्म-(स०पु०) उत्तम धर्म।
सद्धेतु-(स० पु०) दोष रहित हेतु।
सद्भाव-(स० पु०) अच्छा भाव, मैत्री, मेल जोल, अच्छी नियत।
सद्भूत-(स०वि०) सत्य, यथार्थ।
सद्म-(स०नपुं०) घर, मकान, जल, पानी पृथ्वी और आकाश।
सद्मिनी-(स०स्त्री०) बड़ा मकान, हवेली।
सद्य-(स०नपु०) इसी क्षण, इसी समय, अभी, तुरत, शीघ्र, (पु०) शिव का एक नाम।
सद्यः-(स०अव्य०) अभी, तुरत।
सद्य क्षत-(सं० वि०) जो अभी घायल हुआ हो।
सद्यः प्रसूता-(स० स्त्री०) जिसको अभी बच्चा पैदा हुआ हो।
सद्यःफल-(स०वि०) जिसका फल तुरत मिल जावे।
सद्योजात-(स०पु०) शिव का एक रूप।
सद्रत्न-(स० नपुं०) उत्तम रत्न।
सद्वंश-(स०पु०) उत्तम वंश।
सद्विद्या-(सं०स्त्री०) ब्रह्मविद्या, ब्रह्मज्ञान।
सधना-(हि०क्रि०)सिद्ध होना, पूरा होना, मतलब निकलना, अभ्यस्त होना, निशाना ठीक होना, गौं पर चढना, ठीक नापा जाना।
सधर्म-(स०वि०) तुल्य, समान।
सधर्मचारिणी-(स० स्त्री०) भार्या।
सधर्मा, सधर्मी-(स०वि०) समान,तुल्य।
सधवा-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सुहागिन।
सधना-(हि० क्रि०) साधने का काम दूसरे से कराना।
सधावर-(हि० पु०) वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने में दिया जाता है।
सधूम्र-(स०वि०) धुवें के साथ।
सन्-(अ०पु०)वर्ष,साल,कोई विशेष वर्ष।
सन-(हिं०पु०) बोया जाने वाला एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से मज़बूत रस्सियां बनाई जाती हैं।
सनई-(हि०स्त्री०) छोटी जाति का सन।
सनक-(स०पु०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक, (हि० स्त्री०) किसी बात की धुन, चित्त की प्रवृत्ति,उन्माद, जुनून, सनक सवार होना-किसी बात की धुन लगना।
सनकाना-(हिं०क्रि०) किसीको सनकने में प्रवृत्त करना।
सनकारना-(हि० क्रि०) संकेत या इशारा करना।
सनकियाना-(हि०क्रि०)देखो सनकारना।
सनत्-(स०पु०) ब्रह्मा, सब समय।
सनत्कुमार-(स० पु०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सनता-(हि० पु०) वह वृक्ष जिस पर रेशम के कीडे पाले जाते हैं।
सनद-(अ० स्त्री०) तकियागाह, भरोसा करने की वस्तु, प्रमाण, प्रमाणपत्र, सार्टिफिकेट्।
सनदयाफ्ता-(अ० वि०) जिसको किसी बात का प्रमाणपत्र मिला है,परीक्षोत्तीर्ण।
सनना-(हि०क्रि०) जल के योग से किसी वस्तु के चूर्ण के कणों का परस्पर मिलना, लेई बन जाना।
सननी-(हिं०स्त्री०) देखो सानी।
सनन्द-(स०पुं०) ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सनम-(अ०पु०) प्रिय, प्यारा।
सनमान-(हिं०पु०)सम्मान,इज्जत,प्रतिष्ठा।
सनमानना-(हि०क्रि०) सत्कार करना।
सनमुख-(हिं०क्रि०वि०) देखो सन्मुख।
सनसनाना-(हिं०क्रि०) हवा के वेग से शब्द होना, खौलते हुए पानी का शब्द होना।
सनसनाहट-(हि०पु०) वायु का शब्द, सनसनी।
सनसनी-(हि०स्त्री०) उद्वेग, घबड़ाहट, खलबली, झुनझुनी।
सनसय-(हि०पु०) देखो संशय, सन्देह।
सनहकी-(अ०स्त्री०) मिट्टी का टोंटीदार बरतन जिसको मुसलमान लोग काम में लाते हैं।
सनाढ्य-(हि० पु०) गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा।
सनातन-(स०पु०) विष्णु, शिव, ब्रह्मा, प्राचीन काल प्राचीन काल से आता हुआ क्रम, (वि०) बहुत पुराना, नित्य, परम्परागत, नित्य।
सनातन धर्म-(स०पु०)परम्परागत धर्म, वर्तमान हिन्दू धर्म का वह स्वरूप जो परम्परा से आता हुआ माना जाता है, इस धर्म में पुराण तन्त्र, बहुत से देवताओं की उपासना, प्रतिमा पूजन तथा तीर्थ माहात्म्य सभी समान रूप से माननीय हैं।
सनातन पुरुष-(स०पु०)विष्णु भगवान्।
सनातनी-(स०स्त्री०) लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, सनातन धर्म का अनुयायी, जिसकी परम्परा बहुत पुरानी हो।
सनाथ-(स०वि०) जिसकी रक्षा करने वाला कोई स्वामी हो (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।
सनाभ-(सं०पु०) सहोदर भाई।
सनाम-(स०वि०) एक नाम का।
सनाय-(अ० स्त्री०) एक पौधा जिसकी पत्तियां दस्तावर होती हैं, सोनामुखी।
सनाह-(हि०पु०) कवच, बख्तर।
सनिद्र-(स०वि०) निद्रा युक्त।
सनिन्द-(स० वि०) निन्दा युक्त।
सनीचर-(हि० पुं०) देखो शनैश्चर।
सनीचरी-(हिं० पु०) शनि की दशा जिसमें दुःख व्याधि आदि की अधिकता रहती है।
सनीड़-(सं० अव्य०) निकट, पास, पड़ोस में।
सनेह-(हिं०पु०) देखो स्नेह, प्रेम।
सनेही-(हि०वि०) प्रेमी, प्रेम करने वाला

(पुं०) प्रियतम।

सनोवर-(अ०पु०) चीड़ का पेड़।

सन्त-(स० पु०) साधु, सन्यासी, महात्मा, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सत्ताईस मात्रा होती हैं।

सन्तत-(स० नपु०) सतत, अनादि, अनन्त।

सन्तति-(स० स्त्री०) सन्तान, बाल बच्चे, औलाद, विस्तार, फैलाव, दक्ष की कन्या का नाम।

सन्तनि-(स०वि०) सर्वदा चलने वाला।

सन्तप्त-(स० वि०) श्रान्त, थका हुआ, जला हुआ, दुःखी, पीड़ित।

सन्तरण-(स०नपु०) अच्छी तरह पार होने वाला, तारक, नष्ट करने वाला।

सन्तर्जन-(स०पु०) डराना, धमकाना, भगाना।

सन्तर्पण-(स०वि०) तृप्त करने वाला।

सन्तान-(स० पु०) कल्प वृक्ष, बाल बच्चे, औलाद, वंश, कुल, विस्तार, प्रबंध व्याप्ति।

सन्तानिका-(स० स्त्री०) छुरी या चाकू का फल, मलाई, साढी, क्षीरसागर।

सन्ताप-(स० पु०) अग्नि या धूप का ताप, जलन, कष्ट, दुःख, दाहरोग, ज्वर, शत्रु।

सन्तापन-(स० पु०) कामदेव के पांच बाणों में से एक, अधिक कष्ट देना।

सन्तापी-(सं० पु०) दुःख या सन्ताप देने वाला।

सन्तारक-(स० पु०) तैरने वाला।

सन्तुष्ट-(स०वि०) जिसकी तृप्ति होगई हो, राजी।

सन्तोष-(स०पु०) चित्त की वह वृत्ति जिसमें मनुष्य अपनी वर्तमान दशा में ही पूर्ण सुख का अनुभव करता है, शान्ति, तृप्ति, प्रसन्नता, हर्ष।

सन्तोषण-(स० नपु०) सन्तोष, तृप्ति।

सन्तोषणीय-(स०वि०)सन्तोप करने योग्य

सन्तोषी-(स० वि०) सन्तुष्ट।

सन्दंश-(स० पु०) कङ्क मुख, सडसी।

सन्दर्प-(स०पु०) अत्यन्त अभिमान।

सन्दर्भ-(स०पु०) रचना, प्रबन्ध, सग्रह, विस्तार, परम्परान्वित रचना, ग्रन्थविशेष।

सन्दर्शन-(स० पु०) अच्छी तरह देखने की क्रिया।

सन्दान-(स०नपु०)शृंखला, सिकड़ी, रस्सी।

सन्दिग्ध-(स० वि०) सन्देह युक्त, एक प्रकार का व्यङ्ग।

सन्दिग्धत्व-(स०नपु०) सन्देह, अलकार का वह दोष जिसमें किसी उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट नहीं होता।

सन्दिग्धमति-(स० वि०) शक्की, वहमी।

सन्दिग्धार्थ-(स० पु०) वह अर्थ जिसमें सन्देह हो।

सन्दिष्ट-(स० नपु०) वार्तालाप, समाचार खबर (वि०) कथित, कहा हुआ।

सन्दीपक-(स०वि०) उद्दीपक, उद्दीपन करने वाला।

सन्दीपन-(स० नपु०) उद्दीप्त करने की क्रिया।

सन्दीपनी-(स० स्त्री०) सगीत में पचम स्वर की चार श्रुतियों में से तीसरी श्रुति।

सन्दीपित-(सं० वि०) प्रज्वलित, जलाया हुआ।

सन्देश-(स०पु०) सवाद, खबर, हाल, एक प्रकार की बगला मिठाई।

सन्देशहर-(स० पु०) समाचार ले जाने वाला।

सन्देसा-(हि०पु०) समाचार, खबर, हाल।

सन्देह-(स०पु०) सशय, द्विधाभाव द्वैधज्ञान।

सन्दोल-(स० त्रि०) सुन्दर हिंडोला, कर्णफूल नामक आभूषण।

सन्दोह-(स०पु०) समूह, झुण्ड।

सन्धा-(स० स्त्री०) स्थिति, प्रतिज्ञा, अनुसन्धान, मिलन।

सन्धान-(स० नपु०) सघटन, योजन, अन्वेषण, खोज, सन्धि, मेल।

सन्धानिका-(स० स्त्री०) एक प्रकार का आम का अचार।

सन्धानी-(स० स्त्री०) मदिरा बनाने का स्थान, सयोजक, बन्धन, प्राप्ति, पालन।

सन्धि-(स० पु०) आपस का मिलना, एक राजा का दूसरे विपक्ष राजा के साथ विशेष नियम से आबद्ध होकर मिलना, शरीर की हड्डियों का जोड़, सयोग, सघटन, भेद, साधन, व्याकरण में दो वर्णों का मिलान।

सन्धिचौर-(स० पु०) सेंध लगाकर चोरी करने वाला।

सन्धिजीवक-(स० पु०) कुटना।

सन्धितस्कर-(स० पु०) सेंध लगाकर चोरी करने वाला।

सन्धिनी-(स०स्त्री०) गाभिन गाय, वह गाय जो बिना बछवे के दूध देती हो।

सन्धि पूजा-(स० स्त्री०) देवी की वह पूजा जो महाष्टमी और महानवमी के सन्धि क्षण में होती है।

सन्धिबन्धन-(स०नपु०) शिरा, नस।

सन्धिभङ्ग-(स० पुं०) शरीर के किसी जोड़ का टूटना।

सन्धिराग-(सं०पु०) सिन्दूर।

सन्धिवेला-(स०स्त्री०) सन्ध्या का समय।

सन्ध्या-(स० स्त्री०) दिन और रात के मिलने का समय, सझा, वह उपासना जो दिन के तीनों सन्धि काल में की जाती है।

सन्ध्याकाल-(स० पु०) सन्ध्योपासन करने का समय।

सन्न-(स०वि०) स्तम्भित, भौचक, हीन, रहित, स्तब्ध, डर से चुप, एकबारगी चुप या खामोश (पु०) चिरौंजी का वृक्ष।

सन्नत-(स० वि०) झुका हुआ, नीचे गया हुआ।

सन्नद्ध-(स० वि०) कवच आदि बांधकर तैयार, उपद्रवी, बँधा हुआ, कसा हुआ, समीप का।

सन्नाटा-(हि०पु०) निःशब्दता, नीरवता, ठक रह जाने का भाव, उदासी, वायु का तीव्र शब्द, एक दम खामोशी, नि स्तब्धता, एकान्तता, निरालापन, सन्नाटे में आना-एकदम स्तब्ध होना, सन्नाटा खींचना-एकदम चुप होजाना।

सन्नाद-(स०पु०) भीषण शब्द।

सन्नाह–(स० पु०) उद्योग, प्रयत्न, अङ्ग त्राण, कवच, पहरावा ।
सन्निकट–(स०अव्य०) समीप, पास ।
सन्निकर्ष–(स० पु०) समीपता, सम्बन्ध, लगाव, नाता, रिश्ता, इन्द्रियों का विषयों के साथ सम्बन्ध ।
सन्निध–(स० पु०) समीपता, सामने की स्थिति ।
सन्निधान–(स०त्रि०) निकटता, समीपता, आश्रय, इन्द्रिय विषय, समागम ।
सन्निधि–(स०स्त्री०) समीपता, निकटता, आमने सामने की स्थिति, पड़ोस, इन्द्रियगोचर ।
सन्निनाद–(स० पु०) जोर का शब्द ।
सन्निपात–(स० पु०) ताल का एक भेद, समूह, सयोग, सग्राम, युद्ध, नाश, बरबादी, जुटना, भिड़ना, इकट्ठा होना, वात पित्त कफ का एक साथ बिगड़ना ।
सन्निबद्ध–(स० वि०) जकड़ा हुआ, लगा हुआ ।
सन्निमग्न–(स० वि०) खूब डूबा हुआ, सोया हुआ ।
सन्निरुद्ध–(स०वि०) रोका हुआ, ठहराया हुआ, दमन किया हुआ ।
सन्निरोध–(स० पु०) रुकावट, बाधा ।
सन्निवार्य–(स० वि०) अच्छी तरह रोकने लायक ।
सन्निविष्ट–(स० वि०) एक साथ बैठा हुआ, निकट, पास, उपस्थित, पास का, लगा हुआ, रक्खा हुआ, आया हुआ ।
सन्निवेश–(स० पु०) आकृति, रचना, भीतर घुसना व्यवस्था, योजना, समाज, समूह, एकत्र होना, जुटना, स्थिति, आधार, लगाना, बैठाना, रखना, अटना, ठहराना, एक साथ बैठना, गाँव के लोगों का इकट्ठा होने का स्थान।
सन्निवेशित–(स० वि०) बैठाया हुआ, जमाया हुआ, ठहराया हुआ, स्थापित, अटाया हुआ ।
सन्निहित–(स०वि०) समीप का, निकट का, एक साथ या पास रक्खा हुआ, उद्यत, तैयार ।
सन्मान–(हिं० पु०) देखो सम्मान ।
सन्मुख–(हि०अव्य०) देखो सम्मुख ।
सन्यसन–(स०नपु०) फेंकना, छोड़ना, स्थापित करना ।
सन्यस्त–(स० वि०) समर्पित, जिसने सन्यास लिया हो ।
सन्यास–(स०पु०) काम्य कर्मों का त्याग, चतुर्थ आश्रम, एक रोग विशेष, ससार के प्रपञ्च से अलग होने की अवस्था, त्याग ।
सन्यासी–(हिं० पु०) चतुर्थ आश्रमी, जिसने सन्यास ग्रहण किया है, वैरागी, त्यागी ।
सपई–(हिं० स्त्री०) पेट का केंचुआ ।
सपक्ष–(स०वि०) तरफदार, मददगार, तुल्य, समान, समर्थक, अनुकूल (पु०) मित्र, सहायक, अनुकूल पक्ष, न्याय में वह बात या दृष्टान्त जिसमें साध्य अवश्य हो ।
सपक्षता–(स० स्त्री०) पक्षावलम्बन, अनुकूलता ।
सपटा–(हिं०पु०) एक प्रकार का टाट ।
सपत्र–(स० पु०) बाण, तीर (वि०) पत्ते सहित ।
सपत्न–(स०पु०) शत्रु, वैरी, विरोधी ।
सपत्नी–(स०स्त्री०) एक ही पति की दूसरी स्त्री, सौत ।
सपत्नीक–(स०वि०) स्त्री के सहित, जोरू के साथ ।
सपदि–(स०अव्य०) तुरत, शीघ्र, जल्द ।
सपना–(हिं०पु०) स्वप्न, निद्रा की अवस्था में देख पड़ने वाला दृश्य ।
सपरदाई–(हिं० पु०) गाने वाली रंडी के साथ तबला सरगी आदि बजाने वाला, भड़ुवा, समाजी ।
सपरना–(हिं० क्रि०) किसी कार्य का पूरा या समाप्त होना, निबटना, काम किया जा सकना, तैयार होना ।
सपराना–(हि०क्रि०) काम पूरा करना, निबटाना ।
सपरिकर–(स० वि०) अनुचर वर्ग के साथ ठाटबाट के साथ ।
सपरिच्छद–(स० वि०) देखो सपरिकर।
सपर्या–(स० स्त्री०) आराधना, उपासना।
सपाट–(हि० वि०) समतल, बराबर, चिकना, जिसका तल चौरस हो ।
सपाटा–(हि० पु०) दौड़ने या चलने का वेग, झोंक, तेजी, झपट, सैर सपाटा–घुमना फिरना ।
सपाद–(स० वि०) पादयुक्त, जिसमे एक का चौथाई मिला हो ।
सपाल–(स० वि०) लोक का पालन करने वाला ।
सपिण्ड–(स०पु०) सात पुरुष तक की ज्ञाति, एक ही वश के वे पुरुष जो एकही पितरों को पिण्ड दान देते हों, सपिण्ड को जनन और मरण में पूर्ण अशौच होता है ।
सपिण्डी, सपिण्डीकरण–(स० नपु०) मृतक के निमित्त वह कार्य जिसमें वह पितरों के साथ मिलाया जाता है ।
सपीतक–(स० पु०) घीयातरोई, नेनुआ।
सपुर्द–(फ़ा० स्त्री०) अमानत, धरोहर, (वि०) सौंपा हुआ, किसी के जिम्मे किया हुआ।
सपुर्दगी–(फा०स्त्री०) सपुर्द करने या होने की क्रिया ।
सपुत्र–(स०वि०) पुत्र, सहित ।
सपुष्प–(स० वि०) पुष्प युक्त, जिसमें फूल हो ।
सपूत–(हिं० पु०) अच्छा पुत्र, वह पुत्र जो अपने कर्तव्य का पालन करता हो।
सपूती–(हि०स्त्री०) सपूत होने का भाव, योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता ।
सपेद–(हिं०वि०) देखो सफेद ।
सपेरा–(हि०पु०) देखो सँपेरा ।
सपोला–(हिं०पु०)साप का छोटा बच्चा।
सप्त–(स० वि०) वह जो गिनती में सात हो ।
सप्तऋषि–(स०पु०) देखो सप्तर्षि ।
सप्तक–(स०वि०) सातवा, जिसमे सात की सख्या हो, (नपु०) सात की सख्या, सात वस्तुओं का समूह, सगीत में सात

स्वरों का समूह।

सप्तकी-(स०स्त्री०) चन्द्रहार, स्त्रियों के कमर की करधनी।

सप्तग्रही-(स०स्त्री०) एक ही राशि में सात ग्रहों का एकत्रित होना।

सप्तच्छद-(स०पु०)छतिवन नामक वृक्ष।

सप्तजिह्व-(स०पु० अग्नि, जिसकी सात जिह्वाओं के नाम-काली, कराली,मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, उग्रा, और प्रदीप्ता हैं।

सप्तदीधिति-(स०पु०) अग्नि।

सप्तद्वीप-(स० पु०) पुराण के अनुसार पृथ्वी के सात बडे और मुख्य भाग इनके नाम-जम्बू-द्वीप, कुशद्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, क्रौञ्चद्वीप और पुष्कर द्वीप हैं।

सप्त धातु-(स०पु०) शरीर के सात धातु यथा रस, रक्त, मास, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र।

सप्त धान्य-(स० पु०) जव, धान, उड़द आदि सात अन्न जो पूजा में उपयोग किये जाते हैं।

सप्त नाड़ीचक्र-(स०नपु०,फलित ज्योतिष के एक चक्र का नाम।

सप्तपत्र-(स०पु०) सप्तपर्ण वृक्ष,छतिवन।

सप्तपदी-(स०स्त्री०) विवाह की वह रीति जिसमें वर और वधू अग्नि की सात परिक्रमा करते हैं।

सप्त पदार्थ-(स०पु०) द्रव्य, गुण,कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ।

सप्तपर्ण-(स० नपु०) छितवह का वृक्ष, एक प्रकार की मिठाई।

सप्तपर्णी-(स० स्त्री०) लज्जालु नाम की लता।

सप्त पाताल-(स०नपु०) पृथ्वी के नीचे के सात लोक जिनके नाम अतल, वितल, सुतल, रसातल, महातल और पाताल हैं।

सप्तपुत्री-(स०स्त्री०) सतपुतिया नामक तरकारी।

सप्तपुरी-(स० स्त्री०) सात पवित्र तीर्थ यथा-काशी,काञ्ची, उज्जयिनी,हरिद्वार, अयोध्या, मथुरा और द्वारका।

सप्तभूम-(स० पु०) घर के सात खण्ड या मरातिब।

सप्तम-(स०वि०) सातवा।

सप्त मातृका-(स०स्त्री०) सात शक्तिया जिन का पूजन शुभ कार्यों के अवसर पर होता है, इनके नाम-ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, और चामुण्डा हैं।

सप्तमी-(स०स्त्री०) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की सातवीं तिथि।

सप्तरुचि-(स०पु०)अग्नि का एक नाम।

सप्तर्षि-(स०पु०)ब्रह्मा के सात मानस पुत्र जो ऋषि थे-इनके नाम-मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अंगिरा और वसिष्ठ हैं-ये सब सप्तर्षि स्वायम्भुव मन्वन्तर में थे, चौदहो मन्वन्तर के भिन्न भिन्न सप्तर्षि हैं।

सप्तला-(स०स्त्री०)नवमल्लिका, चमेली।

सप्तशती-(स० स्त्री०) सात सौ श्लोकों का देवी माहात्म्य, सात सौ का समूह, बगाल के ब्राह्मणों की एक श्रेणी।

सप्तशीर्ष-(स०पु०) विष्णु का एक नाम

सप्त स्वर-(स०पु०) सगीत के सात स्वर।

सप्तश्व वाहन-(स० पु०) सूर्य।

सप्ताह-(स० पु०) सात दिनों का काल, हफ्ता।

सप्रभाव-(स० वि०) तेजस्वी, पराक्रमी।

सप्रमाण-(स० वि०) प्रामाणिक, सबूत के साथ।

सफ-(अ० स्त्री०) पक्ति, कतार, फर्श, बिछावन, विस्तर, लबी चटाई।

सफ़तालू-(हि०पु०) एक छोटे कद का वृक्ष, इसका फल, सतालू, आडू।

सफर-(अ०पु०) प्रस्थान, यात्रा, यात्रा में चलने का समय या दशा।

सफरदाई-(हि०पु०) देखो सपरदाई।

सफर मैना-(अ० स्त्री०) सेनों के वे सिपाही जो सुरग बनाने या खोदने के लिये आगे चलते हैं।

सफरा-(अ०पु०) पित्त।

सफरी-(अ०वि०) सफर में काम आने वाला, (पु०) राह खर्च।

सफल-(स०वि०) फल युक्त, अमोघ, सार्थक, जिसका कुछ परिणाम हो, कृतकार्य, कामयाब, पूरा होना।

सफलता-(स० स्त्री०) पूर्णता, सिद्धि, कामयाबी।

सफला-(स०स्त्री०) पौष कृष्ण एकादशी।

सफलीभूत-(स० वि०) जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।

सफहा-(अ०पु०)पृष्ठ, वरक, पन्ना, तल।

सफा-(अ० वि०) निर्मल, स्वच्छ,साफ, पवित्र, चिकना, जो खुरखुरा न हो।

सफाई-(अ०स्त्री०) स्वच्छता, निर्मलता, स्पष्टता, मैल का न रहना, दोषारोप का हटना, कपट का अभाव, ऋण का चुकता होना, निर्णय, निबटारा।

सफाचट-(हि० वि०) एकदम स्वच्छ, बिलकुल साफ, उखाड़ कर अलग किया हुआ, जो बिलकुल चिकना हो।

सफीना-(अ० पु०) अदालती परवाना या हुक्मनामा।

सफीर-(अ०पु०) चिड़ियों का शब्द, सीठी जो चिड़ियों के बुलाने के लिये बजाई जाती हैं, राजदूत, एलची।

सफील-(अ०स्त्री०) चहारदीवारी शहरपनाह, परकोटा।

सफेद-(फा० वि०) श्वेत, धौला, शुभ्र, सादा, स्याह सफेद-भला बुरा।

सफेद पोश-(फा० वि०) साफ वस्त्र पहिरने वाला,शिक्षित,कुलीन,सज्जन।

सफेदा-(फा०पु०) जस्ते का भस्म, एक प्रकार का आम, एक प्रकार का खरबूजा, सफेद चमडा।

सफेदी-(फा०स्त्री०) सफेद होने का भाव, धवलता, दीवारों पर चूना छूहने का कार्य, सफेदी आना-बालों का सफेद होना, वृद्धावस्था आना।

सफ्तालू-(हि० पु०) देखो सफ़तालू।

सब-(हि० वि०) समस्त, जितने हों वे कुल, पूरा।

सबक़-(फा०पु०) एक बार पढाया जाने

वाला पाठ, शिक्षा, नसीहत।
सबक़त-(फा०क्रि०) विशेषता प्राप्त करना
सबज़-(फा०वि०) देखो सब्ज।
सबद्-(हिं० पु०) देखो शब्द।
सबब-(अ०पु०) कारण, वजह,सावन।
सबर-(अ०पु०) देखो सब्र।
सबल-(सं० वि०) बलवान्, ताकतवर, सैन्य युक्त, फौज वाला।
सबा-(अ० स्त्री०) प्रातः काल पूरब से बहने वाली हवा।
सबार-(हिं० क्रि० वि०) शीघ्र, तुरत।
सबीज-(सं० क्रि०) बीज सहित।
सबील-(अ० स्त्री०) मार्ग, रास्ता, यत्न, उपाय, वह स्थान जहा पर पथिकों को धर्मार्थ जल या शरबत पिलाया जाता है।
सबू-(फा० पु०) मिट्टी का घड़ा, मटका।
सबूत-(अ०पु०) प्रमाण, वह जिससे कोई बात प्रमाणित की जावे, साबूत, पूरा।
सब्ज़-(फा० वि०) कच्चा और ताजा, हरा, उत्तम, सब्ज़ बाग दिखलाना-कार्य सिद्धि के लिये आशा दिखलाना।
सब्ज़क़दम-(फा० वि०) जिसके कहीं पहुंचने पर कोई अशुभ घटना होती है (व्यंग में प्रयोग होता है)
सब्ज़ा-(फा० पु०) हरियाली, भांग, पन्ना नामक रत्न, स्त्रियों के कान में पहनने का एक प्रकार का गहना, घोड़ा जिसका रंग कुछ कालापन लिये सफेद होता है।
सब्ज़ी-(फा० स्त्री०) हरी घास, वनस्पति आदि, हरियाली, हरी तरकारी, भाग।
सब्र-(अ० पु०) धैर्य, सन्तोष।
सभर्तृका-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा।
सभय-(सं० वि०) भय के सहित।
सभा-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहा पर बहुत से लोग बैठकर किसी बात पर परामर्श करते हैं, मजलिस, परिषद्, समिति, समूह, झुंड, प्रजापति की कन्या का नाम।
सभागा-(हिं० वि०) भाग्यवान् मनोहर।
सभा गृह-(सं०नपुं०) वह स्थान जहा किसी सभा या समिति का अधिवेशन होता है।
सभाजन-(सं०वि०) प्रीती दायक।
सभापति-(सं० पु०) सभा या समाज के नेता।
सभावी-(सं० पु०) जुएखाने का मालिक।
सभासद-(सं० पु०) वह जो किसी सभा में सम्मिलित हो।
सभोचित-(सं० पु०) पण्डित (वि०) सभा के योग्य।
सभ्य-(सं० पु०) सभासद, सदस्य, वह जिसका आचरण अच्छा हो (वि०) सभा सबंधी।
सभ्यता-(सं०स्त्री०) सभ्य होने का भाव, भलमनसी सज्जनता।
सम्-(सं०अव्य०) तुल्यार्थ, प्रकृष्टार्थ।
समंद-(फा० पु०) अश्व, घोड़ा।
सम-(सं० वि०) कुल, तमाम, समान, तुल्य, बराबर, चौरस, समतल, जूस संख्या, (पु०) संगीत में वह स्थान जहा पर गाने बजाने वाले का सिर या हाथ आपसे आप हिल जाता है, यह स्थान ताल के अनुसार निश्चित होता है, गणित में वह सीधी रेखा जो उस अङ्क पर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है, वह अर्थालङ्कार जिसमें योग्य वस्तुओं के सयोग या सम्बन्ध का वर्णन रहता है, (अ० पु०) विष, जहर।
समकक्ष-(सं०वि०) तुल्य, समान, बराबरीका।
समकन्या-(सं० स्त्री०) विवाह के योग्य कन्या।
समकर्म-(सं० वि०) जिसके काम समान हों।
समकालीन-(सं०वि०) एक ही समय में होने वाला वह जो एकही समय मे हो।
समकोण-(सं० वि०) रेखागणित में वह आकृति जिसके आमने सामने के कोण बराबर हों।
समक्ष-(सं०अव्य०) सम्मुख, आखके सामने।
समखात-(सं० नपुं०) कूपके आकार का गड्ढा।
समग्र-(सं०वि०) सम्पूर्ण, कुल, पूरा।
समज्ञा-(सं० स्त्री०) मजिष्ठा, मजीठ।
सम चतुष्कोण-(सं०पु०) वह चतुर्भुज जिसके चारों भुज समान हों।
समचर-(सं०वि०) समान आचरण वाला
समचित्त-(सं०नपु०) वह जिसका चित्त सब अवस्था में समान रहता हो।
समजातीय-(सं०वि०) एकही जाति का।
समज्ञा-(सं०स्त्री०) कीर्ति, यश।
समञ्जस-(सं०वि०) उचित,ठीक,अभ्यस्त
समझ-(हिं० पु०) ज्ञान, बुद्धि, अक्ल।
समझदार-(हिं०वि०) बुद्धिमान्।
समझना-(हिं० क्रि०) किसी बात को अच्छी तरह ध्यान में लाना।
समझाना-(हिं० क्रि०) दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना।
समझौता-(हिं०पु०) आपस का निबटारा
समतल-(सं० वि०) जिसका तल या सतह बराबर हो।
समता-(सं० स्त्री०) समान होने का भाव, बराबरी।
सम त्रिभुज-(सं०पु०) वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज बराबर हों।
समत्सर-(सं०वि०) डाह करने वाला।
समद-(सं०वि०) मद युक्त, अभिमानी।
समदन-(सं०नपु०) सग्राम, युद्ध।
समदना-(हिं०क्रि०) प्रेम पूर्वक मिलना।
समदर्शन-(सं० वि०) वह जो सब मनुष्यों, स्थानो और पदार्थों को समान दृष्टि से देखता हो।
समदर्शी, समदृष्टि-(सं० पु०) देखो समदर्शन।
सम द्विभुज-(सं० वि०) दो समान भुज वाला।
समधिगम-(सं०पु०) भलीभाति प्राप्ति।
समधियाना-(हिं०पु०) समधी का घर।
समधी-(हिं०पु०) पुत्र या कन्याका ससुर
समनुज्ञा-(सं०स्त्री०) अनुज्ञा, अनुमति।
समन्त-(सं०पुं०) सीमा, प्रान्त, किनारा

(वि०) सब, कुल।
समन्तिक-(सं० अव्य०) सीमा के पास।
समन्वय-(सं० पु०) संयोग, मिलाप, अवरोध कार्य कारण का निर्वाह।
समन्वित-(सं० वि०) संयुक्त, मिला हुआ, बिना रुकावट का।
सम पाद-(सं०नपु०)वह कविता जिसके चारों चरण समान हों।
सम भाग-(सं० पु०) समान भाग, बराबर हिस्सा।
समय-(सं० पु०) काल, योग्य काल, अवसर, अवकाश, संवत्, अंतिम काल, वाक्य, उपदेश, धर्म, आचार, निर्देश।
समयज्ञ-(सं० वि०) समय के अनुसार चलने वाला।
समया-(सं०स्त्री०) निकट, समीप, पास।
समर-(सं०पु०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।
समरजित्-(सं०वि०) युद्धमें जीतने वाला
समरथ-(हि०वि०) देखो समर्थ।
समरपोत-(सं०नपु०) लड़ाई का जहाज़
समरभू समरभूमि-(सं० स्त्री०) लड़ाई का मैदान।
समराङ्गण-(सं० नपु०) युद्ध स्थल, समर भूमि।
समरेख-(सं०वि०)जिसमें सीधी रेखा हों
समर्घ-(सं०वि०) कम दाम का, सस्ता।
समर्चन-(सं०नपु०) अर्चन, पूजन।
समर्थ-(सं०वि०) बलवान, ताकतवर, लंबा चौड़ा, योग्य, अभिलषित, अनुकूल।
समर्थक-(सं०पु०) समर्थन करने वाला
समर्थता-(सं०स्त्री०) शक्ति, ताकत।
समर्थन-(सं० नपु०) किसी मत का पोषण, सामर्थ्य, शक्ति, संभावना, उत्साह, विवेचन।
समर्थनीय-(सं०वि०)समर्थन करने योग्य
समर्थित-(सं० वि०) दृढ़ किया हुआ, स्थिर किया हुआ, सम्भावित।
समर्पक-(सं०वि०) समर्पण करने वाला।
समर्पण-(सं० नपु०) किसी को कोई वस्तु आदर पूर्वक भेंट करना, दान देना, स्थापित करना।
समर्पित-(सं०वि०) समर्पण किया हुआ, स्थापित, जिसकी स्थापना की गई हो।
समर्याद-(सं०वि०) सीमायुक्त सच्चरित्र।
समल-(सं०वि०) मलिन, मैला, गंदा।
समवकार-(सं०पु०) एक प्रकार का वीररस प्रधान नाटक जिसमें देवता और असुरों के युद्ध का वर्णन रहता है।
समवतार-(सं०पुं०)अवतरण, उतरने की क्रिया, उतरने का स्थान।
समवर्ती-(सं०पु०) यम का एक नाम, (वि०) समान रूप से स्थित।
समवलम्ब-(सं० वि०) जिस चतुर्भुज की दोनों लम्ब रेखा समान हों।
समवस्था-(सं० स्त्री०) तुल्य अवस्था या दशा।
समवाय-(सं०पु०) समूह, नित्य सम्बन्ध, न्याय के अनुसार अवयव और अवयवी का संबंध।
समवायी-(सं०वि०) जिसमें समवाय अथवा नित्य सम्बन्ध हो।
समवृत्त-(सं०वि०) समान, गोल, समान गोलाई का (नपु०) वह छन्द जिसके चारो चरण बराबर हों।
समवेक्षण-(सं०नपु०)भली भांति देखना
समवेत-(सं०वि०) एक में एक मिला हुआ, संचित, जमा किया हुआ, (पु०) सम्बन्ध।
समशंकु-(सं० पु०) वह समय जब सूर्य सिर के ठीक ऊपर आते हैं, दोपहर का समय।
समशीतोष्ण कटिबन्ध-(सं०पु०) पृथ्वी के वे भाग जो उष्ण कटिबन्ध के उत्तर में कर्कट रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण में मकर रेखा से दक्षिण वृत्त तक पड़ते हैं-इन स्थानों में न तो बहुत सरदी पड़ती है और न बहुत गरमी।
समष्टि-(सं०स्त्री०) समस्त मिलित, सब का समूह।
समसंख्यात-(सं०वि०)समान अंक वाला
समसुप्ति-(सं०पु०)कल्पान्त,महाप्रलय।
समसौरभ-(सं० वि०) जिसमें समान बन्ध हो।
समस्त-(सं० वि०) समग्र, कुल, संयुक्त, एक में मिलाया हुआ, संक्षिप्त।
समस्थली-(सं०स्त्री०) गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश।
समस्या-(सं० स्त्री०) किसी श्लोक या छन्द आदि का वह अन्तिम पद जो श्लोक या छन्द बनाने के लिये किसी को दिया जाता है जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छन्द बनाया जाता है, संघटन, मिश्रण, कठिन प्रसङ्ग।
समस्या पूर्ति-(सं० स्त्री०) किसी समस्या के आधार पर कोई छन्द या श्लोक बनाना।
समाँ-(हि०पु०) समय, वक्त, काल।
समांश-(सं० पु०) तुल्य अंश, बराबर टुकड़ा।
समांस(सं०वि०) मांस युक्त, मांसल।
समा-(सं०स्त्री०)वर्ष, साल।
समाकुल-(सं०वि०) संशयित, सन्दिग्ध, बहुत घबड़ाया हुआ।
समाक्रान्त-(सं०वि०)व्याप्त, फैला हुआ।
समाख्या-(सं० स्त्री०) कीर्ति, यश, संज्ञा, नाम।
समाख्यान-(सं०नपु०) भलीभांति कहना।
समागत-(सं०वि०) उपस्थित, मिलित, आया हुआ।
समागम-(सं० नपुं०) आगमन, आना, मिलना, भेंट।
समागमन-(सं०नपु०) आना, पहुँचना।
समाघात-(सं० पु०) युद्ध, लड़ाई, वध, हत्या।
समाचार-(सं० पु०) उत्तम व्यवहार, संवाद, खबर।
समाचार पत्र-(सं०पु०)खबर का कागज, अखबार।
समाच्छन्न-(सं० वि०) आच्छादित, ढपा हुआ।
समाज-(सं० पु०) समूह, संघ, सभा, समुदाय, ब्राह्मणादि वर्ण की सभा।
समातृ-(सं० स्त्री०) वह जो माता के समान हो।

समादर-(स० पु०) सम्मान, आदर, खातिर।
समादरणीय-(स० वि०) आदर सत्कार के योग्य।
समादेय-(स० वि०) आदर या प्रतिष्ठा करने योग्य।
समादेश-(स० पु०) आदेश, आज्ञा, हुक्म।
समाधान-(स० नपु०) चित्त को एकाग्र करके ब्रह्म की ओर लगाना, समाधि, किसी प्रश्न का सन्तोषकारक उत्तर, नियम, निष्पत्ति, निबटारा, अन्वेषण, अनुसन्धान, ध्यान, समर्थन, नाटक का एक अङ्ग।
समाधि-(स० पु०) समर्थन, नियम, ध्यान, अगीकार, काव्य का वह गुण जहा दो घटनायें दैवयोग से एक ही समय में होती हैं और एक क्रिया के साथ दो कर्ता का अन्वय होकर इस घटना द्वारा प्रकाशित होता है, वह अलकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से किसी कार्य का सहज में होना वर्णन किया जाता है, योग, ध्यान, एकाग्रता, मौनभाव, निद्रा, कारण सामग्री, प्रतिज्ञा, योग का चरम फल,पहले एकाग्र चित्त से धारणा, इसके बाद ध्यान तदुपरान्त समाधि होती है—इसमें साधक सब प्रकार के क्लेशों से निर्मुक्त होकर एक विशेष प्रकार के आनन्द में मग्न हो जाता है, मृत शव देह या अस्थियों को मिट्टी में गाड़ना।
समाधिक्षेत्र-(स०नपु०) कब्रिस्तान।
समाधित-(स० वि०) समाधि युक्त, जिसके साथ मित्रता की गई हो।
समाधित्व-(स० नपु०) समाधि का भाव या धर्म।
समाधिस्थ-(स०वि०)समाधि लगाये हुए
समाधेय-(स० वि०) समाधान करने योग्य।
समान-(स० वि०) सम, तुल्य, बराबर, गर्व सहित, शरीरस्थ वायु विशेष, एक स्थान से उच्चारण होने वाले वर्ण।
समानकरण-(स०त्रि०) दो वस्तुओं को समान आकार में लाना।
समानत.-(स०अव्य०) समान भाव में।
समानता-(स० स्त्री०) समान का भाव या धर्म, तुल्यत्व।
समान रूप-(स०वि०)समान आकार वाला
समान वय-(स०वि०) बराबर के उम्र का
समानबल-(स०वि०) तुल्यशक्ति का।
समान शय्य-(स०वि०)एक ही चारपाई पर सोने वाला।
समानशील-(स०वि०)तुल्य स्वभाव वाला
समाना-(हिं०क्रि०) भरना, अँटना।
समानाक्षर-(स० नपु०) स्वर वर्ण।
समानाधिकरण-(स०नपु०) व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है।
समानार्थ-(स०वि०) तुल्य अर्थ वाला।
समानिका-(स० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात अक्षर होते हैं।
समानीत-(स वि०) आदर या यत्न पूर्वक लाया हुआ।
समानुपात-(स०पु०) दो अथवा अनेक अनुपात का समानत्व सम्बन्ध।
समानोदक-(स० पु०) जिसकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढी तक के पूर्वज एक हों
समानोपमा-(स० स्त्री०) उपमा अलकार का एक भेद।
समान्तक-(स०पु०) कन्दर्प, कामदेव।
समानान्तराल-(स०पु०) दो सरल रेखा जो बहुत दूर तक जाकर भी एक दूसरे से न मिलें।
समापक-(स०वि०) समाप्त करने वाला।
समापत्ति-(स० स्त्री०) एक ही समय में एक ही स्थान पर उपस्थित होना।
समापन-(स०नपु०) परिच्छेद, समाप्ति, वध, समाधान, (वि०) पाया हुआ।
समापनीय-(स०वि०) वध करने योग्य।
समापन्न-(स०वि०)समाप्त किया हुआ, कठिन।
समापिका-(स०स्त्री०) व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त होना सूचित होता है।
समापित-(स०वि०) समाप्त किया हुआ।
समाप्त-(स०वि०) जिसका अन्त हो गया हो, जो खतम हो गया हो।
समाप्ति-(स०स्त्री०) अवसान, अन्त, प्राप्त होने का भाव।
समाभाषण-(स०नपु०) अच्छी तरह से भाषण।
समाम्नाय-(स०पु०)समष्टि,समूह,शास्त्र।
समायोग-(स० पु०) सयोग, अनेक मनुष्यों का एकत्रित होना प्रयोजन।
समारम्भ-(स० पु०) आरम्भ।
समारम्भण-(स०नपु०) आलिंगन।
समाराधन-(स०नपु०)आराधना, सेवा।
समारोह-(स०पु०)धूमधाम, तड़कभड़क, आडम्बर,आरोहण, चढना, सम्मत होना
समार्थ-(स० वि०) समान अर्थ युक्त, पर्याय शब्द।
समालम्भ-(स०पु०) शरीर पर केशर आदि का लेप करना, मारण, वध।
समालाप-(स० पु०) अच्छी तरह से बातचीत करना।
समालोच-(स०पु०) अच्छी प्रकार से आलोचन।
समालोचक-(स० वि०) किसी वस्तु के गुण दोष को देख कर बतलाने वाला, समालोचना करने वाला।
समालोचन(स० नपु०) गुण दोष की अच्छी तरह से आलोचना।
समालोचना-(स०स्त्री०) अच्छी तरह से देखना भालना, गुण दोषों की विवेचना, आलोचना।
समालोची-(स० वि०) समालोचना करने वाला।
समावर्त-(स०पु०)वापस आना,लौटना।
समावर्तन-(स० नपु०) वेदाध्ययन के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का कार्य, इस समय का स्नान और यज्ञ।
समावर्तनीय-(स० वि०) वह जो समावर्तन नामक सस्कार करने के योग्य

हो गया हो।

समाविष्ट-(सं०वि०) प्रविष्ट, जिसका समावेश हुआ हो, जिसका मन एक ओर लगा हो।

समावृत-(सं०वि०) अच्छी तरह से ढपा या छाया हुआ।

समावृत्त-(सं०वि०) विद्याध्ययन के बाद समावर्तन सस्कार करके घर लौटा हुआ

समावेश-(सं०पु०) एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अन्तर्गत होना, चित्त को एक ओर लगाना, एक साथ रखना।

समाश्रय-(सं०पु०) अवलम्बन, रक्षा, सहाय, मदद।

समाश्रित-(सं० वि०) जिसने कहीं पर अच्छी तरह से आश्रय ग्रहण किया हो।

समाश्लेष-(सं० पु०) आलिंगन।

समाश्वास-(सं०पु०) आश्वासन, धीरज।

समाश्वासन-(सं०नपु०)धीरज देने वाला

समास-(सं०पु०) सग्रह, समाहार, सक्षेप, समर्थन, व्याकरण में दो या अधिक पदों को मिलाकर एक पद बनाना, समास छ प्रकार के होते हैं यथा-द्वन्द्व, बहुब्रीहि, कर्मधारय, तत्पुरुष, द्विगु और अव्ययीभाव।

समासक्त-(सं०वि०)सयुक्त, मिला हुआ।

समासन्न-(सं०वि०)निकटस्थ, पास का।

समासादित-(सं० वि०) प्राप्त, पाया हुआ, लाया हुआ, आक्रान्त, आक्रमण किया हुआ, आहृत, चुराया हुआ, उद्धृत, लिखा हुआ।

समासोक्त-(सं० वि०) सक्षेप रूप से कहा हुआ।

समासोक्ति-(सं० स्त्री०) वह अर्थालकार जिसमें समान लिंग, समान विशेषण समान कार्य आदि द्वारा किसी प्रस्तुत वर्णन से अप्रस्तुत ज्ञान होता है।

समाहत-(सं०वि०) आहत, घायल।

समाहरण-(सं० नपु०) देखो समाहार।

समाहर्ता-(सं० पुं०) मिलाने वाला, सक्षेप करने वाला।

समाहार-(सं० पु०) सग्रह, मिलान, राशि, समूह, संक्षेप, समास का एक भेद।

समाहार द्वन्द्व-(सं०पु०) द्वन्द्व समास का वह भेद जिसमें उसके पदों के अर्थ के सिवाय कोई विशेष अर्थ भी सूचित होता है जैसे दाल रोटी, हाथ पाँव इत्यादि।

समाहित-(सं०वि०) स्वीकार किया हुआ, स्थापित, निष्पन्न।

समाहृत-(सं०वि०) सग्रह किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, सगृहीत।

समिता-(सं०स्त्री०) गेंहू का महीन चूर्ण, मैदा।

समिति-(सं०स्त्री०) सभा, समाज, युद्ध, सग, साथ, सन्निपात नामक रोग।

समिद्ध-(सं०वि०) प्रदीप्त, जलता हुआ।

समिध-(सं० पुं०) अग्नि, आग।

समिधा-(हिं० स्त्री०) अग्नि जलाने का काठ, इन्धन, यज्ञमें जलाने की लकड़ी।

समीकरण-(सं० नपु०) तुल्य या बराबर करने की क्रिया, गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से किसी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

समीकृत-(सं०वि०) बराबर किया हुआ

समीक्ष-समीक्षण-(सं०नपु०) अच्छी तरह देखने की क्रिया, अन्वेषण, विवेचन

समीक्षा-(सं०स्त्री०) साख्य में बतलाये हुए प्रकृति पुरुष, बुद्धि, अहकार आदि तत्त्व, बुद्धि, मीमांसा शास्त्र, आत्मविद्या, यत्न, अच्छी तरह देखने की क्रिया।

समीक्षित-(सं० वि०) आलोचित, अन्वेषित।

समीच-(सं० पु०) समुद्र, सागर।

समीचक-(सं० पु०) मैथुन।

समीचीन-(सं० वि०) यथार्थ, ठीक, उचित, न्याय सगत।

समीप-(सं०वि०) निकट, पास, नजदीक

समीपग-(सं० वि०) जो समीप हो गया हो।

समीपता-(सं० स्त्री०) निकटता।

समीपनयन-(सं० नपु०) पासमें लाना।

समीपवर्ती-(सं० त्रि०) निकटगामी, पास का।

समीपस्थ-(सं० वि०) पास का।

समीर-(सं०पु०) वायु, हवा, शमी वृक्ष।

समीरण-(सं०पु०) वायु, हवा, पथिक, गन्ध तुलसी।

समीहन-(सं० पु०) विष्णु।

समीहा-(सं० स्त्री०) उद्योग, प्रयत्न, अनुसन्धान।

समीहित-(सं० वि०) चेष्टित, अभीष्ट।

समुदर-(हिं० पु०) समुद्र।

समुंदर फूल-(हिं०पु०) एक प्रकार व विधारा नामक औषधि।

समुदर सोख-(हिं०पु०) एक प्रकार का क्षुप जिसके बीज औषधियों में प्रयोग होते हैं।

समुचित-(सं०वि०)उचित, योग्य, ठीक उपयुक्त।

समुच्चय-(सं० पु०) समाहार, समूह, राशि, दो अथवा दो से अधिक राशियों का परस्पर मिलना, साहित्य में वह अलकार जिसमें हर्ष विषाद आश्चर्य आदि अनेक भावों का एक साथ उदित होना वर्णन किया जाता है। अथवा जहा पर एकही कार्य के लिये अनेक कारणों का वर्णन रहता है।

समुच्चित-(सं० वि०) ढेर लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ।

समुच्छेद-(सं० पु०) ध्वस, विनाश।

समुज्वल-(सं० वि०) बड़ा सफेद, चमकता हुआ।

समुझ-(हिं० स्त्री०) देखो समझ।

समुत्कण्ठ-(सं०वि०)व्यग्र, घबड़ाया हुआ।

समुत्कीर्ण-(सं०वि०) विदीर्ण, टूटा हुआ

समुत्तर-(सं०नपु०) उत्तर, ठीक जवाब।

समुत्थान-(सं० पु०) आरभ, उठने की क्रिया, उदय, उत्पत्ति, उठाना, रोग की शान्ति।

समुत्थित-(सं० वि०) अच्छी तरह उठा हुआ।

समुत्पन्न-(सं०वि०)उद्गत, घटित, उत्पन्न

समुत्पाटित-(सं० वि०) जड़ से

उखाड़ा हुआ।
समुत्सर्ग-(स० पु०) उत्सर्ग, त्याग।
समुदय-(स० पु०) उठने या उदित होने की क्रिया, युद्ध, लड़ाई।
समुदाय-(स० पु०) समूह, ढेर, झुंड, युद्ध, उन्नति, तरक्की।
समुदाव-(हिं०पु०) समुदाय।
समुदित-(स० वि०) उठा हुआ, उन्नत, उत्पन्न।
समुदीरित-(स० वि०) उच्चारण किया हुआ।
समुद्गक-(स०पु०) एक छन्द का नाम।
समुद्गत-(स० वि०) उत्पन्न, उदित।
समुद्गीत-(स०वि०) जोरसे गाया हुआ।
समुद्धरण-(स०नपु०) उन्मूलन, उखाड़ने की क्रिया, उद्धार।
समुद्र-(स० पु०) जल का बड़ा समूह, अम्बुधि, सागर, जहां का जल चन्द्रोदय से बढ़ता है, किसी विषय या गुण आदि का बहुत बड़ा आगार।
समुद्र कल्लोल-(स०पु०) सागर की तरंग
समुद्रकान्ता-(स०स्त्री०) नदी।
समुद्रगुप्त-(स० पु०) गुप्तराज वंशीय एक बड़े पराक्रमी राजा का नाम।
समुद्रज-(स० त्रि०) मुक्ता, मोती, (वि०) समुद्र में उत्पन्न।
समुद्रतता-(स० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
समुद्रतीर-(स०नपु०) समुद्र का किनारा।
समुद्र दयिता-(स०स्त्री०) नदी।
समुद्र नवनीत-(स० नपु०) अमृत, चन्द्रमा।
समुद्रनेमि-(स०स्त्री०) पृथ्वी।
समुद्रपत्नी-(स०स्त्री०) नदी, दरिया।
समुद्र पर्यन्त-(स०त्रि०) समुद्र तक।
समुद्रपात-(स०पु०) घावपत्ते की लता।
समुद्रफल-(स० नपु०) एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष जिसके फल औषधियों में प्रयोग होते हैं।
समुद्रफेन-(स०पु०) समुद्रका ठोस झाग
समुद्रमण्डूकी-(स०स्त्री०) शुक्ति, सीप।
समुद्रमथन-(स०पु०) समुद्र को मथना।
समुद्रमालिनी-(स० स्त्री०) पृथ्वी।
समुद्र यात्रा-(स० स्त्री०) समुद्र द्वारा दूर देश की यात्रा।
समुद्रयान-(स०नपु०) जहाज।
समुद्रयायी-(स० वि०) समुद्र यात्रा करने वाला।
समुद्ररसना-(स० स्त्री०) पृथ्वी।
समुद्रलवण-(स०नपु०) समुद्र के जल से निकाला हुआ नमक।
समुद्रवह्नि-(स०पु०) बड़वानल।
समुद्रवास-(स०त्रि०) अग्नि, आग।
समुद्रवासी-(स० त्रि०) समुद्र के किनारे पर बसने वाला।
समुद्रसार-(स०पु०) सीप, मोती।
समुद्रसुभगा-(स०स्त्री०) गंगा नदी।
समुद्रान्त-(स०नपु०) समुद्र का किनारा।
समुद्राम्बरा-(स०स्त्री०) पृथ्वी।
समुद्रायणा-(स०स्त्री०) नदी।
समुद्रावरणा-(स० स्त्री०) पृथ्वी।
समुद्वेग-(स० पु०) बड़ी उत्कण्ठा।
समुन्नत-(स० वि०) अति उन्नत, बहुत ऊँचा।
समुन्नति-(स० स्त्री०) महत्व, बड़ाई, उच्चता, ऊँचाई, तरक्की।
समुन्नद्ध-(स०वि०) गर्वित, अभिमानी, ऊपर को उठा हुआ।
समुन्नयन-(स० नपु०) ऊपर को उठाने या लेजाने की क्रिया, लाभ, प्राप्ति।
समुन्नाद-(स० पु०) समूह का शब्द।
समुन्नाह-(स०पु०) ऊँचाई।
समुन्नेय-(स० वि०) अधिकार में करने योग्य।
समुन्मुख-(स०क्रि०वि०) सामने।
समुन्मिश्र-(स०वि०) मिलाया हुआ।
समुन्मूलन-(स०नपु०) पूर्ण रूप से नाश।
समुपचित-(स० वि०) बढाया हुआ, लिया हुआ।
समुपवेश-(स० पु०) आदर, सत्कार, बैठने की क्रिया।
समुपेत-(स०वि०) समागत, आया हुआ
समुपस्तम्भ-(स० पु०) संक्षेप करने की क्रिया।
समुपस्था-(स०स्त्री०) समीपता।
समुपार्जन-(स० नपु०) अच्छी तरह से उपार्जन।
समुपालम्भ-(स०पु०) क्रोध युक्त वाक्य, तिरस्कार।
समुपेक्षक-(स०वि०) उपेक्षा करने वाला
समुपेत-(स० वि०) आया हुआ।
समुपेप्सु-(स०वि०) अच्छी तरह पाने की इच्छा करने वाला।
समुल्लसित-(स० वि०) आनन्दित, शोभित।
समुल्लास-(स०पु०) आनन्द, प्रसन्नता, खुशी, ग्रन्थ का प्रकरण या परिच्छेद।
समुल्लेखन-(स० नपु०) खनन, खोदना, छिलना।
समुहा-(हि०वि०) सन्मुखका सामनेका।
समुहाना-(हि०क्रि०) सामने आ जाना।
समूढ-(स० वि०) संचित, ढेर किया हुआ, संशोधित, मूढ, संगत, ठीक, दमन किया हुआ।
समूर-(स० पु०) शबर नामक हिरन।
समूल-(स०वि०) मूल युक्त, जड़ वाला, जिसका कोई हेतु हो (क्रि० वि०) मूल सहित।
समूलक-(स०वि०) समूल, मूल सहित।
समूह-(स०पु०) समुदाय, झुंड, गरोह, राशि, ढेर।
सम्मह् गन्ध-(स० पु०) मोतिया नामक पुष्प।
समृद्ध-(स० वि०) जिसके पास अधिक सम्पत्ति हो, धनवान्।
समृद्धि-(स० स्त्री०) ऐश्वर्य, उन्नति, सफलता प्रभाव, सम्पत्ति।
समेटना-(हि०क्रि०) बिखरी हुई वस्तु को इकट्ठा करना, अपने ऊपर लेलेना
समेत-(स० वि०) संयुक्त, मिला हुआ (अव्य०) सहित, साथ।
समेधित-(स०वि०) वर्धित, बढा हुआ।
समोह-(स० पु०) संग्राम, युद्ध (वि०) मोह युक्त।
समौरिया-(हि०वि०) समवयस्क, बराबर के वय का।

सम्पत्ति-(सं०स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, शोभा, गौरव, अधिकता, लाभ, प्राप्ति,सफलता
सम्पद्-(स० स्त्री०) सम्पत्ति, ऐश्वर्य, विभव, सौभाग्य, गौरव, अधिकता।
सम्पदा-(हिं०स्त्री०) धन दौलत, ऐश्वर्य।
सम्पन्न-(स०वि०) साधित, पूरा किया हुआ, सम्पत्ति युक्त, दौलतमन्द।
सम्पन्नता-(हिं०स्त्री०) सम्पूर्णता।
सम्पर्क-(सं० पु०) मिश्रण, मिलावट, संयोग, मिलाप, ससर्ग, लगाव, स्पर्श, योग, जोड़।
सम्पाक-(स०पु०) अच्छी तरह पकना।
सम्पाचन-(स०नपु०) देखो सम्पाक।
सम्पाट-(स०पुं०)किसी त्रिभुज की बढाई हुई भुज पर गिरने वाला लम्ब।
सम्पाठ्य-(स० वि०) अच्छी तरह पढने योग्य।
सम्पात-(स० पु०) एक साथ गिरना, प्रवेश, सगम, सगम, मिलने का स्थान, घटित होना।
सम्पाति-(सं०पु०) जटायु के बडे भाई का नाम।
सम्पादक-(स०पु०) सम्पन्न करने या किसी काम को पूरा करने वाला, तैयार करने वाला, किसी समाचार पत्र या पुस्तक को क्रम से लिखने वाला।
सम्पादकीय-(स०वि०)सपादक सबधी।
सम्पादन-(स० नपु०) प्रस्तुत करना, बनाना, दुरुस्त करना, ठीक करना, पुस्तक आदि को प्रकाशित करना।
सम्पादनीय-(स० वि०) सम्पादन करने योग्य।
सम्पादित-(स० वि०) प्रस्तुत, तैयार, क्रम पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ
सम्पाद्य-(स०क्रि०)सम्पादन करने योग्य, ज्यामिति शास्त्र की उद्देश्य साधक प्रतिज्ञा
सम्पारण-(सं० वि०) पूरा करने वाला।
सम्पावन-(स०वि०) अधिक पवित्र।
सम्पित-(हि० पु०) एक प्रकार का पहाड़ी घास।
सम्पिधान-(स०नपु०) आच्छादन।
सम्पीडन-(स० नपु०) खूब पीड़ा देना, खूब दबाना या निचोड़ना।
सम्पुट-(स० पु०) पात्र के आकार की वह वस्तु जिसमे कुछ भरने के लिये जगह हो, ठीकरा, दोना, डिब्बा,अजली
सम्पुटी-(स० स्त्री०) छोटी कटोरी।
सम्पूजन-(स०नपु०) भलीभाँति पूजन।
सम्पूजित-(स० वि०) अधिक सम्मान किया हुआ।
सम्पूर्ण-(स० वि०) खूब भरा हुआ, बिलकुल, पूर्ण रूप मे युक्त, (पु०) वह राग जिसमें सातो स्वर लगते हों।
सम्पूर्ण कालीन-(स०वि०) पूरे समय तक रहने वाला।
सम्पूर्णता-(स० स्त्री०) समाप्ति।
सम्प्रकाशक-(स० वि०) अच्छी तरह प्रकाशित करने वाला।
सम्प्रक्षालन-(स०नपु०)पूरी तरह से धोना
सम्पृक्त-(स०वि०) मिश्रित, मिला हुआ
सम्प्रति-(स० अव्य०) इस समय, अभी, ठीक तरह से।
सम्प्रतिपत्ति-(स०स्त्री०) अभियुक्त का न्यायालय में सच्ची बात स्वीकार करना, पहुच, प्राप्ति।
सम्प्रतिपन्न-(स०वि०) स्वीकृत,मजूर।
सम्प्रतिपादन-(स०नपु०) पूरा करना।
सम्प्रतिरोधक-(स०वि०) प्रतिबन्धक।
सम्प्रतीक्ष्य-(स० वि०) भली भाँति देखने योग्य।
सम्प्रतीति-(स०स्त्री०) प्रसिद्धि।
सम्प्रदान-(स०नपुं०) अच्छी तरह दान देने की क्रिया या भाव, जो दान किया जाता है, दीक्षा, नजर,भेंट, व्याकरण में चतुर्थी विभक्ति जिसका हिन्दी में चिह्न "को", "के लिये" होता है।
सम्प्रदाय-(स० पुं०) गुरु परपरागत उपदेश, गुरुमन्त्र, कोई विशेष धर्म सबन्धी मत, मार्ग, पथ, रीति।
सम्प्रदायी-(हि० वि०) मतावलम्बी, दाता, सिद्ध करने वाला।
सम्प्रधारण-(स०नपुं०) उचित अनुचित का विचार।
सम्प्रमाद-(स०पु०) मोह, भ्रान्ति।
सम्प्रमुक्ति-(स०स्त्री०) मोक्ष,छुटकारा।
सम्प्रयास-(स० पु०) अति प्रयास, बड़ी कोशिश।
सम्प्रयुक्त-(स०वि०) एक साथ किया हुआ, जोड़ा हुआ, सबद्ध, मिला हुआ
सम्प्रयोग-(स०पुं०)मेल, मिलाप, मैथुन, वशीकरण आदि कार्य।
सम्प्रयोगी-(स० पु०) कामुक, लम्पट (वि०) प्रयोग करने वाला।
सम्प्रवृत्त-(स०वि०) आरभ किया हुआ, जारी किया हुआ।
सम्प्रसाद-(स० पु०) योगशास्त्र के अनुसार चित्त का निर्मलता साधक यत्न।
सम्प्रस्थित-(स०वि०)जो प्रस्थान कर चुका हो।
सम्प्रहर्ष-(स० पु०) बड़ी प्रसन्नता।
सम्प्रहार-(स०पु०) युद्ध, लड़ाई,गमन।
सम्प्राप्त-(स०वि०) प्राप्त, पाया हुआ, उपस्थित, पहुचा हुआ, कहा हुआ।
सम्प्रिय-(स० वि०) अधिक प्यारा।
सम्प्रीति-(स० स्त्री०) सन्तोष, हर्ष।
सम्प्रेक्षण-(स० पु०) अच्छी तरह देखना।
सम्प्रेषण-(स०पु०) अच्छी तरह भेजना।
सम्प्रोक्षण-(स० नपु०) खूब पानी छिड़कना।
सम्प्लुत-(स०वि०) जल में डूबा हुआ।
सम्बद्ध-(स०वि०) बधा हुआ जुड़ा हुआ
सम्बन्ध-(स० पु०) समृद्धि, उन्नति, गहरी मित्रता, ससर्ग, सम्पर्क, लगाव, वास्ता, एक साथ मिलना या जुटना, नाता, रिश्ता, सयोग, मेल, विवाह, योग्यता, उपयुक्तता, व्याकरण में वह कारक जिसके चिह्न "का, के, की" हैं।
सम्बन्धातिशयोक्ति-(स० स्त्री०) अतिशयोक्ति अलकार का वह भेद जिसमें असबध में संबध दिखलाया जाता है।
सम्बन्धी-(स०पु०) नातेदार, रिश्तेदार, जिसके पुत्र या पुत्री का सम्बन्ध हुआ हो, समधी।
सम्बल-(स० नपुं०) सेमल का वृक्ष,

रास्ते का भोजन, सखिया, सोमलक्षार।

सम्बाध-(सं० पु०) सकट, बाधा, अड़चन, (वि०) सकुल, पूर्ण, भीड़ से भरा हुआ।

सम्बाधक-(सं०वि०) बाधा पहुचाने वाला

सम्बुद्ध-(सं०वि०) ज्ञान प्राप्त, पूर्ण रूप से जाना हुआ।

सम्बोध-(सं० पु०) ज्ञान, पूरा बोध, धैर्य, ढाढस, सान्त्वना।

सम्बोधन-(सं० नपु०) पुकारना, नींद से उठाना, जगाना, बताना, समझाना, व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने के लिये प्रयोग किया जाता है।

सम्भक्ष-(सं०पु०) अच्छी तरह भोजन करना।

सम्भग्न-(सं० वि०) पूरी तरह से टूटा हुआ।

सम्भय-(सं० पु०) बहुत डर।

सम्भरण-(सं० पु०) पालन पोषण, विधान, तैयारी।

सम्भल-(सं०पु०) चेटक, दलाल।

सम्भव-(सं०पु०) हेतु, कारण, जन्म, उत्पत्ति, परिमाण का एक होना, घटित होना, प्रसग, समाई, समागम, मेल, उपयुक्तता, युक्ति, उपाय, तदबीर सभावना, सकेत, इशारा।

सम्भावतः-(सं०अव्य०) हो सकता है।

सम्भवनीय-(सं०वि०) जो हो सकता हो

सम्भावन-(सं० नपु०) पूजा, सत्कार, आदर, चिन्ता, योग्यता, कल्पना, सम्पादन, मान, प्रतिष्ठा, इज्ज़त।

सम्भावना-(सं०स्त्री०) देखो सम्भावन।

सम्भावनीय-(सं०वि०) कल्पना के योग्य, सत्कार करने के योग्य।

सम्भावित-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध, मन में लाया हुआ, उपस्थित किया हुआ।

सम्भाषण-(सं० नपु०) कथोपकथन, बातचीत।

सम्भाषणीय-(सं०वि०) सभाषण करने योग्य।

सम्भु-(हिं० पु०) देखो शम्भु।

सम्भूत-(सं०वि०) उत्पन्न, पैदा, उपयुक्त।

सम्भूति-(सं० स्त्री०) क्षमता, शक्ति, करामात।

सम्भृत-(सं० वि०) खूब मोटा ताज़ा, पाया हुआ, दिया हुआ, भरा हुआ, बनाया हुआ, पैदा किया हुआ, युक्त, सहित।

सम्भृतश्री-(सं०त्रि०) मेघ, बादल।

सम्भृताङ्ग-(सं०वि०) पुष्ट, मोटा ताज़ा।

सम्भृति-(सं०स्त्री०) अच्छी तरह पालन पोषण, सामग्री, अधिकता।

सम्भेद-(सं० पु०) वियोग, जुदाई।

सम्भोग-(सं० पु०) किसी वस्तु का भली भांति उपयोग, सुरत, मैथुन, रति क्रीड़ा, हर्ष, वह श्रृंगार जिसमें विलासी और विलासिनी परस्पर दर्शन और स्पर्शादि द्वारा अनुरक्त होकर एक दूसरे का प्यार करते हैं।

सम्भोगी-(सं०वि०) सभोग करने वाला।

सम्भोजन-(सं० नपु०) एक साथ बैठ कर भोजन, दावत।

सम्भ्रम-(सं० पु०) डर से उत्पन्न व्याकुलता, आवेग, भ्रान्ति, भूल, चक्कर, आतुरता, उतावलापन, उत्कण्ठा।

सम्भ्रान्त-(सं०वि०) उद्विग्न, घबड़ाया हुआ, घुमाया या चक्कर दिया हुआ।

सम्भ्रान्ति-(सं० स्त्री०) उद्वेग, घबड़ाहट, चकपकाहट, हड़बड़ी।

सम्मत-(सं० वि०) अभिमत, जिसकी राय मिली हो (पु०) अनुमति, आज्ञा, सम्मति, राय, सलाह।

सम्मति-(सं०स्त्री०) सलाह, राय, इच्छा, एकमत्य, प्रतिष्ठा, अभिप्राय, मत, अनुमति, आज्ञा, आदेश।

सम्मद-(सं० पु०) आमोद, हर्ष।

सम्मन-(हिं०पु०) अदालत का किसी को अदालत में हाजिर होने का हुक्म (अं०-समन्स्)

सम्मन्तव्य-(सं०वि०) अच्छी तरह से विचारने योग्य।

सम्मर्द-(सं० पु०) युद्ध, लड़ाई, आपस का विवाद।

सम्मर्दन-(सं०पु०) वासुदेव के एक पुत्र का नाम, अच्छी तरह मलने का कार्य।

सम्महा-(हिं० पु०) अग्नि, आग।

सम्मा-(सं०वि०) तुल्य, समान।

सम्माद-(सं० पु०) उन्माद, पागलपन।

सम्मान-(सं०पु०) प्रतिष्ठा, मान, इज्जत, (नपु०) परिमाण, ठीक मानवाला।

सम्मानना-(हिं०क्रि०) आदर सत्कार करना।

सम्माननीय-(सं०वि०) आदर के योग्य।

सम्मानित-(सं०वि०) आदर किया हुआ।

सम्मान्य-(सं०वि०) आदर करने योग्य।

सम्मार्ग-(सं० पु०) श्रेष्ठ पद, मोक्ष।

सम्मार्जन-(सं०नपु०) सशोधन, साफ करना।

सम्मार्जनी-(सं०स्त्री०) झाड़ू, बुहारी।

सम्मिलन-(सं०नपु०) मिलन, मिलाप, मेल।

सम्मिलित-(सं०वि०) युक्त, मिला हुआ।

सम्मिश्रण-(सं० पु०) मिलने की क्रिया, मिलावट।

सम्मुख-(सं० वि०) अभिमुख, आगे, सामने।

सम्मूढ-(सं०वि०) मुग्ध, निर्बोध अज्ञान।

सम्मृष्ट-(सं० वि०) अच्छी तरह साफ किया हुआ।

सम्मेघ-(सं०पु०) मेघ युक्त आकाश।

सम्मेलन-(सं०नपु०) मनुष्यों का एकत्रित समाज जमावड़ा, जमघट, सगम, मेल।

सम्मोह-(सं०पु०) भ्रम, सन्देह, मूर्छा, बेहोशी, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु वर्ण होता है।

सम्मोहक-(सं० त्रि०) लुभाने वाला।

सम्मोहन-(सं०नपु०) मोहित करने की क्रिया, मोह कारक, शत्रु को मोहित करने वाला एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, कामदेव के पांच बाणों में से एक बाण का नाम।

सम्यक्-(सं० पु०) समुदाय, समूह, (वि०) पूरा।

सब–(हिं० वि०) सब प्रकार से, भलीभाँति।
सम्यकज्ञान–(स० नपु०) पूरा ज्ञान।
सम्यक्योग–(स० पु०) सपूर्ण योग, समाधि।
सम्राज्ञी–(स० स्त्री०) सम्राट् की पत्नी, राजमहिषी।
सम्राट्–(स० पु०) राजाधिराज, शाहनशाह।
सयत्न–(स० वि०) यत्न सहित।
सयन–(स० नपुं०) बन्धन (पु०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम (हिं०पु०) देखो शयन।
सयानपन–(हिं०पु०) चालाकी, होशियारी।
सयाना–(हिं० वि०) अधिक वय का, बुद्धिमान्, होशियार, धूर्त, चालाक।
सर–(सं०नपु०) सरोवर, तालाब, जल, बाण, गति, (पु०) पानी का झरना।
सर–(फ़ा० पु०) सिर, सिरा, चोटी।
सर–(अं० पु०) एक बड़ी उपाधि जो अंग्रेज़ी सरकार की ओर से प्रतिष्ठित व्यक्ति को दी जाती है।
सरअंजाम–(फ़ा० पु०) सामग्री, सामान, असबाब।
सरई–(हिं० स्त्री०) सरहरी।
सरकंडा–(हिं० पुं०) सरपत की जाति का एक पौधा जिसमें गाठ वाली छड़ होती है।
सरक–(स० नपु०) सरोवर, तालाब, आकाश, (नपु०) मद्यपान, (हिं०पु०) सरकने की क्रिया, यात्रियों का दाल (वि०) गतियुक्त।
सरकना–(हिं० क्रि०) किसी ओर हटना, टलना, काम चलना, खिसकना, निर्वाह होना किसी ओर बढ़ना।
सरकश–(फ़ा० वि०) उद्धत, उद्दण्ड, शासन न मानने वाला, विरोध करनेवाला
सरकशी–(फ़ा०स्त्री०) उद्दण्डता, शरारत।
सरकार–(फ़ा० स्त्री०) अधिपति, मालिक, राज्य, रियासत, शासन कर्ता गवर्नमेन्ट
सरकारी–(फ़ा० वि०) राजकीय, मालिक का, राजा का।
सरकारी कागज–प्रामिसरी नोट।
सरक्त–(स० वि०) खून से तराबोर।
सरखत–(फ़ा० पु०) वह कागज या दस्तावेज़ जिस पर मकान, दुकान आदि के किराये पर दिये जाने की शर्तें लिखी होती हैं, आज्ञापत्र, दिये हुए या चुकाये हुए ऋण का ब्योरा।
सरग–(हिं०पु०) देखो स्वर्ग।
सरगना–(फ़ा०पु०) सरदार, नायक, अगुआ
सरगना–(हिं० क्रि०) शेखी मारना, डींग हाकना।
सरगम–(हिं०पु०) स्वर ग्राम, संगीत के सातो स्वरों के उतार चढाव का क्रम।
सरगर्दानी–(फ़ा० स्त्री०) परेशानी, हैरानी, दिक्कत।
सरगर्म–(फ़ा०वि०) उत्साही, जोशीला, उमग से भरा हुआ।
सरगर्मी–(फ़ा०स्त्री०) आवेश, जोश।
सरघर–(हिं०पुं०) तरकश, तीर रखने का खाना।
सरघा–(स० स्त्री०) मधुमक्खी।
सरङ्ग–(स०पुं०) पक्षी, चिड़िया।
सरज–(स०नपुं०) नवनीत, मक्खन (वि०) मलिन, मैला।
सरजना–(हिं०क्रि०) सृष्टि करना, बनाना।
सरजा–(फ़ा० पु०) श्रेष्ठ व्यक्ति, सरदार, सिंह, शेर।
सरजीवन–(हिं० वि०) जिलाने वाला, उपजाऊ, हरा भरा।
सरज़ोर–(फ़ा० वि०) ज़बरदस्त, उद्दण्ड।
सरज़ोरी–(फ़ा०स्त्री०) उद्दण्डता।
सरट, सरटक–(स० पु०) कृकलास, गिरगिट।
सरण–(स०नपुं०) गमन, आगे बढ़ना (वि०) जाने वाला।
सरणि, सरणी–(स० स्त्री०) पंक्ति, रास्ता, पगडंडी, लकीर।
सरण्ड–(स० पु०) धूर्त, सरट, छिपकली, पक्षी।
सरता बरता–(हिं०पु०) बाट, बटाई।
सरद–(फ़ा०वि०) देखो सर्द ठंढा।
सरदई–(फ़ा० वि०) सरदे के रग का, हरापन लिये पीला।
सरदर–(फ़ा०क्रि० वि०) सब एक साथ मिलाकर, एक सिरे से, औसद से।
सरदल–(हिं० पु०) दरवाजे की साह।
सरदा–(फ़ा० पु०) एक प्रकार काबुली खरबूज़ा।
सरदार–(फ़ा०पु०) किसी समाज का नायक अगुआ, अमीर, रईस, किसी प्रदेश का शासक।
सरदारी–(फ़ा० स्त्री०) सरदार का पद या भाव।
सरन–(हिं० स्त्री०) देखो शरण।
सरनदीप–(हिं०पु०) देखो सिंहलद्वीप।
सरना–(हिं० क्रि०) काम चलाना, सम्पादित होना, हिलना डोलना, खिसकना, पूरा पड़ना, किया जाना।
सरनाम–(फ़ा० वि०) प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात।
सरनामा–(फ़ा० पु०) किसी लेख या विषय का निर्देश जो ऊपर लिखा रहता है, शीर्षक, पत्र आदि पर लिखा जाने वाला पता।
सरन्ध्र–(स० वि०) छिद्र सहित, छेददार।
सरपंच–(फ़ा०पु०) किसी पचायत का सभापति।
सरपट–(हिं०वि०) घोड़े की बहुत तेज़ चलने की चाल या दौड़।
सरपत–(हिं० पु०) कुश की तरह की एक घास जिसमें बहुत लंबी पत्तियां होती हैं, छप्पर आदि बनाने के काम में यह घास आती है।
सरपरस्त–(फ़ा०पु०) रक्षा करने वाला श्रेष्ठ पुरुष, संरक्षक।
सरपरस्ती–(फ़ा०स्त्री०) अभिभावकता सरक्षा
सरपेंच–(फ़ा० पु०) पगड़ी पर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।
सरपोश–(फ़ा०पु०) थाल या तश्तरी पर ढाँकने का कपड़ा।
सरफ़राज–(फ़ा०वि०) उच्चपदस्थ[illegible]।
सरफोका–(हिं०पु०) देखो सरकंडा।
सरबधी–(हिं० पु०) धनुर्धारी, तीरन्दाज, देखो सम्बन्धी।

सरब-(हिं०वि०) देखो सर्व ।
सरबराह-(फ़ा०पु०) प्रबन्ध कर्ता, इन्तजाम करने वाला, मजदूरों का सरदार।
सरबराहकार-(फ़ा०पु०) प्रबन्ध कर्ता, कारिन्दा ।
सरबराही-(फ़ा०स्त्री०) प्रबन्ध, इन्तजाम, माल असबाब की निगरानी ।
सरबस-(हिं०पु०) देखो सर्वस्व ।
सरमा-(सं० स्त्री०) विभीषण की स्त्री का नाम, देवताओं की एक कुतिया ,
सरमात्मज-(सं०पु०) तरणीसेन, कुत्ते का बच्चा, पिल्ला।
सरया-(हिं०पु०) एक प्रकार का मोटा धान जिसका चावल लाल होता है।
सरयू-(हिं०स्त्री०) उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम ।
सरर-(हिं० पु०) घास या सरकडे की पतली छड़ी ।
सरराना-(हिं०क्रि०) हवा बहने या हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द ।
सरल-(सं०पु०) चीड़ का वृक्ष, देवदार, अग्नि, पक्षी, गन्धाविरोजा, (वि०) जो टेढा न हो, सीधा, भोलाभाला, सहज, कपट रहित।
सरलकट्टु-(सं०पु०) चिरौंजी का पेड़ ।
सरलकाष्ठ-(सं०पु०) चीड़ की लकड़ी ।
सरलता-(सं०स्त्री०) सिधाई, सीधापन, सुगमता, सादापन, सचाई ।
सरलद्रव्य-(सं०पु०) ताड़पीन का तेल ।
सरलनिर्यास-(सं०पु०) गन्धाविरोजा ।
सरलरस-(सं०पु०)तारपीन का तेल।
सरला-(सं०स्त्री०) मोतिया, सफ़ेद निसोथ, काली तुलसी, चीड़ का पेड़ ।
सरलित-(सं०वि०) सीधा किया हुआ ।
सरवन-(सं०पु०) अन्धक मुनि के पुत्र, जो अपने पिता को बहँगी में बैठा कर ढोया करते थे ।
सरवर-(हिं०पु०)देखो सरोवर, तालाब। (फ़ा०पु०) अधिपति, सरदार ।
सरवरि-(हिं०स्त्री०)बराबरी,सादृश्य,तुलना
सरवाक-(हिं०पु०) सम्पुट, प्याला, दीया, कसोरा ।
सरविान-(हिं०पु०) खेमा, तम्बू ।
सरविस-(अं० स्त्री०) नौकरी, सेवा, खिदमत ।
सरवे-(अं० पु०) जमीन की पैमाइश, पैमाइश करने का सरकारी मुहकमा ।
सरस-(सं०वि०) रस युक्त, रसीला, स्वादिष्ट, मधुर, मीठा, हरा, ताज़ा, गीला, नया, मनोहर, सुन्दर, भावपूर्ण, (नपु०) सरोवर, तालाब, सहृदय, रसिक, छप्पय का एक भेद ।
सरसई-(हिं०स्त्री०) सरस्वती नदी, सरस्वती देवी, हरापन, ताज़ापन, सरसता, फलों के महीन अंकुर या दाने ।
सरसठ-(हिं०पु०) देखो सड़सठ ।
सरसता-(सं० स्त्री०) रसयुक्तता ।
सरसना-(हिं० क्रि०) बढ़ना, पनपना, शोभित होना, रस पूर्ण होना, हरा होना, उमग में भरना ।
सरसब्ज़-(फ़ा० वि०) हरा भरा, जहां पर हरियाली हो ।
सरसर-(हिं०पु०) भूमि पर रेंगने का शब्द, वायु के चलने से उत्पन्न शब्द ।
सरसराना-(हिं० क्रि०) वायु का तेजी से चलना, सरसर की ध्वनि होना, सनसनाना ।
सरसराहट-(हिं० स्त्री०) साप आदि के रेंगने से उत्पन्न शब्द, वायु के बहने का शब्द खुजली ।
सरसरी-(फ़ा० क्रि० वि०) जल्दी मे, जम कर नहीं,स्थूलरूप से, चलते ढग पर ।
सरसाई-(हिं०स्त्री०) सरसता, अधिकता, शोभा ।
सरसाना-(हिं० क्रि०) रसपूर्ण करना, हरामरा करना ।
सरसाम-(फ़ा० पु०) त्रिदोष, सन्निपात रोग ।
सरसार-(फ़ा० वि०) मग्न, डूबा हुआ, मदोन्मत्त ।
सरसिका-(सं०स्त्री०) छोटा ताल,बावली।
सरसिज-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, (वि०) तालाब या ताल में होने वाला।
सरसिजयोनि-(सं० पु०) ब्रह्मा ।
सरसिरुह-(सं० पु०) पद्म, कमल ।
सरसी-(सं० स्त्री०) पुष्करिणी, बावली ताल, एक प्रकार का वर्णवृत्त इसका दूसरा नाम सिंहक या सलिलनिधि है।
सरसीरुह-(सं०नपु०) पद्म, कमल ।
सरसेटना-(हिं० क्रि०) फटकारना, भला बुरा कहना ।
सरसों-(हिं० स्त्री०) सर्षप, एक धान्य जिसके छोटे गोल बीजों का तेल निकाला जाता है।
सरसौंहाँ-(हिं०वि०)सरस बनाया हुआ ।
सरस्वती-(सं० स्त्री०) पजाब की एक प्राचीन नदी का नाम,शारदा,वाग्देवी, दुर्गा ब्राह्मी, गाय,वाणी,स्त्रीरत्न, विद्या, सोम लता, एक छन्द का नाम ।
सरस्वती पूजा-(सं० स्त्री०) सरस्वती उत्सव जो कहीं वसन्त पञ्चमी और कहीं कुवाँर के महीने में होता है ।
सरस्वती व्रत-(सं०नपु०)श्री पञ्चमी व्रत।
सरहग-(फ़ा०पु०)सेना का अफसर,कप्तान पहलवान, चोबदार, पैदल सिपाही,
सरहगी-सिपहगिरी, पहलवानी ।
सरह-(हिं०पु०) पतग फतिंगा, टिड्डी ।
सरहज-(हिं०स्त्री०) साले की स्त्री।
सरहदी-(फ़ा०वि०)सर्पाक्षी नाम का पौधा
सरहद-(फ़ा०स्त्री०) सीमा, वह रेखा या चिह्न जो किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करता है,सीमा पर की भूमि,सीमान्त सिवान ।
सरहद्दी-(फ़ा० वि०) सीमा सबधी ।
सरहरा-(हिं०वि०) सीधा ऊपर को गया हुआ, चिकना, फिसलने वाला ।
सरहरी-(हिं०स्त्री०)सरपत की जाति का एक पौधा ।
सराग-(हिं०स्त्री०)मोटे लोहें की छड़ जिस पर लोहार बरतन बनाते हैं ।
सरा-(हिं०स्त्री०)देखो सराय ।
सराई-(हिं०स्त्री०) शलाका, सलाई, सरकडे की पतली छड़ी, मिट्टी का प्याला या दीया, सकोरा ।
सराग-(हिं०पु०)लोहे का छड़ या सीकचा

सराजक-(सं०वि०) राज युक्त।
सराध-(हिं०पु०)देखो श्राद्ध।
सराना-(हिं०क्रि०) किसी काम को पूरा करना।
सराप-(हिं०पु०)देखो शाप।
सरापना-(हिं० क्रि०) शाप देना।
सराफ-(हिं० पु०) रुपये पैसे या सोने चादी का लेनदेन करनेवाला महाजन, सोने चांदी का व्यापारी, वह दूकानदार जो रुपये नोट आदि की रेज़गारी आदि देता है।
सराफा-(हिं०पु०)सराफी का काम रुपये पैसे या सोने चादी के लेन देन का काम, सराफों का बाजार।
सराफी-(हिं०स्त्री०)सराफ का काम, सोने चादी या रुपये पैसे के लेन देन का रोज़गार, महाजनी, वह बट्टा जो नोट रुपये आदि के भुनाने के लिये दिया जाता है।
सराब-(अ०पु०)धोखा देने की वस्तु।
सराबोर-(हिं०वि०) भीगा हुआ, तरबतर।
सराय-(फा०स्त्री०) यात्रियों के ठहरने का स्थान, मुसाफिरखाना, मकान, घर(हिं०पु०)गुल्ला नामक पहाड़ी वृक्ष।
सराव-(सं०पु०) शराब पीने का प्याला, कसोरा, दीया, कटोरा।
सरावग, सरावगी-(हिं० पु०) जैन धर्मावलम्बी जैन।
सरासन-(हिं० पु०) देखो शरासन।
सरासर-(फा०अव्य०) पूर्णरूप से, एक सिरे से दूसरे सिरे तक, साक्षात्, प्रत्यक्ष, बिलकुल।
सरासरी-(फा० स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी, मोटा अन्दाज़, फुरती, स्थूल अनुमान, (क्रि०वि०) स्थूल रूप में, मोटे तौर पर, जल्दी से।
सराह-(हिं०स्त्री०) श्लाघा, प्रशसा।
सराहना-(हिं० क्रि०) प्रशसा करना, तारीफ करना।
सराहनीय-(हिं० वि०) प्रशसा करने योग्य, अच्छा, बढिया, उम्दा।
सरि-(हिं० स्त्री०) सरिता, नदी, समता, बराबरी (वि०) सदृश, समान।
सरिका-(सं० स्त्री०) मुक्ता, मोती, छोटा ताल।
सरित्-(सं० स्त्री०) नदी, दरिया।
सरिता-(सं०स्त्री०) जल की धारा,नदी।
सरित्पति-(सं० पु०) समुद्र।
सरित्सुत-(सं० पु०) भीष्म।
सरिदिहो-(फा० स्त्री०) वह नज़र जो किसान हर फस्ल पर ज़मीदार या उसके कारिन्दे को देता है।
सरिया-(हिं०स्त्री०) ऊची भूमि, सरई, पतली छड़, कोई छोटा सिक्का।
सरियाना-(हिं० क्रि०) बिखरी हुई वस्तुओं को ढग से समेटना, इकट्ठा करना, मारना, लगाना।
सरिल-(सं०नपु०) देखो सलिल, जल।
सरिवन-(हिं० पु०) शालपर्णी नामक पौधा।
सरिवरि-(हिं०स्त्री०) समता, बराबरी।
सरिश्ता-(फा०पु०) अदालत, कचहरी, शासन या कार्यालय का विभाग, मुहकमा, दफ्तर।
सरिश्तेदार-(फा० पु०) किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी, अदालत का मुकदमों की मिसलें रखने वाला कर्मचारी।
सरिश्तेदारी-(फा० स्त्री०) सरिश्तेदार का काम या पद।
सरिस-(हिं०वि०) देखो सदृश, समान।
सरिकता-(हिं०स्त्री०) शिरकत, हिस्सा।
सरीखा-(हिं०वि०) तुल्य,सदृश, समान।
सरीफा-(हिं० पु०) एक छोटा वृक्ष जिसका फल बहुत मीठा होता है, श्रीफल।
सरीर-(हिं०पु०) देखो शरीर, देह।
सरीसृप-(सं० पु०) कोई रेंगने वाला जन्तु, साप, विष्णु का एक नाम।
सरुच्-(सं०वि०) शोभायुक्त,कान्तिमान्।
सरुज्-(सं०वि०) रोगयुक्त, रोगी।
सरुष-(सं०वि०) क्रोधयुक्त, कुपित।
सरूप-(सं०वि०) सदृश, समान आकार वाला, सुन्दर, रूपवान्।
सरूपता-(सं०स्त्री०) समानता (हिं०पु०) देखो स्वरूप।
सरूपोपमा-(सं०स्त्री०) देखो समानोपमा
सरूर-(फा०पु०) आनन्द, खुशी, नशे की तरग।
सरेख-(हिं० वि०) अवस्था में बड़ा और समझदार, श्रेष्ठ, सयाना।
सरेखना-(हिं०क्रि०) देखो सहेजना।
सरेखा-(हिं०पु०) देखो श्लेषा।
सरेदस्त-(फा० क्रि० वि०) इस समय, अभी, इस वक्त के लिये।
सरेफ-(सं० वि०) रेफ युक्त।
सरेबाजार-(फा०क्रि०वि०) जनता के सामने, बाज़ार में, खुले आम, सब के सामने।
सरेरा-(हिं० पु०) पाल में लगी हुई वह रस्सी जिसको ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है, मछली की बंसी की डोरी।
सरेस-(फा० पु०) एक लसदार वस्तु जो अनेक पशुओं के चमडे को उबाल कर निकाली जाती है, सरहेस।
सरो-(हिं० पु०) एक सीधा वृक्ष जो बगीचों में शोभा के लिये बोया जाता है, बनझाऊ।
सरोई-(हिं० पु०) एक प्रकार का बड़ा ऊँचा वृक्ष।
सरोकार-(फा०पु०) परस्पर का सबध, वास्ता, मतलब, लगाव।
सरोग-(सं०वि०) रोग युक्त, रोगी।
सरोज-(सं०नपु०) पद्म, कमल।
सरोजमुखी-(सं०स्त्री०) कमल के समान मुख वाली स्त्री।
सरोजिनी-(सं० स्त्री०) पद्म, कमल, कमल का फूल, कमलों से भरा हुआ तालाब।
सरोद-(फा०पु०) बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।
सरोरुह-(सं० नपु०) पद्म, कमल।
सरोरुहासन-(सं० पुं०) पद्मासन।
सरोला-(हिं०पु०) एक प्रकारकी मिठाई
सरोवर-(सं०नपु०) तालाब,पोखरा, झील

सरोष-(सं०वि०) रोष युक्त, कुपित।
सरो सामान-(फा० पु०) उपकरण, सामग्री, असबाब।
सरोही-(हि०स्त्री०) देखो सिरोही।
सरौ-(हि० पु०) कटोरा, प्याली, ढपना, देखो सरो।
सरौता-(हिं० पु०) सड़सी के आकार का सुपारी काटने का एक औज़ार।
सरौती-(हि०स्त्री०) छोटा सरौता, एक प्रकार की पतली ईख।
सर्कस्-(अं० पु०) वह स्थान जहा पर जानवरों के खेल दिखलाये जाते हैं।
सर्का-(अं० पु०) दूसरे के भाव या लेख को चुराने की क्रिया, साहित्यिक चोरी।
सर्कार, सर्कारी-(हिं०) देखो सरकार, सरकारी।
सर्क्युलर-(अं०पु०) वह सरकारी आज्ञा-पत्र जो सब दफ्तरों में घुमाया जाता है, वह पत्र जिसमें किसी विषय की आवश्यक सूचना रहती है।
सर्ग-(सं०पु०) विष्णु, शिव, अनुमति, आज्ञा, प्रकृति, स्वभाव, अध्याय, प्रकरण, परिच्छेद, उत्साह, मोह, मूर्छा, परित्याग, ससार की उत्पत्ति, संकल्प, प्रवृत्ति, चेष्टा, प्रयत्न, जीव, प्राणि, गमन, गति, बहाव, मूल, उद्गम, सन्तति, सन्तान।
सर्गकर्ता-(सं० पु०) ब्रह्मा।
सर्गपताली-(सं० पु०) जिसकी आँखें ऐंची हों।
सर्गपुर-(सं० पु०) शुद्ध राग का एक भेद।
सर्गबन्ध-(सं० पु०) वह बड़ा काव्य जो अनेक सर्गों में विभक्त हो।
सर्जन्ट-(अं०पु०) हवलदार, जमादार, प्रथम श्रेणी का वकील।
सर्ज-(सं० पु०) शल्लकी वृक्ष, बड़ी जाति का शाल वृक्ष, धूना, राल, सलई का पेड़।
सर्ज-(अं०स्त्री०) मोटा ऊनी बढ़िया वस्त्र।
सर्जन-(सं० नपु०) विसर्जन, त्याग करना छोड़ना, निकालना, सृष्टि, सर्ग।
सर्जन्-(अं० पु०) चीरफाड़ करने वाला डाक्टर, अस्त्र चिकित्सक।
सर्जमणि-(सं० पु०) सेमल का गोद, मोचरस।
सर्जरी-(अं० स्त्री०) चीरफाड़ द्वारा चिकित्सा करने की क्रिया या विद्या।
सर्जि-(सं०स्त्री०) सज्जीखार।
सर्जी-(सं०स्त्री०) सज्जी मट्टी।
सर्जू-(सं० स्त्री०) देखो सरयू।
सर्टिफिकेट्-(अं०पु०) परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रमाण पत्र, सनद, योग्यता आदि का प्रमाणपत्र।
सर्ता-(हि०पु०) घाटक, घोड़ा।
सर्द-(फा० वि०) शीतल, ठढा, सुस्त, ढीला, मन्द, धीमा, बेस्वाद, नपुसक, नामर्द।
सर्दमिजाज-(अं० वि०) उत्साह हीन, रूखा।
सर्दा-(फा०पु०) एक प्रकार का खरबूजा जो काबुल से आता है।
सर्दार-(फा०पु०) देखो सरदार।
सर्दी-(फा०स्त्री०) शीतलता, ठढ, जाड़ा।
सर्प-(सं०पु०) गमन, रेंगना, एक म्लेच्छ जाति का नाम, साप।
सर्पगति-(सं० स्त्री०) कुटिल गति, कपट की चाल, चालबाज़ी।
सर्पगन्धा-(सं० स्त्री०) एक वृक्ष का नाम, नागदमनी।
सर्पकाल-(सं० पु०) गरुड़।
सर्पघाती-(सं०वि०) साप मारने वाला।
सर्पछिद्र-(सं०पु०) साप की बिल।
सर्पण-(सं० पु०) धीरे धीरे चलना, रेंगना।
सर्पतृण-(सं० पु०) नकुल, नेवला।
सर्पदंष्ट्र-(सं०पु०) साप का दात।
सर्पदण्डा-(सं० स्त्री०) सिंह पिप्पली।
सर्पनिर्मोक-(सं०पु०) साप की केंचुली।
सर्पप्रिय-(सं० पु०) चन्दन का वृक्ष।
सर्पफेण-(सं० पु०) अफीम।
सर्पबन्ध-(सं० पु०) कुटिल चाल, चालबाजी।
सर्पबल-(सं०नपु०) साप की शक्ति, विष।
सर्पवेलि-(सं० स्त्री०) नागवल्ली, पान।
सर्पभुज्-(सं० पु०) मोर।
सर्पमाली-(सं० पु०) शिव।
सर्पयज्ञ-(सं० पु०) राजा जनमेजय का नागों के संहार के लिये किया हुआ यज्ञ।
सर्पराज-(सं०पु०) शेष नाग।
सर्पलता सर्पवल्ली-(सं० स्त्री०) पान।
सर्पविद्या-(सं०स्त्री०) साप को पकड़ने या वश में करने की विद्या।
सर्पशीर्ष-(सं० पु०) एक प्रकार की ईंट जो वेदी बनाने के काम मे आती है।
सर्पसत्र-(सं० नपु०) सर्प यज्ञ।
सर्पाक्ष-(सं०नपु०) रुद्राक्ष, सरहटी।
सर्पारि (सं० पु०) नेवला, गरुड़, मोर।
सर्पावास-(सं० नपु०) चन्दन (वि०) सर्पों के रहने का स्थान।
सर्पाशन-(सं० पु०) गरुड़, मोर।
सर्पिणी-(सं० स्त्री०) सापिन, भुजगी लता।
सर्पी-(हि०वि०) धीरे धीरे चलने वाला।
सर्पिस्-(सं० नपु०) हवि, घृत।
सर्पेष्ट-(सं० पु०) श्रीखण्ड चन्दन।
सर्फ-(अं० पु०) व्यय किया हुआ, खर्च किया हुआ।
सर्फा-(अं० पु०) व्यय, खर्च।
सर्वस-(हिं०वि०) देखो सर्वस्व।
सर्म-(हि०पु०) देखो शर्म।
सर्रा-(अं० पु०) धुरी, धुरा।
सर्राफ-(अं० पु०) देखो सराफ, परखने वाला।
सर्राफ नातुआ-(अं० पु०) विवाहादि अवसरों पर नौकर चाकर को रुपया पैसा बाँटना।
सर्व-(सं०पु०) शिव, महादेव, शिव की क्षिति मूर्ति, विष्णु, पारा, शिलाजीत, रसवत, (सं० वि०) सम्पूर्ण, समग्र, तमाम।
सर्वसह-(सं० वि०) सब प्रकार का क्लेश हरने वाला।
सर्वहर-(सं० वि०) सब कुछ हरण

करने वाला।
सर्वक-(स० वि०) सकल, समुदाय।
सर्वकर्ता-(स० पु०) ब्रह्मा।
सर्वकाम-(स० पु०) सब प्रकार की कामना, सब इच्छाओं को पूरा करने वाला।
सर्वकामदा-(स० स्त्री०) सब कामनायें पूरी करने वाली।
सर्वकाममय-(स० वि०) सब कामना स्वरूप।
सर्वकामिक-(स० त्रि०) सब विषयो की कामना करने वाला।
सर्वकामी-(स० त्रि०) सब प्रकार की कामनाओ से युक्त।
सर्वकारक-(स०त्रि०) सब करने वाला।
सर्वकारण-(स०नपु०) सब का कारण।
सर्वकारी-(स० पु०) ब्रह्मा।
सर्वकाल-(स०पु०) सब समय, सदा।
सर्वकेसर-(स०पु०) मौलसिरी का वृक्ष।
सर्वग-(स०पु०) शिव, ब्रह्मा, आत्मा, भीम के पुत्र का नाम।
सर्वगत-(स०वि०) सर्वव्यापी।
सर्वगन्ध-(स० पु०) इलायची, नागकेसर लवग, केसर, अगर।
सर्वगुणी-(स०वि०) सर्वगुण सम्पन्न।
सर्वगुरु-(स०पु०) सब का गुरु।
सर्वग्रहरूपी-(स०पु०) विष्णु जनार्दन।
सर्वग्रास-सं० पु०) चन्द्र या सूर्य ग्रहण जिसमें उन का सपूर्ण मण्डल छिप जाता है।
सर्वचारी-(स०त्रि०) सर्व व्यापक,शिव।
सर्वजन-(स० पु०) सब लोग।
सर्वजनता-(स० स्त्री०) सामान्य लोग।
सर्वजनप्रिय-(स०वि०) सबका प्रिय।
सर्वजनीन-(स०वि०) सर्व जन सबधी।
सर्वजनीय-(स०वि०) सबों का हितकर।
सर्वजय-(स०पु०) सब काम में जीत।
सर्वजित्-(स० पु०) काल, मृत्यु।
सर्वजीवा-(स०पु०) वह जिसके बाप, दादा परदादा तीनो जीवित हों।
सर्वज्ञ-(स० पु०) शिव, विष्णु, सब कुछ जानने वाला, ईश्वर, देवता।
सर्वज्ञता-(स०स्त्री०,सर्वज्ञ होने का भाव।
सर्वज्ञा-(स० स्त्री०) दुर्गा।
सर्वज्ञानी-(स० पु०) सब कुछ जानने वाला।
सर्वतन्त्र-(स०त्रि०) जिसको सब शास्त्र मालूम हों।
सर्वतः-(स० अव्य०) सब ओर, चारो ओर, पूर्ण रूप से।
सर्वतो भद्र-(स०पु०नपु०) जिसका सब जगह मगल हो, विष्णु का रथ, एक प्रकार का चित्रकाव्य, एक प्रकार का पूजाधार यन्त्र जिसके ऊपर घटादि स्थापन करके पूजा की जाती है, वह चौकोर गृह या मन्दिर जिसके चारो ओर दरवाज़े हों, पूजा के लिये वस्त्र पर बनाया हुआ एक मागलिक चिह्न, जिसके सिर तथा दाढ़ी मूछ के बाल मुडे हों, वह पहेली जिसमें शब्द के अक्षरों के भी अलग अलग अर्थ लिये जाते हैं।
सर्वतोभद्रा-(स०स्त्री०) अभिनय करने वाली, नटी।
सर्वतोभाव-(स० अव्य०) पूर्ण रूप से, भली भाति।
सर्वतोमुख-(स० पु०) जल, आकाश, (वि०) जिसका मुख चारो ओर हो, व्यापक (पु०) शिव, विष्णु, ब्रह्मा,स्वर्ग, अग्नि, आत्मा।
सर्वत्र-(सं०अव्य०)सब जगह, हर एक स्थान में।
सर्वत्रग-(स० पु०) व्यापक, वायु।
सर्वत्रगामी-(स०त्रि०) सर्व व्यापक,वायु
सर्वथा-(स० अव्य०) सब प्रकार से, सब तरह से, अतिशय, बिलकुल, सब, निश्चय करके।
सर्वद-(स०वि०) सब कुछ देने वाला, (पु०) शिव महादेव।
सर्व दण्डधर-(स०पु०) शिव,महादेव।
सर्वदमन-(स०पु०) शकुन्तला के पुत्र, भरत।
सर्वदर्शन-(सं० नपुं०) जिसकी सब विषयों में दृष्टि हो।
सर्वदर्शी-(स०पु०)सब कुछ देखने वाला, परमेश्वर।
सर्वदा-(स०अव्य०)सब काल में,हमेशा।
सर्वदुःखक्षय-(स० पु०) सब प्रकार के दुःखो से निवृत्ति, मोक्ष।
सर्वदेवमय-(स०नि०) सकल देवता के स्वरूप।
सर्वदेवमुख-(सं०पु०) अग्नि।
सर्वदेशीय-(स०त्रि०) सर्व देश सबधी
सर्वद्वारिका-(स०स्त्री०) दिग्विजयी।
सर्वधन्वन्-(स०पु०) कन्दर्प, कामदेव।
सर्वधर-(स० वि०) सबका धारण करने वाला।
सर्वधातुक-(स०पु०) ताम्र, ताबा।
सर्वधाम-(स०नपु०) जन्म भूमि।
सर्वधारी-(स० पु०)शिव, महादेव।
सर्वनाभ-(स०पु०)एक प्रकार का अस्त्र।
सर्वनाम-(स०पु०) ब्रह्मा, (पु०)सबका नाम या सज्ञा, व्याकरण में वह शब्द जो सज्ञा के स्थान में प्रयोग किया जाता है यथा-मैं, तू वह।
सर्वनाश-(स० पु०) सत्यानाश, पूरी बरबादी।
सर्वनियोजक-(स० पु०) विष्णु।
सर्वनाशी-(स० वि०) सब का नाश करने वाला।
सर्वनिधान-(स० पु०) सब का नाश या वध।
सर्वनियन्ता-(स० त्रि०) सब को वश में करने वाला।
सर्वनियोजक-(स० पु०) विष्णु।
सर्वन्दम-(स० पु०) देखो सर्वदमन।
सर्वपति-(स०पु०)विष्णु,सब का स्वामी।
सर्वपालक-(स० वि०) सब का पालन करने वाला।
सर्वपूत-(स० वि०) सब तरह से पवित्र।
सर्वपूरक-(स०वि०) सब पूर्ण करने वाला
सर्वपूर्व-(स०क्रि०वि०) सब से पहले।
सर्वपृष्ठ-(स०वि०) सब के पीछे।
सर्वप्रद-(स०वि०) सब कुछ देने वाला।
सर्वप्रिय-(स०वि०) सब का प्यारा, जो सब को अच्छा लगे, शिव भक्त,

महादेव का प्रिय।
सर्वभक्ष, सर्वभक्षी-(सं०वि०) सब कुछ खाने वाला।
सर्वभाव-(सं० पु०) सम्पूर्ण सत्ता या अस्तित्व।
सर्वभूत-(सं०नपु०) सब प्राणी या सृष्टि।
सर्वभूतहित-(सं० पु०) सब प्राणियों की भलाई।
सर्वभूतात्मक-(सं०वि०) सर्वभूत स्वरूप।
सर्वभूतात्मा-(सं० पु०) सब प्राणियों की आत्मा।
सर्वभूताधिपति-(सं० पुं०) विष्णु।
सर्वभूतान्तक-(सं०पुं०) यम।
सर्वभोगी-(हिं०वि०) सब का आनन्द लेने वाला, सब कुछ खाने वाला।
सर्वमङ्गला-(सं०स्त्री०) सब प्रकार का मंगल करने वाली, दुर्गा, लक्ष्मी।
सर्वमात्रा-(सं०स्त्री०) विराज छन्द का एक भेद।
सर्वयोनि-(सं० पु०) सब का कारण।
सर्वरक्षण-(सं०नपु०) सब प्रकार की रक्षा करना।
सर्वरमा-(सं० स्त्री०) लावे का माड़।
सर्वरी-सं० स्त्री०) शर्वरी, रात्रि।
सर्वलिङ्गी-(हिं०वि०) आडम्बरी, पाषण्डी
सर्वलोकेश, सर्वलोकेश्वर-(सं० पुं०) ब्रह्मा, विष्णु।
सर्ववल्लभा-(सं० स्त्री०) कुलटा स्त्री, छिनार।
सर्ववादी-(सं० वि०) सब कुछ बोलने वाला (पु०) शिव का एक नाम।
सर्ववास-(सं०पु०) शिव, महादेव।
सर्वविज्ञानी-(सं० पु०) सब विज्ञान को जानने वाला।
सर्ववित्-(सं०पु०) परब्रह्म, परमेश्वर, ओंकार।
सर्वविद-(सं०वि०) सब विषय में विद्वान
सर्वविद्या-(सं० स्त्री०) सब प्रकार की विद्या।
सर्ववीर-(सं० वि०) जिसके बहुत से पुत्र हों।
सर्ववेद-(सं०वि०) सर्वज्ञ।

सर्वव्यापक-(हिं०वि०) देखो सर्वव्यापी
सर्वव्यापी-सं०वि०) सब में रहने वाला
सर्वशक्तिमान्-(सं० वि०) जिसमें सब कुछ करने का सामर्थ्य हो, परमेश्वर।
सर्वशः-(सं०अव्य०) पूर्ण रूप से।
सर्वश्रेष्ठ-(सं०वि०)सबसे बड़ा,सबसे उत्तम
सर्वश्वेता-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का विषैला कीड़ा।
सर्वस-(हिं०वि०) देखो सर्वस्व।
सर्वसत्य-(सं० वि०) यथार्थ।
सर्वसम्मता-(सं० स्त्री०) सबके प्रति समान व्यवहार।
सर्वसमृद्ध-(सं०वि०) सब विषयों में समग्र।
सर्वसम्पन्न-(सं० वि०) सब विषय में समग्र।
सर्वसभव-(सं०पु०) जहां से सब विषयों की उत्पत्ति हो।
सर्वसह-(सं०वि०)सब कुछ सहने वाला।
सर्वसाक्षी-(सं० पु०) अग्नि, वायु।
सर्वसाधारण-(सं० वि०) सामान्य, जो सबमें पाया जावे, (पु०) साधारण लोग, जनता, आमलोग।
सर्वसामान्य-(सं०वि०) जो सब में एक सा पाया जावे, मामूली।
सर्वसिद्धा-(सं० स्त्री०) शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी की रात्रि।
सर्वसिद्धार्थ-(सं० वि०) जिसका सब आशय सिद्ध हुआ हो।
सर्वसिद्धि-(सं० नपु०) सब कार्यों और कामनाओं का पूरा होना।
सर्वस्व-(सं० नपु०) सम्पूर्ण सम्पत्ति, सब कुछ कुल मालटाल।
सर्वहर-(सं०पु०)सब कुछ हर लेने वाला, यमराज, काल, शंकर, महादेव।
सर्वहारी-(हिं०वि०,सब कुछ हरने वाला।
सर्वहित-(सं० वि०) सबका हितकारक।
सर्वहुत-(सं०पु०) यज्ञ।
सर्वाक्ष-(सं० पु०) शिवाक्ष, रुद्राक्ष।
सर्वाङ्ग-(सं०नपु०) सम्पूर्ण शरीर, सब अवयव, (पु०) शिव, महादेव।
सर्वाङ्ग सुन्दर-(सं०वि०) जिसका सपूर्ण शरीर सुन्दर हो।

सर्वाणी-(सं०स्त्री०) शर्वाणि, दुर्गा।
सर्वातिथि-(सं० पु०) वह जो सबका सत्कार करे।
सर्वात्मा-(सं० पु०) सबकी आत्मा, ब्रह्मा, शिव।
सर्वाधिकार-(सं०पु०) पूर्ण प्रभुत्व, पूरा अधिकार।
सर्वाधिकारी-(सं०पु०) पूरा अधिकार रखने वाला, हाकिम।
सर्वाधिपत्य-(सं० नपु०) सबके ऊपर प्रभुत्व।
सर्वानंद-(सं०वि०) जिसको सभी विषय में आनन्द हो।
सर्वानुभू-(सं०वि०)सब विषयों का अनुभव करने वाला।
सर्वान्तक-(सं० वि०) सबका अन्त करने वाला।
सर्वान्तर्यामी-(सं० पु०) सबके मन की बात जानने वाला।
सर्वाप्ति-सं०स्त्री०)सब विषयों की प्राप्ति।
सर्वाभिसंधक-(सं०वि०) सबका धोखा देने वाला।
सर्वाभिसार-(सं०पु०) आक्रमण के लिये सम्पूर्ण सेना की तैयारी
सर्वाभाव-(सं० पु०) सब प्रकार का अभाव।
सर्वार्थ(सं०पु०) सकल प्रयोजन।
सर्वार्थचिंतक-(सं०वि०) सब विषय की चिन्ता करने वाला।
सर्वार्थसाधक-(सं० वि०) सब कार्य को करने वाला।
सर्वार्थसाधन-(सं०नपु०) पूरा आशय सिद्ध होना।
सर्वार्थसिद्धि-(सं०पु०) सकल मनोरथ की सिद्धि, सर्वावसर-(सं० पु०) आधी रात।
सर्वाशय-(सं०पु०) शिव।
सर्वाशी-(सं०वि०,सब कुछ खाने वाला।
सर्वास्तिवाद-(सं०पु०) वह दार्शनिक सिद्धान्त जो सब पदार्थों की वास्तविक सत्ता मानता है।

सर्वाह्न-(स०पु०)समस्त दिन, सारा दिन।
सर्वे-(अं० पु०) भूमि की नाप या पैमाइश, वह सरकारी विभाग जो भूमि को नापकर उसका नकशा बनाता है।
सर्वेश, सर्वेश्वर-(स०पु०) सबका स्वामी या मालिक, शिव, ईश्वर, चक्रवर्ती राजा
सर्वोत्तम-(स०वि०)सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम
सर्वौषधि-(स०स्त्री०) आयुर्वेद की औषधियों का एक वर्ग जिसके अन्तर्गत दस बूटियां हैं यथा—कुष्ठ, जटामासी, हरिद्रा, वच, चन्दन, शैलेय, मुरा, रक्तचन्दन, कपूर और मुस्त।
सर्षप-(स०पु०) सरसों, सरसों भर का परिमाण।
सर्षपकन्द-(स० पु०) एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ विषैली होती है।
सर्षपी-(स०स्त्री०) सफेद सरसों।
सर्सों-(हिं०स्त्री०) देखो सरसों।
सर्हद-(फ़ा०स्त्री०) देखो सरहद।
सलई-(हि० स्त्री०) शल्लकी वृक्ष, चीड़, का पेड़।
सलक-(अ०पु०) कन्दशाक, चुकन्दर।
सलक्षण-(स०वि०) लक्षण युक्त।
सलखपात-(हि०पु०) कच्छप, कछुआ।
सलगम-(फ़ा०पु०) देखो शलजम।
सलज-(हि०पु०)पहाड़ी बरफ का पानी।
सलजम-(फ़ा०पु०) देखो शलजम।
सलज्ज-(स०वि०) जिसको लज्जा हो, शर्म और हया वाला।
सलतनत-(अ० स्त्री०) साम्राज्य, बादशाहत,प्रबन्ध,इन्तजाम,सुविधा,आराम।
सलना-(हिं०क्रि०) छिदना, साला जाना, किसी छेद में चूल आदि का पहराया जाना (पु०) लकड़ी छेदने का बरमा
सलव-(स०वि०) नष्ट भ्रष्ट, बरबाद।
सलमद्द-(फ़ा०पुं०) बथुआ नामक शाक
सलमा-(अ० पु०) सोने चांदी का चमदार गोल लपेटा हुआ तार जो बेल बूटा बनाने के काम में आता है, बादला।
सलवट-(हिं०स्त्री०) देखो सिलवट।
सलवात-(अ०स्त्री०) बरकत, मेहरबानी।
सलसलाना-(हिं० क्रि०) सरसराना, खुजलाना, गुदगुदी होना, तर होना।
सलसलाहट-(हिं०स्त्री०) खुजली,गुदगुदी
सलज्ज-(हिं०स्त्री०) साले की स्त्री,सरहज।
सलाई-(हिं०स्त्री०) धातु की बनी हुई कोई पतली छोटी छड़ी, दियासलाई, सलाने की क्रिया या भाव, सलाने की मजदूरी, चीड़ की लकड़ी, सलाई लगाना-आंख में सुरमा लगाना।
सलाख-(फ़ा०स्त्री०) धातु की पतली छड़ शलाका, सलाई, लकीर।
सलाजीत-(हिं०स्त्री०) देखो शिलाजीत।
सलाद-(हि० पु० अ०सोलेड्-का अपभ्रंश) गाजर मूली आदि का सिरके में बना हुआ अचार।
सलाम-(अ०पु०) प्रणाम,बन्दगी, आदब, दूरसे सलाम करना-किसी चीज़ के पास न जाना, सलाम लेना-बन्दगी का जवाब देना, सलाम देना-बन्दगी करना।
सलामकराई-(हि०स्त्री०) वह धन जो कन्या पक्षवाले वरपक्ष को विवाह में मिलनी के समय देते हैं।
सलामत-(अ० वि०) सुरक्षित, स्वस्थ, तन्दुरुस्त, (क्रि०वि०) कुशल पूर्वक,(स्त्री०) अखण्डित या पूर्ण होने का भाव।
सलामती-(अ०स्त्री०) तन्दुरुस्ती, कुशल क्षेम, जीवन, जिन्दगी।
सलामी-(अ०स्त्री०) प्रणाम करने की क्रिया, सिपाहियाना सलाम, तोप या बदूकों का किसी माननीय व्यक्ति के आदरार्थ दगना, नजराना, सलामी उतारना-आदरार्थ तोप का बदूक का छोड़ा जाना।
सलार-(हि०पु०)एक प्रकार की चिड़िया
सलाह-(स० स्त्री०) परामर्श, सम्मति, मशवरा।
सलाहकार-(फ़ा०पु०) सम्मति देनेवाला।
सलिल-(स०नपु०) जल, पानी।
सलिलकुन्तल-(स०पु०) सेवार।
सलिलक्रिया-(स० स्त्री०) जलांजलि, तर्पण।
सलिलचर-(स० त्रि०) जलचर।
सलिलज-(स०स्त्री०) पद्म, कमल।
सलिलद-(स० त्रि०) मेघ, बादल।
सलिलनिधि-(स०पुं०) समुद्र, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस अक्षर होते हैं, इसका दूसरा नाम सरसी है।
सलिलपति-(स०पु०)वरुण समुद्र,सागर।
सलिलप्रिय-(स०पु०) शूकर, सुअर।
सलिलमय-(स० वि०) जलपूर्ण।
सलिलमुच्-(स०पु०) मेघ, बादल।
सलिलयोनि-(स० पु०) ब्रह्मा।
सलिलराज-(स०पु०) सागर, समुद्र।
सलिलाकर-(स० पु०) समुद्र।
सलिलाधिप-(स० पु०) वरुण।
सलिलार्णव-(स० पु०) समुद्र।
सलिलाशय-(स० पुं०) तालाब।
सलिलेन्द्र-(स०पु०) वरुण।
सलिलौदन-(स०पु०)पकाया हुआ अन्न।
सलीका-(अ०पु०) काम करने का अच्छा, ढग, शऊर, तमीज़, सभ्यता तहज़ीब, लियाकत, चाल चलन, बरताव।
सलीकामन्द-(फ़ा०वि०) सभ्य,शऊरदार, तमीज़दार।
सलीता-(हिं० पु०) गजी की तरह का मोटा कपड़ा।
सलीपर-(हिं० पु० अ० स्लीपर् का अपभ्रंश) बिना एडी की जूती, रेल की पटरियों के नीचे बिछाने की लकड़ी का तख्ता, पहिये पर चढ़ाने की हाल।
सलील-(स०वि०) लीला युक्त।
सलीस-(अ०वि०) सहज, सुगम,आसान, समतल, मुहावरेदार।
सलूक-(अ०पु०) ढग, तरीका, आचरण, बरताव, मेल मिलाप, भलाई।
सलूक-(हिं० पुं०) एक प्रकार की ज़नानी साड़ी।
सलूना-(हि० पुं०) पकी हुई तरकारी या भाजी।
सलोतर, सलोतरी-(हिं०पु०) घोड़ों की चिकित्सा करने वाला, शालिहोत्र।
सलोना-(हिं०वि०) नमक मिला हुआ, नमकीन, रसीला, सुन्दर।

सलोनापन-(हिं० पु०) सलोना होने का भाव।
सलोनो-(हिं०पुं०)हिन्दुओं का वह त्योहार जो श्रावण मास की पूर्णिमा को पड़ता है, रक्षाबन्धन।
सल्लकी-(स०स्त्री०) सलई का वृक्ष।
सल्लक्ष्य-(स०नपु०) उत्तम लक्षण।
सल्लम-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा, गज्जी, गाढा।
सल्लाह-(अ०स्त्री०) देखो सलाह।
सल्लू-(हिं०पु०) चमडे की डोरी।
सव-(स०पु०) यज्ञ,सन्तान,सूर्य,चन्द्रमा।
सवगात-(तु०स्त्री०) देखो सौगात।
सवत-(हिं०स्त्री०) देखो सौत।
सवत्स-(स०वि०) जिसके साथ बच्चा हो
सवन-(स० नपु०) यज्ञ स्थान, प्रसव, चन्द्रमा, अग्नि, भृगु के एक पुत्र का नाम।
सवनमुख-(स०नपु०) यज्ञ का आरम्भ।
सवय, सवयस्क-(हि० वि०) समान वयका।
सवर्ण-(स०वि०) सदृश, समान, समान वर्ण या जाति का।
सवर्णा-(स०स्त्री०) सूर्य की पत्नी छाया।
सवा-(हिं०स्त्री०वि०) सम्पूर्ण और एक का चतुर्थांश चौथाई सहित।
सवाई-(हिं०स्त्री०) एक और चौथाई, सवा, जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।
सवाँग-(हिं०पु०) देखो स्वाँग।
सवाद-(हि०पु०) देखो स्वाद।
सवादिक-(हि०वि०) स्वाद लेने वाला।
सवाब-(अ०पु०) स्वर्ग में मिलने वाला शुभ कर्म का फल, पुण्य,नेकी, भलाई।
सवार-(फा०पु०) वह जो घोडे पर चढा हो, अश्वारोही, अश्वारोही सैनिक, वह जो किसी चीज़ पर चढा हो, (वि०) किसी चीज पर चढा या बैठा हुआ।
सवारना-(हि०क्रि०) देखो सँवारना।
सवारी-(फा० स्त्री०) किसी चीज़ पर चढने की क्रिया, सवार होने की वस्तु, चढने की चीज, वह व्यक्ति जो सवार हो, जलूस, स्त्री सभोग की क्रिया।
सवाल-(अ०पु०) पूछने की क्रिया, प्रश्न, याचना, दरखास्त, विनती, प्रार्थना, गणित का उत्तर निकालने का प्रश्न।
सवाल जवाब-(अ० पु०) वादा-विवाद, तकरार, हुज्जत।
सविकल्प-(स० वि०) सन्देह युक्त, सन्दिग्ध, किसी अवलम्बन की सहायता से की जाने वाली समाधि।
सविकार-(स० वि०) वह जिसमें विकार हो।
सविकास-(स० वि०) फैला हुआ, खिला हुआ।
सविचार-(स०वि०) विचार पूर्वक।
सविता-(स०पु०) दिवाकर, सूर्य, मदार का पेड।
सवितापुत्र-(स०पु०) हिरण्यपाणि।
सवितासुत-(स०पु०) शनैश्चर।
सवित्री-(स० स्त्री०) प्रसव करने वाली माता, गौ।
सविनय-(स० वि०) विनय सहित, विनीत, सविनय अवज्ञा-राज्य की किसी आज्ञा को न मानना तथा शान्ति रखना।
सविलास-(स० वि०) भोग विलास करने वाला।
सवेरा-(हि० पु०) सूर्योदय का समय, प्रातःकाल, सुबह।
सवैया-(हिं०पु०) सवा सेर का बाट, वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक सख्या का सवाया रहता है, वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण पे सात भगण और एक गुरु वर्ण रहता है।
सव्य-(स० वि०) वाम, बाँया प्रतिकूल, विरुद्ध, (पु०) विष्णु, यज्ञोपवीत अगिर के एक पुत्र का नाम।
सव्यचारी-(स० पु०) अर्जुन वृक्ष।
सव्यभिचार-(स०वि०) नैयायिक मत से हेत्वाभास का एक भेद।
सव्यसाची-(स० पु०) अर्जुन का एक नाम।
सव्याधि-(स०वि०)व्याधि युक्त,पीड़ित।
सव्रत-(स०वि०) नियम युक्त।
सशङ्क-(स० वि०) शका युक्त, भयभीत, डरा हुआ, भयानक, शका उत्पन्न करने वाला।
सशब्द-स०वि०) शब्द युक्त।
सशरीर-(स० वि०) शरीर धारी।
सशिरस्क-(स०वि०) मस्तक युक्त।
सशोक-(स० वि०) जिसको शोक या दुःख हो।
सश्रीक-(स०वि०) लक्ष्मी युक्त, धनवान्।
सशकना-(हिं०क्रि०)शका करना, डरना।
सस-(हि० पु०) शशि, चन्द्रमा, शशक, खरहा।
ससक-हिं०पु०) शशक, खरहा।
ससङ्ग-(स०वि०) साथ वाला।
ससत्वा-(स०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।
ससरना-(हि०क्रि०)सरकना, खिसकना।
ससि-(हिं०पु०) शशि, चन्द्रमा।
ससिधर-(हिं०पु०) शिव।
सची-(हि०स्त्री०) देखो शची।
ससुर-(हि० पु०) पति या पत्नी का पिता, श्वसुर।
ससुरा-(हि० पु०) श्वसुर, एक प्रकार की गाली।
ससुराल-(हि० स्त्री०) पति या पत्नी के पिता का घर, बन्दीगृह, जेलखाना।
सस्ता-(हिं० वि०) कम मूल्य का, जो महगा न हो, साधारण, मामूली, घटिया, सहज में मिलने वाला, जिसका विशेष आदर न हो, सस्ते छूटना-किसी काम का कम परिश्रम या खर्च में पूरा हो जाना।
सस्ताना-(हि० क्रि०) किसी चीज का दाम कम होना, कम दाम पर बेंचना।
सस्ती-(हि० स्त्री०) सस्ता होने का भाव, सस्तापन।
सस्त्रीक-(स० वि०) सपत्नीक, जिसके साथ स्त्री हो।
सस्नेह-(स०वि०) स्नेह युक्त, प्रीति युक्त।
सस्मित-(स०वि०) हास्य सहित।
सस्य-(स०नपु०) धान्य, वृक्षों का फल।

सस्यहन्–(स० पुं०) मेघ, बादल, (वि०) अन्न नाश करने वाला।
सस्वर–(स०वि०) स्वर सहित,स्वर युक्त।
सह–(स०अव्य०) सहित, समेत, (वि०) विद्यमान, उपस्थित, सहनशील, समर्थ, योग्य, (नपु०) समानता, बराबरी, (पु०) महादेव, अगहन का महीना।
सहकार–(सं० पु०) साथ मिल कर काम करने वाला, सहायक, मददगार, आम का वृक्ष।
सहकारता–(स०स्त्री०) सहायता मदद।
सहकारिता–(स०स्त्री०) सहायता,मदद।
सहकारी–(स० पु०) सहयोगी, एक साथ काम करने वाला, सहायक।
सहगमन–(स० नपु०) साथ जाने की क्रिया, सती होना।
सहगामी–(स०पु०) साथी, अनुयायी,
सहगामिनी–(स०स्त्री०) सहचरी, पत्नी, पति की मृत्यु पर उसके साथ मर जाने वाली स्त्री।
सहचर–(स० पु०) भृत्य, नौकर, दास, मित्र, सखा, हमराही।
सहचरी–(स०स्त्री०) पत्नी, भार्या, सखी।
सहचार–(स०पु०) साथ, सग, सोहबत।
सहचारिणी–(० स्त्री०) साथ में रहने वाली, सहचरी, पत्नी।
सहचारिता–(स० स्त्री०) सहचरी होने का भाव।
सहचारी–(स०पु०) साथी, सेवक।
सहज–(स०पुं०) सगा भाई,स्वभाव (वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, साधारण, सरल, सुगम, साथ उत्पन्न होने वाला।
सहजकृति–(स० पु०) सुवर्ण, सोना।
सहजता–(सं० स्त्री०) सरलता।
सहजन्म–(स० त्रि०) एक ही गर्भ से उत्पन्न, सहोदर, सगा, जुड़वाँ।
सहजपथ–(हि० पु०) गौड़ वैष्णव सप्रदाय का एक वर्ग।
सहजात–(स० वि०) सहोदर, यमज।
सहजिया–(हि० पु०) सहज पथ का अनुयायी।
सहजीवी–(हि०वि०) एक साथ जीवन धारण करने वाले, साथ रहने वाले।
सहत–(हि० पु०) देखो शहद।
सहत महत–(हि०पु०) श्रीवस्ति।
सहतरा–(फा० पु०) पर्पटक, पित्तपापड़ा।
सहतूत–(हि० पु०) देखो शहतूत।
सहताना–(हिं० क्रि०) सुस्ताना।
सहत्व–(स०नपु०) एक होने का भाव, एकता, मेल जोल।
सहदइया–(हि०स्त्री०) देखो सहदेई।
सहदान–(स०नपु०) बहुत से देवताओं के उद्देश्य से एक में किया जाने वाला दान।
सहदानी–(हिं० स्त्री०) सज्ञान, पहचान।
सहदेई–(हिं०स्त्री०) एक वनौषधि।
सहदेव–(सं० पु०) पाण्डु के सबसे छोटे पुत्र का नाम, माद्री के गर्भ से इनका जन्म हुआ था।
सहदेवा–(स०स्त्री०) देखो सहदेई।
सहधर्म–(स० पु०) समान धर्म।
सहधर्मचरी–(स०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
सहधर्मचारी–(स० वि०) एक साथ धर्म करने वाला।
सहधर्मचारिणी–(स०स्त्री०) पत्नी,जोरू।
सहधर्मिणी–(स० स्त्री०) पत्नी, जोरू।
सहन–(स० नपु०) क्षान्ति, क्षमा, सहन करने की क्रिया।
सहन–(अ० पु०) मकान के बीच का खुला हुआ भाग, आगन, चौक, एक प्रकार का उत्तम कपड़ा।
सहन भण्डार–(स०पु०) कोप, खज़ाना, धन दौलत।
सहनशील–(स० वि०) सन्तोषी, सहन करने वाला।
सहनशीलता–(स०स्त्री०) सन्तोष।
सहना–(हि०क्रि०) बर्दाश्त करना, झेलना भोगना, फल भोगना, भार वहन करना।
सहनाई–(फ़ा०स्त्री०) देखो शहनाई।
सहनायन–(हि० पुं०) शहनाई बजाने वाली स्त्री।
सहनीय–(स० वि०) सहन करने योग्य।
सहपति–(स० पुं०) ब्रह्मा (वि०) पति के सहित।
सहपाठ–(सं० स्त्री०) एक साथ पढ़ना
सहपाठी–(स०वि०) जो साथ में पढ़ा हो।
सहपान–(स० नपु०) एक साथ शराब पीना।
सहभक्त–(स०नपु०) साथ भोजन करना
सहभावी–(स० पु०) सहायक, मददगार, सहोदर।
सहभुज्–(स०वि०)एक साथ खाने वाला
सहभोज, सहभोजन–(हि०पु०) एक साथ बैठकर भोजन करना, साथ बैठकर खाना।
सहभोजी–(हि० वि०) साथ बैठकर भोजन करने वाले।
सहम–(फा० पु०) सकोच, लिहाज़, भय, डर।
सहमत–(स० वि०) जिसका मत दूसरे से मिलता हो।
सहमना–(हि० क्रि०) भयभीत होना, डरना।
सहमरण–(स० नपुं०) मृत पति के शव के साथ जलती हुई चिता में बैठ कर अपनी शरीर को भस्म करना, सती होना।
सहमान–(सं० वि०) मर्यादा या मान के साथ।
सहमाना–(फ़ा० क्रि०) भयभीत करना, डराना।
सहमूल–(स०वि०) समूल, मूलयुक्त।
सहमृता–(स० स्त्री०) सहमरण करने वाली स्त्री, सती।
सहयोग–(स०पु०) साथ मिलकर काम करने का भाव, साथ, सग, मदद, सहायता, आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से मिलकर काम करने का सिद्धान्त।
सहयोगी–(स० पु०) सहायक, मददगार, वह जो किसी के साथ मिलकर कोई काम करता हो, साथमें काम करने वाला, समकालीन, समवयस्क, आधुनिक भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में सरकार से मिल कर काम करने वाला व्यक्ति।

सहर-(स०पु०) एक दानव का नाम, (हि० पु०) जादू, टोना, देखो शहर, (अ०पु०) प्रातःकाल, सवेरा ।

सहरगही-(फा० स्त्री०) वह भोजन जो किसी दिन निर्जल व्रत करने के पहले बहुत तड़के कुछ रात रहते ही किया जाता है, ऐसा भोजन मुसलमान लोग रमजान के दिनों में करते हैं ।

सहरना-(हिं०क्रि०) देखो सिहरना ।

सहराना-(हि०क्रि०) डरके मारे काँपना, सहलाना ।

सहरा-(अ०पु०) अरण्य, वन, जंगल ।

सहरिया-(हिं०पु०) इक प्रकार का गेहूँ ।

सहरी-(अ०स्त्री०) सफरी मछली, देखो सहरगही ।

सहर्ष-(स०वि०) हर्षयुक्त, हर्ष सहित ।

सहल-(अ०वि०)सरल,जो कठिन न हो ।

सहलाना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु पर धीरे धीरे हाथ फेरना, सुहराना,मलना, गुदगुदाना ।

सहचन-(हिं०पु०) एक प्रकार का अन्न जिसमें से तेल निकाला जाता है ।

सहवाद-(स० पु०) आपस में तर्क वितर्क, बहस ।

सहवास-(स०पु०) एक साथ रहने का व्यापार, रति, संभोग, मैथुन ।

सहवासी-(स०वि०)एक साथ रहने वाला

सहव्रत-(स० वि०) एक साथ व्रत करने वाला ।

सहस-(हि०वि०) सहस्र ।

सहसंवाद-(स०वि०) सवाद युक्त ।

सहसंवास-(स०पु०) साथ रहना ।

सहसंसर्ग-(स०पु०) परस्पर सहवास ।

सहस किरन-(हि०पु०) सूर्य ।

सहस जीभ-(हिं०पु०) शेष नाग ।

सहस नयन-(हि०पु०) इन्द्र ।

सहस फण-(हि०पु०) शेष नाग ।

सहस बाहु-(हि०पुं०) देखो सहस्रबाहु ।

सहसमुख-(हिं०पु०) शेष नाग।

सह सम्भव-(स०वि०) जो एक साथ उत्पन्न हो।

सहसवदन-(हिं०पु०) शेष नाग ।

सहससीस-(हि०पुं०) शेषनाग ।

सहसा-(स०अव्य०) एकाएक, अचानक, अकस्मात् ।

सहसादृष्ट-(स०वि०)एकाएक देखा हुआ

सहसाक्षि-(हिं०पु०) सहस्राक्ष, इन्द्र ।

सहसाखी-(हि०पु०) इन्द्र ।

सहसादृष्ट-(स०वि०)अचानक देखा हुआ

सहसान-(स०पु०) मयूर, मोर ।

सहसिद्ध-(स०वि०) जन्म से सिद्ध ।

सहसावत्-(स०वि०) तेजयुक्त, बलयुक्त ।

सहसासन-(हि० पु०) शेषनाग ।

सहसेवी-(हिं०वि०,साथ सेवा करने वाला

सहस्त-(स०वि०) हाथ वाला ।

सहस्य-(स०पु०) पूस का महीना ।

सहस्र-(स०नपु०) दस सौ अथवा एक हजार की सख्या ।

सहस्रकर-(स०पु०) सहस्र किरण,सूर्य ।

सहस्र काण्डा-(स०स्त्री०) सफेद दूब ।

सहस्र किरण-(स०पु०) सूर्य ।

सहस्र गुणित-(स०वि०) हजार से गुणा किया हुआ ।

सहस्रचक्षु-(स०पु०) इन्द्र ।

सहस्र चरण-(स०पु०) विष्णु ।

सहस्र जित्-(स०पु०) कृष्ण की पटरानी जाम्बवती के दश पुत्रों में से एक ।

सहस्रदल-(स० नपु०) पद्म, कमल, सहस्रदृश-इन्द्र ।

सहस्रधा-(स०अव्य०) हजारों प्रकार से ।

सहस्र धारा-(स० स्त्री०) हजारो छेद का एक पात्र ।

सहस्रधी-(स०वि०) बड़ा चतुर ।

सहस्र नयन-(स०पु०) इन्द्र ।

सहस्र नाम-(स० नपु०) वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के एक हजार नाम हों ।

सहस्र नेत्र-(स०पु०) इन्द्र ।

सहस्रपत्र-(स०नपु०) कमलपत्र ।

सहस्रपाद-(स० पुं०) सूर्य, विष्णु, सारस पक्षी ।

सहस्र बाहु-(स०पु०) राजा कृतवीर्य के पुत्र हैहय ।

सहस्र भुजा-(स०स्त्री०) दुर्गा की एक मूर्ति का नाम ।

सहस्र मूली-(स०स्त्री०) बड़ी शतावर ।

सहस्रमौलि-(स०पु०) विष्णु ।

सहस्ररश्मि-(स०पु०) सूर्य ।

सहस्र लोचन-(स०पु०) इन्द्र ।

सहस्र वक्त्र-(स०पु०) इन्द्र ।

सहस्र वीर्य-(स०वि०) बड़ा ताकतवर

सहस्रशः-(स०अव्य०) हजार बार ।

सहस्र शीर्ष-(स०पु०) विष्णु ।

सहस्रा-(स०स्त्री०)मयूर शिखा,मोरशिखा

सहस्रांशु-(स०पु०) सूर्य ।

सहस्रांशुज-(स०पु०) शनि ग्रह ।

सहस्राक्ष-(स०पु०) इन्द्र, विष्णु ।

सहस्रानन-(स०पु०) विष्णु ।

सहा-(स० पुं०) ग्वारपाठा, घीकुआर, ककही नामक वृक्ष, सेवती, मेंहदी, अगहन का महीना ।

सहाइ,सहाई-(हि०वि०)सहायक,मददगार (स्त्री०) सहायता, मदद ।

सहाउ-(हि०पु०) देखो सहाय, मदद ।

सहादर-(स०अव्य०) आदर के साथ ।

सहाध्ययन-(स०नपु०)एक साथ पढना

सहाध्यायी-(स०पु०) सहपाठी, एक साथ पढने वाला ।

सहाना-(हि०पु०) एक प्रकार का राग ।

सहानी-(फा० वि०) पीलापन लिये लाल रग का ।

सहानुभूति-(स०स्त्री०) किसी के कष्ट को देखकर स्वय दुःखी होना, हमदर्दी ।

सहापवाद-(स०वि०) निन्दायुक्त ।

सहाव-(फा०पु०) देखो शहाब ।

सहाय-(स० पु०) सहायता, मदद, आश्रय, भरोसा, सहायक ।

सहायक-(स० त्रि०) सहायता करने वाला, मददगार ।

सहायता-(स० स्त्री०) आर्थिक अथवा शारीरिक साहाय्य, मदद ।

सहायी-(स०वि०) सहायता देने वाला, मददगार ।

सहायिनी-(स०स्त्री०) मदद करने वाली

सहार-(हिं० पु०) सहन करने की क्रिया, सहनशीलता ।

सहारना-(हिं० क्रि०) सहन करना, बर्दाश्त करना ।
सहारा-(हिं० पु०) सहायता, मदद, आश्रय, आसरा, भरोसा ।
सहार्द्र-(स०वि०) प्रेमयुक्त, स्नेह सहित ।
सहालग-(हिं०पु०) हिन्दू ज्योतिषियो के अनुसार वह वर्ष या वे महीने या दिन जिनमें विवाह के मुहूर्त हों ।
सहिजन-(हिं० पु०) शोभाजन एक बड़ा वृक्ष जिसके फलियों की तरकारी बनती है ।
सहिजानी-(हिं०स्त्री०) चिह्न, निशानी ।
सहित-(स० वि०) सयुक्त, साथ, समेत, मिलित, हितकर, भलाई चाहने वाला ।
सहितव्य-(स०वि०) सहन करने योग्य ।
सहिष्णु-(स० वि०) सहनशील, जो सहन कर सके ।
सहिष्णुता-(स०स्त्री०) सहनशीलता ।
सही-(फ़ा०वि०) सत्य, सच, प्रामाणिक, यथार्थ, शुद्ध, ठीक, (स्त्री०) हस्ताक्षर, दस्तखत, सहीभरना-स्वीकार कर लेना
सही सलामत-(फ़ा० वि०) स्वस्थ, आरोग्य, भलाचगा, दोष रहित ।
सहुँ-(हिं०अव्य०) सन्मुख, सामने, तरफ ।
सहूलियत-(फ़ा० स्त्री०) सुगमता, आसानी, अदब, शऊर ।
सहृदय-(स० वि०) दयावान्, दयालु, प्रसन्नचित्त, सुस्वभाव, सज्जन, रसिक ।
सहृदयता-(स०स्त्री०)सौजन्य, रसिकता ।
सहेजना-(हिं० क्रि०) अच्छी तरह जाँचना, सँभालना, समझाकर सपुर्द करना ।
सहेजवाना-(हिं० क्रि०) सहेजने का काम दूसरे से कराना ।
सहेत-(हिं० पु०) नायक नायिका के मिलने का निर्दिष्ट स्थान ।
सहेतु, सहेतुक-(स० वि०) हेतुयुक्त, जिसमें कोई हेतु या कारण हो ।
सहेरवा-(हिं०पु०) हरसिंगार का वृक्ष ।
सहेल-(हिं० पु०) वह सहायता जो काश्तकार अपने ज़मींदार के खेत जोतने बोने में देता है ।
सहेली-(हिं० स्त्री०) साथ में रहने वाली स्त्री, अनुचरी, सगनी दासी ।
सहैया-(हिं०वि०) सहन करने वाला ।
सहोक्ति-(स०स्त्री०) वह काव्यालकार जिसमें 'सह, सग, साथ' आदि शब्दों का व्यवहार होता है तथा अनेक कार्य एक साथ होते हुए वर्णन किये जाते हैं, ऐसे अलकारों में क्रिया प्राय. एक ही रहती है ।
सहोढ-(सं०पु०) गर्भवती अवस्था में व्याही हुई कन्या का पुत्र ।
सहोदर-(स० पु०) एक ही उदर से उत्पन्न सन्तान, एकही माता के पुत्र (वि०) सगा ।
सहोर-(हिं० पु०) एक प्रकार का जगली वृक्ष ।
सह्य-(स० वि०) सहने योग्य, बर्दाश्त करने लायक ।
सह्यता-(स० स्त्री०) सहन ।
सह्याद्रि-(स० पु०) बबई प्रदेश की एक पर्वत माला ।
साईं-(हिं०पु०)परमेश्वर, स्वामी, मालिक, पति, शौहर, मुसलमान फकीरों की एक उपाधि ।
साँकड़-(हिं० पु०) शृखला, जजीर, सीकड़ ।
साँकड़ा-(हिं० पु०) पैर में पहरने का चादी का एक प्रकार का आभूषण ।
साँकुर-(हिं० स्त्री०) शृखला, जजीर (वि०) तग, सकरा, दुःखमय ।
साँकरा-(हिं०वि०) देखो सकरा, साँकड़ा ।
साक्रामिक-(स०वि०) छूत से उत्पन्न होने वाला ।
साख्य-(स०पु०) महर्षि कपिल प्रणीत दर्शन शास्त्र ।
साँग-(हिं० स्त्री०) भाले के आकार की एक प्रकार की बरछी (वि०) सम्पूर्ण, पूरा ।
सागरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का रग जिससे कपडे रगे जाते हैं ।
सांगी-(हिं०स्त्री०) बरछी, बैलगाड़ी में गाड़ीवान के बैठने का स्थान, इक्के या गाड़ी के नीचे लगी हुई जाली ।
साग्रामिक-(स० वि०) युद्ध सबधी ।
साघातिक-(स० वि०) हनन करने वाला, मारक ।
साँच-(हिं०वि०) सत्य, यथार्थ, ठीक-
साँचला-(हिं०वि०) सत्यवादी, सच्चा ।
साँचा-(हिं०पु०) वह उपकरण जिसमें कोई तरल पदार्थ या गीली चीज़ रखकर कोई विशेष आकार की कोई वस्तु बनाई जाती है, फरमा, बेलबूटा छापने का ठप्पा, छापा, किसी वस्तु की छोटी आकृति जो नमूने के तौर पर बनाई जाती है, साँचेमें ढला हुआ-बड़ी सुन्दर बनावट का ।
साँचिया-(हिं०पु०)किसी चीज़ का साँचा बनाने वाला, साचेमें ढालने वाला ।
साची-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पान जो खाने मे ठढा होता है, पुस्तकों की छपाई का वह प्रकार जिसमें पक्तिया बेंडे बलमे होती हैं तथा पृष्ठ कम चौड़ा और अधिक लम्बा होता है तथा पन्ने अलग अलग रहते हैं ।
साँझ-(हिं०स्त्री०) सन्ध्या, शाम ।
साँझा-(हिं०पुं०) व्यवसाय का हिस्सा, पत्ती, साझा ।
साँझी-(हिं०स्त्री०) देव मन्दिरों में देवता के आगे भूमि पर फूल पत्तियों की सजावट ।
साँट-(हिं० स्त्री०) पतली खमाची, कोड़ा, शरीर पर का चाबुक, कोड़े आदि की मार का चिह्न ।
साँटा-(हिं० पु०) ईख, गन्ना, कोड़ा, करगह का वह डडा जिसकी सहायता से ताने के सूत नीचे ऊपर होते हैं ।
साँटिया-(हिं०पु०)डुगडुग्गी पीटने वाला।
साँटी-(हिं० स्त्री०) पतली छोटी छड़ी, बासकी खमाची, शाखा, मेलमिलाप, बदला, प्रतीकार, टूटे हुए रस्से को बिना गाठ दिये हुए साटकर जोड़ने की विधि
साँठ-(हिं०पु०) देखो साँकड़ा, सरकडा, वह लम्बा डडा जिससे पीटकर अन्न के दाने अलगाये जाते हैं, ईख, गन्ना;

सॉठगॉठ-मेल मिलाप,मित्रता, दोस्ती।
सॉठना-(हिं० क्रि०) पकडे रहना।
सॉठी-(हिं० स्त्री०) पूजी, मूल धन, गदहपूरना।
सॉड़-(हिं०पु०) वह घोड़ा या बैल जो बधिया नहीं किया जाता और जोड़ा खिलाने के लिये पाला जाता है, वृषोत्सर्ग में छोड़ा हुआ वृषभ (वि०) बलिष्ठ, आवारा, बदचलन।
सॉड़नी-(हिं०स्त्री०)ऊटनी जो तेज चलती है और सवारी के काम में आती है।
सॉड़ा-(हिं०पु०) छिपकली की जाति का एक प्रकार का जानवर।
सॉड़िया(हिं०पु०) तेज चलने वाला ऊट, ऊट पर सवारी करने वाला।
सॉथड़ा-(हिं०पु०) बादिया का भाग जो पेंच बनाने के लिये घुमाया जाता है।
सॉथरी-(हिं० स्त्री०) चटाई, बिछौना।
सॉथा-(हिं० पु०) चमड़ा कूटने का लोहे का एक औजार।
सॉथी-(हिं०स्त्री०) ताने के सूतों की नीचे ऊपर होने की क्रिया।
सॉद-(हिं० पु०) लंगर, ढेका।
सॉध-(हिं० पु०) लक्ष्य, निशाना।
सॉधना-(हिं० क्रि०) निशाना लगाना, रस्सियों आदि में जोड़ लगाना, मिश्रित करना, मिलाना, सानना, पूरा करना।
सॉधा-(हिं० पु०) दो रस्सियों में दी हुई गॉठ।
सॉप-(हिं०पु०) एक प्रसिद्ध रेंगने वाला लम्बा कीड़ा जो पेट के बल भूमि पर रेंगता है भुजग, सर्प, बड़ा दुष्ट मनुष्य, कलेजे पर सॉप लोटना-ईर्ष्या आदि के कारण चित्त में बड़ा दुःख होना, सॉप छछूंदर की दशा-बडे असमञ्जस की अवस्था।
सॉपधरन-(हिं० पु०) शिव, महादेव।
सॉपा-(हिं० पु०) देखो सियापा।
सॉपिन-(हिं०स्त्री० सॉंप की मादा,सर्पिणी।
सांभर-(हिं० पु०) राजपूताने की एक झील जिसके खारे पानी से सामर नमक निकाला जाता है।

सांवक-(हिं०पु०) वह ऋण जो हरवाहों को दिया जाता है जिसके सूद के बदले में वे काम करते हैं, सावाँ नामक अन्न।
सांवत-(हिं०पु०) एक प्रकार का राग।
सांवती-(हिं०स्त्री०) बैलगाड़ी या घोड़ा गाड़ी इक्के आदि के नीचे लगाई हुई जाली जिसमें घास रक्खी जाती है।
सांवत्सर, सांवत्सरक-(सं०पु०) गणक, ज्योतिषी।
सांवत्सरिक-(सं० वि०) सवत्सर सम्बधी, वार्षिक, गणक, दैवज्ञ।
सांवलताई-(हिं०स्त्री०) श्यामता।
सांवला-(हिं० वि०) श्यामवर्ण का, पति या प्रेमी आदि बोधक एक नाम, श्रीकृष्ण का एक नाम।
सॉवलापन-(हिं० पु०) सावला होने का भाव।
सावा-(हिं०पु०) कगनी या चेना जाति का एक अन्न।
सांवादिक-(सं०पु०) नैयायिक (वि०) खबर देने वाला।
सांशयिक-(सं०वि०) सन्देह युक्त।
सांस-(हिं०स्त्री०) नाक या मुख के द्वारा हवा खींचकर फेफड़ों में पहुँचाना तथा फिर बाहर फेंकने की क्रिया,श्वास, दम, गुजाइश, अवकाश, छुट्टी, वह दरार जिसमें से हवा आ जा सकती है, श्वास का रोग, सॉस उखड़ना-मरण के समय बड़ी कठिनता से सास लेना, सॉस चढना-मेहनत से जल्दी जल्दी सास आना जाना, सांस टूटना-बड़ी कठिनाई से सास लेना, सॉस तक न लेना-बिलकुल मौन रहना, सास फूलना-जल्दी जल्दी सास खींचना और छोड़ना, सांस रहते-जीवित रहते हुए, उलटी सांस लेना-मरण के समय बड़ी कठिनता से सास का भीतर जाना, लंबी सास लेना-देर तक सास लेना, सांस भरना-हवा भरना।
सांसत-(हिं०स्त्री०) अधिक कष्ट या पीड़ा, दम घुटने का शब्द, झझट।

सांसनघर-(हिं०पु०) कारागार में बहुत छोटी अधेरी कोठरी, काल कोठरी।
सांसना-(हिं०क्रि०) शासन करना, दण्ड देना, कष्ट देना, दुःख पहुँचाना, डाटना, डपटना।
सांसर्गिक-(सं०वि०) ससर्ग सबंधी।
सांसल-(हिं० पु०) एक प्रकार का कम्बल।
सांसा-(हिं० पु०) श्वास, सास, प्राण, जीवन, जिन्दगी, बड़ा कष्ट, तकलीफ, चिन्ता, सन्देह, भय।
सांसारिक-(सं० वि०) ससार सम्बधी, लौकिक।
सांस्कारिक-(सं० वि०) सस्कार के उपयोगी।
सांस्थानिक-(सं०वि०) एक देश का।
सा-(सं०स्त्री०) गौरी, लक्ष्मी (हिं० अव्य०) तुल्य, समान, सदृश, एक प्रकार का मान सूचक शब्द।
साइक्लोपीडिया-(अं० स्त्री०) वह बड़ा ग्रन्थ जिसमें ससार भर के सब मुख्य मुख्य विषयों पर पूरा पूरा विवेचन रहता है, विश्वकोष।
साइक्लोस्टाइल-(अं०स्त्री०) अनेक प्रतिलिपियों को छापने का एक छोटा यन्त्र।
साइत-(अ० स्त्री०) शुभ लग्न, मुहूर्त, एक घंटे या अढाई घड़ी का समय क्षण।
साइनबोर्ड-(अं० पु०) वह तख्ता जिस पर किसी व्यक्ति, दुकान, व्यवसाय आदि का नाम और पता लिखा रहता है और यह ऐसे स्थान पर टांगा जाता है जिसमें सर्वसाधारण की इस पर दृष्टि पडे।
साइन्स-(अं० स्त्री०) किसी विषय का विशेष ज्ञान, विज्ञान।
साइबान-(फा० पु०) देखो सायबान।
साइयां-(हिं०पु०) देखो साईं।
साइर-(हिं०पु०) देखो शायर, कवि।
साई-(हिं० पु०) ईश्वर, मालिक, पति, स्वामी।
साई-(हिं०स्त्री०) वह धन जो गाने बजाने वाले या इसी प्रकार के दूसरे पेशेवालों

को किसी अवसर के लिये उनकी नियुक्ति निश्चित करने के लिये पेशगी दिया जाता है, बयाना।
साईकाटा-(हिं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल चमड़ा सिझाने में काम आती है।
साईस-(हिं०पु०) घोडे की सेवा करने वाला नौकर।
साईसी-(हिं० स्त्री०) साईस का काम या पद।
साकंभरी-(हिं० पु०) साम्भर झील के आस पास का प्रान्त।
साकचेरि-(हिं० स्त्री०) मेंहदी।
साकं-(सं० अव्य०) सहित, साथ।
साक-(हिं०पु०) शाक, सब्जी, तरकारी भाजी।
साकट-(हिं० पु०) देखो शाक्ति, शाक्त मत का अनुयायी जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो, दुष्ट, पाजी।
साकर-(हिं० स्त्री०) देखो साँकल।
साकल्य-(सं० नपुं०) समुदाय।
साका-(हिं० पु०) सम्वत्, शाखा, प्रसिद्धि, यश कीर्ति, कीर्ति का स्मारक, धाक, रोब, अवसर, वह बड़ा काम जो कर्ता का यश दिखलाता हो, साका चलाना-धाक जमाना।
साकाङ्क्ष-(सं०वि०) लोभी, इच्छुक।
साकार-(सं०वि०) मूर्तिमान्, साक्षात्, स्थूल, (पु०) ईश्वर का आकार सहित रूप।
साकारोपासना-(सं० स्त्री०) ईश्वर की मूर्ति बनाकर उसकी उपासना करना।
साकिन-(अ०वि०) निवासी, रहने वाला।
साकी-(हिं० पु०) कपूरकचरी।
साकी-(अ०पु०) शराब पिलाने वाला, वह जिसके साथ प्रेम किया जाय, माशूक
साकूत-(सं०वि०) अभिप्राय सहित।
साकेत-(सं० नपुं०) अयोध्या नगरी। साकेतक-अयोध्या में रहने वाला साकेतन-अयोध्या नगरी।
साक्षत-(सं०वि०) अक्षत सहित।
साक्षर-(सं०पु०) विद्वान्, जो लिखना पढ़ना जानता हो।
साक्षात्-(सं० अव्य०) प्रत्यक्ष, सम्मुख, स्वयं, तुल्य, सदृश (पु०) भेंट, मुलाकात।
साक्षात्करण-(सं०नपुं०) प्रत्यक्ष करना।
साक्षात्कार-(सं०पु०) भेंट, मुलाकात, पदार्थों का वह ज्ञान जो इन्द्रियों द्वारा होता है।
साक्षात्कारी-(सं०वि०) भेंट मुलाकात कराने वाला।
साक्षिता-(सं० स्त्री०) साक्षित्व, गवाही।
साक्षी-(सं० पु०) वह जिसने किसी घटना को अपनी आखों से देखा हो, दर्शक, देखने वाला, (स्त्री०) गवाही, साखी, शहादत।
साक्ष्य-(सं० नपुं०) साक्षी का काम, गवाही।
साख-(हिं०पु०) गवाह, गवाही, प्रमाण, शहादत, मर्यादा, धाक, रोब, प्रामाणिकता, लेनदेन का खरापन।
साखना-(हिं०क्रि०) गवाही देना।
साखर-(हिं०वि०) देखो साक्षर।
साखा-(हिं०स्त्री०) देखो शाखा।
साखी-(हिं० पु०) साक्षी, गवाह (स्त्री०) गवाही, ज्ञान सम्बन्धी कविता या पद, (पु०) वृक्ष, पेड़, साखी पुकारना-गवाही देना।
साखू-(हिं०पु०) शालवृक्ष, सखुआ।
साखोचारन-(हिं०पु०) विवाह के समय वर तथा वधू के वंश गोत्र आदि का उच्चारण करना, गोत्रोच्चारण।
साखोट-(हिं० पु०) सिहोर वृक्ष।
साख्य-(सं०नपुं०) सखित्व, बन्धुत्व।
साग-(हिं० पु०) शाक, भाजी, तरकारी, सागपात-सूखा भोजन।
सागर-(सं० पु०) उदधि, समुद्र, बड़ा तालाब जलाशय, सगर के एक पुत्र का नाम।
सागरगामिनी-(सं०स्त्री०) नदी।
सागरधरा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
सागरवासी-(सं० वि०) समुद्र में रहने वाला।
सागरनेमि-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
सागरपर्यन्त-(सं०वि०) समुद्र तक।
सागरमेखला-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
सागराम्बरा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी।
सागरोदक-(सं०नपुं०) समुद्र का जल।
सागरालय-(सं० पु०) वरुण।
सागू-(हिं० पु०) ताड़ की जाति का एक प्रकार का वृक्ष।
सागूदाना-(हिं० पु०) सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा।
सागौन-(हिं०पु०) देखो शाल।
साग्नि-(सं० वि०) अग्नि के सहित, अग्नि युक्त।
साग्निक-(सं० वि०) सर्वदा अग्निहोत्र करने वाला।
साग्र-(सं०वि०) अग्र युक्त, समस्त, कुल।
साग्रह-(सं० वि०) आग्रह सहित।
साङ्कर्य-(सं० नपुं०) मिश्रण, मिलावट।
साङ्कल्पिक-(सं०वि०) सङ्कल्प सम्बन्धी।
साङ्केतिक-(सं०वि०) सङ्केत सम्बन्धी।
साङ्क्रामिक-(सं० वि०) जो शीघ्र सङ्क्रमण करे।
साङ्क्षेपिक-(सं०वि०) सङ्क्षिप्त।
साङ्ख्य-(सं०नपुं०पु०) महर्षि कपिल कृत दर्शन जो प्रकृति को ही संसार का मूल मानता है और जिसका मत है कि सत्व, रज और तम के योग से सृष्टि का विकास हुआ है।
साङ्ख्ययोग-(सं० पु०) ज्ञान योग, ब्रह्मविद्या।
साङ्ग-(सं० वि०) अंग युक्त, सम्पूर्ण।
साङ्गोपाङ्ग-(सं० अव्य०) अंगों और उपांगो सहित।
साङ्घाटिका-(सं० स्त्री०) स्त्री प्रसङ्ग, मैथुन, कुटनी, दूती।
साङ्घात-(सं०नपुं०) समूह, दल।
साचक-(तु० स्त्री०) मुसलमानों में विवाह की एक रस्म।
साचार-(सं०वि०) आचार युक्त।
साचरी-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
साचिव्य-(सं०नपुं०) सहायता, मदद।
साचोकुम्हड़ा-(हिं० पु०) सफेद कोंहड़ा, पेठा।

साचीकृत-(सं० वि०) इकट्ठा किया हुआ।
साज-(सं० पु०) पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र।
साज-(फा० पु०) सजावट का काम, ठाट बाट, तैयारी, वे चीजें जिनकी सहायता से सजावट की जाती है, सजावट का सामान, लड़ाई के हथियार, घनिष्ठता, मेलजोल, बाजा, गल्लता बनाने का बढ़इयों का रन्दा, (वि०) काम करने वाला, बनाने वाला।
साजगिरी-(हिं० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
साजन-(हिं० पु०) स्वामी, पति, प्रेमी, ईश्वर, भद्र पुरुष, सज्जन।
साजना-(हिं० क्रि०) सजावट करना।
साजबाज-(हिं० पु०) घनिष्ठता, मेल जोल, तय्यारी।
साजर-(हिं० पु०) गुलू नामक वृक्ष।
साज सामान-(फा० पु०) उपकरण, सामग्री, असबाब।
साजिन्दा-(फा० पु०) साज या बाजा बजाने वाला, सरदाई, समाजी।
साजिश-(फा० स्त्री०) किसी के विरुद्ध कोई काम करने में मददगार होना, मेल, मिलाप।
साजुज्य-(हिं० पु०) देखो सायुज्य।
साझा-(हिं० पु०) हिस्सा, बाँट, हिस्से दारी, शराकत।
साझी-(हिं० पु०) हिस्सेदार, साझेदार।
साझेदार-(हिं० पु०) हिस्सेदार, साझी।
साझेदारी-(हिं० स्त्री०) हिस्सेदारी, शराकत।
साञ्जन-(सं० पु०) कृकलास, गिरगिट।
साटक-(हिं० पु०) छिलका, भूसी, तुच्छ पदार्थ, एक प्रकार का छन्द।
साटन-(हिं० पु०) एक प्रकार का बढ़िया एकरुखा रेशमी कपड़ा जो कई रङ्गों का होता है।
साटना-(हिं० क्रि०) दो वस्तुओं का परस्पर मिलना, जोड़ना, सटाना।
साठ-(हिं० वि०) पचास और दस संख्या का (पु०) पचास और दस की संख्या ६०
साठनाठ-(हिं० वि०) जिसकी सम्पत्ति नष्ट हो गई हो, निर्धन, दरिद्र, तितर बितर।
साठसाती-(हिं० स्त्री०) देखो साढ़ेसाती।
साठा-(हिं० पु०) ईख, गन्ना, एक प्रकार की मधुमक्खी, (वि०) साठ वर्ष के वय का।
साठी-(हिं० पु०) एक प्रकार का धान।
साड़ा-(हिं० पु०) घोड़ों का एक प्राण-घातक रोग।
साड़ी-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के पहरने की किनारदार धोती।
साढ़साती-(हिं० स्त्री०) देखो साढ़ेसाती।
साढ़ी-(हिं० स्त्री०) देखो असाढ़ी, दूध के ऊपर जमने वाली मलाई, साल वृक्ष की गोंद।
साढू-(हिं० पु०) साली का पति।
साढ़ेसाती-(हिं० स्त्री०) शनि ग्रह की साढ़ेसात वर्ष, साढ़ेसात महीने या साढ़ेसात दिन की दशा जो अशुभ मानी जाती है।
साण्ड-(सं० वि०) अण्ड सहित।
सात-(हिं० वि०) पाँच और दो की संख्या का, (पु०) पाँच और दो की संख्या ७, सात पांच-धूर्तता, चालाकी सात समुद्र पार-बहुत दूर।
सातपूती-(सं० स्त्री०) सतपुतिया नामक तरकारी।
सात फेरी-(हिं० स्त्री०) विवाह के समय वर वधू का अग्नि का सात फेरा करना।
सातला-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का थूहर जिसका दूध पीले रंग का होता है।
सातवाहन-(सं० पु०) राजा शालिवाहन।
सातिशय-(सं० वि०) अतिशय युक्त।
साती-(हिं० स्त्री०) साँप काटने की एक प्रकार की चिकित्सा।
सात्मक-(सं० वि०) आत्मा के सहित।
सात्म्य-(सं० पु०) सरूपता, सारूप्य।
सात्यकि-(सं० पु०) महाभारत के युद्ध में पाण्डवों का पक्ष लेने वाले एक यादव जो श्रीकृष्ण के सारथी थे।
सात्वत-(सं० पु०) बलराम, श्रीकृष्ण, विष्णु, यदुवंशी, एक वर्णसंकर जाति।
सात्वती-(सं० स्त्री०) शिशुपाल की माता, सुभद्रा, सात्वती वृत्ति-साहित्य के अनुसार वह वृत्ति जिसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शान्त रसों में होता है।
सात्विक-(सं० पु० ब्रह्मा, विष्णु, वह भाव जिसमें सत्व गुण प्रबल हो, इस भाव के उपस्थित होने पर स्वेद, स्तम्भ, रोमाञ्च, स्वरभंग, वेपथु वैवर्ण, अश्रुपात और मूर्छा के लक्षण देख पड़ते हैं (वि०) सत्वगुण युक्त।
सात्विकी-(सं० स्त्री०) दुर्गा जप यज्ञ तथा निरामिष नैवेद्य द्वारा जो पूजा की जाती है।
साथ-(हिं० पु०) मिल कर या संग रहने का भाव, सहचार घनिष्ठता, मेलमिलाप (अव्य०) सहित, प्रति, से, विरुद्ध भाव से (पु०) सहचर, साथी, सर्वदा पास रहने वाला, साथही-अतिरिक्त सिवाय।
साथसाथ-एकसाथ, एकसाथ-(हिं० पु०) एक क्रम या सिलसिले में।
साथरा-(हिं० पु०) बिस्तर, बिछौना, चटाई।
साथी-(सं० पुं०) साथ रहने वाला, मित्र, दोस्त।
साद-(सं० पु०) स्मरण, गति, विषाद, क्षीणता, नाश, हिंसा, अभिलाषा, इच्छा।
सादगी-(फा० स्त्री०) सादापन, सीधापन।
सादन-(सं० नपु०) उच्छेदन विनाश।
सादर-(सं० वि०) आदर सहित।
सादा-(फा० वि०) सामान्य आकृति का, जिसके ऊपर कुछ अंकित न हो, बिना रंग का, सफेद, बिना मिलावट का, खालिस, सरल हृदय, सीधा, बिना आडंबर या अभिमान का।
सादापन-(फा० पु०) सरलता, सादगी।
सादित-(सं० वि०) विध्वस्त, छिन्न भिन्न।
सदी-(फा० स्त्री०) लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया, वह पूरी जिसमें पीठी आदि न भरी हो (हिं० पु०) देखो शादी।
सादूर-(हिं० स्त्री०) शार्दूल, सिंह।
सादृश्य-(सं० नपु०) एकरूपता, समानता समान धर्म, बराबरी।

साध-(हिं० स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा, कामना, गर्भ के सातवें महीने में होने वाला एक उत्सव जिसमें गर्भिणी को उसके सबंधी फल मिठाई आदि देतेहैं, (पु०) उत्तर पश्चिम भारत का एक धर्म सम्प्रदाय, सज्जन, साधु, महात्मा, (वि०) उत्तम, अच्छा।

साधक-(स० पु०) योगी, तपस्वी साधन करने वाला, कारण, दूसरे के स्वार्थ साधन में सहायक।

साधन-(स० नपु०) कार्य को सपादित करने की क्रिया, हेतु, कारण, विधान, मृत सस्कार, गति, धन, उपकरण सामग्री, अनुगमन, सैन्य, उपाय, सिद्धि प्रमाण, युक्ति, उपासना, शुद्धि,साधना, मन्त्र सिद्ध करण।

साधनता-(स० स्त्री०) साधन करने की क्रिया।

साधनवत्-(स० वि०) साधन युक्त।

साधनहार-(स०वि०) साधने वाला।

साधना-(हिं० क्रि०) कोई कार्य सिद्ध करना, पूरा करना,सच्चा प्रमाणित करना, पक्का करना, ठहराना,नापना, पैमाइश करना, मन्त्र सिद्धि के लिये उपासना करना, शुद्ध करना, वश में करना।

साधनार्ह-(स०वि०) साधना करने योग्य

साधनी-(हि० स्त्री०) राजगीर का भूमि चौरस करने का एक औज़ार।

साधनीय-(स०वि०) साधना करने योग्य जो साधा जा सके।

साधन्त-(स०पुं०) भिक्षुक, भिखमगा।

साधयितव्य-(स०वि०) साधने योग्य।

साधयिता-(स०स्त्री०) साधने वाला।

साधर्म्य-(सं० नपु०) समान धर्मता, एक धर्मता।

साधर-(स० वि०) आधार युक्त।

साधरण-(स० वि०) समान, तुल्य, सामान्य, सदृश, जिसमें कोई विशेषता न हो, सहज, सार्वजनिक।

साधारणत-(स० अव्य०) सामान्य रूप से, बहुधा, प्रायः।

साधारण धर्म-(स०पु०) सामान्य धर्म यथा-आहार, निद्रा, भय और मैथुन।

साधारण स्त्री-(स० स्त्री०) वेश्या, रडी।

साधिका-(स०स्त्री०) साधन करनेवाली गहरी नींद।

साधित-(स० वि०) सिद्ध किया हुआ, साधा हुआ, शोधित, शुद्ध किया हुआ, दण्ड दिया हुआ, नाश किया हुआ।

साधिमन्-(स० पु०) अति सज्जन।

साधु-(स० पु०) उत्तम कुल में उत्पन्न मुनि, सज्जन, धार्मिक, (वि०) समर्थ, योग्य, निपुण, उचित, उत्तम, अच्छा, प्रशसनीय, सच्चा,साधु साधु कहना-प्रशसा करना, शाबशी देना।

साधुक-(स०पु०) कदम्ब का वृक्ष।

साधुकर्म-(स० नपु०) अच्छा काम।

साधुजात-(स० वि०) उज्वल, साफ।

साधुता-(स० स्त्री०) सज्जनता, भलमनसी, भलाई, सीधापन।

साधुदर्शी-(स० वि०) अच्छी तरह से देखने वाला।

साधुदायी-(स० वि०) उत्तम वस्तु का दान करने वाला।

साधुधी-(सं० स्त्री०) अच्छी बुद्धि।

साधुपुष्प-(स० नपु०) उत्तम फूल।

साधुषवन-(स० पुं०) साधुओं के रहने की कुटी।

साधुभाव-(स० पु०) साधुता, सज्जनता।

साधुमती-(स० स्त्री०) तान्त्रिकों की एक देवी का नाम।

साधुमात्रा-(स०स्त्री०) उपयुक्त परिमाण

साधुवाद-(स० पु०) प्रशसावाद।

साधुवादी-(स०वि०)सच बोलने वाला।

साधुवृत्त-(स०वि०) अच्छे चरित्र वाला।

साधुवृत्ति-(स०स्त्री०) उत्तम जीविका।

साधुसाधु-(स० अव्य०) धन्य धन्य, वाह वाह।

साधू-(हिं० पु०) धार्मिक पुरुष, सन्त, सज्जन, भद्र पुरुष, सीधा आदमी।

साधो-(हि० पु०) सन्त, साधू।

साध्य-(स० पु०) गण देवता जो सख्या में बारह हैं इनके नाम-मनः, मन्ता, प्राण, नर, अपान, वीर्यमान् विनिर्मय, नय, दस, नारायण, वृष और प्रमुञ्च हैं, ज्योतिष के अनुसार एक योग का नाम, (वि०) साधन करने योग्य, सरल,,सहज, प्रतिपाद्य,जिसकी अनुमति हो (पु०) न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय सामर्थ्य, शक्ति।

साध्यता-(सं० स्त्री०) साध्य का भाव या धर्म।

साध्यवसानिका-(स० स्त्री०) साहित्य में लक्षणा का एक भेद।

साध्यसम-(स० पु०) न्याय में वह हेतु जो साध्य की तरह साधनीय होता है।

साध्वस-(स० नपु०) भय, त्रास, व्याकुलता।

साध्वी-(स० स्त्री०) पतिव्रता स्त्री, शुद्ध चरित्र वाली स्त्री, सच्चरित्रा।

सान-(हिं० पु०) अस्त्रादि की धार तेज़ करने का पत्थर का चाक, शाण, कुरण्ड, सान धरना-सान पर हथियार तेज़ करना।

सानना-(हि० क्रि०) सम्मिलित करना, मिलना, मिलाना, लपेटना, गूधना, दो वस्तुओं को परस्पर मिलाना।

सानन्द-(स० वि०) आनन्द सहित, आह्लाद युक्त।

सानी-(हि०स्त्री०) वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जाता है, एक में एक मिले हुए खाद्य पदार्थ

सानी-(अ० वि०) द्वितीय, दूसरा-बराबरी का।

सानु-(स० पु०) सूर्य, पत्ता, समतल भूमि, पर्वत का शिखर, वन, जगल, गिरितट, मार्ग, रास्ता।

सानेयी-(सं० स्त्री०) वशी, मुरली।

सान्तर-(स०वि०) विरल,सछिद्र,गर्तयुक्त

सान्तनिक-(स०वि०) सन्तान सबधी।

सान्त्वन-(स०नपु०) आश्वासन, ढाढस, प्रणय, प्रेम, सन्धि, मेल।

सान्त्वना-(स०स्त्री०) देखो सान्त्वन।

सान्द्र-(सं० वि०) स्निग्ध, चिकना, सुन्दर।

सान्द्रपद्-(स०नपु०) एक छन्द जिसके प्रति चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।

सान्द्रपुष्प (स० पुं०) बहेड़ा।

सान्ध्य-(स० वि०) सन्ध्या काल में करने योग्य।

सान्निध्य-(स०नपु०)सामीप्य समीपता।

सान्वय-(सं०वि०) अन्वय सहित।

साप-(हिं०पु०) शाप।

सापत्न्य-(सं० नपुं०) सपत्नीभाव, सौतपन, (पु०) शत्रु, सौत का लड़का।

सापत्य-(स०वि०) सन्तान युक्त।

सापमान-(स०वि०) अपमान सहित।

सापना-(हिं०क्रि०)शाप देना, कोसना, गाली देना।

सापराध-(सं०वि०) अपराध सहित।

साफ-(अ० वि०) स्वच्छ, निर्मल, दोष रहित, शुद्ध, खालिस, बिना फेरबट का, स्पष्ट, सफेद, छल रहित, निष्कपट, बाधा रहित, चमकीला, सादा, कोरा, बेऐब, समतल, सादा, कोरा (क्रि०वि०) बिना किसी प्रकार के कलंक के, नितान्त, बिल्कुल, साफ करना-हत्या करना, मार डालना।

साफल्य-(स० नपु०) सिद्धि, लाभ, सफलता।

साफा-(अ० पु०) सिर पर बांधने की पगड़ी, मुरेठा, नित्य के पहरने ओढ़ने के वस्त्रों को साबुन लगाकर साफ करना, कपड़े धोना।

साफी-(अ० स्त्री०) हाथ में रखने का रुमाल कपड़े का टुकड़ा जो गांजा पीने वाले चिलम के नीचे रखते हैं, भाग छानने का कपड़ा, बढ़ई का एक प्रकार का रन्दा जो लकड़ी को बिलकुल साफ कर देता है।

साबन-(हिं०पु०) देखो साबुन।

साबर-(हिं०पु०) साभर मृग का चमड़ा जो बहुत मुलायम होता है, थूहर का पौधा; मिट्टी खोदने का एक औजार।

साबल-(हिं०पु०) बरछी, भाला।

साबस-(हिं०पु०) देखो शाबास,वाहवाही देने की क्रिया(अव्य०)धन्य धन्य,वाहवाह।

साबिक्-(अ० वि०) पुराने समय का, पहले का,साबिक दस्तूर-जैसा हमेशा से होता चला आया है।

साबिका-(अ०पु०) सम्बन्ध, सरोकार, जानपहचान।

साबित-(फ़ा० वि०) प्रमाणित, सिद्ध, जिसका सबूत दिया गया हो, (वि०) दुरुस्त, ठीक।

साबुत-(फ़ा० वि०) सम्पूर्ण, दुरुस्त, निश्चल, स्थिर।

साबुन-(अ०पु०) कास्टिकसोडा और तेल या चर्बी को पकाकर बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जो शरीर वस्त्रादि की मैल साफ करने के उपयोग में लाया जाता है।

साबूदाना-(हिं०पु०)देखो सागूदाना।

साभ्राज्ञिका-(स० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द।

साम-(स० नपु०) वेदों के मन्त्र जो यज्ञ में गाकर पढ़े जाते हैं, सामवेद, मधुर भाषण, शत्रु को मीठी मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने की विधि, (हिं०पु०) देखो स्याम, शाम।

सामग-(स० पु०)सामवेदी ब्राह्मण विष्णु।

सामग्री-(स०स्त्री०) किसी विशेष कार्य में उपयोग आने वाले पदार्थ, सामान, असबाब जरूरी चीज़, साधन।

सामग्र्य-(स० नपु०) अस्त्र शस्त्र, हथियार, भण्डार।

सामञ्जस्य-(स० नपु०) अनुकूलता, उपयुक्तता।

सामना-(हिं० पु०) भेंट, मुलाकात, किसी वस्तु का अगला भाग, विरोध, मुकाबिला, सामने होना-स्त्रियों का परदा न करना;सामना करना-मुकाबला करना, धृष्टता पूर्वक उत्तर देना।

सामनी-(स०स्त्री०) पशुओं को बांधने की रस्सी।

सामने-(हिं०क्रि० वि०) सन्मुख, आगे, उपस्थिति में, सीधे,विरुद्ध, मुकाबले में।

सामन्त-(स०पु०) किसी राज्य का कोई बड़ा सरदार, श्रेष्ठ राजा, वीर, योद्धा, समीपता।

सामन्त सारङ्ग-(स०पु०) एक प्रकार का सारङ्ग राग।

सामन्ती-(स० स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी।

सामयिक-(सं० वि०) समयोचित, समय के अनुसार, समय सम्बन्धी, वर्तमान समय का।

सामरथ-(हिं०स्त्री०) देखो सामर्थ्य।

सामराधिप-(स० पु०) सेनापति।

सामरिक-(स०वि०) समर सम्बन्धी।

सामरिक पोत-(स०पु०) जंगी जहाज़।

सामर्थी-(हिं०पु०) सामर्थ्य रखने वाला, बलवान्, पराक्रमी।

सामर्थ्य-(स० नपु०) शक्ति, बल, योग्यता, किसी कार्य के सम्पादन करने की शक्ति, शब्द की व्यञ्जना शक्ति अर्थात् वह शक्ति जिससे वह भाव प्रगट करता है, व्याकरण में शब्दों का परस्पर सम्बन्ध।

सामवाद्-(स० पु०) प्रिय वचन, मीठी बोली।

सामवायिक-(स०पु०) मन्त्री, वज़ीर, (वि०) जिसमें नित्य सम्बन्ध हो, समूह सबन्धी।

सामवेद-(स०पु०) भारतीय आर्यों के चार वेदों में से तीसरा वेद।

सामवेदिक-(सं०पु०) सामवेदी ब्राह्मण।

सामसाली-(हिं० पु०) राजनीति के साम, दाम, दण्ड और भेद को जानने वाला, राजनीतिज्ञ।

सामहि-(हि०अव्य०) सन्मुख, सामने।

सामा-(हिं०पु०) देखो सावाँ, श्यामा।

सामाजिक-(स० वि०) समाज से सबध रखने वाला सभा से सम्बन्ध रखने वाला, रसज्ञ।

सामाजिक तन्त्र-(स० नपु०) समाज सम्बन्धी नियम।

सामाजिकता-(स० स्त्री०) लौकिकता।

सामाधान-(स०पु०) शमन करने की क्रिया, शान्ति।

सामान-(फा०पु०)उपकरण, सामग्री,माल

असबाब, औज़ार, प्रबंध, बन्दोबस्त ।

सामान्य-(सं०नपु०) समानता, सादृश्य, साधारण का कार्य, वह काव्यालङ्कार जिसमें साधारण धर्मबल से अनेक वस्तुओं का एकत्र सबन्ध वर्णन किया जाता है, वह गुण जो सामान्य रूप से किसी जाति की सब वस्तुओं में पाया जावे (वि०) जिसमें कोई विशेषता न हो, साधारण ।

सामान्यतः-(सं०अव्य०) साधारण रीति से

सामान्यतोदृष्ट-(सं० पु०) तर्क और न्याय शास्त्र के अनुसार अनुमान संबधी एक प्रकार की भूल, ऐसी भूल तब होती है जब ऐसे पदार्थों द्वारा अनुमान किया जाता है जो न कार्य हो और न करण ।

सामान्य भविष्यत्-(सं०पु०) व्याकरण में भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारत रूप से बतलाया जाता है ।

सामान्यभूत-(सं०पु०) भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकाल की विशेषता नहीं पाई जाती जैसे गया, उठा आदि ।

सामान्य लक्षण-(सं० स्त्री०) वह गुण जिसके अनुसार किसी एक सामान्य को देखकर तदनुसार उस जाति के सब पदार्थों का ज्ञान होता है ।

सामान्य वचन-(सं०नपु०) साधारण वाक्य ।

सामान्य वर्तमान-(सं०पु०) वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना वर्णन किया जाता है ।

सामान्य विधि-(सं० स्त्री०) साधारण आज्ञा या हुक्म यथा-चोरी मत करो, किसी को कष्ट मत दो आदि ।

सामान्या-(सं०स्त्री०) साधारण नायिका, वेश्या ।

सामासिक-(सं०वि०) समास से संबध रखने वाला ।

सामि-(सं०स्त्री०) निन्दा शिकायत ।

सामिग्री-(हिं०स्त्री०) देखो सामग्री ।

सामियाना-(हिं०पु०) देखो शामियाना ।

सामिल-(हिं०वि०) देखो शामिल ।

सामिष-(सं०वि०) मछली मास आदि के साथ ।

सामी-(हिं० पु०) देखो स्वामी, शामी ।

सामीची-(सं० स्त्री०) प्रार्थना, स्तुति ।

सामीप्य-(सं० नपु०) समीप होने का भाव, निकटता, समीपता ।

सामीर-(हिं० पु०) समीर, पवन ।

सामुझि-(हिं० स्त्री०) देखो समझ ।

सामुदायिक-(सं०वि०) समुदाय सम्बन्धी ।

सामुद्र-(सं० नपुं०) समुद्र से निकाला हुआ नमक, समुद्र फेन, शरीर के चिह्न, समुद्रगामी बनिया, (वि०) समुद्र सम्बन्धी ।

सामुद्रिक-(सं० वि०) समुद्र सबन्धी, (पु०) फलित ज्योतिष का वह विभाग जिसमें हाथ, पैर ललाट आदि स्थानों पर की रेखाओं से तथा शरीर के अन्य चिह्न देखकर मनुष्य का भूत भविष्य वर्तमान शुभाशुभ फल जाना जाता है ।

सामुहा-(हिं०पु०)आगेका भाग, सामन्त ।

सामुहें-(हिं० क्रि० वि०) सामने ।

सामूहिक-(सं० वि०) समूह सबन्धी ।

सामोद-(सं० वि०) आनन्द युक्त ।

सामोद्भव-(सं० पु०) हस्ती, हाथी ।

साम्प्रत-(सं०अव्य०) इस समय, अभी ।

साम्प्रतिक-(सं०वि०) वर्तमान कालका ।

साम्प्रदायिक-(सं०वि०) सप्रदाय सबन्धी ।

साम्ब-(सं०पु०) जाम्बवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

साम्बरी-(सं०स्त्री०) माया, जादूगरी ।

साम्य-(सं० नपु०) समता, तुल्यता, बराबरी ।

साम्यता-(सं० स्त्री०) तुल्यता ।

साम्यवाद-(सं० पु०) एक पाश्चात्य सामाजिक सिद्धान्त जिसके प्रचारक यह चाहते हैं कि सब लोगों के पास बराबर धन हो जावे, धनवान् और दरिद्र का भेद न रह जावे ।

साम्यावस्था-(सं०स्त्री०) समान अवस्था, वह अवस्था जिसमे सत्व रज और तम तीनों गुण बराबर हों ।

साम्राज्य-(सं०नपु०) वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों और जिसमें एक सम्राट् का शासन हो, अधिपत्य, पूर्ण अधिकार ।

साम्राज्यवाद-(सं०पु०) साम्राज्य को दिनदिन बढाते रहने का सिद्धान्त ।

साय-(सं० वि०) सन्ध्या सबधी (पु०) दिन का अन्तिम भाग, शाम ।

सायंकाल-(सं०पु०) सन्ध्या समय ।

सायकालीन-(सं०वि०) सन्ध्य समय का ।

सायगृह-सं०पु०) वह जो सध्या समय जहा पहुचता हो वहीं अपना घर बना लेता हो ।

सायंतन-(सं०वि०) सध्या के समय का ।

सायंस्-(अं०स्त्री०) विज्ञान शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें भौतिक तथा रासायनिक पदार्थों के विषय में विवेचन हो ।

सायं सन्ध्या-(सं०स्त्री०) वह उपासना जो सायकाल के समय की जाती है ।

सायक-(सं०पु०) बाण, तीर, तलवार, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं ।

सायण-(सं० पु०) ऋग्वेद के एक सुप्रसिद्ध भाष्यकार ।

सायत-(अं०स्त्री०) एक घटे या ढाई घड़ी का समय, दण्ड, पल, शुभ मुहूर्त ।

सायन-(सं०स्त्री०) सूर्य की एक गति, जिसमें अयन (ग्रह आदि) हों ।

सायब-(फा० पु०) स्वामी, मालिक ।

सायबान-(फा०पु०) घूप, वर्षा आदि से बचने के लिये लगाया हुआ घर के सामने का ओसारा, बरामदा ।

सायम्-(सं०अव्य०) सन्ध्या ।

सायप्रातर्-(सं०अव्य०) सुबह शाम ।

सायर-(हिं०पु०) सागर, समुद्र, ऊपरी भाग (अ० पु०) वह भूमि जिसकी आमदनी पर कर नहीं देना पड़ता, फुटकर ।

सायल-(अ० पु०) प्रश्नकर्ता, सवाल करने वाला, प्रार्थना करने वाला, मागने वाला, आकाक्षी, उम्मीदवार, अदालत

में किसी प्रकार की फरियाद करने वाला (हिं०पु०) एक प्रकार का धान।
साया-(फा०पु०) छाया, छाह, परछाँहीं, भूत प्रेत, परी आदि, प्रभाव, (हिं०पु०) घाघरे की तरह का एक पहरावा जिसको स्त्रिया पहनती हैं, एक प्रकार का छोटा लहगा।
सायाबन्दी-(फा०स्त्री०) मुसलमानो में विवाह के अवसर पर मण्डप बनाने की क्रिया।
सायास-(स०वि०) कष्ट सहित।
सायाह्न-(उ०पु०) दिन का अन्तिम तीन मुहूर्त।
सायुज्य-(स०नपु०) सादृश्य, अभेद, एकत्व, पाच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसमें मुक्त पुरुष ब्रह्म में लीन हो जाता है।
सारंगिया-(हिं०पु०)सारगी बजाने वाला।
सारंगी-(हि० स्त्री०) एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा।
सार-(स०नपु०) जल, पानी, धन दौलत, मक्खन, अमृत, जगल (पु०) बल, ताकत, अभिप्राय,निष्कर्ष, मज्जा, वायु, दवा, द्रव्य, अस्थि, कपूर, तलवार, काथ, काढा, मूग, अनार का पेड़, चिरौंजी का वृक्ष, परिणाम, फल, लकड़ी की हीर, जुआ खेलने का पासा, दूध की साढी, मलाई, वह अर्थालकार जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं का उत्कर्ष या अपकर्ष वर्णन किया रहता है, एक प्रकार का मातृक छन्द, स्वाद,गोशाला, बाड़ा, (वि०) उत्तम, दृढ, मजबूत।
सार-(हिं० पु०) पालन पोषण, रक्षा शय्या, पलग, पत्नी का भाई, साला।
सारखा-(हि० वि०) समान, सदृश।
सारगन्ध-(स० पु०) चन्दन।
सारङ्ग-(स०पु०) चातक पक्षी, हरिण, हाथी,कोयल,बाज पक्षी,छाता,राजहस, शम्भु, शिव, दीपक, बाण, तीर, जल, समुद्र, श्रीकृष्ण का एक नाम,लवा पक्षी, विष्णु का धनुष, सूर्य, भौंरा, घोड़ा, सह, रात्रि, मेघ, ज्योति, पृथ्वी, फूल, कपूर, चन्दन, शख, पद्म, चन्द्रमा, सुवर्ण, आभरण, कामदेव, महीन वस्त्र, केश, मोर, चितकबरा मृग, बिजली, सम्पूर्ण जाति का एक राग, पक्षी, हल, मेढक, आकाश, खजन पक्षी, मोती, नक्षत्र, हाथ, स्तन, कौवा, छप्पय छन्द का एक भेद, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बाईस अक्षर होते हैं, एक सुगन्धित द्रव्य, शोभा, भूमि, सर्प, स्त्री, नारी, दिन, खड्ग, कबूतर, एक प्रकार की मधुमक्खी, सारगी नामक वाद्य यन्त्र, (वि०) सुन्दर, सुहावना, रंगा हुआ।
सारङ्गचर-(स० पु०) काच, शीशा।
सारङ्गपाणि-(स० पु०) विष्णु।
सारङ्गलोचना-(स० स्त्री०) मृगनयनी।
सारङ्गा-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकड़ी की बनी होती है, एक रागिणी का नाम।
सारङ्गिक-(स०पु०) व्याध, चिड़ीमार, एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नव अक्षर होते हैं।
सारङ्गी-(स०स्त्री०) एक प्रसिद्ध बाजा।
सारजट्-(अ०पु०) पुलीस के सिपाहियों का जमादार जो विशेषतः गोरा होता है।
सार्टिफिकेट्-(अ० पु०) प्रशसापत्र, सनद।
सारण-(स०नपु०)अतीसार रोग, आँवला।
सारणिक-(स० पु०) पथिक, राहगीर, बटोही।
सारणी-(स०स्त्री०)प्रसारणी, छोटी नदी।
सारण्ड-(सं०पु०) साप का अडा।
सारतण्डुल-(स०पु०) चावल।
सारतरु-(स० पु०) केले का पौधा, खैर का वृक्ष।
सारता-(स०स्त्री०) सार का भाव या धर्म।
सारथि-(स० पु०) रथ हाँकने वाला, समुद्र।
सारद-(हि० स्त्री०) शारदा, सरस्वती, (वि०) शरद सम्बन्धी।
सारदा-(हि०स्त्री०) देखो शारदा।
सारदा सुन्दरी-(स० स्त्री०) दुर्गा।
सारदी-(हि०वि०) देखो शारदीय।
सारद्रुम-(स०पु०) खैर का पेड़।
सारदूल-(हि०पु०) देखो शार्दूल।
सारना-(हिं०क्रि०) पूर्ण करना, समाप्त करना, साधना, बनाना, देख रेख करना, सभालना, सुशोभित करना, सुन्दर बनाना, रक्षा करना, आँखों में अजन आदि लगाना।
सारनाथ-(हिं०पु०) बनारस से चार मील उत्तर पश्चिम में एक स्थान जहाँ पर शिव का एक मन्दिर है तथा एक बड़ा बौद्ध स्तूप है।
सारभाटा-(हिं० पुं०) समुद्र की वह बाढ जिसमें पानी पहले बढ कर समुद्र के किनारे से आगे चला जाता है और कुछ देर बाद पीछे लौटता है।
सारभाण्ड-(स० नपु०) व्यापार की बहुमूल्य वस्तु, खजाना।
सारभूत-(स० वि०) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।
सारमेय-(स० पुं०) कुक्कुर, कुत्ता, सरमा की सन्तान।
साररूप-(स०वि०) उत्तम रूप वाला।
सारल्य-(स० नपु०) सरल होने का भाव, सरलता।
सारवती-(स० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसमें तीन भगण और एक गुरु वर्ण होता है।
सारवर्जित-(स० वि०) जिसमें कोई सार या तत्व न हो।
सारवस्तु-(स०नपुं०) श्रेष्ठ वस्तु।
सारवाला-(हिं० पु०) एक प्रकार की जगली घास।
सारस-(स० नपु०) पद्म, कमल, झील का पानी, स्त्रियों का कटिभूषण,चन्द्रमा, हस, छप्पय का एक भेद, एक प्रसिद्ध सुन्दर बड़ा पक्षी।
सारसन-(स० नपु०) तलवार की पेटी, कमरबन्द।
सारसा-(अ० पु०) देखो सालसा।
सारसी-(स० स्त्री०) आर्या छन्द का एक भेद जिसमें पाच गुरु और अड़तालीस लघु मात्रायें होती हैं,

मादा सारस पक्षी।

सारसुता-(हिं०स्त्री०) यमुना।

सारसुती-(हिं० स्त्री०) देखो सरस्वती।

सारसैन्धव-(सं०पुं०) सेंधा नमक।

सारस्वत-(सं० पु०) दिल्ली के उत्तर पश्चिम का वह भाग जो सरस्वती नदी के तट पर है, इस देश के निवासी ब्राह्मण, एक प्रसिद्ध व्याकरण (वि०) सरस्वती सम्बन्धी।

साराश-(सं०पु०) सक्षेप, सार, खुलासा, तात्पर्य, मतलब, परिणाम, नतीजा, उपसहार, परिशिष्ट।

सारा-(सं० स्त्री०) थूहर, केला, दूब, (पु०) एक प्रकार का अलकार जिसमें एक वस्तु दूसरे से बढकर कही जाती है (हिं० पु०) साला (हिं० वि०) सम्पूर्ण, समूचा, पूरा।

सारावती-(सं० स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसको सारावली भी कहते हैं।

सारि-(सं०पु० स्त्री०) पासा या चौपड़ खेलने वाला, जुआ खेलने का पासा, गोटी।

सारिक-(सं० पु०) सारिका (स्त्री०) मैना पक्षी।

सारिखा-(हिं०वि०) सरीखा, तुल्य, समान

सारिणी-(सं० स्त्री०) सहदेवी, महाबला, दुरालभा, धमासा, लाल पुनर्नवा।

सारिवा-(सं० स्त्री०) अनन्तमूल नामक लता।

सारिष्ट-(सं०वि०)सबसे सुन्दर, सबसे श्रेष्ठ

सारी-(सं०स्त्री०) सारिका पक्षी, मैना।

सारु-(हिं०पुं०) देखो सार।

सारूप्य-(सं० नपु०) एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता का रूप प्राप्त कर लेता है,समान रूप होने का भाव, एकरूपता।

सारूप्यता-(सं०स्त्री०) सारूप्य का भाव या धर्म।

सारो-(हिं० पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।

सारोपा-(सं०स्त्री०)साहित्य में वह लक्षण जो उस स्थान पर होता है जहा एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर विशिष्ट अर्थ निकलता है।

सार्टिफ़िकेट्-देखो सार्टिफिकेट्।

सार्थ-(सं०पु०) बनियों का समूह, गरोह, झुंड (वि०) अर्थ सहित।

सार्थक-(सं०वि०) अर्थ युक्त, सफल, सिद्ध, उपकारी, गुणकारी।

सार्थकता-(सं०स्त्री०) सफलता।

सार्थपति-(सं०त्रि०) व्यापार करने वाला।

सार्थभृत्-(सं०पु०) वणिक्, बनिया।

सार्थवत्-(सं०वि०)अर्थ सहित, ठीक,ठीक

सार्थवाह-(सं०पु०) वणिक्, बनिया।

सार्थिक-(सं०वि०) सफल।

सार्थी-(हिं०पु०) देखो सारथी।

सार्द्र-(सं०वि०) आर्द्र, भीगा, गीला।

सार्दूल-(हिं०पु०) देखो शार्दूल,सिंह।

सार्ध-(सं० वि०) अर्ध युक्त, जिसमें पूरे के अतिरिक्त आधा भी मिला हो।

सार्व-(वि०) सबसे सम्बन्ध रखने वाला।

सार्वकर्मिक-(सं० वि०) कुल काम करने वाला।

सार्वकाल-(सं० वि०) सब समय में होने वाला।

सार्व कालिक-(सं० वि०) जो सब कालों में होता हो।

सार्वगुणिक-(सं०वि०) सकल गुण सबधी

सार्वजनिक(सं०वि०)सर्व साधारण सम्बन्धी

सार्वजनीन-(सं० वि०) सब लोगों से सबध रखने वाला।

सार्वजन्य-(सं०वि०) जिससे सब लोगों का हित हो।

सार्वत्रिक-(सं० वि०) सब स्थानों में होने वाला।

सार्वदेशिक-(सं० वि०) सम्पूर्ण देशों का

सार्वभौतिक-(सं० वि०) सब भूतों से सबध रखने वाला।

सार्वभौम- (सं०पु०) समस्त भूमि का राजा, चक्रवर्ती राजा।

सार्वराष्ट्रीय-(सं० वि०) अनेक राष्ट्रों से सबन्ध रखने वाला।

सार्वलौकिक-(सं०वि०) सर्वत्र प्रसिद्ध, सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला।

सार्ववर्णिक्-(सं० वि०) सब वर्णों से सम्बन्ध रखने वाला।

सार्वविद्य-(सं० वि०) सर्व विद्या युक्त

सार्ववैदिक-(सं० वि०) सब वेदों से सम्बन्ध रखने वाला।

सार्वसेनी-(सं०स्त्री०) भरत की कन्या का नाम।

साल-(सं०पुं०) एक प्रकार की मछली, प्राकार, परकोटा, राल, धूना एक प्रकार का बड़ा वृक्ष प्राचीर, दीवार, किला (हिं० पु०) शाल, छेद, सूराख, वह छेद जिसमें चूल बैठाई जाती है, घाव, दुःख, कष्ट (फा०पु०) वर्ष, बरस।

साल अमोनियां-(अ०पु०) नौसादर।

सालई-(हिं०स्त्री०) देखो सलई।

सालक-(हिं० वि०)सालने वाला, दुःख देने वाला।

सालगिरह-(फ़ा० स्त्री०) बरसगाठ, जन्म दिन।

सालग्राम-(हिं०पु०) देखो शालग्राम।

सालग्रामी-(हिं०स्त्री०) गण्डक नदी।

सालङ्क-(सं०पु०) सगीत के तीन प्रकार के रागों में से एक जो बिलकुल शुद्ध हो परन्तु जिसमें किसी राग का आभास जान पड़ता हो।

सालन-(हिं० पु०) मांस मछली या शाक भाजी की मसालेदार तरकारी।

सालना-(हिं० क्रि०) चुभाना, गड़ाना, छेद में बैठाना, पीड़ा देना, दुःख पहुँचाना।

सालनिर्यास-(सं०पु०) राल, धूना।

सालपर्णी-(हिं०स्त्री०) शालपर्णी, सरिवन

सालभाञ्जिका-(सं०स्त्री०)गुड़िया, पुतली

सालममिश्री-(हिं० स्त्री०) सुधामूली, एक पौधा जिसका कन्द कसेरू के समान होता है, इसका प्रयोग पुष्टिकर औषधियों में होता है।

सालरस-(सं० पु०) राल, धूना।

सालस-(अ० पु०) दो पक्षों के झगडे निबटाने वाला, पंच।

सालसा-(अ०पु०) खून साफ करने का एक प्रकार का काढा जो अनन्तमूल

आदि से बनता है।

सालसी–(अ० स्त्री०) दूसरों का झगड़ा निपटाना, पचायत।

साला–(हि० स्त्री०) शाला, गृह, घर (हि० पु०) पत्नी का भाई, एक प्रकार की गाली, मैना।

सालाना–(फ़ा० वि०) वार्षिक, प्रति वर्ष का।

सालिग्राम–(हिं० पु०) देखो शालिग्राम।

सालिबमिश्री–(अ०स्त्री०)देखो सालममिश्री

सालिम–(अ० पु०) जो कहीं से खण्डित न हो, पूर्ण, पूरा।

सालियाना–(फ़ा०वि०) देखो सालाना।

साली–(हि०स्त्री०) पत्नी की बहिन।

सालु–(हिं०पु०) ईर्ष्या, डाह, तकलीफ।

सालू–(हि० पु०) एक प्रकार की लाल रग की साड़ी जो मागलिक कार्यों में पहरी जाती है।

सालेय–(स० पु०) मधुरिका, सौंफ।

सालोक्य–(स० नपु०) एक लोक में वास, पाच प्रकार की मुक्ति में से एक, इसके मुक्त जीव भगवान् के साथ एक लोक में वास करता है।

साल्मली–(हिं० पु०) देखो शाल्मली।

सावॅकरन–(हि० पु०) सफेद रग का घोड़ा जिसके दोनो कान काले होतेहैं।

सावंत–(हि० पु०) देखो सामन्त, योद्धा, वीर।

साव–(हि०पु०) देखो साहु, बालक,पुत्र।

सावक–(हि० पु०) शावक, शिशु,बच्चा

सावकाश–(स०नपु०) अवकाश, छुट्टी, फ़ुरसत, अवसर, मौका (क्रि० वि०) सुविधे से।

सावचेत–(हिं० वि०) सावधान,सचेत।

सावचेती–(हिं०स्त्री०) सावधानी।

सावज–(हिं०पु०) एक प्रकार का जगली पशु जिसका शिकार किया जाता है।

सावत–(हिं० पु०) सौतों का परस्पर द्वेष, डाह।

सावधान–(स० वि०) सचेत, सतर्क, होशियार।

सावधानता–(स० स्त्री०) खबरदारी होशियारी।

सावधानी–(हि० स्त्री०) देखो सावधानता

सावधि–(स० वि०) अवधि युक्त।

सावन–(हि० पु०) श्रावण मास, असाढ और भादो के बीच का महीना, इस महीने में गाये जाने की एक प्रकार की गीत, एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का समय।

सावनी–(हिं० स्त्री०) देखो श्रावणी (वि०) सावन महीने का।

सावयव–(स० वि०) अवयव युक्त।

सावर–(स० पुं०) लोध, पाप, अपराध, (हिं० पु०) शिव कृत एक तन्त्र का नाम, एक प्रकार का लोहे का लबा औज़ार जिसका एक सिरा नुकीला और गुलमेख की तरह का होता है, एक प्रकार का हिरन।

सावर्ण–(स० पु०) आठवें मनु,सावर्णि मनु, (वि०) समान वर्ण का।

सावर्णि–(स० पु०) अष्टम मनु जो सूर्य के एक पुत्र थे, एक मन्वन्तर का नाम।

सावशेप–(स० वि०) अवशेष युक्त।

सावष्टम्भ–(स० पु०) वह मकान जिसके उत्तर तथा दक्षिण भाग में सड़क हो (वि०) दृढ, मज़बूत, स्वावलम्बी।

सावित्र–(स० पुं०) ब्राह्मण, शकर, वसु,, सूर्य, गर्भ, सूर्य के पुत्र, एक प्रकार का अस्त्र (नपु०) उपनयन सस्कार (वि०) सूर्य वशीय।

सावित्री–(स०स्त्री०) वेदमाता, गायत्री, उपनयन सस्कार, सोहागिन स्त्री, यमुना नदी, सरस्वती नदी, ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती, दक्ष की कन्या का नाम, राजा अश्वपति की कन्या जो सत्यवान् को व्याही थी।

सावित्रीसूत्र–(स०नपु०) यज्ञोपवीत।

साष्टाङ्ग–(स०वि०) आठो अंग सहित।

साष्टाङ्ग योग–(स० पु०) वह योग जिसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार, धारण, ध्यान और समाधि– ये आठो अग हो।

साष्टाङ्ग प्रणाम–(सं० नपु०) माथा, हाथ, पैर, आख, हृदय, जाघ, वचन और मन से पृथ्वी पर लेट कर प्रणाम करना।

सास–(हि०स्त्री०) पति या पत्नी की माता

सासण–(हि०पु०) देखोशासन।

सासनलेट–(हिं० पु०) एक प्रकार का जालीदार सफेद कपड़ा।

सासना–(हिं० स्त्री०) देखो शासन।

सासव–(स०वि०) मद्य युक्त।

सासरा–(हि० पु०) देखो ससुराल।

सासा–(हि० पु०) श्वास, सास सन्देह।

सासुर–(हिं० पु०) ससुर, ससुराल।

सास्ना–(स० स्त्री०) गौ का गलकम्बल।

साह–(हिं० पु०) साधु, सज्जन, भला आदमी, व्यापारी, साहूकार, धनी, महाजन, सेठ, लकड़ी या पत्थर का लबा टुकड़ा जो दरवाज़े के चौखट में दोनो ओर लगा रहता है, देखो शाह

साहचर्य–(स० नपु०) सहचर होने का भाव, सहगमन, सग, साथ।

साहनी–(हिं० स्त्री०) सेना, फ़ौज, साथी, सगी।

साहब–(अ० पु०) स्वामी, मालिक, परमेश्वर, मित्र, साथी, गोरी जाति का कोई व्यक्ति, फिरगी, एक सम्मान सूचक शब्द, महाशय।

साहबजादा–(फ़ा० पु०) भले आदमी का लड़का, पुत्र।

साहब सलामत–(अ० स्त्री०) अभिवादन, बदगी, सलाम।

साहबी–(अ० वि०) साहब सबधी (स्त्री०) प्रभुता, बड़प्पन।

साहस–(स०नपु०) बलपूर्वक कार्य करने की क्रिया, हिम्मत, द्वेष, अत्याचार, दण्ड, जुर्माना, क्रूरता, कोई बुरा कार्य, जबरदस्ती किसी का धन छीनना।

साहसिक–(स० पु०) साहस करने वाला, हिम्मतवर, झूठ बोलने वाला, चोर, ठग, रूक्ष वचन बोलने वाला, निर्भीक, निडर, हठी, परस्त्रीगामी।

साहसिकता–(स० स्त्री०) निर्भीकता।

साहसी–(सं० पुं०) जो साहस करता हो, हिम्मती।
साहस्र–(सं०वि०) सहस्र संबंधी, हजार का
साहस्रक–(सं०वि०) सहस्र संख्या युक्त।
साहा–(हिं०पु०) विवाह आदि के लिये शुभ लग्न, (हिं० पु०) साधु, राजा अधिपति।
साहाय्य–(सं० पु०) सहायता।
साहि–(हिं० पु०) शाह, बादशाह, राजा।
साहित्य–(सं० नपु०) एकत्र होना, मिलना, वाक्य, में पदों का एक प्रकार का सम्बन्ध जिसमें वे परस्पर अपेक्षित होते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया से होता है, लिपिबद्ध विचार या ज्ञान, गद्यपद्य के उन ग्रन्थों का समूह जिनमें लोकहित संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं, वे सब पुस्तकें जिनमें नैतिक सत्य तथा मानव भाव व्यापकता तथा बुद्धिमानी से प्रकट किये रहते हैं।
साहित्यिक–(सं० वि०) साहित्य संबंधी (पुं०) साहित्य सेवी मनुष्य।
साहिब, साहिबी–(हिं०) देखो साहब, साहबी।
साहियाँ–(हिं० पु०) देखो साईं।
साहिली–(अ० स्त्री०) एक प्रकार की बुलबुल।
साही–(हिं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध चौपाया जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं, यह नरम पत्ती, साग तरकारी और फल खाता है।
साहु–(हिं०पु०) सज्जन, महाजन, धनी, साहूकार, भद्र पुरुष।
साहुल–(फ़ा०पु०) दीवार की सीध नापने का एक यन्त्र।
साहू–(हिं०पु०) देखो साहु।
साहूकार–(हिं० पु०) बड़ा महाजन, कोठीवाल।
साहूकारी–(हिं०स्त्री०) रुपये का लेनदेन, महाजनी (वि०) साहूकार सम्बन्धी, (स्त्री०) साहूकारपन।
साहेब–(फ़ा०पु०) देखो साहब।
साहैं–(हिं०स्त्री०) बाह, भुजा (अव्य०) सन्मुख, सामने।
सिंकना–(हिं० क्रि०) आंच पर पकना, सेंका जाना।
सिंकोना–(अं०पु०) कुनैन का वृक्ष।
सिंगरफ़–(फ़ा०पु०) ईंगुर।
सिंगल–(हिं०पु०) देखो सिगनल।
सिंगा–(हिं०पु०) फूक कर बजाये जाने वाला एक प्रकार का बाजा, तुरही।
सिंगार–(हिं० पु०) शृङ्गार, सजावट, शोभा, शृङ्गार रस।
सिंगारदान–(हिं०पु०) वह छोटा बक्स जिसमें दर्पण कंघी आदि शृङ्गार की सामग्री रक्खी जाती है।
सिंगारना–(हिं०क्रि०) सवारना, सजाना।
सिंगारमेज़–(फ़ा० स्त्री०) वह मेज़ जिस पर दर्पण लगा रहता है।
सिंगारहाट–(हिं० पु०) वेश्याओं के रहने की बाज़ार।
सिंगारहार–(हिं० पु०) हरसिंगार, परजाते का फूल।
सिंगारिया–(हिं०वि०) किसी देवमूर्ति का शृङ्गार करने वाला पुजारी।
सिंगारी–(हिं०पुं०) शृङ्गार करने वाला, सजाने वाला।
सिंगाल–(हिं० पु०) एक प्रकार का पहाड़ी बकरा।
सिंगासन–(हिं०पु०) देखो सिंहासन।
सिंगिया–(हिं०पु०) हल्दी के प्रकार का एक पौधा जिसकी जड़ बड़ी विषैली होती है।
सिंगी–(हिं० पु०) सींग का बना हुआ फूक कर बजाने का बाजा, एक प्रकार की मछली, सींघ की नली जिससे देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूस कर निकालते हैं।
सिंगौटी–(हिं०स्त्री०) बैल की सींघ पर पहराने का आभूषण, सींघ का बना हुआ घोटना, वह छोटी पिटारी जिसमें स्त्रिया शृङ्गार की सामग्री रखती हैं।
सिंघ–(हिं०पु०) सिंह, शेर।
सिंघल, सिंघली–(हिं०) देखो सिंहल, सिंहली।
सिंघाड़ा–(हिं०पु०) पानी में फैलने वाली एक लता जिसका तिकोना फल मीठा होता है, सिंघाड़े के आकार का बेल बूटा, एक प्रकार की आतिशबाज़ी, समोसा नामक नमकीन पकवान।
सिंघासन–(हिं०पुं०) देखो सिंहासन।
सिंघिनी–(हिं०स्त्री०) देखो सिंहिनी।
सिंघिया–(हिं०पु०) देखो सिंगिया।
सिंघी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छोटी मछली, सोंठ।
सिंचेला–(हिं० पु०) शेर का बच्चा।
सिंचना–(हिं०क्रि०) सींचा जाना।
सिंचाई–(हिं० स्त्री०) पानी छिड़कने का काम, भूमि को जल से तर करने की क्रिया, सींचने का कर या मज़दूरी।
सिंचाना–(हिं०क्रि०) पानी छिड़काना, सींचने का काम कराना।
सिंजित–(हिं०स्त्री०) ध्वनि, शब्द, झनकार।
सिंदन–(हिं०पु०) देखो स्यन्दन।
सिंदुरी, सिंदुवार–(हिं०स्त्री०) वल्कल जाति का एक वृक्ष।
सिंदूरदान–(हिं० पु०) सिन्दूर रखने की लकड़ी की लबोतरी डिबिया।
सिंदूरिया–(हिं० वि०) सिंदूर के रंग का, खूब लाल, (स्त्री०) सिंदूरपुष्पी नाम का पौधा।
सिंदूरी–(हिं०वि०) सिंदूर के रंग का।
सिंदोरा–(हिं० पु०) लकड़ी की एक डिबिया जिसमें स्त्रियाँ सिंदूर रखती हैं।
सिंह–(सं०पु०) मृगेन्द्र, पशुराज, शेर, ज्योतिष में मेषादि बारह राशियों में से पाचवीं राशि, वीरता वाचक शब्द, छप्पय का एक भेद।
सिंहकेलि–(सं०पु०) सिंह का खेल।
सिंहकेशर–(सं० पु०) शेर के गरदन पर के बाल।
सिंहतुण्ड–(सं०पु०) सेंहुड़ का पेड़।
सिंहद्वार–(सं० नपुं०) महल आदि का सदर फाटक जहा पर सिंह की मूर्ति बनी हो।
सिंहध्वनि–(सं०पुं०) सिंहनाद।

सिंहनन्दन-(सं० पु०) संगीत में एक ताल का नाम ।
सिंहनाद-(सं० पुं०) शेर की गरज, वीरों की ललकार, शिव, महादेव, संगीत में एक ताल का नाम, एक वर्णवृत्त का नाम, जिसको नन्दिनी या कलहंस भी कहते हैं ।
सिंहनी-(सं० स्त्री०) सिंह की मादा, शेरनी, एक छन्द जिसके चारो पदों में क्रम से बारह, अठारह, बीस और बाईस मात्रायें होती हैं ।
सिंहपुच्छ-(सं०पु०) पिठवन ।
सिंहपौर-(हिं०पु०) सदर फाटक जिस पर सिंह की मूर्ति बनी हो ।
सिंहमुख-(सं० पु०) सिंह के समान मुख वाला ।
सिंहमुखी-सं० स्त्री०) बांस, थूहर ।
सिंहयाना, सिंहरथा-(सं०स्त्री०) दुर्गा ।
सिंहरव-(सं० पु०) शेर की गरज ।
सिंहल-(सं०पु०) भारत महासागर के एक छोटे द्वीप का प्राचीन नाम ।
सिंहलक-(सं०पु०) बढ़िया पीपल, रांगा ।
सिंहलद्वीप-(सं०पु०) सिंहल नाम का टापू जो भारत के दक्षिण में है ।
सिंहलद्वीपी-(सं० पु०) सिंहल द्वीप का निवासी ।
सिंहली-(हिं०वि०) सिंहल द्वीप का ।
सिंहलील-(सं०पु०) संगीत में एक ताल ।
सिंहवाहना, सिंहवाहिनी-(सं०स्त्री०) दुर्गा देवी ।
सिंहविक्रम-(सं०पु०) एक प्रकार का छन्द जिसमें पैंतालीस अक्षर होते हैं ।
सिंहविक्रीडित-(सं०नपु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं, संगीत में एक प्रकार का ताल, एक प्रकार की समाधि ।
सिंहविस्फूर्जित-(सं०नपु०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं ।
सिंहस्थ-(सं०वि०) एक पर्व जो वृहस्पति के सिंह राशि में होने पर होता है ।
सिंहस्था-(सं०स्त्री०) दुर्गा ।
सिंहाक्ष-(सं० वि०) सिंह के समान आँख वाला ।
सिंहाण-(सं० नपु०) नाक का मल, लोहे का मुरचा ।
सिंहावलोकन-(सं०पु०) सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना, आगे बढ़ने के पहिले पिछली बातों को संक्षेप में कहना, पद्य रचना की एक युक्ति जिसमें पिछले चरण के अन्त के कुछ शब्द या वाक्य को लेकर आगे का चरण आरंभ होता है ।
सिंहावलोकित-(सं०नपु०) न्याय का वह भेद जिसमें पास का विषय न देख कर दूर का विषय देखा जाता है ।
सिंहासन-(सं०स्त्री०) स्वर्णमय राजासन, राजाओं का श्रेष्ठ आसन, देवता को बैठाने की चौकी आदि ।
सिंहिका-(सं० स्त्री०) एक राक्षसी जो राहु की माता थी, यह राक्षसी दक्षिण समुद्र में रहती थी और उड़ने वाले जीवों की परछाहीं देखकर ही उनको खींचकर खा जाती थी ।
सिंहिकासूनु-(सं० पु०) राहु ।
सिंहिनी-(सं०स्त्री०) मादा सिंह, शेरनी ।
सिंही-(सं०स्त्री०) शेरनी, बैंगन अड़ूसा, सिंघा नाम का बाजा, आर्या छन्द का एक भेद ।
सिंहेश्वरी-(सं० स्त्री०) दुर्गा ।
सिंहोड़-(हिं०पु०) सेंहुड़, थूहर ।
सिंहोदरी-(सं० वि०) सिंह के समान पतली कमर वाली ।
सिंहोद्धता-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं ।
सिंहोन्नता-(सं०स्त्री०) एक छन्दका नाम
सिअरा-(हिं०पु०) छाया, परछाहीं ।
सिआना-(हिं० क्रि०) देखो सिलाना ।
सिआमंग-(हिं० पु०) सुमात्रा द्वीप में पाया जाने वाला एक प्रकार का बंदर ।
सिआर-(हिं० पुं०) श्रृगाल, सियार, गीदड़ ।
सिकंजवीन-(फ़ा० स्त्री०) सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शर्बत ।
सिकंजा-(हिं० पु०) देखो शिकंजा ।
सिकंदरा-(फा०पु०) रेल की लाइन के किनारे ऊंचे खंभे पर लगा हुआ हाथ या डंडा जो झुककर आती हुई गाड़ी की सूचना देता है, सिग्नल ।
सिकटा-(हिं०पु०) खपड़े या मिट्टी के टूटे हुए बरतनों का छोटा टुकड़ा ।
सिकड़ी-(हिं० स्त्री०) किवाड़ की कुंडी या सांकल, जंजीर, जंजीर के आकार का गले में पहरने का सोने का गहना, करधनी, तगड़ी ।
सिकता-(सं० स्त्री०) बलुई ज़मीन, बालू, रेत, पथरी, चीनी ।
सिकत्तर-(हिं० पु०) किसी संस्था या सभा का मन्त्री, सेक्रेटरी ।
सिकन्दर-महात्मा अलेग्ज़ान्डर का फारसी नाम ।
सिकरवार-(हिं० पु०) क्षत्रियों की एक शाखा ।
सिकरी-(हिं० स्त्री०) देखो सिकड़ी ।
सिकली-(हिं०स्त्री०) धारदार हथियारों को मांजने और उनपर सान चढ़ाने की क्रिया ।
सिकलीगर-(हिं० पु०) सिकली करने वाला कारीगर ।
सिकहर-(हिं० पु०) छींका ।
सिकहुली-(हिं०स्त्री०) कास या मूंज की बनी हुई छोटी डलिया ।
सिकार-(हिं० पु०) देखो शिकार ।
सिकारी-(हिं० वि०) देखो शिकारी ।
सिकुड़न-(हिं० स्त्री०) किसी वस्तु का सिमट कर थोड़े स्थान में होना, संकोच, शिकन, बल ।
सिकुड़ना-(हिं०क्रि०) सिमट कर थोड़े स्थान में होना, आकुंचित होना, संकीर्ण होना, शिकन या बल पड़ना ।
सिकुरना-(हिं० क्रि०) देखो सिकुड़ना ।
सिकोड़ना-(हिं०क्रि०) संकुचित करना, संकीर्ण करना, बटोरना समेटना ।
सिकोरना-(हिं०क्रि०) देखो सिकोड़ना ।
सिकोरा-(हिं० पुं०) देखो कसोरा ।
सिकोली-(हिं० स्त्री०)कास, मूंज, बेंत

आदि की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकोही-(हिं० वि०) गर्वीला, घमंडी, वीर, बहादुर।
सिक्कक-(सं० नपुं०) बांसुरी मे लगाने की जीभी।
सिक्कड़-(हिं०पुं०) देखो सीकड़।
सिक्कर-(हिं०पुं०) देखो सिक्कड़।
सिक्का-(अ०पुं०) मुद्रा, छाप, मुहर, रुपये पैसे आदि पर की राजकीय छाप, मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा, पदक, तमगा, टकसाल मे ढला हुआ धातु का टुकड़ा जो निर्दिष्ट मूल्य का धन माना जाता है, माल का वह दाम जिसमें दलाली शामिल न हो, सिक्का जमना-प्रभुत्व स्थापित होना।
सिक्की-(हिं० स्त्री०) छोटा सिक्का।
सिक्ख-(हिं०पुं०) देखो सिख।
सिक्त-(सं०वि०) सिंचित, सींचा हुआ, भीगा हुआ, तर।
सिक्ता-(सं० स्त्री०) सिकता, बालुका।
सिक्थ-(सं०पुं०) उबाले हुए चावल का दाना, भात का ग्रास।
सिखंड-(हिं० पुं०) देखो शिखण्ड।
सिख-(हिं० स्त्री०) शिक्षा, उपदेश, सीख, (पुं०) शिष्य, चेला, नानक पंथी सम्प्रदाय।
सिख इमली-(हिं०पुं०) भालूको नाचना सिखलाने की विधि।
सिखना-(हिं०क्रि०) देखो सीखना।
सिखर-(हिं०पुं०) देखो शिखर।
सिखरन-(हिं० स्त्री०) दही में चीनी मिलाकर बनाया हुआ शर्बत जिसमें केशर इलायची, मेवे आदि पड़े हों।
सिखलाना-(हिं०क्रि०) देखो सिखाना।
सिखा-(हिं०स्त्री०) देखो शिखा, चुटिया, चुंदी।
सिखाना-(हिं० क्रि०) उपदेश देना, शिक्षा देना पढ़ाना, बतलाना, धमकाना, दण्ड देना, सिखाना पढ़ाना-चतुर बनाने की शिक्षा देना।
सिखापन-(हिं० पुं०) उपदेश, शिक्षा, सीखने का काम।
सिखावन-(हिं०पुं०) उपदेश, शिक्षा।
सिखावना-(हिं०क्रि०) देखो सिखलाना।
सिखिर-(हिं० पुं०) देखो शिखर।
सिखी-(हिं०पुं०) देखो शिखी।
सिगनल-(अं० पुं०) देखो सिकन्दर।
सिगरा-(हिं०वि०) सम्पूर्ण, समग्र, सब।
सिगरेट-(अं० पुं०) तमाखू की महीन पत्ती भरी हुई कागज की बत्ती जिसका धुंआ लोग पीते हैं।
सिगार-(अं० पुं०) चुरुट।
सिगोन-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की रेतीली मिट्टी।
सिङ्घण-(सं० नपुं०) नाक का मल, नकटी।
सिचय-(सं०पुं०) वस्त्र,कपड़ा,जीर्ण वस्त्र।
सिचान-(हिं०पुं०) श्येन, बाज़ पक्षी।
सिच्छा (हिं०स्त्री०) देखो शिक्षा।
सिजदा-(अ० पुं०) प्रणाम, दण्डवत।
सिजल-(हिं०पुं०)जो देखने में सुन्दर हो
सिजादर-(हिं० पुं०) नाव आदि में पाल चढाने का रस्सा।
सिझना-(हिं०क्रि०) आंच पर पकना, सिझाया जाना।
सिझाना-(हिं०क्रि०) आंच पर पकाकर गलाना, रींधना, उबालना, तपस्या करना, तैयार करना।
सिञ्चन-(सं०नपुं०) सींचना, पानी से तर करना।
सिञ्चित-(सं०वि०) सींचा हुआ, जल से तर किया हुआ।
सिञ्चितिका-(सं० स्त्री०) सेव नामक प्रसिद्ध फल।
सिटकिनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पतली छड़ जो किवाड़ बन्द करने के लिये लगाई जाती है, चटखनी।
सिटपिटाना-(हिं० क्रि०) दब जाना, मन्द पड़ना, स्तब्ध होना, सकुचाना।
सिटी-(अं०स्त्री०) नगर, शहर।
सिट्टी-(हिं० स्त्री०) बहुत बढ़ बढ़ कर बोलना, सिट्टी भूलना-सिट पिटा जाना।
सिठनी-(हिं० स्त्री०) विवाह के समय गाई जाने वाली गाली।
सिठाई-(हिं०स्त्री०) फीकापन, नीरसता, मन्दता।
सिड़-(हिं०स्त्री०) उन्माद,पागलपन,सनक।
सिड़पन-(हिं०पुं०) पागलपन, सनक।
सिड़बिल्ला-(हिं०पुं०) पागल, झक्की।
सिड़ी-(हिं० वि०) पागल, दीवाना, सनकी, उन्मत्त।
सितबर-(अं० पुं०) अंग्रेज़ी साल का नवा महीना।
सित-(सं०नपुं०) चांदी, मूली, चन्दन, शुक्राचार्य, शुक्ल पक्ष, शक्कर, चीनी, तिल, भोजपत्र, (वि०) श्वेत, सफेद, उजाला, चमकीला, स्वच्छ, साफ।
सितकण्ठ-(सं० पुं०) महादेव, सफेद गरदन वाला।
सितकमल-(सं०नपुं०) सफेद कमल।
सितकर-(सं०पुं०) भीमसेनी कपूर।
सितकर्णी-(सं०स्त्री०) अडूसा।
सितकाच-(सं० पुं०) बिल्लौर।
सितकुञ्जर-(सं० पुं०) इन्द्र का हाथी, ऐरावत।
सितक्षार-(सं०पुं०) सफेद सोहागा।
सितगुञ्जा-(सं०स्त्री०) सफेद घुमची।
सितचन्दन-(सं० नपुं०) श्रीखण्ड चन्दन।
सितछत्रा-(सं०स्त्री०) सौंफ।
सितज-(सं० पुं०) मधुसे निकाली हुई शक्कर।
सितजा-(सं०स्त्री०) मधु खण्ड।
सितजीरक-(सं० नपुं०) सफेद जीरा।
सितता-(सं०स्त्री०) सफेदी।
सिततुरग-(सं०पुं०) अर्जुन।
सितदीधिति-(सं० पुं०) चन्द्रमा।
सितध्वज-(सं० पुं०) हंस।
सितधातु-(सं०पुं०) खड़िया मिट्टी।
सित पक्ष-(सं०पुं०) शुक्ल पक्ष, हंस।
सितपुष्प-(सं० नपुं०) सिरिस का वृक्ष।
सितपुष्पा-(सं०स्त्री०) चमेली का फूल।
सितप्रभ-(सं० पुं०) चांदी।
सितभानु-(सं० पुं०) चन्द्रमा।
सितम-(फ़ा० पुं०) अनर्थ, आफ़त,

अनीति, जुल्म।
सितमगर-(फा०पु०) अन्यायी,जालिम।
सितमणि-(स०पु०) स्फटिक, बिल्लौर।
सितमाष-(स०पु०) बोड़ा, लोबिया।
सितमेघ-(सं० पु०) सफेद बादल।
सितरक्ष-(स०नपु०) कर्पूर, कपूर।
सितरश्मि, सितरुचि-(स०पु०) चन्द्रमा
सितराग-(स०पुं०) चादी।
सितरुचि-(स०पु०) चन्द्रमा।
सितली-(स० स्त्री०) शिथिलता के समय होने वाला पसीना।
सितवराह-(स०पु०) श्वेत वराह।
सितवराहपत्नी-(स०स्त्री०) पृथ्वी, धरती
सितवाजी-(स०पु०) अर्जुन।
सितवारण-(सं० पुं०) सफेद हाथी।
सितशिव-(स० नपु०) सेंधा नमक, शमी का वृक्ष।
सितसागर-(स०पु०) क्षीर सागर।
सितसिन्धु-(स०स्त्री०) क्षीर समुद्र, गगा
सितांशु-(स०पु०) चन्द्रमा, कर्पूर कपूर
सिता-(स० स्त्री०) शर्करा, चीनी, चादी, गोरोचन, मल्लिका पुष्प, सफेद भटकटैया, सफेद दूब, शुक्ल पक्ष, चन्द्रिका, चादनी।
सिताखण्ड-(स०पु०) मिश्री।
सिताङ्ग-(स० पु०) केले का पौधा, एक प्रकार की मछली।
सिताज-(स०पु०) सफेद कमल।
सितानन-(स०पु०) गरुड़, बिल्व वृक्ष (वि०) सफ़ेद मुँह वाला।
सितापाङ्ग-(स०पु०) मयूर, मोर।
सिताव-(फा०क्रि०वि०) तुरत, फौरन, झटपट।
सिताभ-(स०पु०) कर्पूर, कपूर।
सिताभ्र-(स० पु०) सफेद मेघ, सफेद बादल।
सिताम्बर-(स० पु०) वह जो सफेद वस्त्र पहरता हो।
सिताम्भोज-(स० नपु०) सफेद कमल।
सितार-(हि० पु०) एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा जो इसमें लगे हुए तारों को उँगली से झनकारने से बजता है।
सितारबाज-(फा० पु०) सितार बजाने वाला।
सितारा-(फा०पुं०) तारा, नक्षत्र, प्रारब्ध, भाग्य, चादी या साने की बनी हुई छोटी टिकुली, चमकी, सितारा चमकना-भाग्य का उदय होना, खुश किस्मत होना, देखो सितार।
सितारिया-(फा०पु०) सितार बजानेवाला
सितारी-(फा०स्त्री०)छोटा सितार, तम्बूरा
सितारेहिन्द-(फा०पु०) एक उपाधि जो सरकार की ओर से सम्मानार्थ प्रदान की जाती है।
सितालर्क-(स०पु०) सफेद मदार।
सितालिका-(स०स्त्री०) ताल की सीप, सुतुही।
सितावर-(स०पु०) सुसना का साग।
सिताश्व-(स० पु०) चन्द्रमा, (वि०) सफेद घोडे वाला।
सितासित-(स० पु०) सफेद और काला, बलदेव।
सिताह्वय-(स०पु०) काले रग का धान।
सिति-(स० वि०) शुक्ल, उजला, कृष्ण, काला।
सितिकण्ठ-(स० पु०) नीलकण्ठ, शिव महादेव।
सितुई, सितुही-(हि०स्त्री०) सुतुही।
सितून-(फा०पुं०) स्तम्भ, खभा, मीनार।
सितेक्षु-(स०पु०) सफेद ईख।
सितेतर-(स०वि०) काला या नीला।
सितेतरगति-(स० पु०) अग्नि, आग।
सितोत्पल-(स० नपु०) सफेद कमल।
सितोदर-(स० पु०) कुबेर (वि०) सफेद पेट वाला।
सितोद्भव-(स०नपु०) सफेद चन्दन।
सितोपल-(स०नपु०) स्फटिक, बिल्लौर।
सितोपला-(सं० स्त्री०) शर्करा, चीनी, मिश्री।
सिथिल-(हिं०वि०) देखो शिथिल।
सिदरी-(फा०स्त्री०) तीन दरवाज़े का कमरा या बरामदा, तिन्दुआरी।
सिदामा-(हिं०पु०) देखो श्रीदामा।
सिदिका-(अ०वि०) सत्य, सच्चा।
सिद्ध-(स०पु०) एक प्रकार के देवता, जो भुवर्लोक में रहते हैं, अर्हत्, जिसने योग या तपोबल से सिद्धि पाई हो, महात्मा, ज्ञानी, ज्योतिष में एक योग का नाम, व्यवहार, मुकदमा, काला धतूरा, सफेद सरसो, (नपु०) सेंधा नमक (वि०) प्रसिद्ध, सम्पन्न, जिसका साधन हो गया हो, प्राप्त, सफल, अनुकूल किया हुआ, लक्ष्य पर पहुँचाया हुआ,निर्णीत,प्रस्तुत, तैयार, जिसका तप या योग साधन पूरा हो चुका हो मोक्ष का अधिकारी, जिसका मतलब पूरा हो, जो ठीक घटा हो करामाती, जो तर्क या प्रमाण द्वारा निश्चित हो, सघटित,शोधा हुआ, आच पर पकाया हुआ, उबाला हुआ,
सिद्धक-(स० वि०) सिद्ध करने वाला, काम पूरा करने वाला।
सिद्धकज्जल-(स० वि०) वह काजल जिसके लगाने से लोग वशीभूत होते हैं
सिद्धकारी-(स०वि०) धर्मशास्त्र के अनुसार आचरण करने वाला।
सिद्धकार्य-(स० वि०) जो कार्य सिद्धि किया गया हो।
सिद्धकाम-(स०वि०)कृतार्थ, सफल,
सिद्धक्षेत्र-(स०नपु०) सिद्धाश्रम।
सिद्धगगा-(सं० स्त्री०) मन्दाकिनी, आकाश गङ्गा।
सिद्धगति-(स०स्त्री०) जिन कर्मो के करने से मनुष्य सिद्ध होता हो।
सिद्धगुटिका-(स० स्त्री०) वह मन्त्रसिद्ध गोली जिसको मुख में रख लेने से अद्भुत शक्ति आ जाती है।
सिद्धगुरु-(स०पु०) वह गुरु जिसको मन्त्र सिद्धि हुई हो।
सिद्धजन-(स० पु०) सिद्ध मनुष्य।
सिद्धजल-(स०नपु०)पकाया हुआ जल।
सिद्धता-(स० स्त्री०) सिद्धि, पूर्णता, प्रमाणिकता।
सिद्धतापस-(स०पु०)वह तपस्वी जिसने सिद्धि प्राप्त किया हो।
सिद्धत्व-(स०नपु०) देखो सिद्धता।

सिद्धप्रदर्शन-(सं० नपुं०) सिद्ध पुरुष का साक्षात्कार।
सिद्धदेव-(सं०पुं०) महादेव।
सिद्धद्रव्य-(सं०नपुं०)पका हुआ द्रव्य।
सिद्धधातु-(सं० पुं०) पारद, प्यारा।
सिद्धधाम-(सं०नपुं०) सिद्ध स्थान।
सिद्धनाथ-(सं० पुं०) महादेव।
सिद्धपक्ष-(सं० पुं०) प्रमाणित बात।
सिद्धपथ-(सं०पुं०)आकाश,प्रसिद्ध मार्ग
सिद्धपात्र-(सं० पुं०) स्कन्द के एक अनुचर का नाम।
सिद्धपीठ-(सं० पुं०) वह स्थान जहाँ पर प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।
सिद्धपुष्प-(सं०पुं०) कनेर का फूल।
सिद्धप्रयोजन-(सं०पुं०) सफेद सरसों
सिद्धभूमि-(सं० स्त्री०) सिद्ध स्थान।
सिद्धमत-(सं०नपुं०) सिद्धों का मत।
सिद्धमन्त्र-(सं०पुं०)वह मन्त्र जो सिद्ध हो चुका हो।
सिद्धमातृका-(सं०स्त्री०) देवी का नाम
सिद्धमानस-(सं० त्रि०) जिसकी अभिलाषा सिद्ध हुई हो।
सिद्धयोगी-(सं०स्त्री०) शिव, महादेव।
सिद्धरस-(सं०पुं०) पारद, पारा।
सिद्धरसायन-(सं०पुं०) दीर्घ जीवन और प्रभूत शक्ति देने वाली औषधि।
सिद्धलक्ष-(सं०त्रि०) जिसका निशाना कभी न चूकता हो।
सिद्धविद्या-(सं०स्त्री०) दश महाविद्या।
सिद्धसङ्कल्प-(सं० वि०) जिसकी सब कामनायें पूर्ण हों।
सिद्धसवध-(सं०वि०) जिसकी कामना सिद्ध हुई हों।
सिद्धसरित्-(सं०स्त्री०) आकाश गंगा।
सिद्धसाधन-(सं०स्त्री०) प्रमाणित बात को फिर से प्रमाणित करना।
सिद्धसिन्धु-(सं०पुं०) गङ्गा।
सिद्धसेवित-(सं०पुं०) बटुक भैरव।
सिद्धहस्त-(सं० वि०) जिसका हाथ कोई काम करने में मजा हो।
सिद्धा-(सं०स्त्री०) आठ योगिनियों में से एक, देवांगना, आर्या छन्द का एक भेद, सिद्ध की स्त्री।
सिद्धाई-(हिं०स्त्री०)सिद्ध होने की अवस्था
सिद्धाञ्जन-(सं०नपुं०) वह अंजन जिसके आंख में लगाने से भूमि के नीचे की वस्तु देख पड़ती है।
सिद्धादेश-(सं०पुं०) सफल वाक्य।
सिद्धान्त-(सं० पुं०) वह बात जो विद्वानों से अथवा किसी सम्प्रदाय से सत्य मानी गई हो, वह मत जो भली भांति सोच विचार कर स्थिर किया गया हो, मुख्य उद्देश्य या अभिप्राय, ठीक मतलब, तत्व की बात, निर्णीत विषय, किसी शास्त्र पर लिखी हुई कोई विशेष पुस्तक, वह मत जो पूर्वपक्ष के खण्डन के बाद स्थिर किया गया हो।
सिद्धान्तज्ञ-(सं०पुं०) तत्वज्ञ, सिद्धांत को जानने वाला।
सिद्धान्ति-(सं० वि०) प्रमाणित, निर्णय किया हुआ।
सिद्धान्ती-(हिं० पुं०) तार्किक, मीमांसक, शास्त्र के तत्व को जानने वाला।
सिद्धान्न-(सं०नपुं०)पका हुआ अन्न,भात
सिद्धाम्बा-(सं० स्त्री०) दुर्गा।
सिद्धार्थ-(सं०वि०) जिसकी सब कामनायें पूर्ण हो गई हों, गौतम बुद्ध, राजा दशरथ के एक मन्त्री का नाम, जैनों के चौबीसवें अर्हत्।
सिद्धासन-(सं० नपुं०) हठ योग के चौरासी आसनों में से एक प्रधान आसन।
सिद्धि-(सं० स्त्री०) निबटारा, फैसला, योग विशेष, दुर्गा, खड़ाऊँ, भाग्योदय, मोक्ष, मुक्ति, सफलता, धन दौलत, प्रवीणता, कौशल, प्रभाव, विजया, भाग, पूर्णता, निश्चय होना, प्रमाणित होना, कौशल, निर्णय, नाटक का वह लक्षण जिसमें अभिमत की सिद्धि के लिये अनेक वस्तुओं का कथन होता है, दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम, गणेश की दो स्त्रियों में से एक, छप्पय का एक भेद, संगीत में एक श्रुति, राजा जनक की पुत्रवधू, तपोयोग पूरे होने का अलौकिक फल, योग की आठ सिद्धियां-अणिमा, महिमा लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व और कामवसायित्व हैं।
सिद्धिप्रद-(सं० वि०) सिद्धि देने वाला।
सिद्धिबीज-(सं०नपुं०)सिद्धि का कारण।
सिद्धिभूमि-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहां पर तप आदिकी शीघ्र सिद्धि होती है।
सिद्धिद, सिद्धिदाता-(सं०त्रि०) सिद्धि देने वाला।
सिद्धिमार्ग-(सं०पुं०) मोक्षपथ।
सिद्धियोग-(सं०पुं०) ज्योतिष में एक प्रकार का शुभ योग।
सिद्धिवाद-(सं०पुं०) ज्ञान विषयक वार्ता
सिद्धिविनायक-(सं० पुं०) सिद्धिदाता गणेशजी।
सिद्धिसाधक-(सं०वि०) मनोरथ सिद्ध करने वाला।
सिद्धिस्थान-(सं०नपुं०) वह स्थान जहां पर पुरश्चरण करने से शीघ्र सिद्धि होती है।
सिद्धेश्वर-(सं०पुं०)बड़ा मित्र,महायोगी, शिव, महादेव।
सिद्धेश्वरी-(सं० स्त्री०) तान्त्रिकों की एक देवी का नाम।
सिद्धोदक-(सं० नपुं०) पकाया हुआ जल, कांजी।
सिद्धौषध-(सं०नपुं०) वह दवा जिसके सेवन करने से रोग अवश्य आराम होता है।
सिधरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मछली।
सिधाई-(हिं०स्त्री०) सरलता, सीधापन।
सिधाना, सिधारना-(हिं०क्रि०) जाना, रवाना होना, प्रस्थान करना, स्वर्गवास होना, मरना।
सिधि-(हिं०स्त्री०) देखो सिद्धि।
सिध्म-(सं०वि०) श्वेत कुष्ठ वाला।
सिन-(अ० पुं०) अवस्था, वय, उम्र।
सिनक-(हिं०स्त्री०) नाककी मैल, नेटा।

सिनकना-(हिं०क्रि०) नाकका मल ज़ोर से हवा निकाल कर बाहर फेंकना ।
सिनट्-(अं० पु०) विश्वविद्यालय की प्रबंध कारिणी सभा ।
सिनि-(हिं०पु०) एक यादव जो सात्यकी का पिता था, क्षत्रियों की एक शाखा ।
सिनी-(हिं० पु०) देखो शिनि ।
सिनीत-(हिं० स्त्री०) सात रस्सियों को बटकर बना हुआ चिपटा रस्सा ।
सिनीवाली-(स०स्त्री०) अङ्गिरा की एक पुत्री का नाम, दुर्गा ।
सिनो-(हिं०पु०) खेतकी पहिली जोताई ।
सिन्दुवार-(स०पु०) निर्गुण्डी का वृक्ष ।
सिन्दूर-(सं० नपु०) सीसा नामक धातु से बनाया हुआ एक प्रकार का लाल चूर्ण जिसको सोहागिन स्त्रिया मस्तक में लगाती हैं ।
सिन्दूरतिलका-(स०स्त्री०) सधवा स्त्री ।
सिन्दूरदान-(हिं०पु०) सिन्दूर रखने की एक प्रकार की लकड़ी की डिबिया ।
सिन्दूरी-(स०स्त्री०) लाल वस्त्र,कबीला
सिन्ध-(स० पु०) भारत के पश्चिम प्रान्त का एक प्रदेश, पजाब की एक प्रधान नदी, एक रागिणी का नाम ।
सिन्धवी-(हिं०स्त्री०) एक रागिणी ।
सिन्धी-(हिं०स्त्री०) सिन्ध देश की भाषा
सिन्धु-(स० पुं०) समुद्र, सागर, वरुण देवता, चार की सख्या, सात की संख्या, सिन्ध प्रदेश, इस देश का निवासी, निर्गुण्डी का पौधा, ओठों का गीलापन, सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
सिन्धुकन्या-(स० स्त्री०) लक्ष्मी ।
सिन्धुकफ-(स०पु०) समुद्रफेन ।
सिन्धुकर-(स०नपु०) सोहागा ।
सिन्धुज-(स० नपु०) सेंधा नमक, पारा, सोहागा, (वि०) समुद्र में से उत्पन्न ।
सिन्धुजन्म-सेंधा नमक ।
सिन्धुजा-(स० स्त्री०) लक्ष्मी, जिस सीप में से मोती निकलता है ।
सिन्धुजात-(स०पु०) मुक्ता मोती ।
सिन्धुड़ा-(हिं० स्त्री०) एक रागिणी
सिन्धुनन्दन-(स० पु०) चन्द्रमा ।
सिन्धुनाथ-(स० पु०) समुद्र ।
सिन्धुपति-(स० पु०) समुद्र ।
सिन्धुपत्नी-(स० स्त्री०) नदी ।
सिन्धुपिब-(स० पु०) अगस्त्य ऋषि ।
सिन्धुपुत्र-(स० पु०) चन्द्रमा ।
सिन्धुपुष्प-(सं० पु०) शख, कदम्ब, मौलसिरी ।
सिन्धुमथ्य-(स० पु०) अमृत ।
सिन्धुमाता-(स० स्त्री०) सरस्वती ।
सिन्धुर-(स०पु०) हाथी आठकी सख्या ।
सिन्धुरद्वेपी-(स०पु०) सिंह, शेर ।
सिन्धुरमणि-(स०पु०) गजमुक्ता ।
सिन्धुरवदन-(स० पु०) गणेश जी ।
सिन्धुवार-(स० पु०) निर्गुण्डी ।
सिन्धुवासिनी-(स० स्त्री०) लक्ष्मी ।
सिन्धु विष-(स० पुं०) हलाहल विष ।
सिन्धुशयन-(स० पु०) विष्णु ।
सिन्धुसुत-(स० पु०) जलन्धर नामक राक्षस जिसको शिव ने मारा ।
सिन्धुसुता-(स० स्त्री०) लक्ष्मी ।
सिन्धूद्भव-(स० नपु०) सेंधा नमक ।
सिन्धूरा-(हिं० पुं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग ।
सिन्धोरा-(हिं० पु०) सिन्दूर रखने का लकड़ी का पात्र ।
सिन्नी-(हिं०स्त्री०) मिठाई जो किसी पीर को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाटी जाती है, शीरनी ।
सिपर-(फा० स्त्री०) वार रोकने का हथियार ढाल ।
सिपहगरी-(फा०स्त्री०) सिपाही का काम
सिपहसालार-(फ़ा० पु०) फौज का सबसे बड़ा अफसर, सेनापति ।
सिपारा-(फा० पु०) कुरान के तीस भागों में से एक भाग ।
सिपास-(फा०स्त्री०) प्रशसा, स्तुति ।
सिपासनामा-(फ़ा० स्त्री०) बिदाई के समय का अभिनन्दन पत्र ।
सिपाव-(फ़ा० पु०) एक प्रकार का तिकोना ढाँचा जो छकडे के आगे की ओर लगाया जाता है ।
सिपा का भाथी-(हिं०स्त्री०) लोहारो या सोनारो की हाथ से चलाने की भाथी
सिपाह-फ़ा०स्त्री० फौज, सेना, लश्कर
सिपाहगिरी-(फा० स्त्री०) सिपाही का काम या व्यवसाय ।
सिपाहियाना-(फ़ा० वि०) सिपाहियो के समान ।
सिपाही-(फा० पु०) सैनिक, योद्धा, फौजी, आदमी, चपरासी पुलीस कान्स्टेबल ।
सिपुर्द-(हिं०पु०) देखो सपुर्द ।
सिप्पर-(फ़ा०स्त्री०) देखो सिपर ।
सिप्पा-(हिं०पु०) लक्ष्यवेध, निशाने पर लगाया हुआ वार, युक्ति, तरकीब, ढँग, प्रारम्भिक कार्रवाई, प्रभाव, धाक, सिप्पा जमाना-किसी कार्य को पूरा करने के लिये तरकीब लगाना ।
सिप्रा-(स० स्त्री०) उज्जयनी की एक प्रसिद्ध नदी ।
सिफ़त-(अ० स्त्री०) विशेषता, गुण, स्वभाव, लक्षण, सूरत, शक्ल ।
सिफर-(अ०पु०) शून्य, सुन्ना ।
सिफ़्ला-(अ०वि०) नीच,छिछोरा,क़मीना
सिफलापन-(अ०पु०) ओछापन ।
सिफ़ारिश-(फा०स्त्री०) किसीके दोष क्षमा करने के लिये अर्थ वा किसीके कार्यसिद्धि के लिये अनुरोध ।
सिफ़ारिशी(फा०वि०)अनुरोध करनेवाला
सिफ़ारिशी टट्टू -(फा० पु०) वह जो केवल खुशामद करके किसी पद पर पहुँचा हो ।
सिबिका-(हिं०स्त्री०) देखो शिबिका ।
सिमंत-(हिं० पु०) देखो सीमान्त ।
सिमई-(हिं० स्त्री०) देखो सिंवई ।
सिमट-(हिं०स्त्री०) सिमटने की क्रिया या भा भाव ।
सिमटना-(हिं०क्रि०) सिकुड़ना,संकुचित होना, लज्जित होना, सहमना, सिट पिटाना, बटुरना,बटोरा जाना, निबटना व्यवस्थित होना, शिकन पड़ना, तरकीब में लगाना ।
सिमटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा जिसकी बुनावट खेसके के समान

होती है।

सिमरगोला-(हिं०पु०) एक प्रकार की मेहराव ।

सिमरना-(हि०क्रि०) देखो सुमिरना ।

सिमरिख-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया ।

सिमल-(हि०पु०) जुए में पड़ी हुई खूटी।

सिमाना-(हि०पु०) सिवाना, हद।

सिमिटना-(हिं० क्रि०) देखो सिमटना।

सिमृती-(हिं०स्त्री०) देखो स्मृति।

सिमेंट् (अ०पु०) एक प्रकार का लसदार गारा जो सूखने पर बहुत कड़ा और पुष्ट हो जाता है।

सिमेटना-(हिं० क्रि०) लपेटना।

सिम्ब-(हि०पु०) देखो शिम्ब।

सिम्बा-(स० स्त्री०) सोंठ।

सम्बी-(स० स्त्री०) फली, छीमी, वनमूग।

सिम्भालू-(स०नपु०)सिन्दुवार, निर्गुण्डी।

सिय-(हि०स्त्री०) सीता, जानकी।

सियना-(हि०क्रि०) उपजाना, रचना।

सियरा-(हि०वि०) शीतल, ठढा, कच्चा।

सियराई-(हि०स्त्री०) शीतलता, ठंढापन।

सियराना-(हि०क्र०) ठढा करना, शीतल होना।

सिया-(हि०स्त्री०) जानकी, सीता।

सियाना-(हि०क्रि०) देखो सिलवाना।

सियापा-(हि०पु०) मृत व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक बहुत सी स्त्रियों का प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोने की चाल।

सियार-(हि०पु०) श्रृगाल, गीदड़।

सियार लाठी-(हि०पु०) अमलतास।

सियारा-(हि० पु०) वह फवड़ा जिससे जुती हुई भूमि बराबर की जाती है।

सियाल-(हि०पु०) देखो सियार,श्रृगाल, गीदड़।

सियाला-(हिं० पुं०) शीत काल, जाडे का मौसम।

सियाली-(हिं० स्त्री०) जाडे के मौसम की फस्ल।

सियावड़ी-(हिं० स्त्री०) वह काली हांडी जो चिड़ियों को डराने के लिये खेत में रक्खी जाती है।

सियासत-(अ० स्त्री०) देश का शासन प्रबन्ध।

सियाह-(हिं०वि०) देखो स्याह।

सियाहगोश-(फा० पु०) बिल्ली की जाति का एक जगली जानवर, वन-बिलाव।

सियाहा-(फा०पु०) आय व्यय की बही, रोज़ नामचा, बही खाता, वह बही जिसमें काश्तकारों से प्राप्त धन लिखा जाता है, वह सरकारी रजिस्टर जिसमें ज़मीदारों से वसूल की हुई मालगुजारी दर्ज की जाती है।

सियाहानवीस-(फा० पु०) सियाहा लिखने वाला।

सियाही-(फा०पु०) देखो स्याही।

सिर-(हिं०पु०) शिर, कपाल, खोपड़ी, सिरा, चोटी, ऊपरी छोर, सिर आखो पर होना-माननीय होना,सिर आँखों पर बैठना-अति सत्कार किया जाना, सिर पर आना-भूत प्रेत का प्रभाव होना, सिर उठाना-उपद्रव मचाना, विप्लव करना, सम्मान पूर्वक खडे होना, सिर ऊंचा करना-अभिमान के साथ लोगों के बीच में खडे होना, सिर खाली करना-व्यर्थ की बकवाद करना, सिर खाना-बकवाद से व्यग्र करना, सिर खपाना-अधिक सोच विचार करना, सिर चकराना-सिर में चक्कर जान पड़ना, सिर चढ़ाना-आदर दिखलाना, वढावा देना, सिर घूमना-मस्तक में पीड़ा होना, सिर झुकाना-लज्जा से गरदन नीची करना, प्रणाम करना, सिर देना-जान देना, जान देना, सिर धरना-स्वीकार करना, सिर धुनना-पछतावा करना, सिर नीचा करना-लज्जा वश सिर झुकाना, सिर पटकना-अति परिश्रम करना, दुःखी होना, सिर पर पांव रखना-जल्दी से भाग जाना, सिर पर पड़ना-जिम्मे में होना, सिर पर खून सवार होना-हत्या करने पर उतारू होना, सिर पर होना-पास पास पहुच जाना, सिर पड़ना-ज़िम्मे में पड़ना, सिर फिरना-सिर चकराना, सिर मारना-सोचते सोचते परेशान होना, सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना-किसी कार्य के आरभ होते ही विघ्न पड़ना, सिर से पैर तक-आद्योपान्त, पूर्ण रूप से, सिर से पैर तक आग लगना-अति क्रुद्ध होना, सिर से खेल जाना-प्राण दे देना, सिर पर सींघ निकलना-कोई अनहोनी बात होना, सिर होना-पीछा न छोड़ना, समझ लेना।

सिरई-(हिं० स्त्री०) चार पाई में सिर हाने की पट्टी।

सिरकटा-(हि०वि०) जिसका सिर कट गया हो, दूसरे को हानि पहुचाने वाला

सिरका-(फा० पुं०) अगूर, जामुन, ईख आदि का रस जो धूप में पकाकर खट्टा किया गया हो, सिरकाकश-अर्क खींचने का एक प्रकार का यन्त्र।

सिरकी-(हिं० स्त्री०) सरकडा, सरई, सरहरी, सरई की तीलियों की बनी हुई टट्टी जो दीवार, या गाड़ियों पर धूप और पानी से बचने के लिये डाल जाती है।

सिरखप-(हि० वि०) परिश्रमी, सिर खपाने वाला।

सिरखपी-(हिं०स्त्री०) परिश्रम, हैरानी।

सिरखिली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया।

सिरखिस्त-(फा०पुं०) एक पदार्थ जो कुछ पेड़ों की पत्तियों पर ओस की तरह जम जाता है और दवा के काम में आता है, यव शर्करा।

सिरगा-(हि०स्त्री०) घोडे की एक जाति।

सिरगिरी-(हि०स्त्री०) चिड़ियोंके सिर पर की कलगी।

सिरचन्द-(हिं० पु०) एक प्रकार का अर्धचन्द्राकार गहना जो हाथी के मस्तक पर पहराया जाता है।

सिरजक-(हिं० पुं०) सृष्टिकर्ता, रचना करने वाला।

सिरजनहार-(हिं० पु०) सृष्टिकर्ता, परमेश्वर।
सिरजना-(हि०क्रि०) सृष्टि करना, निर्माण करना, सञ्चय करना, बनाना, हिफाजत में रखना।
सिरजित-(हिं०वि०) निर्मित रचा हुआ।
सिरताज-(हि० पु०) सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु, मुकुट, शिरोमणि, सरदार।
सिरतान-(हि०पु०) काश्तकार, असामी।
सिर-ता-पा-(हिं० क्रि० वि०) सिर से पाव तक, आदि से अन्त तक, सम्पूर्ण, बिलकुल
सरत्राण-(हि०पु०) देखो शिरस्त्राण।
सरदार-(हिं०पु०) देखो सरदार।
सिरदुआली-(हि०स्त्री०) घोडे की लगाम में लगी हुई डोरी या चमडे का तस्मा।
सिरनामा-(फा० पु०) लिफाफे आदि पर लिखा जाने वाला पता, पत्र के आरभ में पत्र पाने वाले का नाम उपाधि आदि, वह शब्द या वाक्य जो किसी लेख के ऊपर उसके विषय का निर्देश करने के लिये लिखा जाता है, शीर्षक, हेडिङ्।
सिरनेत-(हि०पु०) पगड़ी, पटका, चीरा, क्षत्रियों की एक शाखा।
सिरपाव-(हिं०पु०) देखो सिरोपाव।
सिरपेच-(फा० पु०) पगड़ी पर बाधने का एक आभूषण, पगड़ी के ऊपर का छोटा कपड़ा।
सिरपोश-(फा०पु०)सिर पर का आवरण, टोप, कुलाह, बन्दूक के ऊपर का कपड़ा।
सिरफूल-(हिं० पु०) स्त्रियो का एक आभूषण जिसको वे सिर पर पहरती हैं।
सिरफेंटा-(हिं० पु०) साफा, पगड़ी, मुरेठा।
सिरबंद (हिं०स्त्री०) साफा।
सिरबंदी-(हि० स्त्री०) मस्तक पर पहरने का स्त्रियों का एक आभूषण, एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।
सिरमनि-(हिं०पु०) देखो शिरोमणि।
सिरमौर-(हि०पु०) शिरोमणि, सिरताज, सिर पर का मुकुट।
सिररुह-(हिं०पु०) देखो शिरोरुह।
सिरवा-(हिं०पु०) ओसने में हवा करने का कपड़ा।
सिरवार-(हि० पु०) जमीदार का वह कारिन्दा जो उसके खेती का प्रबन्ध करता है।
सिरस-(हि०पु०) शीशम की तरह का एक प्रकार का ऊचा वृक्ष।
सिरसी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का तीतर।
सिरहाना-(हि० पु०) चारपाई में सिर की ओर का भाग।
सिरा-(हिं०स्त्री०) रक्तवाहिनी नाड़ी, शिरा, सिंचाई की नाली, पानी की पतली धारा, कलश गगरा, (हि०स्त्री०) लम्बाई का अन्त, छोर, टोक, अन्तिम भाग, आरभ का भाग, अग्र भाग, अगला हिस्सा, सिरे का-औवल दरजे का।
सिराजी-(हि०पु०) शीराज का घोड़ा या कबूतर।
सिराना-(हि०क्रि०) शीतल होना, ठढा होना, उत्साह हीन होना समाप्त होना, दूर होना, मिटना अवकाश मिलना, समाप्त होना, शीतल करना, ठढा करना।
सिरामोक्ष-(स०पु०)दूषित रक्त निकालने के लिये फस्त खुलवाना।
सिराला-(स०स्त्री०)एक प्रकार का पौधा, कमरख।
सिराली-(हि०स्त्री०) मोर के सिर पर की कलगी।
सिरावन-(हिं०पु०) खेत चौरस करने का हेगा।
सिरावना-(हिं०क्रि०) देखो सिराना।
सिरावृत्त-(स०नपु०) सीसक, सीसा।
सिराहर्ष-(स० पु०) आख के डोरो की लाली।
सिरियारी-(हि०स्त्री०)सुसना का साग।
सिरिश्ता-(फा०पु०) विभाग, मुहकमा
सिरश्तेदार-(फा० पु०) अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमो के कागजात रखता है।
सिरिश्तेदारी-(फा०स्त्री०) सिरिश्तेदार का काम या पद।
सिरिस-(हिं०पु०) देखो सिरस।
सिरी-(हि० स्त्री०) श्री, लक्ष्मी, शोभा, रोली, माथे पर का एक आभूषण।
सिरी पञ्चमी-(हि० स्त्री०) श्रीपचमी, वसन्तपंचमी।
सिरोना-(हि० पु०) घड़ा रखने का रस्सी का बना हुआ मेड़रा, इडुरी, बिड़वा
सिरोपाव-(हि० पु०) सिरसे पैर तक का पहरावा जो राज दर्बार में सम्मान के रूप में दिया जाता है, खिलअत।
सिरोमनि-(हि०पु०)देखो शिरोमणि।
सिरोरुह-(हि०पुं०) देखो शिरोरुह।
सिरोही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की काली चिड़िया, राजपूताना एजेन्सी का एक देशी राज्य।
सिर्का-(हिं०पु०) देखो सिरका।
सिर्फ-(अ०क्रि०वि०) केवल, मात्र (वि०) शुद्ध खालिस।
सिल-(हिं०स्त्री०) शिला, पत्थर, चट्टान, पत्थर की पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसा जाता है, पत्थर की चिकनी की हुई चौकौर पटिया, बलूत की जाति का एक वृक्ष (अ०पु०) राजयक्ष्मा।
सिलक-(हिं०स्त्री०)लड़ी, हार, पक्ति, धागा।
सिलकी-(हि०पु०) बेल।
सिलखड़ी-(हि०स्त्री०) एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर जिसके बरतन बनाये जाते हैं।
सिलगना-(हिं०क्रि०) देखो सुलगना।
सिलप-(हिं०पु०)देखो शिल्प, कारीगरी।
सिलपट-(हिं० वि०)चौरस, बराबर, घिसा हुआ, साफ, नष्ट, चौपट, बिना एंड़ी की जूती।
सिलपोहनी-(हिं०स्त्री०) विवाह का एक रस्म।
सिलफोड़ा-(हि०पु०) पत्थरचूर।
सिलमाकुर-(हि०पु०) पाल बनाने वाला
सिलवट-(हि०स्त्री०) लकीर, शिकन।
सिलवाना-(हिं० क्रि०) सिलने का काम

दूसरे से कराना।
सिलसिला-(अ० पु०) परम्परा, क्रम, श्रेणी, पंक्ति, शृंखला, जंजीर, लड़ी, वंशपरंपरा, व्यवस्था, तरकीब (वि०) चिकना, फिसलने वाला, भीगा।
सिलसिलाबंदी-(फ़ा०स्त्री०) कतारबन्दी।
सिलसिलेवार-(फ़ा० वि०) क्रमानुसार।
सिलह-(अ० पु०) शस्त्र, हथियार।
सिलहख़ाना-(फ़ा० पु०) अस्त्रागार, हथियारों के रखने का स्थान।
सिलहट-(हि० पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।
सिलहटिया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की नाव।
सिलहार, सिलहारा-(हिं० पु०) खेत में गिरे हुए अन्न के दानों को बीनने वाला
सिलहिला-(हिं०वि०) फिसलने योग्य।
सिलही-(हि०स्त्री०)एक प्रकार की चिड़ियाँ
सिला-(हि०स्त्री०) शिला, खेत में गिरे हुए अन्न के दानों को बटोरने की क्रिया, पछोड़ते फटकने के लिये रक्खा हुआ अन्न का ढेर (अ० पु०) बदला, एवज़।
सिलाई-(हिं०स्त्री०)सीने का काम या ढंग, टाँका, सीवन, सीने की मज़दूरी।
सिलाजीत-(हि० पु०) शिलाजीत, पत्थर की चट्टानों में निकलने वाला एक प्रकार का लसदार पसेव।
सिलाना-(हि०क्रि०) सिलने का काम दूसरे से कराना।
सिलाबाक-(हि०पु०) पत्थरफूल।
सिलारस-(हि० पु०) सिल्हक नामक वृक्ष का गोंद जो बहुत सुगन्धित होता है।
सिलावट-(हिं० पु०) पत्थर गढ़ने वाला, संगतराश।
सिलासार-(हि० पु०) लोहा।
सिलाह-(अ०पु०) कवच, ज़िरह बख्तर, अस्त्रागार।
सिलाहबन्द-(हि०पु०) हथियारबन्द।
सिलाहर-खेत में से अन्न के दाने बीन कर निर्वाह करने वाला।
सिलाही-(अ० पु०) सैनिक, सिपाही।
सिलिया-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पत्थर जो मकान बनाने के काम में आता है।
सिलिप-(हि० पु०) देखो शिल्प।
सिलीमुख-(हि० पु०) देखो शिलीमुख
सिलेट-(हि० स्त्री०) काले पत्थर की पतली तख्ती जिसपर लड़के लिखते है।
सिलोच्च-(हि० पुं०) एक प्राचीन पर्वत का नाम।
सिलौआ-(हि० पुं०) सन के मोटे रेशे जिनसे टोकरिया बनाई जाती हैं।
सिलौट,सिलौटा-(हि०पु०) पत्थर का चिकना टुकड़ा,सिल,सिल, और बट्टा।
सिलौटी-(हि० स्त्री०) भाग मसाला आदि पीसने की छोटी सिल।
सिल्क-(अ०पु०) रेशम, रेशमी कपड़ा।
सिल्प-(हि० पु०) देखो शिल्प।
सिल्लकी-(स०स्त्री०) सलई का पेड़।
सिल्ला-(हि० पु०) अन्न के दाने जो फस्ल कट जाने पर खेत में पड़े रह जाते हैं, खलिहान में गिरे हुए अन्न
सिल्ली-(हि० स्त्री०) पत्थर की छोटी पतली पटिया हथियार तेज़ करने का पत्थर का छोटा टुकड़ा, तख्ता फलक, पटरी।
सिह्ल, सिह्लक-(स० पु०) सिलारस नामक गन्ध द्रव्य।
सिव-(हि०पु०) देखो शिव।
सिवई-(हि० स्त्री०) गुधे हुए मैदे के सूत के समान सूखे हुए महीन लच्छे जो दूध में पका कर खाये जाते हैं।
सिवक-(स०पु०) सीने वाला दरज़ी।
सिवलिंगी-(हि०स्त्री०) देखो शिवलिङ्गी।
सिवा-(हि० स्त्री०) देखो शिवा, (अ०अव्य०) अतिरिक्त, अलावा (वि०) अधिक, ज्यादा।
सिवाइ-(अ० अव्य०) सिवाय, सिवा।
सिवाई-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की मिट्टी।
सिवान-(हिं० पु०) सरहद, गाव के अन्तर्गत भूमि, गाव के छोर पर की ज़मीन।
सिवाय-(अ०क्रि०वि०) अतिरिक्त,अलावा छोड़कर, (वि०) अधिक, बेशी, ज्यादा ऊपरी, (पुं०) ऊपरी आमदनी।
सिवार-(हिं० पु०) शैवाल, जल में फैलने वाली एक घास।
सिवाल-(हिं० पु०) देखो सिवार, शैवाल।
सिवाली-(हिं० पु०) एक प्रकार का हलके रंग का पन्ना।
सिवि,सिविर-(हि पु०) देखो शिवि, शिविर।
सिविल्-(अ० वि०) नागरिक, नगर सबन्धी, मुल्की, सभ्य।
सिविल सर्जन्-(अ०पु०) सरकारी बड़ा डाक्टर जो नगरके हस्पतालो का मुख्य अधिकारी होता है।
सिविल् सर्विस्-(अ०स्त्री०) वह सरकारी परीक्षा जिसमें उत्तीर्ण व्यक्ति देश के शासन के उच्च पद पर नियुक्त होता है।
सिविलियन्-(अ०पु०) देश के शासन और प्रबन्ध विभाग का मुख्य कर्मचारी।
सिष्ट-(हिं०स्त्री०) बंसी की डोरी।
सिसकना-(हि०क्रि०) रोक रोक कर लबी सास लेते हुए भीतर ही भीतर रोना, उलटी सास लेना, जी धड़कना, व्याकुल होना।
सिसकारना-(हिं०क्रि०) मुख से सीटी के समान शब्द निकालना, लहकाना, सी सी शब्द करना, अत्यन्त पीड़ा या आनन्द के कारण मुख से सास खींचना, सीत्कार करना।
सिसकारी-(हि०स्त्री०) सीटी के समान शब्द, सिसकारने का शब्द, जीभ दबाते हुए मुख से सास खींचने का शब्द।
सिसकी-(हि० स्त्री०) भीतर ही भीतर रोने में रुक रुक कर निकलती हुई सास का शब्द, सिसकारी।
सिसिर-(हि० पु०) देखो शिशिर।
सिसु-(हिं०पु०) देखो शिशु, बालक।
सिसोदिया-(हिं०पु०) राजपूत क्षत्रियो

की एक शाखा।

सिहद्दा-(फा०पु०) वह स्थान जहां पर तीन हदें मिलती हों।

सिहपर्णी-(हिं०पु०,अडूसे का वृक्ष, अडूसा।

सिहरना-(हिं०क्रि०) ठंढक से कांपना, भयभीत होना, रोंगटे खड़े होना।

सिहरा-(हिं० पु०) देखो सेहरा।

सिहराना-(हिं० क्रि०) ठंढ से कँपाना, डराना।

सिहरी-हिं०स्त्री०,ठंढ के कारण कँपकपी, भय, जूड़ी का बुखार।

सिहाना-(हिं० क्रि०) ईर्ष्या की दृष्टि से देखना, स्पर्धा या डाह करना,ललचना।

सिहारना-(हिं० क्रि०) ढूंढना, तलाश करना।

सिहिकना-(हिं० क्रि०) सूखना।

सिहुण्ड-(सं०पु०) सेंहुड़ का पेड़।

सिहोड़-(हिं० पु०) सेंहुड़, थूहर।

सींक-(हिं० पु०) मूंज, सरपत आदि की पतली तीली जिसमें फूल आता है, किसी तृण का महीन काण्ड, तिनका, नाक का एक गहना, लौंग, कील, अंकुर तीली, छड़ी महीन धारी।

सींकर-(हिं० पु०) सींक में लगा हुआ फूल या गुच्छा।

सींका-(हिं०पु०) पेड़ पौधों की महीन टहनी।

सींकिया-(हिं०पु०) एक प्रकार का महीन कपड़ा जिसमें सींक के समान महीन धारियां रहती हैं।

सींग-(हिं० पु०) शृङ्ग, खुर वाले कुछ पशुओं के सिरके दोनों ओर शाखा के समान निकले हुए नुकीले अवयव, विषाण, पुरुष की इन्द्रिय; किसी के सिरपर सींग जमना-कोई विशिष्टता होना; सींग समाना-ठिकाना मिलना।

सींगड़ा-(हिं० पु०) बारूद रखने का सींग का चोंगा, मुख से बजाने का एक प्रकार का बाजा।

सींगना-हिं०क्रि०) चोरी किये हुए पशु को सींगसे पहचानना।

सींगरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का फल जिसकी तरकारी बनती है, मोंगरे की फली।

सींगी-(हिं० स्त्री०) हरिन के सींग का बना हुआ बाजा जो मुह से बजाया जाता है, एक प्रकार की मछली, वह पोली सींग जिसके द्वारा देहाती जर्राह दूषित रक्त को चूसकर निकालते हैं।

सींच-(हिं० स्त्री०) सींचने की क्रिया सिंचाई।

सींचना-(हिं०क्रि०) पानी भरना, पानी देना, आबपाशी करना, पाटना, पानी छिड़क कर तर करना, भिगोना।

सींव-(हिं०पु०) सीमा, सरहद।

सी-(हिं० वि० स्त्री०) समान, तुल्य, सीत्कार, सीव की जोड़ाई, अपनी सी-जहा तक सम्भव कर सके।

सीउ-हिं० पु०) शीत ठंढक।

सीकर-(सं० पु०) पानी का बूँद छींटा, पसीना, कण।

सीकल-(हिं० पु०) ढाल का पक्का हुआ धान, हथियारों का मुरचा छुड़ाने की क्रिया।

सीकस, सीकसी-(हिं० पु०) ऊसर।

सीका-(हिं०पु०) सिरपर पहनने का एक प्रकार का आभूषण, देखो छींका।

सीकाकाई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्तियाँ रीठे की भाति काम में आती हैं।

सीकी-(हिं०स्त्री०) छोटा सिकहर (पु०) सुराख, छेद।

सीकुर-(हिं० पु०) जव, गेंहू आदि के बालों पर के निकले हुए बालों के कड़े सूत।

सीख-(हिं० स्त्री०) शिक्षा, तालीम, सिखलाने की बात, परामर्श, सलाह।

सीख-(फा० स्त्री०) लोहे की लम्बी पतली छड़, शलाका, तीली, वह छड़ जिसमें खोंसकर मांस भूना जाता है, मढ़ी हुई, दर्जी।

सीखचा-(फा० पु०) लोहे की पतली सींक जिसपर लपेट कर मांस भूनी जाती है।

सीखन-(हिं०स्त्री०) शिक्षा, सीखना।

सीखना-(हिं०क्रि०) ज्ञान प्राप्त करना, किसी से कोई बात जानना, किसी से किसी कार्य करने की विधि जानना।

सीखा-(हिं०स्त्री०) शिखा, चोटी।

सीगा-(अ०पुं०) सांचा, ढांचा, व्यापार, विभाग, मुहकमा, मुसलमानों के विवाह के समय बोले जाने वाले एक प्रकार के वाक्य।

सीगारा-(हिं० पु०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

सीजना-(हिं०क्रि०) देखो सीझना।

सीझ-(हिं०स्त्री०)सीझनेकी क्रिया या भाव

सीझना-(हिं० क्रि०) आंच या गरमी से पकाना, चुरना आँच या गरमी पाकर नरम होना, कष्ट सहना, दुःख झेलना, सूखे चमड़े का मसाला लगाने पर मुलायम होना, मिलने योग्य होना, ऋण का निबटारा होना।

सीट-(अं०स्त्री०) बैठने का स्थान आसन

सीट-(हिं० स्त्री०) शेखी मारने के शब्द, डींग।

सीटना-(हिं० क्रि०) शेखी हाँकना, डींग मारना।

सीटपटांग-(हिं०स्त्री०) बढ़बढ़ कर बोली जाने वाली बातें, घमंड भरी हुई बात।

सीटी-(हिं०स्त्री०) वह महीन शब्द जो ओठों को गोल सिकोड़ कर नीचे को जोर से वायु निकालने पर उत्पन्न होता है, बाजे आदि का इसी प्रकार का शब्द वह बाजा या खिलौना जिसको फूँकने से इसी प्रकार का शब्द निकलता है।

सीठना-(हिं० पुं०) अश्लील, गीत जो स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं।

सीठनी-(हिं०स्त्री०) देखो सीठना।

सीठा-(हिं०वि०) नीरस, फीका।

सीठापन-(हिं०पु०) फीकापन।

सीठी-(हिं० स्त्री०) किसी फल, फूल, पत्ते आदि का रस निकाल लेने पर बचा हुआ अंश, चूद निस्सार पदार्थ।

सीड़-(हिं०स्त्री०) सील, तरी, नमी।

सीढ़ी-(हिं० स्त्री०) निसेनी, ज़ीना ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिये दो बांसों का बना हुआ लंबा ढाँचा जिसमें पैर रखने के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर बेंडे बल में डंडे लगे होते हैं, आगे बढ़ने की परंपरा, घुड़िया के आकार की लकड़ी।

सीत-(हिं०पु०) देखो शीत, ठढक।

सीतल-(हि० वि०) देखो शीतल, ठढा।

सीतलचीनी-(हिं० स्त्री०) देखो शीतल चीनी।

सीतलपाटी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की चिकनी चटाई, एक प्रकार का धारी दार कपड़ा।

सीतल बुकनी-(हिं०स्त्री०) सत्तू।

सीतला-(हिं०स्त्री०) देखो शीतला।

सीता-(सं० स्त्री०) मिथिला के राजा जनक की कन्या जो श्रीरामचन्द्र को ब्याही थी, उमा,लक्ष्मी, मदिरा, वैदेही, जानकी, भूमि में हल की फाल से पड़ी हुई रेखा, एक वृत्त का नाम।

सीताद्रव्य-(सं० नपु०) खेती के उपादान।

सीताधर-(सं०पु०) बलराम जी।

सीताध्यक्ष-(सं० पु०) वह राजकर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेतीबारी का काम देखता है।

सीतानाथ, सीतापति-(सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।

सीताफल-(सं०नपु०) शरीफा,कुम्हड़ा।

सीतारमण-(सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।

सीताहार-(सं० नपु०) एक प्रकार का पौधा।

सीतीनक-(सं०पु०) मटर, दाल।

सीत्कार-(सं० पु०) अत्यन्त पीड़ा या अनन्द के समय मुख से सास खींचने का शब्द, सी सी शब्द, सिसकारी।

सीथ-(हिं० पु०) पके हुए अन्न का दाना, भात का दाना।

सीद-(सं० नपु०) सूदखोरी, ब्याज पर रुपया देना।

सीदना-(हिं०क्रि०) दुःख पाना,कष्ट देना।

सीध्य-(सं० नपु०) आलस्य, सुस्ती।

सीध-(हिं०स्त्री०) ठीक सामने की स्थिति, सन्मुख विस्तार या लम्बाई, लक्ष्य, निशाना।

सीधा-(हिं०वि०) जो टेढा न हो, बिना इधर उधर मुड़े लगातार किसी ओर जाने वाला, वह जो ठीक लक्ष्य की ओर हो, जो कुटिल या कपटी न हो, शान्त, शिष्ट, भोला भाला, सहज, आसान, दहिना, (क्रि०वि०) सम्मुख, ठीक सामने की ओर, (पु०) बिना पका हुआ अन्न, **सीधी तरह**-शिष्टता से, **सीधा सादा**-सज्जन, भोला भाला, **किसी को सीधा करना**-सज़ा देकर ठीक करना।

सीधापन-(हिं० पु०) भोलापन।

सीधु-(सं० पु०) गुड़ की बनी हुई मदिरा, सीधुगन्ध, वकुल, मौलसिरी।

सीधुपुष्पी-(सं० स्त्री०) धव का वृक्ष।

सीधुरस-(सं०पु०) आम का रस।

सीधुवृक्ष-(सं०पुं०) थूहर।

सीधे-(हिं०क्रि०वि०) सम्मुख, बराबर, सामने की ओर, बिना मुड़े हुए, शिष्टता से, नरमी से।

सीन-(अं०पु०) नाटक का परदा,दृश्य।

सीनरी-(अं०स्त्री०) प्राकृतिक दृश्य।

सीना-(हिं०क्रि०) कपड़े चमड़े आदि के टुकड़ों को डोरे से जोड़ना, टाका मारना, एक प्रकार का रेशम का कीड़ा (फा०पु०) वक्षस्थल, छाती।

सीनातोड़-(हिं०पु०) कुश्ती का एक पेंच।

सीनाबन्द-(फा०पु०) अगिया, चोली।

सीनावाह-(हिं० पु०) एक प्रकार की कसरत।

सीनियर-(अं०वि०) श्रेष्ठ,पद में ऊंचा।

सीनी-(फा०स्त्री०) तश्तरी, थाली।

सीप-(हिं० पुं०) शंख घोंघे आदि के जाति का एक जलजन्तु जो ताल, झील आदि में पाया जाता है यह एक कड़े आवरण के भीतर बन्द रहता है, सीपी, सुतुही।

सीपति-(हिं०पु०) देखो श्रीपति, विष्णु।

सीपर-(हिं०पु०) ढाल।

सीपसुत-(हिं०पु०) मुक्ता, मोती।

सीपज-(हिं०पु०) मोती।

सीपी-(हिं० स्त्री०) देखो सीप।

सीबी-(हिं० स्त्री०) सी सी का शब्द, सिसकारी।

सीम्हा-(हिं०पु०) दहेज।

सीमन्त-(सं० पु०) स्त्रियों की माँग, हिन्दुओं में एक संस्कार जो गर्भ स्थिति के चौथे, छठें या आठवें महीने में किया जाता है, वैद्यक के अनुसार अस्थियों का सन्धि स्थान।

सीमन्तक-(सं० नपु०) सिन्दूर, एक प्रकार का मानिक रत्न।

सीमन्तिनी-(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री।

सीमन्तोन्नयन-(सं० नपु०) हिन्दुओं के दस संस्कारों में से तीसरा संस्कार, यह संस्कार गर्भ के चौथे, छठे, या आठवें मास में किया जाता है।

सीमलिङ्ग-(सं०नपु०) सीमा का चिह्न, हद का निशान।

सीमा-(सं० स्त्री०) किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अन्तिम स्थान, सरहद, स्थिति, क्षेत्र, तीर, अण्डकोष, **सीमा बांधना**-सरहद स्थिर करना, **सीमा के बाहर जाना**-अधिक होना, अतिक्रमण करना।

सीमाकृषाण-(सं० त्रि०) किसान, खेत जोतने वाला।

सीमागिरि-(सं०पुं०) वह पर्वत जो सीमा प्रांत पर हो।

सीमातिक्रम-(सं०पु०)सरहद को डाकना

सीमाधिप-(सं०पु०) सीमा का अध्यक्ष

सीमान्त-(सं० पु०) सरहद, गाव की सीमा सिवान्त।

सीमानिबंध-(सं०पु०)नियम या मर्यादा

सीमान्तर-(सं०नपुं०) दूसरी सरहद।

सीमापाल-(सं०पु०) सीमा रक्षक।

सीमाब-(फा०पु०) पारा, पारद।

सीमाबद्ध-(सं० वि०) रेखा से घिरा हुआ, हद के भीतर किया हुआ।

सीमालिङ्ग-(सं० नपु०) सीमा स्थल,

(सरहद) पर का चिह्न।
सीमाविवाद–(स०पुं०)सरहद का झगड़ा
सीमावृक्ष–(स०पु०) सरहद पर का वृक्ष।
सीमासन्धि–(स०स्त्री०) दो सरहदों का किसी स्थान पर मिलना।
सीमासेतु–(स०पु०) हदबन्दी।
सीमिक–(स०पुं०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा, दीमक।
सीमोलंघन–(स०पु०)सीमा को लांघना, मर्यादा के विरुद्ध काम करना।
सीय–(हि०स्त्री०) सीता, जानकी।
सीयन–(हि०स्त्री०) देखो सीवन।
सीर–(स० पु०) सूर्य, अर्क वृक्ष, हल, हल जोतने वाला बैल, (हिं०स्त्री०) वह जमीन जिसको जमीदार स्वयं बहुत दिनों से स्वयं जोतता चला आता हो, वह भूमि जिसकी उपज कई हिस्सेदारों में बाँटी जाती हो, साझा।
सीरक–(स०पु०)शिशुमार,सूस सूर्य,हल।
सीरख–(हिं०पु०) देखो शीर्ष।
सीरधर–(स०पु०) बलराम, हल धारण करने वाला।
सीरध्वज–(स०पु०) चन्द्र वंशीय राजा जनक।
सीरन–(हि०पु०) बच्चों का पहरावा।
सीरनी–(हि० स्त्री०)देखो शीरनी,मिठाई।
सीरपति–(स०पुं०) कृषक।
सीरपाणि–(स०पु०) हलधर, बलदेव।
सीरवाह, सीरवाहक–(स०पु०)हरवाहा, किसान।
सीरष–(हिं०पु०) देखो शीर्ष।
सीरा–(हिं०पुं०) पका कर शहद के समान गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस, चाशनी, हलवा, चारपाई का सिरहाना (वि०) देखो शीत, ठंढा।
सीरोसा–(हिं०पु०)एक प्रकार की मिठाई।
सील–(हि०स्त्री०) आर्द्रता सीड़, तरी, नमी (हिं०पु०) देखो शील।
सील–(अ०पु०) मुद्रा, मुहर, एक प्रकार की समुद्री मछली।
सीला–(हिं०पु०) अन्न के दाने जो फस्ल काट लेने पर भूमि में पड़े रह जाते हैं, सिल्ला, खेत में गिरे हुए दानों को चुनकर निर्वाह करने वाले (वि०) तर, गीला।
सीवड़ी–(हिं०पु०)गाँव की सीमा,सिवान।
सीवन–(स० नपु०) सीने का काम, सिलाई सन्धि, दरार, वह रेखा जो अण्डकोश से बीचो बीच से मलद्वार तक जाता है।
सीवना–(हिं०पु०) देखो सिवाना,सीना।
सीस–(हिं०पु०)मस्तक,माथा,सिर,कन्धा।
सीसक–(स०पु०) सीसा नामक धातु।
सीसताज–(हिं०पु०) शिकारी जानवरों के सिर पर पहराने की टोपी।
सीसत्रान–(हिं० पु०) शिरस्त्राण, टोप।
सीसपत्र,सीसपत्रक–(स०नपु०)सीसा धातु
सीसफूल–(हिं०पु०) फूल के आकार का एक आभूषण जो सिरपर पहना जाता है
सीसम–(हिं०पु०) देखो शीशम।
सीसमहल–(अ०पु०) वह मकान जिसकी दीवारों में चारो ओर शीशे जड़े हों।
सीसल–(हि० पु०) केवड़े के आकार का एक वृक्ष।
सीसा–(हिं०पु०) एक मूल धातु जो बहुत भारी होता है, जिसका रंग नीलापन लिये काला होता है।
सी सी–(हिं० स्त्री०) सीत्कार, सिसकारी, शीत के कष्ट के कारण निकला हुआ शब्द
सीसौदिया–(हि०पु०) देखो सीसोदिया।
सीह–(हि० स्त्री०) गन्ध, मँहक, साही नामक जन्तु, सीहगोस–एक प्रकार का जन्तु जिसके कान काले होते हैं।
सुँ–(हिं०प्रत्य०) देखो सों।
सुंखड़–(हि० पु०) साधुओं का एक सम्प्रदाय।
सुंघनी–(हिं० स्त्री०) तमाखू के पत्ते की बारीक बुकनी जो सूँघी जाती है, नस्य, हुलास।
सुंघाना–(हि० क्रि०) सूँघने की क्रिया कराना।
सुंड भुसुंड–(हिं० पु०) देखो शुण्ड-भुशुण्डि, हाथी।
सुंडा–(हिं०पु०) शुण्ड, सूँड़।
सुंडाल–(हिं०पु०) हाथी।
सुंधावट–(हि०स्त्री०)सोंधापन,सोंधी मॅहक
सुंबा–(हिं० पु०) इस्पन, दागी हुई तोप या बंदूक की गरम नली को ठंढा करने के लिये उस पर डाला हुआ गीला कपड़ा, पुचारा, तोप की नली साफ करने का गज, लोहार का गरम लोहे में सूराख करने का औजार।
सुंबी, सुंभी–(हि०स्त्री०) छेनी जिससे लोहे में छेद किया जाता है।
सुंसारी–(हि०स्त्री०) एक प्रकार का लंबा कीड़ा जो अन्न के दाने खाजाता है।
सु–(स० उप०) वह उपसर्ग जिसको संज्ञा में जोड़ने से उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर आदि अर्थ को सूचित करता है (वि०) अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, (सर्व०) वह, सो।
सुअटा–(हिं०पु०) शुक, सुग्गा, तोता।
सुअन–(हिं०पु०) पुत्र, बेटा, देखो सुमन।
सुअनजर्द–(हि०पु०) देखो सोनज़र्द।
सुअना–(हिं० क्रि०) उत्पन्न होना, उगना, (पु०) सुग्गा, तोता।
सुअर–(हिं०पु०) शूकर, सूअर।
सुअवसर–(स०पु०) अच्छा मौका।
सुआ–(हि०पु०) देखो सूआ।
सुआउ–(हिं०वि०) दीर्घायु, दीर्घजीवी।
सुआद–(हि०पु०) स्मरण, याद।
सुआना–(हिं० क्रि०) उत्पन्न करना, पैदा करना।
सुआमी–(हि०पु०) देखो स्वामी, मालिक
सुआर–(हि०पु०) सूपकार, रसोइयादार।
सुआरव–(स० वि०) मीठे स्वर से बोलने वाला।
सुआसन–(सं०पु०) बैठने का सुन्दर आसन।
सुआसिनी–(हिं०स्त्री०) देखो सुवासिनी।
सुआहित–(हिं० पु०) तलवार चलाने के बत्तीस हाथों में से एक हाथ।
सुई–हि०स्त्री०) देखो सूई।
सुक–(हिं० पु०) शुक, तोता, सुग्गा, कीर, सिरिस का वृक्ष।
सुकचरण–(हिं०पु०) सकोच, लज्जा।
सुकटि–(स०त्रि०) सुन्दर कमर वाली।

सुकटु-(स० वि०) बहुत कड़ुवा।
सुकचाना-(हि०क्रि०) देखो सकुचाना।
सुकड़ना-(हि०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकण्टका-(स० स्त्री०) घीकुआर, पिण्डखजूर।
सुकण्ठ-(स०वि०) जिसका कण्ठ सुन्दर हो, सुरीला, सुग्रीव का एक नाम।
सुकण्ठी-(स०स्त्री०) गन्धर्व की स्त्री।
सुकथा-(स०स्त्री०) उत्तम कथा, सुवाक्य।
सुकनासा-(हिं० वि०) जिसकी नाक सुग्गे के ठोर के समान हो।
सुकन्द-(स०पु०) कसेरू।
सुकन्यक-(स० वि०) जिसको सुन्दर कन्या हो।
सुकर-(स०वि०) सुसाध्य, सहज।
सुकरता-(स०स्त्री०) सौकर्य, सुन्दरता।
सुकन्या-(स० स्त्री०) सुन्दर कन्या।
सुकपिच्छक-(हिं० पु०) गन्धक।
सुकपोल-(स०वि०) जिसके गाल सुन्दर हों।
सुकमल-(स० नपु०) सुन्दर कमल।
सुकर-(स० वि०) सुसाध्य, जो सहज में किया जा सके।
सुकरता-(स०स्त्री०) सौकर्य, सुन्दरता।
सुकरा-(स० स्त्री०) अच्छी गाय।
सुकराना-(हि०पु०) देखो शुकाना।
सुकरित-(हि० वि०) शुभ, अच्छा।
सुकरीहार-(हिं० पु०) गले में पहरने का एक प्रकार का हार।
सुकर्ण-(स०वि०) जिसके सुन्दर कान हों।
सुकर्म-(स०पु०) सत्कर्म, अच्छा काम, ज्योतिष के सत्ताईस योगों में से एक।
सुकर्मी-(स० वि०) अच्छा काम करने वाला, सदाचारी, पुण्यवान्।
सुकल-(हिं०पु०) देखो शुक्ल, एक प्रकार का आम जो सावन में पकता है।
सुकल्प-(स०वि०) अति निपुण।
सुकल्पित-(स० वि०) अच्छी तरह से बनाया हुआ।
सुकवाना-(हिं०क्रि०)अचमे में आ जाना।
सुकवि-(स०पु०) अच्छा कवि।
सुकष्ट-(स०पु०) बड़ी भारी तकलीफ।
सुकाज-(हिं० पु०) उत्तम कार्य, अच्छा काम।
सुकातिज-(हि०पु०) मुक्ता, मोती।
सुकाण्डी-(स० पु०) भ्रमर, भौंरा।
सुकान्त-(हि०क्रि०) देखो सुखान्त।
सुकान्ति-(स०वि०) सुन्दर कान्ति वाला।
सुकार-(स० वि०) सहज में वश में आने वाला।
सुकाल-(स० पु०) सुसमय, उत्तम समय, वह समय जो अन्न आदि की उपज के लिये अच्छा हो।
सुकाशन-(स०वि०) बहुत चमकीला।
सुकावना-(हिं० क्रि०) देखो सुखाना।
सुकिज-(हिं० पु०) सुकृत, शुभ कार्य।
सुकीया-(हिं० स्त्री०) देखो स्वकीया।
सुकी-(हिं०स्त्री०) तोते की मादा, सुग्गी, सारिका।
सुकीउ-(हि०स्त्री०) स्वकीया नायिका।
सुकीर्ति-(स० स्त्री०) अच्छी स्तुति (वि०) अच्छे यश वाला।
सुकुआर-(हि० वि०) देखो सुकुमार।
सुकुचा-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसके स्तन सुन्दर हों।
सुकुड़ना-(हि०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकुन्तल-(स०पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
सुकुति-(हि०स्त्री०) शुक्ति, सीप।
सुकुमार-(स० वि०) जिसके अंग कोमल हों, नाजुक (पु०) उत्तम बालक, वनचम्पा (नपु०) तमाखू का पत्ता, वह काव्य जो कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त हो।
सुकुमारता-(स०स्त्री०) कोमलता,नज़ाकत
सुकुमारा-(स०स्त्री०)चमेली,जूही,मालती।
सुकुमारका-(स० स्त्री०) केले का वृक्ष।
सुकुमारी-(स०स्त्री०) कन्या, बेटी (वि०) कोमलाङ्गी, कोमल अंग वाली।
सुकुरना-(हि०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकुल-(सं०नपुं०) उत्तम वंश या कुल (वि०) जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो (हि०पु०) देखो शुक्ल।
सुकुलता-(स०स्त्री०) कुलीनता।
सुकुवार-(हिं०वि०) देखो सुकुमार।
सुकुसुमा-(हिं० स्त्री०) स्कन्द की एक मातृका का नाम।
सुकृत-(स०नपु०) सत्कार्य, पुण्य, दान, पुरस्कार, दया (वि०) धार्मिक,पुण्यवान्।
सुकृतात्मा-(स०वि०) पुण्यात्मा,धर्मात्मा।
सुकृति-(स०स्त्री०)शुभ कार्य,अच्छा काम।
सुकृती-(स०वि०) धार्मिक, पुण्यवान्, सत्कर्म करने वाला,भाग्यवान्,बुद्धिमान्
सुकृत्य-(स०नपु०) धर्म कार्य, पुण्य।
सुकृष्ट-(स०वि०) अच्छी तरह जोता हुआ
सुकृष्ण-(स०वि०) बहुत काला।
सुकेत-(स०पु०) आदित्य, सूर्य।
सुकेश-स०वि०) जिसके बाल सुन्दर हों।
सुकेशा-(स०स्त्री०) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों।
सुकेशि-(स०पु०) सुमाली और माली नामक राक्षसों के पिता का नाम।
सुकेशी-(स० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम (वि०) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों।
सुकेसर-(स० पु०) सिंह, शेर।
सुकोमल-(स०वि०) बहुत मुलायम।
सुक्कान-(हि०पु०) तलवार।
सुक्कानी-(हि०पु०) मल्लाह।
सुक्ख-(हि०पु०) देखो सुख।
सुक्ता-(स० स्त्री०) सुक्ति, इमली।
सुक्ति-(स०स्त्री०) शुक्ति, सिप्पी।
सुक्र-(हिं०पु०) देखो शुक्र।
सुक्रित-(हिं०पु०) देखो सुकृत।
सुक्षम-(हि०वि०) देखो सूक्ष्म।
सुक्षेत्र-(स० पु०) दसवें मनु के पुत्र का नाम।
सुखंडी-(हि०स्त्री०) बच्चों का एक रोग जिसमें उनका सम्पूर्ण बदन सूख जाता है (वि०) बहुत दुबला पतला।
सुखद-(हिं०वि०) आनन्द देने वाला, सुखदायी।
सुख-(स० नपु०) आत्मा या मनोवृत्ति का वह गुण जिसकी सब को अभिलाषा रहती है, आराम, आरोग्य, स्वर्ग, जल, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में छब्बीस अक्षर होते हैं

(क्रि० वि०) आनन्द पूर्वक, सुख की नींद सोना-बेफिक्र होकर रहना।
सुख आसन-(हि०पु०) पालकी, डोली।
सुखकन्द-(स०वि०) सुख देने वाला।
सुखकन्दर-(स०त्रि०) सुख का घर।
सुखकर-(स० वि०) सुख देने वाला, सुखद।
सुखकरण-(स० त्रि०) आनन्द उत्पन्न करने वाला।
सुखकारक-(स० त्रि०) सुखदायक, सुख देने वाला।
सुखकारी-(स०वि०) सुख देने वाला।
सुखकृत-(स० वि०) सहज में किया जाने वाला।
सुखक्रिया-(स० स्त्री०) सहज काम।
सुखग-(स०वि०) आराम से जाने वाला।
सुखगन्ध-(स०वि०) सुन्दर गन्ध वाला।
सुखगम-(स०त्रि०) सहज।
सुखग्राह्य-(स० वि०) जो सहज में लिया जा सके।
सुखचर-(स० वि०) आराम से चलने वाला।
सुखजनक-(स०वि०) आनन्ददायक।
सुखजननी-(स०स्त्री०) सुख देने वाली।
सुखजात-(स० वि०) प्रसन्न, सुखी।
सुखज्ञ-(स०त्रि०) सुख को जानने वाला।
सुखढरन-(हि०वि०) सुखदायक।
सुखद-(स० नपु०) विष्णु का आसन, ध्रुव ताल, (वि०) सुख देने वाला।
सुखदा-(सं० स्त्री०) सुखदेने वाली, स्वर्ग की वेश्या, एक प्रकार का छन्द।
सुखदाता-(स०वि०) आनन्द देने वाला।
सुखदान-(स०त्रि०) सुख देने वाला।
सुखदानी-(स० वि०, स्त्री०) आनन्द देने वाली, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पचीस अक्षर होते हैं।
सुखदायक-(स०वि०) आनन्द देने वाला।
सुखदायी-(स० त्रि०) सुखद, सुख देने वाला।
सुखदास-(हिं० पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।
सुखदेनी-(स० वि०) सुखदायिनी।
सुखदैनी-(स०वि०) आनन्द देने वाली।
सुखधाम-(स० पु०) आनन्द का घर, स्वर्ग।
सुखपाल-(स० पु०) एक प्रकार की पालकी।
सुखपूर्वक-(स०क्रि०वि०) आनन्द से, सुख से।
सुखप्रद-(स०वि०) सुख देने वाला।
सुखप्रबोधक-(स० वि०) सुख से जगाने वाला।
सुखप्रश्न-(स० पु०) कुशल की बात पूछना।
सुखप्रसव-(स०पु०) बिना अधिक कष्ट के बच्चा जनना।
सुखप्रसवा-(स०स्त्री०) सुख से सन्तान जनने वाली स्त्री।
सुखप्रसुप्त-(स० वि०) आनन्द से सोया हुआ।
सुखबद्ध-(स०वि०) आनन्द दायक।
सुखबोध-सुख से जागरण।
सुखभागी-(स०वि०) सुखभोगी।
सुखभेद्य-(स०वि०) जल्दी से टूटने वाला
सुखभोग-(स० पु०) सुख का भोग या लाभ।
सुखभोजन-(स०नपु०) सुख से भोजन करना।
सुखमा-(हिं० स्त्री०) शोभा, छवि, एक प्रकार का वृत्त जिसको वामा भी कहते हैं।
सुखरात्रि-(स०स्त्री०) कार्तिक मास की अमावस्या।
सुखलाना-(हि०क्रि०) देखो सुखाना।
सुखवंत-(हि०वि०) प्रसन्न, खुश, आनन्द दायक।
सुखवन-(हिं० पु०) वह न्यूनता या कमी जो किसी वस्तु के सूखने पर होती है, बालू जिसको लिखे हुए गीले अक्षर पर डालकर स्याही सुखाते हैं।
सुखवह-(स०वि०) आनन्द देने वाला।
सुखवादी-(स० पु०) भोग विलास को सर्वस्व मानने वाला, विलासी।
सुखवार-(हि०वि०) प्रसन्न, खुश, सुखी।
सुखवास-(सं० पु०) आनन्द का स्थान सुख की जगह।
सुखशायी-(हिं०वि०)सुख से सोने वाला।
सुखसञ्चार-(स० वि०) सुख से घूमने वाला।
सुखसाध्य-(स० वि०) जिसके साधन करने में कोई कष्ट न हो, सहज।
सुखसार-(हि० पु०) मोक्ष।
सुखसुप्त-(स०वि०) सुख से सोया हुआ।
सुखसुप्ति-(स०स्त्री०) सुख की नींद।
सुखसेव्य-(स० वि०) सुख से सेवन करने योग्य।
सुखस्पर्श-(स०पु०) सुखजनक स्पर्श।
सुखागत-(स०नपु०) सुख से आगमन।
सुखादित-(स०वि०) सुख से खाया हुआ
सुखाधार-(स० पु०) स्वर्ग।
सुखाना-(हिं० क्रि०) अग्नि वा धूप से किसी वस्तु का गीलापन दूर करना, गीलापन दूर करने की कोई क्रिया करना।
सुखानी-(हि०पु०) मल्लाह, माझी।
सुखान्त-(स० पु०) वह जिसका अन्त सुखमय हो, वह नाटक जिसके अन्त में सयोग, अभीष्ट सिद्धि, राज्य प्राप्ति आदि का वर्णन हो।
सुखारा,सुखारी-(हि०वि०) सुख देने वाला, सुखी, प्रसन्न।
सुखारोहण-(स०नपु०) सोपान, सीढ़ी।
सुखार्थी-(हि०वि०) सुख चाहने वाला।
सुखाराध्य-(स०वि०) सुख से आराधनीय
सुखाला-(हि० वि०) आनन्ददायक, सुखप्रद।
सुखावती-(स०स्त्री०) बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग।
सुखावबोध-(स०पु०) सुख ज्ञान।
सुखावह-(स० वि०) सुख या आराम देने वाला।
सुखाश-(स० पु०) वरुण, तरबूज, वह जो खाने में अच्छा जान पड़े।
सुखाशा-(स०स्त्री०) आराम की उम्मेद।
सुखासन-(स० नपु०) वह आसन जिस पर बैठने से सुख मिलता हो,

पालकी, डोली।
सुखासीन-स०वि०) सुख से बैठा हुआ।
सुखिश्रा-(हि०वि०) देखो सुखिया।
सुखित-(हिं०वि०) देखो सुखो, शुष्क, सूखा हुआ।
सुखिता-(स० स्त्री०) सुखी होने का भाव, आनन्द।
सुखिया-(हि०त्रि०) सुखी, प्रसन्न।
सुखिर-(हि० पु०) साप के रहने की बिल, बाम्री।
सुखी-(हि०वि०) आनन्दित, खुश।
सुखीन-(हिं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया।
सुखेन-(हि०पु०) देखो सुषेण।
सुखेलक-(स० पु०) एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह अक्षर होते हैं, इसको प्रमद्रिका या प्रमद्रक भी कहते हैं।
सुखेष्ठ-(स० पु०) शिव, महादेव।
सुखोत्सव-(स०पु०) आनन्द का उत्सव।
सुखोद्य-(स० वि०) जिसका उच्चारण करने में कोई कठिनाई न हो।
सुखैना-(हिं०वि०) आनन्द देने वाला।
सुख्याति-(स० स्त्री०) प्रशसा, यश, प्रसिद्धि।
सुगणक-(स० पु०) अच्छी गणना करने वाला।
सुगत-(स० वि०) अच्छी तरह जाने वाला (पु०) बुद्ध भगवान्।
सुगति-(स० स्त्री०) उत्तम गति, मोक्ष, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात मात्रायें और अन्त में एक गुरु वर्ण होता है।
सुगना-(हि०पु०) देखो सहिजन।
सुगन्ध-(स० नपुं०) छोटा जीरा, नीलोत्पल, सफेद चन्दन, गन्धराज, गाठिवन (पुं०) चना, गन्धक, धूना, कुन्दरू, बासमती चावल, केवड़ा, कसेरू, सुगन्ध, खुशबू, (वि०) सुवासित, खुशबूदार।
सुगन्धगन्धा-(स० स्त्री०) दारुहल्दी।
सुगन्धपत्रा-(स० स्त्री०) सतावर, विधारा।
सुगन्धपत्री-(स०स्त्री०) जावित्री।
सुगन्धवाला-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की सुगन्धित वनौषधि।
सुगन्धमय-(स० वि०) खुशबूदार।
सुगन्धमुख्या-(स०स्त्री०) कस्तूरी।
सुगन्धमूल-(स० नपु०) हरफारेवड़ी।
सुगन्धमूला-(स० स्त्री०) स्थल कमल, हरफरेवड़ी।
सुगन्धमूषिका-(स० स्त्री०) छछूदर।
सुगन्धरा-(हिं०पु०,एक प्रकार का फूल।
सुगन्धवल्कल-(स० नपुं०) दालचीनी।
सुगन्धशालि-(स०पु०) बासमती चावल।
सुगधा-(सं० स्त्री०) असबरग, कपूर कचरी, सोंठ, सलई, सौंफ, सेवती, माधवी लता बगुची।
सुगन्धि-(स०पु०) सुगन्ध, अच्छी महक, खुशबू, मोथा, कसेरू, धनिया, पिपलामूल, तुम्बुरू।
सुगंधिका-(स०स्त्री०) मृगनाभि,कस्तूरी, केवड़ा।
सुगधित-(स०वि०) खुशबूदार।
सुगधिमूल-(स०नपु०) खस।
सुगधी-(हि०स्त्री०) अच्छी महक,खुशबू।
सुगम-(स० वि०) सरल, सहज, जिसमें कठिनता न हो।
सुगमता-(स०स्त्री०) सरलता, आसानी।
सुगम्य-(स०वि०) सरलता से जाने योग्य।
सुगल-(हिं०पु०) बालि का भाई सुग्रीव।
सुगहन-(स०वि०) अति घना, निबिड़।
सुगात्र-(स०वि०) सुन्दर शरीर वाला।
सुगाना-(हि० क्रि०) सन्देह करना, शक करना।
सुगीति-(सं०स्त्री०) सुदर गान।
सुगीतिका-(स० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पचीस मात्रायें तथा आदि में लघु और अन्त में गुरु अक्षर होते हैं।
सुगुप्त-(सं० वि०) अच्छी तरह से रक्खा हुआ।
सुगुरु-(स०वि०) जिसने अच्छे गुरु से मन्त्र लिया हो।
सुगूढ-(स०वि०) अच्छी तरह से गुप्त।
सुगृहीत-(स० वि०) अच्छी तरह से ग्रहण किया हुआ।
सुगोप-(स० वि०) अच्छी तरह रक्षा करने वाला।
सुग्गा-हि०पु०) शुक, तोता।
सुग्गापंखी-(हिं०पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।
सुग्रीव-(स०पु०) विष्णु का घोड़ा, शख, इन्द्र, रामजी का सखा, बाली का छोटा भाई वानरपति, राजहस, एक असुर का नाम, (वि०), सुन्दर गरदन वाला।
सुग्रीवा-(स०स्त्री०)एक अप्सरा का नाम।
सुघट-(स० वि०) जो सहज में बन सकता हो, अच्छा बना हुआ, सुडौल, सुन्दर।
सुघटित-(स० वि०) अच्छी तरह से बना हुआ।
सुघड़-(हिं०वि०) प्रवीण, निपुण, कुशल, सुन्दर।
सुघड़ई-(हि०स्त्री०)निपुणता, सुडौलपन।
सुघड़ता-(हिं० स्त्री०) सुदरपन।
सुघड़पन-(हि०पु०) कुशलता, दक्षता।
सुघड़ाई, सुघड़ापा-(हि०) सुदरता, सुडौलपन, निपुणता, कुशलता।
सुघर-(हि०वि०) देखो सुघड़।
सुघरता-(हिं०स्त्री०)सुघड़ होने का भाव।
सुघरपन-(हि०पु०) कुशलता, दक्षता।
सुघराई-(हिं० स्त्री०) देखो सुघड़ाई, सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
सुघराईकान्हड़ा-(हिं०पु०) सम्पूर्ण जाति का एक राग।
सुघराई टोपी-(हिं०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
सुघरी-(हिं० स्त्री०) शुभ समय, अच्छा मुहूर्त, (वि०) सुन्दर, सुडौल।
सुघोर-(स०वि०)अतिशय घोर,बहुत गाढ़ा।
सुघोष-(सं० पु०) नकुल के शख का नाम।
सुचंग-(हिं०पु०) घोड़ा।
सुचक्र-(स०वि०) उत्तम चक्रयुक्त।

सुच-(हिं०वि०) देखो शुचि, शुद्धता।
सुचक्षु-(स०पु०) शिव, महादेव, पंडित (नपु०) सुन्दर आख (वि०) सुन्दर आख वाला।
सुचतुर-(स० वि०) बड़ा चालाक, अति चतुर।
सुचना-(हि०क्रि०)सचय करना, इकट्ठा करना।
सुचरित-(स०नपु०) सच्चरित्र, सुन्दर चरित्र।
सुचरित्र-(स०नपु०) देखो सुचरित।
सुचरित्रा-(स०स्त्री०)पतिपरायणा स्त्री,सती।
सुचर्म-(स०पु०) भोजपत्र।
सुचा-(हि० वि०) देखो शुचि, (स्त्री०) चेतना, ज्ञान।
सुचाना-(हिं०क्रि०) किसी को सोचने समझने में प्रवृत्त करना, दिखलाना।
सुचार-(हि०वि०)सुदर, मनोहर, सुचाल।
सुचारु-(स०वि०) अति मनोहर, बहुत सुन्दर, (पु०) रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सुचाल-(हिं०स्त्री०)अच्छी चाल,सदाचार
सुचाली-(हिं०वि०) अच्छी चाल चलन का, जिसका आचरण सुन्दर हो।
सुचि-(हि०वि०) शुचि, (स्त्री०) सूई।
चित-(हिं०वि०) किसी कार्य से निवृत्त, निश्चिन्त, सावधान; स्थिर, पवित्र,शुद्ध।
सुचितई-(हिं० स्त्री०) निश्चिन्तता, एकाग्रता, स्थिरता, फुरसत।
सुचिती-(हि० वि०) स्थिरचित्त, जो दुविधा में न हो, निश्चिन्त।
सुचित्त-(स०वि०) स्थिरचित्त, शान्त, जो किसी काम से निवृत्त हो गया हो।
सुचित्र-(स० नपु०) सुन्दर चित्र।
सुचित्रक-(स०पु०) चितला साप।
सुचित्रबीजा-(सं०स्त्री०) वायविडग।
सुचित्रा-(स०वि०) अच्छी तरह से सोचा विचारा हुआ।
सुचिमंत-(हि० पु०) सदाचारी, शुद्ध आचरण वाला।
सुचिन्तित-(स०वि०) भलीभाति सोचा विचारा हुआ।
सुचिन्तितार्थ-(सं०वि०) जिसने अच्छी तरह से अर्थ समझ लिया हो।
सुचिर-(स० वि०) बहुत दिनों तक रहने वाला।
सुची-(हिं०स्त्री०) देखो शुची।
सुचुटी-(स०स्त्री०) चिमटा, सड़सी।
सुचेतन-(स०वि०) अच्छी समझ वाला।
सुचेलक-(सं०पु०)सुन्दर और महीन वस्त्र
सुच्छंद-(हि० वि०) देखो स्वच्छन्द।
सुच्छम-(हि०वि०) सूक्ष्म, थोड़ा।
सुजड़-(हि०पु०) खड्ग, तलवार।
जड़ी-(हि० स्त्री०) कटारी।
सुजन-(सं०पु०) साधु, सज्जन, भद्रपुरुष, परिवार के लोग।
सुजनता-(स०स्त्री०) सौजन्य,भलमनसी।
सुजनी-(फ़ा० स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी चादर जो बिछाने के काम में आती है।
सुजन्मा-(स०वि०) अच्छे कुल में उत्पन्न
सुजय-(सं०पु०) उत्तम रूप से विजय।
सुजल-(सं०वि०) सुन्दर जलयुक्त।
सुजल्प-(स०पु०) उत्तम भाषण।
सुजस-(हि०पु०) देखो सुयश।
सुजागर-(हि० वि०) देखने में सुन्दर, सुशोभित, प्रकाशमान।
सुजात-(स०वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, सुन्दर, विवाहित स्त्री पुरुष से उत्पन्न (पु०)धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम,साड़
सुजातरिपु-(स०पु०) धृतराष्ट्र।
सुजाति-(स०स्त्री०) उत्तम जाति या कुल (वि०) अच्छे कुल का।
सुजातिया-(हिं०वि०) अच्छे कुल का, अपनी जाति का।
सुजान-(हि० वि०) चतुर, समझदार, निपुण, सज्जन, प्रवीण, पंडित (पु०) पति या प्रेमी, परमात्मा, ईश्वर।
सुजानता-(स० स्त्री०) सुजान होने का भाव या धर्म।
सुजानी-(हिं० वि०) ज्ञानी, पण्डित।
सुजावा-(हिं० पु०) बैलगाड़ी में की वह लकड़ी जो पैंजनी और फड़ में रहती है
सुजिह्व-(स०वि०) मधुरभाषी।
सुजीर्ण-(स०वि०)अच्छी तरह पचा हुआ
सुजीवित-(स०नपु०) सफल जन्म।
सुजोग-(हिं० पु०) सुअवसर, अच्छा मौका, सुयोग।
सुजोधन-(हि०पु०) देखो सुयोधन।
सुजोर-(हिं०वि०) दृढ, मजबूत।
सुज्ञान-(स० नपु०) उत्तम ज्ञान, अच्छी जानकारी।
सुझाना-(हिं०क्रि०) ऐसा उपाय करना जिसमें दूसरे को सूझे, दिखलाना।
सुटुकना-(हिं०क्रि०) सिकुड़ना, सुटका मारना, चाबुक लगाना।
सुठ-(हिं०वि०) देखो सुठि।
सुठहर-(हि०पु०) अच्छा स्थान।
सुठार-(हि०वि०)सुडौल,सुन्दर आकृति का
सुठि-(हि०वि०,सुन्दर, बढ़िया, (अव्य०) पूरा पूरा।
सुड़सुड़ाना-(हिं०क्रि०) सुड़ सुड़ शब्द उत्पन्न करना।
सुडौल-(हि० वि०) सुन्दर आकृति या बनावट का।
सुढंग-(हि०पुं०)अच्छी रीति या ढग(वि०) अच्छी चाल का, अच्छे रंग का।
सुढर-(हि० वि०) प्रसन्न और दयालु, सुडौल, जिसकी कृपा हो।
सुढार-(हिं० वि०) सुडौल, सुन्दर।
सुतंत, सुतंत्र-(हि० वि०) स्वतन्त्र।
सुत-(स० पु०) आत्मज, पुत्र, बेटा, (वि०) जात, उत्पन्न, पार्थिव।
सुतकरी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की पहरने की जूती।
सुतत्व-(स०नपु०) सुत का भाव या धर्म।
सुतदा-(स० वि०) पुत्र देने वाली।
सुतनय-(स०पु०) अच्छा पुत्र।
सुतना-(हि०पु०) देखो सुथना।
सुतनु-(० स्त्री०) सुन्दर शरीर वाली स्त्री, कृशाङ्गी, उग्रसेन की एक कन्या का नाम।
सुतनुता-(स०स्त्री०) शरीर की सुन्दरता।
सुतन्तु-(स०पु०) विष्णु, शिव, महादेव, एक दानव का नाम।
सुतन्त्रि-(सं०पुं०) बीन आदि तार के बाजे अच्छी तरह से बजाने वाला।

सुतप-(सं०पु०) सूर्य, विष्णु ।
सुतपस्वी-(सं० पु०) बड़ी तपस्या करने वाला ।
सुतप्त-(सं०वि०) अत्यन्त गरम ।
सुतर-(सं० वि०) सुख से पार किया जाने योग्य ।
सुतरण-(सं०त्रि०) सुख से तैरने या पार करने योग्य ।
सुतरां-(हिं० अव्य०) अतः, इसलिये, निदान, अत्यन्त, और भी ।
सुतरी-(हिं०स्त्री०) देखो सुतली ।
सुतल-(सं० पु०) पुराण के अनुसार छठा पाताल ।
सुतली-(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी, सुतरी ।
सुतवाना-(हिं०क्रि०) देखो सुलवाना ।
सुतहर-(हिं० पु०) देखो सुतार ।
सुतहा-(हिं० पुं०) सूत बेंचने वाला व्यापारी ।
सुतहार-(हिं०पु०) देखो सुतार ।
सुतही-(हिं०स्त्री०) देखो सुतुही ।
सुता-(सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री, लड़की ।
सुतात्मज-(सं०पु०) नाती, पोता ।
सुतापति-(सं०पु०) दामाद, जामाता ।
सुतार-(सं० वि०) अत्यन्त उज्वल, उत्तम, अच्छा, (पु०) साङ्ख्य दर्शन के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि ।
सुतार-(हिं० पु०) शिल्पकार, बढई, कारीगर, सुविधा ।
सुतारी-(हिं० स्त्री०) मोचियों का सूजा जिससे वे जूता सीतें हैं, बढई का काम (पु०) शिल्पकार ।
सुतार्थी-(सं० वि०) पुत्र की कामना करने वाला ।
सुताल-(सं०वि०) सुन्दर ताल वाला ।
सुताली-(हिं० स्त्री०) देखो सुतारी ।
सुतासुत-(सं०पु०) दौहित्र, नाती ।
सुतिक्त-(सं० वि०) बहुत तीता ।
सुतिन-(हिं०स्त्री०) रूपवती स्त्री ।
सुतिनी-(सं०स्त्री०) पुत्रवती स्त्री ।
सुतिया-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के गले में पहरने की हसुली ।
सुतीक्ष्ण-(सं० वि०) अति तीक्ष्ण, बहुत तेज ।
सुतीच्छन-(हिं०वि०) देखो सुतीक्ष्ण ।
सुतुङ्ग-(सं०पु०) नारियल का वृक्ष ।
सुतुही-(हिं०स्त्री०) शुक्ति, सीपी ।
सुतून-(फा० पुं०) स्तम्भ, खभा ।
सुत्रामा-(हिं० पु०) इन्द्र ।
सुतेजन-(सं०वि०) नुकीला, धारदार ।
सुतेजित-(सं० वि०) सुतीक्ष्ण, तेज़ ।
सुतोष-(सं० पु०) सन्तोष, सब्र ।
सुथना-(हिं० पु०) देखो सूथन ।
सुथनी-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों के पहरने का एक प्रकार का ढीला पायजामा, पिण्डालू, रतालू ।
सुथरा-(हिं०वि०) स्वच्छ, निर्मल, साफ ।
सुथराई-(हिं० स्त्री०) स्वच्छता, सफाई ।
सुथरापन-(हिं०पु०) स्वच्छता ।
सुथरेशाही-(हिं०पु०) गुरु नानक के शिष्य सुथरा शाह का चलाया हुआ सम्प्रदाय, इस सम्प्रदाय का अनुयायी ।
सुदंष्ट्रा-(सं०स्त्री०)एक किन्नरी का नाम ।
सुदक्ष-(सं० पु०) बड़ा निपुण ।
सुदक्षिणा-(सं०स्त्री०) अच्छी दक्षिणा ।
सुदच्छिन-(हिं०वि०) देखो सुदक्षिण ।
सुदंती-(सं०स्त्री०) सुन्दर दाँतों वाली ।
सुदत्त-(सं०वि०) अच्छी तरह दिया हुआ ।
सुदन्त-(सं० पुं०) अभिनय करने वाला नट ।
सुदन्ती-(सं०स्त्री०) हस्तिनी, हथनी ।
सुदरसन-(हिं०पु०) देखो सुदर्शन ।
सुदरिद्र-(सं०वि०) बड़ा दरिद्र ।
सुदर्शन-(सं० पु०) विष्णु के चक्र का नाम, शिव, (वि०) देखने में सुन्दर, मनोहर ।
सुदर्शना-(सं०स्त्री०) शुक्ल पक्ष की रात्रि, इन्द्रपुरी ।
सुदल-(सं० वि०) अच्छे दल या पत्तों वाला ।
सुदामा-(सं० पु०) श्रीकृष्ण का एक सखा, समुद्र, सागर, इन्द्र का हाथी, ऐरावत, (सं० स्त्री०) स्कन्ध की एक मातृका का नाम ।
सुदारुण-(सं०वि०) अत्यन्त भयङ्कर ।
सुदावन-(सं०पु०) देखो सुदामा ।
सुदास-(सं०पु०) ईश्वर की अच्छी तरह से उपासना करने वाला, दिवोदास का पुत्र तथा त्रित्सुका राजा, एक प्राचीन जनपद का नाम ।
सुदि-(सं०स्त्री०) देखो सुदी ।
सुदिन-(सं०नपु०)शुभ दिन, अच्छा दिन
सुदिनाह-(सं०नपु०)पुण्य दिवस,शुभ दिन ।
सुदिव-(सं०वि०) दीप्तिमान, चमकीला ।
सुदिवस-(सं०नपु०) देखो सुदिन ।
सुदी-(हिं०स्त्री०) शुक्ल पक्ष, किसी महीने का उजाला पक्ष ।
सुदीपति-(हिं०स्त्री०) सुदीप्ति ।
सुदीधिति-(सं०वि०) बहुत चमकीला ।
सुदीप्ति-(सं० स्त्री०) अधिक प्रकाश, खूब उजाला ।
सुदीर्घ-(सं०वि०) अति दीर्घ,बहुत लंबा ।
सुदीर्घफला-(सं०स्त्री०) ककड़ी ।
सुदीर्घा-(सं०वि०) बहुत लंबी ।
सुदुःखित-(सं०वि०) बहुत दुःखी ।
सुदुर्भगा-(सं० स्त्री०) बड़ी मन्दभाग्या नारी ।
सुदूर-(सं०वि०) बहुत दूर ।
सुदृढ़-(सं०वि०) बहुत दृढ, बहुत मज़बूत ।
सुदृश्य-(सं०वि०) देखने में सुन्दर ।
सुदृष्ट-(सं०वि०) अच्छी तरह देखा हुआ
सुदेव-(सं० पु०) उत्तम देवता ।
सुदेश-(सं० पु०) उत्तम देश, सुन्दर देश, उपयुक्त स्थान ।
सुदेष्णा-(सं० स्त्री०) विराट की पत्नी, कीचक की बहन ।
सुदेस-(हिं०पु०) देखो सुदेश, स्वदेश ।
सुदेह-(सं०पु०) सुन्दर शरीर (वि०) सुन्दर
सुदैव-(सं०पु०) सौभाग्य, अच्छा भाग्य ।
सुदोघ-(सं०वि०) उदार, दानशील ।
सुद्दा-(अ० स्त्री०) पेट का बहुत सूखा हुआ मल ।
सुद्ध-(हिं०वि०) देखो शुद्ध ।
सुद्धां-(हिं०अव्य०) समेत, सहित ।
सुद्धि-(सं०स्त्री०) देखो शुद्धि ।
सुद्युत-(सं० वि०) खूब प्रकाशमान ।

सुद्विज-(सं०पु०) उत्तम ब्राह्मण।
सुधंग-(हिं०पु०) अच्छा ढंग।
सुध-(हिं० स्त्री०) स्मरण, स्मृति, याद, चेतना, होश, खबर, पता, सुध दिलाना-स्मरण कराना, सुध न रहना-भूल जाना, सुध बिसरना-याद न रहना, सुध बिसारना-किसी को भूल जाना, सुध बिसारना-अचेत करना (हिं०वि०) शुद्ध।
सुधन-(सं०नपु०) प्रचुर धन, अमीरी।
सुधन्वा-(सं०वि०) उत्तम धनुष धारण करने वाला, (पु०) विश्वकर्मा, विष्णु, कुरु का एक पुत्र।
सुधबुध-(हि० स्त्री०) होश हवास, चेतना, ज्ञान।
सुधर-(हिं० पु०) बया नामक पक्षी।
सुधरना-(हिं० क्रि०) संशोधन होना, बिगड़े हुए का बनाना।
सुधराई-(हिं०स्त्री०) सुधरने की क्रिया, सुधारने का काम या मजदूरी, सुधार।
सुधर्म-(सं० पुं०) उत्तम धर्म, पुण्य, किन्नरों के एक राजा का नाम (वि०) धर्मपरायण।
सुधर्मा-(सं०स्त्री०) देवसभा।
सुधर्मी-(हिं०वि०) धर्मपरायण, धर्मनिष्ठ
सुधवाना-(हिं०क्रि०) शोधन करना, दुरुस्त करना।
सुधांग-(हिं०पु०) चन्द्रमा।
सुधांशु-(सं०पु०) चन्द्रमा, कपूर।
सुधांशुरत्न-(सं० नपु०) मोती।
सुधा-(सं० स्त्री०) अमृत, मकरन्द, थूहड़, गंगा, ईंट, बिजली, दूध, जल, हरीतकी, हर्रे, पृथ्वी, मधु, शहद, घर, चूना, अर्क, रस, विष, जहर, एक प्रकार का वृक्ष।
सुधाई-(हिं० स्त्री०) सिधाई, सीधापन।
सुधाकण्ठ-(सं०पु०) कोकिल, कोयल।
सुधाकर, सुधागेह-(सं०पु०) चन्द्रमा।
सुधाकार-(सं० पुं०) घरों में चूना चूहने वाला।
सुधाक्षार-(सं० पु०) चूने का खार।
सुधाक्षालित-(सं०वि०) चूना पोता हुआ।
सुधाङ्ग-(सं०पु०) चन्द्रमा।
सुधाघट-(सं० पु०) देखो सुधाकर, चन्द्रमा।
सुधात-(सं० वि०) अच्छी तरह धुला हुआ।
सुधातु-(सं०पु०) सुवर्ण, सोना।
सुधादीधिति-(सं०पु०) सुधांशु,चन्द्रमा।
सुधाधर-(सं० पु०) चन्द्रमा (वि०) जिसके अधर में अमृत हो।
सुधाधरण-(सं०पु०) चन्द्रमा।
सुधाधवल-(सं०वि०) चूने के समान सफेद।
सुधाधाम-(सं०पु०) चन्द्रमा।
सुधाधार-(सं०पु०) चन्द्रमा, अमृतपात्र
सुधाधारा-(सं०स्त्री०) अमृत की धारा।
सुधाधी-(सं०वि०) अमृत के समान।
सुधाधौत-(सं०वि०) सफेद किया हुआ।
सुधानजर-(हिं० वि०) दयावान्।
सुधाना-(हि० क्रि०) सोधने का काम दूसरे से कराना, ठीक या दुरुस्त कराना।
सुधानिधि-(सं० पु०) चन्द्रमा, समुद्र, दण्डक वृत्त का एक भेद।
सुधापाणि-(सं० पु०) पीयूषपाणि, धन्वन्तरि।
सुधाभुज्, सुधाभोजी-(सं०पु०) अमृत भोजन करने वाले देवता।
सुधाभृति-(सं०पु०) चन्द्रमा।
सुधामय-(सं०वि०) अमृत से भरा हुआ।
सुधामयूख-(सं०पु०) चन्द्रमा।
सुधामूली-(सं० स्त्री०) तालमिस्री।
सुधायोनि-(सं० पुं०) चन्द्रमा।
सुधार-(सं० पु०) सुधारने या दोष दूर करने की क्रिया, संस्कार।
सुधारक-(हिं०पु०) त्रुटियों का संशोधन करने वाला, संशोधक।
सुधारना-(हिं० क्रि०) संशोधन करना, बिगड़े को बनाना, सँवारना।
सुधारश्मि-(सं०पु०) सुधांशु, चन्द्रमा।
सुधारा-(हिं०वि०) सरल, सीधा।
सुधाव-(हिं०पु०) संशोधन, सुधार।
सुधावास-(सं० पु०) चन्द्रमा, खीरा।
सुधाश्रवा-(सं० पु०) अमृत बरसाने वाला।
सुधासदन-(सं०पु०) चन्द्रमा।
सुधासित-(सं०वि०) चूना पोता हुआ।
सुधासिन्धु-(सं०पु०) अमृत, समुद्र।
सुधासू (सं० पु०) अमृत उत्पन्न करने वाला, चन्द्रमा।
सुधाहर-(सं० पु०) गरुड़।
सुधि-(हिं०स्त्री०) देखो सुध।
सुधिति-(सं०पु०स्त्री०) कुठार,कुल्हाड़ी।
सुधी-(सं०पु०) पण्डित, विद्वान् (वि०) चतुर, धार्मिक, अच्छी बुद्धि वाला (स्त्री०) सुन्दर बुद्धि।
सुधीर-(सं०वि०) जिसमें बहुत धैर्य हो।
सुधृत-(सं०वि०) दृढता से पकड़ा हुआ।
सुधोद्भव-(सं० पु०) धन्वन्तरि।
सुधोद्भवा-(सं० स्त्री०) हरीतकी, हर्रे।
सुधौत-(सं०वि०) अच्छी तरह से धोया या साफ किया हुआ।
सुन-(हिं०वि०) देखो सुन्न।
सुनकिरवा-(हिं० पु०) एक प्रकार का हरे रंग का फतिंगा।
सुनक्षत्र-(सं०पुं०) शुभ नक्षत्र।
सुनक्षत्रा-(सं०स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुनखर्चा-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान
सुनगुन-(हिं०स्त्री०) किसी बात का भेद, टोह, सुराग, काना फुसकी।
सुनजर-(हिं०वि०) कृपालु, दयावान्।
सुनत-(अ०स्त्री०) देखो सुन्नत।
सुनना-(हिं०क्रि०) कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना, भली बुरी या उलटी सीधी बातें श्रवण करना, सुनी अनसुनी करना-किसी बात को सुन कर उस पर ध्यान न देना।
सुनन्द-(सं० नपु०) बलभद्र का मूसल।
सुनन्दन-(सं० पु०) कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सुनन्दा-(सं०स्त्री०) उमा, गौरी, भरत की पत्नी, सफेद गाय, गोरोचन,नारी, स्त्री, औरत, कृष्ण की एक पत्नी का नाम, एक तिथि का नाम।

सुनन्दिनी-(स० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम, इसको प्रबोधिता या मंजुभाषिणी भी कहते हैं।

सुनबहरी-(हिं० स्त्री०) श्लीपद, फीलपा का रोग।

सुनय-(स० पु०) उत्तम नीति।

सुनयन-(स० वि०) सुन्दर आँखों वाला।

सुनयना-(स० स्त्री०) राजा जनक की पत्नी का नाम।

सुनवाई-(हिं० स्त्री०) सुनने की क्रिया या भाव, मुकदमे की पेशी।

सुनवैया-(हिं० वि०) सुनने या सुनाने वाला।

सुनसर-(हिं० पु०) एक प्रकार का गहना।

सुनसान-(हिं० वि०) निर्जन, उजाड़, वीरान (पुं०) सन्नाटा।

सुनहरा,सुनहला-(हिं० वि०) सोने के रंग का।

सुनाई-(हिं० स्त्री०) देखो सुनवाई।

सुनाद-(स० पु०) शंख (वि०) उत्तम शब्द युक्त।

सुनाना-(हिं० क्रि०) दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना, कर्णगोचर कराना।

सुनाभ-(स० पु०) मैनाक पर्वत, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुनाम-(स० नपु०) यश, कीर्ति, ख्याति।

सुनामा-(हिं० वि०) यशस्वी, कीर्तिशाली।

सुनायक-(स०पुं०) कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

सुनार-(स० पु०) चटक, गौरैया, साप का अण्डा (हिं०पु०) सोने चादी का गहना बनाने वाला।

सुनारी-(हिं० स्त्री०) सुनार का काम, सुनार की स्त्री।

सुनाल-(सं० पुं०) लाल कमल।

सुनावनी-(हिं०स्त्री०) परदेश से किसी सम्बन्धी आदि का मृत्यु समाचार आना, ऐसा समाचार पाकर स्नान करना।

सुनासा-(स० स्त्री०) कौवाठोंठी का फूल।

सुनासिक-(स०वि०) सुन्दर नाक वाला।

सुनासिका-(स० स्त्री०) सुन्दर नाक।

सुनासीर-(स० पु०) इन्द्र।

सुनिकृष्ट-(स० वि०) अति निकृष्ट।

सुनिखात-(स० वि०) अच्छी तरह से खोदा हुआ।

सुनितम्बिनी-(स० स्त्री०) वह स्त्री जिसकी कमर बड़ी सुन्दर हो।

सुनिद्र-(स० वि०) अच्छी तरह सोया हुआ।

सुनिद्रा-(स० स्त्री०) गहरी नींद।

सुनिरज-(स० वि०) सहज में प्राप्त करने योग्य।

सुनिरूपित-(स० वि०) अच्छी तरह निर्णय किया हुआ।

सुनिर्मल-(स० वि०) खूब साफ।

सुनिर्मित-(स० वि०) अच्छी तरह से बना हुआ।

सुनिश्चय-(स० पु०) दृढ निश्चय।

सुनिश्चल-(स०वि०) अति स्थिर, दृढ।

सुनिश्चित-(स० वि०) अच्छी तरह निश्चित किया हुआ।

सुनिषण्ण-(स० वि०) अच्छी तरह से बैठा हुआ।

सुनिष्ठुर-(स० वि०) अति निर्दय।

सुनीति-(स० स्त्री०) अच्छी नीति, राजा उत्तानपाद की पत्नी जो ध्रुव की माता थी।

सुनील-(स० नपु०) लाल कमल (पु०) अनार का वृक्ष।

सुनेत्र-(स० पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

सुनैया-(हिं० वि०) सुनने वाला।

सुनोची-(हिं० पु०) एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्द-(स०पु०) एक राक्षस का नाम।

सुन्दर-(स० वि०) मनोहर, खूबसूरत, अच्छा, श्रेष्ठ, बढिया (पुं०) कामदेव, एक नाग का नाम।

सुन्दरता-(स० स्त्री०) खूबसूरती।

सुन्दरत्व-(स०नपु०) सुन्दरता।

सुन्दराया-(हिं० पुं०) सुन्दरता, खूबसूरती।

सुन्दरी-(सं०स्त्री०) रूप लावण्य सम्पन्न स्त्री, हल्दी, एक योगिनी का नाम।

सुन्न-(हिं०वि०) निर्जीव, निःस्तब्ध,(पु०) शून्य, सिफर।

सुन्नत-(अ० स्त्री०) मुसलमानों का एक रस्म जिसमें लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का बढा हुआ चमड़ा काट लिया जाता है, खतना।

सुन्नसान-(हिं०वि०) देखो सुनसान।

सुन्ना-(हिं० पु०) शून्य, विन्दु,सिफर।

सुन्नी-(अ० पु०) मुसलमानी धर्म का एक भेद, ये लोग चारो खलीफाओं को प्रधान मानते हैं।

सुपक-(स० वि०) अच्छी तरह पका हुआ।

सुपक्व (स० वि०) देखो सुपक।

सुपक्ष-(स० वि०) सुन्दर पखों वाला।

सुपच-(हिं०पु०) श्वपच, चाण्डाल, डोम।

सुपट-(स० पु०) सुन्दर वस्त्र।

सुपड़ा-(हिं० पु०) लगर का अंकुड़ा जो जमीन में धँस जाता है।

सुपत-(हिं०वि०) मान युक्त,प्रतिष्ठा युक्त।

सुपतिक-(हिं० पु०) रात को पड़ने वाला डाका।

सुपत्थ-(स० पु०) देखो सुपथ।

सुपत्र-(स० पु०) इंगुदी वृक्ष, हिंगोट, (नपु०) तेजपत्र, (वि०)सुदर पख वाला।

सुपत्रा-(स०स्त्री०) सतावर, पालक का साग, शालपर्णी।

सुपथ-(स०पु०) सन्मार्ग, अच्छा रास्ता, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं, (वि०) समतल, बराबर।

सुपथ्य-(स० नपु०) वह आहार या भोजन जो रोगी के लिये हितकर हो।

सुपद-(स०वि०) सुन्दर पैरों वाला।

सुपद्म-(स०नपु०) सुदर कमल।

सुपन-(हिं० पु०) स्वप्न, सपना।

सुपनक-(हिं० वि०) अच्छा सपना

देखने वाला।
सुपना–(हिं०पु०) स्वप्न, सपना।
सुपनाना–(हिं०क्रि०) स्वप्न दिखलाना।
सुपरकास–(हिं० पु०) ताप, गरमी।
सुपरडंट–(हि०पु०) देखो सुपरिन्टेन्डेंट्।
सुपरस–(हि०पु०) देखो स्पर्श।
सुपरन–(हि०पु०) देखो सुपर्ण।
सुपर् रायल्–(अ०पु०) कागज की एक नाप जो २९ इञ्च लम्बा और २२ इच चौड़ा होता है।
सुपरिन्टेन्डेन्ट्–(अ० पु०) निरीक्षण, निगरानी करने वाला।
सुपर्ण–(स०पु०) गरुड़, मुरगा, पक्षी, चिड़िया, विष्णु, अमलतास, नाग केसर, गन्धर्व, किरण, घोड़ा, सेना के व्यूह की एक प्रकार की रचना, सुदर पत्ता, (वि०) सुन्दर पत्तों वाला, सुदर परों वाला।
सुपर्णकेतु–(स०पु०) विष्णु।
सुपर्णराज–(स० पु०) पक्षिराज, गरुड़।
सुपर्णसद्–(स० पु०) विष्णु।
सुपर्णा–(स०स्त्री०) गरुड़ की माता का नाम, पद्मिनी, कमलिनी।
सुपर्णिका–(स०स्त्री०) शालपर्णी, बागुची।
सुपर्णी–(स०स्त्री०) देखो सुपर्णा, अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
सुपर्णीतनय–(स० पु०) गरुड़।
सुपलायित–(सं० वि०) गुप्त रूप से भागा हुआ।
सुपवित्र–(स०नपु०) अति पवित्र, एक छद जिसके पहले बारह अक्षर गुरु और बाकी लघु होते हैं।
सुपह्–(हि० पु०) राजा।
सुपात्र–(स० नपु०) अच्छा पात्र, वह जो किसी कार्य के लिये उपयुक्त हो, विद्या आदि गुण युक्त।
सुपार–(स० वि०) जिसके पार करने में कोई कठिनाई न हो।
पारी–(हिं०स्त्री०) नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसके फल टुकडे टुकडे काट कर पान के साथ खाये जाते हैं, पूगीफल, गुवाक।

सुपार्श्व–(स०पु०) जैनियों के चौबीस तीर्थङ्करों में से सातवें तीर्थङ्कर का नाम
सुपास–(हिं०पु०)सुख, आराम, सुविधा।
सुपासी–(हिं०वि०)आनद दायक, सुख देने वाला।
सुपिष्ट–(स०वि०)अच्छी तरह पीसा हुआ
सुपीत–(स०वि०) गहरे पीले रग का।
सुपुत्र–(स०पु०) उत्तम पुत्र, अच्छा बेटा।
सुपुरुष–(स० पु०) सत्पुरुष, सज्जन, भला आदमी।
सुपुर्द–(हि०पु०) देखो सपुर्द।
सुपुष्ट–(स०वि०) जो बहुत मजबूत हो।
सुपुष्प–(स० वि०) जिसमें सुदर फूल लगे हों।
सुपुष्पा–(स०स्त्री०) सौंफ, सतावर।
सुपून–(स०वि०) अत्यन्त पवित्र।
सुपूत–(हि०पुं०) अच्छा पुत्र।
सुपूती–(हिं० स्त्री०) सुपूत होने का भाव, अच्छे पुत्र वाली स्त्री।
सुपूर–(स०वि०)सहज में पूर्ण होने योग्य।
सुपूर्ण–(स०वि०) एक दम पूरा।
सुपेती–(हि०स्त्री०) देखो सफेदी।
सुपेद–(हि०वि०) देखो सफेद।
सुपेदी–हि०स्त्री०) देखो सफेदी।
सुपेली–(हि०स्त्री०) छोटा सूप।
सुपैदा–(हिं०पु०) देखो सफेदा।
सुप्त–(स०वि०) निद्रित, सोया हुआ, ठिठुरा हुआ, मरा हुआ, सुस्त।
सुप्तक–(स० नपु०) निद्रा, नीद।
सुप्तघातक–(स०वि०) निद्रित अवस्था में वध करने वाला।
सुप्तच्युत–(स०वि०) जिसकी नींद खुल गई हो।
सुप्तज्ञान–(स० नपु०) स्वन, सपना।
सुप्तता–(स० स्त्री०) निद्रा, नींद।
सुप्तप्रबुद्ध–(स०वि०) जो सोकर उठा हो
सुप्तवाक्य–(स०नपु०) निद्रा की अवस्था में कहे हुए शब्द।
सुप्तस्थ–(स०वि०) सोया हुआ।
सुप्ताङ्ग–(स०पु०) चेष्टा शून्य अग।
सुप्ताङ्गता–(स० स्त्री०) निश्चेष्टता।
सुप्ति–(स०स्त्री०) निद्रा, नींद, उंघाई।

सुप्रकाश–(स० वि०) उत्तम प्रकाश युक्त
सुप्रगुप्त–(स० वि०) अच्छी तरह छिपा हुआ।
सुप्रजा–(स० स्त्री०) अच्छी सन्तान, उत्तम प्रजा।
सुप्रजात–(स० वि०) जिसके बहुत से बाल बच्चे हों।
सुप्रज्ञ–(स० वि०) बहुत बुद्धिमान।
सुप्रतिज्ञ–(स०वि०) जो अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहे।
सुप्रतिज्ञा–(स०स्त्री०) दृढ प्रतिज्ञा।
सुप्रतिष्ठ–(स० वि०) जिसका सब लोग आदर सम्मान करते हों, बहुत प्रसिद्ध, बड़ा मशहूर।
सुप्रतिष्ठा–(स० स्त्री०) प्रसिद्धि, सुनाम, स्कन्द की एक मातृका नाम, एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पाच वर्ण होते हैं।
सुप्रतिष्ठान–(स० त्रि०) अच्छी प्रतिष्ठा।
सुप्रतिष्ठित–(स० वि०) उत्तम रूप से प्रतिष्ठित, (स० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
सुप्रतीक (स०पु०) शिव, कामदेव (वि०) सज्जन, सुरूप, सुन्दर।
सुप्रबुद्ध–(स० वि०) जिसको अच्छा बोध या ज्ञान हो।
सुप्रभ–(स० वि०) सुन्दर, खूबसूरत।
सुप्रभा–(स० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक, स्कन्द की एक मातृका का नाम, सुन्दर प्रकाश, सात सरस्वतियों में से एक।
सुप्रभात–(स०नपु०) मगल सूचक प्रातः काल।
सुप्रभाव–(स० पु०) सर्व शक्तिमान्।
सुप्रयुक्त–(स०वि०) अच्छी तरह प्रयोग में लाया हुआ।
सुप्रलम्भ–(स० वि०) सहज में मिलने योग्य।
सुप्रलाप–(स०पु०) सुन्दर भाषण।
सुप्रसन्न–(स०पु०) कुबेर (वि०) अत्यन्त निर्मल, बहुत प्रसन्न।
सुप्रसाद–(स० पु०) शिव, विष्णु, एक

असुर का नाम।
सुप्रसिद्ध–(सं० वि०) अति विख्यात, बहुत मशहूर।
सुप्राप्य–(सं० वि०) सुगमता से प्राप्त होने योग्य।
सुप्रिय–(सं० वि०) बहुत प्यारा, एक गन्धर्व का नाम।
सुप्रिया–(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, सोलह मात्राओं का एक वृत्त जिसमें अन्तिम वर्ण के अतिरिक्त सब वर्ण लघु होते हैं, एक प्रकार की चौपाई।
सुप्रीम कोर्ट–(अं० पु०) प्रधान या उच्च न्यायालय।
सुप्रौढ–(सं०वि०)अति वृद्ध, बहुत बूढा।
सुफरा–(हि०पु०) टेबुल पर बिछाने का कपड़ा।
सुफल–(सं० पु०) कैथ, बादाम, अनार, मूंग, (नपु०) सुन्दर फल, अच्छा परिणाम (वि०) सुन्दर फल वाला, कृतार्थ, कामयाब।
सुफला–(सं० स्त्री०) इन्द्रवारुणी, कुम्हड़ा, मुनक्का (वि०) सुन्दर फल देने वाली।
सुफेद–(हि०पु०) देखो सफेद।
सुबड़ी–(हि०पु०) टलही चादी।
सुबन्ध–(सं० वि०) अच्छी तरह बधा हुआ।
सुबन्धु–(सं०पु०) अच्छा मित्र।
सुबरनी–(हि०स्त्री०) छड़ी।
सुबल–(सं०पु०) गान्धार का एक राजा जो शकुनि का पिता और धृतराष्ट्र का ससुर था।
सुबह–(अ०स्त्री०) प्रात काल, सवेरा।
सुबहान–(हि०पु०) देखो सुभान।
सुबहान अल्ला–(अ०अव्य०) अरबी का एक पद जिसका प्रयोग आश्चर्य हर्ष आदि को प्रकट करने के लिये होता है, वाह वाह।
सुबहुश्रुत–(सं०त्रि०) सर्वशास्त्रज्ञ।
सुबाल–(सं०पु०) अच्छा बालक।
सुबास–(हि०स्त्री०) सुगन्ध, अच्छी महक, सुन्दर निवास स्थान, एक प्रकार का धान
सुबासना–(हि०स्त्री०) सुगन्ध (हि० क्रि०) सुगन्धित करना, महकाना।
सुबासित–(हि०वि०) देखो सुवासित।
सुबाहु–(सं० वि०) दृढ़ या सुन्दर बाहु वाला, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम, एक दानव का नाम, शत्रुघ्न का एक पुत्र
सुबाहुशत्रु–(सं० पु०) श्रीरामचन्द्र।
सुबिस्ता, सुबीता–(हि०पु०)देखो सुभीता
सुबुक–(फा०वि०) हलका, कम बोझ का, सुन्दर, खूबसूरत पु०)घोडे की एक जाति
सुबुद्धि–(सं० वि०) बुद्धिमान्, उत्तम बुद्धि वाला, (स्त्री०) उत्तम बुद्धि।
सुबुध–(सं०वि०) सावधान, बुद्धिमान।
सुबू–(हि०पु०) देखो सुबह।
सुबूत–(हि०पु०) देखो सबूत, प्रमाण।
सुबोध–(सं० वि०) उत्तम ज्ञानयुक्त, अच्छी बुद्धि वाला, जो किसी बात को सहज में समझ सके।
सुबोधन–(सं० नपु०) अच्छी तरह जानना, (वि०) अच्छी तरह जाना हुआ।
सुबोधिनी–(सं०स्त्री०)अच्छी ज्ञान वाली
सुब्रह्मण्य–(सं०पु०)शिव, विष्णु, कार्तिकेय, दक्षिण भारत का एक प्राचीन प्रान्त।
सुभ–(हि०वि०) देखो शुभ।
सुभक्ष्य–(सं०नपु०) उत्तम भोजन द्रव्य।
सुभग–(सं०वि०)सुन्दर, मनोहर, भाग्यवान्, आनन्द दायक, प्रिय, सुखद (पु०) गन्धक, सोहागा, चम्पा, शिव, अशोक
सुभगता–(सं०स्त्री०) सौन्दर्य, प्रेम।
सुभगा–(सं० स्त्री०) वह स्त्री जो पति की प्यारी हो, हल्दी, तुलसी, कस्तूरी, बेला, मोतिया, चमेली, स्कन्द की एक मातृका का नाम, पाच वर्ष की कुमारी, एक प्रकार की रागिणी।
सुभग्ग–(हि०पु०) देखो सुभग।
सुभङ्ग–(सं०पु०) नारियल का वृक्ष।
सुभट–(सं०पु०)बड़ा योद्धा, अच्छा सैनिक
सुभट्ट–(सं०पु०) बहुत बड़ा पण्डित।
सुभड़–(हि०पु०) सुभट, शूर वीर।
सुभद्र–(सं०पु०)मगल, कल्याण, सौभाग्य, श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, विष्णु, सनत्कुमार (वि०) भाग्यवान्, सज्जन।
सुभद्रक–(सं०पु०) बेल का वृक्ष।
सुभद्रा–(सं० स्त्री०) दुर्गा का एक रूप, सगीत में एक श्रुति का नाम, श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी, अनिरुद्ध की पत्नी का नाम।
सुभद्रिका–(सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की छोटी बहन, एक वृत्त का नाम।
सुभद्रेश–(सं०पु०) अर्जुन।
सुभर–(सं०वि०)सम्पूर्ण, एकदम भरा हुआ
सुभव–(सं०पु०) साठ सवत्सरों में से अन्तिम सवत्सर का नाम।
सुभा–(सं० स्त्री०) शोभा, पर नारी, हरें।
सुभाइ, सुभाउ–(हि० पु०) देखो स्वभाव, (क्रि०वि०)स्वभावत, सहज भाव से।
सुभाग–(हि०पु०) सौभाग्य, भाग्यवान्।
सुभागी–(हि०वि०)भाग्यवान्, भाग्यशाली।
सुभागीन–(हि०पु०) सुभग, भाग्यवान्।
सुभाग्य–(हि०वि०) बड़ा भाग्यवान्।
सुभाञ्जन–(सं०पु०) सहिजन का वृक्ष।
सुभान–(अ० अव्य०) धन्य, वाहवाह।
सुभाना–(हि०क्रि०) शोभित होना।
सुभानु–(सं०पु०)श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम
सुभाय–(हि० पु०) स्वभाव।
सुभायक–(हि०वि०) स्वाभाविक।
सुभाव–(हि०पु०) स्वभाव।
सुभाषण–(सं०नपु०) सुन्दर भाषण।
सुभाषित–(सं०वि०) अच्छी तरह कहा हुआ (नपु०) सुवाक्य।
सुभाषी–(हि०वि०) मधुर बोलने वाला।
सुभिक्ष–(सं०पु०) ऐसा समय जिसमें भोजन खूब मिले और अन्न खूब हो, सुकाल।
सुभिषज्–(सं० वि०) अच्छी चिकित्सा करने वाला।
सुभी–(हि०वि०) शुभकारक, मगलकारक।
सुभीत–(सं०वि०) खूब डरा हुआ।
सुभीता–(हि०पु०) सुगमता, आसानी, सुयोग, चैन, आराम।
सुभीम–(सं० वि०) बहुत डरावना।
सुभीमा–(सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।
सुभीरक–(सं०पु०) पलास का वृक्ष।

सुभीरु-(सं०वि०) बड़ा डरपोक।
सुभुक्त-(सं० वि०) अच्छी तरह खाया हुआ।
सुभुज-(सं०वि०) सुन्दर भुजाओं वाला।
सुभुजा-(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
सुभूति-(सं०स्त्री०) उन्नति, तरक्की।
सुभूमि-(सं०स्त्री०) अच्छी ज़मीन।
सुभूषण-(सं०नपुं०) उत्तम अलकार।
सुभूषित-(सं०वि०) भलीभाँति अलङ्कृत।
सुभेषज-(सं०नपुं०) उत्तम औषधि।
सुभोग्य-(सं० वि०) अच्छी तरह भोगने योग्य।
सुभोज-(सं०नपुं०) उत्तम भोजन।
सुभौटी-(हिं०स्त्री०) शोभा।
सुभ्र (सं०पुं०) देखो शुभ्र।
सुभ्रु-(सं० स्त्री०) उत्तम भ्रू, सुन्दर भौंह, स्कन्द की एक मातृका का नाम।
सुम-(सं०नपुं०) पुष्प, चन्द्रमा आकाश।
सुम-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष, (फा० पुं०) घोड़े आदि चौपायों का खुर, टाप।
सुमङ्गल-(सं० वि०) अत्यन्त शुभ, कल्याणकारी।
सुमङ्गला-(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, स्कन्द की एक मातृका का नाम।
सुमङ्गली-(हिं० स्त्री०) विवाह में सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा।
सुमत-(सं०वि०) ज्ञानवान्, बुद्धिमान्।
सुमतराश-(फा०पुं०) घोड़े के नाखून या खुर काटने का औजार।
सुमति-(सं० पुं०) भरत के एक पुत्र का नाम, (वि०) सुबुद्धि, अच्छी मति, भक्ति, प्रार्थना, सारिका, मैना, मेलजोल (वि०) अत्यन्त बुद्धिमान् अच्छी बुद्धि वाला।
सुमद-(सं०वि०) मदोन्मत्त, मतवाला (पुं०) श्री रामचन्द्र की सेना का एक वानर सेनापति।
सुमदुम-(हिं०वि०) स्थूल, मोटा।
सुमधुर-(सं०वि०) रस युक्त, बहुत मीठा।
सुमध्यमा-(सं०स्त्री०) सुन्दर कमर वाली।
सुमन-(सं०पुं०) गेंहू, धतूरा, (वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुमनचाप-(सं०पुं०) कामदेव।
सुमनस्-(सं० पुं०) देवता, पण्डित, एक दानव का नाम, पुष्प, फूल, (वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुमनस्क-(सं०वि०) प्रसन्न, खुश, सुखी।
सुमना-(सं०स्त्री०) चमेली, सेवती, कैकेयी।
सुमनामुख-(सं०वि०) सुन्दर मुख वाला।
सुमनिक-(हिं० वि०) सुन्दर रत्न जड़ा हुआ।
सुमनोहर-(सं०वि०) बड़ा सुन्दर।
सुमनौकस्-(सं०पुं०) स्वर्ग।
सुमन्त्र-(सं० पुं०) राजा दशरथ का मन्त्री और सारथि।
सुमन्त्रित-(सं०वि०) अच्छी तरह से मन्त्रणा किया हुआ।
सुमन्त्री-(सं०पुं०) कुशल मन्त्री।
सुमन्द्र-(सं०पुं०) मधुर ध्वनि एक वृत्त जिसको सरसी भी कहते हैं।
सुमरन-(हिं० पुं०) देखो सुमरनी।
सुमरना-(हिं०क्रि०) स्मरण करना, ध्यान करना, बारबार नाम लेना।
सुमरनी-(हिं० स्त्री०) नाम जपने की छोटी माला जिसमें सत्ताईस दाने होते हैं।
सुमरीचिका-(सं० स्त्री०) सांख्य के अनुसार पाच बाह्य तुष्टियों में से एक।
सुमसुखड़ा-(हिं० वि०) जिसका सुम सूख कर सिकुड गया हो।
सुमहत्-(सं० वि०) बहुत, अनेक।
सुमहाबल-(सं० वि०) बड़ा बलवान।
सुमहाबाहु-(सं० वि०) जिसकी भुजा बहुत लम्बी हो।
सुमहारथ-(सं० पुं०) बड़ा वीर पुरुष।
सुमाता-(सं० स्त्री०) सुन्दर माता, उत्तम माता।
सुमानिका-(सं० स्त्री०) सात अक्षरों का एक वृत्त।
सुमानस-(सं० वि०) सहृदय, अच्छे मन का।
सुमार्ग-(सं० पुं०) उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता।
सुमालती, सुमालिनी-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ६ अक्षर होते हैं।
सुमाली-(सं० पुं०) एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण कुम्भकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे।
सुमित्र-(सं० पुं०) कृष्ण के एक पुत्र का नाम, अभिमन्यु के सारथी का नाम।
सुमित्रा-(सं० स्त्री०) राजा दशरथ की पत्नी, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता।
सुमित्रानन्दन-(सं० पुं०) लक्ष्मण और शत्रुघ्न।
सुमिरनी-(हिं० स्त्री०) देखो सुमरनी।
सुमिरण-(हिं० पुं०) देखो स्मरण।
सुमिरना-(हिं० क्रि०) नाम जपना।
सुमुख-(सं० पुं०) गणेश, गरुड़ के पुत्र का नाम, शिव, किन्नरों का राजा, पण्डित, आचार्य, सफेद तुलसी, एक, प्रकार का जलपक्षी, सुन्दर मुख (वि०) सुन्दर, मनोहर प्रसन्न, कृपालु।
सुमुखा-(सं० स्त्री०) सुन्दर स्त्री, दर्पण, आइना।
सुमुखी-(सं० स्त्री०) सुन्द मुख वाली स्त्री, एक अप्सरा का नाम, सगीत में एक प्रकार की मूर्छना, एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
सुमुहूर्त-(सं०पुं०)(नपुं०) शुभ समय।
सुमूलक-(सं० नपुं०) गाजर।
सुमूषित-(सं०वि०) वंचित, ठगा हुआ।
सुमृग-(सं० नपुं०) वह भूमि जहांपर बहुत से जगली जानवर हों।
सुमृति-(हिं०स्त्री०) देखो स्मृति।
सुमृत्यु-(सं०पुं०) अच्छी मृत्यु।
सुमेध, सुमेधा-(सं० स्त्री०) मालकगनी (वि०) उत्तम बुद्धि वाला, बुद्धिमान्।
सुमेर-(हिं० पुं०) देखो सुमेरु।
सुमेरु-(सं० पुं०) पुराण के अनुसार पृथ्वी का मध्यस्थ पर्वत, जयमाला के बीच का दाना, शिव, उत्तरी ध्रुव, (वि०) अति सुन्दर, बहुत ऊंचा (पुं०) एक

वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह मात्रायें होती हैं।
सुमेरुवृत्त-(स० पु०) वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।
सुमेरुसमुद्र-(सं० पु०) उत्तर महासागर।
सुम्मा-(हिं०पु०) बकरा।
सुम्मी-(हि० स्त्री०) धातु में ठोक कर छिद्र करने का औज़ार।
सुम्हार-(हिं०पु०) एक प्रकार का धान।
सुयक्ष-(स० पु०) अच्छा यश।
सुयत-(स०वि०) जितेन्द्रिय।
सुयश-(स०वि०) अति यशस्वी, उत्तम यश वाला (पु०) सुकीर्ति, अच्छा यश।
सुयशा-(स० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम परीक्षित की एक पत्नी का नाम।
सुयुक्त-(सं० वि०) अच्छी तरह से मिला हुआ।
सुयुक्ति-(स० स्त्री०) अच्छी सलाह।
सुयुद्ध-(स० नपु०) न्याय सगत युद्ध, धर्मयुद्ध।
सुयोग-(स०पु०) सयोग, अच्छा मौका।
सुयोग्य-(स०वि०) बहुत योग्य, काबिल।
सुयोधन-(स० पु०) धृतराष्ट्र के ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन।
सुरंग-(हिं० स्त्री०) देखो सुरङ्ग।
सुर-(स० पु०) देवता, सूर्य, पण्डित, स्वर, ध्वनि, ऋषि, मुनि, सुर मे सुर मिलाना-हा में हा करना, शुश्रूषा करना।
सुरक-(स० पु०) नाक पर भाल की आकृति का तिलक, (हिं० स्त्री०) सुरकने की क्रिया या भाव।
सुरकना-(हि०क्रि०) वायु के साथ धीरे धीरे ऊपर की ओर खिंचना।
सुरकरी-(स० पु०) देवताओं का हाथी, दिग्गज।
सुरकानन-(स०पु०) देवताओं के विहार करने का वन।
सुरकामिनी-(स०स्त्री०) अप्सरा।
सुरकामुक-(स०नपु०) इन्द्रधनुष।
सुरकार्य-(स०नपु०) देवताओं का काम-
सुरकाष्ठ-(स०नपु०) देवदारु।
सुरकुल-(स०पु०) देवताओं का निवास स्थान।
सुरकृत-(स० पु०) विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, (वि०) देवताओं से किया हुआ।
सुरकुदाव-(हि०पु०) धोखा देने के लिये बोली बदल कर बोलना।
सुरकेतु-(स०पु०) इन्द्र, इन्द्र की ध्वजा।
सुरक्त-(स० वि०) अति अनुरक्त।
सुरक्ष-(स० वि०) अच्छी तरह रक्षा किया हुआ।
सुरक्षण-(स०पु०) रखवाली, हिफाजत।
सुरक्षित-(सं० वि०) अच्छी तरह से रक्षा किया हुआ।
सुरख-(हिं० वि०) देखो सुर्ख।
सुरखवा-(फा० पुं०) चकवा।
सुरखिया-(फा० पुं०) एक प्रकार की चिड़िया।
सुरखी-(फा० स्त्री०) महीन पीसा हुआ ईंटा जो इमारत बनाने के काम में लाया जाता है, देखो सुर्खी।
सुरखुरू-(फा०वि०) देखो सुर्खरू।
सुरग-(हि०पु०) स्वर्ग।
सुरगज-(हि० पु०) इन्द्र का हाथी।
सुरगण-(स०पु०) देवताओं का समूह।
सुरगति-(स०स्त्री०) देवगति।
सुरगवेसा-(हि० स्त्री०) अप्सरा।
सुरगर्भ-(स०पुं०) देवसन्तान।
सुरगाय-(हिं० स्त्री०) कामधेनु।
सुरगायक-(स०पु०) गन्धर्व।
सुरगिरि-(स०पु०) सुमेरु पर्वत।
सुरगी-(हि०पु०) देखो स्वर्गीय, देवता।
सुरगी नदी-(हिं०स्त्री०) गगा।
सुरगुरु-(सं०पु०) देवताओं के गुरु, बृहस्पति।
सुरगैया-(हि०स्त्री०) कामधेनु।
सुरंग-(स० नपु०) हिंगुल, सिंगरिफ, नारगी, (वि०) अच्छे रग का, सुदर, रसपूर्ण, (हिं०स्त्री०) जमीन या पहाड़ खोद कर बनाया हुआ रास्ता, वह सूराख जो चार लोग बनाते हैं, सेंध।
सुरग धातु-(स०पु०) गेरू।
सुरंगी-(स०स्त्री०) कौवाठोंठी।
सुरचाप-(स०पु०) इन्द्रधनुष।
सुरज-(हि०पु०) देखो सूर्य।
सुरजन-(स० पु०) देवताओं का समूह, सज्जन, चतुर।
सुरजनपन-(हिं०पु० चतुराई, चालाकी।
सुरजनी-(स०स्त्री०) चादनी रात।
सुरज्येष्ठ-(स० पुं०) देवताओं में श्रेष्ठ, ब्रह्मा।
सुरझन-(हि०स्त्री०) देखो सुलझन।
सुरझना-(हि० क्रि०) देखो सुलझना।
सुरझाना-(हि०क्रि०) देखो सुलझाना।
सुरटीप-(हि०स्त्री०) सुर की तान।
सुरत-(स०नपु०) कामकेलि, रतिक्रीड़ा, मैथुन।
सुरत-(हिं०स्त्री०) ध्यान, याद, सुरत बिसारना- भूल जाना।
सुरतरगिणी-(स०स्त्री०) गगा।
सुरतरु-(स० पु०) देवतरु कल्पवृक्ष।
सुरता-(स० स्त्री०) देवता का भाव, धर्म या कार्य, देवसमूह, सभोग का आनन्द, एक अप्सरा का नाम।
सुरता-(हिं० पु०) वह बाँस की नली जिसमें अन्न के दाने डाल कर बोया जाता है (हिं० स्त्री०) चिन्ता, ध्यान, चेत, सुध।
सुरतात-(स० पुं०) देवताओं के पिता कश्यप।
सुरतान-(हि० स्त्री०) स्वर का अलाप।
सुरति-(हिं०स्त्री०) भोग विलास, विहार, सभोग, स्मरण, सुध, चेत, देखो सूरत।
सुरतिगोपना-(स०स्त्री०) वह नायिका जो रतिक्रीड़ा करके आई हो और अपनी सखियों से छिपाती हो।
सुरतिवन्त-(हिं० वि०) कामातुर।
सुरतिविचित्रा-(स० स्त्री०) वह मध्य नायिका जिसकी रति क्रिया विचित्र हो
सुरती-(हिं० स्त्री०)तमाखू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ खाया जाता है।
सुरत्न-(स० नपु०) सोना, मानिक (वि०) उत्तम रत्नों से युक्त, सर्वश्रेष्ठ।
सुरत्राण,सुरत्राता-(हि० पु०) विष्णु,

श्रीकृष्ण, इन्द्र ।
सुरथ-(सं० पु०) एक चन्द्रवंशीय राजा जिन्होंने पृथ्वी पर पहले पहल दुर्गा की पूजा किया था और देवी के वरदान से सावर्णि नामक मनु हुए थे, एक पर्वत का नाम ।
सुरथान (हिं० पु०) स्वर्ग ।
सुरदार-(हिं० वि०) जिसके गले का स्वर सुन्दर हो, सुरीला ।
सुरदारु-(सं०नपु०) देवदार का वृक्ष ।
सुरदीर्घिका-(सं० स्त्री०) आकाशगगा, मन्दाकिनी ।
सुरदुन्दुभि-(सं० स्त्री०) देवताओं का नगाडा ।
सुरदेवी-(सं० स्त्री०) योगमाया जिसने यशोदा के गर्भ से जन्म लिया था ।
सुरदेश-(हिं० पु०) देवलोक, स्वर्ग ।
सुरद्रुम-(सं० पु०) कल्पवृक्ष ।
सुरद्विप-(सं०पु०) ऐरावत हाथी ।
सुरद्विष्-(सं०पु०) असुर, राक्षस ।
सुरधाम-(हिं०पु०) देवलोक, स्वर्ग ।
सुरधुनी (हिं०स्त्री०) मन्दाकिनी, गगा ।
सुरधेनु-(सं०स्त्री०) कामधेनु।
सुरनगर-(सं० पु०) स्वर्ग ।
सुरनदी-(सं०स्त्री०) आकाशगगा, गगा ।
सुरनाथ, सुरनायक-(सं०पु०) इन्द्र ।
सुरनारी-(सं०स्त्री०) देवागना ।
सुरनाह-(सं०पु०) देवराज, इन्द्र ।
सुरनिम्नगा-(सं०स्त्री०) गगा ।
सुरनिलय-(सं०पु०) सुमेरु पर्वत ।
सुरपति-(सं०पु०) देवराज इन्द्र ।
सुरपतिगुरु-(सं०पु०) वृहस्पति ।
सुरपतिचाप-(सं०पु०) इन्द्रधनुष ।
सुरपतितनय-(सं० पु०) अर्जुन ।
सुरपथ-(सं०नपु०) आकाश ।
सुरपर्वत-(सं०पु०) सुमेरु पर्वत ।
सुरपाल-(सं०पु०) इन्द्र ।
सुरपुर-(सं०नपु०) अमरावती ।
सुरप्रिय-(सं०पु०) अगस्त्य, इन्द्र, वृहस्पति ।
सुरप्रिया-(सं०स्त्री०) जातीपुष्प, चमेली ।
सुरफाँक ताल-(हिं० पु०) मृदग का एक ताल ।

सुरबहार-(फा०पु०) सितार की तरह का एक बाजा ।
सुरबुली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पौधा जिसको चिरवल भी कहते हैं ।
सुरवृच्छ-(हिं० पु०) देखो सुरवृक्ष ।
सुरबेल-(हिं० स्त्री०) कल्पलता ।
सुरभग-(हिं० पु०) स्वर का विपर्यास जो प्रेम आनन्द भय आदि के कारण उत्पन्न होता है ।
सुरभवन-(सं०पु०) देवताओं का निवास स्थान, मन्दिर, सुरपुरी, अमरावती ।
सुरभान-(हिं०पु०) इन्द्र, सूर्य ।
सुरभि-(सं०नपु०) सोना, सुगध, खुशबू, चम्पा, जायफल, वसन्त ऋतु, कदम्ब वृक्ष, मौलसिरी चैत का महीना, (स्त्री०) सलई, गाय, पृथ्वी, तुलसी, सुरा, शराब, कार्तिकेय की एक मातृका का नाम, (वि०) सुगंधित, सुन्दर, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध ।
सुरभिगन्ध-(सं०नपु०) तेजपत्ता ।
सुरभिगन्धा-(सं०स्त्री०) चमेली ।
सुरभिच्छद-(सं०पु०) कपित्थ, कैथ ।
सुरभित-(सं०पु०) सुगंधित ।
सुरभिता-(सं०स्त्री०) खुशबू ।
सुरभिपुत्र-(सं०पु०) साँड़, बैल ।
सुरभिमास-(सं०पु०) चैत का महीना ।
सुरभिमुख-(सं० पु०) वसत ऋतु का आरम्भ ।
सुरभिवल्कल-(सं०नपु०) दारचीनी ।
सुरभिबाण-(सं०पु०) कामदेव ।
सुरभिषक-(सं० पु०) अश्विनी कुमार ।
सुरभिसमय-(सं०पु०) वसन्त ।
सुरभी-(सं० स्त्री०) सुगन्ध, खुशबू, केवाच, रुद्रजटा, चन्दन, गाय ।
सुरभीगोत्र-(सं० नपु०) बैल ।
सुरभीपुर-(सं० नपु०) गोलोक ।
सुरभूप-(सं० पु०) इन्द्र, विष्णु ।
सुरभोग-(सं० पुं०) अमृत ।
सुरभौन-(हिं०पु०) देखो सुरभवन ।
सुरमई-(फा० वि०) हलके नीले रग का, (पु०) सुरमे के समान रग, इस रग का कबूतर ।
सुरमचू-(फा० पु०) सुरमा लगाने की सलाई ।

सुरमणि-(सं०पु०) चिन्तामणि ।
सुरमणीय-(सं०वि०) अति सुन्दर ।
सुरमण्डल-(सं० पु०) देवताओं का मण्डल, एक प्रकार का बाजा ।
सुरमा-(फा० पु०) नीले रग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखों में लगाया जाता है, रसाञ्जन ।
सुरमादानी-(फा०स्त्री०) शीशीनुमा पात्र जिसमें सुरमा रक्खा जाता है ।
सुरमै-(हिं०वि०) देखो सुरमई ।
सुरमौर-(हिं० पु०) देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु ।
सुरम्य-(सं०वि०) बहुत सुन्दर ।
सुरयान-(सं० पु०) देवताओं का रथ ।
सुरयुवती-(सं०स्त्री०) अप्सरा ।
सुरराज-(सं० पु०) सुरपति, इन्द्र ।
सुरराजगुरु-(सं०पु०) वृहस्पति ।
सुरराला-(हिं०पु०) इन्द्र ।
सुररिपु-(सं० पुं०) देवताओं के शत्रु, राक्षस ।
सुररुख-(हिं०पु०) कल्पवृक्ष ।
सुरलासिका-(सं०स्त्री०) वसी की ध्वनि, बासुरी ।
सुरली-(हिं०स्त्री०) सुन्दर कीड़ा ।
सुरलोक-(सं०पु०) स्वर्ग ।
सुरलोकसुन्दरी-(सं०स्त्री०) अप्सरा ।
सुरवधू-(सं०स्त्री०) देवताओं की पत्नी ।
सुरवर-(सं०पु०) इन्द्र ।
सुरवर्त्म-(सं० पु०) आकाश ।
सुरवल्ली-(सं० स्त्री०) तुलसी ।
सुरवस-(हिं० पु०) जुलाहों की पतली छड़ी जिसका व्यवहार वे ताना तैयार करने में करते हैं ।
सुरवा-(हिं० पु०) देखो सुवा ।
सुरवाणी-(सं० स्त्री०) सस्कृत भाषा ।
सुरवाल-(फा०पु०) पायजामा ।
सुरवास-(सं०पु०) देवस्थान, स्वर्ग ।
सुरवाहिनी-(सं०स्त्री०) गगा नदी ।
सुरविटप-(सं०पु०) कल्पवृक्ष ।
सुरवीथी-(सं० स्त्री०) नक्षत्रों का मार्ग ।

सुरवीर-(स० पु०) इन्द्र ।
सुरवेश्म-(स० पु०) स्वर्ग ।
सुरवृक्ष-(स०पु०) कल्पतरु ।
सुरवैरी, सुरशत्रु-(स०पु०) देवताओं के शत्रु, असुर ।
सुरशत्रुहन्-(स०पु०) शिव, महादेव ।
सुरशयनी-(स० स्त्री०) आषाढ शुक्ला एकादशी ।
सुरशाखी-(स०पु०) कल्पवृक्ष ।
सुरशिल्पी-(सं०पु०) विश्वकर्मा ।
सुरश्रेष्ठ-(स०पु०) विष्णु, शिव, इन्द्र, गणेश ।
सुरस-(स०वि०) स्वादिष्ट,सुन्दर रसीला ।
सुरसती-(हि०स्त्री०) देखो सरस्वती ।
सुरसख-(स०पु०) देवताओं के सखा, इन्द्र ।
सुरसत्तम-(स० पु०) देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु ।
सुरसदन, सुरसद्म-(स० पु०) अमरपुरी, स्वर्ग ।
सुरसद्म-(स० पु०) स्वर्ग ।
सुरसर-(हि० पु०) मानसरोवर ।
सुरसरसुता-(स०स्त्री०) सरयू नदी ।
सुरसरि, सुरसरिता-(स०स्त्री०) गगा नदी, कावेरी ।
सुरसा-(स०स्त्री०) तुलसी, सौंफ, ब्राह्मी, सतावर, पुनर्नवा, सर्पगन्धा, वनभटा, एक प्रकार की रागिणी, एक प्रकार का वृत्त, एक प्रसिद्ध नागमाता जो समुद्र में रहती थी जिसने हनुमान् को समुद्र पार करती समय रोका था, दुर्गा का एक नाम, एक अप्सरा का नाम ।
सुरसाई-(हि०पु०) इन्द्र, शिव ।
सुरसारी-(हि० स्त्री०) देखो सुरसरी ।
सुरसालु-(हि०पु०) दानव,असुर,राक्षस ।
सुरसाहब-(हि०पु०) देवताओं के स्वामी।
सुरसिन्धु-(स०पु०) गगा ।
सुरसुत-(स०पु०) देवपुत्र ।
सुरसुन्दर-(स०वि०) अत्यन्त सुन्दर ।
सुरसुन्दरी-(स०स्त्री०) अप्सरा, दुर्गा, योगिनी विशेष ।
सुरसुरभी-(स० स्त्री०) कामधेनु ।
सुरसुराना-(हि० क्रि०) खुजली होना, कीड़ों का रेंगना ।
सुरसुराहट-(हि०स्त्री०) खुजली, गुदगुदी
सुरसुरी-(हि०स्त्री०) देखो सुरसुराहट ।
सुरसेना-(स०स्त्री०)देवताओं की सेना।
सुरसैनी-(हि०स्त्री०) देखो सुरशयनी ।
सुरस्कंद-(स० पु०) असुर ।
सुरस्त्री-(स०स्त्री०) अप्सरा ।
सुरस्थान-(स०नपु०) देवलोक, स्वर्ग ।
सुरस्वामी-(स० पु०) देवताओं के स्वामी, इन्द्र ।
सुरहरा-(हि०वि०)सुरसुर शब्द से युक्त।
सुरही-(हि०स्त्री०) सोलह चित्ती कौड़िया जिससे जुआ खेला जाता है, चमरी गाय
सुरा-(स०स्त्री०)मद्य, शराब, जल, पानी।
सुराई-(हि०स्त्री०) शूरता, वीरता ।
सुराकर-(स० पु०) नारियल का पेड़।
सुराकार-(स०पु०)शराब बनाने वाला ।
सुराख़-(फा० पु०) छिद्र, छेद ।
सुराग-(हि०पु०)सुन्दर राग,अत्यत प्रेम।
सुराग-(अ०पु०) सूत्र, टोह, पता ।
सुरगाय-(हि०स्त्री०,एक प्रकार की जगली गाय जिसकी पूछ का चमर बनता है।
सुरागार सुरागृह-(स०नपु० शराबखाना
सुराङ्गना-(स०स्त्री०) देवपत्नी,अप्सरा ।
सुराचार्य(स०पु०) बृहस्पति ।
सुराज-(हि०पु०) देखो स्वराज्य ।
सुराजिका-(स०स्त्री०) छिपकली ।
सुराजीव-(स० पु०) विष्णु ।
सुराज्य-(स०पु०) वह राज्य या शासन जिसमें प्रजा को सुख और शाति मिले।
सुराथी-(हि०स्त्री०) वह लकड़ी का डडा जिससे पीट कर अन्न के दाने अलगाये जाते हैं।
सुराधिप, सुराधीश-(स०पु०)देवताओं के अधिपति, इन्द्र ।
सुराध्यक्ष-(स०पु०) ब्रह्मा, कृष्ण,शिव ।
सुरानीक-(स०पु०) देवताओं की सेना ।
सुरापगा-(स० स्त्री०) गगा नदी ।
सुरापान-(स० पु०) शराब पीना ।
सुरापात्र-(स० पु०) मदिरा रखने का बरतन ।
सुरामत्त-(स०वि०)शराब के नशे में चूर।
सुरायुध-(स०नपु०)देवताओं का अस्त्र।
सुरारि-(स० पु०) असुर, राक्षस ।
सुरारिहन्ता-(स०पु०) विष्णु ।
सुरालय-(स० पु०) देवताओं का वासस्थान ।
सुरावती, सुरावनि-(स० स्त्री०) कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता,पृथ्वी
सुरावास, सुराश्रय-(स० पु०) सुमेरु पर्वत ।
सुराष्ट्र-(स०पु०) एक प्राचीन देश का नाम जो भारत के पश्चिम में था ।
सुराष्ट्रजा-(स० स्त्री०) गोपीचन्दन ।
सुरासार-(स०पु०) मद्यसार, स्पिरिट ।
सुरासुर-(स० पु०) देवता और दानव ।
सुरासुरगुरु-(स० पु०) शिव, कश्यप ।
सुराही-(अ० स्त्री०) जल रखने का पात्र जिसका मुख नली के आकार का दूर तक निकला होता है, सोने चादी आदि का बना हुआ छोटा लम्बोतरा टुकड़ा, पान के आकार की कपड़े की काट ।
सुराहीदार-(फा० वि०) सुराही के आकार का ।
सुरी-(सं० स्त्री०) देवपत्नी, देवाङ्गना ।
सुरीला-(हि० वि०) मीठे सुर वाला, जिसका सुर मीठा हो ।
सुरुका-(स० वि०) प्रकाशित, प्रदीप्त ।
सुरुख-(हि०वि०) सदय, अनुकूल ।
सुरुखुरू-(फा० वि०) यशस्वी, जिसको किसी काम में यश मिला हो ।
सुरुचि-(सं० पु०) उत्तम रुचि, अत्यन्त प्रसन्नता, एक गन्धर्व राजा का नाम, एक दक्ष का नाम, (वि०) स्वाधीन, राजा उत्तानपाद की एक स्त्री का नाम ।
सुरुचिर-(स०वि०) अति मनोहर,उज्वल
सुरुज-(स०वि०) अस्वस्थ, बीमार ।
सुरुजमुखी-(हि०पु०) देखो सूर्यमुखी ।
सुरुवा-(हि०पु०) देखो शोरवा ।
सुरूप-(स० वि०) सुन्दर, खूबसूरत, विद्वान्, बुद्धिमान् (पु०) शिव, एक

असुर का नाम ।
सुरूपता-(सं०स्त्री०) सुन्दरता, खूबसूरती ।
सुरूपा-(सं०वि०)सुन्दर रूप वाली.(स्त्री०) सेवती, वेला ।
सुरूहक-(सं०पु०) खच्चर ।
सुरेखा-(सं० स्त्री०) शुभ रेखा ।
सुरेतना-(हि०क्रि०) खराब अनाज में से अच्छे अनाज को अलगाना ।
सुरेतर-(सं०पु०) असुर ।
सुरेन्द्र-(सं०पु०) सुरपति, इन्द्र ।
सुरेन्द्रगोप-(सं० पु०) बीरबहूटी ।
सुरेन्द्रचाप-(सं० नपु०) इन्द्रधनुष ।
सुरेन्द्रजित्-(सं० पु०,इन्द्रजित्, गरुड़ ।
सुरेन्द्रपूज्य-(सं० पु०) बृहस्पति ।
सुरेन्द्रलोक-(सं०पु०) इन्द्रलोक ।
सुरेन्द्रवज्रा-(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त का नाम ।
सुरेन्द्रवती-(सं०स्त्री०) इन्द्राणी, शची ।
सुरेश-(सं०पु०)इन्द्र,शिव, विष्णु कृष्ण ।
सुरेशलोक-(सं० पु०) इन्द्रलोक ।
सुरेश्वर-(सं०पु०) ब्रह्मा, शिव, इन्द्र ।
सुरेश्वरी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी ।
सुरैत-(हि०स्त्री०)रखनी,रखेली उपपत्नी ।
सुरैतवाल-(हि०पु०) सुरैत का पुत्र ।
सुरैतिन-(हि०स्त्री०) रखनी, रखेली ।
सुरोचना-(सं० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।
सुरोचि-(हि० वि०) सुन्दर, मनोहर ।
सुरोत्तम-(सं०पु०) सूर्य, विष्णु ।
सुरौकस्-(सं०पु०) सुरालय, स्वर्ग ।
सुर्ख-(फा०वि०) लाल रंग का (पु०) गहरा लाल रंग ।
सुर्खरू-(फा०वि०) जिसके मुख पर तेज हो, तेजस्वी, प्रतिष्ठित ।
सुर्खरूई-(फा० स्त्री०) मान, प्रतिष्ठा, यश, कीर्ति ।
सुर्खा-(फा०पु०) एक प्रकार का लाल कबूतर ।
सुर्खाब-(फा०पु०) देखो सुरखाब ।
सुर्खी-(फा०स्त्री०) लाली, ललाई, लाल रोशनाई, रक्त, लोहू ।
सुर्ती, सुर्मा-देखो सुरती, सुरमा ।

सुलक्षण-(सं० वि०) शुभ लक्षणों से युक्त, भाग्यवान्, (पु०) शुभ लक्षण या चिह्न, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्रायें होती हैं
सुलक्षणा-(सं० स्त्री०) पार्वती की एक सखी का नाम(वि०)शुभ लक्षणों से युक्त
सुलक्षणी-(हि०वि०) अच्छे लक्षणों वाली
सुलगना-(हि०क्रि० प्रज्वलित होना,दहकना
सुलगाना-(हि०क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना, दुःखी करना ।
सुलग्न-(सं०पु० शुभ मुहूर्त,अच्छी सायत
सुलच्छ-(हि०वि०) सुन्दर ।
सुलच्छन-(हि०वि०) देखो सुलक्षण ।
सुलच्छनी-(हि०वि०) देखो सुलक्षणा ।
सुलझन-(हि०स्त्री०) सुलझाने की क्रिया या भाव ।
सुलझना-(हि० क्रि०) उलझन दूर होना, गांठ आदि का खुलना ।
सुलझाना-(हि०क्रि०)उलझन को दूर करना
सुलझाव-(हि०पु०) सुलझने की क्रिया ।
सुलटा-(हि०वि०)जो उलटा न हो, सीधा
सुलतान-(फा० पु०) सम्राट्, बादशाह ।
सुलताना चंपा-(हि०पु०) पुन्नाग नाम का वृक्ष ।
सुलतानी-(फा०स्त्री०) राज्य, बादशाही, एक प्रकार का महीन रेशमी कपड़ा, (वि०) लाल रंग का ।
सुलफ-(हि०वि०) लचीला, कोमल, मृदु
सुलफा-(फा० पु०) सूखा तमाखू,जो गांजे की तरह चिलम पर रख कर पिया जाता है, चरस ।
सुलफेबाज-(हि० वि०) गांजा या चरस पीने वाला ।
सुलभ-(सं० वि०) सहज में मिलने वाला सुगम, उपयोगी, साधारण (पु०) अग्निहोत्र की अग्नि ।
सुलभता-(सं०स्त्री०) सुगमता, आसानी ।
सुलभत्व-(सं०पु०) सुगमता ।
सुलभा-(सं०स्त्री०) जंगली उड़द, तमाखू ।
सुलभेतर-(सं० वि०) दुर्लभ, कठिन, मँहगा ।
सुलभ्य-(सं०वि०) सहज में मिलने वाला

सुललित-(सं०वि०) अत्यन्त सुन्दर ।
सुलह्-(फा० स्त्री०) मेल मिलाप, किसी झगड़े के बाद होने वाला मेल, सन्धि ।
सुलहनामा-(फा०पु०) सन्धिपत्र, वह कागज़ जिस पर समझौते की शर्तें लिखी जाती है ।
सुलाक-(फा०पु०) छिद्र, सूराख ।
सुलाखना-(हि०क्रि० सोने चांदी को तपा कर परखना ।
सुलाना-(हि० क्रि०) सोने में प्रवृत्त करना, लिटाना ।
सुलिखित-(सं० वि०) अच्छी तरह लिखा हुआ ।
सुलेख-(सं०पु०) सुन्दर लिखावट ।
सुलेखक-(सं० पु०) अच्छा लेख या निबन्ध लिखने वाला ।
सुलेमान-(फा०पु०) यहूदियों का एक बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है ।
सुलेमानी-(फा० पु०) सुलेमान संबंधी, सफेद आँख का घोड़ा, एक प्रकार का दुरंगा पत्थर ।
सुलोक-(सं०पु०) स्वर्ग ।
सुलोचन-(सं० वि०) सुन्दर आँखों वाला, (पु०) चकोर, रुक्मिणी के पिता का नाम, हरिण, दुर्योधन ।
सुलोचना-(सं०स्त्री०) माधव राजा की पत्नी का नाम ।
सुलोचनी-(हि०वि०) सुन्दर नेत्र वाली ।
सुलोम-(सं०वि०) जिसके रोवें सुन्दर हों
सुलोह-(सं० नपु०) एक प्रकार का उत्तम लोहा ।
सुलोहित-(सं०वि०)सुन्दर लाल रंग का ।
सुलोहिता-(सं० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।
सुल्फ-(हि० पु०) बहुत तेज़ लय, नाव ।
सुवक्ता-(सं० पु०) अच्छा व्याख्यान देने वाला ।
सुवक्त्र-(सं० पु०) शिव (वि०) सुन्दर मुख वाला ।
सुवक्ष-(सं०वि०) जिसकी छाती सुन्दर और चौड़ी हो ।
सुवचन-(सं० वि०) सुवक्ता, मीठा

बोलने वाला।
सुवज्र-(स० पु०) इन्द्र का एक नाम।
सुवटा-(हि०पु०) देखो सुअटा।
सुवदन-(स०वि०) सुन्दर मुख वाला।
सुवदना-(स०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बीस अक्षर होते हैं।
सुवन-(स०पु०) सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा।
सुवर्चल-(स०पु०) काला नमक।
सुवर्ण-(स० नपु०) एक धातु विशेष, सोना, काचन।
सुवर्णकमल-(स० नपु०) लाल कमल।
सुवर्णकरणी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की जड़ी।
सुवर्ण कर्ता-(स०पु०) सोनार।
सुवर्णकार-(स० पु०) सोनार।
सुवर्णगिरि-(स०पु०) राजगृह के एक पर्वत का नाम।
सुवर्णतिलका-(स०स्त्री०) ज्योतिष्मती लता
सुवर्णदग्धी-(स०स्त्री०) भटकटैया।
सुवर्णपक्ष-(सं० पु०) गरुड़।
सुवर्णपद्म-(स०नपु०) लाल कमल।
सुवर्णफला-(स०स्त्री०) चपा. केला।
सुवर्णमाक्षिक-(स० नपु०) सोनामक्खी।
सुवर्णमित्र-(स० नपु०) सुहागा।
सुवर्णरेखा-(स० स्त्री०) राँची के पास बहने वाली एक नदी का नाम।
सुवर्णवर्ण-(स०पु०) विष्णु।
सुवर्णवर्णा-(स०स्त्री०) हल्दी।
सुवर्णसूत्र-(स०नपु०) सोने का तार।
सुवर्णा-(स० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।
सुवर्णाकर-(स० पु०) सोना निकलने की खान।
सुवर्तुल-(स०वि०) एकदम गोल।
सुवर्मा-(स०नपु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम (वि०) उत्तम कवचसे युक्त।
सुवर्ष-(स० पु०) धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम, उत्तम वर्षा।
सुवर्त्म-(स०नपु०) सीधा पथ या रास्ता।
सुवसन-(स० नपु०) उत्तम वस्त्र।
सुवा-(हिं० पु०) सुग्गा।
सुवाक्य-(स० वि०) मधुरभाषा, (पु०) मीठे वचन।
सुवार्ता-(स० स्त्री०) कृष्ण की एक स्त्री का नाम, उत्तम वार्ता।
सुवार-(हि० पु०) रसोइयादार।
सुवास-(स०पु०) अच्छी महक,सुन्दर घर।
सुवासक-(स० पु०) तरबूज।
सुवासिका-(हि०वि०) सुगन्ध करनेवाली।
सुवासित-(स०वि०)सुगन्धयुक्त खुशबूदार।
सुवासिनी-(स० स्त्री०) युवावस्था में भी पिता के घर रहनेवाली स्त्री,सधवा स्त्री।
सुविक्रम-(स० वि०) अत्यन्त साहसी।
सुविक्रान्त-(स० वि०) बड़ा पराक्रमी (पुं०) शूरवीर, बहादुर।
सुविक्लव-(स० वि०) अत्यन्त व्यग्र।
सुविख्यात-(स० वि०) बहुत प्रसिद्ध।
सुविचक्षण-(स०वि०) बहुत बुद्धिमान्।
सुविचार-(स० पु०) उत्तम विचार, सुन्दर न्याय,कृष्ण के एक पुत्र का नाम
सुविज्ञ-(स० वि०) अतिशय चतुर।
सुविज्ञेय-(स०वि०)सहज में जानने योग्य।
सुवितत-(स०वि०)अच्छी तरह फैला हुआ।
सुवित्त-(स० नपु०) उत्तम धन।
सुविदग्ध-(स० वि०) बहुत चतुर।
सुविदित-(स०वि०)अच्छी तरह जानाहुआ।
सुविधा-(हि० स्त्री०) देखो सुभीता।
सुविद्य-(स०वि०)अच्छा विद्वान् या पडित।
सुविद्या-(स० स्त्री०) उत्तम विद्या।
सुविधान-(स०नपु०) अच्छा नियम।
सुविनीत-(सं० वि०) अत्यन्त नम्र।
सुविभक्त-(स०वि०) अच्छी तरह से बाटा हुआ।
सुविशाला-(स० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
सुवीज-(स०पु०) सुन्दर बीज, शिव।
सुवीर-(स० पु०) बड़ा योद्धा।
सुवृक्ष-(स०पु०)फल फूलोसे लदा हुआ वृक्ष
सुवृत्त-(स०पुं०) सुवित्ता-(स० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में उन्नीस अक्षर होते हैं।
सुवृत्ति-(स० स्त्री०) उत्तम जीविका।
सुवेल-(स० पु०) समुद्र के किनारे का एक पर्वत जहा श्रीरामचन्द्र सेना सहित ठहरे थे (वि०) बहुत झुका हुआ।
सुवेश-(स०वि०) सुन्दर वेशसे सुसज्जित।
सुवेष-(हिं० वि०) देखो सुवेश।
सुवेसल-(हि० वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुवैया-(हिं० वि०) सोने वाला।
सुवो-(हिं० पु०) शुक, सुग्गा।
सुव्यक्त-(स० वि०) बहुत स्पष्ट।
सुव्यवस्थित-(स०वि०) जिसकी व्यवस्था अच्छी तरह से की गई हो।
सुव्याहृत-(स० वि०) अच्छी तरह से कहा हुआ।
सुव्रत-(स०पु०) एक प्रजापति का नाम, स्कन्द के एक अनुचर का नाम, (वि०) धर्मनिष्ठ, विनीत।
सुशरीर-(स०वि०) सुडौल, सुदेह।
सुशक्त-(स० वि०) शक्तिशाली।
सुशक्ति-(स० स्त्री०) खूब ताकत।
सुशब्द-(स०त्रि०) अच्छा शब्द या ध्वनि।
सुशरण्य-(स० पु०) शिव, महादेव।
सुशरीर-(स०वि०) सुडौल शरीर वाला।
सुशल्य-(स०पु०) खादिर, खैर।
सुशासित-(स० वि०) अच्छी तरह से शासित।
सुशिक्षित-(स०वि०)उत्तम रूप से शिक्षित।
सुशिख-(स०पु०) अग्नि।
सुशिष्ट-(स० वि०) बहुत शिष्ट या नम्र।
सुशीतला-(स० स्त्री०) खीरा, ककड़ी।
सुशील-(स० वि०) उत्तम स्वभाव वाला, विनीत, नम्र, सरल, सीधा।
सुशीलता-(स० स्त्री०) नम्रता।
सुशीला-(स० स्त्री०) राधा की एक अनुचरी का नाम।
सुश्रृङ्ग-(स० वि०) सुन्दर सींग वाला, (पु०) श्रृगी ऋषि।
सुश्रृत-(स० वि०) बहुत गरम।
सुशेव-(स०वि०) अत्यन्त सुखकर।
सुशोण-(स० वि०) बहुत लाल।
सुशोभन-(स० वि०) अत्यन्त शोभा युक्त, दिव्य।
सुशोभित-(स०वि०)अत्यन्त शोभायमान।
सुश्राव्य-(स० वि०) जो सुननें में अच्छा जान पड़े।

सुश्री–(सं०वि०) बहुत सुन्दर, बहुत धनी।
सुश्रुत–(सं०वि०) प्रसिद्ध, मशहूर, अच्छी तरह सुना हुआ (पुं०) आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य।
सुश्रूखा–(हिं० स्त्री०) देखो शुश्रूषा।
सुश्लिष्ट–(सं०वि०) अति दृढ, अतिशय श्लेष युक्त।
सुष–(हिं० पुं०) देखो सुख।
सुषमा–(सं० स्त्री०) परम शोभा, अत्यन्त सुन्दरता, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दस अक्षर होते हैं।
सुषमाशाली–(सं०वि०) जिसमें अधिक शोभा हो।
सुषिक्त–(सं० वि०) अच्छी तरह से सींचा हुआ।
सुषिर–(सं० नपुं०) वास, बेंत, अग्नि, आग, वायु से बजने वाला यन्त्र, छिद्र, छेद, वायु मण्डल, लवग, (वि०) छिद्र युक्त।
सुषुप्त–(सं०वि०) गहरी नींदमें सोया हुआ
सुषुप्ति–(सं०स्त्री०) सुनिद्रा, गहरी नींद, वेदान्त के अनुसार अज्ञान, चित्त की एक वृत्ति जिसमें जीव ब्रह्म की प्राप्ति करता है परन्तु उसको उसका ज्ञान प्राप्त नहीं होता।
सुषुप्सा–(सं०स्त्री०) सोने की इच्छा।
सुषुम्ना–(सं०स्त्री०) हठयोग के अनुसार शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक जो मेरु के बाह्य देश में तथा इड़ा और पिंगला नाड़ी के मध्य देश में अवस्थित है।
सुषेण–(सं० पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, परीक्षित के एक पुत्र का नाम।
सुषोपति–(हिं०स्त्री०) देखो सुषुप्ति।
सुष्ट–(सं०वि०) अच्छा, भला।
सुष्टुत–(सं०वि०) भलीभांति स्तुति किया हुआ।
सुष्ठ–(हिं० क्रि० वि०) अच्छी तरह से (वि०) सुन्दर।
सुष्ठता–(सं०स्त्री०) सुन्दरता।
सुष्ठु–(सं० अव्य०) अत्यन्त, भलीभांति, अच्छी तरह से (पुं०) प्रशंसा, तारीफ।
सुष्ठुता–(सं० स्त्री०) सौभाग्य, मगल, कल्याण, सुन्दरता।
सुष्म–(सं०नपुं०) रज्जु, रस्सी।
सुष्मता–(हिं० स्त्री०) देखो सुषुम्ना।
सुसंग–(हिं०पुं०) देखो सुसगति।
सुसगति–(हिं० स्त्री०) सत्सग, अच्छी सगत।
सुसंस्कृत–(सं०वि०) उत्तम सस्कार युक्त।
सुस–(हिं०स्त्री०) देखो सुसा।
सुसकना–(हिं०क्रि०) देखो सिसकना।
सुसका–(हिं०पुं०) हुक्का।
सुसङ्कुल–(सं० वि०) अति सकीर्ण।
सुसङ्ग–(सं०पुं०) उत्तम सगति, अच्छी सोहबत।
सुसङ्गत–(सं० त्रि०) अच्छी तरह मिला हुआ, अति सौहार्द।
सुसङ्गति–(सं० वि०) सत्सग, अच्छी सगत साधु सग।
सुसङ्गृहीत–(सं०वि०) अच्छी तरह से सग्रह किया हुआ।
सुसज्जित–(सं०वि०) शोभायमान, अच्छी तरह से सजाया हुआ।
सुसताना–(हिं० क्रि०) श्रम मिटाना, थकावट दूर करना।
सुसती–(फा०स्त्री०) देखो सुस्ती।
सुसत्या–(सं० स्त्री०) राजा जनक की की पत्नी का नाम।
सुसनि–(सं०वि०) दयालु।
सुसन्त्रस्त–(सं० वि०) बहुत डरा हुआ।
सुसन्ध–(सं० वि०) सत्य प्रतिज्ञ।
सुसन्नत–(सं०वि०) बहुत झुका हुआ।
सुसमय–(सं० पुं०) सुभिक्ष, सुकाल, अच्छा समय।
सुसमिद्ध–(सं०वि०) अति प्रज्वलित।
सुसमृद्ध–(सं०वि०) अति समृद्ध शाली।
सुसम्पिष्ट–(सं०वि०) अच्छी तरह चूर्ण किया हुआ।
सुसम्पूर्ण–(सं० वि०) अच्छी तरह से समाप्त किया हुआ।
सुसमा–(हिं०स्त्री०) देखो सुषमा।
सुसर, सुसरा–(हिं०पुं०) देखो ससुर।
सुसरार, सुसरारि–(हिं० स्त्री०) देखो सुसराल।
सुसराल–(हिं० स्त्री०) ससुर का घर, ससुराल।
सुसरित–(हिं०पुं०) मन्दाकिनी, गगा।
सुसरी–(हिं०स्त्री०) देखो ससुरी, सुरसुरी।
सुसह–(सं० वि०) सहज में किये जाने योग्य।
सुसा–(हिं०स्त्री०) स्वसा, बहन।
सुसाइटी–(हिं० स्त्री०) देखो सोसाइटी।
सुसाध्य–(सं० वि०) जिसका साधन सहज में किया जा सके।
सुसाना–(हिं०क्रि०) सिसकना।
सुसार–(सं० पुं०) लाल खैर का पेड़, नीलम मणि।
सुसारवत्–(सं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर।
सुसिकता–(सं० स्त्री०) उत्तम बालू।
सुसिद्ध–(सं०वि०) उत्तम रूप से सिद्ध।
सुसिक्त–(सं० वि०) अच्छी तरह से सींचा हुआ।
सुसिद्धि–(सं० स्त्री०) साहित्य में एक प्रकार का अलंकार, वह ऐसे स्थान में होता है जहा पर एक मनुष्य परिश्रम करता है, परन्तु इसका फल दूसरा भोगता है।
सुसीतलाई–(हिं०स्त्री०) देखो सुशीतलता
सुसीम–(हिं०वि०) शीतल, ठढा।
सुसुकना–(हिं०क्रि०) देखो सिसकना।
सुसुड़ी–(हिं० स्त्री०) जव में होने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
सुसूक्ष्म–(सं० वि०) अति सूक्ष्म, बहुत बारीक।
सुसेन–(हिं०पुं०) देखो सुषेण।
सुसेवित–(सं० वि०) उत्तम रूप से पूजित।
सुसी–(हिं० पुं०) खरगोश, खरहा।
सुस्त–(फा०वि०) दुर्बल, कमजोर, निस्तेज, उदास, अस्वस्थ, रोगी, मन्दबुद्धि, आलसी, धीमी चाल वाला।
सुस्तना–(सं० स्त्री०) सुन्दर छाती वाली स्त्री, वह स्त्री जो पहली बार रजस्वला हुई हो।

सुस्ताई-(हिं० स्त्री०) देखो सुस्ती।
सुस्ताना-(हिं०क्रि०) देखो सुसताना।
सुस्ती-(फा० स्त्री०) शिथिलता, आलस्य।
सुस्तैन-(हिं०पु०) देखो स्वस्त्ययन।
सुस्थ-(हिं०वि०) नीरोग, स्वस्थ, सुस्थित, भलीभांति स्थित, सुदर, प्रसन्न, सुखी।
सुस्थचित्त-(सं० वि०) जिसका चित्त प्रसन्न हो।
सुस्थता-(सं०स्त्री०) आरोग्य, आनन्द, प्रसन्नता।
सुस्थावती-(सं० स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
सुस्थित-(सं० वि०) अविचल, दृढ़, स्वस्थ, नीरोग, भाग्यवान्।
सुस्थिति(सं०स्त्री०) प्रसन्नता, आनन्द, कुशल क्षेम।
सुस्थिर-(सं० वि०) अविचल, दृढ, स्वस्थ, नीरोग।
सुस्नात-(सं०वि०) अच्छी तरह स्नान किया हुआ।
सुस्मित-(सं०वि०) हंसमुख, हंसोड़।
सुस्मिता-(सं०स्त्री०) हँसमुख स्त्री।
सुस्वन-(वि० सं०) उत्तम शब्द या ध्वनि युक्त।
सुस्वप्न-(सं०पुं०) शुभ स्वप्न।
सुस्वर-(सं० पुं०) उत्तम स्वर, शख, (व०) सुकठ, सुरीला।
सुस्वरत्व-(सं०स्त्री०) सुस्वर होने का भाव या धर्म।
सुस्वादु-(सं० वि०) बहुत स्वादिष्ट, स्वाद युक्त।
सुस्वाप-(सं०पु०) गहरी नींद।
सुहंगा-(हिं० वि०) जो महगा न हो, सस्ता।
सुहंगम-(हिं०वि०) सहज, सरल।
सुहटा-(हिं०वि०) सुन्दर, सुहावना।
सुहड़-(हिं०पु०) सुभट, शूर वीर।
सुहनी-(हिं०स्त्री०) देखो सोहनी।
सुहबत्त-(हिं०स्त्री०) देखो सोहबत।
सुहराना-(हिं०क्रि०) देखो सहलाना।
सुहव-(सं० वि०) उत्तम स्वर युक्त।
सुहवी-(हिं०स्त्री०) एक राग का नाम।
सुहा-(हिं०पु०) लाल नामक पक्षी।
सुहाग-(हिं०पुं०) स्त्री की सधवा रहने की अवस्था, सौभाग्य, अहिवात, वह वस्त्र जो वर को विवाह के समय पहराया जाता है, मागलिक गीत।
सुहागन-(हिं०स्त्री०) सोहागिन।
सुहागा-(हिं० पु०) गन्धक के सोते में से निकलने वाला एक प्रकार का क्षार।
सुहागिन-(हिं०स्त्री०) सधवा स्त्री, वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।
सुहागिनी, सुहागिन-(हिं० स्त्री०) देखो सुहागिन।
सुहाता-(हिं०वि०) जो सहा जा सके।
सुहाना-(हिं०क्रि०) शोभा देना, अच्छा लगना, भला मालूम होना।
सुहाया-(हिं०वि०) देखो सुहावना।
सुहारी-(हिं०स्त्री०) सादी पूरी जिसमें पीठी आदि न भरी हो।
सुहाल-(हिं० पु०) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव-(हिं०वि०) सुदर, सुहावना।
सुहावता-(हिं०वि०) सुहावना, भला।
सुहावन, सुहावना-(हिं० वि०) जो देखने में भला मालूम हो, सुदर, रमणीक।
सुहावनापन(हिं०पु०) सुदरता।
सुहावला-(हिं०वि०) सुहावना, सुदर।
सुहास, सुहासी-(हिं० वि०) सुन्दर मुसकान वाली, चारुहासी।
सुहित-(सं०वि०) विहित, किया हुआ।
सुहू-(सं० पु०) उग्रसेन के एक पुत्र का नाम।
सुहृत,सुहृद्-(सं० पु०) मित्र, बन्धु, सखा दोस्त,(वि०) अच्छे हृदय वाला।
सुहृदय-(सं० वि०) सहृदय, स्नेहशील।
सुहेला-(हिं० वि०) सुखदायक, सुन्दर (पु०) मगल गीत, स्तुति।
सुहोत्र-(सं० पु०) सहदेव के एक पुत्र का नाम, एक दैत्य का नाम।
सू-(हिं० अव्य०) तृतीया और पचमी विभक्ति का चिह्न, सों, से।
सूंइस-(हिं० स्त्री०) देखो सूस।
सूंघना-(हिं० क्रि०) महक लेना, बहुत कम भोजन करना, सर्प का काटना सिर, सूघना-कल्याण कामना से बच्चे का मस्तक सूघना।
सूंघा-(हिं०पु०)जासूस, भेदिया, सूघ कर शिकार तक पहुँचाने वाला कुत्ता, वह जो सूघ कर बतला देता है कि अमुक स्थान में भूमि के भीतर जल या धन है।
सूंड-(हिं० पु०) हाथी की नाक जो बहुत लबी होती है और प्रायः जमीन तक लटकती रहती है, शुण्डादण्ड,शुण्ड।
सुंडहल-(सं० पु०) हाथी।
सुंडा-(हिं० पु०) हाथी का सूड।
सुंडी-(हिं० स्त्री०) कपास, अन्न, ऊख आदि के पौधे को हानि पहुँचाने वाला एक प्रकार का कीड़ा।
सूंघी-(हिं० स्त्री०) सज्जी मिट्टी।
सूंस-(हिं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध बड़ा जल जन्तु शिशुमार।
सूंह-(हिं० अव्य०) सन्मुख, सामने।
सूअर-(हिं० पु०) एक स्तनपायी वन्य जन्तु, शूकर, एक प्रकार की गाली।
सूअरबियान-(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जो प्रति वर्ष बच्चा जनती है।
सूआ-(हिं० पु०) बड़ी सूई, सूजा, सुग्गा, तोता।
सूई-(हिं० स्त्री०) पक्के लोहे का पतला तार जिसका एक छोर नुकीला होता है तथा दूसरे छोर पर एक छेद होता है जिसमें तागा पिरो कर कपड़ा सिलने का काम किया जाता है, पिन्, महीन काटा,कपास अनाज आदि का अखुआ, सूई के आकार की कोई वस्तु।
सूईडोरा-(हिं० पु०) मालखभ की एक कसरत।
सूक-(हिं० पु०) देखो शुक, शुक्र।
सूकना-(हिं० क्रि०) सूखना।
सूकर-(सं० पु०) शूकर, सूअर, एक नरक का नाम।
सूकरकन्द-(सं० पुं०) वाराहीकन्द।
सूकरक्षेत्र-(सं० पु०) एक प्राचीन तीर्थ का नाम जो मथुरा जिले में है,

अब यह 'सोरों' नाम से प्रसिद्ध है।

सूकरी-(सं० स्त्री०) शूकरी, सुअरी, मादा सुअर।

सूका-(हि० पु०) चार आने के मूल्य का सिक्का, चवन्नी।

सूक्त-(स० वि०) अच्छी तरह कहा हुआ (पु०) उत्तम कथन, उत्तम भाषण, वेद मन्त्रों या ऋचाओं का समूह; वैदिक स्तुति।

सूक्तवाक्य-(स०नपुं०) यथोचित वाक्य।

सूक्ति-(स० स्त्री०) युक्ति युक्त वाक्य, सुन्दर पद वाक्य आदि।

सूक्तिक-एक प्रकार का करताल।

सूक्षम-(हि० वि०) देखो सूक्ष्म।

सूक्ष्म-(स० वि०) बहुत बारीक या महीन (पु०) परमाणु, लिंग शरीर, शिव का एक नाम, जीरा, निर्मली, रीठा, सुपारी (नपु०) छल, कपट एक काव्यालकार जिसमें चित्त वृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित करके वर्णन किया जाता है।

सूक्ष्मकोण-(स० पु०) सम कोण से छोटा कोण।

सूक्ष्म तण्डुल-(सं०पुं०) पोस्ते का दाना।

सूक्ष्मता-(स० स्त्री०) बारीकी।

सूक्ष्मदर्शक यन्त्र-(स० नपु०) अणुवीक्षण यन्त्र, खुर्दबीन, वह यन्त्र जिससे सूक्ष्म पदार्थ बडे देख पड़ते हैं।

सूक्ष्मदर्शिता-(स० स्त्री०) बारीक बातो को सोचने समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी-(सं० वि०) कुशाग्र बुद्धि, बारीक बातो को समझने वाला।

सूक्ष्मदृष्टि-(स०स्त्री०) वह जो बारीकी समझता हो।

सूक्ष्मदेही-(स०पु०) सूक्ष्म शरीर वाला।

सूक्ष्मनाम-(स०पु०) विष्णु का एक नाम।

सूक्ष्मपत्र-(स०पु०) धनिया, कुकुरौंधा।

सूक्ष्मपत्रक-(स० पु०) वन तुलसी।

सूक्ष्मपत्रिका-(स०स्त्री०) सौंफ, सतावर।

सूक्ष्मपर्णी-(स० स्त्री०) राम तुलसी।

सूक्ष्मपाद-(स० वि०) जिसके पैर छोटे हों।

सूक्ष्मफल-(स० पु०) लिसोढ़ा।

सूक्ष्मबीज-(स०पु०) खसखस, साख्य के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ये पाचों तन्मात्र।

सूक्ष्ममति-(स० वि०) तीक्ष्ण बुद्धि।

सूक्ष्मवस्त्र-(स०नपु०) महीन कपड़ा।

सूक्ष्मशरीर-(स०नपु०)दर्शन के अनुसार पाचो प्राण, पाचो ज्ञानेन्द्रिया, पाच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि-इन सत्रहो तत्वो का समूह।

सूक्ष्माक्ष-(स० पु०) तेज नजर।

सूक्ष्मात्मा-(स०पु०) शिव, महादेव।

सूख-(हि० वि०) देखो सूखा।

सूखना-(हिं०क्रि०) गीलापन हट जाना, रसहीन होना, नष्ट होना, दुर्बल होना, सन्न होना, उदास होना, डरना, तेज नष्ट होना, जलन रहना या कम होना।

सूखा-(हिं०वि०) जिसमें जल का अश न रह गया हो, रसहीन, तेज रहित, कठोर, निरा, केवल, (पु०)पानी का न बरसना, दुर्बलता, जलहीन स्थान, नदी का किनारा, बच्चों की एक प्रकार की खासी, सुखडी, सूखा हुआ तमाखू का पत्ता जो चूना मिलाकर खाया जाता है, सूखा जवाब देना-स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना।

सूघर-(हि० वि०) देखो सुघड़।

सूच-(हि० वि०) पवित्र, निर्मल।

सूचक-(स० वि०) सूचना देने वाला, बतलाने वाला, ज्ञापक, बोधक (पु०) सूई, दरजी, सूत्रकार, गुप्तचर, भेदिया, चुगलखोर, कौवा, बिल्ली, सियार, एक प्रकार का महीन चावल।

सूचना-(स० स्त्री०) बेधना, छेदना, अभिनय, सकेत द्वारा बतलाना, भेद लेना, विज्ञप्ति, ज्ञापन, वह बात जो जतलाने के लिये कही जावे, विज्ञापन (हि०क्रि०) बतलाना।

सूचनापत्र-(स० पु०) विज्ञापन, विज्ञप्ति, इश्तहार।

सूचनीय-(स०वि०) सूचना करने योग्य।

सूचा-(हिं०स्त्री०) सूचना, (वि०) सावधान।

सूचि-(हिं०वि०) पवित्र, शुद्ध।

सूचिक-(स० पु०) दरजी।

सूचिका-(स० स्त्री०) सूई, हाथी का सूड़, केवड़ा, एक अप्सरा का नाम।

सूचिकाभरण-(स० नपु०) सन्निपात ज्वरकी अन्तिम औपधि।

सूचिकामुख-(स० पु०) हाथी।

सूचित-(स० वि०) ज्ञापित, बतलाया हुआ, बहुत उपयुक्त या योग्य।

सूचिभेद्य-(स०वि०) बहुत घ ना।

सूचिमल्लिका-(स०स्त्री०)नेव री का फूल

सूचिरदन-(स०पु०) नकुल, नेवला।

सूचिभेद्य-(स० वि०) बहुत घना।

सूचिरोमा-(स०पु०) वराह, शूकर।

सूचिवत्-(स० पु०) गरुड़।

सूचिवदन-(स० पु०) नेवला, मच्छड़।

सूचिशालि-(स०पु०) एक प्रकार का महीन चावल।

सूचिशिखा-(स० स्त्री०) सूई की नोक।

सूचिसूत्र-(स० नपुं०) सूई में परोने का धागा।

सूची-(स० स्त्री०) कपड़ा सीने को सूई, दृष्टि, नजर, दुष्ट, भेदिया, चुगलखोर, सफेद कुश, केतकी, केवड़ा, सेना का एक प्रकार का व्यूह, वह साक्षी जो बिना बुलाये स्वय आकर किसी विषय की गवाही देता हो, पिंगल के अनुसार एक रीति जिससे मात्रिक छन्दों की सख्या आदि जानी जाती है।

सूचीकर्म-(स० पु०) सिलाई का काम।

सूचीपत्र-(स० पु०) तालिका, फिहरिस्त, सूची।

सूचीपद्म-(स० पु०) सेना का एक प्रकार का व्यूह।

सूचीपाश-(स० पु०) सूई का छेद।

सूचीमुख-(स० पु०) हीरा, एक नरक का नाम।

सूच्छम, सूच्छिम-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म

सूच्यग्र-(स०पुं०) सूई की नोक।

सूच्यग्र स्तम्भ-(स०पु०) मीनार।

सूच्याकार-(स० वि०) सूई के आकार का, लबा और नुकीला।

सूच्यार्थ-(सं० पु०) साहित्य में किसी पद आदि का वह अर्थ जो शब्दों की व्यञ्जना शक्ति से जाना जाता है।
सूच्याह्व-(सं०पु०) चूहा।
सूछम-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म।
सूजन-(हि०स्त्री०) सूजने की क्रिया या अवस्था, शोथ, फुलाव।
सूजना-(हि० क्रि०) शरीर के किसी अंग का फूलना, शोथ होना।
सूजनी-(हिं०स्त्री०) देखो सुजनी।
सूजा-(हि० पु०) मोटी बड़ी सूई, सूआ, छकड़ा गाड़ी के पीछे की ओर उसको टिकाने के लिये लगाया हुआ डंडा।
सूज़ाक-(फा० पु०) मूत्रेन्द्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग जो दूषित लिंग और योनि के संसर्ग से उत्पन्न होता है।
सूजी-(हिं०स्त्री०) गेहूँ का दरदरा आटा जो अनेक प्रकार के पकवान्न बनाने में उपयोग किया जाता है, सूआ, सूई, (पु०) दरजी।
सूझ-(हि० स्त्री०) दृष्टि, नज़र, अनूठी कल्पना, उद्भावना।
सूझबूझ-(हिं०स्त्री०) अक्ल।
सूझना-(हि०क्रि०) देख पड़ना, ध्यान में आना, छुट्टी पाना।
सूझा-(हि० पु०) फारसी संगीत का एक मुकाम।
सूट-(अं० पु०) पहनने के सब कपड़े, विशेष करके कोट, पतलून आदि।
सूटकेस-(अं० पु०) कपड़े रखने का चिपटा बक्स।
सूटा-(हि०पु०) तमाखू या गांजे का धुवां ज़ोर से खींचना।
सूत-(सं० पु०) रथ हांकने वाला, सारथि, बढ़ई, सूत्रकार, पौराणिक, एक वर्णसंकर जाति, सूर्य, पारा, विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम (वि०) प्रसूत, प्रेरणा किया हुआ।
सूत-(हिं०पु०) कपड़ा बुनने का धागा रेशम आदि का महीन तार, तन्तु, तागा, धागा, करधनी, नापने का एक मान, डोरा, पत्थर या लकड़ी पर निशान डालने की सूत की डोरी, थोड़े अक्षरों या शब्दों में ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकाशित करता हो, (वि०) भला, अच्छा।
सूतक-(सं० नपु०) जन्म, वह अशौच जो सन्तान होने पर परिवार वालों को होता है मरणाशौच जो परिवार में किसी के मरने पर होता है, सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण।
सूतकगेह-(सं०पु०) सूतिकागृह।
सूतकान्न-(सं०पु०) सूतकी के घर का अन्न
सूतकाशौच-(सं० नपु०) जननाशौच।
सूतकी-(सं०स्त्री०) जिसको सूतक लगा हो।
सूतज, सूततनय-(सं०पु०) कर्ण का नाम।
सूतधार-(हिं०पु०) बढ़ई।
सूतनन्दन-(सं०पु०) कर्ण।
सूतना-(हि० क्रि०) निद्रा लेना, सोना।
सूतपुत्र-(सं०पु०) कर्ण, कीचक, सारथि।
सूतफूल-(हिं०पु०) महीन आटा, मैदा।
सूतलड-(हिं०पु०) रहट।
सूतवशा-(सं०स्त्री०) गाय।
सूता-(हिं०पुं०) तन्तु, सूत, (स्त्री०) वह स्त्री जिसने बच्चा जना हो।
सूति-(सं० स्त्री०) जनन, प्रसव, जन्म, सीवन, अन्न की पैदावार, (पु०) हंस।
सूतिका-(सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो।
सूतिकागार-(सं०नपु०) प्रसवगृह, सौरी।
सूतिकागृह-(सं०नपु०) सौरी।
सूतिगृह-(सं०नपुं०) देखो सूतिकागार।
सूतिमारुत-(सं०पु०) प्रसव पीड़ा।
सूतिमास-(सं० पु०) वह महीना जिसमें स्त्री को प्रसव हो।
सूती-(हिं०वि०) सूत का बना हुआ (स्त्री०) सीपी।
सूतीघर-(हिं०पु०) सूतिकागार।
सूत्र-(सं०नपु०) तन्तु, सूत, तागा, डोरा, यज्ञोपवीत, जनेऊ, व्यवस्था, नियम, रेखा, निमित्त, कारण, मूल, पता, थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो।
सूत्रक-(सं०नपु०) सेमई।
सूत्रकण्ठ-(सं० पु०) खञ्जन पक्षी, कबूतर, सूत्रकर्म-बढ़ई का काम।
सूत्रकार-(सं० पु०) सूत्रों की रचना करने वाला, बढ़ई, जुलाहा।
सूत्रकोश-(सं० पु०) सूत की अंटी।
सूत्रग्रन्थ-(सं० पु०) मूल सूत्र में रचित ग्रन्थ।
सूत्रतर्कुटी-(सं०स्त्री०) तकला, टेकुआ।
सूत्रधार-(सं० पु०) नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट।
सूत्रधारी-(सं०स्त्री०) सूत्रधार की पत्नी।
सूत्रपात-(सं० पु०) आरंभ, शुरु।
सूत्रपुष्प-(सं० पु०) कपास का पौधा।
सूत्रयन्त्र-(सं०नपु०) करघा, ढरकी।
सूत्रला-(सं० स्त्री०) तकली, टेकुआ।
सूत्रवाप-(सं०पु०)कपड़ा बुनने की क्रिया।
सूत्रक्रयी-(सं०त्रि०) सूत बेंचने वाला।
सूत्रविद्-(सं०पु०)सूत्रों को जानने वाला।
सूत्रवेष्टन-(सं० नपु०) करगह।
सूत्रशाख-(सं०पु०) शरीर।
सूत्रात्मा-(सं०पु०) जीवात्मा।
सूत्राली-(सं०स्त्री०) माला, हार।
सूत्री-(सं०वि०) सूत्र युक्त।
सूत्रीय-(सं०वि०) सूत्र संबंधी।
सूथन-(हिं०स्त्री०) पायजामा, सुथना।
सूथनी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहरने का पायजामा, सुथना।
सुथार-(हिं०पु०) बढ़ई, सुनार।
सूद-(सं० पु०) सूपकार, रसोइयादार
सूद-(फा० पु०) लाभ, फायदा, वृद्धि, व्याज।
सूदक-(सं०वि०) नाश करने वाला।
सूदकर्म-(सं०नपु०) भोजन पकाना।
सूदकशाला-(हिं०स्त्री०) रसोई घर।
सूदखोर-(फा० पु०) वह जो खूब व्याज लेता हो।
सूदन-(सं० नपुं०) अंगीकार करने की क्रिया, वध, नाश, फेंकने की क्रिया,
सूदना-(हि० क्रि०) नाश करना।
सूदशाला-(सं० स्त्री०) पाकशाला।
सूदशास्त्र-(सं० नपुं०) पाकशास्त्र।

सूदा-(हिं० पु०) ठगों की मण्डली का वह मनुष्य जो यात्रियों को बहका कर अपनी मण्डली में लाता है।
सूदित-(सं० वि०) आहत, जख्मी।
सूदी-(हिं०वि०) ब्याज पर लिया हुआ, ब्याज।
सूध-(हिं०वि०) देखो शुद्ध, सीधा।
सूधना-(हिं० क्रि०) सच होना, ठीक होना।
सूधा-(हिं०वि०) सीधा, सरल, जो वक्र न हो।
सूधे-(हिं०क्रि०वि०) सीधे से।
सून-(सं०नपुं०) प्रसव, फल, पुत्र (वि०) फूला हुआ, विकसित, उत्पन्न।
सून-(हिं० पु०) एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार वृक्ष।
सूना-(हिं० वि०) जनहीन, सुनसान (पु०) निर्जन स्थान।
सूनापन-(हिं०पु०) एकान्त, सन्नाटा।
सूनिक-(सं०पु०) मांस बेचने वाला।
सूनु-(सं०पु०) सूर्य, पुत्र, बेटा, छोटा भाई, नाती।
सूनृत-(सं० वि०) सत्य और प्रिय, दयालु।
सूनृता-(सं० स्त्री०) सत्य और प्रिय भाषण, सत्य।
सूप-(सं०पु०) मूंग, अरहर, मसूर आदि की पकी हुई दाल, रसदार तरकारी, बाण, तीर।
सूप-(हिं०पु०) अनाज फटकने का सींक का डगरा।
सूपक-(हिं०पु०) रसोइयादार।
सूपकार-(सं० पुं०) पाककर्ता, इशारे से समझने वाला।
सूपनखा-(हिं० स्त्री०) देखो शूर्पणखा।
सूपशास्त्र-(सं०पु०) पाकशास्त्र।
सूपस्थान-(सं०नपु०) पाकशाला।
सूपाङ्ग-(सं० नपु०) हींग।
सूपा-(हिं० पु०) शूर्प, सूप।
सूपाय-(सं०त्रि०) सदुपाय,उत्तम उपाय।
सूफ-(अ०पु०) ऊन, पशम, वह लत्ता जो देसी रोशनाई की दावात में डाला जाता है।
सूफी-(अ० पु०) मुसलमानों का एक धार्मिक सम्प्रदाय, इन लोगों का मत भारतीय वेदान्तिक की तरह ज्ञान मूलक है।
सूब-(हिं०पु०) तांबा।
सूबड़ा-(हिं० पु०) वह चांदी जिसमें चांदी और जस्ते का मेल हो।
सूबा-(फा० पु०) किसी देश का भाग या खण्ड, प्रान्त, प्रदेश।
सूबेदार-(फा० पु०) किसी प्रान्त का बड़ा अफसर, एक छोटा फौजी ओहदा।
सूबेदारी-(फा०स्त्री०) सूबेदार का पद या कार्य।
सूभर-(हिं०वि०) शुभ्र, सुन्दर, सफेद।
सूम-(सं० नपु०) दूध, जल, आकाश (अ० वि०) कृपण, कंजूस।
सूमल-(हिं०पु०) चित्रक, चीता नामक पौधा।
सूर-(सं० पु०) सूर्य, अर्कवृक्ष, मदार, आचार्य, पण्डित, अन्धा, छप्पय का एक भेद, सूरदास, (हिं०वि०) शूरवीर, बहादुर (हिं०पु०) पठानों की एक जाति
सूरकन्द-(सं० पुं०) जमीकन्द सूरन।
सूर कुमार-(सं०पु०) वसुदेव।
सूरकान्त-(सं० पु०) सूर्यकान्त।
सूरज-(हिं० पु०) सूर्य, शनि, सुग्रीव, सूर का पुत्र, सूरज पर थूकना-किसी निर्दोष व्यक्ति पर लाञ्छन लगाना, सूरज को दीपक दिखाना-जो स्वयं पण्डित है उसको शिक्षा देना।
सूरज भगत-(हिं० पुं०) एक प्रकार की गिलहरी।
सूरजमुखी-(हिं० पु०) एक पौधा जिसमें पीले रंग के बड़े फूल लगते हैं, सूर्यास्त के समय वह फूल नीचे को झुक जाता है और सूर्योदय होने पर फिर से उठने लगता है।
सूरज सुत-(हिं० पु०) सुग्रीव।
सूरजा-(सं० स्त्री०) यमुना नदी।
सूरण-(सं०पु०) जमीकन्द, ओल।
सूरत-(फा०स्त्री०) रूप, आकृति, शोभा, सौन्दर्य, अवस्था, उपाय, ढंग, सूरत बनाना-भेस बदलना, (अ० स्त्री०) कुरान का कोई प्रकरण।
सूरता, सूरताई-(हिं०स्त्री०)देखो शूरता।
सूरति-(हिं०स्त्री०) स्मरण,सुध,याद, सुरत
सूरदास-(हिं०पु०) एक प्रसिद्ध हिन्दी कवि का नाम जो कृष्ण भक्त थे, यह अन्धे भी थे।
सूरन-(हिं०पु०) जमीकन्द, ओल।
सूपनखा-(हिं०स्त्री०) देखो शूर्पनखा।
सूर पुत्र-(सं०पु०) सूर्य के पुत्र सुग्रीव।
सूरवार-(हिं०पुं०) पायजामा, सूथन।
सूरमा-(हिं०पु०) वीर,योद्धा,बहादुर।
सूरमापन-(हिं०पु०) शूरता, बहादुरी।
सूर सागर-(हिं०पु०) हिन्दी के महाकवि सूरदास कृत एक ग्रन्थ जिसमें कृष्ण लीला का वर्णन है।
सूर सावंत-(सं०पु०) नायक, सरदार, युद्ध मन्त्री।
सूर सुत-(सं०पु०) सुग्रीव, शनि ग्रह।
सूर सुता-(सं०स्त्री०) सूर्य की पत्नी,यमुना
सूर सून-(सं०पु०) सूर्य के सारथि,अरुण।
सूरसेन-(हिं०पु०) देखो शूरसेन।
सूरसेनपुर-(सं० पु०) मथुरा नगरी।
सूरा-(अ०पु०)कुरान का एक प्रकरण।
सूराख-(फा०पु०) छिद्र, छेद,खाना,घर।
सूरि-(सं० पु०) पण्डित, विद्वान्, सूर्य, बृहस्पति,कृष्ण,ऋत्विज् यज्ञ करने वाला
सूरी-(सं०स्त्री०) पण्डिता, विदुषी, सूर्य की पत्नी कुन्ती।
सूरुज-(हिं०पु०) देखो सूर्य।
सूरेठ-(हिं०पु०) बहेलियों की लासा लगाने की लकड़ी।
सूर्प-(सं० पु०) शूर्प, सूप।
सूर्पनखा-(हिं०स्त्री०) शूर्पणखा।
सूर्य-(सं०पु०) रवि ग्रह, सूरज, सोना, तांबा, बालि के एक पुत्र का नाम, अर्क वृक्ष, मदार, बारह की संख्या,
सूर्यकमल-(सं० पु०)सूरजमुखी का फूल,
सूर्यकान्त-(सं० पु०) सूर्यमणि, आतशी शीशा।

सूर्यकाल–दिवस, दिन।
सूर्यग्रहण–(स०नपु०) सूर्य का ग्रहण,
सूर्यज–(स०पु०) मनु, यम, शनि ग्रह, सुग्रीव, कर्ण, रेवन्त।
सूर्यजा–(स० स्त्री०) यमुना नदी।
सूर्यतनय–(सं०पु०) सूर्य के पुत्र,मनु,यम आदि।
सूर्य तनया–(स० स्त्री०) यमुना नदी।
सूर्य तापिनी–(स०स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम।
सूर्यनक्षत्र–(स० नपु०) सूर्य के साथ नक्षत्र का योग।
सूर्यनाभ–(स०पु०) एक दानव का नाम
सूर्यनेत्र–(स० पु०) गरुड़ के एक पुत्र का नाम।
सूर्यपत्नी–(स०स्त्री०) छाया।
सूर्यपत्र–(स०पु०) मदार का पौधा।
सूर्यपर्व -(स०नपु०) वह समय जब सूर्य किसी नई राशि में प्रवेश करता है।
सूर्यपाद–(स०पु०) सूर्य की किरण।
सूर्यपुत्र–(स० पु०) वरुण, शनि, यम, अश्विनी कुमार, सुग्रीव और कर्ण।
सूर्यपुत्री–(स०स्त्री०)यमुना, बिजली।
सूर्यपूजा–(सं०स्त्री०) सूर्य की उपासना।
सूर्यप्रभ–(स० पु०) एक प्रकार की समाधि, सूर्य के समान दीप्तिमान्।
सूर्यबिम्ब–(स०पु०) सूर्य का मण्डल।
सूर्यभक्त–(स०पु०) सूर्य का उपासक।
सूर्यभ्राता–(स०पु०) ऐरावत हाथी।
सूर्यमणि–(स०पु०) सूर्यकान्त मणि।
सूर्यमण्डल–(स०नपु०) सूर्य का घेरा।
सूर्यमुखी–(स०पु०) सूरजमुखी।
सूर्यरश्मि–(स०पु०) सूर्य की किरण।
सूर्यलोक–(स०पु०) सौर भुवन।
सूर्यवंश–(स०पु०) सूर्य की सन्तति।
सूर्यवल्लभा–(स०स्त्री०) कमलिनी।
सूर्यवार–(स०पु०) रविवार।
सूर्यविलोकन–(स०पु०)एक मांगलिक कृत्य जिसमें नवजात शिशु को सूर्य का दर्शन कराया जाता है।
सूर्यवृक्ष–(स०पु०) मदार का पौधा।
सूर्यवेश्म–(स० पुं०) सूर्य मण्डल।

सूर्यव्रत–(स०नपु०) रविवार को किया जाने वाला व्रत।
सूर्यशोभ–(स०स्त्री०)सूर्य का प्रकाश,धूप
सूर्य संक्रम–(सं० पु०) सूर्य का एक राशि से दूसरे राशि में प्रवेश।
सूर्यसारथि–(स०पु०) अरुण।
सूर्यसुत–(स०पु०) शनि, कर्ण, सुग्रीव।
सूर्यांशु–(सं०पु०) सूर्य की किरण।
सूर्या–(स०स्त्री०) सूर्य की पत्नी, संध्या।
सूर्यातप–(स०पु०) धूप।
सूर्यात्मज–(स०पुं०) कर्ण, शनि,सुग्रीव।
सूर्यायाम–(स०पु०) सूर्यास्त का समय।
सूर्यालोक–(स०पु०) सूर्य का प्रकाश।
सूर्यावर्त–(स०पु०) हुड़हुड़, गज पीपल, एक प्रकार का जल पात्र।
सूर्याश्म–(स०पु०) सूर्यकांत मणि।
सूर्यास्त–(स०नपु०)सूर्य के डूबने का समय
सूर्योदय–(स०पुं०) सूर्य के निकलने का समय, प्रात काल।
सूर्योपस्थान–(स०नपु०) वैदिक सन्ध्योपासन में सूर्य की एक प्रकार की उपासना।
सूर्योपासक–(स०पुं०) सूर्य की उपासना या पूजा करने वाला।
सूर्योपासना–(स०स्त्री०) सूर्य की पूजा या उपासना।
सूल–(हिं० पु०) बरछा, भाला, कोई चुभने वाली नुकीली वस्तु, भाला चुभने के समान पीड़ा, कसक, दर्द, पीड़ा, भाला के ऊपर का फुलरा।
सूलधर, सूलधारी–(हिं० पु०) देखो शूलधर, शूलधारी।
सूलना–(हिं०क्रि०) भाले से छेदना या छिदना, व्यथित होना, पीड़ित होना।
सूलपानि–(हिं०पु०) देखो शूलपाणि।
सूली–(हिं०स्त्री०) प्राण दण्ड देने की एक प्राचीन रीति जिसमें अपराधी नुकीले डंडे के ऊपर बैठा दिया जाता था और उसके मस्तक पर चोट दी जाती, थी, फांसी।
सूवना(हिं०क्रि०) बहना।
सूवा–(हिं०पु०) शुक, तोता, सुग्गा।

सूस–(हिं० पु०) मगर की तरह का एक जल जन्तु, शिशुमार।
सूसमार–(हिं०पु०) सूस।
सूसी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का धारीदार या चारखाने का कपड़ा।
सूहा–(हिं०पु०) एक प्रकार का लाल रंग, सम्पूर्ण जाति का एक संकर राग, (वि०) लाल रंग का।
सूहाकान्हड़ा–(हि० स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक रागिणी।
सूहाटोडी–(हि०स्त्री०) सम्पूर्ण जाति की एक संकर रागिणी।
सूही–(हिं०स्त्री०) देखो सूहा।
सृङ्खला–(हिं०स्त्री०) देखो शृंखला।
सृङ्ग–(हिं०पु०) देखो शृंग।
सृगवेरपुर–(हि०पु०) देखो शृंगवेरपुर।
सृगी–(हि०पु०) देखो शृंगी।
सृक–(स० पु०) बाण, कमल, वायु, वज्र, माला।
सृकंडु–(स० पु०) खुजली का रोग।
सृकाल–(स०पु०) शृगाल, सियार।
सृकथं–(स० स्त्री०) जोंक।
सृग–(हि०पु०) माला, गजरा, हार।
सृगाल–(स०पु०) सियार, गीदड़, भीरु, डरपोक, धूर्त, धोखेबाज।
सृगालवदन–(स०पु०)एक असुर का नाम
सृगालिनी, सृगाली–(सं०स्त्री०) सियारिन, लोमड़ी।
सृज्–(स०पु०) सृष्टिकर्ता।
सृग्विनी–(हि०स्त्री०) देखो स्रग्विणी।
सृजक–(हिं० पु०) सृष्टि करने वाला, उत्पन्न करने वाला।
सृजन–(हिं०पु०) सृष्टि करने की क्रिया।
सृजनहार–(हि० पु०) सृष्टिकर्ता।
सृजना–(हिं० क्रि०) सृष्टि करना, उत्पन्न करना।
सृज्य–(स० वि०) उत्पन्न किया जाने वाला।
सृञ्जय–(स० पु०) मनु के एक पुत्र का नाम, वह वंश जिसमें धृष्टद्युम्न उत्पन्न हुए थे।
सृणीका–(स० स्त्री०)थूक, लार।

सूत-(स० वि०) घिसका हुआ, सरका हुआ।

सृष्ट-(स० वि०) रचित, निश्चित, सकल्प में दृढ, अलकृत, त्यक्त, छोड़ा हुआ, उत्पन्न।

सृष्टि-(स० स्त्री०) निर्माण, बनावट, रचना, उत्पत्ति, जगत की उत्पत्ति, प्रकृति, ससार, उदारता।

सृष्टिकर्ता-(स० पु०) संसार की रचना करने वाले ब्रह्मा, ईश्वर।

सृष्टिविज्ञान-(स० पु०) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि-रचना आदि का विचार हो।

सेंक-(हिं० स्त्री०) भूनने या सेंकने की क्रिया या भाव।

सेंकना-(हिं० क्रि०) आच के समीप अथवा आग पर रख कर भूनना, गरम करना, आँख सेंकना-सुन्दर व्यक्ति को देखना, धूप सेंकना-धूप में रह कर शरीर को गरम करना।

सेंगर-(हि० पु०) एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है, बबूल का फल, एक प्रकार का अगहनिया धान, क्षत्रियो की एक शाखा।

सेंगरा-(हिं० पु०) वह मोटा डडा जिस पर लटका कर भारी पत्थर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।

सेंटर-(अ० पु०) वृत्त के बीच का बिन्दु, केन्द्र, प्रधान स्थान।

सेंठा-(हि० पु०) मूज का सरकडे का निचला मजबूत भाग।

सेंढ-(हिं०पु०) एक प्रकार का खनिज पदार्थ।

सेंत-(हिं० स्त्री०) कुछ व्यय न होना, पास का कुछ न लगना, सेंतका-बिना दाम का, मुफ्त का, सख्या या परिमाण में अधिक, सेंत में-मुफ्त में, बिना कुछ दाम लगे, व्यर्थ, सेंतमेंत-बिना दाम दिये, मुफ्त में, वृथा, बेमतलब।

सेंति, सेंती-(हिं० स्त्री०) देखो सेंत।

सेंथी-(हिं०पु०) बरछी, भाला।

सेंदुर-(हि० पु०) देखो सिन्दूर, ईंगुर को बुकनी, सेंदुर चढना-किसी कन्या का विवाह होना, सेंदुर देना-विवाह के समय वर का कन्या की माग में सेंदुर भरना।

सेंदुरा-(हि०वि०) सेंदुर के रग का (पु०) सेंदुर रखने का डिब्बा।

सेंदुरिया-(हि० पु०) एक सदाबहार पौधा जिसमें सिन्दूर के समान लाल फूल लगते हैं।

सेंदुरी-(हिं०स्त्री०) लाल रग की गाय।

सेंध-(हि० स्त्री०) चोरी करने के लिये दीवार तोड़कर बनाया हुआ छेद जिसमे से होकर चोर घर के भीतर घुसता है, सुरग।

सेंधना-(हि० क्रि०) सेंध या सुरग लगाना।

सेंधा-(हिं०पु०) एक प्रकार का नमक जो खान में से निकलता है, सैन्धव, लाहौरी नमक।

सेंधिया-(हिं०वि०) दीवार में सेंध लगाने वाला (पु०) ककड़ी की जाति की एक लता, फूट, एक प्रकार का विष, ग्वालियर का प्रसिद्ध मराठा राजवश।

सेंधी-(हि० स्त्री०) खजूर, मीठी शराब।

सेंधुर-(हिं०पु०) देखो सेंदुर, सिन्दूर।

सेंवई-(हिं० स्त्री०) मैदे के सुखाये हुए सूत के समान महीन लच्छे जो घी मे तल कर तथा दूध में खीर बनाकर खाये जाते हैं।

सेंवर-(हिं०पु०) देखो सेमल।

सेंहा-(हिं० पु) कुआँ खोदने वाला मजदूर।

सेंहुड़-(हिं०पु०) थूहर।

से-(हि०) करण और अपादान कारक का चिह्न, तृतीया और पचमी की विभक्ति, (हि०वि०) समान, सदृश (सर्व०) वे, (स्त्री०) सेवा, खिदमत।

सेकंड-(अ०पु०) एक मिनट का साठवा भाग (वि०) दूसरा।

सेउ-(हिं०पु०) देखो सेब।

सेक-(सं०पु०) जल सिञ्चन, सिंचाव, छिड़काव, छींटा, अभिषेक।

सेकड़ा-(हिं० पु०) हलवाहे की बैल हाकने की छड़ी।

सेकतव्य-(स०वि०) सींचने योग्य।

सेक पात्र-(स०नपु०) सींचने का बरतन

सेक भाजन-(स०नपु०) देखो सेकपात्र।

सेकिम-(स० वि०) सूब सींचा हुआ, ढाला हुआ।

सेकुना-(हिं०पु०) लबे डडे का करछा।

सेंकुरी-(हि०स्त्री०) धान।

सेक्ता-(स०पु०) सींचने वाला।

सेक्रेटरी-(अ०पु०) किसी सभा आदि का मन्त्री, सचिव, मुशी।

सेक्रेटेरियट्-(अ० पु०) सेक्रेटरी का कार्यालय, गवर्नर का दफ्तर।

सेक्शन्-(अ०पु०) विभाग।

सेख-(फ़ा०पु०) देखो शेख।

सेखावत्-(फ़ा०पु०) राजपूतों की एक जाति या शाखा।

सेखर-(हि०पु०) देखो शेखर।

सेगा-(अ०पु०) विभाग, मुहकमा, कोई विषय।

सेगोन-(हिं० पु०) मटमैले रग की लाल मिट्टी जो नलो के पास पाई जाती है।

सेचक-(स०वि०) सींचने वाला, (पु०) मेघ, बादल।

सेचन-(स०नपु०) सिंचाई, छिड़काव, ढलाई, मार्जन, अभिषेक।

सेचनीय-(स०वि०) सींचने योग्य।

सेचित-(स०वि०) सींचा हुआ।

सेज-(हि०स्त्री०) शय्या, पलग, बिछौना।

सेजपाल-(हि०पु०) राजा की शय्या पर पहरा देने वाला।

सेजरिया-(हिं०स्त्री०) छोटी पलग।

सेज्या-(हि०स्त्री०) देखो शय्या, सेज।

सेझना-(हिं०क्रि०) दूर होना, हटना।

सेट्-(अ०पु०) एक ही मेल की कई वस्तुओं का समूह।

सेटना-(हिं०क्रि०) समझना, बूझना, मानना

सेठ-(हिं० पु०) महाजन, साहूकार, कोठीवाल, बड़ा व्यापारी, धनी मनुष्य, सुनार, खत्रियो की एक जाति, दलाल।

सेठन-(हिं० पु०) झाड़ू, बोहारू।
सेड़ी-(हिं०स्त्री०) सखी, सहेली।
सेढ-(हिं०पु०) पाल।
सेढखाना-(हिं० पु०) जहाज़ में की पाल रखने की कोठरी।
सेत-(हिं०पु०) देखो सेतु, श्वेत।
सेतकुली-(हिं०पु०)सफेद जाति का नाग
सेतद्युति-(हिं०पु०) चन्द्रमा।
सेतवाह-(हिं०पु०) चन्द्रमा, अर्जुन।
सेत वाल-(हिं०पुं०) वैश्यों की एक जाति
सेतिका-(सं० स्त्री०) अयोध्या नगरी।
सेतु-(सं०पु०) जलबन्ध, बाँध, मेड़,पुल, सीमा,हदबन्दी,मर्यादा,व्यवस्था, टीका, व्याख्या, प्रणव, ओंकार।
सेतुक-(सं०पु०) पुल, बाघ।
सेतुकर(सं०त्रि०) पुल बनाने वाले च[illegible] रह
सेतुप्रद-(सं०पु०) कृष्ण का एक • प[illegible]कारे
सेतुबन्ध-(सं०पु०)वह पुल जो लव[illegible] हो आक्रमण करने के लिये श्री रामच[illegible] प्रके समुद्र पर बंधवाया था, खेत में की वधाई।
सेतुभेद-(सं०पु०) पुल का टूटना।
सेतुशैल-(सं०पु०) सरहद का पहाड़।
सेथुवा-(हिं०पु०) देखो सूत।
सेथिया-(हिं०पु०) नेत्रों की चिकित्सा करने वाला।
सेद-(हिं०पु०) देखो स्वेद, पसीना।
सेदज-(हिं०वि०) देखो स्वेदज।
सेदरा-(फ़ा० पु०) वह मकान जो तीन तरफ से खुला हो।
सेध-(सं०पु०) निषेध, निवारण,मनाही।
सेधक-(सं०वि०) हटाने या रोकने वाला
सेन-(सं०पु०) सेना, शरीर, जीवन, बंगाल के वैद्य जाति की उपाधि, (वि०)सनाथ, आश्रित, अधीन(हिं० पुं०) बाज पक्षी।
सेनाजित्-(सं० वि०) सेना को जीतने वाला, (पु०) कृष्ण के एक पुत्र का नाम,
सेनप-(सं०पु०) सेनापति।
सेना-(सं०स्त्री०) युद्धकी शिक्षा पाये हुए अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित मनुष्यों का बड़ा समूह, फौज़, पलटन, सिपाहियों का जत्था, भाला,बरछी, इन्द्र का वज्र, (हिं०क्रि०) सेवा टहल करना, आराधना करना, उपासना करना, व्यवहार करना, लिये बैठे रहना, पड़ा रहना, चिड़ियों का अंडे पर बैठना।
सेनाकर्म-(सं०नपु०) सेना का काम।
सेनाग्र-(सं०नपु०)फौज़ का अगला हिस्सा
सेनाजीवी-(सं०पु०)सैनिक,योद्धा,सिपाही
सेनादार-(हिं०पु०) सेना नायक।
सेनाधिप-(सं०पु०) सेना पति।
सेनाध्यक्ष-(सं०पु०) फौज़ का अफ़सर।
सेनानायक-(सं०पु०) फौजदार,सेनापति
सेनानी-(सं० पु०) सेनापति, कार्तिकेय का एक नाम, एक रुद्र का नाम।
सेनापति-(सं० पु०) फौज का एक अफसर, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
सेनापत्य-(सं०नपु०) सेनापति का कार्य या पद।
सेनापाल-(सं०पु०) सेनापति।
सेनामुख-(सं०नपु०)फौज का अगला भाग
सेनावास-(सं०पु०) वह स्थान जहा सेना रहती हो, छावनी, शिविर, डेरा।
सेनावाह-(सं०पु०) सेनानायक।
सेनाव्यूह-(सं०पुं०) सैन्यविन्यास, सेना की भिन्न स्थानों में विशेष प्रकार से नियुक्ति।
सेनास्थान-(सं०नपु०) शिविर, खेमा।
सेनि-(हिं० स्त्री०) देखो श्रेणी।
सेनिका-(हिं०स्त्री०) बाज़ पक्षी की मादा, एक छन्द का नाम।
सेनी-(फ़ा०स्त्री०)तश्तरी, रिकाबी,छिछली थाली, पंक्ति, कतार (हिं० पु०) अज्ञातवास के समय विराट के यहाँ सहदेव ने यह नाम रक्खा था।
सेनीय-(सं०वि०) सेना संबन्धी।
सेनेट-(अं०स्त्री०) प्रधान व्यक्ति का सभा, नियमों को बनाने की सभा, विश्वविद्यालय की प्रबन्ध कारिणी सभा।
सेन्द्रिय-(सं०वि०) जिसमें इन्द्रिया हो, सजीव।
सेफ़-(अं०पु०) रुपया पैसा तथा बहुमूल्य पदार्थ रखने का लोहे का तज़बूत बक्स
सेब-(फ़ा०पु०) नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक वृक्ष, इस वृक्ष का फल।
सेम-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।
सेमई-(हिं०वि०) हलका सब्ज़ रग,(वि०) हलके हरे रग का।
सेमन्ती-(सं० स्त्री०) सफेद गुलाब।
सेमर-(हिं०पु०) दलदली जमीन।
सेमल-(हिं० पु०) एक बहुत बड़ा वृक्ष जिसमें लाल फूल होते हैं, इन फलों या ढोंढों में गूदा नहीं होता केवल रूई होती है।
सेमा-(हिं०पु०) बड़ी सेम।
सेमीकोलन्-(अं० पु०) अंग्रेज़ी का एक विराम चिह्न (;)
सेर-(हिं०पु०) सोलह छटाँक या अस्सी तोले की तौल, मन का चालीसवाँ भाग,एक प्रकार का धान शेर,(वि०)तृप्त
सेरवा-(हिं०पु०) वह कपड़ा जो अन्न को ओसाने में हवा करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है।
सेरसाहि-(फ़ा० पुं०) दिल्ली का बादशाह, शेरशाह।
सेरही-(हिं०स्त्री०) वे सोलह कौड़िया जिनसे जुआ खेला जाता है।
सेरा-(हिं०पु०) चारपाई की पटिया जो सिरहाने की ओर रहती है।
सेरा-(फ़ा०पु०) सींची हुई ज़मीन।
सेराना-(हिं०क्रि०) शीतल होना, ठंढा होना, तृप्त होना, समाप्त होना, जीवित न रहना, ठंढा करना, मूर्ति आदि का जल में प्रवाह करना।
सेराब-(फ़ा० वि०) जल से भरा हुआ, सींचा हुआ।
सेराबी-(फ़ा० स्त्री०) भराव,सिंचाई।
सेराल-(सं० पु०) हलका पीलापन।
सेरी-(फ़ा० स्त्री०) तृप्ति, सन्तोष।
सेरीना-(हिं० स्त्री०) अन्न या चारे का वह अंश जो काश्तकार ज़मीदार को देता है।
सेरुआ-(हिं० पु०) वैश्य, बनिया।

सेरुवा-(हिं०पु०) वेश्यागामी, रंडीबाज।
सेल-(हिं० पु०) भाला, बरछा, एक प्रकार का सन का रस्सा।
सेल्-(अं० पु०) तोप का वह गोला जिसमें गोलियां आदि भरी होतीं।
सेलखड़ी-(हिं० स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
सेलना-(हिं० क्रि०) मर जाना, चल बसना।
सेला-(हिं० पु०) रेशमी चादर या दुपट्टा, साफा, भुजिया धान।
सेलिया-(हिं०पु०) घोड़े की एक जाति।
सेलिस-(सं० पुं०) एक प्रकार का सफेद हिरन।
सेली-(हिं०स्त्री०) छोटा भाला, बरछी, छोटा दुपट्टा, एक प्रकार की मछली, गाती, बद्धी या माला जिसको यती लोग गले में डाले रहते हैं अथवा माथे में लपेटते हैं, एक प्रकार का स्त्रियों का गहना।
सेलून्-(अं०पु०)जहाजका प्रधान कमरा, सजा हुआ रेल का लंबा डब्बा,आमोद प्रमोद का स्थान, बाल बनाने वाले हज्जामों की दूकान, अंग्रेजी शराब बिकने का स्थान।
सेल्ला-(हिं० पु०) एक प्रकार का अस्त्र, भाला।
सेल्ह-(हिं० पु०) देखो सेल।
सेल्हा-(हिं० पु०) देखो सेला, एक प्रकार का अगहनिया धान।
सेल्ही-(हिं०स्त्री०) छोटा दुपट्टा, गाँती।
सेवई-(हिं० स्त्री०) गुंधे हुए मैदे के सूत के समान लच्छे जो घी में भून कर तथा दूध में खीर की तरह पका कर खाये जाते हैं।
सेवढी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का धान।
सेवत-(हिं० पु०) एक प्रकार का राग
सेवँ-(हिं० पु०) सूत के रूप का बेसन का बना हुआ एक पक्वान्न।
सेवक-(सं० पु०) सेवा करने वाला, भृत्य, नौकर, भक्त, उपासक, व्यवहार करने वाला, छोड कर कहीं न जाने वाला, सीने वाला दरजी।
सेवकाई-(हिं०स्त्री०) सेवा, टहल।
सेवड़ा-(हिं० पु०) एक प्रकार का मोटा सेव, जैन साधुओं का एक भेद।
सेवति-(हिं० स्त्री०) देखो स्वाती।
सेवती-(सं० स्त्री०) गुलाब का एक भेद जो सफेद होता है।
सेवन-(सं० नपु०) सीना, गूथना, आराधना, पूजन, निरन्तर निवास, सम्भोग उपभोग, प्रयोग, सेवा,परिचर्या (हिं० पु०) सावा की तरह की एक प्रकार की घास।
सेवना-(हिं० पु०) देखो सेना।
सेवनी-(सं० स्त्री०) सूची, सूई, जोड़, टाका, दासी।
सेवनीय-(सं०वि०) सेवा करने योग्य, पूजा के योग्य, सीने लायक।
सेवर-(हिं० पु०) देखो शबर।
सेवल-(हिं०पु०) विवाह का एक रस्म
सेवा-(सं० स्त्री०) दूसरे को आराम पहुँचाने का काम, टहल, खिदमत, नौकरी, चाकरी, आराधना, पूजा, आश्रय, शरण, रक्षा, सभोग, मैथुन, सेवा में-सन्मुख, सामने, सेवाजन-भृत्य, नौकर।
सेवा टहल-(हिं०पुं०) परिचर्या शुश्रूषा।
सेवाती-(हिं० स्त्री०) देखो स्वाती।
सेवाधारी-(हिं०पु०) पुजारी।
सेवापन-(हिं०पु०) दासत्व, टहल।
सेवाबन्दगी-(फा०स्त्री०) आराधना, पूजा
सेवार, सेवाल-(हिं० स्त्री०) बालों की लच्छों की तरह पानी में फैलने वाली एक प्रकार की घास, शैवाल।
सेवावृत्ति-(सं०स्त्री०) दासत्व, नौकरी।
सेविङ्ग बैङ्क-(अं० पु०) बंक का वह विभाग जिसमें लोग अपने बचत के रुपये जमा करते हैं।
सेवि-(सं० नपु०) बेर का फल, सेव।
सेविका-(सं० स्त्री०) सेवई नामक पकवान, परिचारिका, दासी।
सेवित-(सं०त्रि०) परिचर्या या सेवा किया हुआ, आराधित, उपभोग किया हुआ, आश्रित, व्यवहार में लाया हुआ।
सेवितव्य-(सं० त्रि०) सेवा के योग्य, आश्रयणीय।
सेविता-(सं० स्त्री०) सेवा, दासवृत्ति, उपासना, आश्रय, उपभोग करने वाला।
सेवी-(सं० वि०) सेवा या आराधना करने वाला, सभोग करने वाला।
सेव्य-(सं०पु०) पीपल का वृक्ष, गौरैया पक्षी, जल, एक प्रकार का मद्य, स्वामी, मालिक (वि०) आराधना करने योग्य, रक्षा करने योग्य।
सेव्यसेवक-(सं०पु०) स्वामी और सेवक।
सेव्या-(सं० स्त्री०) वह पौधा जो दूसरे पेड़ों पर उगता है, बंदा।
सेशन्-(अं०पु०) न्यायालय, व्यवस्थापक सभा आदि का एक बार कुछ दिनों तक बैठने वाला अधिवेशन, स्कूल या कालेज की एक साथ कुछ दिनों तक चलने वाली पढ़ाई।
सेशन्स कोर्ट-(अं०पु०) वह बड़ी अदालत जहाँ जूरी या असेसरों की सहायता से फौजदारी के बड़े मुकदमों का विचार होता है, दौरा अदालत।
सेशन्स जज्-(अं०पु०) फौजदारी के बड़े मुकदमों का फैसला करने वाला न्यायाधीश।
सेश्वर-(सं० वि०) ईश्वरयुक्त, जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।
सेश्वर साङ्ख्य-(सं० नपु०) पातञ्जल दर्शन।
सेष-(हिं०पु०) देखो शेष, शेख।
सेस-(हिं० वि०) देखो शेष।
सेसनाग-(हिं० पु०) देखो शेषनाग।
सेसरंग-(हिं० वि०) श्वेत (सफेद) रंग।
सेसर-(हिं० पु०) ताश का एक रंग, जालसाज़ी, छल।
सेसरिया-(हिं०पु०) छल से दूसरे का धन अपहरण करने वाला।
सेसी-(हिं० पु०) एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष।
सेह-(फा० वि०) तीन।
सेहखाना-(फा०पु०) तिमंजिला मकान।
सेहत-(अ० स्त्री०) सुख, चैन, आराम,

रोग से मुक्ति।
सेहतखाना-(अ० पु०) पायखाने पेशाब करने की कोठरी।
सेहथना-(हि०क्रि०) झाड़ना, बुहारना।
सेहरा-(हि० पु०) विवाह का मुकुट, मौर, विवाह के अवसर पर वर के घर पर गाई जाने वाली गीत, किसी के सिर पर सेहरा बाँधना-एहसानमन्द होना।
सेहरी-(हि०स्त्री०) छोटी मछली, सहरी।
सेहा-(हि०पु०) कुवा खोदने वाला।
सेहिथान-(हिं० पु०) खलिहान साफ करने का कूँचा।
सेही-(हिं० स्त्री०) साही नामक जन्तु, जिसकी शरीर पर बड़े बड़े काँटे होते हैं
सेहुआँ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का चर्म रोग जिसमें शरीर पर भूरे दाग पड़ जाते हैं।
सेहुँड़-(हि०पु०) थूहर।
सैंगर-(हि०पु०) देखो सेंगर।
सैंतना-(हिं० क्रि०) सचित करना, बटोरना हाथों से समेटना, सँभालना, सावधानी से अपनी रक्षा में रखना।
सैंतालिस, सैंतालीस-(हिं० वि०) जो सख्या में चालीस और सात हो (पु०) चालीस और सात की सख्या ४७।
सैंतालीसवाँ-(हि०वि०) जिसका स्थान सैंतालीस पर हो।
सैंतिस, सैंतीस-(हिं०वि०) जो सख्या में तीस और सात हो (पु०) तीस और सात की सख्या ३७।
सैंतीसवाँ-(हिं० वि०) जिसका स्थान सैंतीस पर हो।
सैंपुल-(अ०पु०) नमूना।
सैंहल-(स०वि०) सिंहलद्वीप सबधी।
सै-(हि०स्त्री०) तत्व, सार, शक्ति, लाभ, वृद्धि, बढती, (पु०) शत, सौ।
सैकड़ा-(हि०पु०) सौ का समूह।
सैकड़े-(हिं०क्रि०वि०)प्रतिशत,सौ फीसदी।
सैकड़ों-(हि०वि०)कई सौ,गिनती में बहुत।
सैकत-(स० नपु०) बलुआ किनारा, रेतीली मिट्टी (वि०) रेतीला, बलुआ।
सैकतिल-(स०वि०) रेतीला, बलुआ।
सैक़ल-(अ० पु०) हथियारो को साफ करने तथा सान पर उनको तेज़ करने का काम।
सैक़लगर-(हिं० पु०) सान धरने वाला, सिकलीगर।
सैका-(हि० पु०) घड़े के आकार का मिट्टी का बड़ा बरतन।
सैजन-(हिं०पु०) देखो सहिजन।
सैतव-(स०वि०) सेतु (पुल) सबधी।
सैथी-(हि०स्त्री०) बरछी, भाला।
सैद-(हि०पु०) देखो सैयद।
सैद्धान्तिक-(स०वि०) सिद्धान्त या तत्व सम्बन्धी (वि०) सिद्धान्त को जानने वाला तान्त्रिक।
सैन-(हि०स्त्री०) सकेत, इशारा, लक्षण, चिह्न, निशान, देखो शयन, श्येन।
सैनक-(फा०पु०) थाली, रिकाबी,तश्तरी।
सैनपति-(हि०पु०) सेनापति।
सैनभोग-(हि०पु०) वह नैवेद्य जो रात्रि के समय मन्दिरों में चढ़ाया जाता है।
सैना-(हि०स्त्री०) सेना, फ़ौज।
सैनानीक-(हि०पु०) सेना का अग्र भाग,
सैनापत्य-सेनापति का पद या कार्य, सेनापति सबधी।
सैनिक-(स०पु०) सेना का सिपाही, तिलगा, सतरी, (वि०) सेना सबधी।
सैनिकता-(स० स्त्री०) युद्ध, लड़ाई, सैनिक का कार्य।
सैनिका-(हि०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द
सैनी-(हिं०पु०) नापित, हज्जाम।
सैनू-(हि०पु०) एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा।
सैनेय-(हिं०वि०) सेना के योग्य।
सैनेश-(हि०पु०) सेनापति।
सैनेस-(हि०पु०) देखो सैनेश।
सैन्दूर-(हिं०वि०) सिन्दूर के रग का।
सैन्धव-(स० पु०) सेंधा नमक, सिन्ध देश का घोड़ा, सिन्धु देश का राजा जयद्रथ, (वि०) सिन्धु देश मे उत्पन्न, समुद्र सम्बन्धी।
सैन्धवी-(स०स्त्री०) सपूर्ण जाति की एक रागिणी।
सैन्य-(स० नपु०) सेना, फौज, सिपाही, पलटन, शिविर, छावनी (वि०) सेना सबधी।
सैन्यनायक-(स० पु०) सेनापति।
सैन्यपृष्ठ-(स० पु०) फौज का पिछला भाग।
सैन्यवास-(सं०पुं०) छावनी, पड़ाव।
सैफ-(अ० स्त्री०) खड्ग, तलवार।
सैफा-(अ० पुं०) जिल्दसाज का किताबों का हाशिया काटने का औजार।
सैफो-(अ० वि०) तिरछा, टेढा।
सैमन्तिक-(स० पु०) सिन्दूर, सेंदुर।
सैयद-(अ०पु०) मुसलमानी के पैगम्बर मुहम्मद साहब के नाती हुसैन का वशज, मुसलमानो के चार वर्गों में से एक।
सैयाँ-(हि०पु०) स्वामी, मालिक, पति।
सैया-(हिं० स्त्री०) देखो शैय्या।
सैर-(फा० स्त्री०) मनोरजन के लिये घूमना फिरना, आनन्द, मौज, कौतुक, तमाशा, मनोरजन दृश्य, मित्र मण्डली का बगीचे आदि मे जाकर खानपान नाच रग आदि।
सैरगाह-(फ़ा०पु०) सैर करने का स्थान।
सैरन्ध्र-(स० पु०) गृहदास, घर का नौकर।
सैरन्ध्रिका-(स० स्त्री०) दासी, टहलनी।
सैरन्ध्री-(स०स्त्री०) अन्तःपुर में रहने वाली दासी, द्रौपदी का एक नाम।
सैरिभ-(स० पु०) स्वर्ग, आकाश।
सैल-(हि०पु०)देखो शैल, सैर (फा०स्त्री०) जलकी बाढ़, स्रोत, बहाव।
सैलकुमारी-(हिं०स्त्री०)देखो शैल कुमारी।
सैलजा-(हिं० स्त्री०) देखो शैलजा।
सैलसुता-(हि० स्त्री०) देखो शैलसुता।
सैला-(हि०पु०) लकड़ी का छोटा डडा, मेख, गुल्ली, मुगरी, चैला, वह छोटा डडा जो जुवे के छेद में पड़ाया रहता है।
सैलात्मजा-(हि०स्त्री०)शैलात्मजा,पार्वती।
सैलानी-(हि० वि०) सैर करने वाला,

मनमाना घुमने वाला, आनंदी, मनमौजी

सैलाब-(फा०पु०) जल की बाढ़।

सैलाबा-(फा० पु०) वह फस्ल जो पानी में डूब गई हो।

सैलाबी-(फा० वि०) जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो, बाढ़ सम्बन्धी (स्त्री०) सीड़, तरी।

सैली-(हि०स्त्री०) छोटा सेला, टोकरी।

सैव-(हि०वि०) देखो शैव।

सैवल, सैवाली-(हि०पु०) देखो शैवाल।

सैस-(स०वि०) सीसे का बना हुआ।

सैसव-(हि०पु०) देखो शैशव।

सैहथी-(हि०स्त्री०) शक्ति, बरछी।

सों-(हि०अव्य०) देखो सौंह, (क्रि०वि०) संग, साथ (सर्व०) सो, (प्रत्य०) द्वारा, से।

सोंच-(हि०पु०) देखो सोच।

सोंचर नमक-(हि०पु०) काला नमक।

सोंटा-(हि० पु०) मोटी सीधी लम्बी लकड़ी, मोटा डंडा, लाठी, भंग घोटना, मल्लूल बनाने की लकड़ी।

सोंटाबरदार-(हि० पु०) बल्लमदार, आसाबरदार।

सोंठ-(हि० स्त्री०) सुखाया हुआ अदरख, शुंठी।

सोंठराय-(हि०पु०) बड़ा कृपण मनुष्य, कलूस।

सोंठौरा-(हि० पु०) एक प्रकार का सूजी का लड्डू जिसमें सोंठ पड़ी रहती है, यह प्रसूता स्त्री को खिलाया जाता है।

सोंधा-(हि० वि०) सुगन्धित, खुशबूदार, सूखी भूमि या नये मिट्टी के बरतन पर पानी पड़ने से अथवा चना आदि के भूनने से निकलने वाली सुगन्ध के समान, (पु०) स्त्रियों के सिर धोने का एक प्रकार का सुगंधित मसाला, नारियल के तेल में मिलाने का सुगन्धित मसाला (पु०) सुगन्ध, खुशबू।

सोंधिया-(हि०पु०) रौहिप घास।

सोंधी-(हि० पु०) एक प्रकार का बढ़िया धान।

सोंधु-(हि०वि०) देखो सोंधा।

सोंपना-(हि०क्रि०) देखो सौंपना।

सोंवनिया-(हि०पु०) स्त्रियों के नाक में पहरने का एक प्रकार का गहना।

सोंह-(हि०अव्य०) देखो सौंह।

सो-(हि० सर्व०) वह (अव्य०) अतएव, इस लिये।

सोऽहम्-(स०) संस्कृत का एक वाक्य जिसका अर्थ "वही मैं हूँ" है, वेदान्ती लोग कहा करते हैं कि मैं वही हूँ अर्थात् ब्रह्म हूँ, इनके सिद्धान्त के अनुसार जीव और ब्रह्म में कोई अन्तर नहीं है।

सोऽहमस्मि-(स०) मैं वही हूँ, मैं ही ब्रह्म हूँ।

सोअना-(हि० क्रि०) देखो सोना, निद्रा लेना।

सोआ-(हि० पु०) एक प्रकार का सुगन्धित शाक।

सोई-(हि० स्त्री०) वह गड्ढा जहा पर बरसात या बाढ़ का पानी रुक जाता है, डाबर (सर्व०) वही, (अव्य०) देखो सो।

सोक-(हि०पु०) देखो शोक।

सोकन-(हि० पु०) देखो सोखन।

सोकना-(हि०क्रि०) देखो सोखना, शोक करना।

सोकन-(हि०पु०) देखो सोखन।

सोकता-(हि० पु०) देखो सोख्ता।

सोखन-(हि०वि०) सोखने वाला (पु०) एक प्रकार का जगली धान।

सोखना-(हि० क्रि०) रस खींच लेना, चूस लेना, पीना।

सोखाई-(हि०स्त्री०) सोखने की क्रिया या भाव, सोखाने की मजदूरी, जादू टोना।

सोख्ता-(फा० पु०) स्याही सोख कागज़ (वि०) जला हुआ।

सोगन-(हि०स्त्री०) सौगंद, क़सम, शपथ।

सोगनी-(हि०स्त्री०) शोक करने वाली, दुःखिता।

सोगी-(हि०वि०) शोकाकुल, दुखित।

सोच-(हि० पु०) सोचने की क्रिया या भाव, चिन्ता, दुःख, पश्चात्ताप।

सोचना-(हि० क्रि०) चिन्ता करना, विचार करना, दुःख करना।

सोचविचार-(हि० पु०) समझ बूझ, ध्यान, गौर।

सोचाना-(हि० क्रि०) विचार कराना, सुझाना।

सोचु-(हि०पु०) देखो सोच।

सोज-(हि० स्त्री०) सूजने की अवस्था, सूजन, शोथ।

सोजन-(फा०पु०) सूई, कांटा।

सोजनी, सोजाक-(हि०) देखो सुजनी, सुजाक।

सोज़िश-(फा०स्त्री०) सूजन, शोथ, फुलाव।

सोझ, सोझा-(हि० वि०) सरल, सीधा।

सोटा-(हि० पु०) देखो सोंटा।

सोठ-(हि० स्त्री०) देखो सोंठ।

सोडा-(अं०पुं०) एक प्रकार का क्षार जो सज्जी को रसायनिक क्रिया से शुद्ध करके बनता है।

सोडावाटर-(अं० पु०) एक प्रकार का पाचक का पानी।

सोढ-(स० वि०) सहिष्णु, सहनशील।

सोढर-(हि० पु०) मूर्ख, बेवकूफ।

सोढव्य-(स० वि०) सहन करने योग्य।

सोढा-(स०वि०) जिसने सहन किया हो।

सोणत-(हि० पु०) रुधिर, खून।

सोत-(हि०पुं०) देखो स्रोत, सोता।

सोता-(हि०पुं०) जल की निरन्तर बहने वाली छोटी धारा, झरना, नदी की शाखा, नहर, सोति।

सोतिया-(हि०स्त्री०) देखो सोता।

सोती-(हि०स्त्री०) सोता, धारा, देखो श्रोत्रिय।

सोत्कण्ठ-(स० वि०) उत्कण्ठा सहित, उनमना।

सोत्कर्ष-(स० वि०) उत्तम, दिव्य।

सोत्सव-(स०वि०) उत्सव सहित, प्रफुल्ल, प्रसन्न, खुश।

सोथ-(हि० पु०) देखो शोथ।

सोदन-(हि० पुं०) कागज़ का वह टुकड़ा जिस पर सूई से छेद कर के बेल

बूटे बनाये होते हैं यह कसीदा काढने के काम में आता है।
सोदर-(स० पु०) सहोदर, सगाभाई।
सोदरा, सोदरी-(स० स्त्री०) सगी बहिन।
सोद्वेग-(स० वि०) विचलित,चिन्तित।
सोध-(स० पु०) प्रासाद, महल, (हिं० पु०) खोज खबर, टोह, पता ठिकाना, सशोधन।
सोधक-(हिं० पु०) शोधने वाला।
सोधन-(हिं० पु०) ढूंढ, तलाश।
सोधना-(हिं० क्रि०) शुद्ध करना, साफ करना निर्णय करना,दोष हटाना दुरुस्त करना, ठीक करना।
सोधाना-(हिं० क्रि०) शुद्ध कराना, दुरुस्त कराना।
सोन-(हिं०पु०) भारत की एक प्रसिद्ध नदी का नाम, एक प्रकार का जल पक्षी, लहसुन।
सोनकीकर-(हिं० पुं०) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी गोंद औषधियों में प्रयोग की जाती है।
सोनकेला-(हिं० पु०) चपा केला।
सोनगढी-(हिं०पु०) एक प्रकार का गन्ना
सोनचम्पा-(हिं०पु०) पीले रग का चंपा
सोनचिरी-(हिं० स्त्री०) नदी।
सोनजरद (जर्द)-(फा० स्त्री०) पीले रग की जूही।
सोनजूही-(हिं०स्त्री०) पीली जूही।
सोनभद्र-(स० पु०) सोन नदी।
सोनहला-(हिं०पु०) भटकटैये का काटा, देखो सुनहला।
सोनहा-(हिं० पु०) कुत्ते की जाति का एक छोटा जगली पशु, इसको कोभी भी कहते हैं।
सोना-(हिं० पु०) पीले रग० का एक मुलायम प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु, सुवर्ण, अत्यन्त बहुमूल्य वस्तु, बहुत महगी अति सुन्दर वस्तु,एक प्रकार का राजहस, मझोले कद का एक पहाड़ी वृक्ष (स्त्री०) एक प्रकार की मछली, (हिं० क्रि०) नींद लेना, शरीर के किसी अग का सुन्न हो जाना, सोने का घर मिट्टी होना-धन दौलत का नाश होना, सोने में घुन लगना-कोई असभव घटना होना, सोना सुगन्ध होना-किसी उत्तम वस्तु में अधिक विशेषता होना।
सोनागेरू-(हिं० पु०) अधिक लाल तथा मुलायम जाति का गेरू।
सोना पाठा-(हिं०पु०) एक प्रकार का ऊचा वृक्ष जिसके फल, बीज तथा छाल औषधियों में प्रयोग होते हैं।
सोना पेट-(हिं०पु०) सोने की खान।
सोना मक्खी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का खनिज पदार्थ।
सोनामाखी-(हिं० स्त्री०) देखो सोना मक्खी।
सोनार-(हिं० पु०) देखो सुनार।
सोनित-(हिं० पु०) देखो शोणित, रुधिर।
सोनी-(हिं० पु०) तुन की जाति का एक वृक्ष।
सोनेइया-(हिं० पु०) वैश्यों की एक जाति।
सोन्माद-(हिं० वि०) उन्माद युक्त।
सोप-(हिं० पु०) एक प्रकार की छपी हुई चादर, (अ० पु०) साबुन।
सोपकरण-(स०वि०) उपकरण युक्त।
सोपक्रम-(स० वि०) उपक्रम युक्त।
सोपत-(हिं० पु०) सुविधा, आराम का प्रबंध।
सोपप्लव-(स० पु०) राहु ग्रस्त सूर्य और चन्द्रमा।
सोपम-(स०वि०) उपमा युक्त।
सोपवास-(स० वि०) उपवासी।
सोपहास-(स० वि०) उपहास युक्त।
सोपाक-(स० पु०) चाडाल, वनौषधि बेचने वाला।
सोपाधि,सोपाधिक-(स०वि०) उपाधि युक्त।
सोपान-(स० नपु०) सीढी, ज़ीना।
सोपानित-(स०वि०)सीढियों से युक्त।
सोपाश्रय-(स०वि०) उपाश्रय युक्त।
सोपि-(स० वि०) वही, वह भी।
सोफता-(हिं०पु०) एकान्त या निर्जन स्थान, बीमारी में कमी होना।
सोफियाना-(अ० वि०) सोफी संबंधी, देखने में साफ सुथरा तथा भला लगने वाला।
सोफी-(फा०पु०) देखो सूफी।
सोभ-(हिं०पु०) देखो शोभा।
सोभन-(हिं०पु०) देखो शोभन।
सोभना-(हिं०क्रि०) शोभित होना।
सोभर-(हिं० पु०) सूतिकागृह, सौरी।
सोभा-(हिं०स्त्री०) देखो शोभा।
सोभाकारी-(हिं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
सोभायमान-(हिं०वि०)देखो शोभायमान
सोमित-(हिं०वि०) देखो शोभित।
सोम-(स०नपु०) स्वर्ग, आकाश (पु०) सोमवार, चन्द्रमा, अमृत, यम, वायु, कुबेर, जल, सोम यज्ञ, आठ वसुओं में से एक, एक वानर का नाम, सोमलता का रस, यज्ञ की सामग्री, स्त्रियों का एक रोग, वैदिक काल के एक देवता।
सोमक-(स० पु०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सोमकर-(स०पु०) चन्द्रमा की किरण।
सोमकान्त-(स०पु०) चन्द्रकान्त मणि।
सोमक्रतु-(स० पु०)-सोम यज्ञ।
सोमक्षय-(स०पु०) अमावस्या।
सोमगर्भ-(स०पु०) विष्णु।
सोमज-(स०नपुं०) बुध ग्रह।
सोमजाजी-(हिं० पु०) सोम यज्ञ करने वाला।
सोमदिन-(स०पु०) चन्द्रवार।
सोमदैवत-(स० पु०) मृगशिरा राशि।
सोमधारा-(स०स्त्री०) स्वर्ग।
सोमन-(हिं०पु०) एक प्रकार का अस्त्र।
सोमनाथ-(सं० पु०) जूनागढ राज्य का एक प्राचीन नगर।
सोमपति-(स० पु०) इन्द्र।
सोमपा-(स०त्रि०)सोम पान करने वाला।
सोमपान-(स० नपु०) सोम पीने की क्रिया।
सोमपायी-(स० त्रि०) सोम पान

करने वाला ।
सोमपुत्र-(स०पु०) चन्द्रमा के पुत्र बुध ।
सोम प्रदोष-(स० पु०) सोमवार को पड़ने वाला प्रदोष व्रत ।
सोमबन्धु-(स० पु०) कुमुद, सूर्य, बुध ।
सोमबेल-(हिं० स्त्री०) गुलचादनी का पौधा ।
सोमभवा-(स० स्त्री०) नर्मदा नदी ।
सोमभू-(स० पु०) चन्द्रवंशीय ।
सोममख-(स०पु०) सोमयज्ञ ।
सोमयाग-(स० पु०) एक त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोमरस पिया जाता था ।
सोमयाजी-(स० पु०) सोम यज्ञ करने वाला ।
सोमयोनि-(स० नपु०) हरिचन्दन, पीला चदन ।
सोमरस-(स०पु०) सोम लता का रस ।
सोमराज-(स०पु०) चन्द्रमा ।
सोमराजसुत-(स० पु०) चन्द्रमा का पुत्र बुध ।
सोमराजी-(स० पु०) बकुची, काली जीरी, एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में छ वर्ण होते हैं ।
सोमराज्य-(स०नपु०) चन्द्रलोक ।
सोमरोग-(स० पु०) स्त्रियों का बहुमूत्र रोग ।
सोमल-(हिं०पु०) संखिया विष का एक भेद ।
सोमलोक-(स०पु०) चन्द्रलोक ।
सोमवंश-(स०पु०) चन्द्रवंश ।
सोमवंशीय-(स०वि०) चन्द्रवंश का ।
सोमवती अमावस्या-(स० स्त्री०) सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या जो पुण्य तिथि मानी जाती है ।
सोमवल्लरि-(स०स्त्री०) सोम लता ।
सोमवल्ली-(स०स्त्री०) सोम लता, गुड़ुच, ब्राह्मी, गजपीतल ।
सोमवार-(स०पु०) चन्द्रमा का वार, चन्द्रवार ।
सोमवारी-(हिं०स्त्री०) सोमवार सबंधी ।
सोमवीथी-(स०स्त्री०) चन्द्रमण्डल ।
सोमव्रत-(स०नपु०) सोमवार का व्रत ।
सोमसञ्ज्ञ-(सं० नपु०) कपूर ।
सोमसार-(स०पु०) सफेद खैर ।
सोमसिन्धु-(स०पु०) विष्णु ।
सोमसुत-(सं०पु०) चन्द्रमा के पुत्र बुध ।
सोमसुता-(स०स्त्री०) नर्मदा नदी ।
सोमा-(स० स्त्री०) सोमलता, एक अप्सरा का नाम ।
सोमाधार-(स०पु०) सोम रखने का पात्र
सोमाभा-(स०स्त्री०) चन्द्रमा की किरणें ।
सोमालक-(स०पु०) पुखराज नामक मणि
सोमावती-(स० स्त्री०) चन्द्रमा की माता का नाम ।
सोमाष्टमी-(स० स्त्री०) सोमवार को पड़ने वाली अष्टमी ।
सोमास्त्र-(स०पु०) चन्द्रमा का अस्त्र ।
सोमित्रि-(स०पु०) लक्ष्मण ।
सोमीय-(स०वि०) सोम सबंधी ।
सोमेश्वर-(स० पु०) काशी में सोम द्वारा प्रतिष्ठित शिव, सगीत शास्त्र के प्रणेता एक प्राचीन कवि का नाम ।
सोमोद्भव-(स०वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न ।
सोय-(हिं०सर्व०) सो, वही ।
सोया-(हिं०पु०) देखो सोआ ।
सोर-(हिं० स्त्री०) मूल, जड़, (पु०) देखो शोर, कोलाहल ।
सोरठ-(हिं०पु०) गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम, इस प्रदेश की राजधानी सूरत, एक राग का नाम ।
सोरठ मल्लार-(हिं० पु०) सपूर्ण जाति का एक राग ।
सोरठा-(हिं० पु०) अड़तालीस मात्राओं का एक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह तथा दूसरे और चौथे चरण में तेरह मात्रायें होती हैं ।
सोरठी-(हिं०स्त्री०)एक रागिणी का नाम ।
सोरन-(हिं० पु०) जमीकन्द, सूरन ।
सोरनी-(हिं०स्त्री०) झाड़ू, कूचा बुहारी ।
सोरह-(हिं०वि०) देखो सोलह ।
सोरही-(हिं०स्त्री०)सोलह चिची कौड़िया जिससे लोग जुआ खेलते हैं, सोलह कौड़ियों से खेला जाने वाला जुआ ।
सोरा-(हिं० पु०) शोरा, मिट्टी में से निकलने वाला एक प्रकार का नमक ।
सोरी-(हिं०स्त्री०) बरतन में के महीन छेद जिसमें से होकर पानी टपक कर बह जाता है ।
सोलकी-(हिं० पु०) क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश ।
सोलपंगो-(हिं०पु०) केकड़ा ।
सोलपोल-(हिं०पु०) व्यर्थ का, बेफायदा
सोलह-(हिं० वि०) दस और छ की सख्या का (पु०) दस और छ की सख्या १६ , सोलहवा-जिसका स्थान पन्द्रह के बाद हो ।
सोलह सिंगार-(हिं०पु०) स्त्रियों का पूरा सिंगार जिसके अन्तर्गत—शरीर में उबटन लगाना, स्नान करना, सुन्दर वस्त्र पहरना, बाल सवारना, काजल लगाना, माग में सेंधुर भरना, महावर लगाना, मस्तक पर तिलक लगाना, चिबुक पर टीका लगाना, मेंहदी लगाना, सुगन्ध लगाना, गहना पहरना मिस्सी लगाना, पान खाना, होठों को लाल करना तथा माला पहरना हैं ।
सोलही-(हिं० स्त्री०) देखो सोरही ।
सोला-(अ० पु०) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी डालियों के छिलके बहुत हलके होते हैं, यह अँग्रेजी टोपियों के बनाने के काम में आता है ।
सोलाना-(हि० क्रि०) देखो सुलाना ।
सोल्लास-(स० वि०) आनन्द पूर्वक ।
सोवज-(हि० पु०) देखो सावज ।
सोवड़-(हिं० पु०) देखो सौरी ।
सोवरणी-(हि० स्त्री०) बुहारी, झाड़ू ।
सोवना-(हिं० क्रि०) देखो सोना निद्रा लेना ।
सोवा-(हि० पु०) देखो सोआ ।
सोवाना-(हिं० क्रि०) देखो सुलाना ।
सोवैया-(हि०पु०) सोने वाला ।
सोशल-(अं० वि०) समाज सबंधी, सामाजिक ।
सोशलिज्म-(अ० पु०) साम्य वाद ।
सोपण-(हि० पु०) देखो शोपण ।

सोषना–(हि० क्रि०) देखो सोखना ।
सोषु–(हिं०वि०) सोखने वाला ।
सोसन–(फा०पु०) एक प्रकार का पहाड़ी फूल का पौधा ।
सोसनी–(फा०वि०) सोसन के फूल के समान लाली लिये हुए नीला ।
सोसाइटी–(अ०स्त्री०) समाज, गोष्ठी ।
सोसायटी–(अ०स्त्री०) देखो सोसाइटी ।
सोस्मि–(स०वाक्य०) देखो सोऽहम् ।
सोहगी–(हि० स्त्री०) विवाह सबध में तिलक चढाने के बाद की एक रस्म जिसमें वर के घर से कन्या के लिये गहना वस्त्र आदि भेजा जाता है, सोहाग की वस्तु ।
सोहन–(हि० वि०) शोभन, अच्छा लगने वाला ।
सुहावना–(पु०) सुन्दर पुरुष,(स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जो भारत में सर्वत्र पाई जाती है, इसका लोग शिकार करते हैं, (फा० पु०) एक प्रकार की बढ़इयों की रेती ।
सोहन पपड़ी–(हि०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरे के रूप में बनाई जाती है ।
सोहन हलवा–(हि०पु०) एक प्रकार की मेवा आदि पड़ी हुई कतरे के रूप में बनी हुई मिठाई ।
सोहना–(हि०क्रि०) शोभित होना,सजना, अच्छा लगना, उपयुक्त होना, खेत में उगी हुई घास को काट कर अलग करना, निराना, (फा०पु०) कसेरों का एक नुकीला औजार ।
सोहनी–(हि०स्त्री०) झाड़ू, बुहारी, एक रागिणी का नाम, खेत में की घास निकालने की क्रिया ।
सोहबत–(अ०स्त्री०) सगसाथ,स्त्री प्रसग ।
सोहर–(हिं०पु०) एक प्रकार की गीत जिसको स्त्रिया घर में बच्चा पैदा होने पर गाती हैं, मागलिक गीत, (स्त्री०) सूतिकागृह, सौरी, नाव की पाल खींचने की रस्सी ।
सोहराना–(हिं० क्रि०) शरीर पर हाथ फेरना ।
सोहला–(हिं०पु०)मागलिक गीत,सोहर ।
सोहाइन–(हिं०वि०) सुहावना, सुन्दर ।
सोहाई–(हि० स्त्री०) खेत में उगी हुई घास निकालने का काम, निराई निराने की मजदूरी ।
सोहाग–(हिं०पु०) सुहाग, सौभाग्य ।
सोहागा–(हिं० पु०) एक प्रसिद्ध क्षार द्रव्य, टकण क्षार ।
सोहागिनी, सोहागिन–(हि०स्त्री०) देखो सुहागिन ।
सोहाता–(हि०वि०) सुहावना, अच्छा ।
सोहाना–(हि० क्रि०) शोभित होना, सजना, अच्छा लगना, रुचना ।
सोहाया–(हि०वि०) शोभायमान,सुन्दर ।
सोहारद–(हिं०पु०) देखो सौहार्द ।
सोहाल–(हि०पु०) देखो सुहाल ।
सोहवना–(हिं०वि०) सुहावना, (हि०क्रि०) देखो सुहाना ।
सोहासित–(हिं०वि०) रुचिर, प्रिय ।
सोंहिं–(हि०क्रि०वि०) देखो सौंह ।
सोहिनी–(स०स्त्री०) शोभायमान, सुन्दर (स्त्री०) एक राग का नाम ।
सोहिल–(हि०पु०) अगस्त्य नामक तारा जो चन्द्रमा के पास देख पड़ता है ।
सोहिला–(हि०पु०) देखो सोहला ।
सोहीं, सोहैं–(हिं० क्रि० वि०) सन्मुख, सामने ।
सौं–(हि० स्त्री०) सौंह, (प्रत्य०) सो, सा ।
सौंधा–(हिं०वि०) अच्छा,उत्तम,उचित ।
सौंधाई–(हिं०स्त्री०) अधिकता, ज्यादती ।
सौंधी–(हि०वि०) देखो सौंधा ।
सौंचना–(हि०क्रि०) मल,त्याग करना, हाथ पैर धोना ।
सौंचर–(हि०पु०) सौंचर नमक ।
सौंचना–(हि० क्रि०) मल त्याग करना, हाथ पैर धोना ।
सौंज–(हिं०स्त्री०) देखो सोज ।
सौंड़–(हिं०पु०) ओढने का वस्त्र ।
सौंतुख–(हि० पु०) प्रत्यक्ष, सन्मुख (क्रि०वि०) आख के सामने ।
सौंदना–(हि० स्त्री०) कपड़ों को रेह के पानी में भिगोना, सानना, मिलाना ।
सौन्दर्ज–(हिं०पु०) देखो सौन्दर्य ।
सौंदर्य–(हि० पु०) सुन्दरता, खूबसूरती ।
सौंदर्यता–(हि०स्त्री०) देखो सौंदर्य ।
सौंध–(हिं० स्त्री०) सुगन्ध, खुशबू ।
सौंधना–(हिं० क्रि०) सुगन्धित करना, वासना ।
सौंधा–(हि०वि०) सौंधा, रुचिकर ।
सौंनमक्खी–(हिं०स्त्री०)देखो सोनामक्खी
सौंपना–(हि०क्रि०) सपुर्द करना, हवाले करना, सहेजना ।
सौंफ–(हिं० स्त्री०) इस नाम का पौधा जिसके बीज औषधियों में तथा मसालों में व्यवहार किये जाते हैं ।
सौंफिया, सौंफी–(हि०स्त्री०) सौंफ की बनी हुई शराब ।
सौंर–(हि०पु०) देखो सौरी ।
सौंरई–(हि०स्त्री०) सावलापन ।
सौंरना–(हि० क्रि०) देखा सँवारना, याद करना ।
सौंह–(हिं०पु०)शपथ, सौगन्ध,(क्रि०वि०) सन्मुख, सामने ।
सौंहन–(हिं०पु०) देखो सोहन ।
सौंही–(हिं०स्त्री०)एक प्रकार का हथियार
सौ–(हि०वि०) नब्बे और दस की सख्या का (पु०) नब्बे और दस की सख्या, सौ बात की एक बात–साराश,तत्व ।
सौक–(हि०स्त्री०) सपत्नी, सौत (वि०) एकसौ ।
सौकन–(हिं०स्त्री०) देखो सौत ।
सौकरायण–(स०पु०)शिकारी, व्याध ।
सौकर्य–(सं० नपु०) सुविधा, सुबीता, सुकरता, शूकरता, सुअरपन ।
सौकीन–(हि० पु०) देखो शौकीन,
सौकीनी–(हि०स्त्री०)देखो शौकीनी ।
सौकुमार्य–(स० नपु०) सुकुमारता, कोमलता,यौवन,जवानी, काव्य का वह गुण जिसमें ग्राम्य तथा उन शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता जो सुनने में कटु हों ।
सौकृत्य–(स० नपु०) यज्ञ, याग आदि का अनुष्ठान ।

सौक्ष्म-(स०नपु०) सूक्ष्म का धर्म या भाव।
सौख-(हिं०पु०) सुख का भाव या धर्म, आराम, देखो शौक।
सौख्य-(स० नपु०) सुख, आराम, सुखता।
सौख्यदायी-(स०वि०) सुख देने वाला।
सौगत-(स०वि०) सुगत सबधी (पु०) धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
सौगन्द-(हि० स्त्री०) शपथ, कसम।
सौगन्ध-(स० नपु०) सुगन्ध, खुशबू, (पु०) सुगन्धित तैल इत्र आदि का व्यापारी।
सौगन्धक-(स०नपु०) नीला कमल।
सौगम्य-(स०नपु०) सुगमता, आसानी।
सौगरिया-(हिं०पु०) क्षत्रियों की एक जाति का नाम।
सौगात-(स०स्त्री०) इष्ट मित्रों को देने के लिये परदेश से लाई हुई वस्तु, भेंट, नजर।
सौगाती-(हिं० वि०) उपहार देने के योग्य, उत्तम, बढ़िया।
सौघा-(हिं०वि०) सस्ते दाम का, कम मूल्य का।
सौच-(हिं०पु०) देखो शौच।
सौचिक-(स० पु०) दरजी, एक वर्ण सकर जाति।
सौज-(हि० स्त्री०) उपकरण, सामग्री, सामान, (वि०) बलवान, ताकतवर।
सौजना-(हिं०क्रि०) देखो सजना।
सौजन्य-(स०नपु०)सुजनता,भलमनसी।
सौजन्यता-(हि०पु०) देखो सौजन्य।
सौजा-(हिं० पु०) वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जावे।
सौत-(हिं०स्त्री०) किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका, सौतिया डाह-वह ईर्ष्या जो सपत्नियों में रहती है।
सौतन, सौतनि,सौतिन-(हिं० स्त्री०) देखो सौत।
सौतुक-(हिं०पु०) सन्मुख, सामने।
सौतेला-(हिं० वि०) सौत से उत्पन्न, जिसका सम्बन्ध सौत के रिश्ते में हो।
सौत्र-(स० वि०) सूत्र सबधी।
सौत्रामणि-(स० स्त्री०) एक यज्ञ जो इन्द्र के प्रीत्यर्थ किया जाता है।
सौत्रिक-(स०पु०) जुलाहा।
सौदर्य-(स० पु०) भातृत्व, भाईपन (वि०) सगे भाई का।
सौदा-(अ०पु०) वह वस्तु जो खरीदी या बेंची जावे, क्रय विक्रय, खरीद फरोख्त, लेनदेन, व्यापार, लेनदेन की बात पक्की करना, सौदा सुलुफ-क्रय विक्रय की वस्तु, (फा० पु०) पागलपन।
सौदाई-(अ० पु०) पागलपन।
सौदागर-(फा० पु०) व्यापारी।
सौदागरी-(फा० स्त्री०) सौदागर का काम, तिजारत।
सौदामनी-(स०स्त्री०) विद्युत्, बिजली, एक रागिणी का नाम, एक अप्सरा का नाम।
सौदामिनी-(स०स्त्री०) देखो सौदामनी।
सौदायिक-(सं०पु०) वह धन जो स्त्री को उसके विवाह के समय उसके माता पिता या पति के यहा से मिलता है, स्त्री धन।
सौध-(स० पु०) भवन, महल, चादी, दुधिया पत्थर (वि०) पलस्तर किया हुआ
सौधकार-(स० पु०) मकान बनाने वाला राज।
सौधना-(हि०क्रि०) बनाना।
सौधार-(स० पु०) नाटक के चौदह भागों में से एक भाग।
सौधाल-(स० नपु०) शिवालय।
सौन-(स०नपु०) कसाई, बूचड़।
सौनक-(हिं०पु०) देखो शौनक।
सौन्दन-(हि०स्त्री०) देखो सौंदन।
सौनन्द-(स० नपु०) बलदेव का मूसल।
सौनिक-(स०पु०) मास बेंचने वाला, बहेलिया।
सौन्दर्य-(स०नपु०) सुन्दरता, खूबसूरती
सौपना-(हि०क्रि०) देखो सौंपना।
सौपर्ण-(स०नपु०) मरकत मणि, पन्ना।
सौफियाना-(हिं०वि०)देखो सोफियाना।
सौबल-(स० पु०) राजा सुबल के पुत्र शकुनि।
सौबली-(स० स्त्री०) सौबल की पुत्री, गान्धारी।
सौविका-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की बुलबुल।
सौभ-(सं० नपु०) राजा हरिश्चन्द्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश में थी, एक प्राचीन जनपद का नाम।
सौभग-(स०नपु०) सुख,ऐश्वर्य,सुन्दरता, आनन्द।
सौभद्र-(स० पु०) सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु।
सौभरि-(स० पु०) एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने मान्धाता की पचास कन्याओं से विवाह किया था।
सौभागिनी-(हिं० स्त्री०) सधवा स्त्री, सोहागिन।
सौभाग्य-(स०नपु०) अच्छा भाग्य,सुख, आनन्द, कुशल क्षेम, अनुराग, सिंदूर, सोहागा, स्त्री का सधवा होना, सुन्दरता, ऐश्वर्य, शुभ कामना, मनोहरता, सफलता।
सौभाग्य तृतीया-(स० स्त्री०) भाद्रपद मास की शुक्ला तृतीया।
सौभाग्यव्रत-(स०नपु०) फाल्गुन शुक्ला तृतीया तिथि का व्रत।
सौभाग्यवती-(स० त्रि०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, अच्छे भाग्य वाली।
सौभाग्यवान्-(स०त्रि०) अच्छे भाग्य वाला, सुखी।
सौभिक्ष्य-(स० पु०) खाद्य पदार्थ की प्रचुरता का समय।
सौम-(स० वि०) चन्द्रमा सबधी।
सौमन-(स० पु०) एक प्रकार का अस्त्र, फूल।
सौमनस-(स० त्रि०) पुष्प सबधी, मनोहर (पु०) प्रफुल्लता, अनुग्रह, कृपा, अस्त्रों का सहार,
सौमनसा-(सं० स्त्री०) जावित्री।

सौमनस्य–(सं०नपु०) श्राद्ध में ब्राह्मण के हाथ में फूल देना, आनन्द।
सौमित्र–(स० पु०) सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण।
सौमित्रा–(हि० पु०) देखो सुमित्रा।
सौमुख्य–(सं०नपु०) सुमुखता, प्रसन्नता।
सौम्य–(स० पु०) बुध ग्रह, विप्र, ब्राह्मण, सोम यज्ञ, पित्त, अगहन का महीना, साठ संवत्सरो में से एक, सुशीलता, सज्जनता, मृगशिरा नक्षत्र, हथेली का मध्य भाग, (वि०) उज्वल, सुन्दर, मनोहर, प्रसन्न, शुभ, उत्तर की ओर का, सुशील, शान्त, चन्द्रमा सबंधी।
सौम्यगन्धा–(स० स्त्री०) सेवती।
सौम्यता–(स०स्त्री०) शीतलता, ठढक, उत्तरता, सुन्दरता।
सौम्यदर्शन–(स० वि०) जो देखने में सुन्दर हो।
सौम्यवार–(स० पु०) बुधवार।
सौम्यशिखा–(स० स्त्री०) मुक्तक विषम वृत्तके दो भेदों में से एक।
सौम्या–(स० स्त्री०) दुर्गा, रुद्रजटा, बड़ी मालकँगनी, घुमची, ब्राह्मी, मोती, मृगशिरा नक्षत्र, आर्या छन्द का एक भेद।
सौर–(स० पुं०) सूर्य के पुत्र शनि, बीसवें कल्प का नाम, धनिया, सूर्योपासक, सूर्य का भक्त, (वि०) सूर्य सबधी, सूर्य से उत्पन्न।
सौरज–(स०वि०)सौर जात(पु०) धनिया।
सौरठवाल–(हि० पु०) वैश्यों की एक जाति।
सौरत–(स० वि०) सुरत या रति क्रीडा सबधी।
सौरदिवस–(सं० पु०) एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का समय, साठ दण्ड का काल।
सौरध्री–(स०स्त्री०) एक प्रकार का सितार
सौरभ–(स० नपु०) केशर, सुगन्ध, धनिया, एक प्रकार का मसाला, आम, (वि०) सुगन्ध युक्त, खुशबूदार।
सौरभक–(स०पुं०) एकप्रकार का छन्द।
सौरभित–(स०वि०) महकने वाला।
सौरभेय–(सं० पुं०) वृष, साड़।
सौरभेयी–(स० स्त्री०) गाय, एक अप्सरा का नाम।
सौरभ्य–(स० नपु०) सुगन्ध, खुशबू, कीर्ति, प्रसिद्धि (पु०) कुवेर।
सौर मास–(स०पु०) वह महीना जो सूर्य के किसी एक राशि में रहने तक माना जाना जाता है, एक सक्रान्ति से दूसरी सक्रान्ति तक का समय।
सौरवर्ष, सौरसंवत्सर–(स०पु०) उतना काल जितना सूर्य की मेषादि बारह राशियों पर घूम आने में लगता है।
सौरसेन–(हि० पु०) देखो शौरसेन।
सौरसेय–(स०पु०) स्कन्द, कार्तिकेय।
सौराटी–(स०स्त्री०) एक रागिणी का नाम।
सौराष्ट्र–(स०पु०)काठियावाड़ का प्राचीन नाम कासा, एक वर्णवृत्त का नाम।
सौराष्ट्रक–(स० नपु०) सौराष्ट्र का रहने वाला।
सौराष्ट्रमृत्तिका–(स०स्त्री०) गोपीचन्दन।
सौराष्ट्रिक–सौराष्ट्र सबधी।
सौरास्त्र–(स०पुं०)एक प्रकार का दिव्यास्त्र
सौरि–(स०पु०) शनि, हुरहुर का पौधा
सौरिक–(स०वि०) स्वर्गीय, मद्य सबधी।
सौरिरत्न–(स० नपु०) नीलम।
सौरी–(हि०स्त्री०) वह कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जनती है, जच्चाखाना, (स० स्त्री०) सूर्य की पत्नी, गाय।
सौरेय–(स०पु०) सफेद कटसरैया।
सौर्य–(सं० वि०) सूर्य सबधी (पु०) सूर्य के पुत्र।
सौलभ्य–(सं०पु०) सुलभता।
सौला–(हि०पु०) राजगीरों का साहुल।
सौवर्चल–(स० नपु०) सोंचर नमक, सज्जी मिट्टी।
सौवर्ण–(स०वि०) सुवर्ण सबधी (पु०) सोने का अलकार।
सौविद–(स०पु०) अन्तःपुर का रक्षक, कचुकी।
सौवीर–(स० पु०) सिन्धुनद के पास का एक प्राचीन देश, बेर का फल, रसाञ्जन, सुरमा।
सौवीराञ्जन–(स०नपु०) सुरमा।
सौवीरी–(सं०स्त्री०) सगीत में एक प्रकार की मूर्छना।
सौशील्य–(स० नपु०) शुद्ध स्वभाव, साधुता।
सौश्रय–(स० पु०) ऐश्वर्य, विभव।
सौष्ठव–(स०नपु०) उपयुक्तता, सुन्दरता, तेजी, शरीर की एक मुद्रा, नाटक का एक अग।
सौसन–(फा०पु०) देखो सोसन।
सौसनी–(फा० पु०) देखो सोसनी।
सौस्वर्य–(स०नपु०) सुस्वरता, सुरीलापन।
सौहँ–(हि०स्त्री०) शपथ, कसम (क्रि०वि०) सन्मुख, सामने, आगे।
सौहन–(हिं० पु०) पैसे का चौथाई भाग, छदाम।
सौहर–(हिं० पु०) देखो शौहर।
सौहरा–(हिं०पु०) ससुर।
सौहार्द्र–(स०नपु०) मित्रता, मैत्री, दोस्ती।
सौहार्द्य–(स० नपु०) देखो सौहार्द्र।
सौहित्य–(स० नपु०) तृप्ति, सन्तोष, पूर्णता।
सौहीं–(फा० स्त्री०) एक प्रकार की रेती (क्रि०वि०) सामने, आगे।
सौहृद–(स०नपु०) मित्रता, दोस्ती, मित्र, (वि०) मित्र सबन्धी।
स्कन्द–(स० पु०) कार्तिकेय, कुमार, शरीर, राजा, पारद, नदी तट, महादेव, पण्डित, बालग्रह, विनाश, ध्वस।
स्कन्दक–(स० पु०) सैनिक, एक प्रकार का छन्द।
स्कन्दगुप्त–(स० पु०) गुप्त वश के एक प्रसिद्ध प्राचीन सम्राट, इनका समय ४५० से ४६७ ईस्वी तक माना जाता है।
स्कन्दजननी–(स०स्त्री०) पार्वती।
स्कन्दजित्–(स० पु०) विष्णु का एक नाम।
स्कन्दन–(स०नपु०) कोठा साफ होना, रेचन, गमन, शोषण।
स्कन्दपुराण–(स०नपु०) अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण का नाम।

स्कन्दफला–(स० स्त्री०) खजूर।
स्कन्दमाता–(स०स्त्री०) दुर्गा।
स्कन्दषष्ठी–(स०स्त्री०) चैत्र शुक्ला षष्ठी।
स्कन्दित–(स०वि०) पतित, गिरा हुआ।
स्कन्दी–(स०वि०) उछलने कूदने वाला।
स्कन्ध–(स०पु०) कन्धा, वृक्ष का तना, मोढा, शाखा, समूह, राजा, सेना का अग, ग्रन्थ का कोई खण्ड, मार्ग, पथ, शरीर, युद्ध, आचार्य, सन्धि, आर्या छन्द का एक भेद, दर्शन शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध ये पाच विषय।
स्कन्धचाप–(स० पु०) बहगी जिस पर कहार बोझ ढोवे हैं।
स्कन्धतरु–(स०पु०) नारियल का वृक्ष।
स्कन्धदेश–(स० पु०) हाथी की गरदन, मोढा।
स्कन्धफला–(स०स्त्री०) खजूर।
स्कन्धरुह–(स०पु०) वट वृक्ष।
स्कन्धवाह–(स० पु०) वह पशु जो कन्धे के बल बोझ ढोता हो, स्कन्ध-शृंग–भैंस।
स्कन्धावार–(स० पु०) सेना, फौज, छावनी, शिविर।
स्कम्भ–(स० पु०) स्तम्भ, खभा।
स्कालर–(अ०पु०) स्कूल में पढने वाला छात्र, विद्याध्ययन करने वाला, पण्डित।
स्कालरशिप्–(अ०पु०) छात्रवृत्ति विद्वत्ता
स्कीम्–(अ०स्त्री०) आयोजन, योजना।
स्कूल–(अ०पु०) विद्यालय, पाठशाला।
स्कूलमास्टर–(अ० पु०) विद्यालय में पढाने वाला।
स्कूली–(हि०वि०) स्कूल सबन्धी।
स्क्रू–(अं०पु०) वह पेंच जो घुमाकर लोहे लकड़ी आदि में जड़ी जाती है।
स्खलन–(स०नपु०) पतन, गिरना।
स्खलित–(स०वि०) गिरा हुआ, विच्-लित, फिसला हुआ, सरका हुआ, चूका हुआ, लड़खड़ाया हुआ।
स्टांप–(अ०पु०) एक प्रकार का सरकारी कागज जिसपर पक्की लिखा पढी की जाती है, डाक का टिकट, मोहर, छाप।
स्टाइल्–(अ० स्त्री०) ढग, तरीका, पद्धति, शैली।
स्टाक–(अ०पु०) बिक्री का माल, सामान, रसद, गुदाम, व्यवसाय में लगाई हुई पूजी, सरकारी कर्ज की हुडी।
स्टाक-एक्स्चेन्ज्–(अ० पु०) वह स्थान जहा स्टाक् के शेयर खरीदे और बेंचे जाते हैं।
स्टार्कब्रोकर–(अ० पु०) स्टाक् या शेयर का दलाल।
स्टिचिंग् मशीन–(अ०स्त्री०) लोहे या पीतल के तार से पुस्तक आदि सीने की मशीन।
स्टीम्–(अ०पु०) जल वाष्प।
स्टीम्एन्जिन्–(अ०पु०) भाफ से चलने वाला अजन।
स्टीमर–(अ०पु०) भाफ से चलने वाला जहाज, धूम्रपोत।
स्टूल्–(अ०पु०) एक प्रकार की तीन या चार पावे की ऊची चौकी जिस पर एक ही आदमी बैठ सक्ता है।
स्टेज्–(अ० पु०) थियेटर या नाट्य मन्दिर में का मच जिस पर नाटक खेला जाता है।
स्टेज मनेजर–(अ०पु०) रग मच का व्यवस्थापक।
स्टेट्–(अ० पु०) स्वतन्त्र राष्ट्र बड़ी जमीदारी, स्थावर और जगम सम्पत्ति।
स्टेशन्–(अ० पु०) रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान।
स्ट्रेट्–(अ०पु०) जल डमरुमध्य।
स्तन–(स०पु०) स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें दूध रहता है, कुच।
स्तनदात्री–(स० स्त्री०) छाती का दूध पिलाने वाली।
स्तनय–(स०पु०) दूध पीता बच्चा।
स्तनपान–(स० नपु०) स्तन में का दूध पीना।
स्तनपायी–(स०वि०) जो माता के स्तन से दूध पीता हो।
स्तनभव–(स०त्रि०) स्तन से उत्पन्न।
स्तनमुख–(स०पु०) स्तन का अग्र भाग, चूंची।
स्तनित–(स० वि०) ध्वनित, गर्जन किया हुआ।
स्तन्यप–(स०पु०) दूध पीता बच्चा।
स्तब्ध–(स०वि०) स्तम्भित, स्थिर, दृढ, मन्द, धीमा, अभिमानी, हठी, मूर्छित, बहरा।
स्तब्धकर्ण–(स०त्रि०) बहरा।
स्तब्धता–(स० स्त्री०) स्थिरता, दृढता, बहरापन।
स्तब्धपाद्–(स० त्रि०) जिसके पैर जकड़ गये हो।
स्तब्धमति–(स०वि०) मन्दबुद्धि।
स्तम्ब–(स०पु०) गुल्म, घास की आटी।
स्तम्बक–(स०पु०) गुच्छा।
स्तम्बकार–(स०पु०) गुच्छा बनाने वाला
स्तम्बहनन–(स० स्त्री०) घास खोदने की खुरपी।
स्तम्बी–(स० स्त्री०) घास खोदने की खुरपी।
स्तम्भ (स०पु०) खभा, थूनी, प्रतिबन्ध, रुकावट, जड़ता, पेड़ का तना, अभिमान, काव्य के सात्विक भावों में से एक।
स्तम्भक–(स० त्रि०) रोकने वाला, खभा, थूनी।
स्तम्भकर–(स०पु०) खभा गाड़ने वाला,
स्तम्भता–(स०स्त्री०) जड़ता।
स्तम्भन–(स०नपु०) अवरोध, रुकावट, स्थिरी करण, वीर्य आदि के स्खलन में विलब, वीर्यपात रोकने की दवा, जड़ी करण, किसी की चेष्टा या शक्ति रोकने की तान्त्रिक विधि, मल का अवरोध, कामदेव के पाच बाणों में से एक।
स्तम्भनी–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का इन्द्रजाल।
स्तम्भनीय–(स०वि०) स्तम्भन करने योग्य
स्तम्भनवृत्ति–(स० स्त्री०) प्राणायाम में सास रोकने का कार्य।
स्तम्भिका–(स० स्त्री०) छोटा खभा खभिया।

स्तम्भित-(सं०वि०) जड़ीभूत, निश्चल, स्थिर, निवारित रोका हुआ।
स्तम्भिनी-(सं० स्त्री०) योग के अनुसार धारणाओं में से एक।
स्तम्भी-(सं० वि०) रोकने वाला।
स्तर-(सं० पु०) थर, तह, तबक, परत, शय्या, सेज, भूगर्भ शास्त्र के अनुसार भूमि का वह विभाग जो भिन्न भिन्न कालों में बनी हुई तहों के आधार पर होता है।
स्तरण-(सं०नपु०) फैलाने की क्रिया, पलस्तर, बिछौना।
स्तरणीय-(सं०वि०) फैलाने योग्य।
स्तरु-(सं०पु०) वैरी, शत्रु।
स्तर्य-(सं०वि०) फैलाने या बिखेरने योग्य
स्तव-(सं०पु०) स्तोत्र, स्तुति, गान।
स्तवक-(सं०पु०) फूलों का गुच्छा,स्तोत्र, ढेर, समूह, पुस्तक का अध्याय, परिच्छेद।
स्तवन-(सं० नपु०) स्तुति।
स्तवनीय-(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।
स्तवरक-(सं०पुं०) वेष्टन, घेरा।
स्तवितव्य-(सं०वि०) प्रशंसा के योग्य।
स्तविता-(सं० वि०) स्तुति करने वाला।
स्तवेरय-(सं०पु०) इन्द्र।
स्तव्य-(सं०वि०) स्तुति करने के योग्य।
स्ताव-(सं०पुं०) गुणगान।
स्तावक-(सं०वि०) गुण गान करने वाला।
स्तावा-(सं०स्त्री०) एक अप्सरा का नाम।
स्ताव्य-(सं० वि०) प्रशंसा के योग्य।
स्तिमित-(सं० वि०) निश्चल, स्थिर, सन्तुष्ट, प्रसन्न, भीगा, (नपु०) आर्द्रता, नमी।
स्तीर्ण-(सं०वि०) विस्तीर्ण, फैलाया हुआ।
स्तुटि-(सं०पु०) भारद्वाज पक्षी।
स्तुत-(सं०वि०) प्रशंसित, स्तुति किया हुआ, कीर्तित (पु०) स्तुति, प्रशंसा।
स्तुति-(सं० स्त्री०) गुणकीर्तन, प्रशंसा, तारीफ।
स्तुतिपाठक-(सं०पु०) चारण, भाट।
स्तुतिवाद-(सं०पुं०) गुणगान।
स्तुतिवादक-(सं० वि०) प्रशंसा करने वाला, प्रशंसक, खुशामदी।
स्तुतिव्रत-(सं०पु०) स्तुतिपाठक।
स्तुत्य-(सं०वि०) प्रशंसनीय,स्तुति के योग्य।
स्तुत्या-(सं०स्त्री०) गोपीचन्दन।
स्तुनक-(सं०पुं०) छाग, बकरा।
स्तूप-(सं० पु०) मिट्टी आदि का ढेर, ऊंचा ढूहा या टीला, घर में लगी हुई सबसे बड़ी शहतीर, जोता, बालों की लट, ईंटे पत्थर आदि का बना हुआ वह ऊंचा टीला जिसके नीचे बुद्ध या अन्य महात्मा की हड्डी आदि गड़ी हो।
स्तेन-(सं० पु०) चोर, एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।
स्तेम-(सं० पुं०) गीलापन, नमी।
स्तेय-(सं०नपु०) चौर्य, चोरी।
स्तेयी-(सं० पु०) सुनार, चूहा, मूसा।
स्तोक-(सं० पु०) चातक, पपीहा, बूंद (वि०) थोड़ा, कम।
स्तोतव्य-(सं० वि०) स्तुति के योग्य।
स्तोता-(सं० वि०) स्तुति करने वाला।
स्तोत्र-(सं० नपु०) कविता रूप से किसी देवता का वर्णन, स्तुति।
स्तोत्रीय-(सं०वि०) स्तोत्र संबंधी।
स्तोभ-(सं०पु०) सामवेद का एक अंग।
स्तोम-(सं० नपु०) मस्तक, धन, अन्न, लोहे का नुकीला डंडा, (वि०) टेढ़ा (पु०) समूह, राशि, स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ करने वाला, एक प्रकार की ईंट।
स्तोम्य-(सं०वि०) प्रार्थना करने योग्य।
स्त्यन-(सं०नपु०) घनत्व, घनापन (वि०) कड़ा, घना, चिकना।
स्त्यैन-(सं०पुं०) चोर (वि०) अल्प,थोड़ा।
स्त्री-(सं० स्त्री०) औरत, नारी, पत्नी, प्रियंगु लता, एक वृक्ष का नाम।
स्त्रीकरण-(सं० नपु०) संभोग, मैथुन।
स्त्रीकाम-(सं० स्त्री०) स्त्री की कामना करने वाला।
स्त्रीकोश-(सं०पु०) खड्ग, तलवार।
स्त्रीक्षीर-(सं०नपु०) स्त्री के स्तन का दूध।
स्त्रीगमन-(सं० नपु०) संभोग, मैथुन।
स्त्रीगवी-(सं०स्त्री०) धेनु, गाय।
स्त्रीगुरु-(सं०पु०) दीक्षा देने वाली स्त्री।
स्त्रीघातक-(सं० वि०) स्त्री की हत्या करने वाला।
स्त्रीचञ्चल-(सं० वि०) कामी, लपट।
स्त्रीचौर-(सं०पु०) स्त्री को चुराने वाला।
स्त्रीजननी-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो केवल कन्या उत्पन्न करती है।
स्त्रीजित-(सं० वि०) स्त्री के वशीभूत, जोरू का गुलाम।
स्त्रीत्व-(सं० नपु०) स्त्रीपन, ज़नानापन।
स्त्रीधन-(सं० नपु०) वह सम्पत्ति या धन जिस पर स्त्री का पूर्ण अधिकार हो
स्त्रीधर्म-(सं० पु०) आर्तव, स्त्री का रजस्वला होना, मैथुन, स्त्रियों के शुभ कर्म।
स्त्रीधर्मिणी-(सं० स्त्री०) रजस्वला स्त्री।
स्त्रीधूर्त-(सं० पुं०) स्त्रियों को छलने वाला पुरुष।
स्त्रीध्वज-(सं० स्त्री०) जिसमें स्त्रियों के चिह्न हों।
स्त्रीनिबन्धन-(सं० पु०) गृहस्थी का कार्य जो स्त्रियां करती हैं।
स्त्रीपर-(सं० पु०) कामी, लम्पट।
स्त्रीपुर-(सं० पु०) ज़नानखाना।
स्त्रीपुष्प-(सं०नपु०) आर्तव।
स्त्रीप्रसङ्ग-(सं०पु०) संभोग, मैथुन।
स्त्रीप्रिय-(सं० पु०) आम का पेड़, अशोक।
स्त्रीभूषण-(सं० पु०) केतकी, केवड़ा।
स्त्रीमन्त्र-(सं० पु०) वह मन्त्र जिसके अन्त में स्वाहा शब्द हो।
स्त्रीरञ्जन-(सं० नपु०) ताम्बूल।
स्त्रीरत्न-(सं० नपु०) श्रेष्ठ नारी, लक्ष्मी।
स्त्रीराज्य-(सं०पु०) वह देश जहां स्त्रियों का राज्य हो।
स्त्रीरोग-(सं० पु०) स्त्रियों का योनि संबंधी रोग।
स्त्रीलम्पट-(सं० वि०) विषयी, कामी।
स्त्रीलिङ्ग-(सं० नपु०) व्याकरण में स्त्री वाचक शब्द, भग, योनि।
स्त्रीगौण्ड-(सं०पु०) लम्पट, कामी।

स्त्रीसंग्रहण-(स० पु०) व्यभिचार।
स्त्रीसंसर्ग-(स० पुं०) मैथुन।
स्त्रीसङ्ग-(स०पु०) स्त्री समागम-
स्त्रीसम्भोग-(स० पु०) मैथुन।
स्त्रीसेवा-(स० स्त्री०) मैथुन।
स्त्रीस्वभाव-(स० पु०) अन्तःपुर का रक्षक।
स्त्रीहत्या-(स०स्त्री०) स्त्री का वध।
स्त्रीव्रत-अपनी पत्नी के अतिरिक्त दूसरी स्त्री से कामना न करना।
स्त्रैण-(स० वि०) स्त्री सबधी, स्त्री के योग्य।
स्थ-(स० प्रत्यय०) उपस्थित, स्थित, निवास तथा लीन अर्थ में शब्दो के अन्त में जोड़ा जाता है।
स्थकित-(स०वि०) शिथिल, थका हुआ।
स्थग-(स०त्रि०) धूर्त, धोखेबाज़।
स्थगन-(स० नपु०) आच्छादन, छिपाव, गोपन।
स्थगित-(स० वि०) गुप्त, छिपा हुआ। रोका हुआ, मुल्तवी।
स्थगु-(स०नपु०) पीठ पर का कूबड़।
स्थण्डिल-(स० नपु०) यज्ञ के लिये साफ की हुई भूमि, मिट्टी का ढेर, सिवान।
स्थपति-(स०पु०) राजा, शासक, अन्तःपुर का रक्षक, भवन निर्माण कला में निपुण, रथ हाकने वाला।
स्थपनी-(स० स्त्री०) दोनों भौंओं के बीच का स्थान।
स्थपुट-(स० वि०) कुब्ज, कुबड़ा (पु०) कूबड़।
स्थल-(स०नपु०) भूभाग, भूमि, स्थान, जगह, अवसर, मौका, पुस्तक का अश या परिच्छेद।
स्थलकन्द-(स० पुं०) ज़मीकन्द।
स्थलकमल-(स०नपु०) कमल की आकार का एक फूल जो भूमि पर होता है।
स्थलकाली-(सं० स्त्री०) दुर्गा की एक सहचरी का नाम।
स्थलकुमुद-(स० पु०) कनेर।
स्थला-(स० त्रि०) भूमि पर रहने वाला।
स्थलचर-(स०वि०) स्थल पर रहने या विचरने वाला।
स्थलचारी-(स० वि०) स्थलचर।
स्थलज-(स० वि०) भूमि में से उत्पन्न।
स्थलनीरज-(स० पु०) स्थलकमल।
स्थलपथ-(स० पु०) स्थलरूप मार्ग।
स्थलपद्म-(स०नपु०) शतपत्र, तमालक, स्थलकमल।
स्थलपिण्डा-(स० स्त्री०) पिंडखजूर।
स्थलपुष्पा-(स० स्त्री०) गुलमखमली।
स्थलमञ्जरी-(स०स्त्री०) अपामार्ग, लटजीरा।
स्थलमर्कट-(स० पु०) करौंदा।
स्थलयुद्ध-(स० नपु०) भूमि पर होने वाली लड़ाई।
स्थलविहङ्ग-(स०पु०) भूमि पर विचरने वाला पक्षी।
स्थलशृङ्गाट-(स० पु०) गोखरू।
स्थलारविन्द-(स० नपु०) स्थलकमल।
स्थली-(स० स्त्री०) जलशून्य भूमि, ऊची नीची ज़मीन, स्थान, जगह।
स्थलीय-(स०वि०) स्थानीय, स्थल सबधी।
स्थलेरुहा-(स० स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुआर।
स्थलेशय-(स०पु०) कुरङ्ग, हरिन।
स्थवि-(स० पु०) तन्तुवाह, जुलाहा, स्वर्ग, अग्नि।
स्थविर-(स० पु०) ब्रह्मा, वृद्ध, बुड्ढा, भिक्षुक, अचल, कदम्ब।
स्थविरा-(स० स्त्री०) बुड्ढी स्त्री।
स्थविष्ठ-(स०वि०) बहुत स्थूल या मोटा।
स्थाई-(हिं० वि०) देखो स्थायी।
स्थाणु-(स०पु०) शिव, महादेव, ब्रह्मा, एक प्रकार का अस्त्र, वृक्ष का तना, खभा, थूनी।
स्थाणुतीर्थ-थानेश्वर नामक तीर्थ।
स्थाणुरोग-(सं० पु०) घोड़ों का एक प्रकार का रोग।
स्थातव्य-(स० वि०) स्थानीय, रहने योग्य।
स्थान-(स०नपु०) स्थिति, ठहराव, टिकाव, भूमिभाग, मैदान, जगह, ठौर, वेदी, डेरा, पद, दरजा, ओहदा, राज्य, देश, देवालय, किला, अवसर, अवस्था, कारण, काम करने का स्थान, किसी ग्रन्थ का परिच्छेद।
स्थानक-(स० नपुं) नगर, शहर, पेड़ का थाला, नाचने में एक प्रकार की मुद्रा।
स्थान चञ्चला-(स०स्त्री०) वनतुलसी।
स्थानचिन्तक-(स०पु०) सेना के पड़ाव का प्रबन्ध करने वाला।
स्थानच्युत-(स० वि०) अपनी जगह से गिरा हुआ, अपने पद से हटाया हुआ।
स्थानत्याग-(स०पु०) जगह का छोड़ देना
स्थानपाल-(स० पु०) देश का रक्षक।
स्थानभङ्ग-(स० वि०) देखो स्थानच्युत।
स्थानभूमि-(स० स्त्री०) रहने का ठौर, मकान।
स्थानभ्रष्ट-(स० वि०) स्थानच्युत।
स्थानमृग-(स० पु०) मगर, कछुआ।
स्थानविद्-(स० वि०) जानकार।
स्थानस्थ-(स० वि०) जो अपने स्थान पर स्थिर हो।
स्थानाध्यक्ष-(स०पु०) किसी स्थान का रक्षक।
स्थानान्तर-(स०पुं०) दूसरा स्थान।
स्थानान्तरित-(स० वि०) एक स्थान से हट कर दूसरे स्थान को जाने वाला।
स्थानापन्न-(स० वि०) दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से काम करने वाला, एवज़ी, कायम मुक़ाम।
स्थानिक-(स० वि०) उल्लेखित (पु०) स्थान का रक्षक, मन्दिर का प्रबधक।
स्थानी-(हिं० वि०) उपयुक्त, उचित, स्थायी, ठहरने वाला।
स्थानीय-(स० वि०) स्थान स्थित, स्थान सबधी, स्थिति योग्य।
स्थानेश्वर-(स० पु०) कुरुक्षेत्र का थानेश्वर नामक स्थान।
स्थापक-(स०वि०) रखने या खड़ा करने वाला, देवमूर्ति बनाने वाला, अमानत रखने वाला, सस्थापक, सूत्रधार का सहकारी।
स्थापत्य-(सं०पु०) अन्तःपुर का रक्षक

(नपु०) भवननिर्माण, मेमारी की कला।
स्थापत्यवेद-(सं०पुं०) चार उपवेदों में से एक।
स्थापन-(सं०नपु०) प्रतिपादन, निरूपण, रक्षा का उपाय, रोकने की विधि, नया काम जारी करना, खड़ा करना, बैठाना, जमाना, जकड़ना, पकड़ना, सिद्ध करना, समाधि।
स्थापना-(हिं०स्त्री०) स्थापन, प्रतिष्ठित करना, बैठाना, जमा करना, सिद्ध करना।
स्थापनिक-(सं०वि०) जमा किया हुआ।
स्थापनीय-(सं०वि०) स्थापित करने योग्य
स्थापित-(सं० वि०) निर्दिष्ट, व्यवस्थित, निश्चित, प्रतिष्ठित, कायम किया हुआ, रक्षित।
स्थाय-(सं०पु०) आधार, पात्र।
स्थायित्व-(सं०नपु०) स्थिरता, दृढ़ता, स्थायी होने का भाव, टिकाव, ठहराव।
स्थायी-(सं० वि०) स्थिर रहने वाला, ठहरने वाला, टिकने वाला, विश्वस्त, विश्वास करने योग्य (पु०) साहित्य में वह भाव जिसकी स्थिति सर्वदा रस में रहती है।
स्थायीभाव-(सं० पु०) साहित्य के भाव जो संख्या में नव हैं यथा-रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निन्दा, विस्मय, और निर्वेद।
स्थायी समिति-(हिं० पु०) किसी सभा का संचालन करने वाली दो अधिवेशनों के बीच में होने वाली कार्य कारिणी सभा
स्थाल-(सं०नपु०) थाल, परात, थाली।
स्थालक-(सं०नपु०) पीठ की रीढ़।
स्थाली-(सं०स्त्री०) मिट्टी की रिकाबी, हँड़िया
स्थालीपाक-(सं० पु०) आहुति के लिये दूध में पकाया हुआ चावल या जव।
स्थाली पुलक न्याय-(सं०पु०) समान स्थिति में रहने वाली वस्तुओं में से जो दो एक में परिवर्तन होगा वह सभी में होगा-इस प्रकार का निर्णय।
स्थालीवृक्ष-(सं०पु०) अश्वत्थ, पीपल।
स्थावर-(सं० नपुं०) पर्वत, धनुष की डोरी, अचल सम्पत्ति, गैर मनकूला जायदाद, (वि०) एक ही स्थान में रहने वाला, स्थायी।
स्थावरराज-(सं०पु०) हिमालय।
स्थावर विष-(सं०पु०) स्थावर पदार्थों में होने वाला विष।
स्थाविर-(सं०नपु०) वृद्धावस्था, बुढ़ौती।
स्थित-(सं० वि०) ठहरा हुआ, टिका हुआ, रहने वाला, विद्यमान, मौजूद, बसा हुआ, लगा हुआ, निश्चल, स्थिर, खड़ा हुआ, अपनी प्रतिज्ञा पर अटल।
स्थितधी-(सं० त्रि०) जिसका चित्त सर्वदा स्थिर रहे।
स्थितप्रज्ञ-(सं० त्रि०) समस्त विकारों से रहित, आत्मसन्तोषी।
स्थितता-(हिं० स्त्री०) ठहराव।
स्थिति-(सं० स्त्री०) ढंग, तरीका, पद, अस्तित्व, आकृति, स्थिरता, संयोग, ठहरने का स्थान, अवस्था, निवृत्ति, नियम, पालन, सीमा, मर्यादा, निवास, अवस्थान, दशा।
स्थिति स्थापक-(सं०पु०) किसी वस्तु का अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त होना, लचीला, सहज में झुकने वाला।
स्थिति स्थापकता-(सं०स्त्री०) लचीलापन
स्थिर-(सं० पु०) वृक्ष, पर्वत, मोक्ष, ज्योतिष में एक योग का नाम, साड़, स्कन्द का एक अनुचर, एक प्रकार का छन्द (वि०) निश्चल, ठहरा हुआ, दृढ़, अचल, शान्त, स्थायी।
स्थिरकर्मा-(सं० त्रि०) दृढ़ता से काम करने वाला।
स्थिरकुसुम-(सं०पुं०) मौलसिरी।
स्थिरगन्ध-(सं० पुं०) चम्पा।
स्थिरचित्त-(सं० त्रि०) जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो।
स्थिरच्छद-(सं०पु०) भोजपत्र।
स्थिरच्छाय-(सं०वि०) निश्चल, छाया युक्त
स्थिरजिह्व-(सं० पुं०) मछली।
स्थिरजीविता-(सं०स्त्री०) सेमल का वृक्ष।
स्थिरजीवी-(सं०पुं०) काक, कौवा।
स्थिरतर-(सं०वि०) अति स्थिर।
स्थिरता-(सं०स्त्री०) दृढ़ता, धैर्य।
स्थिरदंष्ट्र-(सं०पु०) सर्प।
स्थिरधन्वा-(सं०पुं०) दृढ़ चित्त मनुष्य।
स्थिरपत्र-(सं०पुं०) महाताल वृक्ष।
स्थिरपुष्प-(सं०पु०) चम्पा का वृक्ष।
स्थिरफला-(सं०स्त्री०) कूष्माण्ड की लता।
स्थिरबुद्धि-(सं० वि०) दृढ़चित्त, जिसका मन स्थिर हो।
स्थिरमति-(सं० स्त्री०) स्थिरबुद्धि।
स्थिरमद-(सं०पु०) मयूर, मोर।
स्थिरयौवन-(सं०पुं०) विद्याधर।
स्थिरराग-(सं०त्रि०) निश्चल प्रेम।
स्थिर वाच्-(सं०त्रि०) सत्यप्रतिज्ञ।
स्थिरश्री-(सं० वि०) जिसकी सम्पत्ति स्थायी हो।
स्थिरा-(सं० स्त्री०) पृथ्वी, दृढ़ चित्त वाली स्त्री।
स्थिरायु-(सं०पु०) चिरजीवी।
स्थूण-(सं०पु०) एक यक्ष का नाम।
स्थूणा-(सं० स्त्री०) खंभा, थूनी, पेड़ का तना, निहाई।
स्थूल-(सं०वि०) पीवर, मोटा ताज़ा, मूर्ख, जिसका तल समान हो, (पु०) कटहल, शिव के एक गण का नाम, इन्द्रियों द्वारा सामान्य रूप से ग्राह्य।
स्थूलकणा-(सं० नपुं०) मगरैला।
स्थूलकन्द-(सं०पुं०) सूरण, ओल।
स्थूलकुमुद-(सं०पुं०) सफेद कनेर।
स्थूलचाप-(सं०पुं०) रूई धुनने की धुनकी
स्थूलता-(सं० स्त्री०) मोटापन, भद्दापन।
स्थूलताल-(सं०पु०) हिन्ताल, श्रीताल।
स्थूलदर्भा-(सं०स्त्री०) मूंज नामक घास।
स्थूलदर्शक, सूक्ष्मदर्शक-(सं०पुं०) जिस यन्त्र की सहायता से सूक्ष्म वस्तु बड़ी देख पडे।
स्थूलदला-(सं०स्त्री०) घीकुआर।
स्थूलनाल-(सं०पु०) बड़ी नरकट।
स्थूलनास-(सं०पु०) शूकर, सुअर।
स्थूलनासिक-(सं०वि०) जिसकी नाक बड़ी और मोटी हो।
स्थूलपट-(सं०पु०,नपु०) मोटा कपड़ा।
स्थूलपत्र-(सं०पुं०) दमनक, दौना।
स्थूलपाद-(सं०पुं०) फ़ीलपाव रोग वाला।

स्थूलपुष्प-(सं०पु०) अगस्त्य का वृक्ष।
स्थूलफला-(सं०स्त्री०) शाल्मली।
स्थूलभाव-(सं०पु०) स्थूल विषय।
स्थूलमञ्जरी-(सं० स्त्री०) अपामार्ग, चिचिड़ा।
स्थूलमरिच-(सं० नपु०) शीतलचीनी।
स्थूलमुख-(सं०वि०) चौड़े मुख वाला।
स्थूलमूल-(सं०नपु०) बड़ी मूली।
स्थूलरोग-(सं०पु०) मोटा होने का रोग।
स्थूललक्ष-(सं०वि०) बड़ा दानी, (पु०) विद्वान्, पण्डित।
स्थूललक्षिता-(सं०स्त्री०) दानशीलता, पाण्डित्य।
स्थूलवृक्ष-(सं०पु०) मौलसिरी का पेड़।
स्थूलशाटक-(सं०पु०) मोटा कपड़ा।
स्थूलशालि-(सं० पु०) एक प्रकार का मोटा चावल।
स्थूलशिम्बी-(सं०स्त्री०) सफेद सेम।
स्थूलशिर-(सं०वि०) बड़े मस्तक वाला।
स्थूलस्कन्ध-(सं०पु०) बड़हर।
स्थूलहस्त-(सं०पु०) हाथी का सूंड़।
स्थूला-(सं० स्त्री०) गजपीपल, बड़ी इलायची।
स्थूलाङ्ग-(सं०वि०) मोटे शरीर वाला।
स्थूलाक्ष-(सं०पुं०) खर का साथी एक राक्षस।
स्थूलान्त्र-(सं०नपु०) बड़ी आँत।
स्थूलास्य-(सं० पु०) सर्प, साप (वि०) बड़े मुँह वाला।
स्थैर्य-(सं०नपुं०) स्थिर होने का भाव, स्थिरता।
स्थौल्य-(सं०पु०) स्थूलत्व, स्थूलता।
स्नपन-(सं०नपु०) नहाने की क्रिया।
स्नपित-(सं०वि०) नहाया हुआ।
स्ना-(सं० स्त्री०) गाय या बैल के गले का नीचे लटकने वाला चमड़ा।
स्नात-(सं० वि०) जिसने स्नान किया हो, नहाया हुआ।
स्नातक-(सं०पुं०) वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत के समाप्त होने पर स्नान करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो।
स्नातव्य-(सं० वि०) नहाने योग्य।

स्नान-(सं०नपु०) शरीर को स्वच्छ करने के लिये तथा शिथिलता दूर करने के लिये जल से धोना अथवा जल की बहती हुई धारा में प्रवेश करना।
स्नानकलश-(सं० पु०) वह घड़ा जिसमें स्नान करने का पानी रक्खा हो।
स्नानगृह-(सं० नपु०) जिस कमरे में स्नान किया जाता है।
स्नानविधि-(सं०स्त्री०) स्नान का विधान।
स्नानवेश्म-(सं०नपु०) स्नानगृह।
स्नानसाटी-शरीर पोछने की तौलिया।
स्नानशाला-(सं०स्त्री०) गुसलखाना।
स्नानाम्बु-(सं०नपुं० स्नान करने का जल।
स्नानीय-(सं० वि०) नहाने योग्य।
स्नानोदक-(सं०नपुं०) स्नान करने का जल
स्नायविक-(सं० वि०) स्नायुसबंधी।
स्नायी-(सं०वि०) स्नान करने वाला।
स्नायु-(सं० स्त्री०) शरीर में की वायु वाहिनी महीन महीन शिरा, नाड़ी।
स्नायुरोग-(सं०पु०) नहरुआ नामक रोग।
स्निग्ध-(सं० पुं०) सिक्थक, मोम, गन्धाविरोजा, दूध पर की मलाई, (वि०) चिकना, तैलयुक्त।
स्निग्धकन्दा-(सं० स्त्री०) कन्दली।
स्निग्धच्छद-(सं०पु०) बरगद का वृक्ष।
स्निग्धजीरक-(सं०पु०) ईसबगोल।
स्निग्धतण्डुल-(सं० पु०) साठी धान।
स्निग्धता-(सं०स्त्री०) चिकनापन।
स्निग्धपर्णिका-(सं० नपु०) पिठवन।
स्निग्धबीज-(सं०स्त्री०) ईसबगोल।
स्निग्धमज्जक-(सं०पु०) बादाम।
स्निग्धा-(सं०स्त्री०) मज्जा, अस्थिसार।
स्नुषा-(सं०स्त्री०) पुत्रवधू, लड़के की स्त्री।
स्नुही-(सं०स्त्री०) थूहड़ का पौधा।
स्नेह-(सं० पु०) प्रेम, प्यार, मुहब्बत, चिकना पदार्थ, नैयायिकों के मत से गुण विशेष, कोमलता, एक राग का नाम।
स्नेहकुम्भ-(सं० पु०) तेल का घड़ा।
स्नेहन-(सं०नपु०) शरीर में तेल लगाना, कफ, मक्खन।
स्नेहपात्र-(सं० पु०) प्रेम पात्र, जिससे प्रेम किया जाय।

स्नेहपान-(सं० नपु०) कुछ विशिष्ट रोगों में घी, तेल आदि पीने की विधि।
स्नेहफला-(सं०स्त्री०) तिल।
स्नेहबीज-(सं०पु०) चिरौंजो।
स्नेहवृक्ष-(सं०पु०) देवदार।
स्नेहित-(सं०वि०) चिकना।
स्नेही-(हिं० पु०) मित्र, बन्धु, चित्रकार, (वि०) स्नेहयुक्त।
स्पंज-(अं०पु०) एक छिद्रमय रेशेदार मुलायम पदार्थ जो पानी सोख लेता है, यह समुद्री जीवों का ढाँचा है।
स्पन्द-(सं०पु०) किसी वस्तु का धीरे धीरे हिलना या काँपना, शरीर का फड़कना।
स्पन्दन-(सं०नपु०) देखो स्पन्द।
स्पन्दी-(हिं०वि०) कँपने या फड़कने वाला
स्पन्दिनी-(सं०स्त्री०) रजस्वला स्त्री।
स्पर्धा-(सं०स्त्री०) सघर्ष, रगड़, साहस, ईर्ष्या, साम्य, बराबरी।
स्पर्धी-(सं० वि०) स्पर्धा करने वाला।
स्पर्श-(सं० पु०) पीड़ा, कष्ट, आपत्ति, वायु, एक प्रकार का रतिबन्ध, वर्गाक्षर, छूना, व्याकरण में उच्चारण भेद से 'क' से लेकर "म" तक के पचीस व्यजन वर्ण, नैयायिकों के मत से त्वगिन्द्रिय ग्राह्य गुण विशेष।
स्पर्शकोण-(सं० पु०) रेखागणित में वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा के बीच में बनता है।
स्पर्शजन्य-(सं० पु०) स्पर्श से उत्पन्न, सक्रामक, छुतहा।
स्पर्शदिशा-(सं० स्त्री०) वह दिशा जिधर से सूर्य या चन्द्रमा में ग्रहण लगा हो।
स्पर्शन-(सं०नपु०) छूने की क्रिया।
स्पर्शनेद्रिय-(सं० नपु०) छूने की इन्द्रिय, त्वचा।
स्पर्शमणि-(सं० पु०) पारस पत्थर।
स्पर्शरसिक-(सं० पु०) कामुक, लम्पट।
स्पर्शरेखा-(सं० स्त्री०) गणित में वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त की परिधि

के किसी एक विन्दु को स्पर्श करती हुई खींची जाय।
स्पर्शलज्जा-(स०स्त्री०)लज्जालू नामक लता
स्पर्शस्पन्द-(स० पु०) मेढक।
स्पर्शा-(स०स्त्री०) कुलटा, छिनाल स्त्री।
स्पर्शाक्रामक-(स० वि०) स्पर्श या ससर्ग से उत्पन्न होने वाला, सक्रामक।
स्पर्शानन्दा-(स०स्त्री०) अप्सरा।
स्पर्शास्पर्श-छूने या न छूने का विचार, छूतछात।
स्पर्शी-(हिं०वि०) छूने वाला।
स्पर्शेन्द्रिय-(स०नपु०)वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है, त्वचा।
स्पर्शोपल-(सं०पु०) पारस पत्थर।
स्पष्ट-(स० वि०) जिसके समझने या देखने में कोई कठिनता न हो, साफ देख पड़ने वाला।
स्पष्ट कथन-(सं०पु०) वह कथन जिसमें किसी दूसरे की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है जिस रूप में वह उसके मुह से निकली हो।
स्पष्टतया-(स०क्रि०वि०) स्पष्ट रूपसे।
स्पष्टता-(स० स्त्री०) स्पष्ट होने का भाव, सफाई।
स्पष्टवक्ता-(स०पु०) बिना मुलाहज़े के साफ साफ बात कहने वाला।
स्पष्टवादी-(स० पु०) साफ साफ बिना सकोच के बोलने वाला।
स्पष्टीकरण-(स० नपु०) स्पष्ट करने की क्रिया।
स्पिरिट्-(अं० स्त्री०) शरीर में रहने वाली आत्मा, सूक्ष्म शरीर, जीवनी शक्ति, मूलतत्व, मद्यसार।
स्पीच्-(अं० स्त्री०) बोलने की शक्ति, कथन, व्याख्या, व्याख्यान।
स्पृक्का-(स०स्त्री०) लज्जाधुर की लता,ब्राह्मी।
स्पृश-(स० वि०) स्पर्श करने वाला।
स्पृश्य-(स० वि०) स्पर्श करने या छूने योग्य।
स्पृष्ट-(स०वि०) स्पर्श किया हुआ।
स्पृहणीय-(स०वि०) वाछनीय, जिसके लिये अभिलाषा की जावे।
स्पृहा-(स० स्त्री०) वाछा, कामना।
स्पृही-(स०वि०) अभिलाषा करने वाला।
स्फटिक-(स० पुं०) एक प्रकार का काच के समान पारदर्शक पत्थर, बिल्लौर, सूर्यकान्त मणि।
स्फटिक विप-(स० पु०) दारुमाच नामक विष।
स्फटिका-(स० स्त्री०) फिटकरी।
स्फटिकाभ्र-(स०पु०) कर्पूर, कपूर।
स्फटिकारि-(स० स्त्री०) फिटकिरी।
स्फटिकोपम-(स० पु०) कपूर, चन्द्रकान्त मणि।
स्फटिकोपल-(स० पु०) बिल्लौर।
स्फटी-(स० स्त्री०) फिटकिरी।
स्फाटिक-(स० वि०) बिल्लौर सम्बन्धी।
स्फार-(स०वि०) विपुल, बहुत, विकट, प्रचुर।
स्फाल-(स० पु०) स्फूर्ति, तेज़ी।
स्फिक्,स्फिच्-(स०पु०) चूतर।
स्फीत-(स०वि०) समृद्ध, फूला हुआ, बढ़ा हुआ।
स्फीति-(स०स्त्री०) वृद्धि, बढती।
स्फुट-(स० वि०) प्रकाशित, विकसित, स्पष्ट, साफ, शुक्ल, सफेद, अलग अलग, फुटकर, सामने देख पड़ने वाला।
स्फुटन-(स० नपु०) विकसित होना, खिलना।
स्फुटबन्धनी-(स० स्त्री०) मालकगनी।
स्फुटा-(स० स्त्री०) साप का फन।
स्फुटार्थ-(स० वि०) प्रकाशित।
स्फुटिका-(स० स्त्री०) फिटकरी।
स्फुटित-(सं० वि०) विकसित, खिला हुआ, प्रकट किया हुआ, हँसता हुआ।
स्फुटी-(स०स्त्री०) पैर में बनाई फटना, ककड़ी, फूट।
स्फुटीकरण-(स० पुं०) प्रकाशन।
स्फुट स्फुरण-(स०पु०) किसी पदार्थ का थोड़ा थोड़ा हिलना,अग का फरकना।
स्फुरति-(हिं० स्त्री०) देखो स्फूर्ति।
स्फुरित-(स०वि०)हिलने या फड़कने वाला।
स्फुल-(स० नपु०) तबू, खेमा, स्फुलन-स्फुरण।
स्फुलिङ्ग-(स०नपु०)आग की चिनगारी।
स्फुलिङ्गिनी-(स० स्त्री०) अग्नि की सात जिह्वाओ में से एक।
स्फूर्जन-(स० पु०) तेंदू नामका वृक्ष।
स्फूर्ति-(स० स्त्री०) स्फुरण, धीरे धीरे हिलना, किसी काम करने के लिये उत्पन्न थोड़ीसी उत्तेजना, फुरती, तेज़ी।
स्फोट-(स०पु०) फोड़ा, फुन्सी, विदारण, किसी वस्तु का फूटना, मुक्ता, मोती, शब्द का नित्यत्व।
स्फोटक-(स०पु०)फोड़ा फुसी, भिलावा।
स्फोटन-(स०नपु०) विदारण, फाड़ना, शब्द, आवाज़।
स्फोटा-(सं० स्त्री०) साप का फन।
स्फोटिनी-(स० स्त्री०) कर्कटिका, ककड़ी।
स्फोलन-(स०नपु०) स्फाल, स्फूर्ति।
स्मय-(स० पु०) गर्व, अभिमान, शेखी।
स्मर-(स०पु०) कन्दर्प, कामदेव, मदन, स्मरण, यादगार शुद्ध राग का एक भेद।
स्मर कथा-(स०स्त्री०) काम उत्तेजित करने वाली कथा।
स्मरकूपक-(स० पु०) योनि, भग।
स्मरगुरु-(स० पु०) श्रीकृष्ण।
स्मरगृह-(स०नपु०) भग, योनि।
स्मरछत्र-(स०नपुं०) भग, योनि।
स्मरण-(स०नपु०) स्मृति, किसी बात की याद, चर्चा, नव प्रकार की भक्तियो में से एक जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता की बारम्बार याद करता रहता है, साहित्य में वह अलकार जिसमें समान वस्तु को देख कर पूर्वानुभूत वस्तु का स्मरण होता है।
स्मरणपत्र-(स०पु०) वह पत्र जो किसी को कोई बात याद दिलाने के लिये लिखी जावे।
स्मरणशक्ति-(स०स्त्री०) याददाश्त।
स्मरणीय-(स०वि०) याद करने लायक।
स्मरदशा-(स०स्त्री०) प्रेमी या प्रेमिका के न मिलने पर उसके विरह की अवस्था।
स्मरदहन-(स०पु०) शिव, महादेव।
स्मरध्वज-(स०पु०) पुरुष का लिंग।
स्मरध्वजा-(स०स्त्री०) चादनी रात।

स्मरप्रिया–(सं० स्त्री०) कामदेव की पत्नी, रति।
स्मरमन्दिर–(सं० नपुं०) योनि, भग।
स्मरलेखनी–(सं० स्त्री०) मैना पक्षी।
स्मरना–(हिं० क्रि०) याद करना।
स्मरवधू–(सं० स्त्री०) कामदेव की पत्नी, रति
स्मरवीथिका–(सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी।
स्मरशत्रु–(सं० पुं०) कामदेव के शत्रु, शिव।
स्मरसख–(सं० पुं०) चन्द्रमा।
स्मर्ण–(हिं० पुं०) देखो स्मरण।
स्मरागार–(सं० नपुं०) भग, योनि।
स्मरारि–(सं० पुं०) शिव, महादेव।
स्मरासव–(सं० पुं०) ताड़ी।
स्मरोद्दीपन–(सं० वि०) कामोद्दीपन।
स्मर्तव्य–(सं० वि०) स्मरण करने योग्य।
स्मशान–(सं० पुं०) देखो श्मशान।
स्मारक–(सं० वि०) स्मरण कराने वाला, याद दिलाने वाला, (पुं०) वह पदार्थ या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिये बनाया जावे, यादगार।
स्मारणी–(सं० स्त्री०) ब्राह्मी बूटी।
स्मार्त–(सं० नपुं०) स्मृति शास्त्र के अनुसार कर्म, (वि०) स्मृति शास्त्र का अच्छा जानकार, स्मृति सम्बन्धी।
स्मित–(सं० नपुं०) मन्दहास, धीमी हँसी, (वि०) विकसित, खिला हुआ।
स्मृत–(सं० वि०) याद किया हुआ।
स्मृति–(सं० स्त्री०) अनुभव संस्कारजन्य ज्ञान, चिन्तित ध्यान, स्मरण और चर्चा, मुनि प्रणीत शास्त्र विशेष, धर्मशास्त्र, संहिता, अठारह की संख्या, एक छन्द का नाम।
स्मृतिकार–(सं० पुं०) धर्मशास्त्र जानने वाला।
स्मृतिकारक–(सं० पुं०) धर्मशास्त्र के प्रणेता मन्वादि ऋषि।
स्मृतिपाठक–(सं० वि०) स्मृति पढ़ने वाला।
स्मृतिभ्रंश–(सं० पुं०) स्मरण शक्ति का नाश।
स्मृतिवर्धिनी–(सं० स्त्री०) ब्राह्मी बूटी।
स्मृतिविभ्रम–(सं० पुं०) स्मरण शक्ति का नाश।
स्मृतिविरुद्ध–(सं० वि०) धर्मशास्त्र के विपरीत।
स्मृतिशास्त्र–(सं० नपुं०) धर्मशास्त्र।
स्मृतिसम्मत–(सं० वि०) धर्मशास्त्र से अनुमोदित।
स्मृतिहर–(सं० वि०) स्मृति नाशक।
स्मृतिहेतु–(सं० पुं०) भावना, वासना।
स्मेर–(सं० वि०) विकसित, खिला हुआ।
स्यन्द, स्यन्दन–(सं० पुं० नपुं०) टपकना, चूना, गलना, पसीना, निकलना।
स्यन्दनिका–(सं० स्त्री०) छोटी नदी, नहर।
स्यमन्तक–(सं० पुं०) श्रीकृष्ण का हस्त स्थित मणि, पुराण के अनुसार इसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण को लगा था।
स्यमिक–(सं० पुं०) वाल्मीकि, वाम्री।
स्यात्–(सं० अव्य०) कदाचित्, शायद।
स्याद्वाद–(सं० पुं०) जैन दर्शन।
स्यान–(हिं० वि०) देखो स्याना।
स्यानप–(हिं० पुं०) देखो स्यानपन।
स्यानपत–(हिं० स्त्री०) चतुराई, धूर्तता, होशियारी, चालाकी।
स्यानपन–(हिं० पुं०) चतुरता, होशियारी।
स्याना–(हिं० वि०) चतुर, होशियार, धूर्त, चालाक, वयस्क, जो बालक न हो (पुं०) वृद्ध, गाँव का मुखिया, हकीम, ओझा,
स्यानापन–(हिं० पुं०) प्राप्त वयस्क, बालिग होने की अवस्था, चतुराई, चालाकी, धूर्तता।
स्यापा–(फा० पुं०) मृत व्यक्ति के शोक में कुछ समय तक परिवार की स्त्रियों का एकत्रित होकर रोने पीटने की प्रथा, स्यापा पड़ना–रोना पीटना, निर्जन होना।
स्यावाद–(हिं० अव्य०) देखो शाबाश।
स्यामक–(हिं० पुं०) देखो श्यामक।
स्यामकरन–(हिं० पुं०) देखो श्यामकर्ण।
स्यामता–(हिं० स्त्री०) देखो श्यामता।
स्यामल–(हिं० वि०) देखो श्यामल।
स्यामलिया–(हिं० वि०) साँवले रंग का।
स्यामा–(हिं० स्त्री०) देखो श्यामा।
स्यार–(हिं० पुं०) शृगाल, गीदड़, सियार।
स्यारपन–(हिं० पुं०) शृगाल के सदृश प्रकृति, भीरुता, चालाकी।
स्यारलाठी–(हिं० स्त्री०) अमलतास।
स्यारी–(हिं० स्त्री०) शृगाली, सियारिन।
स्याल–(सं० पुं०) श्यालक, साला।
स्यालक–(सं० पुं०) पत्नी का भाई, साला।
स्याला–(हिं० पुं०) अधिकता, बहुतायत।
स्यालिका, स्याली–(सं० स्त्री०) पत्नी की बहन, साली।
स्याह–(फा० वि०) कृष्ण वर्ण का, काला (पुं०) घोड़े की एक जाति।
स्याह गोश–(फा० पुं०) सियाह गोश,
स्याह जबान–(फा० पुं०) काली जीभ का
स्याह जीरा–(हिं० पुं०) काला जीरा,
स्याह दिल–(फा० वि०) दुष्ट, खोटा।
स्याहा–(फा० पुं०) देखो सियाहा।
स्याही–(फा० स्त्री०) लिखने या छापने की काली रोशनाई, कालापन, कालिख, काजल, (हिं० स्त्री०) शल्यकी, साही।
स्याही जाना–बालों का कालापन हटना।
स्यूत–(सं० वि०) सिला हुआ।
स्यूति–(सं० स्त्री०) सियन, सन्तति।
स्यून–(सं० पुं०) रश्मि, किरण सूर्य।
स्यों, स्यो–(हिं० अव्य०) सहित, समीप, पास।
स्योत–(सं० पुं०) सूर्य, किरण।
स्योनकृत–(सं० वि०) पाहुनों को सुख देने वाला।
स्रंग–(हिं० पुं०) देखो शृङ्ग, सींग।
स्रंस–(सं० पुं०) भ्रंश, नाश।
स्रंसन–(सं० नपुं०) गर्भपात, अधः पतन, नाश।
स्रक्–(सं० पुं० स्त्री०) फूलों की माला, ज्योतिष में एक प्रकार का योग; एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह वर्ण होते हैं।
स्रगगु–(सं० पुं०) माला मन्त्र।
स्रग्जिह्व–(सं० पुं०) अग्नि।
स्रग्धर–(सं० वि०) माला पहरने वाला।
स्रग्धरा–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में इक्कीस अक्षर होते हैं, (वि०) माला पहरने वाला।
स्रग्विनी–(सं० स्त्री०) एक छन्द जिसके

प्रत्येक चरण में बारह अक्षर होते हैं (वि०) माला पहरने वाली।
स्रज-(हिं०स्त्री०) माला, स्रजना(हि०क्रि०) देखो सृजना।
स्रज्वा-(सं० पु०) माला बनाने वाला, माली।
स्रद्धा-(हिं० स्त्री०) देखो श्रद्धा।
स्रम-(हिं० पु०) देखो श्रम।
स्रमित-(स०वि०) देखो श्रमित।
स्रव-(सं० पु०) मूत्र, पेशाब, झरना, बहाव।
स्रवण-(स०नपु०)पसीना,मूत्र, गर्भपात।
स्रवन-(हिं० पु०) देखो श्रवण।
स्रवना-(हि० क्रि०) बहना, टपकना, गिरना।
स्रवन्ती-(स०स्त्री०) नदी, दरिया।
स्रष्टा-(स० पु०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु, सृष्टि करने वाला।
स्रापित-(हिं० वि०) देखो शापित।
स्राव-(स०पु०) क्षरण, झरना।
स्रावक-(स०नपु०) चूने या टपकने वाला।
स्रावित-(स०वि०) टपक कर या चुआ कर निकाला हुआ।
स्रावी-(स०वि०) रसने वाला, बहने वाला।
स्राव्य-(स० वि०) बहने योग्य।
स्रिंग-(हिं०पु०) देखो शृङ्ग।
स्रिय-(हिं०स्त्री०) देखो श्रिय।
स्रुघ्नी-(स०स्त्री०) सज्जी मिट्टी।
स्रुत-(हिं०वि०) देखो श्रुत, बहता हुआ, क्षरण, बहाव।
स्रुति-(स०स्त्री०) देखो श्रुति।
स्रुवा-(स०स्त्री०) हवन करने की एक प्रकार की लकड़ी की बनी हुई छोटी करछी।
स्रेनी-(हि० स्त्री०) देखो श्रेणी।
स्रोत-(स०पु०) पानीका झरना या सोता।
स्रोतपति-(स०पु०) समुद्र।
स्रोतस्विनी-(स०स्त्री०) नदी।
स्रोतोवह-(स०स्त्री०) नदी।
स्रोन-(हि०पु०) देखो श्रवण।
स्रोनित-(हि०पु०) देखो शोणित।
स्लीपर-(अ० पु०) बिना एड़ी की जूती, चट्टी; रेल की पटरियों के नीचे बिछी हुई लकड़ी।
स्लेज्-(अ० स्त्री०) बर्फ पर सरकने की बिना पहिये की एक प्रकार की गाड़ी।
स्लेट-(अ० स्त्री०) एक प्रकार की चिकने पत्थर की पटिया जिस पर विद्यार्थी अक लिखते हैं।
स्लो-(अ० वि०) धीमा चलने वाला, सुस्त, (पु०) घड़ी की मन्द चाल।
स्वः-(सं०पु०) स्वर्ग।
स्व सरिता-(स० स्त्री०) गगा।
स्व सुन्दरी-(स० स्त्री०) अप्सरा।
स्व-(स०पु०) धन, दौलत (पु०) आप, निज, विष्णु, जाति, बन्धु।
स्वक-(स०वि०) निजी।
स्वकम्पन-(स० पु०) वायु, हवा।
स्वकरण-स्वीकार, मञ्जूर।
स्वकर्म-(स० नपु०) अपना काम।
स्वकर्मी-(स०वि०) स्वार्थी, खुदगरज़।
स्वकामी-(स०वि०) केवल अपने लिये काम करने वाला।
स्वकाल-(स० पु०) किसी कार्य का निर्दिष्ट, काल।
स्वकीय-(स०स्त्री०) अपने ही पति में अनुराग करने वाली नायिका।
स्वकुल-(स०नपु०) अपना वश।
स्वकुलक्षय-(स० वि०) अपने कुल का नाश करने वाला।
स्वकुल्य-(स०वि०) अपने कुल का।
स्वकृत्-(स०वि०)अपना काम करने वाला
स्वगत-(स०नपु०) आपही आप, अपने आप से।
स्वगत कथन-(स०पु०) नाटक में किसी पात्र का आप ही आप बोलना।
स्वगृह-(स०पु०) निज का घर।
स्वगोप-(स० वि०) अपने शरीर को बचाने वाला।
स्वङ्ग-(सं०नपु०) सुन्दर शरीर।
स्वच्छ-(स० वि०) शुक्ल, उज्वल, निर्मल, पवित्र, बिल्लौर,अभ्रक, मोती।
स्वच्छता-(स०स्त्री०) निर्मलता।
स्वच्छन्द-(स० वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, मनमाना, बेधड़क।
स्वच्छन्द चारिणी-(स०स्त्री०) वेश्या, रंडी
स्वच्छन्द चारी-(सं० वि०) मनमौजी।
स्वच्छन्दता-(स०स्त्री०) स्वतन्त्रता।
स्वच्छन्द पत्र-(स० नपु०) अभ्रक।
स्वच्छन्द मणि-(स० पु०) बिल्लौर।
स्वच्छना-(हि०क्रि०) निर्मल करना।
स्वच्छी-(हि०वि०) स्वच्छ, साफ।
स्वज-(स० नपु०) रुधिर, खून, (पु०) पुत्र, बेटा, पसीना, (वि०) आप से आप उत्पन्न, स्वाभाविक।
स्वजन-(स०पु०) सम्बन्धी, रिश्तेदार, आत्मीय जन।
स्वजनता-(सं० स्त्री०) नातेदारी, रिश्तेदारी।
स्वजन्मा-(स०वि०)अपने आपसे उत्पन्न
स्वजात-(स०वि०) पुत्र, बेटा।
स्वजाति-(स०स्त्री०) अपनी जाति।
स्वजातीय-(स०वि०) अपनी जात का, एक ही जात का।
स्वजात्य-(सं०वि०) स्वजातीय।
स्वजित्-(स०वि०) अपने से जय करने वाला
स्वजन्य-(स०वि०) अपने से उत्पन्न।
स्वतन्त्र-(स० वि०) स्वेच्छाचारी, मनमाना करने वाला, सयाना, भिन्न, पृथक्।
स्वतन्त्रता-(स० स्त्री०) स्वाधीनता, आज़ादी।
स्वतन्त्री-(स०वि०) स्वाधीन।
स्वतः-(स०अव्य०) अपने आप,आप ही।
स्वतुल्य-(स० वि०) अपने तुल्य, अपने समान।
स्वतोविरोधी-(स० पु०) अपना ही खण्डन या विरोध करने वाला।
स्वत्व-(स० नपु०) अधिकार, हक, अपनायतन।
स्वत्वाधिकारी-(स० पु०) स्वामी, अधिकारी, मालिक।
स्वदन-(स०नपु०) स्वाद लेना, चखना।
स्वदृष्ट-(स०वि०) अपने से देखा हुआ।
स्वदेश-(सं० पु०) वह देश जिसमें किसी का जन्म और पालन पोषण

हुआ हो, मातृभूमि।

स्वदेशी–(स० वि०) अपने देश का, अपने देश संबंधी अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।

स्वदोषज–(स० वि०) जो अपने दोष से उत्पन्न हो।

स्वधर्म–(स० पु०) अपना धर्म।

स्वधा–(स०अव्य०) देवता तथा पितरों को हवि और दान देने का मन्त्र, पितरों के निमित्त देने का अन्न (स०स्त्री०) दक्ष की कन्या का नाम।

स्वधाकर–(स०त्रि०) श्राद्ध करने वाला।

स्वधाधिप–(स०पु०) अग्नि।

स्वधाभोजी–(स०पु०) पितृगण।

स्वधिति–(स० स्त्री०) वज्र, कुठार, कुल्हाड़ी।

स्वधीत–(स० वि०) अच्छी तरह पढ़ा हुआ।

स्वन–(स० पु०) ध्वनि, शब्द, आवाज।

स्वनामधन्य–(स० वि०) अपने नाम के कारण धन्य होने वाला।

स्वनाम–(स०नपुं०) अपना नाम।

स्वनामा–(स०पु०) जो अपने नाम से प्रसिद्ध हो।

स्वनित–(स० नपु०) शब्द, मेघ की गड़गड़ाहट।

स्वनिष्ठ–(स० वि०) अपना काम स्वय करने वाला।

स्वनिष्ठित–(स० वि०) उत्तम रूप से किया हुआ।

स्वन्त–(स०वि०) जिसका अन्त अच्छा हो

स्वन्न–(स० नपु०) उत्तम अन्न।

स्वपक्ष–(स०पु०) अपना पक्ष।

स्वपति–(स०पु०) अपना पति।

स्वपतित–(स०वि०)आपसे आप गिरा हुआ

स्वपन–(स०नपु०) निद्रा, नींद, सपना।

स्वपनीय–(सं० वि०) निद्रा के योग्य।

स्वपूर्ण–(स०वि०) जो आपही पूर्ण हो।

स्वप्न–(स०पु०) निद्रा, निद्रावस्था में वस्तु दर्शन, नींद।

स्वप्नकृत्–(स०वि०) नींद लगाने वाला।

स्वप्नगृह–(स० नपु०) सोने का कमरा।

स्वप्नज–(स० वि०) नींद लाने वाला।

स्वप्नज्ञान–(स०नपु०) स्वप्न का ज्ञान।

स्वप्नदर्शन–(स०त्रि०) बड़ी बड़ी कल्पना करने वाला।

स्वप्नदोष–(स० पु०) निद्रा वस्था में वीर्यपात।

स्वप्ननिकेतन–(स०नपु०) शयनागार।

स्वप्नस्थान–(स०नपु०) निद्रागृह।

स्वप्नान्त–(स० पु०) जागरण।

स्वप्नाना–(हिं० क्रि०) स्वप्न दिखाना।

स्वप्नालु–(स०वि०) निद्रालु,सोने वाला।

स्वप्रकाश–(स०वि०) जो स्वय ही प्रकाशमान हो।

स्वप्रकृतिक–(स० वि०) प्रकृति से ही उत्पन्न होने वाला।

स्वप्रधान–(स०वि०) अपने पर भरोसा रखने वाला।

स्वबीज–(स० पु०) आत्मा, (नपु०) निज वीर्य।

स्वबरन–(हि० पु०) देखो सुवर्ण।

स्वभाऊ–(हिं० पु०) देखो स्वभाव।

स्वभाव–(स० पु०) मन की प्रवृत्ति, स्वाभाविक अवस्था, प्रकृति, आदत, बान, मिजाज।

स्वभावत्व–(स०नपु०) प्रकृति गत भाव।

स्वभावज–(स० वि०) प्रकृति से उत्पन्न, सहज।

स्वभावत–(स०अव्य०) स्वभाव से, सहजही

स्वभावसिद्ध–(स० त्रि०) स्वाभाविक, सहज, स्वभाव से होने वाला।

स्वभाविक–(स०वि०) देखो स्वाभाविक।

स्वभावोक्ति–(स० स्त्री०) वह अलकार जिसमें किसी का जाति या अवस्था आदि के अनुसार यथावत् और प्राकृतिक रूप से वर्णन किया जाता है।

स्वभू–(स० पु०) विष्णु, ब्रह्मा, शिव, (वि०) जो अपने आप से उत्पन्न हुआ हो।

स्वभूति–(स०पु०) वायु, हवा।

स्वभूमि–(स० स्त्री०) अपनी भूमि।

स्वयं–(स०अव्य०) आप से आप, खुद, आप ही।

स्वयंदत्त–(स०पु०) वह बालक जो स्वय किसी का पुत्र बन जावे।

स्वयदान–(स० नपुं०) अपने हाथ से कन्यादान करना।

स्वयंदूत–(स० पु०) वह नायक जो अपनी काम वासना नायिका पर स्वय प्रकट करता हो।

स्वयदूती–(स०स्त्री०) वह नायिका जो नायक पर अपनी काम वासना स्वयं प्रकट करती हो।

स्वयंदृश–(स०वि०) देखने वाला।

स्वयपतित–(स० वि०) अपने आप गिरा हुआ।

स्वयंप्रकाश–(स०पु०) जो स्वय प्रकाशित हो, परमेश्वर, परमात्मा।

स्वयंप्रभा–(स० स्त्री०) इन्द्र की एक अप्सरा का नाम।

स्वयप्रमाण–(स० त्रि०) जिसके लिये दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो।

स्वयंफल–(स० त्रि०) जो आपही अपना फल हो, किसी दूसरे कारण से न उत्पन्न हुआ हो।

स्वयभू–(स०पु०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव, काल, (वि०) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयवर–(स० पु०) भारतवर्ष की एक प्राचीन रीति जिसमें विवाह योग्य कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपना वर स्वयं चुन लेती थी।

स्वयंवरण–(स०नपु०) अपना वर स्वय चुन लेना।

स्वयवरा–(स० स्त्री०) अपने लिये स्वयं वर चुनने वाली स्त्री।

स्वयवह–(स०नपु०) स्वय अपने आप को धारण करने वाला।

स्वयंसिद्ध–(स० वि०) जिसकी सिद्धि के लिये दूसरे तर्क प्रमाण आदि की आवश्यकता न हो, जिसने आपही सिद्धि प्राप्त करली हो।

स्वयसेवक–(स० पु०) वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के कोई कार्य करता हो।

स्वयम्-(स०अव्य०) आप, खुद, बखुद।
स्वयमधिगत-(स० वि०) स्वय प्राप्त।
स्वयमनुष्ठान-(स०नपु०) जिसका अनुष्ठान आप ही किया जावे।
स्वयमर्जित-(स०वि०) स्वय कमाया हुआ।
स्वयमीश्वर-(स०पु०) परमात्मा, परमेश्वर।
स्वयमुज्वल-(स० वि०) जो स्वय ही सफेद हो।
स्वयमुदित-(स०वि०)स्वभावतः प्रकाशित
स्वयम्भु, स्वयम्भुव-(स० पु०) ब्रह्मा, शिव, वेद, आदि मनु।
स्वयम्भू-(स० पु०) विष्णु, शिव, कामदेव, काल।
स्वयम्भूत-आप से आप उत्पन्न होने वाला
स्वयम्मथित-(स०वि०)स्वय मथा हुआ।
स्वयश-(स० नपु०) अपनी कीर्ति।
स्वयुक्त-(स० वि०) परस्पर सयुक्त।
स्वयुक्ति-(स० स्त्री०) अपनी तरकीब।
स्वयोनि-(स०त्रि०) जो आप ही अपनी उत्पत्ति का स्थान हो।
स्वयमेव-(स०क्रि०वि०) आप ही आप।
स्वयुक्ति-(स० स्त्री०) अपनी तरकीब।
स्वर्-(स०पु०) स्वर्ग, आकाश, परलोक।
स्वर-(स० पु०) वह ध्वनि या शब्द जो किसी प्राणी के मुख से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने से उत्पन्न हो-यह उदात्त, अनुदात्त और स्वरित तीन प्रकार का होता है, व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप स्वतन्त्रता पूर्वक होता है यह ह्रस्व,दीर्घ और प्लुत तीन प्रकार से उच्चारित होता है, नासा वायु जिसके द्वारा अजपा मन्त्र का जप होता है, सगीत में निश्चित रूप की ध्वनि जिसकी कोमलता या तीव्रता का अनुभव सुनने से होता है, सगीत में सा,रे,ग,म,प,ध,नि-ये सात स्वर होते हैं। स्वर उतरना-स्वर का धीमा होना स्वर चढ़ना-स्वर का तीव्र होना।
स्वरकर-(स०पु०) वह औषधि जिसके सेवन से गला सुरीला होता है।
स्वरक्षय-(स०पु०) गला बैठने का रोग।
स्वरता-(स० स्त्री०) स्वर का भाव या धर्म।
स्वरनादी-(स०पु०) मुख से फूक कर बजाने का बाजा।
स्वरभङ्ग-(स० पु०) गला बैठने और स्पष्ट स्वर न निकलने का रोग।
स्वरभङ्गी-(स० पु०) जिसका गला बैठ गया हो।
स्वरभानु-(स० पु०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
स्वरभाव-(स० पु०) स्वर से ही भावों को प्रकट करना।
स्वरभेद-(स०पु०) आवाज़ बैठ जाना
स्वरमण्डल-(स० पु०) एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।
स्वरलासिका-(स०स्त्री०) मुरली बशी।
स्वरशास्त्र-(स० नपु०) वह शास्त्र जिसमें स्वर सबधी बातों का विवेचन हो।
स्वरसक्रम-(स० पु०) सगीत में स्वरों का उतार चढाव।
स्वरस-(स० पु०) फल फूल पत्ती आदि को कूट पीस कर निकाला हुआ रस।
स्वरसाद-(स० पु०) गला बैठ जाना।
स्वरसादि-(स० पु०) क्वाथ, काढा।
स्वरांश-(स० पु०) सगीत में स्वर का आधा पाद।
स्वराज्य-(स० नपु०) वह राज्य जिसमें उसी देश के निवासी स्वय अपने देश का सब प्रबन्ध करते हैं।
स्वराट्-(स०पु०) ईश्वर, ब्रह्मा, (वि०) वह जो।
स्वरान्त-(स० वि०) जिसके अन्त में कोई स्वर हो।
स्वरापगा-(स०स्त्री०) मन्दाकिनी, गगा।
स्वराष्ट्र-(स०नपु०) अपना राज्य।
स्वरित-(स०पु०) स्वर का वह उच्चारण जो न बहुत तेज़ हो और न बहुत धीमा
स्वरुचि-(स० पु०) स्वेच्छा, अपनी इच्छा।
स्वरूप-(स० नपु०) आकृति, आकार, मूर्ति या चित्र, स्वभाव, देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप, (पु०) वह जो किसी देवता आदि का रूप धारण किये हो, विद्वान्, पण्डित, (वि०) सुन्दर, तुल्य।
स्वरूपज्ञ-(स० पु०) परमात्मा का रूप पहचानने वाला।
स्वरूपप्रतिष्ठा-(स०स्त्री०)जीव का अपनी स्वाभाविक शक्तियों और गुणों से युक्त होना।
स्वरूपयोग्य-(स०वि०)कार्य साधक योग्य
स्वरूपवान्-(स०वि०) सुन्दर, खूबसूरत।
स्वरूप सम्बन्ध-(स०पु०) अभिन्न संबन्ध।
स्वरूपाभास-(स०पु०) वास्तविक स्वरूप न होने पर भी उसका आभास देख पड़ना।
स्वरूपी-(हि०वि०) स्वरूप युक्त, स्वरूप वाला, जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।
स्वरूपोत्प्रेक्षा-(स० स्त्री०) उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद।
स्वरोचिस्-(स० नपु०) स्वप्रकाश, (पु०) स्वरोचिष् मनु के पिता का नाम।
स्वरोद-(स० पु०) एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे रहते हैं।
स्वरोदय-(स०पु०) वह शास्त्र जिसमें स्वर द्वारा शुभाशुभ फल बतलाया जाता है।
स्वर्ग-(स० पु०) देवलोक, सुरलोक, वह स्थान जहाँ दुःख का लेश भी न हो, ईश्वर,आकाश, सुख, स्वर्ग सिधारना-मृत्यु को प्राप्त होना, स्वर्गसुख-परम सुख, स्वर्ग की धार-आकाश गगा।
स्वर्गकाम-(स०त्रि०) स्वर्ग की कामना करने वाला।
स्वर्गगति-(स० स्त्री०) स्वर्ग गमन-(स०नपु०) मरण।
स्वर्गगामी-(स०वि०) स्वर्गीय, स्वर्ग में जाने वाला, मृत, मरा हुआ।
स्वर्गङ्गा-(स०स्त्री०) मन्दाकिनी।
स्वर्गतरु-(स०पु०) पारिजात, परजाता।
स्वर्गद-(स०वि०) स्वर्ग देने वाला।
स्वर्गधेनु-(स०स्त्री०) कामधेनु।
स्वर्ग नदी-(स०स्त्री०) आकाश गङ्गा।

स्वर्गपति-(सं० पु०) इन्द्र।
स्वर्गपुरी-(सं०स्त्री०) इन्द्र की पुरी, अमरावती।
स्वर्गपुष्प-(सं०पु०) लवग।
स्वर्गलाभ-(सं० पु०) स्वर्ग में पहुँचना, मरना।
स्वर्गलोक-(सं०पु०) स्वर्ग।
स्वर्गलोकेश-(सं०पु०) इन्द्र।
स्वर्गवधू-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
स्वर्गवाणी-(सं०स्त्री०) आकाशवाणी।
स्वर्गवास-(सं०पु०)स्वर्ग में रहना, मरना।
स्वर्गवासी-(सं० त्रि०) मृत, जो मर गया हो।
स्वर्गसार-(सं०पु०)एक ताल का नाम।
स्वर्ग स्त्री-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
स्वर्गस्थ-(सं०वि०) स्वर्गवासी।
स्वर्गारोहण-(सं०नपु०) स्वर्ग सिधारना, मारना।
स्वर्गापगा-(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी।
स्वर्गामी-(सं० वि०) जो स्वर्ग चला गया हो।
स्वर्गारूढ़-(सं०वि०) स्वर्ग सिधारा हुआ।
स्वर्गी-(सं०पु०)देवता (वि०) स्वर्गगामी।
स्वर्गीय-(सं० वि०) स्वर्ग सम्बन्धी, स्वर्ग का, मृत, मरा हुआ।
सर्जि, सर्जिक-(सं०) यवक्षार, शोरा।
स्वर्ण-(सं०नपु०) सुवर्ण, सोना, धतूरा, नाग केशर, स्वर्ण कदली-सोना केला।
स्वर्ण कमल-(सं०नपु०) लाल कमल।
स्वर्णकाय-(सं०पु०) गरुड़।
स्वर्णकार-(सं०पु०) सुनार।
स्वर्णकूट-(सं०नपु०) हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।
स्वर्णक्षीरी-(सं०स्त्री०) भड़भाँड़।
स्वर्णगिरि-(सं०पु०) सुमेरु पर्वत।
स्वर्णचूड़-(सं० पु०) नीलकण्ठ पक्षी।
स्वर्णज-(सं० नपु०) सोनामक्खी नामक धातु।
स्वर्णजातिका-(सं०स्त्री०) पीली चमेली।
स्वर्णजीवी-(सं०पु०) सोनार।
स्वर्णजूही-(हिं०स्त्री०) पीली जूही।
स्वर्णद-(सं० त्रि०) सोना दान करने वाला, स्वर्णदी-(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी।
स्वर्णदीधिति-(सं०पु०) अग्नि।
स्वर्णद्रु-(सं०पु०) अमलतास।
स्वर्णनिभ-(सं०वि०) सोने के समान।
स्वर्णपक्ष-(सं०पु०) गरुड़।
स्वर्णपत्र-(सं० नपु०) सोने का तबक।
स्वर्णपर्पटी-(सं०स्त्री०) संग्रहणी रोग की एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक औषधि।
स्वर्णपुष्प-(सं० पु०) अमल तास, चम्पा।
स्वर्णफल-(सं०नपु०) धतूरा।
स्वर्णभाज्-(सं०पु०) सूर्य।
स्वर्णभूमि-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर सब प्रकार का सुख हो।
स्वर्णभूषण-(सं०पु०) सोनेका अलकार।
स्वर्णमाक्षिक-(सं० पु०) सोनामक्खी नामक उपधातु।
स्वर्णमुद्रा-(सं० स्त्री०) सोने का सिक्का, अशरफी।
स्वर्णयूथिका-(सं०स्त्री०) पीली जूही।
स्वर्णरेखा-(सं० स्त्री०) एक विद्याधरी का नाम।
स्वर्णलता-(सं० स्त्री०) ज्योतिष्मती लता, मालकगनी।
स्वर्णवर्णा-(सं०स्त्री०) हल्दी, दारुहल्दी।
स्वर्णविद्या-(सं० स्त्री०) सोना बनाने की विद्या।
स्वर्णविन्दु-(सं०पु०) विष्णु।
स्वर्णाकर-(सं०पु०) सोने की खान।
स्वर्णाभ-(सं०नपु०) हरताल।
स्वर्णाभा-(सं०स्त्री०) पीली जूही।
स्वर्णारि-(सं०पु०) गन्धक, सीसा।
स्वर्णिका-(सं०स्त्री०) धनिया।
स्वर्धुनी-(सं० स्त्री०) गङ्गा।
स्वर्नगरी-(सं०स्त्री०) अमरावती नगरी।
स्वर्नदी-(सं०स्त्री०) स्वर्गङ्गा।
स्वर्पति-(सं०पु०) स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।
स्वर्भानु-(सं० पु०) राहु, सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
स्वर्लोक-(सं०पु०) स्वर्ग।
स्वर्वधू, स्वर्वेश्या-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
स्वर्वैद्य-(सं०पु०) स्वर्ग के वैद्य अश्विनी कुमार।
स्वल्प-(सं०वि०) अल्पल्प, बहुत थोड़ा।
स्वल्पकेशर-(सं० पु०) कचनार।
स्वल्पकेशी-(सं० पु०) जिसको बहुत कम बाल हो।
स्वल्पजम्बूक-(सं०पु०) लोमड़ी।
स्वल्पदृश्-(सं० वि०) बहुत कम देखने वाला।
स्वल्पफला-(सं० स्त्री०) हाऊबेरा।
स्वल्पशरीर-(सं०त्रि०) छोटा कद।
स्ववरन-(हिं०पु०) देखो सुवर्ण।
स्ववश-(सं० पु०) जो अपने वश में हो, जितेन्द्रिय।
स्ववासिनी-(सं०स्त्री०) अपने पिता के घर रहने वाली स्त्री।
स्वश्लाघा-(सं०स्त्री०) आत्माभिमान।
स्वसंवेदन-(सं०नपु०) अपना अनुभव।
स्वसंवेद्य-(सं० वि०) केवल अपने ही अनुभव के योग्य।
स्वसमुत्थ-(सं०वि०) स्वाभाविक।
स्वसम्भव-(सं० वि०) जो अपने से उत्पन्न हो।
स्वसम्भूत-(सं०वि०) जो आपसे आप उत्पन्न हो।
स्वसा-(सं० स्त्री०) भगिनी, बहिन।
स्वसिद्ध-(सं०वि०) स्वय सिद्ध।
स्वसुर, स्वसुराल-(हिं०) देखो ससुर, ससुराल।
स्वस्ति-(सं०अव्य०) एक आशीर्वाद का शब्द, कल्याण हो, मगल हो (स्त्री०) कल्याण, मगल, सुख।
स्वस्तिक-(सं०पु०) सुनसा नामक शाक, लहसुन, हठयोग का एक आसन, एक प्रकार का मगल द्रव्य जो चावल पीसकर बनाया जाता है, चतुष्पथ, चौमुहानी, रतालू, मूली, सर्प के फन पर की रेखा, एक प्रकार का माङ्गलिक चिह्न, शरीर के विशिष्ट अगों में होने वाला इस प्रकार का चिह्न।
स्वस्तिकर्म-(सं० नपु०) मगल जनक कर्म।

स्वस्तिका-(स०स्त्री०) चमेली।
स्वस्तिकृत्-(स० पु०) शिव (वि०) मगल करने वाला।
स्वस्तिग-(स० वि०) सुख से गमन करने वाला।
स्वस्तिद-(स० पु०) शिव (वि०) मगल करने वाला।
स्वस्तिमत्-(स०वि०) अविनाशी।
स्वस्तिमती-(स० स्त्री०) कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
स्वस्तिमुख-(स० पु०) स्तुति पाठक, ब्राह्मण।
स्वस्तिवाचन-(स० वि०) मागलिक कार्यों के आरभ में किया जाने वाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य।
स्वस्तिवाद-(स० त्रि०) आशीर्वाद।
स्वस्त्ययन-(स० नपु०) मगल जनक दैवकर्म, जिस कर्म के करने से अशुभ का नाश हो और शुभ प्राप्त हो।
स्वस्थ-(स०वि०) जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो, रोग विमुक्त, तन्दुरुस्त, जिसका चित्त ठिकाने हो, सावधान।
स्वस्थचित्त-(स०वि०) शान्त चित्त।
स्वस्थान-(स० नपु०) अपना स्थान।
स्वस्रीय-(स०पु०) बहन का लड़का, भानजा।
स्वस्रीया-(स०स्त्री०) बहिन की लड़की भानजी।
स्वाग-(हिं०पु०) देखो स्वाङ्ग।
स्वास-(हिं०स्त्री०) देखो सास।
स्वांसा-(हिं०पु०) तावे का मेल किया हुआ सोना।
स्वःसरित्-(स०स्त्री०) गगा।
स्व सुन्दरी-(स०स्त्री०) अप्सरा।
स्वःस्यन्दन-(स० पु०) इन्द्र का रथ।
स्वहोता-(स०पु०) स्वय यज्ञ करने वाला।
स्वाकार-(स०पु०) अपना आकार।
स्वाक्षर-(स० पु०) हस्ताक्षर, दस्तखत।
स्वाक्षरित-(स०वि०) अपना हस्ताक्षर किया हुआ।
स्वाख्यात-(स० वि०) अच्छी तरह कहा हुआ।
स्वागत-(स० नपु०) पाहुन आदि के पधारने पर उसका आदर सहित अभिनन्दन करना, अगवानी, स्वागत कारिणी सभा-(स०स्त्री०) स्थानीय जनों की वह सभा जो किसी बड़ी सभा या सम्मेलन में आने वाले प्रतिनिधियों का स्वागत, ठहरने तथा भोजन आदि का प्रबंध करने के लिये सघटित होती है।
स्वागतकारी-(स० वि०) पेशवाई करने वाला।
स्वागतपतिका-(स०स्त्री०) वह नायिका जो अपने पतिके परदेश से लौटने पर प्रसन्न होती है।
स्वागतप्रिया-(स० पुं०) वह नायक जो अपनी प्रेमिका के परदेश से लौटने पर प्रसन्न होता है।
स्वागता-(स० स्त्री०) वह छन्द जिसके प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं।
स्वागतिक-(स० वि०) अभ्यागत का सत्कार करने वाला।
स्वागत-(स० पु०) अभिनन्दन।
स्वाङ्गिक-(स० पु०) ढोल या मृदग बजाने वाला।
स्वाङ्ग-(स० नपु०) नकल, खेल तमाशा।
स्वाङ्गी-नकल करने वाला, बहरूपिया।
स्वाच्छन्द्य-(स० नपु०) स्वच्छन्दता।
स्वातन्त्र्य-(स० नपु०) स्वतन्त्रता, आज़ादी।
स्वाति-(स० स्त्री०) सूर्य की एक पत्नी, अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से पद्रहवा नक्षत्र।
स्वातिपन्थ-(सं० पु०) आकाशगगा।
स्वातिसुत-(स०पुं०) मुक्ता, मोती।
स्वातिसुवन-(हिं० पु०) मुक्ता, मोती।
स्वात्मवध-(स०पुं०) आत्महत्या।
स्वाद-(स० पु०) रसानुभूति, इच्छा, चाह, कामना, मीठा रस, ज़ायका, आनन्द, स्वाद चखना-किये हुए अपराध का दण्ड भोगना।
स्वादक-(स० पु०) स्वादु, विवेकी, वह जो भोज्य पदार्थों के तैयार हो जाने पर चखता है।
स्वादन-(स०नपुं०) स्वाद लेना, चखना, आनन्द लेना, मज़ा लेना।
स्वादित-(स०वि०) चखा हुआ।
स्वादिष्ट-(स० वि०) जो खाने में अच्छा जान पड़े।
स्वादी-(स०वि०) स्वाद चखने वाला, रसिक।
स्वादु-(स० पुं०) मीठा रस, गुड़, महुआ, चिरौंजी, अनार, बेर (नपु०) सेंधा नमक, दूध (स्त्री०) द्राक्षा, दाख (वि०) मीठा, मधुर, सुन्दर।
स्वादुकन्द-(स० पु०) पिण्डाल।
स्वादुखण्ड-(स० पु०) मधुर भाग।
स्वादुतिक्त-(स०नपु०) अखरोट।
स्वादुधन्वा-(स०पु०) कामदेव।
स्वादुपत्र-(स०पुं०) परवल की लता।
स्वादुफला-(स० स्त्री०) केला।
स्वादुमूल-(स०नपु०) गाजर।
स्वादुरसा-(स० स्त्री०) सतावर, दाख।
स्वादुलता-(स० स्त्री०) विदारीकन्द।
स्वाद्य-(सं० वि०) स्वाद लेने या चखने योग्य।
स्वाधिष्ठान-(स० नपु०) हठ योग के अनुसार शरीर के भीतर के एक चक्र का नाम जिसका स्थान शिश्न के मूल में है।
स्वाधीन-(स० वि०) स्वतन्त्र, किसी का बन्धन न मानने वाला, अपने इच्छानुसार चलने वाला।
स्वाधीनता-(स० स्त्री०) स्वतन्त्रता, आज़ादी।
स्वाधीनपतिका-(सं० स्त्री०) पति को वशीभूत करने वाली नायिका।
स्वाधीनभर्तृका-(स० स्त्री०) स्वाधीनपतिका नायिका।
स्वाधीनी-(स० स्त्री०) स्वाधीनता, आज़ादी।
स्वाध्याय-(सं०पु०) वेदों का नियम पूर्वक अध्ययन, किसी विषय का अनुशीलन, अध्ययन, वेद।

स्वाध्यायी-(स० पु०) वेदपाठक।
स्वान-(स०पु०) शब्द, आवाज, घड़-घड़ाहट।
स्वाना-(हिं० क्रि०) सुलाना।
स्वानुभव-(स०पु०) अपना अनुभव।
स्वानुरूप-(स० वि०) अपने समान।
स्वान्तज-(स० पु०) कन्दर्प, कामदेव, प्रेम।
स्वाप-(स० पु०) निद्रा, नींद, स्वप्न।
स्वापक-(स०वि०) नींद लेने वाला।
स्वापनन-(स०पु०) नींद लाने की औषधि (वि०) नींद लाने वाला(पु०)प्राचीन काल एक प्रकार का अस्त्र जिसके द्वारा शत्रु सुला दिये जाते थे।
स्वाब-(स०पु०) कपडे या सन की बनी हुई झाड़ू।
स्वाभाविक-(स०वि०)नैसर्गिक,प्राकृतिक, जो आपही आप उत्पन्न हो।
स्वाभाविकी-(स०वि०)प्राकृतिक,नैसर्गिक
स्वाभाव्य-(स०वि०)अपने आप होने वाला
स्वामि-(हिं०पु०) देखो स्वामी।
स्वामिकार्तिक-(सं०पु०) शिव के पुत्र कार्तिकेय, स्कन्द।
स्वामि कुमार-(स०पु०) स्वामिकार्तिक।
स्वामिता,स्वामित्व-(सं०) प्रभुत्व, स्वामी होने का भाव।
स्वामिन,स्वामिनी-(हिं०स्त्री०) मालकिन, राधिका।
स्वामी-(हिं० पु०) मालिक, प्रभु, पति, ईश्वर, राजा, शिव, कार्तिकेय, विष्णु, साधु सन्यासियों की उपाधि, सेना-नायक, गरुड़।
स्वाम्य-(स०नपु०) स्वामित्व,मालिकपन।
स्वाम्युपकारक-(स० वि०) अपने मालिक का हित करने वाला।
स्वायत्त-(स०वि०) जो अपने अधीन हो, जिस पर अपना अधिकार हो।
स्वायत्तशासन-(स० पु०) स्थानिक स्वराज्य।
स्वायम्भुव-(स०पु०) प्रथम मनु का नाम
स्वायम्भू-(स०पु०) देखो स्वायम्भुव।
स्वार-(स०पु०) बादल की गड़गड़ाहट।
स्वारथ, स्वारथी-देखो स्वार्थ, स्वार्थी।
स्वारब्ध-(स०वि०) स्वय किया हुआ।
स्वारम्भक-(स०वि०)अपने से किया हुआ।
स्वाराज्य-(स० नपु०) वह शासन प्रबन्ध जिसका सचालन अपने ही देश के लोगों के हाथ मे हो, स्वर्ग का राज्य, स्वर्गलोक।
स्वारी-(हिं०स्त्री०) देखो सवारी।
स्वारोचिष-(स०पु०) स्वरोचिष के पुत्र दूसरे मनु।
स्वार्जित-(स०वि०)अपना कमाया हुआ।
स्वार्थ-(स०पु०)अपना उद्देश्य, अपना मतलब, अपना लाभ, अपना धन या वस्तु, (वि०) स्वार्थक, सफल।
स्वार्थता-(स०स्त्री०) स्वार्थ का भाव या धर्म, खुदगरजी।
स्वार्थत्याग-(स०पु०) किसी अच्छे काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ देना।
स्वार्थत्यागी-(स०वि०) दूसरे के भले के लिये जो अपने हित को निछावर कर देने वाला।
स्वार्थपण्डित-(स० त्रि०) अपना मतलब साधने में चतुर।
स्वार्थपर-(स० वि०) जो केवल अपना ही स्वार्थ या मतलब देखता हो।
स्वार्थपरता-(स० स्त्री०) खुदगरजी।
स्वार्थपरायण-(स०वि०)स्वार्थपर,खुदगरज
स्वार्थपरायणता-(स०स्त्री०) खुदगरजी।
स्वार्थसाधक-(स०वि०) अपना मतलब साधने वाला।
स्वार्थ साधन-(स०नपु०) अपना मतलब साधना।
स्वार्थान्ध-(स०वि०) वह जो अपने हित या लाभ के सामने और किसी की बात पर विचार नहीं करता।
स्वार्थिक-(स०वि०) अपने स्वार्थ द्वारा सम्पादित, स्वार्थपर।
स्वार्थी-(स० वि०) अपना ही मतलब देखने वाला, खुदगरज।
स्वालक्षण-(स० नपु०) अपना अमगल।
स्वावश्य-(स०नपु०) आत्मवशता।
स्वाल-(हिं०पु०) देखो सवाल।
स्वाशित-(स० वि०) अच्छी तरह से भोजन किये हुए।
स्वाश्रय-(स०पु०) अपना आश्रय।
स्वास-(हिं०पु०) देखो श्वास, साँस।
स्वासा-(हिं० स्त्री०) श्वास, साँस।
स्वासीन-(स०वि०) सुख से बैठा हुआ।
स्वास्थ्य-(स०नपु०) नीरोगता आरोग्य, तन्दुरुस्ती, सन्तोष।
स्वास्थ्यकर-(स० वि०) आरोग्यवर्धक, तन्दुरुस्त करने वाला।
स्वाहा-(स०अव्य०) एक शब्द या मन्त्र जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने में प्रयोग किया जाता है, स्वाहा करना-नष्ट करना, (स०स्त्री०) अग्नि की पत्नी का नाम।
स्वाहाकृत्-(स०वि०) यज्ञ करने वाला।
स्वाहापति-(स०पु०) अग्नि।
स्वाहाभुज्-(स०पु०) देवता।
स्वाहार-(स०पु०) अपना आहार।
स्वाहार्ह-(स०वि०) हवि पाने योग्य।
स्वाहावल्लभ-(स०पु०) अग्नि।
स्वाहेय-(स० पु०) कार्तिकेय।
स्विन्न-(स०वि०) सीझा हुआ,उबाला हुआ
स्वीकरण-(स०नपु०) अंगीकार करना, कबूल करना, अपनाना, विवाह करना, सम्मत होना, मानना।
स्वीकरणीय-(स० वि०) मानने योग्य।
स्वीकार-(स० पु०) अंगीकार, मजूर, प्रतिज्ञावचन, प्रतिग्रह, वशीकरण।
स्वीकार्य-(स०वि०) मानने लायक।
स्वीकृत-(स०वि०) अंगीकृत, स्वीकार किया हुआ, परिगृहीत।
स्वीकृति-(सं०स्त्री०) सम्मति, रज़ामन्दी।
स्वीय-(स०वि०) स्वकीय, अपना, निजी (पु०) आत्मीय, रिश्तेदार।
स्वीया-(सं० स्त्री०) वह नायिका जो स्वामी में अनुरक्त तथा पतिव्रता रहने की चेष्टा करती है।
स्वेच्छा-(स० स्त्री०) अपनी इच्छा, अपनी मरज़ी।
स्वेच्छाचार-(स० पु०) मनमाना काम

करना, जो जी में आवे वही करना।
स्वेच्छाचारिता-(सं०स्त्री०) निरकुशता।
स्वेच्छाचारी-(सं०वि०) अपनी इच्छानुसार चलने वाला, मनमाना काम करने वाला।
स्वेच्छामृत्यु-(सं०पु०) अपनी इच्छानुसार मरने वाला।
स्वेच्छासेवक-(सं० पु०) बिना किसी पुरस्कार या वेतन के अपनी इच्छा से कोई काम करने वाला।
स्वेतरंगी-(हि०स्त्री०) कीर्ति, यश।
स्वेद-(सं०पु०) घर्म, पसीना, ताप, गरमी।
स्वेदक-(सं० पुं०) पसीना लाने वाली औषधि।
स्वेदज-(सं० वि०) पसीने से उत्पन्न होने वाला जीव।
स्वेदजल-(सं० नपु०) पसीना।
स्वेदन-(सं०नपु०) स्वेद या पसीना निकलना
स्वेदनाश-(सं० पु०) वायु।
स्वेदनिका-(सं० स्त्री०) पाकशाला, रसोइया घर।
स्वेदनी-(सं०स्त्री०) लोहे का पात्र, तवा।
स्वेदमाता-(सं०स्त्री०) शरीर में का रस।
स्वेदस्राव-(सं०पु०) पसीना निकलना।
स्वेदाम्बु-(सं०नपु०) स्वेदजल, पसीना।
स्वेदायन-(सं०पु०) रोमकूप।
स्वेदित-(सं० वि०) पसीने से युक्त, सेंका हुआ।
स्वेदी-(सं०वि०) पसीना लाने वाला।
स्वेद्य-(सं०वि०) पसीने के योग्य।
स्वै-(हि०वि०) अपना, निजी, (सर्व०) सो।
स्वैर-(सं०वि०) मनमाना करने वाला, ऐच्छिक, यथेच्छ, मनमाना (नपु०) स्वेच्छाधीनता।
स्वैरगति-(सं०त्रि०) स्वाधीन गति।
स्वैरचारिणी-(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री
स्वैरचारी-(सं० वि०) मनमाना काम करने वाला, व्यभिचारी।
स्वैरता-(सं० स्त्री०) स्वच्छन्दता।
स्वैरवर्ती-(सं०वि०) स्वेच्छाचारी।
स्वैरवृत्त-(सं०वि०) स्वेच्छाचारी।
स्वैरवृत्ति-(सं०स्त्री०) स्वाधीन वृत्ति।
स्वैराचार-(सं०पु०) मनमाना काम करना
स्वैरिणी-(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री।
स्वैरता-(सं०स्त्री०) स्वच्छन्दता।
स्वैरी-(सं० वि०) स्वतन्त्र, स्वाधीन।
स्वोत्थ-(सं० वि०) आप से आप निकला हुआ।
स्वोपार्जित-(सं०वि०) अपना उपार्जित किया हुआ, अपना कमाया हुआ।
स्वौजस्-(सं०नपु०) अपना ओज या तेज।

ह

ह-संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तेइसवां व्यञ्जन, उच्चारण विभाग के अनुसार यह ऊष्म वर्ण कहलाता है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।
ह-(सं० पु०) शिव, जल, हँसी, शून्य, मंगल शुभ, आकाश, योग का एक आसन, घोड़ा, रुधिर, स्वर्ग, विष्णु, युद्ध, भय, चन्द्रमा, ज्ञान, ध्यान, गर्व, कारण।
हुं-(सं०अव्य) क्रोध का शब्द।
हंक-(हि० स्त्री०) देखो हाँक, पुकार।
हॅकड़ना-(हिं० क्रि०) झिड़कते हुए जोर से चिल्लाना, ललकारना।
हॅकरना-(हि०क्रि०) दर्प के साथ बोलना।
हॅकरावा-(हि०पु०) बुलाहट, बुलावा।
हॅकवा-(हि० पु०) शेर के शिकार का एक ढंग जिसमें बहुत से लोग ढोल ताशे आदि बजाकर तथा शोर करते हुए शेरको शिकारी की मचान की ओर लेजाते हैं।
हॅकवाना-(हि० क्रि०) हाँक लगवाना, बुलवाना।
हॅकवैया-(हिं० पु०) हाँकने वाला।
हका-(हिं० स्त्री०) ललकार, डपट।
हॅकाई-(हि०स्त्री०) हाँकने की क्रिया या भाव, हाँकने की मज़दूरी।
हॉकना-(हिं०क्रि०) चौपायों या जानवरों को आवाज़ देकर हटाना या एक ओर लेजाना, हाँकना, पुकरना, बुलावा, हाँकने का काम दूसरे से कराना।
हॅकार-(हिं० स्त्री०) आवाज़ लगाकर बुलाने की क्रिया, पुकार, पुकारने के लिये सम्बोधन किया हुआ शब्द, (पुं०) ललकार, हॅकार पड़ना-बुलाने के लिये आवाज़ देना।
हॅकारना-(हि०क्रि०) पुकारना, बुलवाना, ज़ोर से आवाज़ देना, हाँक देना, डपटना।
हॅकारा-(हि० पु०) पुकार, बुलाहट, निमन्त्रण, बुलौवा।
हॅकारी-(हि० पु०) बुलाकर लाने वाला, दूत।
हगामा-(फा०पु०) उपद्रव, दंगा, फसाद, हल्ला, शोर गुल।
हंगोरी-(हि०पु०) एक बहुत बड़ा पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी बड़ी मज़बूत होती है।
हटर-(अं०पु०) लंबी चाबुक, कोड़ा।
हड़ना-(हि०क्रि०) घूमना, फिरना, व्यर्थ मारे फिरना, छानबीन करना, इधर उधर ढूढना।
हंडल-(अं०पु०) बेंट, दस्ता, मुठिया।
हंडा-(हि० पु०) पानी रखने का गगरे का आकार का धातु का बड़ा पात्र।
हंडाना-(हि० क्रि०) घुमाना फिराना।
हंडा-(हिं० पु०) पानी रखने का धातु का बड़ा बरतन।

हंडिक-(हिं० पु०) तौलने की बाट।
हंडिया-(हि० स्त्री०) मिट्टी का लोटे के आकार का चौडे मुह का बरतन, हाड़ी, इस आकार का शीशे का पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।
हंडी-(हिं०स्त्री०) देखो हड़िया, हडी।
हत, हंता-देखो हन्त, हन्ता।
हॅथोरी-(हिं०स्त्री०) देखो हथोरी, हथोली।
हथौरा-(हिं० पु०) देखो हथौड़ा।
हंडा-(हिं०पु०) पुरोहित या ब्राह्मण के किये निकाला हुआ भोजन।
हॅफनि-(हि० स्त्री०) हाफने की क्रिया, हँफनि मिटाना-सुस्ताना।
हंवा-(हिं० अव्य०) स्वीकृति सूचक अव्यय, हा।
हंस-(स० पु०) एक प्रकार का यति जो ब्रह्मचर्य से रहता है और प्रतिग्रह को स्वीकार नहीं करता, एक प्रकार का जलचर पक्षी, वचक, सारस, गाय का एक भेद, एक प्रकार का घोड़ा, प्राणवायु, एक प्रकारका योग, सूर्य, शुद्ध आत्मा, परब्रह्म, द्वेष, शिव, विष्णु, पर्वत, कामदेव, भैंसा, सन्यासियों का एक भेद, एक वर्णवृत्त का नाम जिसको पक्ति भी कहते हैं, एक प्रकार का नाच, अजपा मन्त्र, (वि०) श्रेष्ठ विशुद्ध
हंसक-(स०पु०) हसपक्षी, पैरमें पहरने का बिछुआ, सगीत में एक प्रकार का ताल।
हंसकूट-(स०पु०) बैल का कूबड़ या डिल्ला।
हसग-(स०पुं०) ब्रह्मा।
हंसगति-(स०स्त्री०) हस के समान सुन्दर धीमी चाल, बीस मात्राओं के एक छन्द का नाम।
हंसगदा-(स०स्त्री०) प्रिय भाषिणी स्त्री।
हंसगर्भ-(स०पु०) एक प्रकार का रत्न।
हंसगामिनी-(स० स्त्री०) हस के समान मन्दगति से चलने वाली स्त्री।
हंस चौपड़-(हि०पु०) एक प्रकार का प्राचीन चौपड़ का खेल।
हंसजा-(स०स्त्री०) सूर्य की कन्या, यमुना।
हंसमुखी-(हि० स्त्री०) हस मुख चेहरे वाली स्त्री।
हसदाहन-(स०नपु०) गुग्गुल, धूप।
हॅसन-(हिं० स्त्री०) हंसने की क्रिया या भाव।
हॅसना-(हिं०क्रि०) आनन्द से कण्ठ के वेग से एक विशेष प्रकार का शब्द निकलना, खिलखिलाना, मनोहर जान पड़ना, आनन्द मनाना, खुश होना, दिल्लगी या मज़ाक करना, किसी का अनादर करना, हँसी उड़ाना, हॅसना बोलना-दिल्लगी की बात करना, हॅसते हॅसते-प्रसन्नता पूर्वक, हॅसकर बात उड़ाना-हँसी मज़ाक में बात टाल देना।
हॅसनादिनी-(स० स्त्री०) मधुर भाषिणी।
हँसनि, हॅसनी-(हिं०स्त्री०) देखे हँसी।
हॅसपादिका-(स० स्त्री०) राजा दुष्यन्त की एक रानी का नाम।
हंसपदी-(स० स्त्री०) गोधापदी नाम की लता।
हसपाद, हंसपादी-(स० नपुं०) हिंगुल, सिंगरिफ।
हसमङ्गला-(स० स्त्री०) एक सकर रागिणी का नाम।
हसमाला-(स०स्त्री०) हसों की पक्ति।
हॅसमुख-(हिं०वि०) प्रसन्न वदन, जिसके मुख से प्रसन्नता झलकती हो, विनोद-प्रिय, ठिठोलिया, चुहलबाज।
हसयान-(स०वि०) हंसवाहन, ब्रह्मा।
हसयाना-(स०स्त्री०) सरस्वती।
हसरथ-(स०पु०) ब्रह्मा।
हसराज-(स०पु०) श्रेष्ठहस, एक बूटी जो पहाड़ो की चट्टानों में लगी रहती हैं, समलपत्ती।
हंसरुत-(स० नपु०) हस का शब्द, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में आठ शब्द होते हैं।
हॅसली-(हिं० स्त्री०) गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धन्वाकार हड्डी, गले में पहरने का एक मण्डलाकार गहना।
हसलोमश-(स०नपु०) कसीस।
हंसवंश-(स०पु०) सूर्य का वश।
हसवती-(स०स्त्री०) राजा दुष्यन्त की एक पत्नी।
हंसवाह, हसवाहन-(स० पु०) ब्रह्मा।
हसवाहिनी-(स० स्त्री०) सरस्वती।
हंससुता-(स० स्त्री०) सूर्य की कन्या, यमुना नदी।
हॅसाई-(हि०स्त्री०) हॅसने की क्रिया या भाव, उपहास, लोकनिन्दा, बदनामी।
हसाधिरूढ-(स०पु०) ब्रह्मा।
हसाधिरूढ़ा-(स०स्त्री०) सरस्वती।
हॅसाना-(हि० क्रि०) दूसरों को हँसने में प्रवृत्त करना।
हॅसाय-(हि०स्त्री०) देखो हॅसाई।
हसारूढ-(स० पु०) ब्रह्मा।
हसारूढा-(स०स्त्री०) सरस्वती।
हसालि-(स० स्त्री०) सैंतीस मात्राओं का एक छन्द जिसमें बीसवी मात्रा पर यदि होती है।
हसिका हसिनी-(स०स्त्री०)हसकी स्त्री, हसी
हॅसिया-(हिं०पु०) एक धार दार अर्ध चन्द्राकार लोहे का औज़ार जिससे खेत की फसल काटी जाती है, चमड़ा छीलकर चिकना करने का एक औज़ार, गरदन के नीचे की हड्डी।
हसी-(स० स्त्री०) हस की माद, एक जाति की दुधार गाय, बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत।
हॅसी-(हिं० स्त्री०) हॅसने की क्रिया या भाव, मजाक, दिल्लगी, विनोद पूर्ण उक्ति, निन्दा, बदनामी, हॅसी उड़ाना-निन्दा करना, हसी खुशी-आनन्द पूर्वक, हॅसीठट्ठा-मजाक, हॅसी छूटना-हॅसना, हॅसी खेल-मनोविनोद, दिल्लगी, हॅसी समझना-सहज या सामान्य जानना, हॅसी में उड़ाना-किसी बात को दिल्लगी में टाल देना, हॅसी मे लाना-दिल्लगी समझना।
हॅसुआ, हॅसुवा-(हिं०पु०) देखो हँसिया
हंसीय-(स०वि०) हस सबन्धी।

हँसोड़–(हिं० वि०) दिल्लगीबाज़, मसखरा।
हसोदक–(स०नपुं०) किसी नये मिट्टी के पात्र में भर कर धूप में रक्खा हुआ जल
हँसौहाँ–(हिं०वि०) थोड़ा हँसता हुआ, हँसी दिल्लगी से भरा हुआ।
हो–(स०अव्य०) सम्बोधन दर्प, घमंड।
हई–(हि०स्त्री०) आश्चर्य, अचरज।
हऊँ–(हि०सर्व०) देखो हौं।
हक–(अ०वि०) सत्य, सच, वाजिब, धर्म तथा नीति के अनुसार (पु०) किसी वस्तु को लेने पास रखने तथा व्यवहार में रखने का अधिकार, वह जो किसी को न्याय अथवा लोकरीति के अनुसार प्राप्त हो, ठीक बात, न्याय पक्ष, दस्तूर के अनुसार मिलने वाली वस्तु, ईश्वर, खुदा, अख्तियार, हक में–विषय में।
हक़दार–(फा०पु०) स्वत्व या अधिकार रखने वाला।
हक़नाहक–(अ० अव्य०) बिना उचित अनुचित का विचार किये हुए, बिना प्रयोजन, फजूल।
हकबकाना–(हि०क्रि०) स्तम्भित होना, घबड़ाना, ठक रह जाना।
हक़ मालिकाना–(फा० पु०) किसी सम्पत्ति पर स्वामि रूप में अधिकार।
हक मौरूसी–(अ०पु०) वह हक जो बाप दादों से चला आता हो।
हकला–(हिं० वि०) रुकरुक कर बोलने वाला।
हकलाना–(हिं०क्रि०) बोलने में अटकना, रुकरुक कर बोलना।
हकशफा–(अ० पु०) किसी ज़मीन को खरीदने में औरों के अपेक्षा उसके पड़ोसी का विशेष हक होना।
हकार–(सं०पु०) 'ह' अक्षर या वर्ण।
हकारना–(हिं० क्रि०) पाल तानना, झंडा उठाना।
हक़ीकत–(अ०स्त्री०) सचाई, असलियत, असल या ठीक बात, सच्चा वृत्तान्त, हक़ीक़त में–वस्तुतः, वास्तव में, हक़ीकत खुल जाना–सच्ची बात का प्रकट हो जाना।
हकीकी–(अ० वि०) सचा, खास अपना, सगा।
हकीम–(अ० पुं०) यूनानी विधि से चिकित्सा करने वाला, वैद्य।
हकीमी–(अ० स्त्री०) यूनानी चिकित्सा शास्त्र, हकीम का पेशा।
हकीयत–(अ० स्त्री०) स्वत्व, अधिकार, होने का भाव।
हकीर–(अ०वि०) बहुत छोटा या तुच्छ उपेक्षा के योग्य।
हक़ूक़–(अ०पुं०) "हक" का बहुवचन का रूप।
हकूमत–(हि०स्त्री०) देखो हुकूमत।
हक्काक–(हि०पु०) नगीनो को काटने, तथा सान पर चढाने का काम करने वाला।
हक्काबक्का–(हिं० वि०) घबड़ाया हुआ, भौचक।
हक्कार–(स० पु०) चिल्लाकर बुलाने का शब्द, पुकार।
हगना–(हिं० क्रि०) मलोत्सर्ग करना, मल त्याग करना, पायखाना फिरना, दवाव के कारण कोई वस्तु दे देना।
हगाना–(हि०क्रि०) हगने की क्रिया में या पायखाना फिरने में सहायता देना।
हगास–(हिं० स्त्री०) मल त्याग करने की इच्छा।
हगोड़ा–(हिं०वि०) बहुत हगने वाला।
हचकना -(हिं०क्रि०) धक्के से हिलना डोलना।
हचका–(हिं०पु०) धक्का, झोंका।
हचकाना–हिं०क्रि०)झोंका देकर हिलाना।
हचकोला–(हिं० पुं०) वह धक्का जो गाड़ी चारपाई आदि के हिलने डोलने से लगे।
हचना–(हिं०क्रि०) देखो हिचकना।
हज–(अ०पु ०) मुसलमानों की मक्के यात्रा जहा पर वे काबे के दर्शन के लिये जाते है।
हजदेरा–(हि०पु०) अरब देश।
हज़म–(अ० पु०) पाचन, पेट में पाचन होने की क्रिया, (वि०) पेट में पचा हुआ, बेइमानी या अन्याय से लिया हुआ।
हज़रत–(अ० पुं०) महात्मा, अत्यन्त आदर का सम्बोधन, महाशय, (व्यंग में) नटखट या खोटा आदमी।
हजरत सलामत–(अ० पु०) बादशाहों या नवाबों के लिये सम्बोधन का शब्द।
हजाम–(हि०पु०) देखो हज्जाम।
हजामत–(अ० स्त्री०) हज्जाम का काम, बनवाने की मजदूरी, क्षौर कर्म, बढे हुए बालों को कटवाना या मुड़वाना, हजामत बनाना–धन लूटना।
हज़ार–(फा०वि०) दस सौ की संख्या का संख्या में बहुत, अनेक, (पु०) दस सौ की संख्या या अंक १०००, (क्रि०वि०) चाहे जितना अधिक।
हज़ारहा–(फा०वि०) सहस्रों, हजारों।
हज़ारा–(फा०वि०) जिसमें हजार अथवा बहुत सी पखड़िया हों, (पु०) फौवारा, एक प्रकार की आतिशबाज़ी।
हज़ारी–(फा० पु०) एक हज़ार सिपाहियों का सरदार, व्यभिचारिणी का पुत्र, दोगला।
हज़ूर–(अ०पु०) देखो हुजूर।
हज़ारों–(फा०वि०)सहस्रों, अनेक,बहुत।
हजूरी–(अ० पु०) किसी बादशाह या राजा के सर्वदा पास रहने वाला सेवक।
हजो–(अ०स्त्री०)अपकीर्ति, अपनाम, निंदा
हज्ज–(अ०पु०) देखो हज।
हज्जाम–(हिं०पु०)हजामत बनाने वाला, नाई, नाऊ।
हट–(हि०स्त्री०) देखो हठ।
हटकन–(हि० स्त्री०) वर्जन, मना करना, गायों तथा अन्य चौपायों के हाँकने की छड़ी।
हटकना–(हि०क्रि०) निषेध करना, मना करना, चौपायों को किसी ओर जाने से रोक कर दूसरी ओर हाँकना।
हटका–(हि० पु०) किवाड़ों को खुलने से रोकने के लिये लगाया हुआ काठ।
हटकि–(हिं०क्रि०वि०)जबरदस्ती,अकारण

हटतार–(हिं०स्त्री०) माला का सूत।
हटताल–(हिं०स्त्री०) देखो हड़ताल।
हटना–(हिं० क्रि०) एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान में जाना, सरकना, घिसकना, पीछे को ओर जाना, प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहना, दूर होना, किसी बात का नियत समय के बाद होना, सामने से दूर होना, विमुख होना, जी चुराना,
हटना उड़ी–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मलखम की कसरत।
हटपर्णि–(स०पु०) शैवाल, सेवार।
हटवया, हटवा–(हिं०वि०) बाजार में बैठकर सौदा बेचनेवाला, दूकानदार।
हटवाई–(हिं०स्त्री०) क्रय विक्रय, सौदा मोल लेना या बेंचना।
हटवाना–(हिं० क्रि०) हटाने का काम दूसरे से कराना।
हटाना–(हिं० क्रि०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना, खिसकाना, स्थान छोड़ने के लिये विवश करना, किसी स्थान से दूर करना, प्रतिज्ञा से विचलित होना, डिगना, किसी विषय का प्रसग छेड़ना।
हटुआ–(हिं० पु०) दुकानदार, अन्न तौलने वाला, बया।
हटौती–(हिं०स्त्री०) शरीर की गठन।
हट्ट–(स० पु०) हाट, बाजार, दूकान, चौहट्ट–बाजार का चौक।
हट्टविलासिनी–(स०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
हट्टाकट्टा–(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा।
हट्टाध्यक्ष–(स०पु०) बाजार का मालिक।
हट्टी–(हिं०स्त्री०) दूकान।
हठ–(स० पु०) दुराग्रह, जबरदस्ती, टेक, जिद, दृढ़ प्रतिज्ञा, हठ पकड़ना–दुराग्रह करना, हठ रखना–किसी बात के लिये अड़ करना।
हठधर्म–(स०पु०) दुराग्रह, कट्टरपन।
हठधर्मी–(स० स्त्री०) अपनी बात पर अड़ने वाला, अपने मत या सम्प्रदाय पर अड़ने की प्रवृत्ति।
हठना–(हिं० क्रि०) दुराग्रह करना, जिद करना, प्रतिज्ञा करना।
हठकर–(हिं०क्रि०वि०) ज़बरदस्ती।
हठयोग–(सं० पु०) वह योग जिसमें आसन सिद्धि, प्राणायाम, नेति, धौति आदि क्रियाओं से शरीर की शुद्धि की जाती है तथा चित्त एकाग्र करके परमात्म तत्व प्राप्त होता है।
हठशील–(स० वि०) हठी, ज़िद्दी।
हठात्–(स० अव्य०) हठ पूर्वक, दुराग्रह से, ज़बरदस्ती, अवश्य।
हठात्कार–(स०पु०) बलात्कार।
हठिका–(स०स्त्री०) कोलाहल, शोरगुल।
हठी–(हिं०वि०) हठ करनेवाला, जिद्दी।
हठीला–(हिं०वि०) जिद्दी, अपनी प्रतिज्ञा का पक्का, युद्ध में स्थिर रहने वाला।
हड़–(स०स्त्री०) एक बड़ा वृक्ष जिसके फल औषधियों में प्रयोग होते हैं, एक प्रकार का आभूषण जो नाक में पहना जाता है।
हड़क–(हिं०स्त्री०) पागल कुत्ते के काट लेने पर जल के लिये बड़ी व्याकुलता, किसी वस्तु को प्राप्त करने की झक, उत्कट अभिलाषा।
हड़कना–(हिं०क्रि०) तरसना।
हड़काना–(हिं० क्रि०) किसी के पीछे लगाना, लहकाना, टालना, तरसाना।
हड़काया–(हिं० वि०) पागल, बावला, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
हड़गीला–(हिं० पु०) बगले की जाति का एक पक्षी जिसकी टाँग और चोंच बहुत लंबी होती हैं।
हड़जोड़–(हिं० पु०) एक प्रकार की लता जो भीतरी चोट के स्थान पर लगाई जाती है।
हड़ताल–(हिं० स्त्री०) किसी बात पर असन्तोष प्रकट करने के लिये दूकान बंद करना अथवा काम करने वालों का काम बन्द करना।
हड़ना–(हिं०क्रि०) तौल में जाँचा जाना।
हड़प–(हिं०वि०) निगला हुआ, पेट मे डाला हुआ, अनुचित रीति से लिया हुआ, गायब किया हुआ।
हड़पना–(हिं० क्रि०) खाजाना, दूसरे की वस्तु को अनुचित रीति से ले लेना।
हड़फूटन–(हिं० स्त्री०) शरीर का भीतरी दर्द, हड्डियों में पीड़ा।
हड़फूटनी–(हिं० स्त्री०) चमगादड़।
हड़फोड–(हिं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया।
हड़बड़ई–(हिं० स्त्री०) उतावलापन, जल्दीबाज़ी दिखलाने की मुद्रा।
हड़बड़ाना–(हिं०क्रि०) शीघ्रता के कारण घबड़ाहट से कोई काम करना, आतुर होना।
हड़बड़िया–(हिं० वि०) उतावला।
हड़बड़ी–(हिं०स्त्री०) उतावलापन, जल्दी के कारण घबड़ाहट।
हड़हड़ाना–(हिं० क्रि०) जल्दी मचा कर दूसरे को व्यग्र करना।
हड़हा–(हिं०पु०) जगली बैल (हिं०) अति दुर्बल, जिसके शरीर में केवल हड्डी रह गई हो।
हड़ा–(हिं०पु०) पक्षियों को उड़ाने का शब्द जो खेत के रखवाले करते हैं।
हड़ावल–(हिं० स्त्री०) हड्डियों का समूह, हड्डी का ढाँचा, ठठरी, हड्डी की माला।
हड़ि–(स० पु०) प्राचीन काल की काठ की बेड़ी।
हड़ीला–(हिं०वि०) जिसमें हड्डी हो।
हड्डज–(स०वि०) हड्डी से उत्पन्न।
हड्डा–(हिं० पु०) मधुमक्खी की तरह का एक कीड़ा, भिड़, बर्रें।
हड्डी–(हिं० स्त्री०) अस्थि, वंश, हड्डी तोड़ना–बहुत मारना पीटना, हड्डियां निकल आना–अति दुर्बल हो जाना, पुरानी हड्डी–वृद्ध मनुष्य जिसको भीतरी बल हो।
हण्डा–(हिं० स्त्री०) जल आदि रखने का बड़ा बरतन।
हण्डी–(स० स्त्री०) हांडी।
हत–(स०वि०) बध किया हुआ, मारा हुआ, खोया हुआ, लगाया हुआ, पीडित, ग्रस्त, हैरान, लगा हुआ, निकृष्ट, गुणा किया हुआ, बिगाड़ा हुआ, खराब किया हुआ, आशाहीन।

हतक-(अ०स्त्री०) अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।
हतक इज्जती-(अ० स्त्री०) मानहानि।
हतज्ञान-(स० त्रि०) ज्ञान शून्य, अचेत।
हतदैव-(स० वि०) भाग्यहीन, अभागा।
हतना-(हिं० क्रि०) बध करना, मार डालना, आज्ञा पालन करना।
हतप्रभ-(स० वि०) प्रभा रहित।
हतपुत्र-(स० वि०) जिसका पुत्र मर गया हो।
हतप्रभाव-(स० वि०) जिसका प्रभाव या असर न रह गया हो।
हतबुद्धि-(स०त्रि०) बुद्धि हीन, मूर्ख।
हतभाग्य-(स०वि०) अभागा।
हतमूर्ख-(स० त्रि०) बहुत बड़ा मूर्ख।
हतवाना-(हिं० क्रि०) बध कराना, मरवाना।
हतवीर्य-(स०वि०) शक्तिहीन, बलहीन।
हतस्वर-(स० वि०) स्वरभङ्ग, जिसकी आवाज़ बैठ गई हो।
हता-(स० स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री (हि०क्रि०) था।
हतादर-(स०वि०) जिसका आदर घट गया हो।
हताध्वर-(स० पु०) शिव, महादेव।
हताना-(हि० क्रि०) देखो हतवाना।
हताश-(स०वि०) आशा रहित, निराश, निर्दय, कठोर, दुर्जन।
हताहत-(स०वि०) मारे गये और घायल
हति-(स० स्त्री०) व्याघात, हत्या।
हतोत्साह-(स०वि०) जिसको कुछ करने का उत्साह न रह गया हो, जिसको किसी बात का उमंग न हो।
हतौजस्-(स०वि०) तेजहीन, कमज़ोर।
हत्थ-(हि० पु०) देखो हस्त, हाथ।
हत्था-(हिं०पु०) किसी यन्त्र या औज़ार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता हो, दस्ता, मूठ, तीन हाथ लंबा लकड़ी का बल्ला जिससे खेत की नालियों का पानी चारों ओर फैलाया जाता है, तिवार बुनने का एक यन्त्र, केले के फलों का गुच्छा, हाथ का छापा।

हत्थाजड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का सुगन्धित पत्तियों का पौधा।
हत्थी-(हि० स्त्री०) औज़ारों की मूठ, दस्ता, ईंट का पत्थर का टुकड़ा जिस पर हाथ रख कर दंड किया जाता है।
हत्थे-(हि० क्रि० वि०) हाथ में, हत्थे चढना-वश में होना।
हत्या-(स० स्त्री०) वध, खून, झंझट, बखेड़ा, हत्या लगना-मार डालने का पाप लगना।
हत्यारा-(हिं० पु०) हत्या करने वाला, मार डालने वाला।
हत्यारी-(हिं०स्त्री०) हत्या करने वाली, हत्या करने का पाप।
हथ-(हि०पु०) "हाथ" शब्द का संक्षिप्त रूप, समस्त पदों में इसका व्यवहार होता है।
हथ उधार-(हिं०पु०) वह ऋण जो थोड़े दिनों के लिये बिना किसी प्रकार की लिखा पढी के लिया जाय, हथफेर।
हथकंडा-(हि० पु०) हस्तलाघव, गुप्त चाल, हाथ की सफाई।
हथकड़ी-(हिं०स्त्री०) कैदियों के हाथों में पहराने का लोहे का कड़ा।
हथकरा-(हिं०पु०) कपड़े या रस्सी का टुकड़ा जो धुनकी में बंधा रहता है।
हथकरी-(हिं०स्त्री०) दूकान के किवाड़ों में बन्द करने का एक प्रकार का बड़ा ताला।
हथकल-(हिं०पु०) पेंच ढीली करने या कसने का एक औज़ार।
हथकोड़ा-(हिं०पु०) कुश्ती की एक पेंच
हथछुट-(हिं०वि०) जिसको तुरत किसी को मार देने की आदत हो।
हथधरी-(हि० स्त्री०) सहारा लेने की लकड़ी।
हथनाल-(हिं०पुं०) वह तोप जो हाथी की पीठ पर रखकर चलती है, गजनाल
हथनी-(हिं०स्त्री०) मादा हाथी, हथिनी।
हथफूल-(हि० पु०) एक प्रकार की आतिशबाज़ी, हथेली के दूसरे ओर पहरने का एक प्रकार का गहना।

हथफेर-(हिं० पु०) प्रेम से शरीर पर हाथ फेरना, चालाकी के साथ किसी का धन उड़ा लेना, चुपचाप किसी का माल हरण करना, देखो हथउधार।
हथबेंटा-(हि० पु०) गन्ना काटने की कुदाली।
हथरको-(हिं०स्त्री०) चमड़े की थैली।
हथली-(हिं०स्त्री०) चरखा चलाने की मुठिया।
हथलेवा-(हिं०पुं०) विवाह संस्कार में वर तथा कन्या का हाथ अपने हाथ में लेना, पाणिग्रहण।
हथवाँस-(हि० पु०) नाव चलाने की सामग्री।
हथवाँसना-(हि०क्रि०) व्यवहार में लाना
हथसाँकर-(हिं०पु०) देखो हथफूल।
हथसार-(हिं० स्त्री०) हाथी रखने का स्थान, फीलखाना।
हथा-(हि०स्त्री०) हाथ का छापा।
हथाहथी-(हि०अव्य०) हाथोंहाथ, झटपट।
हथिनी-(हि०स्त्री०) मादा हाथी, हथनी।
हथिया-(हिं०पु०) हस्त नक्षत्र।
हथियाना-(हिं० क्रि०) अधिकार में करना, हाथ में लेना या पकड़ना, धोखा देकर दूसरे की वस्तु ले लेना, हाथ में पकड़ कर काम में लाना।
हथियार (हि० पु०) कोई काम करने की वस्तु औज़ार, अस्त्र शस्त्र, लिङ्गेन्द्रिय।
हथियारबन्द-(हिं०वि०) शस्त्रधारी, जो हथियार धारण किये हो।
हथुई रोटी-(हि०स्त्री०) गीले आटे की लोई को हथेलियों से दबाकर बनाई हुई रोटी।
हथेरा-(हि० पु०) पानी उलचने का बल्ला, देखो हाथा।
हथेरी-(हि०स्त्री०) देखो हथेली।
हथेल-(हिं०स्त्री०) बुना हुआ कपड़ा तान कर रखने की लकड़ी।
हथेली-(हि० स्त्री०) हाथकी कलाई का वह चौड़ा भाग जिसमें उंगलियाँ होती

हैं, करतल, हथेली में आना-प्राप्त होना, वश में होना; हथेली पर जीन होना-प्राण जाने का भय होना।
हथेव-(हिं०पु०) हथौड़ी।
हथोरी-(हिं०स्त्री०) देखो हथेली।
हथौटी-(हिं०स्त्री०)हस्त कौशल, किसी कार्य में लगने का ढंग।
हथौड़ा-(हिं०पु०) ठोंकने या गढ़ने का लोहे का एक औज़ार, मारतौल।
हथौड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटा हथौड़ा।
हथौना-(हिं० पु०) वर और कन्या के हाथ में मिठाई रखने की रीति।
हथ्यार-(हिं०पु०) देखो हथियार।
हद-(अ० स्त्री०) किसी बात की उचित सीमा, नियत मान, मर्यादा, सीमा, सबसे अधिक परिमाण, हद बाँधना-सीमा निश्चित करना, हद से ज्यादा-बहुत अधिक।
हद समाअत-(अ० स्त्री०) दावा करने के लिये समय की नियत अवधि।
हद सियासत-(अ०स्त्री०)किसी न्यायालय के अधिकार की सीमा।
हदिया-(अ०स्त्री०)उच्चकुल की वीर रमणी
हदीस-(अ० स्त्री०) मुहम्मद साहब का उपदेश संग्रह जो कुरान का परिशिष्ट भाग माना जाता है।
हदन-(सं० नपुं०) वध, मारण, आघात करना, गुणा करना।
हनना-(हिं०क्रि०)वध करना,मार डालना, प्रहार करना, पीटना।
हनवाना-(हिं० क्रि०) हनने का कार्य दूसरे से कराना।
हननीय-(सं०वि०) वध करने योग्य।
हनफ़ी-(अ०पु०) मुसलमानो मे सुन्नियो का एक सम्प्रदाय।
हनिवंत, हनुंव-(हिं० पु०) हनुमान्।
हनील-(सं०पु०) केतकी, केवड़ा।
हनु-(सं०पुं०) ठुड्डी, जबड़ा, चिबुक।
हनुका-(सं०स्त्री०) दाढ़ की हड्डी।
हनुग्रह-(सं०पु०)जबड़ा बैठ जाने का रोग
हनुमत-(हिं०पु०) हनुमान्।
हनुमंती-(हिं०स्त्री०) मालखम की एक कसरत।
हनुमान्-(हिं०वि०) दाढ़ वाला, जबड़े वाला, बड़े जबड़े वाला, (पु०) एक वीर बन्दर जो रामचन्द्र का बड़ा सहायक था।
हनुमान् बैठक-(हि०स्त्री०) एक प्रकार की बैठक।
हनुल-(सं०वि०) पुष्ट दाढ़ वाला।
हनुस्तम्भ-(सं०पु०) हनुग्रह रोग।
हनू-(सं०स्त्री०) हनु, ठुड्ढी, हनूफल-एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्रायें होती हैं।
हनूमत्-(सं०पु०) हनुमान्।
हनूष-(सं०पु०) राक्षस।
हनोज़-(फ़ा०अव्य०) अभी, अभीतक।
हनोद-(हिं०पु०)हिंडोल राग का एक भेद
हन्त-(सं० अव्य०) सम्भ्रम, विषाद, हर्ष आदि सूचक शब्द।
हन्तकार-(सं०पु०) अतिथि या सन्यासी आदि के लिये निकाला हुआ भोजन,
हन्तव्य-(सं०वि०) मारने योग्य।
हन्ता-(हिं० पु०) मारने वाला, हत्यारा।
हप-(हिं० पुं०) मुँह में झट से लेकर ओठों को बन्द करने का शब्द, हप कर जाना-मुँह में डाल कर झट से खा जाना।
हपटाना-(हिं०क्रि०) हाँफना।
हफ्ता-(फा०पुं०) सप्ताह, सात दिन का समय।
हफ्ती-(फा०स्त्री०) एक प्रकार की जूती।
हबकना-(हिं०क्रि०) मुह बाना, खाने या दाँत काटने के लिये झटसे मुख खोलना।
हबर हबर-(हिं०क्रि०वि०) हड़बड़ी से, उतावलेपन से, जल्दी जल्दी।
हबराना-(हिं० क्रि०) देखो हबड़ाना।
हबश-(फा० पु०) अफ्रीका का एक प्रदेश।
हबशी-(फा०पु०) हबश देश का निवासी जिसके शरीर का रंग बहुत काला होता है, हबशी सनर-अफ्रीका का गैंड़ा जिसको दो सींघ होती हैं।
हबीब-(अ० पु०) मित्र, दोस्त, प्रिय।
हबूब-(अ०पु०) पानी का बुल्ला, निस्सार बात, झूठमूठ की बातचीत।
हब्बा डब्बा-(हिं०पु०) बच्चों की पसली चलने की बीमारी।
हब्स-(अ० पु०) कारावास, कैद।
हब्सबेजा-(अ० पु०) अनुचित रीति से कैद करना।
हम-(हिं०सर्व०) उत्तम पुरुष बहु वचन सर्वनाम, "मैं" का बहुवचन का रूप, (पु०) अहंकार, अभिमान, "हम" का भाव।
हम-(फा० अव्य०) साथ, संग, तुल्य, समान।
हम असर-(फा०पु०) समान संस्कार या प्रवृत्ति वाले एकही समय में होनेवाले।
हमजिस-(फा०पु०)एकही जाति के प्राणी
हमजोली-(फा० पु०) संगी साथी।
हमता-(हिं० पु०) अहंकार।
हमदर्द-(फा० पु०) दुःख में सहानुभूति रखने वाला।
हमदर्दी-(फा० स्त्री०) सहानुभूति।
हमनिवाला-(फा० पु०) एक साथ बैठकर भोजन करने वाला।
हमरा-(हिं०सर्व०) देखो हमारा।
हमराह-(फा०अव्य०) संग, साथ।
हमल-(अ० पु०) गर्भ।
हमला-(अ० पु०) युद्धयात्रा, चढ़ाई, आक्रमण, प्रहार, किसी की हानि पहुचाने का प्रयत्न, शब्द द्वारा आक्षेप, व्यङ्ग।
हमवतन-(अ०पु०)देशवासी, देशभाई।
हमवार-(फा० वि०) समतल, सपाट।
हमसबक-(फा०पु०) एक साथ पढ़ने वाला, सहपाठी।
हमसरी-(फा० स्त्री०) बराबरी।
हमसर-(फा०पु०) बराबरी का आदमी।
हमसाया-(फा० पु०) पड़ोसी।
हमहमी-(हिं० स्त्री०) देखो हमाहमी।
हमाम-(अ० पु०) स्नानागार, नहाने का घर।
हमारा-(हिं०सर्व०) 'हम' का सबंध कारक का रूप।

हमाल–(अ० पु०) बोझ उठाने वाला, सभालने या रक्षा करने वाला, कुली, मजदूर।
हमाहमी–(हि० स्त्री०) स्वार्थपरता, अहकार, अपने ऊपर भार लेने का प्रयत्न।
हमें–(हि०सर्व०) "हम" का कर्म और सम्प्रदान कारक का रूप, हमको।
हमेल–(अ०स्त्री०) गले में पहरने की गोल टुकड़ों या सिक्कों की बनी हुई माला।
हमेव (हिं० पु०) अभिमान, अहकार।
हमेशा–(फा०अव्य०) सदा, सर्वदा।
हमेस–(हि०अव्य०) देखो हमेशा।
हमै–(हिं०सर्व०) देखो हमे।
हम्वा–(स० स्त्री०) गाय बैल के रंभने का शब्द।
हम्भा–(स०स्त्री०) गाय बैल के बोलने का शब्द।
हम्माम–(अ० पु०) स्नानागार, नहाने का कमरा।
हम्मीर–(म०पु०) सपूर्ण जातिका एक सकर राग।
हम्मीरनट–(स०पुं०) एक राग का नाम।
हसंद–(हि०पु०) अच्छा सुन्दर घोड़ा।
हय–(स०पु०)अश्व, घोड़ा, चार मात्राओं का एक छन्द, इन्द्र का एक नाम, धनु राशि, कविता में सात की मात्रा सूचित करने का शब्द।
हयकातरा–(स० स्त्री०) घोड़कायरा नामक वृक्ष।
हयगन्ध–(स०नपु०) काला नमक।
हयगन्धा–(स०स्त्री०) असगन्ध।
हयगृह–(स०पु०) अश्वशाला।
हयग्रीव–(स०पुं०) एक असुर का नाम, विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक
हयग्रीवा–(सं०स्त्री०) दुर्गा।
हयघ्न–(स०पु०) करवीर वृक्ष।
हयङ्कष–(स०पु०)इन्द्र का सारथी मातली
हयद्विष–(स०पु०) भैंसा।
हयन–(स०नपु०) खेलने की गाड़ी।
हयना–(हिं० क्रि०) हत्या करना, मार डालना, वध करना, नष्ट करना।
हयनाल–(हिं० स्त्री०) घोड़ों से खींची जाने वाली तोप।
हयप्रिय–(सं०पु०) यव, जौ, हयप्रिया–असगन्ध।
हयमारक–(स० पु०) अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष।
हयमुख–(स०पु०)एक राक्षस का नाम।
हयमेध–(स०पु०) अश्वमेध यज्ञ।
हयवाहन–(स० पुं०) कुबेर।
हयविद्या–(स०स्त्री०) अश्व विद्या।
हयवैरी–(सं०पु०) भैंसा।
हयशाला–(स०स्त्री०) अश्वशाला,घुड़साल
हयशास्त्र–(स०नपु०) अश्वशास्त्र।
हयशिक्षा–(स०स्त्री०) अश्वों की शिक्षा।
हयशिरा–(स०स्त्री०) नैश्वातर की कन्या।
हया–(स० स्त्री०) असगन्ध, (अ०स्त्री०) लज्जा शर्म।
हयात–(अ०स्त्री०) जीवन, जिन्दगी, हीन हयात-जीवन काल में।
हयागार–(स०पु०) अश्वशाला।
हयादार–(फ़ा०वि०) लज्जाशील,शर्मीला
हयादारी–(फ़ा०स्त्री०) लज्जा शीलता।
हयानन–(स०पु०) देखो हयग्रीव।
हयारोह–(स०पु०) अश्वारोही,घुड़सवार।
हयालय–(स० पु०) अश्वशाला।
हयोत्तम–(स०पु०) उत्तम घोड़ा।
हर–(स० पु०) शिव, महादेव, अग्नि, गदहा, हरण, भाग, गणित में किसी सख्या का भाजक, भिन्न में नीचे की सख्या, छप्पय का एक भेद, रगण का पहला भेद, (वि०) छीनने या लूटने वाला, मिटाने वाला, नाश करने वाला, दूर करने वाला,वाहक, ले जाने वाला।
हर–(फा०वि०)प्रत्येक, हर एक, हररोज़–प्रतिदिन, हरदम– सर्वदा, सदा।
हरएँ–(हिं०अव्य०) धीरे धीरे।
हरक–(स०पु०) शिव, महादेव, (वि०) हरण करने वाला।
हरकत–(अ० स्त्री०) गति, चेष्टा, चाल, बुरी चाल या व्यवहार।
हरकना–(हिं० क्रि०) देखो हटकना।
हरकारा–(हिं०पु०) सन्देश अथवा चिट्ठी पत्री ले जाने वाला, चिट्ठीरसाँ।
हरकैंस–(हिं०पु०) एक प्रकार का अगहनिया धान।
हरख–(हिं० पु०) देखो हर्ष, खुशी,
हरखना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, हरखाना-प्रसन्न करना, खुश करना।
हरगिज़–(फा०अव्य०) कदापि, कभी।
हरगौरी–(सं०स्त्री०) अर्धनारीश्वर मूर्ति।
हरचन्द–(फ़ा०अव्य०) बहुत बार, अनेक बार, यद्यपि, अगर।
हरचूड़ामणि–(स०पु०) चन्द्रमा।
हरज–(स०पु०) पारद, पारा, (अ०पु०) देखो हर्ज।
हरजा–(फ़ा० पु०) सगतराशों की एक प्रकार की टाँकी, (हिं०पु०)हरजाना हर्जा
हरजाई–(फ़ा० पु०) हर जगह घूमने वाला, आवारा, (फ़ा०स्त्री०) व्यभिचारिणी वेश्या, रण्डी।
हरजाना–(फ़ा०पु०) क्षति पूर्ति, वह धन जो किसी के नुकसान के बदले दिया जावे।
हरट्ट–(हिं०वि०) हृष्ट, पुष्ट, मज़बूत।
हरण–(स० नपु०) सहार, नाश, दूर करना, हयाना, लूटना, छीनना, गरम जल, कौड़ी, भुज, बाहु, शुक्र, ग्रहण करना, भाग देना, विभाग करना, ले जाना।
हरणीय–(स० वि०) हरण करने योग्य छीनने लायक।
हरता–(हिं०वि०) देखो हर्ता।
हरता धरता–(हिं० पु०) जिसको रक्षा और नाश दोनों करने का अधिकार हो, स्वामी, पूर्ण अधिकारी।
हरतार,हरताल–(हिं०स्त्री०) पीले रग का एक खनिज पदार्थ, हरताल लगाना–नष्ट करना, मिटा देना।
हरताली–(हिं०वि०) हरताल के रग का, उपद्रव करने वाला, हड़ताली।
हरतेज–(स०नपु०) पारद, पारा।
हरद–(हिं०स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।
हरदा–(हिं० पु०) टीकाणुओं का समूह जो फ़सल की पत्तियों पर जम जाता है

और इसको हानि पहुँचाता है।
हरदिया–(हिं० वि०) हल्दी के रंग का, पीला।
हरदी–(हिं० स्त्री०) हरिद्रा, हलदी।
हरदू–(हिं० पु०) एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।
हरद्वार–(हिं० पु०) देखो हरिद्वार।
हरनर्तक–(स० नपु०) एक प्रकार का छन्द।
हरना–(हिं० क्रि०) किसी की वस्तु को उसकी इच्छा के विरुद्ध ले लेना, छीनना, लूटना, हटाना, दूर करना, नाश करना, ले जाना, पराजित होना, शिथिल होना, मन हरना–लुभाना। प्राण हरना–मार डालना।
हरना–(हिं० पु०) देखो हिरन।
हरनाकस–(हिं० पु०) देखो हिरण्यकश्यपु।
हरनाच्छ–(हिं० पु०) देखो हिरण्याक्ष।
हरनी–(हिं० स्त्री०) मादा हरिण, मृगी।
हरनेत्र–(स० नपु०) शिव के नेत्र, तीन की संख्या।
हरनौटा–(हिं० पु०) हरिण का बच्चा।
हरपा–(हिं० पु०) सुनारों का तराजू रखने का डब्बा।
हरपुजी–(हिं० स्त्री०) कार्तिक में किसानों का हल का पूजन।
हरपुर–(स० नपु०) शिवलोक, शिव की पुरी।
हरप्रिय–(स० पु०) धतूरा (वि०) शिव को प्रिय।
हरफ–(अ० पु०) अक्षर, वर्ण, हरफ आना–कलंक लगना, हरफ उठाना अक्षरों को पहचान लेना।
हरफगीर–(फा० वि०) बारीकी से दोष निकालने वाला।
हरफगीरी–(फा० स्त्री०) सूक्ष्म परीक्षा।
हरफा–(हिं० पु०) कटा हुआ चारा रखने का घर, हरफा रेवड़ी (हिं० स्त्री०) कमरख की जातिका एक वृक्ष जिसके सिंघाड़े के समान फल खटमीठे होते हैं।
हरवराना–(हिं० क्रि०) देखो हड़बड़ाना।
हरवा–(अ० पु०) अस्त्र, हथियार।
हरवीज–(स० नपु०) पारद, पारा।
हरवोंग–(हिं० वि०) गवार, अक्खड़, मूर्ख।
हरमूली–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का धतूरा।
हरम–(अ० पु०) अन्तःपुर, ज़नानखाना, (स्त्री०) रखेली, सुरैतिन, बेगम, दासी।
हरमसरा–(फा० स्त्री०) जनानखाना।
हरमजदगी–(फा० स्त्री०) बदमाशी, शरारत।
हररूप–(स० पु०) शिव, महादेव।
हरवल–(हिं० स्त्री०) हलवाहों को बिना ब्याज के दिया हुआ धन।
हरवली–(हिं० स्त्री०) सेना की अध्यक्षता।
हरवल्लभ–(स० पु०) ताल के मुख्य साठ भेदों में से एक भेद।
हरवा–(हिं० पु०) देखो हार, (वि०) हलवा।
हरवाना–(हिं० क्रि०) शीघ्रता करना, जल्दी करना, हराना।
हरवाल–(हिं० पु०) मुरारी नाम की घास।
हरवाहन–(स० पु०) शिवकी सवारी, बैल।
हरवाहा–(हिं० पु०) हल चलाने वाला मजदूर।
हरवाही–(हिं० स्त्री०) हलवाहे का काम या मजदूरी।
हरशंकरी–(हिं० स्त्री०) पीपल और पाकड़ के एक साथ लगे हुए वृक्ष।
हरशेखरा–(स० स्त्री०) गंगाजी।
हरष–(हिं० पु०) देखो हर्ष, प्रसन्नता।
हरषना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना।
हरषाना–(हिं० क्रि०) प्रसन्न होना, हर्षित करना, प्रसन्न करना।
हरषित–(हिं० वि०) हर्षित, प्रसन्न।
हरसना–(हिं० क्रि०) हरखना, प्रसन्न होना
हरसिंगार–(हिं० पु०) पारिजात, पारजाता।
हरसूनु–(स० पु०) कार्तिकेय।
हरहा–(हिं० पु०) वृक, भेड़िया, हरहाई–वह नटखट गाय जो इधर उधर भागती फिरती है।
हरहार–(स० पु०) शिव का हार, सर्प, शेषनाग।
हरहूरा–(स० स्त्री०) हुरहुर, दाक्षा, दारू।
हरहोरवा–(हिं० पु०) एक प्रकार की चिड़िया।
हरॉस–(हिं० पु०) हरारत, मन्द ज्वर।
हरा–(हिं० वि०) हरित, घास या पत्ती के रंग का, सब्ज, प्रसन्न, प्रफुल्ल, सजीव, ताज़ा, जो सूखा या मरा न हो, फल फूल जो पका न हो (पु०) हरित वर्ण, चौपायों को खिलाने का ताज़ा चारा।
हरा–(स्त्री०) पार्वती।
हरावाग–(हिं० पु०) मृग तृष्णा, वृथा की आशा।
हरामरा–(हिं० वि०) प्रफुल्ल, ताजा।
हराई–(हिं० स्त्री०) हारने की स्थिति, हार।
हराद्रि–(स० पु०) कैलाश पर्वत।
हराना–(हिं० क्रि०) शत्रु को विफल मनोरथ करना, पराजित करना, परास्त करना, शत्रु को पीछे हटाना, उद्योग शिथिल करना, थकाना।
हरापन–(हिं० पु०) हरे होने का भाव, सब्जी।
हराम–(अ० वि०) नीति विरुद्ध, निषिद्ध, बुरा, (पु०) वह वस्तु या बात जिसका धर्मशास्त्र से निषेध हो, सुअर जिसका खाना मुसलमानी धर्म से निषिद्ध है, अधर्म, बेइमानी, व्यभिचार, हराम करना–कठिन कर देना, हरामहोना–मुश्किल होना, हरामका–अन्याय से प्राप्त।
हरामकार–(अ० पु०) बुरा काम करने वाला, व्यभिचारी।
हरामकारी–(फा० स्त्री०) परस्त्री गमन।
हरामखोर–(फा० पु०) अनुचित रूप से धन कमाने वाला, आलसी, मुफ्तखोर।
हरामजादा–(फा० पु०, दुष्ट, पाजी, दोगला।
हरामी–(अ० वि०) व्यभिचार से उत्पन्न, दुष्ट, पाजी।
हरारत–(अ० स्त्री०) गरमी, ताप, मन्दज्वर।

हरावरि, हरावल-(तु०पु०) सेना का अगला भाग, ठगों का सरदार जो आगे आगे चलता है।
हरावास-(स०पु०) शिव का आवास, कैलाश।
हरास-(फ़ा० पु०) आशका, खटका, भय, डर, दुःख, नाउम्मैदी।
हराहर-(हिं०पु०) देखो हलाहल।
हरि-(स० पु०) विष्णु, सिंह, शेर, तोता, सर्प, बास, मूँग, श्रीरामचन्द्र, अठारह वर्णों का एक छन्द, गरुड़ का एक पुत्र, शृगाल, सिंह राशि, हस, अग्नि, कोयल, मोर, बन्दर, मेढक, चन्द्रमा, घोड़ा, वायु, सूर्य, ब्रह्मा, शिव, यमराज, किरण, एक संवत्सर का नाम, (वि०) पीला, हरा, भूरा।
हरिअर-(हि०वि०) हरित, हरा, सब्ज़।
हरिअरी-(हि०स्त्री०) हरापन, हरियाली।
हरिआली-(हिं० स्त्री०) घास, पेड़ पौधों आदि का विस्तार।
हरिकथा-(स०स्त्री०) भगवान् या उनके अवतारों के चरित्र का वर्णन।
हरिकर्म-(स० पु०) यज्ञ।
हरिकीर्तन-(स० नपु०) भगवान् के अवतारों का स्तुतिगान, भगवद्भजन।
हरिकेश-(स०पु०) शिव, विष्णु।
हरिक्रान्त-(स०पु०) घोड़ा।
हरिक्रान्ता-(स०स्त्री०) काली अपराजिता
हरिक्षेत्र-(स०नपु०) हिमालय का एक प्राचीन पुण्यस्थान।
हरिगन्ध-(स०पु०) पीला चन्दन।
हरिगीतिका-(स० स्त्री०) अट्ठाईस मात्राओं का एक छन्द।
हरिचन्दन-(स०नपु०) एक प्रकार का चन्दन, पीला चन्दन, चाँदनी, कमल केशर।
हरिचर्म-(स० पु०) व्याघ्र चर्म।
हरिचाप-(स० पु०) इन्द्र धनुष।
हरिजटा-(स० स्त्री०) रावण की एक राक्षसी का नाम।
हरिजन-(स०पु०) ईश्वर का भक्त, अछूत।
हरिजात-(स० वि०) हरे रंग का।
हरिजीवक-(स०पु०) चने का पौधा।
हरिण-(स० पु०) मृग, कुरङ्ग, हरना, शिव, विष्णु, सूर्य, हस, भूरा रग (वि०) भूरे रग का।
हरिणक-(स०पुं०) हरिन का बच्चा।
हरिणकलङ्क-(स०पु०) चन्द्रमा।
हरिणनयना-(स० स्त्री०) हरिण के समान सुन्दर आँखों वाली स्त्री।
हरिणनर्तक-(स०पु०) किन्नर।
हरिणप्लुता-(स०स्त्री०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में अठारह अक्षर होते हैं
हरिणलक्षण-(स०पुं०) चन्द्रमा।
हरिणलाञ्छन-(स०पु०) चन्द्रमा।
हरिणहृदय-(स०वि०) भीरु, डरपोक।
हरिणाक्ष-(स० वि०) हरिण के समान आँखों वाला।
हरिणाक्षी-(स० वि०) हरिण के समान नेत्र वाली स्त्री।
हरिणी-(स०स्त्री०) मृगी, मादा हरिन, सुवर्ण की प्रतिमा दूर्वा, दूब, कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों से एक, सत्रह वर्ण के एक वर्णवृत्त का नाम, जर्द चमेली, मजीठ, विजया, भाग, तरुणी।
हरित्-(स०वि०) कपिश, भूरे या बदामी रग का, (पु०) सूर्य के घोडे का नाम, विष्णु, सूर्य सिंह, हल्दी, पन्ना, एक प्रकार का तृण।
हरित-(सं०वि०) भूरे या हरे रग का, बदामी, (पु०) सेना, हरियाली, शाक भाजी, कश्यप के एक पुत्र का नाम,
हरितनेत्र-(स०पु०) उल्लू।
हरितमणि-(स०पु०) मरकतमणि, पन्ना
हरिता-(स० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी, दूब, भूरे रग का शाक, भूरे रग का अगुर।
हरिताल-(स०नपु०) पीतवर्ण उपधातु।
हरितालिका-(स० स्त्री०) भाद्र पद शुक्ला तृतीया, स्त्रियों का तीज का व्रत
हरिताली-(स० स्त्री०) आकाश रेखा, तलवार का धार का भाग।
हरिताश्म-(स०नपु०) तुत्थ, तूतिया।
हरितोपल-(स० पु०) मरकतमणि, पन्ना।
हरिदश्व-(स०पु०) सूर्य, अर्क वृक्ष।
हरिदिन-(स०स्त्री०) श्रीहरि का दिन, एकादशी।
हरिदिश्-(स०स्त्री०) पूर्व दिशा।
हरिदेव-(स०पु०) श्रवण नक्षत्र।
हरिद्र-(स०पु०) पीला चन्दन।
हरिद्रक-(स०पु०) हल्दी का पौधा।
हरिद्रा-(स०स्त्री०) हल्दी, मङ्गल, सीसा धातु, वन, जगल, हरिद्राङ्ग-एक प्रकार का कबूतर।
हरिद्रभ-(स०पु०) पीला रग, कपूर।
हरिद्राराग-(स०पु०) साहित्य में पूर्व राग का एक भेद वह प्रेम जो हल्दी के रग के समान कच्चा हो।
हरिद्वार-(स०पु०) सहारन पुर ज़िले के अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ स्थान यहा पर पहाड़ों से निकल कर गगाजी समतल मैदान में आई हैं।
हरिधनुष-(स०पु०) इन्द्र धनुष।
हरिधाम-(स०पु०) विष्णु लोक, वैकुण्ठ।
हरिन-(हि०पु०) खुर और सींघ वाला एक प्रसिद्ध, चौपाया, हरिण, मृग।
हरिनक्षत्र-(स० पु०) श्रवण, नक्षत्र।
हरिनख-(स० पु०) सिंह या बाघ का नाखून।
हरिनग-(स० पु०) सर्प का मणि।
हरिनाकुश-(हि०पु०) देखो हिरण्य कश्यपु।
हरिनाच्छ-(हि०पु०) देखो हिरण्याक्ष।
हरिनाथ-(स० पु०) बन्दरो में श्रेष्ठ, हनुमान्।
हरिनाम-(स०नपु०) भगवान् का नाम।
हरिनी-(हि०स्त्री०) मादा हरिन, जूही का फूल।
हरिन्मणि-(स०पु०)मरकत मणि, पन्ना।
हरिपद-(स०पु०) विष्णु लोक वैकुण्ठ, एक छन्द जिसके पहले तथा तीसरे चरण में सोलह तथा दूसरे और चौथे चरणो में ग्यारह मात्रायें होती हैं।
हरिपर्ण-(स०नपु०) कृष्ण चन्दन।
हरिपुर-(स०पु०) विष्णु लोक, वैकुण्ठ।

हरिपैड़ी–(हिं०स्त्री०) हरिद्वार तीर्थ में गंगा का एक विशेष घाट।
हरिप्रबोध–(सं० पु०) कार्तिक शुक्ला एकादशी।
हरिप्रिय–(सं०पु०) कदम्ब वृक्ष, कनेर, काला धान।
हरिप्रिया–(सं० स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशी तिथि, मधु, लाल चन्दन, पृथ्वी, लाल चन्दन, एक मात्रिक छन्द का नाम।
हरिप्रीता–(सं०स्त्री०) ज्योतिष में एक मुहूर्त का नाम।
हरिबीज–(सं०नपु०) हरताल।
हरिबोधिनी–(सं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला एकादशी।
हरिभक्त–(सं० पु०) विष्णु का भक्त, ईश्वर का प्रेमी।
हरिभक्ति–(सं० स्त्री०) ईश्वर में प्रेम।
हरिभुज–(सं० पु०) सर्प, साँप।
हरिमन्थ–(सं०पुं०) गनियारी का वृक्ष जिसकी लकड़ी को रगड़ कर आग निकाली जाती है।
हरि मन्दिर–(सं० नपु०) विष्णु मन्दिर।
हरिमेध–(सं० पु०) अश्वमेध यज्ञ।
हरियर–(हिं०वि०) हरे रंग का, हरा।
हरियाई–(हिं०स्त्री०) हरियाली।
हरियान–(सं०पु०) गरुड़।
हरियाना–(हिं०क्रि०) देखो हरिआना, हरा होना।
हरियाली–(हिं० स्त्री०) हरे हरे पेड़ पौधों का समूह या विस्तार, हरेपन का विस्तार, हरा चारा जो चौपायों को खिलाया जाता है, हरियाली सूझना–सर्वत्र आनन्द ही आनन्द देख पड़ना।
हरियालीतीज–(हिं०स्त्री०)सावन बदी तीज
हरियावँ–(हिं०पु०) फसल की वह बँटाई जिसमें सात भाग जमींदार और नव भाग काश्तकार लेता है।
हरियोजन–(सं० नपुं०) रथ में घोड़ा जोड़ना।
हरियोनि–(सं०पु०) ब्रह्मा।
हरिलीला–(सं० स्त्री०) एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
हरिलोक–(सं०पु०) विष्णुलोक, वैकुण्ठ
हरिलोचन–(सं०पु०) वह ग्रन्थ जिसमें श्रीकृष्ण और उनके वंश का विस्तृत वर्णन लिखा है।
हरि वल्लभ–(सं०पु०) मुचकुन्द का वृक्ष।
हरिवल्लभा–(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, तुलसी,
हरिवास–(सं०पु०)अश्वत्थ, पीपल का वृक्ष
हरिवासर–(सं०नपु०)रविवार, एकादशी और द्वादशी ये दोनों तिथियाँ।
हरिवाहन–(सं०पु०) गरुड़,इन्द्र,सूर्य।
हरिवीज–(सं०नपु०) हरिताल, हरताल।
हरिव्रत–(सं० नपु०) भगवान् श्रीहरि के निमित्त किया जाने वाला व्रत।
हरि शयनी–(सं०स्त्री०) आषाढ़ शुक्ला एकादशी।
हरिशर–(सं०पु०) शिव, महादेव।
हरिश्चन्द्र–(सं० पुं०) त्रेता युग के अट्ठाइसवें राजा जो त्रिशङ्कु के पुत्र थे, ये बड़े सत्यव्रत और दानी थे।
हरिस–(हिं० स्त्री०) हल की वह लम्बी लकड़ी जिसके एक सिरे पर फाल वाली लकड़ी जड़ी होती है तथा दूसरे सिरे पर जुआ लगाया जाता है, ईषा।
हरिसङ्कीर्तन–(सं०नपु०) श्रीहरि का नामोच्चारण।
हरिसिंगार–(हिं०पु०) देखो हरसिंगार।
हरिसुत–(सं०पु०) प्रद्युम्न, अर्जुन।
हरिहय–(सं० पु०) इन्द्र, गणेश, कार्तिकेय सूर्य।
हरिहरक्षेत्र–(सं०नपु०) विहार प्रान्त का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।
हरिहाई–(हिं०स्त्री०) देखो हरहाई।
हरिहित–(सं०पु०) इन्द्रगोप, बीरबहूटी।
हरी–(सं०स्त्री०) चौदह वर्णों का एक वृत्त, इसको आनन्द भी कहते हैं।
हरीकेन–(अं० पु०) एक प्रकार की लालटेन जो हवा के झोंक से नहीं बुझती
हरीचाह–(हिं०पु०) एक प्रकार की घास जिसकी जड़ में नीबू के समान सुगन्ध होती है।
हरीतकी–(सं०स्त्री०) हड़ हर्रे।
हरीफ–(अं०पु०) शत्रु, दुश्मन, विरोधी।
हरीरा–(अं० पु०) दूध में सूजी, चीनी, इलायची आदि डाल कर पकाया हुआ एक पेय पदार्थ जो विशेष कर प्रसूता स्त्री को पिलाया जाता है।
हरीश–(सं०पु०) बन्दरों के राजा सुग्रीव।
हरीस–(हिं०स्त्री०) देखो हरिस।
हरुअ हरुआ–(हिं०वि०) देखो हलका।
हरुआई–(हिं०स्त्री०) हलकापन।
हरुआना–(हिं०क्रि०) हलका होना, जल्दी करना।
हरुए–(हिं०क्रि०वि०) धीरे से, चुपचाप।
हरूफ–(अं०पु०) अक्षर, हरफ।
हरे–(सं०पु०) 'हरि' शब्द का सम्बोधन का रूप, जो कठोर या तीव्र न हो, हलका,(क्रि०वि०) धीरे से।
हरेणु–(सं०स्त्री०)रेणुका नामक गन्ध द्रव्य
हरेवा–(हिं०पु०)हरे रंग की एक चिड़िया
हरैना–(हिं०पु०) हल में लगी हुई वह मोटी गावदुम लकड़ी जिसमें लोहे की फाल ठोंकी रहती है।
हरैया–(हिं०वि०) हरने वाला।
हरोल–(हिं०पु०) देखो हरावल।
हर्ज–(अं०पु०)कार्य में बाधा, हानि,रुकावट
हर्तव्य–(सं०वि०) हरण करने योग्य।
हर्ता–(हिं०पु०)नाश करने वाला, संहारक
हर्तार–(सं०पु०) देखो हर्ता।
हर्फ–(हिं०पु०) देखो हरूफ, अक्षर।
हर्वा–(हिं०पु०) देखो हरवा।
हर्मुट–(सं०पु०) सूर्य, कछुआ।
हर्म्य–(सं०नपु०) राजभवन, महल,हवेली
हर्म्य पृष्ठ–(सं०पु०)घर की छत या पाटन
हर्यश्व–(सं० पु०),धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
हर्यश्वचाप–(सं०पु०) इन्द्र धनुष।
हर्रे–(हिं०स्त्री०) हड़, हर्रे।
हर्रा–(हिं०पु०) बड़ी जाति की हड़।
हर्रे–हिं०स्त्री०) देखो हड़।
हर्रैया–(हिं० स्त्री०) हाथ में पहरने का एक प्रकार का गहना।
हर्ष–(सं०पु०) आनन्द, प्रफुल्लता, खुशी,

कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
हर्षक-(सं०वि०) आनन्द देने वाला।
हर्षकर-(सं०वि०) खुश करने वाला।
हर्षण-(सं० नपु०) आनन्द से रोंगटे खडे होना, प्रफुल्लित करना, कामदेव के पाच बाणों में से एक, सत्ताईस योगों में से चौदहवा योग, अस्त्र का सहार
हर्षणी-(सं० स्त्री०) केवाँच, भौंग।
हर्षधारिका-(सं०स्त्री०) चौदह प्रकार के तालों में से एक।
हर्षनाद-(सं० पु०) आनन्द ध्वनि, आनन्द सूचक शब्द।
हर्षवर्धन-(सं०पु०) भारत के एक प्रसिद्ध वैश्य सम्राट् का नाम।
हर्षाना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना, आनन्दित करना, प्रफुल्ल होना।
हर्षित-(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न, खुश
हर्षुल-(सं०पु०) एक बुद्ध का नाम, (वि०) हर्षित करने वाला।
हल्-(सं० पु०) शुद्ध व्यञ्जन जिसमें स्वर न मिला हो।
हल-(सं० नपु०) जमीन जोतने का यन्त्र, सीर, लाङ्गल, हल जोतना-खेत में हल चलना, खेती करना, (सं०पु०) एक अस्त्र का नाम, पैर का चिह्न।
हल-(अ० पु०) गणित करना, हिसाब लगाना, किसी कठिन बात का निर्णय।
हलक़-(अ०पु०) गले की नली, कण्ठ।
हलक़ के नीचे उतरना-कण्ठ के नीचे उतरना, पेट में जाना, चित्त में स्थिर होना।
हलककुद्-(सं० पु०) देखो हरैना।
हलकम्प-(हिं० पु०) बहुत बड़ा हल्ला या उथल पुथल, चारो ओर फैली हुई घबड़ाहट।
हलकई-(हिं०स्त्री०) हलकापन, ओछापन, तुच्छता।
हलकना-(हिं० क्रि०) हिलना डोलना, लहराना।
हलका-(हिं० वि०) जो तौल में भारी न हो, जो गाढ़ा न हो, पतला, जो गहरा न हो, सहज, जो कठिन न हो, ओछा, थोड़ा, जो चटकीला न हो, प्रफुल्ल, ताज़ा, जो बहुत उपजाऊ न हो, महीन जो प्रचण्ड न हो, खाली, छूछा, घटिया, मन्द, जिसमें गभीरता न हो, हलका करना-ओछा सिद्ध करना, अपमानित करना, हलके हलके-धीरे धीरे (हिं०पु०) तरग, लहर।
हलक़ा-(अ० पु०) परिधि, घेरा, गोलाई, मण्डल, वृत्त, हाथियों का झुंड, मण्डली, समुदाय, कई गावों या कस्बों का समूह, लोहे का पट्टा जो पहिये के ऊपर चढा रहता है, घोडे के गले का पट्टा।
हलकाई-(हिं०स्त्री०) हलकापन, ओछापन
हलकान-(हिं० वि०) देखो हैरान।
हलकाना-(हिं० क्रि०) हिलोरा देना, हिलाना, बोझ कम करना।
हलकापन-(हिं० पु०) हलके होने का भाव, तुच्छ बुद्धि, ओछापन, अप्रतिष्ठा, नीचता।
हलकारा-(हिं०पु०) देखो हरकारा।
हलकारी-(हिं० स्त्री०) कपडे पर रग पक्का करने के लिये पहिले उसमें फिटकरी आदि का पुट देना।
हलकोरा-(हिं० पु०) तरग, पानी की लहर।
हलग्राही-(सं०पु०) हल का मूठ पकड़ कर खेत जोतने वाला।
हलचल-(हिं० स्त्री०) अधीरता, व्यग्रता, घबड़ाहट, शोरगुल, उपद्रव, खलबली, हिलना डोलना, कम्प (वि०) डगमगाता हुआ, डोलता हुआ।
हलद्दी-(सं० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।
हलजीवी-(सं०वि०) हल चलाकर खेती करने वाला किसान।
हलजुता-(हिं० स्त्री०) मामूली किसान, गँवार।
हलड़ा-(हिं०पु०) देखो हलेरा।
हलदण्ड-(सं०पु०) हल का लंबा डंडा, हरिस।
हलदहात-(हिं०स्त्री०) विवाह के तीन या पाँच दिन पहले वर और कन्या के शरीर में तेल और हल्दी लगाने की रस्म।
हलदी-(हिं० स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसकी ग्रन्थिमय जड़ मसालों में व्यवहार की जाती है, हलदी चढाना-वर और कन्या के शरीर में हल्दी और तेल पोतना, हलदी लगना-विवाह होना, हलदी लगे न फिटकरी रंग आवे चोखा-बिना परिश्रम के कार्य की सिद्धि होना।
हलदू-(हिं० पु०) एक बहुत ऊचा वृक्ष जिसकी पीली लकड़ी बहुत पुष्ट होती है।
हलधर-(सं०पु०) हल धारण करने वाले बलरामजी।
हलन्त-(सं० पु०) वह शुद्ध व्यञ्जन जिसके उच्चारण में स्वर न मिला हो।
हलपाणि-(सं०पु०) बलराम जी।
हलना-(हिं० क्रि०) हिलना डोलना, घुसना।
हलफ़-(अ०पु०) ईश्वर को साक्षी देकर कही हुई बात, शपथ, कसम, हलफ़ उठाना-कसम खाना।
हलफ़नामा-(फा० पु०) वह कागज़ जिसपर शपथ पूर्वक कोई बात लिखी गई हो।
हलफा-(हिं० पु०) हिलोरा, तरग, लहर।
हलब-(हिं० पु०) फ़ारस की ओर का एक देश जहा का काँच प्रसिद्ध था।
हलबल-(हिं०पु०) देखो हलचल।
हलबी, हलब्बी-(हिं०वि०) हलब देश का (शीशा), बढिया (शीशा)।
हलभली-(हिं० स्त्री०) देखो हड़बड़ी, शीघ्रता।
हलभृत्-(सं०पु०) बलदेव जी।
हलभूत-(सं०पु०) कृषिकर्म, किसानी।
हलमरिया-(हिं०स्त्री०) जहाज़ का पेंदा।
हलमुख-(सं० पु०) हल का फार।
हलमुखी-(सं० स्त्री०) एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण नव अक्षर होते हैं

हलराना-(हिं० क्रि०) हाथ पर लेकर इधर उधर हिलाना डुलाना, प्यार से हाथ पर झुलाना।

हलवत-(हिं०स्त्री०) वर्ष में पहिले,पहल खेत में हल ले जाने की रीति।

हलवा-(अ० पु०) मैदा, सूजी आदि को घीमें भूनकर तथा चाशनी में पकाकर बना हुआ मिष्टान्न, मोहन भोग, कोई गीली मुलायम वस्तु।

हलवाइन-(हिं०स्त्री०) हलवाई की स्त्री।

हलवाई-(हिं०पु०) मिठाई बनाने और बेंचने वाला।

हलवाह, हलवाहा-(हिं०पु०) हल चलाने का काम करने वाला मज़दूर या नौकर।

हलहल-(हिं० पु०) किसी वस्तु में भरे हुए जल को हिलाने पर उत्पन्न शब्द।

हलहलाना-(हिं०क्रि०) कँपाना, हिलाना डुलाना।

हला-(स०स्त्री०) सखी, पृथ्वी, जल।

हलाक-(अ०वि०) वध किया हुआ, मारा हुआ।

हलाकत-(अ०स्त्री०) हत्या, वध।

हलाकान-(हिं०वि०) हैरान,परेशान,व्यग्र

हलाकानी-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता,परेशानी।

हलाकी-(अ०वि०) घातक,मार डालनेवाला

हलाकू-(हिं०वि०) देखो हलाकी।

हलाभला-(हिं०पु०) निर्णय, निबटारा।

हलाभियोग-(स०पु०) हलवत, हरौती।

हलायुध-(स०पु०) बलदेव, बलराम।

हलाल-(हिं०वि०) जो शरअ या मुसलमानी धर्म पुस्तक के अनुकूल हो, वह पशु जिसकी मांस खाना मुसलमानी धर्म के अनुसार निषिद्ध न हो।

हलालखोर-(फा०पु०) हलाल की कमाई खाने वाला, मेहनत करके जीविका चलाने वाला, मेहतर, भंगी।

हलालकरना-(हिं० क्रि०) पशु को धीरे धीरे गला घोंटकर मारना।

हलालखोरी-(फ़ा० स्त्री०) हलालखोर का काम।

हलाहल-(स०पु०)वह प्रचण्ड विष जो समुद्र-मन्थन के समय निकलथा, इसको शिवजी ने धारण किया था, बहुत तीव्र विष।

हलिन्-(स० पु०) बलदेव, कृषक, किसान।

हलीम-(हिं०पु०) मटर के डठल जो चौपायों को काटकर खिलाये जाते हैं (अ०वि०) शान्त, सीधा (अ०पु०) एक प्रकार का खाना जो मुहर्रम के त्योहार पर मुसलमान लोग बनाते हैं।

हलीशा-(स० स्त्री०) नाव चलाने का छोटा डंडा।

हलुक-(हिं०वि०) देखो हलका।

हलुवा-(अ० पु०) देखो हलवा।

हलूक-(हिं०पु०) वमय, वान्ति, कय।

हलेरा-(हिं०पु०) देखो हिलोरा।

हलेरना-(हिं०क्रि०) जलमें हाथ डालकर हिलाना डुलाना, मथना, अन्नको फटकना, अधिक मात्रा में किसी पदार्थ को हाथों से लेना।

हलोरा-(हिं० पु०) देखो हिलोरा।

हल्का-(हिं०वि०) देखो हलका।

हल्दी-(हिं० स्त्री०) देखो हलदी।

हल्दहात-(हिं० स्त्री०) देखो हल दहात।

हल्य-(स० वि०) हल सबधी, हलसे जोता हुआ।

हल्या-(स० स्त्री०) हलों का समुदाय।

हल्लक-(स०नपु०) लाल कमल।

हल्लन-(स० पु०) करवट बदलना, इधर उधर डोलना।

हल्ला-(हिं० पु०) कोलाहल, चिल्लाहट, शोरगुल, हाक, लड़ाई के समय की ललकार, धावा।

हल्लीष-(स० नपु०) मण्डल बांधकर नाचने की एक विधि (पु०) नाट्य शास्त्र में अठारह उपरूपकों में से एक जिसमें एकही अङ्क होता है और नृत्य की प्रधानता रहती है।

हवन-(स०नपु०) होम, किसी देवता के निमित्त अग्नि में घृत, तिल, जव आदि डालने की क्रिया, अग्नि, अग्निकुण्ड, हवन करने का चम्मच।

हवनी-(स० स्त्री०) होमकुण्ड।

हवनीय-(स०वि०) हवन के योग्य (पु०) वह पदार्थ जो हवन करने में अग्नि में डाला जावे।

हवलदार-(फ़ा०पु०) मुसलमानी राज्य काल में राजकर वसूल करने वाला अफसर, फ़ौज का वह छोटा अफसर जिसके मातहत थोडे से सिपाही रहते हैं।

हवस-(अ० स्त्री०) कामना, लालसा, चाह, तृष्णा।

हवा-(अ० स्त्री०) पवन, वायु, भूत प्रेत, व्यापारियों की धाक, विश्वास, साख, प्रसिद्धि, ख्याति, सनक, धुन, **हवा उड़ना**-समाचार फैलना, **हवा करना**-पखा डुलाना, **हवाके घोड़े पर सवार होना**-उतावला होना, **हवा खाना**-शुद्ध वायु सेवन करने के लिये शहर के बाहर टहलने जाना, किसी कार्य में सफल न होना, **हवा पीकर रहना**-भोजन न करना, **हवा बताना**-टालना, **हवा बांधना**-गप हाकना, शेखी हाँकना, **हवा फिरना**-स्थितिका परिवर्तन होना, **हवा बिगड़ना**-सक्रामक रोगों का फैलना, **हवासे लड़ना**-बिना कारण किसी से झगड़ना, **हवा से बातें करना**-तेज़ चलना, व्यर्थ की बकवाद करना, **हवा न लगने देना**-प्रभाव न पड़ने देना, **किसी की हवा लगना**-किसी के संग सोहबत का प्रभाव न पड़ना; **हवा हो जाना**-जल्दी से भाग जाना।

हवाई-(अ० वि०) वायु सबंधी, हवा का, हवा में चलने वाला, जिसमें सत्य का आधार न हो, बेबुनियाद (स्त्री०) एक प्रकार की आतिशबाज़ी, आसमानी बान, **हवाई उड़ना**-मुख का रंग फीका पड़ जाना, **हवाई अड्डा**-वह स्थान जहाँ से हवाई जहाज़ उड़ते हैं तथा दूर से आकर जहाँ पर उतरते हैं।

हवागीर-(फ़ा० पु०) आतिशबाज़ी बनाने वाला।

हवाचक्की-(हिं०स्त्री०) आटा पीसने की हवा के ज़ोर से चलने वाली चक्की।

हवादार-(फ़ा० वि०) जिसमें वायु के

आवागमन के लिये खिड़कियाँ दरवाज़े आदि लगे हों, (पु०) बादशाही की सवारी का एक प्रकार का हल्का तख्त।
हवान-(अ० पु०) छोटी तोप।
हवाना-(हि०पुं०) अमेरिका के हवाना नामक स्थान की तमाखू।
हवाल-(अ० पु०) स्थिति, दशा, हाल, परिणाम, समाचार।
हवालदार-(फ़ा० पु०) देखो हवलदार।
हवाला-(अ० पु०) किसी बात की पुष्टि के लिये किसी के वचन या घटना का संकेत, प्रमाण, उदाहरण, दृष्टान्त, अधिकार, सुपुर्दगी।
हवालात-(अ० स्त्री०) अभियुक्त को पहरे में रक्खे जाने की क्रिया या भाव, नज़रबन्दी, वह मकान जिसमें मुकदमे के फ़ैसले तक अभियुक्त रक्खे जाते हैं।
हवास-(अ० पु०) इन्द्रियाँ, चेतना, संज्ञा, होश, हवास गुम होना- विह्वल होना।
हवि-(स० पु०) वह द्रव्य जिसकी आहुति अग्नि में दी जावे।
हविर्त्री-(स०स्त्री०) अग्निकुण्ड।
हविर्गृह-(स० नपु०) हवन करने का मकान।
हविर्दान-(स० नपु०) यज्ञ में घृत आदि की आहुति।
हविर्भुज्-(स०त्रि०) अग्नि, देवता।
हविर्भू-(स० स्त्री०) हवन की भूमि।
हविर्यज्ञ-(सं० पु०) हवि द्वारा किया हुआ यज्ञ।
हविर्हुति-(स० स्त्री०) घृत की आहुति।
हविष्कृत-(स० त्रि०) यज्ञ।
हविष्पति-(स० पु०) यजमान।
हविष्मत्-(स० त्रि०) यज्ञ करने वाला।
हविष्य-(स० वि०) हवन करने योग्य, जिसकी आहुति दी जाने वाली हो।
हविष्यान्न-(स० नपु०) वह अन्न या आहार जो यज्ञ के समय प्रयोग किया जाय, खाने की पवित्र वस्तु।
हवीत-(हि०पु०) वह गड़ारी जिसमें लंगर की रस्सी लपेटी जाती है।
हवेली-(अ०स्त्री०) हर्म्य, प्रसाद, पक्का बड़ा मकान, पत्नी, जोरू।
हव्य-(स० नपु०) वह वस्तु जिसकी आहुति किसी देवता के निमित्त अग्नि में दी जाय, हव्यपाक-(स०पु०) चरु।
हव्यभुज्-(स० पु०) अग्नि।
हव्ययोनि-(स०पु०) देवता।
हव्यवाह्-(स०पु०) अग्नि, पीपल का वृक्ष
हव्याश, हव्याशन-(सं०पु०) अग्नि।
हशमत-(अ०स्त्री०)गौरव, बड़ाई, ऐश्वर्य।
हसद्-(अ०पु०) ईर्ष्या, डाह।
हसन-(स० नपु०) परिहास, विनोद, दिल्लगी।
हसन्तिका-(स०स्त्री०) अंगीठी।
हसन्ती-(सं० स्त्री०) अग्नि रखने का बरतन।
हसब-(अ० अव्य०) अनुसार, मुताबिक।
हसरत-(अ०स्त्री०) रंज, अफसोस।
हसावर-(हिं० पुं०) खाकी रंग की एक बड़ी चिड़िया।
हसिक-(स० वि०) हँसी दिल्लगी करने वाला।
हसिका-(स० स्त्री०) हँसी ठट्ठा।
हसित-(स०नपुं०) उपहास, हँसी, ठट्ठा, कामदेव का धनुष (वि०) विकसित, खिला हुआ, जो हँसा गया हो।
हसीन-(अ०वि०) सुन्दर, खूबसूरत।
हस्त-(स० पु०) हाथ, हाथी का सूंड, चौबिस अंगुल की नाप, संगीत या नृत्य में हाथ हिलाकर भाव दिखलाना, हाथ की लिखावट, वसुदेव के एक पुत्र का नाम, गुच्छा, समूह, एक नक्षत्र जिसमें पांच तारे होते हैं।
हस्तक-(स०पु०) संगीत का एक ताल, ताली बजाना।
हस्तकार्य-(स० पु०) हाथ का काम, दस्तकारी।
हस्त कोहली-(स० स्त्री०) वर और कन्या की कलाई में मंगल सूत्र बाँधने की क्रिया।
हस्तकौशल-(स० पु०) काम करने में हाथ की सफाई।
हस्तक्रिया-(स० स्त्री०) दस्तकारी, हाथ से लिङ्गेन्द्रिय का संचालन।
हस्तक्षेप-(स० वि०) किसी काम में हाथ डालना।
हस्तगत (सं० पु०) हाथ में आया हुआ, प्राप्त।
हस्तग्रह-(स०पु०) हाथ पकड़ना, विवाह।
हस्तग्राह-(स०पु०) हाथ पकड़ने वाला, विवाह।
हस्तग्राहक-(स०त्रि०) हाथ पकड़ने वाला।
हस्तचापल्य-(स०पु०) हाथकी सफाई।
हस्ततल-(स० पुं०) हथेली।
हस्तताल-(स०पु०) हाथ से ताल देना।
हस्तत्राण-(स० नपु०) अस्त्रों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहरने का दस्ताना।
हस्तधारण-(स०नपु०) हाथ पकड़ना, हाथ का सहारा देना।
हस्तपृष्ठ-(स० पुं०) हथेली के पीछे का भाग।
हस्तमणि-(सं० पु०) हाथ में पहरने का रत्न।
हस्तमैथुन-(स० पु०) हाथ से लिंगेन्द्रिय का संचालन, सरका कूटना।
हस्तयोग-(स०पु०) हाथ जोड़ना।
हस्तरेखा-(सं० स्त्री०) हथेली में पड़ी हुई लकीरें।
हस्तलाघव-(स० पुं०) हाथ की सफाई।
हस्तलिखित-(स० वि०) हाथ का लिखा हुआ।
हस्तलिपि-(स० स्त्री०) हाथ की लिखावट।
हस्तवारण-(सं० नपु०) आघात को हाथ पर रोकना।
हस्तविन्यास-(स०पु०) कर स्थापन।
हस्तसिद्धि-(स० स्त्री०) वेतन, तनखाह।
हस्तसूत्र-(स० नपु०) हाथ में बांधने का मंगल सूत्र।
हस्ता-(हिं० पु०) हथिया नक्षत्र।
हस्तामलक-(स०नपु०) हाथ में लिया हुआ आंवला, वह वस्तु या विषय जो

अच्छी तरह समझ में आ गया हो।
हस्तालिङ्गन–(सं०नपु०), हाथ मिलाना।
हस्ति–(सं० पु०) गज, हाथी।
हस्तिक–(सं०नपु०) हाथियों का समूह।
हस्तिकक्ष–(सं०पु०) व्याघ्र, शेर।
हस्तिकन्द–(सं० पु०) एक पौधा जिसका कन्द खाया जाता है, हाथी कन्द।
हस्तिकर्ण–(सं०पु०) पलास का वृक्ष।
हस्तिकर्णिका–(सं०स्त्री०) हठ योग का एक आसन।
हस्तिका–(सं० स्त्री०) एक प्रकार का प्राचीन तार का बाजा।
हस्तिकोल–(सं०पु०) बड़ा बेर।
हस्तिघ्न–(सं० वि०) हाथी को मारने वाला।
हस्तिदन्त–(सं०नपु०) हाथी दांत, मूली।
हस्तिनापुर–(सं० नपु०) कौरवों की राजधानी का नाम।
हस्तिनासा–(सं०स्त्री०) हाथी का सूंड़।
हस्तिनी–(सं०स्त्री०) मादा हाथी, हथिनी, काम शास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक, एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।
हस्तिप–(सं०पु०) महावत।
हस्तिपद–(सं० नपु०) हाथी के पाव का चिह्न।
हस्तिपर्णी–(सं० स्त्री०) ककड़ी।
हस्तिपिप्पली–गजपीपल।
हस्तिमद–(सं० पु०) मद जल जो हाथी के गण्ड से निकलता है।
हस्तिमल्ल–(सं०पु०) गणेश, ऐरावत।
हस्तिवाह–(सं० पु०) महावत।
हस्तिविषाण–(सं० पु०) केले का वृक्ष
हस्तिशाला–(सं०स्त्री०) फीलखाना।
हस्तिसूत्र–(सं० नपु०) हाथी चलाने की विद्या।
हस्ती–(फा० पु०) अस्तित्व, होने का भाव।
हस्ते–(सं०अव्य०) हाथ से, मारफ़त।
हस्तोदक–(सं० नपु०) हस्त गत जल।
हहर–(हिं० स्त्री०) कंपकपी, थरथराहट, डर।
हहरना–(हिं० क्रि०) कापना, थरथराना थर्राना, ठक रह जाना, दहलना।
हहराना–(हिं०क्रि०) कपाना, थरथराना, डरना, भयभीत होना।
हहलना, हहलाना–(हिं०) देखो हहरना, हहराना।
हहा–(हिं०स्त्री०) हँसने का शब्द, ठट्ठा, गिड़गिड़ाने का शब्द, विनती।
हाँ–(हिं०अव्य०) स्वीकृति अथवा सम्मति सूचक शब्द, हाँ करना–स्वीकार कर लेना, हाँजी हाँजी करना–खुशामद करना।
हाँक–(हिं० स्त्री०) जोर की पुकार का शब्द, लड़ाई में बाधा करती समय समय की चिल्लाहट, ललकार, दुहाई, बढ़ावे का शब्द।
हाँकना–(हिं०क्रि०) चिल्लाकर पुकारना, ललकारना घोड़े बैल ऊंट आदि से गाड़ी चलवाना, गाड़ी में जुते हुए जानवरों को आगे बढ़ाना, चौपायों को किसी स्थान से हटाना, पखे से हवा करना, पखा झलना।
हाँगर–(हिं०पु०) एक प्रकार की बड़ी मछली।
हाँगा–(हिं०पु०) शरीर का बल, ताकत।
हाँगी–(हिं०स्त्री०) स्वीकृति, हामी।
हाँड़ना–(हिं० वि०) व्यर्थ इधर उधर घूमने वाला, आवारा।
हाँडी–(हिं०स्त्री०) बटलोही के आकार का मिट्टी का बरतन, इस आकार का मोमबत्ती जलाने का काँच का बरतन, हाँडी पकना–कोई षड्यन्त्र रचा जाना।
हाँता–(हिं०वि०) हटाया हुआ, छोड़ा हुआ
हाँपना, हाँफना–(हिं० क्रि०) दौड़ने, कठिन परिश्रम करने या रोग के कारण सास का जल्दी जल्दी चलना।
हाँफा–(हिं० पु०) हाँफने की क्रिया या भाव।
हाँसना–(हिं०क्रि०) हँसना।
हाँसला–(हिं० पु०) एक प्रकार का घोड़ा, कुम्मैत, हिनाई।
हाँसिल–(हिं० स्त्री०) रस्सा लपेटने की गड़ारी।
हाँसी–(हिं०स्त्री०) हँसने की क्रिया या भाव, हँसी मजाक, उपहास, निन्दा।
हाँहाँ–(हिं० अव्य०) वह शब्द जिसको बोल कर किसी काम करने से तुरत रोकते हैं।
हा–(सं०अव्य०) शोक या दुःख सूचक शब्द, (पु०) वध करने वाला, मारने वाला।
हाइ–(हिं०अव्य०) हाय।
हाइफन्–(अं० पुं०) विराम चिह्न (-) जो दो शब्दों के बीच में लगाया जाता है।
हाई–(हिं०स्त्री०) अवस्था, दशा, ढग, तरीका, (अं०वि०) ऊंचा, बड़ा।
हाईकोर्ट्–(अं०पु०) किसी प्रान्त का सबसे बड़ा न्यायालय।
हाईस्कूल–(अं०पु०) अंग्रेज़ी पढ़ाने की बड़ी पाठशाला।
हाउस्–(अं० पु०) घर, मकान, कोठी, दूकान, सभा, मण्डली।
हाऊ–(हिं० पु०) बच्चों को डराने का शब्द, हौवा, भकाऊ।
हाकल–(सं०पु०) एकप्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में पन्द्रह मात्रायें होती हैं तथा अन्त में एक गुरु वर्ण होता है।
हाकलिका–(सं० स्त्री०) एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पद्रह अक्षर होते हैं।
हाकली–(सं० स्त्री०) दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त।
हाकिम–(अ० पु०) हुकूमत करने वाला, शासक, प्रधान अधिकारी, बड़ा अफसर।
हाकिमी–(अ० स्त्री०) हाकिम संबंधी, हुकूमत, शासन।
हाकी–(अं० पु०) एक खेल, जो टेढी लकड़ी और गेंद से खेला जाता है।
हाजत–(अ०स्त्री०) आवश्यकता, ज़रूरत,

पहरे में रक्खा जाना, हवालात, हिरासत।

हाजमा-(अ० पु०) पाचन क्रिया, पाचन शक्ति।

हाज़िम-(अ०वि०) हज़म करने वाला, भोजन को पचाने वाला।

हाज़िर-(अ० वि०) सामने आया हुआ, उपस्थित, प्रस्तुत, मौजूद, तैयार।

हाज़िर जवाब-(अ० वि०) बात का जवाब तुरत देने वाला, प्रत्युत्पन्नमति।

हाज़िरजवाबी-(अ० स्त्री०) बात का जवाब तुरत देने की निपुणता।

हाज़िरबाश-(फ़ा० वि०) सर्वदा सेवा में रहने वाला, लोगों से बराबर मिलने जुलने वाला।

हाज़िरबाशी-(फ़ा० स्त्री०) सेवा में निरन्तर उपस्थिति।

हाज़िराई-(अ०पु०) जादूगर, ओझा।

हाज़िरात-(अ० स्त्री०) वन्दना पूजा आदि के द्वारा किसीके ऊपर कोई आत्मा बुलाना जिससे वह झूमने लगता है और अनेक प्रकार की बातें बतलाता है

हाजी-(अ०पु०) तीर्थ यात्रा के लिये मक्के मदीने जाने वाला, वह जो हज करने आया हो।

हाट-(हिं०स्त्री०) दूकान, बाज़ार, बाज़ार लगने का दिन, हाट करना-दूकान लगाना, बाज़ार से सौदा खरीदना।

हाटक-(स०पु०) सुवर्ण, सोना, धतूरा।

हाटकपुर-(स०पु०) लका।

हाटकीय-(स०वि०) सोने का बना हुआ

हाटकलोचन-(सं० पु०) हिरण्याक्ष।

हाड़-(हि०पु०)अस्थि, हड्डी,कुलीनता।

हाड़ा-(हि०पु०)लाल रग की बड़ी भिड़

हाड़ी-(हि० पु०) एक प्रकार का बगला, कौवा।

हाता-(अ०पु०) घेरा हुआ स्थान, बाड़ा, रोक, सीमा (वि०) अलग किया हुआ, हटाया हुआ, बरबाद, वध करने वाला

हातिम-(अ०पु०) कुशल, निपुण, चतुर, उस्ताद, अत्यन्त दानी मनुष्य।

हाथ-(हि०पु०) मनुष्य, बन्दर आदि प्राणियों का किसी पदार्थ को पकड़ने या छूने का अवयव, हस्त, बाहु से लेकर पजे तक का अग, चौबीस अगुल की नाप, ताश जुवे आदि के खेल में एक आदमी के खेलने की बारी, किसी हथियार की मुठिया या दस्ता, किसी कार्यालय में काम करने वाले मनुष्य, हाथ आना-प्राप्त होना, हाथ उठाना-सलाम करना, नमस्कार करना, किसी पर हाथ उठाना-किसीको मारने के लिये हाथ तानना, हाथ ऊँचा होना-दान देने में उद्यत होना, हाथ कट जाना-किसी योग्य न रह जाना, हाथ की मैल-कोई तुच्छ वस्तु, हाथ खाली होना-पास में धन न रह जाना, हाथ खुजलाना-मारने पीटने की इच्छा होना, कोई वस्तु पाने के लक्षण देख पड़ना, हाथ खींच लेना-किसी कार्य से अलग हो जाना, हाथ चलाना-मारना पीटना, हाथ चूमना-किसीके हस्त-कौशल पर प्रसन्नता दिखलाना, हाथ छोड़ना-प्रहार करना, हाथ जोड़ना-प्रणाम करना, विनती करना, दूर से हाथ जोड़ना-ससर्ग से दूर रहना, हाथ डालना-कोई काम शुरू करना, हाथ तंग होना-पास में धन की कमी होना, हाथ धोना-खो देना, हाथ धोकर पीछे पड़ना-जी जान से सलग्न होना, हाथ पकड़ना-सहारा देना, विवाह करना, पत्थर तले हाथ दबना-आपत्ति में पड़ना, विवश होना, हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना-कोई व्यवसाय न करना, हाथ पसारना-हाथ फैलाकर कुछ माँगना, हाथ पाव ठढे होना-मरणासन्न अवस्था, हाथ पाव फूलना-व्यग्र होना, हाथ पाव पटकना-छटपटाना, हाथ पाव हिलाना-किसी प्रकार का उद्योग करना, हाथ पैर जोड़ना-बड़ी विनती करना, किसी वस्तु पर हाथ फेरना-चुरा लेना, हाथ मलना-पछताना, हाथ मारना-किसी वस्तु को चुरा लेना, हाथ में करना-अपने वश में लाना, हाथ में होना-अधीन होना, हाथ रगना-उत्कोच लेना,रिश्वत लेना, हाथ रोपना-हाथ फैलाना, हाथ लगना-प्राप्त होना, पाना, किसी काम में हाथ लगाना-कोई कार्य आरभ करना, हाथ लगे-कार्य के आरभ होने पर, हाथोंहाथ-साथसाथ, हाथोहाथ लेना-आदर किया जाना।

हाथ कण्डा-(हि०पु०) देखो हथकण्डा।

हाथतोड़-(हिं०पु०) कुश्ती की एक पेंच।

हाथपान-(हि०पु०) हथेली के पीछे की ओर पहरने का एक आभूषण।

हाथफूल-(हिं० पु०) देखो हाथपान।

हाथबाँह-(हि० पु०) बाँह करने का एकढग।

हाथा-(हिं० पु०) किसी हथियार की मूठ, दस्ता, पजे की छाप का चिह्न।

हाथाछाटी-(हि० स्त्री०) व्यवहार में कपट या बेइमानी।

हाथाजोड़ी-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जो औषधियों में प्रयोग होता है।

हाथापाई, हाथाबाँही-(हिं० स्त्री०)मुठ भेंड़, धौलधप्पड़।

हाथी-(हिं० पुं०) एक बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, हस्ती, हाथी पर चढ़ना-बड़ा अमीर होना, हाथीखाना-(फ़ा० पु०) हाथी बाँधने का स्थान, फीलखाना।

हाथीचक-(हिं० पु०) एक प्रकार का पौधा जो औषधियों में प्रयोग होता है।

हाथीदाँत-(हि० पु०) हाथी के मुह के दोनो छोरों पर निकले हुए सफेद दाँत।

हाथीनाल-(हि०स्त्री०) हाथी की पीठ पर लादकर ले जाने की पुराने चाल की तोप।

हाथीपाँव-(हि०पु०) फीलपा नामक रोग

हाथीवान-(हि०पु०)फीलवान, महावत।

हादसा-(अ० पु०) बुरी दशा, दुर्घटना।

हान-(हि० स्त्री०) देखो हानि, (स०नपु०) त्याग।

हानि-(सं० स्त्री०) नाश, क्षय, अभाव, अनिष्ट, बुराई, क्षति, घाटा, स्वास्थ्य में बाधा।
हानिकर-(स० वि०) अनिष्ट करने वाला, स्वास्थ्य बिगाड़ने वाला।
हानिकारक, हानिकारी-(स० वि०) बुरा परिणाम उपस्थित करने वाला।
हानुक-(स०वि०) घातुक, हत्याकारी।
हाफिज-(अ० पु०) वह धार्मिक मुसलमान जिसको कुरान कण्ठस्थ हो।
हाफु-(स० पु०) अहिफेन, अफीम।
हाबिस-(हिं० पु०) जहाज का लगर उठाने की क्रिया।
हामी-(हि० पु०) स्वीकृति, स्वीकार, हामी भरना-स्वीकार करना।
हाम्बीरी-(स० स्त्री०) एक प्रकार की रागिणी।
हाय-(हिं० अ०) पीड़ा अथवा दुःख सूचित करने का शब्द, आह, (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, कष्ट, किसी की हाय पड़ना-किसी को कष्ट देने पर बुरा फल मिलना।
हायन-(स० पु०) वत्सर, साल, एक प्रकार का लाल धान।
हायल-(हि० वि०) घायल, शिथिल, मूर्छित, रोकने वाला।
हायहाय-(हि० अव्य०) शोक, दुःख या शारीरिक कष्ट सूचक शब्द, झझट, परेशानी।
हार-(स०वि०) चुराने वाला, ले जाने वाला, नाश करने वाला, सुन्दर, मनोहर (पु०) सोने चादी या मोतियों की माला, अक गणित में भाजक, छन्द शास्त्र में गुरु मात्रा, युद्ध, लड़ाई (हिं० स्त्री०) पराजय, शिथिलता, वियोग, विरह, हानि, क्षति, चरागाह।
हारक-(स० पु०) धूर्त, चोर, गणित में भाजक, हार, माला हरण करने वाला, ले जाने वाला।
हारगुटिका-(स०स्त्री०) माले का दाना।
हारना-(हिं० क्रि०) पराभूत होना, शिथिल होना, थक जाना, असमर्थ होना, निराश होना, लड़ाई, बाजी मोकदमा आदि को न जीतना, गँवाना, नष्ट करना, छोड़ देना, हारे दरजे-विवश होकर, लाचारी से।
हारबन्ध-(स० पु०) एक चित्रकाव्य जिसमें पद्य हार के आकार में लिखे जाते हैं।
हारभूरा-(स० स्त्री०) द्राक्षा, दाख।
हारमोनियम्-(अ० पु०) सन्दूक के आकार का एक प्रकार का अग्रेजी बाजा।
हारल-(हि०पु०) एक प्रकार की चिड़िया।
हारव-(स०पु०) एक नरक का नाम।
हारसिंगार-(हिं० पु०) देखो हरसिंगार, परजाता।
हारहूर-(स०पु०) द्राक्षा, दाख।
हारा-(स०स्त्री०) मद्य, शराब, (पु०) चौहान राजपूतों की एक शाखा, (हि०प्र०) प्राचीन हिन्दी का एक प्रत्यय जो "वाला" अर्थ में शब्दों में प्रयोग होता था।
हारावली-(स०स्त्री०) मोतियों की माला।
हारि-(स० स्त्री०) पथिक, समूह, हार, पराभव।
हारिकण्ठ-(स०पु०) कोकिल, कोयल, (वि०) जिसके गले में हार हो।
हारित-(स० पु०) सुग्गा, तोता, एक वर्णवृत्त का नाम (वि०) हरण किया हुआ, लाया हुआ, खोया हुआ।
हारिद्र-(स० वि०) हल्दी में रंगा हुआ; (पु०) पीला रग।
हारिनाश्वा-(स० स्त्री०) सगीत में एक मूर्छना का नाम।
हारिल-(हिं० पु०) एक प्रकार की हरे रग की चिड़िया जो प्रायः अपने पजे में लकड़ी का टुकड़ा या तिनका लिये रहती है।
हारी-(स० वि०) हरण करने वाला, छीनने वाला, चुराने वाला, लूटने वाला, नाश करने वाला, जीतने वाला, मोहित करने वाला, हार पहनने वाला (पु०) एक वर्ण वृत्त का नाम।
हारीत-(स० पु०) एक प्रकार का कबूतर, चोर, लुटेरा, लुटेरापन, चोरी।
हारीतक-(स०पु०) परेवा पक्षी।
हारीतबन्ध-(स० पु०) एक प्रकार का छन्द।
हारुक-(स० पु०) हरण करने वाला, छीनने वाला।
हार्द-(स०नपुं०) अभिप्राय, स्नेह (वि०) हृदय का।
हार्दिक-(सं० वि०) हृदय सम्बन्धी, हृदय का, हृदय से निकला हुआ, सच्चा।
हार्दिक्य-(स० पु०) मित्रभाव, मित्रता।
हार्य-(स० वि०) हरणीय, छीनने योग्य, ग्राह्य, स्वीकार करने योग्य, त्याज्य, छोड़ने योग्य, रोकने योग्य, ले जाने योग्य।
हाल-(स०पु०) बलराम, हल, लागल, अवस्था।
हाल-(अ० पु०) परिस्थिति, अवस्था, समाचार, विवरण, ब्योरा, माजरा, कैफियत, कथा, ईश्वर में लीन होने की अवस्था (वि०) वर्तमान, उपस्थित (अव्य०) इस समय, अभी, तुरन्त (हि० स्त्री०) लोहे का वह बन्द जो पहिये के घेरे पर चढ़ाया जाता है।
हालगोला-(हि० पुं०) गेंद।
हालडाल-(हिं० पु०) कम्प, हलचल।
हालत-(अ० स्त्री०) अवस्था, स्थिति, दशा, सयोग, आर्थिक अवस्था।
हालना-(हि०क्रि०) हिलाना, डुलाना, झूमना।
हालरा-(हि० पु०) बच्चे को हाथ में लेकर हिलाने डुलाने का कार्य, लहर, हिलोरा, झोका।
हालहाल-(हि० पु०) देखो हलाहल।
हालहूल-(हिं०स्त्री०) शोरगुल, हल्लागुल्ला, हलचल।
हालाँकि-(फा०अव्य०) यद्यपि, जोकि।
हाला-(स०स्त्री०) मद्य, शराब।
हालाहल-(स० पु०) देखो हला हल।
हालाहली-(स०स्त्री०) मदिरा, शराब।
हालिनी-(स० स्त्री०) एक प्रकार की

छिपकली।
हालिम-(हि० पु०) एक प्रकार का पौधा जिसके बीज औषधियों में प्रयोग होतेहैं।
हाली-(हि०अव्य०) शीघ्र, जल्दी से।
हालों-, हि० पु०) देखो हालिम।
हाल्ट्-(अ०पु०) सेना का चलते हुए ठहर जाना।
हाव-(स० पु०) पास बुलाने की क्रिया या भाव, सयोग के समय में नायिका की पुरुष को आकर्षण करने वाली चेष्टायें, साहित्य में ये ग्यारह हैं।
हावनदस्ता-(फा० पुं०) खरल और बट्टा, खरल और लोढा।
हावनीय-(स० वि०) हवन करने योग्य।
हावभाव-(स० पु०) पुरुषों का चित्त आकर्षण करने वाली स्त्रियों की चेष्टा, नाज़ नखरा।
हावर-(हिं०पु०) एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी लकड़ी बड़ी पुष्ट होती है।
हावला बावला-(हिं० वि०) सनकी, झक्की।
हाशिया-(अ०पु०) किनारा, कोर, मगजी, गोंट, पुस्तक के किनारे पर लिखी हुई टिप्पणी, हाशिये का गवाह-वह पुरुष जिसका हस्ताक्षर किसी दस्तावेज के किनारे पर हो, हाशिया चढाना-मनोरञ्जन के लिये विनोद के वाक्य जोड़ देना।
हास-(स०पु०) हँसने की क्रिया या भाव, हसी, उपहास, निन्दा, दिल्लगी।
हासक-(स०पु०) हसने वाला।
हासकर-(स०वि०) हसाने वाला।
हासन-(स०पुं०) हसने वाला।
हासनिक-(सं०पुं०) क्रीडा का साथी।
हासशील-(स० वि०) हंसने वाला।
हासिद-(अं० वि०) हसद या डाह करने वाला।
हासिन-(स०वि०) हसाने वाला।
हासिनी-(स० स्त्री०) अप्सरा।
हासिल-(अ० वि०) प्राप्त, पाया हुआ, उपज, पैदावार, लाभ, मुनाफा, जमा, वसूली, गणित में शेष भाग।
हासी-(हि० वि०) हसने वाला।
हास्त-(स० वि०) हस्त सम्बधी।
हास्तिक-(स०नपु०) हाथी का झुड।
हास्य-(स० नपु०) हसने की क्रिया या भाव, हँसी, साहित्य के नव स्थायी भावों में से एक, हसी मज़ाक़, उपहास (वि०) उपहास के योग्य।
हास्यकर-(स०वि०) हँसाने वाला।
हास्यरस-(सं० पु०) काव्य का हास्यात्मक रस।
हास्यास्पद-(स०पु०) हास्य का विषय, जिसको देखकर लोग हँस पडे।
हास्योत्पादक-(स० वि०) उपहास के योग्य।
हाहन्त-(स० अव्य०) अत्यन्त शोक सूचक शब्द।
हाहा-(स० पु०) [illegible] विशेष (हि० पुं०) [illegible] शब्द, गिड़गिड़ाने का [illegible]।
हाहाकार-(हि० पु०) घबड़ाहट की चिल्लाहट, युद्ध में का कोलाहल।
हाहाठीठी-(हिं०स्त्री०) हँसी ठट्ठा।
हाहाल-(स० नपु०) विष, गरल, ज़हर।
हाही-(हि०स्त्री०) कुछ पाने की उत्कट इच्छा।
हाहू-(हि० पु०) कोलाहल, शोरगुल, हलचल।
हाहूबेर-(हि०पु०) जगली बेर, झरबेरी।
हि-(स० अव्य०) हेतु, कारण, निश्चय तथा सम्भ्रम अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है, हिन्दी की एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले सभी कारकों में होता था परन्तु बाद में इसका प्रयोग ("को" अर्थ में) कर्म और सम्प्रदान में ही होने लगा।
हिंकटना-(हि० क्रि०) घोड़ों का हिनहिनाना।
हिंकरना-(हि०क्रि०) देखो हिंकटना।
हिंकार-(हि० पु०) गाय के रभाने का शब्द।
हिंगनबेर-(हिं० पु०) इङ्गुदी वृक्ष, हिंगोट।
हिंगली-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की तमाखू।
हिंगोट-(हि०पुं०) इगुदी वृक्ष।
हिंच-(अ०पु०) आघात, चोट।
हिंडोरा-(हिं०पु०) देखो हिंडोला।
हिंडोरी-(हि०स्त्री०) छोटा हिंडोला।
हिंडोल-(हि० पु०) हिंडोला, एक प्रकार का राग।
हिंडोलना, हिंडौला-(हिं० पु०) पालना, झूला।
हिंद-(फ़ा०पु०) भारतवर्ष, हिंदुस्तान।
हिंदवाना-(फा०पु०) कलिन्दा, तरबूज़।
हिंदवी-(फा०स्त्री०) हिन्दी भाषा।
हिंदी-(फ़ा०वि०) भारतीय, हिन्दुस्तान का (स्त्री०) भारत वर्ष की बोली, हिन्दुस्तान की भाषा।
हिन्दुस्तान-(फ़ा०पु०) भारतवर्ष।
हिंदुस्तानी-(फ़ा०वि०)भारतवर्ष सम्बन्धी, भारतवासी, हिंदुस्तानी भाषा।
हिंदुस्थान-(हिं०पु०) देखो हिन्दुस्तान।
हिंदू-(फ़ा०वि०) भारतवर्ष की आर्य जाति के वशज।
हिंदूपन-(फ़ा० पु०) हिन्दू होने का भाव या धर्म।
हिंदोरना-(हिं०क्रि०) तरल वस्तु में हाथ डाल कर इधर उधर घुमाना।
हिंदोस्तान-(हिं०पु०)देखो हिन्दुस्तान।
हिया-(हि०अव्य०) यहां।
हिंव, हिंवार-(हिं०पु०)हिम, बर्फ, पाला।
हिंस-(हि०स्त्री०) घोडे का हिनहिनाना।
हिंसक-(स०वि०) घातक, हत्यारा, हानि पहुँचाने वाला,(पु०) हिंस्र पशु, दुश्मन।
हिंसन-(स०पु०) जीवों का वध, जान मारना, जीवों को कष्ट देना, द्वेष करना, अनिष्ट करना।
हिंसनीय-(स०वि०) हिंसा करने योग्य।
हिंसा-(स०स्त्री०) बध, हत्या, हानि पहुँचाना, कष्ट देना, ईर्षा, द्वेष।
हिंसाकर्म-(स० नपु०) किसी को मारने या कष्ट देने का काम।
हिंसात्मक-(स०वि०) जिसमें हिंसाहो, हिंसा से युक्त।

हिंसारु-हिंस्र पशु, व्याघ्र।
हिंसालु-स०वि०)वधशील, मारने वाला, घातक।
हिंसालुक-(स०पु०) घातक,हिंसाशील।
हिंसित-(स०त्रि०) हिंसा प्राप्त,मारा हुआ।
हिंसितव्य-(स०वि०) हिंसा करने योग्य।
हिंस्य-(स०पु०) जिसकी हिंसा की जाने को हो।
हिंस्र-(स०वि०) हिंसाशील, घातक (पु०) हिंसाकारिक जन्तु, खूंखार जानवर।
हिंस्रक-(स०पु०) हिंसा करने वाला।
हिंस्रा-(स०स्त्री०) जटामासी, भटकटैया।
हिअ, हिआ-(हिं०पु०) हृदय, छाती।
हिआव-(हिं०पु०) हिम्मत, साहस।
हिकमत-(अ० स्त्री०) तत्वज्ञान, विद्या, कला कौशल, किसी वस्तु के निर्माण करने की बुद्धि, ढंग, चाल, चतुराई, तदबीर, किफायत, हकीम का व्यवसाय या काम, हकीमी।
हिकमती-(अ०वि०)तदबीर सोचने वाला, चालाक होशियार, चतुर, किफायती।
हिकलाना-(हि०.क्रि०) देखो हकलाना।
हिकायत-(अ०स्त्री०) कथा, कहानी।
हिक्कल-(हिं० पुं०) बौद्ध सन्यासियों का दण्ड।
हिक्का-(स० स्त्री०) हिचकी, हिचकी का रोग।
हिंकार-(स०पु०) गाय के रंभाने का शब्द।
हिंग-(स०पु०) हिंगु, हींग।
हिंगु-(स०नपुं०) हींग।
हिंगुपत्र-(स०पु०) इगुदी, हिंगोट।
हिंगुलिका-(स०स्त्री०) भटकटैया।
हिंगुली-(स०स्त्री०) भटा।
हिंगुल-(स०स्त्री०) ईंगुर, सिंगरिफ।
हिंगोट-(स०पु०) एक झाड़, करकॅटीला वृक्ष, इसके फल की गुठलियों में से तेल निकाला जाता है।
हिचक-(हिं०स्त्री०)किसी काम करते समय चित्त में अटक आना, आगा पीछा।
हिचकना-(हि०क्रि०) हिचकी लेना, किसी काम करने में आगा पीछा करना
हिचकिचाना-(हिं०क्रि०)देखो हिचकना
हिचकिचाहट-(हि०स्त्री०) देखो हिचक।
हिचकिची-(हि०स्त्री०) देखो हिचक।
हिंचकी-(हिं० स्त्री०) पेट की वायु का कण्ठ में से झटका देते हुए निकलना, रह रह कर सिसकने का शब्द।
हिचर मिचर-(हिं०पु०) आगा पीछा, टाल मटूल।
हिजड़ा-(हिं०पु०) देखो हीजड़ा।
हिजरी-(अ० पु०) मुसलमानी सवत् जिसका आरम १५ जूलाई सन् ६२२ ईस्वी (विक्रम सवत् ६७६ श्रावण शुक्ल २ के सायकाल) में हुआ है, इस दिन मुहम्मद साहब मक्का से मदीने भागे थे
हिजाब-(अ०पु०) परदा, लज्जा, शर्म।
हिज्जल-(स०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष, समुद्रफल।
हिज्जे-(अ०पु०) कि... शब्द के अक्षरों को मात्रा सहित...।
हिफ्ज-(अ०पु०) वि..., जुदाई।
हिञ्जीर-(स०पु०) हाथी के पैर में बाँधने की जजीर।
हिडिम्ब-(स०पु०)एक राक्षस जिसको वनवास के समय भीम ने मार डाला था
हिडिम्बा-(स० स्त्री०) हिडिम्ब राक्षस की बहिन, घटोत्कच की माता।
हिडोर, हिडोल-(हिं०पु०)देखो हिंडोला
हिण्डन-(स० नपु०) घूमना, फिरना, क्रीड़ा, खेल रति, मैथुन।
हिण्डोली-(स०स्त्री०)एक रागिणी का नाम
हित-(स०वि०) उपकारी, लाभदायक, अनुकूल, प्रिय, अच्छा व्यवहार करने वाला, पथ्य (पु०) लाभ,कल्याण,मङ्गल, मित्र, सबन्धी, नातेदार, प्रेम, स्नेह, अनुकूलता स्वास्थ्य के लिये लाभ(अव्य०) निमित्त, वास्ते, लिये,प्रसन्नता के लिये,
हितक-(स०पु०)शिशु, बच्चा।
हितकर-(स०वि०) लाभ पहुँचाने वाला, उपयोगी, स्वास्थ्य कर।
हितकर्ता-(सं०पु०) भलाई करने वाला
हितकर्म-(स० नपु०) हित कार्य, हित काम-भलाई की इच्छा।
हित कारक-(स०वि०) लाभ पहुँचाने वाला, स्वास्थ्यकर, भलाई करने वाला
हितकारी-(स० वि०) उपकार या कल्याण करने वाला।
हित चिन्तक-(स०पु०) भला चाहने वाला, खैरख्वाह।
हित चिन्तन-(स० पु०) उपकार की इच्छा।
हित वचन-(स०पु०)कल्याण का उपदेश
हितता-(हिं०स्त्री०) भलाई।
हितवादी-(स०त्रि०) उपकार या लाभ की बात कहने वाला।
हितलोहित-(स०पु०) जुआर, मक्का।
हिताई-(हि०स्त्री०)सम्बन्ध नाता,रिश्ता।
हिताना-(हिं० क्रि०) अनुकूल होना, अच्छा लगना।
हितानुबन्धी-(हि० वि०) भलाई चाहने वाला।
हितार्थी-(सं० वि०) हित या भलाई चाहने वाला।
हितावह-(स० वि०) हितकारी, जिसमें भलाई हो।
हिताहित-(स० पु०) भलाई बुराई, हानि लाभ।
हिती, हितू-(हि०वि०) भलाई चाहने वाला, मित्र, सबन्धी, नातेदार, स्नेही।
हितेच्छा-(स०स्त्री०) उपकार का ध्यान।
हितेच्छु-(सं०वि०)कल्याण मनाने वाला
हितैषिता-(स० स्त्री०) कल्याण चाहने की वृत्ति।
हितैषी-(स०वि०) भला चाहने वाला, कल्याण मनाने वाला(पु०)मित्र,दोस्त।
हितोक्ति-(स०स्त्री०)भलाई का उपदेश।
हितोपदेश-(स० पु०) भलाई के उपदेश।
हिदायत-(अ०स्त्री०) पथ प्रदर्शन, रास्ता दिखलाना, निर्देश, आदेश।
हिनती-(हि०स्त्री०) देखो हीनता।
हिनहिनाना-(हिं०क्रि०) घोडेका बोलना
हिनहिनाहट-(हि०स्त्री०) घोडेकी बोली।
हिना-(अ०स्त्री०) मेंहदी।
हिन्ताल-(स० पु०) एक प्रकार क जगली खजूर।
हिन्दी-देखो हिन्दी, हिन्दी भाषा।

...न-(हिं०पु०) भारतवर्ष ।
...(सं० पु०) आर्यावर्त्त वासी ...म धर्मी ।
...ल-(सं०पु०) एक उत्सव जिसमें ...ताओं की मूर्ति झूले पर बैठाकर ...ाई जाती है, एक राग का नाम ।
...ाजत-(अ० स्त्री०) रक्षा, देखरेख, ...रदारी ।
...ा-(अ० पु०) दाना, दो जवकी एक ...", दान, हिब्बानामा-दानपत्र ।
...शिया माइनर निवासी एक ...न जाति का नाम ।
...चल-(हिं०पु०) देखो हिमाचल ।
...त-(हिं०पु०) देखो हेमन्त ।
...-(सं०वि०) शीत, शीतल, ठढा, ...) पाला, बरफ, चन्द्रमा, चन्दन, ..., जाडे का ऋतु, कपूर, मक्खन, ... खस, हिमालय पर्वत ।
...ल-(सं०पु०) ओला पत्थर ।
...तु-(सं०स्त्री०) जाडे का मौसम ।
...ज-(सं०पु०) वर्फ या पाले के ...न टुकडे ।
...र-(सं० पु०) कपूर, चन्द्रमा ।
...कर तनय-(सं०पु०) बुध ।
...रण-(सं०पुं०) चन्द्रमा ।
...ट-(सं० पु०) शिशिर ऋतु ।
...ण्ड-(सं० पु०) हिमालय पर्वत ।
...रि-(सं० पु०) हिमालय पर्वत ।
...-(सं० पु०) घर में सबसे ...ढी कोठरी ।
...ज-(सं० पु०) हिमालय पर्वत, ...ाक ।
...जा-(सं०स्त्री०) पार्वती ।
...ज्योति-(सं०पु०) चन्द्रमा ।
...दीधिति-(सं०पु०) चन्द्रमा ।
...दुग्धा-(सं० स्त्री०) खिरनी ।
...द्युति-(सं० पु०) चन्द्रमा ।
...द्रुम-(सं०पु०) बकायन का वृक्ष ।
...धर-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत ।
...पात-(सं०पु०) बरफ का पड़ना ।
...भानु-(सं० पु०) चन्द्रमा ।
...-(सं० पु०) हिमालय पर्वत ।

हिममयूख-(सं० पु०) चन्द्रमा ।
हिमयानी-(फा० स्त्री०) रुपया पैसा रखने की जालीदार थैली ।
हिमरश्मि-(सं० पु०) चन्द्रमा ।
हिमवत्-(सं०पु०) हिमालय पर्वत ।
हिमवल-(सं० पु०) मोती ।
हिमवान-(हिं० पु०) हिमालय पर्वत, कैलाश पर्वत, चन्द्रमा ।
हिमवारि-(सं० नपु०) ठढा पानी ।
हिमवृष्टि-(सं० स्त्री०) बरफ का गिरना ।
हिमशैल-(सं०पु०) हिमालय पर्वत ।
हिमशैलजा-(सं०स्त्री०) पार्वती ।
हिमसुत-(सं०पु०) चन्द्रमा ।
हिमा-(सं० स्त्री०) छोटी इलायची, नागरमोथा, रेणुका, मूली ।
हिमांशु-(सं०पु०)कपूर, चादी, चन्द्रमा ।
हिमाकत-(अ०स्त्री०) मूर्खता, वेवकूफी ।
हिमाचल-(सं०पु०) हिमालय पर्वत ।
हिमाद्रि-(सं० पु०) हिमालय पर्वत ।
हिमाद्रिजा-(सं० स्त्री०) पार्वती ।
हिमाद्रि तनया-(सं० स्त्री०) दुर्गा ।
हिमानी-(सं०स्त्री०) वर्फ का ढेर ।
हिमाब्ज-(सं०नपु०) नील कमल ।
हिमाभ्र-(सं०पु०) कर्पूर, कपूर ।
हिमामदस्ता-(फा० पु०) लोहे का खरल और लोढा ।
हिमाम्भस्-(सं०नपु०) ठढा पानी ।
हिमायत-(अ० स्त्री०) समर्थन, रक्षा, पक्षपात ।
हिमायती-(फा०वि०) पक्ष लेने वाला, समर्थन करने वाला, मददगार, तरफदार ।
हिमाराति-(सं० पु०) अग्नि, सूर्य, मदार का वृक्ष ।
हिमालय-(सं० पु०) भारत की उत्तरी सीमा पर का पर्वत जो ससार भर में सबसे ऊँचा है ।
हिमालयसुता-(सं०स्त्री०) पार्वती ।
हिमावती-(सं० स्त्री०) स्वर्णक्षीरी नामक दवा ।
हिमि-(हिं०पु०) हिम, बरफ ।
हिमिका-(सं०स्त्री०) घास पर गिरा हुआ बरफ, शिशिर बिन्दु ।

हिमोदक-(सं०नपु०) ठढा पानी ।
हिमोपम-(सं०पु०) प्रवाल, मूगा ।
हिम्मत-(अ० स्त्री०) पराक्रम, साहस, बहादुरी हिम्मत हारना-साहस का त्याग करना ।
हिम्मती-(फा०वि०) पराक्रमी, साहसी
हिय, हियरा-(हिं०पु०) हृदय, मन, छाती ।
हियाँ-(हिं०अव्य०) यहा, इस जगह ।
हिया-(हिं० पु०) हृदय, मन, वक्षः स्थल, छाती , हियेका अन्धा-ज्ञानशून्य, वेवकूफ, हिया जलना-बहुत क्रोध करना, हिया लगाना-गले से लगाना ।
हियाव-(हिं० पु०) साहस, दृढता, हिम्मत, हियाव खुलना-साहस करना, सचोच का हटना, हियाव पड़ना-हिम्मत होना ।
हिर-(सं०पु०) कपडे लत्ते की पट्टी ।
हिरकना-(हिं० क्रि०) पास में जाना, सटना ।
हिरकाना-(हिं० क्रि०) पास में ले जाना, सटाना ।
हिरगुनी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बढिया कपास ।
हिरड्डु-(सं०पुं०) राहु ग्रह ।
हिरण-(सं० नपु०) रेत, वीर्य, सोना, कौड़ी, (हिं० पु०) हरिन, मृग ।
हिरण्मय-(सं० नपु०) जम्बूद्वीप के नव खडों में से एक ।
हिरण्य-(सं०नपु०) सुवर्ण, सोना, धतूरा, वीर्य, कौड़ी, धन दौलत, चादी, अमृत, ज्योति, ज्ञान, तत्व, एक मान या तौल ।
हिरण्यकर्ण-(सं० त्रि०) कान में सोने का कुण्डल पहिरे हुए ।
हिरण्यकर्ता-(सं०पु०) सुनार ।
हिरण्यकशिपु-(सं० पु०) एक दैत्य जिसको नृसिंहावतार में विष्णु ने मारा था ।
हिरण्यकार-(सं०पु०) सुनार ।
हिरण्यकेश-(सं०पु०) विष्णु ।
हिरण्यगर्भ-(सं० पु०) ब्रह्मा, वह

ज्योतिर्मय अण्ड जिसमें से ब्रह्मा तथा सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति हुई थी, सूक्ष्म शरीर से युक्त आत्मा।
हिरण्यचक्र-(सं०पु०) वह रथ जिसकी पहिया सोने की बनी हों।
हिरण्यज-(सं०वि०) सोने का बना हुआ
हिरण्यदा-(सं०त्रि०) पृथ्वी।
हिरण्यनाभ-(सं०पु०) मैनाक पर्वत।
हिरण्यपति-(सं० पु०) शिव, महादेव।
हिरण्यपुर-(सं० नपु०) असुरों के एक नगर का नाम।
हिरण्यपुष्पी-(सं०स्त्री०) करियारी नामक विषैला पौधा।
हिरण्यबाहु-(सं०पुं०) शिव, महादेव, एक नाग का नाम।
हिरण्यविन्दु-(सं०पु०) अग्नि आग।
हिरण्यरूप-(सं०त्रि०) सुवर्ण के समान रूप वाला।
हिरण्यरेतस्-(सं०पु०) अग्नि, आग, सूर्य, शिव।
हिरण्यलोमन्-(सं० पु०) भीष्म का एक नाम।
हिरण्यवर्म-(सं०पु०) सोने का कवच।
हिरण्यवान्-(सं० त्रि०) जिसके पास सोना हो।
हिरण्यवाह-(सं०पु०) शिव, महादेव।
हिरण्यशृङ्ग-(सं०वि०) सोने के शिखर या सींघ वाला।
हिरण्याक्ष-(सं० पु०) एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था, विष्णु ने वराह अवतार लेकर इसको मारा था।
हिरण्याश्व-(सं०पु०) सोलह महादानों में से एक।
हिरदय-(हिं० पु०) देखो हृदय।
हिरदावल-(हिं०पु०) घोडे के छाती पर की एक भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।
हिरन-(हिं० पु०) हरिण, मृग, हिरन हो जाना-तेज़ी से भाग जाना।
हिरनखुरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का बरसाती पौधा।
हिरनाकुस-(हिं० पु०) देखो हिरण्यकशिपु।
हिरनौटा-(हिं० पु०) हरिन का बच्चा।
हिरफत-(अ० स्त्री०) व्यवसाय, हाथ की कारीगरी, दस्तकारी, हुनर, चालाकी, धूर्तता, चतुराई।
हिरफतबाज़-(फा०वि०) धूर्त, चालाक।
हिरमजी-(अ० स्त्री०) लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।
हिरमिजी-(फा०स्त्री०) देखो हिरमजी।
हिरस-(हिं० पु०) देखो हिर्स।
हिरात-अफगानिस्तान के पश्चिम सीमा पर का एक प्रदेश, हिराती-इस देश का घोड़ा।
हिराना-(हिं०क्रि०) खो जाना, मिटना, दूर होना, हक्का बक्का होना, ध्यान में न रहना, भूल जाना, मवेशियों को खाद गोबर के लिये खेतों में बांधने की क्रिया।
हिरावल-(हिं० पु०) देखो हरावल।
हिरास-(फा०स्त्री०) भय, त्रास, नाउम्मेदी, खिन्नता (वि०) निराश, उदासीन।
हिरासत-(अ० स्त्री०) पहरा, चौकी, नज़र बन्दी।
हिरासाँ-(फा०वि०) निराशा, नाउमैद, खिन्न।
हिरौंजी-(हिं० स्त्री०) देखो हिरमजी।
हिरौल-(हिं०पु०) देखो हरावल।
हिर्स-(अ०स्त्री०) लोभ, लालच, इच्छा का वेग, कामना का उमंग, स्पर्धा।
हिलदा-(हिं० पु०) मोटा ताजा मनुष्य।
हिलकी-(हिं०स्त्री०) हिचकी, सुसकी।
हिलकोर, हिलकोरा-(हिं० पु०) तरंग, लहर।
हिलकोरना-(हिं० स्त्री०) पानी को हिलाकर लहरें उठाना।
हिलग-(हिं०स्त्री०) संबंध, लगाव, प्रेम, हेलमेल।
हिलगत-(हिं० स्त्री०) आदत, टेव।
हिलगना-(हिं० क्रि०) अटकना, लगना, हिलमिल जाना, परचना, पास में आना, सटना।
हिलगाना-(हिं०क्रि०) अटकाना, फँ... परचाना।
हिलना-(हिं० क्रि०) अपने स्थ... टलना, चलायमान होना, डोल... सरकना, ढीला होना, कँपना, थराना, प्रवेश करना, घुसना, झूमना, लहराना, स्थिर न रहना, उद्योग करना।
हिलना मिलना-परचना।
हिलमुची-(सं० स्त्री०) एक प्र... का साग।
हिलसा-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार... काँटेदार चिपटी मछली।
हिलाना-(हिं०क्रि०) स्थान से उठा... टालना, चलायमान करना, डुला... झुलाना, कँपाना, अनुरक्त कर... परचाना, प्रवेश कराना, घुसा... पैठाना।
हिलोर, हिलोरा-(हिं०पु०) हवा के... से जल का उठना और गिरना, त... लहर।
हिलेरना-(हिं०क्रि०) जल को इस प्र... हिलाना कि लहरें उठें, इधर उ... हिलाना, डुलाना, लहराना।
हिलोल-(हिं० पु०) देखो हिलोर।
हिल्लोल-(सं० पु०) हिलोरा, त... आनन्द की तरंग, एक राग का ना...
हिल्लोलन-(सं०पु०) लहराना, झूल...
हिवँ-(हिं० पु०) बरफ, पाला।
हिवँर, हिवाँर-(हिं०पु०) बरफ, पा...
हिस-(अ० पु०) अनुभव, ज्ञान, हो... हवास।
हिसका-(हिं० पु०) ईर्ष्या, डाह, स्पर्धा... हवस देखकर किसी बात की इच्छा... करना।
हिसाब-(अ०पु०) गणित, लेखा, गिन... लेनदेन अथवा आमदनी खर्च... ब्योरा, गणित विद्या, गणित विद्या... प्रश्न, किसी वस्तु का भाव या... अवस्था दशा, नियम, निर्णय, व्य... ढंग, रीति, अनुकूलता, मेल, कि...
हिसाब चुकाना-जो कुछ ज़िम्मे... लेना हो उसको अदा करना।

देना-खर्च का ब्योरा बतलाना, हिसाव बतलाना-यह समझना कि किस मद में कितना खर्च हुआ है, बेहिसाब-अत्यधिक, बहुत ज्यादा, हिसाव रखना-आय व्यय का लेखा लिख रखना, हिसाब बैठना-ठीक प्रबन्ध होना, हिसाव से-परिमित रूप से, क्रम से, टेढ़ा हिसाब-कठिन कार्य, अव्यवस्था।

हिसाव किताब-(अ०पु०)आय व्यय का विवरण सहित लेखा, रीति, ढङ्ग।

हिसावचोर-(हिं०पु०) वह जो हिसाव किताब लिखने से वेइमानी करता हो।

हिसाब वही-(हिं० स्त्री०) वह पुस्तक जिसमें लेने देन का ब्योरा लिखा जाता हो।

हिसार-(फा० पु०) फारसी सगीत की चौवीस शोभाओं में से एक।

हिसिषा-(हिं० स्त्री०) ईर्ष्या, स्पर्धा, वरावरी करने का भाव।

हिस्टीरिया-(अ०पु०)स्त्रियोंका मूर्छा रोग

हिस्सा-(हिं०पु०) अश, भाग, खण्ड, टुकड़ा, विभाग, वखरा, तकसीम, साझा, अवयव, किसी व्यवसाय के हानि लाभ में योग।

हिस्सेदार-(फा०पुं०) किसी वस्तु के किसी भाग पर अधिकार रखने वाला, साझेदार।

हिहि-(स०अव्य०) हँसने का शब्द।

हिहिनाना-(हिं०क्रि०) घोड़े का हिनहिनाना।

हींग-(हिं० स्त्री०) एक छोटे पौधे का जमाया हुआ गोंद या दूध जो मसालों में व्यवहार किया जाता है, इसमें वड़ी तीव्र गन्ध होती है।

हींगड़ा-(हिं०पु०) घटिया हींग।

हींठी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जोंक।

हींस-(हिं०स्त्री०)घोड़े या गदहे के बोलने का शब्द, रेंकना, हिनहिनाहट,

हींसना-(हिं०क्रि०) हिनहिनाना,रेंकना।

हीं-(स०स्त्री०) हँसने का शब्द।

ही-(स०अव्य०) वह शब्द जो ज़ोर देने के लिये अथवा स्वीकृति, परिमिति, निश्चय, अल्पता, अनन्यता आदि सूचित करने के लिये प्रयोग किया जाता है, (पु०) दु ख, विषाद शोक, (हिं०क्रि०) हो, होना।

हीअ-(हिं० पु०) देखो हिय, हृदय।

हीक-(हिं०स्त्री०) हिचकी, हलकी गन्ध जो अच्छी नहीं जान पड़ती।

हीचना-(हिं०क्रि०) देखो हिचकना।

हीज-(हिं०वि०) आलसी, मट्ठर।

हीठना-(हिं०क्रि०) पास में जाना,समीप होना, पहुँचना।

हीन-(स० वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, अल्प, तुच्छ, कम, सुख समृद्धि रहित, दीन, नीच, निष्कपट, बुरा, शून्य, वचित, ओछा, नाचीज़, (पु०) अप्रमाणिक साक्षी या गवाह, अधम नायक

हीनकर्मा-(स० त्रि०) बुरा काम करने वाला, अपना निर्दिष्ट कर्म करनेवाला

हीनकुल-(स० वि०) नीच या बुरे कुल का।

हीनक्रम-(स० पु०) काव्य का वह दोष जो उस स्थान पर माना जाता है जहा पर जिस क्रम से गुण गिनाये हों उसी क्रम से गुणी न गिनाये गये हों।

हीनकुष्ठ-(स० नपु०) खराव कोढ।

हीनचरित-(स०त्रि०) जिसका आचरण बुरा हो।

हीनज-(स० त्रि०) नीच जाति से उत्पन्न।

हीनजाति-(स०त्रि०) नीच जाति या वर्ण

हीनता-(स० स्त्री०) क्षुद्रता, नीचता।

हीनत्व-(स०नपु०) तुच्छता।

हीनदग्ध-(स०वि०) थोड़ा जला हुआ।

हीनपक्ष-(स०पु०) कमज़ोर मुकदमा।

हीनवल-(स०त्रि०) शक्तिहीन,कमज़ोर।

हीनवाहु-(स०पु०) शिव के एक गण का नाम।

हीनबुद्धि-(स० त्रि०) जड़, मूर्ख।

हीनमति-(स०त्रि०) बुद्धि शून्य।

हीनमूल्य-(स०पुं०) कम दाम।

हीनयान-(स० नपु०) बौद्धमतावलम्बियों की एक प्राचीन शाखा जिनके धर्मग्रन्थ पाली भाषा में हैं।

हीनयोग-(स० त्रि०) योगभ्रष्ट।

हीनयोनि-(स०त्रि०) नीच जाति का।

हीनरस-(स०पु०) काव्य का वह दोष जिसमें किसी रस का वर्णन करते हुए उस रस के विरुद्ध दूसरा रस प्रयोग किया जाता है।

हीनरात्र-(सं० त्रि०) थोड़ी रात ।

हीनरोम-(स० वि०) रोमहीन अथवा कम रोवें का।

हीनवर्ण-(स०पुं०) नीच जाति या वर्ण।

हीनवाद-(स० पु०) मिथ्या तर्क, झूठी बहस।

हीनवादी-(स० त्रि०) खिलाफ बयान करने वाला।

हीनवीर्य-(स०वि०) हीनबल, कमज़ोर।

हीनसख्य-(स० नपु०) नीच के साथ मित्रता।

हीनहयात-(अ०पु०) जीवन काल, वह समय जिसमें कोई जीता रहे।

हीनाङ्ग-(स०वि०) खण्डित अग वाला, जो सर्वाङ्ग पूर्ण न हो, अधूरा।

हीनाङ्गी-(सं० स्त्री०) छोटी च्यूटी, अङ्गहीना स्त्री।

हीनार्थ-(सं०वि०) अर्थहीन, जिसका कोई अर्थ न हो, विकल, जिसका कार्य सिद्ध न हुआ हो।

हीनोपमा-(स० स्त्री०) काव्य में वह उपमा जिसमें वड़े उपमेय के लिये छोटा उपमान प्रयोग किया जावे, वड़े की छोटे से उपमा।

हीया, हिया-(हिं०पु०) हृदय, हिया।

हीर-(स० पु०) इन्द्र का वज्र, शिव, मोती की माला, हीरा नामक रत्न, सर्प, सिंह, विजली, एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में अठारह वर्ण होते हैं, एक मात्रिक छन्द का नाम (हिं० पु०) सार, गूँदा, शक्ति, वल, वीर्य, लकड़ी के भीतर का भाग।

हीरक-(स०पु०नपु०)हीरा नामक रत्न।

हीरा-(स०स्त्री०) लक्ष्मी, च्यूटी (हिं०पु०)

एक रत्न जो कड़ाई और चमक के लिये प्रसिद्ध है, अति उत्तम वस्तु।

हीराकसीस-(हिं०पु०) लोहे का वह विकार जो गन्धक के रसायनिक योग से बनता है, यह देखने में कुछ हरापन लिये मटमैले रंग का होता है।

हीराङ्ग-(सं०पु०) इन्द्र का वज्र।

हीरादोपी-(हिं० स्त्री०) विजयसाल को गोंद।

हीरानखी-(हिं० पु०) एक प्रकार का बारीक थान।

हीरामन-(हिं०पु०) तोते की एक कल्पित जाति जो सोने के रंग का माना जाता है।

हील-(हिं० पु०) एक सदाबहार वृक्ष जिसके अरदल भी कहते हैं।

हीला-(अ०पु०) बहाना, मिस, निमित्त।

हीलाहवाला-(अ० पु०) बहानेबाजी।

हीली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लता।

हीही-(हिं० स्त्री०) हीही करके हँसने की क्रिया, तुच्छता पूर्वक हँसना।

हीहीकार-(सं० पु०) ही ही शब्द।

हु-(सं०अव्य०) एक तन्त्रोक्त बीज मन्त्र।

हुं-(हिं०अव्य०) स्वीकृति सूचक शब्द, हाँ

हुंकना-(हिं०क्रि०) देखो हुँकारना।

हुंकार-(हिं०पु०) ललकार, गरज।

हुंकारना-(हिं०क्रि०) ललकारना, गरजना।

हुंकारी-(हिं०स्त्री०) "हूँ" करने की क्रिया मानना या कबूल करना, हामी, एक स्वीकृति सूचक शब्द।

हुंडा भाड़ा-(हिं०पु०) महसूल आदि देकर कहीं पर माल पहुँचाने का ठीका।

हुंडार-(हिं०पु०) वृक, भेड़िया।

हुंडावन-(हिं० स्त्री०) वह रकम जो हुँडी लिखते समय दस्तूरी की तरह काट ली जाती है।

हुंडी-(हिं०स्त्री०) रुपया उधार लेने की वह रीति जिसमें लिखने वाले को साल भर में २०) का २५) देने पड़ता है, निधिपत्र, चेक्।

हुँडी वही-(हिं० स्त्री०) वह किताब या वही जिसमें सब तरह की हुँडियों की नकल रहती है, हुँडी सकारना-हुँडी के रुपये का देना स्वीकार करना, दर्शनी हुँडी-वह हुँडी जिसको दिखलातेही रुपया चुका देना होता है

हुंत-(हिं० प्रत्य०) प्राचीन हिन्दी की तृतीया और पंचमी विभक्ति, द्वारा वास्ते, लिये।

हुंबा-(हिं०पु०) समुद्र की चढ़ती लहर।

हुंहुंकार-(सं०पु०) हुँ शब्द करके चीत्कार

हु-(हिं०अव्य०) अतिरिक्त, और भी।

हुआँना-(हिं० क्रि०) सियार की तरह हुँआ हुँआ बोलना।

हुक-(अं० पु०) टेढ़ी कील, अंकुड़ी (हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पीड़ा जो नस पर होती है।

हुकना-(हिं० पु०) सोहन चिड़िया (हिं० क्रि०) भूलना, चूकना, विस्मृत होना।

हुकर पुकर-(हिं० स्त्री०) व्यग्रता, अधीरता, घबड़ाहट।

हुकरना-(हिं० क्रि०) देखो हुँकारना।

हुकुम-(हिं० पु०) देखो हुक्म।

हुकुर हुकुर-(हिं० स्त्री०) जल्दी जल्दी साँस चलने की धड़कन।

हुकूमत-(अ०स्त्री०) आधिपत्य, अधिकार, राज्य, शासन, हुकूमत दिखलाना-प्रभाव दिखलाना, हुकूमत जताना-रोब दिखलाना।

हुक्का-(अ० पु०) तमाखू का धुवां मुख से खीचने के लिये विशेष आकार का बना हुआ एक नल यन्त्र।

हुक्कापानी-(हिं० पु०) परस्पर हुक्का तमाखू पीने का व्यवहार, खाने पीने का सामाजिक व्यवहार, हुक्का पानी बंद करना-जात बिरादरी से अलग करना।

हुक्काम-(अ० स्त्री०) अधिकारी वर्ग, बड़े अफसर।

हुक्कू-(हिं० पु०) एक जाति का बन्दर।

हुक्म-(अ०पु०) आदेश, आज्ञा, शिक्षा, उपदेश, अनुमति, अधिकार, शासन, ताश का एक रंग जिसमें काला पान बना रहता है, हुक्म उठाना-आज्ञा पालन करना, हुक्म की तामीली-आज्ञा पालन, हुक्म चलाना-आदेश या आज्ञा देना, हुक्म तोड़ना-आज्ञा उल्लंघन करना, हुक्म देना-आज्ञा देना, हुक्म बजाना-आज्ञा के अनुसार काम करना, हुक्म मानना-आज्ञा का पालन करना।

हुक्मचोल-(हिं० स्त्री०) खजूर की गोंद।

हुक्मनामा-(फा० पु०) आज्ञा पत्र, वह कागज जिस पर कोई आज्ञा लिखी हो।

हुक्मबरदार-(फा० पु०) आज्ञाकारी, सेवा करने वाला।

हुक्मबरदारी-(फा० स्त्री०) आज्ञा पालन, सेवा।

हुक्मी-(अ०वि०) दूसरे की आज्ञा के अनुसार ही काम करने वाला, पराधीन, अवश्य, जरूरी, अत्यर्थ, अचूक, लक्ष्य पर अवश्य पहुँचने वाला।

हुङ्कार-(सं० पु०) ललकार, गरज, चिल्लाहट।

हुचकी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की सुन्दर लता।

हुजूम-(अ०पु०) भीड़भाड़, जमावड़ा,

हुजूर-(अ०पु०) किसी बड़े का सामीप्य, समक्षता, नज़र का सामना, बादशाह या हाकिम का इजलास, कचहरी, एक शब्द जो आधीन कर्मचारी आदि बड़े अफसरों के लिये प्रयोग करते हैं।

हुजूरी-(अ० स्त्री०) बड़े की समीपता, नज़र का सामना, (पु०) दरबारी, मुसाहब, प्रधान सेवक, (वि०) सरकारी, हजूर का, जी हुजूरी करना-अति शुश्रूषा करना, चापलूसी।

हुज्जत-(अ० स्त्री०) व्यर्थ का तर्क, बेकार दलील, झगड़ा, वादाविवाद।

हुज्जती-(अ०वि०) हुज्जत करने वाला।

हुड़-(सं० पु०) मेष, मेढा, लाठी।

हुड़कना-(हिं० क्रि०) बच्चे का रोरोकर उस व्यक्ति के लिये व्याकुल हो

जिससे वह बहुत हिला मिला हो ।
हुड़का-(हि० पु०) किसी प्रिय व्यक्ति के अचानक वियोग से होने वाली मानसिक व्यथा।
हुड़काना-(हि० क्रि०) अधिक भयभीत और दुःखी करना, ललचाना, तरसाना
हुड़दंगा-(हि०पु०) शोरगुल, उपद्रव ।
हुडुक्‍-(हिं० पु०) एक प्रकार का छोटा ढोल।
हुडुक्क-(सं० पु०) मतवाला मनुष्य, अर्गला, बेंवड़ा, लोहबन्दा ।
हुडुम्ब-(सं०पु०) भूना हुआ चिवड़ा।
हुण्ड-(सं० पु०) व्याघ्र, बाघ, सुअर, राक्षस, जड़ बुद्धि, मूर्ख ।
हुण्डन-(सं० नपुं०) शिव के एक गण का नाम ।
हुण्डा-(हि० पु०) वह धन जो किसी जाति में वर पक्ष वाले कन्या के पिता को व्याह के लिये देते हैं।
हुत-(सं० वि०) हवन किया हुआ, अग्नि में डाला हुआ (पु०) हवन की सामग्री, शिव ।
हुतभक्ष-(सं०पुं०) अग्नि ।
हुतभुक्-(सं०पु०) विष्णु, शिव, अग्नि ।
हुतभुक्प्रिया-(सं० स्त्री०) अग्नि की भार्या, स्वाहा ।
हुतवह-(सं० पु०) अग्नि, आग ।
हुतशेष-(सं०पु०) हवन करने से बची हुई सामग्री ।
हुताग्नि-(सं०पु०) अग्निहोत्री ।
हुता-(हिं० क्रि०) प्राचीन अवधी हिन्दी में "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप।
हुताश-(सं०पु०) अग्नि, आग, भय, डर, तीन की सख्या, चीता का वृक्ष ।
हुताशन-(सं०पु०) अग्नि, आग ।
हुताशपुत्र-(सं०पु०) अग्निपुत्र, केतु ।
हुति-(सं०स्त्री०) हवन, (हि०अव्य०) ओर से, तरफ से ।
हुतियन-(हि०पु०) सेमल का वृक्ष ।
हुते-(हिं०अव्य०) ओरसे, द्वारा, तरफसे।
हुतो-(हि० क्रि०) "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था ।

हुदकाना-(हि०क्रि०) उभाड़ना, उसकाना
हुदना-(हि०क्रि०) स्तब्ध होना, रुकना ।
हुदहुद-(अ०स्त्री०) एक प्रकार की चिड़िया
हुदारना-(हि० क्रि०) रस्सी पर लटकाना, टांगना ।
हुद्दा-(हि० स्त्री०) एक प्रकार की मछली, मालगुजारी आदि की किस्त ।
हुन-(हि०पु०) सुवर्ण, अशरफी, सोना, हुन बरसना-धन दौलत की अधिकता होना ।
हुनना-(हि० क्रि०) हवन करना, आहुति देना ।
हुनर-(फा०पु०) कला, कारीगरी, गुण, कौशल, चतुराई ।
हुनरमंद-(फा०वि०)कलाकुशल में निपुण
हुनरमंदी-(फा० स्त्री०) निपुणता,कुशलता
हुनश-(फा० वि०) वह बन्दर या भालू जो नाचना और खेल करना सीख गया हो
हुन्न-(हिं०पु०) देखो हुन ।
हुब-(अ०पु०) अनुराग, प्रेम, उत्साह ।
हुमकना-(हिं०क्रि०) उछलना, कूदना, पैरों से जोर लगाना या धक्का पहुँचाना, ठुमकना, दबाने का प्रयत्न करना ।
हुमगना-(हिं०क्रि०) देखो हुमकना ।
हुमा-(फा० स्त्री०) एक कल्पित पक्षी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि जिसके ऊपर इसकी छाया पड़ जाय वह बादशाह हो जाता है ।
हुमेल-(अ०स्त्री०) अशर्फियों या रुपयों को गूथ कर बनाई हुई माला जिसको स्त्रियाँ पहरती हैं ।
हुम्मा-(हिं०पु०) लहरों का उठना ।
हुरदंग-(हिं०पुं०) देखो हुरदंगा ।
हुरमत-(अ०स्त्री०) मर्यादा,आबरू,इज्जत
हुरहूर-(हिं०पु०) देखो हुलहुल ।
हुरहुरिया-(हि०स्त्री०)एक प्रकार का पक्षी
हुरुट्टक-(सं०पु०) हाथी का अंकुश ।
हुरुमयी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का नाच
हुर्रा-(अ०पु०) एक प्रकार की हर्ष ध्वनि
हुल-(सं०पु०)एक प्रकार का दोधारा छुरा
हुलकना-(हिं०क्रि०) वमन करना,कैंकरना
हुलकी-(हि० स्त्री०) वमन,हैजे की बीमारी

हुलना-(हि०क्रि०) लाठी से ठेलना ।
हुलसना-(हिं०क्रि०) आनन्द से फूलना, उभड़ना, उठना, उमड़ना, बढना ।
हुलसाना-(हिं० क्रि०) हर्ष का उमग उत्पन्न करना ।
हुलसी-(हि०स्त्री०) आनन्द, हुलास, कुछ लोगों के अनुसार तुलसीदास की माता का नाम ।
हुलहुल-(हि० पु०) एक प्रकार का बरसाती पौधा ।
हुलहुला-(हि०पु०) अद्भुत बात,उपद्रव ।
हूला-(हि०पु०) लाठी की नोक या छोर।
हुलाना-(हि०क्रि०) लाठी से ठेलना ।
हुलाल-(हिं०स्त्री०) तरग, लहर ।
हुलास-(हिं० पु०) आनन्द का उमग, उत्साह, हौंसला, (स्त्री०) सुंघनी ।
हुलासदानी-(हि०स्त्री०) सुंघनी रखने की डिबिया ।
हुलासी-(हि०वि०) उत्साही, आनन्दी ।
हुलिया-(अ०पु०) आकृति, शक्ल, किसी मनुष्य के रूप रग आदि का विवरण, शकल सूरत और बदन पर के निशान वगैरह का ब्योरा ।
हुलु-(सं०पु०) मेढ़ा ।
हुलूक-(हि०पु०) एक जाति का बन्दर ।
हुलैया-(हि०स्त्री०) नाव का डूबने के पहले डगमगाना ।
हुल्ल-(सं०पु०) एक प्रकार का ताल ।
हुल्लड़-(हिं०पु०) शोरगुल,उपद्रव,ऊधम, दगा, बलवा, हलचल, आन्दोलन ।
हुल्लास-(हि०पु०) एक प्रकार का छन्द ।
हुश्-(हि० अव्य०) अनुचित बात बोलने पर रोकने के लिये यह शब्द कहा जाता है ।
हुश्कारना-(हि० क्रि०) कुत्ते को हुश् हुश् करके उसकाना ।
हुसियार-(हि०वि०) देखो होशियार ।
हुसैन-(अ०पु०) मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गये थे। शिया मुसलमानों में यह पूज्य हैं, मुहर्रम का त्योहार इन्हीं के शोक में मनाया

जाता है।
हुसैनी–(अ०पु०) अंगूर की एक जाति।
हुसैनी कान्हड़ा–(हिं०पु०) सपूर्ण जाति का एक राग।
हुस्न–(अ०पु०) सौन्दर्य, सुन्दरता, अनूठापन।
हुस्नदान–(हिं०पुं०) पानदान।
हुस्न परस्त–(फा० पुं०) सौन्दर्य का उपासक।
हुस्न परस्ती–(फा० स्त्री०) सौन्दर्य की उपासना।
हुस्यार–(हिं० वि०) देखो होशियार।
हुहुव–(स०नपु०) एक नरक का नाम।
हुहु–(स० पु०) एक गन्धर्व का नाम।
हू–(स०अव्य०) अहकार, अवज्ञा, शोक।
हूं–(हिं०अव्य०) स्वीकार सूचक शब्द, "है" का उत्तम पुरुष एक वचन का रूप।
हूंकना–(हिं०क्रि०) गाय का धीरे धीरे बोलना, सिसक कर रोना, किसी बात को याद करके रोना, वीरों की ललकारना।
हूंठा–(हिं० पु०) साढ़े तीन का पहाड़ा।
हूंड़ा–(हिं० स्त्री०) खेतों की सिंचाई में किसानों का परस्पर सहायता देना।
हूंस–(हिं० स्त्री०) ईर्ष्या, डाह, नजर, टोक, कोस, फटकार।
हूंसना–(हिं०क्रि०) नजर लगाना, ईर्ष्या से जलना, फट कारना, कोसना।
हूक–(हिं०स्त्री०) हृदय की पीड़ा, दर्द, खटका।
हूकना–(हिं० क्रि०) पीड़ा होना, दर्द से चौंक उठना।
हूचक–(हिं०पु०) युद्ध, लड़ाई।
हूटना–(हिं०क्रि०) हटना, टलना, पीठ फेरना।
हूठा–(हिं०पु०) भद्दी या गँवारू चेष्टा, ठेंगा किसी को चिढ़ाने के लिये अंगूठा दिखलाना।
हूड़–(हिं० वि०) असावधान, उजड्ड, अनाड़ी हठी, जिद्दी।
हूड़ा–(हिं०पु०) एक प्रकार का बास।
हूण–(स० पु०) एक प्राचीन असभ्य जाति जो चौथी शताब्दि में एशिया तथा युरोप के सभ्य देशों में आक्रमण करके फैली थी।
हूत–(स०वि०) बुलाया हुआ।
हून–(स०पु०) मद्रास प्रान्त में प्रचालित एक सोने की मुद्रा जो तौल में पचास ग्रेन होती है।
हूनिया–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की तिब्बती भेंड़।
हूबहू–(अ० वि०) ज्यों का त्यों, ठीक वैसाही।
हूर–(अ०स्त्री०) मुसलमानों के स्वर्ग की अप्सरा।
हूरव–(स०पु०) शृगाल, सियार।
हूराहूरी–(हिं० स्त्री०) एक त्योहार जो दीवाली के तीसरे दिन मनाया जाताहै।
हूल–(हिं० स्त्री०) लासा लगा हुआ चिड़िया फसाने का बास, शूल, भाले डंडे छुरे आदि की नोक से भोंकने की क्रिया (स्त्री०) कोलाहल, शोरगुल, आनन्द का शब्द, ललकार, आनन्द, खुशी।
हूलना–(हिं० क्रि०) लाठी भाले आदि की नोक को जोर से ठेलना या धँसाना गोदना, शूल उत्पन्न करना।
हूला–(हिं० पु०) शस्त्र आदि हूलने की क्रिया।
हूश–(हिं०वि०) अशिष्ट, असभ्य, गवार।
हूह–(हिं०स्त्री०) युद्धनाद, कोलाहल।
हूहू–(स०पु०) एक प्रकार के गन्धर्व।
हूहू–(हिं०पु०) अग्नि के जलने का शब्द धाँय, धाँय।
हृच्छय–(स०पु०) कन्दर्प, कामदेव।
हृच्छूल–(स० नपुं०) हृदय का शूल रोग।
हृच्छोक–(स०पु०) हृदय का शोक।
हृच्छोष–(स० पु०) हृदय के भीतर की सूजन।
हृत्–(स०स्त्री०) हृदय, वक्षःस्थल।
हृत–(सं० वि०) हरण किया हुआ, लिया हुआ।
हृति–(स०स्त्री०) हरण, नाश, लूट।
हृत्कम्प–(स० पु०) हृदय का कम्प, दिल की धड़क, अत्यन्त भय, जी दहलना
हृत्ताप–(स०पु०) हृदय का उत्ताप।
हृत्पिण्ड–(स०पु०) हृदय का कोप, कलेजा
हृत्पीडन–(स०नपु०) छाती की दर्द।
हृत्पीडा–(स० स्त्री०) हृदय की पीड़ा।
हृत्पुण्डरीक–(स०नपु०) हृदय रूपी कमल
हृत्प्रतिष्ठ–(स०वि०) हृदय स्थित।
हृत्पुष्कर–(स०नपु०) हृदय रूपी पद्म।
हृत्प्रिय–(स०पु० हृदय का प्रिय, दिलीदोस्त
हृद्–(स० नपु०) हृदय, मन।
हृदय–(स०नपु०) वक्षःस्थल, चेतना स्थान, दिल, कलेजा, अन्तःकरण, मन, विवेक बुद्धि, अन्तरात्मा, किसी वस्तु का सार भाग, साराश, तत्व, गूढ़ रहस्य, अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, प्राणाधार।
हृदयग्रन्थि–(सं०पु०) हृदय का बन्धन।
हृदयग्रह–(स०पु०) कलेजा फड़कने का रोग
हृदयग्राह्य–(स०पु०) मनोहर, सुन्दर।
हृदयग्राही–(स०वि०) मन को लुभाने वाला, रुचिकर।
हृदयङ्गम–(स०नपु०) मन में बैठा हुआ, उपयुक्त, मनोहर, सुन्दर।
हृदय चौर–(स०पु०) मन को मोहने वाला
हृदयज–(स०वि०) अन्तःकरण से उत्पन्न
हृदयज्ञ–(स० वि०) मन के भाव को जानने वाला।
हृदय दाही–(स०वि०) हृदय पीड़क।
हृदय निकेत–(स०पु०) मनसिज, कामदेव
हृदय प्रमाथी–(स० वि०) मन को मोहने वाला।
हृदय प्रिय–(स०वि०) अत्यन्त प्यारा।
हृदय वल्लभ–(स०पु०) प्रियतम, प्रेमपात्र
हृदयवान्–(हिं०वि०) प्रेमी, रसिक।
हृदय विदारक–(स०वि०) अत्यन्त शोक करुणा अथवा दया उत्पन्न करने वाला
हृदय वृत्ति–(स०स्त्री०) अन्तःकरण की वृत्ति
हृदयवेधी–(स०वि०) मन को अत्यन्त मोहित करने वाला, बहुत बुरा लगनेवाला
हृदय व्याधि–(स०पुं०) हृदय का रोग।
हृदयशोक–(स०पु०) हृदय का कष्ट या शो

हृदयस्थ-(स०वि०) हृदय में रहने वाला
हृदयस्थान-(स०नपुं०) वक्षःस्थल।
हृदयस्पर्शी-(स०वि०)हृदय पर प्रभाव डालने वाला, मन में दया उत्पन्न करने वाला।
हृदय हारी-(सं० वि०) मन मोहने वाला, जी को लुभाने वाला।
हृदयालु-(स०वि०) सहृदय सुशील।
हृदयेश-(स०पु०) भर्ता,स्वामी,प्रेमपात्र।
हृदयेश्वर-(स०पु०) पति, स्वामी।
हृदयेशा-(स०स्त्री०) भार्या, पत्नी।
हृदयोन्मादिनी-(स० वि०) हृदय को उन्मत्त करने वाली।
हृदि-(स०नपु०) हृदय(क्रि०वि०) हृदय में
हृदिस्पृश-(सं० वि०) सुन्दर, मनोहर।
हृद्ग-(स०वि०) हृदय में जाने वाला
हृद्गत-(स० वि०) आन्तरिक, मन का, चित्त पर फैला हुआ, रुचिकर, प्रिय।
हृद्ग्रह-(स०पु०) हृदय की पीड़ा।
हृद्दाह-(स०पु०) कलेजे की जलन।
हृद्य-(स०पु०) जीरा, दालचीनी, कैथ, दही, महुवे की शराब(वि०) हृदय का, भीतरी, हृदय को अच्छा लगने वाला, सुन्दर, सुहावना।
हृद्य गन्ध-(स०नपु०) सफेद जीरा, बेल का पेड़।
हृद्य गन्धा-(स०स्त्री०) अजमोदा।
हृद्यर्ता-(सं०स्त्री०) सद्भाव, प्रेम।
हृद्यांशु-(सं०पु०) चन्द्रमा।
हृद्या-(स० स्त्री०) सलई का पेड़, पान की लता, जीरा, एक प्रकार का गुलाब, जटामासी।
हृद्रुज-(स०स्त्री०) हृदय की पीड़ा।
हृद्रोग-(स०पु०) हृदय का रोग।
हृद्बोध-(स०पु०) विशेष रूप से जानकार
हृन्मोह-(स०पु०) हृदय का मोह।
हृल्लास-(स०पु०) हिक्का रोग, हिचकी।
हृल्लेख-(स०पु०) ज्ञान, तर्क।
हृल्लेखा-(स०स्त्री०) उत्सुकता,व्याकुलता
हृषि-(स०स्त्री०) आनन्द, हर्ष, कान्ति।
हृषित-(स० वि०) विस्मृत, पुलकित, प्रणत।

हृषीक-(स०नपु०) विषय ग्राहक इन्द्रियाँ
हृषीकनाथ-(स० पु०) विष्णु।
हृषीकेश-(स० पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण, पूस का महीना, हरिद्वार के पास का एक तीर्थ स्थान।
हृषीवत्-(सं० वि०) हर्षयुक्त, प्रसन्न।
हृष्ट-(स० वि०) हर्षित, आनन्द युक्त, पुलकित, विस्मित।
हृष्टपुष्ट-(स०वि०) मोटा ताज़ा।
हृष्टमानस-(स०त्रि०) प्रसन्न चित्त।
हृष्टरोमन्-(स०त्रि०) रोमाञ्चित, पुलकित
हृष्टि-(स० स्त्री०) हर्ष, प्रसन्नता, गर्व से फूलना।
हृष्यका-(स० स्त्री०) सगीत में एक प्रकार की मूर्छना।
हे-(स० अव्य०) सम्बोधन का शब्द जो पुकारने में नाम लेने के पहले बोला जाता है।
हेंहें-(हिं० पु०) धीरे धीरे हँसने का शब्द, हीनता सूचक शब्द, गिड़गिड़ाने की आवाज।
हेंगा-(हिं०पु०) वह चौड़ा पाटा जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर की जाती है।
हेंगी-(हिं० स्त्री०) छोटा हेंगा।
हेकड़-(हि० वि०) हृष्टपुष्ट, मज़बूत, उजड्ड, अक्खड़, प्रचण्ड, प्रबल, तौल में पूरा।
हेकड़ी-(हि० स्त्री०) प्रचण्डता, उग्रता, अक्खड़पन, जबरदस्ती, बलात्कार।
हेच-(फा०वि०) तुच्छ, निःसार, निःसत्व।
हेठ-(हिं०पु०) बाधा, पीड़ा।
हेठा-(हिं०वि०) तुच्छ, नीचा, घटकर, हेठापन-तुच्छता, नीचता।
हेठी-(हिं० स्त्री०) मानहानि, अप्रतिष्ठा।
हेड-(अं० वि०) प्रधान (पु०) ऊँचा अफसर।
हेडक्वार्टर-(अं० पु०) सदर, किसी अधिकार का प्रधान स्थान।
हेडिङ्ग-(अं०स्त्री०) किसी लेखका शीर्षक।
हेडस-(स०नपु०) क्रोध, गुस्सा।
हेड़ा-(हिं०पु०) मास, गोश्त।

हेड़ी-(हि० स्त्री०) चौपायों का समूह जिसको बनजारे बेचने के लिये लेकर चलते हैं (पु०) शिकारी।
हेत-(हिं०पु०) देखो हेतु, कारण, सबब।
हेति-(स०स्त्री०) अस्त्र, हथियार, आग की लपट, वज्र, शिखा, धनुष की टकार, तेज यन्त्र, औजार, अङ्कुर, अँखुवा।
हेतिमत् (स०त्रि०) अस्त्र युक्त।
हेतु-(स०पु०) प्रयोजन, कारण, न्याय के अनुसार व्यापक ज्ञान, उद्देश्य, अभिप्राय, तर्क, उत्पन्न करने वाला व्यक्ति अथवा वस्तु, लगाव, अनुराग, वह अर्थालकार जिसमें कारण ही कार्य कहा जाता है।
हेतुक-(स०पु०) कारण सबधी।
हेतुमान्-(हिं० वि०) जिसका कोई हेतु या कारण हो।
हेतुरूपक-(स० नपु०) वह अलकार जिसमें हेतु द्वारा गाम्भीर्य आदि दरसाया जाता है।
हेतुवाद-(स०पु०) तर्क विद्या, नास्तिकता, कुतर्क।
हेतुवादी-(स०त्रि०) तर्क करने वाला, नास्तिक।
हेतुविद्या, हेतुशास्त्र-(स०स्त्री०) तर्कशास्त्र
हेतुहेतुमद्भाव-(स० पु०) कार्य और कारण का सम्बन्ध।
हेतुहेतुमद्भूतकाल-(स०पु०) व्याकरण में भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का होना कहा जाता है जिसमें पहली दूसरे पर निर्भर हो यथा-यदि तुम जल्दी गये होते तो तुमको गाड़ी मिल गई होती।
हेतूत्प्रेक्षा-(स० स्त्री०) वह उत्प्रेक्षा अलकार जहाँ हेतु द्वारा उत्प्रेक्षा होती है।
हेतूपमा-(स० स्त्री०) वह उपमा अलकार जिसमें हेतु द्वारा उपमा दी जाती है।
हेत्वन्तर-(स० नपु०) हेतु कथन।
हेत्वपह्नुति-(स० स्त्री०) वह अपह्नुति

अलंकार जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी दिया जाता है।
हेत्वाभास-(सं० पु०) हेतुदोष, जो यथार्थ में हेतु नहीं है परन्तु फिर भी हेतु की तरह प्रतीत होता है, झूठा हेतु या कारण।
हेम-(सं० नपु०) सुवर्ण, सोना, एक माशे की तोल, बुद्ध का एक नाम, बदामी रंग का घोड़ा, सोने का टुकड़ा, हिम, पीला।
हेमक-(सं० नपु०) सुवर्ण युक्त।
हेमकन्दल-(सं०पु०) प्रवाल, मूंगा।
हेमकर-(सं०पु०) शिव, सूर्य।
हेमकर्ता-(सं०पु०) सुनार।
हेमकान्ति-(सं० स्त्री०) हल्दी, आमा-हलदी।
हेमकान्ति-(सं० स्त्री०) सोने के समान कान्ति वाला।
हेमकार-(सं० पु०) सुनार।
हेमकूट-(सं० पु०) हिमालय के उत्तर का एक पर्वत।
हेमकेली-(सं० पु०) अग्नि, आग।
हेमकेश-(सं०पु०) शिव, महादेव।
हेमगर्भ-(सं० वि०) जिसके बीच में सुवर्ण हो, उत्तर दिशा का एक पर्वत।
हेमगिरि-(सं० पु०) सुमेरु पर्वत।
हेमघ्न-(सं० पु०) सीसक, सीसा नामक धातु।
हेमघ्नी-(सं० स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।
हेमचन्द्र-(सं० पु०) एक प्रसिद्ध जैन आचार्य का नाम।
हेम चूर्ण-(सं०नपु०) सोने की बुकनी।
हेमज-(सं०पु०) वङ्ग, रांगा।
हेमज्वाल-(सं० पु०) अग्नि।
हेमतरु-(सं०पु०) धतूरा।
हेमतार-(सं० नपु०) तुत्य, तूतिया।
हेमतुला-(सं० स्त्री०) सुवर्ण का तुला दान।
हेमदीनार-(सं० पु०) सोने की मुद्रा, अशर्फी, हेमदुग्ध-गूलर।
हेमधन्वा-(सं० पु०) ग्यारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।
हेमधान्यक-(सं० पु०) तिल का पौधा
हेमनाभि-(सं०पु०) वह रथ जिसका धुरा सोने का हो।
हेमनेत्र-(सं० पु०) यक्ष।
हेमन्त-(सं० पु०) अगहन और पूस के महीने।
हेमन्तनाथ-(सं०पु०) कपित्थ, कैथ।
हेमपर्वत-(सं०पु०) सुमेरु पर्वत।
हेमपुष्प-(सं० नपु०) जवापुष्प, नागकेशर, अमलतास, चंपा का फूल।
हेमपुष्पी-(सं० स्त्री०) इन्द्रवारुणी, अमलतास।
हेमप्रभ-(सं० त्रि०) सोने के समान प्रभा युक्त।
हेमप्रभा-(सं०स्त्री०) विद्याधरी।
हेममय-(सं०वि०) सुवर्ण निर्मित, सोने का बना हुआ।
हेममाली-(सं०पु०) एक राक्षस जो खर का सेनापति था।
हेममित्र-(सं० नपु०) फिटकीरी।
हेमल-(सं० पु०) कुकलास, गिरगिट।
हेमलता-(सं० स्त्री०) सोमलता, ब्राह्मी शाक।
हेमवल-(सं०नपु०) मुक्ता, मोती।
हेमशङ्ख-(सं० पु०) विष्णु।
हेमसुता-(सं०स्त्री०) पार्वती, दुर्गा।
हेमा-(सं० स्त्री०) एक अप्सरा का नाम, मजीठ।
हेमाङ्ग-(सं० पु०) गरुड़, विष्णु, चम्पक वृक्ष, सुवर्ण मय शरीर।
हेमाङ्गद-(सं० पु०) वसुदेव के एक पुत्र का नाम।
हेमाचल-(सं० पु०) सुमेरु पर्वत,
हेमाद्रि-(सं० पु०) सुमेरु पर्वत।
हेमाम्बुज-(सं० नपु०) सुवर्ण पद्म।
हेमाल-(सं० पु०) एक राग का नाम।
हेमियानी-(फा०स्त्री०) रुपया पैसा रखने की जालीदार थैली जो जो कमर में बांधी जाती है।
हेम्रा-(सं० स्त्री०) एक सङ्कीर्ण राग का नाम।
हेय-(सं० वि०) त्याज्य, छोड़ने योग्य, निकृष्ट, बुरा।
हेर-(सं० वि०) किरीट, हल्दी (हिं० स्त्री०) ढूंढ, तलाशी, हेरना (हिं० क्रि०) तलाश करना, खोजना जाच पड़ताल करना, हेरना फेरना इधर उधर करना, अदल बदल करना।
हेरफेर-(हिं० पु०) चक्कर, घुमाव, बातों का आडम्बर, अन्तर, फर्क, उलट पुलट, कुटिल युक्ति, दाँव पेंच।
हेरम्ब-(सं०पु०) गणेश, भैंसा, धीरोद्धत नायक।
हेरम्ब जननी-(सं० स्त्री०) पार्वती।
हेरवा-(हिं० पु०) खोज, तलाश।
हेरवाना-(हिं० क्रि०) तलाश करना, ढुंढवाना।
हेराना-(हिं० क्रि०) अभाव होना, खोजाना, नष्ट होना, लापता होजाना, मन्द पड़ना, अपनी सुदबुध खोदेना, लीन होना, तन्मय होना, देखो हेरवाना।
हेराफेरी-(हिं० स्त्री०) अदल बदल, इधर उधर होना या करना।
हेरिक-(सं०पु०) भेद लेने वाला दूत।
हेरियाना-(हिं० क्रि०) जहाज के अगले पाल की रस्सियों को तानकर बाँधना।
हेरी-(हिं०स्त्री०) पुकार, हेरी देना-पुकारना।
हेरुक-(सं० पु०) बुद्धदेव गणेश।
हेल-(हिं० पु०) घनिष्ठता, मेलजोल, कीचड़, मैला, गलीज, घृणा।
हेलन-(सं०पु०) अवज्ञा करना, अपराध, क्रीड़ा करना, अवनति, नमन।
हेलना-(हिं०क्रि०) क्रीड़ा करना, विनोद करना, परवाह न करना, हँसी उड़ाना, ध्यान न देना, प्रवेश करना, पैठना, तैरना, तुच्छ समझना अवज्ञा करना।
हेलमेल-(हिं० पु०) मेलजोल, मित्रता, घनिष्ट सबन्ध, परिचय, संग साथ।
हेलया-(सं० अव्य०) खेलमें, सहज में।
हेला-(सं० स्त्री०) स्त्रियों की मनोहर चेष्टा, अवज्ञा, तिरस्कार, प्रेमकी क्रीड़ा, चाँदनी, क्रीड़ा, खेल, लापरवाही,

(हिं०पु०) पुकार, चिल्लाहट, आक्रमण, चढाई, ठेलने का काम खेप, बारी, मैला उठाने का काम, (हिं० पु०) हलालखोर, मेहतर ।
हेलन–(हिं०पु०)डाडे को नाव पर रखना।
हेलाल–(अ०पु०) दूज का चाँद, बधी हुई पगड़ी की ऐंठन ।
हेलि–(स०पु०) सूर्य, अवज्ञा, आलिङ्गन।
हेलितव्य–(स०वि०)अवज्ञा करने योग्य।
हेलिन–(हिं० स्त्री०) मेहतरानी, डोमिन।
हेली–(हिं० स्त्री०) सहेली, सखी ।
हेलुवा–(हिं०पु०) पानी में खडे होकर एक दूसरे पर पानी का छींटा फेंकना।
हेष–(स०नपु०) घोडे का हिनहिनाना ।
हेहे–(स०अव्य०) सम्बोधन सूचक शब्द ।
हेवत–(हिं० पु०) देखो हेमन्त ।
हैं–(हिं० अव्य०) एक आश्चर्य सूचक शब्द असम्मति सूचक शब्द, (क्रि०) "होना" क्रिया के वर्तमान रूप "है" का बहुवचन ।
हैंगिंग लैंप–(अ पु०) छत में लटकाने का लप ।
हैंडबैग–(अ०पु०) हाथ में लटका कर लेजाने का छोटा बेग ।
हैंडिल–(अं० पु०) दस्ता, मुठिया ।
हैंस–(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का छोटा पौधा ।
हैं–(हि०क्रि०) "होना" क्रिया के वर्तमान काल का एक वचन का रूप ।
हैकड़–(हि० वि०) देखो हेकड़ ।
हैकल–(हि०स्त्री०) घोडे के गले में पहरने का एक गहना, गलेमें पहरने की एक प्रकार की माला, हुमेल ।
हैजम–(हिं० स्त्री०) खड्ग, तलवार ।
हैजा–(अ०पु०) विशूचिका रोग, दस्त कै की बीमारी ।
हैट–(अ०पु०) अग्रेजी टोपी ।
हैटा–(हिं० पु०) एक प्रकार का अगूर ।
हैतुक–(स० त्रि०) जिसका कोई हेतु हो, निर्भर, अवलम्बित, (पु०) सन्देहकर्ता, नास्तिक, तार्किक, कुतर्की ।
हैन–(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की घास ।
हैफ–(अ०अव्य०) खेद या शोक सूचक अव्यय, अफसोस ।
हैबत–(अ०स्त्री०) भय, त्रास ।
हैबतनाक–(अ०वि०) भयकर, डरावना ।
हैबर–(हिं०पु०) अच्छा घोड़ा ।
हैम–(स० नपु०) प्रात काल के ओस का पानी, (पु०) शिव, हिमालय, ओस, पाला, (वि०) सुवर्णमय, सोनेका, सुनहले रग का, पाले का, जाडे का ।
हैमन–(स० वि०) हेमन्त ऋतु में होने वाला, सोने का ।
हैमन्त–(सं०वि०) हेमन्त ऋतु सम्बन्धी ।
हैमवत–(स०नपु०) हिमालय सबधी, हिमालय का, हिमालय का निवासी ।
हैमवती–(स० स्त्री०) पार्वती, उमा, हर्रे, गगा, हल्दी, थूहर, खिरनी ।
हैमा–(स०स्त्री०) ज़र्द चमेली ।
हैमी–(स० स्त्री०) केतकी, (वि०) सोने की बनी हुई ।
हैरण्य–(स०वि०)हिरण्य सबंधी, सोनेका।
हैरत–(अ०स्त्री०) आश्चर्य, अचरज ।
हैरम्ब–(स०वि०) गणेश सबधी, (पु०) गणेश का उपासक ।
हैरान–(अ० वि०) परेशान, चकित, भौचक्का, व्यग्र, घबड़ाया हुआ ।
हैवान–(अ० पु०) पशु, जानवर, जड़ मनुष्य, बेवकूफ आदमी ।
हैवानी–(अ०वि०) पशु सबधी, पशु के करने योग्य ।
हैसियत–(अ० स्त्री०) शक्ति, योग्यता, सामर्थ्य, आर्थिक दशा, वित्त, मूल्य, कीमत, श्रेणी, दरजा, मान, प्रतिष्ठा, धन दौलत ।
हैहय–(स० पु०) सहस्त्रार्जुन पश्चिम, दिशा का एक पर्वत, एक क्षत्रिय वश का नाम ।
हैहयराज, हैहयाधिराज–(स० पु०) सहस्त्रार्जुन ।
हैहै–(हिं० अव्य०) हाय, अफसोस ।
हों–(हिं०क्रि०) 'होना' क्रिया का सम्भाव्य काल का बहुवचन का रूप ।
होंठ–(हिं० पु०) ओष्ठ, ओंठ , होंठ चबाना–क्रोध दिखलाना ।
होंठल–(हिं०वि०) मोटे मोटे ओठ वाला।
होंठी–(हिं० स्त्री०) किनारा, बार, छोटा टुकड़ा ।
हो–(स०पु०) पुकारने का शब्द, विस्मय, (हिं०क्रि०) "होना" क्रिया का सम्भाव्य काल का तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप, है, था ।
होई–(हिं० स्त्री०) दीवाली के आठ दिन पहले होने वाला एक त्योहार जिसमें स्त्रियाँ सन्तान के क्षेम कुशल के लिये व्रत करती हैं ।
होगल–(स०पु०) एकप्रकार की नरकट ।
होजन–(हि० पु०) कपड़ों में बनाया जाने वाला एक प्रकार का किनारा ।
होटल–(अ० पु०) वह स्थान जहाँ पर ठहरने तथा भोजन करने का प्रबन्ध रहता है, भोजनालय ।
होड़–(हि० स्त्री०) शर्त, बाजी, स्पर्धा, बराबर होने का प्रयत्न, बराबरी, ज़िद, हठ ।
होड़ाबादी, होडा होड़ी–(हिं०स्त्री०) चढा ऊपरी, दूसरे की बराबरी करने का प्रयत्न, शर्त, बाज़ी, लागडाँट ।
होत–(हि०स्त्री०) सामर्थ्य, सम्पन्नता, वित्त
होतब–(हिं०पु०) होनहार, होनेवाला ।
होतव्य–(हिं०पु०) भवितव्य, होनहार ।
होतव्यता–(हि०स्त्री०)भवितव्यता,होनहार
होता–(हि०पु०) यज्ञादि में आहुति देने वाला,पुरोहित,यजमान,(वि०) यज्ञकर्ता ।
होत्र–(स०नपु०) हवि, होम ।
होत्र वहन–(स०पु०) अग्नि ।
होत्री–(हिं०पु०) देखो होता ।
होनहार–(हिं० वि०) भावी, जो होने वाला हो, अच्छे लक्षणों का, जिसमें उन्नति के लक्षण हों (पु०) भवितव्यता ।
होना–(हि० क्रि०) अस्तित्व रखना, उपस्थित रहना, एक रूप से दूसरे रूप में आना, भुगतना, घटित किया जाना, बनाया जाना, कोई संयोग आ पड़ना, कोई काम निकलना, हानि पहुँचना, कहीं का हो रहना–कहीं पर आकर

टिक जाना, कहीं से होते हुए-किसी मार्ग से जाते हुए, हो आना-किसी से भेंट करके वापस आना, हो जाना-पूर्ण होना।

होनी-(हिं० स्त्री०) उत्पत्ति, पैदायश, होने वाली घटना, वृत्तान्त, हाल, हो सकने वाली बात, भवितव्यता।

होबर-(हिं०पु०) एक प्रकार की चिड़िया

होम-(स० पु०) आहुति देने का कर्म, किसी देवता के उद्देश्य से अग्नि में तिल जव आदि डालना, यज्ञ, होम कर देना-भस्म करना, नष्ट कर देना।

होमकाष्ठी-(स० स्त्री०) यज्ञ की अग्नि सुलगाने की धौंकनी।

होम कुण्ड-(हिं०पु०) वह कुण्ड या गड्ढा जिसमें हवन किया जाता है।

होम तुरङ्ग-(स०पु०) अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा।

होमदुह्-(स० पु०) होम के लिये दूध दुहने वाला, होमधेनु-(स० स्त्री०) वह गाय जिसके घी से हवन होता है।

होमना-(हिं०क्रि०) हवन करना, छोड़ देना, नष्ट करना, बरबाद करना।

होमाग्नि-(सं० पुं०) यज्ञ की अग्नि।

होमियोपैथी-(अं० स्त्री०) पाश्चात्य चिकित्सा का एक विधान जिसमें विषों की अत्यल्प मात्रा रोग में दिये जाते हैं, वस्तुतः इस पद्धति में "विषस्य विषमौषधम्" का सिद्धान्त है।

होमीय-(स०वि०) होम सम्बन्धी।

होर-(हिं०वि०) ठहरा हुआ,रुका हुआ।

होरमा-(हिं० पु०) एक प्रकार की घास।

होरसा-(हिं०पु०) पत्थर की गोल चिकनी चौकी जिसपर चन्दन रगड़ा जाता है। अथवा रोटी बनाई जाती है, चौका।

होरहा-(हिं०पु०) चने का हरा दाना।

होरा (स० स्त्री०) एक राशि या लग्न का आधा भाग, दिन रात का चौबीसवा भाग, अढाई घड़ी का समय, जन्म कुण्डली, चीठी।

होरिल-(हिं० पु०) नवजात बालक, नया पैदा लड़का।

होरिहार-(हिं०पु०) होली खेलने वाला

होरी-(हि०स्त्री०) वह बड़ी नाव जो जहाज पर के माल को उतारने चढ़ाने के काम में आती है, देखो होली।

होल-(हि० पु०) एक प्रकार की चरी जो चौपायों और घोड़ों को खिलाई जाती है।

होलक-(हिं० पु०) आग पर भूनी हुई हरे चने मटर आदि की फलिया।

होला-(स० स्त्री०) होली का त्योहार, (पु०) सिक्ख लोगों की होली, आग में भूनी हुई हरे चने मटर आदि की फली, चने का हरा दाना।

होलाक-(स० पु०) आग की गरमी पहुँचा कर पसीना लाने की विधि।

होलाका-(स० स्त्री०) वसन्तोत्सव, होली का त्योहार, फाल्गुन मास की पूर्णमासी

होलाष्टक-(स० पु०) होली के त्योहार के पहले के आठ दिन जिनमें विवाहादि कृत्य वर्जित हैं।

होलिका-(स० स्त्री०) होली का त्योहार, लकड़ी घास फूस आदि का ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है, एक राक्षसी का नाम।

होली-(हिं० स्त्री०) हिन्दुओं का एक त्योहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है इसमें लोग रंग और कुंकुम डालते हैं, होली खेलना-एक दूसरे के ऊपर रंग फेकना, या अबीर लगाना, होली में गाये जाने वाली गीत,

होल्डर-(अं०पु०) अंग्रेजी कलम का वह भाग जिसमें लिखने की निब या जीभी खोंसी जाती है।

होल्दना-(हि० क्रि०) धान के खेत में से घास पात हटाने के लिये हल चलाना।

होश-(फा०पु०) ज्ञान या बोध की वृत्ति, चेतना, संज्ञा, स्मरण, सुध, बुद्धि, अक्ल, होश आजाना-व्याकुल होना, घबड़ा जाना, होश करना-सचेत होना, होश दंग होना-आश्चर्यित होना, घबड़ा जाना, होश संभालना-आवश्यकता पड़ने पर सजग होना, होश में आना-चेतना प्राप्त करना, होश की दवा करो-समझ बूझ कर बातें करो, होश ठिकाने होना-व्याकुलता हट जाना, सजा पाकर राह पर आ जाना, होश दिलाना-स्मरण कराना।

होशमन्द, होशियार-(फा० वि०) बुद्धिमान, समझदार, निपुण, धूर्त, चालाक, सचेत, सावधान।

होशियारी-(फा०स्त्री०)बुद्धिमानी, समझ, निपुणता, दक्षता, युक्ति, कौशल।

होस-(हिं०पु०) देखो होश।

हो हो-(अव्य० वि०) सम्बोधन का शब्द।

हौं-(हिं० सर्व०) ब्रजभाषा में "मैं" के लिये प्रयोग होता है, (क्रि०) हूँ।

हौंकना-(हिं० क्रि०) आग सुलगाना, धौंकना, हाफना, गरजना।

हौंस-(हिं०स्त्री०) देखो हौस।

हौं-(हि० अव्य०) स्वीकृति सूचक शब्द, हा, "होना" क्रिया का भूत काल का रूप, था।

हौआ-(हिं० पुं०) लड़को को डराने के लिये एक भयानक प्राणी का नाम, हाआ, हौवा।

हौका-(हि०पु०) प्रबल लोभ या तृष्णा भुक्खड़पन, खाने की बड़ी लालच।

हौज-(अ० पु०) पानी जमा रहने का चहबच्चा, कुण्ड, मिट्टी का बड़ा बरतन या नाद।

हौतभुज-(स०पु०) नक्षत्र वर्ग।

हौताशन-(स० वि०) अग्नि सम्बन्धी।

हौतृक-(स०वि०) होता सम्बन्धी।

हौत्र-(स०पु०) होता का भाव या कर्म।

हौद-(हिं०पु०) कुण्ड, छोटा जलाशय, मिट्टी का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन, नाद।

हौदा-(फा० पुं०) हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला आसन जिसमें बैठने तथा पीठ ठेकने के लिये गद्दी लगी रहती है, चौपायों को चारा आदि खिलाने का पत्थर मिट्टी आदि का बना हुआ बड़ा बरतन।

हौरा–(हिं० पु०) हल्ला, कोलाहल, शोरगुल।

हौल–(अ०पु०) त्रास, भय, डर, हौल पैठना–चित्त में भय समा जाना।

हौलदिल–(फा०स्त्री०)कलेजे की धड़कन, दिल धड़कने का रोग (वि०) जिसका दिल धड़कता हो, डरा हुआ, दहशत में पड़ा हुआ,व्याकुल, घबड़ाया हुआ।

हौलदिली–(फा०वि०)डरपोक,बुज़दिल।

हौलनाक–(फा०वि०)भयानक,डरावना।

हौली–(हिं०स्त्री०) शराब उतारने तथा बेंचने का स्थान, आबकारी।

हौले–(हिं०क्रि०वि०) मन्द गति से, धीरे धीरे से, हलके से।

हौवा–(अ०स्त्री०) पैगम्बरी मत के अनुसार सबसे पहले स्त्री जो पृथ्वी पर आदम के साथ उत्पन्न की गई थी।

हौस–(हिं० स्त्री०) हवास, चाह, इच्छा, अभिलाषा, कामना, उमग, उत्साह, लालसा, प्रबल इच्छा।

हौसला–(अ० पु०) आनन्द पूर्ण साहस, उमग, उत्साह, उत्कट इच्छा, जोश और हिम्मत, प्रफुल्लता।

हौसलामद–(फा०वि०) उत्साही,साहसी, उमग वाला, लालसा रखने वाला।

ह्यस–(स०अव्य०)गत दिन,कल।

ह्यस्तन–(स०वि०) कल का।

ह्याँ–(हिं०अव्य० यहाँ, इस स्थान पर।

ह्यो–(हि०पु०), देखो हियो।

ह्रद–(स०पु०) बड़ा तालाब या झील, वह स्थान जो चारो ओर जमीन से घिरा हो, सरोवर, तालाब,मेढ़ा,किरण।

ह्रदग्रह–(स०पु०)कुम्भीर नामक जल जन्तु

ह्रदिनी–(स०स्त्री०) नदी, बिजली।

ह्रसित–(स० वि०) छोटा किया हुआ, घटा हुआ।

ह्रस्व–(स०वि०) छोटे परिमाण का, नाटा, छोटे आकार का, कम, थोड़ा, नीचा, तुच्छ, (स०नपु०) एक प्रकार का सींग, हीराकसीस, व्याकरण में वे स्वर जो बहुत खींच कर नहीं बोले जाते।

ह्रस्वक–(स० पु०) सुपारी का वृक्ष।

ह्रस्वकर्ण–(स०पु०) राक्षस।

ह्रस्वता–(स० स्त्री०) अल्पता, लघुता, छोटाई।

ह्रस्वदा–(स० स्त्री०) सलई का पेड़।

ह्रस्व पर्ण–(स०पु०) पाकर का वृक्ष।

ह्रस्वपर्व–(स०पु०) काला गन्ना।

ह्रस्वफल–(स० पु०) खजूर या छुहारा,

ह्रस्वमूला–(स० स्त्री०) ऊटकटारा।

ह्रस्वा–(स०स्त्री०) वनमूग,गुलसकरी।

ह्रस्वाङ्ग–(सं० वि०) नाटा, ठेंगना।

ह्राद–(स०पु०) शब्द, ध्वनि, मेघ की गर्जना, (वि०) गरजने वाला।

ह्रादिनी–(सं०स्त्री०) विद्युत्,बिजली,नदी।

ह्रास–(स०पु०) शब्द, आवाज, क्षीणता, कमी, घटी, शक्ति का कम होना।

ह्रासन–(स०नपु०) शब्द, आवाज,घटी।

ह्री–(सं०स्त्री०) लज्जा, शर्म, यक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म को व्याही थी।

ह्रीक–(स०पु०) नेवला।

ह्रीका–(स०स्त्री०) त्रास, डर, लज्जा।

ह्रीण–(स०वि०) लज्जित, शरमिन्दा।

ह्रीत–(स० वि०) लजाया हुआ।

ह्रीति–(स० स्त्री०) लज्जा, शर्म।

ह्रीमत्–(स०वि०) लज्जा युक्त, शरमीला।

ह्रीमान्–(हिं०वि०) लज्जाशील, शर्मदार।

ह्रीमूढ–(स०वि०) लज्जा से दबा हुआ।

ह्रीवेर–(स० नपु०) एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य, सुगन्धवाला।

ह्रुत्–(स० स्त्री०) हिंसा करने वाला।

ह्रेषाण–(स०नपु०) गमन, गति।

ह्लाद–(स०पु०) आनन्द,खुशी, हिरण्यकश्यपु के एक पुत्र का नाम।

ह्लादक–(स०त्रि०) प्रसन्न करने वाला, आनन्द देने वाला।

ह्लादन–(स० नपुं०) आह्लाद, खुशी (पु०) महादेव, शिव।

ह्लादिका–(स०स्त्री०) आनन्द देने वाली।

ह्लादिनी–(स० स्त्री०) ईश्वर की एक शक्ति का नाम, बिजली, वज्र, एक नदी का नाम।

ह्लादुक–(स० वि०) प्रसन्न, खुश।

ह्लेषा–(स०स्त्री०) घोडे की हिनहिनाहट

ह्लन–(स०पु०) इधर उधर झुकना, थरथराहट।

ह्वान–(स०नपु०) आह्वान, बुलावा।

ह्वा–(हिं०अव्य०) वहा, उस स्थान पर।

ह्विप्–(अ० पु०) चाबुक, कोचवान, वह जो व्यवस्थापिता सभा अथवा पार्लमेन्ट में किसी महत्व के विषय में वोट देने के लिये अधिक से अधिक सख्या में सदस्यों को उपस्थित करा देता है।

ह्विस्की–(अ० स्त्री०) एक प्रकार की अंग्रेज़ी शराब।

ह्वेल–(अ०पु०) एक प्रकार का मछली के आकार का बहुत बड़ा स्तनपायी जन्तु, तिमिङ्गल।

मुहावरे और लोकोक्तियां

अ
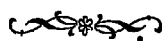
अङ्क देना-आलिंगन करना, गले लगाना।

अकड़ दिखाना-अभिमान करना, गर्व करना।

अक्ल का पुतला-बड़ा बुद्धिमान पुरुष।

अक्ल पर परदा पड़ना-बुद्धि भ्रष्ट होना, अक्ल मारी जाना।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना-नाना प्रकार के विचार करना।

अक्ल चकराना-बुद्धि काम न करना, समझ में न आना।

अक्ल मारी जाना-बुद्धि भ्रष्ट होना।

अक्ल का दुश्मन-नासमझ, बुद्धिहीन, वेवकूफ।

अक्ल चरने जाना-बुद्धि का काम न करना।

अक्ल पर पत्थर पड़ना-भले बुरे का ज्ञान न होना, मति-भ्रष्ट या विवेक रहित होना।

अखाड़े मे आना-(उतरना) मुकाबला करना।

अखाडा मारना-विजय प्राप्त करना, किसी कार्य का सिद्ध होना।

अखाड़े से भागना-हारकर चले जाना।

अखाड़ा जमाना-आमोद प्रमोद के लिये एकत्रित होना।

अगर मगर करना-तरह तरह के बहाने करना।

अंग अंग ढीला होना-बहुत थक जाना।

अंग अंग ढीला करना-अति शिथिल कर देना।

अंग अंग मुस्कुराना-अति प्रसन्न होना, बहुत खुश होना।

अंग न लगना-भोजन का पुष्टिकारक प्रभाव शरीर में न आना, काफी खाना खाने पर भी दुबला होना।

अंगारे उगलना-क्रोध में आकर कठोर वचन बोलना।

अंगारे सिर पर धरना-बड़ी आपत्ति को सहन करना।

अंगारों पर लेटना-बहुत व्यग्र होना, बहुत घबड़ाना।

अंगारे बरसना-धूप बड़ी तेज होना, सूर्य का तीव्र आतप होना।

अगाड़ी पिछाड़ी बाधना-सब तरह का प्रबन्ध करना।

अंगुली उठाना-हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना।

अंगुलियां उठना-बदनाम होना, अपकीर्ति प्राप्त करना।

अंगुलियां उठाना-बदनाम करना, अपकीर्ति फैलाना।

अंगुलियों पर गिना जाना-सख्या में बहुत कम होना।

अंगुलियों पर नचाना-तग करना, परेशान करना।

अंगुलियों पर नाचना-वशीभूत होना।

अंगूठा दिखाना-चिढाना, साफ जवाब देना, अस्वीकार करना।

अंगूठा चूमना-बड़ी विनती करना।

अग्नि मे घी डालना-तकरार बढ़ाना, क्रोध प्रज्वलित करना।

अच्छे दिन देखना-आनन्द से जिन्दगी बिताना।

अंचरा पसारना-भिक्षा मागना।

अजर पंजर ढीला करना-बहुत मारना पीटना।

अटी पर चढना-अधिकार में आना।

अजीर्ण होना-कष्टसाध्य होना।

अटकल पच्चू-बिना सोच विचार किये हुए।

अठखेलियां करना-(सूझना) उपहास करना, दिल्लगी करना।

अडगा अड़ाना-(देना) विघ्न डालना, तरकीब लगाना।

अड़गे पर चढ़ना-आधीन होना।

अड़गे पर चढ़ाना-वशीभूत करना।

अड्डा जमना-एकत्रित होना, इकट्ठा होना।

अड्डा जमाना-अधिकार करना।

अण्डा सिखावे बच्चों को चीचीं न कर-छोटे का अपने बड़ों को उपदेश देना।

अण्डे सेना-बेकार बैठे रहना।

अण्डे सेवे और कोई बच्चे लेवे दूसरा कोई-परिश्रम और कोई करे और उसका फल दूसरा कोई उठावे।

अण्डे होंगे तो बच्चे बहुत होंगे-मूल धन बना रहेगा तो सूद बहुत मिलेगा।

अँतड़ियों मे बल पड़ना-हँसते हँसते पेटमें पीड़ा हो जाना।

अन्त करना-जान से मार डालना, समाप्त करना।

अन्त पाना-गुप्त भेद को जान लेना।

अन्त बुरे का बुरा-बुरा काम करने का अन्त बुरा ही होता है।

अन्त समय–मृत्युकाल, मरण का समय, आखरी वक्त।
अन्तडियां टटोलना–भेद या रहस्य का पता लगाना।
अन्धा क्या चाहे, दो आखें–आवश्यक वस्तु यदि सहज में मिल जाय तो कैसा अच्छा हो।
अन्धा बनाना–धोखा देना।
अन्धा बन जाना–धोखे में आजाना, धोखा खा जाना।
अन्धाधुन्ध उडाना–बिना सोचे विचारे बहुत धन खर्च करना।
अन्धी पीसे कुत्ता खाय–परिश्रम करके धन कोई कमावे और उसका उपभोग कोई दूसरा ही करे।
अन्धा बॉटे रेवड़ी फिर फिर अपने को दे–अधिकार मिलने पर अपने ही वश जाति आदि के लोगों का उपकार करना सामान्य बात है।
अन्धे के हाथ बटेर लगना–किसी को किसी वस्तु का सहज में मिल जाना।
अन्धे को अन्धा कहने से बुरा मानता है–कटु वचन सच्चे होने पर भी सभी को बुरे लगते हैं।
अन्धे को अँधेरे मे बडी दूर की सूझी–किसी मूर्ख का दूरदेशी बात कहना।
अन्धे की लकड़ी–एकमात्र आश्रय।
अन्धेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा–अर्थ स्पष्ट है। जहाँ अव्यवस्था है वहाँ भले बुरे एक समान।
अन्धेर मचाना-अन्याय करना।
अन्न जल उठ जाना–(पूरा होना) एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना, मर जाना।
अन्धा क्या जाने वसत की बहार–जिस मनुष्य ने किसी वस्तुको नहीं देखी वह उसका महत्व नहीं जान सकता।
अधे का अंधेरे मे बड़ी दून की सूझी–अपने धुन में लगे रहने से मनुष्य को अनोखी बात सूझती है।
अकेला चना भाड नहीं फोडता–अकेला मनुष्य किसी बडे काम को नहीं कर सकता।
अन्धा बगला कीचड़ खाय–मूर्ख के लिये क्षुद्र वस्तु भी अमूल्य है।
अच्छा किया खुदाने, बुरा किया बन्देने–ईश्वर अच्छा ही करता है, बुरा काम मनुष्य करता है।
अच्छे घर बाना देना–अपने से अधिक बलवान् से शत्रुता करना।
अधजल गगरी छलकत जाय–ओछे मनुष्य बड़ा आडंबर करते हैं।
अक्ल बड़ी की भस–शरीर पुष्ट होने से बुद्धि नहीं बढती।
अटका बनियां देय उधार–दबा हुआ मनुष्य सब कुछ कर सकता है।
अति का भला न बोलना अति की भली न चूप। अति का भला न बरसना अति की भली न धूप–किसी बात का अति का होना बुरा होता है।
अतिभक्ति चोर का लक्षण–बड़ा आडम्बर करने वाला मनुष्य छली होता है।
अपनासा मुँह लेकर रह जाना–लज्जित होना, अवाक् होना, चुप रह जाना।
अपना उल्लू सीधा करना–अपना मतलब सिद्ध करना।
अपना घर समझना–किसी तरह का सकोच न करना।
अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष–अपने ही कुटुम्ब के लोग बुरे हों तो दूसरों को क्यों दोष देना।
अपना वही जो आवे काम–सच्चा मित्र वही है जो समय पर सहायता दे।
अपना ही राग अलापना–स्वार्थ साधन की बात करना।
आन के धन पर लछमी नारायण–दूसरे की कमाई हुई सम्पत्ति पर अधिकार होना।
अपना खाना अपना कमाना–परिवार से अलग होकर रहना।
अपना घर दूरसे सूझता है–अपना फायदा सभी को देख पड़ता है।
अपनी करनी पार उतरनी–जैसी करनी वैसा फल।
अपनी अपनी डफली अपना अपना राग–एक साथ मिलकर कोई काम न करने की विधि।
अपनी खिचड़ी अलग पकाना–सबसे अगल रहना, निराले विचार का होना।
अपनी कब्र आप खोदना स्वय अपने नाश का साधन उपस्थित करना।
अपनी नींद सोना अपनी नींद जागना–स्वतन्त्र रहना, किसी के आधीन न होना।
अपनी ही पड़ी रहना–अपने लाभ का ही सर्वदा ध्यान रखना।
अपनी गली मे कुत्ता भी शेर होता है–कमज़ोर भी अपने स्थान पर बलवान् होता है।
अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगड़े–

नीच लोग अपनी हानि करते हुए भी दूसरों की हानि करते हैं।

अपनी पगड़ी अपने हाथ-अपनी प्रतिष्ठा अपने ही हाथ होती है।

अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता-अपनी वस्तु को कोई बुरी नहीं कहता।

अपनी ही गाये जाना-सर्वदा अपने मतलब की बात कहते रहना।

अपने बछड़े के दाँत गिनना-किसी रहस्य को जान लेना।

अपने पैरों खड़ा होना-दूसरे के आश्रित न रह कर स्वावलम्बी होना।

अपने पूत को कोई काना नहीं कहता-अपनी वस्तु को कोई बुरी नहीं कहता।

अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना-अपने मुह से अपनी शेखी करना।

अपने पावों पर आप कुल्हाड़ी मारना-अपने हाथों से अपनी हानि करना।

अपने हाथों पापड़ बेलना-जान बूझकर कष्ट उठाना।

अपने दिनों को रोना-कष्टपूर्ण जीवन बिताना।

अपने बल पर खड़े होना-स्वावलम्बी होना, किसी का आश्रय न लेना।

अपने मार्ग में काँटे बोना-ऐसा काम करना जिसमें अपने को हानि पहुँचे।

अब पछताये होत क्या चिड़िया चुग गई खेत-समय बीत जाने पर पछतावा करना वृथा है।

अभिलाषाओं का भवन बनाना-हवा में पुल बाँधना, कल्पना मात्र करना।

अभी तो तुम्हारे दूध के दाँत भी नहीं टूटे-तुम अभी बच्चे हो, तुमको दुनिया का कुछ अनुभव नहीं है।

अमर हो जाना-चिरस्थायी यश प्राप्त करना।

अमल पानी करना-नशापानी करना।

अमचूर बना देना-हड्डी पसली तोड़ डालना।

अमीर को जान प्यारी, गरीब को दम भारी-धनिक को अपना प्राण बड़ा प्यारा होता है वह चिरजीवी होना चाहता है, परन्तु गरीब को जान भारी जान पड़ती है।

अल खामोश नीम रज़ा-मौन रहना स्वीकृति का लक्षण है

अल्पाहारी सदा सुखी-थोड़ा खाने वाला रोगी नहीं होता

अवसर चूकना-मौका हाथ से निकल जाना।

अरण्य रोदन-निरर्थक कार्य।

अरमान निकालना-मनोकामना पूरी करना।

अस्सी हजार फिरना-तुच्छ व्यक्ति होना, महत्व रहित होना

अशर्फियाँ लुटें औ कोयलों पर मोहर-बड़ी बड़ी रकम तो बिना कुछ सोचे समझे खर्च हो जावे परन्तु छोटी रकमों के खर्च में बहुत विचार रक्खा जावे।

अस्सी आमद चौरासी का खर्च-आमदनी से अधिक व्यय करना।

आ

आंख उठाना-हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना, बुरी निगाह से देखना।

आंख उठाकर भी न देखना-ध्यान तक न लगाना।

आंख ऊंची होना-प्रतिष्ठित होना।

आंख आना-आँखें लाल होकर दुखना।

आंख बचा जाना-सन्मुख उपस्थित न होना।

आंख ठहरना-रुचिकर होना, पसन्द आना।

आंख और कान में चार अंगुल का फर्क है-देखी हुई बात को सब कोई मानता है, परन्तु सुनी हुई बात पर कोई विश्वास नहीं करता।

आंख तरसना-देखने की बड़ी लालसा होना।

आंख के अन्धे नाम नयनसुख-कलम पकड़ने का शऊर नहीं लेखक बनते हैं।

आंख मिलाना-किसीके सामने देखना।

आंख भर लाना-आँखों में आँसू आ जाना।

आंख ऊंची न होना-शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

आंख चीर चीर कर (फाड़कर) देखना-उत्सुक होकर देखना, घूरना।

आंख न दीदा काढ़े कसीदा-किसी कार्य करने के समर्थ न होकर उस कार्य को करने की चेष्टा करना।

आँख रखना-किसी से प्रेम करना, देखते रहना।

आँख में शील न होना-निर्लज्ज होना।

आँख न ठहरना-चकाचौंध लगना।

आँख चुकी माल दोस्तों का-अपनी वस्तु यदि सावधानी से न रक्खोगे तो चोर चुरा ले जायगें।

आँख का तिल खो देना-अंधे हो जाना।

आँख मारना-संकेत करना, सैन करना।

आँख की पुतली फिर जाना-मरणासन्न होना।

आँख न लगना-नींद न आना।

आँख से दूर दिल से दूर-दूर देश में रहने से प्रेम भाव बहुधा कम हो जाता है।

आँख कान खोलकर चलना-अति सावधान रहना।
आँख मैली करना-बेमुरौवत होना।
आँख मटकाना-सैन चलाना, आँखों से सकेत करना।
आँख से ओझल न करना-सर्वदा अपने सामने रखना।
आँख भर आना-आँखों में आँसू आ जाना।
आँख फोडना-धोखा देना।
आँख मुदना-मृत्यु को प्राप्त होना।
आँख मू दना-विचारपूर्वक काम न करना।
आँख ठढीं होना-शान्ति मिलना, तृप्त होना।
आँख बंद करना-असावधान होना।
आँख लगना-आसक्त होना।
आँख जाना-अन्धा होना।
आँख बदलना-बेमुरौवत होना।
आँख चुराना-लज्जा के कारण सामने न देखना।
आँखें निकालना-डाटना डपटना।
आँखें चढना-नशे में आँखें लाल होना।
आँख मे काटा होना-असह्य हो जाना।
आँखों का पानी गिर जाना-निर्लज्ज हो जाना।
आखें खुलना-सावधान होना।
आँखों में चुभना-बुरा लगना।
आखें खुल जाना-आश्चर्य होना।
आँख तले न लाना-तुच्छ समझना।
आँखें पथरा जाना-आखों का निमेष रहित होना।
आँख लड़ाना-आसक्त होना।
आँखें उठना-देखना।
आँखें फेरना-प्रतिकूल होना।
आंखें फिरना- बेमुरौवत होना।
आँखों से गिरना-मान का नाश होना।
आँखें चढना-क्रोध करना।
आँखें दिखाना-डाटना, धमकाना।
आँखों मे धूल झोंकना-धोखा देना।
आँखोंपर ठीकरी धरना-निर्लज्ज होना।
आँखों मे खटकना-बुरा जान पड़ना।
आंखें बैठना-अन्धा हो जाना।
आखें चार होने से मुहब्बत आ जाती है-अर्थ स्पष्ट है।
आँखों में न ठहरना-अनुकूल न होना, पसन्द न आना।
आँखें बिछाना-प्रेम सहित आदर करना।
आँखें झुक जाना-नींद आना।
आँखों मे समा जाना-बहुत प्रिय होना।
आँखें जमीन मे लग जाना-अति लज्जित होना।
आँखोंपर परदा पड़ना-असावधान होजाना।
आँखें फटना-आश्चर्य युक्त होना।
आँखों मे पालना-अत्यन्त प्रिय रखना।
आँखो मे फिरना-बारबार याद आना।
आंखों मे खटकना-बुरा लगना।
आँखो मे काजल चुराना-बड़ी चालाकी करना।
आँखों के सामने अंधेरा छाजाना-शून्य दिखलाई पड़ना।
आँखो मे खटकना-बुरा लगना।
आँखो मे खून उतर आना-अति क्रुद्ध होना।
आँखो मे जगह मिलना-प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
आँखो में जगह देना-प्रतिष्ठा करना।
आँखो आँखों में उड़ा देना-देखते देखते चुरा लेना।
आँखों की पट्टी खुलना-सचेत होजाना।
आँखोंपर पट्टी बाँधना-असावधान होना।
आँखों तले आना-वशीभूत होना।
आँखो के सामने नाचना-याद आना।
आँखो मे चर्बी छाजाना-बड़ा अभिमान होना।
आँखो मे हलका होना-प्रतिष्ठा कम होना।
आँधो के आम-बड़ी सस्ती वस्तु।
आँसू एक नही कलेजा टूकटूक-पाखड, दिखावटी रुलाई।
आँतभरी तो माथ भरी-आतो में विकार होने से सिर में पीड़ा होती है।
आई तो रोजी नहीं तो रोजा-आमदनी होनेपर दिन सुख से बीतते हैं नहीं तो उपवास ही होता है।
आकाश से बातें करना-बहुत ऊचा होना, शेखी हाँकना।
आकाश के तारे तोड़ना-कठिन कार्य करने में उद्यत होना।
आकाश में छेद करना-बड़ी चालाकी दिखलाना।
आकाश पाताल एक करना-बड़ा अन्वेषण करना, बड़ी जाँच पड़ताल करना।
आकाश मे थेगली लगाना-बड़ी चतुराई करना।
आकाश गङ्गा मे नहाना-असंभव को सभव करने की चेष्टा करना।
आकाश मे छेद होजाना-अधिक वृष्टि होना।
आकाश फट पड़ना-अति वृष्टि होना।
आखिर करना-समाप्त करना।
आग पड़ना-बहुत गरम होना।
आग फाँकना-बहुत झूठ बोलना।
आग दिखाना-जला कर भस्म कर देना।

आग लगाकर पानी को दौड़ना—उपद्रव आरम करके शान्त करने का प्रयत्न करना।
आग लगन्ते झोपड़ा जो निकले सो सार—जब सब कुछ नष्ट होता हो तब जो कुछ मिल जावे उसी को सर्वस्व समझना चाहिये।
आग लगने पर कुंवा खोदना—आपत्ति आ जाने पर उसका उपाय सोचना।
आग में पानी डालना—क्रोध को शमन करना।
आग में झोंक देना—नष्ट कर देना, आपत्ति में डाल देना।
आग लगना क्रोध आना।
आग लगाना—झगड़ा खड़ा करना, उत्तेजित करना।
आग लगाकर-तमाशा देखना—झगड़ा आरम करके प्रसन्न होना।
आग बबूला हो जाना—अत्यन्त उत्तेजित होना।
आग में कूदना—आफत में पड़ना।
आग में इन्धन डालना—क्रोध बढाना।
आग पानी से गुजरना—सब तरह के कष्टों का सहन करना।
आगा रोकना—मुकाबले पर आना।
आगा पीछा करना—दुविधा में पड़ना, हिचकिचाना।
आगा पीछा न सोचना—अपने फायदे नुकसान का ख्याल न करना।
आगे नाथ न पीछे पगहा—किसी संबंधी या संरक्षक का न होना।
आगे आगे हो लेना—किसी काम का सहज हो जाना।
आँच अधिक खा जाना—अधिक पक जाना।
आँच खाना—हानि उठाना।
आँच न आने देना—कष्ट को रोकना, तकलीफ न पहुचने देना।
आज कल के फेर में पड़ना—वक्त टालना।
आँट रखना—शत्रुता करना।
आज कल करना—टालमटोल करना, हीला हवाला करना।
आज मरे कल दूसरा दिन—जब तक सासा, तब तक आशा
आँट पड़ना—मनमोटाव होना।
आजादी खुदा की नियामत है—स्वतन्त्रता ईश्वर का नियम है।
आटे दाल का भाव मालूम होना—सब प्रकार के कष्टों का अनुभव होना।
आटे का चिराग घर रक्खें तो चूहा खाय, बाहर रक्खे कौवा ले जाय—बचाने का जब कोई उपाय न हो तब कुछ नहीं किया जा सकता।
आटे के साथ घुन का पिसा जाना—दोषी मनुष्य का साथ देने से निर्दोषी को भी कष्ट उठाना पड़ता है।
आठ आठ आंसू रोना—अति विलाप करना।
आठो पहर शूली पर रहना—सर्वदा कष्ट ही कष्ट भोगना।
आठ अठारह कर देना—अति कष्ट देना।
आड़े आना—आश्रय लेना, सहारा लेना।
आड़े हाथ लेना—भला बुरा कहना।
आड़ी देकर बैठना—जम जाना।
आड़े समय काम आना—विपत्ति काल में सहायता देना।
आत्मा ठढी होना—शान्ति प्राप्त करना।
आत्मा ठढी करना—शान्ति देना।
आत्मा मसोसना—दु खी होना।
आदमी बनना—शिष्टाचार जानना।
आदमी बनाना—शिष्ट या सभ्य बनाना।
आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे—ससर्ग से मनुष्य का चरित्र का पता चलता है यथा सोने की परीक्षा कसौटीपर कसने से होती है।
आदमी मुश्किल से मिलता है—सच्चे और इमानदार मनुष्य जल्दी नहीं मिलते।
आदमी की पेशानी दिलका आयना है—मनुष्य के चेहरे से उसके हृदय के भावों का पता चल जाता है।
आदि अन्त सोचना—पूरी तरह से विचार करना।
आधा तीतर आधी बटेर—अस्त व्यस्त, गड़बड़, अधूरा, अपूर्ण।
आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे—अधिक लालच करने से सर्वथा हानि होती है।
आन तोडना—अपने निश्चय से हट जाना।
आन निभाना—अपने निश्चय पर अटल रहना।
आन की आन में—अति शीघ्र, तुरत।
आना कानी करना—बहाना करना।
आप काज महा काज—किसी कार्य को स्वयही करना ठीक होता है।
आप बीती कहना—अपने ऊपर बीते हुए कष्ट को दूसरे से कहना।
आप आप करना—अति शुश्रूषा या विनती करना।
आप भला तो जग भला—भला मनुष्य ससार में सभी को सज्जन समझता है।
आपको आसमान पर खींचना—अपने को बहुत बड़ा जानना

आपही मियां मगते द्वार खडे दरवेश–जो स्वय सहायता चाहता है वह दूसर को क्या सहायता दे सकता है।
आपस मे गिरह पड़ना–आपस में मनमुटाव होना।
आपको खींचना–स्वय अलग हो जाना।
आपा न सभलना–अपनाही निर्वाह न हो सकना, अपनी शरीर अपने अधिकार में न होना।
आपा खोना–अभिमान त्याग करना।
आपेमें न रहना–अपने पर अधिकार खो बैठना, मदोन्मच हो जाना।
आपे में आना–होश सभालना।
आपे से निकल पड़ना–अति व्यग्र होना।
आपे से वाहर होना–क्रोध में आकर बडे गर्व से बोलना।
आव आव कर मर गये सिरहाने रक्खा पानी–किसी से ऐसी भाषा बोलना जिसको वह न समझता हो।
आव देना (चढ़ाना)–चमकाना, पालिश करना।
आ वला गले लग–आपत्ति में जानबूझ कर पड़ना।
आवरू खाक मे मिलना–मान मर्यादा खो बैठना, वेइज्जत होना।
आम के आम गुठली के दाम–किसी कार्य में दुगुना फायदा होना।
आम खाने से काम कि गुठली गिनने से काम–मनुष्य को अपने मतलव का काम करना चाहिये निरर्थक कार्य न करना चाहिये।
आम ईख नीबू वणिक् गारे ही रस देत–अर्थ स्पष्ट है।
आँयँ आँयँ करना–बे मतलव बोलना।
आयी को रोकना–मौत से बचाना।
आयी गयी करना–समाप्त करना, खतम करना, माफ करना, छिपाना।
आया है सो जायगा राजा रंक फकीर–जो उत्पन्न हुआ है वह एक दिन अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।
आयु का पट्टा लिखवा कर लाना–सर्वदा जीवित रहने की इच्छा करना।
आये की खुशी न गये का गम–सर्वदा सन्तुष्ट रहना।
आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास–किसी बडे काम करने को आये थे परन्तु तुच्छ कार्य करने लगे।
आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल वजा–सामने से सब लुट गया तू देखता ही रह गया।
आरती उतारना–प्रतिष्ठा करना, इज्जत करना।
आरे चलना–अति दुःखी होना।
आर्द्र नेत्र होना–शोकाकुल होना।
आल्हा गाना–जगह जगह समाचार फैलाते फिरना।
आव देखना न ताव देखना–सोच विचार कुछ भी न करना।
आवभगत में स्वाहा करना–नीरस व्यवहार करना।
आवभगत करना–अतिथि आदि का सत्कार करना।
आवाजें कसना–मर्मवेधी बातें कहना।
आवें का आवा विगडना–सपूर्ण कुटुम्ब का दुश्चरित्र होना।
आशाओं पर पानी फिरना–सब तरह से हताश होना।
आसन हिलना–चलायमान होना।
आसमान पर होना–उच्च पद प्राप्त करना।
आसमान पर दिमाग चढ़ना–बडा गर्व करना।
आसमान पर सिर उठाना–बहुत शोर गुल करना।
आसमान से टक्कर खाना–बहुत ऊँचा होना।
आसमान पर थूकना–बडा अभिमान करना।
आसमान टूटना–विपत्ति आना।
आसमान पर उड़ना–इतराना, गर्व करना।
आसमान पर चढ़ाना–बड़ी प्रशसा करना।
आसमान देखना–हार जाना।
आसमान दिखाना–पराजित करना, हराना।
आसमान से गिरना–अनायास मिलना।
आसमान हिलना–(डोलना) चलायमान होना, विचलित होना।
आस पास बरसे दिल्ली पड़ी तरसे–जो चाहता है उसको न मिलकर दूसरे को किसी वस्तु का मिलना।
आहारे व्यवहारे लज्जा न कारे–भोजन करने और व्यवहार करने में लज्जा न करना चाहिये।
आँसुओं की झड़ी लगना–अति विलाप करना।
आँसू पीकर रह जाना–अधिक शोक के कारण चुप रहना।
आँसू पीना–अपने दुःख को दवा रखना।
आँसू बहाना–विलाप करना, रोना।
आँसू पोंछना–थोड़ासा देकर किसी को शान्त करना।
आस्तीन चढाना–लड़ने के लिये तैयार होना।
आस्तीन में साँप पालना–छिपे दुश्मन को सहारा देना।
आह पड़ना–किसी को सताने का फल मिलना।
आह करके रह जाना–कष्ट को चुप चाप सह लेना।
आस्तीन का साँप–कपटी मित्र।
आह भरना–दुःख में लम्बी साँस लेना।

इ

इकसे इक माई के लाल पड़े हैं-संसार में एक से एक गुणी और विद्वान् पड़े हैं।
इति श्री करना-समाप्त करना, खतम करना।
इति श्री होना-समाप्त होना, खतम होना।
इधर उधर करना-बहानेबाजी करना।
इधर उधर कर देना-किसी वस्तु को छिपा देना।
इधर उधर की हाँकना-व्यर्थ की बकवाद करना, गप हाँकना।
इधर उधर देखना-हिचकिचाना।
इधर उधर देखने लगाना-निरुत्तर हो जाना।
इधर का न उधर का-निरर्थक, व्यर्थ, बेफायदा।
इधर उधर लगाना-चुगलखोरी करना।
इधर की उधर लगाना-कलह उपस्थित करना।
इतना नफा खाओ जितना दाल में नोन-थोड़ा ही मुनाफा करना चाहिये।
इन तिलों तेल न होना-मिलने की आशा न होना।
इतनीसी जान और गज भर की जबान-छोटा सा मुह और बड़ी बड़ी बातें।
इन्हीं पावों जाना-तुरत चले जाना, देर न करना।
इस कान से सुना उस कान से निकाल दिया-किसी की बात पर ध्यान न देना।
इज्जत गँवाना-मान भंग होना।
इज्जत बिगाड़ना-अप्रतिष्ठित करना।
इज्जत दो कौड़ी की न रहना-प्रतिष्ठा खो बैठना।
इने गिने-गिनती में बहुत कम, केवल काम चलाने योग्य।

ई

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया-संसार में सर्वत्र भाग्य की विचित्रता देख पड़ती है, कोई ऐश्वर्य में प्रसन्न है कोई गरीबी में मर रहा है।
ईश्वर को प्यारा होना-थोड़ी उमर में मर जाना।
ईंट की लेनी पत्थर की देनी-बदला चुकाने की विधि। दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार।
ईंधन हो जाना-शक्ति हीन हो जाना।
ईद का चाद होना-बहुत दिनों बाद प्राप्त होना।
ईंटो से निकलकर कीचड़ मे पड़ना-एक आपत्ति से छुटकारा पाया और दूसरी आपत्ति में जा गिरा।
ईंट से ईंट बजना-नाश होना।
ईंट का घर मिट्टी कर देना-धन और सम्पत्ति का नाश कर देना।

उ

उखड़ जाना-स्वीकार न करना।
उखड़ी बातें करना-हृदय से न कहना।
उखली मे सिर दिया तो मूसल का क्या डर-जब किसी कठिन कार्य करने में लगे तो आपत्तियों से क्या डरना।
उखाड़ देना-बिगाड़ना, नष्ट करना।
उगल देना-रहस्य या भेद को प्रकाशित करना।
उछल कर चलना-अभिमान दिखलाना, अपनी शक्ति के बाहर काम करना।
उछल कूद दिखलाना-शेखी हाँकना।
उछल पड़ना-अति प्रसन्न होना।
उठ जाना-मृत्यु को प्राप्त होना, व्यय होना, समाप्त होना।
उठा न रखना-कोई कसर न छोड़ रखना।
उड़कर पड़ना-बड़ी लालच करना।
उड़ती खबर पाना-अफवाह मिलना।
उड़ती चिड़िया पहचानना-मनकी भावना को जान लेना।
उड़ा जाना-खा जाना, व्यय कर देना।
उड़ा ले जाना-चुरा लेना, अपहरण करना।
उड़ा लेना-हर लेना, ठग लेना।
उड़ा देना-खो देना।
उतर जाना-भाव मंदा होना, तेज न रहना।
उतार चढ़ाव देखना-अनुभव होना, तजुर्बा होना।
उतारू होना-प्रस्तुत होना, तय्यार होना।
उतावला होना-शीघ्रता करना, जल्दी बाज़ी करना।
उथल पुथल होना-उलट पलट होना।
उथल पुथल करना-गड़बड़ी करना।
उदर निमित्तं बहुकृत वेषः-पेट के लिये मनुष्य सब कुछ (भले बुरे काम) करता है।
उत्तम खेती मध्यम बान, नीच चाकरी भीख निदान-अर्थ स्पष्ट है।
उधार खाये बैठना-प्रतीक्षा करते रहना।
उधार न छोड़ना-कसर न रखना।
उधार का खाना और फूस का तापना बराबर है-जिस प्रकार फूस की आग जल्दी बुत जाती है इसी तरह से उधार लेकर खाना भी ज्यादा दिनों तक नहीं चलता।
उधार दिया गाहक छोड़ा-उधार दी हुई वस्तु का दाम मागने पर गाहक उसके पास फिर नहीं आता।
उधेड़ बुन में लगना-चिन्ता फिक्र करना।
उधेड़ डालना-फाड़ डालना।

उन्नीस बीस का फर्क–बहुत थोड़ा अन्तर।
उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुण बिलगाहीं–किसी मनुष्य की सब सन्तान एक प्रकृति की नहीं होती।
उफ न करना–आपत्ति आदि को चुप चाप सह लेना।
उबल पड़ना–क्रुद्ध होना।
उभार पर होना–वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना।
उभारा देना–उत्तेजित करना, उभाड़ना, साहस बढ़ाना।
उभारा लेना–सभालना।
उमगें मिटना–उत्साह कम होना।
उलट फेर होना–परिवर्तन होना, उलट पलट होना।
उलटा चोर कोतवाल को डाटे–अपना दोष स्वीकार न करके पूछने वाले पर क्रोध दिखलाना।
उलटा बांस बरैली को–विपरीत कार्य करना।
उलटी गंगा बहाना–विपरीत कार्य करना।
उलटी पट्टी पढ़ाना–उचित मार्ग से विचलित करना।
उलटी साँस लेना–मरणासन्न होना।
उलटी माला फेरना–किसी का अनिष्ट चाहना।
उलटी सीधी सुनाना–भला बुरा कहना।
उलटी बातें कहना–असगत वार्ता कहना।
उलटे पॉव जाना–लौट जाना।
उलझ पड़ना–लड़ पड़ना।
उलझन मे पड़ना–झझट में फँसना।
उलझन मे डालना–व्यग्र करना।
उलुल जलूल बकना–बेमतलब की बातें कहना।
उल्लू बनना–मूर्ख बनना।
उल्लू बनाना–मूर्ख बनाना।
उल्लू बोलना–किसी स्थान का उजाड़ होना।

ऊ

ऊच नीच का भेद न रखना–सबके साथ समान व्यवहार करना।
ऊचा सुनना–कम सुन पड़ना, कुछ बहरा होना।
ऊंचा बोल बोलना–श्लाघा करना, अभिमान करना।
ऊची जगह पाना–प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
ऊंची दुकान फीका पकवान–बहुत सा आडंबर हो परन्तु तत्व कुछ न हो।
ऊट पटाँग हांकना–बेमतलब की बातें कहना।
ऊट के गले मे बिल्ली बांधना–बेमेल का काम करना।
ऊट किस करवट बैठता है–क्या स्थिति उपस्थित होती है।
ऊंट के मुँह मे जीरा देना–आवश्यकता अधिक होने पर अल्प मात्रा देना।
ऊट की चोरी और झुके झुके–छिपकर बड़ा काम करने का उद्योग।
ऊधम मचाना–उपद्रव करना।
ऊपर पड़ना–दुःख उठाना।
ऊधो का लेना न माधो का देना–स्वार्थपरायण रहना, निश्चिन्त रहना।
ऊसर मे बीज डालना–बिना मतलब का काम करना।

ए

एक अग वह भी गन्दा–सब पदार्थों का प्रायः अभाव।
एक अनार सौ बीमार–आवश्यकता से अधिक माँग।
एक और एक ग्यारह होते हैं–एकता में बड़ा सामर्थ्य है।
एक की दस सुनाना–एक अपशब्द कहने पर बहुतेरी गालियाँ देना।
एक न एक रोग लगा रहना–चिन्ता न हटना, शान्ति न मिलना।
एक चुप हजार को हरावे–मौन रहने से बकने वाले अन्त में चुप हो जाते हैं।
एक लकड़ी से सबको हॉकना–लेन देन के व्यवहार में सबको बराबर समझना।
एक के दूने से सौ के सवाये भले–अधिक बिक्री होने से अधिक लाभ होता है।
एक आँख से देखना–समान व्यवहार करना।
एक रस रहना–किसी प्रकार का विकार न होना।
एक टक लगाना–निगाह जमा कर देखना।
एक बात होना–सहज होना।
एक ईंट के लिये महल गिराना–जरा सी बात के लिये अनर्थ मचाना।
एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत–आरोग्य रहना सर्व प्रधान है।
एक को एक खाये जाना–आपस में द्वेष करना।
एक हो जाना–मिल जाना।
एक पर से सौ कौवे बनाना–थोड़ी सी बात को बहुत बढ़ा देना।
एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी–एक तो काम बिगाड़ना दूसरे क्रोध दिखलाना।
एक होना–अद्वितीय होना, भाव भेद न रखना।
एक ही साँचे मे ढलना–समान विचार के होना।
एक न चलना–कुछ न कर सकना।
एक तो तितलौकी दूसरे चढ़ी नीम–एक तो स्वय नीच

दूसरे नीचों का संग।

एक के तीन बनाना—अनुचित लाभ उठाना।

एक थैली के चट्टे बट्टे—एक समान, सभी बराबर के होना।

एक तरफ़ा डिगरी देना—पक्षपात दिखलाना, अपूर्ण न्याय करना।

एक दम में हज़ार दम—एक मनुष्य से हज़ारों की परवरिश।

एक टाँग से फिरना—बहुत इधर उधर घूमना।

एक न सुनना—कुछ न मानना।

एक एक रग जानना—अच्छी तरह से परिचित होना।

एक सौ चौवालीस लगाना—बोलना बन्द कर देना।

एक न शुद दो शुद—आपत्ति पर आपत्तियाँ आना।

एक पंथ दो काज—किसी एक उद्योग से अन्य कार्य का सफल होना।

एकादशी का खाया द्वादशी को निकालना—एक दिन का दिया हुआ दूसरे दिन लौटाना पड़े।

एक मछली सारे जल को गन्दा करती है—एक व्यक्ति की नीचता से सारे समाज को लाञ्छन लगता है।

एक सूत्र में बाँधना—संगठित करना।

एक हाथ से ताली नहीं बजती—अकेले मनुष्य के किये कोई कार्य नहीं होता।

एक म्यान में दो तलवार नहीं रहती—एक ही स्थान पर दो शक्तिशाली मनुष्य नहीं रहते।

एड़ी चोटी पसीना एक करना—बड़ा कठिन परिश्रम करना।

ऐ

ऐंचा तानी में पड़ना—झगड़े में फँसना।

ऐंठ दिखाना—गर्व करना, अभिमान दिखाना।

ऐंठ जाना—असन्तुष्ट होना।

ऐंठ लेना—ठग लेना।

ऐंठ निकलना—गर्व दूर हो जाना।

ऐंठ ढीली करना—गर्व हटाना।

ऐब करने को भी हुनर चाहिये—बुरा काम करने के लिये भी चतुराई की आवश्यकता होती है।

ऐंड़ा बेंड़ा चलना—कुपथ पर चलना।

ऐसा वैसा समझना—सामान्य मनुष्य जानना।

ऐसी तैसी करना—सब भला बुरा उपाय रचना।

ऐसे जीने से मर जाना अच्छा—अधिक कष्ट मिलने पर मनुष्य मरण को अच्छा समझता है।

ओ

ओछे की प्रीत बालू की भीत—ओछे मनुष्य की मित्रता स्थायी नहीं होती।

ओखली में सिर देना—जान बूझकर अपने को आपत्ति में डालना।

ओर छोर न मिलना—भेद का पता न चलना।

ओले पड़ना—आपत्तियाँ आना।

ओस चाटे प्यास नहीं जाती—आवश्यकता अधिक होने पर थोड़ी वस्तु से सन्तोष नहीं होता।

ओढ़नी को पताका लगना—स्त्री के प्रेम में फँसना।

औ

औक़ात पर आना—असली बात प्रकट करना।

औक़ात पर रहना—शक्ति के अनुसार चलना।

औक़ात बसर होना—निर्वाह करना।

औघट घाट बचाकर चलना—विपत्तियों से सावधान रहना।

औचक होना—भय के कारण नींद उठना।

औंधी खोपड़ी—उलटा बुद्धि मनुष्य।

औंधे मुह गिरना—हार जाना।

और बात खोटी सही दाल रोटी—जीवन निर्वाह ही सबसे बढ़कर व्यवसाय है।

औन पौन करना—कम दाम का व्यापार करना।

और का और हो जाना—बिल्कुल बदल जाना।

औसान खता होना—होश बिगड़ जाना।

क

कंघी चोटी से फ़ुरसत न मिलना—सिंगार पटार में व्यस्त लीन रहना।

कंगाली (मुफ़लिसी) में आटा गीला—एक आपत्ति रहते हुए दूसरी आपत्ति आ पड़ना।

कंजूस मक्खीचूस—बहुत बड़ा कृपण।

कच्चा करना—मत्था सिद्ध करना।

ककड़ी के चोर को फाँसी नहीं दी जाती—साधारण अपराध के लिये गुरुदण्ड नहीं दिया जाता।

कच्चा दिल करना—उदास होना।

कच्चा होना—लज्जित होना।

कच्ची गोलियाँ खेलना—पूरा अनुभव प्राप्त करना।

कच्चा चिट्ठा—पोल, गुप्त बात।

कड़ाई से गिरा चूल्हे में पड़ा—एक आपत्ति से छूटा दूसरे में गिरा।

कचूमर निकालना–बुरी अवस्था करना।
कञ्चन बरसना–अधिक धन की प्राप्ति।
कटे जाना–कुढते जाना।
कटे पर निमक छिड़कना–दु:खी मनुष्य को और भी दुखाना।
कण्टकेनैव कण्टकम्–काटे से ही काटा निकाला जाता है।
कठपुतली बनना–दूसरों के कहने में चलना।
कड़क कर बोलना–क्रोध से गरज कर बोलना।
कड़ियाँ झेलना–दु ख सहन करना।
कण्टक निकलना–दु ख दूर होना।
कण्ठगत करना–खा लेना, याद कर लेना।
कण्ठस्थ करना–जबानी याद कर लेना।
कतर ब्योंत करना–काट छांट करना।
कतरा के जाना–बच कर निकल भागना।
कदम बढ़ाना–चले जाना, तेज चलना, अग्रसर होना।
कदर खो देता है हरबार का आना जाना–बारबार आने जाने से प्रतिष्ठा कम हो जाती है।
कनखियों से देखना–तिरछी नजर से देखना।
कन्धा लगाना–सहायता करना, सहारा देना।
कन्धा डालना–साहस छोड़ देना।
कपड़ों से होना–स्त्रियों का रजस्वला होना।
कपड़े उतारना–ठगना, लूटना।
कपाट खुलना–ज्ञान उत्पन्न होना।
कपालक्रिया करना–सिर फोड़ना।
कपास तौलना–मूर्ख होना।
कब्र मे पैर लटकाना–मरण समीप होना।
कभी नाव गाड़ी पर, कभी गाड़ी नाव पर–सबका समय सर्वदा समान नहीं रहता।
कम खर्च बालानशीन–कम खर्च में उत्तम वस्तु मिलना।
कमर कसना–उद्यत होना, तत्पर होना।
कमर टूटना–निराश होना, उत्साह भग होना।
कमर सीधी करना–थकावट दूर करने के लिये लेट जाना।
कमर खोलना–कार्य समाप्त होने पर विश्राम करना।
कमान हो जाना–झुक जाना।
कमान का निकला तीर और मुंह से निकली बात वापस नहीं आती–अर्थ स्पष्ट है।
करघा छोड़ जुलाहा जाय, नाहक चोट बेचारा खाय–जो मनुष्य अपना काम छोड़ कर दूसरे प्रपच में पड़ता है वह हानि उठाता है।
करते धरते न बनना–असमर्थ हो जाना।
करनी खाक की बात लाख की–करना कुछ नहीं बड़ी बड़ी बातें बनाना।
करम फूटना–अभागा होना।
करवट बदलना–स्वीकार न करना, परिवर्तन होना।
करम हीन खेती करे मरे बैल या सूखा पड़े–भाग्यहीन पुरुष को किसी कार्य में सिद्धि नहीं होती।
कल ऐंठना–चित्त के भाव में परिवर्तन करना।
कल पड़ना–चैन मिलना।
कर सेवा पा मेवा–बड़ों की आज्ञा पालन करने से लाभ होता है।
कलम तोड़ना–विलक्षण बातें लिखना।
कलई खुलना–रहस्य उद्‌घाटन होना, भेद खुलना।
कलमा पढ़ना–विश्वास रखना, मुसलमान बनना।
कलई खोलना–गुप्त बातों को प्रगट करना।
कलेजा धकधक होना–व्यग्र होना, घबड़ाना।
कलेजा निकाल कर धर देना–मर्म की बातों को कहना।
कलेजा बढ़ना–उत्साहित होना।
कलेजा खाना–परेशान करना।
कलेजा ठढा होना–शान्ति मिलना।
कलेजा रखना–साहस होना।
कलेजा थामना–जी कड़ा करना।
कलेजा थाम कर रह जाना–ठक रह जाना, मन मसोस कर रहना।
कलेजा छलनी होना–मर्मवेधी बातों से चित्त दुखाना, कष्ट देना।
कलेजा फटना–अत्यन्त दु:ख होना।
कलेजा मुँह में आना–चित्त व्याकुल होना।
कलेजा तर होना–चित्त अत्यन्त प्रसन्न होना।
कलेजा पसीजना–दया उत्पन्न होना।
कलेजा निकालना–बहुत दु:खी होना।
कलेजा बासों उछलना–बहुत प्रसन्न होना।
कलेजे में छेद करना–चित्त बहुत दुखाना।
कलेजे से लगाकर रखना–बहुत प्रेम करना।
कलेजे पर हाथ धरना–चित्त में विचार करना।
कलेजे से लगाना–आलिंगन करना, प्रेम करना।
कलेजे को मसलना–हृदय को चोट पहुचाना।
कसर निकालना–बदला लेना।
कसौटी पर कसना–परखना, अन्वेषण करना।
कहने से करना भला–बातें करने से काम करना अच्छा होता है।

कहा सुनी हो जाना–झगड़ा फसाद होना।

कहीं का न छोड़ना–भ्रष्ट करना, बरबाद करना।

कहे से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता–मनुष्य अपनी इच्छा से काम करता है दूसरे के कहने से नहीं करता।

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती का कुनबा जोड़ा–बेकार की चीजों को इकट्ठा करके भी कोई वस्तु तैयार हो सकती है।

कहाँ राजा भोज, कहां गंगू तेली–दो वस्तुओं में बड़ा भारी अन्तर।

काँख में कतरनी रखना–कपट रूप से हानि पहुचाना।

कागज काले करना–व्यर्थ की लिखा पढी करना।

कागज पूरे होना–जीवन समाप्त होना।

कागजी घोड़े दौड़ाना–समाचार फैलाना, केवल पत्र व्यवहार करते रहना।

कागरौल करना–शोर गुल मचाना।

काँटा सा खटकना–बहुत अखरना।

काँटे बोना–हानि पहुचाना।

काँटे से काँटा निकालना–शत्रु का नाश शत्रु से कराना।

काँटों पर पाँव रखना–दुःख या आपत्ति में पड़ना।

काँटों पर लोटना–बड़ी आपत्ति सहन करना।

काँटों की शैय्या पर सोना–दुःखमय जीवन बिताना।

काँटों मे हाथ पड़ना–आपत्ति में फँसना।

काटों में घसीटना–अति लज्जित करना।

काट खाने दौड़ना–भयानक रूप धारण करना।

काटो तो बदन मे खून नहीं–अति भयभीत होने की दशा।

काठ मे पाँव ठोंकना–कैद कर लेना।

काठ की हाँडी आँच पर बारंबार नहीं चढती–छल बारबार सफल नही होता।

कान काटना–बड़ी चालाकी करना, धोखा देना।

कान न होना–ग्रहण न करना।

कान होना–सुनते ही किसी बात पर विश्वास कर लेना।

कान खुलना–होश में आना।

कान खोलना–सावधान करना।

कान पर जूँ न चलना (रेंगना)–ध्यान न देना।

कान भरना–पिशुनता करना, चुगली खाना।

कान छिदाय सो गुड़ खाय–जो दुःख उठाता है वही अन्त में सुख पाता है।

कान देना–ध्यान पूर्वक सुनना।

कान पकड़ना–किसी बुरे काम को न करने का निश्चय करना।

कान खड़े होना–सावधान होना।

कान मे पड़ना–सुन पड़ना।

कान खाना–शोर गुल मचाना।

कान पड़ा शब्द सुनाई न देना–बड़ा शोर गुल होना।

कान धर कर सुनना–बड़े ध्यान से सुनना।

कान में डाल देना–किसी को कोई बात सुना देना।

कान तक पहुँचना–सुनने में आना।

कान के कीड़े मर जाना–सुनने में बहुत बुरा लगना।

कान मे फूकना–चुपके से सुना देना।

काना फूंसी करना–भेद की बात धीरे से कान में कहना।

कानी कौड़ी पास मे न होना–अति दरिद्र होना।

कानूनी शिकजे मे फसाना–अभियोग चलाना।

काने को काना कहना–अप्रिय सच्ची बात किसी से कहना।

कानों को न लगना–विश्वास में न आना।

कानों पर हाथ धरना–अपरिचित बन जाना।

कानों मे तेल डालना–किसी बात को सुनने की इच्छा न होना।

कानोंकान खबर न होना–अत्यन्त गुप्त रखना।

काफिया तग होना–विवश हो जाना।

काफूर होना–भाग जाना, चम्पत होना।

काबुल मे क्या गधे नहीं होते–बुराइया सर्वत्र पाई जाती हैं।

काम कर जाना–प्रभाव डालना।

काम आना–मृत्यु को प्राप्त होना, मारा जाना।

काम का न काज का दुश्मन अनाज का–बेकार आदमी।

काम न देना–बेकार होना।

कागज की नाव नहीं चलती–बेइमानी अधिक दिनों तक नहीं चलती।

काम निकलना–अभीष्ट सिद्ध होना।

काटा और उलट गया–कह कर मुकर जाना।

काम चलाऊ–कुछ उपयोग में आने वाला।

काम तमाम करना–जान से मार डालना।

काम को काम सिखाता है–अभ्यास से काम करना आ जाता है।

काम प्यारा है चाम नहीं–अर्थ स्पष्ट है।

काम न धधा तीन रोटी बधा–केवल पेट भरना ही मुख्य उद्देश्य होना।

काँयें काँयें लगाये रखना–कलह करना।

काया पलट होना–बहुत बड़ा परिवर्तन होना।

कालचक्र में पड़ना-विपत्ति में फँसना।
काल कवलित होना-मृत्यु को प्राप्त होना।
काला अक्षर भैंस बराबर होना-निरक्षर मूर्ख होना।
कालिख लगना-बदनाम होना।
का वर्षा जब कृषी सुखाने, समय चूकि पुनि का पछताने-अर्थ स्पष्ट है।
कासा दीजै, बासा न दीजै-अपरिचित को भोजन देना चाहिये घर में न टिकाना चाहिये।
किंकर्तव्य विमूढ़ होना-अपना कर्तव्य न समझना।
किनारा करना-अलग हो जाना।
किनारे लगना-पूरा होना, समाप्त होना।
किनारे लगाना-पार उतारना।
किनारे हो जाना-नष्ट होना, बिगड़ जाना।
किया आगे आना-अपने किये का फल प्राप्त होना।
किया कराया बराबर करना-सब परिश्रम व्यर्थ हो जाना।
किरकिरा होना-मार्ग छोड़ देना।
किताब का कीड़ा-अधिक पढ़ने वाला मनुष्य।
किस खेत की मूली-तुच्छ व्यक्ति।
किस चिड़िया का नाम-अपरिचित व्यक्ति।
किसी की कुछ नहीं चलती जब तकदीर फिरती है-भाग्य के आगे किसी का कुछ वश नहीं चलता।
किस्मत लड़ना-भाग्य के अनुकूल होना।
किस्मत फूटना-मन्द भाग्य होना।
किस्मत खुलना-अच्छे दिन आना।
किसी मर्ज की दवा नहीं-किसी काम का न होना।
कियो चाहे चाकरी राखा चाहे मान-नौकरी करने पर मान प्रतिष्ठा नहीं रह जाती।
किस्सा तमाम होना-झगड़ा निबट जाना।
किसी गिनती मे न होना-कुछ महत्व न रखना।
कीच उछालना-नीचता करना।
कीच में पत्थर फेंकना-नीच पुरुष से झमेला करना।
कुआँ खोदना-हानि करने का उद्योग करना।
कुंठित छुरी से गला रेतना-अत्यन्त कष्ट पहुचाना।
कुछ कमान झुके कुछ गोसा-कलह में दोनो दल जब कुछ हानि सहने को तत्पर होते हैं तभी झगड़ा तय होता है।
कुछ खोकर ही अक्ल आती है-बिना कुछ हानि उठाये लाभ नहीं होता।
कुतार होना-काम बिगड़ना।
कुत्ता काटना-पागल होना।
कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है-पशु को भी स्वच्छता अच्छी लगती है।
कुत्ते की मौत मरना-दुर्दशा में पड़कर मृत्यु होना।
कुत्ते की नींद सोना-अचेत होकर न सोना।
कुत्ते को घी हजम नहीं होता-क्षुद्र मनुष्य सम्पत्ति पाकर गुप्त नहीं रख सकता।
कुत्तों के भौंकने से हाथी नहीं डरते-क्षुद्र मनुष्यों के भला बुरा कहने से सज्जन लोग क्षुब्ध नहीं होते।
कुतिया चोरों मिल गई पहरा किसका दे-रक्षक जब चोरों से मिल जाते हैं तब रखवाली नहीं हो सकती।
कुत्ते की दुम बारह वर्ष नली में रक्खी जाय तब भी टेढ़ी की टेढ़ी-नीच मनुष्य अपनी कुटिलता कभी नहीं छोड़ता।
कुन्दी करना-बहुत मारना पीटना।
कुप्पा होना-मोटा ताज़ा हो जाना।
कुलबुला उठना-व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है-अपनी बनाई हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है।
कुल्हिया मे गुड़ फोड़ना-गुप्त रूप से कोई काम करना।
कुएँ में भाँग पड़ना-सब की अक्ल मारी जाना।
कूच बोलना-प्रस्थान करना, चले जाना।
कूट कूट कर भरना-अधिक होना।
कूड़े पर फुलेल डालना-कृतघ्न पर उपकार करना।
कूप मण्डूक बनना-अपने अल्प ज्ञान की श्लाघा करना।
केंचुली बदलना-शारीरिक स्वास्थ्य में उन्नति होना।
कैंडा बदलना-ढग बदलना।
कैंड़े पर लाना-ढग पर लाना।
कैंड़े पर आना-अनुकूल होना।
कै हंसा मोती चुगै कै भूखों मर जाय-प्रतिष्ठित पुरुष को जान से अधिक प्रतिष्ठा प्यारी होती है।
कोई दम का मेहमान होना-मरणासन्न होना।
कोख उजड़ना-सन्तान का मरण।
कोख की आँच-सन्तान के वियोग का दुःख।
कोख खुलना-प्रथम सन्तान का जन्म।
कोदो देकर पढ़ना-अच्छी तरह पढ़ना लिखना न जानना।
कोर कसर-बेशी कमी।
कोरा टालना-कुछ भी न देना।
कोरा रखना-कुछ न सिखलाना।
कोरा रह जाना-कुछ भी न मिलना।
कोउ नृप होय हमे क्या हानी-किसी को लाभ हो हमसे क्या मतलब।

कोरा रखना–कुछ शिक्षा न देना।
कोरा जवाब देना–निराशाजनक उत्तर देना।
कोठी वाला सोवे छप्पर वाला सोवे–अमीर सर्वदा व्यग्र रहता है तथा गरीब सुख की नींद सोता है।
कोयले की दलाली में हाथ काले–संगत का असर अवश्य पड़ता है।
कोयला हो न ऊजला सौ मन साबुन धोय–नीच मनुष्य हजारों उपाय करने पर भी अपनी नीचता नहीं छोड़ता।
कोरी पटिया पर लिखना–कोई नया कार्य आरंभ करना।
कोरी खोरी सुनाना–डाट डपट करना।
कोसों दूर रहना–कोई मतलब न रखना।
कोसों दूर भागना–अरूचि या घृणा होना।
कोल्हू का बैल–दिन रात काम करने वाला मनुष्य।
कौड़ी काम भी न होना–किसी के काम का न होना।
कौड़ी के तीन तीन होना–बड़ा सस्ता होना, विपत्ति में पड़ना।
कौवा चला हंस की चाल–साधारण मनुष्य होकर बड़े आदमियों का अनुकरण करना।
कौड़ी कौड़ी को मुहताज होना–धन की कमी होना।
कौड़ियों के मोल लेना–बहुत सस्ता खरीदना।
कौवे बोलना–उजाड़ होना।
क्या पड़ी है–क्या प्रयोजन है।
क्या पानी मथने से घी निकलता है–बेकार काम करने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, बड़ा कृपण कुछ दे नहीं सकता।
क्या मुँह दिखाना–क्या उत्तर देना।
कृपा पात्र बनना–कृपा का अधिकारी होना।
क्रोध पी जाना–क्रोध को दबा लेना।

ख

खचाखच भरना–बहुत भीड़भाड़ होना।
खट पट होना–लड़ाई झगड़ा होना।
खटका लगा रहना–डर बनी रहना।
खटाई में पड़ना–अनिश्चित अवस्था में होना।
खड़े खड़े बुलाना–थोड़े समय के लिये बुलाना।
खप जाना–नष्ट होना।
खबर लेना–सजा देना।
खयाली घोड़े दौड़ाना–कल्पना करना, धुन बांधना।
खयाली पुलाव पकाना–केवल कल्पना करना।
खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है–दूसरे का अनुकरण करना स्वाभाविक होता है।
खरी खोटी सुनाना–साफ साफ बात कहना, भला बुरा कहना
खरी मजूरी चोखा काम–पूरी मज़दूरी देने से काम अच्छा होता है।
खलबली मचना–उपद्रव होना।
खली गुड़ का एक भाव करना–भले बुरे को समान जानना
खाकर डकार न लेना–चुपके से दबा लेना।
खाल उधेड़ना–कड़ा दंड देना।
खग जाने खगही की भाषा–जिसकी सोहबत में जो रहता है वह उसके विचार से परिचित रहता है।
खाड़े की धार पर चलना–कठिन कार्य करना।
खल्क की जबान खुदा का नक्कारा–समाज के विचार को ईश्वर की आज्ञा समझना चाहिये।
खाइये मनभाता, पहिरिये जगभाता–अपनी रुचि के अनुसार भोजन और दूसरे के पसन्द का वस्त्र पहिरना चाहिये।
खाने को दौड़ना–अति क्रुद्ध होना।
खार खाना–द्वेष करना, कुढ़ना।
खाक छानना–भटकते फिरना।
खाक डालना–छिपा रखना, दबा देना।
खाक फाँकना–मिथ्या बोलना।
खाओ वहाँ तो पानी पियो यहाँ–अति शीघ्र काम पूरा करो
खाक में मिलाना–नष्ट करना, बरबाद करना।
खाक में मिलना–बरबाद हो जाना।
खाक डाले चाँद नहीं छिपता–यशस्वी की निन्दा करने से उसका यश नष्ट नहीं होता।
खाक उड़ाना–मारे फिरना।
खाय सो पछताय न खाय सो भी पछताय–जो पदार्थ दिखाव में सुन्दर हो परन्तु भीतर से खराब निकले उसको ग्रहण करने से पछतावा होता है।
खाने को पीछे नहाने को पहिले–भोजन करने के पहिले स्नान करना चाहिये।
खालाजी का घर–बड़ा सहज काम।
खाने के और दिखाने के दाँत और होते हैं–ऊपर से तो शिष्टाचार करना और मनमें कपट करना।
खाल ओढ़िये सिंहकी स्यार सिंह नहि होय–बाहरी रूप बदलने से किसी का असली गुण नहीं बदलता।
खिचड़ी पकाना–छिपी तरह से कोई षड्यन्त्र रचना।
खिंचा रहना–वैमनस्य रखना।

खिचड़ी मांगे चारयार, दही पापड़ घी अचार-दही, पापड़, घी और अचार खिचड़ी के साथ खाने में अच्छे लगते हैं।
खिल उठना-प्रसन्न होना।
खिल खिलाकर हँसना-ठट्ठा मारकर हँसना।
खिसक जाना-चुपके से भाग जाना।
खिसिया जाना-असन्तुष्ट होना।
खिसियानी बिल्ली खभा नोचे-लज्जित होने पर क्रोध दिखलाना।
खिलाये का नाम नहीं रुलाये का नाम-बच्चों को खिलाना कोई नहीं देखना जब वह रोता है तो सब देखता है।
खींचा तानी मे पड़ना-झगड़े में फँसना।
खुदा खुदा करके-किसी न किसी प्रकार से,बड़ी मुश्किल से।
खुदा गंजे को नाखून न दे-अनधिकारी को अधिकार मिलना बुरा होता है।
खुदाई मे ढेले फेंकना-ईश्वर का कृतघ्न होना।
खुल पड़ना (जाना)-भेदका प्रकट होना।
खुल (कर) खेलना-स्वच्छन्द रहना, वेफिक्र होना।
खुले आम-सबके सन्मुख, सबके सामने।
खुले दिल-उदार हृदय से।
खुशामद से ही आमद है-खुशामद से सब काम निकल जाता है।
खुशामदी टट्टू-वह जो सर्वदा अमीरों की खुशामद किया करता है।
खूंटे के बल बछड़ा कूदे-दूसरे के भरोसे बल दिखलाना।
खून के घूंट पीना-बड़ा कष्ट सहन करना।
खून का सूखना- बहुत डर जाना।
खून का प्यासा-हत्या करने के लिये उद्यत।
खून की नदी बहाना-बहुतेरों की हत्या करना।
खून उबलना-(खौलना) क्रोध उत्पन्न होना गुस्सा आना।
खून से हाथ रंगना-हत्या करना।
खून सफेद होना-बहुत डर जाना।
खून लगा कर शहीदों में दाखिल होना-बिना कोई महत्व का कार्य किये हुए बड़ा बनने की चेष्टा करना।
खून भरी आखों से देखना-अति क्रुद्ध होना।
खेत रहना-लड़ाई में मृत्यु होना।
खेती खसम सेती-मालिक के स्वय निरीक्षण से ही खेती अच्छी होती है।
खेलना खाना-आनन्द में समय विताना।
खेल बिगडना-बना बनाया कार्य नष्ट होना।
खेल बिगाडना-बना बनाया कार्य नष्ट कर देना।
खोकर सीखना-हानि उठाकर तजुर्बा होना।
खोद खोद कर पूछना-तर्क वितर्क करना।
खोपडी खाना-बहुत बकवाद करके परेशान करना।
खोपडी गजी करना-सिर पर मार मार कर बालों को उड़ा देना।
खोपडी रंगना-सिर फोड़ कर लोहू बहाना।
खोटा बेटा खोटा पैसा भी समय पर काम आजाता है *निकृष्ट वस्तु भी किसी समय उपयोग में आ जाती है।*
खोया जाना-नष्ट होना, बरबाद होना।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया-अति परिश्रम करने पर भी कुछ लाभ न होना।

ग

गंगा गये गंगा राम जमुना गये जमुना दास-ऐसा मनुष्य जिसका कोई दृढ सिद्धान्त नहीं होता।
गंजेड़ी यार किसके, दम लगाई खिसके-स्वार्थी मनुष्य किसी के मित्र नहीं होते।
गंगा नहा लेना-किसी काम से निवृत्त होना।
गगन भेदी पताका फहराना-प्रभाव सहित शासन करना
गंगाजली उठाना-हाथ में गगाजल ले कर कसम खाना।
गगा लाभ होना-देहान्त होना।
गट कर जाना-जल्दी से पी जाना।
गठरी मारना-माल चुरा ले जाना।
गड़े मुर्दे उखाड़ना-बीती हुई बातों को कहकर वैमनस्य जाग्रत करना।
गड्ढे में पड़ना-पतित होना, नष्ट होना।
गत बनाना-दुर्दशा करना।
गज भर की छाती होना-उत्साह युक्त होना।
गड़ जाना-लज्जा से झेंप जाना।
गधा खेत खाय जुलाहा मारा जाय-अपराध कोई करे और दण्ड किसी दूसरे को दिया जाय।
गधे को बाप बनाना-मूर्ख व्यक्ति का आदर करना।
गधा धोने से बछडा नहीं होता-मनुष्य की स्वाभाविक प्रकृति किसी तरह से नहीं बदली जा सकती।
गधे पर चढाना-बेइज्जत करना।
गधे चराना-मूर्ख बने रहना।
गधों को हलवा खिलाना-नीचों का सत्कार करना।
गप्प मारना-बेफायदे की बातें करना, झूठ बोलना।
गम खाना-शान्ति धारण करना।
गयन्द का भार गधे पर धरना-जो काम योग्य व्यक्ति

कर सके उसको अयोग्य को सौंपना।
गया गुज़रा जानना–तुच्छ समझना।
गया वक्त फिर हाथ नहीं आता–समय पर चूकना अच्छा नहीं होता।
गये थे रोज़ा छुड़ाने नमाज पड़ी गले–उपकार करने चले थे मगर स्वय दुःख भोगना पड़ा।
गरम होना–क्रोध करना।
गरदन नापना–गरदनिया देकर हटा देना।
गरदन पर सवार होना–पीछे पड़ जाना, बहुत तग करना।
गरदन काटना–कष्ट पहुचाना, हानि पहुचाना।
गरदन पर छुरी फेरना–अत्याचार करना।
गरदन झुकाना–नम्र होना, आधीन होना।
गरदन झुकना–विनीत बन जाना।
गरदन उठाने का मौक़ा न मिलना–कार्य में अति व्यस्त रहना, अवकाश न मिलना।
गरदन उठाना–भिड़ जाना, प्रतिवाद करना।
गरदन मारना–हत्या करना, वध करना।
गरीब सब कोई कहते हैं, बड़े आदमी कोई नहीं कहता–गरीबों की त्रुटियों को सब कोई देखता है, अमीरों की कोई नहीं देखता।
गरीब की हाय बुरी होती है–गरीब पर कभी अत्याचार न करना चाहिये।
गरीबने रोजे रक्खे तो दिन बड़े हो गये–गरीब का समय सर्वदा दुख से ही बीतता है।
गरीबों से मुंह छिपाना–शर्मिन्दा होना।
गर्द भी न पाना–खोजने से न मिलना, बराबरी में न ठहरना।
गरेबा चाक करना–प्रेमातुर होना।
गला काटना–अत्याचार करना, पीड़ा पहुचाना।
गला रेतना–अत्याचार करना।
गला सूखना–प्यास लगना।
गला घोंटना–अत्याचार करना, बड़ा कष्ट देना।
गला फँसना–लाचार हो जाना।
गला फँसाना–विपत्ति में डालना।
गली गली मारे फिरना–दुर्दशा होना।
गले का हार होना–बड़ा प्यारा बनना, चिपट जाना।
गले मढ़ना–इच्छा के विरुद्ध कोई काम किसी को सौंपना।
गले पड़ना–ऊपर आ जाना।
गले से लगाना–प्यार करना।
गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त–अर्थ स्पष्ट है।
गहरा असामी–बहुत धन देने वाला।
गहरा हाथ मारना–इच्छा की हुई वस्तु का अधिक परिमाण मे मिलना।
गहरी छनना–आनन्द में समय बिताना, अधिक वार्तालाप होना।
गहरी चाल चलना–बड़ा छल करना।
गाँठ मे जमा तो खातिरजमा–पास में धन होने से किसी बात की फिक्र नहीं रहती।
गाजर मूली समझना–तुच्छ जानना।
गाँठ काटना–बहुत महगा बेचना, जेब काटना।
गाँठ खुलना–झझट दूर होना।
गाँठ मे बाँधना–अच्छी तरह याद रखना।
गाँठ लेना–अपने पक्ष में कर लेना।
गाँठ पर गाँठ पड़ना–झझटे बढ जाना।
गाँठ का पूरा–बड़ा अमीर।
गाड़ी चल पड़ना–कार्य का आरभ होना।
गाड़ी रुक जाना–चलता काम बद होना।
गाढ़ी छनना–बड़ी मित्रता होना।
गागर मे सागर भरना–थोड़े में कहना, सक्षिप्त में वर्णन करना।
गाढी कमाई–परिश्रम से कमाया हुआ धन।
गाल बजाना–बक बक करना।
गिन गिन कर दिन काटना–बड़े कष्ट में दिन बिताना।
गिन गिन कर बदला लेना–बड़ी तकलीफ देना, पूरी तरह से बदला चुकाना।
गिन गिन कर पाँव धरना–धीरे धीरे चलना, सावधानी से काम करना।
गिरगिट की तरह रंग बदलना–बारबार अपना मत बदलना, किसी सिद्धान्त पर स्थित न रहना।
गिरह टटोलना–कुछ लेने की इच्छा करना।
गिरह पड़ जाना–मनमुटाव होना।
गीत गाना–प्रशसा करना, तारीफ करना।
गीदड़ की शामत आवे तो गाँव की ओर भागे–भाग्य बिगड़ जाने पर बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती हैं।
गीदड़ भबकियाँ दिखलाना–वृथा डराना, झूठ मूठ त्रास देना।
गुञ्जा मानिक एक समान–पंडित और मूर्ख का भेद न समझना।
गुट्ट बाँधना–दलबन्दी करना।

गुड़ गोबर कर देना—काम को बिगाड़ देना।
गुद्दा बाँधना—अपमानित करना, बेइज्जत करना।
गुथ पड़ना—लड़ जाना।
गुड़ खाय गुलगुलो से परहेज—वृथा का आडम्बर रचना।
गुड देने से मरे तो जहर क्यों देना—यदि समझाने से काम हो जाय तो दण्ड क्यों देना।
गुनाह बेलज्ज़त—नीच कर्म करने पर भी न मिलना।
गुर निकलना—उपाय का पता लगाना।
गुरू गुड़ रह गये चेला चीनी हो गये—चेले का गुरू से भी अधिक विद्वान होना।
गुल खिलना—विचित्र घटना होना।
गुदड़ी का लाल—किसी के रंग रूप से उसके गुणों का पता न चलना।
गुल खिलाना—विचित्र घटना उपस्थित करना।
गुलछर्रे उड़ाना—आनन्द मचाना।
गूंगे गुड खाना—अपना अनुभव न प्रकट कर सकना।
गूलर का फूल लेना—न मिलने वाली वस्तु की आकांक्षा करना।
गूलर का फूल हो जाना—लुप्त हो जाना, बेपते होना।
गोद मे बैठाकर आँखों मे उंगली—कृतघ्नता प्रगट करना।
गोली मारना—त्याग देना, छोड़ देना।
गोरखधधे से पड़ना—झझट में पड़ना।
गोद मे लडका शहर भर ढिंढोरा—पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना।
गोकुल से मथुरा न्यारी—परस्पर सबन्ध न होना।
गोबर गिरा तो कुछ लेकर ही उठेगा—धन उधार लिया तो कुछ सूद जरूर ही देना होगा।
गौं निकलना—स्वार्थ सिद्ध होना।

घ

घड़ो पानी पड़ना—अत्यन्त लज्जित होना।
धनचक्कर में पड़ना—आफत में पड़ जाना।
घर उजड़ना—सपूर्ण सम्पत्ति का नाश।
घर आया कुत्ता भी नहीं निकाला जाता—अतिथि का अपमान न करना चाहिये।
घर की खेती—सहज में मिलने वाला पदार्थ।
घर की मुर्गी साग बराबर—घर की वस्तु का विशेष आदर नहीं होता।
घर की खाँड किरकिरी लगे चोरी का गुड़ मीठा—बुरी रीति से प्राप्त की हुई वस्तु घर की वस्तु से अधिक अच्छी लगती है।
घर काटने दौड़ना—मकान में दिल न लगना।
घर करना—पति बनाना।
घर का रास्ता लेना—भाग जाना।
घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध—विद्वान मनुष्य की अपने देश में उतनी प्रतिष्ठा नहीं होती जितनी अन्य देश में होती है।
घर का दिया बुझ जाना—एकमात्र पुत्र की मृत्यु होना।
घर के घर रहना—लाभ हानि बराबर होना।
घर घर पूजा होना—सर्वत्र प्रतिष्ठा होना।
घर बैठे गगा आना—अनायास धन मिलना।
घर बैठे—बिना बाहर गये।
घर बसना—विवाह होना, घर में स्त्री का आगमन।
घर का आदमी—अपना ही सम्बन्धी।
घर का न घाट का—कहीं का भी न होना।
घर की आधी भली बाहर की सारी कुछ नहीं—घर में काम करके थोड़ा ही मिले तो भी बाहर के व्यवसाय से अच्छा है।
घर खीर तो बाहर खीर—घर में धन है तो बाहर भी प्रतिष्ठा होगी।
घरमे नहीं दाने बुढ़ियाँ चली भुनाने—झूठा आडंबर रचना
घर के पीरों को तेल का मलीदा—घर के लोगों के साथ तो बुरा व्यवहार किया जाय और बाहर वालों की बड़ी प्रतिष्ठा।
घर बनना—आर्थिक स्थिति सुधरना।
घर फूँक तमाशा—सम्पत्ति का नाश करके आनन्द मचाना।
घरघर यही लेखा—सभी परिवार में समान स्थिति रहती है।
घर मे चूहे कूदना—अति दरिद्र होना।
घरसे बाहर न निकलना—ससार का अनुभव न प्राप्त करना
घर सिर पर उठाना—बड़ा कोलाहल मचाना।
घर मे दिया तो मसजिद में दिया—बाहर की फिक्र करने के पहिले अपने घर की स्थिति सँभालो।
घर में डाल लेना—पत्नी बनाना।
घर तक पहुँचाना—पूर्ण करना।
घर का भेदिया लंका ढाहे—आपस के वैर का बुरा परिणाम होता है।
घाट घाट का पानी पीना—सब तरह के अनुभव प्राप्त करना
घात में रहना—अर्थ सिद्ध करने के लिये ताक में रहना।
घात लगाना—नुकसान पहुँचाने के लिये मौका ढूँढना।
घाव हरा होना—बीते हुए कष्ट का स्मरण होना।

घाव पर नमक छिड़कना–दुःखी को और भी कष्ट देना।
घास काटना (खोदना)–व्यर्थ के काम में समय गँवाना।
घास खा जाना–पागल होना।
घिग्घी बँधना–बहुत डरके कारण मुख से शब्द न निकलना।
घी कहाँ गया खिचड़ी में–अपनी वस्तु अपने प्रयोग में आना।
घी के दीपक जलाना–हर्ष और आनन्द मचाना।
घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो–मनुष्य को इतना धन खर्च करना चाहिये कि बाहर मान मर्यादा बनी रहे
घुट घुट कर मरना–बड़ा कष्ट भोग कर शरीर छूटना।
घुटने टेकना–आधीन होना, विनीत भाव दिखलाना, आत्मसमर्पण करना।
घुन लगना–किसी भीतरी रोग से अति दुर्बल हो जाना।
घुमाकर नाक पकड़ना–अपने अभिप्राय को लपेट की बातों में प्रकट करना।
घुमा फिराकर बातें करना–साफ साफ बात न कहना।
घुलघुल कर बात करना–घनिष्ठता से प्रेम पूर्वक बातें करना
घुल जाना–बड़ा दुर्बल होना।
घोड़े बेंचकर सोना–निश्चिन्त होकर सोना।
घोड़ा घास से यारी करे तो क्या खाय–व्यापार में मुनाफा न लेने से काम नहीं चलता।
घोड़ा घुड़साल में ही बिकता है–जहाँ की वस्तु वहीं बिकती है।
घोलकर पीजाना–किसी प्रकार की चिन्ता न करना।

च

चंग पर चढ़ाना–उत्तेजित करना।
चंग मे फँसना–परवश हो जाना।
चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ–उत्तम वस्तु थोडे मात्रा में भली होती है, बुरी वस्तु अधिक भी भली नहीं होती।
चंडूखाने की गप्प–झूठी बात।
चकमा देना–धोखे में डालना।
चक्कर मे डालना–झगडे में फँसाना।
चक्कर में पड़ना–धोखे में आ जाना।
चक्की पीसना–बड़ा परिश्रम करना।
चचा बन जाना–अधिक चालाक होना।
चट कर जाना–जल्दी से खा जाना।
चटनी हो जाना–खूब पिस जाना।
चटटे बट्टे लड़ाना–इधर उधर की बातें कहकर झगड़ा खड़ा करना।
चढ़ा जाना–पी जाना।
चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय–बड़ा कृपण होना।
चबा चबा कर बातें करना–साफ खोल कर न कहना।
चल बसना–मर जाना।
चरका देना–धोखा देना।
चम्पत हो जाना–भाग जाना।
चरण छूना–विनती करना, प्रणाम करना।
चरबी बढ़ना–मोटा ताजा होना।
चलता करना–रवाना करना।
चलती गाड़ी मे ओट लगाना–काम में विघ्न डालना।
चहल पहल मचना–रौनक होना।
चाँदी का जूता मारना–घूस देना।
चाँद पर थूकना–किसी की निन्दा करके स्वयं दूषित होना
चाँदी होना–अधिक लाभ होना।
चादर उतार डालना–बेशर्म होना।
चादर तान कर सोना–निश्चिन्त हो जाना।
चादर के बाहर पैर फैलाना–आय से अधिक व्यय करना
चादर देख कर पाँव फैलाना–शक्ति के अनुसार काम करना।
चाकरी मे नाकरी क्या–नौकरी करने पर कुछ इनकार नहीं हो सकता।
चार आँसू गिराना–शोक करना।
चार चाँद बढ़ाना–इज्जत बढ़ाना।
चार दिन की चाँदनी फिर अधेरी रात–सर्वदा सुख के दिन नहीं रहते।
चार दिन–थोडे दिन तक।
चारपाई से लग जाना–रोग से अति दुर्बल हो जाना।
चार बातें सुनाना–खरी खोटी सुनाना।
चार पैसे हाथ मे होना–आर्थिक स्थिति अच्छी होना।
चाल चलना–धूर्तता करना, दगाबाज़ी करना, कपट व्यवहार करना।
चाल पड़ना–रिवाज होना, फर्क आना।
चाल में आना–धोखे में पड़ना।
चारो खाने चित्त आना–बुरी तरह से हारना।
चिकना घड़ा–जिस पर किसी शिक्षा का प्रभाव न पडे।
चिकनी चुपड़ी बातें करना–मीठा बोल कर धोखा देना।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता–बेहया पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता।
चिड़िया फंसाना–किसी मालदार असामी को धोखा देकर

अपने वश में करना।
चित करना—हानि पहुँचाना, हराना।
चिता पर पांव रखना—मरण काल समीप आना।
चित पर चढना—मन को भला लगना।
चित्र बन जाना—मूर्ति की तरह चुप चाप बैठ जाना।
चिराग गुल होना—मृत्यु होना।
चिराग तले अंधेरा—न्याय के स्थान में अन्याय होना।
चिराग ठढा होना—पुरुषार्थ का अन्त होना।
चिराग लेकर ढूंढना—बड़ी खोज करना।
चिलम पर आग भी न रखवाना—अति तुच्छ समझना।
चिल्ल पों करना—रोना, विलाप करना, चिल्लाना।
चीं बोलना-हार मानना।
चींटी चाहे सागर थाह सामान्य मनुष्य का बडे काम करने में उद्योग।
चुटकियों में—अति शीघ्र, तुरत।
चुटकियो में उड़ाना—दिल्लगी में टालना।
चुटकी लेना— मर्मवेधी बातें कहना।
चुल्लू मे उल्लू, लोटे मे गडगप—शराबी की अवस्था का यह वर्णन है।
चुल्लू भर पानी भी न पूछना—किसी काम में न आना।
चुल्लू भर पानी में डूब मरना—लज्जा वश मुह न दिखलाना।
चूचकार करना—आपत्ति करना, वादाविवाद करना।
चूड़ियां पहरना—कायर बनना।
चूडिया फूटना—विधवा होना।
चूल्हा न जलना—भोजन न मिलना।
चूल्हे का फूंकना और दाढ़ी रखना—दो असगत कार्य करना
चूल्हे में पढना—नष्ट होना।
चूल्हे की है न चक्की की—ऐसी स्त्री जो कोई काम न कर सकती हो।
चूहेका बच्चा बिल ही खोदता है—किसी का जाति स्वभाव नहीं छूटता।
चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढे जाते—क्षुद्र मनुष्य से बड़ा काम नहीं हो सकता।
चेहरा उतरना—उदास होना।
चेहरे पर हवाइया उतरना—भयत्रस्त होना।
चैनकी छनना—(बसी बजाना) आनन्द से जीवन बिताना
चोचले दिखलाना—इतराना।
चोट उभड़ना—दुख फिर से आ जाना।
चोट पर चोट लगना—दुख में दुख होना।

चोटी हाथ में आना—वश में होना।
चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाली—रखवाला ही यदि चोर हो तो रखवाली कैसे हो सकती है।
चोट करना—आक्रमण करना, धावा करना।
चोर की दाढ़ी मे तिनका—चोर को सदा सन्देह बना रहता है कि वह कहीं पकड़ा न जावे।
चोर चोर मौसेरे भाई—एकही स्वभाव और व्यवसाय वाले मनुष्य परस्पर मेल रखते हैं।
चोर के पैर नहीं होते—चोर का मन सदा डरा करता है।
चोरी का माल मोरी मे—बुरी तरह से कमाया हुआ धन बुरे कामो में खर्च होता है।
चौकन्ना होना—सावधान होना।
चौकस रहना—सचेत रहना।
चौका लगाना—सत्यानाश करना।
चौखट चूमना—आधीनता स्वीकार करना।
चौथ का चाद—भादों सुदी चौथ का चन्द्रमा जिसको देखने से कलक लगता है।
चौपट करना—नष्ट करना, बरबाद करना।

छ

छटा हुआ—प्रसिद्ध, मशहूर।
छक्के छुड़ाना—परास्त करना।
छक्के छूटना—साहस न रहना।
छक्के पजे उड़ाना—आनन्द मचाना।
छछूदर के सिरमे चमेली का तेल—अयोग्य व्यक्ति को उत्तम पदार्थ मिलना।
छटपटा उठना—व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
छटाक चून चौबारे रसोई—झूठा आडबर।
छठीका दूध याद आना—कठिन कष्ट पड़ना।
छत्र छाया में रहना—आधीन रहना।
छप्पन टके खर्च होना—ज्यादा खर्च होना।
छप्पर पर रख देना—त्याग देना, छोड़ देना।
छप्पर फाड़ कर मिलना—अनायास प्राप्त होना।
छाती के किवाड़ खोलना—उदारता से खर्च करना।
छाती पर कोदो दरना—सन्मुख अनुचित कार्य करना, कष्ट पहुचाना।
छाती का पत्थर टलना—दुःख दूर होना।
छाती पर सॉप लेटना—ईर्ष्या करना, डाह करना।
छाती खोलकर चलना—निर्भय होकर चलना।
छाती जलना—दुःख देना।

छाती जुड़ाना–शान्ति मिलना।
छाती ठोंकना–दिल कड़ा करना।
छाती ठंढी करना–चित्त सन्तुष्ट करना।
छाती तले रखना–प्रेम पूर्वक पास रखना।
छाती पर पत्थर रखना–कष्ट सहन।
छाती पर बाल न होना–वीर होना।
छाती पीटना–शोक मनाना।
छाती से लगाना–प्यार करना।
छान डालना–अन्वेषण करना, खोज करना।
छापा मारना–लूट लेना।
छाया तक न पड़ना–कुछ प्रभाव न पड़ना।
छिपा रुस्तम निकलना–योग्य सिद्ध होना, दुष्ट सिद्ध होना
छिद्रान्वेषण करना– ऐब निकालना।
छींकतेही नाक काटना–अपराध करते ही दण्ड मिलना।
छींटे डालना–मर्मवेधी बातो का संकेत करना।
छीछालेदर करना–दुर्दशा करना।
छुट्टी पाना–विस्तार होना, मुक्त होना।
छुरी खरबूजे पर गिरे या खरबूजा छुरी पर गिरे बात एक ही है–हानि दोनों ही तरह से होती है।
छुरी तले दम लेना–कष्ट से जिन्दगी बिताना।
छुरी तेज करना–कष्ट देना, सताना।
छू मन्तर हो जाना–भाग जाना।
छोटे मुँह बड़ी बात–बढ बढ कर बातें करना।
छोटे मिया तो छोटे मिया, बड़े मिया सुभान अल्लाह–बड़े में छोटे से अधिक दुर्गुन जब देख पड़ता है तब कहा जाता।

ज

जंगल मे मंगल होना–निर्जन स्थान में आनन्द का उत्सव होना।
जगह कर जाना–प्रभाव डालना।
जगह करना–मकान बनाना, स्थान देना।
जग मे देखने का ही नाता–संसार में जीते जी का ही नाता रहता है।
जड़ उखाड़ना–नाश करना।
जड़ छोड़ना–जम कर बैठना।
जनमघुट्टी में दिया जाना–जन्म से ही अभ्यास डालना।
जने जने की लकड़ी एक जने का बोझ–समष्टि में बड़ा बल होता है।
ज़बान पर चढा रहना–अच्छी तरह से याद रहना।
ज़बान एक होना–अपने कहे पर दृढ रहना।
ज़बान खींचना–बड़ा दण्ड देना।
ज़बान बदलना–कह कर मुकर जाना।
ज़बान हिलाना–मांगना।
ज़बान पर लाना–कह बैठना।
ज़बानी जमा खर्च करना–दिखावटी सहानुभूति दिखलाना
ज़बान देना–प्रतिज्ञा करना, वचन देना।
ज़बान मे लगाम न होना–अशिष्ट वचन बोलना।
ज़माने की लहर के साथ चलना–स्थिति के अनुसार काम करना।
ज़मीन आसमान एक करना–बड़ी खोज करना।
ज़मीन पर पॉव न रखना–बड़ा गर्व करना।
ज़मीन में गड़ जाना–बड़ा लज्जित होना।
जल मे रह कर मगर से बैर–जिस के आधीन रहे उसी से शत्रुता करना।
जल जल कर भस्म होना–क्रोधवश दुख पाना।
जली भुनी कहना–कठोर शब्दो का प्रयोग करना।
जले पर नमक छिड़कना–दुखी को और दुख देना।
ज़हर का घूँट पीना–क्रोध के आवेग को रोकना।
ज़हर लगना–बुरा मालूम होना।
ज़हर दिखाई देना–घृणा होना।
जहा का तहा खपा देना–जान से मार डालना।
जहां की मिट्टी वहीं ले जाती है–जहा मरना होता है वहीं मनुष्य चला जाता है।
जहां गुड़ होगा वहीं चींटियां होंगी–लोग वहीं इकट्ठा होते हैं जहाँ उनको कुछ मिलने की आशा होती है।
जहां मुर्गा नहीं होता वहां क्या सवेरा नहीं होता–किसी के बिना संसार का कोई काम नहीं रुकता।
जहां चार बासन होंगे वहीं खड़केंगे–जहा अनेक मनुष्य होते हैं वहा पर झगड़ा होता ही है।
जहां गुल है वहीं कांटा भी है–गुण के साथ कभी कभी दोष भी देख पड़ते हैं।
जहां जाय बाले मिया तहा जाय पूंछ–अमीरों के साथ सर्वदा उनके पिछ लग्गू बने रहते हैं।
जहां न पहुंचे रवि वहा पहुचे कवि–कवि अपनी कल्पना से सर्वत्र पहुच जाता है।
जबरा मारै रोने न दे–निर्बल को बलवान् सदा कष्ट देता है
जबरदस्त का ठेंगा सिर पर–निर्बल सदा बलवान् के आधीन रहता है।

जबां शारी मुल्क गीरी—मीठा बोल कर मनुष्य ससार में सब को प्रसन्न कर सकता है।

जल की मछली जल में ही भली—जहा की वस्तु वहीं अच्छी लगती है।

जमात करामात—सगठन में बड़ी शक्ति होती है।

जस दूल्हा तस बनी बराता—जैसे को वैसा साथी मिलता है

जबान ही हाथी पर चढावे और जबान ही सिर कटावे—भरा बुरा बोलने पर ही मनुष्य की उन्नति और अवनति निर्भर होती है।

जब अपनी उतार ली तब दूसरे की उतारने मे क्या लगता है—जब अपनी इज्जत गई तब दूसरे की इज्जत बरबाद करने में क्या है।

जब तक जीना तब तक सीना—जिन्दगी भर ससारी झझटें बनी रहती हैं।

जागते को जगाना—समझदार को शिक्षा देना।

जादू डालना—अपने मतलब में फँसाना।

जा धमकना—अकस्मात् पहुच जाना।

जान आना—शक्ति आना।

जान पर बनना—जान जाने का डर होना।

जान पर खेलना—अपने को सकट में डालना।

जान चुराना—काम करने से जी चुराना।

जान खोना—अधिक कष्ट सहना।

जान खाना—बहुत परेशान करना।

जान से हाथ धोना—मृत्यु प्राप्त करना।

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी—जिसकी जैसी भवना रहती है उसको देवता की वैसी ही मूर्ति देख पड़ती है।

जान का जंजाल होजाना—अरुचिकर होना।

जाके पाँव न फटी बेवाई सो क्या जाने पीर पराई—जिसने स्वय कष्ट का अनुभव नहीं किया हैं वह पराये की पीड़ा को क्या जाने।

जान मार कर काम करना—अपने भरसक पराक्रम करना।

जान में जान आना—सन्तोष मिलना।

जानवरों में कौवा मनुष्यों में नौवा—ये बड़े चतुर होते हैं।

जान से जाना—मरना।

जान छूटना—आपत्ति से छुटकारा पाना।

जान छुड़ाना—आपत्ति से बचना।

जान भारी होना—जिन्दगी दुःखमय होना।

जान के लाले पड़ना—जीवन की चिन्ता होना।

जान सूखना—भयभीत होना।

जान का गाहक बनजाना—प्राण लेने के लिये उद्यत होना।

जान बूझकर मक्खी निगलना—अपने हाथों से अपना अनिष्ट बुलाना।

जान डालना—उत्साहित करना, जोरदार बनाना।

जामे से बाहर होना—बड़ा कुपित होना।

जाल फैलाना—षड्यन्त्र रचना।

जाल डालना—धोखा देना।

जाल में फँसना—धोखे में आ जाना।

जिस हाड़ी मे खाना, उसी में छेद करना—उपकार के बदले अपकार करना।

जिसकी छाया मे बैठना उसी की जड़ काटना—जो अपना हित करे उसका अपकार करना।

जिसकी बंदरिया वही नचावै—जिसका काम वही कर सकता है।

जितने मुंह उतनी बात—भिन्न भिन्न मनुष्यों के पृथक् विचार होते हैं।

जिस डाल पर बैठे उसी को काटे—जो आश्रय दे उसी से अपकार करना।

जिह्वाग्र होना—अच्छी तरह से याद होना।

जिसके हाथ लोई उस का सब कोई—धनी मनुष्य की सब लोग खुशामद करते हैं।

जी उचट जाना—मन न लगना।

जीभ जली पर स्वाद न आया—अच्छा काम किया पर फल उलटा मिला।

जी काँपना—डर लगना।

जी छोड़ना—हिम्मत हारना।

जी चुराना—सुस्ती करना।

जी छूट जाना—हताश होना।

जी का बोझ हलका होना—चिन्ता से छूटना।

जी छोटा करना—उदास होना।

जी जलाना—दुःखी करना।

जी टगा रहना—खटका बना रहना।

जी टूट जाना—उत्साह हीन होना।

जी दहल जाना—व्यग्र होना, घबड़ाना।

जी न भरना—तृप्त न होना।

जी पक जाना—तग आ जाना।

जीभ लपलपाना—भोजन करने की लालसा होना।

जीभ चलते रहना—बकवाद करते रहना।

जीभ पकड़ना—बोलने से रोकना।

जीभ सभालकर बोलना—शिष्टता से वार्तालाप करना।

जीमे जी आना–धैर्य युक्त होना।
जीवन की घड़िया गिनना–मृत्यु समीप आना।
जी से उतर जाना–अच्छा न लगना।
जी हुजूर बनना–अफसर बनाना।
जूं की डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती–थोड़े से कष्ट के लिये काम नहीं छोड़ा जाता।
जुल देना–धोखा देना, उभाड़ना।
जुए को कन्धे से उतारना–स्वतन्त्र हो जाना।
जूड़ी आना–कष्ट जान पड़ना।
जूता चाटना–चापलूसी करना।
जूता लगना–लज्जित होना।
जूता लगाना–अपमान करना।
जूतियॉ चटकाते फिरना–बुरा काम करने में व्यग्र रहना।
जूते की नोक पर मारना–अति तुच्छ समझना।
जूते से बात करना–अपमानित करना।
जेब से जाना–खर्च होना।
जैसा देश वैसा भेप बनाना–स्थिति के अनुसार चलना।
जैसा दाम वैसा काम–जैसी मजदूरी वैसा काम।
जैसे सांपनाथ वैसे नागनाथ–एक समान होना।
जोड़े न होना–अद्वितीय होना।
जोड़ तोड़ करना–उपाय निकालना।
जोर डालना–दबाव डालना।
जौहर खुलना–परीक्षा होना।
जौहर दिखलाना–गुण प्रकट करना।
ज्यो ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय–कर्ज अदा न करने पर वह बढता ही जाता है।

झ

झख मारना–व्यर्थ की बकवाद करना, विवश हो जाना
झगड़ा मोल लेना–जान बूझ कर कलह करना।
झटक लेना–ठग लेना, अपहरण करना।
झटक जाना–शरीर दुर्बल होना।
झड़ी लगा देना–अधिक सख्या या परिमाणमें उपस्थित करना
झण्डा गाड़ना–अधिकार स्थापित करना।
झपट लेना–छीन लेना।
झॉसा देना–धोखे में डालना।
झॉसे में आना–धोखे में पड़ना।
झाड़ पड़ना–डाटा जाना।
झाड़ू फेरना–नष्ट कर देना।
झाड़ू मारना–तिरस्कार करना।
झूठ सच कहना–निन्दा करना।
झूठे का मुँह काला सच्चे का बोल बाला–सच्चे का विजय होता है झूठा हार जाता है।
झूठे के पॉव नहीं होते–झूठे मनुष्य को साहस नहीं होता।
झोपड़ी डालड़ा–कुछ देर तक ठहरना।
झोंपड़ी में रहे महलो का ख्वाब देखे–बड़ी बड़ी आकाक्षा करना।

ट

टकटकी बॅधना–पलक न झिपना।
टकराते फिरना–इधर उधर खोजते फिरना।
टका सा जवाब देना–स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना।
टकसाल हो जाना–प्रधान स्थान होना।
टकराते फिरना–इधर उधर खोजते फिरना, भटकना, दुःख उठाते रहना।
टकसाली बात कहना–प्रामाणिक बात कहना।
टक्कर खाना–नुकसान उठाना।
टक्कर का होना–समान होना।
टक्कर लगना–नुकसान पहुँचना।
टका पास न होना–पास में धन न होना।
टका सा मुँह लेकर रह जाना–शर्मिन्दा होना।
टके का सब खेल है–धन से ही ससार में सब काम होता है।
टट्टी की आड़ में शिकार करना–धूर्तता से छिपकर कार्य साधना, छिप कर पाप करना।
टपक पड़ना–अकस्मात् आ पहुँचना।
टरका देना–टालना, बिना कुछ दिये वापस करना।
टस से मस न होना–विनती और शुश्रूषा का प्रभाव न पड़ना।
टॉक लेना–नोट कर लेना, लिख लेना।
टर टर करना–बेफायदा बक बक करना।
टॉंका देना–सिलना।
टॉके खोलना–गुप्त बातों को प्रगट करना।
टॉग अड़ाना–विघ्न डालना, हस्तक्षेप करना।
टॉग गले से निकल जाना–पराजय स्वीकार करना।
टांग तोड़ना–बेकार घूमते फिरना।
टॉंग पसार कर सोना–चैन से कालक्षेप करना।
टॉगें रह जाना–चलते चलते शिथिल हो जाना।
टॉय टॉय फिस होना–उद्योग करने पर असफल होना।
टाट उलटना–दीवालिया बन जाना।
टापते रह जाना–कुछ हासिल न होना।

टायँ टायँ करना–व्यर्थ बकबक करना।
टालमटोल करना–बहानेबाजी करना।
टिप्पस लगाना–अपना मतलब साधने के लिये ढंग रचना
टीका टिप्पणी करना–किसी विषय की समालोचना करना
टीका भेजना–कन्या पक्ष का वर पक्ष के घर पर विवाह स्थिर होने के निमित्त फल, मिठाई, वस्त्र आदि भेजना
टीपटाप दिखलाना–गौरव दिखलाना।
टीस होना–शरीर में कहीं पर पीड़ा होना।
टुकड़े लगना–खाने पीने के लिये किसीके आश्रित होना।
टुकड़ा तोड़ना–किसीके आश्रित होकर रहना।
टुकड़ा मागना–भिक्षा माँगना।
टुकड़गदाई–वह जो भोजन मिलने की आशाय से अड़ा रहता है।
टुटपुंजिया–अल्प धन वाला मनुष्य।
टूट पड़ना–आक्रमण करना, कमी होना।
टूटी बाह गले में पड़ना–किसी का बोझ अपने सिर पर पड़ना।
टेक रख लेना–मान मर्यादा स्थापित करना।
टेढा होना–अकड़ दिखलाना।
टेढी अगुली से ही घी निकलता है–निरा सीधा बने रहने से काम नहीं चलता।
टेढी खीर–कठिनता से होने वाला कार्य।
टेढी टोपी लगाना–शान दिखलाना।
टेढी चाल चलना–कपट व्यवहार करना।
टेढी नजर से देखना–बुरी निगाह से देखना।
टोपी उछालना–आनन्द का प्रदर्शन करना।
टोपी बदलना–किसी मनुष्य को अपना मित्र बना लेना।

ठ

ठंढा लोहा गरम लोहे को काट देता है–शान्त रहने से क्रोधी का कुछ वश नहीं चलता वह अन्त में हार जाता है।
ठकुरसुहाती कहना–शुश्रूषा करना।
ठठरी होना–अति दुर्बल हो जाना।
ठढक लगना सरदी लगना।
ठढा पड़ जाना–क्रोध चला जाना, उत्साह हीन होना। शान्त होना।
ठढा हो जाना–मृत्यु को प्राप्त होना।
ठढे चूल्हे बैठना–बेकार बैठे रहना।
ठढी साँस लेना–सोच विचार में उदास हो रहना।
ठाठ बदलना–आडबर करना।
ठान लेना–निश्चय कर लेना।
ठठेरे ठठेरे बदलौवल–समान व्यवसाय वालों का परस्पर सबंध, बराबरी।
ठिकाना कराना–प्रबंध करना, विवाह करना।
ठाला बनिया क्या करे इस कोठी का धान उस कोठी मे धरे–बेकार आदमी फजूलका काम किया करता है।
ठिकाने लगना–काम में आना।
ठिकाने लगाना–अन्त कर देना।
ठिकाने न रहना–स्थायी न रहना।
ठिकाने की बातें कहना–उचित वार्ता कहना।
ठीक कर देना–सजा देना।
ठी ठी करना–हँसना।
ठोंकना बजाना–जाँच करना, परीक्षा करना।
ठोकर खाते फिरना–बेकार भटकते फिरना।
ठोकर पर ठोकर खाना–एक कष्ट के बाद दूसरे का आना
ठोकर खाकर संभलना–हानि हो जाने पर सचेत हो जाना
ठोकर लगना–हानि उठाना।

ड

डंक मारना–तकलीफ देना।
डका बजना–शोहरत होना, विस्तार होना।
डके की चोट कहना–स्पष्ट शब्दों में कहना।
डंड पेलना–खापीकर मस्त रहना।
डडी मारना–कम तौलना।
डकार जाना–किसी की वस्तु अपहरण करना।
डकार तक न लेना–अच्छी तरह से हजम कर जाना, चुप रह जाना।
डट जाना–स्थिर होना।
डाइन भी अपने बच्चे को नहीं खाती–सभी स्त्रिया अपने बच्चे का लाड़ प्यार करती हैं।
डावाँडोल होना–स्थिर न रहना।
डाटकर भोजन करना–खूब पेट भर कर खाना।
डाढें मारना–चिल्लाते हुए रोना।
डींग मारना–शेखी करना।
डुगडुगी पीटना–ढिंढोरा पीटना, प्रसिद्ध करना।
डूब रहना–लीन होना।
डूबते को तिनके का सहारा–पूरी निराशा होने पर थोड़ी सी आशा होना।
डेढ चावल की खिचड़ी अलग पकाना–[illegible] मत का होना।
डोरी ढीली करना–शासन की कड़ाई कम करना।

डोरपर लगाना–सीधी राह पर लगाना।

ड़ेढ़ ईंट की मसजिद् अलग बनाना–न्यारे मत का होना, अपना मत सबसे निराला रखना।

डेरा डंडा कूच करना–प्रस्थान करना।

ढ

ढपोर संख–बेवकूफ, बेअक्ल।

ढब पर चढना–वश में होना।

ढर्रे से बातें करना–बडे ढग से बोलना।

ढर्रे पर लगाना–अनुकूल बनाना।

ढब निकालना–उपाय ढूढना।

ढब पर लाना–उचित मार्ग पर लाना।

ढाक के वही तीन पात–सर्वदा सामान्य स्थिति में रहने वाला।

ढाई दिन की बादशाहत पाना–थोडे दिनों के लिये अधिकारी बनना।

ढील ढाल करना–देर करना।

ढूंढ़ कर लड़ाई मोल लेना–जान बूझ कर झगड़ा खड़ा करना।

ढेर कर देना–मार डालना।

ढेर लगा देना–अधिक संख्या में इकट्ठा कर देना।

त

तकदीर आजमाना–भाग्य की परीक्षा करना।

तकदीर फूट जाना–किस्मत बिगड़ जाना।

तकदीर चमकना–भाग्य में उन्नति होना।

तकदीर ठोंकना–भाग्य का दोष देना।

तकदीर बनना–किस्मत अच्छी होना।

तकदीर सो जाना–बुरे समय का आना।

तख्ता उलटना–भाग्य का विपरीत होना।

तन जाना–परस्पर वैमनस्य उपस्थित होना।

तन कर चलना–गर्व से चलना।

तपस्या निष्फल होना–मेहनत बेकार होना।

तकाजे का हुक्का भी नहीं पिया जाता–उधार ली हुई वस्तु बुरी होती है।

तमाम करना–समाप्त करना, अन्त करना।

तड़के का भूला सांझ को घर आवे तो भूला नहीं कहलाता–अपनी की हुई अशुद्धि को तुरत कोई स्वीकार कर ले तो अच्छा ही समझा जाता है।

तन में आग पड़ना–चित्त को शान्ति मिलना।

तन को कपड़ा न पेट को रोटी–परम दरिद्रता की अवस्था।

तरह देना–किसी विषय को दबा रखना।

तरसा तरसा कर मारना–थोड़ा थोड़ा देकर कष्ट देना।

तलवा खुजलाना–यात्रा करने की अभिलाषा होना।

तलवा न टिकना–एक स्थान पर देर तक स्थिर न रहना

तलवार का घाव भरता है, बात का घाव नहीं भरता–अर्थ स्पष्ट है।

तलवार की धार पर दौड़ना–बड़ा मुश्किल काम करने को तत्पर होना।

तलवार म्यान में रख लेना–शान्त हो जाना, युद्ध समाप्त करना।

तलवे चाटना–बड़ी विनती करना।

तहलका पड़ना–उपद्रव होना।

तह को पहुँचना–मर्म जान लेना।

ताक लगाना–घात में रहना, अवसर देखना।

ताक झाक करना–छिपे रह कर देखना।

ताक पर बैठा उल्लू मांगे भर भर चुल्लू–किसी नीच मनुष्य का अधिकारी बन जाना।

ता ता थेई मचाना–अपमानित करना।

ताड़ लेना–जान लेना, समझ लेना।

तानकर सोना–निश्चिन्त रहना।

तान के मारना–लक्ष्य करके मारना।

तान बँधना–सिलसिला जारी होना।

तार टूटना–सिलसिला टूट जाना।

तार तार कर देना–तागे तागे अलग देना।

तार जमना–अर्थ सिद्ध होना।

तार कुतार होना–काम का बिगड़ जाना।

तारे गिनना–दु:ख में रात बिताना, रात भर जागना।

तारे तोड़ना–विलक्षण कार्य करना।

तारे छिटकना–रात में मेघ का रहना।

तारे देख पड़ना–कठिनाई में पड़ना।

तारों की छाह में–प्रात काल, बडे तड़के।

तारीख पड़ना–मुकदमे की सुनवाई का दिन स्थिर होना।

ताल ठोंकना–लड़ने भिड़ने के लिये तैयार होना।

तालियाँ बजाना–दुर्नाम करना।

तालू से जीभ न लगाना–बराबर बकते रहना।

ताव खाना–क्रुद्ध होना।

तिनका भी न रहना–कुछ भी शेष न बच जाना।

तिनके की ओट मे पहाड़–संसार में सब कुछ देखते हुए भी मनुष्य अन्धा बना रहता है।

तबेले की बला बन्दर के सिर–किसी का अपराध दूसरे

के सिर पर ठोंकना ।

तिल की ओट पहाड़ होना–सामान्य बात में किसी बड़े रहस्य का होना ।

तिलमिला जाना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना ।

तिल का ताड़ बनाना–छोटी सी बात को बहुत बढ़ा देना ।

तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजो बार–स्त्री का विवाह तथा मनुष्य का दृढ संकल्प एक बार ही होता है ।

तिल धरने की जगह न होना–बड़ी भीड़भाड़ होना ।

तिलांजलि देना–सब सम्बध छोड़ देना ।

तीन कनौजिये तेरह चूल्हे–कान्यकुब्ज ब्राह्मण एक दूसरे का बनाया हुआ भोजन करने में परहेज़ करते हैं ।

तीन गुनाह खुदा भी बख्शता है–सामान्य अशुद्धियों की क्षमा होती है ।

तीन पांच करना–कलह करना ।

तीन बुलाये तेरह आये दे दाल में पानी–निमन्त्रण में अधिक मनुष्यों आ जाने पर अच्छी व्यवस्था नहीं हो सकती ।

तीन तेरह करना–इधर उधर करना ।

तीनों लोक देख पड़ना–भयकर स्थिति का होना ।

तीर नहीं तो तुक्का ही सही–पूरा काम यदि न हो सके तो थोड़ा करना उचित है ।

तीर बन जाना–दौड़ कर भाग जाना ।

तीसमार खां बन जाना–मिथ्या अभिमान दिखलाना ।

–तुल जाना–तत्पर होना ।

तुझे पराई क्या पड़ी अपनी आप निबेड़–दूसरे के काम में दखल देना बुरा होता है ।

तू तू मैं मैं करना–गाली गुपाड़ा मचाना ।

तूती बोलना–प्रसिद्ध होना, विख्यात होना ।

तुरत दान महा कल्यान–आवश्यक कार्य को तुरत कर लेना चाहिये ।

तूफ़ान खड़ा करना–उपद्रव मचाना ।

तू डाल डाल मैं पात पात–चालाक व्यक्ति से बराबरी की चालाकी करना ।

तृण भी न समझना–अत्यन्त तुच्छ जानना ।

तू भी रानी मैं भी रानी कौन भरे कुँवें का पानी–जब सभी कोई आराम का काम करेगा तो परिश्रम का काम कौन करेगा ।

तेल जल चुकना–शक्ति पूरी हो जाना ।

तेवर बदल जाना–बेमुरौवत होना ।

तेवर बिगड़ना–क्रुद्ध होना ।

तेली का बैल–निरन्तर परिश्रम करने वाला ।

तेल तिलों से ही निकलता है–जो धन दे सकता है वही देता है, दरिद्र क्या देगा ।

तेली का तेल जले मसालची का जी दुखे–उदार तो व्यय करे कृपण को बुरा लगे ।

तेज़ घोड़े को चाबुक नहीं लगती–स्वय परिश्रम करने वाले को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती ।

ते ते पांव पसारिये जेती लंबी सौर–वित्त के अनुसार ही व्यय करना चाहिये ।

तोताचश्मी करना–बेमुरौवती दिखलाना ।

तोते की तरह आंखें फेरना–बेमुरौवत बन जाना ।

तोते की तरह पढ़ना–बिना अर्थ समझे पाठ याद करना

त्योरियों पर बल पड़ना–क्रुद्ध होना ।

त्योरी चढ़ाना–क्रोध करना ।

त्राहि त्राहि करना–सहायता के लिये पुकार करना ।

त्रिशंकु बन जाना–कहीं का भी न रह जाना ।

त्रैलोक्य का राज्य भोगना–धन और ऐश्वर्य से पूर्ण होना

थ

थका ऊंट सराय ताकता है–परिश्रम करने के बाद सभी लोग विश्राम चाहते हैं ।

थरथरी लगना–कांपने लगना ।

थर्रा जाना–डर जाना ।

थाली का बैंगन–किसी ओर न रहने वाला ।

थाह मिलना–भेद का पता लगाना ।

थाह लगाना–अन्वेषण करना ।

थाह लेना–चित्त का अभिप्राय जानने का प्रयत्न करना ।

थूक कर चाटना–अपनी प्रतिज्ञा से डिग जाना ।

थूथू करना–घृणा करना ।

थूक से सत्तू नहीं सनता–थोड़ी सी सामग्री से बड़े काम नहीं किये जा सकते ।

थोथे फटके उड़ उड़ जाय–ओछे मनुष्य सफल नहीं होते

थूक लगाकर छोड़ देना–नीचा दिखलाना ।

थैली का मुंह खोलना–अधाधुध खर्च करना ।

थोड़ा होना–उदास होना ।

थुड़ी थुड़ी करना–तिरस्कार करना ।

द

दंग रह जाना–घबड़ा जाना ।

दंड कमण्डल उठाना–अपनी सामग्री उठाकर रवाना

हो जाना।

दक्षिण भुजा उठाना-सहायक बनना।

दबक जाना-ठिठक जाना, छिप जाना।

दबाव डालना-लाचार करना।

दबने पर चींटी भी चोट करती है-अत्याचार किये जाने पर दुर्बल भी आक्रमण करता है।

दबे पाँव चलना-बिना शब्द किये हुए धीरे धीरे चलना

दबे मुरदे उखाड़ना-बीती हुई घटनाओं को स्मरण करना।

दम उलटना-जी घबड़ाना, अन्तिम श्वास लेना।

दम खाना (लेना)-सुस्ताना।

दम खींचना-सांस रोकना।

दमड़ी की घोड़ी छः पसेरी दाना-हैसियत से ज्यादा खर्च।

दम फूलना-साँस फूलना।

दम घोंट घोंट कर मारना-बड़ी दुर्दशा करके हत्या करना।

दम घोटना-गला दबा कर हत्या करना।

दम तोड़ना-अन्तिम श्वास निकल जाना, मरना।

दम पर आ बनना-आफत में पड़ना।

दम साधना-सांस रोकना।

दम देना-दिलासा देना, बड़ा प्रिय जानना।

दम में दम आना-जीवित रहना।

दम फूलना-हाँफना।

दम चुराना-मुरदे के समान बन जाना।

दम मारने की फ़ुरसत न मिलना-कार्य में बहुत व्यग्र रहना।

दम लेना-आराम करना।

दम नाक तक आ जाना-व्यग्र हो जाना।

दम निकलना-आफत पड़ना, मरना।

दम टूटना-थक जाना।

दर्जी की सूई कभी ताग में कभी टाट में-कामकाजी मनुष्य कभी बेकाम नहीं रहता।

दर्यादिल बनना-उदारता दिखलाना।

दर्पण में मुख देखना-अपने ऐब पर ध्यान देना।

दलदल में फँसना-आफत में पड़ना।

दलाल का दीवाला क्या, मसजिद में ताला क्या-दलाल बिना पूँजी के अपना व्यवसाय करता है अतएव उसका दीवाला नहीं हो सकता, मसजिद सर्वसामान्य की होती है इसीसे उसमें ताला बन्द नहीं किया जाता।

दही के धोखे चूना खा जाना-धोका खाना।

दर दर मारा फिरना-बेकार इधर उधर भटकते फिरना।

दाँत काटी रोटी-बड़ा घनिष्ट प्रेम।

दाँत किटकिटाना-खफा होना, क्रुद्ध होना।

दाँत खट्टे करना-हरा देना, परास्त करना।

दाँत से दाँत बजना-अधिक शीत के कारण दाँतों का किटकिटाना।

दाँत गड़ाना-किसी वस्तु को लेने के लिये आतुर होना।

दाँत पीस कर रह जाना-क्रोध दबा लेना।

दाँत किचकिचाना-क्रोध करना।

दाँत पीसना-क्रोध करना।

दाँत खट्टे कर देना-थका देना, हरा देना।

दाँत निकालना-विनीत भाव दिखलाना, मुह खोल कर हँसना।

दांत तले अंगुली दबाना-अचरज दिखलाना।

दांत तले तिनका दबाना-विनीत भाव दिखलाना।

दांतों में पसीना आ जाना-बहुत मेहनत करना।

दाँव चुकाना-बदला लेना।

दाँव चूकना-हाथ से मौका जाने देना।

दाई से पेट छिपाना-जिसको भेद मालूम है उससे न कहना।

दायें बायें करना-इधर उधर छिपाना।

दाग लगाना-अपमानित करना।

दादा कहने से बनिया गुड़ देती है-खुशामद करने से सभी प्रसन्न होते हैं।

दादा खरीदे पोता बरते-बहुत पुष्ट वस्तु के लिये कहा जाता है।

दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते-मुफ्त में मिली हुई वस्तु के दोष नहीं देखे जाते।

दाना दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर होता है-मूर्ख मित्र से बुद्धिमान शत्रु अच्छा समझा जाता है।

दाना पानी छोड़ना-अनशन करना।

दामन फैलाना-भिक्षा मागना।

दाम संवारे काम-धन से सब काम सिद्ध होते हैं।

दाल रोटी चलाना-जीवन निर्वाह सामान्य रीति से चलना।

दाल न गलना-विवश हो जाना, लाचार होना।

दाल रोटी से खुश-सामान्य रीति से जीवन निर्वाह।

दाल मे काला होना-सन्देह होना।

दाने दाने को तरसना-मामूली चीजों के लिये मुहताज होना।

दाहिने आना-अनुकूल होना।

दिन ईद और रात शबरात–सर्वदा आनन्द में बीतना।
दिन को सोवे रोज़ी खोवे–दिन में सोने में व्यापार में हानि होती है।
दिन जाते देर नहीं लगती–समय बहुत जल्दी बीतता जान पड़ता है।
दिन से रात करना–ज़्यादा वख्त किसी काम में लगा देना
दिन आना–अन्त समय आ जाना।
दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ना–अच्छी तरक्की होना।
दिनन के फेर से सुमेर भी होत माटी को–जब बुरे दिन आते हैं तब सोना भी मिट्टी हो जाता है।
दिन पूरे करना–किसी प्रकार से जीविका का निर्वाह करना।
दिन भारी हो जाना–जीवन दुःख पूर्ण होना।
दिन दहाड़े–दिन में, सबके जागते हुए।
दिन को दिन रात को दिन न समझना–किसी कार्य में निरन्तर लीन होना।
दिन काटना–कष्ट से जीवन बिताना।
दिन में तारे नजर आना–अति व्यग्र होना, बुरी स्थिति में पहुँचना।
दिन फिर जाना–भाग्योदय होना।
दिया दान माँगे मुसलमान–दी हुई वस्तु को फिर से माँगना।
दिमाग खाना (चाटना)–बेकार की बातें करके परेशान करना।
दिमाग बिगड़ना–गर्व करना।
दिमाग खाली करना–व्यर्थ के लिये मस्तिष्क को अधिक कष्ट देना।
दिमाग लड़ाना–बहुत सोचना।
दिल के फफोले फोड़ना–चित्त के आवेग को निकालना।
दिमाग सातवें आसमान में होना–बड़ा घमंड करना।
दिया तले अँधेरा होना–स्वयं निकृष्ट रहकर दूसरों को बड़ी बड़ी शिक्षा देना।
दिल फटना–घृणा होना।
दिल की दिल में रहना–मन की मन में रहना।
दिल जमाना–किसी काम के करने में मन लगाना।
दिल चीरकर देखना–चित्त की भावना को जान लेना।
दिल मिलना–प्रेम करना।
दिल छीन लेना–प्रेमासक्त होना।
दिल खुलना–सकोच का हट जाना।
दिल दहलना–भय ग्रस्त होना।
दिल खिलना–प्रसन्न होना।
दिल का मैला–कपटी मनुष्य।
दिल न मिलना–प्रेम न होना।
दिल बढ़ाना–उत्साह बढ़ाना।
दिल टूटना–निराश होना, हताश होना।
दिल का गुबार निकालना–मन की भावनाओं को खोलकर कह देना।
दिल की दिलमें रह जाना–अभिलाषा पूर्ण न होना।
दिलमें चुभना–चित्त को बुरा लगना।
दिया लेकर खोजना–इधर उधर ढूँढ़ना।
दिलमें गड़ जाना–अच्छा लगना।
दिल पसीजना–दयायुक्त होना।
दिल फीका होजाना–मन हट जाना।
दिल चुराना–मोहित करना।
दिल थामकर रह जाना–मन मसोस लेना, कष्ट सह लेना।
दिल में रखना–गुप्त रखना, प्रिय जानना।
दिलसे दिलको राहत होना–घनिष्ट प्रेम होना।
दिल से करना–मन लगाकर कोई काम करना।
दिल पक जाना–अत्यन्त पीड़ित होना।
दिल दुखाना–कष्ट पहुँचाना।
दिलकी लगी बुझाना–मानसिक कष्ट शान्त करना।
दीपक में बत्ती पड़ना–सन्ध्या होना।
दीवार के कान होना–किसी भेद को कहने पर ही दूसरे को मालूम होने की आशा।
दुधार गाय की दो लात भी भली–देने वाला कुछ अपमान भी करे तो सह लिया जाता है।
दुनिया की हवा लगना–संसार के प्रपंचों में पड़ना।
दुम दबाकर भाग जाना–तेज़ी के साथ भाग जाना।
दुह लेना–धन का अपहरण करना।
दुरदुर होना–तिरस्कार किया जाना।
दुकान बढ़ाना–दूकान बन्द करना।
दुकान लगाना–बेचने के लिये चीज़ों को फैलाकर रखना।
दुखड़ा रोना–अपना दुःख दूसरे को सुनाना।
दुपट्टा तान कर सोना–निश्चिन्त रहना।
दुहाई देना–न्याय की प्रार्थना करना।
दुनिया का मुँह किसने बन्द किया है–किसी के विचार को प्रगट करने के लिये कोई नहीं रोक सकता।
दूज का चाँद–जो कभी कभी नज़र पड़ जावे।
दूध का जला मठा फूंक कर पीता है–एक बार हानि होने पर मनुष्य भविष्य के लिये सावधान हो जाता है।
दूध का दूध पानी का पानी–सच्चा न्याय होना।
दूध के दाँत न टूटना–बाल्यावस्था, अनुभव हीनता।

दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक देना-नुकसान पहुँचाने वाले को दूर कर देना।

दूध की नदियां बहाना-धन का विभव दिखलाना।

दूधों नहाना पूतों फलना-कुटुम्ब में सब प्रकार का आनन्द होना।

दूर के ढोल सुहावने-सचमुच किसी बात का अनुभव न होने पर कहा जाता है।

दून की लेना-शेखी करना।

दूर रहना-अलग रहना।

दूर से नमस्कार करना-घृणा करना, पास में न डिगने देना।

दूर की सोचना-भविष्य की बातों पर कल्पना करना।

दूर की बात-बुद्धिमानी की बात चीत।

दूसरा रंग न चढना-स्थिर रहना, बात न बदलना।

दूसरे का मुँह देखना-दूसरे से मदद चाहना।

देख भाल कर पाँव उठाना-सावधानी से काम करना।

देखते रह जाना-चकित होना।

देते ही बनना-लाचार होकर देना।

देवता से राक्षस बनना-अच्छे रास्ते को छोड़ कर बुरे रास्ते पर जाना।

देखें ऊंट किस करवट बैठता है-इस घटना का क्या परिणाम होता है?

देना थोड़ा दिलासा बहुत-अर्थ स्पष्ट है।

देसी कुतिया विलायती बोल-जिस देश का हो वहीं की भाषा बोलना अच्छा लगता है।

दो कौड़ी का हो जाना-अपमानित होना।

दो दो बातें करना-थोड़ी सी बातचीत करना।

दो घर का पाहुना भूखा ही रहता है-एक ही पर भरोसा रखना अच्छा होता है।

दो दो दानों को तरसना-अति दुर्दशा में होना।

दो नाव पर पैर रखना-दो पक्षों का समर्थन करना।

दोनों तरह से मौत-हर तरह से आपत्ति होना।

दोनों हाथों में लड्डू होना-सब तरह की मौज होना।

दोनों हाथों से पगड़ी थामना-अपनी प्रतिष्ठा सभाल कर रखना।

दो मुल्लों में मुर्गी हलाल-दो आदमियों के झगड़े में तीसरे की हानि होती है।

दोस्ती में लेन देन बैर का मूल-अर्थ स्पष्ट है।

[illegible] से गिरना-मान मर्यादा की हानि।

[illegible]ना-सहायता की प्रार्थना करना।

द्वार खुल जाना-उपाय निकलना।

द्विविधा में पड़ना-सन्देह युक्त होना।

ध

धक् से (कलेजा) होना-यकायक घबड़ा उठना।

धक्का लगना-नुकसान होना, कष्ट मिलना।

धक्का खाते फिरना-दुर्दशा होना।

धक्का देना-तिरस्कार करना।

धज्जियां उड़ाना-बेइज्जत करना, टुकड़े टुकड़े कर देना।

धड़का खुलना-भयहीन होना।

धता बताना-तिरस्कार करना, धूर्तता से टाल देना।

धनवती के काटा लागे दौड़े लोग हजार, निर्धन गिरे पहाड़ से कोई न आया कार-धन की महिमा का वर्णन है।

धमाचौकड़ी करना-इकट्ठा होकर शोरगुल मचाना।

धर दबाना-हराना, जमीन पर पटक देना।

धर लेना-पकड़ लेना।

धर पकड़ करना-गिरफ्तार करना।

धरा रह जाना-व्यर्थ होना।

धरी जाना न उठाई जाना-किसी बातका निश्चय न होना

धर्म निभाना-अपने कर्तव्य का पालन करना।

धाक देना-फँसा देना।

धाधली मचाना-बेकार का झझट करना।

धाक बाधना-प्रभाव होना।

धार चढाना-शस्त्र आदि की धार तेज करना।

धारो धार रोना-बहुत आँसू बहाते हुए रोना।

धान का गाव पुआल से जाना जाता है-बाहरी दिखाव से भीतरी स्थिति का अनुमान होजाता है।

धींगा धींगी करना-व्यर्थ का झगड़ा करना।

धी पराई आख जलाई-लड़की को ब्याह देने पर इसके पिता को समधी से दबना पड़ता है।

धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपत काल परखिये चारी-आपत्ति के समय इन चारो की परीक्षा होती है।

धुकधुकी बँधना-डर जाना।

धुन बाधना-चित्त लगाना।

धुन सवार होना-किसी विषय के लिये पीछे दौड़ना।

धुर्रें उड़ाना-लजाना, टुकड़े टुकड़े कर देना।

धुन का पक्का-अपने सिद्धान्त का पक्का।

धूनी रमाना-किसी जगह गड़कर बैठना।

धूप में बाल सफेद करना-बिना तजुर्बा हासिल किये जिन्दगी बिताना।

धूल में मिल जाना–नष्ट होना।
धूल की रस्सी बटना–न होने वाले काम करने में लग जाना।
धूल में मिलाना–नष्ट कर देना।
धूल डालना–छिपा देना।
धूल फाँकना–बुरे काम में लग जाना।
धूल उड़ना–चेहरा फीका होना, रौनक जाती रहना।
धोखे की टट्टी–भ्रम में डालने वाला पदार्थ।
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का–कहीं का न होना
धोती ढीली होना–डर जाना।
धोबी रोवे धुलाई को मियाँ रोवे कपड़े को–अपना अपना दुखड़ा रोना।
धो देना–मिटा देना।
धायेहू सौ बार के काजर होय न सेत–नीच मनुष्य की नीचता कभी नहीं जाती।
ध्वजा फहराना–हुकूमत होना।
ध्यान पर चढ़ना–याद होना।
ध्यान से उतरना–भूल जाना।

न

नंगे बड़े परमेश्वर से–नीच मनुष्य से सब लोग डरते हैं
नंगी क्या नहायेगी और क्या निचोड़ेगी–निर्धन मनुष्य किसीको क्या दे सकता है।
न इधर के रहे न उधर के रहे–निराश्रय होना।
नकेल डालना–वश में करना।
नक्कारे की चोट कहना–सबके सन्मुख साफ, साफ कह देना।
नकेल हाथ में होना–वश में होना।
नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता है–अमीरों के आगे गरीबों की सुनाई नहीं होती।
नक्कू बनना–बदनाम होना।
नख शिख वर्णन करना–आद्योपान्त वर्णन करना।
नजर लगना–कुदृष्टि का प्रभाव पड़ना।
नटनी जब बाँस पर चढ़ी तो घूँघट क्या–जब बेशर्मी अख्तियार किया तो लज्जा कैसी।
नजला गिरना–बुरा प्रभाव होना।
नजर में जँचना–पसन्द आना।
नदी में रह कर मगर से बैर जहाँ रहना वहाँ सबसे प्रेम रखने में लाभ है।
नजर पर चढना–प्रिय बनना।
नजरों से गिरना–इज्जत बिगड़ना।
नदी नाव संयोग–संयोग से भेंट होना।
नथुने फुलाना–क्रोध दिखलाना।
नटखटी करना–दुष्टता दिखलाना।
न नव मन तेल होगा न राधा नाचेंगी–ऐसा काम करने की प्रतिज्ञा करना जिसका पूर्ण होना कठिन हो।
नपी तुली कहना–ठीक ठीक बात कहना।
नमक खाना–नौकरी कर लेना।
नमक मिर्च लगाना–बढ़ाकर बातें कहना।
नमक (कटे पर) छिड़कना–बड़ी तकलीफ देना।
नमस्कार करना–त्याग देना, छोड़ना।
नया नव दिन पुराना सौ दिन–नई वस्तु थोडे ही दिन रहती है पुरानी वस्तु अधिक काल तक ठहरती है।
नया गुल खिलना–विलक्षण घटना होना।
नरक भोगना–दुर्गति होना।
नस नस में–सम्पूर्ण शरीर में।
नसीब न होना–प्राप्त न होना।
नसीब लड़ना–भाग्य का अनुकूल होना।
न तीन मे न तेरह मे–किसी गिनती में न होना।
नाई की बरात मे जने जने ठाकुर–स्वय प्रबंध न करने वाले के काम में अनेक प्रबंधकर्ता बन जाते हैं।
नाक कटी पर हठ कटी–हठी मनुष्य हानि होने पर भी अपनी टेक नहीं छोड़ता।
नाक पर मक्खी न बैठने देना–किसी की बातों को न सहन करना।
नाक भौं सिकोड़ना–नाखुश होना।
नाक दबाने से मुंह खुलता है–बिना दबाव के कोई काम नहीं बनता।
नाक मे दम करना–बहुत परेशान करना।
नाक कटना–बदनाम होना।
नाक रगड़ना–अधीन होना।
नाक का बाल होना–अति प्रिय होना।
नाक में दम करना–बहुत परेशान करना।
नाक कटना–बेइज्जत होना।
नाक पर हाथ धरना–स्वीकार करना।
नाक रह जाना–प्रतिष्ठा स्थापित रहना।
नाक न होना–निर्लज्ज होना।
नाक रखना–प्रतिष्ठा स्थापित रखना।
नाक रगड़ना–शुश्रूषा करना।
नाकों चना चबाना–बहुत परेशान करना।
नाच नचाना–दिक करना, परेशान करना।
नाक कटी पर घी तो चाटा–बेहया का चिह्न होना।

नाचने न आवे आँगन टेढ़ा–काम करना न आने पर वृथा के बहाने करना।
नाडी टटोलना–किसी के मन के भाव को जानने का प्रयत्न करना।
नादिरशाही होना–बड़ा अत्याचार होना।
नानी याद आना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
नानी मर जाना–शर्मिन्दा होना।
नाम लेना छोड़ देना–बिलकुल भूल जाना।
नाम चलना–प्रसिद्ध होना।
नाम कमाना–यश प्राप्त करना।
नाम लेना–याद आना।
नाम खोना–कलंकित होना।
नाम निकल जाना–कलंकित होना।
नाम कर जाना–प्रसिद्ध हो जाना।
नाम डुबोना–यश खो बैठना।
नाम का–केवल कहने मात्र का।
नाम चमकना–यश का फैलना।
नाम लगाना–अपराधी बनाना।
नाम बिकना–अति प्रसिद्ध होना।
निगाह पर चढना–रुचिकर होना, पसन्द आना।
निगाहें मोटी करना–अनबन हो जाना।
निगाहों में खंचना–पसन्द आना।
नित्य कुआँ खोदना नित्य पानी पीना–रोज़ कमाना रोज़ भोजन करना।
निन्यानवे के फेर में पड़ना–धन संचय करने की धुन होना।
नियत डाँवाडोल होना (बदलना)–लालच में पड़ना।
नींद हराम होना–निद्रा न आना।
नीचा दिखाना–लज्जित करना।
नींव डालना–किसी काम को आरंभ करना।
नीम हकीम खतरे जान–किसी विषय का अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है।
नुकताचीनी करना–ऐब ढूढना।
नेकी करना और पूछ पूछ–पूछ पूछ कर उपकार करना।
नोक झोंक करना–छेड़ छाड़ करना।
नौ दो ग्यारह होना–भाग जाना।
नौबत बजना–आनन्द के बाजे बजना।
नोन सत्तू बांधकर पीछे पड़ना–बहुत दिक करना, धुन में लगाना।
नौ दिन चले अढाई कोस–बड़ी सुस्ती से काम करना।
डूबना–काम बिगड़ जाना।
नौ की लकड़ी नब्बे खर्च–थोड़े से कार्य के लिये बहुत का खर्च होना।

प

पंच परमेश्वर–न्याय करने वाले पंच ईश्वर माने जाते हैं।
पंचों का कहना सर पर परन्तु पर नाला यहीं बहेगा–पंचों के निर्णय करने पर भी अपनी ही टेक रखना।
पंजे में करना–वश में करना।
पंच कहे कि बिल्ली तो बिल्ली ही सही–जो सब की राय हो उसी को ठीक समझना चाहिये।
पंजे से निकलना–स्वाधीन होना।
पंजा मारना–झपटना।
पक्का पोढा करना–निश्चय करना।
पगड़ी उतारना–बेइज्जत करना।
पगड़ी बदलना–आपस में दोस्ती करना।
पगड़ी उछालना–बेइज्जत करना।
पगड़ी की लाज रखना–मान मर्यादा बनाये रखना।
पगड़ी बँधना–स्थानापन्न होना।
पगड़ी संभालना–इज्जत बचाना।
पगड़ी की लाज गँवाना–इज्जत खो बैठना।
पचड़ा लेकर बैठना–झगड़ा शुरू करना।
पट हो जाना–नष्ट होना।
पट पड़ना–बन्द हो जाना।
पट सकना–निभ जाना।
पढे फारसी बेंचे तेल, यह देखो कुदरत का खेल–पढ लिखकर छोटा काम करना।
पटरा हो जाना–बहुत हानि पहुँचना।
पढे तो हैं पर गुण नहीं–व्यवहारिक ज्ञान न होना।
पट्टी में आना–किसी के बहकाने में आना।
पट्टी पढाना–बहकाना।
पत्ता तोड़ भागना–रफूचक्कर होना, दौड़कर भाग जाना।
पत्ता खड़कना–कुछ आहट पा लेना।
पत्ता तक न हिलना–हवा न चलना, किसी बात का पता न चलना।
पत्थर को जोंक नहीं लगती–निर्दयी को दया नहीं आती।
पत गँवाना–मान मर्यादा का नाश होना।
पत्थर की लकीर बन जाना–दृढ होना।
पत्थर का कलेजा करना–दृढ होना, निठुर होजाना।
पत रखना–लाज रखना।
पनपने न देना–स्वास्थ्य न सुधरना, गरीब बनाये रखना।
पत्थर से पारस होना–निर्धन से धनी बनना।

पत्थर पड़ना–आपत्ति आना।
पत्थर पसीजना–कठोर हृदय मनुष्य में दया होना।
पत्थर तले हाथ आना–परवश हो जाना।
पत्थर की छाती करना–वीर बनना।
पत्थर ढोना–बड़े परिश्रम का कार्य करना।
पत्थर पानी होना–कठोर हृदय का दयालु होना।
पदानुसरण करना–पीछे पीछे चलना।
पर लगना–चालाक होना।
परछाई से भागना–अति घृणा करना।
परछाई न पड़ना–प्रभाव न होना।
परलोक दिखाना–हत्या करना।
परमात्मा के नाम पर देना–धर्मार्थ दान करना।
पर न मार सकना–पहुँच न होना।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं–पराधीन मनुष्य को कभी सुख नहीं मिलता।
परलोक बिगाड़ना–नीच कार्य करना।
परलोक यात्रा–मरण, मृत्यु।
पराई आगमे कूदना–दूसरे के कष्ट में पड़ना।
परदा फाश होना–भेद खुलना।
परदा डालना–किसी बात को गुप्त रखना।
पराये हाथों पड़ना–विवश हो जाना।
पलस्तर ढीला होना–अति शिथिल होना।
पर्वत पर कुआँ खोदना–वृथा का परिश्रम करना।
पल्ला छुड़ाना–छुटकारा पाना।
पल्ला भारी होना–किसी दल का बलवान होना।
पल्ला पसारना–किसी से कुछ माँगना।
पल्ले बांधना–इच्छा के विरुद्ध कोई काम किसी को सौंपना।
पलक लगना–नींद लगना।
पसीना बहाना–बड़ी मेहनत करना।
पसीना पसीना होजाना–बहुत घबड़ा जाना।
पहले आत्मा पीछे परमात्मा–अपना स्वार्थ पहले देखकर पीछे दूसरे के हित का विचार करना।
पहाड़ टूटना–आफत आना।
पर्वत से राई करना–बड़े से छोटा बना देना।
प्रथम ग्रास में मक्खी पड़ना–आरम्भ में ही विघ्न होना।
पाँचो अगुयाँ घी मे–सब प्रकार का लाभ ही लाभ होना।
पाँच सवारो मे भरती होना–बड़े सरदारों में गिना जाना।
पाँचो अगुलियां बराबर नहीं होती सब मनुष्यो की प्रकृति समान नहीं होती।
पाँव पूजना–इज्जत करना।
पाँव फैलाना–हठ करना, जिद करना।
पाँव उठाना–चलना।
पाँव उभडना–पराजित होना।
पाँव धरती पर न टिकना–बड़ा अभिमान होना।
पाँव भारी होना–गर्भवती होना।
पाँवमें बेड़ी पड़ना–स्वतन्त्रता नष्ट होना।
पाँव फैला कर सोना–निश्चिन्त रहना।
पाँव पीटना–घबड़ाना, व्यग्र होना।
पाँव तले की जमीन घिसक जाना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
पाँव जमना–अधिकार जमना।
पाँव निकालना–चरित्र बिगड़ जाना।
पाँव पर टोपी रखना–बड़ी बिनती करना।
पाँव डगमगाना–साहस छूटना।
पाँव मे सनीचर होना–सर्वदा घूमते फिरना।
पागल के सिरपर सींघ नहीं होती–पागल मनुष्य के शरीर पर कोई विशेष चिह्न नहीं होता।
पानी भरना–दास बन जाना।
पानी पानी करना–बहुत लज्जा देना।
पानी पानी होना–लज्जित हो जाना।
पास का कुत्ता दूर का भाई–पास का कुत्ता दूर के भाई से अच्छा होता है।
पानी पी पी कर कोसना–सर्वदा किसी का अनिष्ट सोचते रहना।
पानी फेरना–निर्मूल करना, मिटा देना।
पानी पीकर जात पूछना–काम हो जाने पर सन्देह उत्पन्न होना।
पानी लगना–किसी स्थान का जल स्वास्थ्य के लिये अनुकूल न होना।
पानी मे आग लगाना–झगड़ा खड़ा करना।
पानी पानी हो जाना–द्रार्द्र होना, सहज होना।
पानी का बुलबुला–शीघ्र नष्ट हो जाने वाली वस्तु।
पानी भरना–दोषी सिद्ध होना।
पानी की तरह बहाना–बड़ी फजूल खर्ची करना।
पानी के मोल बिकना–बहुत सस्ते दाम पर बिकना।
पानी गँवाना–बेइज्जत होना।
पानी उतर जाना–आब हट जाना, अप्रतिष्ठित होना।
पाप कटना–कलह दूर होना।
पाप का घड़ा भर जाना–बहुत ज्यादा पापो का इकट्ठा होना।
पाप मोल लेना–जानबूझ कर विपत्ति में पड़ना।

पापड़ बेलना–बड़ी विपत्ति सहन करना।
पार उतार देना–काम पूरा करना।
पार पाना–भेद का पता लग जाना, जीतना।
पार लगाना–पूरा कर देना।
पारस हाथ लगना–अलभ्य वस्तु प्राप्त होना।
पाला पड़ना–सम्पर्क होना, वास्ता होना।
पसा सा फेंकना–किसी प्रकार का उद्योग लगाना।
पारावार होना–अति व्यग्र होना।
पिंड छूटना–पीछा छूट जाना।
पित्ता मारना–मन मारना, क्रोध हटाना।
पीछा छुड़ाना–छुटकारा पाना।
पीछे पड़ना–परेशान करना।
पीठ पर हाथ फेरना–शाबाशी देना।
पीठ पर हाथ होना–सहायक बनना।
पीठ दिखाना–युद्ध में से भाग जाना।
पीठ ठोंकना–साहस बाँधना।
पीठ फेर कर बैठना–असन्तुष्ट होना।
पीठ पर–किसी माता के एक के बाद दूसरी सन्तान को कहा जाता है।
पीठ पीछे–किसी की अनुपस्थिति में।
पीर बवर्ची भिश्ती खर–वह मनुष्य जिससे सभी प्रकार का काम लिया जाता हो।
पीस डालना–नष्ट करना, बड़ा कष्ट देना।
पुकार सुनना–विनती सुनना।
पुतलियों का तमाशा दिखाना–छल करना।
पुल बाँधना–(बातों का) बातों को बढ़ा कर कहना।
पूछ होना–आदर होना।
पूत के पाँव पालने में पहचाने जाते हैं–बाल्यावस्था में ही लड़कों के भविष्य का अनुमान होता है।
पूर्वापर सोचना–आदि अन्त का विचार करना।
पूछते पूछते दिल्ली चले जाना–सर्वत्र जाने के मार्ग हैं।
पेंच में पड़ना–विपत्ति में पड़ना।
पेंच खोलना–धोखा देना।
पेंच घुमाना–चित्त फेरना।
पेंच में पड़ना–विपत्ति में फसना।
पूत अपनो सबको प्यारो–अपनी सन्तान सबको प्यारी लगती है।
पेट का पानी न हिलना–भेद को गुप्त रखना।
पेट पालना कुत्ता भी जानता है–स्वार्थी पुरुष अपना मतलब साध लेता है।
पेट जो चाहे सो करावे–जीविका के लिये अनेक प्रकार के भले बुरे काम किये जाते हैं।
पेट पीटना–भूख के मारे शोर गुल मचाना।
पेट की मार देना–भूखों मारना।
पेट में घुसना–रहस्य का पता लगाना।
पेट से होना–गर्भवती होना।
पेट काटना–पूरा भोजन न देना।
पेट में बात न पचना–रहस्य को छिपाकर न रखना।
पेट की आग बुझाना–भोजन करना।
पेट में चूहे दौड़ना–भूख लगना।
पेट पीठ एक हो जाना–अति दुर्बल होना।
पेट में पैठना–भेद का पता लगाना।
पेट पालना–जीवन का निर्वाह।
पैंतरे बदलना–छल करना।
पैर उखड़ जाना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
पैर आगे न पड़ना–साहस कम होना।
पैर जमना–अधिकार करना।
पैर के नीचे से निकल जाना–अति व्यग्र होना।
पैसे की तीन अधेले भुनाना–बड़ी कंजूसी दिखलाना।
पैर उखड़ना–हार कर भाग जाना।
पोथे के पोथे रँगना–बहुत सी पुस्तकें लिख डालना।
पोल खोलना–गुप्त बातों को प्रकाशित करना।
पौ फटना–प्रातः काल होना।
पौ बाहर होना–अच्छा मुनाफा होना।
पौने सोलह आना ठीक–प्रायः दुरुस्त।
प्याज के छिलके उतारना–भेद खोलना।
प्रेम में नेम कहाँ–प्रेम में कोई नियम नहीं रहता।
प्रकाश डालना–स्पष्ट करना।
प्रभुता पाय काहि मद नाहीं–अधिकारी बनने पर सबको अभिमान हो जाता है।
प्रशंसा करते मुंह सूखना–बड़ी शुश्रूषा करना।
प्राण खाना–बड़ा परेशान करना।
प्राण निकलना–मृत्यु को प्राप्त होना।
प्राण सूख जाना–बहुत डर जाना।
प्राण दण्ड देना–फाँसी देना।
प्राण हरना–जान मार डालना।
प्राणों पर बीतना–आफत में पड़ना।
प्राण दान देना–जान बचाना।
प्राणों में प्राण आना–मन सावधान होना।
प्राण पखेरू होना–मृत्यु को प्राप्त होना।

फ

फंदे मे पड़ना–छला जाना।

फट पड़ना–अधिक सख्या या परिमाण में किसी वस्तु का होना।

फटे पड़ना–अभिमान करना।

फटा मन फटा दूध नहीं मिलता–अर्थ स्पष्ट है।

फट में पांव डालना–जान बूझ कर आपत्ति में पड़ना।

फड़क उठना–प्रसन्न होना।

फवतिया उड़ना–हँसी दिल्लगी करना।

फतह और जीत खुदा के हाथ–ईश्वर हारजीत का स्वामी है।

फटक चन्द गिरधारी, जिसके पास लोटा न थाली–अकेला धनहीन मनुष्य।

फल पाना–बदला मिलना।

फलना फूलना–मनोरथ सिद्ध होना।

फाग खेलना–आनन्द मचाना।

फाड़ खाने को दौड़ना–भयकर क्रोध दिखलाना।

फाँसी लगना–बड़ा कष्ट होना।

फूँक फूँक कर पांव रखना–बड़ी सावधानी से काम करना

फूँक से पहाड़ उड़ाना–थोड़ी सी शक्ति से बड़े काम करने का उद्योग करना।

फांड़ा बाधना–तैयार हो जाना।

फाके पड़ना–भूखों मरना।

फूँक डालना–बरबाद करना।

फिर जाना–साथ छोड़ देना।

फिसल पड़े तो हरगगा–बुरा काम करके सन्तोष करना।

फूटी आँख न सुहाना–अच्छा न लगना।

फूट डालना–शत्रुता बढ़ाना।

फूल टहनी मे ही अच्छा लगता है–सभी वस्तु अपनी जगह पर ही अच्छी लगती है।

फूट फूट कर रोना–बहुत विलाप करना।

फूल जाना–बहुत खुश होना।

फूल बोना–भलाई करना।

फूल कर कुप्पा होजाना–बहुत खुश होना।

फूल सूँघ कर रहना–अनशन करना, कुछ न खाना।

फूल कर बैठना–अपने बड़े अभिमान में रहना।

फूला न समाना–बहुत खुश होना।

फूले अँग न समाना–अति प्रसन्न होना।

फेरे मे आ जाना–धोखे में पड़ जाना।

फेरे पड़ना–ब्याह होना।

ब

बगलें बजाना–खुशी दिखलाना।

बगलें झाँकना–लजाकर चुप हो जाना, कुछ जवाब न देना।

बकरी जान से जाय खानेवाले को स्वाद न आवे–किसीके लिये प्राण दिया जाय और वह कुछ उपकार न माने

बगुला भगत होना–पाखड दिखलाना।

बकरे की माँ कब तक खैर मनावेगी–जिसका नाश होना हो वह नहीं बच सकता।

बचकर खेलना–सचेत होकर काम करना।

बछिया का ताऊ–परम मूर्ख व्यक्ति।

बटन खोल देना–उदार बन जाना।

बट्टा लगना–बेइज्जत होना।

बड़ा बोल बोलना–शेखी हाँकना।

बड़े घर की हवा खाना–बन्दी गृह में जाना।

बढ़बढ़ कर बातें करना–गर्व दिखलाना।

बड़े बरतन की खुरचन भी बहुत है–धनी मनुष्य यदि निर्धन हो जाता है तौ भी उसके पास बहुत कुछ बच जाता है।

बट्टे खाते की रकम–वह रकम जो वसूल नहीं हो सकती।

बड़ी बड़ी बातें करना–शेखी दिखलाना।

बतीसी गिनना–सब दाँतों का टूट जाना।

बटाधार करना–नाश करना।

बद अच्छा बदनाम बुरा–बुरा बनना कलंकित होने से अच्छा है।

बगल में छुरी मुख मे राम–मन में बुराई और दिखाव में मीठी बातें करना।

बन बन की लकड़ी चुनना–बड़े कष्ट में जिन्दगी बिताना

बड़ी फजर चूल्हे पर नजर–सबेरा हुआ कि खाने पीने की चिन्ता हुई।

बना बनाया खेल बिगाड़ना–पूरा किया हुआ काम खराब होना।

बने रहना–जीवित रहना।

बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है–बलवान् सदा निर्बल को कष्ट देते हैं।

बन्द बन्द अलग करना–टुकड़े टुकड़े करना।

बन्द बन्द जकड़ जाना–सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा होना।

बन्दर घुड़की–झूठा भय दिखलाना।

बड़े बोल का सिर नीचा–बहुत बड़े अभिमानी का अवश्य नाश होता है।

बराबर करना–अन्त करना।
बन्दर के हाथ आइना–जो जिस वस्तु का गुण नहीं जानता वह उसको देना।
बड़े मिया तो बड़े मिया छोटे मिया सुभान अल्लाह–छोटे का बड़े से गुण आदि में बढ़कर होना।
बली चढ़ना–अपनो प्राण देना।
बल निकालना–अभिमान दूर करना।
बन गये के लालाजी और बिगड़ गये तो बुद्दू–काम बन जाने पर सभी वाहवाही देते हैं और बिगड़ जाने पर मूख बनाते हैं।
बनिये की सलाम बेगरज़ नहीं होती–बनिये बड़े स्वार्थी होते हैं।
बहती गंगा मे हाथ धोना–सुधरी हालत में अच्छे काम करना।
बहार लूटना–आनन्द लेना।
बहुत से जोगी मठ उजाड़–काम करने वाले अनेक परन्तु उसका फल कुछ न होना।
बाबी में हाथ तू डाल, मन्त्र मैं पढ़ूं–किसी दूसरे को आपत्ति में डालना और स्वयं बचे रहना।
बांसो उछलना–बहुत प्रसन्न होना।
बाह पकड़ना–आश्रय देना।
बांये हाथ का खेल–अति सहज कार्य।
बाई पच जाना–शान्त होना।
बाग उठाना–घोड़े को हाँकना।
बाग ढीली करना–किसी विषय में शिथिलता दिखलाना
बाजार गर्म होना–किसी पदार्थ की अधिकता।
बाजार मन्दा पड़ना–बेंचा बिक्री का कम होना।
बाजी मारना–कार्य की सिद्धि होना।
बाढ़ पर चढ़ना–बहकाने में आ जाना।
बात का बतंगड़ करना–थोड़ी सी बात को बढ़ा देना।
बात पकड़ना–किसी के कथन में दोष निकालना।
बात की बात मे–तुरत, फौरन।
बात पी जाना–बात सुन कर चुप रह जाना।
बात टालना–ठीक जवाब न देना।
बात जाना–इज्जत खोना।
बात न पूछना–सम्मान न करना।
बात रख लेना–इज्जत बचाना।
बात का पूरा होना–दृढ सकल्प होना।
बात न पूछना–उपेक्षा करना।
बात काटना–बीच में बोल उठना।
बात में आना–किसी के कहने को मान लेना, धोखे में पड़ना।
बात पक्की होना–निश्चय होना।
बात बढ़ाना–झगड़ा बढाना।
बात तक न पूछना–किसी की इज्जत न करना।
बात खुल जाना–भेद मालूम हो जाना।
बात बनाना–झूठ बोलना।
बातो में उड़ाना–टालमटोल करना।
बातों पर न जाना–विश्वास न करना।
बानगी दिखाना–नमूना दिखलाना।
बाप दादों का नाम डुबोना–कुल की मर्यादा को नष्ट करना।
बाप न मारी गीदड़ी बेटा तीरंदाज–झूठी शेखी लेने वाला मनुष्य।
बाप भला न भैया सबसे भला रुपैया–धन की बड़ी महिमा है।
बाधबाई फिरना–इधर उधर मारे मारे फिरना।
बारह पत्थर बाहर करना–शहर बाहर निकाल देना।
बाल की खाल निकालना–बड़ी छानबीन करना।
बाल बाँका न होना–किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचना।
बाल बाल बचना–बेलाग बच जाना।
बाल सफ़ेद होना–वृद्ध होना।
बाल बाल मोती पिरोना–बड़ी सजधज करना।
बासी कढ़ी मे उबाल आना–वृद्धावस्था में जवानी का उमग।
बालू की भीत–शीघ्र नष्ट होने वाला पदार्थ।
बावन तोले पाव रत्ती–एकदम ठीक।
बिगड़ बैठना–अप्रसन्न होना।
बिगड़ जाना–धनहीन हो जाना।
बिजली गिरना–बड़ी आपत्ति आ पड़ना।
बिलग बिलग कर रोना–बड़ा विलाप करना।
बिल्ली से दूध की रखवाली करना–जानते हुए आपत्ति में डालना।
बीड़ा उठाना–किसी बात को करने का दृढ निश्चय करना।
बीच बचाव करना–झगड़ा तय करना।
बीच मे पड़ना–हस्तक्षेप करना।
बुखार निकालना–दुश्मनी निकालना।
बुत बने रहना–चुपचाप बैठे रहना।
बुत्ते देना–धोखा देना।
बूढ़े तोते को पढ़ाना–बुढे कोढ़ शिक्षा देना।

बेगार टालना–चित्त लगाकर काम न करना।
बेड़ा पार करना–कार्य समाप्त करना।
बेतुकी हाकना–व्यर्थ की बातें करना।
बेदाग बचना–किसी तरह का नुकसान न होना।
बेपेंदी का लोटा–बिना किसी सिद्धान्त का मनुष्य।
बेवक्त की शहनाई बजाना–बेमौके की बातें करना।
बे सिर पैर की हाँकना–बे मतलब की बातें करना।
बैठे बैठाये–बिना किसी वजह के।
बोझ उठाना–किसी काम की जवाबदेही अपने ऊपर लेना।
बोझ हलका होना–चिन्ता कम होना।
बोलजाना–टूट जाना, मर जाना।
बोल बाला होना–इज्जत बढना।
बोलती बन्द करना–चुप कर देना।

भ

भग खाना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
भँवर मे नाव फँसना–विपत्ति में पड़ जाना।
भंडा फोड़ना–भेद खोलना।
भड़क उठना–क्रुद्ध होना।
भनक पडना–सुन पड़ना।
भन्ना उठना–उत्तेजित होना।
भबकी देना–धमकाना।
भभूत रमाना–सन्यासी बन जाना।
भर पाना–मिल जाना, प्राप्त करना, बदला मिल जाना।
भरम गँवाना–मान मर्याद खोना।
भरम खुलना–रहस्य का प्रगट होना।
भरी थाली में लात मारना–मिली हुई सम्पति को त्याग देना।
भरे को भरना–धनवान् को धन देना।
भरे में आना–किसी के कपट में पड़ जाना।
भाड़े का टट्टू–पैसा लेकर काम करने वाला।
भाँफ लेना–जान लेना।
भाग्य खुलना–अच्छे समय का आना।
भाग्य का पलटा खाना–भाग्य में परिवर्तन होना।
भाग्य चमकना–भाग्योदय होना।
भाड़ मे जाना–नाश होना।
भाड झोंकना–नीच कार्य करना।
भारी बनके बैठना–बड़ा अभिमान करना।
भीगी बिल्ली बन जाना–डर से दब जाना।
भीतर ही भीतर–चित्त में।
भीष्म प्रतिज्ञा करना–कठिन प्रतिज्ञा ठान लेना।
भुजा टूटना–भाई की मृत्यु।
भीष्म प्रतिज्ञा करना–कठिन प्रतिज्ञा ठान लेना।
भुरकुस निकालना–खूब मार पीट करना।
भूत चढ़ना–क्रोध आना।
भूत झाडना–अभिमान हटाना।
भोर का मुर्गा बोला पछी ने मुँह खोला–प्रातः काल हुआ और पेट भरने की चिन्ता लगी।
भुलभुलैया मे पडना–व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
भेड़ियाधसान मचना–बिना सोचे विचारे पीछा करना।
भैंस के आगे बीन बजावे भैंस लगी पगुराय–मूर्ख के आगे बुद्धिमानी की बातें कहना निष्फल होता है।
भौंर न छाड़े केतकी तीखे कटक जान–अनेक आपत्तियों के होने पर भी प्रेमियों का प्रेम नहीं हटता।
भौंहें चढाना–क्रोध करना।

म

मंगनी के बैल के दाँत नहीं देखे जाते–अर्थ स्पष्ट है।
मक्खियों भिनकना–घृणित बने रहना।
मक्खी मारना–बेकार बैठे रहना।
मग्ज चाटना–बकवाद किये जाना।
मछली के बच्चों को तैरना कौन सिखाता है–स्वभाव से ही जाति गुण प्राप्त होता है।
मजा चखाना–बदला लेना, सज़ा देना।
मतलब गाठना–स्वार्थ सिद्धि।
मन रखना–सन्तोष देना।
मन मारे बैठना–उदास होना।
मन के लड्डू खाना–मन की तरंगें करना।
मन चंगा तो कठौती में गंगा–यदि मन शुद्ध है तो किसी तीर्थ में जाने की आवश्यकता नहीं।
मन भावे मूड डुलावे–इच्छा होने पर भी अस्वीकार करना
मतलब के लिये गधे को बाप बनाना–अपना मतलब सिद्ध करने के लिये नीच का भी मान करना।
मन मैला करना–उदास होना।
मन रीझना–चित्त प्रसन्न होना।
मन मानी घर जानी करना–जो कुछ इच्छा हो उसको करना।
मर मिटना–किसी काम के करने में बड़ा कष्ट उठाना।
मरता क्या न करता–मृत्यु की आशंका होने पर मनुष्य सभी काम करता है।
मरने पर वैद्य बुलाना–काम खराब हो जाने पर सुधारने का प्रयत्न करना।

मरने तक की फ़ुरसत न मिलना–काम में बड़े लीन रहना
मरम्मत करना–मारना।
मलमल कर पैसा देना–बड़ी कृपणता दिखलाना।
मलयागिरि की भीलनी चन्दन देत जराय–जहां पर कोई वस्तु बहुतायत से होती है वहां उसकी कदर नहीं होती।
मल्हार गाना–आनन्द मचाना।
मसक जाना–जीर्ण वस्त्र का दबकर फट जाना।
महाभारत होना–लड़ाई झगड़ा होना।
माँग उजड़ना–विधवा होना।
मांगी मौत भी न मिलना–अभिलषित वस्तु का प्राप्त न होना।
मांगे हरड़ दे बहेड़ा–बुद्धि विपरीत होना।
माता का दूध लजाना–डरपोक होना।
माथा ठनकना–सन्देह उत्पन्न होना।
माथा रगड़ना–विनती करना।
माथा खाली करना–बहुत बकवाद करना।
माथा पटकना–व्यर्थ का प्रयत्न करना।
मान न मान मैं तेरा मेहमान–इच्छा के विरुद्ध होना।
मार के आगे भूत भागे–मार से सभी डरते हैं।
मारते के अगाड़ी और भागते के पिछाड़ी–बड़ा कायर मनुष्य।
मारा जाना–बड़ी तकलीफ पहुंचना।
मानो तो देव नहीं पत्थर–विश्वास ही फलदायक होता।
मार मार कर वैद्य बनाना–जबरन् योग्य बनाने का प्रयत्न करना।
माल उड़ाना–धन का अपव्यय करना।
माल मुफ्त दिल बेरहम–दूसरे का धन उड़ाने में संकोच नहीं रहता।
मिजाज न मिलना–बड़ा अभिमान करना।
मिट्टी हो जाना–नष्ट होना।
मिट्टी पलीद करना–दुर्दशा करना।
मिट्टी देना–शव को गाड़ना।
मिट्टी खराब करना–बेइज्जत करना।
मिट्टी में मिल जाना–नष्ट हो जाना।
मिरचे लगना–बुरा लगना।
मियां की जूती मियां का सिर–किसी की वस्तु से उसका नुकसान होना।
मीठा दर्द–हलकी पीड़ा।
मीठी मार मारना–भला बनकर बुराई करना।
मीठी छुरी–मित्र बनकर हानि पहुंचाने वाला।
मियां बीवी राजी तो क्या करेगा काजी–दोनों पक्ष को यदि अभिमत है तो झगड़ा काहे का।
मीठा मीठा गप कड़वा कड़वा थू–अच्छी वस्तु रख लेना और खराब को फेंक देना।
मुँह खराब करना–गाली बकना।
मुँह मांगी मौत भी न मिलना–चाही हुई वस्तु का प्राप्त न होना।
मुँह काला होना–कलंकित होना।
मुँह की खाना–कठोर उत्तर मिलना।
मुँह पकड़ना–बोलने न देना।
मुँह देख की मोहब्बत–झूठा प्रेम।
मुँह चाटना–खुशामद करना।
मुँह चढ़ाना–ढीठ बनाना।
मुँह ताकना–कुछ पाने की अभिलाषा करना।
मुँह में पानी भर आना–लालच उत्पन्न होना।
मुँह पर हवाई उड़ना–चेहरा फीका पड़ जाना।
मुँह मीठा करना–मिठाई खिलाना।
मुट्ठी गरम करना–घूस देना।
मुट्ठी में आना–वशीभूत होना।
मुहर्रमी सूरत–रोनी सूरत।
मोछोंपर ताव देना–शेखी दिखलाना।
मैदान मारना–विजय प्राप्त करना।
मृदंग बजाना–आनन्द करना।
मेढे लड़ाना–झगड़ा खड़ा करना।
मोचा का मोची रह जाना–मूर्ख का मूर्ख बने रहना।
मोम हो जाना–मृदु होना।
मोरचा मारना–विजय प्राप्त करना।
मौत के दिन पूरे करना–दुःख से जिन्दगी बिताना।
म्याऊँ का ठौर कौन पकड़े–भय के स्थान में कौन जावे।
म्यान के बाहर हो जाना–क्रोध वश होना।

य

यज्ञ में आहुति देना–क्रोध भड़काना, अच्छे काम में लगना।
यज्ञ सफल होना–अच्छा काम पूरा होना।
युग बीत जाना–बहुत काल व्यतीत होना।
यथा नाम तथा गुण–जैसा नाम वैसा गुण।
यमपुर जाना–मृत्यु को प्राप्त होना।
यमपुर भेजना–मार डालना।

योग देना-सहायता करना।

र

रंग उड़ना-मुख फीका पड़ जाना।
रंग जमना-प्रभाव होना।
रंग भंग होना-मजा बिगड़ जाना।
रंग लाना-प्रभाव दिखलाना।
रंग चढ़ना-नशे में चूर होना।
रंग बाँधना-प्रभाव दिखलाना।
रंग देखना-नतीजा देखना।
रकाब में पैर रखना-तैयार हो जाना।
रग रग जानना-अच्छी तरह से पहिचानना।
रस्सी जल गई ऐंठन न गई-नाश हो जाने पर भी हठ न गया।
रक्त की नदी बहाना-बड़ा युद्ध होना।
रफू चक्कर होना-भाग जाना।
रसातल को पहुँचा देना-सर्वनाश करना।
रहा सहा-बचा हुआ।
रह रह करके-थोड़ी थोड़ी देर बाद।
रस्सी का साँप बनाना-बे मतलब की झंझट खड़ी करना
राई का पर्वत करना-छोटी सी बात को बहुत बढ़ाकर कहना।
राई रत्ती से जानकारी-पूरी तरह से जानकारी।
रात दिन एक करना-निरन्तर परिश्रम करना।
राम कहानी कहना-अपना दुखड़ा रोना।
रामराज्य-सुखपूर्ण राज्य।
राम राम करके प्राण बचाना-बड़ी कठिनाई से जान बचाना।
राम राम जपना पराया माल अपना-देखने में सीधा हृदय का कुटिल होना।
राह ताकना-इन्तेज़ारी करना।
राह पर लाना-सुधारना।
रुपया ठीकरी करना-फजूल खर्ची करना।
रुपया परखे बार बार आदमी परखे एक बार-मनुष्य एकही बार जाँचा जाता है रुपया कई बार परखा जाता है।
रोज कुआं खोदना रोज़ पानी पीना-रोज़ कमाना रोज़ खाना।
रोटी तोड़ना-बिना मेहनत के जीविका चलाना।
रोकड़ मिलाना-आय व्यय का हिसाब करना।
रोज़गार चमकना-रोज़गार में लाभ होना।

ल

लगड़ लड़ाना-झगड़ा खड़ा करना।
लगोटिया यार-बाल्यावस्था का मित्र।
लगोटी बंधना देना-दरिद्र कर देना।
लगर डालना-हिम्मत हारना।
लंगर उठाना-जहाज़ को चालू करना।
लगोटी पर फाग खेलना-दरिद्रता में आनन्द मनाना।
लबी चौड़ी हाकना-शेखी हाकना।
लकीर पीटना-समय चूकने पर वृथा उद्योग करना।
लकड़ी के बल बदरिया नाचे-भय दिखला कर काम कराना।
लकीर का फकीर होना-पुरानी बातों को ढोना।
लग्गा लगाना-उपाय सोचना।
लगे हाथ करना-सिलसिले में कोई काम कर डालना।
लटके रहना-अनिश्चित अवस्था में रहना।
लपेट में आना-विपत्ति में फँस जाना।
लम्बी तानना-सो जाना।
लम्बी चौड़ी हाँकना-शेखी की बातें कहना।
लगाव रखना-सबंध रखना।
लल्लो चप्पो करना-विनती करना।
लहू के घूँट पीना-बड़ी आपत्ति सहन करना।
लहू पसीना एक करना-बड़ी मेहनत करना।
लहू सूख जाना-बड़ा भयभीत होना।
लहू लगाकर शहीदों में भरती-थोड़ा सा काम करके नामवरी चाहना।
लहू चूसना-बहुत परेशान करना।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते-नीच मनुष्य बिना मार खाये सीधा नहीं होता।
लाख का घर खाक होना-बड़ी सम्पत्ति का नाश होना।
लागडाँट करना-शत्रुता करना।
लाल झंडी दिखाना-काम में रुकावट डालना।
लात मारना-तिरस्कार करना।
लासा लगाना-धोखे में फँसाना।
लीपापोती करना-ऐब छिपाने का प्रयत्न करना।
लुटिया डुबोना-काम बिगाड़ना।
लेने के देने पड़ना-लाभ के बदले हानि होनी।
लेमरना-आफ़त में डालना।

लोटपोट हो जाना—अति प्रसन्न होना।
लोहा लेना—युद्ध करना।
लोहा मानना—किसी के पराक्रम को स्वीकार करना।
लोहे के चने चबाना—परिश्रम का काम करना।
लौ लगना—धुन लगना।

व

वकीलों के हाथ पराये जेब में—वकील लोग दूसरे से धन लेने का सर्वदा प्रयत्न करते हैं।
वचन तोड़ना—अपनी प्रतिज्ञा से हट जाना।
वज्र बहिरा—बिल्कुल बहरा।
वसन्त की खबर न होना—जानकार न होना।
वह गुड़ नहीं जो चींटी खाय—हम बड़े सचेत हैं दूसरा हमको ठग नहीं सकता।
वहम की दवा लुकमान के पास भी नहीं है—सन्देह की कोई औषधि संसार में नहीं है।
वार देना—न्योछावर करना।
वाहवाही होना—प्रशंसा होना।
विभीषण बनना—घर का भेदिया होना।
विष उगलना—विपरीत बोलना।
विष के घूंट पीना—कटु वचन सहन करना।
वीर गति प्राप्त करना—वीरता से लड़कर मरना।
वेदवाक्य समझना—प्रामाणिक मानना।
वैकुण्ठ वास—मृत्यु।

श

शरीर में बिजली दौड़ना—उत्तेजित होना।
शस्त्र ढीले होना—साहस टूट जाना।
शरीर में आग लगना—क्रोध उत्पन्न होना।
शह देना—उभाड़ना, भड़काना।
शहद लगाकर चाटना—बे काम समझ कर रख छोड़ना।
शान दिखलाना—गर्व करना।
शिकंजे में पड़ना—आफत में पड़ना।
शिकार हाथ लगना—असामी मिल जाना।
शिकार होना—फन्दे में पड़ना।
शीशे में उतारना—वश में करना।
शेखी बघारना—अभिमान दिखलाना।
शेर और बकरी को एक घाट पानी पिलाना—बिना पक्षपात के न्याय करना।
शेर के मुँह में हाथ डालना—साहस का काम करना।
शैतान के कान काटना—भेद का पता लगाना।
श्रीगणेश करना—किसी कार्य का आरम्भ करना।

ष

षड्यन्त्र रचना—छिप कर किसी भयंकर कार्य को करने का उद्योग करना।
षट् राग में पड़ना—आपत्ति में पड़ना।
षड्रस भोजन करना—आनन्द से समय बिताना।
षोड़श शृंगार करना—खूब सिंगार पटार करना।

स

सइयाँ भये कोतवाल अब भय काहे का—किसी को उच्च पद मिल जावे तो उसके आश्रित निश्चिन्त रहते हैं।
सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब—अर्थ स्पष्ट है।
संकल्प विकल्प करना—सोच विचार में पड़ना।
सठिया जाना—बुद्धि भ्रष्ट होना।
सत्तु बाँधकर पीछा करना—बुरी तरह से परेशान करना।
सच्चे का बोल बाला, झूँठे का मुँह काला—सच्चा सर्वत्र पूजित होता है, झूठे का कोई विश्वास नहीं करता
सदा की नींद सोना—मृत्यु को प्राप्त होना।
सदा नाव कागज की नहीं बहती—छल सर्वदा फलीभूत नहीं होता।
सनक सवार होना—बुद्धि भ्रष्ट होना।
सन्नाटे में आ जाना—मूक होना, डर जाना।
सब धान बाइस पसेरी—भले बुरे को समान जानना।
सब गुड़ गोबर हो जाना—किया कराया काम बिगड़ जाना
सब रामायण सुन गये सीता किसका नाम—सब समझ कर भी अनजान बनना।
सब्ज बाग दिखलाना—झूठी आशा दिखलाना।
सब शकल लँगूर की एक दुम की कसर है—बदसूरत मनुष्य के लिये प्रयोग होता है।
सफेद झूठ—ऐसा झूठ जिसमें सचाई का लेशमात्र भी न हो
सफाई देना—निर्दोष सिद्ध करने का उद्योग।
सर करना—जीतना, विजय पाना।
साँप को दूध पिलाना—दुष्ट के साथ उपकार करना।
साँप छछूँदर की गति होना—द्विविधा में पड़ना।
सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे—काम बन जाय और कोई हानि न हो।
सांस पूरे होना—मृत्यु होना।
सांस तक न लेना—चुप रह जाना।
साई देना—किसी काम के लिये कुछ पेशगी देना।
साढ़े साती आना—अभाग्य का समय आना।

सात पॉच करना–छल कपट करना।
सात परदों मे छिपाकर रखना–अति सुरक्षित रखना।
साये से भागना–बड़ा कादर होना।
सारे जमाने की बातें सुनना–दुनिया में बुरा कहा जाना
सिक्का जमना–प्रभाव फैलना।
सिक्का जमाना–धाक बैठाना।
सिर मुडाते ओले पड़ना–आरंभ में ही विघ्न पड़ना।
सिर उठाकर चलना–अभिमान दिखलाना।
सिर आखों पर बैठना–अति प्रिय होना।
सितारा चमकना–भाग्यवान् होना।
सिर उठाना–उपद्रव खड़ी करना।
सिंहासन डिगना–भयभीत होना।
सिटपिटा जाना–घबड़ा उठना।
सितम ढाना–बड़ा क्लेश देना।
सिर ऊँचा होना–इज्जत होना।
सिर काटना–बड़ी तकलीफ देना।
सिर चढ़ाना–ढीठ करना।
सिर झुकाना–प्रतिष्ठा करना।
सिर देना–बलिदान करना।
सिर धुनना–पछताना।
सिर पटकना–बड़ा उद्योग करना।
सिर पकड़ कर रोना–बहुत पश्चात्ताप करना।
सिर पर आना–पास आना।
सिर पर मौत आना–मृत्यु पास होना।
सिर पर हाथ रखना–सहायक होना।
सिर पर खड़ा होना–बहुत पास आना।
सिर पर भूत सवार होना–बुद्धि भ्रष्ट होना।
सिर पर खून सवार होना–हत्या करने के लिये उतारू होना।
सिर पर कोई न होना–अनाथ होना।
सिर गरम होना (फिर जाना)–पागल होना।
सिर पर से तिनके उतारना–थोड़ा उपकार करना।
सिर पर लेना–अपने जिम्मे में लेना।
सिर पर आ पहुँचना–नजदीक आ जाना।
[illegible]–व्यग्र करना।
सिर [illegible]–इच्छा के विरुद्ध कोई काम सौंपा जाना।
सिर मारना–बड़ा उद्योग करना।
सिरमौर बनाना–अधिक प्रतिष्ठा करना।
सिरहाने का सॉप–पास का शत्रु।

सिर हिलाना–अस्वीकार करना।
सीधा बनाना–गर्व छुड़ाना।
सीधी नजर से देखना–शिष्टता का व्यवहार करना।
सीधे मुंह बात न करना–घमंड दिखलाना।
सुई के नाके से निकालना–बड़ी तकलीफ देना।
सुर्खाब का पर लगना–विशिष्टता होना।
सुरमा बना डालना–बहुत महीन पीसना।
सुहाग लुट जाना–विधवा होना।
सूख कर कांटा हो जाना–बड़ा दुर्बल होना।
सूखा जवाब देना–बिना कुछ दिये टाल देना।
सूप बोले तो बोले चलनी क्या बोले जिसमें बहत्तर छेद–जिसमें सैकड़ों ऐब हैं उसकी बात कौन सुनता है।
सूरज धूर डालने से नहीं छिपता–नीचों की दुष्टता से भले आदमीयों का गुण नहीं छिपता।
सूर्य को दिया दिखाना–प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय।
सूली पर रोटी खाना–जान जोखिम में डालना।
सैकड़ों घड़े पानी पड़ जाना–बहुत शर्मिन्दा होना।
सो जाना–असावधान होना।
सोया सो चूका–असावधान होने पर हानि होती है।
सोता सिंह जगाना–बलवान् से छेड़ छाड़ करना।
सोती चिड़िया हाथ से निकल जाना–मिलने की आशा टूट जाना।
सोने में सुगन्ध आना–गुणों की अधिकता।
सौ सौ बातें सुनना–भला बुरा कहना।
स्वप्न मे भी ध्यान न आना–बिलकुल भूल जाना।
स्वर में स्वर मिलना–विनती करना, एक लय होना।
स्वाग रचना–आडंबर बनाना, कपट फैलाना।
स्वाहा करना–नष्ट करना, भस्म करना, जला देना।

ह

हँस खेल कर मारना–प्रेम दिखलाते हुए कष्ट देना।
हक्का बक्का रह जाना–अचरज में पड़ना।
हजम करना–हर लेना।
हजामत बना देना–ठग लेना।
हजारों ठोंकी सहकर महादेव बनते हैं–कष्ट बिना उठाये महत्व नहीं मिलता।
हड़बड़ा उठना–घबड़ा जाना।
हड़प लेना–ठग लेना।
हजाम के आगे सबका सिर झुकता है–मतलब के लिये सभी अपना सिर झुकाते हैं।
हथियार रख दना–आधीन हो जाना।

हथेली पर सरसों जमाना-मुँह से हुक्म होते ही तुरत काम नहीं हो जाता।
हरा होना-प्रसन्न होना।
हरी हरी घास दिखलाना-ललचाना।
हरफ़न मौला-सब काम में चतुर।
हरी हरी सूझना-सर्वत्र आनन्द देख पड़ना।
हवा नापना-फ़जूल का काम करना।
हवा के घोड़े पर सवार होना-उतावला, जल्दी करना।
हवा से लड़ना-स्वभाव चिड़चिड़ा होना।
हवा उड़ाना-झूठी खबरें फैलाना।
हवा का रुख देखना-परिस्थिति समझना।
हवा खाना-किसी वस्तु से रहित होना।
हवा से बातें करना-तेज दौड़ना।
हाँड़ी पकना-कोई षड्यन्त्र होना।
हाथ उठाना-(मारना) आशा छोड़ देना।
हाथ कंगन को आरसी क्या-जो वस्तु प्रत्यक्ष उपस्थित है उसके लिये दूसरे किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं।
हाथ डालना-आरम्भ करना।
हाथ खींच लेना-सम्बन्ध छोड़ना।
हाथ पकड़ना-आश्रय देना।
हाथ की पुतली बनाना-दूसरे के इशारे पर काम करना।
हाथ पाँव फूलना-व्यग्र होना, घबड़ाना।
हाथ धो देना-गँवा देना, खो बैठना।
हाथ दबा होना-परवश होना।
हाथ बाँधे खड़े रहना-हरदम सेवा करने के लिये उपस्थित रहना।
हाथ खींच लेना-सहायता न देना।
हाथ लगाना-कार्य आरंभ करना, सहायता देना।
हाथ दिखाना-वीरता का प्रदर्शन करना।
हाथ मलना-पश्चात्ताप करना।
हाथ धोकर पीछे पड़ना-बहुत परेशान करना।
हाथ पर हाथ दिये बैठे रहना-कोई काम न करना, आलसी बने रहना।
हाथ मलना-पछताना।
हाथ फेरना-ठगना।
हाथ पाँव चलना-ताकत होना।
हाथ में लेना-किसी काम की जवाबदेही अपने ऊपर लेना।
हाथ तले आना-वश में होना।
हाथ खुला रहना-उदार होना।
हाथ उठा लेना-दया न दिखलाना।
हाथ चलना-पास में धन होना।
हाथ भर का कलेजा होना-बड़ा वीर होना।
हाथ साफ करना-ठगना, मार डालना।
हाथ पर हाथ मारना-प्रतिज्ञा करना।
हाथों उछलना-बहुत खुश होना।
हाथ रखना-सहारा देना।
हाथों का तोता उड़ना-अति विह्वल होना।
हायतोबा मचाना-शोरगुल मचाना।
हिंदी की चिंदी निकालना-बड़ी छान बीन करना।
हिरन हो जाना-भाग जाना।
हुक्का पानी बन्द करना-जात के बाहर निकाला जाना।
हेकड़ी दिखलाना-शेखी करना।
हेठी होना-बेइज्जती होना।
होंठ चबाना-क्रोध करना।
होंठों पर जान आना-मृत्यु काल समीप होना।
होश पैतरे हो जाना-व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
होश उड़ जाना-घबड़ा जाना।
होंठ सूखना-प्यास लगना।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात-होनहार मनुष्य के गुण बाल्यावस्था ही से देख पड़ते हैं।
हौज भरे तो फौवारा छूटे-आमदनी हो तो खर्च हो सकता है।
हृदय में गुदगुदी होना-बहुत प्रसन्न होना।
हृदय फड़क उठना-बहुत प्रसन्न हो जाना।
हृदय उछलना-प्रसन्न होना।
हृदय खोलना-भेद की बातें बतलाना।
हृदय का कपाट खुलना-ज्ञान उत्पन्न होना।
हृदय पर अंकित होना-अच्छी तरह से समझ जाना
हृदय विदीर्ण होना-बहुत दुखी होना।

❀ समाप्त ❀